THE

HOLY BIBLE

TRANSLATED INTO THE

Hinduee Language,

BY THE

REVEREND WILLIAM BOWLEY,

UNDER THE PATRONAGE OF THE

Calcutta Auxiliary Bible Society.

VOL. II.

I CHRONICLES TO MALACHI.

धर्म्म पुस्तक ।

हिंदुई भाषा में उतारी गई ।

कलकत्ता ।

चर्चे मिशन छापे खाने में छापी गई ।

सन १८३४ ।

काल के समाचार की पहिली पुस्तक।
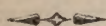
१ पहिला पर्ब्ब।

आदम के बंश नूह लों १—४ याफस के सन्तान ५—७ हाम के सन्तान ८—१६ शाम के सन्तान १९—२३ शाम की बंशावली इबराहीम और उसके बेटों लों २५—२८ इश्माईल के सन्तान २९—३१ कतूरा के सन्तान ३२—३३ इबराहीम के बंश यस, से ३४—३७ सीर के बेटे ३८—४२ यस, के राजा और अध्यक्ष ४३—५४।

१।२।३ आदम, शीश, अनूश। किनान महालालील यारद। हनूक
४ मथूसलः लामक। नूह, शाम, हाम, याफस।
५ याफस के बेटे गोमर और माजूज और मादई और यवन
६ और तूबाल और मीशक और तीरास। गोमर के बेटे
७ अशकिनाज़ और रीफ़ात और तोगारमा। और यवन के बेटे इलीशा और तरशीश और कित्तिम और दोदानिम।
८ और हाम के बेटे कोश और मसरीम और पूत और
९ किनान। और कोश के बेटे सिबा और हविला और सबता और रामाह और सबतीका और रामाह के बेटे शिबा और
१० दिदान। और कोश से नमरूद उत्पन्न हुआ वुह पृथिवी पर
११ बलवन्त होने लगा। और मिसरीम से लूदीम और अनामीम
१२ और लिहाबीम और नफतूहीम। और पतरूसीम और

१३ कसलूहीम (जिन से फलस्ती निकले) और कफतूरीम। और
१४ किनान से उसके पहिलौंठे सीदून और हेत। और यबूसी भी
१५ और अमूरी और गिरगशी। और हवी और अरकी और
१६।१७ सीनी। और अरवादी और समारी और हमाथी।
और शाम के बेटे ईलाम और अशूर और अरफकशद और
लूद और अरम और ऊज़ और हूल और गिथर और मिशिक।
१८ और अरफकशद से शीलाह उत्पन्न ऊआ और शीलाह से इबर
१९ उत्पन्न ऊआ। और इबर से दो बेटे उत्पन्न ऊए एक का नाम
पीलग (इस कारण कि उसके समय में पृथिवी बिभाग किई गई)
२० और उसके भाई का नाम यकतान। और यकतान से
अलमोदाद और शलफ और हसरमावत और याराह।
२१।२२ हदुराम भी और अज़ाल और दिकलाह। और इबाल
२३ और अबीमाईल और शिबा। और ओफिर और हविला
२४ और जोबाब ये सब यकतान के बेटे। शाम
२५।२६ अरफकशद शिलाह। इबर पीलग रेउ। सिरुग नाहूर
२७।२८ तिराह। अबराम जो इबराहीम है। इबराहीम
२९ के बेटे इसहाक और इशमाईल। यह उनकी
बंशावलियां, इशमाईल का पहिलौंठा नबाऊत फेर कीदार
३० और अदबील और मिबसाम। मिशमा और दूमा और
३१ मस्सा और हदाद और तीमा। यतूर और नफिश और
३२ कदीमाह ये इशमाईल के बेटे। और
इबराहीम की सहेली कितूराह के बेटे उस्से सिमरान और
यकशान और मिदान और मदियान और यिशबाक और
शूअह उत्पन्न ऊए और यकशान के बेटे शिबा और दिदान।
३३ मदियान के बेटे ईफाह और ईफर और हनूक और अबीदा
३४ और इलदाह ये सब कितूरा के बेटे। और इबराहीम
से इसहाक उत्पन्न ऊआ इसहाक के बेटे एसू और इसराईल।
३५ एसू के बेटे एलीफाज़ और रूईल और योऊश और यालाम

३६ और कोरह। अलीफाज़ के बेटे तीमान और ऊमर और
३७ सिफो और गतन और किनाज़ और तिमना और अमालक।
रौऊल के बेटे नहास और सिराह और शामह और मिसा।
३८ सईर के बेटे लोटान और शोबाल और शबिऊन और
३९ अनाह और दीशून और ईसार और दीशान। और लोटान
४० के बेटे हूरी और हूमान लोटान की बहिन तिमना। और
शोबाल के बेटे अलियान और मानाहास और इवाल और
शिफो और ऊनाम और सबऊन के बेटे ऐश्रा और आनाह।
४१ और आनाह के बेटे दीशून और दीशून के बेटे अमरास और
४२ एशबान और इसरान और किरान। ईसर के बेटे बिलहान
और जवन और यकान दीसान के बेटे ऊज और अरन।
४३ अब इसराईलियों के सन्तान पर कोई राजा राज्य करने
से पहिले अदूम के देश में इन राजाओं ने राज्य किया बिऊर
४४ का बेटा बला और उसके नगर का नाम दिनहाबा। और
जब बला मर गया तब बसरा के जीरा के बेटे यूबाबने उस
४५ की सन्ती राज्य किया। और जब यूबाब मर गया तीमानी के
४६ देश के होशाम ने उसकी सन्ती राज्य किया। और जब होशाम
मर गया तब बिदाद के बेटे हदाद ने उसकी सन्ती राज्य
किया उसने मवाब के चैागान में मदियान को मारा और
४७ उसके नगर का नाम अविस। और जब हदाद मर गया तब
४८ मसरीका के बेटे समलाह ने उसकी सन्ती राज्य किया। और
जब समलाह मर गया तब नदी के तीर रहबूस के शाऊल ने
४९ उसकी सन्ती राज्य किया। और जब शाऊल मर गया तब
५० अकबर के बेटे बालहनान ने उसकी सन्ती राज्य किया। और
जब बालहनान मर गया तब हदद ने उसकी सन्ती राज्य
किया और उसके नगर का नाम पाई और उसकी पत्नी का
नाम महीतबील जो मतरद की बेटी जो मसहाब की बेटी।
५१ और हदद भी मर गया और अदूम के ये अध्यक्ष थे

अध्यक्ष तमना अध्यक्ष अलीया अध्यक्ष यसीस अध्यक्ष।
५२।५३ ओहोलिबामा अध्यक्ष एलाह अध्यक्ष पीनुन। अध्यक्ष
५४ कीनाज़ अध्यक्ष तीमान अध्यक्ष मीबसार। अध्यक्ष मगदीयल
अध्यक्ष ईराम ये अदूम के अध्यक्ष।

२ दूसरा पर्ब्ब।

इसराईल के और यहूदा के सन्तान १—१२
यस्सी के १३—१७ कालिब के सन्तान १८—२४
यरामील के सन्तान २५—३३ शीशन के सन्तान
३४—४१ कालिब का दूसरा वंश ४२—४९
हूर के बेटे कालिब के सन्तान ५०—५४।

१ इसराईल के बेटे ये, राऊबीन, शिमिऊन, लावी, और यहूदा,
२ इसाखार और जबलून। दान, यूसुफ़ और बनियामीन, नफ़ाली,
३ जद और अशर। यहूदा के बेटे ईर और यूनान
और शीलाह ये तीनो किनानी शुआ की लडकी से उसके लिये
उत्पन्न ऊए और यहूदा का पहिलौंठा ईर परमेश्वर की
४ दृष्टि में बुरा था और परमेश्वर ने उसे नाश किया। और
उसकी बहू तामार उसके लिये फारिज़ और ज़राह को जनी
५ यहूदा के सब बेटे पांच। और फ़ारिज़ के बेटे हज़रून और
६ हामूल। और ज़राह के बेटे जिमिरी और एतान और
७ हेमान और कलकोल और दारा सब समेत पांच। और करमी
के बेटे आकार इसराईल का खिजवैया जिसने स्रापित बस्तु
८।९ में अपराध किया। और एतान के बेटे अजरियाह। हसरून के
बेटे भी जो उस्से उत्पन्न ऊए यराहमील, और राम और किलूबाई।
१० और राम से अमीनादाब उत्पन्न ऊआ और अमीनादाब से यहूदा
११ के सन्तान का अध्यक्ष नखशून उत्पन्न ऊआ। और नखशून से
१२ सलमा और सलमा से बोआज़ उत्पन्न ऊआ। और बोआज़ से ओबेद
१३ और ओबेद से यस्सी उत्पन्न ऊआ। और यस्सी का

पहिलौठा इलिआब और दूसरा अमीनादाब और तीसरा
१४।१५ शिम्मअ्। चौथा नसानाईल और पांचवां रदई। छठवां
१६ अज़ोम और सातवां दाऊद उत्पन्न हुए। जिनकी बहिन
सिरुयाह और अबिगाईल और सिरुयाह के तीन बेटे अबिशई
१७ और यूआब और असाहिल। और अबिगाईल से अमासा
उत्पन्न हुआ और अमासा का पिता इश्माईली इथीर था।
१८ और हसरून के बेटे कालिब की पत्नी अज़ूबा से और जरीऊत
से ये बेटे उत्पन्न हुए यशार और साबाब और अरदोन।
१९ और जब अजुबा मर गई तब कालिब ने अफ़रात को ग्रहण किया
२० वुह उसके लिये हूर जनी। और हूर से ऊरी और ऊरी से
२१ बज़ालील उत्पन्न हुआ। उसके पीछे जब हसरून साठ
बरस का हुआ तब गिलियाद के पिता माकिर की लड़की को
२२ ग्रहण किया और वुह उसके लिये सिगूब जनी। और सिगूब से
२३ याईर उत्पन्न हुआ जो गिलियाद देश में तेईस नगर रखते थे।
और उसने गिशूर को और आरम को और जाईर के नगरों को
और किनात सहित और उसके नगरों को अर्थात् साठ नगर
२४ लिये ये सब गिलियाद के पिता माकीर के बेटे के थे। और
जब कालिब अफराता में हसरून मर गया तब हसरून की पत्नी
२५ अबिया उसके लिये टिकुआ के पिता अशूर को जनी। हसरून
का पहिलौंठा इरामील के बेटे राम उसका पहिलौंठा और बुनाह
२६ और उरेन और ओसेम और आहीजा। इरामील की
दूसरी पत्नी भी थी जिसका नाम आतारा, जो उनाम की माता
२७ थी। और इरामील के पहिलौंठे राम के बेटे माज़ और यमीन
२८ और इकर। और ओनाम के बेटे शमई और यादा और
२९ शमई के बेटे नादाब और अबीशूर। अबीशूर की पत्नी का
नाम अबीहाईल और वुह उसके लिये आहबान और मोलिद
३० को जनी। और नादाब के बेटे सीलद और अप्पईम परन्तु
३१ सीलद निर्बंश मर गया। अप्पईम के बेटे इशी और इशी के

३२ बेटे शीशान और शीशान के सन्तान अहलाई। और
शम्मई के भाई यदा के बेटे यथर और यूनासान और यथर
३३ निर्वंश मर गया। और यूनासान के बेटे पेलेत और जाज़ा
३४ ये इरामील के बेटे थे। अब शीशान के बेटे नथे परन्तु
बेटियां थीं और शीशान के एक मिसरी सेवक था जिसका नाम
३५ यारहा था। और शीशान ने अपनी बेटी को अपने सेवक
यरहा से बियाह दिया और वुह उसके लिये अट्टाई को जनी।
३६ और अट्टाई से नासान और नासान से जाबाद उत्पन्न ऊआ।
३७ और जाबाद से एफ़लाल और एफ़लाल से ओबेद उत्पन्न ऊआ।
३८ और ओबेद से यहू और यहू से अज़रीयाह उत्पन्न ऊआ।
३९ और अज़रीयाह से हिलज और हिलज से इलियासा उत्पन्न
४० ऊआ। और इलियासा से सिसामई और सिसामई से शालूम
४१ उत्पन्न ऊआ। और शालूम से इकमियाह और इकमियाह
४२ से एलीशमा उत्पन्न ऊआ। एरामील के भाई कालिब
के बेटे ये हैं उसका पहिलौंठा मीषा जो सिफ़ का पिता और
४३ हबरून का पिता मरीशा के बेटे। हबरून के बेटे कोराह
४४ और टपुआ और रकम और शमा। और शमा से रहम
उत्पन्न ऊआ जो यरकाम का पिता था और रकम से शमई
४५ उत्पन्न ऊआ। और शमई का बेटा माऊन और माऊन बीतसूर
४६ का पिता था। और कालिब की सहेली यफ़ाह से हरान और
४७ मूज़ा और गज़ीज़ और हारान से गज़ीज़ उत्पन्न ऊआ। यादई
के बेटे रेगेम और यूताम और गेशान और पीलट और ईफ़ाह
४८ और शाफ़। कालिब की सहेली माकाह से शाबर और
४९ तिरहाना उत्पन्न ऊए। उसे मदमाना का पिता शाफ़भी और
मदमनाह का पिता और गबिया का पिता शिवा उत्पन्न ऊए
५० और कालिब की बेटी अकसाह। अफराता का
पहिलौंठा हूर का बेटा कालिब के ये बेटे थे करयासयारीम का
५१ पिता शोबाल बैतुलहम का पिता सलमा और बैतगदेर

५२ का पिता हूरफ। कर्यासयारीम के पिता श्रोबाल के बेटे थे
५३ हरूई और मिनाहोती का आधा। कर्यासयारीम के घराने
इथरी और पूहोती और शुमाती और मिसराईती इन से
५४ सरिआथी और अश्ताली निकले। सलमा के बेटे बैतुलहम
और नितूफाती यूआब के घराने के मुकुट और मानहोती की
५५ आधी गोष्ठी सूरीती। और याबज़ के बासी लेखकों के घराने
तिराथी और शिमियाथी और शूकाथी ये सब रेकाब के घराने
के पिता हमात से कीनी निकले।

३ तीसरा पर्ब्ब।

दाऊद के बेटे १—९ उसके सन्तान सिदकियालों
१०—१६ यकूनिया के बेटे १७—२४।

१ अब जो बेटे दाऊद से हबरून में उत्पन्न हुए सो ये थे पहिलौंठा
इज़रईली अहीनुआम से अमनून दूसरा दानियाल करमली
२ अबीगाल से। तीसरा गिसूर के राजा टलमई की बेटी माका
का बेटा अबसालूम और चौथा हज्जीस का बेटा अदूनीजा।
३ पांचवां अबीताल से शफातिया और छठवां उसकी पत्नी यगला
४ से इसरियाम। ये छः हबरून में उसके लिये उत्पन्न हुए और
उसने वहां साढ़े सात बरस और यिरोशलीम में तेंतीस बरस
५ राज्य किया। और यिरोशलीम में उसके लिये ये उत्पन्न
हुए शमिया और शोबाब, नासान और सुलेमान ये चार
६ अमीईल की बेटी बातशुआ से उत्पन्न हुए। इबहार भी और
७ अलीशामा और अलीफलत। और नूगाह और नेफेक और
८ याफ़ीया। और इलीशमा और ईलियादा और इलीफलत
९ नव। सहेलियों के बेटों को छोड़ दाऊद के ये सब बेटे और
१० उनकी बहिन तामार। और सुलेमान का बेटा रहबुआम
उसका बेटा अबिया उसका बेटा आसा उसका बेटा यहूशाफात।
११ उसका बेटा यूराम उसका बेटा अहाज़िया उसका बेटा

१२ यूआश। उसका बेटा अमासिया उसका बेटा अज़रिया
१३ उसका बेटा यूताम। उसका बेटा आहाज़ उसका बेटा
१४ हिज़किया उसका बेटा मनस्सा। उसका बेटा आमून उसका
१५ बेटा यूसिया। यूसिया के बेटे पहिलौंठा यूहानान दूसरा
१६ यहूयाकीम तीसरा सिदकिया चौथा शालूम। यहूयाकीम के
१७ बेटे यकोनियाह उसका बेटा सिदकिया। और
१८ यकूनियाह का बेटा आसिर उसका बेटा सलातईल। मलकीराम
भी और पिदायाह और शिनासार और यकामियाह और
१९ होशामा और निदबियाह। और पिदायाह के बेटे जोरबाबुल
और शमीय और जोरबाबुल के बेटे मशुलाम और हानानिया
और उनकी बहिन शिलोमिस। और हशुबाह और
२० ओहेल और बिरकीया और हसादीयाह और यूशाब
२१ हसद पांच। और हनानियाह के बेटे पिलातियाह और
इसायाह और रिफायाह के बेटे अरनान के बेटे ओबदिया के
२२ बेटे शिकानियाह के बेटे। और शिकानियाह के बेटे शमायाह
और शमायाह के बेटे हतूश और इगियाल और बारियाह
२३ और नियारियाह और शाफात छः। और नियारियाह के
२४ बेटे एलनोई और हिज़किया और अज़रिकाम तीन। और
इलूनाई के बेटे होदायाह और इलियाशिब और पिलायाह
और अक्काब और यूहानान और दिलायाह और अनानी
सात।

४ चौथा पर्ब्ब।

यहूदा के बंश १—४ अशूर के बंश ५—८ याबज़
और उसकी प्रार्थना ९—१० यहूदा के सन्तान
११—२० शीला के सन्तान २१—२३ शमऊन के
सन्तान और उनके नगर २४—३८ वे गदूर को
और अमालकियों को जीतते हैं ३९—४३।

१ यहूदा के बेटे फारिज़, हसरुन और करमी और हूर और
२ शोबाल। और शोबाल के बेटे रिआयाह से याहास उत्पन्न
हुआ और याहास से अहूमाई और लाहद उत्पन्न हुए ये
३ सारातों के घराने हैं। और ईताम के पिता ये हैं यज़रईल और
इशमा और इदबाश और उनको बहिन का नाम हसालीलपुनी।
४ और गिदोर का पिता पनुईल और हूशा का पिता एज़र
और बैतुलहम के पिता अफ़राता के पहिलौंठे हूर के बेटे
५ ये हैं।　　तिकुआ के पिता अशूर की दो
६ पत्नियां थीं हीलाह और नआरा। और नआरा उसके लिये
अहूज़ाम और हफर और तमिनी और हाहश्तरी को जनी ये
७ नआरा के बेटे हैं। हीला के बेटे सेरेस और यसुआर और
८ एसनान। और कोस से आनूब और सोबिबह उत्पन्न हुए
और हारुम के बेटे अहारहील के घराने।

९ और याबस अपने भाइयों से प्रतिष्ठित था और उसकी
माता ने कहा कि मैं इसे कष्ट से जनी इस लिये उसने उसका
१० नाम याबस रक्खा। और याबस ने यह कहिके इसराईल
के ईश्वर की प्रार्थना किई कि यदि तू निश्चय मुझे आशीष
देवे और मेरे सिवाने बढ़ावे जिसतें तेरे हाथ मेरे साथ होवें
और कि बुराई से मेरी रक्षा करे जिसतें मुझे उदासी न
होवे तब ईश्वर ने उसकी बांछा पूर्ण किई।

११ और शुआह के भाई किलूब से महिर उत्पन्न हुआ जो
१२ अशतून का पिता था। और अशतून से बैतराफ़ा और
पसिया और इरनाहाश के पिता तहिन्ना उत्पन्न हुए ये सब
१३ रीकाः के जन हैं। और किनाज के बेटे अस्नईल और
१४ सिराया और अस्नईल के बेटे हसास। और मिओनोतई से
ओफ़राह उत्पन्न हुआ और सिराया से यूआब उत्पन्न हुआ
जो तराई के बासी का पिता था क्योंकि वे कार्य कारी थे।
१५ यफ़न्निः के बेटे कालिब के बेटे इरु और ईला और नआम

१६ और ईला के बेटे कोनाज़। इहालीलिल के बेटे ज़ीफ़
१७ और ज़ीफ़ाह तिरिया और असारईल। और एज़रा के बेटे ईथर और मेरेद और यफ़ेर और यालून और वुह मरियम को और शमई को और इश्तिमुआ के पिता इशबाह
१८ को जनी। और उसकी पत्नी यहूदियाह गदूर के पिता यारद को और सोको के पिता हिबर को और ज़नूआ के पिता यकूसईल को जनी और फ़रऊन की बेटी बितिया के बेटे जिसे
१९ मरद ने लिया ये हैं। और उसकी पत्नी नहम की बहिन होदियाह के बेटे गरमी कैला का पिता माकाती एश्तिमुआ।
२० और शिमोन के बेटे अमनून और रिन्ना और बिनहनान और तीलून और इशी के बेटे ज़ोहेस और बिनज़ोहेस।
२१ यहूदा के बेटे शेलाह के बेटे लीका का पिता एर और मारेशाह का पिता लअदा और अशबियह उनके घर के घराने
२२ जो भीना सूती वस्त्र बनाते थे। और योकीम और कोज़ीबा के लोग और यूआश और सिराफ जो मुआब में प्रभुता
२३ रखते थे और जशूबीलहम ये प्राचीन बातें हैं। ये कुम्हार थे जो सागपात में और बाड़ों में रहते थे और राजा के संग
२४ उसके कार्य्य के लिये वहां रहते थे। शमऊन के बेटे निमूईल और यामीन और यारीब और जारह और शाऊल।
२५ उसका बेटा शालूम उसका बेटा मिबसाम उसका बेटा मिशमा।
२६ और मिशमा के बेटे हमूएल उसका बेटा, जकूर उसका बेटा,
२७ शमई उसका बेटा। और शमई के सोलह बेटे और छः बेटियां थीं परन्तु उसके भाई के बज्ञत बालक न थे और उनके
२८ सारे घराने यहूदा के सन्तान के समान न बढ़े। वे बीरशबा में
२९ और मोलादाह और हज़ारशूआल। और बिलह में और
३० एसेम में और तोलाद में। और बतूईल में और ऊरमा में
३१ और सिकलाग में। और बैतमर्कबूस में और हज़ारसूसिम में और बैतबिरिया में और शआराईम में रहते थे, दाऊद के

३२ राज्य लों थे उनके नगर थे। और उनके गांव एताम और अईन और रमून और तोकीन और आशान पांच नगर।
३३ और बअल लों सारे गांव जो उन नगरों की चारों ओर थे ये
३४ उनके निवास और उनकी बंशावली। और मशूबाब और
३५ यमलिक और आमसिया का बेटा योशाह। और जोईल और जसेबिया का बेटा जीहूब जो सिराया का बेटा जो असईल
३६ का बेटा। और एलिओनई और याकूबा और यिशोहाया और आसाया और अदीएल और इसिमिएल और बनाया।
३७ और शमाया का बेटा शिमरी का बेटा जिदाया का बेटा
३८ अलोन का बेटा शिफ़ी का बेटा जैज़ा। ये जिनका नाम लिया गया सो अपने अपने घराने के अध्यक्ष और उनके पितरों के घराने
३९ बहुत बढ़ गये। और वे गिदार के पूर्ब की तराई के
४० अलंग की पहुंच लों अपनी झुंडों की चराई के लिये गये थे। और उन्हों ने पुष्ट और उत्तम चराई पाई और वुह फैलाव और चैन का और कुशल का देश था क्योंकि हाम के लोग आगे उसमें
४१ रहते थे। और यहूदा के राजा हिज़िकिया के दिनों में जिनके नाम लिखेहुए हैं वे आये और उन के तंबूओं को और निवासों को जो वहां पाये गये थे मार लिया और आज लों उन्हें सर्बथा नष्ट किया और उनके स्थान में बास
४२ किया इसलिये कि उनकी झुंड़ों के लिये वहां चराई थीं। और उन में से अर्थात शमऊन के बेटों में से पांच सौ जन सईर के पहाड़ पर गये पिलतियाह और निआरियाह और रिफायाह और अज़ईल जो ईशी के बेटे थे उनके प्रधान थे। और वे
४३ खदेड़के अमालकियों को जो बच निकले थे मार के वहां बसे।

५ पांचवां पर्ब्ब।

यहूदा और यूसफ़ का राओबीन से बढ़ाया जाना १—२ राओबीन के सन्तान ३—१० जाद के प्रधान और उनके निवास ११—१७ राओबीन और जाद और आधा मनस्सा का हगारियों को जीतना १८—२२ आधा मनस्सा के प्रधान और उनके निवास २३—२४ अढ़ाई गोष्ठी की बंधुआई उनके पाप के कारण २५—२६।

१ इसराईल के पहिलौठे राओबीन के बेटे (क्योंकि वुह पहिलौंटा था परन्तु जैसाकि उसने अपने पिता का बिछौना अशुद्ध किया उसका जन्म पद इसराईल के बेटे यूसफ़ के बेटों को दिया गया और बंशावली जन्म पद पर नहीं गिनी जाती है।
२ क्योंकि यहूदा अपने भाइयों से बढ़ गया और उसे श्रेष्ठ अध्यक्ष
३ हुआ परन्तु जन्म पद यूसफ़ का)। इसराईल के पहिलौंठे राओबीन के बेटे हनूक और पलू और हसरून और करमी।
४ जोईल के बेटे, शमायाह उसका बेटा, जूज उसका बेटा, शमीस
५ उसका बेटा। मीकाह उसका बेटा, रिआयाह उसका बेटा,
६ बअल उसका बेटा। बिरराह उसका बेटा जिसको असूर का
७ राजा तिलगास पिलनिसर लेगया वुह राओबीनियों का अध्यक्ष था। और जब उनकी पीढ़ियों की बंशावली लिखीगई तब अपने अपने घराने की रीति पर उसके भाई प्रधान थे जईल
८ और जकरिया। और जोईल का बेटा शमा उसका बेटा आजाज उसका बेटा बला जो अरईर में अर्थात नबू और बालमऊन लों
९ बास किया। और पूर्ब्ब दिशा में उसने फुरात नदी से बन की पैठ लों बास किया इस कारण कि गिलिआद देश में उनके ढोर
१० बढ़गये। और साऊल के दिनों में उन्हों ने हगारियों से युद्ध किया जो उनके हाथ से मारे पड़े और वे गिलिआद

११ देश की पूर्ब्ब ओर सर्बत्र उनके तंबूओं में बसे। और जाद के सन्तान उनके सन्मुख बाशान देश में सलका लों बसे।
१२ योईल प्रधान दूसरा शफाम और यानाई और बाशान
१३ में शाफात। और उनके पितरों के घराने के भाई मिकाईल और मिशुल्लम और शीबा और यूरई और याकान और
१४ जीया और हबर सात जन। बूज़ का बेटा यहदू उसका बेटा यशीशाई उसका बेटा मिकाईल उसका बेटा गिलियाद उसका बेटा यारूआ उसका बेटा हूरी उसके बेटे अबिहाईल
१५ के ये सन्तान हैं। गूनी का बेटा अबदईल का बेटा अही
१६ उनके पितरों के घराने का प्रधान। और वे बाशान के गिलियाद में और उसके नगरों में और शारून की चारोंओर
१७ के गांओं में और उनके निवासों में जा बसे। यहूदा के राजा यूताम के दिनों में और इसराईल के राजा यूर्बआम के दिनों
१८ में ये सब बंशावलियों में गिने गये थे। राओबीन के और जादियों के और मनस्सा की आधी गोष्ठियों के बेटे बीर पुत्र थे जो ढाल तलवार और धनुष से मारने में संग्राम में निपुण थे जो चौआलीस सहस्र सात सौ साठ जन जो संग्राम
१९ को निकल गये थे। और उन्हों ने हगारियों से और यतूर से
२० और नाफीश से और नोदब से युद्ध किया। और वे उनके बिरुद्ध उपकार पाया और हगारी और सब जो उनके साथ थे उनके हाथ में सौंपे गये क्योंकि उन्हों ने संग्राम में ईश्वर की प्रार्थना किई और उसी पर भरोसा रक्खा इस कारण उस ने
२१ उनकी प्रार्थना ग्रहण किई। और उन्हों ने उनके ढोर को अर्थात उनके पचास सहस्र ऊंट और अढ़ाई लाख भेड़ और
२२ दो सहस्र गदहे और एक लाख मनुष्य बन्धुआई में लेगये। क्योंकि बहुत जूझ गये इस कारण कि संग्राम ईश्वर का था और वे
२३ उनके स्थानों में बन्धुआई लों बसे। और मनस्सा की आधी गोष्ठी के सन्तान देश में बसे और बासान से और

बालहरमून और सिनर और हरमून पर्ब्बत लों बढ़ गये।
२४ और उनके पितरों के घराने के प्रधान ये थे ईफर और इशी और इलियल और अज़रईल और इरमिया और होदाविया और जहदियल जो बल में बीर प्रसिद्ध जन थे अपने अपने
२५ पितरों के घरानों में श्रेष्ठ। और उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर के विरुद्ध अपराध किया और उस देश के लोगों के देवों के पीछे व्यभिचार में चलेगये जिन्हें ईश्वर
२६ ने उनके आगे नष्ट किया। और इसराईल के ईश्वर ने असूर के राजा पल के मन को और असूर के राजा टिलगास पलनिसर के मन को उभाड़ा और उसने उन्हें अर्थात राओबीनियों को और जादियों को और मनस्सा की आधी गोष्ठी को लेगये और उन्हें हाला में और हाबूर में और हारा में और गोजान नदी में आजलों लेगये।

६ छठवां पर्ब्ब।

लावी के सन्तान इलियाज़र लों १—३ इलियाज़र के सन्तान बंधुआई लों ४—१५ लावी के सन्तान १६—३० दाऊद गायकों को ठहराता है ३१—४८ हारुन के और उसके बेटों के पद ४९—५३ याजकों के और लावियों के नगर ५४—८०।

१।२ लावी के बेटे गरशून, कोहास और मरारी। और कोहास के बेटे अमराम इसहार और हबरुन और अजईल।
३ और अमराम के सन्तान हारुन और मूसा और मरियम, हारुन के बेटे भी नादाब और आबीहू इलियाज़र और
४ इसामार। इलियाज़र से फनिहाज़
५ फ़निहाज़ से अबीशूआ उत्पन्न हुआ। और अबीशूआ से
६ बुक्की और बुक्की से ऊज़्ज़ी उत्पन्न हुआ। और ऊज़्ज़ी से ज़राहिया

७ और ज़राहिया से मरायूस उत्पन्न हुआ। मरायूस से
८ अमारियाह और अमारियाह से अहीतूब उत्पन्न हुआ। और
अहीतूब से सादूक और सादूक से अहीमाज़ उत्पन्न हुआ।
९ और अहीमाज़ से अज़रिया और अज़रिया से यूहानान उत्पन्न
१० हुआ। और यूहानान से अज़ारिया उत्पन्न हुआ वुह उस
मन्दिर में जो सुलेमान ने यिरोशलीम में बनाया याजक के
११ पद का कार्य करता था। और अज़रिया से अमरिया और
१२ अमरिया से अहीतूब उत्पन्न हुआ। और अहीतूब से सादूक
१३ और सदूक से शलूम उत्पन्न हुआ। और शलूम से हिलकिया
१४ और हिलकिया से अजरिया उत्पन्न हुआ। और अजरिया
से सिराया और सिराया से यिहोसादाक उत्पन्न हुआ।
१५ जिस समय कि परमेश्वर नबूकदनज़ार के द्वारा से यहूदा
और यिरोशलीम को लेगया उस समय इहोसादक गया।
१६ लावी के बेटे गरशूम, कोहास और मरारी। और
१७।१८ ये गरशूम के बेटों का नाम लिबनी और शमई। और
कोहास के बेटे अमराम और यिसहार और हबरून और
१९ अज़ईल। मरारी के बेटे महली और मूशी उनके पितरों के
२० समान ये लावी के घराने हैं। गरशूम से लिबनी उसका बेटा
२१ यहास उसका बेटा जिमाह उसका बेटा। योआह उसका बेटा
इदू उसका बेटा ज़िराह उसका बेटा यातरई उसका बेटा।
२२ कोहास के बेटे, उसका बेटा आमीनादाब उसका बेटा कोराह
२३ उसका बेटा आसीर उसका बेटा। एलकानः उसका बेटा
२४ एबीयासाफ़ उसका बेटा असीर उसका बेटा। ताहास उसका
बेटा ऊरीएल उसका बेटा उज़्ज़िया उसका बेटा शाऊल उसका
२५ बेटा। और एलकाना के बेटे अमासई और अहीमोस।
२६ एलकाना के ये बेटे हैं सोफ़ाई उसका बेटा नहास उसका बेटा।
२७ एलिआब उसका बेटा यिरोहाम उसका बेटा एलकानः उसका
२८ बेटा। समुईल के बेटे, पहिलौठा वश्नी और अबियाह।

२९ मिरारी के बेटे महली और लिबनी उसका बेटा शिमई
३० उसका बेटा ऊज्ज़ा उसका बेटा। शिमिया उसका बेटा हगिया
३१ उसका बेटा असाया उसका बेटा। जब कि मंजूषा
ने ईश्वर के मन्दिर में बिश्राम पाया था ये वे हैं जिन्हें दाऊद ने
३२ गाने की सेवा पर ठहराया। जबलों सुलेमान ने यिरोशलीम में
परमेश्वर का मन्दिर न बनाया वे मंडली के तंबू के स्थान के आगे
गाने की सेवा करते थे और वे अपने पद की पारी के समान
३३ सेवा में रहते थे। और ये वे हैं जो अपने बालक सहित
रहते थे कोहासियों के बेटों में से शिमुईल का बेटा ओईल उसका
३४ बेटा हीमान गायक। एलकाना का बेटा यिरोहाम का बेटा
३५ इलईल का बेटा तोआ का बेटा। जूफ का बेटा एलकाना का बेटा
३६ महास का बेटा अमासाई का बेटा। एलकाना का बेटा यूएल का
३७ बेटा अजरिया का बेटा सफनिया का बेटा। तहास का बेटा
३८ असीर का बेटा अबियासाफ का बेटा कोरा का बेटा। इजहार
का बेटा कोहास का बेटा लावी का बेटा इसराईल का बेटा।
३९ और उसका भाई असाफ़ जो उसकी दहिनी ओर खडा होता था
४० बराकिया का बेटा असाफ शिमिया का बेटा। मिकाएल का बेटा
४१ बासिया का बेटा मलकिया का बेटा। एसनी का बेटा ज़िराह
४२ का बेटा अदाया का बेटा। ईसान का बेटा जिम्माह का बेटा
४३ शमई का बेटा। जहास का बेटा गरशूम का बेटा लावी का बेटा।
४४ और उनके भाई जो मरारी के सन्तान थे जो बांए हाथ खड़ा
होता था ईसान का बेटा किशी का बेटा अबदी का बेटा मलूक
४५ का बेटा। हशाबिया का बेटा अम्माजिया का बेटा हिलकिया
४६ का बेटा। अमसी का बेटा बनी का बेटा शामार का बेटा।
४७ महली का बेटा मूशी का बेटा मरारी का बेटा लावी का बेटा
४८ और लावियों के भाई भी परमेश्वर के मन्दिर के तंबू की हर
४९ प्रकार की सेवा के लिये ठहराये गये। परन्तु
हारून और उसके बेटे होम की बेदी और धूप की बेदी के

लिये और सकल महा पवित्र कर्म्म के लिये और ईश्वर के सेवक मूसा ने जो जो आज्ञा किई थी उनके समान इसराईल के
५० कारण प्रायश्चित्त करने के निमित्त ठहराये गये थे। और हारून के बेटे ये इलियाज़र उसका बेटा फिनिहास़ उसका बेटा
५१ अबीशूआ उसका बेटा। बुक्की उसका बेटा ऊज़ी उसका
५२ बेटा ज़राहिया उसका बेटा। मराऊस उसका बेटा अमरिया
५३ उसका बेटा अहीतूब उसका बेटा। सादूक उसका बेटा
५४ अहीमाज़ उसका बेटा। अब उनकी बसगित उनके सिवानों के सारे गढ़ों में कोहास के घरानों में के
५५ हारून के बेटे ये हैं क्योंकि भाग उन्हीं का था। और उन्हों ने यहूदा की भूमि में हबरून और उसकी चारों ओर के आस
५६ पास समेत उन्हें दिया। परन्तु नगर के खेत और उनके
५७ गांव उन्हों ने यफुन्ना के बेटे कालिब को दिये। और हारून के बेटों को यहूदा के नगर दिये अर्थात शरण के लिये हबरून और लबना उसके आस पास समेत और यतिर और
५८ इश्तिमुआ उनके आस पास समेत। और हीलन उसके
५९ आस पास समेत और दबिर उसके आस पास समेत। और आशान उसके आस पास समेत और बैतशमश उसके आस
६० पास समेत। और बनियामीन की गोष्ठी में से गबा उसके आस पास समेत और अल्लीमेस उसके आस पास समेत और अनासूस उसके आस पास समेत उनके सारे नगर उनके घरानों
६१ में तेरह नगर। उस गोष्ठी के घराने से बचे हुए कोहास के बेटों को आधी गोष्ठी में से मनस्सा की आधी गोष्ठी में
६२ से चिट्ठी डालके दस नगर। और गरशूम के बेटों को उनके सारे घरानों में यसाखार की गोष्ठी में से और अशर की गोष्ठी में से और नफताली की गोष्ठी में से और बाशान में मनस्सा की
६३ गोष्ठी में से तेरह नगर। मरारी के बेटों को उनके सारे घरानों में राऊबीन की गोष्ठी में से और जाद की गोष्ठी में से और

६४ जबुलून की गोष्ठी में से चिट्ठी डालके बारह नगर। और इसराईल के सन्तानों ने लावियों को ये ये नगर उनके आस पास समेत दिये।
६५ और यहूदा के सन्तान की गोष्ठी में से और शमऊन के सन्तान की गोष्ठी में से और बनियामीन के सन्तान की गोष्ठी में से चिट्ठी
६६ डालके ये ये नगर जिनके नाम लिये जाते हैं दिये गये। और कोहास के बेटों के घरानों ने अपने सिवानों में अफराईम की गोष्ठी
६७ में से नगर पाये थे। और उन्हों ने अफराईम पहाड़ में शकीम उसके आस पास समेत और गज़र भी उसके आस पास समेत
६८ उन्हें शरण नगर के लिये दिये। और येकमियम उसके
६९ आस पास समेत बैतहूरन उसके आस पास समेत। अजालून उसके आस पास समेत और गासरमून उसके आप पास
७० समेत। और मनस्सा की आधी गोष्ठी में से अनर उसके आस पास समेत और बिलियम उसके आस पास समेत ये
७१ कोहास के बेटों के उबरेऊए घरानों को दिये गये। गरशूम के बेटों को मनस्सा की आधी गोष्ठी में से बाशान में गोलान उसके आस पास समेत और अशतरूस उसके आस पास
७२ समेत। और यसाखार की गोष्ठी में से कादश उसके आस
७३ पास समेत दबिरास उसके आस पास समेत। और रामूस उसके आस पास समेत और अनेम उसके आस पास
७४ समेत। और अशर की गोष्ठी में से माशाल उसके आस
७५ पास समेत और अबदून उसके आस पास समेत। और हकूक उसके आस पास समेत और रहूब उसके आस पास
७६ समेत। नफ़ताली की गोष्ठी में से जलील में कादश उसके आस पास समेत और हमून उसके आस पास समेत और
७७ करियासाईम उसके आस पास समेत। और मरारी के उबरे ऊए सन्तान ज़बलून की गोष्ठी में से रिमून उसके आस
७८ पास समेत ताबूर उसके आस पास समेत। और अरीहा के लग अर्दन के उस पार अर्थात अर्दन की पूर्ब्ब ओर राऊबीन

की गोष्ठी में से अरन्य में बज़र उसके आस पास समेत और
७९ याहजा उसके आस पास समेत। कदीमूस भी उसके आस पास
८० समेत और मफ़ास उसके आस पास समेत। और जाद की
गोष्ठी में से गिलियाद में रामूस उसके आस पास समेत और
८१ महानाईम उसके आस पास समेत और। हश्बून उसके
आस पास समेत और याजीर उसके आस पास समेत।

७ सातवां पर्ब्ब।

यसाख़ार के सन्तान १—५ बनियामीन के सन्तान
६—१२ नफ़ताली और मनस्सा के सन्तान
१३—१९ अफराईम के सन्तान और उनके निवास
२०—२९ अशर के सन्तान ३०—४०।

१ अब यसाख़ार के बेटे तोला और पूआह और याशूब और
२ शिमरून चार। और तोला के बेटे ऊज़ी और रिफायाह
और यिरीईल और यानई और इबसाम और शिमूईल
अपने पिता तोला के घराने के श्रेष्ठ जो अपने बंश में बड़े पराक्रमी
बीर दाऊद के समय में गिनती में बाईस सहस्र छः सौ थे।
३ और ऊज़ी के बेटे इजराहिया और इजराहिया के बेटे
मीकाईल और उबदिया और योईल और इश्शीयाह पांच सब
४ श्रेष्ठ थे। और उनके संग उनकी बंशावलियों के समान
उनके पितरों के घराने की रीति पर संग्राम के लिये योद्धा की
जथा में छत्तीस सहस्र क्योंकि उनकी बहुतसी पत्नियां और बेटे
५ थे। और उनके भाई बन्द यसाखार के सारे घरानों में बड़े
पराक्रमी बीर थे जो अपनी सारी पीढ़ियों में सत्तासी सहस्र
६ जन गिने गये थे। बनियामीन के बेटे
७ बला और बिकर और यदियल, तीन। बला के बेटे एसबून
और ऊज़ी और ऊज़ीएल और यिरीमूस और ईरी पांच
अपने पिता के घराने के श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी लोग और अपनी

८ बंशावलियों में बाईस सहस्र चौंतीस गिनती में थे। और बिकर के बेटे ज़मिरा और युआश और इलियाज़र और इलियूनाई और उमरी और यिरीमूस और अबियाह और अनासूस और
९ अलामेस ये सब बिकर के बेटे। और उनकी बंशावली के समान उनकी पीढ़ी की रीति अपने पितरों के घराने के श्रेष्ठ उनकी गिनती बीस सहस्र दो सौ जन जो बड़े पराक्रमी बीर
१० थे। और यदईल के बेटे बिलहान और बिलहान के बेटे योऊश और बनियामीन और यहूद और किनानह और जीसान
११ और तरशीश और अहीशाहर। ये सब यदिईल के बेटे अपने पितरों में श्रेष्ठ बलवन्त बीर सत्रह सहस्र दो सौ
१२ संग्राम करने के योग्य। और शूप्पिम भी और हुप्पिम ईर के
१३ सन्तान और हुशिम अहीर के बेटे। नफ़ताली के बेटे यहजिएल और गुनी और इजर और शालूम बिलहा
१४ के बेटे। मनस्सा के बेटे अश्रीएल जिसे वुह जनी परन्तु उसकी दासी अरामीनी जलियाद के पिता माकिर
१५ को जनी। और माकिर ने ऊप्पिम और शुप्पिम की बहिन से, जिसका नाम माका था बियाह किया और दूसरी का नाम
१६ जिलोफिहाद और जिलोफिहाद की बेटियां थीं। और माकिर की पत्नी माकाई एक बेटा जनी और उसका नाम पारेश रक्खा और उसके भाई का नाम शारेश और उसके बेटे ऊलाम और
१७ राकिम। और ऊलाम के बेटे बिदान ये मनस्सा के बेटे माकिर
१८ के बेटे गिलियाद के बेटे थे। और उसकी बहिन हमोलीकीस
१९ ईशहोद को और अबईज़र को और महाला को जनी। और शिमीदा के बेटे अहीआन और शिकेम और लिखी और
२० अनिआम। और अफ़राईम के बेटे शुसीलाह और उसका बेटा बेरेद और उसका बेटा तहास और उसका
२१ बेटा इलादः और उसका बेटा तहास। और उसका बेटा ज़ाबाद और उसका बेटा शुसीला और उसका बेटा येजेर

और इलियाद जिन्हें गास के लोग जो उस देश में उत्पन्न हुए थे मारडाला इस कारण कि वे उनके ढोर लेने को उतर
२२ आये थे। और उनके पिता अफ़राईम ने बहुत दिन लों शोक किया और उसके भाई उसे शान्ति देने को आये।
२३ वुह अपनी पत्नी के पास गया और वुह गर्भिणी होके बेटा जनी और उसका नाम बेरियाह रक्खा इस लिये कि
२४ उसके घर पर बिपत्ति पड़ी थी। और उसकी बेटी शीरा जिस ने ऊपर नीचे का बेतहूरुन और उज़्ज़ेनशीरा बनाये।
२५ उसका बेटा रीफाह और रीशेफ भी और उसका बेटा तीलाह
२६ और उसका बेटा तीहान। उसका बेटा लादान उसका बेटा
२७ आमीहूद उसका बेटा इलीशमा। उसका बेटा नून उसका
२८ बेटा यिहोशुआ। और उनके अधिकार और निवास बैतईल और उसके गांव और पूर्ब्ब ओर नारान और पश्चिम ओर गज़र और उसके गांव और शिकम भी और
२९ उसके गांव गज़र और उसके गांव लों। और मनस्सा के सन्तान के सिवाने के लग बैतशियान और उसके गांव तानाक और उसके गांव मगद्दो और उसके गांव दोर और उसके गांव, इनमें इसराईल के बेटे यूसफ़ के सन्तान बसे।
३० अशर के बेटे यिमना और इसुआ और यिशुआई और बिरिया
३१ और उनकी बहिन सीराह। और बिरिया के बेटे हिबर और
३२ मलकीयेल जो बीरसविस का पिता था। और हिबर से यफ़लत और शोमेर और हूसाम और उनकी बहिन शुआ उत्पन्न
३३ हुए। और यफ़लत के बेटे पासक और बिमहाल और
३४ अशवात ये यफ़लत के सन्तान। और शमर के बेटे आही
३५ और रुहगा और यहुब्बा और अराम। और उसके भाई हेलम के बेटे सोफ़ह और इमना और शेलेश और आमाल।
३६ सोफ़ाह के बेटे सूआह और हरनिफर और शुआल और
३७ बेरी और इमरा। बिजर और हूद और शम्मा और शिलशा

३८ और इसरान और बीरा। यतर के बेटे यिफ़न्नी और पिसणा
३९ और आरा। और उल्ला के बेटे आराह और हनियेल और
४० रिज़िआ। ये सब अशर के सन्तान पिता के घराने के श्रेष्ठ चुनेऊए और बड़े पराक्रमी और अध्यक्षों में श्रेष्ठ और सारी बंशावली में जो संग्राम में निपुण थे गिनती में छब्बीस सहस्र जन थे।

८ आठवां पर्ब्ब।

बनियामीन के सन्तान और प्रधान १—३२ साऊल के सन्तान ३३—४०।

१ और बनियामीन से उसका पहिलौंठा बीला उत्पन्न ऊआ
२ दूसरा अशबेल तीसरा आहारा। चौथा नोहाह और पांचवां
३ राफ़ा। और बेला के बेटे अदार और गेरा और अबीहूद।
४।५ और अबीशूआ और नआमान और आहोआ। और
६ गेरा और शेफूफान और हूराम। और ये यहूद के बेटे और गेबा के बासी के पितरों के श्रेष्ठ और उन्हों ने उन्हें
७ मानाहस में उठा दिया। और उसने नामान को और अहियाह को और गेरा को वहां से उठा दिया और उससे
८ अज़्ज़ा और अहीहूद उत्पन्न ऊए। और उन्हें भेज देने के पीछे शहाराईम में मवाब के देश में बालक उत्पन्न ऊए हशीम
९ और बारा उसकी पत्नियां थीं। और उसकी पत्नी होदेशसे
१० यूबान और सिबिआ और मीशा और मलकाम। और जीऊज़ और शाकियाह और मरमा उत्पन्न ऊए ये उसके बेटे
११ अपने पितरों में श्रेष्ठ। और हशीम से अहीतूब और इलपाल
१२ उत्पन्न ऊए। और इलपाल के बेटे ईबर और मिशआम और शामद जिन्हों ने ओनो और लोद उनके आस पास के
१३ गांव बसाये। और बिरियाह भी और शमा जो अजालून के बासियों के पितरों में श्रेष्ठ जिन्हों ने गास के बासियों को

१४ छेद दिया। और अहीओ और शाशक और इरीमूस।
१५।१६ और ज़बदिया, और अराद और अदर। और
१७ मिकाएल और इसपा और यूहा ये बिरिआह के बेटे। और
१८ ज़बदिया और मिशुल्लाम और हिज़की और हबर।
यिश्मराई भी और जज़लिया और यूबाब ईलपाल के बेटे।
१९।२० और याकीम और ज़िकरी और ज़बदी। और इलीनाई
२१ और ज़िलथई और एलीएल। और अदाया और बेरायाह
२२ और सिमरास ये शिमही के बेटे। और इश्पान और हिबर
२३ और एलीएल। अबदोन और ज़िकरी और हानान।
२४ और हनानियाह और ईलाम और अंतोसिया। इफ़िदियः
२५।२६ और पिनूईल ये शाशाक के बेटे। और शमशिरई और
२७ शिहारियाह और अथालियाह। और यारीसियाह और
२८ इलियाह और ज़िकरी ये इरोहाम के बेटे। इन्हों ने अपनी
अपनी बंशावली के समान अपने पितरों में श्रेष्ठ यिरोशलीम
२९ में बास किया। और गबियून में गबियून का पिता बसा
३० उसकी पत्नी का नाम मश्राका। और उसका पहिलांठा बेटा
३१ अबदून और सूर और कीश और बाल और नादाब। और
३२ गिदोर और अहीऊ और ज़कर। और मिकलूस से शिमिया
उत्पन्न हुआ और ये भी यिरोशलीम में अपने भाइयों समेत
३३ उनके साम्ने बसे। और नर से कीश उत्पन्न
हुआ और कीश से साऊल और साऊल से यूनासान और
३४ मलकीशूअ और अबीनादाब और इश्बाल। और यूनासान
के बेटे मिरिब्बाल और मिरिब्बाल से मीका उत्पन्न हुआ।
३५ और मीका के बेटे पीसून और मेलेक और तरेआ और
३६ आहाज़। और आहाज़ से यिहोआदा उत्पन्न हुआ और
यिहोआदा से इलिमेस और अज़मावेस और ज़मरी उत्पन्न
३७ हुए और ज़मरी से मूज़ा उत्पन्न हुआ। और मूज़ा से बिनिआ
उत्पन्न हुआ उसका बेटा राफ़ा उसका बेटा इलियासा उसका

३८ बेटा अज़ल। और अज़ल के छः बेटे थे जिनके ये नाम अजरीकाम, बुकीरु और इश्माईल और शिअरियाह और ३९ उबदिया और हानान ये सब अज़ल के बेटे। और उसके भाई ईशक के बेटे ऊलाम उसका पहिलौंठा और दूसरा यिऊश ४० और तीसरा इलोफिलत। ये ऊलाम के बेटे बड़े पराक्रमी धनुषधारी थे और बहुतसे बेटे और पोते रखता था ये सब डेढ़ सौ बनियामीन के बेटे।

९ नवां पर्ब्ब।

इसराईल की और यहूदा की बंशावली लिखने का आरंभ १ बन्धुआई से आके देश में रहना यिरोशलीम में वास करना २—९ याजक और लावी और उनकी सेवा का समाचार १०—३४ साऊल का घराना ३५—४४।

१ इसी रीति से सारे इसराईल बंशावली बंशावली गिने गये और देखो वे इसराईल के और यहूदा के राजाओं की पुस्तक में लिखे २ ऊए थे जो अपने पापों के कारण बाबुल में उठाये गये। अब अगिले बासी जो उनके नगरों और अधिकारों में बसते थे सो इसराईली ३ और याजक और लावी और नथीमी थे। और यिरोशलीम में यहूदा के सन्तान और बनियामीन के सन्तान और ४ अफ़राईम और मनस्सा के सन्तान रहते थे। यहूदा के बेटे फ़ारिज़ के सन्तान के बनी के बेटे इमरी के बेटे उमरी के ५ बेटे अमीहूद के बेटे यूथाई। और शीलूनियों का पहिलौंठा ६ असाया और उसके बेटे। और जीरा के बेटे जूईल और ७ उसके भाई बन्द छः सौ नब्बे। और बनियामीन के बेटे हसीनूआह ८ के बेटे होदाबिया के बेटे मिशुल्लम के बेटे सलू। और यिरोहाम के बेटे इबनियाः और मिकरी के बेटे ऊजीया के बेटे ईलाह और इबनीजा के बेटे रिऊईल के बेटे शिफाथिया के बेटे मिशुल्लम।

९ और उनकी बंशावली के समान उनके भाईबन्द नव सौ छप्पन ये सब अपने अपने पितरों के घराने में पितरों के प्रधान
१० थे। और याजकों में से जिदाइया और
११ जिहाइयारिब और जाकिन। और ईश्वर के मन्दिर के आज्ञाकारी अहीतूब का बेटा मरायूत का बेटा सादूक का बेटा मिशुल्लम
१२ का बेटा हिलकिया का बेटा अज़रिया। और मलकिया का बेटा पाशूर का बेटा जह्लराम का बेटा अदायः और इम्मर के बेटे मिशिल्लिमिस का बेटा मिशुल्लम का बेटा जहीरा का बेटा अदईल
१३ का बेटा मअासिया। और उनके भाई बन्द अपने अपने पितरों के घराने के प्रधान एक सहस्र सात सौ साठ ये ईश्वर के मन्दिर
१४ के कार्य्य के लिये महा बीर थे। और लावियों में से मिरारीयों के बेटों में से हशाबिया का बेटा अज़रिकाम
१५ का बेटा हाशूब का बेटा शमाया। और बकबकर और हरेश और गालाल और आसाफ़ का बेटा ज़िकरी का बेटा मीका का
१६ बेटा मतनिया,। और जदूथून का बेटा गालाल का बेटा शिमाइया का बेटा उबदिया और निटोफातियों के गांओं के
१७ बासी एलकाना का बेटा आसा का बेटा बराखियाह। और शल्लूम और अक्कूब और टलमून और अहीमान और उनके
१८ भाई बन्द द्वारपाल और शल्लूम श्रेष्ठ था। जो अबलों पूर्ब्ब ओर राजा के फाटक में रहता था और वे लावियों के सन्तान
१९ की जथाओं में द्वारपाल थे। और कोराह का बेटा इबियासाफ़ का बेटा कोर का बेटा शल्लूम और उसके पिता के घराने के भाई बन्द जो कोराही थे सेवा के कार्य्य पर और तंबू के डेवढ़ीदार थे और उनके पितर परमेश्वर की सेना पर और प्रवेश के रक्षक
२० थे। इलियाज़र का बेटा फनिहाज़ पिछिले दिनों में उनपर आज्ञाकारी था और परमेश्वर उसके साथ था। और
२१ मिशिलीमिया का बेटा जकरिया मंडली के तंबू का द्वारपाल
२२ था। ये सब फाटकों के लिये दो सौ बारह चुने गये ये अपनी

अपनी वंशावली में और गाओं में गिने गये जिन्हें दाऊद और समुएल दर्शी ने उनके कार्यों में ठहराया था। सो वे और
२३ उनके सन्तान परमेश्वर के मन्दिर के फाटकों पर थे अर्थात् तंबू
२४ के घर के टोले टोले। द्वारपाल चौदिशा थे अर्थात् पूर्व पश्चिम
२५ उत्तर दक्षिण की ओर। और उनके गाओं में भाई बन्द अब तब सात दिन पीछे उनके साथ आते थे। क्योंकि ये लावी चार
२६ प्रधान द्वारपाल अपने अपने कार्य्य में रहते थे और परमेश्वर की कोठरियों और ईश्वर के मन्दिर के भंडारोंपर थे। और
२७ वे ईश्वर के मन्दिर की चारोंओर इस कारण रहते थे कि बोझ उन पर और हर विहान उसका खोलना उन्हीं से था। और
२८ उनमें से सेवा के पात्रों के रक्षक थे जिसतें वे उन्हें बाहर भीतर
२९ गिन गिनके लेआवें लेजायं। और उनमें से भी पवित्र स्थान के पात्र और समस्त हथियार और चोखा पिसान और दाखरस और तेल और लोबान और सुगन्ध द्रव्य के देखने के
३० लिये ठहराये गये थे। और याजक के बेटों में से कितने
३१ सुगन्ध द्रव्य का तेल पेरते थे। और लावियों में से मटथिया जो अहीशालूम कोराही पहिलौंटा था वे वस्तें उसी के वंश में
३२ थीं जो थालों में बनती थीं। और कोहाती के बेटों में से उनके भाई बन्द हर विश्राम को भेंट की रोटी सिद्ध करने पर
३३ थे। और ये लावियों के पितरों के प्रधान गायक थे कोठरियों में निर्बन्ध रहते थे क्योंकि कार्य दिन रात उन्हीं पर था।
३४ लावियों के पितरों के ये प्रधान अपनी अपनी पीढ़ियों में प्रधान
३५ यिरोशलीम में रहते थे। और गिबिऊन का पिता जईएल गिबिऊन में रहता था उसकी पत्नी का नाम
३६ मअ़ाका। और उसका पहिलौंटा बेटा अबदून तब सूर और कीश और बाल और नर और नादाब। और गिदूर और
३७ अहीओ और जकरिया और मिकलूस। और मिकलूस से
३८ शिमिआम उत्पन्न हुआ और वे भी अपने भाइयों के साथ

यिरोशलीम में अपने भाइयों के सन्मुख रहते थे। और नर
३९ से कीश उत्पन्न हुआ और कीश से साऊल उत्पन्न हुआ और
साऊल से यूनासान और मलकीशूआ और अबीनादाब और
४० इश्बाअल उत्पन्न हुए। और यूनासान के बेटे मिरिब्बाल और
४१ मिरिब्बाल से मीका उत्पन्न हुआ। और मीका के बेटे पीसून
४२ और मलक और तहरिया। और अहाज़ से जारा उत्पन्न
हुआ और जारा से अलिमेस और अजमावेस और ज़िमरी
उत्पन्न हुए और ज़िमरी से मूजा। और मूजा से बिनिया उत्पन्न
४३ हुआ और उसका बेटा रिफाइया उसका बेटा इलियासाह
४४ उसका बेटा आजिल। और आजिल के छः बेटे थे जिनके ये
नाम अजरीकाम बुखीरू और इश्माईल और शिआरियाह
और उबदिया और हानान ये अजिल के बेटे।

१० दसवां पर्ब्ब।

साऊल का हार जाना और मृत्यु १—७ फलस्तानी
का उसके लोथ की दुर्दशा करना याबश जलियादी
का उसकी और उसके बेटे की लोथों को छुड़ा लाना
८—१२ साऊल का पाप और दाऊद का राज्य
पाना १३—१४।

१ अब फलस्तानी इसराईल से लड़े और इसराईल फलस्तानियों
के आगे से भागे और गिलबूआ पर्ब्बत में जूझ गये। और
२ फलस्तानी साऊल के और उसके बेटे के पीछे पीछे धाये गये
और फलस्तानियों ने साऊल के बेटे यूनासान को और
अबीनादाब को और मलकिशुआ को मार डाला। और
३ संग्राम साऊल के विरुद्ध हुआ और धनुष धारियों ने उसे
४ मारा और धनुष धारियों के से घायल किया गया। तब
साऊल ने अपने शस्त्र धारी से कहा कि अपनी तलवार खींच
के मुझे गोद दे ऐसा नहो कि ये अख़तने आके मेरा

अपमान करें परन्तु उसके अस्त्र धारी ने न माना क्योंकि वुह
५ डर गया तब साऊल एक तलवार लेके उसपर गिरा। साऊल
को मृतक देखके उसका अस्त्र धारी भी उसी रीति से अपनी
६ तलवार पर गिरके मर गया। सो साऊल और उसके
७ तीन बेटे और उसके सारे घराने एक साथ मर गये। और
जब इसराईल के सारे मनुष्यों ने, जो तराई में थे, देखा कि वे
भाग गये और साऊल और उसके बेटे मर गये तब वे अपने
अपने नगरों को छोड़ छोड़ भाग गये और फलस्तानी आके
८ उनमें बसे। और दूसरे दिन ऐसा ऊआ कि
जब फलस्तानी जूझे ऊओं को उघारने आये तब उन्हों ने
गिलबूआ पर्वत पर साऊल को और उसके बेटों को पड़े पाया।
९ और उसे उघारके उसके सिर को और उसके अस्त्र को लेके
फलस्तानियों के देश में चारों ओर भेजा जिसतें उनकी मूर्तिन के
१० और लोगों के पास सन्देश पक्षंचावे। और उन्हों ने अपने देवों
के मन्दिर में उसके अस्त्र को रक्खा और दागून के मन्दिर में
११ उसे लटका दिया। और जब सारे याबश जिलियाद ने
१२ सब कुछ सुना जो फलस्तानियों ने साऊल से किया था। तब
सारे बीर उठे और साऊल की लोथ और उसके बेटों की
लोथें लिईं और उन्हें याबश में लाये और याबश में बलूत के
पेड़ तले उनकी हड्डियां गाड़ीं और सात दिन लों ब्रत किया।
१३ सो साऊल अपने पाप के लिये मर गया जो उसने ईश्वर के
बिरुद्ध अर्थात् ईश्वर के बचन के बिरुद्ध किया जो उसने न माना
१४ और भुतही से बूझने के लिये भी। और उसने परमेश्वर से न
बूझा इसलिये उसने उसे मारा और यशी के बेटे दाऊद की
ओर राज्य को फेर दिया।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

दाऊद का सारे इसराईल पर राज्य पाना १—३ सैहून के गढ़ लेना ४—९ उसके बीरों के नाम १०—४७।

१ तब सारे इसराईल ने हबरून में दाऊद पास एकट्ठे होके कहा कि
२ देखिये हम आपके हाड़ मांस। और अधिक कल परसों अर्थात् जब साऊल राजा था तब इसराईल को आप बाहर भीतर लेआया जाया करते थे और आपके ईश्वर परमेश्वर ने आप को कहा कि तू मेरे इसराई लोगों को चराना और तू हमारे
३ इसराईल लोगों का अध्यक्ष होगा। इसलिये इसराईल के सारे प्राचीन हबरून में राजा पास आये और हबरून में दाऊद ने परमेश्वर के आगे उनसे नियम किया और समुईल के द्वारा से परमेश्वर के बचन के समान उन्हों ने दाऊद को
४ इसराईल पर राज्याभिषेक किया। और दाऊद और सारे इसराईल यिरोशलीम को, जो यबूस है
५ गये जहां देश के बासी यबूसी थे। और यबूस के वासियों ने दाऊद से कहा कि तू यहां आने न पावेगा तथापि दाऊद ने
६ सैहून के गढ़ को लिया वही दाऊद का नगर हुआ। और दाऊद ने कहा कि जो कोई पहिले यबूसियों को मारेगा सो श्रेष्ठ और सेनापति होगा तब जुराया का बेटा यूआब पहिले
७ चढ़ गया और श्रेष्ठ हुआ। और दाऊद ने गढ़ में बास किया
८ इसलिये उन्हों ने उसका नाम दाऊद का नगर रक्खा। और उसने नगर को चारों ओर अर्थात् मिल्लू से चारों ओर बनाया
९ और यूआब ने नगर के रहे हुए को सुधारा। और दाऊद बढ़ता गया क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर उसके साथ था।
१० और दाऊद के शूरों के श्रेष्ठ भी ये हैं जो इसराईल के विषय में परमेश्वर के बचन के समान उसे राजा बनाने के लिये

११ दृढ़ता से सारे इसराईल के संग उसे पिलचा रहा। और दाऊद के शूर की गिनती यह है यशोबियम एक हकमूनी प्रधानों में श्रेष्ठ उसने तीन सहस्र पर अपना भाला उठाके एकही समय में उन्हें
१२ मारा। और उसके पीछे अहोहीदोदो का बेटा इलियाज़र
१३ जो तीन शूरों में एक। वुह दाऊद के साथ पासदमीम में था जहां फलस्तानी संग्राम के लिये एकट्ठे हुए थे उस स्थान में जव भरा हुआ था और लोग फलस्तानियों के आगे से भागे। और
१४ उन्हों ने उस खेत में खड़े होके उसे छुड़ाया और फलस्तानियों को मारा और परमेश्वर ने बड़े बचाव से उन्हें बचाया।
१५ सो तीसों के प्रधान तीन जन अदुल्लम की कन्दला से दाऊद पास चटान को गये और फलस्तानियों की सेना रिफाईम की तराई
१६ में छावनी किये हुए थी। और उस समय दाऊद गढ़ में था
१७ और फलस्तानियों का थाना बैतुल्लहम में। तब दाऊद ने बड़ी लालसा से कहा हाय कि कोई मुझे बैतुल्लहम के फाटक के कूए
१८ का जल पिलाता। तब उन तीनों फलस्तानियों की सेना को तोड़ के बैतुल्लहम के फाटक के कूए का जल खींचा और दाऊद पास लाये परन्तु दाऊद ने उसे न पीया पर उसे परमेश्वर
१९ के निमित्त उंडेला। और कहा कि मेरा ईश्वर न करे कि मैं ऐसा करों क्या मैं इन मनुष्यों के लोहू को पीओं जो अपना अपना प्राण जोखिम में लाये क्योंकि उन्हों ने अपने अपने प्राण के जोखिम से उसे लाये इसलिये उसने न पीया यह कार्य इन
२० तीन बलवन्तों ने किया। और यूआब का भाई अबीशाई उन तीनों का प्रधान था क्योंकि उसने तीन सौ
२१ पर भाला उठाके उन्हें घात किया और तीनों में नामी था। उन तीनों में वुह दो से प्रतिष्ठित था क्योंकि वुह उनका प्रधान था
२२ तथापि वुह अगिले तीन लों न पहुंचा। कबज़ईल के शूर का बेटा युहायदा का बेटा बनाया जो कार्य में महान था उसने सिंह तुल्य मवाबी दो जन को घात किया उसने पाले के दिन में भी

२३ उतर के एक गड़हे में सिंह को मार डाला। और उसने नपे ऊए पांच हाथ के एक मिसरी को मार डाला और उस मिसरी के हाथ में जोलाहे के तूर के समान भाला था परन्तु वुह एक लट्ठ लेके उसपर उतरा और भाले को उसके हाथ से
२४ छीन लिया और उसी के भाले से उसे मार डाला। युह‌यदा के बेटे बनाया ने ये वे कार्य्य किये और तीन शूरों में नामी था।
२५ देखो वुह तीसों में प्रतिष्ठित था परन्तु अगिले तीन लों न पऊंचा और दाऊद ने उसे अपने पहरे पर रक्खा।
२६ सेनाओं के भी शूर यूआब का भाई असाहिल बैतुल्लहमी
२७ दूदू का बेटा इलहानान। हरोती शमूस पिलूनी हिलीस।
२८।२९ टिकोई इक्कीश का बेटा एरा अनतोती अबियसर। हूशाती
३० सिब्बकई अहोही इलई। निटोफाती महाराई निटोफाती
३१ बअना का बेटा हीलद। बनियामीनी सन्तानों के यबिया के
३२ रिबई का बेटा ईसई पीरासूनी बनाया। गाश की नालियों
३३ का ऊरई अर्बती अबईल। बहरूमी असावे शअलबूनी
३४ इलिअहबः। गिजूनी हाशम के बेटे हररी शाग का बेटा
३५ यूनासान। हरारी साकार का बेटा अहियाम ऊर का बेटा
३६।३७ एलीफाल। मिकेराती हेफेर पिलूनी अहीजा। करमली
३८ हसरू यसबा का बेटा नाराई। नासान का भाई यूएल हगरी
३९ माभार। अमूनी जिलक बेरोती महाराई सरूया के बटे
४०।४१ यूआब का शस्त्रधारी। इथरी ऐरा इथरी गारेब। हत्ती
४२ ओरिया अहलाई का बेटा साबाद। राओबीनी शीज़ा का बेटा अदीना राओबोनियों का एक प्रधान और उसके संग
४३ तीस जन। मअ़का का बेटा हानान और मितनी यूशाफ़ाट।
४४ अशतिराती ऊज़्ज़िया अरूईरी होसान के बेटे जईयल औरशामा।
४५ शिमरी जदियाईल उसका भाई जोहा तीसीती। महावी इलईल
४६ और इलनआम के बेटे यूशाविया और यरीबाई और मोआबी
४७ इसमाह। एलीयेल और ओबेद और मिसोबाती यसियल।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

अथा अथा का दाऊद पास आना १—२२ हथियार बन्द का हबरून में दाऊद पास आना २३—४०।

१ ये वे हैं जो ज़िकलाग में दाऊद पास आये जब वुह कीश के बेटे साऊल के कारण बन्द किये ऊए था और वे शूरों में संग्राम
२ में सहायक थे। वे धनुष से लैस थे और पत्थरों को दहिने बांये हाथ से और बाणों को धनुष से मार सकते थे जो बनियामीनी
३ साऊल के भाई बन्द में से थे। अहईजर प्रधान गिबियासी शिमाह के बेटे यूआश और अज़मावेत के बेटे यलाट और
४ अजाईल और अनतोसी याह्न और बराका। गबियूनी इसमाया तीसों में शूर और तीसों का प्रधान और इरमिया और इहाज़ियेल और योहानान और गदरासी यूसाबाद।
५ इलूजाई और इरीमूस और बिअलिया और शिमरिया और
६ इरूफ़ी शिफटिया। ईलकाना और इसिया और अज़रईल
७ और यूज़ेर और कोहाती यशोबियाम। और गिदोरी
८ इरोहाम के बेटे जब्दोया और जोइला। और गादियों के बीर और सेना में के संग्राम के योग्य जो ढाल और फरी उठा सकते थे जिनके मुंह सिंह के मुंह के समान और जो पहाड़ों में हरिणों की नाईं चालाक थे और बन के दृढ़ स्थान में
९ दाऊद पास अलग ऊए। पहिले एजेर दूसरा उबदिया तीसरा
१०।११ इलीआब। चौथा मिशमन्ना पांचवां इरमिया। छठवां
१२ अत्तई सातवां एलीयेल। आठवां यूहानान नवां एलजाबाद।
१३।१४ दसवां इरमिया ग्यारहवां मकबनई। सेना के प्रधान गाद के बेटों में के थे जो एक छोटे से छोटा था सो सौ पर था
१५ और बड़े से बड़ा सहस्र पर। ये वे हैं जिन्हों ने पहिले मास में जब अर्दन के कराड़े डूबे थे पार उतरके तराइयों के सारे लोगों को पूर्ब्ब और पश्चिम ओर से भगा दिया।

१६ बनियामीन के और यहूदा के सन्तान कितने लोग दाऊद
१७ पास गढ़ में आये। और दाऊद ने उनकी भेंट को जाके उन्हें उत्तर देके कहा कि यदि मेरे उपकार के लिये तुम लोग कुशल से मुझ पास आये हो तो मेरा मन तुम से एक होगा परन्तु जो मुझे मेरे बैरियों के हाथ पकड़वाने आये हो यद्यपि मेरे हाथ में कुछ अन्धेर नहीं है तो हमारे पितरों का ईश्वर देखे और
१८ दपटे। तब सेनापतियों के श्रेष्ठ अमासाई पर आत्मा उतरा और कहा, हे दाऊद आपी की, और हे यस्सी के बेटे आपी को, और कुशल कुशल आपी पर और कुशल आप के उपकारियों पर, क्योंकि आप का ईश्वर आप का उपकार करता है तब दाऊद ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हें जथा का प्रधान बनाया।
१९ और मनस्सा में से दाऊद पास गये जब वुह फलस्तानियों के संग साऊल के विरुद्ध संग्राम को गया परन्तु उन्हों ने उनका उपकार न किया क्योंकि फलस्तानियों के अध्यक्षों ने जानते ही यह कहि के उसे विदा किया कि वुह हमारे सिर पर से अपने
२० स्वामी साऊल से जा मिलेगा। जब वुह सिखलाग में गया मनस्सा में से अदनाह और यूज़ाबाद और इदियाईल और मीकाईल और यूज़ाबाद और इलिहू और ज़िलथाई मनस्सा
२१ में के सहस्रों के पति उस पास आये। और उन्हों ने जथा के विरुद्ध दाऊद का उपकार किया क्योंकि वे सब के सब महावीर
२२ और सेना में प्रधान थे। क्योंकि उस समय प्रति दिन दाऊद के उपकार के लिये चले आते थे यहां लों कि बड़ी सेना जैसी ईश्वर
२३ की सेना ऊई। और श्रेष्ठों की यह गिनती संग्राम के लिये हथियार बन्द लैस दाऊद पास हबरून को आये जिसतें परमेश्वर के बचन के समान साऊल का
२४ राज्य दाऊद की ओर फेर देवें। यहूदा के सन्तान जो ढाल और बरछी लिये थे छः सहस्र आठ सौ जन संग्राम के लिये लैस।
२५ शमियून के सन्तान संग्राम के लिये महावीर सात सहस्र एक

२६। २७ सा। लावी के सन्तान चार सहस्र छः सै। हारूनियों के अगुआ यूहायदा और उसके संग तीन सहस्र सात सै।
२८ और सादुक एक तरुण महावीर और उसके पिता के घराने
२९ से बाईस प्रधान। और बनियामीन के सन्तान साऊल के भाई बन्द में से तीन सहस्र क्योंकि अबलों उनमें से एक मंडली
३० साऊल के घर के पहरू थे। और अफराईम के सन्तान में से बीस सहस्र आठ सै महाबीर अपने अपने पितरों के घराने
३१ में नामी। और मनस्सा की आधी गोष्ठी में से अठारह सहस्र जो नाम नाम से बुलाये गये जिसतें आके दाऊद
३२ को राजा करें। और यसाखार के सन्तानों में से उन समयों के ज्ञाता जो इसराईल को करना उचित है उनमें से श्रेष्ठ दो सै और उनके सारे भाई बन्द उनकी आज्ञा
३३ में थे। और ज़बलून में से जो संग्राम को निकलते थे युद्ध के सारे हथियार सहित युद्ध में निपुण पचास सहस्र जो
३४ पांती में स्थिर रहि सकते थे और दुचित न थे। और नफताली में से एक सहस्रसेनापति और उनके संग सैंतीस सहस्र
३५ ढाल और भाला सहित। और दानियों में से संग्रम में
३६ निपुण अट्ठाईस सहस्र छः सै। और अशर में से जो संग्राम को
३७ निकलते थे चालीस सहस्र संग्राम में निपुण। और अर्दन के पार में से राओबीनियों में से और गादियों में से और मनस्सा की आधी गोष्ठी में से युद्ध के सारे प्रकार के हथियार सहित
३८ संग्राम के लिये एक लाख बीस सहस्र जन। ये सब योद्धा पांती में स्थिर खरे मन से हबरून में आये जिसतें दाऊद को सारे इसराईल पर राजा करें और इसराईल के सारे उबरे हुए
३९ लोग एक मन से दाऊद को राजा बनाने आये। और वे दाऊद के संग खाते पीते तीन दिन रहे क्योंकि उनके भाईबन्दों
४० ने उनके लिये सिद्ध किया था। और भी वे उनके आसपास यसाखार के और ज़बलून के और नफताली के लोगों ने गदहों

पर और ऊंटों पर और खच्चरों पर और बैलों पर रोटी और मांस और पिसान और गुल्लर की लिट्टियां और अंगूर के गुच्छे और दाखरस और तेल और बैल और भेड़ें बहुताई से लाये क्योंकि इसराईल में बड़ा आनन्द हुआ।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

दाऊद का बड़े धूम धाम से मंजूषा को लाना १—८ अज़्ज़ा का मारा जाना और मंजूषा का ओबेद अदम के घर छोड़ाजाना ९—१४।

१ उसके पीछे दाऊद ने सहस्रपति से और शतपति से और २ हरएक अगुआ से परामर्ष किया। और दाऊद ने इसराईल की सारी मंडली को कहा कि जो तुम्हें और हमारे ईश्वर परमेश्वर को भला लगे तो आओ अपने भाई बन्द पास, जो इसराईल के सारे देश में बच रहे हैं हरएक स्थान में और उनके संग याजकों के और लावियों के पास, जो उनके नगरों में और सिवानों में हैं, भेजें जिसतें वे हमारे पास एकट्ठे होवें। ३ और चलो अपने ईश्वर की मंजूषा को अपने यहां फेर लावें ४ क्योंकि साऊल के दिनों में हमने उसे नहीं बूझा। और सारी मंडीली ने कहा कि हम यह बात करेंगे क्योंकि वुह बात ५ सारे लोगों की दृष्टि में अच्छी लगी। तब दाऊद ने मिसर के शीहूर से हमास की पैठ लों सारे इसराईल को एकट्ठे किया जिसतें ईश्वर की मंजूषा को कर्यास यारीम से ६ लावें। तब सारे इसराईल दाऊद के संग बआलह को अर्थात यहूदा के कर्यासयारीम को चढ़ गये जिसतें उस ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा को वहां से ऊपर लावें जो करोबियों के ७ मध्य बास करता है जिसके नाम से पुकारी जाती है। और उन्हों ने अबीनादाब के घर से ईश्वर की मंजूषा को नई गाड़ी पर ८ धरा और अज़्ज़ा ने और अहीयू ने उसगाड़ी को हांका। और

दाऊद और सारे इसराईल ने अपनी अपनी सारी सामर्थ्य और बीना और तबले और खंजड़ी और करताल और तुरही से ईश्वर के आगे लीला करते और गाते गये।
९ और जब वे कैदून के खलिहान को पहुंचे तब अज्जा ने मंजूषा को धरने के लिये अपना हाथ बढ़ाया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाया।
१० तब परमेश्वर का क्रोध अज्जा पर भड़का और उसने उसे, इस कारण घात किया, कि उसने अपना हाथ मंजूषा पर रक्खा
११ और वुह परमेश्वर के आगे मर गया। और दाऊद उदास हुआ इस कारण कि परमेश्वर ने अज्जा पर दरार किया इस लिये आज लों वुह स्थान अज्जा का दरार कहावता है। उस
१२ दिन दाऊद ने यह कहिके ईश्वर से डरा कि ईश्वर की मंजूषा
१३ को अपने पास क्योंकर लाऊं?। सो दाऊद ने मंजूषा को अपने यहां दाऊद के नगर में न लाया परन्तु गित्ती ओबेद
१४ अदूम के घर में उसे एक अलंग ले गया। और ईश्वर की मंजूषा ओबेदअदूम के घर में तीन मास रही और परमेश्वर ने ओबेदअदूम के घराने पर और उसकी सारी संपत्ति पर आशीष दिया।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

दाऊद का और और स्त्रियां करना १—७
फलस्तानियों को संग्राम में मारना ८—१७।

१ उसके पीछे सूर के राजा हैराम ने दाऊद पास उसके घर बनाने के लिये दूतों को और आरज लट्ठों को थवैयों और बढ़इयों के
२ साथ भेजा। और दाऊद ने देख लिया कि परमेश्वर ने इसराईल पर मेरे राज्य को स्थिर किया क्योंकि अपने इसराईल लोग के
३ लिये उसका राज्य उभाड़ा हुआ था। तब दाऊद ने यिरोशलीम में और और पत्नियां किईं और दाऊद से और और बेटे बेटियां
४ उत्पन्न हुईं। उसके सन्तान के नाम जो यिरोशलीम में हैं ये शमूआ

५ और शोबाब और नासान और सुलेमान। इभार और
६ एलीशुआ और येलपालत। और नोगाह और नेफेक और
७ याफिया और यलीशमा। और बीलियादा और इलीफलत।
८ और जब फलस्तानियों ने सुना कि दाऊद सारे इसराईल
पर राज्याभिषिक्त ऊआ तब सारे फलस्तानी दाऊद की खोज को
९ निकले और दाऊद सुनके उनके बिरुद्ध निकला। और
१० फलस्तानी आये और रफाईम की तराई में फैल गये। और
दाऊद ने यह कहिके परमेश्वर से बूझा कि मैं फलस्तानियों
पर चढ़ जाओं? तू उन्हें हमारे हाथ में सौंप देगा? तब
परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में
११ सौंपोंगा। सो वे बआल पिरासिम को चढ़ गये और दाऊद
ने वहां उन्हें मारा तब दाऊद ने कहा कि ईश्वर पानियों के
तोड़ की नाईं मेरे बैरियों को तोड़ा इस लिये उन्हों ने उस स्थान
१२ का नाम बआलपिरासिम रक्खा। और जब उन्हों ने अपने
देवों को वहां छोड़ा तो दाऊद ने आज्ञा किई और उन्हों नें
१३ आग से उन्हें जला दिया। और फलस्तानी फेर तराई में
१४ फैल गये। इस लिये फेर दाऊद ने ईश्वर से बूझा और ईश्वर
ने उसे कहा कि उनके पीछे मत चढ़ जा उनसे अलग होजा
१५ और तूत पेड़ों के साम्ने से उनपर जा पड़। और ऐसा होगा
कि जब तू तूत पेड़ों के ऊपर चलने का सन्नाटा सुने तब तू संग्राम
को निकल क्योंकि फलस्तानियों की सेना के मारने को ईश्वर
१६ तेरे आगे आगे निकल गया। और जैसा ईश्वर ने दाऊद को
आज्ञा किई तैसा उसने किया और उन्हों ने फलस्तानियों की
१७ सेना गबियून से गज़र लों मारा। और दाऊद की कीर्त्ति
सारे देशों में फैली और परमेश्वर ने सारे जातिगणों पर
उसका भय डाला।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

दाऊद का मंजूषा का ठिकाना करना १—२४ बड़े धूम धाम से मंजूषा को लेजाना २५—२८ मीकाल का उसकी निन्दा करना २९—।

१ और दाऊद ने अपने नगर में अपने लिये घर बनाये और ईश्वर की मंजूषा के लिये एक स्थान सिद्ध किया और उसके लिये डेरा
२ खड़ा किया। तब दाऊद ने कहा कि लावियों को छोड़, ईश्वर की मंजूषा उठाने को किसी को उचित नहीं क्योंकि ईश्वर की मंजूषा उठाने को और नित्य की सेवा करने को परमेश्वर ने
३ उन्हें चुन लिया है। और दाऊद परमेश्वर की मंजूषा को उस स्थान में लाने के लिये जो उसने उसके लिये सिद्ध किया
४ था यिरोशलीम में सारे इसराईल को एकट्ठे किया। और दाऊद ने हारून के सन्तान को और लावियों को बटोरा।
५ कुहास के बेटों में से युरईल प्रधान और उसके भाई बन्द एक सौ
६ बीस। मरारी के बेटों में से असाइया प्रधान और उसके
७ भाई बन्द दो सौ बीस। गरशूम के बेटों में से जोएल प्रधान और
८ उसके भाई बन्द एक सौ तीस। एलीसाफ़ान के बेटों में से शिमइया प्रधान और उसके भाई बन्द दो सौ। हबरून के बेटों में से
१० यलीयेल प्रधान और उसके भाई बन्द अस्सी। अज्ज़ईल के बेटों में से अमीनादाब प्रधान और उसके भाई बन्द एक सौ बारह।
११ और दाऊद ने सादूक और अबियासार याजकों को और लावियों को ऊरीयेल को और असाइया को और यूयेल को और शिमइया को और इलईल को और अमीनादाब को
१२ बुलाया। और उन्हें कहा कि हे लावियों के पितरों के प्रधानो तुम लोग और तुम्हारे भाई बन्द आप आप को पवित्र करो जिसतें इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा को मेरे सिद्ध कियेहुए
१३ पर उठा लाओ। इस लिये कि तुम लोगों ने पहिले नहीं किया

हमारे ईश्वर परमेश्वर ने हम पर दरार किया इसलिये कि
१४ हम ने उसे बिधि से न खोजा। सो याजकों ने और लावियों
ने इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा लाने को आप आप को
१५ पवित्र किया। और जैसा मूसा ने परमेश्वर के बचन के समान
आज्ञा किई थी वैसाही लावियों के सन्तानों ने बहंगरों सहित
१६ अपने अपने कांधों पर ईश्वर की मंजूषा उठाई। और दाऊद
ने लावियों के प्रधान को कहा कि अपने भाइ बन्दों को बाजों के
साथ अर्थात खंजड़ी और बीना और करताल का शब्द करते
१७ और आनन्द से अपना शब्द उठाते गायक ठहराओ। सो
लावियों ने जोईल के बेटे हीमान को और उसके भाइयों में से
बिरकिया के बेटे आसाफ को और उनके भाई बन्द मरारी के
१८ बेटों में से कुशाया के बेटे ईसान को ठहराया। और उनके
साथ उनके भाई बन्द दूसरी पांती के ज़करिया और बिन और
जआज़ियल और शमिरामोस और अहीयल और उन्नी और
इलियाब और बनाया और मआसियः और मटसिया और
इलीफिली और मिकनिया और ओबेदअदूम और जईल
१९ द्वारपालक। सो हीमान और आसाफ और ईसान गायक
२० पीतल के करताल से शब्द करने को। और अलामूस पर
खंजड़ियों के साथ जकरिया और अजईल और शिमीरामूस और
जचील और उन्नी और इलियाब और मआसिया और बनाया।
२१ और शिमीनिस पर जय करने के लिये बीनों से मटसिया और
इलीफिली और मिकनिया और ओबेदअदूम और जईल और
२२ अज़ाज़ियाको ठहराया। और गाने के लिये लावियों में से
प्रधान कानानिया को उसने गाने के विषय में सिखाया इस
२३ कारण कि बुह निपुण था। और मंजूषा के लिये द्वारपाल
२४ बिरकिया और इलकाना। और शिबनिया और यहूशाफात
और नासानईल और अमासाई और जिकरिया और बिनाया
और इलीयेज़र याजक ईश्वर की मंजूषा के आगे तूरही बजाते

थे और मंजूषा के लिये ओबेदअदूम और जहियाह द्वार
२५ पाल थे। सो दाऊद और इसराईल के
प्राचीन और सहस्र पति आनन्द से ओबेदअदूम के घर से
२६ परमेश्वर के नियम की मंजूषा लाने को गये। और ऐसा हुआ कि
जब ईश्वर ने उन लावियों की सहाय किई जो परमेश्वर के नियम
की मंजूषा को उठाते थे तब उन्हों ने सात बैल और सात मेढ़े
२७ चढ़ाये। और दाऊद और सारे लावी, जो मंजूषा को उठाते थे
और गायक और गायिकों के संग गान का गुरु किनानिया
सूती वस्त्र पहिने था और दाऊद पर भी सूती अफूद
२८ था। यों सारे इसराईल ललकारते हुए नरसींगा और
तुरही और करताल के शब्द से और खंजड़ी और बीणा के
बड़े शब्द से इसराईल के परमेश्वर के नियम की मंजूषा को
२९ ऊपर लाये। और यों हुआ कि ज्यों परमेश्वर के नियम की
मंजूषा दाऊद के नगर में पहुंची त्यों साऊल की पुत्री मीकाल
ने दाऊद को गाते और नाचते एक खिड़की में से देखा तो उसने
अपने मन में उसे तुच्छ समझा।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

परमेश्वर की स्तुति के लिये दाऊद का गायकों को
ठहराना १—६ स्तुति का गीत ७—३६ याजक और
गायक और द्वारपाल का सेवा के लिये ठहराया
जाना ३७—४३।

१ सो वे परमेश्वर की मंजूषा ले आये और जो तंबू दाऊद ने
उसके लिये खड़ा किया था उसे उसके मध्य रक्खा और वे
परमेश्वर के आगे होम की और कुशल की भेंटें चढ़ाईं।
२ और जब दाऊद होम की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ा
चुका तब उसने परमेश्वर के नाम से लोगों को आशीष दिया।
३ और उसने हरएक इसराईल को क्या स्त्री क्या पुरुष को एक

एक रोटी और अच्छा टुकड़ा मांस और एक एक पात्र दाखरस
४ दिये। और उसने कितने लावियों को परमेश्वर की मंजूषा के
आगे की सेवा के लिये और टांक रखने के लिये और इसराईल
के ईश्वर परमेश्वर का धन्य मान्ने और स्तुति करने के लिये।
५ अर्थात प्रधान आसाफ को और उसके पीछे जकरिया और
जईल, और शमीरामूस को और जहीईल और मटसिया और
इलियाब और बनाया और ओबेद अदूम को और जईल को नबल
६ और बीना लिये ऊए ठहराया परन्तु आसाफ करताल से शब्द
करता था। और बनाया और जहाज़ईल याजक को भी तुरही लिये
ऊए नित्य ईश्वर के नियम की मंजूषा के आगे ठहराया।
७ तब उसी दिन दाऊद ने आसाफ के और उसके भाइयों के
८ हाथ में परमेश्वर का धन्य मान्ने को यह गीत सौंपा। परमेश्वर
का धन्य मानो और उसका नाम लेओ और लोगों में उसकी
९ क्रिया प्रगट करो। उसके लिये गाओ, उसके लिये गीत गाओ
१० उसके सारे आश्चर्य कार्य्य की चर्चा करो। उसके पवित्र नाम
की महिमा करो जिसतें परमेश्वर के खोजियों के मन आनन्दित
११ होवें। परमेश्वर को और उसके बल को ढूंढ़ो उसका रूप
१२। १३ सदा ढूंढ़ो। हे उसके सेवक इसराईल के बंशो हे उसके
चुने ऊओ याकूब के सन्तानो उसके आश्चर्य कार्य्यों और उसके
१४ अचंभों और उसके मुंह के बिचारों को स्मरण करो। वही
१५ परमेश्वर हमारा ईश्वर उसके बिचार सारे पृथिवी में। उसके
नियम को, जो बचन उसने सहस्र पीढ़ियों के लिये आज्ञा
१६ किई है नित मनन करो। जो उसने इबराहीम के साथ किया
१७ और इसहाक़ से जो उसने किरिया खाई। और उस याक़ूब
को ब्यवस्था के लिये और इसराईल को सनातन के नियम के लिये
१८ स्थिर किया। कि मैं किनान का देश तुझे देओंगा जो तुम्हारे
१९ अधिकार का भाग है। जब तुम लोग गिनेऊए जन थे अर्थात थोड़े
२० थे और उसमें परदेशी। और वे एक जाति से दूसरी जाति

२१ को गये और एक राज्य से दूसरे लोग को। तब उसने किसी को उन्हें सताने न दिया हां उसने उनके कारण राजाओं को
२२ दपटा। और कहा कि मेरे अभिषिक्त को मत छूओ और
२३ मेरे भविष्यद्वक्तों को दुःख मत देओ। हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये गाओ और प्रति दिन उसकी मुक्ति को प्रगट करो।
२४ उसकी महिमा अन्यदेशियों में और उसके आश्चर्यित कर्म्म सारे
२५ जाति गणों में वर्णन करो। क्योंकि परमेश्वर महान और अति स्तुति के योग्य सब देवों से अधिक डरने के योग्य भी।
२६ क्योंकि लोगों के सारे देव मूर्त्ति हैं परन्तु परमेश्वर ने स्वर्गों
२७ को सिरजा। उसका विभव और प्रतिष्ठा उसके आगे पराक्रम
२८ और आनन्दता उसके स्थान में हैं। परमेश्वर को मानो हे लोगों के कुटुम्बो विभव और पराक्रम परमेश्वर के लिये मानो।
२९ परमेश्वर के नाम की महिमा उसे देओ भेंट लेके उसके आगे
३० आओ पवित्रता की सुन्दरता में परमेश्वर की सेवा करो। हे सारी पृथिवी उसके आगे डरो जगत भी स्थिर होगा जिसतें
३१ टल न जाय। स्वर्ग गण आनन्दित होवें और पृथिवी आनन्द करे जाति गणों में कहा जाय कि परमेश्वर राज्य करता है।
३२ समुद्र और उसकी भरपूरी हलरावे चैागान और सब जो
३३ उनमें हैं आनन्द करें। तब बन के पेड़ परमेश्वर के साक्षात के लिये पुकार पुकार के गावें क्योंकि वुह पृथिवी का बिचार करने
३४ को आता है। परमेश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि वुह भला और
३५ उसकी दया नित्य है। और कहो हे हमारे मुक्तिदायक ईश्वर हमें बचा और हमें एकट्ठा कर अन्यदेशी से हमें छुड़ा जिसतें हम तेरे पवित्र नाम का धन्यबाद करें और तेरी स्तुति में बड़ाई
३६ करें। इसराईल के ईश्वर परमेश्वर का धन्यवाद सदा लों होवे उसके पीछे सारे लोगों ने कहा “आमीन“ और परमेश्वर की
३७ स्तुति किई। इस लिये परमेश्वर के नियम की मंजूषा के आगे उसने आसाफ को और उसके भाई बन्दों के प्रति

दिन के कार्य्य के समान मंजूषा के आगे नित्य सेवा करने के लिये
३८ वहां रक्खा। और ओबेद अदूम और उनके भाई बन्द अरसठ
और द्वारपालों के लिये इदूथून का बेटा ओबेद्अदूम भी
३९ और होसाह को। और परमेश्वर के तंबू के आगे गबियून के।
४० ऊंचे स्थान में परमेश्वर के लिये सांझ बिहान होम की भेंट की
बेदी पर नित्य होम की भेंट चढ़ाने के लिये और परमेश्वर की
व्यवस्था में के सारे लिखे हुए के समान, जो उसने इसराईल को
आज्ञा किई थी सादूक याजक को और उसके भाई बन्द याजकों
४१ को रक्खा। और उनके संग हीमान और जदूथून और रहे
हुए जो नाम नाम से कहे गये चुने हुओं को ठहराया जिसतें
परमेश्वर का धन्यबाद करें इस कारण कि उसकी दया सदा
४२ लों है। और शब्द करने के लिये तुरही और करताल और
ईश्वर के बाजा को लिये हुए हीमान और जदूथून को ठहराया
४३ और फाटक के लिये जदूथून के बेटे को। तब सारे लोग
हरएक जन अपने अपने घर गये और दाऊद अपने घराने को
आशीष देने को फिरा।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

दाऊद का मन्दिर बनाने की इच्छा करना और
परमेश्वर का उत्तर देना १—१५ दाऊद का
प्रार्थना और स्तुति करना १६—२७।

१ अब यों हुआ कि जब दाऊद अपने घर में बैठा था तब उसने
नासान भविष्यद्वक्ता से कहा कि देख मैं आरज काठ के घर में
रहताहूं परन्तु परमेश्वर के नियम की मंजूषा ओझलों में।
२ तब नासान ने दाऊद से कहा कि जो आप के मन में है सो
३ कीजिये क्योंकि परमेश्वर आप के साथ है। उस रात को
ऐसा हुआ कि यह कहते ईश्वर का बचन नासान पास
४ आया। जा मेरे सेवक दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता

५ है कि मेरे निवास के लिये तू घर मत बना। क्योंकि जिस दिन से मैं इसराईल को ऊपर लाया आज लों मैं ने घर में वास नहीं किया है परन्तु तम्बू तम्बू में और डेरे डेरे में रहा किया।
६ जहां कहीं मैं सारे इसराईल के साथ साथ फिरा किया हां मैं इसराईल के न्यायियों को, जिन्हें मैं ने अपने लोगों को चराने की आज्ञा किई यह कहिके कोई बचन बोला कि तुम ने मेरे
७ लिये आरज काष्ठ का घर क्यों नहीं बनाया। इस लिये अब तू मेरे दास दाऊद से कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरे इसराईल लोगों के ऊपर राज्य करने को मैं ने तुझे
८ भेड़ से अर्थात भेड़ के पीछे पीछे से लिया। और जहां जहां तू गया है मैं तेरे साथ साथ रहा हों और तेरे आगे से तेरे सारे बैरियों को काट डाला है और पृथिवी के महत जनों के नाम के
९ समान तेरा नाम किया है। मैं अपने इसराईल लोगों के लिये एक स्थान भी ठहराओंगा और उन्हें लगाओंगा और वे अपने स्थान में बास करेंगे और फेर चलाये न जायंगे और आरंभ
१० की नाईं। और जब से मैं ने न्यायियों को अपने इसराईल लोगों पर ठहराया दुष्टता के सन्तान उन्हें फेर न उजाड़ेंगे उस्से अधिक तेरे सारे बैरियों को नीचा करोंगा और भी मैं तुझे
११ कहता हों कि परमेश्वर तेरा घर बनावेगा। और ऐसा होगा कि जब तेरे दिन पुरे होंगे जिसतें तू अपने पितरों में जाय तेरे पीछे तेरे बंश को, जो तेरे बेटों में होगा उठाओंगा
१२ और उसके राज्य को स्थिर करोंगा। वुह मेरे लिये एक घर बनावेगा और मैं उसका सिंहासन सदा लों स्थिर करोंगा।
१३ मैं उसका पिता होंगा और वुह मेरा पुत्र होगा और अपनी दया उस्से उठा न लूंगा जैसा तेरे अगिलों में से
१४ उठाई। परन्तु मैं उसे अपने घर में और अपने राज्य में सदा स्थिर करोंगा और उसका सिंहासन सदा लों स्थिर
१५ होगा। इन सारी बातों के समान और ये सारे दर्शन के

१६ समान नासान ने दाऊद से कहा। और दाऊद राजा आया और परमेश्वर के आगे बैठके कहा कि हे परमेश्वर ईश्वर मैं कौन और मेरा घर क्या जो तू ने मुझे
१७ यहां लों पऊंचाया। और हे ईश्वर तेरी दृष्टि में यह छोटी बात थी क्योंकि तू ने अपने सेवक के घर के विषय में बऊत दिन के लिये कहा है और हे परमेश्वर ईश्वर तू ने मुझे बड़े
१८ पद के मनुष्य के समान समझा है। तेरे दास की प्रतिष्ठा के लिये दाऊद तुझे और क्या कहिसकता है क्योंकि तू अपने
१९ दास को पहिचानता है। हे परमेश्वर अपने सेवक के लिये और अपनेही मन के समान यह सारी महिमा जनाने के
२० लिये तू ने यह सारी बड़ाई प्रगट किई है। हे परमेश्वर तेरे समान कोई नहीं और अपने कान के सारे सुन्ने के समान
२१ वैसा तुझे छोड़ और कोई ईश्वर नहीं। और तेरे इसराईल लोगों के तुल्य कौन ऐसी जाति है जिन्हें अपने लोग बनाने को ईश्वर मिसर में छुड़ाने को गया और मिसर से अपने छुड़ाये ऊए लोगों के आगे जाति गणों को खेद खेद के अपने
२२ लिये एक महिमा और भयानक नाम बनाया। क्योंकि अपने इसराईल लोग को तू ने सदा के लिये अपना लोग बनाया
२३ और हे परमेश्वर तू उनका ईश्वर ऊआ है। इसलिये अब हे परमेश्वर जो बात तू ने अपने दास के विषय में और उसके घर के विषय में कहा है सो सदा के लिये स्थिर होवे और जैसा
२४ तू ने कहा है तैसा कर। सोही स्थिर होवे जिसतें यह कहिके तेरे नाम की महिमा सदा होवे सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर अर्थात इसराईल के लिये ईश्वर और तेरे दास दाऊद
२५ का घर तेरे आगे स्थिर होवे। क्योंकि हे मेरे ईश्वर तू ने अपने दास के कान में प्रकाश किया है कि मैं तेरे लिये घर बनाओंगा इसलिये तेरे सेवक ने तेरे आगे प्रार्थना करने को पाया है।
२६ और अब हे परमेश्वर तू ईश्वर है और अपने सेवक से यह

२७ भलाई की बाचा बांधी है। अब इसलिये अपने सेवक के घर पर आशीष दे जिसतें तेरे आगे सदा बना रहे क्योंकि हे परमेश्वर तू आशीष देता है और आशीर्वाद सदा होता है।

१८ अठारहवां पर्व्व।

दाऊद का अपने बैरियों को जीतना १—८ हमास के राजा का उसे भेंट देना दाऊद का ईश्वर के लिये समर्पण करना ९—११ अदूम में थाना बैठाना धर्म से राज्य करना १२—१४ उसके प्रधान १५—१७।

१ इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने फलस्तानियों को मारा और उन्हें बश में किया और गास को और उसके नगरों को २ फलस्तानियों के हाथ से ले लिया। और मवाब को मारा और मवाबी उसके सेवक हुए और भेंट लाये।

३ और दाऊद ने सोबाह के राजा हदारज़र को, जब वुह फरात नदी के लग अपने देश को स्थिर करने को गया था, हमास लों ४ मारा। और दाऊद ने उससे एक सहस्र रथ और सात सहस्र घोड़चढ़ों को और बीस सहस्र पगइतों को लिया और दाऊद ने रथ के सारे घोड़ों की नस काटी परन्तु उनमें से सौ रथों के ५ लिये रख छोड़ा। और जब दमिश्क के सुरियानी सोबाह के राजा हदारज़र की सहाय को आये तब दाऊद ने सुरियानियों ६ में से बाईस सहस्र को मारा। तब दाऊद ने सुरिया के दमिश्क में थाना बैठाया और सुरियानी दाऊद के सेवक होके भेंट लाये इस रीति से जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर ७ उसकी रक्षा करता था। और दाऊद ने हदारज़र के सेवकों की सोने की ढालें लियां और उन्हें यिरोशलीम में लाया। ८ इसी रीति से हदारज़र के नगर तिबहास से और कून से दाऊद अति बहुत पीतल लाया जिस्से सुलेमान ने पितली समुद्र और

९ खंभे और पीतल के पात्र बनाये। और जब हमास के राजा ताऊ ने सुना कि दाऊद ने किस रीति से सोबाह के
१० राजा हदारज़र की सारी सेना को मारा। तो उसने अपने बेटे हदोराम को सोने चांदी और पीतल के सारे प्रकार के पात्रों के साथ दाऊद राजा का कुशल पूछने को और उसे आशीर्बाद देने को भेजा इसकारण कि उसने हदारज़र से संग्राम करके उसे
११ मारा (क्योंकि हदारज़र ताऊसे लड़ता था)। दाऊद राजा ने भी सोना चांदी जो उसने सारे जातिगणों से अर्थात अदूम से और मवाव से और अमून के सन्तान से और फलस्तानियों से और अमालकी से लाया था परमेश्वर के लिये समर्पण
१२ किया। इसे अधिक सुरिया के बेटे अबिशाई ने नोन की तराई
१३ में अठारह सहस्र अदूमियों को घात किया। और उसने अदूम में थाने बैठाये और सारे अदूमी दाऊद के सेवक ऊए और जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर
१४ उसकी रक्षा करता था। सो दाऊद सारे इसराईल पर राज्य करता था और अपने सारे लोगों में
१५ बिचार और नीति करता था। और सुरिया का बेटा यूआब सेना पर था और अहीलूद का बेटा यहूशाफाट स्मारक था।
१६ और अहीतूब का बेटा सादूक और अबियासार का बेटा
१७ अबीमलक याजक और शवशा लेखक था। और युहायदा का बेटा बनाया करीती और पलीती पर था और दाऊद के बेटे राजा के पास प्रधान थे।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

अमून के राजा का दाऊद के दूतों की दुर्दशा करना संग्राम में अमूनी और सुरियानी का हार जाना १—१५ सुरियानी का फेर मारा जाना और दाऊद के बश में होना १६—१९।

१ इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अमून के सन्तान का राजा नाहाश मर गया और उसका बेटा उसकी सन्ती राज्य पर
२ बैठा। और दाऊद ने कहा कि मैं नाहाश के बेटे हानून पर अनुग्रह करोंगा क्योंकि उसका पिता मुझ पर अनुग्रह करता था और उसके पिता के विषय में दाऊद ने उसे शान्ति देने के लिये दूतों को भेजा सो दाऊद के सेवक अमून के
३ सन्तान के देश में हानून को शान्ति देने को आये। परन्तु अमून के सन्तान के अध्यक्षों ने हानून को कहा कि आप की दृष्टि में दाऊद क्या आप के पिता की प्रतिष्ठा करता है जो उसने आप के पास शान्ति दायकों को भेजा है? क्या उसके सेवक आप के पास इसलिये नहीं आये हैं कि देश का भेद
४ लेवें और उसे देखें और उसे उलट देवें?। इसलिये हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और मुड़ाया और उनके पुट्ठे लों उनके बस्त्रों को बीच से काट डाला और उन्हें फेर भेजा।
५ तब किसी ने जाके उन मनुष्यों की दशा दाऊद से कही तब उसने उनको अगुआई को भेजा क्योंकि वे अति लज्जित होरहे थे और राजा ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ी बढ़ न
६ जाय तबलों अरीहा में ठहरो तब फिर आओ। और जब अमून के सन्तान ने देखा कि हम दाऊद के आगे दुर्गन्ध हुए तब हानून और अमून के सन्तान ने एक सहस्र तोड़े चांदी भेजी जिसतें अरम में से और सुरियामआका में से और सूबा
७ में से रथ और घोड़चढ़े को भाड़ा करें। सो उन्हों ने बत्तीस

सहस्र रथ और मअ़ाका के राजा को और उसके लोगों को भाड़ा किया उन्हों ने आके मदीबा के आगे छावनी किई और अमून के सन्तान अपने अपने नगरों से एकट्ठे हुए और संग्राम में
८ आये। और दाऊद ने सुनके यूआब को और बीरों की
९ सारी सेना को भेजा। और अमून के सन्तानों ने आके नगर के फाटक के आगे लड़ाई की पांती बांधी और राजा जो आये थे
१० सो चौगान में अलग थे। जब यूआब ने संग्राम के रुख अपने बिरुद्ध आगे पीछे देखा तब उसने इसराईल के तरुणों को चुन
११ लिया और उनसे सुरियानियों के सन्मुख पांती बांधी। और रहे हुए लोगों को अपने भाई अबिशई के हाथ सौंपा और
१२ उन्हों ने अमून के सन्तान के सन्मुख पांती बांधी। और कहा कि यदि सुरियानी मुझे अति बलबन्त होवें तो तू मेरी सहाय करना परन्तु यदि अमून के सन्तान तेरे लिये अतिबलवन्त
१३ होवें तो मैं तेरी सहाय करोंगा। सो हियाव करो और आओ हम अपने लोगों के और अपने ईश्वर के नगरों के लिये
१४ सूरता करें और परमेश्वर अपनी दृष्टि में भला करे। सो यूआब और उसके लोग संग्राम के लिये सुरियानियों के आगे
१५ बढ़े और वे उसके आगे से भाग गये। और जब अमून के सन्तानों ने सुरियानियों को भागते देखा तो वे भी उसके भाई अबिशाई के आगे से भागे और नगर में घुसे तब यूआब
१६ यिरोसलीम को आया। और जब सुरियानियों ने देखा कि हम इसराईल से हार गये तब वे दूतों को भेजके नदी पार के सुरियानियों को खींच लाये और हदारज़र की
१७ सेना का प्रधान शोफाक उनके आगे आगे गया। और दाऊद से कहा गया तब उसने सारे इसराईल को एकट्ठा किया और अर्दन पार होके उनपर चढ़ आया और उनके सन्मुख पांती बांधी सो जब दाऊद ने सुरियानियों के बिरुद्ध में संग्राम की
१८ पांती बांधी तो वे उस्से लड़े। परन्तु सुरियानी इसराईल के

आगे से भागे और दाऊद ने सुरियानियों के रथों में के सात सहस्र जन को और चालीस सहस्र पगइतों को मारा और सेनापति शोफाक को घात किया। १९ और जब हदारज़र के सेवकों ने देखा कि हम इसराईल के आगे हार गये तब उन्हों ने दाऊद से मिलाप किया और उसके सेवक हुए फेर सुरियानियों ने अमून के सन्तान को सहाय करने न चाहा।

२० बीसवां पर्व्व।

रब्बा के लोगों की बड़ी दुर्गति होनी १—३ दाऊद के सेवकों से तीन दानव का मारा जाना ४—८।

१ और बरस फिर आने में यों हुआ कि जब राजा संग्राम को निकलते हैं तब यूआब सेना के वीरों को लेके निकला और अमून के सन्तान के देश को उजाड़ दिया और आके रब्बा को घेरलिया परन्तु दाऊद यिरोशलीम में ठहर गया और यूआब ने रब्बा को मारा और उसे नष्ट किया। २ और दाऊद ने उनके राजा के मुकुट को उसके सिर से उतार लिया और उसे तौल में तीन सहस्र सात सौ मोहर के लगभग पाया और उसपर मणि भी थे और वुह दाऊद के सिर पर धरा गया और वुह नगर में से बहुतसी लूट भी लाया। ३ और उसमें के लोग को बाहर लाया और उन्हें पत्थर के चिरवैये और लोहे के खोदवैये और लकड़हारे बनाये इसी रीति से दाऊद ने अमून के सन्तान के सारे नगरों से किया और दाऊद के सारे लोग यिरोशलीम को फिर आये।

४ उसके पीछे ऐसा हुआ कि गज़र में फलस्तानियों से संग्राम हुआ उस समय हूशती सिब्बकई ने दानव के सन्तान सिपई को मारा और वे बश में किये गये। ५ और फलस्तानियों से

फेर संग्राम हुआ और आईर के बेटे इलहनान ने गिट्टी गोलियास के भाई लहमी को मारा जिसके भाले का छड़
६ जोलाहे के तूर के समान था। और गास में फेर संग्राम हुआ जहां एक लंबा हुआ जन था जिसकी चौबीस अंगुलियां
७ हाथ पांव में छः छः और वुह भी दानव से उत्पन्न हुआ। परन्तु जब उसने इसराईल को तुच्छ समझा तब दाऊद के भाई
८ शिमिआ के बेटे यूनसान ने उसे घात किया। ये गास में दानव से उत्पन्न हुए और वे दाऊद के और उसके सेवकों के हाथ से जूझ गये।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

लोगों को गिनने के लिये दाऊद से पाप होना १—८ ईश्वर के कोपों में दाऊद का मरी को चुन्ना ९—१३ सत्तर सहस्र का मारा जाना और दाऊद की बिनती १४—१७ दाऊद का बलि चढ़ाना १८—३०।

१ और शैतान इसराईल के बिरुद्ध उठा और इसराईल को
२ गिनाने के लिये दाऊद को उभाड़ा। और दाऊद ने यूआब को और लोगों के आज्ञाकारियों को कहा कि जाओ बीरशबा से दान लों इसराईल को गिनो और उनकी गिनती मुझ पास
३ लाओ जिसतें मैं जानों। तब यूआब ने उत्तर दिया कि परमेश्वर अपने लोगों को जितने हैं उतने से सौ गुना अधिक बढ़ावे परन्तु हे मेरे प्रभु राजा क्या वे सब मेरे प्रभु के दास नहीं? फेर मेरे प्रभु यह बात क्यों चाहते हैं? आप क्यों इसराईल के पाप के
४ कारण होवे?। तथापि राजा का बचन यूआब पर प्रबल हुआ इसलिये यूआब बिदा हुआ और सारे इसराईल में से होके
५ यिरोशलीम में आया। और यूआब ने लोगों की गिनती दाऊद को दिई और सारे इसराईल ग्यारह लाख खड्गधारी

और यहूदा चार लाख सत्तर सहस्र खड्ग धारी थे। परन्तु
६ उसने उनमें लावी को और बनियामीन को न गिना क्योंकि
राजा का वचन यूआब को घिन था। और
७ ईश्वर इस बात से उदास हुआ इसलिये उसने इसराईल को
८ मारा। तब दाऊद ने ईश्वर से कहा कि यह कार्य्य करके मैं ने
बड़ा पाप किया है परन्तु अब तेरी बिनती करता हों कि अपने
दास का पाप मिटा डाल क्योंकि मैं ने बड़ी मूर्खता किई है।
९।१० और परमेश्वर ने दाऊद के दर्शी जाद से कहा। कि
जा दाऊद को कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे आगे
तीन बात धरता हों उनमें से एक चुनले जिसतें यहो मैं तेरे लिये
११ करों। सो जाद दाऊद पास आया और उसे कहा कि
१२ परमेश्वर यों कहता है कि तू इनमें से एक ले। अर्थात तीन
बरस का अकाल अथवा अपने बैरी के आगे तीन मास नष्ट
हो जबलों तेरे बैरी के खड्ग आपड़ें अथवा तीन दिन परमेश्वर
की तलवार अर्थात मरी देश में पड़े और परमेश्वर का दूत
इसराईल के सारे सिवानों में नाश किया करे अब इसलिये
१३ बूझो कि मैं अपने प्रेरक के पास क्या कहों। तब दाऊद ने
जाद से कहा कि मैं बड़े सकेत में हों मैं परमेश्वर के हाथ में
पड़ों क्योंकि उसकी दया बड़ी है परन्तु मनुष्यों के हाथ में न
१४ पड़ों। सो परमेश्वर ने इसराईल
पर मरी भेजी और इसराईल में से सत्तर सहस्र पुरुष गिर
१५ गये। और ईश्वर ने यिरोशलीम को नष्ट करने के लिये दूत
को भेजा और उसे बिनाश करतेही परमेश्वर देखके उस
बुराई के लिये पछताया और उस नाशक दूत से कहा कि
बहुत है हाथ थाम और परमेश्वर का दूत यबूसी अरनान के
१६ खलिहान के लग खड़ा हुआ। और दाऊद
ने आंखें उठा के अधर में परमेश्वर के दूत को हाथ में नंगा
खड्ग यिरोशलीम पर बढ़ाये हुए देखा तब दाऊद और

१७ प्राचीन टाट ओढ़े ऊए मुंह के बल गिरे तब दाऊद ने ईश्वर से कहा कि क्या मैं ने लोगों को नहीं गिनवाया? अर्थात मैंहीं ने तो पाप किया और निश्चय बुराई किई परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है? कि मरीइन पर पड़ें हे मेरे ईश्वर परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हों तेरा हाथ मुझ पर और मेरे पिता के घराने पर पड़े परन्तु अपने इन लोगों पर नहीं।
१८ तब परमेश्वर के दूत ने जाद को आज्ञा किई कि दाऊद से कह कि तू चढ़ जा और अरनान के खलिहान में परमेश्वर के लिये
१९ एक बेदी स्थापन कर। और जाद के कहने पर जो उसने
२० परमेश्वर के नाम से कहा था दाऊद गया। और अरनान ने फिर के दूत को देखा और उसके चार बेटों ने उसके संग आप
२१ आप को छिपाया अब अरनान गोहूं पीटता था। और ज्यों दाऊद अरनान पास आया अरनान ने ताका और दाऊद को देख के खलिहान से बाहर गया और भूमि लों झुक के दाऊद
२२ को दंडवत किई। तब दाऊद ने अरनान से कहा कि इस खलिहान का स्थान मुझे दे जिसतें मैं परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाओं और तू उसका पूरा दाम लेके मुझे दे जिसतें
२३ मरी लोगों में से थम जाय। और अरनान ने दाऊद से कहा लीजिये और मेरे प्रभु राजा जो अपनी दृष्टि में भला जानें सो करें देखिये मैं होम की भेंट के लिये बैलों को और इन्धन के लिये पीटने की सामग्री और भोजन की भेंट के लिये
२४ गोहूं सब देता हों। फिर दाऊद राजा ने अरनान से कहा कि नहीं परन्तु निश्चय मैं पूरा दाम देके मोल लेओंगा क्योंकि परमेश्वर के लिये मैं तेरा न लेओंगा और बिना मोल के
२५ होम की भेंट न चढ़ाओंगा। सो उस स्थान के लिये दाऊद
२६ ने छः सौ शैकल सोना तोल के अरनान को दिया। तब दाऊद ने परमेश्वर के लिये उस स्थान में एक बेदी बनाई और होम की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और परमेश्वर को

नाम लिया और उसने होम की भेंट के बलिदान पर आग के
२७ द्वारा से स्वर्ग से उसे उत्तर दिया। और परमेश्वर ने उस
दूत को आज्ञा किई और उसने अपनी तलवार को काठी में
२८ डाला। उस समय में जब दाऊद ने देखा कि परमेश्वर ने
यबूसी अरनान के खलिहान में उसे उत्तर दिया तब उसने वहां
२९ बलि चढ़ाया। क्योंकि परमेश्वर का तम्बू और होम के भेंट की
बेदी जो मूसा ने अरण्य में बनाई थी उस समय गबियून के
३० ऊंचे स्थान में थी। परन्तु दाऊद ईश्वर से बूझने को उसके
आगे न जा सका क्योंकि परमेश्वर के दूत की तलवार के कारण
वुह डरता था।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

दाऊद का मन्दिर के लिये सिद्ध करना १—५ और
सुलेमान को उपदेश करना ६—१६ और प्राचीनों
को आज्ञा करना १७—१९।

१ तब दाऊद ने कहा कि यह परमेश्वर ईश्वर का मन्दिर, और
२ यही इसराईल के लिये होम के भेंट की बेदी। और दाऊद ने
इसराईल के देश के परदेशियों को एकट्ठा करने की आज्ञा किई
और उसने ईश्वर के मन्दिर को बनाने के लिये पत्थर के गढ़वैयों
३ को पत्थर गढ़ने के लिये ठहराया। और दाऊद ने फाटकों के
किवाड़े के जोड़ों के लिये और कीलों के लिये बहुत से लोहे
४ पीतल बेतोल सिद्ध किये। और आरज वृक्ष भी बहुताई से
क्योंकि सैदूनी और सूर के लोग दाऊद पास बहुत
५ आरज काष्ठ लाये थे। और दाऊद ने कहा कि मेरा
बेटा सुलेमान कोमल और तरुण है और परमेश्वर के लिये
जो मन्दिर बनेगा सो यश से और ऐश्वर्य्य से सारे देशों
में ऐश्वर्यमान होजायगा सो मैं उसके लिये सिद्ध करोंगा
तब दाऊद ने अपने मरने के आगे उसके कारण बहुताई से

६ सिद्ध किया। तब उसने अपने बेटे सुलेमान को बुलाया और इसराईल के ईश्वर परमेश्वर का मन्दिर
७ बनाने को उसे आज्ञा किई। और दाऊद ने सुलेमान से कहा कि हे मेरे बेटे मैं जो हों सो मेरे ईश्वर परमेश्वर के नाम के
८ लिये मन्दिर बनाने को मेरे मन में था। परन्तु यह कहिके परमेश्वर का बचन मेरे पास आया कि तूने बहुतसा लोहू बहाया है और बड़ी बड़ी लड़ाई किई है तू मेरे नाम के लिये मन्दिर मत बनाना क्योंकि मेरी दृष्टि में तू ने पृथिवी पर
९ बहुत लोहू बहाया है। देख तुझे एक बेटा उत्पन्न होगा वुह चैन का जन होगा और मैं उसे उसकी चारों ओर के बैरियों से चैन देओंगा क्योंकि उसका नाम सुलेमान होगा और उसके
१० दिनों में मैं इसराईल को कुशल और चैन देओंगा। वुह मेरे नाम के लिये मन्दिर बनावेगा और वुह मेरा बेटा और मैं उसका पिता होंगा और मैं इसराईल पर उसके राज्य
११ का सिंहासन सदा स्थिर करोंगा। अब हे मेरे बेटे, परमेश्वर तेरे साथ होवे और तू भाग्यमान हो और अपने ईश्वर परमेश्वर का मन्दिर बना जैसा उसने तेरे बिषय में कहा है।
१२ केवल परमेश्वर तुझे बुद्धि और समझ देवे और इसराईल के बिषय में आज्ञा करें जिसतें तू अपने ईश्वर परमेश्व की व्यवस्था
१३ पालन करे। यदि तू चौकस होके परमेश्वर की बिधि और बिचार को, जो उसने इसराईल के बिषय में मूसा को आज्ञा किई पालन करे तब तू भाग्यमान होगा सो बलवान हो और
१४ साहस कर मत डर बिस्मित मत हो। देख मैं ने अपने दुःख में परमेश्वर के मन्दिर के लिये एक लाख तोड़ा सोना और दस लाख तोड़ा चान्दी और पीतल और लोहा बेतौल बहुताई से सिद्ध किया है और मैं ने लट्ठे और पत्थर भी सिद्ध
१५ किया है और तू उनमें और भी मिलासके। और इससे अधिक तेरे पास कार्य्यकारी अर्थात पत्थर तोड़ और पत्थर

और लट्ठे के कार्य्यकारी और हर प्रकार के कार्य्य के लिये और सारे
१६ प्रकार के गुणी लोग बऊताई से हैं। सोना और चांदी और
पीतल और लोहा अनगिनित हैं उठ कार्य्य कर और परमेश्वर
१७ तेरे साथ होवे। दाऊद ने इसराईल के सारे अध्यक्षों
को भी अपने बेटे सुलेमान की सहाय करने को आज्ञा किई।
१८ क्या तुम्हारा परमेश्वर ईश्वर तुम्हारे संग नहीं? उसने चारोंओर
से तुम्हें चैन नहीं दिया है? क्योंकि उसने देश के निवासियों को
मेरे हाथ में दिया है और परमेश्वर के आगे और उसके लोगों
१९ के आगे देश वश में ऊआ है। सो अपने अन्तःकरण को अपने
ईश्वर परमेश्वर की खोज में लगाओ इसलिये उठो और ईश्वर
परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाओ जिसतें परमेश्वर की वाचा
की मंजूषा को और ईश्वर के पवित्र पात्रों को उस मन्दिर में जो
परमेश्वर के नाम के लिये बनेगा लाओ।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

दाऊद का सुलेमान को राज्य देना और उसके लिये
लावी का ठहराया जाना १—६ गरशून के बेटे
७—११ कोहास के १२—२० मरारी के २१—२३
लावियों के पद २४—३२।

१ सो जब दाऊद वृद्ध और दिनी ऊआ तब उसने अपने बेटे
२ सुलेमान को इसराईल पर राजा किया। और उसने
इसराईल के सारे अध्यक्षों को और याजकों को और लावियों
३ को एकट्ठा किया। लावी तीस बरस और उसे अधिक बय में
गिने गये थे और एक एक जन की गिनती अठतीस सहस्र थी।
४ उसे परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्य को बढ़ाने के लिये चौबीस
५ सहस्र थे और न्यायी और प्रधान छः सहस्र। उसे अधिक
चार सहस्र द्वारपालक और उन बाजों से जो मैं ने स्तुति के
६ लिये बनाया था परमेश्वर की स्तुति के लिये चार सहस्र। और

दाऊद ने लावियों के अर्थात जरशून, कोहास, मुरारी के बेटों
७ को विभाग विभाग किया। जरशूनियों में से लआदन
८ और शिमई। लआदन के श्रेष्ठ बेटे जहीईल और जीथाम
९ और जोईल तीन। शिमई के बेटे शिलोमीस और जईल
१० और हारान तीन ये लआदन के पितरों के श्रेष्ठ। शिमई
के बेटे जहास और जीना और जोऊश और बेरिया ये चार
११ शिमई के बेटे। और जहास श्रेष्ठ था और जिजाह दूसरा
परन्तु जीऊश और बेरिया के बेटे बहुत न थे इस लिये वे अपने
अपने पितरों के घराने के समान एकी गिनती में थे।
१२ कोहास के बेटे अमराम इसहार हबरून अजीयल चार।
१३ अमराम के बेटे हारून और मूसा और हारून अलग किया
गया था जिसतें अति पवित्र वस्तुन को पवित्र करे वुह और
उसके बेटे परमेश्वर के आगे सदा के लिये धूप जलावें और
१४ उसकी सेवा करें और उसके नाम की सदा स्तुति करें। अब
ईश्वर के जन मूसा के बेटों के नाम लावी की गोष्ठियों से थे।
१५।१६ मूसा के बेटे गरशूम और इलियाज़र। गरशूम के बेटों में से
१७ शिबूयेल श्रेष्ठ। और इलियाज़र के बेटे रिहाबिया इलियाज़र
१८ के और बेटे न थे परन्तु रिहाबिया के बहुत बेटे थे। इसहार
१९ के बेटों में से प्रधान शिलोमीस। हबरून के बेटों में से पहिला
जिरियाह दूसरा अमारिया तीसरा जहजील चौथा जकामिअम।
२० ऊजीयल के बेटों में से पहिला मिकाह दूसरा जिसिया।
२१ मरारी के बेटे महली और मूशी महली के बेटे इलियाज़र
२२ और कीश। और इलियाज़र मर गया और उसके बेटे न
थे परन्तु बेटियां और उनके भाई कीश के बेटों ने उन्हें
२३ लिया। मूशी के बेटे महली और इदर और जरीमूस
२४ तीन। ये लावी के बेटे अपने अपने पितरों के
घराने के समान अर्थात पितरों में श्रेष्ठ जैसा वे नाम नाम गिने
गये थे और बीस बरस और ऊपर के बय से परमेश्वर के मन्दिर

२५ की सेवा करते थे। क्योंकि दाऊद ने कहा कि इसराईल के ईश्वर परमेश्वर ने अपने लोगों को चैन दिया है जिसतें वे सर्वदा
२६ यिरोशलीम में बास करें। और लावियों को भी वे तंबू को
२७ और उसकी सेवा के किसी पात्र को न लेजायंगे। क्योंकि दाऊद के अन्त के बचन से लावी बीस बरस और ऊपर से
२८ गिने गये थे। इस कारण कि वे परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये ओसारों और कोठरियों में और सारी पवित्र बस्तु पवित्र करने में और ईश्वर के मन्दिर की सेवा के कार्य में हारून
२९ के बेटों के पास बने रहें। भेंट की रोटी के लिये और चोखे पिसान और मांस की भेंट के लिये और अखमीरी फुलकों के लिये और तावा में की रोटी के लिये और पूरी के लिये और
३० सारे रीति के तौल और नाप के लिये। और हर सांझ बिहान को खड़ा होके परमेश्वर की स्तुति और धन्य मान्ने के लिये और बिश्रामों में और अमावास्यों में और ठहराये हुए पर्व्वों में गिनती से आज्ञा के समान परमेश्वर के आगे परमेश्वर
३१ के लिये नित्य सारे होम के बलिदान चढ़ाने के लिये। और जिसतें वे मंडली के तम्बू की रक्षा करें और पवित्र स्थान की और अपने भाई और उनके बेटों की परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में रक्षा करें।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

याजकों का चौबीस भाग होना १—१९ काहासी और मरारी के भाग २०—३१।

१ अब हारून के बेटों के विभाग और हारून के बेटे नादाब
२ और अबीहू और इलियाज़र और इसामार। परन्तु नादाब और अबीहू अपने पिता से आगे मर गये और उनके सन्तान न थे इसकारण इलियाज़र और इसामार याजक के पद का
३ कार्य्य करते थे। और दाऊद ने उन्हें, अर्थात इलियाज़र के

बेटों में से सादूक और इसामार के बेटों में से अहीमलक को
४ उनके पद के समान उनकी सेवा में बांट दिया। और इसामार
के बेटों में से और इलियाज़र के बेटों में से अधिक श्रेष्ठ जन पाये
गये और भाग किये गये और इलियाज़र के बेटों में से और
पितरों के घरानें में से सोलह श्रेष्ठ जन और इसामार के बेटों
५ में उनके पितरों के घराने के समान आठ जन पाये गये। एक
दूसरे के साथ चिट्ठी के द्वारा से पवित्र स्थान के और ईश्वर के
मन्दिर के अध्यक्षों के लिये इलियाज़ार के बेटों में से और
६ इसामार के बेटों में से अलग किये गये। और लावियों में से
नासानाईल लेखक का बेटा शिमाइया राजा के और अध्यक्षों के और
सादूक याजक के और अबियासार के बेटे अहीमलक के और
याजकों के श्रेष्ठ पितरों के और लावियों के लोगों के आगे लिखा
इलियाज़र के लिये एक विशेष घराना और एक इसामार के
७ लिये लिया गया। अब पहिली चिट्ठी यहायारीब की और
८ दूसरी इद्दायदा की। तीसरी हारीम की चैाथी शिउरीम
९।१० की। पांचवीं मलकीजा की छठवीं मिजामिन की। सातवीं
११ हक्कूज़ की आठवीं अबीजा की। नवीं यशूअ की दसवीं शिकनिया
१२ की। ग्यारहवीं इलियाशीब की बारहवीं याकीम की।
१३।१४ तेरहवीं हप्पा की चैादहवीं जशबियाब की। पंदरहवीं
१५ बिलगा की सोलहवीं इम्मर की। सतरहवीं हीज़र की
१६ अठारहवीं अफसीस की। उन्नीसवीं पिसाहियाह की बीसवीं
१७ जहीज़केल की। एक्कीसवीं जाकीन की बाईसवीं गामूल की।
१८।१९ तेईसवीं दिलायाह की चैाबीसवीं मअजिया की। इसराईल
के ईश्वर परमेश्वर की आज्ञा के समान हारून के नीचे उनकी
रीति के समान परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में आने को यह
२० बिधि थी। लावियों के उबरेऊए बेटे अमराम के बेटों
२१ में से शुबायल शुबायल के बेटों में से जहदियाः। रहाबिया के
२२ बिषय में रहाबिया के बेटों में से पहिला इशिया। शिलोमोस

२३ शिलोमोस के बेटों में से जहास। हवरून का पहिला बेटा ज़रयः दूसरा अमरियः तीसरा ज़हाज़ईल चौथा यकामियम।
२४।२५ अज़ईल के बेटे मीकाह मीकाह के बेटे शामिर। मीकाह का भाई इशिया इशिया के बेटे जिकरियाह।
२६ मरारी के बेटे महली और मूशी जहाजियाः का बेटा
२७ बेनू। जहाजिया से मरारी के बेटे बेनू और शोहाम और
२८ ज़कर और इबरी। महली से इलियाज़र जिसका कोई
२९ बेटा न था। यह कीश के विषय में कीश का बेटा जरामील।
३० मूशी के बेटे भी महली और अदर और यारीमूस ये लावियों
३१ के बेटे अपने अपने पितरों के घराने के समान। इन्हों ने भी दाऊद राजा के और सादूक के और अहीमलक के और याजकों के और लावियों के श्रेष्ठ पितरों के आगे अर्थात विशेष पितर जो अपने सारे भाइयों पर थे अपने भाई हारून के बेटों के सन्मुख चिट्ठी डाली।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

गायकों के और बजनियों के नाम और पद १—७
उनके चौबीस भाग ८—३१।

१ उस्से अधिक दाऊद और सेना के प्रधान आसाफ के बेटे और हीमान के और जदूसून के बेटों की सेवा के लिये उन्हों को अलग किया जो बीणा और नवल और करताल से भविष्य कहता था वुह कार्य्यों की गिनती उनकी सेना के समान
२ थी। आसाफ़ के बेटों में से जकूर और यूसफ़ और निसानिया और असारिला आसाफ़ के बेटे आसाफ़ के हाथ के बश में,
३ जो राजा की आज्ञा के समान भविष्य कहते थे। जदूसून से जदूसून के बेटे से गिदलिया और सीरी और जिशाइया और हशाबिया और मतसिया छः जन अपने पिता जदूसून के हाथ के बश में जो परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करने को

४ बीणा से भविष्य कहते थे। हीमान से हीमान के बेटे बक्किया और मतनिया और अज़ीईल और शिबूईल और यरीमूस और हननिया और हनानी और इलिआसा और गिदलती और रोमतयीज़र और जाशबिकाशा और मल्लोसी और
५ होतीर और महाज़ीऊत। ये सब हीमान के बेटे ईश्वर के वचन राजा के दर्शी नरसिंगा उठाने के लिये और ईश्वर
६ ने हीमान को चौदह बेटे और तीन बेटियां दिईं। राजा की आज्ञा के समान जो आसाफ़ को और जदूसून को और हीमान को दिई गई थी ये सब परमेश्वर के मन्दिर में भजन के लिये करताल और नवल और बीणा से अपने पिता
७ के बश में परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये सौंपे गये। सो उनकी गिनती उनके भाइयों के संग जो परमेश्वर के भजन में सिखाये गये थे अर्थात सब जो निपुण थे सो दो सौ अट्ठासी
८ थे। और क्या छोटे क्या बड़े क्या गुरु क्या शिष्य
९ पहरे के सन्मुख उन्हों ने चिट्ठी डाली। पहिली चिट्ठी यूसफ़ को आसाफ़ के लिये निकली दूसरी गिदलिया के लिये जो अपने
१० भाई और बेटे समेत बारह थे। तीसरी जकूर के लिये उसके
११ बेटे और भाई बारह। चौथी इसरी के लिये उसके बेटे
१२ और भाई बारह। पांचवीं निसानिया के लिये उसके बेटे
१३ और भाई बारह। छठवीं बूक्किया के लिये उसके बेटे और
१४ भाई बारह। सातवीं जशारीला के लिये उसके बेटे और
१५ भाई बारह। आठवीं जुशइया के लिये उसके बेटे और भाई
१६ बारह। नवीं मतनिया के लिये उसके बेटे और भाई बारह।
१७।१८ दसवीं शिमई के लिये उसके बेटे और भाई बारह। ग्यारहवीं
१९ यज़रईल के लिये उसके बेटे और भाई बारह। बारहवीं
२० हशाबिया के लिये उसके बेटे और भाई बारह। तेरहवीं
२१ शुबाईल के लिये उसके बेटे और भाई बारह। चौदहवीं
२२ मतसिया के लिये उसके बेटे और भाई बारह। पंदरहवीं

२३ यरीमूस के लिये उसके बेटे और भाई बारह। सोलहवीं
२४ हनानिया के लिये उसके बेटे और भाई बारह। सतरहवीं
२५ जाशविकाशा के लिये उसके बेटे और भाई बारह। अठारहवीं
२६ हनानी के लिये उसके बेटे और भाई बारह। उन्नीसवीं
२७ मल्लोसी के लिये उसके बेटे और भाई बारह। बीसवीं
२८ इलिश्रासा के लिये उसके बेटे और भाई बारह। एक्कीसवीं
२९ होसीर के लिये उसके बेटे और भाई बारह। बाईसवीं
३० गिद्दलती के लिये उसके बेटे और भाई बारह। तेईसवीं
३१ महाजीऊस के लिये उसके बेटे और भाई बारह। चौबीसवीं रूमम्तीइजर के लिये उसके बेटे और भाई बारह।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

द्वार पालकों के बिभाग १—१२ फाटक उन्हें सौंपे जाते हैं १३—१९ लावी भंडार के रक्षक २०—२८ उनमें प्रधान और न्यायी २९—३२।

१ द्वार पालकों के बिभाग के बिषय में कोरियों से आसाफ के बेटों
२ में का कोर का बेटा मिश्लीलमिया। और मिश्लीलमिया के बेटे पहिलौंठा ज़करिया दूसरा जदीआईल तीसरा जबदिया चौथा
३ जसनईल। पांचवां ईलाम छठवां यहूआनान सातवां
४ इलीओईनाई। उनसे अधिक ओबेदअदूम के बेटे शमाइया पहिलौंठा दूसरा यहोजाबाद तीसरा यूआह चौथा साकार
५ पांचवां नासानाईल। छठवां अम्मईल सातवां यसाखार आठवां
६ पिउलसाईत्त क्योंकि ईश्वर ने उसे वर दिया। और शिमाया के बेटे उत्पन्न हुए जो अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते
७ थे क्योंकि वे सामर्थी वीर थे। शिमइया के बेटे अथनी और रफाईल और ओबेद और यलज़बाद जिसके भाई इलीहू और
८ समाकिया बलवन्त थे। ये सब ओबेदअदूम के बेटों में से वे और उनके बेटे और उनके भाई सेवा के लिये बल में

९ सामर्थी ओबेद अदूम के वासठ। और मिश्लेमिया के बेटे
१० और भाई अठारह जन बलवन्त थे। और मरारी के सन्तानों
में से होसाह के भी बेटे थे सिमरी श्रेष्ठ वुह पहिलौंठा
११ न था तथापि उसके पिता ने उसे श्रेष्ठ किया। दूसरा
हिलकिया तीसरा टिबलिया चौथा जिकरिया होसाह के सारे
१२ बेटे और भाई तेरह। इन्हों में से द्वारपाल बिभाग किये गये
अर्थात श्रेष्ठ जनों में से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये
१३ आम्नेसाम्ने पहरे थे। और क्या छोटे क्या बड़े अपने अपने
पितरों के घराने के समान हरएक फाटक के लिये उन्हों ने चिट्ठी
१४ डाली। पूर्ब्ब ओर की चिट्ठी शीलीमिया के लिये पड़ी तब उसके
बेटे ज़करिया के लिये जो बुद्धिमान मंत्री था उन्हों ने चिट्ठी
१५ डाली और उत्तर की ओर उसकी चिट्ठी निकली। और दक्खिन
की ओर ओबेदअदूम के और उसके बेटों के घराने के एकट्ठे
१६ किये गये के लिये। शूपिम के और हूसाह के कारण पश्चिम को
शलीकेत के फाटक सहित जो ऊपर जाने के मार्ग के पहरुओं के
१७ सन्मुख पहरा। पूर्ब्ब की ओर छः लावी थे उत्तर की ओर प्रति
दिन चार दक्षिण की ओर प्रति दिन चार शूपिम की
१८ ओर दो दो। पश्चिम की ओर पारबार के पथ में चार
१९ और पारवार में दो। कोर के और मरारी के बेटों में द्वारपालकों
२० के ये बिभाग हैं। और लावियों में से अहीयाह
परमेश्वर के मन्दिर के भंडार और पवित्र भंडारों पर।
२१ लादान के बेटों के बिषय में गरशूनी लादानियों के बेटों में से
श्रेष्ठ पितरों का अर्थात गरशूनी लादान को यहीली।
२२ यहीली के बेटे जिसाम और उसका भाई यूयेल ये परमेश्वर के
२३ मन्दिर के भंडार पर थे। अमरामी के और इज़हारी के
२४ और हबरूनियों के और ऊज़िलियों के। मूसा के बेटे और
२५ गरशूम का बेटा शबूयेल भंडार पर था। यज़र से उसके
भाई उसका बेटा रिबिया उसका बेटा यिशाइया उसका बेटा

२६ यूराम उसका बेटा जिकरी उसका बेटा शिलोमीस। वही शिलोमीस और उसके भाई समर्पण किये गये सारे भंडारों पर थे जो दाऊद राजा ने और श्रेष्ठ पितरों ने और सहस्रपति और
२७ शतपति और सेनापति ने समर्पण किया था। संग्रामों की लूट में से परमेश्वर के मन्दिर के कारण उन्हों ने समर्पण किया था।
२८ और सब जो समुईल दर्शी ने और कीश के बेटे साऊल ने और नर के बेटे अबनर ने और सरूया के बेटे यूआब ने समर्पण किया और जिस किसी ने समर्पण किया था सो शिलोमीस
२९ के और उसके भाई के हाथों में था। इज़हारियों में से किनानीया और उसके बेटे जो इसराईल के ऊपर
३० बाहर बाहर के कार्य के प्रधान और न्यायियों के लिये। और हबरूनियों में से हशबिया और उसके भाई एक सहस्र सात सौ बीर परमेश्वर के सारे कार्य्य और राजा की सारी सेना के लिये वे अर्दन के इसपार पश्चिम की ओर इसराईलियों में से
३१ प्रधान थे। हबरूनियों में से इरिया श्रेष्ठ अर्थात हबरूनी अपने पितरों की पीढ़ियों के समान दाऊद राजा के चालीसवें बरस में वे ढूंढे गये थे और गिलियाद के यज़र में उसके महावीर
३२ लोग पाये गये। और उसके भाईबन्द दो सहस्र सात सौ श्रेष्ठ पितर बीर थे जिन्हें दाऊद राजा ने ईश्वर के बिषय के हरएक कार्य्य और राजा के कार्य्य पर राओबीनियों के और गादियों के और मनस्सा की आधी गोष्ठी पर ठहराया।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब।

हरएक मास के लिये दाऊद के बारह प्रधान १—१५ बारह गोष्ठी के अध्यक्ष १६—२२ लोगों का गिन्ना रोका जाता है २३—२४ दाऊद के प्रधान और मंत्री २५—३४।

१ अब इसराईल के सन्तान अपनी गिनती के समान अर्थात जो

पितरों के श्रेष्ठ और सहस्रों के और सैकड़ों के श्रेष्ठ जो अपनी अपनी पारी की रीति पर राजा की सेवा करते थे जो बरस के सारे मासों में मास मास आया जाया करते थे हरएक पारी के
२ लिये चौबीस सहस्र थे। पहिली पारी पर पहिले मास के लिये जब्दईल का बेटा यशोबियाम और उसकी पारी में
३ चौबीस सहस्र थे। पेरेस के सन्तानों में से पहिले मास के
४ लिये सेना के सारे पतियों का श्रेष्ठ था। और दूसरे मास की पारी पर एक अहोही दोदाई था उसकी पारी में मिकलोस
५ भी श्रेष्ठ उसकी पारी में चौबीस सहस्र। तीसरे मास के तीसरा सेनापति श्रेष्ठ याजक युहायदा का बेटा बनाया और
६ उसकी पारी में चौबीस सहस्र। यही बनाया तीसों में बलवन्त और तीसों से श्रेष्ठ और उसकी पारी में उसका बेटा
७ अमीज़ाबाद। चौथे मास के लिये चौथा यूआब का भाई असाहिल और उसके पीछे उसका बेटा ज़बदिया और उसकी
८ पारी में चौबीस सहस्र। पांचवें मास के लिये पांचवां सेनापति
९ इज़राही शमूस और उसकी पारी में चौबीस सहस्र। छटवें मास के लिये छटवां तेकोई इक्कीश का बेटा ईरा और उसकी
१० पारी में चौबीस सहस्र। सातवें मास के लिये सातवां यफरईम के सन्तान में से पिलूनी हिलीज़ और उसकी पारी में
११ चौबीस सहस्र। आठवें मास के लिये आठवां जारही में का
१२ हूशाती सिब्बकई और उसकी पारी में चौबीस सहस्र। नवें मास के लिये नवां बनियामीनियों में से अनीतोसी अबीईज़र
१३ और उसकी पारी में चौबीस सहस्र। दसवें मास के लिये दसवां जारही में का निटोफासी महाराई और उसकी पारी में
१४ चौबीस सहस्र। ग्यारहवें मास के लिये ग्यारहवां अफ़राईम के सन्तान में का पिरासूनी बनाया और उसकी पारी में
१५ चौबीस सहस्र। बारहवें मास के लिये बारहवां अस्रईल में का निटोफासी हेलदई और उसकी पारी में चौबीस

१६ सहस्र। और भी इसराईल की गोष्ठियों पर रूबिनियों का आज्ञाकारी ज़िकरी का बेटा अलीज़र शिमियूनियों के
१७ मआका का बेटा शिफटिया। लावियों में का किमुईल का बेटा
१८ हशाबिया हरूनियों में का सादूक। यहूदा में का दाऊद के भाइयों में का ईलीहू इसाखार में का मीकाईल का बेटा आमरी।
१९ ज़बलून में का ओबदिया का बेटा इशमइया नफताली में का
२० अज़रईल का बेटा यरीमूस। अफराईम के सन्तानों में का आज़ाज़िया का बेटा होशिअ मनस्सा की आधी गोष्ठी में का
२१ पिदाया का बेटा यूईल। गिलियाद में आधे मनस्सा में का ज़करिया
२२ का बेटा इडू बनियामीन में का अबनर का बेटा यासईल। दान में का इरोहाम का बेटा अजरईल ये इसराईल की गोष्ठियों के
२३ अध्यक्ष। परन्तु बीस बरस से और घटती की बय के दाऊद ने गिनती न लिई इस कारण कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं स्वर्ग के तारों के समान इसराईल को
२४ बढ़ाओंगा। सिरूया के बेटे यूआब ने गिन्ना आरंभ किया परन्तु इस कारण उसने समाप्त न किया कि उसके लिये इसराईल के बिरोध में कोप पड़ा और न वुह गिनती दाऊद
२५ राजा के समयों के समाचार में लिखी गई। और राजा के भंडारों पर अदईल का बेटा अजमावेस और नगर में और गाओं में और गढ़ में के भंडारों के खत्तों पर अज्जिया
२६ का बेटा इहोनातान था। और भूमि के जोतने बोने के लिये जो खेतों में कार्य्य करते थे उनपर किलूब का टा इजरी।
२७ और दाख बारियों पर रामासो शिमई और दाख की बारियों की बढ़ती पर और दाखरस की शाला पर शिफ़मी
२८ जब्दी। और जलपाई के पेड़ों पर और गूलर पेड़ों पर जो नीचे की भूमि में थे गिदरी बालहनान और तेल की
२९ शाला पर यूआश। और ढोर जो शारून में चरते थे शरूनी शिटरी और तराई में के ढोरों पर आदलाई का बेटा शाफाट।

३० ऊंटों पर इश्माइली उबील और गदहों पर मीरूनूसी
३१ जह्दिया। और झुंडों पर हगीयाजिज ये सारे दाऊद राजा
३२ की संपत्ति के आज्ञाकारी थे। और दाऊद का चचा यूनासान एक मंत्री और बुद्धिमान और लेखक था और हकमोनी का
३३ बेटा यहीईल राजपुत्रों के संग रहता था। और अहीतोफेल राजमंत्री था और अरकी हूशाई राजा का संगी था।
३४ अहीतोफेल के पीछे बनाया का बेटा युहायदा और अबियासार था और राजा की सेना का सेनापति यूआब था।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

दाऊद का परमेश्वर के अनुग्रह के और सुलेमान के लिये प्रतिज्ञा करना १—८ सुलेमान को उपदेश करना ९—१० सुलेमान को उभाड़ना ११—२१।

१ और दाऊद ने इसराईल के सारे अध्यक्षों को अर्थात गोष्ठियों के अध्यक्षों को और जथाओं के श्रेष्ठों को, जो राजा की सेवा पारी पारी करते थे और सहस्रपतियों को और शतपतियों को और राजा के और उसके बेटों के ढोर और सारी संपत्ति के भंडारियों को और श्रेष्ठों और बलवन्तों और सारे बीर समेत
२ यिरोशलीम में एकट्ठे किया। तब दाऊद राजा उठ खड़ा हुआ और बोला कि हे मेरे लोगो और हे मेरे भाइयो सुनो मेरे मन में था कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा के लिये और हमारे ईश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये बिश्राम का मन्दिर
३ बनाओं और बनाने के लिये सिद्ध कर रक्खा था। परन्तु ईश्वर ने मुझे कहा कि तू मेरे नाम के लिये मन्दिर मत बनाना इस कारण कि तू संग्रामीजन है और बहुत लोहू बहाया है।
४ तथापि इसराईल के ईश्वर परमेश्वर ने मुझे अपने पिता के सारे घराने से आगे इसराईल पर सदा राज्य करने को चुन लिया

क्योंकि उसने आज्ञाकारी के लिये यहूदा को चुना है और यहूदा के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के बेटों में से सारे इसराईल पर राज्य करने के
५ लिये मुझे प्रसन्न किया। और मेरे सारे बेटों में से, (क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बहुत बेटे दिये हैं,) उसने मेरे बेटे सुलेमान को चुन लिया है कि इसराईल पर परमेश्वर के
६ राज्य के सिंहासन पर बैठे। और उसने मुझे कहा कि तेरा बेटा सुलेमान मेरा मन्दिर और मेरे आंगन बनावेगा क्योंकि मैं ने अपना बेटा उसे चुन लिया है और मैं उसका पिता
७ होंगा। और भी यदि वुह आज की नाईं मेरी आज्ञा और बिचार पालने में दृढ़ होगा तो मैं उसके राज्य को सदालों स्थिर
८ करोंगा। अब इसलिये परमेश्वर की मंडली सारे इसराईल की दृष्टि में और हमारे ईश्वर के सुन्ने में अपने ईश्वर परमेश्वर की सारी आज्ञा को ढूंढो और पालन करो जिसतें तुम इस अच्छे देश के अधिकारी होओ और अपने पीछे अपने सन्तान के
९ लिये सदा के कारण अधिकार छोड़ जाओ। और तू हे मेरे बेटे सुलेमान तू अपने पिता के ईश्वर को जान और सिद्ध अन्तःकरण से और मन की बांछा से उसकी सेवा कर क्योंकि परमेश्वर सारे अन्तःकरणों को और चिंताओं की सारी भावनाओं को बिचारता है जो तू उसे ढूंढेगा तो वुह तुझे पाया जायगा परन्तु जो तू उसे बिसरावेगा तो वुह तुझे
१० सदा के लिये त्याग करेगा। सो चौकस हो क्योंकि परमेश्वर ने पवित्र स्थान के लिये मन्दिर बानाने के निमित्त तुझे चुना है
११ सो तू बलवान हो और उसे बना। तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को उस ओसारे का और उसके घरों का और उसके भंडारों का और उसके ऊपर की कोठरियों का और उसके भीतर की कोठरियों का और दया के आसन के
१२ स्थान का डौल दिया। और उन सभों का जो वुह आत्मा के

द्वारा से रखता था परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों का और सारी कोठरियों और ईश्वर के मन्दिर के भंडारों का और
१३ समर्पण किई ऊई वस्तुन के भंडारों का डौल दिया। और याजकों की और लावियों की पारियों के लिये और परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के सारे कार्य्य के लिये और परमेश्वर के
१४ मन्दिर में सेवा करने के सारे पात्रों के लिये। भांति भांति की सारी सेवा के सारे सोने के पात्रों के लिये सोना तौल दिया और चांदी के सारे पात्रों के लिये हर प्रकार की सेवा के
१५ सारे पात्रों के लिये तौल के साथ। और सोनऊली दीअटों के लिये और उनके सोनऊले दीपकों के लिये और हरएक दीअट के लिये और उसके दीपकों के लिये तौल के साथ और चांदी के दीअटों के लिये तौल के साथ, दीअट के लिये और
१६ उनके दीपकों के लिये हरएक दीअट के कार्य के समान। भेंट की रोटी के मंचों के लिये अर्थात हरएक मंच के लिये सोना
१७ तौल दिया और चांदी के मंचों के लिये चांदी। और मांस के त्रिशूल के लिये और कटोरे कटोरियों के लिये निर्मल सोना और सोनऊले बासनों के लिये हरएक बासन के लिये तौल के साथ और हरएक रूपऊले बासन के लिये तौल दिया।
१८ और धूप की बेदी के लिये चोखा सोना तौल दिया और परमेश्वर के नियम की मंजूषा को ढांपने के लिये पंख फैलायेऊए करोबियों के रथ के डौल के लिये सोना दिया। यह सब
१९ कार्य के डौल के समान परमेश्वर ने लिखके मुझे अपने हाथ के
२० द्वारा से समझा दिया। तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा कि बलवन्त और सुहियाव होके कार्य कर मत डर और बिस्मित मत हो क्योंकि परमेश्वर ईश्वर मेरा, ईश्वर तेरे साथ, वुह तुझ से न घटेगा न तुझे त्याग करेगा जबलों तू परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये सारे कार्य पूरा न करे।
२१ और ईश्वर के मन्दिर की सारी सेवा के लिये याजकों की और

जाजियों की पारियों को देख और तेरे संग सारे कार्यकारियों के लिये हरएक भान्ति की सेवा के लिये हरएक वांछित गुणी पुरुष और अध्यक्ष और सारे लोग भी तेरी आज्ञा में होंगे ।

२९ उन्तीसवां पर्व्व ।

दाऊद का मन्दिर के लिये धन अध्यक्षों को दिखाना १—५ उनका भी मन्दिर के लिये बहुताई से देना ६—९ सुलेमान के लिये प्रार्थना करना १०—१९ लोगों का दंडवत और बलिदान और आनन्द कर के सुलेमान को राजा बनाना २०—२२ उसका विभव से राज्य करना २३—२५ दाऊद का राज्य और उसका आनन्द से मरना २६—३० ।

१ इन से अधिक दाऊद राजा ने सारी मंडली से कहा कि मेरा बेटा सुलेमान, जिसे केवल ईश्वर ने चुना है युवा और कोमल है और कार्य बड़ा क्योंकि वुह भवन मनुष्य के लिये नहीं परन्तु २ परमेश्वर ईश्वर के लिये है । अब मैं अपनी सारी सामर्थ्य भर अपने ईश्वर के मन्दिर के कारण सिद्ध किया है सोने के लिये सोना और चांदी के लिये चांदी और पीतल के लिये पीतल और लोहे के लिये लोहा और लकड़ी के लिये लकड़ी और जड़ने के लिये वैदूर्य्य मणि तेजस्वी पत्थर और नाना रंग के और सारे प्रकार के बहुमूल्य मणि और मर्मर के पत्थर बहुताई ३ से । और भी इसकारण कि मैं ने अपने ईश्वर के मन्दिर पर अपना मन लगाया है मैं ने अपनी निज संपत्ति में से उस पवित्र मन्दिर के लिये सोना और चांदी उन सभों से अधिक, जो ४ मैं ने पवित्र मन्दिर के लिये सोना और रूपा दिया है । अर्थात मन्दिर की भीत पर मढ़ने के लिये तीन सहस्र तोड़े सोने अर्थात ओफ़ीर के सोने के और निर्मल चांदी का सात सहस्र

५ तोड़ा। सोने के लिये सोना और चांदी के लिये चांदी और सारे प्रकार के कार्य के लिये कार्यकारियों के हाथों से और परमेश्वर को अपनी सेवा देने को आज कौन इच्छा रखता है। तब पितरों
६ के प्रधानों ने और इसराईली गोष्ठियों के अध्यक्षों ने और सहस्र और शतपतियों ने और राजा के कार्य के आज्ञाकारियों ने
७ मन मंता चढ़ाया। और ईश्वर के मन्दिर के कार्य के लिये पांच सहस्र तोड़े और दस सहस्र द्राकम सोना और दस सहस्र तोड़ा चांदी और अठारह सहस्र तोड़ा पीतल और एक लाख
८ तोड़ा लोहा दिया। और जिनमें मणि पाये गये उन्हों ने गरशूनी यहीयेल के हाथों से परमेश्वर के मन्दिर के भंड़ार में दिये। तब
९ लोगों ने आनन्द किया क्योंकि उन्हों ने मनमंता चढ़ाया इस कारण कि सिद्ध मन से उन्हों ने परमेश्वर के लिये मनमंता चढ़ाया और दाऊद राजा भी बड़े आनन्द से आनन्दित हुआ।

१० इस कारण दाऊद ने सारी मंड़ली के आगे परमेश्वर का धन्य माना और दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर हमारे पिता
११ इसराईल के ईश्वर तू सनातन काल के लिये धन्य है। हे परमेश्वर बड़ाई और पराक्रम और ऐश्वर्य और जय और महिमा तेरी क्योंकि स्वर्ग और पृथिवी में के सब तेरे हैं हे परमेश्वर राज्य तेरा और तू सभों पर श्रेष्ठ उभाड़ा हुआ है।
१२ धन और प्रतिष्ठा तुझसे और तू सभों पर राज्य करता है तेरे हाथ में पराक्रम और सामर्थ्य बड़ा और सब को पराक्रम
१३ देना तेरे हाथ में है। इसलिये अब हे हमारे ईश्वर हम तेरा धन्यवाद करते हैं और तेरे ऐश्वर्यमान नाम की स्तुति
१४ करते हैं। परन्तु मैं कौन और मेरे लोग कौन कि इस रीति से हम मनमन्ता चढ़ा सकें क्योंकि तुझसे सब कुछ है और तेरीही
१५ में से हमने तुझे दिया है। क्योंकि हम अपने सारे पितरों के समान तेरे आगे परदेशी और प्रवासी हमारे दिन पृथिवी
१६ पर छाया के समान अस्थिर हैं। हे हमारे ईश्वर परमेश्वर

यह सारी ढेर जो तेरे पवित्र नाम के लिये मन्दिर बनाने के लिये सिद्ध किई हैं सो तेरेही हाथ से और सब तेरीही हैं।
१७ हे मेरे ईश्वर मैं यह भी जानता हों कि मन को तू जांचता है और खराई से प्रसन्न है म जो हों सो अपने मन की खराई से ये सारी वस्त मनमन्ता चढ़ाई हैं और आनन्द से मैं ने तेरे लोगों को, जो यहां साक्षात हैं मनमन्ता तुझे भेंट चढ़ाते देखा
१८ है। हे हमारे पितर इबराहीम और इसहाक और इसराईल के ईश्वर परमेश्वर तू इसे अपने लोगों के अन्तःकरण की चिन्ता की भावना में सदा लों रख और अपने लिये उनके मन
१९ को सिद्ध रख। और मेरे बेटे सुलेमान को सिद्ध अन्तःकरण दे जिसतें तेरी आज्ञा और साक्षी और बिधि को पालन करे और यह सब माने और उस भवन को बनावे जिसके लिये
२० मैं ने सिद्ध किया है। तब दाऊद ने सारी मंडली से कहा कि अब अपने ईश्वर परमेश्वर का धन्यबाद करो और सारी मंडली ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर का धन्यबाद किया और अपना अपना सिर झुका के परमेश्वर की
२१ और राजा को दंडवत किई। और उसके दूसरे दिन उन्हों ने परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाये और परमेश्वर के लिये होम की भेंटें चढ़ाईं एक सहस्र बैल और एक सहस्र मेढ़ा और एक सहस्र मेम्ने उनके पीने की भेंटें सहित और सारे इसराईल के
२२ कारण बऊताई से बलि चढ़ाई। और उसी दिन बड़ी आनन्दता से परमेश्वर के आगे उन्हों ने खाया पीया और उन्हों ने दूसरी बार दाऊद के बेटे सुलेमान को राजा किया और परमेश्वर के लिये श्रेष्ठ अध्यक्ष होने को उसे अभिषेक और सादूक को
२३ याजक किया। तब सुलेमान परमेश्वर के सिंहासन पर राजा होके राज्य पर बैठा और भाग्यमान ऊआ और सारे इसराईल
२४ उसके बश में ऊए। और सारे अध्यक्षों और सामर्थी लोगों और दाऊद राजा के सारे बेटे भी सुलेमान राजा के

२५ बश में ऊए। और परमेश्वर ने सारे इसराईल की दृष्टि में सुलेमान को अत्यन्त महान किया और उसे ऐसा राजीय विभव दिया कि उस्से आगे इसराईल में किसी राजा का नथा।
२६ यों उस्सी के बेटे दाऊद ने सारे इसराईल पर राज्य किया।
२७ और उसने इसराईल पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस उसने हबरून में और यिरोशलीम में तेंतीस बरस राज्य
२८ किया। तब वुह प्रतिष्ठा में और धन में और दिनों में परिपूर्ण अच्छा पुरनिया होके मरा और उसके बेटे सुलेमान ने उसकी
२९।३० सन्ती राज्य किया। अब दाऊद राजा की अगिली और पिछली क्रिया उसके सारे राज्य सहित और उसका पराक्रम और जो जो समय उसपर और इसराईल पर और देशों के सारे राज्यों पर बीता था सो क्या समूईल दर्शी की पुस्तक में और नासान भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में और दर्शी जाद की पुस्तक में नहीं लिखा है?।
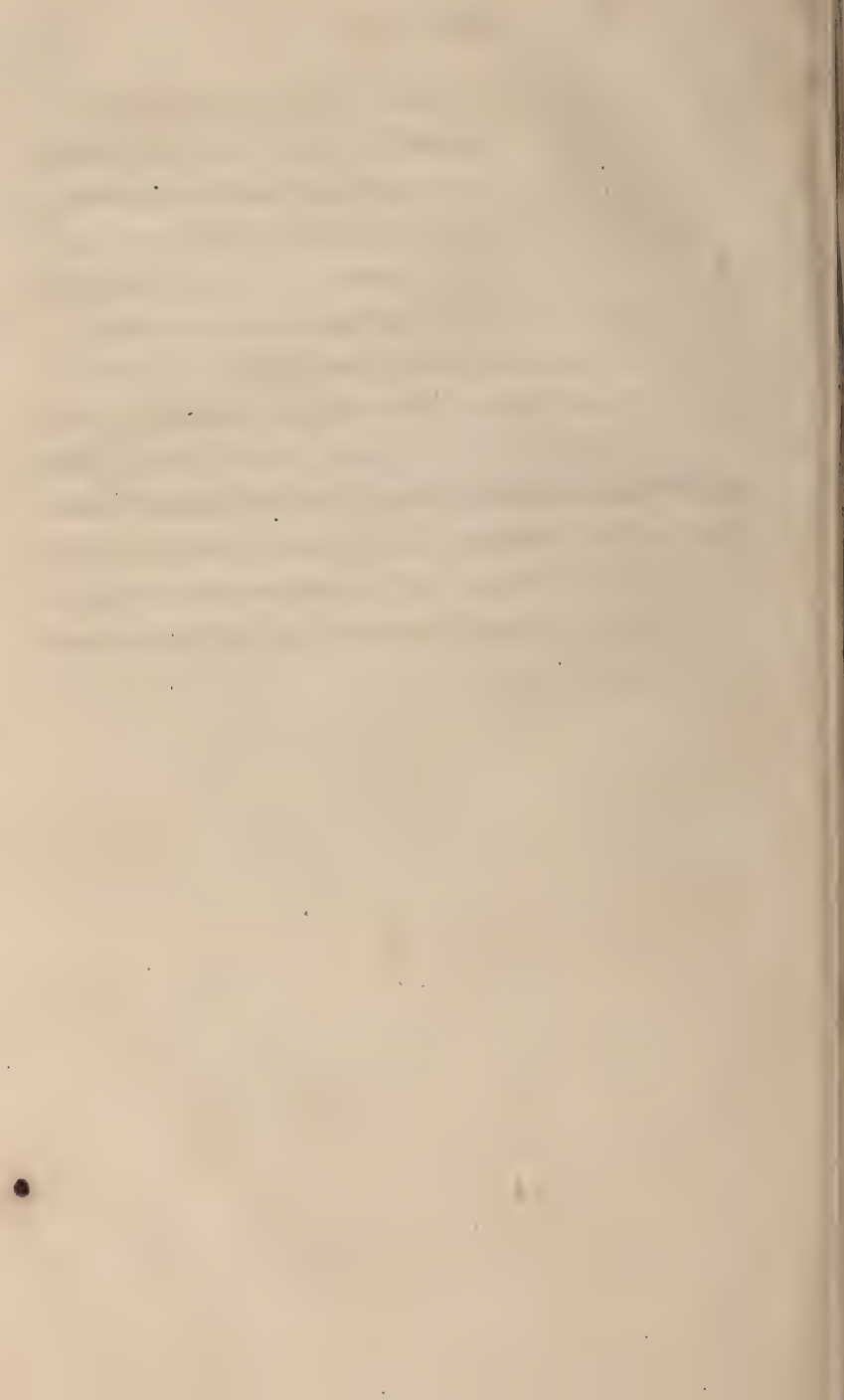
काल के समाचार की दूसरी पुस्तक।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

सुलेमान राज्य पर स्थिर होके लोगों को बलिदान के लिये गबियून में बुलाता है १—६ परमेश्वर का उसे दर्शन देना ७—१२ सुलेमान की सेना और धन और बैपार १३—१७।

१ अब दाऊद का बेटा सुलेमान अपने राज्य में दृढ़ हुआ और उसका ईश्वर परमेश्वर उसके साथ था और उसे अत्यंत
२ महान किया। तब सुलेमान ने सारे इसराईल को और सहस्र पतिन और शत पतिन को और न्यायियों को और सारे इसराईल में हर एक अध्यक्ष को और पितरों के प्रधानों
३ से बात्ता किई। तब सुलेमान और उसके साथ इसराईल की सारी मंडली गबियून के ऊंचे स्थान में गया क्योंकि परमेश्वर के सेवक मूसा ने जो मंडली का तंबू बन में बनाया था
४ सो वहां था। परन्तु दाऊद ईश्वर की मंजूषा को करियास यारीम से उस स्थान में उठा लाया था जो उसने उसके लिये सिद्ध किया था क्योंकि उसने उसके लिये यिरोशलीम में एक
५ तंबू खड़ा किया था। और भी अधिक पीतल की बेदी, जिसे हूर के बेटे ऊरी के बेटे बजालोल ने बनाया था वहां परमेश्वर के तंबू के आगे थी और सुलेमान और मंडली उसे बूझती
६ थी। और सुलेमान उधर परमेश्वर के आगे पीतल की बेदी

को, जो मंडली के तंबू में था चढ़ गया और उसपर एक
७ सहस्र होम की भेंट चढ़ाई। उसी रात ईश्वर ने सुलेमान
८ को दर्शन देके कहा कि मांग मैं तुझे क्या देउं। सुलेमान ने
ईश्वर से कहा कि तू ने मेरे पिता दाऊद पर बड़ी दया किई
९ है और उसकी संती मुझ से राज्य करवाया है। अब हे
परमेश्वर ईश्वर मेरे पिता दाऊद से अपनी बाचा स्थिर कर
क्योंकि तू ने एक लोग पर, जो पृथिवी की धूलि की नाईं बऊत
१० हैं मुझे राजा किया है। अब मुझे बुद्धि और ज्ञान दे जिसतें
मैं इन लोगों के आगे बाहर भीतर आया जाया करों क्योंकि
११ तेरे इन बड़े लोगों का न्याय कौन करसक्ता है?। तब ईश्वर
ने सुलेमान से कहा इस कारण कि तेरे मन में था. और तू ने
संपत्ति और धन अथवा प्रतिष्ठा और अपने बैरियों का प्राण
न चाहा और जीवन की बढ़ती न मांगी है परन्तु अपने
लिये बुद्धि और ज्ञान मांगा है जिसतें मेरे लोगों पर, जिन
१२ पर मैं ने तुझे राजा किया है न्याय करे। बुद्धि और ज्ञान
तुझे दिये गये और मैं धन और संपत्ति और प्रतिष्ठा तुझे ऐसी
देउंगा जैसी तेरे आगे के राजाओं को न दिई और न तेरे
१३ पिछिलों को ऐसी होगी। तब सुलेमान गबियून के
ऊंचे स्थान से मंडली के तंबू के आगे यिरोशलीम को आया
१४ और इसराईल पर राज्य किया। और सुलेमान रथों और
घोड़चढ़ों को बटोरा और उसके चौदह सौ रथ और बारह
सहस्र घोड़चढ़े थे जिन्हें उसने रथ के नगरों में और यिरोशलीम
१५ में राजा के पास रक्खा। और राजा ने यिरोशलीम में
सोने चांदी को पत्थर की नाईं किया और आरज पेड़ों को
१६ बऊताई से बनैले गूलर पेड़ों की नाईं किया। और सुलेमान
के लिये घोड़े और सूत मिसर से आते थे और राजा के बैपारी
१७ मोल से सूत लेते थे। और मिसर से छः सौ टुकड़े चांदी
का एक एक रथ और डेढ़ सौ का एक एक घोड़ा लाते थे और

इसी रीति से हित्तियों के सारे राजाओं के लिये और सुरिया के राजाओं के लिये उनके द्वारा से लाते थे।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

मन्दिर और अपना घर बनाने के लिये सुलेमान का हूराम पास भेजना १—१० हूराम का उत्तर और सुलेमान के बनिहार आदिक ११—१८ ।

१ और सुलेमान ने परमेश्वर के नाम के लिये एक मन्दिर और
२ अपने राज्य के लिये एक घर बनाने को ठाना। और सुलेमान ने सत्तर सहस्र बोझियों और पहाड़ में अस्सी सहस्र पत्थर
३ तोड़वैयों को और तीन सहस्र छः सौ करोड़ों को गिना। और सुलेमान ने सूर के राजा हूराम पास कहला भेजा कि जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से व्यवहार करके एक निवास स्थान बनाने के लिये उस पास आरज काष्ठ भेजा था वैसा मुझे भी कर।
४ और देख मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के नाम के और उसकी स्थापना के लिये और उसके आगे सुगंधों का धूप जलाने के लिये और नित्य की भेंट की रोटी के लिये और सांझ बिहान के और विश्रामों और अमावास्या में और हमारे ईश्वर परमेश्वर के भारी पर्ब्बों में होम की भेंटों के लिये एक मन्दिर बनाता हों यह इसराईल के
५ लिये नित्य की बिधि है। और मैं जो मन्दिर बनाता हों सो महान
६ है क्योंकि हमारा ईश्वर सारे देवों से महान है। परन्तु किस ने सामर्थ्य पाई है कि उसके लिये एक मन्दिर बनावे क्योंकि स्वर्ग और स्वर्गों का स्वर्ग उसे समा नहीं सक्ता फेर मैं कौन हों जो उसके लिये मन्दिर बनाओं कि केवल उसके आगे होम की
७ बलि चढ़ाओं। इस लिये अब सोना और रूपा और पीतल और लोहा और बैंजनी और किरमी और नीले के कार्य्य करने को निपुण कार्यकारी को, जो यहूदा और यिरोसलीम में के गुणकारियों के संग, जिन्हें मेरे पिता दाऊद ने ठीक

८ लिया था, एक खोदक को मुझ पास भेज। और आरज पेड़ और देवदारु पेड़ और अलगुम पेड़ लबनान में से मेरे पास भेज क्योंकि (मैं जानता हों कि तेरे सेवक लबनान के लट्ठों को काटने में निपुण हैं) और देख मेरे सेवक तेरे सेवकों के
९ साथ होंगे। अर्थात् लट्ठे बहुताई से सिद्ध करने को क्योंकि जो मन्दिर मैं बनाने पर हों सो महान और आश्चर्यित होगा।
१० और देख मैं तेरे लकड़िहार सेवकों को जो लट्ठे काटते हैं बीस सहस्र नपुये गोहूं के पिसान और बीस सहस्र नपुये जव और बीस सहस्र कुप्पे दाखरस और बीस सहस्र कुप्पे तेल
११ देउंगा। तब सूर के राजा हूराम ने उत्तर लिखके सुलेमान पास भेजा इस कारण कि परमेश्वर ने अपने लोगों
१२ से प्रेम किया उसने आप को उन पर राजा बनाया। हूराम ने और भी कहा कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर धन्य है जिसने स्वर्ग और पृथिवी को सिरजा उसने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान पुत्र दिया जो चतुराई और ज्ञान से जानकार है जिसतें परमेश्वर के लिये मन्दिर और अपने राज्य के लिये
१३ एक भवन बनावे। अब मैं ने अपने पिता हूराम के एक
१४ गुणवान जन को, जो ज्ञानी है भेजा है। जो दान की लड़कियों में की स्त्री का बेटा और उसका पिता सूर का एक जन वुह सोना और चांदी और पीतल और लोहा और पत्थर और लट्ठे और बैंजनी और नीले झीने वस्त्र और लाल कार्य का गुणी है और हर प्रकार के खोदने में प्रवीण जो तेरे गुणवानों के संग और मेरे प्रभु आप के पिता दाऊद के गुणवानों के साथ जो कार्य उसे दिया जायगा वुह हर एक
१५ जुगत से निकालेगा। इस कारण मेरे प्रभु ने जो गोहूं और जव और तेल और दाखरस के विषय में कहा है सो अपने
१६ सेवकों के लिये भेजिये। और आप के सारे प्रयोजन के समान हम लबनान में लकड़ी काटेंगे और समुद्र से बेड़ों में आप

पास याफा में पहुंचावेंगे और आप उन्हें यिरोशलीम में
१७ चढ़ाइये। और उसके पिता दाऊद के गिनने के समान
सुलेमान ने इसराईल के देश में के सारे परदेशियों को गिना
१८ और वे एक लाख तिरपन सहस्र छः सौ ठहरे। और उसने
उन में से सत्तर सहस्र जन बोझिये और अस्सी सहस्र
जन पहाड़ में तोड़वैये और लोगों पर तीन सहस्र छः सौ
कड़ोरे ठहराये।

३ तीसरा पर्ब्ब।

मन्दिर का स्थान और बनाने का आरंभ १—२
उसकी लम्बाई चौड़ाई शोभा आदिक ३—१३ उसके
घूंघट और खंभे १४—१७।

१ तब सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर को यिरोशलीम में मोरिया
पर्ब्बत पर, जहां उसके पिता दाऊद ने दर्शन पाया था उस
स्थान में, जो दाऊद ने यबूसी अरनान के खलिहान में सिद्ध
२ किया था बनाने लगा। और उसने अपने राज्य के चौथे बरस
और दूसरे मास की दूसरी तिथि में बनाना आरंभ किया।
३ अब ईश्वर का मन्दिर बनाने को सुलेमान ने यह पाया
पहिले नाप के समान हाथों से लम्बाई साठ हाथ की और
४ चौड़ाई बीस हाथ की। और आगे के ओसारे की लम्बाई
घर की चौड़ाई के समान बीस हाथ और लम्बाई एक सौ
५ बीस हाथ और उसने उसे निर्मल सोने से मढ़ा। और उसे
बड़े घर को उसने देवदारु के काठ से छवाया जिसे उसने चोखे
सोने से मढ़ा और उसके ऊपर खजूर पेड़ और सीकरें
६ रक्खीं। और उसने घर को शोभा के लिये मणि से जड़ा
७ और सोना पारवइम का सोना था। और उसने घर को
और लट्ठों को और खंभों को और उसकी भीतों को और
उसके किवाड़ों को भी सोने से मढ़ा और भीत पर करोबिबों

८ को खोदा । और उसने अत्यंत पवित्र घर बनाया जिसकी लम्बाई घर की चौड़ाई के समान बीस हाथ और उसकी चौड़ाई बीस हाथ और उसने उसे छः सौ तोड़े चोखे सोने
९ से मढ़ा । और कीलों की तौल पचास शेकल सोना था और
१० उसने ऊपर की कोठरियां सोने से मढ़ीं । और उस अत्यंत पवित्र घर में पुतली के कार्य्य से उसने दो करोबी बनवाये और
११ उन्हें सोने से मढ़ा । और करोबियों के डैनों की लंबाई बीस हाथ, एक डैना पांच हाथ का घर की भीति लों पहुंचा और दूसरा
१२ डैना पांच हाथ का दूसरे करोबी के डैने लों पहुंचा । और दूसरे करोबी का डैना पांच हाथ का घर की भीत लों पहुंचा और दूसरा डैना पांच हाथ का दूसरे करोबी के डैने लों
१३ मिला था । और इन करोबियों के डैने बीस हाथ लों फैले और वे अपने अपने पांव पर खड़े थे और उनके मुंह भीतर
१४ की ओर । और उसने घूंघट को नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूती कपड़े से बनाया और उस पर करोबियों
१५ को उभाड़ा । और उसने घर के आगे पैंतीस हाथ लम्बे दो खंभेभी बनाये और उसके ऊपर के कलस भी पांच हाथ के ।
१६ और उसने ईश्वरीय बाचा में सीकरें बनाईं और खंभों के मथाओं पर लगाईं और एक सौ अनार बनाये और सीकरों
१७ पर रक्खे । और उसने मन्दिर के आगे उन खंभों को खड़ा किया एक दहिनी ओर दूसरा बाईं ओर और दहिने का नाम उसने याकिन और दूसरे का नाम बोआज रक्खा ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

बेदी और समुद्र स्नान पात्र, दीअट और मंच
१—८ मन्दिर के दो आंगन पात्र आदिक ९—२२

१ और उसने पीतल की बेदी भी बनाई जिसकी लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ की और उसकी ऊंचाई दस

२ हाथ की। और उसने कोर से कोर लों दस हाथ गोल एक ढला ज्ञआ समुद्र बनाया और उसकी ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की रस्सी उसकी चारों ओर आती
३ थी। और उसके नीचे बैल कीसी सूरत जो उसकी चारों ओर थे हाथ भर में दस, समुद्र को घेरे ज्ञए थे और ढ़ाले
४ जाने के समय दो पांती बैल ढाले गये। वुह बारह बैलों पर धरा गया था तीन उत्तर की ओर देखते थे और तीन पश्चिम की ओर देखते थे और तीन दक्खिन की ओर देखते थे और तीन पूर्ब्ब की ओर देखते थे और समुद्र उन्हीं के ऊपर और
५ उनसभों के पुट्ठे भीतर थे। और उसकी मोटाई चार अंगुल की और उसके कोर जैसा कटोरे के कार्य का होता है सौसन के फूल के समान उसमें एक सहस्र सात सौ मन के लगभग की
६ समाई थी। उसने दस स्नान पात्र भी बनाये और उनमें धोने के लिये पांच को दहिने और पांच को बांये अलंग रक्खा और जो वस्तु होम की भेंट के लिये चढ़ाते थे उन्हीं में धोते थे
७ परन्तु समुद्र याजकों के स्नान के लिये था। और उनके डौल के समान उसने सोने की दस दीअट बनाईं और उन्हें मन्दिर
८ में पांच दहिनी और पांच बाईं ओर रक्खा। उसने दस मंच भी बनाये और मन्दिर में पांच दहिनी और पांच बाईं ओर रक्खे और उसने सोने के सौ कटोरे बनाये।
९ उनसे अधिक याजकों का आंगन और बड़ा आंगन और आंगन के केवाड़े भी बनाये और केवाड़ों को पीतल से मढ़ा।
१० और उसने समुद्र को पूर्ब्ब की दहिनी ओर दक्खिन के साम्ने
११ रक्खा। और हूराम ने बर्त्तन और करछुल और कटोरे बनाये तब हूराम ईश्वर के मन्दिर के निमित्त सुलेमान राजा के लिये जो कुछ बनाने को था सब बनाचुका। अर्थात्
१२ दो खंभे और गोलाई और दोनों खंभे के ऊपर के मथाले और खंभों के ऊपर के दो कलशों की गोलाई ढांपने के लिये

१३ दो सीकरें बनाईं। और दोनों सीकरों पर चार सौ अनार, एक एक सीकर पर दो दो पांती अनार जिसतें खंभों पर के
१४ कलशों की दोनों गोलाइयों को ढांपे। उसने आधार भी
१५ बनाये और उन पर स्नान पात्रों को रक्खा। एक समुद्र के
१६ नीचे बारह बैल रक्खे। उसके पिता हूराम ने बर्त्तन और करछुल और मांस की कंटिये और उनकी सारी सामग्री सुलेमान राजा के निमित्त परमेश्वर के मन्दिर के लिये मांजेऊए पीतल
१७ से बनाईं। अर्दन के चौगान में सकूस और सरीदासा के
१८ बीच भूमि की गहिराई में राजा ने उन्हें ढाला। यों सुलेमान ने इन सारे पात्रों को बऊताई से बनाया क्योंकि पीतल की
१९ तौल पाई न जासकी। और सुलेमान ने ईश्वर के मन्दिर के सारे पात्रों को और सोने की वेदी को भी और
२० भेंट की रोटी के मंचों को भी बनाया। उनसे अधिक दीअट उनके दीपक समेत बनाईं जिसतें वे चोखे सोने से ईश्वरीय
२१ वाणी के आगे रीति के समान जला करें। और फूल और दीपक
२२ और चिमटे सोने से निर्म्मल सोने से बनाये। और टेमकाट और कटोरे और करछुल और निर्म्मल सोने की धूपावरियां और घर की पैठ और अतिपवित्र के भीतर के केवाड़े और मन्दिर के घर के केवाड़े सोने के।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

मन्दिर की समाप्ति प्रतिष्ठा आदिक १—१० लावियों के भजन करतेही मेघ से मन्दिर भरजाता है ११—१४।

१ यों सारे कार्य्य जो सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये किये बनचुके और सुलेमान अपने पिता दाऊद की समर्पण किई ऊई वस्तुन को ले आया और सोना चांदी और सारे
२ पात्रों को ईश्वर के मन्दिर के भंडारों में रक्खा। तब

सुलेमान ने दाऊद के नगर, अर्थात् सीहून से परमेश्वर के नियम की मंजूषा को ऊपर लाने के लिये इसराईल के प्राचीनों को और गोष्ठियों के सारे प्रधानों को, अर्थात् इसराईल के सन्तानों
३ के पितरों के प्रधानों को यिरोसलीम में एकट्ठे किया। इस लिये सातवें मास के पर्ब्ब में इसराईल के सारे मनुष्य राजा
४ पास एकट्ठे ऊए। और इसराईल के सारे प्राचीन आये
५ और लावियों ने मंजूषा उठा लिई। और उन्हों ने मंजूषा को और मंडली के तंबू को और सारे पवित्र पात्र को जो
६ तंबू में थे याजक और लावी उठा लाये। और सुलेमान राजा ने और इसराईल की सारी मंडली ने, जो उस पास मंजूषा के आगे एकट्ठे ऊए थे इतने भेड़ और बैल के बलिदान
७ चढ़ाये जो बज़ताई के मारे गिने नहीं जासक्ते थे। तब याजकों ने परमेश्वर के नियम की मंजूषा को अपने स्थान अर्थात् मन्दिर की ईश्वरीय वाणी अत्यंत पवित्र स्थान में करोबियों के
८ डैनों के नीचे लाये। क्योंकि मंजूषा के स्थान में करोबी डैना फैलाये ऊए थे और करोबियों ने मंजूषा को और उसके
९ बहंगरों को ऊपर से ढांपा। तब बहंगरों को निकालके ईश्वरीय वाणी के आगे रक्खा क्योंकि बहंगरों के टोंक ईश्वरीय वाणी के आगे से दिखाई देते थे परन्तु बाहर से नहीं दिखाई
१० देते थे और आज लों वहीं हैं। मिसर से निकलने से जब परमेश्वर ने इसराईल के सन्तान से नियम किया था पटियों को छोड़ जिन्हें मूसा ने होरेब में रक्खा था मंजूषा में कुछ
११ न था। और ऐसा ऊआ कि जब याजक पवित्र स्थान से निकल आया (क्योंकि सारे याजक जो पाये गये थे और
१२ पवित्र कियेगये थे पारी पारी में नहीं ठहरते थे। और असाफ के और हीमान के और यदूसून के सारे लावी गायक भी उनके बेटे और उनके भाई बंद समेत झीने श्वेत कपड़े पहिने ऊए करताल और नेवल और बीन लेके बेदी के पूर्ब्ब के अंत

में खड़े ऊए और उनके साथ तुरही बजाते ऊए एक सौ बीस
१३ याजक)। और जब उन्हों ने तुरही से और करताल से और बाजे की सामग्री से शब्द उठाया और परमेश्वर की स्तुति किई क्योंकि वुह भला है और उसकी दया सर्वदा के लिये ज्यों तुरहियां और गायक परमेश्वर की स्तुति और धन्यमान के सुनाया जाने के लिये एक साथ स्वर उठाया यों ऊआ कि घर
१४ अर्थात् परमेश्वर का मन्दिर मेघ से भर गया। यहां लों कि याजक मेघ के मारे सेवा के लिये ठहर न सक्ते थे क्योंकि परमेश्वर के बिभव ने ईश्वर के मन्दिर को भर दिया था।

६ छठवां पर्ब्ब ।

सुलेमान लोगों को आशीष देता है और ईश्वर की स्तुति करता है १—११ मन्दिर की प्रतिष्ठा में उसकी प्रार्थना १२—३९ परमेश्वर के साक्षात् और आशीष मांग के समाप्त करता है ४०—४२ ।

१ तब सुलेमान ने कहा कि परमेश्वर ने कहा है कि मैं गाढ़े
२ अंधकार में बास करोंगा। परन्तु मैं ने तेरे निवास के लिये एक घर बनाया है और तेरे सर्वदा के रहने के लिये एक
३ स्थान। और राजा ने अपना मुंह फेर के इसराईल की सारी मंडली को आशीष दिया (और इसराईल की सारी
४ मंडली उठ खड़ी ऊई)। और उसने कहा कि इसराईल का ईश्वर परमेश्वर धन्य जिस ने अपने हाथों से वुह संपूर्ण किया जो वुह मेरे पिता दाऊद से अपने मुंह से कहिके बोला।
५ कि जब से मैं अपने लोगों को मिसर के देश से निकाल लाया मैं ने अपने नाम के लिये इसराईल की सारी गोष्ठियों में से मन्दिर बनाने को कोई नगर न चुना और अपने इसराईल लोगों पर प्रभुता करने को किसी मनुष्य को नहीं चुना।
६ परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये यिरोशलीम को चुना है और

मेरे इसराईल लोगों पर होने के लिये दाऊद को चुन लिया
७ है। अब मेरे पिता दाऊद के मन में था कि इसराईल के
८ ईश्वर परमेश्वर के नाम के लिये एक मन्दिर बनावे। परन्तु
परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि जैसा मेरे नाम के
लिये तेरे मन में एक मन्दिर बनाना था सो तू ने अच्छा किया
९ कि तेरे मन में था। तथापि तू वुह मन्दिर न बनाना परन्तु
तेरा बेटा, जो तेरी कटि से निकलेगा सोई मेरे नाम के लिये
१० मन्दिर बनावेगा। इस लिये परमेश्वर ने अपने कहे ऊए बचन
को पूरा किया है क्योंकि मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर
उठा हों और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के समान इसराईल के
सिंहासन पर बैठा हों और इसराईल के ईश्वर परमेश्वर के
११ नाम के लिये वुह मन्दिर बनाया है। और मैं ने उस में मंजूषा
रक्खी है जिस में परमेश्वर का वुह नियम है जो उसने इसराईल
१२ के सन्तानों के साथ किया। तब वुह इसराईल की सारी
मंडली के साम्ने परमेश्वर की बेदी के आगे खड़ा ऊआ और
१३ अपने हाथ फैलाये। (क्योंकि सुलेमान ने पांच हाथ लम्बा
और पांच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा पीतल का एक
मचान बनाया था और आंगन के मध्य में उसे रक्खा और
उसी पर खड़ा होके इसराईल की सारी मंडली के आगे घुठना
१४ टेका और स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाये)। और कहा
कि हे इसराईल के ईश्वर परमेश्वर तेरे तुल्य स्वर्ग में अथवा
पृथिवी में कोई ईश्वर नहीं जो अपने दासों के लिये, जो अपने
सारे मन से तेरे आगे चलते हैं नियम और दया रखता है।
१५ तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद से, जो प्रतिज्ञा किई है
और अपने मुंह से कहा है और अपने हाथ से पूरा किया
१६ है सो पाला है जैसा आज है। अब इस लिये हे परमेश्वर
इसराईल के ईश्वर उसे पालन कर जो तू ने अपने दास मेरे
पिता दाऊद से यह कहिके प्रतिज्ञा किई है कि तेरे लिये पुरुष

मेरी दृष्टि में न घटेगा कि इसराईल के सिंहासन पर बैठे तथापि जिसतें तेरे बंश चौकस होके मेरी व्यवस्था पर चलें
१७ जैसा तू मेरे आगे चला है। सो अब हे इसराईल के ईश्वर परमेश्वर जो बचन तू ने अपने दास दाऊद से कहा है उसे
१८ पूरा कर। परन्तु क्या निश्चय ईश्वर पृथिवी के मनुष्यों के साथ बास करेगा? देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तुझे समवा नहीं
१९ सक्ते कितना अधिक यह मन्दिर जो मैं ने बनाया है?। इस लिये हे मेरे ईश्वर परमेश्वर तू अपन दास की प्रार्थना पर और उसकी बिनती पर सुरत लगा और अपने दास के रोने और प्रार्थना को सुन जो वुह तेरे आगे प्रार्थना करता है।
२० जिसतें तेरी आंखें रात दिन इस मन्दिर पर अर्थात् इस स्थान पर जिसके विषय में तू ने कहा है कि मैं अपना नाम उसमें स्थापन करोंगा कि अपने दास की प्रार्थना को जो इस स्थान
२१ की ओर करता है सुने। इस लिये अपने दास की और अपने इसराईल लोगों की बिनती सुन जो वे इस स्थान की ओर करें तू अपने निवास स्थान स्वर्ग से सुन और सुन के
२२ क्षमा कर। यदि कोई अपने परोसी का पाप करे और उसे किरिया लेने को उस पर किरिया रक्खी जाय और वुह किरिया इस मन्दिर में तेरी बेदी के
२३ आगे आवे। तब स्वर्ग में से सुन और अपने दास का न्याय कर जिसतें दुष्ट के सिर पर उसकी चाल का पलटा पड़े जिसतें धर्म्मी अपने धर्म्म के समान पाने को निर्दोष ठहरे।
२४ और यदि तेरे इसराईल लोग तेरे बिरुद्ध पाप करने के कारण बैरी के आगे हारजायं और फिरके तेरे नाम को मान लेवें और प्रार्थना करके इस मन्दिर में तेरे आगे बिनती
२५ करें। तब तू स्वर्गों में से सुन और अपने इसराईल लोगों का पाप क्षमा कर और उन्हें इस देश में फिर ला जो तू ने उन्हें
२६ और उनके पितरों को दिया है। जब स्वर्ग बंद

हो जाय और उन के पाप के कारण जल न बरसे जब तू उन्हें कष्ट देता है यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे

२७ नाम को मान लेवें और अपने पाप से फिरें। तब तू स्वर्ग से सुन और अपने दासों का और अपने इसराईल लोगों का पाप क्षमा कर और उन्हें अच्छा मार्ग बता जिस में उन्हें चलना उचित है और अपने देश में, जिसे तू ने अपने लोगों

२८ को अधिकार के लिये दिया है जल बरसा। यदि देश में अकाल अथवा मरी अथवा झुलस अथवा लेंढ़ा होवे अथवा टिड्डी अथवा कीड़े हों अथवा उनके बैरी उनके देश के

२९ नगरों में उन्हें घेर लेवें जो कुछ घाव अथवा रोग होवे। तब जो जो प्रार्थना अथवा बिनती किसी जन से अथवा अपने सारे इसराईल लोगों से किई जाय जब हर एक जन अपनेही घाव और अपनेही शोक को पहिचाने और अपने हाथ इस

३० मन्दिर की ओर फैलावें। तब तू अपने रहने के निवास स्वर्ग से सुन और क्षमा कर और हर एक जन को उसकी सारी चाल के समान, जिसका मन तू जानता है प्रतिफल दे (क्योंकि केवल तू मनुष्यों के सन्तान के अंतःकरणों को जानता है)।

३१ जिसतें वे तुझे डरके तेरे मार्गों पर अपने जीवन भर उस देश में, जिसे तूने हमारे पितरों को दिया है चलें।

३२ और जो बिदेशी तेरे इसराईल लोगों में का नहीं है परन्तु जो तेरे महत् नाम और तेरे बलवंत हाथ और फैलाई ऊई भुजा के लिये दूर देश से आये हैं यदि वे आवें और

३३ इस मन्दिर में प्रार्थना करें। तो तू अपने निवास स्थान स्वर्गों में से सुन और परदेशी की सारी प्रार्थना के समान कर जिसतें पृथिवी के सारे लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराईल लोगों के समान तुझे डरें और जानें कि यह मन्दिर

३४ पर तेरा नाम कहा जाता है। यदि तेरे लोग उस मार्ग से अपने बैरियों से संग्राम करने को निकलें जिसे तू

उन्हें भेजेगा और वे इस नगर की ओर, जिसे तू ने चुना है और इस मन्दिर की ओर, जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया है
३५ प्रार्थना करें। तो स्वर्गों में से उनकी प्रार्थना और बिनती सुन
३६ और उनके पद का पक्ष कर। यदि वे तेरे बिरोध पाप करें (क्योंकि कोई जन नहीं जो पाप नहीं करता) और तू उन से रिसियाके उन्हें बैरी के हाथ सौंपदेवे और वे उन्हें
३७ बंधुआई में दूरदेश में अथवा समीप ले जायें। तथापि जिस देश में वे बंधुआई में उठाये जायें यदि वे अपने मन में चेत करें और वे बंधुआई के देश में फिरें और यह कहिके तेरी प्रार्थना करें कि हमने पाप किया है, हमने चूक किया है, और
३८ दुष्टता से व्यवहार किया है। वे अपनी बंधुआई के देश में, जहां वे उन्हें बंधुआई में लेगये हैं यदि वे अपने सारे अंतःकरण से और अपने सारे प्राण से तेरी ओर फिरें और अपने देश की, जो तू ने उनके पितरों को दिया है, और उस नगर की ओर, जिसे तू ने चुना है और इस मन्दिर की ओर, जो
३९ मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया है प्रार्थना करें। तब तू अपने निवास स्थान स्वर्गों में से उनकी प्रार्थना और बिनती सुन और उनके पद का पक्ष कर और जो पाप तेरे लोगों ने किया
४० है क्षमा कर। अब हे मेरे ईश्वर मैं बिनती करता हों कि इस स्थान की प्रार्थना पर तेरी आंखें खुली और तेरे कान
४१ झुके रहें। इस लिये अब हे परमेश्वर ईश्वर अपने बिश्राम स्थान पर उठ जा तू और तेरी मंजूषा का बल हे परमेश्वर ईश्वर तेरे याजक मुक्ति से पहिराये जायें और तेरे संत भलाई
४२ से आनंद करें। हे परमेश्वर ईश्वर तू अपने अभिषिक्त का मुंह मत फेर अपने दास दाऊद की दया को स्मरण कर।

परमेश्वर का सुलेमान की प्रार्थना को ग्रहण करना और उसके बिभव से मन्दिर का भरजाना १—३ मन्दिर की प्रतिष्ठा में सुलेमान के बलिदान और लोगों को आनन्द से बिदा करना ४—११ ईश्वर का सुलेमान को दर्शन देके उस्से बाचा बांधना १२—२२।

१ जब सुलेमान प्रार्थना करचुका था तब स्वर्ग से आग उतरी और होम की भेंट और बलिदानों को भस्म किया २ और परमेश्वर के बिभव से मन्दिर भरगया। और याजक परमेश्वर के मन्दिर में प्रवेश न करसके इस कारण कि परमेश्वर ३ के बिभव से परमेश्वर का मन्दिर भर गया था। और जब इसराईल के सारे सन्तानों ने देखा कि किस रीति से आग और परमेश्वर का बिभव मन्दिर पर उतरा उन्हों ने गच पर भूमि लों मुंह के बल झुकके दंडवत और परमेश्वर की स्तुति किई क्योंकि वुह भला है और उसकी दया सर्व्वदा लों है।

४ तब राजा और सारे लोगों ने परमेश्वर के आगे ५ बलि चढ़ाये। और सुलेमान राजा ने बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेड़ बलि चढ़ाये यों राजा और ६ सारे लोगों ने ईश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा किई। और याजक और लावी भी परमेश्वर के बाजे की सामग्री लिये ऊए जिन्हें दाऊद राजा ने परमेश्वर की स्तुति के लिये बनाया था, अपने अपने पदों पर ठहरे जब दाऊद ने उनके द्वारा से स्तुति किई क्योंकि उसकी दया सर्व्वदा लों है और याजकों ने उन ७ के आगे तुरही बजाई और सारे इसराईल खड़े ऊए। और सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के आगे के आंगन के मध्य को पवित्र किया क्योंकि वहां उसने होम की भेंट और कुशल की भेंट की चिकनाई चढ़ाई इस कारण की सुलेमान ने जो पीतल की बेदी बनाई थी उसमें होम की भेंटें और मांस की भेंटें

८ और चिकनाई समा न सकीं। उस समय में सुलेमान और उसके साथ सारे इसराईल की एक अति बड़ी मंडली हमास की पैठसे मिसर की नदी लों सात दिन लों पर्ब रक्खा।
९ और आठवें दिन में वे रुकगये क्योंकि उन्हों ने सात दिन बेदी की प्रतिष्ठा के लिये और सात दिन पर्ब के लिये रक्खा।
१० और दाऊद पर और सुलेमान पर और अपने इसराईल लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह के लिये उसने सातवें मास की तेईसवीं तिथि में आनन्दित और मगनता से लोगों को
११ अपने अपने डेरे को बिदा किया। यों सुलेमान परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन बना चुका और परमेश्वर के मन्दिर में और अपने भवन में जो जो कुछ सुलेमान के मन
१२ में आया उसने उसे भाग्य से सिद्ध किया। और परमेश्वर ने रात को सुलेमान को दर्शन दिया और उसे कहा कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है और बलि के घर के लिये यह
१३ स्थान चुन लिया है। जो मैं स्वर्ग को बन्द करों जिसतें न बरसे अथवा जो देश नष्ट करने को टिड्डियों को आज्ञा करों अथवा
१४ जो मैं अपने लोगों में मरी भेजों। यदि मेरे लोग, जो मेरे नाम से कहाये जाते हैं आप को दीन करके प्रार्थना करें और मेरा मुंह ढूंढ़ें और अपने दुष्ट मार्गों से फिरें तो मैं स्वर्ग से सुनोंगा और उनका पाप क्षमा करोंगा और उनके देश को
१५ चंगा करोंगा। इस स्थान की प्रार्थना पर मेरी आंखें खुली रहेंगी
१६ और मेरे कान झुके रहेंगे। क्योंकि मैं ने इस मन्दिर को चुनके इसे पवित्र किया है जिसतें मेरा नाम सर्बदा इस में रहे और
१७ मेरी आंखें और मेरा मन सदा यहां रहेंगे। और तू जो है जैसा तेरा पिता दाऊद मेरे आगे चलता था वैसा यदि मेरे आगे चलेगा और मेरी सारी आज्ञा के समान करेगा
१८ और मेरी बिधि और बिचार मानेगा। जैसा मैं ने यह कहिके तेरे पिता दाऊद से वाचा बांधी है, कि इसराईल में से

तेरे लिये आज्ञाकारी न घटेगा तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन
१९ को स्थिर करोंगा। परंतु मेरी बिधिन और आज्ञाओं को
जो मैं ने तुम्हारे आगे रक्खी हैं यदि तुम फिरके छोड़ देओगे
२० और जाके दूसरे देवों को सेवा और पूजा करोगे। तो मैं
उन्हें अपने देश से, जो मैं ने उन्हें दिया है, उखाड़ डालोंगा
और यह मन्दिर जिसे मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया
है अपनी दृष्टि से दूर करोंगा और उसे एक कहानी और एक
२१ कहावत सारे जातिगणों में बनाओंगा। और यह महत मन्दिर
इधर के हर एक जानेवाले पर आश्चर्य्यित होगा यहां लों
कि वुह कहेगा कि परमेश्वर ने इस देश को और इस मन्दिर
२२ को क्यों ऐसा किया है?। तब उत्तर दिया जायगा इस कारण
कि उन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को, जो उन्हें
मिसर के देश से निकाल लाया था त्याग करके और देवों को
गहा है और उनकी पूजा और सेवा किई इस लिये उसने
ये सारी बुराइयां उन पर लाई हैं।

८ आठवां पर्ब्ब।

सुलेमान से कई नगर का बनाया जाना १—६ अन्यदेशियों का सुलेमान के बश में होना और इसराईलियों के प्रतिष्ठित कार्य ७—१० सुलेमान के बलिदान और याजकों के कार्य ११—१५ मन्दिर के कार्य का पूरा होना और सुलेमान की बहीर का समाचार १६—१८।

१ और बीस बरस के अन्त में जिस में सुलेमान ने परमेश्वर का
२ मन्दिर और अपनेही भवन बनाया यों ऊआ। कि जो जो
नगर हूराम ने सुलेमान को फेर दिया था सुलेमान ने उन्हें
३ बनाके इसराईल के सन्तानों को उनमें बसाया। फिर
४ सुलेमान हमास सोबाह में जाके उस पर प्रबल ऊआ। और

उसने बन में तद्मोर बनाया और हमास में सारे भंडार
५ नगर बनाये। उसने ऊपर का और नीचे का बैत हूरून भी
बनाये जो अड़ंगे और फाटक और भीत से बाढ़ित नगर थे।
६ और बालास और सारे भंडार नगर जो सुलेमान के थे और
सारे रथ नगर और घोडचढ़ों के नगर और सुलेमान की
सारी बांछा जो उसने बांछा से यिरोशलीम में और लबनान
में और अपने देश के सारे राज्य में बनाये।
७ और हित्तियों के और अमूरियों के और फ़रज़ियों के
और हवियों के और यबूसियों के बचेऊए सारे लोग जो
८ इसराईल के न थे। परन्तु उनके बंश, जो उनके पीछे उस देश
में छोड़े गये, जिन्हें इसराईल के सन्तानों ने नष्ट न किया, उन्हें
९ सुलेमान ने आजलों करदायक ठहराया। परन्तु इसराईल
के सन्तानों में से सुलेमान ने अपने कार्य के लिये किसी को दास
न बनाया परन्तु वे योद्धा और सेनापति और रथपति और
१० घोडचढ़े थे। और वे सुलेमान राजा के श्रेष्ठ प्रधान थे अर्थात्
११ अढ़ाई सौ जो लोगों पर प्रभुता करते थे। और सुलेमान
ने फरऊन की पुत्री को दाऊद के नगर से उस भवन में लाया
जो उसने उसके लिये बनाया था क्योंकि उसने कहा था कि
मेरी पत्नी इसराईल के राजा दाऊद के भवन में न रहेगी
इस कारण कि पवित्रता में परमेश्वर की मंजूषा आई है।
१२ तब सुलेमान ने परमेश्वर की बेदी पर, जो उसने
ओसारे के आगे बनाई थी परमेश्वर के लिये होम की भेंटें
१३ चढ़ाईं। अर्थात् मूसा की आज्ञा के समान प्रति दिन के लिये
विश्रामों में और अमावास्यों में और बरस बरस तीन बार
भारी पर्ब्बों में अख़मीरी रोटी के पर्ब्ब में और अठवारों के पर्ब्ब
में और तंबूओं के पर्ब्ब में ठहराये ऊए नियम के समान भेंट
१४ चढ़ाई। और वुह अपने पिता दाऊद के ठहराने के
समान याजकों को सेवा के लिये उनकी पारी ठहराई और

प्रति दिन के आवश्यक कार्य के समान याजकों के आगे स्तुति और सेवा करने के लिये लावियों को और उनकी पारी के समान हर एक फाटक में द्वारपालक भी, ठहराया क्योंकि
१५ ईश्वर के जन दाऊद की आज्ञा योंही थी। और किसी विषय में अथवा भंडारों के विषय में राजा की आज्ञा से जो गायकों
१६ को और लावियों को दिई गई थी वे अलग न ज़ए। अब सुलेमान के सारे कार्य परमेश्वर के मन्दिर की नेंव डालीजाने के दिन से उसके पूरा होने लों सिद्ध ज़ए सो परमेश्वर का मन्दिर
१७ बनगया। तब सुलेमान समुद्र के तीर यदूम देश में अज़ियून
१८ गबर को और अलूत को गया। और ज़राम अपने दासों के हाथ से जहाज़ों को और समुद्र के जान कार दासों को उसपास भेजा और वे सुलेमान के दासों के संग ओफीर को गये और वहां से साढ़े चार सौ तोड़े सोना सुलेमान राजा पास लाये।

९ नवां पर्ब्ब ।

शीवा की रानी का सुलेमान से भेंट करना १—१२ सुलेमान का बरस बरस का सोना और सोने की ढाल हाथी दांत के सिंहासन आदिक १३—२१ और राजाओं का उसे प्रतिष्ठा देनी २२—२४ उसके घोड़े रथ देश और संपत्ति २५—२८ उसकी म्टत्यु और रहबुआम का राज्य पाना २९—३१।

१ और जब शीवा की रानी ने सुलेमान की कीर्त्ति सुनी तो वुह अति बड़ी जथा और ऊंटों पर सुगंध द्रव्य लदे ज़ए और बज़ताई से सोना और मणि लेके गूढ़ प्रश्नों से यिरोशलीम में सुलेमान को परखने के लिये आई और सुलेमान पास पज़ंचके
२ अपने मन की सारी बातों से उस्से बात चीत किई। और

सुलेमान ने उसके सारे प्रश्नों का उत्तर दिया और सुलेमान
२ से कोई बात छिपी न रही जो उसने उसे न कही हो। और
शीबा की रानी ने सुलेमान का ज्ञान और घर जो उसने
४ बनाया था और उसके मंच का भोजन और उसके सेवकों का
बैठना और उसके मंत्रियों का खड़ा होना और उनका पहिरावा
और उसके पानदायक को भी और उनका पहिरावा और उस
चढ़ाव को जिसे वुह परमेश्वर के मन्दिर में जाता था देखतेही
५ मूर्च्छित होगई। फिर उसने राजा से कहा कि वुह सत्य चर्चा
थी जो मैं ने आपकी क्रिया और बुद्धि के विषय में अपनेही
६ देश में सुना था। तथापि जबलों आके मैं ने अपनी आंखों
से नहीं देखा तबलों मैं ने उनकी बातें प्रतीत न किई और
देखिये आपकी बुद्धि की बड़ाई की आधी भी मुझे नहीं कही
७ गई मेरे सुन्ने से आपकी कीर्त्ति अधिक है। धन्य आप के जन
और धन्य आप के ये सेवक जो आप के आगे नित्य खड़े रहते
८ हैं और आप की बुद्धि सुनते हैं। धन्य आप का ईश्वर परमेश्वर
जिसने आप से प्रसन्न होके आप को अपने सिंहासन पर
बैठाया जिसतें अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये राजा होवे इस
कारण कि आप का ईश्वर इसराईल को सदा स्थिर रखने के लिये
उनसे प्रेम रखता था इस लिये विचार और न्याय करने के
९ लिये उसने आप को उन पर राजा किया। और उसने राजा
को एक सौ बीस तोड़े सोने और बऊताई से सुगंध द्रव्य
और मणि दिये और ऐसा सुगंध द्रव्य जैसा कि शीबा की
१० रानी ने सुलेमान को दिया था वैसा न था। और हूराम के
सेवक भी और सुलेमान के सेवक जो ओफीर से सोना
११ लाये आलगूम पेड़ और मणि ले आये। तब राजा ने उन
आलगूम पेड़ों से परमेश्वर के मन्दिर की और राजा के भवन
की छत और गायकों के लिये बीणा और नबल बनाये
१२ और ऐसा यहूदा के देश में आगे देखने में नहीं आया। और

राजा सुलेमान ने शीबा की रानी को उसकी सारी बांछा जो कुछ उसने मांगा उन्हें छोड़ जो वुह राजा पास लाई थी दिया सो वुह अपनेही देश में वुह और उसके सेवक फिर
१३ गये। अब सोने की तौल बैपारी और बनियों के लाने से अधिक जो बरस भर में सुलेमान पास आया था सो छः
१४ सौ छियासठ तोड़े सोने थे। और अरब के सारे राजा और देश के अध्यक्ष सुलेमान पास सोना चांदी लाये।
१५ और सुलेमान राजा ने पीटे हुए सोने की दो सौ फरी बनाईं फरी पीछे साढ़े नौ सेर के अंटकल सोना लगता
१६ था। और पीटे हुए सोने की तीन सौ ढाल बनाईं ढाल पीछे साढ़े चार सेर सोना लगता था और राजा ने लबनान
१७ के बन के भवन में उन्हें रक्खा। और भी राजा ने हाथीदांत का एक महा सिंहासन बनाया और उसे चोखे सोने से
१८ मढ़ा। उस सिंहासन की छः सीढ़ी और सोने की एक पीढ़ी सिंहासन से जड़ी थी और आसन की दोनों ओर हाथ और
१९ हाथों के पास दो सिंह खड़े थे। और बारह सिंह छः सीढ़ियों के इधर उधर खड़े थे वैसा किसी राज्य में नहीं बनाया
२० गया। और सुलेमान राजा के सारे पान पात्र सोने के थे और लबनान के बन के भवन के सारे पात्र चोखे सोने के थे चांदी का कुछ भी न था सुलेमान के दिनों में उसकी कुछ
२१ गिनती न थी। क्योंकि हूराम के सेवकों के साथ राजा की जहाज़ तर्शीश को जाती थी और तीन तीन बरस पीछे तर्शीश की जहाज़ सोना चांदी और हाथीदांत और बांदरों को और
२२ मोरों को लाती थी। और सुलेमान राजा धन में और ज्ञान
२३ में पृथिवी के सारे राजाओं से बढ़गया। और जो बुद्धि ईश्वर ने सुलेमान के अंतःकरण में डाली थी उसे सुन्ने को पृथिवी के सारे राजा उस्से भेंट करने की लालसा रखते थे।
२४ और उन में से हर एक जन चांदी के पात्र और सोने के पात्र

और वस्त्र और साज और सुगंध द्रव्य और घोड़े और खच्चर
२५ नियम के साथ बरस बरस लाता था। और घोड़ों के और रथों के
लिये सुलेमान के चार सहस्र थान थे और उसके बारह सहस्र
घोड़चढ़े थे जिन्हें उसने रथ नगरों में और यिरोशलीम में राजा
२६ के पास रक्खा। और उसने नदी से लेके फलस्तानियों
के देश लों और मिसर के सिवाने लों सारे राजाओं पर राज्य
२७ किया। और राजा ने यिरोशलीम में चांदी को पत्थरों
के समान और देवदारु पेड़ को बनैले गूलर की नाईं जो
२८ चौगान में बहुताई से हैं किया। और वे मिसर से और सारे
२९ देशों से सुलेमान पास घोड़े लाये। अब सुलेमान
की रही हुई क्रियां आदि और अंत सो क्या नासान
भविष्यदक्ता के वचन में और अहिया शिलोनी की भविष्य वाणी
में और नबात के बेटे यूर्बाम के विरोध के दर्शी इद्दू के दर्शनों में
३० नहीं लिखा है?। और सुलेमान ने यिरोशलीम में सारे
३१ इसराईल पर चालीस बरस राज्य किया। उसके पीछे
सुलेमान ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पिता
दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उसके बेटे रहबुआम ने
उसकी संती राज्य किया।

१० दसवां पर्ब्ब ।

इसराएलियों का रहबुआम को राजा करना १—५
अपने पिता के मंत्री के मंत्र को छोड़ युवा पुरुषों
की बात का मानना ६—१५ दस गोष्ठी का उसे
फिर जना १६—१९।

१ और रहबुआम शकीम को गया क्योंकि सारे इसराईल उसे
२ राजा करने को शकीम में आये थे। और ऐसा हुआ कि जब
नबात का बेटा यूर्बाम जो मिसर में था और सुलेमान राजा के
आगे से वहां भाग निकला था सुना तब यूर्बाम मिसर से फिर

३ आया। और लोगों ने भेज के उसे बुलाया सो यूर्बाम और सारे इसराईल आये और यह कहिके रहबुआम से बोले। कि ४ आप के पिता ने हमारे जूआ को झोगवार किया सो अब अपने पिता की झोगवार सेवा और उसके भारी जूआ को जो उस ने हम पर रखा था कुछ हलुक कीजिये और हम आप की सेवा ५ करेंगे। उसने उन्हें कहा कि तीन दिन पीछे मेरे पास फिर ६ आओ और लोग बिदा ऊए। और राजा रहबुआम ने प्राचीनों से, जो उसके पिता के जीते जी उसके आगे खड़े होते थे, यह कहिके परामर्ष किया कि इन लोगों को क्या उत्तर ७ देने को मंत्र देते हो?। वे यह कहिके उसे बोले कि यदि आप इन लोगों की भलाई के लिये उनकी इच्छा रक्खें और उन से ८ अच्छी अच्छी बातें कहें तो वे सदा आप के सेवक होंगे। परन्तु उसने प्राचीनों के मंत्र को त्याग किया और अपने हमजोड़ी ९ तरुणों से जो उसके पास रहते थे परामर्ष किया। और उसने उन्हें कहा कि जिन्हों ने मुझे यह कहिके पूछा कि जो जूआ आप के पिता ने हम पर रक्खा था उसे कुछ हलक कीजिये तुम लोग क्या मंत्र देते हो हम उन्हें क्या उत्तर देवें?। १० और जो उसके हम जोड़ी तरुण थे यह कहिके उसे बोले कि जो लोग आप से यह कहिके बोले कि आप के पिता ने हमारा जूआ भारी किया परन्तु आप हमारे लिये उसे कुछ हलुक कीजिये आप उन्हें यह उत्तर दीजिये कि मेरी कनगुरिया मेरे ११ पिता की कटि से अधिक मोटी होगी। क्योंकि जैसा कि मेरे पिता ने भारी जूआ तुम पर रक्खा था मैं तुम्हारे जूआ में अधिक मिलाओंगा, मेरे पिता ने तुम्हें कोड़े से ताड़ना किई १२ परन्तु मैं बिच्छुओं से ताड़ना करोंगा। सो राजा के कहने के समान कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आओ वैसाही यूर्बाम और सारे लोग तीसरे दिन रहबुआम पास आये। १३ और राजा ने कठोरता से उन्हें उत्तर दिया और रहबुआम

१४ राजा ने प्राचीनों के मंत्र को त्यागा। और यह कहिके तरुणों के मंत्र के समान उन्हें उत्तर दिया कि मेरे पिता ने तुम्हारा जूआ भारी किया था परन्तु मैं उसे बढ़ाओंगा मेरे पिता ने कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई थी परन्तु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना
१५ करोंगा। सो राजा ने लोगों की न सुनी इसका कारण ईश्वर था जिसतें जो वचन परमेश्वर ने शैलूनी अहीजा के द्वारा से नबात के बेटे यूर्बाम से कहा था उसे पूराकरे।
१६ और जब सारे इसराईल ने देखा कि राजा ने उनकी न सुनी तो यह कहिके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या भाग? और यस्सी के बेटे में हमारा अधिकार नहीं हे इसराईल हर एक जन अपने अपने डेरे को, अब हे दाऊद अपनेही घर को देख तब सारे इसराईल अपने अपने
१७ डेरे को गये। परन्तु इसराईल के सन्तान पर जो यहूदा के नगरों
१८ में रहते थे रहबुआम ने राज्य किया। तब रहबुआम राजा ने हदराम को, जो कर का अध्यक्ष था, भेजा और इसराईल के सन्तानों ने उसे पत्थरवाह करके मारडाला परन्तु राजा रहबुआम आपको दृढ़ कर रथ पर चढ़के यिरोशलीम को
१९ भागा। और इसराईल दाऊद के घराने से आज लों फिरे रहे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

इसराईल को बश करने से रहबुआम का रोका जाना १—४ नगरों को बनाके उन्हें दृढ़ करना ५—१२ याजक और लावी का युर्बाम के देश कोछोड़ के यिरोशलीम को आना १३—१७ रहबुआम का घराना १८—२३।

१ और जब रहबुआम यिरोशलीम में आया उसने यहूदा के और बनियामीन के घरानों में से एक लाख अस्सी सहस्र चुने हुए योधाओं को इसराईल से लड़ने के लिये एकट्ठे किया

२ जिसतें राज्य को रहबुआम की ओर फेरलावे। परन्तु परमेश्वर का वचन ईश्वर के जन शिमाइया पास यह कहिके पहुंचा।
३ कि यहूदा के राजा सुलेमान के बेटे रहबुआम से और यहूदा
४ और बनियामीन में के सारे इसराईल से कह। कि परमेश्वर कहता है कि चढ़मतजाइयो और अपने भाइयों से मत लड़ियो हर एक जन अपने अपने घर जाय क्योंकि यह बात मुझसे हुई है और उन्हों ने परमेश्वर के वचन को माना और यूर्बाम के
५ विरुद्ध जाने से फिर आये। और रहबुआम ने यिरोशलीम में बास किया और बचाव के लिये यहूदा
६ में नगर बनाये। उसने बैतलहम और ईताम और टिकुआ।
७।८ और बैतसूर और शोको और अदुल्लम। और गास और
९ मारेशाह और सीफ़। और अदोरईम और लाकीश और
१० अज़ीकः। और सूराह और अजालून और हबरून बनाये ये
११ यहूदा और बनियामीन में बाडित नगर हैं। और उसने गढ़ों को दृढ़ किया और उनमें प्रधानों को और भोजन और तेल
१२ और दाखरस एकट्ठे किये। और यहूदा और बनियामीन को अपनी ओर रखते हुए उसने हर एक नगर में ढाल
१३ और बरछी रक्खे उन्हें अति दृढ़ किया। और याजक और लावी, जो सारे इसराईल में थे अपने सारे सिवानों
१४ में से उस पास आये। क्योंकि लावी अपना अपना गांव और अधिकार छोड़ छोड़ यहूदा में और यिरोशलीम में आये क्योंकि यूर्बाम और उसके बेटों ने उन्हें परमेश्वर के आगे
१५ याजक के पद की सेवा से अलग किया। और उसने ऊंचे स्थानों के और पिशाचों के और बछड़ों के लिये जो
१६ उसने बनाये थे पुरोहितों को ठहराया। और इसराईल की सारी गोष्ठी में से जितनों ने इसराईल के ईश्वर परमेश्वर को खोज के लिये अपना मन लगाया सब यिरोशलीम में अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को उनके पीछे

१७ आये। सो उन्हों ने यहूदा का राज्य पोढ़ किया और तीन बरस लों सुलेमान के बेटे रहबुआम को दृढ़ किया क्योंकि वे तीन बरस दाऊद के और सुलेमान के मार्ग पर चलते थे।

१८ और रहबुआम ने दाऊद के बेटे इरीमूस की बेटी महलास को और यस्सी के बेटे यलीआब की बेटी आबीहईल

१९ को पत्नी किई। वे उसके लिये बालक जनीं अर्थात् यऊश को

२० और शमारिया को और सहाम को। उसके पीछे उसने अबसालूम की बेटी मआका को लिया, जो उसके लिये अबीजा को और अटई को और जाजा को और शलोमीस को जनी।

२१ और रहबुआम अपनी सारी पत्नियों से और सहेलियों से अबसालूम की बेटी मआका को अधिक प्यार करता था क्योंकि उसने अठारह पत्नी और साठ सहेलियां किईं थीं

२२ और उसे अट्ठाईस बेटे और साठ बेटियां उत्पन्न हुईं। और रहबुआम ने मआका के बेटे अबीजा को राजा करने को

२३ श्रेष्ठ और अपने भाइयों पर आज्ञाकारी किया। और उसने चतुराई से कार्य्य किया और यहूदा और बनियामीन के सारे देशों में और हर एक बाड़ित नगर में अपने बेटों को अलग किया और उन्हें बहुताई से भोजन दिया और उसने बहुत पत्नियां चाहीं।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

रहबुआम का परमेश्वर को त्यागना और मिसर के राजा से घेरा जाना १—४ उसका पश्चात्ताप करना और बचाया जाना ५—१२ रहबुआम की मृत्यु और अबीजा का राज्य पाना १३—१६।

१ और यों हुआ कि जब रहबुआम ने राज्य को स्थिर किया और अपने को दृढ़ किया था तब उसने और उसके साथ

२।१ सारे इसराईल ने परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़दिया। और

रहबुआम राजा के पांचवें बरस में यों हुआ कि मिसर के राजा शिशाक ने बारह सौ रथ और साठ सहस्र घोड़चढ़े और लूबीमी और सूकीमी और हबशी अर्थात् अगिनत लोग लेके मिसर से निकल के यिरोशलीम पर चढ़ आया इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर के बिरुद्ध अपराध किया
४ था । और उसने यहूदा के बाड़ित नगरों को लेलिया और
५ यिरोशलीम में आया ।　तब शिमाया भविष्यद्वक्ता ने रहबुआम पास और यहूदा के अध्यक्षों के पास जो शीशाक के कारण यिरोशलीम में एकट्ठे थे आके उन्हें कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हों ने मुझे त्यागा है इस लिये मैं ने तुम्हें भी
६ शिशाक के हाथ में छोड दिया है । उस बात पर इसराईल के अध्यक्षों ने और राजा ने आप आप को नम्र किया और
७ कहा कि परमेश्वर धर्म्मी है । और जब परमेश्वर ने देखा कि उन्हों ने अपने को नम्र किया तब परमेश्वर का बचन यह कहिके शिमाया पास आया कि मैं उन्हें नाश न करोंगा क्योंकि उन्हों ने अपने को नम्र किया है परन्तु उनका कुछ बचाव करोंगा और मेरा कोप शिशाक के हाथ से यिरोशलीम पर उंड़ेला न
८ जायगा । तथापि वे उसके सेवक होंगे जिसतें वे मेरी सेवा
९ और देशों के राज्यों की सेवा जानें । सो मिसर का राजा शिशाक यिरोशलीम के बिरुद्ध चढ आया और परमेश्वर के मन्दिर का भंडार और राज भवन का भंडार लेलिया उसने सबके सब लेलिये वुह सोने की ढालों को भी जो सुलेमान
१० ने बनवाईं थीं लेगया । उनकी सन्ती रहबुआम राजा ने पीतल की ढालें बनवाईं और राज भवन के प्रवेश के पहरूओं के
११ प्रधान को सौंप दिईं । और जब राजा परमेश्वर के मन्दिर में जाया करता था तब पहरू आते थे और उन्हें लेके जाते थे
१२ और पहरू की कोठरी में फेर लाते थे । और जब उसने अपने को नम्र किया तब परमेश्वर का कोप उसे यहां लों फिरा कि

उसने उसे सर्वथा नाश न किया और यहूदा में भी कुशल

१३ रहा। सो रहबुआम राजा ने आप को यिरोशलीम में दृढ़ करके राज्य किया क्योंकि रहबुआम ने एकतालीस बरस के वय में राज्य करना आरंभ किया और उसने उस नगर में अर्थात् यिरोशलीम में सतरह बरस राज्य किया जो परमेश्वर ने इसराईल की सारी गोष्ठियों में से अपने नाम के लिये चुना था और उसकी माता का नाम नामा वुह एक अमोनीया

१४ थी। और उसने परमेश्वर के खोज में अपना मन न लगाने

१५ से बुराई किई। अब रहबुआम की क्रिया आदि और अंत क्या शिमाया भविष्यद्वक्ता के और बंशावली के विषय में ईडु दर्शी के वचन में नहीं लिखा है? और रहबुआम और यूर्बआम में

१६ संग्राम नित्य रहा किया। और रहबुआम अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उसका बेटा अबीज़ा उसकी संती राज्य पर बैठा।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

अबीजा का राज्य और यूर्बाम से संग्राम करना १—३ अबीजा का अपने पद का धर्म्म दिखाना ४—१२ ईश्वर पर आशा रखके यहूदा का इसराईल को जीतना १३—१९ यूर्बाम की मृत्यु और अबीजा का घराना २०—२२।

१ यूर्बआम राजा के अठारहवें बरस में अबीजा ने यहूदा पर

२ राज्य करना आरंभ किया। उसने यिरोशलीम में तीन बरस राज्य किया उसकी माता का नाम मीकायाह गिबियाई ऊरीएल की बेटी और अबीजा में और यूर्बआम में संग्राम

३ रहा। और अबीजा ने चार लाख महावीर चुने हुए योद्धा की गठी हुई सेना से संग्राम में पांती बांधी और यूर्बआम भी उसके बिरोध में आठ लाख चुने हुए बलवंत बीरों से

४ संग्राम में पांती बांधी। और अबीआ ने समाराईम पहाड़ पर, जो इफराईम पहाड़ में है खड़ा होके कहा कि हे यूर्बआम
५ और सारे इसराईल मेरी सुनो। क्या तुम्हें जानने को उचित नहीं कि इसराईल के ईश्वर परमेश्वर ने इसराईल का राज्य दाऊद को सदा के लिये दिया उसको और उसके बेटों को
६ लोन के बाचा के साथ दिया। तथापि निबाट का बेटा यूर्बआम जो दाऊद के बेटे सुलेमान का एक सेवक था उठा है और
७ अपने प्रभु के बिरोध में फिरगया। और उसकी ओर तुच्छ लोग बलिआल के संतान एकट्ठे ऊए हैं और जब रहबुआम तरुण और कोमलमन था और उनका साम्ना न करसक्ता था उन्हों ने आप को सुलेमान के बेटे रहबुआम के बिरुद्ध दृढ़
८ किया है। और अब तुम लोग चाहते हो कि परमेश्वर का राज्य जो दाऊद के बेटों के हाथ में है उनका साम्ना करो और तुम लोग बड़ी मंडली हो और तुम्हारे संग सोने के बछड़े हैं जिन्हें
९ रहबोआम ने तुम्हारे लिये देव बना रक्खा है। क्या तुम लोगों ने परमेश्वर के याजकों को अर्थात् हारुन के बेटों को और लावियों को दूर नहीं किया? और देश के जातिगणों की नाईं अपने लिये याजक नहीं बनाये? यहां लों कि जो कोई आप को पवित्र करने के लिये एक बैल और सात मेढे लेआवे और
१० अदेवों का पुरोहित होवे। परन्तु हम लोग जो हैं, परमेश्वर हमारा ईश्वर और हमने उसे त्याग नहीं किया है और याजक, जो परमेश्वर की सेवा करते हैं, सो हारून के बेटे
११ और लावी अपने अपने कार्य्य पर हैं। और वे परमेश्वर के लिये हर सांझ बिहान होम का बलि चढ़ा सुगंध जलाते हैं और पवित्र मंच पर भेंट की रोटी रखते हैं और हर सांझ के लिये सोने की दीअट और उनके दीआ समेत क्योंकि हम लोग अपने ईश्वर परमेश्वर के बारनेकेलिये ठहराये ऊए कार्य्य को पालन
१२ करते रहते हैं परन्तु तुम लोगोंने उसे त्याग किया है। और

देख परमेश्वर आप सेनापति होने के लिये हमारे संग है और तुम्हारे बिरुद्ध उसके याजक तुरही के शब्दों के साथ चिताने को हैं, हे इसराईल के सन्तानो अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध संग्राम मत करो क्योंकि तुम लोग
१३ भाग्यमान न होओगे। परन्तु यूर्बआम ने उनके पीछे घूमके ढूके को बैठवाया यहां लों कि वे यहूदा के आगे
१४ और ढूके उनके पीछे हुए। और जब यहूदा ने पीछे दृष्टि किई तो क्या देखता है कि संग्राम आगे पीछे है और उन्हों ने परमेश्वर की प्रार्थना किई और याजकों ने तुरहियों से शब्द
१५ किया। तब यहूदा के लोगों ने ललकारा और यहूदा के ललकारने से यों हुआ कि ईश्वर ने अबीजा के और यहूदा के
१६ आगे से यूर्बआम को और सारे इसराईल को मारा। और इसराईल के सन्तान यहूदा के आगे से भाग गये और
१७ ईश्वर ने उन्हें उनके हाथ में सौंप दिया। तब अबीजा और उसके लोगों ने बड़ी जूझ से उन्हें जुझाया सो इसराईल में के
१८ पांच लाख चुने हुए जन जूझ गये। यों इसराईल के सन्तान उस समय बश में किये गये और यहूदा के सन्तानों ने इस कारण जय पाया कि उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर पर
१९ भरोसा रक्खा। और अबीजा ने यूर्बआम को खेदा और उसे नगर लिये अर्थात् बैतईल और उसके गांव और इश्ाना और
२० उसके गांव और इफ़राईम और उसके गांव। और अबीजा के दिनों में यूर्बआम ने फेर बल न पकड़ा और परमेश्वर ने उसे
२१ मारा और वुह मर गया। परन्तु अबीजा सामर्थी हुआ और चौदह ब्याह किये और उसे बाईस बेटे और सोलह
२२ बेटियां उत्पन्न हुईं। अबीजा की रहीऊई क्रिया और उसकी चाल और कहावत क्या इडू भविष्यदक्ता के टीका में नहीं लिखा है?।

अबीजा की मृत्यु और आसा का राज्य पाना और मूर्त्ति पूजा को उठादेना और चैन पाना १—८ संग्राम में परमेश्वर की सहाय मांगके उसका बड़ा जय पाना ९—१९।

१ सो अबीजा ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने दाऊद के नगर में उसे गाड़ा और उसके बेटे आसा ने उसकी संती राज्य किया उसके दिनों में देश में दस बरस
२ चैन रहा। और आसा ने अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि
३ में भला और ठीक किया। क्योंकि वुह उपरी बेदियों को और ऊंचेस्थानों को दूर किया और मूर्त्तिन को तोड़ा और
४ कुंजों को काटके गिरादिया और यहूदा को आज्ञा किई कि अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को खोजो और व्यवस्था
५ और आज्ञा को पालन करो। और उसने यहूदा के सारे नगरों में से ऊंचे स्थान और सूर्य की मूर्त्तिन को दूर किया और
६ उसके आगे राज्य को चैन मिला। और उसने यहूदा में बाड़ित नगर बनवाये क्योंकि देश में चैन था और उन बरसें में संग्राम न हुआ क्योंकि परमेश्वर ने उसे चैन
७ दिया था। इस लिये उसने यहूदा को कहा कि जबलों देश हमारे आगे है चलो हम ये नगर बनावें और चारों ओर भीत और गुम्मट और फाटक और अडंगे बनावें इस कारण कि हमने अपने ईश्वर परमेश्वर को खोजा है हमने खोजा है और उसने हमें चारों ओर से चैन दिया है सो उन्हों ने
८ बनाया और सफल हुए। और यहूदा में आसा की एक सेना तीन लाख की थी जो फरी और भाला उठाती थी और बिनयामीन में से जो ढाल उठाते और धनुष चलाते थे दो लाख अस्सी सहस्र ये सब के सब बलवन्त बीर थे।
९ और उनके बिरुद्ध हबशी ज़ीरा दस लाख की एक
१० सेना को और तीन सा रथों को लेके मरीशा को आये। तब

आसा उसके विरुद्ध में निकला और उन्हें ने मरीशा के
११ सिफ़ाथा की तराई में संग्राम की पांती बांधी। और आसा ने अपने ईश्वर परमेश्वर की प्रार्थना किई और कहा हे परमेश्वर तेरे लिये कुछ नहीं, चाहे बहुत से चाहे निर्बलों से सहाय करे सो हे हमारे ईश्वर परमेश्वर सहाय कर क्योंकि हम लोग तुझ पर आशा रखते हैं और तेरे नाम से इस मंडली के विरुद्ध जाते हैं सो हे परमेश्वर हमारे ईश्वर मनुष्य तेरे विरुद्ध जय न
१२ पावें। सो परमेश्वर ने आसा के और यहूदा के आगे से
१३ हबशियों को मारा और हबशी भागे। फिर आसा और उसके साथी लोगों ने उन्हें ग़िरार लों खेदा और हबशी ऐसा ध्वस्त हुए कि फेर आप को संभाल न सके क्योंकि वे परमेश्वर के आगे और उसकी सेना के आगे नष्ट किये गये और वे
१४ बहुतसी लूट लेगये। और उन्हों ने ग़िरार की चारों ओर के सारे नगरों को मारा क्योंकि परमेश्वर की डर उन पर पड़ी और उन्हों ने सारे नगरों को लूट लिया क्योंकि उनमें बड़ी
१५ लूट थी। उन्हों ने ढोरों के डेरों को भी मारा और भेड़ों को और ऊंटों को बहुताई से लेके यिरोशलीम को फिरे।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब ।

अज़ारिया की भविष्यद्वाणी १—७ और आसा का ईश्वर से बाचा बांधना ८—१५ मूर्त्ति पूजा के लिये अपनी माता को रानी के पद से उतार देना १६—१७ समर्पण किई हुई बस्तुन को मन्दिर में लाना १८—१९।

१ अब ईश्वर का आत्मा उदद के बेटे अज़रिया पर आया
२ और वुह आसा के आगे गया और उसे कहा कि हे आसा और सारे यहूदा और बनियामीन हमारी सुनो जब लों तुम लोग परमेश्वर के संग हो तब लों वुह तुम्हारे संग और यदि

उसे ढूंढ़ोगे तो वुह तुम्हें मिलेगा परन्तु यदि उसे त्यागोगे
३ तो वुह तुम्हें त्यागेगा। अब बहुत दिन से इसराईल सच्चे
ईश्वर बिना और बिना शिक्षक याजक और बिना व्यवस्था थे।
४ परन्तु जब वे अपने दुःख में इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की
५ ओर फिरे और उसे खोजा तो उनसे पायागया। और उन
दिनों में जो बाहर अथवा भीतर आया जाया करता था उसे
कुछ कुशल न मिलता था परन्तु देशों के सारे निवासियों पर
६ बड़ी बड़ी बिपति थी। और जाति जाति से और नगर नगर
से चूर्ण किया जाता था क्योंकि ईश्वर ने उन्हें सारे क्लेशों से
७ व्याकुल किया। इस लिये पोढ़ होओ और अपने हाथों
को दुर्बल होने न देओ क्योंकि तुम्हारे कार्य का प्रतिफल
८ मिलेगा। और जब आसा ने इन बातों को और उदद
भविष्यद्वक्ता की भविष्यवाणी को सुना तो उसने हियाव पकड़ा
और यहूदा और बिनयामीन के सारे देश में से, और
उन नगरों में से, जो उसने अफ़राईम पहाड़ से लिया था
घिनित मूर्त्तों को दूर किया और परमेश्वर के ओसारे के आगे
९ परमेश्वर की बेदी दुहरा के बनाई। और उसने सारे यहूदा
और बिनयामीन को और अफ़राईम में से और मनस्सा में
से और शमऊन में से परदेशियों को एकट्ठे किया क्योंकि जब
उन्हों ने देखा कि परमेश्वर उसका ईश्वर उसके साथ है तो
१० इसराईल में से बहुताई से उसकी ओर आये। सो आसा
के राज्य के पंदरहवें बरस के तीसरे मास में उन्हों ने यिरोशलीम
११ में आप को एकट्ठा किया। और जो लूट की वस्तु वे लाये थे
उसमें से उसी दिन उन्हों ने परमेश्वर को सात सौ बैल
१२ और सात सहस्र भेंड़ भेंट चढ़ाईं। और उन्हों ने अपने सारे
मन और अपने सारे प्राण से अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के
१३ खोजने के लिये बाचा बांधी। कि जो कोई इसराईल के
ईश्वर परमेश्वर को ढूंढ़ने न चाहे सो बधन किया जाया चाहे

१४ छोटा चाहे बड़ा चाहे पुरुष चाहे स्त्री होवे। और उन्हों ने पुकारते ज़ए और तुरहीयों से और सिंगा के बड़े शब्द से
१५ परमेश्वर के लिये किरिया खाई। और सारे यहूदा उस किरिया से आनन्दित ज़ए क्योंकि उन्हों ने अपने सारे अंतःकरण से किरिया खाई थी और अपनी सारी बांछा से उसे ढूंढ़ा और वुह उनसे पाया गया और परमेश्वर ने उन्हें चारों ओर
१६ से चैन दिया। और आसा ने अपनी माता माअका को रानी के पद से भी अलग किया इस कारण कि उसने कुंज के तले एक भयानक बनाया था और आसा ने उसकी मूर्त्ति को काट डाला और रौंदा और कदरून नाले के तीर उसे
१७ जलादिया। परन्तु ऊंचे स्थान इसराईल में से दूर न कियेगये
१८ तथापि आसा का मन उसके जीवन भर शुद्ध रहा। और अपने पिता की समर्पण किई ज़ई वस्तुन को और जो उसने आप चांदी सोना और पात्र समर्पण किया था वुह ईश्वर के मन्दिर
१९ में लाया। और आसा के राज्य के पैंतीसवें बरस लों संग्राम न ज़आ।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

बिनहदाद से आसा बआशा के विरुद्ध में मेल करता है १—६ सुरियानियों पर भरोसा रखने से भविष्यद्वक्ता उसे दपटता है ७—१० रोग में वैद्यों का पीछा करता है और ईश्वर का नहीं ११—१२ उसकी मृत्यु और गाड़ा जाना।

१ आसा के राज्य के छत्तीसवें बरस इसराईल का राजा बआशा यहूदा के विरुद्ध चढ़ आया और रामा को बनाया जिसतें
२ यहूदा के राजा आसा कने कोई जाने न पावे। तब आसा परमेश्वर के मन्दिर के और राजा के भवन के भंडारों में से चांदी और सोना बाहर किया और सुरिया के राजा बिनहदाद

३ पास जो दमिश्क में रहता था कहला भेजा। कि मेरे और आप के मध्य ऐसा मेल हो जैसा मेरे और आप के पिता में था देखिये मैं ने आप के पास सोना और चांदी भेजा है सो जाके इसराईल के राजा बआशा से मेल तोड़िये जिसतें
४ वुह मुझ से फिर जाय। तब बिनहदाद ने आसा राजा की बात सुनी और इसराईल के नगरों के विरुद्ध अपने सेनापतिन को भेजा और उन्हों ने अजून और दान और आबेलमाईम
५ और नफ़ताली के सारे भंडार नगरों को ले लिया। और ऐसा ज़ुआ कि जब बआशा ने सुना तब रामा का बनाना छोड़ दिया
६ और अपने कार्य से थम गया। फिर आसा राजा ने सारे यहूदा को लिया और वे रामा के पत्थरों को और लट्ठों को लेगये जिन्हों से बआशा रामा बनाता था और उसने उनसे गीबा और
७ मसफह बनाये। उस समय हनानी दर्शी ने यहूदा के राजा आसा पास आके उसे कहा तू ने जो सुरिया के राजा पर आशा रक्खी है और अपने ईश्वर परमेश्वर पर आशा नहीं रक्खी है इस लिये सुरिया के राजा की सेना
८ तेरे हाथ से बच निकली है। क्या हबशी और लूबीमी बज़ताई से सेना और अति बज़त रथ और घोड़ चढ़े को लिये ज़ये न थे? तथापि तू ने जो परमेश्वर पर आशा रक्खी थी उसने
९ उन्हें तेरे हाथ में सौंप दिया। क्योंकि परमेश्वर की आंखें सारी पृथिवी में आरंपार इधर उधर दौड़ती हैं जिसतें उनके लिये आप को बलवन्त दिखावे जिनका मन उसकी ओर सिद्ध है इस में तू ने मूर्खता किई है इस लिये अब से तू संग्राम
१० पाया करेगा। तब आसा उस दर्शी पर कोपित ज़ुआ और उसे बंदी गृह में डाला क्योंकि वुह इस बात के लिये उस से कोपित ज़ुआ और उसी समय आसा ने लोगों में से कितनों को
११ सताया। अब देखो आसा की क्रिया आदि और अंत यहूदा के और इसराईल के राजावली की पुस्तक में लिखी

१२ है। आसा के राज्य के उंतालीसवें बरस में उसके पांव में रोग हुआ यहां लों कि उसका रोग अति हुआ तथापि अपने रोग में उसने परमेश्वर को न खोजा परन्तु वैद्यों को।
१३ और आसा ने अपने पितरों में शयन किया और
१४ अपने राज्य के एकतालीसवें बरस मरगया। और उन्हों ने उसे उसी के समाधिन में, जो उसने अपने लिये दाऊद के नगर में खोदी थीं गाड़ा और उसे बिछौने पर रखा जो नाना प्रकार के सुगंध द्रव्य से भरा हुआ था जिसे वैद्यों ने सिद्ध किया था और उन्हों ने उसके लिये बड़ी आग बारी।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

यहूशाफ़ात का राज्य पर बैठना और भाग्यमान होना १—६ अपने देश में व्यवस्था को प्रचार कराना ७—९ उसके परोसी का उसके वश में होना १०—११ उसका महातम और सेना १२—१९

१ और उसके बेटे यहूशाफ़ात ने उसकी संती राज्य किया और
२ इसराईल के बिरुद्ध अपने को दृढ़ किया। और यहूदा के सारे बाड़ित नगरों में उसने योद्धा रक्खे और यहूदा देश म अफ़राईम के नगरों में जो उसके पिता आसा ने लिया था थाने
३ बैठाये। और परमेश्वर यहूशाफ़ात के साथ था इस कारण कि वुह अपने पिता दाऊद की अगिली चालों पर चलता था और
४ बआलिम का पीछा न किया। परन्तु अपने पिता के ईश्वर को ढूंढ़ा और उसकी आज्ञाओं पर चलता था और इसराईल के
५ कार्य के समान न किया। इस लिये परमेश्वर ने उसके हाथ में राज्य स्थिर किया और सारे यहूदा यहूशाफ़ात के पास भेंट लाये और उसके पास धन और प्रतिष्ठा बहुताई से थी।
६ और उसका मन परमेश्वर के मार्गों में उभड़ा हुआ था और उसने यहूदा में से उंचे स्थानों को और कूंजों को दूर किया।

७ और अपने राज्य के तीसरे बरस उसने अपने अध्यक्ष अर्थात् बिनहायल के और ओबेदिया के और ज़करिया के और नासानाइल के और मिकायाह के पास भेजा कि यहूदा
८ के नगरों में उपदेश करें। और उनके साथ लावियों को अर्थात् शिमिया को और नसानिया को और जबदिया को और असाहिल को और शिमिरामूस को और यहूनासान को और अदुनीजा को और तोबीजा को और तोब अदुनीजा लावियों को और उनके संग इलीशामा को और यहूराम याजक को भेजा।
९ और उन्हों ने यहूदा में उपदेश किया और परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक उनके साथ थी और यहूदा के सारे नगरों में से
१० होहो के लोगों को उपदेश किया। और ईश्वर की डर यहूदा के चारों ओर के राज्यों के देशों पर ऊई यहां लों कि
११ उन्हों ने यहूसाफ़ात से संग्राम न किया। और फलस्तानियों में से भी यहूशाफ़ात के पास भेंट और चांदी कर लाये और अरबी उस पास सात सहस्र सात सौ झुंड़ भेंट और सात
१२ सहस्र सात सौ बकरे लाये। और यहूशाफ़ात अत्यन्त बढ़गया और यहूदा में गढ़ और भंडार नगर बनवाये।
१३ और यहूदा के नगरों में उसका बड़ा कार्य्य था और यिरोशलीम
१४ में महावीर योद्धा लोग थे। उनके पितरों के घरानों के समान उनकी गिनती ये हैं यहूदा के सहस्र पति अदना प्रधान और
१५ उसके संग तीन लाख महावीर थे। उसके लग यहूहानान सेनापति और उसके साथ दो लाख अस्सी सहस्र जन थे।
१६ और उसके पीछे जिकरी का बेटा आमसिया जिसने आप को मन मनता परमेश्वर को सौंपा और उसके साथ दो लाख महा
१७ बीर थे। बनियामीन का इलिआदा एक महावीर जिसके
१८ साथ दो लाख ढाल और धनुष से लैस थे। उसके पीछे यहूज़ाबाद और उसके साथ संग्राम के लिये लैस एक लाख
१९ अस्सी सहस्र जन। उनसे अधिक जिन्हें राजा ने यहूदा के सारे बाड़ित नगरों में रक्खा था राजा के पास रहते थे।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

यहूशाफ़ात का आहाब से नाता करना १—३ झूठे भविष्यद्वक्ता राजा के मन की कहते हैं ४—५ आहाब की मृत्यु का सन्देश भविष्य कहना ६—२२ उसकी निन्दा होनी और बन्धन में डाला जाना २३—२७ संग्राम में यहूशाफ़ात का परमेश्वर से बिनती करके बच जाना २८—३२ आहाब का जूझजाना ३३—३४ ।

१ अब यहूशाफ़ात धन और प्रतिष्ठा बहुताई से रखता था और
२ उसने आहाब के संग नाता किया। बरसों के पीछे वुह आहाब पास सामरः को उतर गया और आहाब ने उसके और उसके साथियों के लिये भेड़ और बैलों को बहुताई स मारा
३ और रामूसजलियाद पर चढ़ जाने को उसे उभाड़ा। और इसराईल के राजा आहाब ने यहूदा के राजा यहूशाफात से कहा कि आप मेरे साथ रामूसजलियाद को चलेंगे? उसने उसे उत्तर दिया कि आप की नाईं मैं और मेरे लोग आप
४ के लोगों की नाईं और संग्राम में आप के साथी हैं। तब यहूशाफ़ात ने इसराईल के राजा से कहा कि आज परमेश्वर
५ के बचन से बूझिये। इस लिये इसराईल के राजा ने चार सौ भविष्यद्वक्तों को एकट्ठे किया और उन्हें कहा कि हम रामूसजलियाद को संग्राम करने जायें अथवा न जायें? उन्हों ने कहा कि चढ़ जाइये क्योंकि ईश्वर उसे राजा के हाथ में सौंपदेगा।

६ परन्तु यहूशाफ़ात ने कहा कि इन्हें छोड़ परमेश्वर का कोई
७ भविष्यद्वक्ता नहीं जिसे हम बूझें?। फिर इसराईल के राजा ने यहूशाफ़ात से कहा कि अब भी एक जन है जिसके द्वारा से हम परमेश्वर से बूझ सक्ते हैं परन्तु मैं उसे बैर रखता हों क्योंकि वुह मेरे लिये कभी भला भविष्य नहीं कहता परन्तु सदा बुरा सा इमला का बेटा मीकाया है तब यहूशाफ़ात ने कहा

८ कि राजा ऐसा न कहें। तब इसराईल के राजा ने एक प्रधान बुला के कहा कि शीघ्रता से इमला के बेटे मीकाया को लेआ।
९ और इसराईल का राजा और यहूदा का राजा यहूशाफ़त राजवस्त्र से बिभूषित होके अपने अपने सिंहासन पर सामरः के फाटक की पैठ के खुले स्थान में बैठगये और सारे भविष्यद्वक्ता
१० उनके आगे भविष्य कहि रहे थे। और किनाना के बेटे सिदिकिया ने अपने लिये लोहे के सींग बनवाये थे और कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि इन्हों से तू सुरियानियों को ऐसा ठेलेगा कि वे
११ मिट जायेंगे। और सारे भविष्यद्वक्ता यूं भविष्य कहि रहे थे कि रामूसजिलियाद को चढ़ जाइये और भाग्यमान हूजिये
१२ क्योंकि परमेश्वर उसे राजा के हाथ में सैंपदेगा। और जो दूत मीकाया को बुलाने गया था उसने यह बचन उसे कहा कि देख भविष्यद्वक्तों के बचन राजा के लिये एक मन से अच्छा है सो मैं तेरी बिनती करता हों कि तेरी बात भी उनमें से
१३ एक के समान होवे और तू भी अच्छा कह। मीकाया ने कहा कि परमेश्वर के जीवन सों अर्थात् जो मेरा ईश्वर कहेगा सोई
१४ मैं कहोंगा। और राजा के पास आतेही राजा ने उसे कहा कि मीकाया हम संग्राम के लिये रामूसज्जलियाद को जायें अथवा मैं न जाओं? उसने कहा कि चढ़ जाइये और भाग्यमान
१५ हूजिये और वे तुम्हारे हाथ में सैंपिजायेंगे। फिर राजा ने उसे कहा कि मैं तुझे कितने बार किरिया दिलाओं कि तू परमेश्वर
१६ के नाम से सत्य को छोड़ कुछ न कहना?। तब उसने कहा कि मैं ने सारे इसराईल को बिनगड़रिये की भेड़ों की नाईं पहाड़ों पर बिथरेऊए देखा और परमेश्वर ने कहा कि इनका कोई स्वामी नहीं सो उनमें से हर एक जन अपने अपने घर कुशल
१७ से जाय। फिर इसराईल के राजा ने यहूशाफात से कहा कि क्या मैं ने आप से नहीं कहा कि वुह मेरे लिये अच्छा भविष्य
१८ न कहेगा परन्तु बुरा। फिर उसने कहा कि इस लिये परमेश्वर

का बचन सुनो मैं ने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे देखा और स्वर्ग की सारी सेना उसके दहिने बायें खड़ी है।
१९ फिर परमेश्वर ने कहा कि इसराईल के राजा आहाब को कौन फुसलावेगा जिसतें वुह चढ़जाय और रामूसजलियाद में मारा जाय' तब एक ने इस रीत का बचन कहा और दूसरे ने उस
२० रीति का। फिर एक आत्मा बाहर आके परमेश्वर के सन्मुख खड़ा होके बोला कि मैं उसे फुसलाओंगा तब परमेश्वर ने उसे
२१ पूछा कि किस बात से?। उसने कहा कि मैं निकलोंगा और उसके सारे भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्यावादी आत्मा होंगा उसने कहा कि तू फुसलायेगा और उस पर प्रबल होगा जा
२२ और वैसा कर। इस लिये अब देख परमेश्वर तेरे भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्यावादी आत्मा डाला है और परमेश्वर ने तेरे
२३ बिरुद्ध बुरा कहा है। फिर किनाना का बेटा सिदिकिया पास आया और मीकाया के गाल पर थपेड़ा मारा और कहा कि परमेश्वर का आत्मा तुझे कहने को मेरे पास से किधर
२४ से गया?। और मीकाया ने कहा कि देख तू उस दिन देखेगा जब तू आप को छिपाने को भीतर की कोठरी में
२५ घुसेगा। तब इसराईल के राजा ने कहा कि मीकाया को लेओ और उसे नगर के अध्यक्ष आमून पास और राज कुमार
२६ यूआश पास फेर लेजओ। और कहो कि राजा यों कहता है कि इसे बन्धन में रक्खो और जबलों मैं कुशल से फिर न आओं इसे कष्ट की रोटी और कष्ट का जल दिया करो।
२७ और मीकाया ने कहा कि यदि तू निश्चय कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर ने मेरे द्वारा से नहीं कहा फिर उसने कहा कि
२८ हे सारे लोगो सुन रक्खो। तब इसराईल का राजा और यहूदा का राजा यहूशाफात रामूस गिलियाद को
२९ चढ़गये। और इसराईल के राजा ने यहूशाफात को कहा कि मैं भेषबदलके संग्राम में जाओंगा परंतु आप राजबस्

पहिनिये सो इसराईल के राजा ने भेष पलटा और वे संग्राम
२० को गये। अब सुरिया के राजा ने अपने साथ के रथपतिन को
यह कहिके आज्ञा किई थी कि केवल इसराईल के राजा को
३१ छोड़ तुम छोटे बड़े से मत युद्ध करना। और यों हुआ कि
जब रथपतिन ने यहूशाफ़ात को देखा तो बोले कि यह इसराईल
का राजा है इस लिये उन्हों ने लड़ने के लिये उसे घेरा परन्तु
यहूशाफ़ात चिल्ला उठा और परमेश्वर ने उसका उपकार
३२ किया और ईश्वर ने उन्हें उसे फेर दिया। क्योंकि ऐसा हुआ
कि जब रथपतिन ने देखा कि यह इसराईल का राजा नहीं
३३ है तब वे उसके पीछे से हट गये। फिर एक जन ने धनुष
पर बाण साजके इसराईल के राजा को भिलम के और जोड़के
मध्य में मारा इस लिये उसने अपने सारथी को कहा कि हाथ
फेरदे जिसतें मुझे सेना में से बाहर लेजाय क्योंकि मुझे घाव
३४ लगा है। उस दिन संग्राम बढ़ा तथापि सांझ लों इसराईल
का राजा सुरियानियों के विरुद्ध अपने रथ पर थमारहा और
सूर्य्य के अस्त होते होते मर गया।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब ।

अहाब से नाता करने से यहूशाफ़ात का दपटा
जाना और अपने राज्य का सुधारना १—४ और
न्यायियों और याजकों और लावियों को नगरों
में ठहराके उन्हें आज्ञा करना ५—११ ।

१ और यहूदा का राजा यहूशाफ़ात कुशल से यिरोशलीम में
२ अपने घर गया। और हनानी का बेटा याहू दर्शी उसकी भेंट
को निकला और यहूशाफ़ात राजा से कहा कि क्या उचित था
कि तू अधर्मी का सहाय करे और परमेश्वर के वैरी से प्रेम
३ करे? इस लिये परमेश्वर के आगे से तुझ पर क्रोध है। तथापि
तुझ में भला कार्य पाया गया है क्योंकि तू ने देश में से कुंजों को

दूर किया और ईश्वर की खोज के लिये अपना मन सिद्ध
४ किया है। और यहूशाफ़ात ने यिरोशलीम में वास
किया और फिर के बीरशबा में अफराईम पर्ब्बत लों लोगों में
से गया और उन्हें अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर की ओर
५ फेर लाया। और उसने देश में यहूदा के सारे बाड़ित
६ नगरों में नगर नगर न्यायियों को बैठाया। और न्यायियों को
कहा कि अपने अपने काम में चौकस रहो क्योंकि तुम मनुष्यों के
लिये नहीं परन्तु परमेश्वर के लिये जो न्याय की बात में तुम्हारे
७ साथ है न्याय करते हो। इस लिये अब परमेश्वर का भय तुम
पर होवे चौकस होके करो क्योंकि हमारे ईश्वर परमेश्वर के
संग कोई दुष्टता अथवा मनुष्यत्व का आदर अथवा अकोर
८ लेना नहीं है। और जब वे यिरोशलीम को फिरे तब यहूशाफ़ात
ने परमेश्वर के विचार के लिये और विवाद के लिये यिरोशलीम
में लावियों को और याजकों को और इसराईल के पितरों के
९ प्रधानों को ठहराया। और उन्हें यह कहिके आज्ञा किई कि यों
परमेश्वर के भय से विश्वास से और अंतःकरण की सिद्धता से
१० करो। और जो कुछ लोहू और लोहू के मध्य व्यवस्था और
आज्ञा और बिधिन के और बिचार के मध्य तुम्हारे भाइयों के
बिषय में जो उनके नगरों में बसते हैं, जो बात तुम पास आवे
तुम उन्हें चिता देना कि वे परमेश्वर के बिरुद्ध अपराध न करें
और कोप तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर न पड़े यही करो
११ और तुम अपराध न करोगे। और देख परमेश्वर की सारी
बातों में तुम पर अमरिया प्रधान याजक है और राजा की
सारी बातों में इश्माईल का बेटा यहूदा के घराने का प्रधान
जबदिया और तुम्हारे आगे लावी प्रधान होंगे हियाव से
कार्य करो और परमेश्वर भलों के साथ होगा।

घेरा जाके यहूशाफ़ात का व्रत प्रचारना और प्रार्थना करना १—१३ भविष्यद्वक्तों के द्वारा से बचाव का सन्देश पाना १४—१७ अन्य मान के लोगों का परमेश्वर की स्तुति गाना १८—२१ बैरियों का आपुस में लड़ मरना और लोगों का बहुत लूटपाना २२—२५ ।

१ इसके पीछे यह भी हुआ कि मवाब के सन्तान और अमून के सन्तान और उनके साथ अमूनियों से अधिक यहूशाफ़ात
२ के विरुद्ध संग्राम करने को आये । तब कितनों ने आके यहूशाफ़ात से यह कहिके सन्देश दिया कि सुरिया के इस अलंग के समुद्र पार से एक बड़ी मंडली तुम्हारे विरुद्ध में आती
३ है और देख वे हज़ाजूनतामार में हैं जो अनगदी है । और यहूशाफ़ात डरगया और परमेश्वर की खोज को अपना रुख
४ किया और यहूदा के सर्ब्बत्र व्रत प्रचारा । और परमेश्वर से सहाय मांगने के लिये सारे यहूदा एकट्ठे हुए अर्थात् यहूदा के सारे नगरों में से परमेश्वर की खोज को आये ।
५ और यहूशाफ़ात परमेश्वर के मन्दिर में नये आंगन के आगे यहूदा और यिरोशलीम की मंडली के मध्य खड़ा
६ हुआ । और कहा कि हे हमारे पितरों के ईश्वर परमेश्वर क्या स्वर्ग में तू ईश्वर नहीं? और अन्यदेशियों के सारे राज्यों पर प्रभुता नहीं करता? और तेरे हाथ में क्या पराक्रम और ऐसा
७ बल नहीं कि कोई तेरा साम्ना नहीं कर सक्ता? । क्या तू हमारा ईश्वर नहीं जिसने अपने इसराईल लोगों के आगे से इस देश के निवासियों को खेद दिया और इसे अपने मित्र इबराहीम
८ के वंश को सदा के लिये नहीं दिया? । और वे उसमें बसे और यह कहिके तेरे नाम के लिये उसमें एक पवित्र स्थान
९ बनाया । कि यदि बुराई जैसा कि तलवार अथवा विचार का दंड अथवा मरी अथवा अकाल आदिक हम पर आ पड़े और

हम इस मन्दिर के आगे और तेरे साक्षात खड़े होवें (क्योंकि तेरा नाम इस मन्दिर में है) और हम अपने दुःख में तेरे आगे
१० प्रार्थना करें तब तू सुनके सहाय करेगा। और अब अमून के सन्तान को और मवाब को और सईर पर्ब्बत को देख जिन्हें तू ने इसराईल को, जब वे मिसर के देश से निकल आये, घेरने
११ न दिया परन्तु वे उनसे फिर गये और उन्हें नष्ट न किया। अपना अधिकार जो तू ने हमें भोग करने को दिया है देख वे उसमें
१२ से हमें बाहर निकालने को प्रतिफल देने आये हैं। हे हमारे ईश्वर क्या तू उनका विचार न करेगा? क्योंकि इस बड़ी जथा के विरुद्ध जो हम पर चढ़ आते हैं हम कुछ बल नहीं रखते और क्या करें सो भी नहीं जानते परन्तु हमारी आंखें तुझ पर हैं।
१३ और सारे यहूदा अपने बालकों और अपनी स्त्री और
१४ सन्तान समेत परमेश्वर के आगे खड़े हुए। तब असाफ़ के बेटों में का एक लावी अर्थात् मतानिया के बेटे जिएल के बेटे बनाया के बेटे ज़करिया के बेटे यहाजिएल पर परमेश्वर
१५ का आत्मा मंडली के मध्य में उतरा। और उसने कहा कि हे सारे यहूदा और यिरोशलीम बासियो और यहूशाफ़ात राजा तुम मेरी सुनो परमेश्वर तुम्हें यह कहता है कि तुम इस बड़ी मंडली से मत डरो अथवा विस्मित मत होओ क्योंकि
१६ संग्राम तुम्हारा नहीं परन्तु ईश्वर का। उनके विरुद्ध कल उतरो देखो वे जिज़ के चढ़ाव से आते हैं और तुम जरुयल बन
१७ के आगे नाली के तीर उन्हें पाओगे। इस में तुम्हें लड़ने न पड़ेगा लैस होके खड़े होओ और हे यहूदा और यिरोशलीम परमेश्वर की मुक्ति को अपने संग देखो मत डरो और विस्मित मत होओ कल उनके विरुद्ध निकलो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे
१८ संग है। और यहूशाफ़ात ने भूमि पर झुक के प्रणाम किया और सारे यहूदा और यिरोशलीम बासियों ने परमेश्वर के
१९ आगे गिरके परमेश्वर की सेवा किई। और कुहासी के सन्तान

कोरही के सन्तान लावी इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की स्तुति
२० ऊंचे स्वर से करने को खड़े ऊए। और वे भोर को
उठके टिकुवा के बन को गये और उनके जाते जाते यहूशाफात
ने खड़ा होके कहा कि हे यहूदा और यिरोशलीम बासियो
मेरी सुनो अपने ईश्वर परमेश्वर पर विश्वास रक्खो और तुम
स्थिर किये जाओगे उसके भविष्यद्वक्तों की प्रतीति करो जिसतें
२१ तुम भाग्यमान होओ। और जब उसने लोगों के साथ
परामर्श किया उसने परमेश्वर के लिये गायकों और
पवित्रता की सुन्दरता की स्तुति करवैयों को ठहराया कि
सेना के आगे आगे यह कहते ऊए चले परमेश्वर की स्तुति
२२ करो क्योंकि उसकी दया सदा लों है। और गान करने और
स्तुति करने के समय परमेश्वर ने अमून के सन्तानों के और
मवाब के और सईर पर्ब्बत के, जो यहूदा के बिरुद्ध आये थे
२३ छकिये बैठाये और वे मारे गये। क्योंकि अमून के सन्तान
और मवाब सर्वथा मार डालने और नष्ट करने सईर पर्ब्बत
के बासियों के बिरुद्ध उठे और जब उन्हों ने सईर के बासियों
२४ को समाप्त किया तो आपुस के नाश में सहायक ऊए। और
जब यहूदा बन में चौकी के गुंबट लों आये तब उन्हों ने मंडली
की ओर ताका और क्या देखते हैं कि लोथ भूमि पर पड़ी हैं
२५ और कोई न बचा। और जब यहूशाफात और उसके लोग
उन्हें लूटने को आये तब उन्हों ने उनमें धन और बहुमूल्य
मणि बहुताई से पाये जो उन्हों ने अपने लिये यहां लों लोथों
में से उतारा कि ले जा न सकते थे और इतने थे कि उन्हें तीन
२६ दिन लों लूट बटोरते लगा। चौथे दिन वे बिराकाह की तराई
में एकट्ठे ऊए क्योंकि उन्हों ने वहां परमेश्वर का धन्य माना इस
लिये आजलों वुह स्थान बिराकाह की तराई कहाता है।
२७ तब यहूदा के और यिरोशलीम के सारे लोग फिरे और
उनके आगे आगे यहूशाफात जिसतें आनन्द के साथ यिरोशलीम

के लवटें क्योंकि परमेश्वर ने उनके बैरियों पर उन्हें आनन्द
२८ करवाया। और वे नवल और बीण और तुरहियों को लिये
२९ ऊए यिरोशलीम को परमेश्वर के मन्दिर में आये। और जब
उन देशों के सारे राज्यों ने सुना कि परमेश्वर इसराईल के
३० बैरियों के विरुद्ध लड़ा तब ईश्वर को डर उन पर पड़ी। सो
यहूशाफात के राज्य पर चैन ऊआ क्योंकि उसके ईश्वर ने चारों
३१ ओर से उसे चैन दिया। और यहूशाफात ने
यहूदा पर राज्य किया जब वुह राज्य करने लगा तब पैंतीस
बरस का था और उसने यिरोशलीम में पचीस बरस राज्य
किया उसकी माता का नाम अजूबाह जो शिलहीं की बेटी थी।
३२ और वुह अपने पिता आसा की चाल पर चलता था और जो
३३ परमेश्वर की दृष्टि में भला था उन्हें पालने से न फिरा। तथापि
ऊंचे स्थान दूर न किये गये थे क्योंकि अब लों लोग अपने
पितरों के ईश्वर की ओर अपने मन को सिद्ध न किया था।
३४ और यहूशाफात की रही ऊई क्रिया आदि और अन्त देखो वे
हनानीया के बेटे याहू के वचन में जो इसराईल के राजाओं
३५ की पुस्तक में उठाया गया है लिखी हैं। इसके पीछे
यहूदा का राजा यहूशाफात इसराईल के राजा अहजिया
३६ से मिलगया जिस ने बड़ी दुष्टता किई। और तरशीश
को जाने के लिये जहाज़ बनाने को उस्से मिलगया और उन्हों
३७ ने अज़ीयून गबर में जहाज़ें बनाईं। तब मरीशाई दोदावा
का बेटा इलईज़र यहूशाफात के विरुद्ध यह भविष्य कहा इस
कारण कि तू अहाज़िया से मिलगया परमेश्वर ने तेरे कार्य्यों
को तोड़ दिया है और जहाज़ें तोड़ी गईं कि वे तरशीश को
न जासकीं।

यहूशाफात की मृत्यु और यहूराम का बुरा राज्य १—७ अदूम और लिबना का उस्से फिर जाना ८—११ इलियास का उसके बिरुद्ध भविष्य कहना १२—१५ उसके राज्य का लूटा जाना और उसका रोग और मृत्यु १६—२०।

१ अब यहूशाफात ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पितरों में दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उसके बेटे २ यहूराम ने उसकी सन्ती राज्य किया। उसके भाई यहूशाफात के बेटे अज़रिया और यिहीयेल और ज़िकरिया और अज़रिया और मीकाईल और शिफतिया थे ये सब इसराईल के राजा ३ यहूशाफात के बेटे थे। और उनके पिता ने चांदी और सोना और बहुमूल्य बस्तें और यहूदा में बाड़ित नगर सहित उन्हें बहुत दिये परन्तु उसने राज्य यहूराम को दिया क्योंकि ४ वुह पहिलौंठा था। और जब यहूराम ने अपने पिता के राज्य को पाया उसने आप को दृढ़ करके अपने सारे भाइयों को, और इसराईल के बहुत से अध्यक्षों को तलवार से घात किया।

५ यहूराम ने बत्तीस बरस का होके राज्य करना आरंभ ६ किया और यिरोशलीम में आठ बरस राज्य किया। और आहाब के घराने के समान वुह इसराईल के राजाओं की चाल पर चलता था क्योंकि आहाब की बेटी उसकी पत्नी थी और ७ उसने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। तथापि उस बाचा के जो उसने दाऊद से बांधी थी और उसे और उसके बेटों को सदा के लिये एक ज्योति देने की प्रतिज्ञा के कारण से परमेश्वर ने दाऊद के घराने को नाश करने न चाहा।

८ उसके दिनों में अदूमी, यहूदा के बश से फिर ९ गये और अपने लिये एक राजा बनाया। तब यहूराम अपने अध्यक्षों को और अपने सारे रथ साथ लेके बाहर निकला और रात ही को उठके अदूमियों को और रथपतिन को जो उसे

ईश्वर की ओर से था क्योंकि वुह आके यहूराम के साथ नमशी के बेटे याहू के विरुद्ध उतरा जिन्हें परमेश्वर ने अहाब के घराने
८ को काटडालने के लिये अभिषेक किया था । और ऐसा हुआ कि जब याहू अहाब के घराने पर दंड देता था और यहूदा के अध्यक्षों को और अहाज़िया के भाइयों के बेटों को, जो अहाज़िया
९ की सेवा करते थे पाया, तो उसने उन्हें घात किया । और उसने अहाज़िया को ढूंढ़ा और उन्हों ने उसे पकड़ा (क्योंकि वुह सामरः में छिपा था) और उसे याहू पास लाये और उन्हों ने उसे घात करके गाड़ा क्योंकि उन्हों ने कहा कि वुह यहूशाफ़ात का बेटा जिसने अपने सारे मन से परमेश्वर की खोज किई सो अहाज़िया के घराने राज्य रखने की सामर्थ्य न
१० रखते थे ।　　　परन्तु जब अहाज़िया की माता अथालिया ने देखा कि मेरा बेटा मरगया तो उसने उठके यहूदा के
११ घराने के सारे राजबंशों को नाश किया । परन्तु राजकन्या यहूशाबिआस ने अहाज़िया के बेटे यूआश को लिया और राजा के घातित बेटों में से उसे चुराया और उसे और उसकी दाई को एक शयनस्थान की कोठरी में रक्खा इस रीति से युहायदा याजक की पत्नी यहूराम राजा की बेटी यहूशाबियास ने (क्योंकि वुह अहाज़िया की बहिन थी) उसे अथालिया से
१२ छिपाया यहांलों कि उसने उसे घात न किया । और वुह उसके साथ ईश्वर के मन्दिर में छः बरस लों छिपारहा और अथालिया ने देश पर राज्य किया ।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

युआश का राजा होना १—११ अथालिया का मारा जाना १२—१५ युहायदा का मूर्त्ति पूजा को उठादेना और परमेश्वर की सेवा को स्थिर करना १६—२२ ।

१ और सातवें बरस में युहायदा ने आप को दृढ़ किया और

शतपतियों को अर्थात् यहूराम के बेटे अज़ारिया को और यहोहानान के बेटे इश्‌माईल को और ओबेद के बेटे अज़रिया को और अदाया के बेटे मआसिया को और जिकरी के बेटे
२ यलिशाफ़ात को बाचा में अपने साथ लिया। और वे यहूदा में फिरे किये और यहूदा के सारे नगरों में से लावियों को और इसराईल के पितरों के प्रधानों को एकट्ठे किया और वे
३ यिरोशलीम में आये। और सारी मंडली ने परमेश्वर के मन्दिर में राजा के साथ बाचा बान्धी और उसने उन्हें कहा कि देखो जैसा कि परमेश्वर ने दाऊद के बेटों के विषय में
४ कहा था कि राजा का बेटा राज्य करेगा। तुम यह काम करो, बिश्राम में भीतर जाने में लावी के और याजकों के तीसरे भाग
५ डेवढ़ियों के दारपालक होवें। और तीसरे भाग राजा के भवन में और तीसरे भाग नेंव के फाटक में और सारे लोग
६ परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में। परन्तु याजक और लावी सेवकों को छोड़ कोई परमेश्वर के मन्दिर में आने न पावे वे भीतर जायें क्योंकि वे पवित्र हैं परन्तु सारे लोग परमेश्वर की
७ रक्षा करें। और लावियों का हर एक जन हथियार हाथ में लेके राजा को चारों ओर से घेरे और जो कोई मन्दिर में आवेगा सो मारा जायगा परन्तु राजा के बाहर भीतर
८ आने जाने में तुम लोग उसके साथ रहो। सो लावी और सारे यहूदा ने युहायदा याजक की सारी आज्ञा के समान किया और हर एक ने अपने अपने जन को लिया जिन्हें बिश्राम में भीतर जाना था उनके साथ जिन्हें बिश्राम में बाहर जाना था क्योंकि युहायदा याजक ने पारियों को बिदा न किया था।
९ इससे अधिक युहायदा याजक ने दाऊद राजा की बरछी और फरी और ढाल जो ईश्वर के मन्दिर में थीं शतपतियों को
१० सौंप दिईं। और उसने हर एक जन को हाथ में हथियार लिये ऊए मन्दिर की दहिनी बाईं ओर यज्ञबेदी और मन्दिर

११ के पास राजा की चारों ओर सारे लोगों को खड़ा किया। फिर वे राजपुत्र को बाहर ले आये और उस पर मुकुट रक्खा और साक्षी देके उसे राजा किया और युहायदा और उसके बेटों ने उसे अभिषेक किया और कहा कि ईश्वर राजा की रक्षा करे।
१२ जब अथालिया ने लोगों के दौड़ने का, और राजा की स्तुति का शब्द सुना तब वुह परमेश्वर के मन्दिर में लोगों के
१३ पास आई। और ताके क्या देखती है कि राजा पैठ में खंभे के लग खड़ा है और अध्यक्ष और तूरही राजा के लग और देश के सारे लोगों ने आनन्द किया और तुरहियों से और गायक भी बाजों को लेके और जो स्तुति गाने को सिखाते थे शब्द किया तब अथालिया ने अपने वस्त्र फाड़के कहा कि गुष्ठ
१४ है, गुष्ठ है। तब युहायदा याजक सेना के शतपतियों को निकाल लाया और उन्हें कहा कि उसे सिवाने से बाहर करो और जो कोई उसके पीछे जाय सो तलवार से मारा जाय क्योंकि याजक ने कहा था कि परमेश्वर के मन्दिर में उसे
१५ घात मत करो। सो उन्हों ने उस पर हाथ डाले और जब वुह घोड़ फाटक के पैठलों, जो राजा के भवन के लग था पहुंचा,
१६ तो उन्हों ने उसे घात किया। फिर युहायदा ने अपने मध्य में और सारे लोगों के मध्य में और राजा के मध्य में बाचा बांधी जिसते
१७ वे परमेश्वर के लोग होवें। फिर सारे लोग बआल के मन्दिर में गये और उसे तोड डाला और उसकी बेदियों को और उसकी मूर्त्तिन को टुकड़े टुकड़े किये और बआल के पुरोहित
१८ मतान को बेदियों के आगे घात किया। और मूसा की व्यवस्था के लिखने के समान, जैसा दाऊद ने परमेश्वर के मन्दिर में अलग अलग ठहराया था वैसा युहायदा ने लावी याजकों के हाथों से परमेश्वर के मन्दिर के प्रधानों को गाते और आनन्द करते हुए
१९ दाऊद के ठहराने के समान ठहराया। और उसने परमेश्वर के मन्दिर के फाटकों पर द्वारपालों को बैठाया जिसतें जो कोई

२० किसी बात में अपवित्र होवे सो भीतर आने न पावे । और उसने शतपतियों को और कुलीनों को और लोगों के अध्यक्षों को और देश के सारे लोगों को लिया और राजा को परमेश्वर के मन्दिर से लेआये और बड़े फाटक से होके राज भवन में
२१ आये और राजा को राज्य के सिंहासन पर बैठाया । और देश के सारे लोगों ने आनन्द किया और अथालिया को तलवार से घात करने के पीछे नगर में चैन हुआ ।

२४ चैाबीसवां पर्ब्ब ।

युहायदा के जीवन भर यूआश का अच्छा राज्य करना और मन्दिर सुधारना १—१४ यहायदा की मृत्यु और समाधि १५—१६ यूआश का मूर्त्ति पूजा को ओर फिरना और ज़करिया को बधन करना १७—२१ मरते मरते ज़करिया की भविष्यद्वाणी यूआश का माराजाना अमासिया का राज्य पाना २२—२७ ।

१ यूआश ने सात बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उसने यिरोशलीम में चालीस बरस राज्य किया उसकी
२ माता का नाम भी बीरशबा की सिबिया था । और युहायदा याजक के जीवन भर यूआश ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई ।
३ और युहायदा ने उसके लिये दो पत्नियां कर दिईं और उसे
४ बेटे और बेटियां उत्पन्न हुईं । इसके पीछे यों हुआ कि यूआश ने परमेश्वर के मन्दिर को नवीन करने चाहा ।
५ और उसने याजकों का और लावियों को एकट्ठा करके उन्हें कहा कि यहूदा के नगरों में जाओ और सारे इसराईलियों से बरस बरस परमेश्वर का मन्दिर सुधारने के लिये रोकड़ एकट्ठा करो और देखो कि यह बात शीघ्र होवे तथापि लावियों
६ ने शीघ्र न किया । और राजा ने प्रधान युहायदा को बुला

के उसे कहा कि परमेश्वर के दास मूसा के, और इसराईल की मंडली के कहे के समान साक्षी के तंबू के लिये तू ने लावियों से क्यों नहीं चाहा कि यहूदा में से और यिरोशलीम में से
७ बेहरी लावें?। क्योंकि उस दुष्ट स्त्री अथालिया के बेटों ने परमेश्वर के मन्दिर को ढादिया था और परमेश्वर के मन्दिर की अर्पण किई ऊई सारी बस्तुन को भी उन्हों ने बआलिम पर
८ चढ़ाया। सो राजा की आज्ञा से उन्हों ने एक मंजूषा बनाई
९ और परमेश्वर के मंन्दिर के फाटक पर बाहर रक्खी। और उन्हों ने सारे यहूदा और यिरोशलीम में प्रचारा कि जो बेहरी ईश्वर के सेवक मूसा ने बन में इसराईल पर ठहराई
१० थी सो परमेश्वर के लिये भीतर लावें। और सारे अध्यक्ष और सारे लोग आनन्द करके लाये और मंजूषा में डाला किया
११ जब लों वे पूरा न करचुके। अब ऐसा ऊआ कि जब लावियों के हाथ से मंजूषा राजा के भंड़ार में पऊंचाईगई और जब उन्हों ने बऊत रोकड़ देखा तब राजा के लेखक और महा याजक का एक प्रधान आके मंजूषा को छूछी करते थे और फेर लेजा के उसी स्थान में रखते थे वे प्रतिदिन ऐसाही करते थे
१२ और बऊताई से रोकड़ बटोरा। फिर राजा ने और युहायदा ने उसे परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्यकारियों को दिया और परमेश्वर का मन्दिर सुधारने के लिये उन्हों ने थवइयों को, और बढ़इयों को, बनी दिई और परमेश्वर का मन्दिर बनाने
१३ के लिये लोहारों को और ठठेरों को दिया। तब कार्य्यकारियों ने कार्य्य किया और उनसे कार्य्य बनगया और उन्हों ने परमेश्वर
१४ के मन्दिर को ठिकाने में लाके दृढ़ किया। वे बना के उबरा ऊआ रोकड़ राजा के और युहायदा के आगे लाये और उस्से परमेश्वर के मन्दिर के लिये पात्र बनवाये गये अर्थात् सेवा के पात्र और होम के पात्र और करछुल और सोने चांदी के पात्र और युहायदा के जीवन भर वे नित्य परमेश्वर के मन्दिर

१५ में होम की भेंट चढ़ाते थे। परन्तु युहायदा वृद्ध हुआ
और दिन का पूरा होके मरगया और मरने के समय वुह एक
१६ सौ तीस बरस का था। और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में
राजाओं में गाड़ा इस कारण कि उसने परमेश्वर की, और
उसके मन्दिर की ओर इसराईल में भला किया था।
१७ अब युहायदा के मरने के पीछे यहूदा के अध्यक्षों ने
आके राजा को प्रणाम किया तब राजा ने उनकी बात मानी।
१८ और वे अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर को त्याग
करके कुंजों की और मूरतों की पूजा करने लगे और उनके
इस अपराध के लिये यहूदा पर और यिरोशलीम पर कोप
१९ पड़ा। तथापि उसने भविष्यद्वक्तों को उन पास भेजा कि उन्हें
परमेश्वर की ओर फेरें और उन्हों ने उनपर साक्षी दिई
२० परन्तु उन्हों ने उनकी न मानी। फिर परमेश्वर का आत्मा
युहायदा याजक के बेटे ज़करिया पर आया और उसने ऊपर
खड़ा होके लोगों से कहा कि ईश्वर यों कहता है कि तुम लोग
परमेश्वर की आज्ञाओं को क्यों उलंघन करते हो तुम लोग
भाग्यमान नहीं होसक्ते हो? तुम ने जो परमेश्वर को त्यागा है इस
२१ कारण उसने तुम्हें भी त्याग किया है। तब उन्हों ने उसके विरुद्ध
युक्ति बांधके राजा की आज्ञा से परमेश्वर के मन्दिर के आंगन
२२ में पथरवाह करके उसे मार डाला। यूं यूआश राजा ने
उसके पिता युहायदा की कृपा को जो उसने उस पर किई थी
स्मरण न किया परन्तु उसके बेटे को घात किया और मरने
के समय में उसने कहा कि "परमेश्वर इस पर दृष्टि करके
२३ पलटा लेवे"। और बरस के फिर आने में ऐसा हुआ
कि सुरिया की सेना उसके विरुद्ध में चढ़ आई और वे यहूदा
में और यिरोशलीम में आये और लोगों में से सारे अध्यक्षों
को नष्ट किया और उनकी सारी लूट दमिश्क के राजा पास
२४ भेजी। क्योंकि सुरियानियों की सेना तो एक छोटी जथा को लेके

आई और परमेश्वर ने एक अतिबड़ी सेना को उनके हाथ में सौंप दिया क्योंकि उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को त्यागा था सो उन्हों ने यूआश पर न्याय का दंड किया। २५ और जब वे उस्से फिर गये (क्योंकि उन्हों ने उसे बड़े बड़े रोग में छोड़ दिया) उसी के दासों ने युहायदा याजक के बेटों के लोहू के लिये युक्ति बांधी और उसके बिछौने पर उसे मार के घात किया और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा परन्तु उसे २६ राजाओं की समाधिन में न गाड़ा। और जिन्हों ने उसके बिरुद्ध में गुष्ठ बांधी सो एक अमूनी शिमियात के बेटे जाबाद २७ और एक मवाबी शिमरीत का बेटा जोहाज़ाबाद थे। अब उसके बेटे और बोझों का भार जो उस पर धरागया और परमेश्वर के मन्दिर की नेंव डालना देखो वे राजाओं के वर्णन की पुस्तक में लिखे हैं और उसके बेटे अमासिया ने उसकी संती राज्य किया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

अमासिया का राज्य पाना और अपने पिता के बधिकों को घात करना १—४ इसराईली सेना को भाड़े में रखना और उन्हें फेर देना ५—१० अदूमि को मारना और इसराईलियों का उसके नगर को लूटना ११—१३ अमासिया का अदूम के देवों की सेवा करना और भविष्यद्वक्ता की चेतावनी को टालदेना १४—१६ यूआश से लड़के उसका हार जाना और यिरोशलीम का लूटा जाना १७—२४ उसका राज्य और मारा जाना २५—२८।

१ अमासिया ने पचीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उसने यिरोशलीम में उंतीस बरस राज्य किया २ उसकी माता का नाम यहूयादान यिरोशलीमी। और उसने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई परन्तु सिद्ध मन से नहीं।

३ और ऐसा हुआ कि जब राज्य उस पर स्थिर हुआ तब उसने अपने पिता के घातक सेवकों को घात किया।
४ परन्तु उसने उनके सन्तानों को घात न किया पर जैसा कि मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है जहां परमेश्वर ने आज्ञा करके कहा था कि बालकों की संती पिता मारे न जायेंगे और पिता के लिये बालक मारे न जायेंगे परन्तु हर एक जन अपने अपने पाप के लिये मारा जायगा।
५ और अमासिया ने यहूदा को एकट्ठा किया और उनके घराने के समान उसने उन्हें सहस्रपति और शतपति सारे यहूदा और बिनयामीन में किये उसने उन्हें बीस बरस के और उस्से ऊपर गिना और उन्हें तीन लाख चुने हुए पाया जो संग्राम में जाने के और बरछी और ढाल बांधने के योग्य थे।
६ और उसने एक लाख महाबीर इसराईलियों में से सौ तोड़े चांदी पर भाड़े किये।
७ परन्तु ईश्वर का एक जन यह कहते हुए उस पास आया कि हे राजा इसराईल की सेना तेरे साथ जाने न पावे क्योंकि परमेश्वर इसराईल के साथ अर्थात् सारे अफराईम के सन्तानों के साथ नहीं है।
८ परन्तु यदि तू जायेगा तो जा संग्राम के लिये दृढ़ हो ईश्वर तुझे तेरे बैरियों के आगे ध्वस्त करेगा क्योंकि सहाय करने को और ध्वस्त करने को ईश्वर में शक्ति है।
९ और अमासिया ने ईश्वर के जन से कहा, पर सौ तोड़े के लिये, जो मैं ने इसराईल की सेना को दिये हैं हम क्या करें? ईश्वर के जन ने उत्तर दिया कि परमेश्वर इस्से अधिक तुझे देने को सामर्थ्य रखता है।
१० तब अमासिया ने उस सेना को अलग किया, जो अफराईम में से उस पास आई थी कि अपने स्थान को फिर जाव इस कारण उनका क्रोध यहूदा के बिरुद्ध भड़का और वे क्रोध के तपन से अपने घर गये।
११ फिर अमासिया ने आप को दृढ़ किया और अपने लोगों को बाहर नून की तराई में लेगया और सईर के सन्तानों के दस सहस्र

१२ जन को जुझा दिया। और यहूदा के सन्तान दस सहस्र को जीते जी बंधुआई में लेजाके एक पर्ब्बत की चोटी पर पऊंचाके पर्ब्बत की चोटी पर से उन्हें गिरा दिया कि सबके सब चकनाचूर
१३ होगये। परन्तु जथा के पुत्र जिन्हें अमासिया ने फेर दिया था जिसतें उसके साथ संग्राम पर न जायें सामरः से लेके बैतऊरून लों यहूदा के नगरों पर पड़े और उनमें से तीन सहस्र को जुझा
१४ दिया और बऊत लूट लिया। जब अमासिया अदूमियों को जुझा के फिर आया उसके पीछे यों ऊआ कि वुह सईर के सन्तान के देवों को लाया और उन्हें अपने देव स्थापित किये और उनके आगे दंडवत किई और उनके लिये धूप
१५ जलाया। इसे परमेश्वर का क्रोध अमासिया पर भड़का और उसने उस पास एक भविष्यद्वक्ता को भेजा जिसने उसे कहा कि जो देव अपनेही लोगों को तेरे हाथ से छुड़ा न सके तूने
१६ उनका पीछा क्यों किया?। जब वुह उसे कहिरहा था तो यों ऊआ कि उसने उसे कहा कि तू राजा के मंत्रियों में का है? रहिजा तू क्यों मारा जाय? तब भविष्यद्वक्ता रहिगया और कहा कि जो तू ने यह किया है और मेरे मंत्र को नहीं माना है मैं जानता हों कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को मंत्र दिया
१७ है। तब यहूदा के राजा अमासिया ने मंत्र लेके इसराईल के राजा याहू के बेटे यहूअहाज़ के बेटे यूआश कने कहला
१८ भेजा कि आ परस्पर मुंह देखें। सो इसराईल के राजा यूआश ने यहूदा के राजा अमासिया को कहिला भेजा कि लबनान के भटकटैया ने लबनान के अरज पेड़ को कहिला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को बिगाह दे फिर लबनान का एक बनैला पशु उस मार्ग से निकला और भटकटैये को
१९ रौंदडाला। तू कहता है कि देख मैं ने अदूमियों को मारा है और तेरे मन ने अहंकार के लिये तुझे उभाड़ा है सो अब घर में रहिजा तू अपने कष्ट के लिये क्यों छेड़ता है कि आप और

२० यहूदा तेरे साथ मारे जायें?। परन्तु अमासिया ने न माना क्योंकि यह ईश्वर से था जिसतें वुह उन्हें उनके हाथ में सौंप देवे
२१ इस कारण कि उन्हों ने अदूम के देवों का पीछा किया था। सो इसराईल का राजा यूआश चढ़ गया और उन्हों ने अर्थात् उसने और यहूदा के राजा अमासिया ने यहूदा के बैतशमश में
२२ परस्पर मुंह देखा। और यहूदा इसराईल के आगे मारे गये
२३ और हर एक जन अपने अपने तंबू को भागा। और इसराईल के राजा यूआश ने यहूआहाज के बेटे यूआश के बेटे यहूदा के राजा अमासिया को बैतशमश में पकड़ के यिरोशलीम में लाया और अफराईम के फाटक से देखवैये फाटक लों चार सौ
२४ हाथ यिरोशलीम की भीत ढा दिई। और सारे सोना चांदी और सारे पात्र जो परमेश्वर के मन्दिर में पायेगये और ओबेदअदूम के संग और राजा के भवन के भंडार और ओलों
२५ को लेके सामरः को फिर आया। और यूआश का बेटा यहूदा का राजा अमासिया इसराईल के राजा यहूआहाज़ के
२६ बेटे यूआश के मरने के पीछे पंदरह बरस जीया। अब अमासिया की रही हुई क्रिया आदि और अन्त देखो वे इसराईल और
२७ यहूदा के राजाओं की पुस्तक में नहीं लिखीं?। और जब अमासिया परमेश्वर का पीछा करने से फिर गया उन्हों ने उसके बिरुद्ध यिरोशलीम में एक गुष्ठ बांधी और वुह लाकीश को भाग गया परन्तु उन्हों ने लाकीश में उसके पीछे भेजा और
२८ उसे वहां घात किया। और वे उसे घोड़ों पर लाये और यहूदा के नगर में उसके पितरों में उन्हों ने उसे गाड़ा।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

अज़िया का राज्य पाना और भाग्यमान होना १—८ उसके घर और खेती सेना और संग्राम के हथियार ९—१५ अहंकार से फूल के धूप

जलाने के लिये कोढ़ी होना १६—२१ उसकी मृत्यु और यूताम का राज्य पाना २२—२३।

१ तब यहूदा के सारे लोगों ने अज़्ज़िया को लिया, जो सोलह बरस का था और उसके पिता अमासिया के स्थान पर उसे
२ राजा किया। जब राजा अपने पितरों में शयन किया उसने
३ एलूत के बन को यहूदा में फेर मिलादिया। अज़्ज़िया सोलह बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और बावन बरस यिरोशलीम में राज्य किया उसकी माता का नाम यिरोशलीमी
४ एकोलिया था। और अपने पिता अमासिया की सारी क्रिया
५ के समान उसने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई। उसने जकरिया के दिनों में, जो ईश्वर के दर्शन में समझ रखता था, ईश्वर को खोजा और जबलों वुह परमेश्वर को खोजतारहा
६ तबलों ईश्वर ने उसे भाग्यमान किया। उसने जाके फलस्तानियों के विरुद्ध संग्राम किया और गात की और इबनेह की और अशदूद की भीत को तोड़ डाला और अशदूद के आसपास और
७ फलस्तानियों के मध्य नगर बनवाये। और ईश्वर ने फलस्तानियों के विरुद्ध और अरबियों के विरुद्ध, जो गुरबाल में रहते थे,
८ मिऊनियों के विरुद्ध उसकी सहाय किई। और अमूनियों ने अज़्ज़िया के पास भेंट भेजी और मिसर के पैठ लों उसकी
९ कीर्त्ति फैली क्योंकि वुह अत्यंत दृढ़ हुआ। और भी अज़्ज़िया यिरोशलीम में कोने के फाटक पर और तराई के फाटक पर और
१० घूम में गुम्मट बना के उन्हें दृढ़ किया। और उसने अरण्य में बहुत से गुम्मट बनवाये और बहुत कूये खोदवाये क्योंकि नीचे देश में और चौगानों में उसके बहुत ढोर थे और पर्ब्बतों में और करमिल में किसान और दाख के सुधरवैये थे क्योंकि किसनई
११ उसे अच्छी लगती थी। और भी अज़्ज़िया योद्धाओं की एक सेना रखता था जो जथा जथा जीईल लेखक के और मअसिया आज्ञाकारी के और राजा के एक सेनापति हनानिया के

१२ वश में होके संग्राम को निकलती थी। महाबीरों के पितरों
१३ के प्रधानों की गिनती दो सहस्र छःसौ। और उनके वश में
बैरी के बिरुद्ध राजा की सहाय के लिये एक सेना का पराक्रम
तीन लाख सात सहस्र पांच सौ जो बड़े पराक्रम से युद्ध करते
१४ थे। और अज़्ज़िया ने उनके लिये सारी सेना में सर्वत्र ढाल
और बरछी और टोप और झिलम और धनुष और पत्थर
१५ के लिये ढेलवांस सिद्ध किये। और उसने गुम्मटों पर और
कोटों पर धरने के लिये जिसतें बाण और बड़े बड़े पत्थर मारे
यिरोशलीम में गुणी लोगों से निकाले हुए कल बनवाये और
उसका नाम दूर लों फैलगया क्योंकि बलवंत होने लों आश्चर्यित
१६ से उसकी सहाय हुई। परन्तु जब वुह बलवन्त हुआ
बिनाश के लिये उसका मन फूला क्योंकि उसने अपने ईश्वर
परमेश्वर के बिरुद्ध अपराध किया और धूप की बेदी पर धूप
१७ जलाने के लिये परमेश्वर के मन्दिर में गया। और अज़रिया
याजक और उसके साथ परमेश्वर के अस्सी बलवन्त याजक
१८ उसके पीछे गये। और उन्हों ने अज़्ज़िया राजा को रोक के उसे
कहा कि हे अज़्ज़िया परमेश्वर के लिये धूप जलाने को आप का
काम नहीं परन्तु हारून के बेटे याजकों के जो धूप जलाने के
लिये ठहरायेगये हैं सो पवित्र स्थान से बाहरजाइये क्योंकि
आप ने अपराध किया है और परमेश्वर ईश्वर से आप की
१९ प्रतिष्ठा के लिये न होगा। तब अज़्ज़िया कोपित हुआ और
धूप जलाने को उसके हाथ में एक धूपावरी थी और याजकों
पर कोपित होतेहुए धूप की बेदी के लग से ईश्वर के मन्दिर में
२० याजकों के आगे उसके कपाल पर कोढ़ फूटनिकला। और
अज़रिया प्रधान याजक और सारे याजकों ने उस पर दृष्टि
किई और क्या देखते हैं कि उसके सिर पर कोढ़ निकला
आर उन्हों ने उसे वहां से दूर करने को शीघ्रता किई क्योंकि
२१ परमेश्वर ने उसे मारा था। और अज़्ज़िया राजा अपने

मरने लों कोढ़ी रहा और अलग घर में कोढ़ी होके रहा क्योंकि वुह परमेश्वर के मन्दिर से अलग किया गया था और उसका बेटा यूताम राजा के भवन पर होके देश के लोगों का न्याय

२२ करता था। अब अज़्ज़ियाह की रही हुई क्रिया आदि और

२३ अंत अमूस के बेटे अशाया भविष्यद्वक्ता ने लिखा है। सो अज़्ज़ियाह अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे उसके पितरों में राजाओं की समाधिस्थान में गाड़ा क्योंकि उन्हों ने कहा कि वुह कोढ़ी है और उसके बेटे यूताम ने उसकी संती राज्य किया।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

यूताम का अच्छा राज्य और भाग्यमान होना १—६ उसकी मृत्यु और आहाज़ का राज्य पाना ७—९ ।

१ यूताम ने पचीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उसने यिरोशलीम में सोलह बरस राज्य किया और

२ उसकी माता का नाम यिरोशा सादूक की बेटी। और उसने अपने पिता अज़्ज़ियाह के सारे कार्य्य के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई तथापि वुह परमेश्वर के मन्दिर में नहीं

३ पैठा। और अब भी लोग अशुद्ध कर्म करते रहे उसने परमेश्वर के मन्दिर का ऊंचा फाटक बनाया और उफेल की

४ भीत पर उसने बज़त बनाया। और इस्से अधिक उसने यहूदा के पर्बतों में नगर बनवाये और बन में उसने गढ़ियां

५ और गुम्मट बनवाये। वुह अमूनियों के राजा के साथ भी लड़के उसे जीता और उस बरस में अमून के सन्तानों ने उसे एक सौ तोड़े चांदी और दस सहस्र नपुए गोहूं और दस सहस्र नपुए जव दिये और दूसरे और तीसरे बरस भी

६ अमून के सन्तानों ने उसे उतना हीं दिये। सो यूताम बलवंत ज़आ इस कारण कि उसने अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे

७ अपनी चाल सुधारी । अब यूताम की रही ऊई क्रिया और उसकी सारी लड़ाइयां और उसकी चाल देखो वे यहूदा और
८ इसराईल के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं । जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तब पचीस बरस का था और यिरोशलीम
९ में सोलह बरस राज्य किया । और यूताम ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा और उसके बेटे आहाज़ ने उसकी संती राज्य किया ।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब ।

अहाज़ का बुरा राज्य और उसकी सेना का माराजाना १—८ भविष्यद्वक्ता के उपदेश से इसराईल का यहूदा के बंधुओं को छोड़देना ९—१५ असूर के राजा की सहाय चाह के अहाज़ का कुछ लाभ न पाना १६—२१ अपने दुःख में मूर्त्ति पूजा का बढ़ाना २२—२५ उसकी मृत्यु और हिज़किया का राज्य पाना २६—२७ ।

१ आहाज़ ने बीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उसने यिरोशलीम में सोलह बरस राज्य किया परन्तु अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई न
२ किई । क्योंकि वुह इसराईल के राजाओं की चालों पर चलता था और बआलिम के लिये ढाली ऊई मूरतें भी बनाईं ।
३ और उस्से अधिक उसने हिन्नुम के बेटे की तराई में बलि चढ़ाया और अन्यदेशियों के घिनितों के समान, जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल के सन्तानों के आगे से दूर किया था, अपने सन्तान
४ को आग में से चलाया । और उसने ऊंचे स्थानों और पर्ब्बतों पर और हर एक हरेपेड़ तले बलि चढ़ाया और धूप जलाया ।
५ इस लिये उसके ईश्वर परमेश्वर ने उसे सुरिया के राजा के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उसे मारा और उन में से

एक बड़ी मंडली को बंधुआई में लेगये और दमिश्क में पहुंचाया और वुह भी इसराईल के राजा के हाथ में सैांपागया जिस ने
६ उसे बड़ी मार से मारा। क्योंकि रिमलिया के बेटे फिकाह ने दिन भर में यहूदा में से एक लाख बीस सहस्र को घात किया ये सब वीर पुत्र थे कारण यह था कि उन्हों ने अपने पितरों के
७ ईश्वर परमेश्वर को त्याग किया था। और अफ़राईम के एक बलवन्त जन, जिकरी ने राजा के बेटे मअसिया को और घर के अध्यक्ष अज़रिकाम को, और राजा के समीपी एलकाना
८ को घात किया। और इसराईल के सन्तानों ने अपने भाई बंद में से दो लाख स्त्री बालक और कन्या बंधुआई में लेगये और
९ उनमें बहुतसी लूट लेके लूट को सामरःमें लाये। परन्तु उदेद नाम एक जन परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता वहां था वुह सामरः की सेना के आगे गया और उन्हें कहा कि देखो तुम्हारे पितरों का ईश्वर परमेश्वर यहूदा से कोपित था इस लिये उसने उन्हें तुम्हारे हाथ में सैांपदिया है और तुमने उन्हें
१० ऐसे कोप से घात किया कि स्वर्गलों पहुंच गया। और अब तुम यहूदा और यिरोशलीम के सन्तानों को दास और दासी में रक्खा चाहते हो क्या तुम में, अर्थात् तुम्हों में अपने ईश्वर
११ परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं है?। इस लिये अब मेरी सुनो और अपने भाई बंदों में के बंधुओं को जिन्हें तुम लाये हो उन बंधुओं को
१२ सैांप देओ क्योंकि परमेश्वर का महा कोप तुम पर है। तब अफराईम के सन्तान के कितने प्रधानों ने अर्थात् यहूनान का बेटा अज़रीया और मिश्लिमूस का बेटा बरिकिया और शलुम का बेटा जिहज़किया और हदलाई का बेटा आमासा
१३ उनके विरुद्ध, खड़ेहुए, जो संग्राम से आये। और उन्हें कहा कि तुम बंधुओं को इधर न लाओगे क्योंकि हम ने तो परमेश्वर के विरोध में अपराध किया है, हमारे पापों को और अपराधों को बढ़ाने चाहते हो क्योंकि हमारा अपराध बड़ा है और

१४ इसराईल के बिरुद्ध महा कोप है। तब हथियार बंधों ने
बंधुओं को और लूट को अध्यक्षों के और सारी मंडली के आगे
१५ छोड़ दिया। फिर जिन मनुष्यों का नाम लिखा था सो उठखड़
हुए और बंधुओं को और लूट को लेके उनमें के सारे नंगों को
पहिराया और बिभूषित किया और जूते पहिनाये और
उन्हें खिला पिला के उन पर तेल लगवाया और उनमें के सारे
दुर्बलों को गदहों पर बैठाके खजूर पेड़ के नगर अर्थात्
अरीहा में अपने भाइयों के पास पहुंचाया तब वे सामरः
१६ को फिर आये।   उस समय आहाज़ राजा ने अपनी
१७ सहाय के लिये असूर के राजा पास भेजा। क्योंकि अदूमी ने
१८ फेर आके यहूदा को मारा और बंधुए लेगये। फलस्तानियों
ने भी तराई के देश के नगरों को और यहूदा के दक्षिण को
घेरा था और बैतशमश को और अजालून को और गदीरूस को
और शोको को उसके गाओं समेत और तिमना उसके गाओं
समेत और गिमजू को भी और उसके गांओं को लेलिया और वे
१९ उनमें बसे। क्योंकि इसराईल के राजा आहाज़ के कारण से
परमेश्वर ने यहूदा को घटाया इस लिये कि उसने यहूदा
को नग्न किया और परमेश्वर के बिरुद्ध महा अपराध किया।
२० असूर के राजा तिलगातपलीसर ने उस पास आके उसे
२१ सताया परन्तु उसे दृढ़ न किया। क्योंकि आहाज़ ने परमेश्वर
के मन्दिर से और राज भवन से और अध्यक्षों से भाग लेके
असूर के राजा को दिया परन्तु उसने उसको सहाय न किई।
२२ और अपने दुःख के समय में इसी आहाज़ राजा ने परमेश्वर
२३ के बिरुद्ध अधिक अपराध किया। क्योंकि उसने दमिश्क के
देवों के लिये, जिन्हों ने उसे मारा था बलि चढ़ाया और उसने
कहा कि सुरिया के राजाओं के देवों ने उनकी सहाय किई
इस लिये मैं उनके लिये बलि चढ़ाओंगा जिसतें वे मेरी सहाय
करें परन्तु वे उसके और सारे इसराईल के नष्ट के कारण

२४ ऊर। और आहाज़ ने ईश्वर के मन्दिर के पात्रों को एकट्ठे किया और ईश्वर के मन्दिर के पात्रों को काट के टुकड़े टुकड़े किये और परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों को बन्द किया और उसने अपने लिये यिरोशलीम के हर एक कोने में बेदियां
२५ बनवाईं। और यहूदा के हर एक नगर में उसने उपरी देवों के नाम से धूप जलाने को ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये और अपने
२६ पितरों के ईश्वर परमेश्वर को रिस दिलाया। अब उसकी रही हुई क्रिया और उसकी सारी चाल आदि और अंत देखो वे यहूदा के और इसराईल के राजाओं की पुस्तक
२७ में लिखी हैं। और आहाज़ ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे यिरोशलीम नगर में गाड़ा परन्तु उसे इसराईल के राजाओं की समाधिन में न पहुंचाया और उसका बेटा हिज़किया उसकी संती राज्य पर बैठा।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

हिज़किया का अच्छा राज्य उसका परमेश्वर की पूजा के लिये सब कुछ सिद्ध करना १—११ लोगों का आप को और मन्दिर को पवित्र करना १२—१९ हिज़किया का बलि चढ़ाना और लावियों का धर्म्म २०—३६।

१ हिज़किया ने पचीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उंतीस बरस यिरोशलीम में राज्य किया और उसकी
२ माता का नाम अबिया, वुह ज़िकरिया की बेटी थी। और उसने अपने पिता दाऊद के सारे कार्य्य के समान परमेश्वर
३ की दृष्टि में भलाई किई। उसने अपने राज्य के पहिले बरस के पहिले मास में परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों को खोला
४ और उन्हें सुधारा। और उसने याजकों को और लावियों को
५ भीतर लाके पूर्ब्ब की सड़क में एकट्ठे किया। और उन्हें कहा

कि हे लावियो मेरी सुनो अब अपने को पवित्र करो और अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र करो
६ और पवित्र स्थान से सारा कूड़ा बाहर ले जाओ। क्योंकि हमारे पितरों ने अपराध किया है और हमारे ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई है और उसे त्याग किया है और अपने अपने मुंह को परमेश्वर के निवास से फेर दिया है और
७ अपनी अपनी पीठ उसकी ओर किई है। और ओसारे के द्वारों को बंद किया है और दीयकों को बुझाया है और इसराईल के ईश्वर के लिये पवित्र धूप नहीं जलाया और होम
८ नहीं किया। इस लिये परमेश्वर का कोप यहूदा और यिरोशलीम पर पड़ा और जैसे तुम लोग अपनी आंखों से देखते हो उसने उन्हें बिपत्ति को और बिस्मय को और फुफकारों
९ को सौंप दिया है। क्योंकि हमारे पितर तलवार से मारे गये हैं और हमारे बेटे बेटियां और हमारी पत्नियां इसके लिये
१० बंधुआई में हैं। अब मेरे मन में है कि इसराईल के ईश्वर परमेश्वर के साथ एक बाचा बांधों जिसतें उसका महा कोप हमसे
११ फिर जाय। हे मेरे बेटो तुम अब ढील न करो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें अपने आगे खड़ा होके सेवा करने को चुन लिया है जिसतें
१२ तुम लोग उसकी सेवा कर के धूप जलाओ। तब कोहासियों के सन्तानों में से अमासई का बेटा महास और अज़रिया का बेटा यूएल और मरारी के बेटों में से अब्दी का बेटा कीश और यहालीलील का बेटा अज़रिया और गरशोमियों में से जिम्मा
१३ का बेटा यूआ और यूआह का बेटा अदन। और इलीसाफान के बेटों में से शमरी और येईल और आसाफ के बेटों में से
१४ ज़िकरिया और मत्तनिया। और हामान के बेटों में से यहूईल और शमई और इदूथून के बेटों में से शमईया और ऊजियल
१५ लावी उठे। और अपने भाई बन्दों को एकट्ठा किया और अपने को पवित्र किया और परमेश्वर के कार्य्य के विषय में राजा की

आज्ञा के समान परमेश्वर के मन्दिर को झाड़ने आये ।
१६ और याजक झाड़ने के लिये ईश्वर के मन्दिर के भीतर गये और जो जो अपवित्रता उन्हों ने परमेश्वर के मन्दिर में और परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में पाई सो सो बाहर किया
१७ और लावियों ने उठाके बाहर कदरोन नालों में डाला । अब पहिले मास की पहिली तिथि में उन्हों ने पवित्र करना अरंभ किया और मास के आठवें दिन वे परमेश्वर के ओसारे लों आये सो उन्हों ने आठ दिन में परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र किया और
१८ पहिले मास की सोलहवीं तिथि में वे पूरा कर चुके । तब उन्हों ने हिज़किया राजा के आगे जाके कहा कि हम परमेश्वर के सारे मन्दिर को और होम की बेदी को उसके सारे पात्र समेत और भेंट की रोटी का मंच उसके सारे पात्र समेत शुद्ध
१९ किया है । और उस्से अधिक सारे पात्रों को जो आहाज़ राजा ने अपने राज्य में अपराध करके दूर किया हम ने सिद्ध करके पवित्र किया है और देख वे परमेश्वर की बेदी के
२० आगे हैं । तब हिज़किया राजा तड़के उठा और नगर के अध्यक्षों को एकट्ठे किया और परमेश्वर के मन्दिर को
२१ चढ़ गया । और राज्य के पाप की भेंट के लिये और पवित्र स्थान के लिये और यहूदा के लिये वे सात बैल और सात मेंढ़े और सात मेम्ने और सात बकरे लाये और उसने हारून के बेटे याजकों को उन्हें परमेश्वर की बेदी पर चढ़ाने को आज्ञा
२२ किई । सो उन्हों ने बैलों को मारा और याजकों ने लोहू लेके बेदी पर छिड़का इसी रीति से उन्हों ने मेंढों को मार के लोहू को बेदी पर छिड़का उन्हों ने मेम्नों को भी मारा और लोहू को
२३ बेदी पर छिड़का । वे पाप की भेंट के बकरों को राजा के और मंडली के आगे लाये और उन्हों ने अपने हाथ उन पर
२४ धरे । फिर याजकों ने उन्हें मारा और सारे इसराईल के लिये प्रायश्चित्त करने को उनके लोहू से बेदी पर मिलाप किया

क्योंकि राजा ने सारे इसराईल के लिये होम की भेंट और पाप
२५ की भेंट चढ़ाने की आज्ञा किई । और दाऊद की और राजा
के दर्शक जाद की और नासान भविष्यद्वक्ता की आज्ञा के समान
उसने करताल और नवल और बीणा लिये ऊए लावियों को
परमेश्वर के मन्दिर में ठहराया क्योंकि परमेश्वर ने अपने
२६ भविष्यद्वक्तों के द्वारा से यों आज्ञा किई थी । और लावी
दाऊद के बाजों को और याजक तुरहियों को लेके खड़े
२७ ऊए । और हिज़किया ने बेदी पर होम की भेंट चढ़ाने को
आज्ञा किई और होम करने के समय में परमेश्वर का गान
तुरहियों से और इसराईल के राजा दाऊद के बाजों से आरंभ
२८ ऊआ । और सारी मंडली ने दंडवत किई और गायकों ने
गाया और तुरही के बजवैयों ने शब्द किया और ये सब होम
२९ की भेंट के चढ़ायेजाने लों होते रहे । और जब वे होम की
भेंट चढ़ा चुके तब राजा ने और सभों ने जो उसके पास थे
३० झुक के प्रणाम किया । और भी हिज़किया राजा ने और
अध्यक्षों ने लावियों को आज्ञा किई कि दाऊद के और आसाफ
दर्शी के बचन से परमेश्वर की स्तुति गावें और उन्हों ने आनंद
३१ से स्तुति गाई और सिर झुका के सेवा किई । तब हिज़किया
ने उत्तर देके कहा कि तुम ने परमेश्वर के लिये आप को पवित्र
किया है सो अब पास आओ और बलि और धन्यबाद की
भेंट परमेश्वर के मन्दिर में लाओ फिर मंडली बलि के लिये
और धन्यबाद के लिये भेंट लाई और बऊतेरे अपनी बांछा के
३२ समान होम के लिये भेंट लाये । और होम की भेंट की
गिनती जो मंडली लाई सो सत्तर बैल और सौ मेढ़े और
३३ दो सौ मेम्ने ये सब परमेश्वर के होम की भेंट के लिये थे । और
३४ पविचित बस्तु छः सौ बैल और तीन सहस्र भेड़ें । परन्तु
याजक ऐसे थोड़े थे कि वे होम की सारी भेंटों की खाल उतार
न सके इसी लिये उनके भाई लावियों ने कार्य के अंत लों और

याजकों के आप को पवित्र करने लों उनकी सहाय किई क्योंकि लावियों ने अपने को पवित्र करने के लिये याजकों से अधिक
३५ खरे मन के थे। और कुशल की भेंटों की चिकनाई के साथ और होम की भेंट के लिये पीने की भेंटें और होम की भेंट भी बहुताई से थी इसी रीति से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा
३६ बिधि से ठहराई गई। और हिज़किया और सारे लोगों ने आनन्द किया कि परमेश्वर ने लोगों को सिद्ध किया था क्योंकि वुह कार्य्य अचानक ऊआ।

३० तीसवां पर्ब्ब ।

हिज़किया का पर्ब्ब को प्रचारना १—५ इसराईलियों पास सन्देश भेजना और उनकी समझ ६—१२ मूर्त्ति पूजा की सेवा की बेदियों को ढादेना और पर्ब्ब रखने को सिद्ध होना १३—१६ हिज़किया का उनके लिये प्रार्थना करना और परमेश्वर का मान लेना १७—२० बड़े आनन्द से लोगों का पर्ब्ब रखना २१—२७।

१ और हिज़किया ने सारे इसराईल और यहूदा और अफराईम और मनस्सा के पास पत्रियां लिखभेजीं जिसतें वे यिरोशलीम को परमेश्वर के मन्दिर में आके इसराईल के ईश्वर परमेश्वर
२ के लिये पार जाना पर्ब्ब रक्खें। क्योंकि राजा और उसके अध्यक्ष और यिरोशलीम में की सारी मंडली ने दूसरे मास में पारजाना
३ पर्ब्ब रखने को परामर्ष किया। इस लिये कि उस समय वे इस कारण रख न सके कि याजकों ने आप को निरधार पवित्र न
४ किया था और लोग भी यिरोशलीम में एकट्ठे न ऊए थे। और वुह
५ बात राजा की और सारी मंडली की दृष्टि में अच्छी लगी। सो उन्हों ने बीरशबा से लेके दान लों सारे इसराईलियों में प्रचारने को यह बात ठहराई कि वे यिरोशलीम में आके इसराईल के ईश्वर

परमेश्वर के लिये पारजाना पर्ब्ब रक्खें क्योंकि लिखे ऊए के
६ समान उन्हों ने बऊत दिन से न किया था। सो राजा के
हाथ की और उसके अध्यक्षों की पत्री लेके डांकिये सारे
इसराईलियों में और यहूदा में लेगये और राजा की आज्ञा
के समान कहा कि हे इसराईल के सन्तानो इबराहीम और
इसहाक़ और इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की ओर फिरो
और वुह तुम्हारे रहे ऊए की ओर जो असूर के राजाओं के
७ हाथ से बचे हैं फिरेगा। और अपने पितरों के समान और
अपने भाईबंदों के समान जिन्हों ने अपने ईश्वर परमेश्वर का
अपराध किया मत होओ इस लिये उसने उन्हें नाश को
८ सोंप दिया जैसा तुम देखते हो। इस कारण अब अपने
पितरों की नाईं अपने गले को कठोर मत करो परन्तु आप
आप को परमेश्वर को सोंपो और उसके पवित्र स्थान में जाओ
जिसे उसने सदा के लिये पवित्र किया है और अपने ईश्वर
परमेश्वर की सेवा करो जिसतें उसका महा कोप तुम पर से
९ जाता रहे। क्योंकि यदि तुम लोग फेर परमेश्वर की ओर उलटा
फिरोगे तब तुम्हारे भाई और बालबच्चे उनके आगे जो उन्हें
बंधुआई में लेगये हैं दया पावेंगे यहां लों कि वे इस देश में फिर
आवेंगे कि तुम्हारा ईश्वर परमेश्वर इस लिये कृपाल और दयाल
और जो तुम उसकी ओर फिरोगे तो वुह तुम से अपना
१० मुंह न मोड़ेगा। सो डांकिये अफराईम और मनस्सा के देश
में से नगर नगर ज़बूलून लों गये परन्तु उन्हों ने ठट्ठा करके
११ उन्हें चिढ़ाया। तथापि अशर के और मनस्सा के और ज़बूलून
के बऊतेरों ने अपने को नम्र किया और यिरोशलीम को आये।
१२ यहूदा में भी उन्हें एक मन देने को परमेश्वर का हाथ उन पर
पड़ा कि परमेश्वर के बचन से राजा की और अध्यक्षों की
१३ आज्ञा को पालन करें। और दूसरे मास में अख़मीरी
रोटी का पर्ब्ब रखने को अति बड़ी मंडली यिरोशलीम में

१४ एकट्ठी झई। और उन्हों ने उठके यिरोशलीम में की बेदियों को दूर किया और धूप जलाने की सारी बेदियों को दूर किया
१५ और कदरून नाली में फेंक दिया। तब उन्हों ने दूसरे मास की चौदहवीं तिथि में पारजाना मारा और याजकों ने और लावियों ने लज्जित होके आप को पवित्र किया और परमेश्वर
१६ के मन्दिर में होम के बलि लाये। और वे ईश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के समान अपनी रीति की नाईं अपने अपने स्थान में खड़े झए और याजकों ने लावियों के हाथ से लोझ लेके
१७ छिड़का। क्योंकि मंडली में बझत थे जो पवित्र न कियेगये थे इस लिये हर एक की संती जो पवित्र न कियागया परमेश्वर के लिये पवित्र करने को लावी पारजाना मारने का कार्य
१८ रखते थे। क्योंकि लोगों की एक मंडली अर्थात् अफ़राईम और मनस्सा के यसाखार और ज़बूलून के बझतों ने आप को पवित्र न किया तथापि लिखे झए से भिन्न पारजाना खाया परन्तु हिज़किया ने यह कहिके उनके लिये प्रार्थना किई कि
१९ परमेश्वर हर एक को। जिसने अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये अपने मन को सिद्ध न किया क्षमा करे यद्यपि पवित्र स्थान के पवित्र किये जाने के समान न झआ हो।
२० और परमेश्वर ने हिज़किया की सुनी और लोगों को चंगा
२१ किया। और इसराईल के सन्तान जो यिरोशलीम में पाये गये बड़े आनन्द से सात दिन लों अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब रक्खा और लावी और याजक प्रति दिन परमेश्वर के बड़े शब्द के
२२ बाजों से परमेश्वर की स्तुति किई। हिज़किया ने सारे लावियों से, जिन्हों ने परमेश्वर का अच्छा ज्ञान सिखाता था शान्ति की बात कही और वे सात दिन भरके सारे पर्ब्ब लों कुशल की भेंट चढ़ाते झए और अपनें पितरों के परमेश्वर ईश्वर के
२३ आगे पाप मानते झए खाया। और सारी मंडली ने परामर्ष करके सात दिन और रक्खे और वे सात दिन आनन्दसे रक्खे।

२४ क्योंकि यहूदा के राजा हिज़किया ने मंडली को एक सहस्र बैल और सात सहस्र भेड़ दिये और अध्यक्षों ने मंडली का एक सहस्र बैल और दस सहस्र भेड़ दिये और याजकों में से
२५ बहुतों ने अपने को पवित्र किया। और यहूदा की सारी मंडलियों ने याजकों और लावियों सहित और इसराईल में की सारी मंडली और परदेशी, जो इसराईल के देश से आये थे और
२६ जो यहूदा देश में रहते थे उन्हों ने आनन्द किया। सो यिरोशलीम में बड़ा आनन्द हुआ क्योंकि इसराईल के राजा दाऊद के बेटे सुलेमान के समय से यिरोशलीम में ऐसा न
२७ हुआ था। तब याजक और लावी उठे और लोगों को आशीर्बाद दिया और उनका शब्द सुनागया और उनकी प्रार्थना उसकी पवित्रता के निवास स्वर्ग लों पहुंची।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब ।

लोग का देश में से मूर्त्तिन को ढ़ा देना और हिज़किया का याजकों और लावियों की सेवा का ठिकाना करना १—४ लोग का आनन्द से नवान्न और दसवां भाग लाना ५—१० हिज़किया का उसका ठिकाना करना ११—१९ उसके ज्वलन और खराई का व्याख्यान।

१ जब यह सब हो चुका तब सारे इसराईल वहां से यहूदा के नगरों को गये और सारी मूरतों को तोड़ डाला और कुंजों को काट डाला और ऊंचे स्थानों को और बेदियों को और सारे यहूदा और बिनयामीन और अफ़राईम में से भी और मनस्सा में से ढ़ा दिया यहां लों कि उन्हों ने सभों को सर्बथा नाश किया तब इसराईल के सारे सन्तान अपने अपने नगर
२ और अधिकार को फिरगये। और हिज़किया ने याजकों की पारियों को ठहराया और लावियों को उनकी पारियों के समान हर एक जन को उसकी सेवा के समान भेंट के लिये

और कुशल की भेंटों के लिये और परमेश्वर के तंबूओं के फाटकों में स्तुति करने के कारण याजकों को और लावियों को ठहराया।
३ और होम की भेंटों के लिये अर्थात् सांझ बिहान के होम की भेंटों के लिये और बिश्रामों और अमावास्या और ठहराये ऊए पर्ब्बों के होम की भेंटों के लिये जैसा मूसा की व्यवस्था में
४ लिखा है राजा का भाग उसकी संपत्ति में से ठहराया। और उसने यिरोशलीम बासियों को आज्ञा किई कि याजकों और लावियों को भाग देओ जिसतें वे परमेश्वर की व्यवस्था में उभाड़े
५ जायें। और आज्ञा निकलतेही इसराईल के सन्तान बऊताई से नवान्न और दाखरस और तेल और मधु और भूमि की सारी बढ़ती लाये और सारी बस्तु का दसवां भाग बऊताई
६ से लाये। और इसराईल और यहूदा के सन्तान जो यहूदा की बस्तियों में बास करते थे वे भी बैलों और भेड़ों का दसवां अंश और पवित्र बस्तु के दसवां अंश, जो उनके ईश्वर परमेश्वर के लिये पवित्र किये गये थे लाये और ढेर ढेर
७ रक्खे। उन्हों ने तीसरे मास में ढेरों की नेंव डालना आरंभ
८ किया और सातवें मास में पूरा किया। और जब हिज़किया और अध्यक्षों ने आके ढेरों को देखा तो उन्हों ने परमेश्वर का
९ और उसके इसराईल लोगों का धन्य माना। तब हिज़किया ने ढेरों के विषय में याजकों से और लावियों से प्रश्न किया।
१० सादूक के घराने के प्रधान याजक अज़रिया ने उसे उत्तर देके कहा कि जब से लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर में भेंट लाना आरंभ किया तब से हम खाने को बऊत रखते हैं और बऊत बच रहता है क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को बर दिया है
११ और जो बचा सो यही बड़ी ढेर है। तब हिज़किया ने आज्ञा किई कि परमेश्वर के मन्दिर में भंडार की कोठरियां सिद्ध करो
१२ और उन्हों ने सिद्ध किया। और भेंट और दसवां अंश और पवित्र किई ऊई बस्तु बिश्वास से भीतर लाये और जिन पर

कोनानिया लावी प्रभुता करता था और उसका भाई शमीय
१३ दूसरा। और जहील और अज़ाज़िया और नहास और
असाहिल और अरीमूस और यज़ाबाद और इलयेल और
इसमाकिया और महास और बिनाया हिज़किया राजा की
और परमेश्वर के मन्दिर के अध्यक्ष अज़रिया की आज्ञा
से कोनानिया और उसके भाई शमीये के बश में करोड़े थे।
१४ और इमनाह लावी का बेटा कोर पूर्ब्ब की ओर द्वारपाल था
वुह ईश्वर की मनमनता भेंटों पर था कि परमेश्वर के नैवद्यों
१५ को और महा पवित्र वस्तुन को बांटे। और उसके पीछे अदन
और मिनियामीन और यशूआ और शिमाइया और अमरीया
और शिकानिया याजकों के नगरों में अपने अपने पदों में
जिसतें अपने भाईबन्दों को, क्या बड़े क्या छोटे को पारी
१६ पारी देवे। उनके पुरुषों की बंशावली से अधिक तीन बरस के
से और ऊपर लों हर एक जन को, जो परमेश्वर के मन्दिर में
जाता है उनकी पारियों के समान उनकी सेवा के लिये उनके
१७ पद पर। उनके पितरों के घरानों की रीत पर याजकों की
बंशावली को बीस बरस से ऊपर लावियों को उनके पारियों की
१८ रीत पर उनके पद में। और उनके सारे नन्हें बच्चे को बंशावली
को और उनकी पत्नियों को और उनके बेटे बेटियों को सारी
मंडलियों में प्रतिदिन का भाग देवे क्योंकि उन्हों ने अपने अपने पद
१९ में पवित्रता में आप को पवित्र किया। और हारून के बेटे याजकों
को भी, जिन मनुष्यों के नाम लिखे लायेगये थे जो हर एक नगर
के सारे नगरों के आस पास के गांवों के खेतों में थे कि याजकों
के सारे पुरुषों को और सभों को जो लावियों में बंशावलियों में
२० गिनेगये थे भाग देवे। ऐसा हिज़किया ने यहूदा
के सर्बत्र किया और अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में भला
२१ और ठीक और सत्य किया। और हर एक कार्य में, जो उसने
ईश्वर के मन्दिर की सेवा में आरंभ किया और व्यवस्था और

आज्ञा में और अपने ईश्वर के खोजने की आज्ञा में उसने अपने सारे मन से किया और भाग्यमान हुआ।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब ।

सनाखरीब का यहूदा के देश को घेरना और हिज़किया का लोगों को उभाड़ना १—८ सनाखरीब के पाखंड सन्देश और पत्री ९—१९ राजा और अशाया की प्रार्थना और असूर की सेना का नष्ठ होना और उनके राजा का मारा जाना २०—२१ हिज़किया का भाग्यमान होना २२—२३ उसका रोग और प्रार्थना और चंगा होना और मन का उभाड़ना और नम्र होना २४—२६ उसके धन और कार्य २७—३० उसके अनुचित कर्म्म और मृत्यु और मनस्सा का राज्य पाना ३१—३३ ।

१ इन बातों के और उनके स्थिर होने के पीछे असूर का राजा सनाखरीब आके यहूदा में पैठा और बाड़ित नगरों के विरुद्ध २ छावनी किई और चाहा कि उन्हें अपने लिये तोड़े। और जब हिज़किया ने देखा कि सनाखरीब आया है और कि यिरोशलीम ३ से लड़ने को रुख किया। तब उसने अपने अध्यक्षों से और महावीरों से उन सोतों के जल को, जो नगर से बाहर थे बंद करने ४ का परामर्श किया और उन्हों ने उसकी सहाय किई। सो बहुत लोग एकट्ठे हुए जिन्हों ने यह कहिके सारे सोतों को और उस नाली को, जो देश के मध्य में से बहती थी बंद किया कि सुरिया ५ का राजा आके क्यों मुक्त जल पावे। और उसने आप को दृढ़ किया और सारी टूटी हुई भीतों को गुम्मट लों बनाया और बाहर बाहर एक दूसरी भीत और दाऊद के नगर में मिल्लू को सुधारा और सांग और ढाल बहुताई से बनवाई। ६ और उसने लोगों पर सेनापति ठहराये और नगर के फाटक के

सड़क में उन्हें अपने पास एकट्ठा किया और यह कहिके उन्हें
७ शांति दिई। कि दृढ़ होके हियाव करो असूर के राजा से और
उसके साथ की सारी मंडली से मत डरो और बिस्मित
मत होओ क्योंकि हमारे साथी उनके साथियों से अधिक हैं।
८ उसके साथ मांस की भुजा परन्तु हमारे साथ सहाय करने
को और हमारे लिये संग्राम करने को हमारा ईश्वर परमेश्वर,
और लोग यहूदा के राजा हिज़किया के बचन पर स्थिर
९ ऊए। इन बातों के पीछे असूर के राजा
सनाखरीब ने अपने सेवकों को यिरोशलीम में यहूदा के राजा
हिज़किया राजा को और सारे यहूदा को, जो यिरोशलीम
में थे कहला भेजा परन्तु उसने और उसके सारे पराक्रम ने
१० लाकीश को घेरा। कि असूर का राजा सनाखरीब यह
कहता है कि तुम लोग किसपर भरोसा रखते हो जो तुम लोग
११ यिरोशलीम के दृढ़ स्थान में रहते हो?। जिसतें अकाल से
और पियास से मरो क्या यह कहिके हिज़किया तुम्हारा बोध
नहीं करता कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें असूर के राजा
१२ के हाथ से छुड़ावेगा। क्या उसी हिज़किया ने उसके ऊंचे स्थानों
को और उसकी बेदियों को दूर करके और यह कहिके
यहूदा और यिरोशलीम को आज्ञा न किई कि एक बेदी के
१३ आगे पूजा करो और उस पर धूप जलाओ?। जो मैं ने
और मेरे पितरों ने देशों के सारे लोगों से किया है तुम
नहीं जानते हो? क्या उन देशों के जातिगणों के देव अपने
देशों को किसी भांति से उनके देश को मेरे हाथ से छुड़ा सके?।
१४ उन जातिगणों के सारे देवों में से, जिन्हें मेरे पितरों ने सर्बथा
नाश किया कौन अपने लोगों को मेरे हाथ से बचा सका कि
१५ तुम्हारा ईश्वर तुम्हें मेरे हाथ से बचा सके। इस लिये अब
हिज़किया तुम्हें न भरमावे और इस रीति से तुम्हारा बोध करने
न पावे और उसकी प्रतीति न करो क्योंकि किसी जातिगण का

अथवा राज्य का देव अपने लोगों को मेरे हाथ से और मेरे पितरों के हाथ से छुड़ा न सका तो कितना थोड़ा तुम्हारा
१६ ईश्वर हमारे हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा। और उसके सेवकों ने ईश्वर परमेश्वर के विरुद्ध और उसके दास हिज़किया के बिरुद्ध
१७ कहा। उसने इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की निन्दा की पत्री भी लिखी और उसके बिरुद्ध यह कहा जैसा आन आन देशों के जातिगणों के देव ने अपने लोगों को मेरे हाथ से न छुड़ाया है वैसा हिज़किया का ईश्वर उसके लोगों को मेरे हाथ से
१८ न छुड़ावेगा। तब वे उन्हें डराने को और दुःख देने को, जिसतें नगर को लेलेवें, यहूदियों की भाषा में ललकार के
१९ यिरोश्लीम के लोगों को, जो भीत पर थे बोले। और जैसा उन्हों ने पृथिवी के लोगों के देवों के बिषय में, जो मनुष्य के हाथों से बने थे विरुद्ध कहा तैसा उन्हों ने यिरोश्लीम के ईश्वर के बिरोध
२० में। इस कारण हिज़किया राजा और अमूस का बेटा आशिया
२१ भविष्यद्वक्ता स्वर्ग की ओर प्रार्थना करके चिल्लाये। तब परमेश्वर ने एक दूत को भेजा जिसने असूर के राजा की छावनी में सारे महाबीरों को और अगुओं को और सेनापतियों को मारडाला तब लज्जित होके अपनेही देश को वुह फिरगया और जब वुह अपने देव के मन्दिर में गया उसी के कोख के लोगों ने
२२ वहां उसे तलवार से घात किया। यों परमेश्वर ने हिज़किया को और यिरोश्लीम बासियों को असूर के राजा सनाखरीब के हाथ से और सभों के हाथ से छुड़ाया और चारों ओर
२३ उनकी अगुआई किई। और परमेश्वर के लिये बहुतेरे यिरोश्लीम में भेंट और यहूदा के राजा हिज़किया के पास बहुमूल्य वस्तु यहां लों लाये कि तब से सारी जातिगणों की
२४ दृष्टि में उसका महात्म हुआ। उन दिनों में हिज़किया मरने पर रोगी हुआ और परमेश्वर की प्रार्थना किई और
२५ उसने यह कहिके उसे एक पता दिया। परन्तु हिज़किया ने

उसके अनुग्रह के समान गुण न माना क्योंकि उसका मन बढ़गया इस लिये उस पर और यहूदा पर और यिरोशलीम
२६ पर कोप पड़ा। तथापि हिज़किया ने अपने उभड़ने से आप को यहां लों दीन किया, उसने और यिरोशलीम बासियों ने कि हिज़किया के दिनों में परमेश्वर का कोप उन पर न पड़ा।
२७　　और हिज़किया के धन और प्रतिष्ठा बहुत थी और चांदी सोने के और मणि और सुगन्ध द्रव्य के और ढाल के लिये और समस्त प्रकार के बांछित के लिये उसने भंडार
२८ बनाये। और अन्न और दाखरस और तेल की बढ़ती के लिये भंडार और हर प्रकार के पशुओं के लिये थान और
२९ झुंडों के लिये शाला रखते थे। और भी उसने अपने लिये नगर और झुंड और ढोर बहुताई से सिद्ध किये क्योंकि ईश्वर
३० ने उसे बहुत संपत्ति दिई थी। इसी हिज़किया ने जीहून के ऊपर के जल की धारा को बंद करके दाऊद के नगर की पश्चिम ओर उतारा और हिज़किया अपने सारे कार्यों में
३१ भाग्यमान हुआ।　　तथापि बाबुल के अध्यक्ष दोभाषिया के बिषय में, जिन्हों ने भेज के देश में के आश्चर्यित होने का बूझा था उसे परखने के लिये ईश्वर ने उसे छोड़ा जिसतें अपने
३२ मन का सब कुछ उसे सूझ पड़े। हिज़किया की रही हुई क्रिया और उसकी भलाई, देखो वे अमूस के बेटे अशाया भविष्यद्वक्ता के दर्शन में और यहूदा के और इसराईल के
३३ राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं। तब हिज़किया ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे दाऊद के श्रेष्ठ समाधिन में गाड़ा और सारे यहूदा और यिरोशलीम बासियों ने उसके मरने में उसे प्रतिष्ठा दिई और उसका बेटा मनस्सा उसकी सन्ती राजा हुआ।

३३ तेंतीसवां पर्व्व।

मनस्सा का बुरा राज्य और मूर्त्ति पूजा को बढ़ाना और ईश्वर की अपनिन्दा करनी १—१० बाबुल में उसकी बंधुआई में पहुंचाया जाना नम्र होना और राज्य फेर पाना ११—१३ देश को दृढ़ करना और परमेश्वर की सेवा स्थिर करनी १४—१७ उसकी क्रिया और प्रार्थना १८—१९ उसकी मृत्यु और अमून का राज्य पाना और मारा जाना २०—२४ यूसिया का राज्य २५।

१ मनस्सा ने बारह बरस की वय में राज्य करना आरंभ किया
२ और उसने यिरोशलीम में पचपन बरस राज्य किया। परंतु उसने अन्यदेशियों के घिनौनों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल के सन्तान के आगे से दूर किया था परमेश्वर की
३ दृष्टि में बुराई किई। क्योंकि उसने फेरके उन ऊंचे स्थानों को बनाया जिन्हें उसके पिता हिज़्किया ने ढा दिया था और बआलिम के लिये बेदियां खड़ी किईं और कुंज लगाये और
४ स्वर्ग की सारी सेना की पूजा और सेवा किई। और जिस मन्दिर के विषय में परमेश्वर ने कहा था कि मेरा नाम यिरोशलीम
५ में सदा रहेगा उसने उसमें भी बेदियां बनाईं। और उसने स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये परमेश्वर के मन्दिर के दोनों आंगन में
६ बेदियां बनाईं। और उसने हिन्नुम की तराई में अपने सन्तानों को आग में से चलाया और मुहूर्त्त माना और मोहन और टोना और भुतनों से ब्यवहार करते थे और परमेश्वर को रिस
७ दिलाने को उसने उसकी दृष्टि में बहुत बुराई किई। और जिस खोदीहुई मूर्त्ति को उसने बनाया था उसने उसे ईश्वर के मन्दिर में स्थापित किया जिसके विषय में ईश्वर ने दाऊद से और उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि इस मन्दिर में और यिरोशलीम में, जिसे मैं ने इसराईल की सारी गोष्ठियों में स

८ चुन लिया है उस में अपना नाम सदा रक्खेंगा। और फेर मैं इसराईल के चरण को इस देश में से दूर न करेंगा जिसे मैं ने तुम्हारे पितरों के लिये ठहराया है केवल यह कि वे चौकस होके मेरी सारी आज्ञाओं को जैसा मैं ने मूसा के द्वारा से दिई थीं सारी व्यवस्था और बिधि और बिचार को पालन ९ करें। सो मनस्सा ने यहूदा को और यिरोशलीम बासियों को भरमा के अन्यदेशियों से, जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल के संतानों के आगे से नष्ट किया था अधिक बुराई करवाई। १० और परमेश्वर ने मनस्सा से और उसके लोगों से कहा परन्तु ११ उन्हों ने न माना। इस कारण परमेश्वर उन पर असूर के राजा के सेनापतिन को लाया जिन्हों ने कांटों में मनस्सा को १२ धरा और उसे बेड़ियों से जकड़ के बाबुल को ले गये। और जब वुह बिपत में था तब अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज किई और अपने पितरों के ईश्वर के आगे आप को अति नम्र किया। १३ और उसकी प्रार्थना किई और उसने उसकी बिनती सुनके मान लिया और उसे उसके राज्य यिरोशलीम में, फेर लाया तब मनस्सा ने जाना कि परमेश्वर ईश्वर है।

१४ इसके पीछे उसने दाऊद के नगर के बाहर जीहून की पश्चिम ओर तराई में, अर्थात मछली फाटक की पैठ लों एक भीत बनाई और ओफेल को घेरा और उसे अति ऊंचा किया और युद्धपतिन को यहूदा के सारे बाड़ित १५ नगरों में रक्खा। और उसने उपरी देवों को और प्रतिमा को परमेश्वर के मंदिर से, और सारी बेदियों को, जो उसने परमेश्वर के मंदिर के पर्ब्बत पर और यिरोशलीम में बनवाई १६ थीं दूर किया और नगर के बाहर फेंक दिया। और उसने परमेश्वर की बेदी सुधारी और उस पर बलिदान और कुशल की भेंट और धन्यवाद की भेंट चढ़ाई और यहूदा को इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की सेवा करने को आज्ञा किई।

१७ तथापि लोग अबलों ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते रहे परन्तु
१८ केवल अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये। अब मनस्सा
की रही ज़ई क्रिया और अपने ईश्वर के लिये उसकी प्रार्थना
और इसराईल के ईश्वर परमेश्वर के नाम से, जिन दर्शियों ने
उसे कहा उनके वचन इसराईल के राजाओं की पुस्तक में
१९ देखो। और उसकी प्रार्थना भी और ईश्वर का मनाया जाना
और उसके सारे पाप और अपराध और स्थान जहां जहां
उसने ऊंचे स्थान बनाये और अपने नम्र होने से आगे कुंजों
को, और खोदी ज़ई मूरतों को स्थापित किया उन्हें दर्शियों
२० के कहावतों में लिखा ज़आ देखो। सो मनस्सा ने अपने
पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसी के घर में उसे गाड़ा
और उसका बेटा अमून उसकी संती राज्य पर बैठा।
२१ अमून ने बाईस बरस की बय में राज्य करना आरंभ
२२ किया और यिरोशलीम में दो बरस राज्य किया। परन्तु
उसने अपने पिता मनस्सा के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
किई क्योंकि अमून ने अपने पिता मनस्सा की खोदी ज़ई मूरतों
२३ के लिये बलि चढ़ाया और उनकी सेवा किई। जैसा उसके
पिता मनस्सा ने आपको नम्र किया था तैसा उसने आपको
परमेश्वर के आगे नम्र न किया परन्तु अमून ने अपराध को
२४ बढ़ाया। और उसके सेवकों ने उसके बिरुद्ध गुष्ठ बांध के उसी
२५ के घर में उसे घात किया। परन्तु जिन्हों ने अमून राजा के
बिरुद्ध में गुष्ठ बांधी थी देश के लोगों ने उन सभों को घात
किया और देश के लोगों ने उसके बेटे यूसिया को उसकी
संती राजा किया।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

यूसिया का धर्म्म राज्य १—७ मन्दिर के सुधारने
की युक्ति ८—१३ व्यवस्था का पाया जाना और

राजा के आगे पढ़ा जाना उसकी डर और परमेश्वर से बूझना १४—२२ यिरोशलीम के नाश की भविष्यदाणी २३—२८ यूसिया का व्यवस्था को पढ़ सुनवाना और ईश्वर से बाचा बांधनी २९—३३ ।

१ यूसिया ने आठ बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया
२ और यिरोशलीम में एकतीस बरस राज्य किया। और परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और अपने पिता दाऊद की
३ चालों पर चलता था वुह दहिने बायें न मुड़ा। क्योंकि उसके राज्य के आठवें बरस में, जबलों वुह बालक था उसने अपने पिता दाऊद के ईश्वर का खोज करना आरंभ किया और बारहवें बरस में यहूदा और यिरोशलीम को ऊंचे स्थानों से और कुंजों से और खोदी हुई मूरतों से और ढाली हुई मूरतों
४ से पवित्र किया। और उसके आगे बआलिम की बेदियों को तोड़ दिया और मूरतें, जो उनके ऊपर थीं, काट डालीं और कुंजों को और खोदी हुई और ढाली हुई मूरतों को टुकड़ा टुकड़ा किया और धूल बना के उनकी समाधिन पर जिन्हों ने
५ उन पर भेंट चढ़ाईं थीं बिथराईं। और उसने पुरोहितों की हड्डियां उनकी बेदियों पर जलाईं और यहूदा और यिरोशलीम
६ को शुद्ध किया। ऐसा उन्हों ने मनस्सा के और अफ़राईम के और शमऊन के नगरों में नफ़ताली लों चारों ओर कुल्हाड़ी
७ से किया। और जब उसने बेदियों को और कुंजों को तोड़ डाला और खोदी हुई मूरतों की बुकनी किई और इसराईल के सारे देश में से सारी प्रतिमाओं को काट डाला तब यिरोशलीम
८ में फिर आया। अब उसके राज्य के अठारहवें बरस जब उसने देश को और मन्दिर को शुद्ध किया तब उसने अज़ालिया के बेटे शाफ़ान को और नगर के अध्यक्ष मआसिया को और यूआहाज़ के बेटे यूआहा स्मारक को अपने ईश्वर

९ परमेश्वर के मन्दिर सुधारने को भेजा। और वे ह्लिलकिया प्रधान याजक पास पहुंच के रोकड़ को, जो ईश्वर के मन्दिर में पहुंचाया गया था जिसे द्वारपाल लावियों ने मनस्सा के और अफ़राईम के और इसराईल के सारे बचेहुए के और सारे यहूदा और बनियामीन के हाथों से एकट्ठा किया था सैांप के
१० यिरोश्लीम को फिर आये। और उन्हों ने उसे कार्यकारियां के हाथ में, जो परमेश्वर के मन्दिर के करोड़े थे रक्खा और उन्हों ने मन्दिर का सुधारने और बनाने के लिये कार्यकारियों
११ को दिया। अर्थात् कार्यकारियों को और थवइयों को दिया जिसतें वे ढायेहुए पत्थर को और जोड़ाव लिये लट्ठे और घरों के बरंगों के लिये जिसे यहूदा के राजाओं ने नष्ट किया
१२ था मोल लेवें। और लोगों ने धर्म्म से कार्य्य किया और मरारी के बेटे याहास और ओबिदिया लावी और कुहासियों के बेटों में से ज़िकरिया और मणुल्लम और सारे लावी, जो निपुण बजवैये काम बढ़ाने के लिये उन पर करोड़े थे।
१३ और वे बोझियों के और हर प्रकार की सेवा के कार्य्यों पर करोड़े थे और लावियों में से लेखक और प्रधान और
१४ द्वारपाल थे। और जब वे परमेश्वर के मन्दिर में से उस रोकड़ को निकाल लाये जो उसमें पहुंचायागया था तो ह्लिलकिया याजक ने मूसा के हाथों की परमेश्वर की
१५ व्यवस्था की एक पुस्तक पाई। फेर ह्लिलकिया ने उत्तर देके शाफान लेखक से कहा कि मैं ने परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है फिर ह्लिलकिया ने शाफ़ान को पुस्तक सैांपी।
१६ और शाफ़ान उस पुस्तक को राजा के पास लेगया और राजा के आगे यह कहि के बोला कि सब जो आप ने अपने दासों
१७ को सैांपा है सो वे करते हैं। और परमेश्वर के मंदिर में, जो रोकड़ पाया गया सो उंडेलागया है और करोड़ों के
१८ हाथों में और कार्य्यकारियों के हाथों में सैांपागया है। तब

शाफ़ान लेखक राजा से यह कहिके बोला कि हिलकिया याजक ने मुझे एक पुस्तक दिई है और शाफ़ान ने उसे राजा
१९ के आगे पढ़ा। और ऐसा हुआ कि जब राजा ने ब्यवस्था के
२० बचन को सुना तो उसने अपने कपड़े फाड़े। और राजा ने हिलकिया को और शाफ़ान के बेटे अहीकाम को और मीका के बेटे अबदून को और शाफ़ान लेखक को और राजा के सेवक
२१ असाया को कहा। कि मेरे लिये और उनके लिये, जो इसराईल में और यहूदा में बचे हैं इस पुस्तक के बचन के बिषय में जो पाईगई है परमेश्वर से बूझो क्योंकि परमेश्वर का बड़ा कोप हम पर पड़ा है इस कारण कि हमारे पितरों ने परमेश्वर के बचन को पालन करने को सभों के समान जो इस पुस्तक में
२२ लिखा है नहीं माना। तब हिलकिया और वे जो राजा से भेजे गये थे बस्त्र के रक्षक हसरा के बेटे टिकवास के बेटे शलूम की पत्नी भविष्यद्वाचिनी हुलदा पास गये अब वुह यिरोशलीम के पाठशाले में रहती थी और उन्हों ने उसके समान उसे
२३ कहा। और उसने उन्हें उत्तर दिया कि इसराईल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जिस जन ने तुम्हें मुझ पास भेजा
२४ है उसे कहो। कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस स्थान पर और उसके बासियों पर सारे स्राप, जो उस पुस्तक में लिखा है, जो उन्हों ने यहूदा के राजा के आगे पढ़ा है
२५ लाऊंगा। इस कारण कि उन्हों ने मुझे छोड़के आन आन देवों के लिये धूप जलाया है जिसतें वे मुझे अपने हाथ के सारे कार्यों से रिस दिलावें इस लिये मेरा कोप इस स्थान
२६ पर उंडेला जायगा और बुताया न जायगा। और यहूदा के राजा के बिषय में जिसने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को भेजा उसे यों कहियो कि तेरे सुने हुए बचन पर परमेश्वर
२७ इसराईल का ईश्वर यों कहता है। इस कारण कि तेरा मन कोमल था और जब तू ने इस स्थान के बिरुद्ध में और यहां के

बासियों के बिरुद्ध में परमेश्वर के बचन को सुना था तू ने उसके आगे आप को नम्र किया और मेरे आगे आप को दीन कर के अपने बस्त्र को फाड़ा और मेरे आगे बिलाप किया इस
२८ लिये परमेश्वर कहता है कि मैं ने सुना है। देखो मैं तुझे तेरे पितरों में बटोरोंगा और तू कुशल से अपनी समाधि में बटोरा जायगा और सारी बुराई, जो मैं इस स्थान पर, और उसके बासियों पर लाओंगा तेरी आंखें न देखेंगी सो उन्हों
२९ ने फिर के राजा को बचन कहा। तब राजा ने भेज के यहूदा के और यिरोशलीम के सारे प्राचीनों को
३० एकट्ठे किया। और राजा और यहूदा के सारे लोग और यिरोशलीम के निवासी और याजक और लावी और सारे लोग बड़े से लेके छोटे लों परमेश्वर के मंदिर में गये और उसने परमेश्वर के नियम की पुस्तक के सारे बचन, जो परमेश्वर
३१ के मंदिर में पाई गई पढ़ सुनाये। और राजा अपने स्थान में खड़ा हुआ और परमेश्वर के मार्ग पर चलने को और उसकी आज्ञा और व्यवस्था और बिधि को अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से पालन करने को और उस बाचा के बचन को, जो इस पुस्तक में लिखा है पूरा करने को परमेश्वर
३२ के आगे बाचा बांधी। और सब जो यिरोशलीम में और बनियामीन में पाये गये उसने उन्हें इस बात पर खड़ा किया और यिरोशलीम के निवासियों ने ईश्वर को, अपने पितरों
३३ के ईश्वर की बाचा के समान किया। और यूसिया ने इसराईल के सन्तानों के सारे देशों में से सारी घिनितों को दूर किया और इसराईल में के सभों से सेवा, अर्थात् उनके ईश्वर परमेश्वर की सेवा करवाई और उसके जीवन भर, वे अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर का पीछा करने से अलग न हुए।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

यूसिया का पर्ब्ब रखना १—१९ संग्राम में मारा जाना २०—२४ उसके लिये बिलाप और उसकी क्रिया २५—२७।

१ उस्से अधिक यूसिया ने यिरोश्लीम में परमेश्वर के निमित्त पारजाना पर्ब्ब रक्खा उन्हों ने पहिले मास की चौदहवीं २ तिथि में पारजाना बलि किया। और उसने याजकों को उनके ठहरायेहुए पद पर स्थापित किया और परमेश्वर के ३ मंदिर की सेवा के लिये उन्हें उभाड़ा। और उसने लावियों से, जो सारे इसराईल को उपदेश करते थे, और परमेश्वर के लिये पवित्र थे कहा कि पवित्र मंजूषा को उस मंदिर में रक्खो जो इसराईल के राजा दाऊद के बेटे सुलेमान ने बनाया था तुम्हारे कंधे पर बोझ न रहे अब तुम ईश्वर परमेश्वर की और उसके इसराईल लोगों की सेवा करो। ४ और अपने अपने पितरों की गोष्ठी की रीति पर अपनी अपनी पारियों में इसराईल के राजा दाऊद के लिखने के, और उसके बेटे सुलेमान के लिखने के समान तुम ५ लोग सिद्ध करो। और लोगों के पुत्रों के पितरों के घराने के भाग के समान और लावियों के घरानों के भाग ६ के समान पवित्रता में खड़े होओ। सो पारजाना बलि करो और आप आप को पवित्र करो और अपने भाइयों को सिद्ध करो जिसतें मूसा के द्वारा से परमेश्वर के बचन के ७ समान करें। और यूसिया ने झुंड में से गिनती में तीस सहस्र मेम्ने और बकरी के बच्चे और तीन सहस्र बैल लोगों को सब पारजाना की भेंट के लिये दिये ये राजा की ८ संपत्ति से थे। और उसके अध्यक्षों ने लोगों को और याजकों को और लावियों को मनमंता दिया और ईश्वर के मंदिर के प्रधान हिलकिया और ज़करिया और जहील ने पारजाना

बलि के लिये याजकों को, दो सहस्र छःसौ छोटे पशु और तीन
९ सौ बैल दिये। और कोनानिया भी और शिमैया और
नासानाएल और उसके भाई लावियों के प्रधान हशबिया
और जएल और योज़ाबाद ने पारजाना भेंट के लिये लावियों
१० को पांच सहस्र भेड़ बकरी और पांच सौ बैल दिये। सो अब
सेवा सिद्ध ऊई और याजक अपने अपने स्थान पर और लावी
अपनी अपनी पारी में राजा की आज्ञा के समान खड़े ऊए।
११ और उन्हों ने पारजाना बलि किया और याजकों ने अपने अपने
हाथ से लोहू छिड़का और लावियों ने उनकी खाल खींची।
१२ और मूसा की पुस्तक के लिखेऊए के समान उन्हों ने होम की
भेंटें अलग किईं जिसतें वे लोगों के घराने के बिभागों के
समान परमेश्वर की भेंट के लिये देवें वैसा उन्हों ने बैलों से
१३ भी किया। फिर उन्हों ने ठहराये ऊए के समान पारजाना
आग से भूना परन्तु आन पवित्र भेंटों को उन्हों ने हांड़ियों
में और हंड़ों में और कड़ाहियों में उसिना और सारे
१४ लोगों को शीघ्र बांट दिया। उन्हों ने पाछे अपने और
याजकों के लिये सिद्ध किया इस कारण कि हारून के सन्तान
याजक रात लों होम की भेंट और चिकनाई चढ़ाते थे इस
लिये लावियों ने अपने लिये और हारून के बेटे याजकों के
१५ लिये सिद्ध किया। और दाऊद की और आसाफ की
और हिमान की और राजा के दर्शी यदूथून की आज्ञा के
समान आसाफ के गायक बेटे अपने अपने ठिकाने पर और
द्वारपालक हर एक फाटक पर थे, वे अपनी अपनी सेवा से
अलग न होवें क्योंकि उनके भाई लावियों ने उनके लिये सिद्ध
१६ किया था। सो यूसिया राजा की आज्ञा के समान पारजाना
पालन करने को, और परमेश्वर की बेदी पर होम की भेंट
चढ़ाने को परमेश्वर की सारी सेवा उसी दिन सिद्ध ऊई।
१७ और जो इसराईल के सन्तान पाये गये पारजाना और

अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब रखने को सात दिन लों पालन किया।
१८ और समुईल भविष्यद्वक्ता के दिनों से इसराईल में ऐसा पार
जाना न हुआ था और इसराईल के सारे राजाओं ने भी ऐसा
पारजाना न रक्खा था जैसा कि यूसिया और याजकों और
लावियों और सारे यहूदा और इसराईल, जो वहां थे और
१९ यिरोशलीम के निवासियों ने रक्खा था। यूसिया के राज्य के
२० अठारहवें बरस में यह पारजाना रक्खा गया। इन
सभों के पीछे जब यूसिया ने मन्दिर सिद्ध किया तो मिसर का
राजा निकू फुरात नदी की ओर से करकिमीश में संग्राम के
२१ लिये आया तब यूसिया उसके विरुद्ध निकला। परन्तु उसने दूतों
के द्वारा उसे कहला भेजा कि हे यहूदा के राजा तुझ से मेरा क्या
काम? आज तेरे बिरुद्ध नहीं परन्तु जिस के घराने से मेरा
संग्राम है उसके विरुद्ध आता हों क्योंकि परमेश्वर ने मुझे शीघ्र
करने को आज्ञा किई सो तू ईश्वर से रहिजा जो मेरे साथ है
२२ जिसतें वुह तुझे नाश न करे। तथापि यूसिया ने उस्से मुंह न
मोड़ा परन्तु उस्से लड़ने के लिये अपना भेष बदला और ईश्वर
के वचन को नीकू के द्वारा से न माना और लड़ने के लिये मगद्दू
२३ की तराई में आया। और धनुषधारियों ने यूसिया राजा को
ओर मारा तब राजा ने अपने सेवकों से कहा कि मुझे ले जाओ
२४ क्योंकि मुझे बड़ा घाव लगा है। इस लिये उसके सेवकों ने उसे
उस रथ से उतारा और उसके दूसरे रथ पर उसे चढ़ाया
और यिरोशलीम को ले गये और वुह मरगया और अपने
पितरों की समाधिन में गाड़ा गया और सारे यहूदा और
२५ यिरोशलीम ने यूसिया के लिये विलाप किया। और इरमिया
ने यूसिया के लिये विलाप किया और सारे गायक और गायिका
अपने अपने विलाप में आज लों यूसिया की बात कहते हैं और
इसराईल में अपने लिये ठहराया और देखो वे विलापों में
२६ लिखे हैं। और अब यूसिया की रही हुई क्रिया और उसका

अनुग्रह जैसा कि परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है और उसकी क्रिया, आदि और अंत देखो वे इसराईल के और यहूदा के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं ।

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब ।

यहूआहाज़ का राज्य और बंधुआई मे पहुंचाया जाना १—४ यहूआयाकिम का बुरा राज्य और बंधुआई में पड़ना ५—७ यहूआयाकीम का राज्य और बाबुल में बंधुआ होना और सिदकिया का राज्य पाना ८—१० उसका बुरा राज्य और नबूक़दनज़ार से फिर जाना ११—१३ लोगों के पाप के कारण यिरोशलीम का नष्ट होना और सत्तर बरस के लिये देश का उजाड़ रहना १४—२१ मन्दिर बनाने को कोरेस का प्रचार २२—२३ ।

१ तब देश के लोगों ने यूसिया के बेटे यिहूआहाज़ को लेके उसके २ पिता की सन्ती उसे यिरोशलीम में राजा किया। जब यिहूआहाज़ ने राज्य करना आरंभ किया तो उसकी बय तेईस बरस की थी और उसने तीन मास यिरोशलीम में ३ राज्य किया। तब मिसर के राजा ने यिरोशलीम से उसे अलग किया और देश से सौ तोड़े चांदी और एक तोड़ा ४ सोना डांड़ लिया। और मिसर के राजा ने उसके भाई इलियाकीम को यहूदा और यिरोशलीम पर राजा किया और उसका नाम यहूआयाकीम रक्खा और निकू ने उसके ५ भाई यिहूआहाज़ को पकड़ के उसे मिसर को लेगया। जब कि यहूआयाकीम ने राज्य करना आरंभ किया तब वुह पचीस बरस का था और ग्यारह बरस उसने यिरोशलीम में राज्य किया और अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में उसने ६ बुराई किई। बाबुल का राजा नबूकदनज़ार उसके बिरुद्ध

चढ़ आया और बाबुल में लेजाने को उसे सीकरों से बांधा।
७ और नबूकदनज़ार परमेश्वर के मन्दिर के पात्र बाबुल को लेगया
८ और अपने बाबुल के मन्दिर में रक्खा। अब यह्रूयाकीम की
रही ऊई क्रिया और जो जो घिन उसने किया और जो उसमें पाया
गया देखो वे इसराईल और यहूदा के राजाओं की पुस्तक में
लिखी हैं और उसका बेटा यहूयाकीन उसकी सन्ती राज्य
९ पर बैठा। और जब उसने राज्य करना आरंभ
किया तब यहूयाकीन आठ बरस का था और उसने यिरोशलीम
में तीन मास दस दिन राज्य किया और उसने परमेश्वर की
१० दृष्टि में बुराई किई। और जब बरस बीत गया तो
नबूकदनज़ार ने भेज के उसे परमेश्वर के मन्दिर के वांछित पात्र
सहित बाबुल में मंगवाया और उसके भाई सिदकिया को
११ यहूदा और यिरोशलीम पर राजा किया। जब
सिदकिया ने राज्य करना आरंभ किया तो वुह एक्कीस बरस
का था और उसने यिरोशलीम में ग्यारह बरस राज्य किया।
१२ और उसने अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और
इरिमिया भविष्यद्वक्ता के आगे परमेश्वर के मुंह से कहतेऊए
१३ आपको नम्र न किया। और वुह नबूकदनज़ार राजा के बिरुद्ध
फिरगया जिसने उसे ईश्वर की किरिया दिलाई थी परन्तु उसने
इसराईल के ईश्वर की ओर से फिर के अपने गले को और
१४ अपने मन को कठोर किया। और उसे अधिक सारे प्रधान
याजक और लोग अन्यदेशियों के सारे घिनितों के समान बऊत
अपराध किया और परमेश्वर के मन्दिर को, जिसे उसने
१५ यिरोशलीम में पवित्र किया था अशुद्ध किया। और उनके
पितरों के ईश्वर परमेश्वर ने अपने दूतों के द्वारा से यत्न से
उनके पास बारंबार भेजा किया कि अपने लोगों पर और
१६ अपने निवासस्थान पर उसकी दया थी। परन्तु उन्हों ने
परमेश्वर के दूतों को चिढ़ाया और उसके बचन को तुच्छ

जाना और उसके भविष्यदक्तों की दुर्दशा किई यहां लों कि परमेश्वर का कोप उसके लोगों के विरुद्ध उभड़ा और उपाय
१७ न रहा। इस लिये वुह कलदानियों के राजा को उन पर लाया जिसने उनके पवित्र स्थान में उनके तरुणों को तलवार से घात किया और उनके तरुणों पर अथवा कुंआरियों पर अथवा वृद्धों पर अथवा कुबड़े पुरनियों पर दया न किई उसने
१८ सभों को उसके हाथ में कर दिया। और ईश्वर के मन्दिर के छोटे बड़े सारे पात्रों को और परमेश्वर के मन्दिर के धन और राजा के, और उसके अध्यक्षों के धन और
१९ सब को वुह बाबुल में लाया। और उन्हों ने ईश्वर के मन्दिर को जला दिया और यिरोशलीम की भीत को गिरा दिया और उसके सारे भवनों को आग से जला दिया और
२० सारे उत्तम पात्रों को नाश किया। और खड्ग से बचेहुओं को बाबुल में पहुंचाया जहां वे उसके और उसके बेटों के सेवक फारस के राज्य के राज्य लों हुए जब लों देश ने अपने बिश्रामों
२१ को न पाया क्योंकि तबलों वुह उजाड़ पड़ा था। जिसतें इरिमिया के द्वारा से परमेश्वर का बचन पूरा होवे सत्तर
२२ बरस पूरा करने को उसने बिश्राम किया। अब फारस के राजा कोरस के पहिले बरस जिसतें इरिमिया के द्वारा परमेश्वर का बचन पूरा होवे परमेश्वर ने फारस के राजा कोरस के मन को उभाड़ा कि उसने अपने सारे राज्य में सर्वत्र
२३ प्रचार करवाया और यह कहिके लिखवाया भी। कि फारस का राजा कोरस कहता है कि स्वर्ग के ईश्वर परमेश्वर ने पृथिवी के सारे राज्य मुझे दिये हैं और उसने अपने लिये यहूदा के देश के यिरोशलीम के घर बनवाने को मुझे आज्ञा दिई है उसके सारे लोगों में तुम्में कौन है? उसका ईश्वर परमेश्वर उसके साथ वुह चढ़ जाय।

एज़रा की पुस्तक ॥

---

१ पहिला पर्ब्ब ।

कोरस राजा का यहूदियों को बंधुआई से छुड़ाना १—६ मन्दिर के पात्रों को उनके अध्यक्ष को सौंपना ७—११ ।

१ जिसतें परमेश्वर का वचन अरमिया के द्वारा से पूरा होवे परमेश्वर ने फारस के राजा कोरस के मन को उभाड़ा सो फारस के राजा कोरस के पहिले बरस उसने अपने सारे राज्य २ में प्रचार करवाया और यह कहिके लिखवाया भी । फारस का राजा कोरस यों कहता है कि स्वर्ग के ईश्वर परमेश्वर ने पृथिवी का सारा राज्य मुझे दिया है और यहूदा के यिरोशलीम में अपने लिये एक मन्दिर बनाने को मुझे आज्ञा किई है । ३ उसके सारे लोगों में तुम्हों में वुह कौन है उसका ईश्वर उसके संग होवे और वुह यहूदा के यिरोशलीम को चढ़ जाय और परमेश्वर इसराईल के ईश्वर का मन्दिर बनावे (वही ईश्वर है) जो ४ यिरोशलीम में है । और जो कोई किसी स्थान में रहता है जहां वुह बास करता हो उसी स्थान के मनुष्य सोना चांदी से और संपत्ति और पशु से यिरोशलीम में ईश्वर के मन्दिर के लिये ५ मनमनता भेंट से अधिक उसको सहाय करें । तब यहूदा और बिनियामीन के पितरों के प्रधान और याजक और लावी उनसभों के साथ उठे जिनके मन को ईश्वर ने जाने को उभाड़ा

६ कि यिरोशलीम में परमेश्वर का मन्दिर बनावें। और उनकी चारोंओर के लोगों ने, सोने चांदी के पात्रों से संपत्ति और पशुन से और बहुमूल्य वस्तुन से उनसभों से अधिक मनमनता
७ चढ़ाके उनके हाथों को दृढ़ किया। और कोरस राजा ने भी परमेश्वर के मन्दिर के उन पात्रों को, जिन्हें नबूकदनज़ार यिरोशलीम से निकाल लाया था और अपने
८ देवों के घर में रक्खा था, निकाल लाया। अर्थात् फारस के राजा कोरस ने उन्हें मिसरिदास भंडारी के हाथ से मंगवाया
९ और यहूदा के अध्यक्ष शेशबस्सार के आगे उन्हें गिना। और उनकी गिनती सोने की तीस थाली और चांदी की सहस्र
१० थाली और उंतीस छूरी। और सोने के तीस कटोरे और
११ दूसरी भांति के चार सौ दस कटोरे अरु सहस्र और पात्र। सोने चांदी के सारे पात्र पांच सहस्र चार सौ इनसभों को, निकलुओं के साथ शेशबस्सार बाबुल से यिरोशलीम में लाया।

२ दूसरा पर्व्व ।

जो बाबुल से फिर जाते हैं उनके अगुओं के और घराने के नाम ३—३५ याजक और लावी आदिक के नाम ३६—६३ उनकी गिनती और मन्दिर की भेंट ६४—७० ।

१ अब प्रदेश के सन्तान जो बंधुआई से निकलगये थे उन में से जो पहुंचाये गये थे, जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनज़ार ने बाबुल में पहुंचाया था और फेर यिरोशलीम में और यहूदा में
२ हर एक जन अपने अपने नगर में आया। जो ज़ेरबाबुल के, यशुआ के, नहीमया के, सिराया के, रिलाया के, मर्दकाई के, बिलशान के, मिसपार के, बिगवाये के, रिहूम के,
३ बआनाह के संग आये इसराईली लोगों की गिनती। परश के
४ सन्तान दो सहस्र एक सौ बहत्तर। शिफातिया के सन्तान तीन सौ

५।६ बहत्तर। आरह के सन्तान सात सौ पचहत्तर। पहासमोआब के सन्तान और यशूअ और यूआब के सन्तान दो सहस्र आठ
७ सौ बारह। ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ चौअन।
८।९ जत्तू के सन्तान नव सौ पैंतालीस। ज़कई के सन्तान सात
१०।११ सौ साठ। बानी के सन्तान छः सौ बयालीस। बिबाई के
१२ सन्तान छः सौ तेईस। अजगाद के सन्तान एक सहस्र दो सौ
१३।१४ बाईस। अदोनीकाम के सन्तान छः सौ छासठ। बिगवाई के
१५ सन्तान दो सहस्र छप्पन। आदिन के सन्तान चार सौ चौवन।
१६।१७ अतर से हिज़किया के सन्तान अट्ठानवे। बेजाई के सन्तान
१८।१९ तीन सौ तेईस। योराह के सन्तान एक सौ बारह। हाशुम के
२०।२१ सन्तान दो सौ तेईस। गिब्बार के सन्तान पंचानवे। बैतुल्लहम
२२ के सन्तान एक सौ तेईस। निटोफाह के मनुष्य छप्पन।
२३।२४ अनातूस के मनुष्य एक सौ अट्ठाईस। अजमावेत के सन्तान
२५ बयालीस। किर्यातआरीम कफीरा और बिरूत के सन्तान
२६ सात सौ तैंतालीस। रामा और गाबा के सन्तान छः सौ
२७।२८ एक्कीस। मिकमास के एक सौ बाईस मनुष्य। बैतील
२९ और आई के दो सौ तेईस मनुष्य। नबू के सन्तान बावन।
३०।३१ मगबीश के सन्तान एक सौ छप्पन। दूसरे ऐलाम के सन्तान
३२ एक सहस्र दो सौ चौअन। हारिम के सन्तान तीन सौ बीस।
३३ लूद के हादिद के ओनु के सन्तान सात सौ पचीस।
३४।३५ अरीह के सन्तान तीन सौ पैंतालीस। सेनाह के सन्तान
३६ तीन सहस्र छः सौ तीस। यशूअ के घराने
३७ में के जदाया के सन्तान नव सौ तिहत्तर याजक। इम्मेर
३८ के सन्तान एक सहस्र बावन। पाशूर के सन्तान एक सहस्र दो
३९ सौ सैंतालीस। हारिम के सन्तान एक सहस्र सत्रह।
४० होदाविया के सन्तान में से यशूअ के और कदमईल के सन्तान
४१ चौहत्तर लावी। असाफ के सन्तान एक सौ अठाईस गायक।
४२ द्वारपालकों के सन्तान शल्लूम के सन्तान अतेर के सन्तान

अक्कब के सन्तान तलमून के सन्तान अतर के सन्तान शलूम के
४३ सन्तान सब एक सौ उन्तालीस। तबाऊस के
४४ सन्तान हसूफा के सन्तान ज़ीहा के सन्तान नसीनेम। किरोस
४५ के सन्तान सिआह के सन्तान पदून के सन्तान। लबाना के
४६ सन्तान हगाबा के सन्तान अक्कब के सन्तान। हगब के सन्तान
४७ शलमई के सन्तान हनान के सन्तान। गिद्दल के सन्तान गहर
४८ के सन्तान रिआया के सन्तान। रिसीन के सन्तान निकोदा के
४९ सन्तान गज़्ज़ाम के सन्तान। ऊजा के सन्तान पासियाह के
५० सन्तान बेसाई के सन्तान। असना के सन्तान मऊनिम के
५१ सन्तान निफूसीम के सन्तान। बकबूक के सन्तान हकूफा के सन्तान
५२ हरहूर के सन्तान। बसलूस के सन्तान महीदा के सन्तान हरशा के
५३ सन्तान। बरकोस के सन्तान सिसिरा के सन्तान थामा के सन्तान।
५४।५५ निसीहा के सन्तान हतीफ़ा के सन्तान। सुलेमान
के सेवकों के सन्तान सोताई के सन्तान सोफीरेस के सन्तान
५६ पिरूदा के सन्तान। जआला के सन्तान दरकोन के सन्तान
५७ गिद्देल के सन्तान। शिफटीयाह के सन्तान हत्तिल के सन्तान
५८ सबाईम से पोकिरेत के सन्तान आमी के सन्तान। ये सब
नसीनम और सुलेमान के सेवकों के सन्तान तीन सौ बानवे।
५९ और ये हैं वे जो तिलमेला से और तेलहरसा से और किरुब
से और अदान से और ईमर से चढ़गये थे पर वे अपने पितरों
के घराने को और अपने वंश को जो इसराईल के थे अथवा न थे
६० बता नसके। दिलायः के सन्तान टोबियाह के सन्तान निकोदाह
६१ के सन्तान छः सौ बावन जन। और याजकों के
सन्तानों के हबीया के सन्तान कोस के सन्तान बरजिलाई के
सन्तान जिसने गिलिआदी बरजिलाई की बेटियों में से पत्नी
६२ किई थी और उनके नाम से कहलाया। उन्हों ने अपने को
वंशावली की गिनती में ढूंढ़ा परन्तु न पाये गये इसलिये वे
६३ याजकता से अशुद्ध ऊए। और अध्यक्ष ने उन्हें कहा कि जबलों

ऊरिम और तम्मिम के साथ एक याजक न उठे तब लों महा
६४ पवित्र वस्तुन में से नखाना। उनके दास और दासी सात
सहस्र तीन सौ सैंतीस से अधिक और उन्हों में दो सौ गायक
और गायिकों को छोड़के अधिक सारी मंडली बयालीस सहस्र
६६ तीन सौ साठ। उनके घोड़े सात सौ छत्तीस उनके खच्चर दो
६७ सौ पैंतालीस। उनके ऊंट चार सौ पैंतीस उनके गदहे छः
६८ सहस्र सात सौ बीस। और जब उनके पितरों के
प्रधान यिरोशलीम को परमेश्वर के मन्दिर में आये तो ईश्वर
के मन्दिर के और उसके स्थान में स्थापन के लिये मन खोल के
६९ चढ़ाया। उन्हों ने अपनी सामर्थ्य के समान कार्य के भंडार में
एकसठ सहस्र दिरम सोना और पांच सहस्र मानः चांदी और
७० याजकों के सौ वस्त्र दिये। सो याजक और लावी और लोगों
में से और गायक और द्वारपालक और नसीनम अपने अपने
नगरों में और सारे इसराईल अपने अपने नगरों में बसे।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

ईश्वर के होम की बेदी का बनना और मन्दिर की
सेवा १—७ मन्दिर की नेंव का डालना ८—१३।

१ और जब सातवां मास पहुंचा और इसराईल के सन्तान अपने
अपने नगर में थे लोग यिरोशलीम में एक जन की नाईं बटुर
२ के एकट्ठे हुए। तब योसादाक के बेटे यशूआ ने और उसके
भाई याजकों ने और शिअलतिएल के बेटे जोरबाबुल और
उसके भाइयों ने इसराईल के ईश्वर की बेदी को बनाया कि
जैसा ईश्वर के जन मूसा की व्यवस्था में लिखा है उस पर होम की
३ भेंट चढ़ावें। और उन्हों ने उस बेदी को उसके अधार पर रक्खा
इस कारण कि उन देशों के लोगों के लिये उन पर भय था और
उन्हों ने परमेश्वर के लिये उस पर होम की भेंटें चढ़ाईं अर्थात
४ सांझ बिहान के होम की भेंटें। और लिखे हुए के समान उन्हों ने

तम्बूओं का पर्ब्ब रक्खा जैसा कि प्रतिदिन का ब्यवहार था उसके
५ समान प्रतिदिन गिन गिन के होम की भेंटें चढ़ाईं। उसके
पीछे अमावस्यों को और परमेश्वर के ठहराये हुए सारे पर्ब्बों
में नित के होम की भेंट चढ़ाई और हर एक ने मन मनता
६ परमेश्वर के लिये मन खोल के चढ़ाई। सातवें मास की पहिली
तिथि से उन्हों ने परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाना
आरंभ किया परन्तु परमेश्वर के मन्दिर की नेउं अबलों डाली
७ न गई थी। उन्हों ने थवइयों को और बढ़इयों को रोकड़
भी दिया और फारस के राजा कोरस के दान के समान
आरज पेड़ लबनान से याफा के समुद्र लों लाने के लिये उन्हों
ने सीदानियों को और सूर के लोगों को अन्न जल और तेल
८ दिये। यिरोशलीम में परमेश्वर के मन्दिर में
आने के दूसरे बरस और दूसरे मास में शिअलतिएल के बेटे
ज़ोरबाबुल और योसादाक के बेटे यशूअ और उनके बचे हुए
भाईबन्द याजक और लावी और सब जो बंधुआई में से
यिरोशलीम में आये थे आरंभ किया और परमेश्वर के
मन्दिर के कार्य को बढ़ाने के लिये बीस बरस से ऊपर लावियों
९ को ठहराया। तब यशूआ अपने बेटे और भाईबन्द और
कदमईल और उसके बेटे और यहूदा के बेटे और हनादाद
के बेटे और उनके भाईबन्द लावियों के साथ एक संग उठे
१० जिसतें ईश्वर के मन्दिर के कार्यकारियों को बढ़ावें। और जब
थवइयों ने परमेश्वर के मन्दिर की नेउं डाली तब इसराईल के
राजा दाऊद की बिधि के समान वस्त्र पहिने हुए उन्हों ने
याजकों को तुरही से और असाफ के बेटे लावियों को करताल
११ से परमेश्वर की स्तुति के लिये ठहराया। और एकट्ठे होके
पारी पारी स्तुति करते और परमेश्वर का धन्य मानते हुए
एक साथ गाते थे इस कारण कि वुह भला और उसकी दया
सदा इसराईल पर है और जब वे परमेश्वर की स्तुति करते थे

सारे लोग बड़े शब्द से शब्द करते थे इस कारण कि परमेश्वर
१२ के मन्दिर की नेउं डाली गई। परन्तु बहुत से याजकों और
लावियों और पितरों के प्रधानों में प्राचीन जिन्हों ने पहिले
मन्दिर को देखा था जब इस मन्दिर को नेउं उनके देखने में
डाली गई तो बड़े शब्द से बिलाप किया और बहुतों ने आनन्द
१३ के मारे बड़ा शब्द किया। यहां लों कि लोग आनन्द के शब्द
में और लोगों के बिलाप के शब्द में बेवरा न कर सके क्योंकि
लोगों ने बड़े शब्द से शब्द किया और शब्द दूर लों सुना गया।

४ चौथा पर्ब्ब ।

यहूदियों के बैरी उनकी सहाय किया चाहते हैं फेर
उनका बैर करते हैं १—१६ राजा की आज्ञा
पाके मन्दिर के कार्य को रोकना १७—२४ ।

१ और जब यहूदा और बनियामीन के बैरियों ने सुना कि देश
से निकाले हुओं के लड़कों ने इसराईल के ईश्वर परमेश्वर के
२ लिये मन्दिर बनाते हैं। तब उन्हों ने ज़ोरबाबुल के और
पितरों के प्रधान के पास आके कहा कि हमें भी अपने साथ
बनाने देओ और हम तुम्हारी नाईं तुम्हारे ईश्वर को खोजते
हैं और हम असूर के राजा इसारहदून के दिनों से जो हमें
३ उठा लाया है उसके लिये बलि चढ़ाते हैं। परन्तु ज़ोरबाबुल
और यशूआ और इसराईल के पितरों के रहे हुए प्रधानों ने उन्हें
कहा कि तुम्हारा काम नहीं कि हमारे साथ हमारे ईश्वर के
लिये मन्दिर बनाओ परन्तु जैसी फारस के राजा कोरस ने
हमें आज्ञा किई है कि हम एकट्ठे होके आप इसराईल के
४ ईश्वर परमेश्वर के लिये बनावेंगे। तब देश के लोगों ने यहूदा
के लोगों के हाथों को दुर्बल किया और बनाने में उन्हें सताया।
५ और फारस के राजा कोरस के समय से लेके फारस के राजा
दारा के राज्य लों उन्हों ने उनके कार्य भंग करने को उनके

६ विरुद्ध में मंत्रियों को भाड़े में रक्खा। और उन्हों ने अहासवेरूस
के राजा के आरंभ में यहूदा के और यिरोशलीम के
७ निवासियों के विरुद्ध दोष पत्र लिखा। और
अर्तासर्सीस के दिनों में विशलाम ने और मिथ्रिदास ने और
ताबीअल ने और उनके रहेऊए संगियों ने फारस के राजा
अर्तासर्सीस पास पत्री लिखी और वुह पत्री सुरियानी भाषा
में थी और उसका अर्थ भी सुरियानी भाषा में किया गया।
८ रिहूम प्रधान मंत्री ने और शिमशई लेखक ने राजा अर्तासर्सीस
९ के पास यिरोशलीम के विरुद्ध इस भांति की पत्री लिखी। तब
रिहूम प्रधान मंत्री ने और शिमशई लेखक ने और उनके
बचेऊए साथियों ने दीनाई और अफारसातकी और टारपली
और अफारसी और अर्किवी और बबूलूनी और सुसानकी
१० और दिहावी और एलामी। और जातिगणों के रहे ऊए
जिन्हें महान और कुलीन असपर ने लाके सामरः के नगरों में
और नदी इस पार के रहेऊओं को अमुक समय में बसाया।
११ उन्हों ने राजा अर्तासर्सीस पास यही पत्री भेजी कि
आप के सेवक जो नदी के इस अलंग रहते हैं अमुक समय में।
१२ राजा को जानाजाय कि यहूदी जो आप की ओर से हमारे
पास आये हैं सो यिरोशलीम में आके उस दंगइत और दुष्ट
नगर को बनाते हैं और भीतों को खड़ी किये हैं और नेओं को
१३ जोड़ा है। सो अब राजा पर प्रगट होवे कि यदि यह नगर
बन जाय और भीत उठ जाय तो वे शुल्क और कर और पोत
१४ न देंगे और राजाओं के भंडार की टूटी होगी। अब इस
कारण कि हम भवन का लोन खाते हैं उचित नहीं है कि हम
राजा का अनादर देखें इस लिये हम ने भेजके राजा को जनाया
१५ है। जिसतें अपने पितरों के वर्णन की पुस्तक में ढूंढ़ा जाय सो
आप वर्णन की पुस्तक में पावेंगे और जानेंगे कि यह नगर
दंगइत नगर और राजाओं का और प्रदेशों का दुःख दायक

और कि उन्हों ने उसी के मध्य पुरातन समय में दंगा किया है
१६ उसी कारण से यह नगर नाश किया गया था। इस लिये हम
राजा पर जनाते हैं कि यदि यह नगर बनाया जाय और उसकी
भीत खड़ी किई जाय तो इसी कारण से नदी के इस अलंग आप
१७ का कुछ भाग न रहेगा। तब राजा ने रेहूम प्रधान मंत्री
को और शिमशई लेखक को और उनके रहेहुए साथियों को,
जो सामरः में रहते हैं और नदी पार के उबरेहुओं को उत्तर
१८ दिया कि अमुक समय में कुशल। जिस पत्री को तुम ने हमारे
१९ पास भेजा खोल खोल मेरे आगे पढ़ी गई। और मैंने आज्ञा
किई है और ढूंढ़ा गया है और पाया गया है कि पुरातन समय
में इस नगर ने राजाओं के बिरुद्ध में आप को उभाड़ा है और
२० उसमें दंगा और हुल्लर हुआ है। यिरोशलीम पर बलवन्त
राजा भी हुए हैं जिन्हों ने नदी पार के सभों पर राज्य किया है
२१ और उन्हें शुल्क और कर और पोत दिये जाते थे। सो अब
आज्ञा करो कि वे थमजायें और कि यह नगर बनाया न जाय
२२ जबलों मुझे आज्ञा न पावें। सो अब चौकस होओ जिसतें
इस बात में कुछ न घटे राजाओं के लिये क्यों घटती होवे।
२३ सो जब अर्तासस्सीस राजा की पत्री का उतारा रहूम
के और शिमशई लेखक के और उनके संगियों के आगे पढ़ा
गया वे शीघ्र करके यिरोशलीम को यहूदियों के पास चढ़ गये
२४ और भुजा और पराक्रम से उनका कार्य्य बन्द करवाया। तब
यिरोशलीम में परमेश्वर के मन्दिर का कार्य्य थमगया सो
फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे बरस लों बन्द रहा।

५ पांचवां पर्ब्ब।

भविष्यद्वक्तों के उभाड़ने से मन्दिर का फेर बन्ना
१—२ बैरियों का बैर नहीं लहता ३—५ फारस
के राजा पास लिखना ६—१७।

१ हगाया भविष्यद्वक्ता ने और इद्द के बेटे ज़कीरिया भविष्यद्वक्ता ने यहूदा और यिरोशलीम के यहूदियों को इसराईल के ईश्वर
२ के नाम से भविष्य कहा। तब शिअलतीइल का बेटा ज़ोरबाबुल और योसादाक का बेटा यशूआ उठे और यिरोशलीम में ईश्वर के मन्दिर का बनाना आरंभ किया और उनके साथ
३ सहाय के लिये ईश्वर के भविष्यद्वक्ता थे। उस समय नदी के इस पार के अध्यक्ष ततनई और शीसारबाज़नई और उनके संगी उन पास आके बोले कि तुम्हें यह मन्दिर बनाने को और
४ यह भीत उठाने को किसने आज्ञा दिई है?। तब हमने उन्हें इस रीति से कहा कि इस बनावट के बनवैयों के नाम क्या?।
५ परन्तु परमेश्वर की दृष्टि यहूदियों के प्राचीनों पर थी कि वे उन्हें रोक नसकते थे जबलों यह बात दारा पास न पहुंची और तब उन्हों ने उसके विषय में उत्तर दिया।

६ 　पत्री का उतारा जो नदी के इस पार के अध्यक्ष ततनई और शीसारबाजनई और उसके संगियों ने आफरसकी जो नदी के
७ इस पार रहते थे उन्हें दारा राजा पास भेजा। उन्हों ने उस पास पत्री लिखी जिसके मध्य में यों था दारा राजा को सारा कुशल।
८ राजा पर प्रगट होवे कि हम महेश्वर के मन्दिर में, जो बड़े बड़े पत्थरों से बनता है और भीतों पर लट्ठे धरे हैं और यह कार्य्य शीघ्र बनता जाता है और उनके हाथों में बढ़जाता है यहूदा
९ के प्रदेश में गये। तब हमने उन प्राचीनों से यों कहिके पूछा कि यह मन्दिर बनाने को और ये भीतें उठाने को किसने तुम्हें
१० आज्ञा दिई। आप को जनाने के लिये हमने उनका नाम भी
११ पूछा जिसतें हम उनके प्रधान जनों के नाम लिखें। और उन्हों ने हमें यों उत्तर दिया कि हम स्वर्ग और पृथिवी के ईश्वर के सेवक हैं और वही मन्दिर बनाते हैं जो बहुत बरसों से बना था जिसे इसराईल के एक महाराज ने बनवाया और
१२ उठाया था। परन्तु जब हमारे पितरों ने स्वर्ग के ईश्वर का

क्रोध भड़काया उसने उन्हें बाबुल के राजा कलदानी नबूक़दनज़ार के हाथ में सौंपा जिसने इस मन्दिर को नष्ट किया
१३ और लोगों को बाबुल में लेगया। परन्तु बाबुल के राजा कोरस के पहिले बरस कोरस राजा ने ईश्वर के इस मन्दिर बनाने के
१४ लिये आज्ञा किई। और ईश्वर के मन्दिर के सोने चांदी के पात्रों को भी, जिन्हें नबूक़दनज़ार यिरोशलीम के मन्दिर से निकाल लिया और बाबुल के मन्दिर में पहुंचाया उन्हों को कोरस राजा ने बाबुल के मन्दिर से निकाल लिया और शेशबसर नाम एक जन को सौंपा जिसे उसने अध्यक्ष किया
१५ था। और उसे कहा कि इन पात्रों को लेके यिरोशलीम के मन्दिर में पहुंचा और ईश्वर का मन्दिर अपने स्थान में बनाया
१६ जाय। तब वही शेशबसर आया और यिरोशलीम में ईश्वर के मन्दिर की नेउं डाली और उस समय से अबलों बनरहा
१७ है और अबलों बन नहीं चुका। अब यदि राजा को अच्छा जान पड़े तो राजा के भंडार घर में जो बाबुल में है ढूंढ़ा जाय कि कोरस राजा ने यिरोशलीम में ईश्वर का मन्दिर बनाने को आज्ञा किई थी कि नहीं? और इस बात के विषय में राजा हम पर अपनी इच्छा जनावे।

६ छठवां पर्ब्ब ।

मन्दिर बनाने को आज्ञा फेर होनी १—५ दारा राजा की आज्ञा से बैरी लोगों को उनको सहाय करने पड़ना ६—१२ मन्दिर का बनजाना १३—१५ और स्थापित होना १६—२२।

१ तब दारा राजा की आज्ञा से पुस्तकों के घर जहां बाबुल में
२ धन धरा जाता था ढूंढ़ा गया। और अकमीसा के भवन में, जो माद़ी के प्रदेश में है एक पत्र पाया गया और उसमें यों
३ लिखा था। कि कोरस राजा के पहिले बरस में कोरस राजा

ने यिरोशलीम में ईश्वर के मन्दिर के लिये आज्ञा किई कि मन्दिर उस स्थान में जहां बलि चढ़ाते थे बनया जाय और उसकी नेवें दृढ़ता से डाली जायें, उसकी ऊंचाई साठ हाथ
४ और चौड़ाई साठ हाथ की। तीन पांती बड़े बड़े पत्थर की और एक पांती नये लट्ठे की और उसकी लागत राजभवन
५ से दिई जाय। और ईश्वर के मन्दिर के जो जो सोना चांदी के पात्र नबूकदनज़ार यिरोशलीम के मन्दिर से निकाल लाया और बाबुल में पहुंचाया सो भी फेर दिया जाय और यिरोशलीम के मन्दिर में अपने अपने स्थान में फेरा जाय और ईश्वर के मन्दिर
६ में रक्खा जाय। अब नदी के पार का अध्यक्ष ततनई और शिसारबाजनई और उनके संगी अफरसकी जो नदी के पार
७ हैं तुम वहां से दूर होओ। ईश्वर के इस मन्दिर के कार्य्य को रहने देओ यहूदियों के अध्यक्ष को और उनके प्राचीनों को
८ ईश्वर के इस मन्दिर को उसके स्थान में बनाने देओ। और इससे अधिक मैं ने ईश्वर के इस मन्दिर के बनाने के लिये एक आज्ञा किई है कि तुम यहूदियों के प्राचीनों से यों करियो कि राजा की संपत्ति से अर्थात नदी के पार के कर से उन लोगों को तुरंत
९ उठान दिया जाय जिसतें वे रोके न जायें। और जो कुछ उन्हें स्वर्ग के ईश्वर के होम की भेंट के लिये बैल और मेढ़े और मेम्ने और गोहूं और लोन और दाखरस और तेल यिरोशलीम में याजकों के ठहराने के समान अवश्य होवे सो उन्हें प्रति दिन
१० निरंतर दिया जाय। जिसतें वे स्वर्ग के ईश्वर के लिये बलि के सुगंध चढ़ावें और राजा के और उसके बेटों के जीवन के लिये प्रार्थना
११ करें। और मैं ने आज्ञा भी ठहराई है कि जो कोई इस वचन को पलटेगा उसके घर से लट्ठा खींचा जाय और खड़ा किया जाके वही उस पर टांगा जाय और इस बात के लिये
१२ उसका घर कूड़ा का ढेर किया जाय। और जिस ईश्वर ने अपने नाम को उस में बसाया है सारे राजाओं को और लोगों को,

जो यिरोशलीम में ईश्वर के इस मन्दिर को पलटने को अथवा नाश करने को हाथ बढ़ावें नाश करे मुझ दारा ने यह आज्ञा
१३ ठहराई है सो शीघ्र किई जाय। तब नदी के इस पार के देश के अध्यक्ष ततनई और शिसारबाज़नई और उनके साथी दारा राजा के भेजने के समान उन्हों ने शीघ्रता
१४ से किया। और यहूदियों के प्राचीनों ने बनाया और हग्गाय भविष्यद्वक्ता और ईदु के बेटे ज़करिया भविष्यद्वक्ता के भविष्य कहने से भाग्यमान हुए और बनाके इसराईल के ईश्वर की आज्ञा के समान और फारस के राजा कोरश की और दारा की और अर्तासर्सीस की आज्ञा के समान पूरा किया और यह मन्दिर अदारमास के तीसरी तिथि में बन गया जो दारा
१५।१६ राजा के छठवें बरस में था। और इसराईल के सन्तान और याजक और लावी और देश से निकालेगयों के सन्तानों ने
१७ आनन्द से ईश्वर के इस मन्दिर की प्रतिष्ठा किई। और ईश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा में सो बैल और दो सो मेंढ़े और चार सो मेम्ने और सारे इसराईल के पाप को भेंट के लिये इसराईल की बारह गोष्ठी की गिनती के समान बारह बकरे चढ़ाए।
१८ और मूसा की पुस्तक के लिखे हुए के समान उन्हों ने याजकों को, उनके बिभाग में और लावियों को उनकी पारियों पर यिरोशलीम
१९ में ईश्वर की सेवा के लिये रक्खा। और पहिले मास की चौदहवीं तिथि में बंधुआई के संतानों ने पारजाना पर्ब्ब
२० रक्खा। क्योंकि याजक और लावी एकट्ठे पवित्र किये गये सब के सब शुद्ध और बंधुआई के सारे संतानों के लिये और अपने याजक भाईयों के लिये और अपने लिये उन्हों ने पारजाना
२१ बलि किया। और इसराईल के संतान जो बंधुआई से फिरआये और सभों ने जो कि इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये देश के अन्यदेशियों की मलीनता से उनमें आप को अलग
२२ किया खाये। और आनंद से सात दिन अखमीरी रोटी का पर्ब्ब

रक्खा क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें आनंदित किया था और असूर के राजा के मन को उनकी ओर फेरा कि इसराईल के ईश्वर हां ईश्वर के मन्दिर के कार्य्य में उनके हाथ को दृढ़ करे।

७ सातवां पर्ब्ब ।

एज़रा का समाचार १—१० राजा की पत्री और आज्ञा मन्दिर के बिषय में ११—२६ एज़रा का धन्यवाद २७—२८ ।

१ अब इन बातों के पीछे फारस के राजा अर्त्तासर्सीस के राज्य में एज़रा जो बेटा सिरायाह का, बेटा अज़ारियाह का, बेटा हिलकियाह २।३ का। बेटा शलूम का बेटा सादूक का बेटा अहीतूब का। बेटा ४ अमारियाह का बेटा अज़रियाह का बेटा मिराऊस का। बेटा ५ ज़राहियाह का, बेटा ऊज़ी का, बेटा बक्की का, । बेटा अबीशुआ का, बेटा फिनिहाज़ का, बेटा इलियाज़र का, बेटा हारून, ६ प्रधान याजक का। यही एज़रा बाबुल से उठ चला और मूसा की व्यावस्था में, जिसे इसराईल के ईश्वर परमेश्वर ने दिया था निपुण अध्यापक था और उसके ईश्वर परमेश्वर की सहाय के ७ समान राजा ने उसकी सारी बांछा उसे दिई। और अर्त्तासर्सीस राजा के सातवें बरस इसराईल के संतानों में से और याजकों में से और लावी और गायक और द्वारपाल और नथीमी ८ यिरोशलीम को गये। और राजा के सातवें बरस के पांचवें ९ मास में वुह यिरोशलीम में पहुंचा। क्योंकि उसने बाबुल से चढ़ जाने का आरंभ पहिले मास की पहिली तिथि में किया और ईश्वर की सहाय के समान जो उस पर थी पांचवें मास १० की पहिली तिथि में यिरोशलीम में पहुंचा। क्योंकि एज़रा ने परमेश्वर की व्यवस्था के खोज के लिये और उसे पालने के लिये और इसराईल में बिधि और बिचार सिखाने के लिये अपने ११ मन को सिद्ध किया था। अब अर्त्तासर्सीस राजा

की पत्री का उतारा यह है जो उसने लेखक अर्थात् परमेश्वर की आज्ञाओं के वचन के और इसराईल के लिये उसकी बिधिन

१२ के लेखक एज़रा याजक को दिया। राजाओं का राजा अर्तासर्सीस स्वर्ग के ईश्वर की व्यवस्था के सिद्ध लेखक एज़रा

१३ याजक को अमुक समय में। मैं आज्ञा करताहों कि मेरे राज्य में इसराईल के सारे लोग और उसके याजक और लावी जो अपनी अपनी इच्छा से यिरोशलीम को चढ़जाने चाहते हैं तेरे

१४ साथ जावें। जैसा की तू राजा के आगे से और उसके सात मंत्रियों से अपने ईश्वर की व्यवस्था के समान जो तेरे हाथ में

१५ है यहूदा और यिरोशलीम के विषय में बूझने को। और सोना चांदी, जो राजा और उसके मंत्रियों ने इसराईल के ईश्वर के लिये, जिसका निवास यिरोशलीम में है मनमंता भेंट

१६ चढ़ाई है पहुंचाने को भेजा जाता है। और सारे सोना चांदी जो तू बाबुल के सारे प्रदेश में लोगों के और याजकों के मनमंता की भेंट के संग जो अपने ईश्वर के मन्दिर के लिये

१७ जो यिरोशलीम में है पासक्ता है। जिसतें तू इस रोकड़ से शीघ्रता से बैल और मेढ़े और मेम्ने उनके मांस की और पीने की भेंट सहित मोल लेवे और यिरोशलीम में अपने ईश्वर के

१८ मन्दिर की बेदी पर चढ़ावे। और उबरे ऊए सोना चांदी से जो कुछ तुझे और तेरे भाईयों को करने को अच्छा लगे सो

१९ अपने ईश्वर की इच्छा के समान करें। जो जो पात्र तेरे ईश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये तुझे दिये गये हैं सो यिरोशलीम

२० के ईश्वर के आगे सोंपदे। और तेरे ईश्वर के मन्दिर के लिये जो कुछ अधिक आवश्यक होय जो तुझे देने पड़े सो राजा के

२१।२२ भंडार स्थान से देना। मैं अर्थात् मैंहीं अर्तासर्सीस राजा सारे भंडारियों के लिये, जो नदी पार हैं आज्ञा करता हों कि स्वर्ग के ईश्वर की व्यवस्था का लेखक एज़रा याजक जो कुछ तुम से चाहे सो तोड़े चांदी और सो परिमाण गोहूं और छप्पन

मन के अंटकल दाखरस और छप्पन मन के अंटकल तेल और
२३ बेपरिमाण नोन लों सो शीघ्रता से किया जाय। जो कुछ स्वर्ग के
ईश्वर की आज्ञा है सो स्वर्ग के ईश्वर के मन्दिर के लिये यत्न से
किया जाय क्योंकि राजा के राज्य के और उसके बेटों के बिरुद्ध
२४ क्यों कोप होवे?। और हम याजकों के और लावियों के और
गायकों और द्वारपालकों और नथीमियों के अथवा ईश्वर के
इस मन्दिर के सेवकों के बिषय में कर अथवा शुल्क अथवा पोत
२५ उनसे लेना तुम्हें अनुचित है। और हे एज़रा तू अपने ईश्वर
की बुद्धि के समान जो तुझ में है न्यायक और बिचारक को
ठहरा जिसतें नदी पार के सारे लोगों का सब जो तेरे ईश्वर की
व्यवस्था जानते हैं न्याय करें और जो नहीं जानते हैं तू उन्हें
२६ सिखला। और जो कोई तेरे ईश्वर की व्यवस्था को और राजा
की व्यवस्था को पालन न करे उन पर दंड की आज्ञा शीघ्र किई
जाय चाहे मृत्यु लों अथवा उखाड़े जाने लों अथवा संपत्ति लेने
२७ लों अथवा बन्धन में डालने लों। हमारे ईश्वर
परमेश्वर का धन्यबाद होवे जिसने यिरोशलीम में अपने मन्दिर
को शोभित करने के लिये ऐसी बात राजा के मन में डाली।
२८ और राजा के और उसके मंत्रियों के आगे और राजा के सारे
पराक्रमी अध्यक्षों के आगे मुझ पर दया किई और परमेश्वर
की सहाय के समान मैं ने दृढ़ता पाई और मैं ने अपने संग उठ
जाने को इसराईल में से श्रेष्ठ मनुष्यों को एकट्ठा किया।

८ आठवां पर्ब्ब ।

जथा जो एज़रा के संग बाबुल को यिरोशलीम से
गई १—२० उनका पर्ब्ब रखना २१—२३
मन्दिर के धन की रक्षा २४—३० ईश्वर का उनकी
रक्षा करना ३१—३२ याजकों को रोकड़ सौंपना
और राजा की पत्री अध्यक्षों को देना ३३—३६।

१ अब उनके पितरों का प्रधान और उनकी बंशावली जो अर्तासर्सीस राजा के राज्य में मेरे संग बाबुल से चढ़गये थे ये हैं।
२ फिनिहाज के बेटों में से गरशूम, ईसामार के बेटों में से दानियाल,
३ दाऊद के बेटों में से हत्तूश। शिकानिया के बेटों में से फारूश के बेटों में से ज़करिया और उसके संग डेढ़ सौ पुरुष बंशावली
४ बंशावली गिने गये। पहासमुआब के बेटों में से जराहिया का
५ बेटा इलीहोनाई और उसके संग दो सौ पुरुष। शिकानिया के बेटों में से जहाजिईल का बेटा और उसके संग तीन सौ पुरुष।
६ अदीन के बेटों में से भी यूनासान के बेटे यबेद और उसके संग
७ पचास पुरुष। ईलाम के बेटों में से अथालिया का बेटा
८ जिसाइया और उसके संग सत्तर पुरुष। शिफाटिया के बेटों में से मीकाईल का बेटा ज़िबदिया और उसके संग अस्सी
९ पुरुष। यूआब के बेटों में से यहीएल का बेटा उबदिया और
१० उसके संग दो सौ अठारह पुरुष। शिलोमीस के बेटों में से योसिफिया का बेटा और उसके संग एक सौ साठ पुरुष।
११ बीबाई के बेटों में से बीबाई का बेटा जिकरिया और उसके संग
१२ अट्ठाईस पुरुष। अज़गाद के बेटों में से हक्कातान का बेटा
१३ युहानान और उसके संग एक सौ दस पुरुष। और अदूनीकाम के पिछले बेटों में से जिनके नाम ये ईलीफलत, जिईल, और
१४ शिमईया और उनके संग साठ पुरुष। बिगवई के भी बेटों में से ऊथाई और ज़बूद और उनके संग सत्तर पुरुष।
१५ फेर मैं ने उन्हें उस नदी के पास जो अहावा की ओर बहती है एकट्ठे किया और वहां हमने तंबूओं में तीन दिन डेरा किया और मैं ने लोगों को और याजकों को देखा और लावी के बेटों
१६ में से वहां किसी को नपाया। तब मैं ने इलियाज़र को और अरीएल को और शिमिया को और इलनासान को और यारीब को और इलनासान को और नासान को और ज़िकरिया को और मिशुल्लम श्रेष्ठ जनों को और बुद्धिमान

१७ योहायारिब को और इलनासान को भी बुलाया। और आज्ञा करके मैं ने उन्हें इद्दू प्रधान के पास कसीफिया में भेजा और जो कुछ उन्हें इद्दू को और उसके भाई नथीमियों को कसीफिया के स्थान में कहना था बताया जिसतें हमारे ईश्वर के मन्दिर के लिये सेवकों को हमारे पास लावें।
१८ और हम पर ईश्वर की सहाय से वे इसराईल के बेटे लावी के बेटे महली के बेटों में से एक बुद्धिमान जन अर्थात शरेबिया को उसके बेटे और उसके भाईयों सहित अठारह को लाये।
१९ और हशाबिया को और उसके साथ मरारी के बेटों में से
२० जिशाया को उसके भाई बंद और उसके बेटे बीस जन। और नथीमियों से भी जिन्हें दाऊद ने और अध्यक्षों ने लावियों की सेवा के लिये ठहराया था दो सौ बीस नथीमी उनसभों के नाम
२१ लिखे हुए थे। और मैं ने अहावा की नदी पर व्रत पुकारा जिसतें हम ईश्वर के आगे अपने को कष्ट देवें और अपने लिये और अपने बालकों के लिये और अपनी सारी संपत्ति के
२२ लिये उस्से ठीक मार्ग ढूढ़ें। क्योंकि मार्ग में बैरियों के बिरुद्ध सहाय के लिये मैं ने योद्धा और घोड़ चढ़ों को राजा से मांगने में लाज किया क्योंकि हम यह कहिके राजा से बोले कि हमारे ईश्वर का हाथ उनसभों पर भलाई के लिये है जो उसे ढूढ़ते हैं परन्तु उसका पराक्रम और क्रोध उनसभों के बिरुद्ध है जो उसे त्यागते
२३ हैं। सो हम ने इसबात के लिये व्रत करके अपने ईश्वर की बिनती
२४ किई और उसने हमारी बिनती सुनी। तब याजकों में से मैं ने बारह प्रधान को अलग किया अर्थात् शरेबिया और
२५ हशाबिया और उनके संग उनके दस भाईबंदों को। और उन्हें सोना चांदी और पात्र अर्थात् हमारे ईश्वर के मन्दिर की भेंट जिन्हें राजा और उसके मंत्री और उसके अध्यक्ष और
२६ सारे इसराईल ने भेंट के लिये चढ़ाया था तौल दिया। अर्थात् मैं ने साढ़े छः सौ तोड़े चांदी और सौ तोड़े चांदी के पात्र

२७ और सौ तोड़ा सोना। और एक सहस्र दिरम के सोनहले बीस कटोरे और सोने की नाईं जगमगाते ऊर पीतल के दो
२८ पात्र। और मैं ने उन्हें कहा कि तुम परमेश्वर के लिये पवित्र हो और पात्र भी पवित्र और सोना चांदी तुम्हारे पितरों के
२९ ईश्वर परमेश्वर के लिये मन मंता भेंट है। चौकस होके रक्षा करो जबलों तुम यिरोशलीम में परमेश्वर के मन्दिर की कोठरियों में प्रधान याजकों के और लावियों के और इसराईल के पितरों
३० के प्रधानों के आगे तौल न देओ: सो याजकों और लावियों ने सोना चांदी और पात्र को तौल लिया जिसतें यिरोशलीम
३१ में हमारे ईश्वर के मन्दिर में पहुंचावें। तब हम यिरोशलीम को जाने के लिये पहिले मास की बारहवीं तिथि में अहावा नदी से चल निकले और हमारे ईश्वर की सहाय हम पर थी और उसने हमें बैरियों के और जो मार्ग में दाव में
३२ लगे थे उनके हाथों से बचाया। फिर हम यिरोशलीम में
३३ पहुंचके तीन दिन वहां रहे। अब चौथे दिन में वुह सोना चांदी और पात्र हमारे ईश्वर के मन्दिर में ऊरिया याजक के बेटे मिरीमूस के हाथ से तौला गया और उसके संग फिनिहाज़ के बेटे इलीयाज़र और उनके संग येशूआ का बेटा यूज़ाबाद
३४ और बिनुई का बेटा नोआदिया लावी थे। हर एक को गिनके और तौल के और उसी समय में सारी तौल लिखी गई।
३५ निकाले हुओं के सन्तान जो बंधुआई से फिर आये थे इसराईल के ईश्वर के होम की भेंट के लिये सारे इसराईल के कारण बारह बैल और पाप की भेंट के लिये छयानवे मेंढ़े और सतहत्तर मेम्ने और बारह बकरे भेंट दिये सब परमेश्वर के
३६ होम की भेंट के लिये। और उन्हों ने राजा की पत्रियों को राज्य के प्रधानों को और नदी के इस पार के अध्यक्षों को दिया और उन्हों ने लोगों को और ईश्वर के मन्दिर को उभाड़ा।

९ नवां पर्ब्ब ।

लोगों का पाप और एज़रा का उदास होना १—४ ईश्वर के आगे पाप को मान लेना ५—१५ ।

१ सो जब ये बातें ऊईं अध्यक्ष मुझ पास आके बोले कि इसराईल के लोग और याजक और लावी ने देश के लोगों में से आप को अलग न किया पर किनानियों और हित्तियों और फरज़ियों और यबूसियों और अमूनियों और मुआबियों और मिसरियों

२ और आमूरियों के घिनितों के समान करते हैं । क्योंकि उन्हों ने उनकी लड़कियों में से अपने लिये और अपने बेटों के लिये लिया यहां लों कि पवित्र वंश देश के लोगों में मिल गये हैं हां इस अपराध में अध्यक्ष और आज्ञाकारियों के हाथ अगुआ ऊए हैं ।

३ मैं ने यह बात सुनके अपना बस्त्र और अपना ओढ़ना फाड़ा और अपने सिर के बाल और दाढ़ी नोच डाली और बिस्मित बैठ

४ गया । तब उनके पापों के कारण जो उठाये गये थे इसराईल के ईश्वर के बचन से हर एक जो थर्थराता था मेरे आगे बटुर गया

५ और सांझ की भेंट लों मैं बिस्मित बैठा रहा । और सांझ की भेंट के समय में मैं अपने शोक से उठा और अपने बस्त्र और ओढ़ने फाड़े ऊए घुटना टेका और अपने ईश्वर

६ परमेश्वर के आगे हाथ फैलाये । और कहा कि हे मेरे ईश्वर मैं लज्जित हों और हे मेरे ईश्वर मैं तेरी ओर सिर उठाने को लजाता हों क्योंकि हमारे सिर पर हमारी दुष्टता बढ़गई है

७ और हमारा अपराध स्वर्ग लों उठगया है । अपने पितरों के समय से आज लों हमने बड़ा अपराध किया है और हमारी दुष्टता के लिये हम और हमारे राजा और हमारे याजक देशियों के राजाओं के हाथ में तलवार को और बंधुआई में और लूट को और मुंह की घबराहट को सौंपे गये जैसा आज

८ है । और जब ईश्वर उबरेऊए के बच निकलने के लिये और अपने पवित्र स्थान में हमें एक कील देने के लिये जिसतें ईश्वर

हमारी आंखों को ज्योतिमान करे और हमारी बंधुआई में तनिक फेर जिलावे क्षणभर के लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर से

९ अनुग्रह ज्ञआ है। क्योंकि हम बंधुए थे तथापि हमारी बंधुआई में ईश्वर ने हमें त्याग नहीं किया है परन्तु फारस के राजाओं की दृष्टि में हम पर दया किई है कि हमें फेर के जिलावे जिसतें हम अपने ईश्वर के मन्दिर को खड़ा करें और उसके उजाड़ों को बनाडालें जिसतें यहूदा और यिरोशलीम में हमें एक बाड़ा

१० देवे। और अब हे हमारे ईश्वर इसके पीछे हम क्या कहें?

११ क्योंकि हमने तेरी आज्ञाओं को त्यागा है। जो तू ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से यह कहिके आज्ञा किई है कि जिस देश में अधिकार करने के लिये तुम जाते हो सो देश लोगों की मलीनता से और घिनितों से जिन्हों ने अपनी

१२ अशुद्धता से उसे मुंहें मुंह भर दिया है अशुद्ध है। इस लिये अब अपनी बेटियों को उनके बेटों को मत देओ उनकी बेटियों को अपने बेटों के लिये मत लेओ और उनके कुशल और उनके धन कधी मत चाहो जिसतें तुम बलवंत होके देश की उत्तम बस्तु भोग करो और अधिकार के लिये अपने सन्तानों

१३ को सदा के लिये उसे छोड़ जाओ। और हे हमारे ईश्वर जैसा तू ने हमें हमारे पापों से थोड़ा दंड दिया है और हमें ऐसा बचाव दिया है और हमारे कुकर्म्मों के लिये और

१४ हमारे महा अपराधों के लिये यह सब हम पर पड़ा है। यदि हम इन घिनितों के लोगों से नाता करके तेरी आज्ञाओं को फेर उलंघन करें तो तू क्रोध करके हमें यहां लों न मिटाडालेगा

१५ कि कोई उबरा ज्ञआ और बचाव न होवे?। हे इसराईल के ईश्वर परमेश्वर तू धर्म्मी है क्योंकि आज की नाईं अब लों हम बच निकले हैं सो देख हम अपने अपराधों में तेरे आगे हैं क्योंकि इसी लिये हम तेरे आगे ठहर नहीं सक्ते।

१० दसवां पर्ब्ब।

यहूदियों का पश्चात्ताप और एज़रा का बिलापकरना। १—७ लोग यिरोशलीम में बटोरेजाते हैं और अपराधी अपने पाप को त्याग करने को बचन देता है ८—१३ अपराधियों के नाम १४—४४।

१ सो जब एज़रा प्रार्थना करचुका और बिलाप करते हुए आप ईश्वर के मन्दिर के आगे लोटता था और पाप मानता था इसराईल में से स्त्री पुरुष और बालक की एक अति बड़ी मंडली उस पास एकट्ठी हुई क्योंकि लोगों ने बहुतही बिलाप
२ किया। तब ईलाम के बेटों में से जहील के बेटे शिकनिया ने एज़रा को उत्तर देके कहा कि हमने अपने ईश्वर का अपराध किया है और देश के लोगों में से उपरी स्त्रियों को लिया है
३ तदभी इसराईल में इस बात के बिषय में आशा है। इस लिये आओ हम अपने ईश्वर के लिये बाचा बांधे कि अपने प्रभु के और उनके मंत्र के समान जो परमेश्वर की आज्ञा से थर्थराते हैं सारी पत्नियों को और उन्हें जो उनसे उत्पन्न हुए हैं दूर
४ करें और यह ब्यवस्था के समान होवे। उठ क्योंकि यह तेरा कार्य्य, और हम भी तेरे साथी, सो सुचियाव हो और कर।
५ तब एज़रा उठा और याजकों और लावियों को और सारे इसराईल को यह किरिया खिलाई कि हम इस बचन के समान करेंगे और उन्हों ने किरिया खाई।
६ तब एज़रा ईश्वर के मंदिर के आगे से उठा और इलियाशिब के बेटे यूहानान की कोठरी में गया और वहां जाके न रोटी खाई न जल पीआ क्योंकि जो बंधुआई में पहुंचाये गये थे उनके
७ पापों के कारण वुह बिलाप करता था। और उन्हों ने बंधुआई के बालकों में सारे यहूदा और यिरोशलीम में प्रचार करवाया
८ कि वे यिरोशलीम में एकट्ठे होवें। और कि जो कोई अध्यक्षों और प्राचीन लोगों के परामर्ष के समान तीन दिन के भीतर

न आवे उसकी सारी संपत्ति डांड़ में लिई जायगी और वुह आप मंडली से, जो बंधुआई में पहुंचाये गये थे, अलग किया
९ जायगा । तब यहूदा के और बिनियामीन के सारे लोगों ने नवें मास की बीसवीं तिथि में तीन दिन के भीतर आप को यिरोशलीम में एकट्ठा किया और सारे लोग ईश्वर के मन्दिर के पथ में इस बात के लिये और झड़ी के मारे बैठे
१० कांपरहे थे । और एज़रा याजक ने खड़ा होके उन्हें कहा कि तुम लोगों ने अपराध किया है और उपरी स्त्रियों को लेके इसराईल
११ के अपराध को बढ़ाया है । इस लिये अब अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के आगे मान लेओ और उसकी इच्छा पालो और देश के लोगों से और उपरी स्त्रियों से आप आप को
१२ अलग करो । तब सारी मंडलियों ने उत्तर देके बड़े शब्द से कहा कि जैसा आप ने कहा है तैसा हमें करना अवश्य है ।
१३ परन्तु लोग बहुत हैं और बड़ी वृष्टि का समय है और हम बाहर ठहर नहीं सक्ते और यह कार्य्य दो एक दिन का नहीं
१४ है क्योंकि इस बात में हम बहुतों ने अपराध किया है । सो अब मंडली के सारे आज्ञाकारी उठें और जिन्हों ने हमारे नगरों में उपरी स्त्रियों को लिया है सब आवें और उनके संग हर एक नगर के प्राचीन और उसके न्यायी ठहराये हुए समयों में आवें जबलों इसबात के लिये हमारे ईश्वर का महा
१५ कोप हम से फिर न जाय । इस कार्य्य में केवल असाहिल के बेटे यूनासान ने और टिकवाह के बेटे यहाज़िया ने कार्य्य किया और लावी मिशुल्लम और शबिताई ने उनकी
१६ सहाय किई । और बंधुआई के सन्तानों ने वैसा किया और एज़रा याजक और पितरों के कई प्रधान अपने अपने पितरों के घराने के समान और सबके सब अपने नाम के समान अलग किये गये और दसवें मास की पहिली तिथि में इस बात
१७ को बूझने को बैठ गये । और पहिले मास की पहिली तिथि में

उन्हों ने सारे मनुष्यों से जिन्हों ने उपरी स्त्री किई थी समाप्त
१८ किया। और याजकों के बेटों में भी पाये गये जिन्हों
ने उपरी स्त्रियां ग्रहण किईं अर्थात् योसादिक का बेटा यिशूआ
के बेटों में से और उसके भाई मआसिया और इलियाज़र
१९ और यारिब और गिदालिया। और उन्हों ने अपनी अपनी
पत्नी को त्याग करने को हाथ मारा और अपराधी होके झुंड में
२० का एक मेंढ़ा अपने अपराध के लिये चढ़ाया। और ईमेर के
२१ बेटों में से हनानी और जबदिया। और हारिम के बेटों में से
मआसिया और इलियास और शिमाइया और जहीयल और
२२ ऊज़िया। और पाशुर के बेटों में से येलियेनाई और मआसिया
और इस्माईल और नासनईल और योजाबाद और इलासा।
२३ लावियों में का भी योजाबाद और शिमई और केलायाह (जो
कलीता है) और पिथाहिया और यहूदा और इलिएज़र।
२४ और गायकों से भी इलियाशिब और द्वारपालकों में से शलूम
२५ और टीलम और ऊरी। और इसराईल में से पारोश के
बेटों में से रामियाह और जिज़ियाह और मलकीया और
मियामिन और इलिएज़र और मलकीजा और बिनाया।
२६ और इलाम के बेटों में से मत्तानिया और जिकरिया और
२७ जहीयल और अब्दि और यरीमूस और इलिया। और जत्तू
के बेटों में से इलीओनाई और इलियाशिब और मत्तनिया
२८ और यरीमूस और जबाद और अज़ीज़ा। और बेबाई के
बेटों में से यिहोहानान और हनानिया और ज़ब्बाई और
२९ अथलाई। और बनि के बेटों में से मिशुल्लाम और मल्लुक
३० और अदाया और याशूब और शियाल और रामूस। और
पहासमुआब के बेटों में से अदना और किलाल और बिनाया
और मआसिया और मत्तनिया और बिज़ालील और बिन्नूई
३१ और मनस्सा। और हारिम के बेटों में से इलिएज़र और
यिशीजा और मलकिया और शिमाइया और शमऊन।

३२ । ३३ और बनियामीन और मल्लुक और श्मिरिया । और हाशुम के बेटों में से मत्तिनाई और मत्तता और ज़ाबाद और
३४ अलीफलट और यिरिमाई और मनस्सा और श्मिई । और बानी के बेटों में से मआदाई और अमराम और उईल ।
३५ । ३६ और बिनाया और बेदिया और किलुह । और वानिया
३७ और मरीमूस और ईलीआशिब । और मत्तानीया और
३८ मत्तिनाई और यासा । और बनी और बिन्नुई और श्मिई ।
३९ । ४० और शिलमियाह और नासान और आदाया । और
४१ मकनादिबाई और शाशाई और शाराई । और अज़ारील
४२ और शिलीमिया और श्मिरिया । और शल्लूम और
४३ अमारिया और यूसफ । और नीबू के बेटों में से जईल और मतिसिया और ज़ाबाद और ज़िबीना और यादा और
४४ योएल और बिनाया । इन सभों ने उपरी पत्नियों को लिया था और उन में से कितनी पत्नियां थीं जिनसे उनके बालक हुए थे ।

नहीमियाह की पुस्तक ॥

—•••—

१ पहिला पर्ब्ब ।

नहीमियाह का यहूदियों और यिरोशलीम का समाचार बूझना १—३ ब्रत और प्रार्थना से परमेश्वर की सुख होना ४—११ ।

१ हकालिया के बेटे नहीमियाह के बचन, बीसवें बरस के किसलिउ मास में जब मैं शूशान के भवन में था तब ऐसा
२ हुआ । कि हमारे भाइयों में से हनानी, कुछ और यहूदा में से कई जन आये और मैं ने उन्हें यहूदियों के बिषय में, जो बच निकले थे और बंधुआई से रहि गये थे और यिरोशलीम
३ के बिषय में पूछा । उन्हों ने मुझे कहा कि प्रदेश तें जो बंधुआई से बचरहे हैं सो अति कष्टित और निन्दित हैं यिरोशलीम की भीत भी टूटी पड़ी है और उसके फाटक आग से जले हुए
४ हैं । और यों हुआ कि जब मैं ने ये बातें सुनीं तो बैठके रोया और कई दिन लों बिलाप किया और ब्रत करके स्वर्ग के ईश्वर
५ के आगे प्रार्थना में कहा । हे परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर महान और भयंकर ईश्वर जो अपने प्रेमियों से और अपनी आज्ञापालकों से नियम और दया रखता है मैं तेरी
६ बिनती करता हों । अपने सेवक इसराईल के संतानों के लिये मैं तेरे आगे अब रात दिन प्रार्थना करता हों और इसराईल के संतानों के पापों को, जो हमने तेरे बिरुद्ध पाप किया है मैं ने और मेर पिता के घराने ने पाप किया है मानलेता हों अब

अपने कान लगा और अपनी आखें खोल जिसतें तू अपने सेवक
७ की प्रार्थना सुने । हमने तेरे बिरुद्ध अति सडाहट से व्यवहार
किया है और आज्ञाओं को और बिधिन को और बिचारों
को, जो तू ने अपने सेवक मूसा को आज्ञा किई थी पालन नहीं
८ किया है। मैं तेरी बिनती करता हों कि उस बचन को स्मरण कर
जो तू ने अपने दास मूसा को यह कहिके आज्ञा किई थी कि यदि
९ अपराध करोगे तो मैं तुम्हें देशियों में बिथराओंगा। परन्तु
जो तुम मेरी ओर फिरोगे और मेरी आज्ञाओं को पालन
करोगे और उन्हें मानोगे तो यद्यपि तुम्हें से स्वर्ग के अत्यंत
सिवाने लों दूर किया जाय तो भी मैं उन्हें वहां से बटोरोंगा
और उस स्थान में पहुंचाओंगा जिसे मैं ने अपने नाम के लिये
१० चुना है। अब ये तेरे सेवक और तेरे लोग हैं जिन्हें तू ने अपने
११ महा पराक्रम और बलवंत भुजा से छुड़ाया है। हे परमेश्वर
मैं तेरी बिनती करता हों कि अपने सेवक की प्रार्थना की ओर
अब तेरा कान झुके और तेरे उन दासों की प्रार्थना की ओर
जो तेरे नाम से डरा चाहते हैं, और मैं तेरी बिनती करता हों
कि आज अपने सेवक को भाग्यमान कर और इस जन की दृष्टि
में उसे दया दे क्योंकि मैं राजा के घर का कटोरा दायक था।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

यिरोशलीम के बिषय में राजा से नहीमियाह का
अनुग्रह पाना १—८ अपने हियाव से उसका बैरियों
को रोकना ९—१६ सब कुछ देख के काम में
यहूदियों को उभाड़ना १७—२० ।

१ अर्त्तासर्सीस राजा के बीसवें बरस नीसान मास में दाख रस
उसके आगे था और मैं ने दाख रस उठा के राजा को दिया
२ अब मैं उसके आगे उदासीन न था। इस लिये राजा ने मुझे
कहा कि नीरोग होके तेरा रूप क्यों उदास है? मन के शोक को

३ छोड़ यह कुछ नहीं तब मैं बज़त डरगया। और राजा से कहा कि राजा सदा जीवे जब कि मेरे पितरों के समाधि स्थान नगर उजाड़ पड़ा होय और उसके फाटक भस्म किये गये हों तो मेरा
४ हृदय क्यों न उदास होवे?। तब राजा ने मुझे कहा कि फेर तू क्या चाहता है? इतने में मैं ने स्वर्गीय ईश्वर की प्रार्थना किई।
५ और मैं ने राजा से कहा कि यदि राजा की इच्छा होय और जो आप के दास ने आप की दृष्टि में कृपा पाई है तो मुझे यहूदा में अपने पितरों के समाधि के नगर में भेजिये जिसतें मैं
६ उसे बनाओं। रानी भी पास बैठी थी जब राजा ने मुझे कहा कि तेरी यात्रा कबलों होगी? और तू कब फिरेगा? सो मुझे भेजने में राजा की इच्छा ऊई और मैं ने उसके लिये समय
७ ठहराया। फिर मैं ने राजा से कहा कि जो राजा की इच्छा होय तो नदी पार के अध्यक्षों के लिये मुझे पत्रियां दिई जावें
८ जिसतें वे मुझे यहूदा लों पज़ंचावें। और राजा के बनरक्षक आसाफ के लिये एक पत्री, जिसतें वुह मंदिर के भवन के फाटकों के और नगर की भीति के और अपने रहने के घर के निमित्त लट्ठे के लिये कोलकूआ देवे और ईश्वर की कृपा के
९ समान राजा ने मुझे दिया। तब मैं नदी पार के अध्यक्षों कने पज़ंचा और राजा की पत्रियां उन्हें दिईं अब राजा ने मेरे साथ सेनापतिन को और घोड़चढ़ों को भेजा।
१० जब हरूनी सनबलट और अमूनी दास टोबिया ने सुना उन्हें बड़ा शोक ऊआ कि इसराईल के संतानों का कुशलचाहक एक
११ जन आया है। सो मैं यिरोशलीम में पज़ंचा और वहां तीन
१२ दिन रहा। फिर मैं रात को उठा मैं और थोड़े जन मेरे संग, और जो कुछ मेरे ईश्वर ने मेरे मन में यिरोशलीम में करने को डाला था सो मैं ने किसी से न कहा और मेरे
१३ बाहन को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था। और मैं तराई के फाटक से अर्थात नाग कूआं के आगे से और कूड़ा खिड़की से

रात को बाहिर निकला और यिरोशलीम की टूटीहुई भीतों
१४ को और उसके जलेहुए फाटकों को देखा। तब मैं सोता के फाटक को और राजा के कुंड को चढ़गया परन्तु वहां मेरे वाहन
१५ का निकास न था। फिर मैं रात को नाली के पास होके चढ़ गया और भीति को देखा और घूमके तराई के फाटक से
१६ भीतर फिर आया। और अध्यक्षों ने न जाना कि मैं कहां गया अथवा क्या किया और अब लों मैं ने न तो यहूदियों से न याजकों से न कुलीनों से न अध्यक्षों से न रहे हुए कार्य कारियों
१७ से कहा। तब मैं ने उन्हें कहा कि हमारे दुःख को देखतेहो कि यिरोशलीम उजाड़ है और उसके फाटक जले हुए हैं सो आओ यिरोशलीम की भीत को बनावें जिसतें
१८ आगे निन्दित न होवें। तब मैं ने ईश्वर की सहाय के विषय में, जो मुझ पर थी और राजा के वचन भी जो उसने मुझे कहे थे उन्हें कहा तब उन्हों ने कहा कि चलो उठके बनावें सो इस
१९ सुकार्य के लिये उन्हों ने अपने हाथ को दृढ़ किया। परन्तु जब हरूनी सनबलट ने और अमूनी दास टोबिया ने और अरबी गेशीम ने सुना तब उन्हों ने हमें ठट्ठे में उड़ाके हमारी निंदा किई और कहा कि तुम यह क्या करते हो? क्या राजा से फिर
२० जाओगे?। तब मैं ने उत्तर देके उन्हें कहा कि स्वर्ग का ईश्वर हमें भाग्यमान करेगा इस लिये हम उसके दास उठके बनावेंगे परन्तु यिरोशलीम में तुम्हारा भाग अथवा पद अथवा स्मरण नहीं है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

यिरोशलीम की भीत के बनवैयों के नाम १—३२।

१ तब प्रधान याजक इलियाशीब अपने याजक भाइयों के संग उठके भेड़ फाटक बनाये और उसे पवित्र करके उसके केवाड़ों को खड़ा किया अर्थात मियाह के गुम्मठ लों और हननीएल के

२ गुम्मट लों पवित्र किया। उसके लग अरीहा के लोगों ने बनाया
३ और उनके लग ईमरी के बेटे ज़क्कर ने बनाया। परन्तु मछली
फाटक को हस्सिनाह के बेटों ने बनाया उन्हों ने उसके लट्ठे धरे
और उसके केवाड़ों को उसके ताले और उसके अड़ंगे
४ सहित खड़ा किया। उनके लग कोस के बेटे उरीजा के बेटे मरीमूस
ने सुधारा और उनके लग मशीशाबील के बेटे बकरिया के
बेटे मिशुल्लाम ने सुधारा और उनके लग बआना के बेटे सादूक
५ ने सुधारा। उनके लग टिकूइयों ने सुधारा परन्तु उनके
६ कुलीनों ने अपने प्रभु के कार्य्य में, हाथ न लगाये। फिर
पासियाह के बेटे युहायदा और बसोदियाह के बेटे मिशुल्लम
ने पुराना फाटक सुधारा उन्हों ने उसके लट्ठे धरे और उसके
किवाड़ों को उसके ताले और उसके अडंगे सहित खड़ा किया।
७ और उनके लग गबियूनी मिलातियाह ने और मीरूनथी
यदून ने और गिबियून के और मिसपः के लोगों ने नदी के इस
८ अलंग अध्यक्ष के सिंहासन लों सुधारा। उसके लग सोनारों
में से हरहाया के बेटे उजीयेल ने सुधारा उसके लग गंधियों
के बेटे हनानिया ने भी सुधारा और उन्हों ने यिरोशलीम को
९ चौड़ी भीत लों घेरा। और उनके लग यिरोशलीम के आधे
१० का अध्यक्ष हूर के बेटे रिफ़ाया ने सुधारा। उनके लग हरूमाफ
के बेटे जिदाया ने अपने घर के सन्मुख सुधारा और उसके लग
११ हशबनिया के बेटे हत्तूश ने सुधारा। हारिम के बेटे मलकिया ने
और पहासमुआब के बेटे हशूब ने दूसरा नाप और भट्ठों की
१२ गुम्मट बनाई। उसके लग यिरोशलीम के एक भाग के अध्यक्ष
हलोहेश के बेटे शलूम ने और उसकी बेटियों ने सुधारा।
१३ हानून और सनूआ के बासियों ने तराई फाटक सुधारा,
उन्हों ने उसे बनाया और उसके किवाड़ों को उसके ताले और
उसके अडंगे सहित खड़ा किया और कूड़ा फाटक लों भीत पर
१४ सहस्र हाथ सुधारे। परन्तु कूड़ा फाटक का बैतहकसरीम के

भाग के अध्यक्ष रिकाब के बेटे मलकिया ने सुधारा, उसने उसे बनाया और उसके किवाड़ों को उसके ताले और अडंगे सहित १५ खड़ा किया। परन्तु सोता फाटक को मिसपा के भाग का अध्यक्ष कुलहोसी के बेटे शल्लुम ने सुधारा, उसने उसे बनाया और पाटा और उसके किवाड़ों को उसके ताले और अडंगे सहित खड़ा किया और राजा की बारी के लग सैलूआ के कुंड का भीत और सीढ़ी लों, जो दाऊद के नगर से उतरती १६ है बनाई। उसके पीछे बैतसूर के आधे भाग के अध्यक्ष असबूक के बेटे नहीमियाह दाऊद के समाधिन के सन्मुख, और बनाये १७ हुए कुंड लों और पराक्रमी के घर लों सुधारा। उसके पीछे लावियों में से बानी के बेटे रहूम ने सुधारा, उसके लग कीलाह के आधे भाग के अध्यक्ष हशाबियाह ने अपने भाग में सुधारा। १८ उसके पीछे उनके भाई अर्थात कीलाह के आधे भाग के अध्यक्ष १९ हनादाद के बेटे बीवई ने सुधारा। उसके लग मिसपाह के अध्यक्ष यिशूआ के बेटे ईजर ने दूसरा टुकड़ा घूम से अस्त्रस्थान २० की चढ़ाई के सन्मुख सुधारा। उसके पीछे ज़ब्बई के बेटे बारूक ने यत्न से घूम से दूसरे टुकड़े को प्रधान याजक एलीयाशीब के २१ घर के द्वार लों सुधारा। उसके पीछे कोस के बेटे उरिजा के बेटे मिरीमूस ने दूसरे टुकड़े एलीयाशीब के घर के द्वार से २२ एलीयाशीब के घर के अन्त लों सुधारा। उसके पीछे चौगान के २३ मनुष्य याजकों ने सुधारा। उसके पीछे बनियामीन और हाशूब ने अपने घर के सम्मुख सुधारा उसके पीछे अननिया के बेटे मासिया के बेटे अजारिया ने अपने घर के पास सुधारा। २४ उसके पीछे हनादाद के बेटे बिनुई ने दूसरा टुकड़ा अजारिया २५ के घर से घूम लों अर्थात कोने लों सुधारा। उजई के बेटे पालाल ने घूम के सम्मुख और बंदीगृह के आंगन के पास जो राजा का ऊंचा भवन और उससे बाहर जो गुम्मट है सुधारा २६ उसके पीछे परऊश के बेटे पिदायाह ने। उफल के वासी

नथीनियों ने पूर्ब्ब की ओर जलफाटक के सन्मुख और गुम्मट जो
२७ बाहर हैं । उनके पीछे टिकोइयों ने बड़े गुम्मट के सन्मुख जो
बाहर है अर्थात उफेल की भीत लों दूसरा टुकड़ा सुधारा ।
२८ याजकों ने हरएक अपने अपने घर के सन्मुख घोड़ फाटक के
२९ आगे से सुधारा । उनके पीछे इम्मर के बेटे सादूक ने अपने
घर के सन्मुख सुधारा और उसके पीछे पूर्ब्ब फाटक के रक्षक
३० शिकनिया के बेटे शिमायाह ने भी सुधारा । उसके पीछे शेलमिया
के बेटे हनानिया ने और सालाफ के छठवें बेटे हानून ने दूसरा
टुकड़ा सुधारा उसके पीछे बेरकिया के बेटे मिशुल्लम ने अपनी
३१ कोठरी के सन्मुख सुधारा । उसके पीछे सोनार के बेटे मलकिया
ने नथीनियों के और बैपारियों के स्थान लों मिफकाद फाटक
३२ के सन्मुख घूम के कोने लों सुधारा । कोने की चढ़ाई के मध्य में
भेड़ फाटक सोनारों ने और बैपारियों ने सुधारा ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

अन्यदेशियों का उनके कार्य को तुच्छ समझना तथापि
उसका बढ़ना १—६ बनवैयों को घात करने के लिये
बैरीयों का युक्ति बांधना ७—१२ नहीमियाह की
प्रार्थना और चौकसी करने से कार्य का बना जाना
१३—२३ ।

१ और ऐसा हुआ कि जब सनबलट ने सुना कि हम भीत बनाते
हैं तब वुह कोप करके जलजलाहट हुआ और यहूदियों को
२ चिढ़ाया । और अपने भाइयों के और सामरः की सेना के आगे
यह कहिके बोला कि ये निर्बल यहूदी क्या करते हैं? क्या वे
आप को दृढ़ करेंगे और बलि चढ़ावेंगे? वे दिन भर में बना
डालेंगे? और क्या वे जलाए हुए कूड़ों की ढेरों से पत्थल
३ जगावेंगे?। तब अमूनी टोबिया ने उसे कहा कि जो भी वे
बनाते हैं यदि लोमड़ी चढ़जाय वुह उनकी पत्थर की भीत को
४ तोड़ देगी । हे हमारे ईश्वर सुन क्योंकि हम निंदित हैं और

उनकी निंदा उन्हीं के सिर पर फेर और बंधुआई के देश में
५ उन्हें अहेर के लिये दे। और उनकी बुराई मत ढांप और
तेरे आगे उनका पाप मिटाया नजाय क्योंकि थवइयों के आगे
६ उन्हों ने रिस दिलाया है। सो हमने भीत बनाई और आधेलों
सारी भीत जुटगई क्योंकि लोगों का मन काम पर था।
७ परन्तु ऐसा ऊआ कि जब सनबलट और टोबिया और
अरबियों और अमूनियों और अशदूदियों ने सुना कि यिरोशलीम
की भीत बन गई और दरारें बंद होने लगीं तब वे अति कोपित
८ ऊए। और सभों ने मिलके युक्ति बांधी कि आके यिरोशलीम
९ के बिरुद्ध लड़ें और रोक करावें। तथापि हमने अपने ईश्वर
की प्रार्थना किई और उनके कारण उनके बिरुद्ध दिन रात
१० पहरा बैठा रक्खा। और यहूदा ने कहा कि बोझियों का बल
घटगया और कूड़ा बऊत है यहां लों कि हम भीत नहीं बनासक्ते
११ हैं। और हमारे बैरियों ने कहा कि जब लों हम उनके मध्य में
नआलें और उन्हें घात न करें और कार्य्य को रोक न लेवें वे
१२ न जानेंगे न देखेंगे। और ऐसा ऊआ कि जब उनके लग के
निवासी यहूदी आये उन्हों ने हमें दस बार कहा कि अवश्य है
१३ कि हर स्थान से हमारे पास आओ। इसी लिये
मैं ने वहां के नीचे के स्थानों की भीत के पीछे और ऊंचे स्थानों में
मैंहीं ने लोगों को उनके घराने के समान तलवार और भाला
१४ और धनुषों को लियेऊए बैठाया। और मैं ने देखा और उठा
और कुलीनों को और प्रधानों को और बचेऊए लोगों को कहा
कि तुम उनसे मत डरो और महा भयंकर परमेश्वर का स्मरण
करो और अपने भाइयों और बेटों और बेटियों और पत्नियों
१५ और घरों के लिये लड़ो। और ऐसा ऊआ कि जब हमारे
बैरियों ने सुना कि यह बात हमपर प्रगट ऊई और कि ईश्वर
ने उनका परामर्श व्यर्थ किया तब हम सब भीत को हर एक
१६ जन अपने अपने कार्य्य में फिर गये। और ऐसा ऊआ कि उस

समय से मेरे आधे सेवक तो काम में लगे और आधे ने भाले और ढाल और धनुष और झिलम पकड़ा और अध्यक्ष
१७ यहूदा के सारे घराने के पीछे। जो जो भीत के ऊपर जोड़ाई करते थे और जो बोझा ढोते थे बोझवैया सहित एक एक हाथ से कार्य्य करता था और दूसरे से हथियार पकड़ता
१८ था। क्योंकि हरएक थवई अपनी कटि पर तलवार बांधे था और जोड़ाई करता था और तुरही के बजवैये मेरे लग थे
१९ फिर मैंने कुलीनों को और अध्यक्षों को और रहे हुए लोगों को कहा कि कार्य्य महान और बड़ा है और भीत पर
२० हम एक दूसरे से अलग हैं। सो जहां तुम लोग तुरही का शब्द सुनो तहां हमारे पास चले आओ हमारा ईश्वर हमार लिये
२१ लड़ेगा। सो हमने कार्य्य में परिश्रम किया और भोर से तारा
२२ दिखाई देने लों आधे जन भाला लिये रहे। और भी मैं ने उस समय में लोगों से कहा कि हर एक जन अपने अपने सेवक को ले ले यिरोशलीम में टिके जिसतें रात को हमारे लिये पहरा
२३ होवे और दिन को कार्य्य करें। सो न मैंने न मेरे भाई बंदोंने न मेरे सेवकों ने न पहरे के मनुष्यों ने जो मेरे पीछुये थे स्नान की जूब को छोड़ हम्में से किसी ने अपने वस्त्रों को उतारा।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

कंगाल लोग धनिकों पर अपबाद करते हैं १—५
नहीमियाह इसबात को फरियाता है ६—१३
औरों के लिये दया करने को नहीमियाह एक दृष्टान्त होता है १४—१९।

१ और अपने भाई बंद यहूदियों के विरुद्ध लोगों में और उनकी
२ पत्नियों में रोना पीटना हो रहा। क्योंकि कितने कहते थे कि हम और हमारे बेटे बेटियां बहुत हैं इस लिये अन्न लेजाते हैं
३ जिसतें खायं और जीयें। कितनों ने यह भी कहा कि हम ने

महंगी में अन्न मोल लेने के लिये अपनी भूमि और दाख की
४ बारी और घरों को बंधक रक्खा है। और कितनों ने यह भी
कहा कि राजा का कर देने के लिये हम ने अपनी भूमि और
५ दाख की बारी पर रोकड़ उधार लिया है। तथापि हमारा
मांस हमारे भाइयों के मांस के समान और हमारे बालक
उनके बालकों के समान और अब देख हम अपने बेटे बेटियों
को बंधुआई में दास होने के लिये लाते हैं और हमारी बेटियों
में से बंधुआई में ऊई और हम अशक्त हैं क्योंकि और लोग
६ हमारी भूमि और दाख की बारी रखते हैं। जब
मैं ने यह बचन और उनका चिल्लाना सुना तो मैं अति
७ रिसिआया। तब मैं ने अपने मन में बिचारा और कुलीनों
को और अध्यक्षों को दपट के कहा कि तुम हर एक जन
अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो और मैं ने उनके बिरुद्ध
८ बड़ी मंडली एकट्ठी किई। और उन्हें कहा कि हमने अपनी
सामर्थ्य के समान अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यदेशियों में
बेंचे गये थे छुड़ा लिया और तुम क्या अपने भाई को बेंचोगे?
अथवा वे हमारे पास बेंचे जायेंगे? तब वे चुप रहे और कुछ
९ उत्तर न पाया। फिर मैं ने कहा कि तुम जो करते हो सो
अच्छा नहीं और हमारे बैरी अन्यदेशियों के कारण ईश्वर के भय
१० में चलने को क्या तुम्हें उचित नहीं?। मैं और मेरे भाई और
मेरे सेवक उनसे अन्न और रोकड़ लेसक्ते हैं सो मैं तुम्हारी
११ बिनती करता हों कि आओ ब्याज लेना छोड़देवें। मैं बिनती
करता हों कि उनकी भूमि और उनकी जलपाई की बारी
और उनके घर और सववां भाग रोकड़ और अन्न और दाख
१२ रस और तेल जो उनसे लेते हो उन्हें आज फेर देओ। तब
उन्हों ने कहा कि आप के कहने के समान हम करेंगे हम फेर
देंगे और उनसे कुछ न लिया करेंगे तब मैं ने याजकों को
बुलाया और उनसे किरिया लिई कि इस बाचा के समान हम

१३ करेंगे। और मैं ने अपना अंचल झाड़ के कहा कि इसी रीति से ईश्वर हर एक जन को, जो इसबाचा को पूरी न करे अपने मन्दिर से और अपनी बाचा से झाड़ देवे यों वुह झाड़ा जाय और शून्य होवे और सारी मंडली ने कहा कि आमीन और परमेश्वर की स्तुति किई और इस बाचा के समान
१४ लोगों ने किया। और भी जब से मैं यहूदा के देश में उन पर अध्यक्ष ठहराया गया अर्थात् अर्तासरसीस राजा के बीसवें बरस से बत्तीसवें बरस लों, जो बारह हैं मैं ने
१५ और मेरे भाई ने अध्यक्ष की रोटी न खाई। परन्तु मेरे आगे के अध्यक्ष, लोगों पर भार थे और उनसे रोटी और दाखरस चालीस शेकल चांदी को छोड़ के लेते थे हां उनके सेवक भी लोगों पर प्रभुता करते थे परन्तु ईश्वर के डर के मारे मैं ने ऐसा
१६ न किया। हां इस भीति के कार्य्य में भी मैं लगा रहा और हमने भूमि भी न मोल लिई और मेरे सेवक काम की ओर
१७ बटुर गये। और भी उन्हें छोड़ जो हमारे आस पास के अन्यदेशियों में से आते थे मेरे भोजन में डेढ़ सौ यहूदी और
१८ अध्यक्ष थे। और मेरे लिये प्रति दिन एक बैल और छः चुनेऊए भेड़ और पंछी भी सिद्ध किये जाते थे और दस दिन में एकबार हर प्रकार का दाखरस था तथापि इन बातों के लिये मैं ने अध्यक्ष का भोजन न चाहा क्योंकि इन लोगों पर बंधुआई का
१९ बोझ था। हे मेरे ईश्वर इन लोगों के लिये सब जो मैं ने किया है भलाई के लिये मुझे स्मरण कर।

६ छठवां पर्ब्ब।

अन्यदेशी उसके घात के लिये नहीमियाह से भेंट करने चाहते हैं १—४ वुह उनके अपबाद को झुठाता है ५—९ वे नहीमियाह के लिये जाल फैलाते हैं परन्तु वुह नहीं मानता है १०—१४ भीत बावन दिन में बन जाती है १५—१९।

१ अब यूं ऊआ कि जब सनबलट और टोबिया और अरबी गेशेम और हमारे रहेऊए बैरियों ने सुना कि मैं ने भीत बनाई थी और उसमें कोई दरार न रहा तथापि उसी समय
२ मैं ने फाटकों पर किवाड़े न चढ़ाये थे। तब सनबलट और गेशेम ने मुझे यह कहला भेजा कि आ हम ओनो के चैागान के गाओं में भेंट करें परन्तु उनके मन में मेरा उपद्रव करना था।
३ और मैं ने दूतों से कहला भेजा कि मैं बड़े कार्य्य में लगा हों यहां लों कि मैं उतर आ नहीं सक्ता जबलों उसे छोड़ के तुम पास आओं
४ क्यों कार्य थम जाय?। तथापि उन्हों ने इस रीति से चार बार मुझ पास भेजा और उसी रीति से मैं ने उन्हें उत्तर
५ दिया। फिर सनबलट ने पांचवें बार उसी रीति से अपने दास को एक खुलीऊई पत्री अपने हाथ में लियेऊए
६ मेरे पास भेजा। उसमें लिखा था कि अन्यदेशियों में चर्चा है और गश्मू कहता है कि तू और यहूदी फिरजाने की चिंता करते हो इस बात के लिये तू भीत बनाता है जिसतें इन बातों
७ के समान तू उनका राजा होवे। तू ने अपने लिये यह कहिके यिरोशलीम में उपदेश करने को, आचार्यों को भी ठहराया है कि यहूदा में एक राजा है और अब इन बातों के समान राजा को समाचार दिया जायगा इस लिये अब आओ एकट्ठे
८ परामर्ष करें। तब मैं ने उस पास कहला भेजा कि तेरे कहने के समान कोई बात नहीं ऊई परन्तु तू अपनेही मन से बनाता
९ है। क्योंकि यह कहिके सभों ने हमें डराया कि इस काम से उनके हाथ दुर्बल होंगे जिसतें बन नपड़े इस लिये अब मेरे
१० हाथों को दृढ़ कर। उसके पीछे मैं मिहीताबील के बेटे दिलायाह के बेटे शिमईया के घर गया जो बंधन में था उसने कहा कि आ ईश्वर के घर में मन्दिर के भीतर भेंट करें और मन्दिर के केवाड़े बन्द करें क्योंकि वे तुझे घात करने को आवेंगे
११ हां रात को तुझे घात करने को आवेंगे। और मैं ने कहा कि

क्या मुझ ऐसा जन भागे? और मुझ ऐसा होके अपने प्राण
१२ बचाने के कारण मन्दिर में पैठे? मैं उसमें न जाओंगा। और
लो मैं ने देख लिया कि ईश्वर ने उसे न भेजा था परन्तु कि
उसने यह आचार्यबचन मेरे बिरुद्ध कहा था क्योंकि टोबियाह
१३ और सनबलट ने उसे ठीके में किया था। इस लिये उसे ठीके में
किया जिसतें मैं डरजाओं और ऐसा करके दोषी होओं और
१४ जिसतें वे अपबाद का कारण पावें और मेरी निंदा करें। हे मेरे
ईश्वर उनके इन कार्यों के समान टोबियाह को और सनबलट
को और नोआदिया आचार्यनी को और रहेऊए आचार्यों
१५ को जो मुझे डराने चाहते हैं स्मरण कर।   सो बावन
१६ दिन में एलुल मास की पचीसवीं तिथि में भीत बनचुकी। और
ऐसा ऊआ कि जब हमारे सारे बैरियों ने सुना और चारों
ओर के अन्यदेशियों ने देखा तो वे अपनी दृष्टि में अतिशोकित
ऊए क्योंकि उन्हें सूझ पड़ा कि यह कार्य्य हमारे ईश्वर की ओर
१७ से ऊआ।   और उसे अधिक उनदिनों में यहूदा
के कुलीन पत्री पर पत्री टोबियाह पास भेजते गये और
१८ टोबियाह की उनपास पऊंचती थी। क्योंकि यहूदा में बऊत
उसकी किरिया में थे इस कारण कि वुह आराह के बेटे
शिकनिया का जवांई था और उसके बेटे यूहानान ने बिरकिया
१९ के बेटे मिशुल्लाम की बेटी को लिया था। उन्हों ने मेरे आगे
उसके सुकार्यों की भी चर्चा किई और मेरी बातें उसे कहीं और
टोबिया ने मुझे डराने के लिये पत्रियां भेजीं।

७ सातवां पर्ब्ब ।

नहीमियाह का भीत बना के लावियों को और
प्रधानों को मन्दिर पर और भीत की रखवाली पर
ठहराना १—४ जो जो लोग बाबुल से फिर आये
थे उनके नाम का उताराजाना ५—७३ ।

१ जब भीत बन गई और मैं ने केवाड़ों को खड़ा किया और द्वारपालों को और गायकों को और लावियों को ठहराया तब
२ यों हुआ। कि मैं अपने भाई हनानी को और भवन के अध्यक्ष हनानिया को यिरोशलीम सौंपा क्योंकि वुह विश्वस्त मनुष्य
३ और बहुतों से अधिक ईश्वर को डरता था। और मैं ने उन्हें कहा कि जबलों धूप न चढ़े तबलों यिरोशलीम के फाटक खोले न जायें और उनके आगे अड़ंगे से द्वार बंद किये जावें और यिरोशलीम के वासी हर एक अपनी अपनी चौकी में और हरएक अपने अपने घर के सन्मुख चौकी के लिये ठहराया
४ जाय। अब नगर बड़ा और चौड़ा था परन्तु उसमें थोड़े
५ लोग थे और घर बनाये नगये थे। और कुलीनों को और अध्यक्षों को और लोगों को एकट्ठा करने के लिये मेरे ईश्वर ने मेरे मन में डाला जिसतें वे वंशावली से गिनेजायें और जो पहिले चढ़आये थे मैं ने उनकी वंशावली की एक पत्री पाई
६ और उसमें लिखा पाया। ये प्रदेशी के वंश जो बंधुआई से चढ़ गये थे जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनज़ार ले गया था और यिरोशलीम में और यहूदा में हरएक जन अपने अपने
७ नगर में फिर आया। जो ज़ोरबाबुल, येशूआ, नहीमियाह, अज़रिया, रामिया, नहामानी, मरदिकई, बिलशान, मिसपरस, बिगवई, निहूम, और बानाह के साथ आये इसराईल के लोगों
८ की गिनती यह। परऊश के संतान दो सहस्र एक सौ बहत्तर।
९।१० शिफतिया के संतान तीन सौ बहत्तर। आराह के
११ संतान छः सौ बावन। यशूआ के और यूआब के संतान के
१२ पहासमुआब के संतान दो सहस्र आठ सौ अठारह। एलाम के
१३ संतान एक सहस्र दो सौ चौवन। ज़तू के संतान आठ सौ
१४।१५ पैंतालीस। जकाई के संतान सात सौ साठ। बिनुई के
१६ संतान छः सौ अठतालीस। बेबाई के संतान छः सौ अट्ठाईस।
१७।१८ अजगाद के संतान दो सहस्र तीन सौ बाईस। अदूनिकाम

१९ के संतान छः सौ सतसठ। बिगवई के संतान दो सहस्र सतसठ।
२०।२१ अदिन के संतान छः सौ पचपन। हिज़किया के अतर के
२२ संतान अंठानवें। हाशूम के संतान तीन सौ अट्ठाइस।
२३।२४ बेसाई के संतान तीन सौ चौबीस। हरिफ के संतान एक
२५।२६ सौ बारह। गिबियून के संतान पंचानवे। बैतुल्लहम के और
२७ नेटोफा के एक सौ अट्ठासी जन। अनातूस के एक सौ अट्ठाइस
२८।२९ जन। बैतअस्मावस के बयालीस जन। किरियासयारीम,
३० किफिरा और बीरूस के सात सौ तेंतालीस जन। रामा और
३१ गावा के छः सौ एक्कीस जन। मिकमास के एक सौ बाईस जन।
३२।३३ बैतईल और आई के एक सौ तेईस जन। दूसरे निबू के
३४ बावन जन। दूसरे ईलाम के संतान एक सहस्र दो सौ चौवन।
३५।३६ हारिम के संतान तीन सौ बीस। यरीहू के संतान तीन
३७ सौ पैंतालीस। लूद के और हादिद के और ऊनू के संतान
३८ सात सौ एक्कीस। सिनाहः के संतान तीन सहस्र नव सौ तीस।
३९ यहाया के संतान यशूआ के घराने के याजक नौ सौ
४०।४१ तिहत्तर। इम्मर के संतान एक सहस्र बावन। याशूर के
४२ संतान एक सहस्र दो सौ सैंतालीस। हारिम के संतान एक
४३ सहस्र सत्रह। कदमईल से यशूआ के संतान और
४४ ऊदीवा के संतान से चौहत्तर लावी। आसाफ के संतान एक
४५ सौ अठतालीस गायक। शलूम के संतान, अतर
के संतान, टलमून के संतान, अकूब के संतान, हटीटा के संतान,
४६ शोबाई के संतान, एक सौ अठतीस द्वारपाल। सिहा
४७ के संतान, हाशूफा के संतान, तबऊस के संतान,। कीरोम के
४८ संतान, सीआ के संतान, पादून के संतान,। लिबाना के
४९ संतान, हगावा के संतान, शलमई के संतान,। हनान के संतान,
५० गिदाल के संतान, गाहर के संतान,। रियायह के संतान,
५१ रिसीम के संतान, निकूदा के संतान,। गजाम के संतान, ऊजा
५२ के संतान, फासियह के संतान,। बिसई के संतान, मिऊनिम के

५३ संतान, निफीश्रिसम के संतान,। बकबूक के संतान, हकूफा के
५४ संतान, हरहूर के संतान,। बसलीस के संतान, महीदा के
५५ संतान, हरशा के संतान,। बरकोस के संतान, सिसिरा के
५६ संतान, तामाह के संतान,। नसिया के संतान, हतीफा के
५७ संतान,। सुलेमान के दासों के संतान, सोटई के
५८ संतान, सफीरेस के संतान, पीरीदा के संतान,। याला के
५९ संतान, दारकून के संतान, गिदल के संतान,। शिफटिया के संतान, हट्टील के संतान, सबाईम से एकीरेस के संतान, अमून
६० के संतान, ये सब नथीमी थे। सारे नथीमी और सुलेमान के
६१ सेवकों के संतान तीन सौ बानवे। और तेलमेलह, तेलहरीशा, किरुब, अदून और इमेर में से गये थे परन्तु वे न तो अपने पितरों के घराने न अपने गोती दिखा सके कि
६२ इसराईल के थे अथवा न थे। दिलाया के संतान, टोबिया के
६३ संतान, निकूदा के संतान, छः सौ बयालीस। और याजकों में से हाबाया के संतान, कोस के संतान, बारज़िलाई के संतान, जिसने गिलियादी बारज़िलाई की बेटीयों में से ब्याहा
६४ और उनके नाम से कहा जाता था। जो बंशावली में गिनेगये इन्हों ने उनमें अपना नाम पत्र ढूंढ़ा परन्तु न पाया गया इस
६५ लिये वे अपवित्र के समान याजकता से अलग किये गये। और अध्यक्ष ने उन्हें कहा कि जब लों उरीम और तमीम धारी एक याजक न उठे तब लों वे पवित्र बस्तु में से न खाने पावेंगे।
६६ सारी मंडली मिल के बयालीस सहस्र तीन सौ बासठ।
६७ उनके दास दासी को छोड़ के जो सात सहस्र तीन सौ सैंतीस
६८ थे और उनके गायक और गायिका दो सौ पैंतालीस। उनके
६९ घोड़ें सात सौ छत्तीस उनके खच्चर दो सौ पैंतालीस। उनके ऊंट चार सौ पैंतीस उनके गदहे छः सहस्र सात सौ बीस।
७० और पितरों के कई प्रधान ने उस कार्य्य के लिये दिया अध्यक्ष ने भंडार में दस सहस्र एक सौ साठ रुपये के लग भग

का सोना और पचास पात्र और पांच सौ तीस याजकों के
७१ वस्त्र दिये । और पितरों के प्रधानों में से उस काम के भंडार
में दो लाख तीन सहस्र तीन सौ तीस रुपये के लग भग का
७२ सोना और एक लाख चैावन सहस्र की चांदी दिई । और
रहे हुए लोगों ने दो लाख तीन सहस्र तीन सौ तीस रुपये के
लग भग का सोना और मन पैाने चवालीस एक चांदी और
७३ याजकों के सतसठ वस्त्र । इस लिये याजक और लावी और
द्वारपाल और गायक और लोगों में से कितने और नथीमी
और सारे इसराईल अपने अपने नगर में बसे और जब
सातवां मास आया तब इसराईल के संतान अपने अपने
नगर में थे ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

लोगों का एकट्ठा होना और उन्हें एज़रा का बचन
सुनाना १—८ नहीमियाह एज़रा और याजक का
ईश्वर के आनंद में लोगों को उभाड़ना ९—१२ व्यवस्था
को पढ़ के लोगों का तम्बूओं का पर्ब्ब रखना १३—१८।

१ और सारे लोग एक मन से जल फाटक के आगे सड़क में
एकट्ठे हुए और उन्हों ने एज़रा अध्यापक से मूसा की व्यवस्था
की पुस्तक को, जो परमेश्वर ने इसराईल को आज्ञा किई थी
२ मंगवाया । और सातवें मास की पहिली तिथि में एज़रा
याजक स्त्री पुरुष को मंडली के और सब के आगे जो सुन के
३ समझ सक्ते थे व्यवस्था को लाया । और जल फाटक के सड़क
के आगे भोर से दो पहर लों स्त्री पुरुष के और समझवैयों के
आगे उसने पढ़ा और सारे लोगों ने व्यवस्था की पुस्तक की ओर
४ कान लगाये । और एज़रा अध्यापक काष्ठ के एक मंच पर खड़ा
हुआ जो उन्हों ने उसी बात के लिये बनाया था और उसके
लग मतीसिया और शेमा और अनाया और ऊरिया और

हिलकिया और मासिया उसकी दहिनी ओर और बाईं ओर पिदाया और मीशाईल और मलकिया और हाशूम और हश्बदना और ज़करिया और मिशुल्लाम खड़े ऊए।
५ और एज़रा ने सारे लोगों की आंखों के आगे पुस्तक खोली (क्योंकि वुह सारे लोगों से ऊपर था) और उसके खोलतेही
६ सारे लोग खड़े ऊए। और एज़रा ने महेश्वर परमेश्वर का धन्य माना और सारे लोगों ने हाथ उठायेऊए उत्तर में आमीन आमीन कहा और मुंहके बल सिर झुका के भूमि लों
७ परमेश्वर को प्रणाम किया। और यिशूआ और बानी और शेरेबिया, यामिन, अक्कूब, शब्बिसाई, होदिया, मआसिया, किलीता, अजरिया, योजाबाद, हानान, पिलाया, और लावियों ने भी लोगों को व्यवस्था समझाई और लोग अपने
८ अपने ठिकाने पर। इसी रीति से उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को खोल के पढ़ा और अर्थ किया और उन्हें पढ़
९ समझाया। और नहीमियाह ने, जो अध्यक्ष है और अध्यापक एज़रा याजक ने और लावियों ने जिन्हों ने लोगों को सिखाया, सारे लोगों से कहा कि यह दिन तुम्हारे ईश्वर परमेश्वर के लिये पवित्र है विलाप और शोक मत करो क्योंकि व्यवस्था के बचन सुनके सारे लोगों ने विलाप किया।
१० तब उसने उन्हें कहा कि अब जाओ और चिकनाई खाओ और मीठा पीओ और जिनके इहां कुछ नहीं पका उनके पास बैना भेजो क्योंकि आज परमेश्वर के लिये पवित्र है और उदास
११ मत होओ क्योंकि परमेश्वर का बल तुम्हारा आनन्द है। सो लावियों ने लोगों को यह कहिके धीरज दिया और कहा कि
१२ चुपके रहो क्योंकि दिन पवित्र है शोकित मत होओ। तब सारे लोगों ने खाने पीने और बैना भेजने और आनन्द करने को अपना अपना मार्ग लिया इस कारण कि उन्हों ने बचन को,
१३ जो उनके आगे कहा गया था समझा। दूसरे दिन

सारे लोगों के पितरों के प्रधान श्रैार याजक श्रैार लावी व्यवस्था का बचन सीखने के। एज़रा अध्यापक पास एकट्ठे ऊए।
१४ श्रैार जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा से व्यवस्था में आज्ञा किई थी उन्हों ने लिखा ऊआ पाया कि सातवें मास के पर्ब्ब में
१५ इसराईल के सन्तान पतझप्परों में रहें। श्रैार कि वे अपने सारे नगरों में श्रैार यिरोशलीम में यह कहिके प्रचारें कि पर्ब्बत के। जाश्रो श्रैार जलपाई की श्रैार अनोनास की श्रैार हरस की श्रैार खजूड़ की श्रैार झप्पर बनाने के लिये घने पेड़ों
१६ की डालियां लिखे के समान लाश्रो। लोग बाहर जा जाके लाये श्रैार हरएक जन अपने अपने घर की छत पर श्रैार अपने आंगनों में श्रैार ईश्वर के मन्दिर के आंगनों में श्रैार जल फाटक की सड़क में श्रैार इफराईमी फाटक के सड़क में
१७ अपने लिये झप्पर बनाई। श्रैार सारी मंडली जो बंधुआई से फिर आई थी पतझप्पर बना बना उनके तले बैठ गये क्योंकि नून के बेटे यशूआ के दिनों से उस दिन लों इसराईल के संतानों
१८ ने ऐसा न किया था श्रैार अत्यंत आनन्दित था। श्रैार पहिले दिन से अन्त के दिन लों उसने प्रति दिन ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक के। पढ़ा श्रैार उन्हों ने सात दिन पर्ब्ब रक्खा श्रैार रीति के समान आठवें दिन भारी सभा ऊई।

९ नैावां पर्ब्ब।

लोगों का ब्रत करना १—३ प्रत्यक्ष सेवा में कैान कैान अगुआ होते हैं प्रार्थना का संक्षेप ४—६ परमेश्वर की दया के लिये धन्य मान्ना आप से दीन होना श्रैार बिलाप करना श्रैार गिड़ गिड़ाना ७—३७ उनका ईश्वर से बाचा बांधना ३८—।

१ सो इस मास के चैाबीसवें दिन इसराईल के संतान ब्रत करते
२ ऊए श्रैार टाट पर धूल सहित एकट्टे ऊए। श्रैार इसराईल के

संतानों ने उपरी संतानों से आप को अलग किया और खड़े होके अपने अपने पाप और अपने पितरों के पाप मान
३ लिये। और वे अपने स्थान पर खड़े ऊए और दिन के चौथे भाग लों अपने ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ा और चौथाई भाग में पाप को मान मानके अपने ईश्वर
४ परमेश्वर को प्रणाम किया। तब लावियों में से यशूअ और बानि और कदमियेल और शिबनिया और बुन्नि और शेरेबिया और बानि और किनानी, मचान पर खड़े होके बड़े शब्द से अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे
५ गिड़गिड़ाये। फिर यशूअ और कदमियेल और बानि और हशबनिया और शेरबिया और होदिया और शिबानिया और पितहिया लावियों ने कहा कि उठो और अपने ईश्वर परमेश्वर का सदा धन्य मानो और तेरा ऐश्वर्यमान नाम का
६ धन्य होवे जो सारे धन्यबाद और स्तुति से बढ़ गया है। तू, केवल तूही परमेश्वर है तू ने स्वर्ग अर्थात् स्वर्गों का स्वर्ग, उनकी सारी सेना सहित और पृथिवी और उसमें के सब कुछ और समुद्र और उसमें के सब कुछ उत्पन्न किया है और तू सब
७ की रक्षा करता है और स्वर्ग की सेना तुझे भजती है। तू परमेश्वर ईश्वर जिसने इबराहीम को चुन के उसे कलदानियों के ऊर से निकाल लाया और उसका नाम इबराहीम रक्खा।
८ और अपने आगे उसका मन विश्वासमय पाया और किनानियों के और हित्तियों के और अमूरियों के और फरजियों के और यबूसियों के और गरगशियों के देश को उसके संतान को देने के लिये तू ने उस्से नियम किया और अपने
९ बचन को पूरा किया क्योंकि तू धार्म्मिक है। और मिसर में हमारे पितरों के कष्ट को देख के लाल समुद्र के तीर पर उनका
१० गिड़गिड़ाना सुना। और फरऊन पर और उसके सारे सेवकों पर और उसके देश के सारे लोगों पर आश्चर्य्य और

लक्षण दिखाया क्योंकि तू जानता था कि उन्हों ने उनसे अहंकार से व्यवहार किया सो तू ने अपना नाम किया जैसा कि आज
११ है । और तू ने उनके आगे समुद्र को दो भाग किया यहां लों कि वे समुद्र के मध्य में से सूखी भूमि पर चले गये और उनके दुःखदायकों को गहिरायों में पत्थर की नाईं बड़े पानियों
१२ में फेंक दिया । उस्से अधिक दिन को मेघ के खंभे से और रात को आग के खंभे से उन्हें लेगया कि जिस मार्ग में उन्हें चलना
१३ था उस में उन्हें उंजियाला देवे । और तू सीना पर्ब्बत पर भी उतर आया और स्वर्ग से उनके साथ बात चित किई और उन्हें ठीक बिचारों को और सच्ची व्यवस्थों को और अच्छी बिधि और
१४ आज्ञाओं को दिया । और अपने पवित्र बिश्राम को उन पर प्रगट किया और अपने सेवक मूसा की ओर से आज्ञा और
१५ बिधि और व्यवस्था उन्हें दिईं । और उनकी भूख के निमित्त उन्हें स्वर्ग से रोटी दिई और उनकी प्यास के निमित्त पहाड़ में से पानी निकाला और उस देश को उनके बश में करने को, जो
१६ तू ने उन्हें देने को हाथ बढ़ाया था बाचा दिई । परन्तु उन्हों ने और हमारे पितरों ने अहंकार से व्यवहार किया और अपने
१७ गलों को कठोर किया और तेरी आज्ञाओं को न माना । और उन्हें पालने को नाह किया और जो आश्चर्य तू ने उनके मध्य में किये थे उन्हें स्मरण न किया परन्तु अपने गलों को कठोर किया और अपनी बंधुआई में फिर जाने को अपनी दंगैती में एक प्रधान को ठहराया परन्तु तू ईश्वर क्षमा करने को सिद्ध और कृपाल और दयाल और रिसियाने में धीर और अनुग्रह में
१८ बड़ा और उन्हें न त्यागा । हां जब उन्हों ने अपने लिये ढाला ऊआ एक बछवा बनाया था और कहा था कि यही देव तुम्हें मिसर से निकाल लाया और बड़े बड़े खिझाव के कार्य किये ।
१९ तब तू ने अपनी बड़ी बड़ी दया से उन्हें अरण्य में त्याग न किया और मार्ग में लेजाने के लिये दिन को मेघ का खंभा

और रात को आग का खंभा उन्हें उंजियाला करने के लिये
२० जिस मार्ग में उन्हें जाना था उनसे अलग न ऊआ। उन्हें
सिखाने के लिये अपना उत्तम आत्मा भी उन्हें दिया और
उनके मुंह से अपने मन्ना को न रोका और प्यास में उन्हें पानी
२१ दिया। हां चालीस बरस तू ने बन में उन्हें पाला और उनके
लिये कोई बस्तु न घटी और उनके बस्त्र पुराने न ऊए और उनके
२२ पांव न फूले। उनसे अधिक तू ने उन्हें राज्यों को और जाति
गणों को दिया और उन्हें कोना कोना बांट दिया सो उन्हों ने
सैहून के देश को और हशबून के राजा के देश को और बाशान के
२३ राजा ऊज के देश को अधिकार में लिया था। और तू ने उनके
सन्तानों को भी स्वर्ग के तारों की नाईं बढ़ाया और इस देश में
उन्हें लाया जिसके बिषय में तू ने उनके पितरों को अधिकार
२४ में देने को प्रण किया था। सो उनके सन्तान उसमें जाके देश
को बश में किया और तू ने उनके आगे उस देश के बासी
किनानियों को बश में किया और उनके राजा और देश की
प्रजा समेत उनके बश में किया कि जैसा चाहें वैसा उनसे करें।
२५ और उन्हों ने दृढ़ नगर और फलवंत देश को लिया और
संपत्ति से भरे ऊए घर और खोदे ऊए कूंए और दाख और
जलपाई की बारी और फलवंत पेड़ बऊताई से अपना अधिकार
किया सो वे खाके तृप्त ऊए और मोटाने और तेरी बड़ी भलाई
२६ से आनन्दित ऊए। तिसपर भी वे अमानक ऊए और तुझसे फिर
गये और तेरी ब्यवस्था को पीछे टाल दिया और उन भविष्यद्वक्तों
को घात किया जिन्हों ने तेरी ओर फिराने को उनसे बिरुद्ध साक्षी
२७ दिई और उन्हों ने बड़े बड़े खिझाव का कर्म्म किया। इस लिये
तू ने उन्हें उनके बैरियों के हाथ सौंप दिया जिन्हों ने उन्हें दुःख
दिया और दुःख के समय में, जब वे तेरे आगे गिड़गिड़ाये
तू ने स्वर्ग से उनकी सुनी और अपनी दया की बऊताई के
समान उन्हें निस्तारक दिये जिन्हों ने उन्हें उनके बैरियों के हाथ

२८ से छुड़ाया। परन्तु बिश्राम पाने के पीछे उन्हों ने तेरे आगे फेर बुराई किई इस लिये तू ने उनके बैरियों के हाथ में उन्हें छोड़ दिया यहांलों कि वे उन पर प्रभुता करने लगे तिसपर भी जब वे फिरे और तेरे आगे गिड़गिड़ाये तब तू ने स्वर्ग में से
२९ सुन सुनके अपनी दया के समान उन्हें बारंबार छुड़ाया। और अपनी व्यवस्था की ओर उन्हें फेर लाने के लिये उनके बिरुद्ध साक्षी दिई तिसपर भी उन्हों ने अहंकार से व्यवहार किया और तेरी आज्ञाओं को न सुना परन्तु तेरे बिचारों के बिरुद्ध पाप किया (यदि मनुष्य उन्हें पालन करे तो उनमें जीयेगा) और अपने कांधे को खींच के अपने गले को कठोर किया और
३० न सुना। तथापि तू ने बहुत बरस लों उनकी सहता रहा और अपने भविष्यद्वक्तों के द्वारा अपने आत्मा से उनके बिरुद्ध साक्षी दिई परन्तु उन्हों ने कान न धरा इस लिये तू ने उन्हें देश देशके
३१ लोगों के हाथ में सौंप दिया। तथापि अपनी बड़ी बड़ी दया के कारण तू ने उन्हें सर्वथा नाश न किया और उन्हें न त्यागा
३२ क्योंकि तू दयाल और कृपाल ईश्वर है। सो अब हे हमारे ईश्वर महान और शक्तिमान और भयंकर ईश्वर जो नियम और कृपा को पालता है हम पर और हमारे राजाओं पर और हमारे अध्यक्षों पर और हमारे याजकों पर और हमारे भविष्यद्वक्तों पर और हमारे पितरों पर और अपने सारे लोगों पर असूर के राजाओं के समय से आज लों वुह दुःख
३३ जो हम पर पड़ा है सो तेरे आगे थोड़ा न जानाजाय। तथापि जो जो हम पर पड़ा है उनसभों में तू धर्म्मी है क्योंकि तू ने
३४ ठीक किया है परन्तु हम ने बुराई किई है। और हमारे राजा और हमारे अध्यक्ष और हमारे याजक और हमारे पितरों ने तेरी व्यवस्था को पालन नहीं किया है और तेरी आज्ञा और साक्षियों को नहीं सुना है जिनसे तू ने हम पर
३५ साक्षी दिई है। क्योंकि उन्हों ने अपने राज्य में तेरी सेवा न

किई और तूने अपनी बड़ी दया से, जो तूने उन्हें दिई है
और इस बड़े और फलवंत देश में जो तूने उन्हें दिया है
३६ तेरी सेवा न किई और अपने बुरे कार्यों से न फिरे। देख हम
आज सेवक हैं और जो देश तूने हमारे पितरों, को उसके
फल और अच्छी बस्तु खाने को दिया है, देख हम उसमें सेवक
३७ हैं। और हमारे पापों के कारण उन राजाओं के लिये जिन्हें
तूने हम पर किया है बहुत बढ़ती लाता है और वे हमारे
देहों पर और हमारे ढोरों पर भी मनमन्ता प्रभुता करते
३८ हैं और हम बड़े दुःख में हैं। इन बातों के कारण हम दृढ़
करके लिखते हैं और हमारे अध्यक्ष और लावी और याजक
उसके छाप में ऊए।

१० दसवां पर्ब्ब ।

याजक और लावियों और कुलीनों के नाम जिन्हों
ने उस बाचा पर नाम लिखा था १—२९ ईश्वर
की आज्ञा पालन करने का उपरी स्त्रियों से अलग
रहने का बिश्राम को मान्ने का अरु और और
बिषय ३०—३९ ।

१ छाप करने में ये थे हकालिया का बेटा नहीमियाह अध्यक्ष
२।३ और सिदकिया। सिरायाह, अज़ारिया, अरमिया, । पाशुर,
४।५ अमारिया, मलकोजा, । हत्तूश, शबानिया, मलूक, । हरिम.
६।७ मिरीमूस, ओबदिया, । दानियाल, गन्निसून, बारक, । मशूल्लम,
८ अबीजा, मिजामिन, । मआजिया, बिलगई, शिमाइया, ये
९ याजक थे। और लावी ये हैं अजनिया का बेटा यशूअ हिनादाद
१० के संतानों में से बिनुई, कदमिईल,। और उनके भाई शिबनिया,
११ होदीजा, किलीटा, पिलाया, हानान.। मीका, रिहब,
१२।१३ हशाबिया, । ज़कूर, शिरीबिया, शबानिया, । होदीजा,
१४ बानी, बिनीनू । लोगों के प्रधान पारूश, पहासमोआब, ईलाम,

१५।१६ ज़त्तू, वानी,। बुन्नी, अजगाद, बेबाई,। अदूनीज़ा,
१७।१८ बिगवई, आदिन,। अतर, हिज़किजा, अज़्ज़ूर,। होदीजा,
१९।२० हाशूम, बीसाई,। हारिफ, अनातूस, निबाई,। मगपियाश,
२१ मिशुल्लम, हेज़िर। मशीसाबील, सादूक, जादुआ,।
२२।२३ पिलातिया, हानान, अनायाह,। होशिया, हनानिया,
२४।२५ हशूब,। हलोहेश, पिलिहा, शोबेक,। रिहूम, हशबनः,
२६।२७ मआसिया। अहीजा हानान, आनान,। मलूक, हारिम,
२८ बआना,। और उबरे ऊए लोग और याजक और लावी और दारपाल और गायक और नथीनी और सब, जिन्हों ने देशों के लोगों में से ईश्वर की व्यवस्था की ओर अपने को अलग किया था वे और उनकी पत्नियां और उनके
२९ बेटे बेटी हर एक समझ बूझ रखता था। वे अपने कुलीन भाइयों से पिलचे रहे और ईश्वर के सेवक मूसा के द्वारा से, जो ईश्वर की व्यवस्था दिई गई उस पर चलने को, और हमारे प्रभु परमेश्वर की सारी आज्ञा और उसके विचार और
३० उसकी विधि मान्ने को आप में और किरिया में ऊए। और कि हम अपनी बेटियों को देश के लोगों को न देंगे और अपने
३१ बेटों के लिये उनकी बेटियां न लेंगे। और यदि देश के लोग बिश्राम दिन में माल अथवा भोजन बेचने को लावें तो हम बिश्राम में अथवा पवित्र दिन में उनसे भोजन न लेंगे और सातवें बरस को और हर एक रिण को लेने से छोड़
३२।३३ देंगे। क्योंकि ईश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये अर्थात् भेंट की रोटी के और नित्य के मांस की भेट के लिये और नित्य के होम और बिश्रामों के और अमावास्या के और ठहराये ऊए पर्व और पवित्र वस्तु के लिये और पाप की बलि और इसराईल के कारण प्रायश्चित्त करने के लिये और हमारे ईश्वर के मन्दिर की सारी सेवा के लिये शेकल का तीसरा अंश देने को अपने
३४ लिये विधि ठहराई। और काष्ठ की भेंट के लिये और व्यवस्था

के लिखे ऊए के समान हमारे ईश्वर परमेश्वर की यज्ञवेदी पर जलाने के लिये ठहराए ऊए समयों में बरस बरस उन्हें अपने ईश्वर के मन्दिर में लाने के लिये हमने याजकों और लावियों
३५ के मध्य में चिट्ठी डाली। और हमारी भूमि का नवान्न और सारे पेड़ों का पहिला फल बरस बरस परमेश्वर के मन्दिर में
३६ लाने को। और व्यवस्था के लिखे के समान अपने बेटों के और अपने ढोरों के और अपने गोरूओं के और झुंडों के पहिलौंठों को ईश्वर के मन्दिर में याजकों के पास, जो अपने
३७ ईश्वर के मन्दिर में सेवा करते हैं लाने को नियम किया। और कि हम अपने गूंधे ऊए का पहिला भाग और अपनी सारी भेंटें और सारे प्रकार के पेड़ों का और दाख का और तेल का फल अपने ईश्वर के मन्दिर की कोठरियों में याजकों के पास लावेंगे और अपनी खेती के दसवां भाग लावियों कने लावेंगे जिसतें लावी हमारे सारे नगरों का दसवां अंश पावें यह यह
३८ नियम हम ने किया। और जब लावी दसवां भाग लेवें तब हारून के बेटे याजक लावियों के साथ होवें और लावी हमारे ईश्वर के मन्दिर की कोठरी में, अर्थात् भंडार के घर में दसवें
३९ अंश का दसवां भाग लावेंगे। उन कोठरियों में, जहां पवित्र पात्र और याजक, जो सेवा करते हैं और द्वारपाल और गायक रहते हैं इसराएल के संतान और लावी के संतान अन्न की और नये दाख रस की और तेल की भेंट लावेंगे और हम अपने ईश्वर के मन्दिर को न छोड़ेंगे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

नहीमियाह का यिरोशलीम को बसाना और उनके श्रेष्ठों के नाम १—१९ उबरे ऊए यहूदियों का समाचार जो बाबुल से फिर आये थे २०—३६।

१ अब लोगों के अध्यक्ष यिरोशलीम में बसे और पवित्र नगर

यिरोश्लीम में बास करने के लिये उबरे ऊए मनुष्यों ने भी चिट्ठी डाली जिसतें दस में एक उसमें बसे और नव भाग
२ नगरों में बसें। और जिन्हों ने यिरोश्लीम में बसने के लिये मनमन्ता आप को सौंपा था लोगों ने उनसभों का धन्य माना।
३ और प्रदेश के ये ये मुखिया यिरोश्लीम में बसे परन्तु यहूदा के नगरों में हर एक अर्थात् लावी और नथीमी और सुलेमान
४ के सेवकों के संतान अपने अपने नगर के अधिकार में। और यिरोश्लीम में यहूदा के संतान और बनियामीन के सन्तान में से बास किया यहूदा के संतानों में से अथालियः जो बेटा ऊज़िया का बेटा ज़करिया का बेटा अमारिया का बेटा सिफातिया का
५ बेटा महालालील, पारस के संतान में से। और माआसिया जो बेटा बारूख का बेटा कलहूजोः का बेटा हज़ाया का बेटा अदाया का बेटा यूआरिब का बेटा ज़करिया का बेटा शैलूनी
६ का। और पीरज़ के सारे बेटे जो यिरोश्लीम में बसे थे चार
७ सौ अठसठ बीर। और बनियामीन के बेटों में से सल्लू जो बेटा मिसुल्लम का बेटा योइद का बेटा पिदाया का बेटा कोलायाः का बेटा मआसिया का बेटा इसईल का बेटा जिसाया का।
८।९ और उसके पीछे गब्बई और सल्लई नव सौ अट्ठाईस। और ज़िकरी का बेटा यूईल उनका करोड़ा था और सनूआह का
१० बेटा यहूदा, नगर पर दूसरा था। याजकों में से योआयारिब
११ का बेटा जिदाया और याकिन। सिराया जो बेटा हिलकिया का बेटा मिसुल्लम का बेटा सादूक का बेटा मिरायूत का बेटा
१२ अहीतूब का ईश्वर के मन्दिर का अध्यक्ष था। और घर के कार्यकारी उनके भाई बंद आठ सौ बाईस और अदाया जो इरूहाम का बेटा पिलालिया का बेटा अंसी का बेटा ज़िकरिया
१३ का बेटा पाशूर का बेटा मलकिया का बेटा। और पितरों के मुखिया उसके भाईबन्द दो सौ बयालीस और अमाश्ई जो बेटा अज़ारील का बेटा अहासई का बेटा मिश्लिमूस का बेटा

१४ इम्मर का। और उनके भाईबन्द महावीर मनुष्य एक सौ अट्ठाईस और उनका कड़ोरा एक महत जन का बेटा जब्दीयेल।
१५ और लावियों में से भी शिमाइया जो बेटा हश्शूब का बेटा
१६ अज़रीकाम का बेटा हशाबिया का बेटा बुन्नी का। और लावियों में का मुखिया शब्बिसाई और जोसाबाद ईश्वर के मन्दिर के
१७ बाहर के कार्य पर थे। और आसाफ के बेटे ज़बदी के बेटे मीकाह का बेटा मतनिया प्रार्थना में धन्यवाद आरंभ करने को प्रधान था और अपने भाइयों में से बकबुकिया दूसरा था और अबदा जो बेटा शमूअ का बेटा गलाल का बेटा यदूसून
१८।१९ का। पवित्र नगर में सारे लावी दो सौ चौरासी थे। उनसे अधिक द्वारपाल अक्कूब और टलमून और उनके भाईबन्द
२० जो फाटकों के रक्षक थे एक सौ बहत्तर। इसराईल के और याजकों के और लावियों के उबरे हुए लोग यहूदा के सारे नगरों में हर एक जन अपने अपने अधिकार में रहा।
२१ परन्तु नथीमी ओफेल में बसे और ज़ीहा और गिसपा
२२ नथीमियों पर थे। और यिरोशलीम के लावियों का कड़ोरा भी ऊज़ी बेटा बानी का बेटा हशबिया का बेटा मतनिया का बेटा मीका का, आसाफ के बेटों में से गायक ईश्वर के मन्दिर
२३ के काम काज पर थे। क्योंकि उनके विषय में राजा की आज्ञा थी कि गायकों के लिये प्रतिदिन ठहराया हुआ भाग दिया
२४ जाय। और यहूदा के बेटे जरह के सन्तानों में से मिशीजबईल का बेटा पिसाहिया लोगों के सारे कार्यों के विषय में राजा के
२५ लग था। और गाओं के और उनके खेतों के कारण यहूदा के सन्तान के कितने लोग करियासअर्बः में और उसके गाओं में और दीबून और उसके गांव में और ज़कावजील और उसके
२६ गांव में। और यशूअ में और मूलादा में और बैतफलत में।
२७ और हसरशुआल में और बीरशबा और उसके गाओं में।
२८ और सिकलाग में और मिकोनाह और उसके गाओं में।

२९ और इनरम्मुन में और ज़रियाह में और यारमूस में।
३० और ज़ीनूआ अदुल्लम और उनके गाओं में लाकीश और उसके खेतों में और अज़ीकाह में और उसके गांओं में और उन्हों ने बीरशबा से लेके हिन्नूम की तराई लों बास किया।
३१ और बनियामीन के सन्तान भी गबा से मिकमाश में और
३२ अयीजा में और बैतईल में और उनके गांओं में। और
३३ अनातूस और नूब और अनानिया में। और हासूर रामाह
३४।३५ गिदईम। हादिद, सबूईम, निबल्लत। कार्यकारों की
३६ तराई लूद और ऊनू में। और लावियों के भाग यहूदा में और बनियामीन में रहे।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

याजक और लावियों के नाम जो ज़ोरबाबुल के साथ बाबुल से फिर आये थे १—९ प्रधान याजकों के वंश बंधुआई के पीछे से १०—२१ श्रेष्ठ लावियों के नाम २२—२६ भीत के स्थापने का समाचार २७—४३ भंडारियों को पोत लेने के लिये ठहराना ४४—४७।

१ अब ये याजक और लावी शलतिईल के बेटे ज़ोरबाबुल और यशूआ के साथ चढ़ आये सिराया, इरमिया, एज़रा,।
२।३ अमरिया, मल्लूक, हत्तूश,। शिकानियाह, रिहूम, मिरीमूस,।
४।५ इडू, गिन्नितू, अबीजा,। मियामीन, मआदियाह, बिलगाह,।
६।७ शिमाइया, और युआयरिब, यदाया,। सल्लू, आमोक, हिलकिया, जदाया, ये यशूआ के दिनों में याजकों के मुखिया
८ और उनके भाईबन्द थे। उनसे अधिक लावी, यशूआ, बिनुई, कदमईल, शिरेबिया, यहूदा, मतनिया, धन्यबाद करने पर
९ वुह और उसके भाईबन्द। और उनके भाई बकबूकिया और
१० ऊन्नी चौकी में उनके सम्मुख थे। और यशूआ से

यूआयाकिम उत्पन्न ऊआ और यूआयाकिम से भी इलियाशीब उत्पन्न ऊआ और इलियाशीब से युआयदा उत्पन्न ऊआ।
११ और युआयदा से यूनासान उत्पन्न ऊआ और यूनासान से
१२ यद्दुआ उत्पन्न ऊआ। और यूआयाकिम के दिनों में पितरों के मुखिये याजक थे सिराया से मिराया अरमिया हनानिया।
१३।१४ एज़रा से मिशुल्लम अमरिया से यहूहानान। मिलिकू से
१५ यूनासान शिबानिया से यूसफ। हारिम से अदना मिरायूस
१६ से हिलकाई। इडु से ज़िकरिया गिन्नसून से मिशुल्लम।
१७ आबीज़ा से ज़िकरी मिनियामिन से मोआदिया और पिलटाई।
१८।१९ बिलगाह से शमूअ शिमाया से यहूनासान। यूआयारिब
२० से मत्तिनाई ज़िदाया से ऊज़ी। सल्लई से कल्लई आमूक से
२१ ईबर। हिलकिया से हशाबिया जिदाया से नासानाईल।
२२ इलियाशीब के और यिहायदा के और यूहानान के और यद्दुआ के दिनों में लावी और याजक फारसी दारा के राज्य
२३ लों पितरों के मुखिये लिखे गये। लावी के बेटे पितरों के मुखिये कालविवरण की पुस्तक में इलियाशिब के बेटे यूहानान
२४ के समय लों लिखे गये। और लावियों के मुखिये हशाबिया और शिरेबिया और कदमईल का बेटा यशूआ उनके भाईबन्द उनके सन्मुख होते ऊए ईश्वर के जन दाऊद की आज्ञा के समान स्तुति करने और धन्य मानने के लिये चौकी के आगे
२५ चौकी। मत्तनिया, और बकबूकिया, ओबदिया, मिशुल्लम, तलमून, अकूब, द्वारपाल फाटकों की डेवढ़ी पर रखवाली
२६ करते थे। ये यूसादक के बेटे यिशुआ के बेटे युहायाकीम के दिनों में और नहीमियाह अध्यक्ष के और एज़रा याजक
२७ अध्यापक के दिनों में थे। और यिरोशलीम की भीत के स्थापने में उन्हों ने लावियों को उनके सारे स्थानों से खोजा जिसतें नवल और करताल और बीणा लिये ऊए धन्यवाद करते और गाते ऊए आनन्द से स्थापना करने के लिये यिरोशलीम

२८ में उन्हें लावें। और गायकों के बेटे यिरोश्लीम की चारों
२९ ओर के चौगान से और निटोफाता के गाओं से। और
गिलगाल के घर से भी और गीबा और अज़मावेस के चौगानों
से आप को एकट्ठा किया क्योंकि गायक यिरोश्लीम की चारों
३० ओर अपने लिये गांव बनाये थे। और याजकों ने और
लावियों ने अपने को पवित्र किया और लोगों को और फाटकों
३१ को और भीत को पवित्र किया। इस के पीछे मैं यहूदा के
अध्यक्षों को भीत पर लाया और धन्यवाद के लिये दो जथा
को ठहराया उनमें से एक जो भीतपर दहिने अलंग कूड़ा
३२ फाटक की ओर गई। और उनके पीछे होशाया और यहूदा
३३ के आधे अध्यक्ष गये। और अज़ारिया और एज़रा और
३४ मिशुल्लम। और यहूदा और बनियामीन और शिमाईया
३५ और इरमिया। और याजक के बेटों में से तुरही लिये हुए
अर्थात् ज़िकरिया जो यूनासान का बेटा शिमाइया का बेटा
मतानिया का बेटा मिकाया का बेटा ज़कर का बेटा असाफ का
३६ बेटा। और उसके भाई शिमाइया और अज़ारईल, मिलालई,
जिलालई, माअई, नासानाईल और यहूदा और हनानी
ईश्वर के जन दाऊद के बाजे की सामग्री हाथ में लेके गये और
३७ एज़रा अध्यापक उनके आगे आगे। और सोताफाटक से,
जो उनके सन्मुख था भीत पर जाने के स्थान में दाऊद के घर के
आगे अर्थात् जल फाटक लों पूर्ब्ब की ओर दाऊद के नगर की
३८ सीढ़ी पर चढ़ गये। और धन्यबाद की दूसरी जथा उनके
सन्मुख और मैं और आधे लोग भीत पर भट्ठों के गुम्मट के परे
३९ से चौड़ी भीत लों उनके पीछे पीछे गये। और अफराईम के
फाटक के आगे से और पुराने फाटक के आगे से और मछली
फाटक और हनानियेल के गुम्मट और मियाह के गुम्मट के आगे
से भेड़ फाटक लों और वे बंदीगृह के फाटक पर खड़े रह गये।
४० सो दोनों ने ठहर के और मैंने और अध्यक्ष के आधों ने ईश्वर

४१ के मन्दिर में धन्यबाद किया। और इलियाकिम, मआसिया, मिनियामीन, मिकीया, एलीओनाई, ज़करिया, हनानिया,
४२ याजक, तुरही लिये ऊए। और मआसिया और शिमाइया और इलियाज़र और ऊज़ी और इहोहानान और मलकिजा और ईलाम और आज़ेर और गायकों ने एज़राहिया कड़ोरा
४३ सहित अपना शब्द सुनाया। उस दिन उन्हों ने बड़े बड़े बलि भी चढ़ा के आनन्द किया क्योंकि ईश्वर ने बड़े आनन्द से उन्हें आनन्दित किया और उनकी पत्नियां और बालकों ने भी आनन्द किया यहांलों कि यिरोशलीम का आनन्द बऊत दूर लों सुना
४४ गया। उस समय में भंडारों के और भेटों के और नवान्न के और दसवें अंश के लिये कितने लोग कोठरियों पर ठहराये गये जिसतें उनमें नगरों के खेतों से ब्यवस्था के भाग याजकों और लावियों के लिये एकट्ठे करें क्योंकि याजकों और
४५ लावियों के लिये जो खड़े थे यहूदा ने आनन्द किया। और गायकों ने और द्वारपालों ने दाऊद की और उसके बेटे सुलेमान की आज्ञा के समान अपने ईश्वर की और पवित्रता की चौकी
४६ दिई। क्योंकि दाऊद के और आसाफ के पुरातन दिनों में गायकों के प्रधान ईश्वर के निमित्त स्तुति और धन्यबाद गाते थे।
४७ और ज़ेरबाबुल के दिनों में और नहीमियाह के दिनों में सारे इसराईल ने प्रति दिन अपना अपना भाग गायकों और द्वारपालों को दिया और उन्हों ने लावियों के लिये पवित्र किया और लावियों ने हारून के संतानों के लिये उसे पवित्र किया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर की ब्यवस्था सुन के लोगों का अन्यदेशियों से अलग होना १—३ नहीमियाह का टोबिया को मन्दिर से दूर करना ४—९ लावियों के भाग का ठिकाना १०—१४ बिश्राम को पवित्र करना

१५—२२ अन्यदेशी स्त्रियों से बिवाह करना नहीमियाह का रोकना २३—३१ ।

१ उसी दिन उन्हों ने लोगों के कान में मूसा की व्यवस्था सुनाई और उसमें यह लिखा पायागया कि अमूनी और मुआबी
२ ईश्वर की मंडली में कधी न आने पावें । क्योंकि उन्हों ने अन्न जल से इसराईल के सन्तानों से भेंट न किई परन्तु उन्हें स्राप देने को बलआम को उनके बिरुद्ध भाड़ा किया तथापि
३ हमारे ईश्वर ने उस स्राप को आशीष से पलट दिया । सो यों ज़ुआ कि जब उन्हों ने व्यवस्था सुनी तो सारी मिली ज़ुई मंडली
४ को इसराईल से अलग किया ।　　　　और इसके आगे हमारे ईश्वर के मंदिर की कोठरी के करोड़ा इलियाशीब
५ याजक ने टोबियाह से नाता किया था । और उसने उसके लिये एक बड़ी कोठरी सिद्ध किई थी जहां आगे को वे मांस की भेंट और गन्धरस और बर्त्तन, और अन्न का और नवीन दाखरस का और तेल का दसवां भाग आज्ञा के समान लावियों और गायकों और द्वारपालों और याजकों की भेंट धरीजाती थी ।
६ परन्तु इन सभों में मैं यिरोशलीम में नथा क्योंकि बाबुल के राजा अरतासर्सीस के बत्तीसवें बरस में मैं राजा पास गया और
७ कितने दिनों के पीछे मैं ने राजा की अति बिनती किई । और मैं यिरोशलीम में आया और जो बुराई इलियाशीब ने ईश्वर के मन्दिर के अंगनों में कोठरी सिद्ध करने में किई थी उसे मैं ने
८ बूझा । और उस्से मुझे बड़ा शोक ज़ुआ इस लिये मैं ने टोबियाह
९ की सारी सामग्री को उस कोठरी से निकाल फेंका । तब मैं ने आज्ञा किई और उन्हों ने कोठरियों को पवित्र किया और मैं ईश्वर के मन्दिर के बर्त्तन मांस की भेंट गन्धरस सहित
१० उसमें फेर लाया ।　　　　और मैं ने देख लिया कि लावियों के भाग उन्हें न दिये गये थे क्योंकि लावी और
११ गायक सेवक हर एक अपने अपने खेत को भागा था । तब

मैं ने अध्यक्षों से बिवाद करके कहा कि ईश्वर का मन्दिर क्यों त्यागा गया है? और मैं ने उन्हें एकट्ठे करके उन्हीं के पद पर
१२ स्थिर किया। तब सारे यहूदा अन्न और नये दाखरस और
१३ तेल का दसवां भाग भंडार में लाये। और मैं ने भंडारों पर, शिलीमिया याजक को और सादूक लेखक को और लावियों में से पिदाया को भंडारी किया और उनके लग मत्तानिया का बेटा ज़क्कूर के बेटे हानान को क्योंकि वे बिश्वस्त गिने जाते थे और
१४ उनके भाइयों को बांट देना उन पर था। हे मेरे ईश्वर इस विषय में मुझे स्मरण कर और मेरे सुकार्यों को जो मैं ने अपने ईश्वर के मन्दिर के लिये किया है मिटा न डाल।

१५ उन दिनों में मैं ने यहूदा में कितनों को बिश्राम में दाख का कोल्हू रौंदते और गठेरियां लाते और गदहे लादते और बिश्राम में दाखरस और दाख और गूलर और सारे बोझ यिरोशलीम में लाते भी देखा और जब उन्हों ने भोजन बेंचा
१६ उसी दिन मैं ने साक्षी दिई। उस में सूर के लोग भी बसते थे जो मछली और सारे प्रकार का माल लाके यहूदा के सन्तानों
१७ के हाथ यिरोशलीम में बिश्राम में बेंचते थे। तब मैं ने यहूदा के कुलीनों से बिवाद करके उन्हें कहा कि यह क्या बुरा काम है जो तुम करते हो और बिश्राम को अशुद्ध करते हो?।
१८ तुम्हारे पितरों ने ऐसा नहीं किया और हमारा ईश्वर हम पर और इस नगर पर यह सारी बुराई नहीं लाया? तद भी तुम बिश्राम दिन को अशुद्ध करके इसराईल पर अधिक कोप
१९ भड़काते हो। फेर यूं हुआ कि बिश्राम से आगे जब यिरोशलीम के फाटक अंधियारे होने लगे तब मैं ने फाटकों को बंद करने को दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों बिश्राम न बीते तब लों वे न खोले जायें और मैं ने अपने सेवकों को फाटकों पर रक्खा
२० जिसतें बिश्राम में कोई बोझ भीतर आने न पावे। इस लिये बैपारी और सब प्रकार के माल के बेचवैये एक दो बार

२१ यिरोशलीम के बाहर रात को टिकरहे। तब मैं ने उनके बिरुद्ध साक्षी दिई और उन्हें कहा कि तुम लोग किस लिये भीत के आगे टिकेहो यदि फेर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर हाथ
२२ डालोंगा तब से वे बिश्राम में फेर न आये। और लावियों को आप को पवित्र करने को और बिश्राम को पवित्र रखने के लिये आके फाटकों की रखवाली करने को मैं ने आज्ञा दिई हे मेरे ईश्वर इस में भी मुझे स्मरण कर और अपनी दया की
२३ बज़ताई से मुझ पर अनुग्रह कर। उन दिनों में मैं ने उन यहूदियों को भी देखा जिन्हों ने अशदूदी और अमूनी
२४ और मवाबी स्त्रियों से बिवाह किया। और उनके संतान आधी अशदूदी भाषा बोलते थे और यहूदी भाषा न बोलसक्ते
२५ थे परन्तु लोग लोग की भाषा के समान। तब मैं ने उनसे बिवाद किया और उन्हें श्राप दिया और उनमें से कितनों को थपड़ाया और उनके बाल उखाड़े और उनसे यों ईश्वर की किरिया लिई कि हम अपनी बेटियों को उनके बेटों को न देंगे और उनकी बेटियों को अपने बेटों के और अपने लिये
२६ न लेंगे। इसराईल के राजा सुलेमान ने इन इन बातों में पाप नहीं किया? तथापि बज़तसे जातिगणों में उसके समान कोई राजा न था जो अपने ईश्वर का प्रिय था और ईश्वर ने उसे सारे इसराईल पर राजा किया तथापि परदेशी स्त्रियों
२७ ने उसे भी पाप करवाया। यों सारे महा पाप करके तुम जिसतें हमारे ईश्वर के बिरुद्ध उपरी स्त्रियों से बिवाह कर करके
२८ अपराध करो क्या हम तुम्हारी सुनेंगे?। और इलियाशीब प्रधान याजक के बेटों में से यूआदा का एक बेटा, हूरूनी सनबलट का जवाई था इस लिये मैं ने अपने पास से उसे खेदा।
२९ हे मेरे ईश्वर उन्हें स्मरण कर इस कारण कि उन्हों ने याजकता को और याजकता के और लावियों के नियम को अशुद्ध किया
३० है। यों मैं ने सारे परदेशियों से उन्हें पवित्र किया और एक

याजकों की चौकी और लावी हर एक को अपने अपने कार्य में
३१ ठहराया। और समय समय ठहराए हुए काष्ठ की भेंट
के लिये और नवान्न के लिये हे मेरे ईश्वर भलाई के लिये मुझे
स्मरण कर।

एस्थर के विषय की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

अहासुइरस राजा का अपने महानों के लिये जेवनार बनाना १—९ दाखरस से मगन होके रानी को सबके आगे बुलाना १०—१२ और अपनी रानी वष्ती को त्यागना १३—१९।

१ अहासुइरस के समय में ऐसा हुआ (कि इस अहासुइरस ने हिंद से कोश लों एक सौ सताईस प्रदेशों पर राज्य किया)।
२ जब अहासुइरस शुशान भवन में अपने राज्य के सिंहासन
३ पर बैठा था। अपने राज्य के तीसरे बरस में उसने अपने सारे अध्यक्षों और अपने सेवकों के लिये अर्थात् फारस और माज़ी के पराक्रमों के लिये जेवनार बनाया, प्रदेशों के
४ कुलीन और अध्यक्ष उसके आगे थे। तब उसने अपने राज्य के विभव के धन को और अपने उत्तम महिमा की प्रतिष्ठा को बहुत दिन लों अर्थात् एक सौ अस्सी दिन लों दिखाया।
५ और जब वे दिन बीतगये तब राजा ने सारे लोगों के लिये जो शुशान भवन में पायेगये क्या बड़े क्या छोटे के लिये राजा के भवन को बाटिका के आंगन में सात दिन लों जेवनार
६ बनाया। जहां बैंजनी और झीने कपड़े की डोरियों से चांदी की कड़ियों से मर्मर के खम्भों पर श्वेत और हरे और नीले ओझल टंगे थे और नीले और श्वेत और काले मर्मर के
७ पटाव पर सोने चांदी के पलंग बिछे थे। और उन्हों ने सोने के

पात्रों में उन्हें पिलाया और पात्र भी भिन्न भिन्न डौल के थे और राजीय दाखरस राजा के महात्म के समान बहुताई से था।
८ और पीना व्यवस्था के समान बरबस न था क्योंकि राजा ने अपने घर के सारे प्रधानों के लिये ठहराया था कि हर एक
९ जन अपनी अपनी इच्छा के समान करे। वश्ती रानी ने भी स्त्रियों के लिये अहासुइरस राजा के राज मन्दिर में जेवनार
१० किया। सातवें दिन में जब राजा का मन दाखरस से मगन हुआ तब उसने सात शयन स्थान के प्रधानों को जो अहासुइरस राजा के आगे सेवा करते थे अर्थात् मिहूमान और बिस्था और हरबूना और बिगसा और अबगसा और
११ जीसार और करकस को आज्ञा किई। कि वश्ती रानी को राज मुकुट पहिने हुए राजा के आगे लाओ जिसतें लोगों को और अध्यक्षों को सुन्दरता दिखावे क्योंकि वुह सुन्दररूप थी।
१२ परन्तु शयन स्थान के प्रधान के द्वारा से राजा की आज्ञा पालन करने को वश्ती रानी ने नाह किया इस लिये राजा महा
१३ क्रोधित हुआ और वुह क्रोध से तपनेलगा। तब राजा ने बुद्धिमान मुहूर्त्तियों से कहा (क्योंकि नीति और विचार
१४ के सारे जानकारों के लिये राजा की यही रीति थी। और उसके दूसरे समीपी कारशीना और शीसार और अदमासा और तरशीश और मेरेस और मरसिना और मिमूकान फारस और माज़ी के सातों अध्यक्ष जो राजा के रूपदर्शी और
१५ राज्य में श्रेष्ठ बैठते थे)। कि नीति के समान वश्ती रानी से हम क्या करें क्योंकि उसने अहासुइरस राजा की आज्ञा शयन
१६ स्थान के प्रधानों के द्वारा से न मानी। तब मिमूकान ने राजा के और अध्यक्षों के आगे कहा कि वश्ती रानी ने केवल राजा का नहीं परन्तु सारे अध्यक्षों का भी और सारे लोगों का जो अहासुइरस राजा के प्रदेशों में हैं अपराध किया।
१७ क्योंकि रानी का यह कार्य समस्त स्त्रियों पर प्रगट होगा यहां

लों कि जब चर्चा होगी कि अहासुइरस राजा ने वश्ती रानी को अपने आगे लाने की आज्ञा किई परन्तु वुह न आई तो
१८ वे अपने अपने पति को तुच्छ जानेंगीं। फारस और माद़ी की स्त्री जिन्हों ने रानी की यह बात सुनी है सो भी राजा के सारे अध्यक्षों से कहेंगी यों निन्दित और कोप होगा।
१९ जो राजा को अच्छा लगे तो उसके आगे से राजीय आज्ञा निकले और वही फारस के और माद़ी की नीतों में लिखा जाय जिसतें न टले कि वश्ती रानी राजा अहासुइरस के आगे फेर न आवे और राजा उसके राजीय पद उसकी
२० संगी को जो उस्से भली है देवे। और जब राजा की किई ऊई आज्ञा उसके सारे राज्य में प्रचारी जाय (क्योंकि वुह बड़ा है) तब सारी पत्नियां क्या बड़ी क्या छोटी अपने अपने
२१ पति को प्रतिष्ठा देंगी। और यह बचन राजा की और उसके अध्यक्षों की दृष्टि में अच्छा लगा तब राजा ने मिमूकान के
२२ बचन के समान किया। क्योंकि उसने राजा के सारे प्रदेशों में पत्रियां भेजीं हर एक प्रदेश में उसके लिखने के समान और हर एक लोग को उसकी भाषा के समान जिसतें हर एक जन अपने अपने घर में प्रभुता करे और कि वुह हर एक लोगों की भाषा के समान प्रचारी जाय।

२ दूसरा पर्ब्ब।

वश्ती की सन्ती फारस के राज्य में एस्थर का रानी होना १—२०. मार्दिकई का राजा के प्राण को बचाना २१—२३।

१ इनबातों के पीछे जब अहासुइरस राजा का क्रोध धीमा ऊआ तब उसने वश्ती को और जो कि उसने कियाथा और जो कि
२ उसके बिषय में आज्ञा ऊई थी स्मरण किया। तब राजा के सेवक दासों ने उसे कहा कि राजा के लिये युवती सुन्दरी

३ कुमारियां ढूंढ़ी जायं। और राजा अपने राज्य के सारे प्रदेशों में प्रधानों को ठहरावें जिसतें वे सारी युवती सुन्दरी कुमारियों को शुशान भवन में राजा के शयन स्थान के प्रधान स्त्रियों के रक्षक हजी के हाथ स्त्रियों के घर में एकट्ठे करें और पवित्र
४ करने की वस्तु उन्हें दिई जाय। और जो कन्या राजा को अच्छी लगे सो वशती की सन्ती रानी होय और राजा उस
५ बात से प्रसन्न ऊआ और उसने वैसाही किया। अब शुशान भवन में मार्दिकई नाम एक यहूदी था जो बनियामीनी जाईर का बेटा था जो शमई का बेटा जो कीश का बेटा था।
६ जो उस बन्धुआई में यिरोशलीम से उठायेगये थे जो यहूदा के राजा यकूनिया के संग उठायेगये जिन्हें बाबुल का राजा
७ नबूकदनज़ार लेगया था। उसने अपने चचा की बेटी हदसाह अर्थात् एस्थर को पाला था क्योंकि उसके माता पिता नथे वुह कन्या सुडौल और सुन्दररूप थी जिसे मार्दिकई ने जब उसके
८ माता पिता मरगये अपनीही लड़की करलिया। तब यों ऊआ कि जब राजा की आज्ञा और उसका ठहराया ऊआ सुना गया और जब बऊत कन्या शुशान भवन में हिजई के वश में एकट्ठी किईगईं तब एस्थर भी स्त्रियों के रक्षक हिजई
९ को सोंपी जाके राजा के भवन में पऊंचाई गई। और वुह कन्या उसे अच्छीलगी और उसने उसे अनुग्रह पाया, उसने उसे पवित्र करने की वस्तु और उसके भाग उसे दिये और राजा के भवन से उचित के समान सात दासी उसे दिईगईं और उसने उसे और उसकी दासियों को स्त्रियों के मन्दिर के अच्छे से
१० अच्छा स्थान दिया। एस्थर ने अपने लोगों को और कुटुम्बों को न बताया क्योंकि मार्दिकई ने उसे जता दिया था कि
११ न बतावे। और प्रतिदिन मार्दिकई स्त्रियों के मन्दिर के भवन के आगे फिरता था जिसतें एस्थर का कुशल बूझे और कि
१२ उसका क्या होगा। और जब स्त्रियों की रीतिके

समान बारह मास उसके लिये बीतते थे और हर एक कन्या की पारी अहासुइरस राजा कने जाने को आती थी (क्योंकि उन्हें पवित्र करने के दिन यों थे मुर के तेल से छः मास और सुगन्धों से और स्त्रियों की पवित्र करने की वस्तु से
१३ छः मास)। तब यों कन्या राजा कने आती थी और जो जो वस्तु वुह चाहती थी सो स्त्रियों के मन्दिर में से राजा के घर में
१४ जाने को उसे दिई जाती थी। सांझ को वुह जाती थी और बिहान को स्त्रियों के दूसरे मन्दिर में शाश गाज़ राजा के शयन स्थान के प्रधान, जो सहेलियों का रक्षक था उसके बश में फिर जाती थी और जबलों राजा उसे मगन न होता था और कि वुह नाम लेके पुकारी न जाती थी राजा कने फेर न जाती थी।
१५ और जब मार्दिकई के चचा अबिहाईल की लड़की एस्थर की, जिसे मार्दिकई ने अपनी लड़की कर रखा था राजा कने जाने को पारी आई जो कुछ राजा के शयन स्थान के प्रधान स्त्रियों के रक्षक हजई ने ठहराया था अधिक न चाहा और सभों की दृष्टि में, जो उसे देखता था एस्थर ने अनुग्रह पाया।
१६ सो दसवें मास में जो तबीस मास है एस्थर राज भवन में राजा अहासुइरस कने पहुंचाई गई जो उसके राज्य का सातवां
१७ बरस था। और राजा ने सारी स्त्रियों से एस्थर को अधिक प्यार किया और उसने सारी कुंआरियों से उसकी दृष्टि में अधिक अनुग्रह और कृपा पाई यहां लों कि उसने राज मुकुट उसके सिर पर रखदिया और वश्ती की सन्ती उसे रानी
१८ किया। तब राजा ने अपने सारे अध्यक्षों और सेवकों के लिये एक बड़ा जेवनार किया अर्थात् एस्थर का जेवनार और उसने प्रदेशों को बिश्राम दिया और राजा के महात्म के
१९ समान दान किया। और जब कुमारी दूसरे बार एकट्ठी हुईं
२० तब मार्दिकई राजा की डेवढ़ी पर बैठा था। और मार्दिकई के चिताने के समान एस्थर ने अपने कुटुम्बों और लोगों को

अबलों न बताया क्योंकि एस्थर मार्दिकई की आज्ञा को उबभी
२१ ऐसो मानती थी जैसा जब उसे पालीजाती थी। उनदिनों
में जब मार्दिकई राजा के फाटक पर बैठता था राजा के शयन
स्थान के दो प्रधान अर्थात् डेवढ़ी के रक्षकों में से बिगसान और
तेरेश क्रुद्ध होके चाहते थे कि राजा अहासुइरस पर हाथ
२२ डालें। और यह बात मार्दिकई को जानी गई जिसने एस्थर
रानी को कहा और एस्थर ने मर्दिकई के नाम से राजा को
२३ जनाया। फेर जब इस बात की पूछ पाछ ऊई तो खुलगई इस
लिये दोनों एक पेड़ पर टांगेगये और वुह राजा के काल
के समाचार की पुस्तक में लिखागया।

३ तीसरा पर्ब्ब।

हामान का राजमंत्री होना और मार्दिकई का
उसे प्रणाम न करना १—४ हामान का यहूदियों
के कुल को नाश करने की जुगत करना ५—६
राजा से उसी बात की आज्ञा पानी ७—१३ उस
आज्ञा का समस्त राज्य में प्रचारा जाना १४—१५।

१ इन बातों के पीछे अहासुइरस राजा ने अगागी हम्मिदासा के
बेटे हामान को बढ़ाया और उसे महान किया और उसके
संग के सारे अध्यक्षों से उसके आसन को ऊंचा किया।
२ और राजा के सारे सेवक जो राजा की डेवढ़ी पर रहते थे
हामान के आगे झुकते थे और उसे प्रतिष्ठा देते थे क्योंकि
राजा ने उसके विषय में वैसीही आज्ञा किई थी परन्तु
३ मार्दिकई न झुकता था न प्रतिष्ठा देता था। तब राजा के
सेवकों ने जो राजा की ड़ेवढ़ी पर रहते थे मार्दिकई को कहा
४ कि तू क्यों राजा की आज्ञा उलंघन करता है। सो यों ऊआ कि
जब वे प्रति दिन उसे कहते रहे और उसने उनकी न मानी
तब मार्दिकई की बात उन्हों ने हामान से बूझने को कहा कि

५ मार्दिकई की बात ठहरेगी कि नहीं क्योंकि उसने । कहा था कि मैं यहूदी हों और जब हामान ने देखा कि मार्दिकई न झुकता है न मुझे प्रतिष्ठा देता है तब हामान कोप से भर गया।
६ और उसने केवल मार्दिकई पर हाथ डालना तुच्छ समझा क्योंकि उन्हों ने उसे मार्दिकई के लोगों को बताया था इस लिये अहासुइरस के सारे राज्य के सर्व्वत्र हामान ने सारे यहूदियों को अर्थात् मार्दिकई के लोगों को नष्ट करने के लिये चिंता
७ किई। अहासुइरस राजा के बारहवें बरस के पहिले मास में जो नीसान मास है दिन दिन और मास मास बारह वें लों जो अदार मास है उन्हों ने हामान के आगे चिट्ठी
८ डाली किई। तब हामान ने अहासुइरस राजा से कहा कि आप के राज्य के सारे प्रदेशों के लोगों में कोई लोग छितरेहुए और फैलेहुए हैं और उनकी व्यवस्था सारे लोगों से भिन्न है और वे राजा की व्यवस्था भी नहीं मानते हैं इसलिये उनके
९ सहने में राजा को लाभ न होगा। जो राजा की इच्छा होय तो उन्हें नाश करना लिखाजाय और जो इस काम पर हैं मैं, उनके हाथ में दस सहस्र तोड़े चांदी राजा के भंडारों में
१० डालने को देउंगा। तब राजा ने अपने हाथ से अंगूठी निकाल के यहूदियों के बैरी अगागी हम्मदसा के बेटे हामान को दिई।
११ और राजा ने हामान से कहा कि चांदी और लोग भी तुझे
१२ दियेगये हैं जो चाहे सो उनसे कर। तब राजा के लेखक पहिले मास के तेरहवीं तिथि में बुलायेगये और हामान की सारी आज्ञा के समान हर एक प्रदेश पर के राजाध्यक्षों और अध्यक्षों के और हर एक प्रदेश के हर एक लोगों के प्रधानों के हर एक लोगों को उनको भाषा के समान उस लिखने के तुल्य लिखागया और वुह अहासुइरस राजा के नाम से लिखागया और राजा की अंगूठी से छाप कियागया।
१३ और पत्रियां डाकियों के हाथों से राजा के सारे प्रदेशों में

भेजीगईं कि क्या तरुण क्या वृद्ध क्या स्त्री सारे यहूदियों को एकही दिन में अर्थात् बारहवें मास की तेरहवीं तिथि में जो अदार मास है नाश करो, बधन करो, और नष्ट कराओ
१४ और उनकी संपत्ति लूट लो। हर एक प्रदेश के सारे लोगों के लिये लिखेऊए का उतारा आज्ञा के लिये प्रचारागया जिसतें
१५ उस दिन के लिये लैसहोर हैं। राजा की आज्ञा की शीघ्रता के कारण डांकिये निकल चले और आज्ञा शुशान भवन में दिईगई थी और राजा और हामान पीने के लिये बैठगये परन्तु शुशान नगर व्याकुल ऊआ।

४ चौथा पर्ब्ब।

सारे यहूदीयों का बिलाप करना १—४ मार्दिकई का इसबात के पलटने को मंत्र देना ५—१४ रानी का मंत्र मानलेना १५—१७।

१ जो कि कियागया था जब मार्दिकई ने देखा तो उसने अपने कपड़े फाड़े और राख सहित टाट पहिन के बाहर नगर के
२ मध्य में जाके चिल्ला चिल्ला बिलख बिलख रोया। और राजा की डेवढ़ी के भी आगे आया क्योंकि टाट पहिने कोई
३ राजा की डेवढ़ी से न जाता था। और हर एक प्रदेश में जहां कहीं राजा की आज्ञा और ठहरायाऊआ पऊंचता था तहां यहूदियों में बड़ा बिलाप और ब्रत और रोना और पीटना होता था और राख और टाट पर बैठगये।
४ तब एस्थर की दासियां और उसके नपुंसक आके उसे बोले तब रानी अत्यंत उदासीन ऊई और मार्दिकई का टाट लेलेने को और उसे पहिनाने को बस्त्र भेजा परन्तु उसने न लिया।
५ तब एस्थर ने राजा के शयन स्थान के प्रधान हतच को जिसे उसने उसके आगे रक्खा था बुलवाया और आज्ञा कर के
६ मार्दिकई को पुछवा भेजा कि क्या है और किस लिये। सो

हतच निकल के नगर के सड़क में, जो राजा की डेवढ़ी के
७ आगे था मार्दिकई कने गया। और सब जो उस पर बीता था
और यहूदियों को नष्ट करने के कारण जो रोकड़ हामान ने
राजा के भंडारों में देने को प्रण किया था सो मार्दिकई ने उसे
८ कहा। और उसने आज्ञा के लिखेहुए का उतारा भी, जो
उन्हें नष्ट करने को शुशान में दियागया था उसने उसे दिया
कि एस्थर को दिखावे और सुनादेवे और उसे जता देवे कि
अपने लोगों के कारण बिनती और प्रार्थना करने के लिये
९ राजा के पास जाय। और हतच ने आके एस्थर को मार्दिकई
१० की बातें सुनाईं। फेर एस्थर ने हतच से कहा और
११ मार्दिकई के लिये उसे आज्ञा दिई। कि राजा के सारे दास
और राजा के प्रदेश के लोग जानते हैं कि क्या स्त्री क्या पुरुष
जो कोई बिना बुलाये राजा पास जाय उसके बधन करने की
एकही व्यवस्था है केवल वुह जिसके लिये राजा सोने का
राजदंड उठावे जिसतें वुह जीये परन्तु तीस दिन हुए कि मैं
१२ राजा कने बुलाई न गई। और उन्हों ने मार्दिकई को एस्थर
१३ की बातें कहीं। तब मार्दिकई ने आज्ञा किई कि एस्थर को
उत्तर देओ कि अपने मन में न समझिये कि सारे यहूदियों से
१४ अधिक राजा के भवन में मैं बचोंगी। क्योंकि यदि आप इस
समय में सर्वथा चुपकी हो रहेंगी तो जीवन और बचाव
यहूदियों के लिये अन्त से उदय होगा परन्तु आप अपने
पितरों के घराने सहित नष्ट हो जायेंगी और कौन जानता है
१५ कि ऐसे समय के लिये आप ने राज्य पाया है तब
१६ एस्थर ने मार्दिकई कने फेर कहला भेजा। कि जा शुशान में
जितने यहूदी पाये जायें उन्हें एकट्ठे कर और मेरे लिये ब्रत कर
और रात दिन तीन दिन लों न खा न पी मैं और मेरी
दासियां भी ब्रत रखेंगी और यों मैं राजा कने जाऊंगी यह

१७ व्यवस्था की रीति नहीं है यदि नष्ट होऊं तो होऊं। सो मार्दिकई ने जाके एस्थर की आज्ञा के समान सबकुछ किया।

५ पाचवां पर्ब्ब ।

राजा का रानी पर कृपाल होना रानी का राजा और हामान का नेउंता करना १—८ मार्दिकई के लिये हामान का फांसी की लकड़ी का खड़ा करना ९—१४।

१ तीसरे दिन ऐसा हुआ कि एस्थर राजीय पहिरावा पहिन राजा के भवन के आंगन के भीतर राज मन्दिर के साम्ने खड़ी हुई और राजा राज मन्दिर में अपने राजीय सिंहासन २ पर भवन के फाटक के सन्मुख बैठा था। फिर ऐसा हुआ कि जब राजा ने एस्थर रानी को आंगन में खड़ी देखा उसने उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाया और राजा ने एस्थर के लिये अपने हाथ का सोनोला राजदंड बढ़ाया सो एस्थर ने बढ़ ३ के राजदंड के टोंक को छूआ। तब राजा ने उसे कहा कि हे एस्थर रानी तू क्या चाहती है? और तेरी क्या बिनती ४ आधा राज्य लों तुझे दिया जायगा। तब एस्थर ने उत्तर दिया कि यदि राजा की इच्छा होय तो राजा और हामान आज ५ मेरे सिद्ध कियेहुए नेंउते में आवें। तब राजा ने कहा कि हामान को शीघ्र कराओ कि एस्थर के कहे के समान करे सो राजा और हामान एस्थर के सिद्ध किये हुए जेवनार में आये।

६ और राजा ने दाख रस के पीने के समय में एस्थर से कहा कि तेरी बिनती क्या? वुह तुझे दिया जायगा और तेरी ७ इच्छा क्या? आधे राज्य लों किया जायगा। तब एस्थर ने उत्तर ८ देके कहा कि मेरी बिनती और याचना यह। जो राजा की दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है और यदि मेरी बिनती सुन्ने को और मेरी याचना पूरी करने को राजा को इच्छा होय तो राजा और हामान उस जेवनार में आवें जो मैं उनके लिये सिद्ध

करोंगी और राजा के कहे के समान मैं कल कहोंगी।

९ उस दिन हामान आल्हादित और मगन होके बाहर गया परन्तु जब हामान ने राजा के फाटक पर मार्दिकई को देखा कि वुह खड़ा न ऊआ और न उसके लिये टला तब वुह मार्दिकई

१० पर जलजलाहट से भर गया। तथापि हामान ने आप को रोक रक्खा और घर में आ अपने मित्रों को और अपनी पत्नी

११ जेरेश को वुलवा भेजा। और हामान ने उनसे अपने धन की महिमा और अपने बालकों की बऊताई और सब जहांलों राजा ने उसे बढ़ाया था और किस रीति से उसने उसे अध्यक्षों

१२ से और राजा के सेवकों से महान किया था सुनाया। और हामान ने यह भी कहा हां एस्थर रानी ने राजा के साथ अपने से सिद्ध किये ऊए जेवनार में मुझे छोड़ किसी जन को आने नहीं दिया और कल भी राजा के साथ उसके यहां मेरा

१३ नेउंता है। परन्तु जबलों मैं राजा के फाटक पर यहूदी मार्दिकई

१४ को देखता हों यह सब मेरे लिये कुछ नहीं। तब उसकी पत्नी जेरेश और उसके सारे मित्रों ने उसे कहा कि पचास हाथ ऊंची फांसी की लकड़ी खड़ी किई जाय और कल राजा से कह कि मार्दिकई उस पर टांगा जाय तब तू आनन्द से राजा के संग जेवनार में जाइयो और उस्से हामान प्रसन्न ऊआ और उसने फांसी की लकड़ी बनवाई।

६ क्ठवां पर्ब्ब ।

राजा पर मार्दिकई का सुकार्य खुलना १—३ उसके घात के लिये हामान का आना और मार्दिकई का प्रतिष्ठा पाना ४—११ हामान का अपने नष्ट होने का सन्देश पाना १२—१४।

१ राजा की नींद उस रात जाती रही और उसने आज्ञा करके काल विवरण की लिखीऊई पुस्तक मंगवाई और वे राजा के

२ आगे पढ़ी गई। और उसमें यह लिखा हुआ पायागया कि राजा के शयन स्थान के दो प्रधान द्वारपालक अर्थात् बिगसाना और तेरेश जिन्हों ने राजा अहासुइरस पर हाथ बढ़ाने को
३ चाहा और मार्दिकई ने उसे प्रगट किया था। और राजा ने कहा कि इस बात के लिये मार्दिकई का क्या प्रताप और क्या प्रतिष्ठा हुई? तब राजा के सेवक दासों ने उसे कहा कि उसके
४ लिये कुछ न हुआ। तब राजा ने कहा कि आंगन में कौन है? इतने में हामान राज भवन के बाहर के आंगन में आया जिसतें राजा से कहि के मार्दिकई को उस फांसी की लकड़ी
५ पर जो उसने सिद्ध किई थी टांगदेवे। राजा के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हामान आंगन में खड़ा है तब राजा ने
६ कहा कि वुह भीतर आवे। तब हामान भीतर आया और राजा ने उसे कहा कि जिसे राजा प्रतिष्ठा देने चाहता है उसके लिये क्या किया जाय? अब हामान ने अपने मन में समझा कि मुझे अधिक राजा किसे प्रतिष्ठा देने को चाहेगा?।
७ हामान ने राजा को उत्तर दिया कि जिसकी प्रतिष्ठा में राजा
८ आनन्दित है। उसके लिये राजीय वस्त्र, जो राजा आप पहिनते हैं और जिस घोड़े पर राजा आप चढ़ते हैं और राजीय मुकुट जो आप के सिर पर धराजाता है मंगवाया
९ जाय। और वुह बस्त्र और घोड़े राजा के अत्यंत कुलीन अध्यक्षों में से एक को सौंपे जायें कि वुह उस मनुष्य को बिभूषित करे जिसे राजा प्रतिष्ठा देने में आनन्दित है और उसे घोड़े पर नगर के सड़क में से लेजाये और उसके आगे प्रचारे कि जिस प्रतिष्ठा में राजा आनन्दित है उसके लिये ऐसाही
१० किया जायगा। तब राजा ने हामान से कहा कि चटक कर और अपने कहने के समान वस्त्र और घोड़ा ले और यहूदी मार्दिकई को, जो राजा की डेवढ़ी पर बैठा है वैसाही कर
११ जैसा तू ने कहा है उसे तनिक न घटे। तब हामान ने वुह

वस्त्र और घोड़ा लेके मार्दिकई को विभूषित किया और उसे घोड़े पर नगर के सड़क में से लेगया और उसके आगे प्रचारा कि जिसकी प्रतिष्ठा में राजा आनन्दित है उसके लिये ऐसाही
१२ किया जायगा। और मार्दिकई फेर राजा की डेवढ़ी पर आया परन्तु हामान बिलाप करते और सिर ढांपे हुए
१३ अपने घर उतावली से गया। जो जो उस पर बीता था सो हामान ने अपनी पत्नी जेरेश से और अपने सारे मित्रों से कहा तब उसके बुद्धिमानों ने और उसकी पत्नी जेरेश ने उसे कहा कि यदि मार्दिकई जिसके आगे तू ध्वस्त होने लगा यहूदियों के बंश में से होवे तो तू उस पर प्रबल न होगा
१४ परन्तु निश्चय उसके आगे ध्वस्त होगा और जबलों वे उससे ये बातें कर रहे थे राजा के शयन स्थान के प्रधानों ने एस्थर के बनाये हुए जेवनार में हामान को लेजाने के लिये शीघ्रता किई।

७ सातवां पर्ब्ब ।

अपने जेवनार में एस्थर का राजा की बिनती करना १—४ और हामान पर अपबाद करना ५—६ हामान का फांसी पाना ७—१०।

१ सो एस्थर रानी के साथ पान करने को राजा और हामान
२ आये। और दूसरे दिन दाखरस पीने के समय में राजा ने एस्थर से फेर पूछा कि हे रानी एस्थर तेरी बिनती क्या? सो तेरे लिये किई जायगी और तू क्या चाहती है? सो आधे राज्य
३ लों किया जायगा। तब एस्थर रानी ने उत्तर देके कहा कि हे राजा यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और यदि राजा की इच्छा होय तो मेरा प्राण मेरी बिनती में और मेरे
४ मांगने में मेरे लोग मुझे दिये जायं। क्योंकि मैं और मेरे लोग बेचे गये जिसतें नाश और घात और नष्ट किये जायें परन्तु यदि हम लोग दास और दासी में बेचे जाते तो मैं

चुपकी रहती यद्यपि बैरी राजा की घटती सुधार न सक्ता ।
५ तब अहासुइरस राजा ने उत्तर देके एस्थर रानी से कहा कि किसके मन ने उसे ऐसा करने को
६ फुलाया है? वुह कौन है और कहां है । तब एस्थर ने कहा कि यह दुष्ट हामान वुह बैरी जन है तब हामान राजा और
७ रानी के आगे डरगया । तब राजा कोपित हो दाखरस के पान से उठके राज भवन की बाटिका में गया और हामान अपने प्राण के लिये एस्थर रानी से बिनती करने को खड़ा हुआ क्योंकि उसने देखा कि राजा की ओर से
८ मेरे लिये बुराई ठहराई गई । तब राजा भवन की बाटिका में से दाखरस के पान स्थान में फिर आया और जिस पर एस्थर थी हामान उस बिछौने पर गिरा था तब राजा ने कहा कि घर में मेरे आगे वुह रानी पर भी बरबस करेगा, यह बचन राजा के मुंह से निकलतेही उन्हों ने हामान का
९ मुंह ढांपा । तब शयन स्थान के एक प्रधान हरबूना ने राजा के आगे कहा कि पचास हाथ ऊंची एक फांसी की लकड़ी भी देखिये जिसे हामान ने अपने घर में मार्दिकई के लिये खड़ी कर रखी थी जिसने राजा के लिये भला कहा था तब राजा
१० ने कहा कि उसी पर इसे टांगो । सो उन्हों ने हामान को उसी लकड़ी पर फांसी दिई जो उसने मार्दिकई के लिये खड़ी कर रक्खी थी तब राजा का कोप धीमा हुआ ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

हामान की संपत्ति का एस्थर और मार्दिकई को दियाजाना १—२ अपने कुल के लिये एस्थर का बिनती करनी ३—६ उनके बचाव के लिये यहूदियों को आज्ञा करनी ७—१४ यहूदियों का बड़ा आनन्द होना १५—१७ ।

१ उसी दिन अहासुइरस राजा ने एस्थर को यहूदियों के बैरी हामान का घर दिया और मार्दिकई राजा के आगे आया क्योंकि जो कुछ वुह उसका था एस्थर ने कहि दिया था।
२ और राजा ने अपने हाथ की अंगूठी जो उसने हामान से लेलिई थी निकाल के मार्दिकई को दिई और एस्थर ने हामान
३ के घर पर मार्दिकई को ठहराया। और एस्थर ने राजा के चरणों पर गिर के और रोरो के उसकी बिनती किई कि अगागी हामान की दुष्टता और उसकी जुगत जो उसने
४ यहूदियों के बिरुद्ध जुगत किई थी सो दूर किईजाय। तब राजा ने एस्थर की ओर राजदंड बढ़ाया तब एस्थर राजा के
५ आगे उठ खड़ीहुई। और बोली कि यदि राजा की इच्छा होय और यदि मैं ने उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और यह बात राजा के आगे ठीक होवे और मैं उसकी दृष्टि में अच्छी लगों तो अगागी हम्मिदासा के बेटे हामान की जुगत के मंत्र जो उसने राजा के सारे प्रदेशों के यहूदियों को नष्ट
६ करने को लिखा था उन्हें पलटने को लिखाजाय। क्योंकि जो बुराई मेरे लोगों पर पड़ेगी मैं उसे क्योंकर देख सकों? अथवा अपने कुटुम्बों का नष्ट होना मैं क्योंकर देखसकों?।
७ तब अहासुइरस राजा ने एस्थर रानी से और यहूदी मार्दिकई से कहा कि देख मैं ने हामान का घर एस्थर को दिया है और उन्हों ने उसे फांसी की लकड़ियों पर इस
८ कारण टांगा कि उसने यहूदियों पर हाथ डाला जैसा तुम्हें अच्छा लगे राजा के नाम से तुम भी यहूदियों के लिये लिखो और राजा की अंगूठी से छाप करो क्योंकि जो लिखा हुआ राजा के नाम से लिखागया है और राजा की अंगूठी से
९ छापागया है उसे कोई पलट नहीं सक्ता। तब उसी समय तीसरे मास में अर्थात् सिवान मास की तेईसवीं तिथि में राजा के लेखक बुलाये गये और मार्दिकई की सारी आज्ञा के समान

प्रदेशों के यहूदियों को और राजाध्यक्षों को और नायकों को और प्रधानों को जो हिंद से कूबश्लों हैं एक सौ सताइस प्रदेश, उस लिखने के समान हर एक प्रदेश को और उनकी भाषा के समान हर एक लोग को और यहूदियों को उनके
१० लिखने और उनकी भाषा के समान लिखा गया। और उसने अहासुइरस राजा के नाम से लिखा और राजा की अंगूठी से छाप किया और घोड़े और खच्चर और ऊंट और सांडनियों
११। १२ के चढ़वैयों से पत्रियां दौड़ाईं। जिसमें राजा ने हर एक नगर के यहूदियों को अपने प्राण के लिये एकट्ठे होने को जिसतें लोगों के सारे पराक्रम और प्रदेश जो उन पर हल्ला करें क्या स्त्री क्या बालक अहासुइरस राजा के सारे प्रदेशों में बारहवें मास की जो अदार मास है तेरहवीं तिथि में एकही दिन में नाश करने और घात करने और नष्ट करवाने को और संपत्ति
१३ लूटने को खड़ा होने को कुट्टी दिई। लिखेऊए का उतारा हर एक प्रदेश में देने को सारे लोगों के लिये प्रगट कियागया और जिसतें यहूदी अपने बैरियों से पलटा लेने को उस दिन में
१४ लैस हो रहें। सो खच्चर के और ऊंट के चढ़वैये दौड़हे राजा की आज्ञा सें वेग और उभाड़े जाके निकलगये और
१५ शुशान भवन में आज्ञा दिईगई थी। और मार्दिकई नीला और श्वेत राजवस्त्र और सोने का एक महा मुकुट बैंजनी और झीना वस्त्र पहिने ऊए राजा के आगे से निकल गया और शुशान नगर आनन्दित और आल्हादित ऊआ।
१६ यहूदियों को ज्योति और आनन्द और आल्हाद और प्रतिष्ठा
१७ ऊई। और हर एक प्रदेश में और हर एक नगर में जहां कहीं राजा की आज्ञा और ठहरायाऊआ पऊंचता था वहां पर यहूदियों को आनन्द और आल्हाद और जेवनार और मंगल दिन होता था और यहूदियों के डरके मारे देश के बऊत लोग यहूदी ऊए।

हामान के दस बेटों का फांसी पाना और यहूदियों का आनन्दित होना ७—१९ उन्हीं दिनों में बरस बरस पर्ब्ब रखना २०—३२।

१ अब बारहवें मास जो अदार मास है उसकी तेरहवीं तिथि में जब राजा की आज्ञा और उसका ठहराया ज़आ बजालाने को पास आ पज़ंचा जिसमें यहूदियों के बैरी उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे यद्यपि वुह पलटा गया था कि यहूदियों ने अपने बैरियों पर प्रभुता पाई २ थी)। तब अहासुइरस राजा के सारे प्रदेशों के सारे नगरों में, जो उनकी बुराई चाहते थे उन पर हाथ डालने को यहूदी एकट्ठे ज़ए और कोई उनका साम्ना न करसक्ता ३ था क्योंकि उनका भय सारे लोगों पर पड़ा। और प्रदेश के सारे अध्यक्षों ने और राजाध्यक्षों ने और नायकों ने और राजा के कार्यकारियों ने यहूदियों का उपकार किया इस कारण कि मार्दिकई का भय उन पर पड़ा। ४ क्योंकि मार्दिकई राजभवन में महान ज़आ और उसकी कीर्त्ति सारे प्रदेशों में फैलगई क्योंकि यह मार्दिकई बढ़ता ५ गया। यों यहूदियों ने तलवार की मार से और जुझावने से और नष्ट से अपने सारे बैरियों को मारा और अपनी ६ इच्छा के समान अपने बैरियों से किया। और शुशान भवन में यहूदियों ने पांच सौ मनुष्यों को मार के नष्ट ७ किया। और परशनदासा और दलफून और अस ८ पासा। और पूरासा और अदलिया और अरीदासा। ९ और परमश्ता और अरीसई और अरीदई और वजी १० जासा। अर्थात यहूदियों के बैरी हम्मिदासा के बेटे हामान के दस बेटों को उन्हों ने घात किया परन्तु लूट पर उन्हों ११ ने हाथ न डाला। उस दिन शुशान भवन में जितने मारे गये उनकी गिनती राजा के आगे पज़ंची।

१२ फिर राजा ने एस्थर रानी से कहा कि यहूदियों ने शुशान भवन में पांच सौ मनुष्यों को और हामान के दस बेटों को घात करके नष्ट किया और राजा के रहे हुए प्रदेशों में उन्हों ने क्या किया होगा? अब तेरी बिनती क्या? सो मुझे दिया जायगा अथवा तू और क्या मांगती
१३ है? सो किया जायगा। तब एस्थर ने कहा कि यदि राजा की इच्छा होय तो शुशान के यहूदियों को आज के ठहराने के समान कल भी दियाजाय और लोग हामान
१४ के दस बेटों को फांसी की लकड़ी पर टांगें। फिर राजा ने ऐसाही होने को आज्ञा दिई और शुशान में वुह आज्ञा दिईगई और उन्हों ने हामान के दस बेटों को
१५ फांसी दिई। क्योंकि शुशान के यहूदी अदार मास के चौदहवें दिन में भी एकट्ठे हुए और शुशान में तीन सौ जनों को घात किया परंतु लूट पर उन्हों ने हाथ न डाला।
१६ परंतु राजा के प्रदेशों के यहूदी अपने प्राण के लिये एकट्ठे हुए और अपने वैरियों से चैन पाया और अपने शत्रुन के पचहत्तर सहस्र जनों को घात किया परंतु लूट पर हाथ
१७ नडाले। अदार मास के तेरहवें और चौदहवें दिन उन्हों ने चैन पाया और उसे खाने पीने और आनन्द
१८ करने का दिन किया। परंतु उसके तेरहवें और चौदहवें दिन शुशान के यहूदी एकट्ठे हुए और उसके पंदरहवें विश्राम किया और उसे खाने पीने और आनन्द का दिन
१९ किया। इस लिये गांओं के यहूदियों ने जो अभीत नगरों में रहते थे अदार मास की चौदहवीं तिथि को खाने पीने और आनन्द करने और मंगल दिन और आपुस में बैना
२० भेजने का किया। और मार्दिकई ने अहासुइरस राजा के पास के और दूर के सारे प्रदेशों में सारे
२१ यहूदियों के पास इन बातों की पत्रियां लिख भेजीं। कि

उन में यह बात ठहर जाय कि वे अदार मास की चौदहवीं
२२ और पंदरहवीं तिथि को बरस बरस माना करें। कि
उन दिनों में यहूदियों ने अपने शत्रुन से चैन पाया और
वुह मास उनके लिये शोक से आनन्द और बिलाप से मंगल
दिन ऊआ जिसतें वे उन्हें खाने पीने और आनन्द करने
और आपुस में बैना भेजने और दरिद्रों को दान देने के
२३ दिन करें। और जैसा उन्हों ने आरंभ किया मार्दिकई के
लिखने के समान यहूदियों ने वैसाही करने को मान लिया।
२४ इस कारण कि अगागी हम्मिदासा के बेटे यहूदियों के बैरी
हामान ने उन्हें नष्ट करने की युक्ति किई थी और उन्हें चूर
२५ और नष्ट करने के लिये पूर अर्थात् चिट्ठी डाली थी। परंतु
जब वुह राजा के आगे गई उसने पत्रियों के द्वारा से आज्ञा
किई कि उसकी दुष्ट युक्ति जो उसने यहूदियों के बिरुद्ध युक्ति
किई थी उसी के सिर पर पलटे और कि वुह और उसके
२६ बेटे फांसी दिये जायें। इस लिये पूर के नाम से उन्हों ने
उन दिनों को पूरिम कहा सो इस पत्री के सारे बचन के लिये
और जो कुछ उन्हों ने इस बात के बिषय में देखा था और
२७ जो उन पास पऊंचा था। उनके लिखने के समान और
उनके समय के समान यहूदियों ने अपने ऊपर और अपने
बंश पर और उन सभों पर जो उन में मिलगये थे लिया
और ठहराया कि हम बरस बरस इन दो दिनों को मानेंगे
२८ जिसतें जाने न पावे। और कि ये दिन हर एक पीढ़ी में
और हर एक घराने में और हर एक प्रदेश में और हर एक
नगर में स्मरण और पालन किये जायें और कि पूरिमी के
ये दिन यहूदियों में से जाने न पावें न उनका स्मरण उनके
२९ बंश से जाता रहे। तब आबीहईल की पुत्री एस्थर रानी
ने और मार्दिकई यहूदी ने पूरिम की दूसरी पत्री दृढ़
३० करने को सारे पराक्रम से लिखा। अपने अपने समयों

३१ में पूरिम के इन दिनों को, यहूदी मार्दिकई के और एस्थर रानी का आज्ञा और ठहराने के समान अपने प्राण के और अपने बंश के लिये ब्रत और प्रार्थना करने के लिये दृढ़ किया उसने पत्रियों को सारे यहूदियों के पास भेजा कुशल और सत्य के बचन से अहासुइरस के राज्य के एक सौ सताईस प्रदेश लों। और एस्थर की आज्ञा ने पूरिम के इन बातों को दृढ़ किया और पुस्तक में लिखा गया।

१० दसवां पर्ब्ब।

अहासुइरस राजा का महात्म १—२ मार्दिकई का महात्म और कार्य ३—।

१ और अहासुइरस राजा ने देश पर और समुद्र के टापुओं
२ पर कर ठहराया। और उसके पराक्रम और सामर्थ्य की सारी क्रिया और मार्दिकई के महात्म का बर्णन जहां लों राजा ने उसे बढ़ाया था क्या वे माद़ी और फारस के
३ राजाओं के काल बिबरण में नहीं लिखा है?। क्योंकि यहूदी मार्दिकई अहासुइरस राजा का समीपी और यहूदियों में महान और अपने भाइयों की मंडली में ग्राह्य था और अपने लोगों की बढ़ती का खोजी और अपने सारे बंश से कुशल की बात कहता था।

ऐयूब की पुस्तक ॥

—॰॰◉॰॰—

१ पहिला पर्ब्ब ।

ऐयूब की भक्ति, संपत्ति, और घराना १—५ शैतान का उसे परखने को छुट्टी पानी ६—१२ ऐयूब पर बिपत्त पड़नी और उसका ईश्वर का धन्य मान्ना १३—२२ ।

१ ऊज़ देश में ऐयूब नाम एक जन था जो सिद्ध और खरा पुरुष था और ईश्वर से डरता और बुराई से अलग रहता था । २।३ उसे सात बेटे और तीन बेटियां उत्पन्न हुईं । उसकी संपत्ति भी सात सहस्र भेड़ और तीन सहस्र ऊंट और पांच सौ जोड़े बैल और पांच सौ गदही और बड़ा परिवार था यहां लों ४ कि पूर्बी पुत्रों से सब से बड़ा था । और उसके बेटे हर एक अपने अपने दिन में अपने घरों में जेवनार करते थे और अपने संग खाने पीने के लिये भेज के अपनी तीनों बहिन ५ को नेंउता देते थे । और उनके जेवनार के दिनों के पीछे यों होता था कि ऐयूब भेज के उन्हें पवित्र करता था और बिहान को तड़के उठके उनकी गिनती के समान होम को भेंट चढ़ाता था क्योंकि ऐयूब ने कहा कि क्या जाने मेरे बेटों ने अपने मन में ईश्वर का धन्य न मानके पाप किया हो ऐयूब यों नित करता ६ रहा । अब एक दिन परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र ७ आये और शैतान भी उनके मध्य में आया । तब परमेश्वर ने शैतान से पूछा कि तू कहां से आता है? शैतानने

परमेश्वर को उत्तर में कहा, पृथिवी की चारो ओर घूमते और
८ इधर उधर से फिरते आया हों। फेर परमेश्वर ने शैतान
से कहा क्या तूने मेरे सेवक ऐयूब को जांचा है? कि उसके
समान पृथिवी में कोई नहीं वुह सिद्ध और खरा जन है जो
९ ईश्वर से डरता और पाप से अलग रहता है?। तब
शैतान ने उत्तर में परमेश्वर से कहा, क्या ऐयूब सेंत से ईश्वर
१० से डरता है?। क्या तूने उसकी और उसके घर की और
उसके सब कुछ को चारो ओर बाड़ा नहीं बांधा? तूने उसके
हाथ के कार्य्यों पर आशीष दिया है और उसकी संपत्ति देश
११ में बढ़गई है। परन्तु अब अपने हाथ बढ़ा के उसका सब कुछ
१२ मार जो वुह मुंह पर तुझे न धिक्कारे। परमेश्वर ने शैतान से
कहा, देख उसका सब कुछ तेरे बश में, केवल उस पर अपना
हाथ मत बढ़ा तब शैतान परमेश्वर के आगे से चल निकला।
१३ और एक दिन जब उसके बेटे बेटियां अपने जेठे भाई
१४ के घर में खाते और मद्यपान करते थे। तब एक दूत ने ऐयूब
पास आके कहा, बैल जोत्ते थे और गदहे उनके लग चरते
१५ थे। तब सबियूनी झपक के उन्हें लेगये हां सेवकों को तलवार
की धार से घात किया पर आप को संदेश देने को केवल मैंहीं
१६ बच निकला। वुह कहताही था और दूसरे ने भी आके कहा,
ईश्वर की महा आग स्वर्ग से पड़ी और भेड़ और सेवकों को
भस्म किया और आप को संदेश देने को केवल मैंहीं बच
१७ निकला। वुह कहताही था कि एक औरही आ बोला, कलदानी
तीन जथा होके ऊंटों पर झपकके उन्हें लेगये हां सेवकों
को तलवार की धार से घात किया और आप को संदेश देने
१८ को केवल मैंहीं बच निकला। वुह यह कहताही था कि एक
औरही ने आके कहा कि आप के बेटे बेटियां अपने जेठे भाई
१९ के घर खा और मद्यपान कर रहे थे। और देखो बन की
ओर से एक बड़ी आंधी आके उस घर के चारों कोनों में लगी

और तरुणों पर गिर पड़ी और वे मर गये और आप को
२० संदेश देने को केवल मैंहीं बच निकला। तब ऐयूब ने उठके
अपनी चद्दर फाड़ी और सिर मुंड़ाया और भूमि पर गिरके
२१ सेवा किई। और कहा, मैं अपनी माता की कोख से नंगा
निकला और नंगा फेर जाओंगा परमेश्वर ने दिया और
२२ परमेश्वर ने लिया परमेश्वर का नाम धन्य। इन सारी बातों
में ऐयूब ने पाप न किया और परमेश्वर के बिरुद्ध न
कुड़कुड़ाया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

फेर ऐयूब के परखने को शैतान का छुट्टी पाना
और उसकी स्त्री का उसे उसकाना १—१० उसके
तीन मित्र का आना और सात दिन लों उसके
आगे चुपका बैठना ११—१३।

१ फेर एक दिन परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र आये और शैतान
२ भी उनमें परमेश्वर के आगे आ खड़ा हुआ। और परमेश्वर
ने शैतान से कहा कि तू कहां से आता है? शैतान ने उत्तर देके
परमेश्वर से कहा कि पृथिवी की चारों ओर घूमते और इधर
३ उधर से फिरते चला आता हों। परमेश्वर ने शैतान से पूछा
कि तू ने मेरे दास ऐयूब को जांचा है? क्योंकि उसके समान
पृथिवी में कोई नहीं है वुह सिद्ध और खरा जन ईश्वर से
डरता और पाप से अलग रहता है? और अब लों उसने
सचाई को धर रक्खा है यद्यपि तू ने मुझे उसे अकारण नाश
४ करने को उभारा है। तब शैतान ने उत्तर देके परमेश्वर से कहा
कि चाम के लिये चाम हां मनुष्य जो कुछ रखता है सो अपने
५ प्राण के लिये देगा। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ा और उसके
६ हाड़ मांस को छू तब वुह तुझे तेरे मुंह पर धिक्कारेगा। तब
परमेश्वर ने शैतान से कहा कि देख वुह तेरे हाथ में है केवल

७ उसके प्राण को छोड़। तब शैतान परमेश्वर के आगे से चला गया और ऐयूब को सिर से तलवे लों जलते फोड़ों से मारा।
८ और वुह एक ठीकरा लेके अपने को खुजलाने लगा और राख
९ पर बैठ गया। तब उसकी पत्नी ने उसे कहा कि क्या मरते मरते ईश्वर का धन्य मानके तू अपना धर्म्म अब लों
१० न छोड़ेगा?। परन्तु उसने उसे कहा कि तू किसी मूर्ख स्त्री की नाईं बोलती है क्या हम ईश्वर के हाथ से भलाई लेंगे और बुराई न लेंगे? इन सारी बातों में ऐयूब ने अपने होठों से
११ पाप न किया। सो जब ऐयूब के तीन मित्रों ने, अर्थात् तीमानी इलीफाज ने, और शुहिती बिलदाद ने, और नामाती ज़ोफार ने, उसकी सारी विपत्ति को, जो उस पर पड़ी थी सुना तो अपने अपने स्थान से आये क्योंकि उन्हों ने आके उसके साथ बिलाप करने और उसे शांति देने को एकट्ठे ठान
१२ रक्खा था। और जब दूरही से उन्हों ने आंख उठाके देखा और उसे न चीन्हा तब शब्द उठा उठा रोये और हर एक जन ने अपनी अपनी चद्दर फाड़ी और स्वर्ग की ओर अपने
१३ अपने सिरों पर धूल डाली। और सात दिन और सात रात वे उसके साथ भूमि पर बैठे रहे और किसी ने उसे एक बात न कही क्योंकि उन्हों ने देखा कि उसका शोक अति है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

ऐयूब का अपने जन्म को धिक्कारना और मृत्यु का चैन वर्णन करना १—१९ उसका मृत्यु का चाहना और बिलाप करना २०—२६।

१ अन्त में ऐयूब ने अपना मुंह खोला और अपने दिन को
२।३ धिक्कारा। और ऐयूब ने उत्तर देके कहा। मेरा जन्म और वुह दिन जिसमें मैं उत्पन्न ऊआ और वुह रात जब कहा गया
४ कि पुरुष बालक उत्पन्न ऊआ सो नष्ट होजाय। वुह दिन

अंधियारा होय ईश्वर ऊपर से उसे न गिने और न उंजियाला
५ उस पर चमके। अंधियारा और मृत्यु की छाया उसे चूर करे
६ मेघ उस पर बने रहें दिन की कालिख उसे डरावे। अंधियारा
उस रात को ग्रसे वुह बरस के दिनों में आनन्द न करे और
७ मासों की गिनती में न आवे। हाय कि वुह रात निराली होवे
८ उसमें आनन्दित शब्द न होवे। जो बिलाप का शब्द उठाने
को सिद्ध हैं और दिन को धिक्कारते हैं सो उसी को धिक्कारें।
९ उसकी गोधूली के तारे अंधियारे हों वे ज्योति की बाट जोहें
१० पर न पावें वे बिहान के पलकों को न देखें। क्योंकि उसने मेरे
लिये कोख के द्वारों को बन्द न किया मेरी आंखों से शोक न
११ छिपाया। मैं कोख में से मर क्यों न गया? पेट से
१२ निकलतेही मैंने प्राण क्यों न त्यागा। घुठनों ने अथवा स्तनों ने,
१३ जिन्हें मुझे पीना था क्यों मेरी अगुआई किई। क्योंकि अब तो
मैं चुपका होके पड़ा रहता मैं सोआ होता और चैन में रहता।
१४ पृथिवी के राजाओं के और मंत्रियों के संग चैन करता जो स्थानों
१५ को अपने लिये बनालेते हैं। अथवा उन अध्यक्षों के संग जो सोने
१६ की संपत्ति रखते थे चांदी से अपने घरों को भरा था। अथवा
गर्भपात की नाईं उस बालक की नाईं जो ज्योति न देखे मैं न
१७ ऊआ होता। वहां दुष्ट सताने में रहि जाते हैं और थके ऊए
१८ चैन से हैं। बंधुए एक साथ चैन करते हैं वे अंधेरी का शब्द
१९ नहीं सुनते। छोटे बड़े वहां हैं और दास अपने स्वामी से छूटे
२० हैं। कष्टितों को ज्योति और कड़वे प्राण को जीवन क्यों दिया
२१ गया है?। जो मृत्यु के लालसित हैं पर नहीं है और छीपऊए
२२ धन से अधिक उसके लिये खोदते हैं। जब समाधि पासक्ते हैं
२३ तो अत्यंत मगन और आल्हादित होते हैं। जिस मनुष्य का
मार्ग गुप्त है और जिसे ईश्वर ने घेर रखा है उसे क्यों ज्योति
२४ दिई गई?। क्योंकि भोजन के आगे मेरी ठंढी सांसें आती हैं
२५ और मेरा बिलाप लहरों की नाईं फूटता है। क्योंकि जिस डर

से मैं डरताथा सोई मझ पर आपड़ी और जिसे मैं हटता
२६ गया उसी ने मुझे आही लिया । मुझे कुशल न था मैं चैन न
रखता था और मुझे शांति न थी तथापि दुख पऊंचा ।

४ चैाथा पर्ब्ब ।

इलीफाज़ का उसे दपटना और बताना कि ईश्वर का कोप धर्म्मी पर नहीं परन्तु अधर्म्मी पर पड़ता है १—११ और अपने दर्शन का वर्णन करना १२—२१ ।

१।२ तब तीमानी इलीफाज़ ने उत्तर देके कहा । जो हम तुझे एक
बात कहें ते क्या तू शोकित होगा? तथापि वचन कहने से कैान
३ रहिसके । देख तू ने बऊतों को सिखाया है और निर्बल हाथों
४ को दृढ़ किया है । गिरते ऊए को तेरे वचन ने उभाड़ा है और
५ तू ने थर्थराते घुठनों को दृढ़ किया है । परन्तु अब तुझ पर
पड़ा है और तू मूर्छित होता है तुझे छूता है और तू घबराता
६ है । तो क्या तेरी भक्ति और तेरी आशा और तेरा भरोसा
७ अथवा तेरी चाल की खराई कुछ नहीं । चेत करो निर्दोष
८ कधी नाश ऊआ है? अथवा धर्म्मी कहां कट गया । जैसा मैं ने
देखा है जो बुराई जोत्ता है और दुष्टता बोता है सोई लवता
९ है । ईश्वर के झोंके से वे नष्ट होते हैं और उसके नथुनों के
१० श्वास से विनाश होते हैं । सिंहिनी का गर्ज्जना और भयानक
११ सिंह का शब्द और छोटे सिंह के दांत निरास होते हैं । और
बड़ा सिंह अहेर विना मरता है और सिंहिनी के बच्चे छिन्न
१२ भिन्न होते हैं । एक बात चोरी से मुझ पास
१३ पऊंचाई गई और उसमें से कुछ मेरे कान में पड़ा । रात के
१४ स्वप्न में के चिंतों में जब भारी नीद मनुष्यों पर पड़ती है । डर
और थर्थराहट मुझ पर पड़ा जिसतें मेरी हड्डियां कांपने
१५ लगीं । तब एक आत्मा मेरे आगे चला और मेरे शरीर का

१६ रोआं खड़ा ऊआ। वुह ठहरा परन्तु मैं ने उसका डौल न
पहिचाना एक रूप मेरी आंख के आगे चुप चाप था और मैं ने
१७ एक शब्द सुना। क्या मानुष मनुष्य ईश्वर से अधिक धर्म्मी ठहरेगा?
१८ क्या मनुष्य अपने कर्त्ता के आगे पावन ठहरेगा?। देख वुह
अपने सेवकों पर भरोसा नहीं करता और अपने दूतों पर,
१९ जिनमें उसने ज्योति रक्खी। और कितना थोड़ा उन पर जो
मिट्टी के मन्दिर में रहते हैं जिनकी नेंव धूल में है जो कीड़े के
२० आगे पिसजाते हैं। जो बिहान से सांझ लों चूर होते हैं जो
२१ बिन बूझे ऊए नष्ट होते हैं। क्या उनमें की उत्तमता नहीं जाती
हां वे निर्बुद्धि मरते हैं।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

दुष्टता और कष्ट के संबंध का इलीफाज़ का बर्णन
करना १—७ कष्ट में ईश्वर को खोजना ८—१६
ताड़ना का फल १७—२७।

१ अब पुकार यदि कोई तुझे उत्तर देवे और साधुन में से तू
२ किसकी ओर फिरेगा?। क्योंकि क्रोध मूर्ख को नाश करता है
३ और जलजलाहट अनारी को क्षीण करता है। मैं ने मूर्ख
को जड़ पकड़ते देखा परन्तु तत्काल मैं ने उसके घर को धिक्कारा।
४ उसके बालक चैन से परे हैं वे फाटक में कुचिले ऊए हैं और
५ उनका बचाऊ कोई नहीं। उनकी लवन भूखा खालेता है
और उसे कांटों में से चोंथ लेता है और बटमार उनकी संपत्ति
६ लील जाते हैं। यद्यपि कष्ट धूल से नहीं उपजता और दुःख
७ भूमि से नहीं निकलता। तथापि जैसा चिनगारी ऊपर ऊपर
८ उठती है तैसा मनुष्य दुःख के लिये उत्पन्न ऊआ है। मैं ईश्वर
९ को खोजता और अपना पद ईश्वर ही को सौंपता। जो बड़े बड़े
१० और अखोज कार्य और अगणित आश्चर्य करता है। जो
पृथिवी पर मेंह बरसाता है और बाहर के खेतों में पानी

११ पऊंचाता है। वुह दीनों को उभाड़ता है जिसतें बिलापी चैन
१२ में बढ़ाये जायें। वुह चतुरों की जुगतों को निरास करता है
१३ यहां लों कि उनके हाथों से कुछ बन नहीं पड़ता। वुह
बुद्धिमानों को उन्हीं की चतुराई में बझाता है और हठीलों के
१४ परामर्श को उलटदेता है। वे दिन को अंधियारे में दौड़ते हैं
१५ और मध्यान्ह में रात की नाईं टटोलते हैं। परन्तु वुह कंगालों
को तलवार से और उनके मुंह से और बलवानों के हाथ से
१६ बचाता है। यों कंगालों की आशा है और बुराई अपना मुंह
१७ मूंदती है। देखो धन्य वुह मनुष्य जिसे ईश्वर ताड़ता है
१८ इस लिये सर्वशक्तिमान की ताड़ना की निन्दा न कर। वही
दुःखी करता है और सुख देता है वही घायल करता है और
१९ उसके हाथ चंगा करते हैं। छः दुख से वुह तुझे छुड़ावेगा हां
२० सात में तुझे बुराई न छूयेगी। वुह अकाल में मृत्यु से और
२१ लड़ाई में तलवार के हाथसे तुझे छुड़ावेगा। जीभ की मार
से तू छिपाया जायगा और जब नाश आवेगा तू उससे न डरेगा।
२२ नाश और अकाल से तू हंसेगा और तू बन पशुन से न डरेगा।
२३ क्योंकि खेत के पत्थरों से तुझे मेल होगा और बनैले पशुन से
२४ तुझे कुशल होगा। और तू अपने तम्बू में कुशल पावेगा और
२५ तू अपने निवास में जायगा और न चूकेगा। तू यह भी जानेगा
कि तेरा वंश बऊत और तेरे संतान पृथिवी की घास की नाईं।
२६ जैसे अन्न की बाल उपज के अपने समय में पकती है तैसे तूभी
२७ पूरी आयुर्दाय में समाधि में पऊंचेगा। यह देख हम ने वह
बूझा है और योंही है सुन और अपने लिये जानले।

६ छठवां पर्ब्ब।

ऐयूब का अपना कष्ट वर्णन करना १—७ मृत्यु को
चाहना ८—१३ अपने मित्रों को दपटना
१५—३०।

१।२ परन्तु ऐयूब ने उत्तर देके कहा । हाय कि मेरा शोक सर्वथा
३ तोला जाता और मेरी विपत्ति पलड़े में उठाई जाती । क्योंकि
अब वुह समुद्र की बालूसेभी अति भारी होती इस लिये
४ मेरी बातें दबाई जाती हैं । क्योंकि सर्वशक्तिमान के बाण मेरे
अंतर में हैं जिनका विष मेरे प्राण को सुखाता है ईश्वर के भय
५ मेरे सन्मुख पांती बाधते हैं । क्या जंगली गदहा की घास
होते ऊए वुह पोंपाता है? अथवा बैल अपने पुआलपर
६ विंविआता है? । जो फीका है क्या बिना लोन से खाया जाता
७ अथवा क्या अंडे के लासे में स्वाद है? । जिन से मेरा प्राण
८ घिनाता है सोई मेरा शोक का भोजन है । हाय कि मेरी
९ इच्छा पूरी होती और ईश्वर मेरी आशा पूरी करता । अर्थात्
जो मुझे बिनाश करने को ईश्वर की इच्छा होती जो वुह अपने
१० हाथ खोलके मुझे बिनाश करता । तो अभी मैं शांति पाता हां
मैं दुःख में अपने को कठोर करता सो अब मुझे न छोड़े क्योंकि
११ मैं ने धर्म्ममय की बातों को नहीं छिपा रक्खा । मेरा क्या बल
जो आशा रक्खों' और मेरा अन्त क्या जो अपना जीवन
१२ बढ़ाओं? । मेरा बल क्या पत्थरों का बल? अथवा मेरा शरीर
१३ क्या पीतली है? । क्या मेरी सहाय मुझ में नहीं? और
१४ क्या बुद्धि मुझ से सर्वथा दूर किई गई? । कष्टितों पर उसके
मित्र से दया चाहिये परन्तु वुह सर्वसामर्थी की डर को त्यागता
१५ है ।   नाली की नाईं मेरे भाइयों ने छल से व्यवहार
१६ किया है नाली की धारा की नाईं वे चले जाते हैं । जो ओले
१७ के मारे काली हो रही है और जिसमें पाला छिपा है । जब
कि वे गरमाते हैं तो जाते रहते हैं और घाम में मिट जाते हैं ।
१८ उनके पथ फिर जाते हैं और वे नास्ति होते हैं और मिट जाते
१९ हैं । तोमा की जथाओं ने ढूंढ़ा और शीबा के पथिकों ने उनकी
२० बाट जोही । आशा रखने के मारे वे घबरा गये वे वहां पऊंच
२१ के लज्जित ऊए । क्योंकि अब तुम उनकी नाईं हो, कुछ नहीं

२२ और मेरे दुःख को देख के डरते हो। क्या मैं ने कहा कि मुझे देउ? अथवा अपनी संपत्ति में से मुझे प्रतिफल देओ? !
२३ अथवा बैरी के हाथ से मुझे बचा? अथवा बलवन्त के हाथ से
२४ मुझे छुड़ा?। मुझे सिखा और मैं चुप रहोंगा किस बात म
२५ मैं ने चूक किई है सो मुझे समझा। सत्य बचन कैसा दृढ़ है
२६ परन्तु तुम्हारे दपट में क्या बिचार?। तो क्या तुम दपट के लिये बचन निकाला चाहते हो? और निरासों का बचन पवन
२७ के तुल्य है। हां तुम अनाथों को दबा डालते हो और अपने
२८ मित्र के लिये गड़हे खनते हो। सो अब मानजाओ और मुझे
२९ देखो क्योंकि यदि मैं झूठा हों तो तुम्हारे आगे हों। मैं बिनती करता हों, फिर जाओ बुराई न होवे हां उलटे फिर जाओ इस
३० बात में मेरा धर्म्म है। क्या मेरी जीभ में बुराई है? और मेरा तालू हठीली बस्तु नहीं बूझता है!

७ सातवां पर्ब्ब ।

जीवन का वृथा और कष्ट और निष्फल बताना १—६ ऐयूब का ईश्वर से बिवाद करना और पाप की क्षमा चाहनी ७—२१ ।

१ क्या पृथिवी पर मनुष्य का समय ठहराया हुआ नहीं है? उसके
२ दिन बनिहारों के दिनों के समान नहीं?। जैसे सेवक छाया के लिये मुंह बाता है और बनिहार अपनी बनी की लालसा
३ करता है। तैसा मुझे वृथा मासों का अधिकारी बन्ने पड़ा
४ और रातों का कष्ट मेरे लिये ठहराया गया है। जब मैं लेटता हों तब कहता हों कि मैं कब उठोंगा और रात कब
५ बीतेगी? और पौफटने लों इधर उधर छटपटाता हों। कीड़े और धूल के थक्कों से मेरा शरीर पहिराया हुआ है मेरा
६ चाम फूटके घिनित हुआ। मेरे दिन जोलाहे की ढरकी से भी
७ अधिक बगवान हैं और निरास से बीते जाते हैं। हाय स्मरण कर

कि मेरा जीवन पवन है और मेरी आंख भलाई देखने को
८ फिर न आवेगी । जिसकी आंख ने मुझे देखा है मुझे फेर न
९ देखेगी तेरी आंखें मुझ पर, और मैं नहीं । जैसा मेघ छटगया
और जाता रहा तैसा जो समाधि में उतरता है से ऊपर न
१० आवेगा । वुह अपने घर में फेर न आवेगा और उसका स्थान
११ उसे फेर न जानेगा । इस लिये मैं अपना मुंह न रोकोंगा, मैं
अपने मन के कष्ट में कहोंगा मैं अपने प्राण की कडुआहट में
१२ बोलोंगा । मैं क्या समुद्र अथवा महा मच्छ हों जो तू मुझ पर
१३ चौकी बैठाता है? । जब मैं कहता हों कि मेरा बिछौना मुझे
१४ शांति देगा मेरी खाट मेरे बिलाप को शांति करेगी । तब तू
सप्नों से मुझे डराता है और दर्शनों से मुझे भय दिलाता है ।
१५ यहां लों कि मेरा प्राण श्वासरोक और मृत्यु को मेरे कष्ट से
१६ अधिक चाहता है । मैं घिन करताहों मैं सदा जीने नहीं चाहता
१७ मुझे छोड़ दे क्योंकि मेरे दिन वृथा । मनुष्य क्या जो तू उसे
१८ महिमा देवे? और जो तू अपना मन उस पर लगावे? । और
जो तू हर बिहान उसकी सुधि लेवे? और पल पल उसे परखे? ।
१९ तू कब लों मुझ से अलग न होगा और मुझे रहने न देगा जबलों
२० मैं अपना थूक लीलों? । मैं ने पाप किया है हे मनुष्य के रक्षक
मैं तेरे लिये क्या करों? तू ने मुझे अपने बिरोध का चिन्ह क्यों
२१ बना रक्खा है यहां लों कि मैं अपने लिये बोझ हों? । मेरे
अपराध को तू क्यों नहीं क्षमा करता? और मेरी बुराई को
क्यों नहीं दूर करता? क्योंकि अब मैं धूल पर सोओंगा और
तू बिहान को मुझे ढूंढ़ेगा परन्तु मैं न होंगा ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

ऐयूब पर बिलदाद का दोष लगाना और ईश्वर की
ओर उभाड़ना १—७ कपटी का दंड बताना
और ऐयूब पर घटाना ८—२२ ।

१।२ तब शूही बिलदाद ने उत्तर देके कहा। तू कब लों यों
३ कहेगा और तेरे मुंह की बात झोंके के समान?। क्या ईश्वर
बिचार बिरुद्ध करता है? अथवा क्या सर्बसामर्थी न्याय बिरुद्ध
४ करता?। यदि तेरे बालकों ने उसके बिरुद्ध पाप किया है और
५ उसने उनके अपराधों में उन्हें दूर किया। यदि तू समय में
ईश्वर को ढूंढ़ता और सर्बसामर्थी के आगे प्रार्थना करता।
६ यदि तू पवित्र और खरा होता तो निश्चय अब तेरे कारण वुह
७ उठता और तेरे धर्म्म के निवास को भाग्यमान करता। यद्यपि
८ तेरा आरंभ छोटा था तथापि तेरा अन्त बहुत बढ़जाता। मैं
बिनती करता हों कि पिछले समय से बूझो और सिद्ध होके
९ पितरों में खोजो। (क्योंकि कल के होके हम कुछ नहीं जानते
१० और पृथिवी में छाया के तुल्य हमारे दिन हैं)। क्या यह कहिके
वे तुझे न सिखावेंगे और अपने मन से बातें न उचारेंगे?।
११ क्या नल चहला बिना उग सक्ता है? और उगला पानी बिना
१२ बढ़ सक्ता है?। और साग पात से आगे बिन काटेहुए अपनी
१३ हरियालीही में झुरा जाता है?। जो ईश्वर को बिसराते हैं उन
सभों की चाल ऐसीही है और कपटी की आशा नष्ट होजायगी।
१४ उनकी आशा काटी जायगी और उनका भरोसा मकड़ी
१५ का जाल। वुह अपने घर पर ओठंगेगा परन्तु वुह न ठहरेगा
१६ वुह दृढ़ता से उसे पकड़ेगा परन्तु न थमेगा। वुह सूर्ज के आगे
१७ हरा और उसकी डालियां बाटिका पर बढ़ती हैं। उसकी जड़
ढेर को चारों ओर लिपटी है और पथरैले स्थान में पैठती है।
१८ जो वुह उसके स्थान से उसे नाश करे तो वुह उस्से मुकरेगा कि
१९ मैंने तुझे नहीं देखा। देख उसकी चाल का आनन्द यह है और
२० पृथिवी से दूसरे उगेंगे। सिद्ध को ईश्वर न त्यागेगा और
२१ अधर्म्मी का हाथ न पकड़ेगा। जबलों तेरे मुंह को हंसी से न
२२ भरे और तेरे होठों को आनन्द के शब्द से। जो तुझसे बैर करते हैं
वे लाज से पहिराये जायेंगे और दुष्टों का निवास न रहेगा।

९ नवां पर्ब्ब ।

ऐयूब का ईश्वर के गुण मान्ना १—१३ अपना दोष मान्ना और बताना कि जगत में भले बुरे पर दुःख पड़ता है १४—२४ अपना कष्ट बताना २५—३५ ।

१।२ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा । मैं यूं सत्य जानता हों परन्तु
३ ईश्वर के आगे मनुष्य क्योंकर धर्म्मी ठहरे?। यदि वुह उस्से
४ बिवाद करे तो सहस्र में एक का उत्तर न दे सकेगा । वुह मन
में बुद्धिमान और बल में बीर उसके बिरुद्ध कठोर होके कौन
५ भाग्यमान ऊआ है?। वुह पर्बतों को टालता है और वे नहीं
६ जानते वुह क्रोध से उन्हें उलट देता है । वुह पृथिवी को अपने
७ स्थान में से हिलाता है और उसके खंभे थर्थराते हैं । वुह
सूर्ज को आज्ञा करता है और वुह उदय नहीं होता और
८ वुह तारों पर छाप करता है । वुह एकेलाही स्वर्गों को फैलाता
९ है और समुद्र की लहरों पर चलता है । वुह पाला और
१० ग्रीष्म और दक्खिन के मेघ को सिरजता है । जो बड़े बड़े
११ अखोज हां अगणित आश्चर्य करता है । देख वुह मेरे पास से
जाता है और मैं नहीं देखता वुह चला भी जाता है परन्तु
१२ वुह मुझे सूझ नहीं पड़ता । देख वुह ले जाता है और कौन
१३ उसे फेर सक्ता? कौन उसे कहेगा कि तू क्या करता है?। यदि
ईश्वर अपना क्रोध न खींचले तो अहंकारी के सहायक उसके
१४ नीचे झुकते हैं। कितना थोड़ा मैं उसे उत्तर देऊं? और बचन
१५ छांट छांट के उसे कहों?। यद्यपि मैं धर्म्मी होता तथापि उसे
१६ उत्तर न देता परन्तु अपने न्यायी से बिनती करता । यदि मैं
पुकारे होता और वुह उत्तर देता तथापि मैं सहज से प्रतीति
१७ न करता कि उसने मेरा शब्द सुना । क्योंकि वुह मुझे आंधी
१८ से तोड़ता है और अकारथ मेरे घाओं को बढ़ाता है । वुह मुझे
सांस नहीं लेने देता परन्तु मुझे कडुआहट से पूर्ण करता है ।

१९ यदि बल के बिषय में, तो बली है और यदि न्याय के, तो मेरे
२० लिये समय कौन ठहरावेगा? । यदि अपने को निर्दोष ठहराओं
तो मेरा मुंह मुझे दोषी ठहरावेगा यदि सिद्ध, तो मुझे हठीला
२१ भी ठहरावेगा। यदि मैं सिद्ध होता तो भी अपनाही मन न
२२ जानता मैं अपनेही प्राण की निन्दा करता। इस लिये मैं ने एक
२३ बात कही कि वुह सिद्ध को और दुष्ट को नाश करता है। यदि
वुह अचानक घात करे तो वुह निर्दोषों के बिचार से हंसेगा।
२४ दुष्टों के हाथ में पृथिवी दिई गई है वुह उसके न्यायियों के
मुंह को ढांपता है जो नहो तो कहां और वुह कौन है।
२५ मेरे दिन डांकिये से भी चालाक हैं वे उड़ जाते हैं और भलाई
२६ नहीं देखते। बांछित जहाज़ के समान और अहेर के पीछे के
२७ गिद्ध के समान जाते रहे। यदि कहों कि अपने दुःख को भूलोंगा,
२८ मैं अपने मन के शोक को छोड़ के शांत होऊंगा। मैं अपने
सारे दुःखों से डरता हों मैं जानता हों कि तू मुझे निर्दोष न
२९ ठहरावेगा। यदि मैं दुष्ट हों तो क्यों वृथा परिश्रम करता हों?।
३० यदि मैं पाले के जल से स्नान करों और अपने हाथ अतिपावन
३१ करों। तथापि तू मुझे गड़हे में बोरदेगा और मेरे बस्त्र मुझे
३२ घिनवायेंगे। क्योंकि वुह मेरे समान मनुष्य नहीं कि उसे
३३ उत्तर देऊं और हम आपुस में न्याय में एकट्ठे आवें। हमारे
मध्य में कोई बिचवई नहीं जो अपना हाथ दोनों पर धरे।
३४ वुह अपना दंड मुझ पर से दूर करे और उसका भय मुझे न
३५ डरावे। तब मैं कहता और उसे न डरता परन्तु मेरी यही
दशा नहीं है।

१० दसवां पर्ब्ब।

अपने दुःख का वर्णन करना और ईश्वर से दया
चाहनी १—१३ अपना अति दंड पाना और
मृत्यु चाहना १४—२२।

१ जीवन से मेरा प्राण थक गया अपना बिलाप मैं अपने ऊपर
२ रहने देऊंगा मैं अपने प्राण की कड़ुआहट में बोलोंगा। मैं
ईश्वर से कहोंगा कि मुझ पर दोष मत ठहरा मुझे दिखा कि
३ तू मुझसे क्यों झगड़ता है। सताने में और अपने हाथके कार्य्य
की निन्दा करने में और दुष्टों के परामर्षपर बर देने में क्या
४ तेरे लिये भला है?। क्या तेरी आंखें मांस की हैं? अथवा तू
५ मनुष्य के समान देखता है?। तेरे दिन क्या मनुष्य के दिन की
६ नाईं? और तेरा बरस मनुष्य के दिन के समान?। जो तू मेरी
७ बुराई को ढूंढ़ता है और मेरे पाप को खोजता है?। तू
जानता है कि मैं दुष्ट नहीं हों और कोई तेरे हाथ से छुड़ा
८ नहीं सक्ता। तेरे हाथ ने मेरे लिये परिश्रम किया है और
९ चारों ओर मेरा डौल, तथापि तू मुझे बिनाश करता है। मैं
तेरी बिनती करता हों कि स्मरण कर तू ने मुझे मिट्टी के समान
१० बनाया है और क्या तू मुझे फेर धूल में मिलावेगा?। क्या तू ने
मुझे दूध के समान नहीं उंडेला और खोआ की नाईं मुझे
११ नहीं जमाया?। तू ने मुझे चाम और मांस से पहिनाया है
१२ और तू ने हाड़ और नस से मुझे घेरा है। तू ने जीवन और
कृपा मुझे दिई है और तेरी सुधि ने मेरे प्राण की रक्षा किई है।
१३ और इन बातों को तू ने अपने मन में छिपा रक्खा है मैं जानता
१४ हों कि यह तेरे पास है। यदि मैं पाप करों तो तू मुझे चीन्ह
१५ रखता है और मेरी बुराई से तू मुझे न छोड़ेगा। यदि मैं
दुष्ट होओं तो मुझपर सन्ताप और यदि धर्म्मी तो अपना
सिर न उठाओंगा घबराहट से भरा हों इस लिये मेरे दुःख को
१६ देख। क्योंकि वुह बढ़रहा है, भयानक सिंह की नाईं तू मुझे
अहेरता है और मुझ पर फेर अपने को आश्चर्य्यित दिखाता
१७ है। मेरे बिरोध तू अपनी साक्षी दुहराता है और अपना
जलजलाहट मुझ पर बढ़ाता है अदल बदल और संग्राम
१८ मेरे विरुद्ध हैं। सो तू ने मुझे कोख से क्यों बाहर निकाला है?

हाय कि मैं अपना प्राण त्याग किया होता और कोई आंख
२९ मुझे न देखती। तो न होने के समान मैं हुआ होता और कोख
२० में से समाधि में पहुंचाया जाता। मेरे दिन क्या थोड़े नहीं?
२१ थमजा और मुझे रहने दे जिसतें तनिक शांति पाऊं। जहां से
फेर न आओंगा वहां जाने से आगे अर्थात अंधियारे देश और
२२ मृत्यु की छाया में। अंधियारे के समान अंधियारे के देश में
बडौल और मृत्यु की छाया जहां ज्योति अंधियारे के तुल्य।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

ज़ोफार का ऐयूब को दपटना और ईश्वर का
व्याख्यान करना १—१२ ऐयूब को पश्चात्ताप करने
का चेत दिलाना १३—२०।

१।२ तब नामाती ज़ोफार ने उत्तर देके कहा। क्या बचन की
बहुताई का उत्तर दिया न जायगा? क्या अति कथक निर्दोषी
३ ठहराया जायगा?। क्या तेरी जुगतों से मनुष्य चुप रहेंगे और
४ तेरे चिड़ाने से मनुष्य तुझे न लजवायेगा?। क्योंकि तू ने कहा
है कि मेरा उपदेश शुद्ध, और तेरी दृष्टि में मैं पवित्र हों।
५ परन्तु हाय कि ईश्वर बोलता और तेरे विरुद्ध होंठ खोलता।
६ और कि वुह तुझे गुप्त ज्ञान दिखाता कि जो है उससे दूना है
सो जान रख कि ईश्वर तेरी बुराई से थोड़ा पलटा लेता है।
७ क्या खोजते खोजते तू ईश्वर को पा सक्ता है? क्या तू सर्बसामर्थी
८ का थाह पा सक्ता है?। स्वर्ग की ऊंचाई तू क्या करसक्ता है?
९ और नरक से गहिरा तू क्या जान सक्ता?। उसका नाप पृथिवी
१० से लंबा और समुद्र से चौड़ा। यदि वुह पलट डाले और
बन्द करे अथवा एकट्ठा करे तो कौन उसे फिरा सक्ता है।
११ क्योंकि वुह मनुष्य को बृथा जानता है वुह दुष्टता भी देखता है
१२ तो क्या वुह न बूझेगा?। क्योंकि बृथा मनुष्य बुद्धिमान हुआ
चाहता है यद्यपि मनुष्य जंगली गदहे के बछेरे के समान

१३ जन्मता है। जो तू अपने मन को सिद्ध करे और अपने हाथ
१४ उसकी ओर फैलावे। जो तेरे हाथ में बुराई हो तो उसे दूर
१५ कर और दुष्टता को अपने डेरे में रहने मत दे। क्योंकि तब तू
निष्कलंक से अपना मुंह उठावेगा हां तू दृढ़ होगा और न
१६ डरेगा। क्योंकि तू कष्ट भूल जायगा और उसे बहते पानी के
१७ समान स्मरण करेगा। तेरी बय मध्यान्ह से भी ज्योतिमान होगी
और तू चमक निकलेगा और बिहान के समान हो जायगा।
१८ और तू बचा रहेगा इस कारण कि आशा है हां तू खोदेगा और
१९ कुशल से चैन करेगा। और तू लेट भी जायगा और कोई न
२० डरावेगा हां बहुतसे तेरी बिनती करेंगे। परन्तु दुष्टों की आंखें
घट जायेंगी और वे न बचेंगे उनकी आशा मुंह के भाप के समान।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

ऐयूब का अपने मित्रों का निर्दय बताना १—५
और दुष्ट का जगत में भाग्यमान होना ६—११
ईश्वर के गुण और क्रिया का बर्णन करना १२—२५।

१।२ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। निःसंदेह तुम्हीं लोग मनुष्य
३ हो और तुम्हारे साथ बुद्धि मरेगी। परन्तु तुम सरीका मैं
भी ज्ञान रखता हों कुछ तुम्हों से घाट नहीं हों ऐसी बातें
४ कौन नहीं जानता?। मैं परोसी से चिड़ाया जाता हों जो
ईश्वर को पुकारता है और वुह उत्तर देता है सज्जन खरा
५ पुरुष ठट्ठे में उड़ाया गया। जिसका पांव फिसलने पर है
६ सो सुचितों के लेखे निन्दित दीपक के समान। बटमारों
के डेरे भाग्यमान होते हैं और ईश्वर के खिजवैये निर्भय हैं
७ उनके हाथ में ईश्वर पहुंचाता है। परन्तु अब पशुन से पूछ वे
तुझे सिखावेंगे और आकाश के पंछियों से और वे तुझे कहेंगे।
८ अथवा पृथिवी से कह और वुह तुझे सिखावेगी समुद्र की
९ मछलियां तुझे बतावेंगी। इन सारी बातों में कौन नहीं जानता

१० कि परमेश्वर के हाथ ने यह किया है?। जिसके हाथ में सब जीवधारियों का प्राण और मनुष्यों के सारे शरीर का श्वास।
११ क्या बातों को कान नहीं जांचता? और तालू भोजन नहीं
१२ चीखता?। पुरनियों में बुद्धि है और बड़त दिनियों में समुझ।
१३ बुद्धि और बल उसके पास, वुह मंत्र और समुझ रखता है।
१४ देखो वुह तोड़ता है और फेर बन नहीं सक्ता वुह मनुष्य को
१५ बन्द करता है और खोला नहीं जाता। देखो वुह पानी को रोकलेता है और वे सूख जाते हैं वुह फेर उन्हें भेजता है और
१६ वे धरती को उलट देते हैं। बल और बुद्धि उस पास है
१७ छलखायाऊआ और छली उसी के हैं। वुह मंत्रियों को बंधुआई
१८ में लेजाता है और न्यायियों को बौड़हा करता है। वुह राजाओं के बंधन को खोलता है और पटुके से उनकी कटि
१९ बांधता है। वुह अध्यक्षों को बंधुआई में लेजाता है और बलियों
२० को उलट देता है। वुह विश्वस्त का बचन टालदेता है और
२१ प्राचीनों की समुझ ले लेता है। वुह अध्यक्षों की निन्दा करता
२२ है और बलवंतों का पटुका खोलता है। अंधियारे में से वुह गहिरी बातें प्रगट करता है और मृत्यु की छाया को उंजियाले
२३ में लाता है। वुह जातिगणों को बढ़ाता है और नाश करता है वुह जातिगणों को फैलाता है और उन्हें सकेत करता है।
२४ वुह पृथिवी के श्रेष्ठ लोगों का मन ले लेता है और बिना मार्ग
२५ जंगल में उन्हें भ्रमाता है। वे बिन उंजियाले अंधियारे में टटोलते हैं और उन्हें मतवाले के समान भ्रमाता है।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

ऐयूब का ईश्वर को दोहाई देनी और अपने मित्रों को चिताना १—१२ अति कष्ट में मृत्यु को ताकना १३—१९ उसका चैन और कष्ट का भेद चाहना २०—२८।

१ देख मेरी आंखों ने सब देखा है और मेरे कान ने सुना है
२ और बूझा है। जो तुम जानते हो सो मैं भी जानता हों मैं
३ तुम से घाट नहीं हों। मैं निश्चय सर्ब सामर्थी से कहता और
४ ईश्वर से बिवाद किया चाहता हों। परन्तु तुम लोग झूठ
५ के जालिये और निकम्मे बैद्य हो। हाय कि तुम लोग
६ सर्बथा चुप हो रहते तो वही तुम्हारी बुद्धि होती। अब मेरा
बिचार सुनो और मेरे होठों के प्रत्युत्तर पर कान धरो।
७ ईश्वर के लिये क्या तुम लोग दुष्टता से कहोगे? और क्या उसके
८ लिये छल से बोलोगे?। क्या तुम उसका पक्ष करोगे? क्या
९ ईश्वर के लिये झगड़ोगे?। क्या यह भला है कि वुह तुम्हें जांचे?
अथवा जैसा कि एक मनुष्य दूसरे को चिड़ाता है तुम उसे
१० चिड़ाते हो?। तुम यदि गुप्त में पक्ष करोगे तो वुह निश्चय
११ तुम्हें दपटेगा। क्या उसकी महिमा तुम्हें न डरावेगी और उसकी
१२ डर तुम पर न पड़ेगी?। तुम्हारा स्मरण राख के समान है
१३ और तुम्हारा शरीर मिट्टी कासा। मुझसे चुपके रहो और मुझे
रहने देओ जिसतें मैं बोलों और मुझ पर जो हो सो हो।
१४ मैं अपने मांस को किस लिये अपने दांतों से काटों
१५ और अपना प्राण अपने हाथ में लेओं?। यद्यपि वुह मुझे घात
करे तथापि मैं उस पर भरोसा रक्खोंगा परन्तु उसके आगे
१६ मैं अपनी चाल को स्थिर करोंगा। मेरी मुक्ति भी वही क्योंकि
१७ कपटी उसके आगे न पहुंचेगा। मेरा बचन ध्यान
१८ से सुनो और मेरे बर्णन पर कान धरो। अब देखो मैं ने अपना
पद सिद्ध किया है और जानता हों कि मैं निर्दोष ठहरोंगा।
१९ मुझसे कौन बिवाद करेगा क्योंकि अब जो मैं चुप रहों तो मरही
२० जाओंगा। केवल दो बात मुझसे मत कर तब मैं आप को तुझसे
२१ न छिपाओंगा। अपना हाथ मुझसे परे खींचले और अपने भय
२२ से मुझे मत डरा। तब पुकार और मैं उत्तर देओंगा अथवा
२३ मैं कहों और तू उत्तर दे। मेरी बुराई और पाप कितने हैं?

२४ मेरा अपराध और पाप मुझे जना। किस लिये तू अपना
२५ मुंह छिपाता है? और मुझे अपना बैरी समुझता है?। क्या
तू उड़ाये ऊए पत्ते को तोड़ेगा? और तू सूखी खूंघी को खेदेगा?।
२६ क्योंकि तू मेरे विरुद्ध कड़ुई कड़ुई बातें लिखता है और मुझे
२७ तरुणाई की बुराई का पलटा देता है?। मेरे पांव को तू काठों
में भी डालता है और मेरी सारी चालों को तक रहता है
२८ और मेरे पांव के तलवे पर तू चिन्ह रखता है। और वुह
सड़ीऊई वस्तु के समान और कीड़े खाये वस्त्र की नाईं नष्ट
होता है।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

ऐयूब की बिनती १—६ मृत्यु को चाहना ७—१५
सब वस्तु का नाश बताना १६—२२।

१ स्त्री से उत्पन्न ऊआ मनुष्य थोड़े दिन का और दुःख से भराऊआ।
२ वुह फूल की नाईं ऊगता है और काटा जाता वुह छाया की
३ नाईं जाता रहता और नहीं ठहरता। क्या तू ऐसे की ओर
देखता है और क्या मुझे अपने संग बिचार में लाता है?।
४।५ पवित्र को अपवित्र से कौन निकाल सक्ता? कोई नहीं। उसके दिन
तो ठहराये गये उसके मास की गिनती तेरे पास हैं तू ने उसके
६ सिवाने ठहराये हैं वुह उन्हें पार नहीं जा सक्ता। उसे फिर जा
जिसतें वुह बनिहार के समान अपने दिन को चैन से पूरा
७ करे। क्योंकि यदि पेड़ काटा जाय तो उसका भरोसा है कि
वुह फेर फूटेगा और कि उसकी कोमल कनखियां निकलेंगी।
८ यद्यपि उसकी जड़ भूमि में पुरानी होवे और उसकी खूंघी
९ सूख जाय। तथापि पानी के वास से फूटेगा और साग पात
१० के समान डालें उगावेगा। परन्तु मनुष्य मरता है और
११ मिटजाता है हां वुह मर जाता है और कहां है?। जैसे समुद्र
१२ से पानी घटजाते हैं और बाढ़ हट के सूख जाती है। तैसे

मनुष्य पड़ा रहता है और नहीं उठता जब लों स्वर्ग न होवें वे न
१३ उठेंगे और अपनी नींद से उठाये न जायेंगे। हाय कि तू
मुझे समाधि में छिपा लेवे और जबलों तेरा क्रोध जाता न
रहे गुप्त रक्खे और मेरे लिये समय ठहरा के मुझे स्मरण करे।
१४ यदि मनुष्य मरे तो क्या वुह जीयेगा? मैं अपने ठहराये ऊए
जीवन भर बाट जोहोंगा जबलों मेरे पलटने का समय न
१५ आजे। तू पुकारेगा और मैं तुझे उत्तर देओंगा तू अपने
१६ हाथ के कार्य पर इच्छा रक्खेगा। क्योंकि तू मेरे डग डग को
१७ गिनता है क्या तू मेरे पाप को नहीं तक रहता?। मेरा अपराध
थैली में छाप किया गया है और तू मेरी बुराई को सीता है।
१८ निश्चय पर्ब्बत गिरके नष्ट होता है और पत्थर अपने स्थान से
१९ सरकाया गया है। पानी पत्थर को घिस डालते हैं जो पृथिवी
की धूल से निकलता है सो बहि जाता है और तू मनुष्य की
२० आशा को नष्ट करता है। तू उसके बिरुद्ध नित प्रबल होता है
और वुह जाता रहता है तू उसके रूप को पलटता है और
२१ उसे भेज देता है। उसके बेटे प्रतिष्ठा पाते हैं और वुह नहीं
जानता और वे घटाये जाते हैं परन्तु वुह उन्हें नहीं देखता।
२२ परन्तु उस पर का मांस पीड़ा पावेगा और उसके भीतर का
आत्मा बिलाप करेगा।

१५ पन्दरहवां पर्ब्ब ।

इलीफाज़ का ऐयूब को दपटना १—१३ ईश्वर की
पवित्रता और मनुष्य की दुष्टता बतानी १४—१६
दुष्टों का संसार में कष्टित होना १७—३५।

१।२ तब तीमानी इलीफाज़ ने उत्तर देके कहा। क्या बुद्धिमान वृथा
ज्ञान उच्चारेगा? और अपने पेट को पुरुआ पवन से भरेगा?।
३ क्या वुह निष्फल बार्ता से बिचारेगा? अथवा ऐसी बाचा से जिसे
४ वुह भला न करसके। हां तू डर को त्यागता है और ईश्वर के

५ आगे प्रार्थना रोकता है। क्योंकि तेरा मुंह तेरी बुराई
६ उच्चारता है और धूर्त्त की जीभ तुझे भावती है। तेराही मुंह
तुझ पर दोष लगाता है और मैं नहीं, हां, तेरे होंठ तुझ पर
७ साक्षी देते हैं। क्या पहिला पुरुष तूही उत्पन्न हुआ? अथवा
८ तू पर्ब्बतों से आगे बना था?। क्या तूने ईश्वर के भेद को
९ सुना है? और क्या तू अपनेही पास बुद्धि रोकता है?। तू क्या
जानता जो हम नहीं जानते? तुझ में कौन समझ जो हम्में
१० नहीं। पक्के बाल और बड़े पुरनिये तेरे पिता से भी बहुत
११ बूढ़े हमारे साथ हैं। तेरे लिये क्या परमेश्वर की शांति छोटी
१२ है? और क्या तुझ पास कुछ गुप्त बस्तु है। तेरा मन तुझे क्यों
१३ खींचे जाता है? तेरी आंखें किसे पलक मारती हैं। जो तू अपना
प्राण परमेश्वर के बिरुद्ध फेरता है और बातें अपने मुंह से
१४ निकालता है। मनुष्य क्या जो वुह पवित्र होवे? और स्त्री से
१५ जना जो वुह धर्मी होवे?। देखो वुह अपने साधुन पर भरोसा
१६ नहीं करता हां उसकी दृष्टि में स्वर्ग भी पवित्र नहीं। कितना
अधिक घिनित और मलीन मनुष्य जो बुराई को पानी की नाईं
१७ पीता है। मैं तुझे बताओंगा मेरी सुन और जो
१८ मैं ने देखा है सोई बताओंगा। जो बुद्धिमान ने अपने पितरों
१९ से सुना है और नहीं छिपाया। केवल उन्हों को पृथिवी दिई
२० गई थी और उनमें कोई उपरी न चलता था। दुष्ट जन जीवन
भर पीड़ा में रहता है और अंधेरी पर बरस की गिनती छिपी
२१ हैं। उसके कान में डरों का शब्द है भाग्यमानी में नाशक
२२ उस पर आ पड़ेगा। वुह प्रतीति नहीं करता कि मैं अंधियारे
से फिर आओंगा परन्तु तलवार से उसकी बाट जोही जाती
२३ है। वुह रोटी के लिये बाहर बाहर भ्रमता है कि कहां?
वुह जानता है कि अंधियारे का दिन उसके हाथ पर लैस
२४ है। दुःख और क्लेश उसे डरावेंगे जैसा कि राजा संग्राम
२५ के लिये लैस तैसा वे उस पर प्रबल होंगे। क्योंकि वुह ईश्वर के

विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाता है और सर्वसामर्थी के विरुद्ध आप
२६ को बलवंत करता है। वुह उस पर उसके गले पर उसकी
२७ ढालों की घनी फुलियों पर दौड़ता है। इस कारण कि वुह
अपनी चिकनाई से अपना मुंह ढांपता है और अपने पांजर
२८ पर चिकनाई की डली बनाता है। और वुह उजाड़ नगरों में
और उस घर में जिस में कोई नहीं रहता जो खंड़हर होने
२९ पर है बसता है। वुह धनी न होगा और उसकी संपत्ति न
३० ठहरेगी और उसकी बढ़ती पृथिवी पर न फैलेगी। वुह अंधियारे
से निकल न जायगा लवर उसकी डालियों को सुखा देगी अपने
३१ मुंह के श्वास से वुह जाता रहेगा। जो छल खाया हुआ है सो
बृथा का भरोसा न करे क्योंकि बृथा उसका प्रतिफल होगा।
३२ वुह अपने समय से आगे कट जायगा और उसकी डाली हरी
३३ न रहेगी। लता की नाईं वुह अपने कच्चे दाख झाड़ेगा और
३४ जलपाई की नाईं उसका फूल गिर जायगा। क्योंकि कपटियों
की मंडली उजड़ जायगी और अकोर के डेरे आग से भस्म हो
३५ जायेंगे। उन्हें नटखटी का गर्भ है और बुराई जनते हैं और
उनके पेट छल सिद्ध करते हैं।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

ऐयूब का प्रत्युत्तर १—५ अपना अति और भारी
कष्ट बताना ६—१६ अपनी खराई के लिये ईश्वर
की दोहाई देनी १७—२२।

१।२ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। मैं ने ऐसी ऐसी बहुतसी बातें
३ सुनी हैं तुम सब खिजाऊ शांति दायक हो। क्या बृथा बचन
का अंत नहीं अथवा उत्तर देने को तुझे किस्से साहस होता
४ है?। मैं भी तुम सरीखा बात करसकता हों जो तुम्हारा प्राण
मेरे प्राण की संती होता तो मैं तुम्हारे विरुद्ध बात को ढेर कर
५ सक्ता और तुम पर सिर धुनता। परन्तु मैं अपने मुंह से

तुम्हें बल देता और मेरे होंठ के हिलने से दुःख घटता ।
६ यद्यपि मैं कहता हों मेरा शोक नहीं घटता और जो चुप
७ रहों तो मुझे क्या सुख । परन्तु अब उसने मुझे थकाया है
८ तू ने मेरी सारी जथा को उजाड़ा है । तू ने मुझे सिकुड़ों से
भरा है जो मुझ पर साक्षी हैं मेरी दुबलापन मुझ में उठ के
९ मेरे मुंह पर साक्षी देती है । जो मुझ से बैर रखता है सो कोप
से मुझे फाड़ता है वुह अपने दांत मुझ पर किचकिचाता है मेरा
१० बैरी मुझ पर आंखें चढ़ाता है । उन्हों ने मुझ पर अपना मुंह
बाया है उन्हों ने निन्दा से मेरे गाल पर थपड़ा मारा है वे
११ मेरे बिरुद्ध एकट्ठे ऊए हैं । ईश्वर ने मुझे अधर्मियों के हाथ
१२ बन्द किया है और दुष्टों के हाथ में सौंपा है । मैं चैन से था
परन्तु उसने मुझे दो भाग किया और मेरा गला पकड़ और
झकोर के टुकड़ा टुकड़ा किया है और मुझे अपना चिन्ह खड़ा
१३ कर रक्खा है । उसके धनुष धारियों ने मुझे घेर रक्खा है वुह
मेरे अोझ को फाड़ता है और नहीं छोड़ता और भूमि पर
१४ मेरा पित्त उंडेलता है । वुह दरार पर दरार से मुझे तोड़ता है
१५ वुह महाबली के समान मुझ पर दौड़ता है । मैं ने अपने चाम
पर टाटबस्त्र सीया है अपने सींग को धूल में अशुद्ध किया है ।
१६ बिलाप करते करते मेरा मुंह मलीन ऊआ और मृत्यु की छाया
१७ मेरी भौंहों पर है । मेरे हाथ के अधर्म से नहीं मेरी प्रार्थना भी
१८ पवित्र है । हे पृथिवी मेरा लोहू मत ढांप और मेरा चिल्लाना
१९ कहीं ठिकाना न पावे । अब भी देख मेरा साक्षी स्वर्ग पर और
२० लिखा ऊआ मेरे लिये ऊंचे स्थानों पर है । मेरे मित्र मेरे
२१ निन्दक हैं परन्तु मेरी आंख ईश्वर के आगे बहती हैं । हाय कि
कोई, मनुष्य के लिये ईश्वर से ऐसा बिवाद करता जैसा मनुष्य
२२ अपने मित्र के लिये करता है । जब गिनती के बरस आवेंगे
तब मैं उस मार्ग से जाओंगा जहां से फेर न आओंगा ।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

ऐयूब का अपना दुःख बर्णन करना और बताना कि धर्म्मी मेरे कष्ट से अचंभित होके उदास न होंगे १—१० और मृत्यु में अपनी आशा बतानी ११—१६।

१ मेरा प्राण जाता है मेरे दिन होचुके मेरे लिये समाधि
२ हैं। क्या मेरे पास निन्दक नहीं और मेरी आंख उनके
३ खिजाव पर नहीं बत्तीं?। सो अब आ मुझ में और आप
४ में बिचवई दे वुह कौन मुझे हाथ मारेगा। क्योंकि तू ने उनके मन को ज्ञान से छिपाया है इस लिये तू उन्हें न बढ़ावेगा।
५ जो अपने मित्र से लल्लोपत्तो कहता है उसके बालकों की आंखें
६ घट जायेंगी। उसने मुझे लोगों की कहावत बनाया है परन्तु
७ आगे मैं मृदंग की नाईं था। मेरी आंख शोक के मारे धुंधला
८ गई मेरे अंग अंग छाया के समान हैं। खरे जन इस्से अचम्भित
९ होंगे और निर्दोष आप को कपटी के बिरुद्ध उभाडेगा। धर्म्मी भी अपने मार्ग को धरे रहेगा और जो पवित्र हाथ रखते हैं
१० सो बल में बढ़ते जायेंगे। परन्तु तुम सब जो हो अब फिरो और आओ क्योंकि मैं तुम्में बुद्धि नहीं पाता।
११ मेरे दिन बीत गये हैं, मेरे ठाने हुए अर्थात् मेरे मन की
१२ संपत्ति फूट गई। वे रात को दिन स पलटते हैं अंधियारे
१३ के मारे उंजियाला थोड़ा। जो मैं ठहरों तो समाधि मेरा
१४ घर मैं ने अपना बिछौना अंधियारे में बनाया है। मैं ने सड़ाहट को अपना पिता करके पुकारा और कीड़े को अपनी माता
१५ और बहिन। परन्तु अब मेरी आशा कहां? मेरी आशा कौन
१६ देखेगा?। वे गड़हे के अडंगों में उतरेंगे जब कि चैन धूल में मिला है।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

बिलदाद का ऐयूब को अति दपटना १—४ और दुष्टों की बिपत्ति खोलनी ५—२१ ।

१।२ तब शुही बिलदाद ने उत्तर देके कहा। कि अब तुम बातों ३ का अंत कबलों न करोगे? चीन्ह रक्खो पीछे हम कहेंगे। हम किस लिये पशुन के समान गिने जाते हैं और तुम्हारी दृष्टि में ४ तुच्छ जाने जाते हैं। वुह अपने क्रोध से अपने प्राण को फाड़ता है तेरे लिये क्या पृथिवी त्यागी जायगी? और क्या पहाड़ ५ अपने स्थान से सरकाया जायगा?। हां दुष्ट की ज्योति बुत जायगी ६ और उसकी आग की चिनगारी न चमकेगी। उजियाला उसके तम्बू में अंधियारा हो जायगा और उसका दीआ उसके ७ साथ बुताया जायगा। उसके डग का बल घट जायगा उसी का ८ बिचार उसे गिरावेगा। क्योंकि वुह अपनेही पांव से जाल में ९ पड़गया है वुह फंदे पर चलता है। कल उसकी एड़ी को १० पकड़ेगा और बटमार उस पर प्रबल होगा। उसके लिये जाल ११ भूमि पर छिपे हैं और उसके लिये मार्ग में एक कल?। चारों ओर से भय उसे डरावेगा और उसके पांव को बिथरावेगा। १२ उसका बल भूख से माराहुआ होगा और नाश उसके पास १३ लैस है। वुह उसके चमड़े के अडंगे को भक्षेगा और मृत्यु का १४ पहिलौठा उसका बल भक्षेगा। उसका भरोसा उसके तम्बू से उखाड़ा जायगा और भयानक राजा कने पहुंचावेगा। १५ वही उसके तम्बू में बसेगा क्योंकि उसका नहीं गंधक उसके १६ निवास पर बिथराया जायगा। नीचे से उसकी जड़ सूख १७ जायगी और ऊपर उसकी डाल काटी जायगी। उसका स्मरण पृथिवी से नाश होजायगा और मार्ग में उसका नाम न रहेगा। १८ वे उसे उंजियाले से अंधियारे में खेदेंगे और जगत से खदेड़ा १९ जायगा। वुह अपने लोगों में न बेटा न भतीजा रक्खेगा और २० न उसके निवासों में कोई रहेगा। जो पीछे आवेंगे सो उसके

दिन से आश्चर्य्यित होंगे जैसा उसके संगी, थड़के को पकड़ा
२१ था। निश्चय दुष्टों के निवास ऐसे, और ईश्वर के अज्ञान का यही ठिकाना।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब ।

ऐयूब का अपने मित्रों की क्रूरता बतानी और अपना नाना कष्ट दिखाना १—२०. उनकी दया चाहनी २१—२२ अपने मुक्तिदाता पर और पुनरुत्थान का बिश्वास रखना २३—२७ मित्रों को चिताना २८—२९।

१।२ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। तुम कबलों मेरे प्राण को
३ खिजाओगे? और बातों से मुझे टुकड़ा टुकड़ा करोगे?। तुम लोग दसबार मेरी निन्दा करचुके और लजाते नहीं हो कि मेरे
४ बिरोध आप को कठोर करते हो। और यों हीं होय कि मैं ने
५ चूक किया मेरी चूक मेरेही पास है। यदि निश्चय तुम मेरे बिरुद्ध आप को बढ़ाओगे और मेरी निन्दा मेरे बिरुद्ध करोगे।
६ तो जान रक्खो कि ईश्वर ने मुझे उलट दिया है और अपने
७ जाल से मुझे घेरा है। देखो मैं बरबस्ती से चिल्लाता हों परन्तु सुना नहीं जाता मैं शब्द उठाता हों पर कोई नहीं बिचारता।
८ उसने मेरे मार्ग को घेरा है कि मैं बाहर नहीं जासक्ता और
९ उसने मेरे पथों को अंधियारा किया है। मेरे बिभव को उसने
१० उतार दिया है और मेरे सिर से मुकुट लेलिया। चारो ओर से उसने मुझे नाश किया है और मैं जाता रहा और
११ पेड़ के समान उसने मेरे भरोसा को अलग किया है। उसने अपना कोप भी मुझ पर भड़काया है और अपने बैरियों में
१२ मुझे गिनता है। उसकी जथा एकट्ठी आके मेरे बिरुद्ध मेरे मार्ग में आड़ करतियां हैं और मेरे डेरे की चारों ओर छावनी
१३ करती हैं। उसने मेरे भाईबन्द को मुझ से दूर किया है और

१४ मेरे जान पहिचान निश्चय मुझसे अलग ज़ए हैं। मेरे कुटुम्ब
१५ घट गये हैं और मेरे समीपी मित्र मुझे भूल गये हैं। मेरे घर
के बासी और मेरी दासियां मुझे उपरी गिनते हैं उनकी दृष्टि
१६ में मैं उपरी हों। मैं ने अपने दास को बुलाया और उसने
१७ उत्तर न दिया मैं ने अपने मुंह से उसकी बिनती किई। मेरी पत्नी
के आगे मेरी बोली उपरी है यद्यपि मैं ने अपने ओद्र के बालकों
१८ के लिये बिनती किई थी। हां बालकों ने मेरी निन्दा किई, मैं
१९ उठा और उन्हों ने मेरे बिरुद्ध कहा। मेरे परम हित ने मुझसे
घिन किया और जिन्हें मैं प्यार करता था मेरे बिरुद्ध फिर गये।
२० मेरी हड्डी चाम से मास की नाईं लगी है और अपने दांत के
२१ चाम से मैं बच निकला हों। हे मेरे मित्रो मुझ पर दया करो
मुझ पर दया करो क्योंकि ईश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा है।
२२ ईश्वर के समान क्यों मुझे सताते हो और मेरे मांस से क्यों नहीं
२३ संतुष्ट होते हो। कौन मेरा बचन लिखेगा हाय
२४ कि वे पुस्तक में छापे जाते। कि वे लोहे की लिखनी से खोदे
२५ जाते और सदा चटान पर लगाये जाते। क्योंकि मैं जानता
हों कि मेरा मुक्तिदायक जीता है और अंत में पृथिवी पर खड़ा
२६ होगा। पीछे मैं उठोंगा यद्यपि यह नाश होजाय तथापि मैं
२७ अपने शरीर में अपने ईश्वर को देखोंगा। जिसे मैं अपने
लिये देखोंगा और मेरी आंखें देखेंगी परन्तु उपरी नहीं
२८ यद्यपि मेरा अंक मुझ में नाश होजाय। परन्तु तुम्हें कहना
उचित है कि हम उसे क्यों सताते हैं क्योंकि बात का तत्व मुझ
२९ में है। तलवार से डरो क्योंकि कोप से तलवार का प्रतिफल
होता है जिसतें तुम न्याय को जानो।

२० बीसवां पर्ब्ब।

ज़ोफार का दुष्टों का नाश और बड़ी बड़ी बिपत्ति
खोल खोल के वर्णन करनी १—२९।

१।२ तब नामाती ज़ोफार ने उत्तर देके कहा। इस लिये मेरी चिंता मुझे उत्तर दिलाती हैं और इस के लिये मैं शीघ्र करता
३ हां। मैं ने अपनी निन्दा का रोक सुना है और मेरी समुझ
४ का आत्मा मुझे उत्तर दिलाता है। तू आगे से यह नहीं
५ जानता है जब से पृथिवी पर मनुष्य रक्खा गया। कि दुष्टों का जय जय करना थोरे लों है और कपटी का आनन्द पल मात्र।
६ यद्यपि उसकी महिमा स्वर्ग लों बढ़जाय और उसका सिर
७ मेघ लों पहुंचे। तथापि वुह अपने बिष्ठा की नाईं सदा लों नाश हो जायगा जिन्हों ने उसे देखा है सो कहेंगे कि वुह
८ कहां?। वुह स्वप्न के समान उड़ जायगा और पाया न जायगा
९ हां रात के दर्शन के समान वुह खेदा जायगा। जिस आंख ने भी उसे देखा फेर न देखेगी उसका स्थान उसे फेर न देखेगा।
१० कंगाल उसके संतान को सतावेंगे और उसके हाथ उनकी
११ संपत्ति फेरदेंगे। उसकी तरुणाई के पाप से उसकी हड्डियां
१२ भरी हैं जो धूल में उसके साथ लेट जायेंगे। यद्यपि दुष्टता उसके मुंह में मीठी लगे और वुह अपनी जीभ के तले छिपावे।
१३ यद्यपि वुह बचावे और उसे न छोड़े परन्तु अपने तालू के मध्य
१४ में रक्खे। तथापि उसका भोजन उसके ओझ में पलट के नाग
१५ के बिष के समान हुआ है। वुह धनों को लीलगया है परन्तु वुह उन्हें फेर उगाल डालेगा ईश्वर उसके ओझ से उन्हें निकालेगा।
१६ वुह नाग का बिष चूसेगा और काले सांप की जीभ उसे नाश
१७ करेगी। वुह नदियों को और मधु और माखन की बहती नालियों
१८ को न देखेगा। जिसके लिये उसने परिश्रम किया है उसे फेर देगा और उसे न लीलेगा उसकी संपत्ति के समान पलटा
१९ होगा और वुह आनन्दित न होगा। क्योंकि उसने सता के कंगालों को त्यागा है और जिस घर को उसने न बनाया उसे
२० बरबस्ती से लेलिया। निश्चय वुह अपने ओझ में चैन न पावेगा
२१ और जिसकी उसने इच्छा किई है वह उसे न बचावेगा। उसके

भोजन के लिये कुछ न रहेगा इस लिये कोई उसकी संपत्ति के
२१ लिये न ताकेगा। अपनी भरपूरी की संतुष्टता में वुह सकेती में
२३ पड़ेगा दुष्ट का हर एक हाथ उस पर पड़ेगा। अपना पेट भरते
भरते ईश्वर अपने कोप का झोंका उस पर डालेगा और भोजन
२४ के समय उस पर बरसावेगा। वुह लोहे के हथियार से
२५ भागेगा परन्तु पोलाद का धनुष्य उसे बेधेगा। वुह खींचा गया
है और देह में से निकलता है हां जगमगाता खड्ग उसके पित्ते
२६ से निकलता है भय उस पर पड़े हैं। उसके छिपे स्थानों में सब
अंधियारे गुप्त हैं बिन बरी आग उसे नाश करेगी उसके तम्बू
२७ में जो छूटा है उसके लिये बुराई होगी। स्वर्ग उसकी बुराई
२८ प्रगट करेगा और पृथिवी उसके बिरुद्ध उठेगी। उसके घर की
बढ़ती जाती रहेगी और उसके कोप के दिन बहिजायेंगे।
२९ ईश्वर की ओर से दुष्टों का भाग यही है और अधिकार जो
ईश्वर की ओर से उसके लिये ठहराया गया।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब ।

धीरज से सुना जाना ऐयूब का चाहना १—६
और बताना कि दुष्ट लोग कधी कधी भाग्यमान
होके ढोठाई में बढ़ते हैं ७—१६ परन्तु अंत में
नाश में पड़ते हैं १७—२२ और बताना कि
संसार में ईश्वर का व्यवहार उनसे एकसा नहीं
होता है २३—३४।

१।२ परन्तु ऐयूब ने उत्तर देके कहा। मेरी कथा ध्यान से सुनो
३ और यही तुम्हारी शांति होवे। मुझे कहने देउ और मेरे
४ कहने के पीछे चिढ़ाये जाओ। मैं जो हों क्या मेरी दोहाई
मनुष्य से है? और यदि होता तो मेरा प्राण क्यों न घटता?।
५ मुझे देखो और अचंभित होओ और हाथ मुंह पर धरो।
६ अर्थात् जब मैं स्मरण करता हों तो डरता हों और थर्थराना

७ मेरे शरीर को पकड़ता है। किस लिये दुष्ट जीते
८ हैं और पुरनिया होते हैं हां बल में सामर्थी क्यों हैं?। उनके
सन्तान उनकी दृष्टि के आगे उनके साथ और उनके सन्तान
९ उनकी आंखों के आगे क्यों स्थिर हैं। भय से उनके घर कुशल
१० हैं और ईश्वर का दंड उन पर नहीं। उनके सांड बढ़ते हैं
और नहीं घटते उनकी गाय बियाती हैं और गाभ नहीं
११ गिरातीं। वे झुंड की नाईं अपने बालकों को बाहर लेजाते हैं
१२ और उनके बालक नाचते हैं। वे तबला और बीणा बजाते हैं
१३ और अर्गन के शब्द से आनन्द होते हैं। वे सुख बिलास से
अपने दिन काटते हैं और पल मात्र में समाधि में पड़ते हैं।
१४ इस लिये वे ईश्वर से कहते हैं कि हम से दूर हो क्योंकि हम तेरे
१५ मार्गों का ज्ञान नहीं चाहते। सर्व शक्तिमान क्या, कि हम
उसकी सेवा करें? और जो हम उसकी प्रार्थना करें तो हमें
१६ क्या लाभ होगा?। देखो उनकी भलाई उनके हाथ में नहीं
१७ है दुष्टों का परामर्श मुझ से दूर है। दुष्टों का दीआ बऊधा
बुत जाता है? और उनका नाश उन पर आता है! ईश्वर
१८ अपने कोप से दुःख बांटता है। पवन के आगे वे खूंथ के समान
१९ हैं और भूसे की नाईं आंधी उन्हें लेजाती है। ईश्वर उसके
सन्तानों के लिये उसकी बुराई धर रखता है बुह उसे पलटा
२० देता है और बुह जानेगा। उसकी आंखें उसका नाश देखेंगी और
२१ बुह सर्वशक्तिमान के कोप को पीयेगा। उसके पीछे उसके घर
से क्या आनन्द है जब कि उसके मास की गिनती मध्य में काटी
२२ गई?। क्या कोई ईश्वर को ज्ञान सिखावेगा जो महतों का न्याय
२३ करता है?। एक अपने बल की भरपूरी में सर्वथा चैन और
२४ सुख में मरता है। उसके स्तन दूध से भरपूर हैं और गूदा
२५ से उसकी हड्डियां चिकनी हैं। दूसरा अपने प्राण की कड़ुआहट
२६ में मरता है और सुख से कधी नहीं खाता। वे एकही समान
२७ धूल में पड़े रहेंगे और कीड़े उन्हें ढांपेंगे। देखो मैं तुम्हारी

चिंतों को और मेरे बिरुद्ध तुम जो जो अनुचित बूझते हो
२८ जानता हों। क्योंकि तुम कहते हो अध्यक्ष का घर कहां है और
२९ दुष्टों के तम्बू के निवास कहां हैं?। तुम ने क्या पथिकों से नहीं
३० पूछा है और क्या उनके पते नहीं जानते हो?। कि नाश के
दिन के लिये दुष्ट धरा है? वे कोपों के दिन के लिये निकाले
३१ जायंगे?। उसके मुंह पर कौन उसकी चाल को बर्णन करेगा?
३२ और उसके किये ऊए का पलटा कौन उसे देगा?। वही समाधों
३३ में पऊंचाया जायगा? और ढेर में अगोरेगा?। तराई के
ढेले उसके लिये मीठे होंगे और हरएक जन उसके पीछे
३४ खींचेगा जैसा अगिनित उसके आगे थे। सो तुम लोग क्यों
मुझे बृथा शांति देते हो क्योंकि तुम्हारे उत्तरों में अपराध धरा है।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

मनुष्य के सुकर्म्म से ईश्वर को लाभ नहीं १—४
ऐयूब पर नाना दोष लगाना ५—१४ ईश्वर का
व्यवहार धर्म्मी और अधर्म्मी से १५—२० ऐयूब
को पश्चात्ताप का उपदेश करना २१—३०।

१।२ तब तीमानी ईलीफ़ाज ने उत्तर देके कहा। क्या मनुष्य ईश्वर
के लिये लाभ हो सक्ता है जैसे बुद्धिमान अपने लिये लाभ
३ होवे?। तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान को क्या आनन्द
४ अथवा अपने मार्ग सिद्ध करने में उसे क्या लाभ होवे?। तेरी
डरके मारे क्या वुह तुझे दपटेगा? और तेरे संग क्या वुह
५ बिचार में पड़ेगा?। क्या तेरी दुष्टता बड़ी
६ नहीं? और तेरी बुराई अत्यंत नहीं?। क्योंकि तू ने सेंत से
अपने भाई का बंधक रक्खा है और नंगा के बस्त्र को उतार
७ लिया है। तू ने थके को जल नहीं पिलाया और न भूखों को
८ भोजन दिया। परन्तु हथियारबंध ने भूमि को लिया था और
९ सरूप उसमें बसा है। तू ने रांड़ों को छूछे हाथ फेर दिया है

१० और अनाथों की भुजा तोड़ी गई । इस लिये तेरी चारों ओर
११ जाल है और अचानक भय तुझे सताता है । अथवा अंधियारा
जो तू देख नहीं सक्ता और पानियों की बढ़ताई तुझे ढांपेगी ।
१२ क्या ईश्वर स्वर्ग की ऊंचाई पर नहीं? और क्या वुह ऊंचे से
१३ ऊंचे तारों को नीचे नहीं देखता । तू कहता है कि क्या ईश्वर
जानता है? वुह क्या गाढ़े मेघ में से बिचार कर सक्ता है? ।
१४ गाढ़े मेघ उसके लिये ढपना हैं कि वुह देख नहीं सक्ता? वुह
१५ स्वर्ग के चक्र पर चलता है । क्या तुम ने पुराने मार्ग को चीन्ह
१६ रक्खा है? जिसमें दुष्ट जन चला है? । जो पलमांच में
१७ कट गये बाढ़ उनकी नेउं बहाले गया । जिन्हों ने ईश्वर से
कहा कि हम से दूर हो सर्वशक्तिमान हमारे लिये क्या
१८ कर सक्ता है? । तथापि उसने अच्छी वस्तु से उनके घर को भर
१९ दिया परन्तु दुष्टों का परामर्श मुझ से दूर होवे । धर्म्मी देख के
आनन्दित होते हैं और निर्दोष ठट्ठे से उन पर हंसते हैं ।
२० तो भी हमारी संपत्ति काटी नहीं गई परन्तु उनके बचे हुए को
२१ आग भस्म करती है ।   अब उस्से परिचित हो और
२२ कुशल पा उस्से तेरा भला होगा । उसके मुंह से व्यवस्था ले
२३ और उसके बचन अपने मन में धर रख । जो तू सर्वशक्तिमान
की ओर फिरेगा तो बन जायगा तू अपने डेरों से बुराई दूर
२४ करेगा । तब तू सोना धूल की नाईं और ओफीर का सोना
२५ नालों के पत्थर की नाईं बटोरेगा । हां सर्वशक्तिमान तेरा
२६ बचाव होगा और तेरा बल चांदी का होगा । क्योंकि तब तू
सर्वशक्तिमान में आनन्द पावेगा और ईश्वर के आगे अपना
२७ मुंह उठावेगा । तू उसकी प्रार्थना करेगा और वुह तेरी
२८ सुनेगा और तू अपनी मनौतियों को पूरा करेगा । तू बात भी
ठहरावेगा और वुह तेरे लिये स्थिर होजायगी और तेरे मार्गों
२९ पर उंजियाला होगा । जब लोग गिराये जाते हैं तब तू
कहेगा कि उठाया जाना है और वुह दीन जन को बचावेगा ।

३० वुह टापू को निर्दोष बचावेगा और तेरे हाथ की पवित्रता से वुह बचाया जायगा ।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

ऐयूब का ईश्वर से संबाद चाहना १—७ ईश्वर को साक्षात न देखना तथापि उस पर आशा रखनी ८—१० अपनी खराई बतानी परन्तु ईश्वर के अटल मंत्र से व्याकुल होना ११—१७ ।

१।२ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा । आज मेरा विलाप कड़ुआ है
३ मेरे कुढ़ने से मेरी पीड़ा अधिक भारी है । हाय कि मैं जानता
४ मैं उसे कहां पाओं जिसतें मैं उसके आसन लों जाता । मैं उसके आगे अपना पद धरता और विचार से अपना मुंह
५ भरता । मैं जानलेता कि वुह मुझे क्या उत्तर देगा और जो
६ मुझे कहता उसे समुझता । क्या बड़े पराक्रम से वुह मेरे
७ विरुद्ध विवाद करता? नहीं परन्तु वुह मुझे बल देता । वहां धर्मी उससे विबाद करता यों मैं सदा अपने न्याय से बचता ।
८ देख मैं आगे जाता परन्तु वुह नहीं और हटता परन्तु उसे
९ देख नहीं सक्ता । बाईं ओर जहां वुह कार्य्य करता है परन्तु मैं उसे देख नहीं सक्ता वुह आप को दहिनी ओर ऐसा छिपाता
१० है कि मुझे सूझ नहीं पड़ता । परन्तु वुह मेरी चाल का मार्ग जानता है और मुझे परखा है सोने की नाईं मैं निकलोंगा ।
११ मेरे पांव ने उसके डग को धरा है और उसके पथ को मैं ने
१२ धारण किया है और न मुड़ा । मैं उसके होठों की आज्ञा से न हटा मैं ने उसके मुंह के बचन को आवश्यक भोजन से
१३ अधिक धर रक्खा है । परन्तु वुह एकसां है और उसे कौन फेर सक्ता है? जो उसका जी चाहता है सो वुह करता है ।
१४ मेरे लिये ठहराये हुए को वुह पूरा करता है और बहुत ऐसा
१५ उस पास है । इस लिये मैं उसके साक्षात से व्याकुल हों और

१६ जब सोचता हों तब उस्से डरता हों। क्योंकि ईश्वर मेरे मन को
१७ कोमल करता है और सर्बसामर्थी मुझे व्याकुल करता है। इस
कारण कि मैं अंधियारे के आगे नहीं काटा गया और उसने
मेरे मुंह को अंधियारे से नहीं ढांपा है।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

ऐयूब दिखाता है कि कुकर्म्मी बहुधा दंड रहित
संसार में होते हैं और औरों की नाईं मरते हैं
१—२५।

१ समय तो सर्बशक्तिमान से नहीं छिपे हैं जो उसे जानते हैं सो
२ उसके दिनों को क्यों नहीं देखते हैं?। वे मेड़ों को सरकाते हैं
३ वे बरबस्तो से झुंडों को लेजा के चराते हैं। वे अनाथों के गदहे
४ को हांकलेते हैं वे बंधक के लिये रांड़ का बैल लेते हैं। वे दरिद्रों
को मार्ग से फेर देते हैं और पृथिवी के कंगाल एकट्ठे छिपते
५ हैं। देखो जैसे अरण्य में जंगली गदहे वे अपने अपने काम को
निकलते हैं अहेर के लिये तड़के उठते हैं बन उनके और उनके
६ संतानों के लिये आहार देते हैं। वे खेत में उसका अन्न लवते हैं
७ और दुष्टके अंगूर बटोरते हैं। वे नग्नों को बिन बस्त्र टिकवाते
८ हैं जाड़े में उनके ओढ़ना नहीं। वे पर्बत की झड़ी से भींगते हैं
९ और आड़ के लिये पत्थर में लिपटे हैं। अनाथों को स्तन से
१० छीनते हैं और कंगालों से बंधक लेते हैं। वे बेबस्त्र उन्हें नग्न
११ फिराते हैं और भूखों से आंटी ले लेते हैं। जो उनके आंगनों
में तेल पेरते हैं और उनके अंगूर के कोल्हू लताड़ते हैं और
१२ प्यासे होते हैं। नगर में से लोग कहरते हैं और घायल का
प्राण चिल्लाता है तथापि ईश्वर उन पर मूढ़ता नहीं धरता।
१३ वे उनमें से हैं जो उंजियाले से बैर रखते हैं और उसके पथ
१४ को नहीं जानते न उसके पथ पर ठहरते हैं। घातक भोर को
उठके कंगाल और निर्धन को घात करता है और रात को चोर की

१५ नाईं है। छिनाल की आंख गोधूली की बाट जोहती है और
कहता है कि मुझे कोई न देखेगा और अपना रूप बदलता है।
१६ अंधियारे में उन घरों में वे सेंध मारते हैं जिन्हें दिन को अपने
१७ लिये चीन्ह रक्खा था वे उंजियाला नहीं जानते। क्योंकि
बिहान उनके लिये मृत्यु की छाया की नाईं है और पहिचाना
१८ जाना मृत्यु की छाया का भय है। वुह पानियों के समान वेग है
उनका भाग पृथिवी पर स्रापित है वुह अंगूर की बारी का
१९ पथ नहीं देखता। झुराहट और घाम पाला जल को बहा
२० लेजाता है ऐसाही समाधि पापियों को। कोख उसे भूल जायगी
और कीड़े आनन्द से उसे खायेंगे वुह फेर स्मरण न किया
२१ जायगा और दुष्टता पेड़ की नाईं तोड़ी जायगी। वुह बांझ
२२ को सताता है और रांडों की भलाई नहीं करता। वुह बलवानों
को भी अपने पराक्रम से खींचता है वुह उठता है और जीव
२३ की आशा नहीं करता। यद्यपि चैन के लिये उसे दिया गया
जिस पर वुह ठहरता है तथापि उसकी आंखें उनके मार्गों
२४ पर हैं। वे थोड़े लों बढ़ाये हुए हैं परन्तु नहीं हैं और उतारे
गये, वे सभों की नाईं बन्द हुए हैं और अन्न की बालों के समान
२५ काटे गये हैं। यदि अब नहो तो कौन मुझे झुठावेगा और
मेरा बचन व्यर्थ करेगा?।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

बिलदाद बताता है कि परमेश्वर के राज्य और
पराक्रम के आगे मनुष्य निर्दोष नहीं ठहर सक्ता
१—६।

१।२ तब सूहीती बिलदाद ने उत्तर देके कहा। कि उसपास
प्रभुता और डर है वुह अपने ऊंचे स्थानों में मेल करता है।
३ क्या उसकी सेनाओं की कुछ गिनती है और उसकी ज्योति
४ किस पर नहीं चमकती?। फेर मनुष्य क्योंकर ईश्वर के आगे

निर्दोष ठहर सक्ता? अथवा जो स्त्री से उत्पन्न हुआ सो क्योंकर
५ पवित्र हो सके?। देखो चंद्रमा भी उसके आगे नहीं चमकता
६ और हां तारे उसकी दृष्टि में पवित्र नहीं हैं। फेर कितने
थोड़े मनुष्य, जो कीड़ा और मनुष्य का पुत्र जो कीड़ाही है।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

ऐयूब का बिलदाद के बचन की निन्दा करनी
१—४ फेर बताना कि ईश्वर के कार्य और गुण
अगाध हैं ५—१४।

१।२ परन्तु ऐयूब ने उत्तर देके कहा। निर्बल का तू ने कैसा उपकार
३ किया है? निर्बलों को तू कैसा बचाता है!। निर्बुद्धि को तू ने
किस रीति से मंत्र दिया है? और जैसा है तैसा क्या बिस्तार
४ से बर्णन किया है!। किसके लिये तू ने बचन उच्चारा है?
५ और किस का आत्मा तुझसे निकला है?। पानी के
६ नीचे से मृतक बस्तु और उनका निवास बनते हैं। नरक उसके
७ आगे उघारा है और बिनाश का ढ़ंपना नहीं है। उसने शून्य
८ पर उत्तर फैलाया है नास्ति पर पृथिवी टांगता है। अपने
घने मेघों में वुह जल बांधता है और उनके नीचे मेघ नहीं
९ फटता। वुह अपने सिंहासन का मुंह खींचता है उस पर मेघ
१० फैलाता है। उसने जलों को सिवानों से घेरा है जब लों
११ रात दिन का अंत न हो। स्वर्ग के खंभे कांपते हैं और उसके दपट
१२ से आश्चर्य्यित हैं। वुह अपने पराक्रम से समुद्र को बिभाग
करता है और अपनी समझ से अहंकार को आर पार मारता
१३ है। उसने अपने आत्मा से स्वर्गों को सुंदर किया है और उसके
१४ हाथ ने टेढ़े सर्प को बनाया है। देख उसके कार्य्यों में के कुछ कुछ
ये हैं परन्तु उसी के बिषय में कैसा थोड़ा सुना जाता है पर उसके
गर्जन की सामर्थ्य को कौन समुझ सक्ता है।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

ऐयूब का अपनी खराई को धारण करना १—६ कपटी की चाल और गति बतानी ७—१० बताना कि दुष्टों का भाग्य निरास कष्ट के लिये शीघ्र प्रगट जाता है ११—२३ ।

१।२ ऐयूब ने अपना दृष्टान्त अधिक बढ़ा के कहा। कि ईश्वर की सों जिसने मेरा बिचार लेलिया और सर्वशक्तिमान ने मेरे
३ प्राण को खिजाया है। जब लों मेरा स्वास मुझ में है और
४ परमेश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में। मेरे होंठ दुष्टता न कहेंगे
५ और मेरी जीभ छल न उच्चारेगी। ईश्वर न करे कि मैं तुम्हें निर्दोष ठहराओं मरने लों मैं अपनी खराई को न छोड़ेंगा।
६ मैं अपना धर्म दृढ़ता से धरता हों और जाने न देओंगा जीवन
७ भर मेरा प्राण मुझे दोष न देगा। मेरा बैरी दुष्ट की नाईं होय और जो मेरे बिरोध में उठते हैं सो अधर्मी के
८ समान! यद्यपि कपटी लाभ पावे तथापि जब ईश्वर उसका
९ प्राण लेता है तब उसकी आशा क्या?। जब उस पर दुःख
१० पड़ेगा तब क्या ईश्वर उसका रोना सुनेगा?। वुह क्या सर्वशक्तिमान से आनन्दित होगा? और क्या वुह सदा ईश्वर
११ की प्रार्थना करेगा?। ईश्वर के हाथ में होके मैं तुम्हें सिखाओंगा जो सर्वशक्तिमान के पास है मैं न छिपाओंगा।
१२ लो तुम सभों ने देखा है तो फेर सर्वथा व्यर्थ क्यों हो?।
१३ ईश्वर से दुष्टों का यह भाग है और अंधेरी का अधिकार जो
१४ वे सर्वशक्तिमान से पावेंगे। यदि उसके सन्तान बढ़ जावें तो तलवार के लिये, और उसके लड़के वाले रोटी से तृप्त न होंगे।
१५ उसके उबरे हुए मृत्यु में गाड़े जायेंगे और उसकी रांड़ें
१६ बिलाप न करेंगी। यद्यपि वुह चांदी को धूल की नाईं ढेर करे
१७ और मिट्टी की नाईं वस्त्र सिद्ध करे। वुह सिद्ध करे परन्तु
१८ धर्मी पहिनेंगे और निर्दोषी चांदी बांट लेंगे। वुह कीट के

समान अपना घर बनाता है अथवा रखवाल की झोंपड़ी की
१९ नाईं । धनमान लेट जायगा परन्तु वुह बटोरा न जायगा वुह
२० आंख खोलता है और नहीं है । जल के समान भय उसे
२१ पकड़ते हैं और रात को आंधी उसे चुरा लेजाती है । पुरुआ
पवन उसे लेजाता है और वुह चलाजाता है और आंधी की
२२ नाईं उसे अपने स्थान से उलट देता है । क्योंकि ईश्वर उस पर
डालेगा और न छोड़ेगा उसके हाथ से वुह भागते हुए भागने
२३ चाहता है । लोग उस पर ताली बजावेंगे और उसके स्थान
में से उसे फुफकारेंगे ।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब ।

ऐयूब का बताना कि मनुष्य परिश्रम करके भूमि
में से छिपा धन खोज लेता है १—११ परन्तु ईश्वर
के ज्ञान का धन उसकी खोज से परे है १२—२२
ईश्वर को डरना और बुराई से अलग होना मनुष्य
की बुद्धि है २३—२८ ।

१ निश्चय चांदी के लिये खान है और सोने का स्थान जहां उन्हें
२ निर्मल करते हैं । लोहा भूमि से निकाला जाता है और पीतल
३ पत्थर में से गलाया जाता है । वुह अंधियारे का अंत ठहराता
है और सारी सिद्धता की खोज करता है अंधियारे के पत्थर
४ और मृत्यु की छाया । निवासियों पर बाढ़ फूट निकलता है पांव
से बिसराया हुआ है वे सूख गये वे मनुष्यों से जाते रहे ।
५ पृथिवी से भोजन की उत्पत्ति है और आग की नाईं उसके नीचे
६ उलटाया हुआ है । उसका पत्थर नील मणि का स्थान और
७ उसमें सोने की धूल है । एक पथ है जिसे कोई पंछी नहीं जानता
८ और जिसे गिद्ध की आंख ने नहीं देखा । सिंह के बच्चे ने उसे
९ नहीं लताड़ा है और न क्रूर सिंह उस पास से गया । वुह
अपने हाथ को चटान पर धरता है और पहाड़ों को जड़ से

१० उलटता है। चटानों में से वुह नदी काटता है उसकी आंखें
११ हर एक बहुमूल्य देखती हैं। वुह बाढ़ों को उभड़ने से बांधता
१२ है और छिपेहुए को उंजियाले में लाता है। परन्तु बुद्धि कहां
१३ पाई जाय? और समझ का स्थान कहां?। मनुष्य उसका मोल
नहीं जानता और जीवतों के देश में वुह नहीं पाई जाती।
१४ गहिराव कहता है, कि मुझ में नहीं, और समुद्र, कि मुझ में
१५ नहीं। चोखा सोना उसके लिये दिया नहीं जा सक्ता और उसके
१६ मोल के लिये चांदी तौली नहीं जाती। ओफिर का सोना
उसका मोल नहीं होसक्ता और बहुमूल्य वैदूर्य अथवा
१७ नीलमणि भी तुल्य न होगा। सोना और स्फटिक उसके तुल्य
नहीं हो सक्ते और सोने के पात्र से भी पलटा न जायगा।
१८ मोती अथवा मूंगा का नाम न लिया जायगा क्योंकि बुद्धि का
१९ मोल मणि से अधिक है। कोश का पद्मराग उसके तुल्य नहीं
२० और न चोखा सोना उसके मोल का है। फेर बुद्धि कहां से
२१ आती है? और समझ का स्थान कहां?। वह सारे जीवतों
की आंखों से गुप्त है और आकाश के पंछियों से छिपा।
२२ विनाश और मृत्यु कहती हैं कि हमने अपने कानों से उसकी
२३ कीर्त्ति सुनी है। ईश्वर उसका पथ समझता है वुह उसका
२४ स्थान जानता है। क्योंकि वुह पृथिवी के सिवाने लों देखता है
२५ सारे स्वर्ग के तले देखता है। कि पवनों के लिये बटखरा बनावे
२६ और वुह नाप नाप के पानी तौलता है। जब उसने मेंह के
लिये आज्ञा ठहराई और बिजुली के गर्ज्जन के लिये मार्ग।
२७ तब उसने उसे देखा और उसे गिना उसने उसे सिद्ध किया
२८ हां उसे खोज लिया। और मनुष्यों से उसने कहा कि देखो
ईश्वर का भय सोई बुद्धि, और बुराई छोड़ना वही समझ।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

अपने चैन और आदर खोने के लिये ऐयूब का उदास होना १—११ बताना कि अपने पराक्रम को भलाई में काटा १२—१७ और अपने भाग्य की आशा का कारण १८—२५।

१। २ फेर ऐयूब ने अपने दृष्टान्त बढ़ा के कहा। हाय कि मैं पिछले मासों के समान होता उन दिनों की नाईं जब ईश्वर ने मेरी ३ रक्षा किई। जब उसका दीआ मेरे सिर पर चमकता था और ४ उसकी ज्योति से मैं अंधियारे में से चलता था। जैसा मैं अपनी तरुणाई के दिनों में था जब कि ईश्वर ने मेरे तंबू को दृढ़ किया ५ था। जब सर्वशक्तिमान मेरे पास था मेरे सन्तान मेरी ६ चारो ओर। जब मैं अपने डगों को मक्खन से धोता था और ७ चटान मेरे लिये तेल की नदियां बहाती थी। जब नगर में से मैं फाटक पर जाके अपना आसन सड़क पर सिद्ध करता ८ था। तरुण मुझे देख देख आप को छिपाते थे और वृद्ध उठ ९ खड़े होते थे। अध्यक्ष बोलने से रुक जाते थे और अपना १० हाथ मुंह पर धरते थे। कुलीन चुप होते थे और उनकी जीभ ११ उनके मुंह के तालू में लग जाती थी। जब कान सुनता था तब मुझे वर देता था और जब आंखें देखती थीं तब मेरे लिये १२ साक्षी देती थीं। इस कारण कि दोहाई करने से मैं ने कंगालों को और अनाथों को और उसे जिसका कोई उपकारी न था १३ बचाया। जो नाश होने पर था उसका आशीष मुझ पर पड़ा १४ और मैं विधवों के मन के आनंद के गान का कारण हुआ। मैं ने धर्म को पहिचाना और उसने मुझे ढांपा और मेरा बिचार १५ बागा और मुकुट की नाईं था। मैं अंधों के लिये आंख था १६ और लंगड़ों के लिये पांव। मैं कंगालों के लिये पिता और १७ जो पद मैं जानता न था उसे खोज लेता था। मैं ने दुष्टों की डाढ़ १८ तोड़ी और उन्हों के दांत से लूट छीनी। तब मैं ने कहा कि मैं

अपने बसेरे में मरोंगा और मैं अपने जीवन के दिन बालू की
१९ नाईं बढ़ाओंगा। मेरी जड़ पानियों के लग फैल गई और मेरी
२० डालियों पर रात भर ओस रहेगी। मेरा तेज मुझ में नवीन
२१ होगा और मेरा धनुष मेरे हाथ में बना रहेगा। लोग
मेरी ओर कान धरते थे और मेरे दपट से चुप रहते
२२ थे। मेरे वचन के पीछे फिर न बोलते थे, क्योंकि मेरा वचन
२३ उन पर टपकता था। वे मेंह की नाईं मेरी बाट जोहते थे
२४ और पिछले मेंह के लिये अपना मुंह बाते थे। जो मैं हंसता
था तो वे प्रतीति न करते थे और मेरे मुंह के तेज को वे न
२५ उतारते थे। मैं उनका मार्ग चुनता था और श्रेष्ठ बैठता था
और सेना के राजा की नाईं रहता था जैसा कोई विलापियों
को शांति देता है।

३० तीसवां पर्ब्ब।

अपने अति निन्दित होने से ऐयूब का कुढ़ना
१—२४ और औरों को शांति देना पर अपना
शांति दायक न रखना २५—३१।

१ परन्तु अब जो मुझ से थोड़े दिन के हैं मेरी निन्दा करते हैं जिन के
पितरों को मैं अपने कूकरों के झुंड के साथ बैठाना तुच्छ जानता।
२ हां उनके हाथ के बल से मुझे लाभ कहां जिन में बुढ़ापा नाश
३ ऊई?। क्योंकि आवश्यक के और अकाल के मारे वे अकेले
४ बन में कल रात उजड़ और शून्य में दौड़ते थे। और अपने
भोजन के लिये झाड़ीयों के लग सात और रितम के पेड़ की
५ जड़ काटते थे। वे मनुष्यों में से खेदे गये और चोर की नाईं
६ उनके पीछे पीछे पुकारते थे। जिसतें तराई के कंदले और
७ पृथिवी के गड़हे में और चटानों में रहें। वे झाड़ियों में
८ पुंपियाते थे भटकटैया के तले एकट्ठे होते थे। वे मूढ़ों के संतान
९ हां नामहीन के बालक थे और देश से मारे ऊए थे। परन्तु

१० अब मैं उनका गान हों हां मैं उनकी कथनी हों। वे मुझे घिनाते हैं वे मुझसे परे खड़े रहते हैं और मेरे मुंह पर थूकने
११ से अलग नहीं रहते। इस कारण कि उसने मेरी रस्सी खोली और मुझे दुःख दिया उन्हों ने मेरे आगे बाग छोड़ दिया है।
१२ मेरी दहिनी ओर तरुण उठते हैं और मेरे पांव को ठेल देते
१३ हैं और अपने नाश के मार्गों में मेरे बिरुद्ध उठते हैं। वे मेरे पथ को बिगाड़ते हैं और मेरी बिपत्ति को बढ़ाते हैं उनका
१४ कोई उपकारी नहीं। वे बड़े रेले के समान मुझ पर आते हैं
१५ नाश में वे मुझ पर पलट आये। भय मुझ पर उलट पड़े हैं और पवन की नाईं वे मेरे प्राण को खदेड़ते हैं मेघ के समान
१६ मेरा कुशल क्षेम जाता रहता है। अब मेरा प्राण मुझ पर
१७ बहि निकला और कष्ट के दिनों ने मुझे धर रक्खा है। मेरी हड्डियां रात के समय मुझ में बेधी जाती हैं और मेरी नसें
१८ चैन नहीं लेतीं। मेरे रोग के मारे मेरा बस्त्र पलट गया
१९ और मेरी कुरती के गले की नाईं मुझे बांधती है। उसने मुझे चहले में डाल दिया है मैं धूल और राख की नाईं बना
२० हों। मैं तुझे पुकारता हों और तू नहीं सुनता मैं खड़ा होता
२१ हों और तू नहीं मानता। तू मेरे लिये क्रूर हुआ है और
२२ अपने हाथ के बल से मेरे सन्मुख होता है। तू मुझे पवन पर उठाता है और चढ़ाता है और मेरे तत्व को पिघलाता है।
२३ क्योंकि मैं जानता हों कि तू मृत्यु में और सारे जीवतों के लिये
२४ ठहराये हुए घर में मुझे पहुंचावेगा। यद्यपि वे उसके नाश के लिये चिल्लावें तथापि वुह समाधि लों अपने हाथ न बढ़ावेगा।
२५ क्या दुःखियों के लिये मैं ने बिलाप नहीं किया और कंगालों
२६ के लिये मेरा प्राण दुःखी न हुआ। जब मैं ने भलाई के लिये बाट जोही तब बुराई आई और जब मैं ने उंजियाले
२७ के लिये ताका तब अंधियारा आया। मेरी अंतड़ियां उबलीं और चैन न पाया और कष्ट के दिन ने मुझे रोका।

२८ बिना सूर्य्य मैं बिलाप करता रहा मैं खड़ा हुआ और
२९ मंडली में रोया। मैं अजगरों का भाई और उल्लुओं का संगी।
३० मेरा चाम काला हो गया और मेरी हड्डियां घाम से जल
३१ गईं। मेरी बीणा भी बिलाप के और मेरा अर्गन बिलापियों
के शब्द से फिर गया।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब ।

अशुद्धता और अधर्म्मता से १—१२ और अपने सेवक और कंगालों की ओर से भी ऐयूब का आप को निर्दोष ठहराना १३—२२ और अनेक पाप से आप को निर्दोष ठहराना २३—३४ ईश्वर की दोहाई देना ३५—४०।

१ मैं ने अपनी आंखों से वाचा बांधी फेर मैं कन्या पर क्यों दृष्टि
२ करों?। क्योंकि ऊपर से ईश्वर का क्या भाग? और ऊंचाई से
३ सर्वशक्तिमान का क्या अधिकार?। क्या दुष्टों के लिये नाश
४ नहीं? और कुकर्मियों के लिये अद्भुत दंड नहीं?। क्या
वुह मेरी चालों को नहीं देखता और मेरे सारे डगों को
५ नहीं गिनता?। जो मैं बृथा से चला हों अथवा जो मेरा
६ पग छल की ओर बेग हुआ हो। तो वुह मुझे न्याय की तुला
७ में तोले जिसतें ईश्वर मेरी खराई को जाने। जो मेरा डग पथ
से फिरा हो और मेरा मन मेरी आंखों के पीछे गया हो और
८ जो मेरे हाथों में कोई धब्बा लगा हो। तो मैं बोओं और
९ दूसरा खाय हां मेरे संतान उखड़ जायें। यदि मेरा मन स्त्री
से छल खाया हो अथवा जो अपने परोसी के द्वार में बाट
१० जोही हो। तो मेरी पत्नी दूसरे की होजाय और दूसरे उस
११ पर झुकें। क्योंकि यह महा पाप है हां यह बुराई न्यायियों के
१२ दंड योग्य। क्योंकि यह आग विनाश लों भस्म करती है और
१३ मेरी सारी बढ़ती को उखाड़ती। जो मेरे दास

अथवा दासियों ने मुझसे झगड़ा और मैं उनके पद की निन्दा किई ।
१४ तो मैं क्या करों जब ईश्वर उठेगा? और जब वुह बूझेगा तब
१५ मैं उसे क्या उत्तर देओं? । क्या जिसने मुझे कोख में सिरजा
उसे नहीं सिरजा? और एकही ने कोख में हमारा डौल
१६ नहीं किया? । जो मैं ने कंगालों को उनकी इच्छा से रोका हो
१७ अथवा बिधवा को आखों को घटाया हो । अथवा अपना कौर
१८ आपी खा लिया हो और अनाथोंने उस्से न खाया । (क्योंकि
अपनी लड़काई से वुह मेरे साथ पाला गया और मेरी माता
के गर्भ से उत्पन्न होतेही मैं ने उसे पिता की नाईं पाला) ।
१९ यदि मैं ने किसी को बिना वस्त्र नष्ट होते देखा अथवा किसी
२० कंगाल को ओढ़ना बिना । जो उसकी कटि ने मुझे आशीष न
२१ दिया और मेरी भेड़के रोम से न गरमाया । जो मैं ने
अनाथों के बिरुद्ध हाथ उठाया हो जब मैं ने अपने उपकार
२२ फाटक में देखा । तब मेरी भुजा मेरे कांधे से गिर पड़े और
२३ मेरे बांह की हड्डियां चूर होवें । क्योंकि मैं ईश्वर के नाश से
डरता था और उसके महत के कारण मैं सहि न सक्ता था ।
२४ जो मैं ने कंचन को अपनी आशा किई हो अथवा चोखे
२५ सोने को अपना भरोसा कहा । जो अपने धन के बढ़ने के
कारण मैं आनन्दित ऊआ और अपने हाथ के प्राप्त के कारण ।
२६ जो मैं ने उंजियाले को चमकते अथवा चलते चंद्रमा को
२७ ज्योतिमान देखा है । और मेरा मन चुपके से फुसलाया गया
२८ हो अथवा मेरे मुह ने मेरे हाथ को चूमा हो । यह भी एक
बुराई न्यायियों के दंडयोग्य होती क्योंकि मैं ऊपर के ईश्वर से
२९ मुकर जाता । यदि मैं अपने बैरी के नाश से आनन्दित
ऊआ अथवा जब बुराई उसपर पड़ी तो फूला । और
३० मैं ने अपने तालू से पाप होने न दिया कि उसके प्राण को
३१ धिक्कारे । जो मेरे डेरे के मनुष्यों ने न कहा हाय कि हम
३२ उसके मांस में से पाये होते हम संतुष्ट नहीं होसक्ते । परदेशी

सड़क में न टिका मैं ने अपने द्वारों को पथिकों के लिये खोला।
३३ जो मैं ने आदम की नाईं अपने अपराध को ढांपा और अपनी
३४ गोद में बुराई को छिपाया। क्या मैं बड़ी मंडली से डरा?
अथवा परिवारों की निन्दा ने मुझे डराया कि चुपके होके मैं
३५ द्वार के बाहर न गया?। हाय कि कोई मेरा सुनता देख मैं
चाहता हों कि सर्वशक्तिमान मुझे उत्तर देवे और मेरा बैरी
३६ एक पुस्तक लिखे। अवश्य मैं अपने कांधे पर उठाता और
३७ मुकुट के समान अपने पर बांधता। मैं उसके आगे अपने
डग की गिनती बर्णन करता अध्यक्ष के समान मैं उस पास
जाता अवश्य मैं अपने कांधे पर उठाता और मुकुट के समान
३८ अपने पर बांधता यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध
३९ चिल्लावे अथवा उसकी हराई भी बिलाप करें। यदि मैं बिना
रोकड़ उसका बल खाया हो अथवा उसके स्वामी के प्राण को
४० घात करवाया। तो गोहूं की संती भड़ भाड़ ऊगें और जव
की संती उंटकटारे ऐयूब के बचन समाप्त ऊए।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

इलीहू का ऐयूब से और उसके तीन मित्रों से
रिसियाना १—५ अपनी तरुणाई का और ऐयूब
के अपबादियों का वर्णन करना ६—१४ निष्पक्ष
की बातें करने चाहना १५—२२।

१ सो ये तीनों जब ऐयूब को उत्तर देने में रहिगये इस कारण कि
२ वुह अपनीही दृष्टि में धर्मी था। तब राम के नाते के बसीती
बाराकेल के बेटे इलीहू का कोप भड़का ऐयूब पर उसका कोप
भड़का क्योंकि उसने ईश्वर से अपने प्राण को विशेष धर्मी
३ जाना। उसके तीनों मित्रों पर भी उसका कोप भड़का इस
कारण कि उन्हों ने उत्तर न पातेही ऐयूब को दोषी ठहराया।
४ अब इलीहू ऐयूब के बचन की बाट जोह रहा था क्योंकि वे उससे

५ बैठे थे। जब इलीहू ने तीनों जन के मुंह में उत्तर न देखा तब
६ उसका कोप भड़का। और बूसीती बाराकेल के बेटे इलीहू
ने उत्तर देके कहा कि मैं थोड़े दिन का और आप लोग
पुरनिये, इस लिये मैं डरा और अपने मन की कहने में छियाव
७ न किया। मैं ने कहा कि दिन कहेंगे और बरसों की बढ़ताई
८ बुद्धि सिखावेंगी। परन्तु मनुष्य में एक आत्मा है और
९ सर्व्वशक्तिमान की प्रेरणा उन्हें समझ देती है। महत जन सदा
१० बुद्धिमान नहीं न प्राचीन बिचार बूझते। इस लिये मैं ने कहा
११ कि मेरी सुनो मैं भी अपने मन की कहोंगा। देखो मैं ने तुम्हारे
वचन की बाट जोही जब तुम खोज खोज के बात निकालते थे
१२ मैं ने तुम्हारे बिचारों पर कान लगाया। मैं ने तुम पर सुरत
लगाई और देखो तुम्में से किसी ने ऐयूब को दोषी न ठहराया
१३ अथवा उसके वचन का उत्तर दिया। न हो कि तुम कहो कि
१४ हमने बुद्धि पाई है ईश्वर उसे गिराता है मनुष्य नहीं। अब
उसने मेरे बिरुद्ध नहीं कहा और न तुम्हारे वचन के समान
१५ मैं उसे उत्तर देउंगा। वे बिस्मित हुए और फेर उत्तर न
१६ दिया और वचन उनसे जाते रहे। जब मैं ठहर गया (क्योंकि
किसी ने न कहा परन्तु चुपका खड़ा रहा और फेर उत्तर
१७ न दिया)। मैं भी अपनीही कहोंगा मैं भी अपनाही
१८ सुनाओंगा। क्योंकि मैं बस्तुन से भर पूर हों और मेरे भीतर
१९ का आत्मा मुझे उभाड़ता है। देख मेरा पेट बिन खुले हुए
दाख रस के समान है और नये कुप्पों की नाईं फटने पर है।
२० श्वास लेने के लिये मैं कहोंगा मैं होठ खोल के उत्तर देउंगा।
२१ मैं मनुष्य का पक्ष न करों और न मनुष्य को फुसलाने का पद
२२ देओं। क्योंकि फुसलाने का पद मैं नहीं जानता नहीं तो मेरा
सिरजनहार मुझे शीघ्र उठा लेता।

३३ तेतीसवां पर्ब्ब।

ईश्वर की संती इलीहू का ऐयूब से बिवाद करना १—७ अपने तईं निर्दोषी ठहराने को उस पर पयलगाना ८—१३ बताना कि ईश्वर किस किस भांति से मनुष्यों को चिताता है १४—३० ऐयूब से उत्तर चाहना ३१—३३।

१ इस लिये हे ऐयूब मेरे बचन सुन और मेरी सब बातों पर
२ कान धर। देख अब मैं ने अपना मुंह खोला है और मेरे
३ तालू में जीभ कहती है। मेरे बचन मन की खराई से होंगे
४ और मेरे होंठ खोल खोल के ज्ञान उचारेंगे। ईश्वर के आत्मा
ने मुझे बनाया है और सर्बशक्तिमान के स्वास ने मुझे जीवन
५ दिया है। यदि तू मुझे उत्तर दे सके तो बचन को सुधार के
६ मेरे आगे खड़ा हो। देख तेरे मुंह के समान ईश्वर की सन्ती
७ हों मैं भी मिट्टी से बनाया गया हों। देख मेरा भय तुझे न
८ डरावेगा और मेरा हाथ तुझ पर भारी न होगा। निश्चय
तू ने मेरे कानों में कहा है और तेरे बचन का शब्द मैं ने सुना
९ है। कि मैं निरपराध पवित्र, मैं निर्दोष, और मुझ में बुराई
१० नहीं। देख मेरे विरुद्ध वुह कारण ढूंढ़ता है, और वुह मुझे
११ अपना बैरी जानता है। मेरे पांव को वुह काठ में डालता है
१२ मेरे सारे मार्गों को चीन्ह रखता है। देख इस में तू धर्म्मी
१३ नहीं मैं तुझे उत्तर देउंगा कि ईश्वर मनुष्य से बड़ा है। तू क्यों
उस्से झगडता है? क्योंकि वुह अपने कार्य्यों का लेखा नहीं देता।
१४ क्योंकि ईश्वर एक बार कहता है हां दो बार परन्तु मनुष्य नहीं
१५ बूझता। स्वप्न में, रात के दर्शन में, जब भारी नींद मनुष्य पर
१६ पड़ती है बिछौना पर ऊंघते ऊंघते। तब वुह मनुष्यों के कानों
१७ को खोलता है और उनमें उपदेश छापता है। जिसतें मनुष्य
को अपने कार्य्य से फिरावे और मनुष्य से अहंकार को छिपावे।
१८ वुह उसके प्राण को गड़हे से और उसके जीव को खड्ग से जाने से

१९ रख छोड़ता है। जो अधिक वुह अपनी खाट पर पीड़ा से
२० और उसकी सारी हड्डियां अति पीड़ा से ताड़ना पावें। यहां
लों कि उसका प्राण रोटी से और उसका जीव रुच भोजन
२१ से घिनाता है। उसका मांस गल के अदेख हो जाता है और
२२ उसकी अदेख हड्डियां निकल आती हैं। ज्यों ज्यों उसका
प्राण समाधि के पास और उसका जीव नाशक कने
२३ पहुंचता है। जो उसके पास सहस्र में एक कोई दो भाषिया
२४ दूत होवे जिसतें मनुष्य को उसकी खराई दिखावे। तब वुह उस
पर कृपाल होके कहता है कि गड़हे में उतरने से उसे बचा,
२५ मैं ने प्रायश्चित पाया है। उसका मांस बालक के से भी पुष्ट
२६ होगा वुह अपनी तरुणाई के दिन में फेर जायगा। वुह
ईश्वर से प्रार्थना करेगा और वुह उस पर कृपाल होगा हां
वुह आनन्द से उसका मुंह देखेगा क्योंकि वुह मनुष्य को
२७ प्रति फल देगा। वुह मनुष्य को यह कहते हुए देखता है कि
मैं ने पाप किया और सत्य के विरुद्ध किया है और मुझे लाभ
२८ नहीं। तो समाधि में जाने में वुह उसके प्राण को बचावेगा
२९ और उसका जीव उंजियाला देखेगा। देखो ईश्वर मनुष्य से
३० दो तीन बार ऐसे कार्य्य करता है! जिसतें उसके प्राण को
गड़हे से फेर लावे जिसतें जीवतों के उंजियाले से उंजियाला
३१ होवे। हे एयूब चौन्ह रख और मेरी सुन और चुपका रह मैं
३२ कहोंगा। जो तुझ पास कुछ कहना होय तो उत्तर देके कह
३३ क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराने चाहता हों। और नहीं तो मेरी
सुन चुपका रह और मैं तुझे बुद्धि सिखाओंगा।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

इलीहू का बुद्धिमानों का बिचार चाहना १—९
और बताना कि परमेश्वर अनुचित नहीं कर सक्ता
१०—३० ऐयूब को दपटना ३१—३७।

१।२ इलीहू ने फेर उत्तर देके कहा। हे बुद्धिमानो मेरे बचन सुनो
३ हे ज्ञानियो मेरी ओर कान धरो। क्योंकि जैसा तालू भोजन को
४ चीखता है तैसा कान बचन को परखता है। आओ बिचार
५ को चुनें आपुस में जानें कि क्या अच्छा है। देखो ऐयूब ने
कहा है कि मैं धर्मी हों और मेरा बिचार ईश्वर ने फेर दिया
६ है। क्या मैं अपने बिरुद्ध झूठ कहों? निरपराध मेरा घाव
७ असाध्य है। कौन जन ऐयूब के समान, निन्दा को पानी
८ की नाईं पीता है। और कुकर्मियों के संग संग जाता है और
९ दुष्टों के साथ चलता है। क्योंकि उसने कहा है कि ईश्वर से
१० आनन्द होने में मनुष्य को कुछ लाभ नहीं। इस लिये हे
ज्ञानियो मेरी सुनो दुष्टता ईश्वर से परे रहे और बुराई
११ सर्वशक्तिमान से। क्योंकि वुह मनुष्य को उसके कार्य का फल
देगा और हर एक मनुष्य को उसकी चाल के समान दिलावेगा।
१२ हां निश्चय ईश्वर दुष्टता न करेगा और सर्वशक्तिमान न्याय
१३ न फेरेगा। पृथिवी पर किसने उसे आज्ञा दिई है? अथवा
१४ किसने सारे संसार को स्थिर किया है। जो वुह उस पर अपना
मन लगावे जो वुह उसका आत्मा और उसका खास अपने पास
१५ समेटे। तो सारे शरीर एक साथ नष्ट होंगे और मनुष्य फेर
१६ धूल में जायेंगे। अब जो बुद्धि होवे तो सुन मेरे बचन के शब्द
१७ पर कान धरो। क्या जो सत्य का बैरी है सो प्रभुता करेगा और
१८ तू धर्ममय पर दोष लगावेगा। क्या राजा को दुष्ट कहना
१९ उचित है? और अध्यक्षों को अधर्मी?। वुह अध्यक्षों का पक्ष
नहीं करता और धनी को कंगाल से अधिक नहीं बूझता? क्योंकि
२० सबके सब उसी के हाथ के कार्य्य हैं। पल भर में वे मर जायेंगे
और आधी रात को लोग घबराके जाते रहेंगे और बिना
२१ हाथ बलवान् दूर किया जायगा। क्योंकि उसकी आंखें मनुष्यों की
२२ चालों पर हैं और वुह उसकी सारी चाल देखता है। कुकर्मियों
२३ के छिपने के लिये न अंधकार न मृत्यु की छाया है। क्योंकि वुह

मनुष्य पर अधिक न डालेगा जिसतें वुह मनुष्य के साथ न्याय
२४ में जाय। वुह बलवंतों को टुकड़ा टुकड़ा करेगा और
२५ उनके स्थान पर दूसरे को ठहरावेगा। क्योंकि वुह उनके
कार्य जानता है और वुह रात को उन्हें यहां लों उलट देता है
२६ कि वे नष्ट होते हैं। वुह उन्हें देखवैयों के आगे दुष्टों की नाईं
२७ मारता है क्योंकि वे उस्से पीछे फिर गये और उसके
२८ किसी मार्गों को नहीं सोचते। यहां लों कि वे कंगालों को
उसके आगे चिल्लाने कराते हैं और दुखियों की दोहाई को
२९ सुनता है जब वुह सुख देता है तब दुख कौन देसक्ता?
और जब वुह मुंह छिपाता है तब कौन उसे देख सक्ता? चाहे
३० देशी के बिरुद्ध होवे चाहे केवल एक मनुष्य के। जिसतें कपटी
३१ राज न करे न हो कि लोग बझ जायें। निश्चय ईश्वर को कहना
३२ उचित है कि मैं ने सहा है फेर पाप न करोंगा। मुझे सूझ
नहीं पड़ता तू मुझे सिखा जो मैं ने बुराई किई है मैं फेर न
३३ करोंगा। तेरी इच्छा के समान वुह पलटा देगा चाहे तू माने
चाहे न माने और मैं नहीं इस लिये जो तू जानता है सो
३४।३५ कह। ज्ञानी मुझे कहे और बुद्धिमान मेरी सुने। ऐयूब
३६ ने अज्ञानता से कहा है और उसकी बातें निर्बुद्धि की। दुष्टों
के लिये उत्तर देने के कारण मेरी इच्छा है कि ऐयूब अन्त लों
३७ परखा जाय। क्योंकि वुह अपने पापों में आज्ञा भंग करना
मिलाता है और हमों में थपोड़ी मारता है और ईश्वर के
बिरुद्ध अपनी बातें बढ़ाता है।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

इलीहू का ऐयूब को दपटना १—८ अन रीति से
प्रार्थना करने में ईश्वर नहीं सुनता ९—१३ धीरज
धरने का और ईश्वर पर भरोसा रखने का उपदेश
करना १४—१६।

१।२ फेर इलीहू ने उत्तर देके कहा। तू ने जो कहा कि मेरा
३ धर्म ईश्वर के से अधिक है क्या तू इसे ठीक समुझता है?। क्योंकि
तू ने कहा कि पाप से पवित्र होने में मेरे लिये क्या बढ़ती होगी
४ और मैं क्या लाभ पाओंगा?। मैं तुझे और तेरे संगियों को
५ उत्तर देओंगा। स्वर्गों की ओर ताक और देख मेघों को
६ देख जो तुझ से ऊंचे हैं। जो तू पाप करे तो उसके बिरुद्ध क्या
करता है! अथवा तेरा अपराध बढ़ जाय तो उस पर क्या
७ करता है?। जो तू धर्मी होय तो उसे क्या देता? अथवा
८ वुह तेरे हाथ से क्या लेता?। तेरी दुष्टता तुझ सरीखे
९ मनुष्य को और तेरा धर्म मनुष्य के पुत्र को। अंधेर की बहुताई
के कारण वे रोलाते हैं और बलवंत की भुजा के मारे वे
१० चिल्लाते हैं। परन्तु कोई नहीं कहता कि मेरा कर्त्ता ईश्वर कहां
११ है जो रात को गान कराता है। जो पृथिवी के पशुओं से
अधिक हमें सिखाता है और हमें आकाश के पंछियों से अधिक
१२ बुद्धिमान करता है। दुष्टों के अहंकार के मारे वे चिल्लाते हैं
१३ पर कोई उत्तर नहीं देता। ईश्वर व्यर्थ बचन नहीं सुनेगा और
१४ सर्वशक्तिमान मन न लगावेगा। यद्यपि तू कहे कि मैं उसे न
देखोंगा तथापि न्याय उसके आगे है इस लिये उस पर भरोसा
१५ रक्ख। पर अब न होने के कारण उसने रिसिया के पलटा
१६ लिया है तथापि वुह अति सकेती में नहीं जानता। इस लिये
ऐयूब वृथा अपना मुंह खोलता है और अज्ञानता से बात
बढ़ाता है।

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब।

इलीहू का ईश्वर का न्याय बताना १—१५ ऐयूब
को दपटना १६—२१ ईश्वर का पराक्रम और
कार्य और व्यवहार बताना २२—३३।

१।२ फेर इलीहू कहता गया। तनिक और सहिले और मैं तुझे

३ दिखाओंगा कि अब भी ईश्वर के लिये कुछ कहने को है। मैं
दूरसे ज्ञान लाओंगा और अपने कर्त्ता पर धर्म ठहराओंगा।
४ निश्चय मेरे बचन मिथ्या नहीं जो ज्ञान में सिद्ध है सो तेरे
५ साथ। देख ईश्वर सामर्थी है और निन्दा नहीं करता बल
६ में और बुद्धि में सामर्थी। वुह दुष्टों के जीवन को रक्षा नहीं
७ करता परन्तु कंगालों का विचार करेगा। वुह धर्म्मी से अपनी
आंखें नहीं उठाता परन्तु सिंहासन पर राजाओं के साथ हां
वुह उन्हें सदा के लिये स्थिर करता है और वे बढ़ाये जाते हैं।
८ यदि सांकरों में बंधे हों अथवा दुःख की रसियों से बंधे हों।
९ तब वुह उनका कार्य और उनका अपराध दिखाता है कि वे
१० बढ़ गये। वुह उनके कानों को भी उपदेश के लिये खोलता है
११ और बुराई से फिरने की आज्ञा करता है। जो वे मान जायं
और सेवा करें तो वे भाग्य से अपने दिन काटेंगे और अपने
१२ बरसों को आनन्द से। परन्तु जो वे न मानें तो तलवार से मारे
१३ जायेंगे और बिना ज्ञान मरेंगे। परन्तु मन के कपटी कोप ढेर
१४ करते हैं जब वुह उन्हें बांधता है वे नहीं चिल्लाते। वे तरुणाई में
१५ मरते हैं और उनका जीवन अशुद्धों में है। वुह दरिद्रों को
उनके दुःख से छुड़ाता है और अंधेर में उनके कान को खोलता
१६ है। वैसाही तुझे सकेती से फेरला के चौड़े स्थान में लेजाता
जहां सकेती नहीं और तेरे मंच का चैन चिकनाई से भरपूर
१७ होता। परन्तु तू ने दुष्टों का बिचार पूरा किया है और बिचार
१८ और न्याय तुझे पकड़ते हैं। कोप के कारण नहो कि वुह चोट
१९ से तुझे लेजाय तब बड़ा प्रायश्चित तुझे फेर न सकेगा। क्या
वुह तेरा धन्य कुछ बूझेगा? न सोना न सारे बल का पराक्रम।
२० रात मत चाह जब लोग अपने अपने स्थान में काटे जाते हैं।
२१ चौकस रह बुराई पर मन मत लगा क्योंकि तू ने इसे दुःख से
२२ अधिक चाहा है। देखो ईश्वर अपने पराक्रम से बढ़ाता है
२३ और उसके समान कौन सिखाता है? । उसके मार्ग को किसने

उसे बताया है अथवा कौन कह सक्ता कि तू ने बुराई किई है।
२४ स्मरण करके उसके कार्य्य की महिमा कर जो मनुष्य देखते
२५।२६ हैं। हर एक जन उसे देखे और मनुष्य दूर से देखे। देखो
ईश्वर महान है और हम नहीं जानते उसके बरसों की गिनती
२७ की खोज नहीं हो सक्ती। क्योंकि वुह जल के बूंदों को छोटा
२८ करता है वे उसके कुहिरे के समान मेंह बरसाते हैं। जिन्हें
२९ मेघ टपकाते हैं और मनुष्य पर बहुताई से चुआते हैं। मेघों
के फैलाव को अथवा उसके तम्बू के शब्द को कौन समुझ सक्ता
३०. है। देखो वुह अपना उंजियाला उस पर फैलाता है और
३१ समुद्र की जड़ को ढांपता है। क्योंकि उनसे वुह लोगों का
३२ बिचार करता है वुह भोजन बहुताई से देता है। वुह मेंघों
से उंजियाला ढांपता है और अपनी बिजुली को चलाता है।
३३ उसका शब्द उसका विषय दिखाता है और कोप का जलजलाहट
दुष्टता के कारण।

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब।

इलीहू का ईश्वर के पराक्रम का वर्णन करना १—
१३ उसके कार्य अखोज हैं १४—२२ उसके गुण
से मनुष्य को दीनताई सीखी चाहिये २३—२४।

१ इससे भी मेरा मन थर्थराता है और अपने स्थान से टलगया
२ है। सुनते हुए उसके बचन का शब्द और स्वर जो उसके मुंह
३ से निकलता है सुन। सारे स्वर्ग के तले उसे पहुंचाता है और
४ अपनी बिजुली को एथिवी के अंतलों। उसके पीछे शब्द गर्जता
है और अपने शब्द की महिमा से कड़कता है और जब उसका
५ शब्द सुना गया है तब वुह उन्हें न रोकेगा। अपने शब्द से ईश्वर
अद्‌भुत रीति से कड़कता है वुह बड़े बड़े कार्य्य करता है जो
६ हम नहीं बूझ सक्ते। क्योंकि वुह पाला से कहता है कि तू
एथिवी पर हो और मेंह की झड़ी से और अपने बल के मेंह

७ की झाड़ी से भी। वुह हर एक मनुष्य के हाथ को बन्द करता है
८ जिसतें सारे लोग उसका कार्य्य जानें। तब पशु मान्द में जाते
९ हैं और अपने अपने ठिकाने में रहते हैं। दक्षिण से भौंडर,
१० और उत्तर से जाड़ा आता है। ईश्वर के स्वास से पाला
११ दिया जाता है और जल की चौड़ाई सकेत होती है। पानी
को भी देते देते वुह गाढ़े मेघों को थकाता है और अपना
१२ उंजियाले का मेघ छितराता है। उसके मंत्र से वुह घुमाया
जाता है जिसतें पृथिवी में जगत पर वे उसकी सारी आज्ञा
१३ पालें। चाहे दंड के लिये अथवा अपने देश के लिये अथवा
१४ दया के लिये वुह उसे भेजता है। हे ऐयूब यह सुन और
१५ चौकस हो ईश्वर के आश्चर्य्य कार्य्य को सोच। जब ईश्वर ने उनका
ठिकाना किया और अपने मेघ के उंजियाले को चमकाया क्या
१६ तू जानता है?। जो ज्ञानमय है क्या तू उसके आश्चर्य्य कार्य्य
१७ मेघों की बराबरी को जानता है?। जब दखिनहा से वुह
जगत को स्थिर करता है तो तेरे बस्त्र किस भांति से गरमाते
१८ हैं। क्या तू ने उसके साथ आकाश को फैलाया है जो ढालुआ
१९ दर्पण की नाईं पोढ़ है। जो हम उसे कहें सो हमें सिखा
२० क्योंकि अंधियारे के मारे हम बात बना नहीं सक्ते। क्या उसे
कहा जायगा कि मैं बोलता हों? जो मनुष्य कहे तो निश्चय
२१ वुह निंगला जायगा। और अब लोग मेघों का बड़ा उंजियाला
नहीं देखते परन्तु पवन बहता है और उसे पवित्र करता है।
२२ फरच्छाई उत्तर से आती है भयंकर महिमा ईश्वर के पास है।
२३ हम सर्वशक्तिमान को नहीं पा सक्ते पराक्रम और विचार और
२४ बहुत न्याय में वुह महान है वुह कष्ट न देगा। इसी लिये मनुष्य
उसे डरते हैं वुह किसी बुद्धिमान का पक्ष नहीं करता।

३८ अठतीसवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर का बवंडर में से ऐयूब से संवाद करना १—३ अपने महा पराक्रम और मनुष्य की दुर्बलता का बर्णन करना ४—४१ ।

१।२ तब बवंडर में से परमेश्वर ने ऐयूब को उत्तर देके कहा । यह कौन है जो अज्ञान की बातों से परामर्श को अंधियारा करता
३ है । अब अपनी कटि मनुष्य की नाईं कस क्योंकि मैं तुझ से पूछोंगा
४ और तू मुझे उत्तर दे । जब मैं ने पृथिवी की नेवें डालीथीं तब
५ तू कहां रहा? जो तू समझ रखता हो तो कह । किसने उसका परिमाण किया है? जो तू जानता है? अथवा किसने उस पर
६ सूत खींचा? । उसका पूल किस पर गड़ायागया? अथवा
७ किसने उसके कोने का पत्थर बैठाया था? । जब बिहान के तारागणों ने मिलके गाया और ईश्वर के सारे पुत्रों ने आनन्द
८ के मारे ललकारा? । अथवा जब समुद्र फूट के गर्भ से निकल
९ आया तब किसने उसके द्वारों को बन्द किया । जब मैं ने मेघ को उसका बस्त्र बनाया और उसकी पेटी के कारण गाढ़े मेघ
१० को । और अपनी आज्ञा को उस पर स्थिर किया और अड़ंगे
११ और केवाड़े रक्खे । और कहा कि यहां लों तू आने पावेगा
१२ परन्तु आगे नहीं तेरी लहरों का अहंकार यहीं ठहरेगा । क्या तू ने अपने दिनों से बिहान को आज्ञा किई है? और तू ने
१३ पौफटने को उसका ठिकाना जनाया है? । जिस्तें पृथिवी
१४ के अन्तों को पकड़ लेवे जिस्तें दुष्ट उस्से दूर किये जायें? । जैसे मिट्टी छाप से छापी जाती है और वे बस्त्र की नाईं खड़े होते
१५ हैं । और दुष्टों से उनकी ज्योति रोकी जई है और ऊंची
१६ भुजा तोड़ी गई है । क्या तू समुद्र के सोतों में पैठा है? अथवा
१७ गहिरापे की थाह लेने गया है? । क्या मृत्यु के फाटक तेरे लिये खोले गये हैं? अथवा तू ने मृत्यु की छाया के केवाड़ों को देखा
१८ है? । क्या तू ने पृथिवी की चौड़ाई को देखा है? यदि इन सभों को

१९ जानता हो तो कह। उंजियाले का भी निवास कहां है?
२० और अंधियारे का स्थान कहां?। जिसतें तू उसे उसके सिवाने
२१ लों पहुंचावे और उसके घर के पथों को जाने। क्या
तभी जन्म पाने के कारण से तू जानता है? अथवा गिनती में
२२ तेरे दिन बहुत होने से। क्या तू पाले के भंडारों में
२३ पैठा है? अथवा ओले के भंडारों को देखा है?। जिन्हें मैं ने
बिपत्ति के लिये और लड़ाई और संग्राम के दिन के लिये रख
२४ छोड़ा है। किस रीति से ज्योति का भाग होता है जो पुरुआ पवन
२५ को पृथिवी पर छिन्न भिन्न करती है। किसने बाढ़ के पानियों के
लिये पथ ठहराया है अथवा बिजुली के कड़कने के लिये मार्ग।
२६ जिसतें पृथिवी पर बरसावे जहां मनुष्य नहीं, बनमें जहां मनुष्य
२७ नहीं। जिसतें उजड़ और परती को तृप्त करे और कोमल साग
२८ पात की कली को निकलवावे। क्या मेंह का कोई पिता है? अथवा
२९ ओस के बून्दों को किसने जना है?। पाला किसकी कोख से
३० निकला है? और आकाश के पाले को किसने जना है?। जल
पत्थर के समान छिपे हैं और गंभीर का मुंह ग्रसा गया है?।
३१ क्या तू ग्रीष्म के फलदायक गुण को बांध सक्ता है? अथवा जाड़े
३२ का बंधन खोल सक्ता है?। क्या तू मृत्युदायक वायु को
उसकी रितु में निकाल सक्ता है? अथवा पाला के लेंढ़ों को
३३ और उसके बेटों को चला सक्ता है?। क्या तू स्वर्ग की विधिन
को जानता है? और उसकी प्रभुता पृथिवी पर ठहराई
३४ है?। मेघ लों तू क्या अपना शब्द उठा सक्ता है जिसतें जलकी
३५ बहुताई तुझे ढांपे?। क्या तू बिजुलि को भेज सक्ता है जिसतें
३६ वे जाके तुझे कहें कि हमें देख?। किसने अंतरों में बुद्धि डाली
३७ है? अथवा मन में किसने समझ दिई है?। कौन मेघों को बुद्धि
से गिन सक्ता है? अथवा स्वर्ग के कुप्पों को कौन थाम सक्ता है?।
३८।३९ जब धूल का सहला बनता है और ढेले जम जाते हैं?। क्या
तू सिंह के लिये अहेर करेगा? अथवा सिंह के बच्चे का जी भर

४० देगा। जब वे अपने मांद में झुकते हैं और छूके में छिपते हैं।
४१ कौन कौओं का आहार सिद्ध करता है? जब उसके चिंगने ईश्वर को पुकारते हैं वे भोजन बिना भ्रमते हैं?।

३९ उंतालीसवां पर्ब्ब ।

ईश्वर का अपना पराक्रम और मनुष्य की दुर्बलता दिखानी १—४ जंगली गदहे का ५—८ गैंड़े का ९—१२ मोर ऊंटपक्षी मुर्ग का १३—१८ संग्रामी घोड़े का १९—२५ बाज और गिद्ध का बर्णन करना २६—३० ।

१ क्या तू चटान की जंगली बकरियों के जन्ने का समय जानता है?
२ अथवा हरिणी के जन्ने के समय को चीन्ह सक्ता है?। क्या तू उनके पूरे मासों को गिन सक्ता है? अथवा उनके जन्ने का समय
३ जानता है?। वे निहुड़ती हैं और बच्चे जनती हैं वे अपने दुःखों
४ को निकालती हैं। उनके बच्चे रिष्टपुष्ट हैं वे अन्न से बढ़ते हैं वे
५ निकल जाते हैं और उन पास फिर नहीं आते। किसने बनैले गदहे को निर्बंध भेजा है? और किसने बनैले गदहे का
६ बंधन खोला है?। जिसका घर मैं ने बन को बना रक्खा है और
७ नोनछार स्थान उसके निवास। वुह नगर की मंडली को तुच्छ
८ जानता है और निचोरियों के शब्द को नहीं मानता। पर्ब्बतों की दौर में उसकी चराई है और वुह हर एक हरियाली को
९ ढूढ़ता है। क्या गैंड़ा तेरी सेवा की इच्छा करेगा?
१० अथवा तेरी खुरली पर ठहरेगा?। क्या तू गैंड़े को उसके बंधन से हराई में बांध सक्ता है? अथवा वुह तेरे पीछे पीछे तराई में
११ हेंगा फेरेगा?। उसके महा बल के कारण क्या तू उसकी आशा
१२ करेगा? अथवा अपना परिश्रम उस पर छोड़ेगा?। क्या तू अपने खत्ते में एकट्ठे करने की और अपना बीज घर में पहुंचाने
१३ की उसकी प्रतीति करेगा। क्या तू ने मोर को

सुन्दर सुन्दर डैने अथवा ऊंटपक्षी को डैने और पर दिया
१४ है?। जो अपने अंडे भूमि पर छोड़ जाती है और धूल से
१५ उन्हें सेवती है। और भूल जाती है कि पांव से चूर किये जायें
१६ अथवा कि बन पशु उन्हें तोड़ें। वुह अपने चिंगनों पर कठोर
है जैसा कि वे उसके नहीं हैं निर्भय से उसका परिश्रम व्यर्थ है।
१७ इस कारण कि ईश्वर ने उसे बुद्धि रहित किया है और उसने उसे
१८ समझ न दिई है। जब वुह आप को उठाता है तब वुह घोड़े
१९ की और उसके चढ़वैयों की निन्दा करता है। क्या तू ने
घोड़े को बल दिया है? क्या तू ने उसके गले में गर्ज्जन पहिनाया
२० है?। क्या फनगे की नाईं तू उसे डरा सकता है? उसके नथुनों
२१ का बिभव भयानक है। वुह तराई में टापता है और बल से
२२ आनन्दित है वुह हथियारबन्द से मिलने को जाता है। वुह
२३ भय से ठट्ठा करता है और नहीं डरता है। और वुह तलवार
से और अपने बिरोध तूण की हड़हड़ाहट से और चमकते
२४ भाले से और ढाल से नहीं हटता। वुह रिस और क्रोध से
भूमि को निंगलता है और प्रतीति नहीं करता कि वुह तुरही
२५ का शब्द है। तुरही का शब्द सुन के वुह हाहा करता है वुह
संग्राम की और सेनापतिन के गर्ज्जन के ललकार की बास
२६ दूर से लेता है। क्या तेरी बुद्धि से बाज उड़ता है और
२७ दक्खिन की ओर अपने डैने फैलाता है?। क्या तेरे बचन से गिद्ध
ऊपर उड़ता है और ऊंचाई पर अपना बसेरा बनाता है।
२८ वुह चटान पर बसता है और पहाड़ के कड़ारे पर और दृढ़
२९ स्थान पर रहता है। वहां से अपना अहेर ढूंढ़ता है और
उसकी आंखें दूर से देखती हैं उसके चिंगने लोहू भी पीते हैं
और जहां लोथ तहां वुह।

४० चालीसवां पर्ब्ब।

ऐयूब का दीन होना १—५ परमेश्वर का प्रश्न
६—१४ हाथी में परमेश्वर का पराक्रम १५—२४।

१।२ फेर परमेश्वर ने ऐयूब को उत्तर देके कहा। कि जो सर्वशक्तिमान से झगड़ता है क्या वुह उसे सिखावेगा? जो ईश्वर
३ को डपटता है सो उत्तर देवे। तब ऐयूब ने परमेश्वर को
४ उत्तर देके कहा। कि देख मैं तुच्छ हों मैं तुझे क्या उत्तर देओं?
५ मैं मुंह पर अपना हाथ रक्खोंगा। एक बार मैं ने कहा है परन्तु फेर उत्तर नदेउंगा हां दो बार परन्तु आगे न बढ़ोंगा।
६ फेर परमेश्वर ने बवंडर से ऐयूब को उत्तर देके कहा।
७ अब मनुष्य की नाईं अपनी कटि बांध मैं तुझे पूछोंगा और
८ तू मुझे बता। क्या तू मेरे बिचार को भी बृथा करेगा? और
९ मुझ पर दोष लगाके आप धर्म्मी ठहरेगा?। क्या ईश्वर के समान तेरी भुजा है? अथवा उसके समान तू गर्जन का शब्द
१० कर सक्ता है?। प्रभाव और उत्तमता से अपने को सिंगार और
११ सुन्दरता और बिभव से आप को बिभूषित कर। अपने कोप की जलजलाहट फैला और हरएक अहंकारी को देख के उसे
१२ तुच्छ कर। हरएक अहंकारी को देख के उसे नीचे कर और दुष्टों
१३ को उनके स्थान पर रौंद डाल। एकट्ठे धूल में उन्हें छिपा और
१४ गुप्त में उनके मुंह बांध। तब मैं भी तेरे आगे मान लेओंगा कि
१५ तेरा ही दहिना हाथ तुझे बचा सक्ता है। हाथी को देख जिसे मैं ने तेरे साथ बनाया है वुह बैल की नाईं घास खाता है।
१६ देख अब उसका बल उसकी कटि में है और उसके पेट की
१७ नाभी में उसका बल है। अपनी पूंछ को आरज पेड़ की नाईं
१८ हिलाता है और उसके अंड की नस समेटी ऊई है। उसके हाड़ पीतल के टुकड़े के समान और उसकी हड्डीयां लोहे के
१९ अड़ंगे की नाईं। वुह ईश्वर के बनाये ऊए में श्रेष्ठ जिसने उसे
२० सिरजा वुह अपनी तलवार उस पास पऊंचा सक्ता है। निश्चय

पर्ब्बत उसके लिये भोजन उपजाते हैं जहां सारे बन पशु कलोल
२१ करते हैं। छाया कार पेड़ तले और नरकट और दलदल के
२२ आड़ में लेटता है। छाया कार पेड़ अपनी छाया से उसे
२३ ढांपता है नाले के बेत उसे घेरते हैं। देखो वुह नदी को
सोखलेता है और शीघ्र नहीं करता वुह भरोसा रखता है
२४ कि मैं अर्दन को अपने नथुनों में सुरुक सक्ता हों। क्या उसके
देखते देखते कोई उसे पकड़ेगा अथवा फंदेसे उसकी नाक
छेदेगा।

४१ एकतालीसवां पर्ब्ब ।

भयंकर लबियासान के बिषय में ईश्वर के पराक्रम
का बर्णन १—३४ ।

१ क्या कंटिया से लबियासान को तू खींच सक्ता है? अथवा उसकी
२ जीभ रस्सी से बांध सक्ता है?। क्या उसके नाक में तू कंटिया
डाल सक्ता है? अथवा उसकी डाढ़ कांटे से छेद सक्ता है?।
३ क्या वुह तेरी बिनती करेगा? क्या वुह तुझसे कोमल बातें करेगा?।
४ क्या वुह तुझसे बाचा बांधेगा? तू उसे सदा के दास के लिये
५ लेगा?। क्या चिड़िया के समान तू उस्से खेलेगा? अथवा अपनी
६ कन्या के लिये उसे बांधेगा?। क्या तेरे संगी उसका जेवनार
७ बनावेंगे? क्या वे ब्यापारियों में उसे बांटदेंगे?। क्या तू उसके
खाल को अंकुरी दार लोहों से अथवा उसके सिर मच्छ के भालों
८ से बेध सक्ता है। अपना हाथ उस पर धर संग्राम को स्मरण
९ कर फेर मत कर। देख उसकी आशा मिथ्या है क्या उसे
१० देखतेही मनुष्य ध्वस्त न होगा?। निर्भय से कौन उसे जगा
११ सक्ता है फिर मेरे आगे कौन ठहर सक्ता है?। कौन मुझसे आगे
ऊआ है कि मैं उसे फेर देओं? स्वर्ग के तले सब कुछ मेरा है।
१२ मैं उसका स्वरूप और उसका बल और उसकी सुन्दरता
१३ न छिपाओंगा। उसके बस्त्र का रूप कौन उघार सक्ता? अथवा

१४ अपनी दोहरी ढाठी लेके उसके पास कौन आ सक्ता?। उसके मुंह के केवाड़ों को कौन खोल सक्ता? उसके दांत चारों ओर
१५ भयंकर हैं। ढालों के पोढ़ पोढ़ टुकड़े छाप की नाईं बन्द हैं सो
१६ उसकी बड़ाई। एक दूसरे से ऐसे गुथे हैं कि उनके मध्य पवन
१७ का प्रवेश नहीं। एक दूसरे से मिला है वे एकट्ठे ऐसे सटे हैं कि
१८ अलग किये जा नहीं सक्ते। उसकी छींक से ज्योति चमकती है
१९ और उसकी आंखें बिहान की भौं की नाईं हैं। उसके मुंह से बरते ऊए दीए निकलते हैं और आग की चिनगारी उछल
२० पड़ती हैं। उसके नथुनों से धूआं निकलता है जैसा उसिन्ने के
२१ हंडे अथवा कड़ाहे से। उसके श्वास से कोइले बर उठते हैं
२२ और उसके मुंह से लवर निकलती है। उसके गले में बल
२३ रहता है और उसके आगे दुःख आनन्द करता है। उसके मांस परत परत मिले ऊए हैं वे आप में ठस हैं वे हिलाये जा
२४ नहीं सक्ते। उसके मन पत्थल की नाईं पोढ़ हां चक्की के नीचे
२५ के पाट की नाईं कड़े हैं। जब वुह आप को उभाड़ता है तो
२६ बलवंत डरते हैं उसके हलरे के मारे वे घबरा जाते हैं। उसके मारने वाले का खड्ग अथवा बर्छी अथवा सांग अथवा फरी
२७ नहीं ठहरता। वुह लोहे को त्रिण के समान जानता है और
२८ पीतल को सड़ी लकड़ी की नाईं। बाण उसे भगा नहीं सक्ता
२९ और ढेलवांस के पत्थर को वुह खूंथी की नाईं फेरता है। भाला खूंथी की नाईं गिना जाता है और बरछी के हिलाने से वुह
३० हंसता है। चोखी चोखी ठीकरियां उसके नीचे हैं और वुह
३१ धार किई ऊई वस्तु कादों पर बिछाता है। वुह गम्भीर को हंडे की नाईं उबलाता है वुह समुद्र को ओषध के लेप की नाईं
३२ बनाता है। उसके पीछे पीछे का मार्ग चमकता है गम्भीर
३३ फेन से बूटे दार होता है। पृथिवी पर कोई उसके समान नहीं
३४ है जो निर्भय से रहता है। वुह सारी ऊंची वस्तुन को देखता है वुह अहंकारियों के सारे संतानों का राजा है।

४२ बयालीसवां पर्ब्ब ।

दीनताई से ऐयूब का ईश्वर के बश में होना १—६ ईश्वर का उसके मित्रों पर रिसियाना और ऐयूब के लिये उन पर क्षमा करना ७—९ ऐयूब की बढ़ती १०—१२ उसके बालक १३—१५ उसकी बय और मृत्यु १६—१७।

१।२ तब ऐयूब ने परमेश्वर को उत्तर देके कहा। कि मैं जानता हों तू सब कुछ कर सक्ता है और कोई चिंता तुझ से छिपाई ३ जा नहीं सक्ती। वुह कौन है जो अज्ञानता से परामर्श को छिपाता है? इस लिये जो मैं ने नहीं समझा सो उचारा है मेरे ४ लिये बड़े आश्चर्य की बातें जो मैं ने नहीं जानीं। मेरी बिनती ५ सुन और मैं कहोंगा मैं तुझे पूछोंगा और तू मुझे बता। मैं ने तेरे विषय में कान से सुना था पर अब मेरी आंखें तुझे देखती ६ हैं। इस लिये मैं अपने से घिनाता हों और धूल और राख में ७ पश्चात्ताप करता हों।　　　　और यों हुआ कि परमेश्वर के यह बात ऐयूब से कहने के पीछे परमेश्वर ने तीमानी इलीफाज़ से कहा कि मेरा कोप तुझ पर और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है क्योंकि मेरे दास ऐयूब के समान मेरे विषय में तुम्हों ८ ने नहीं कहा। इस लिये अब अपने अपने लिये सात बैल और सात मेढ़े लेके मेरे दास ऐयूब पास जाओ और होम की भेंट अपने लिये चढ़ाओ और मेरा दास ऐयूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा क्योंकि मैं उसे ग्रहण करोंगा नहो कि मैं तुम पर बुराई लाउं क्योंकि मेरे दास ऐयूब ने जैसा मेरे ९ विषय में ठीक कहा तैसा तुम्हों ने नहीं कहा। सो तीमानी इलीफाज ने और शुहीती बिलदाद ने और नामाती ज़ोफार ने जाके जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी तैसा किया १० परमेश्वर ने भी ऐयूब को ग्रहण किया। और जब ऐयूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना किई तब परमेश्वर ने ऐयूब की

बंधुआई को पलट दिया और परमेश्वर ने ऐयूब को आगे से
११ दूना दिया। तब उसके सारे भाई बंद और सारी बहिन और
उसके सारे आगे के जानपहिचान आये और उसके घर में
उसके संग भोजन किया और उसके लिये विलाप किया और
सारी बिपत्ति के लिये जो परमेश्वर ने उस पर डाली थी शांति
दिई और हर एक जन ने उसे एक एक टुकड़ा रोकड़ और
१२ हर एक ने उसे सोने की एक एक बाली दिई। सो परमेश्वर ने
ऐयूब के अंत को उसके आरंभ से अधिक बर दिया क्योंकि उसके
चौदह सहस्र भेड़ और छः सहस्र ऊंट और एक सहस्र जोड़ा
१३ बैल और एक सहस्र गदहियां थीं। और उसके सात बेटे
१४ और तीन बेटियां थीं। और उसने जेठी का नाम जमीमा
और दूसरी का नाम कसीआ और तीसरी का नाम करन
१५ हप्पूक रक्खा। और उस सारे देश में ऐयूब की बेटियों के
समान सुन्दर कोई स्त्री न थी और उनके पिता ने उनके भाइयों
१६ के साथ उन्हें अधिकार दिया। उसके पीछे ऐयूब एक सौ चालीस
बरस जीया और अपने बेटे और अपने पोते चार पीढ़ी लों
१७ देखा। सो ऐयूब पुरनिया और दिनों में पूरा होके मर गया।

दाऊद के गीत ॥
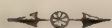
१ पहिला गीत ।

१ जो मनुष्य पापियों के मत पर नहीं चलता और अपराधियों के पथ पर खड़ा नहीं रहता और निंदकों के आसन पर नहीं
२ बैठता सो धन्य है। परन्तु वुह परमेश्वर की व्यवस्था में मगन
३ है और उसकी व्यवस्था में रात दिन ध्यान करता है। वुह जल की धारा के पास लगाये ऊए पेड़ के समान होगा जो अपनी रितु में फलता है उसका पत्ता भी नहीं मुरझावेगा और
४ अपने सब काम में भाग्यमान होगा। अधर्मी ऐसा नहीं
५ पर वे भूसी के तुल्य हैं जिसे बयार उड़ा ले जाती है। इस लिये अधर्मी न्याय स्थान में और अपराधी धर्मियों की सभा
६ में खड़े न होंगे। क्योंकि परमेश्वर धर्मियों की चाल पहिचानता है परन्तु अधर्मियों की चाल नष्ट हो जायगी।

२ दूसरा गीत ।

१ अन्यदेशी किस लिये ऊल्लर करते हैं और लोग अनर्थ चिंता
२ करते हैं?। जगत के राजा सामना करते हैं और प्रधान परमेश्वर के और उसके मसीह के विरुद्ध परामर्श करते हैं।
३ कि आओ हम उनके बंधनों को तोड़ डालें और उनकी रस्सियों
४ को अपने पास से फेंक देवें। जिसका आसन स्वर्ग पर है सो
५ हंसेगा परमेश्वर उन्हें ठट्ठों में उड़ावेगा। वुह कोप से उनसे
६ बोलेगा और अपने महा कोप से उन्हें सतावेगा। तिसपर भी

मैं ने अपने पहाड़ की पवित्रता सहून पर अपने राजा को
७ अभिषिक्त किया है मैं नियम को वर्णन करोंगा कि परमेश्वर
ने मुझे कहा है कि तू मेरा पुत्र आजके दिन तू मुझसे उत्पन्न
८ हुआ। मुझसे मांग और मैं अन्यदेशियों को तेरे अधिकार में
९ देउंगा और पृथिवी के चारो खूंट तेरे वश में करोंगा। तू
लोहे के दंड से उन्हें तोड़ेगा कुम्हार के बर्त्तन की नाईं तू उन्हें
१० पटक के चकना चूर करेगा। इसलिये हे राजाओ बुद्धिमान
११ होओ और हे पृथिवी के न्यायियो उपदेश ग्रहण करो। डरते
हुए परमेश्वर की सेवा करो और कांपते हुए आनंद करो।
१२ पुत्र को चूमो कि वुह रिसिया न जाय जब उसका क्रोध तनिक
भी भड़के और तुम मार्ग से नाश हो जाओ सब जो उस पर
भरोसा रखते हैं धन्य हैं।

३ तीसरा गीत।

दाऊद का गीत जब वुह अपने बेटे अबसालम से
भागा।

१ हे परमेश्वर मेरे सताऊ कैसे बढ़ गये? और बहुतेरे मेरे
२ विरुद्ध उठते हैं। बहुतेरे मेरे प्राण के विषय में कहते हैं कि
३ ईश्वर से अब उसकी सहाय नहीं सीलाह। पर हे परमेश्वर
तू मेरी ढाल और मेरा विभव और मेरे सिर का
४ उभाड़नेवाला है। मैं ने अपने शब्द से परमेश्वर को पुकारा
और उसने अपने पवित्र पहाड़ पर से मेरी सुनी सीलाह।
५ मैं लेट गया और सो रहा और जाग उठा क्योंकि परमेश्वर ने
६ मेरी रक्षा किई। विरोध में दस सहस्रों ने मुझे घेरा है मैं उनसे
७ न डरोंगा। हे परमेश्वर उठ हे मेरे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि तू ने
मेरे सारे बैरियों के गाल पर थपेड़ा मारा तू ने अधर्मियों के
८ दांतों को तोड़ा है। मुक्ति परमेश्वर ही से है तेरा आशीष
तेरे लोगों पर है, सीलाह।

नगीनूत के प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ हे मेरे धर्म्म के ईश्वर जब मैं तुझे पुकारों तब सुन कष्ट से तू ने
२ मुझे छोड़ाया है दया करके मेरी प्रार्थना सुन। हे मनुष्यों के
पुत्रो मेरे विभव को कबलों लाज से पलटोगे? और वृथा से
३ प्रीति रखके झूठ का पीछा करोगे? सीलाह। पर जान रक्खो कि
परमेश्वर ने धर्म्मी को अपने लिये अलग कर रक्खा है जब मैं
४ उसे पुकारोंगा परमेश्वर सुनेगा। डरो और पाप न करो
५ चुपके होके मनही मन ध्यान करो, सीलाह। धर्म्म के बलि
६ चढ़ाओ और परमेश्वर पर भरोसा रक्खो। बहुतेरे कहते
हैं कि कौन हमें कुछ भलाई दिखावेगा? हे परमेश्वर अपने
७ सरूप की ज्योति हम पर उदय कर। उनके आनंद और
दाखरस के बढ़ने के समय से अधिक तू ने मेरे मन को
८ आनंदित किया है। मैं चैन से लेट जाउंगा और सो रहूंगा
क्योंकि परमेश्वर अकेला मुझे चैन से रखता है।

५ पांचवां गीत।

नहीलूस के प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर मेरी बातों पर कान धर और मेरे ध्यान को सोच।
२ हे मेरे राजा और हे मेरे ईश्वर मेरे रोने का शब्द सुन क्योंकि
३ मैं तेरी प्रार्थना करोंगा। हे परमेश्वर तू बिहान को मेरा
शब्द सुनेगा बिहान को मैं सिद्ध होके तेरी ओर ताकोंगा।
४ क्योंकि तू वुह ईश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो दुष्ट तेरे साथ
५ रहि नहीं सक्ता। मूर्ख तेरी आंखों के आगे खड़े न रहेंगे
६ तू सारे कुकर्मियों से घिन करता है। तू मिथ्यावादी को
७ नाश करेगा परमेश्वर बधिक और छली से घिन करेगा। परन्तु
मैं जो हों सो तेरी दया की बहुताई से तेरे घर में आओंगा
और तेरी डर से तेरे पवित्र मंदिर में तुझे दंडवत करोंगा।
८ हे परमेश्वर मेरे बैरी के कारण अपने धर्म में मेरा अगुआ हो

९ मेरे आगे अपने मार्ग को सीधा कर। क्योंकि उनके मुंह में सचाई नहीं उनके मन में दुष्टता है उनका गला खुली समाधि
१० है वे अपनी जीभ से लल्लो पत्तो कहते हैं। हे ईश्वर तू उन्हें दोषी ठहरा जिसतें वे अपने परामर्श से आपही गिरजावें उनके अपराधों की बहुताई में उन्हें दूर कर क्योंकि वे तुझसे
११ फिर गये हैं। पर सब जो तुझ पर भरोसा रखते हैं मगन रहें वे सदा आनंद के मारे गाया करें इस कारण कि तू उनकी चौकसी करता है और वे भी जो तेरे नाम से प्रीति रखते हैं
१२ तुझसे आनंदित रहें। क्योंकि हे परमेश्वर तू धर्मी को आशीष देगा कृपा की ढाल की नाईं तू कृपा से उन्हें ढांपेगा।

६ छठवां गीत ।

नगीनूस के प्रधान बजनिये के समीनीस पर दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर अपनी रिस से मुझे मत दपट और अपने कोप
२ की तपन से मुझे मत ताड़। हे परमेश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मैं निर्बल हों हे परमेश्वर मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी
३ हड्डी थर्थराती है। मेरा प्राण भी अति व्याकुल है परन्तु हे
४ परमेश्वर कबलों?। हे परमेश्वर फिर आ मेरे प्राण को छुड़ा
५ अपनी दया के कारण मुझे बचा। क्योंकि मृत्यु में तेरा स्मरण नहीं
६ समाधि में कौन तेरा धन्यबाद करेगा?। कहरते कहरते मैं थक गया मैं हर रात अपने बिछौने को बहाता हों मैं अपने आंसूओं
७ से अपना पलंग भिंगाता हों। शोक के मारे मेरी आंख
८ धुंधला गई और मेरे सारे बैरियों के कारण बुढ़ा गई। अरे सारे कुकर्मियो मुझसे दूर होओ क्योंकि परमेश्वर ने मेरे रोने
९ का शब्द सुना है। परमेश्वर ने मेरी बिनती सुनी है परमेश्वर
१० मेरी प्रार्थना ग्रहण करेगा। मेरे सारे बैरी लज्जित और अत्यंत व्याकुल होवें वे फिरें और अकस्मात लज्जित होयें।

७ सातवां गीत।

दाऊद का शग्गियून जो उसने परमेश्वर के लिये
बनियामीनी कोश के वचन के विषय में गाया।

१ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं तुझ पर भरोसा रखता हों मेरे
२ सारे सताऊ से मुझे बचा और मुझे छुड़ा। न होवे कि
सिंह की नाईं वुह मेरे प्राण को फाड़े और छोड़वैया न होतेही
३ वुह मुझे टुकड़े टुकड़े करे। हे परमेश्वर मेरे ईश्वर यदि मुझ
४ से ऐसा ऊआ हो यदि मेरे हाथ में बुराई होवे। जिसे मुझसे
मेल था यदि मैं ने उस्से बुराई किई हो (हां जो अकारण मेरा
५ बैरी था मैं ने उसे छुड़ाया है)। तो बैरी मेरे प्राण को सतावे
और लेवे और मेरे जीवन को पृथिवी पर लताड़े और मेरी
६ प्रतिष्ठा धूल में मिलावे, सीलाह। हे परमेश्वर अपने क्रोध में
उठ और मेरे बैरी के कोप के मारे आप को उभाड़ और
७ अपनी आज्ञा के न्याय के लिये जाग। तब लोगों की मंडली
८ तुझे घेरेगी सो उनके लिये फेर ऊंचे पर जा। परमेश्वर लोगों
का न्याय करेगा हे परमेश्वर मेरे धर्म्म और मेरी खराई के
९ समान मेरा न्याय कर। दुष्टों की दुष्टता मिटाडाल परन्तु
धर्म्मियों को दृढ़ कर क्योंकि धर्म्मी ईश्वर मन और अंतःकरण
१० को जांचता है। ईश्वर मेरी ढाल जो खरे मन का तारक है।
११ ईश्वर धर्म्मियों का विचार करता है और ईश्वर प्रतिदिन दुष्टों
१२ पर रिसियाता है यदि वुह न फिरे तो वुह अपनी तलवार
को धार करेगा उसने अपने धनुष को चढ़ाके लैस किया है।
१३ उसने उसके लिये मृत्यु का हथियार भी सिद्ध किया है उसने
१४ सताऊ के विरुद्ध अपने बाण ठहराये हैं। देखो उसे बुराई
की पीर और नटखटी का गर्भ है और वुह झूठ को जना है।
१५ उसने गड़हा खोदा है और अपने खोदे ऊए गड़हे में गिरा है।
१६ उसकी नटखटी उसके सिर पर लौट पड़ेगी और उसके अंधेर

१७ का व्यवहार उसकी खोपड़ी पर उतरेगा। परमेश्वर के धर्म्म के समान मैं उसकी स्तुति करोंगा और अति महान परमेश्वर का नाम गाऊंगा ।

८ आठवां गीत ।

गित्तिस के प्रधान बजनिये को दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर हमारे प्रभु सारी पृथिवी में तेरा नाम कैसा उत्तम है जिसने अपने विभव को स्वर्गों से ऊपर स्थापित किया
२ है। जिसतें बैरी और प्रतिफलदायकों को चुपकरावे तू ने अपने बैरियों के लिये बालकों और दूधपीवकों के मुंह से
३ अपनी स्तुति करवाई। जब मैं तेरी अंगुलियों की क्रिया स्वर्गों
४ को चांद और तारों को जो तू ने ठहराये हैं सोचता हों। तो मनुष्य क्या है जो तू उसका चेत करे? और मनुष्य का पुत्र क्या
५ जो तू उस्से भेंट करे। क्योंकि तू ने उसे दूतों से थोड़ाही छोटा किया और बिभव और प्रतिष्ठा का मुकुट उस पर रक्खा।
६।७ अपने हाथ के कार्य्यों पर अर्थात् सारे झुंड और ढोर और बन पशु और आकाश के पंछी और समुद्र की मछलियों पर और जो समुद्र के पथों में से चलते हैं तू ने उसे प्रभुता दिई और सब कुछ उसके पांव तले किया हे मेरे प्रभु परमेश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी में कैसा महान है।

९ नवां गीत ।

मुत्लब्बिन के प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करोंगा मैं तेरे
२ सारे आश्चर्य्य कर्म्मों को प्रगट करोंगा। मैं तुझे आनंदित और मगन रहोंगा हे अति महान मैं तेरे नाम की स्तुति करोंगा।
३ जब मेरे बैरी हट गये तब वे तेरे आगे गिर के नाश होंगे।

४ क्योंकि तू ने मेरे पद को बिचार किया है तू ने सिंहासन पर
५ बैठ के सच्चा बिचार किया है। तू ने अन्यदेशियों को दपटा
है तू ने दुष्टों को नष्ट किया है तू ने सदा के लिये उनके नाम को
६ मिटा डाला है। अरे बैरी नाश हो चुके हैं तू ने नगर के नगर
७ उजाड़ दिये जिनका स्मरण उनके साथ जाता रहा। परन्तु
परमेश्वर सदा लों बना रहेगा उसने अपने सिंहासन को
८ न्याय के लिये सिद्ध किया है। वुह धर्म्म से संसार का बिचार
९ और खराई से लोगों का न्याय करेगा। परमेश्वर सताये
हुओं के लिये ऊंचा स्थान भी होगा और दुःख के समयों के
१० लिये एक शरण। जो तेरा नाम जानते हैं सो तेरा भरोसा
रक्खेंगे क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने खोजी को नहीं त्यागा
११ है। परमेश्वर की जो सैहून का निबासी है स्तुति गाओ उसके
१२ कार्य्यों को लोगों के मध्य में वर्णन करो। जब वुह लोहू का
लेखा लेता है तो वुह उन्हें स्मरण करता है वुह दुःखी की दुहाई
१३ को नहीं भूलता। हे परमेश्वर मुझ पर दया कर तू जो मुझे
मृत्यु के द्वारों से उठाता है जो दुःख में अपने बैरी से उठाता
१४ हों उसे बूझ। जिसतें मैं सैहून की बेटी के द्वारों पर तेरी सारी
१५ स्तुति को प्रगट करों तेरी मुक्ति से मैं आनंदित होंगा। अन्यदेशी
उस गड़हे में जो उन्हों ने खोदा था गिर गये उस फन्दे में जो
१६ उन्हों ने छिपाया था उन्हीं का पांव बझा। परमेश्वर अपने
न्याय से जाना जाता है दुष्ट अपनेही हाथों के कार्य्य से फसा
१७ है, हिगियून सीलाह। दुष्ट लोग और सारे जातिगण जो
१८ ईश्वर को भूलते हैं नरक में डाले जायेंगे। क्योंकि कंगाल सदा
१९ भुलाया न जायगा कंगाल की आशा सदा नष्ट न होगी। उठ
हे परमेश्वर मनुष्य को प्रबल होने न दे अन्यदेशियों का बिचार
२० तेरे आगे होवे। हे परमेश्वर उन्हें डरा जिसतें जातिगण
अपने को मनुष्यही जानें सीलाह।

१० दसवां गीत ।

१ हे परमेश्वर तू क्यों दूर खड़ा होता है? दुःखों के समय तू क्यों
२ आप को छिपाता है। दुष्ट अहंकार से कंगाल को सताता
३ है उन्हीं की जुगत में उन्हें फसा। क्योंकि दुष्ट अपने
प्राण की लालसा पर बड़ाई करता है और लालची को,
४ जिस्से परमेश्वर को घिन है भाग्यमान कहता है। दुष्ट अपने
मुंह के अहंकार से खोज नहीं करता ईश्वर उसकी सारी चिंता
५ में नहीं है। उसकी चाल सदा दुःखदायक हैं तेरे न्याय उसकी
दृष्टि से दूर हैं वुह अपने सारे बैरियों को तुच्छ जानता है।
६ उसने अपने मन में कहा है कि मैं टलाया न जाऊंगा मुझ
७ पर पीढ़ी पीढ़ी विपत्ति न पड़ेगी। उसका मुंह धिक्कार और
कपट और छल से भरा है उसकी जीभ के तले नटखटी और
८ बुराई हैं। वुह गांव के ढूके के स्थानों में बैठता है वुह गुप्त स्थानों
में निर्दोष को घात करता है उसकी आंखें छिप छिप के कंगाल
९ के बिरुद्ध लगी हैं। वुह छिपक सिंह की नाईं अपने मांद में
घात में लगा है कंगाल को पकड़ने के लिये ढूके में है वुह कंगाल
१० को अपने जाल में लाके पकड़ता है। वुह दबक बैठ के दीन
हो जाता है जिसतें कंगाल उसके बलवंतों से गिरजावें।
११ उसने अपने मन में कहा है कि ईश्वर भूल गया है वुह अपना
१२ मुंह छिपाता है वुह कभी न देखेगा। हे परमेश्वर उठ हे ईश्वर
१३ अपना हाथ बढ़ा दुःखी को भूल मत जा। ईश्वर की निंदा दुष्ट
क्यों करता है? उसने अपने मन में कहा है कि तू लेखा न लेगा।
१४ तूने तो देखा है क्योंकि तू अपने हाथ से पलटा लेने को
नटखटी और बैर को देखता है कंगाल तुझे पिलचा रहता है।
१५ दुष्ट और बुरे की भुजा तोड़ ऐसा कि उसकी दुष्टता ढूंढ़ने से
१६ पाई न जाय। परमेश्वर सनातन से सनातन लों राजा है
१७ अन्यदेशी उसके देश से मिट गये। हे परमेश्वर तूने दीनों
की इच्छा सुनी है तू उनके मन को दृढ़ करेगा और कान धर के

१८ सुनेगा । अनाथों का और सताये ऊओं का न्याय करने को जिसतें संसारिक मनुष्य फेर न डरावें ।

११ ग्यारहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत ।

१ मेरा भरोसा परमेश्वर पर है तुम क्योंकर मेरे प्राण से कहते
२ हो कि चिड़िया की नाईं अपने पहाड़ पर उड़ जा? । इस लिये कि दुष्ट अपने धनुष को चढ़ाते हैं वे अपना बाण पनच पर
३ चढ़ाते हैं जिसतें अंधियारे में खरे लोगों को मारें । जो
४ नेवें नष्ट होवें तो धर्म्मी क्या कर सक्ता? । परमेश्वर अपने पवित्र मंमिर में है परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग पर है उसकी आंखें देखती हैं उसकी पलकें मनुष्य के संतानों को परखती हैं ।
५ परमेश्वर धर्मी को जांचता है परन्तु दुष्ट से और अंधेर के
६ प्रेमी से उसका आत्मा घिन करता है । दुष्टों पर अंगारे और आग और गंधक वुह बरसावेगा और भयंकर आंधी उनके
७ कटोरे का भाग होगा । क्योंकि धर्म्मी परमेश्वर धर्म्म से प्रीति रखता है और उसका रूप खरे लोगों को देखता है ।

१२ बारहवां गीत ।

शमीनीस पर प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर बचा क्योंकि ईश्वरीय जन घटे जाते हैं और मनुष्यों
२ के संतान में से बिश्वस्त लोग क्षीण होते हैं । वे अपने परोसी से वृथा बोलते हैं और चापलूसी होंठों और दोहरे मन
३ से कहते हैं । सारे चापलूसी होंठों को और उस जीभ को
४ जो बड़ी बोली बोलती है परमेश्वर काटडालेगा । जिन्हों ने कहा है कि हम अपनी जीभ से जीतेंगे हमारे होंठ हमारे
५ हैं कौन हमारा प्रभु है? । परमेश्वर कहता है कि कंगालों के अंधेर के लिये और दरिद्रों की ठंढी सांस के कारण मैं उठोंगा

६ और उसके हाथ से उसे बचाओंगा। परमेश्वर के वचन पवित्र बचन हैं मिट्टी की घड़िया में ताये गये चांदी की नाईं
७ सात बार निर्मल किया गया। हे परमेश्वर तूही उनकी रक्षा
८ करेगा तू उन्हें इस पीढ़ी से सदा बचावेगा। जब से तुच्छ लोग उभड़े हैं तब से दुष्ट चारो ओर फिरते हैं।

१३ तेरहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर कबलों तू मुझे भूलेगा? क्या सनातन लों! कबलों
२ तू अपना मुंह मुझसे छिपावेगा?। मैं प्रति दिन कबलों मन में दुःखी होके मनही मन परामर्श करों! कबलों मेरा बैरी
३ मुझ पर उभाड़ा जायगा। हे परमेश्वर मेरे ईश्वर सोच के मेरी सुन मेरी आंखें उंजियाली कर न हो कि मैं मृत्यु की
४ नींद में पड़ जाऊं। और मेरा बैरी कहे कि मैं ने उसे जीता
५ है और मेरे सताऊ मेरे टलाये जाने से आनंद करें। परन्तु मैं ने तेरी दया पर भरोसा रक्खा है मेरा मन तेरी मुक्ति से
६ आनंदित होगा। मैं परमेश्वर के लिये गाओंगा क्योंकि उसने दातापन से मुझसे व्यवहार किया है।

१४ चौदहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर नहीं वे सड़ गये उन्हों ने घिनौना कार्य्य किया है कोई भलाई नहीं करता।
२ परमेश्वर ने स्वर्ग से मनुष्यों के संतान पर झांका यह देखने को
३ कि कोई समझ के ईश्वर को ढूंढ़ता है कि नहीं। वे सब के सब अलग ऊए हैं सब के सब सड़ गये कोई सुकर्मी नहीं एक भी
४ नहीं। क्या सारे कुकर्म्मियों में ज्ञान नहीं जो मेरे लोग को
५ रोटी की नाईं खाते हैं, और परमेश्वर का नाम नहीं लेते। वे

६ डर से डर गये क्योंकि ईश्वर धर्म्मियों के मध्य में है। तुम ने कंगाल के परामर्श को लजाया है इस लिये कि परमेश्वर उसका शरण
७ है। हाय कि इसराईल की मुक्ति सैहून से निकले जब परमेश्वर अपने लोगों की बंधुआई को फेर लावेगा तब याक़ूब आनंदित और इसराईल मगन होगा।

१५ पंदरहवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर तेरे मन्दिर में कौन टिकेगा? तेरे पवित्र पहाड़ पर
२ कौन रहेगा?। वुह जो खराई से चलता है और धर्म्म कार्य्य
३ करता है और अपने मन से सच कहता है। वुह जो जीभ से चुगुली नहीं खाता और अपने परोसी की बुराई नहीं करता और अपने परोसी के बिरुद्ध अपवाद नहीं मानता।
४ जिसकी आंख में तुच्छ जन निंदित है परन्तु वुह परमेश्वर के डरवैयों को प्रतिष्ठा देता है जो अपने दुःख के लिये किरिया खाता है और नहीं पलटता वुह ब्याज में अपना रोकड़ नहीं देता और निर्दोष के बिरुद्ध अकोर नहीं लेता जो यह करता है सो कभी टलाया न जायगा।

१६ सोलहवां गीत।

दाऊद का मिकताम।

१ हे ईश्वर तू मुझे बचा क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता
२ हों। हे प्राण तू ने परमेश्वर से कहा है कि तू मेरा प्रभु मेरी
३ भलाई तुझ पर नहीं पहुंचती। पर पृथिवी के साधुन और
४ उत्तमों पर जिन से मुझे सारा आनंद है। जो आन देव को भेंट देते हैं उनके शोक बढ़ जायेंगे मैं उनके लोहू पान की भेंट न चढ़ाऊंगा और अपने होंठों से उनके नाम न लेउंगा।
५ मेरे अधिकार का और मेरे कटोरे का भाग परमेश्वर है तू

६ मेरे अंश का पक्ष करता है। मन भावन स्थानों में मेरे लिये
७ नापने की रस्सी पड़ी है हां मेरा अधिकार सुथरा है। मैं
परमेश्वर का धन्य मानोंगा जिसने मुझे मंत्र दिया और रात
८ के समय में मेरा मन भी मुझे सिखाता है। मैं ने परमेश्वर
को सदा अपने आगे समझा है क्योंकि वुह मेरे दहिने हाथ
९ पर है मैं टलाया न जाऊंगा। इस लिये मेरा मन मगन है
और मेरा बिभव आनंद करता है मेरा शरीर भी भरोसा
१० से रहेगा। क्योंकि तू मेरे प्राण को परलोक में न छोड़ेगा
११ और अपने धर्म्ममय को सड़ने न देगा। तू मुझे जीवन का
मार्ग दिखावेगा तेरे आगे आनंद की भरपूरी है तेरे दहिने
हाथ में सनातन का बिलास है।

१७ सत्रहवां गीत।

दाऊद की प्रार्थना।

१ हे परमेश्वर न्याय को सुन और मेरे रोने पर सुरत लगा और
२ मेरे निष्कपट होंठों की प्रार्थना पर कान धर। मेरी आज्ञा
तेरे आगे से निकले तेरी आंखें खरी बस्तुन को देखती हैं।
३ तू ने मेरे मन को परखा है तू ने रात को मुझे भेंट किई है
तू ने मुझे जांचा है और कुछ न पावेगा मैं ने ठाना है कि मैं
४ अपने मुंह से अपराध न करोंगा। मनुष्यों की चाल के
विषय में तेरे होंठों के बचन से मैं ने अपने को नाश के पथों से
५ बचा रक्खा है। अपने पथों पर चलने में मुझे संभाल जिसतें
६ मेरे डग टलाये न जायें। मैं ने तुझे पुकारा है क्योंकि तू मेरी
सुनेगा हे ईश्वर मेरी ओर कान धर और मेरी बिनती सुन।
७ तू जो अपने आश्रितों को अपने दहिने हाथ से उनसे बचाता
है जो उनके बिरुद्ध उभड़ते हैं अपनी अचंभित कोमल दया
८ दिखा। उन दुष्टों से जो मुझे उजाड़ते हैं और मेरे प्राण के
९ बैरियों से जो मुझे घेरते हैं। आंखों की पुतली की नाईं मुझे

१० रख अपने डैने तले मुझे छिपा। वे अपनी चिकनाई में
११ छपे हैं वे फूल फूल अपने मुंह से बोलते हैं। उन्हों ने अब
हमारे डगों में हमें घेरा है और जिसतें हमें गिरादेवें वे
१२ अपनी आंखें भूमि की ओर झुकाये हैं। वे फड़वैये सिंह की
नाईं हैं और युवा सिंह की नाईं जो छूके में बैठे हैं।
१३।१४ उठ हे परमेश्वर उसके मुंह को रोक उसे गिरा दे उस
दुष्ट से जो तेरा खड्ग है उन लोगों से हे परमेश्वर जो तेरा
हाथ है संसार के लोगों से, जिन्हों ने इसी जीवन में अपना
भाग पाया है और जिनका पेट तू अपने छिपे धन से भरता
है मेरे प्राण को छुड़ा वे संतान से भरे पूरे हैं और वे अपनी
१५ बची ऊई संपत्ति अपने बाल बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं। पर
मैं जो हों धर्म में तेरा मुंह देखोंगा और जब मैं तेरे रूप में
जागोंगा तो तृप्त होऊंगा।

१८ अठारहवां गीत।

प्रधान बजनिये के पास परमेश्वर के सेवक दाऊद के
गीत जिसने इस गीत के बचन को उस दिन में
परमेश्वर से कहा जब कि परमेश्वर ने उसे उसके सारे
बैरियों के हाथ से और साऊल के हाथ से छुड़ाया।

१।२ हे परमेश्वर तू मेरा बल है मैं तुझे प्यार करोंगा। परमेश्वर
मेरा पहाड़ मेरा गढ़ मेरा छुड़वैया मेरा ईश्वर मेरा पर्व्वत
जिस पर मैं भरोसा रक्खोंगा मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का
३ सींग मेरा ऊंचा बुर्ज। मैं परमेश्वर की प्रार्थना करोंगा जो
४ स्तुति के योग्य है सो मैं अपने बैरियों से बच जाओंगा। मृत्यु
की उदासियों ने मुझे घेरा और दुष्टों के बाढ़ ने मुझे डराया।
५ नरक की उदासियों ने मुझे घेर लिया मृत्यु के फंदों ने मुझे
६ रोका। मैं ने सकेती के समय में परमेश्वर को पुकारा और
अपने ईश्वर के आगे चिल्लाया उसने मेरा शब्द अपने मन्दिर

में से सुना और मेरा रोना उसके आगे उसके कानों में
७ पहुंचा । उसके कोप के मारे पृथिवी कांप गई और थर्थरा
८ उठी सारे पहाड़ जड़मूल से हिल गये । उसके नथुनों से
धूआं उठा और उसके मुंह से आग भड़की जिस्से अंगारे
९ धधक उठे। उसने स्वर्गों को भी झुकाया और उतर आया और
१० उसके पांव तले अंधियारा था । वुह करोबी पर चढ़ा और
११ उड़ गया हां वुह पवन के डैनों पर उड़ा । उसने अंधियारे
को अपना गुप्त स्थान किया और उसके चारों ओर अंधियारा
१२ जल और आकाश के घने मेघ उसके तंबू थे । उसके आगे की
चमक से घने मेघ फट कर ओले और अंगारे बन गये ।
१३ परमेश्वर स्वर्गों में गर्जा और अति महान ने शब्द किया तो
१४ ओले और अंगारे बन गये । हां उसने अपने बाण छोड़े और
उन्हें छिन्न भिन्न किया और बिजुलियां चमकाईं और उन्हें हरा
१५ दिया । उस समय पानियों की थाह दिखाई दिई और तेरे
कड़कने से हे परमेश्वर हां तेरे नथुनों के स्वास के झोंके से जगत
१६ की नेवें खुल गईं । उसने ऊपर से भेजकर मुझे पकड़ लिया
१७ गहिरे पानियों में से उसने मुझे खींच लिया । मेरे बलवंत
बैरी से और जो मुझ्से बैर रखते थे उसने मुझे छुड़ाया क्योंकि
१८ वे मुझ्से अति बली थे। उन्हों ने मेरे बिपत्ति के दिन मुझे रोका
१९ परन्तु परमेश्वर मेरा टेक था । वुह मुझे एक फैलाव स्थान में
भी निकाल लाया उसने मुझे छुड़ाया क्योंकि वुह मुझ्से
२० आनन्दित था । परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान मुझे पलटा
दिया उसने मेरे हाथ की पवित्रता के समान मुझे प्रतिफल
२१ दिया । क्योंकि मैं परमेश्वर के मार्ग पर चला और दुष्टता से
२२ अपने ईश्वर से न फिरा। क्योंकि उसकी सारी आज्ञा मेरे आगे
२३ थीं और मैं ने उसकी बिधिन को अपने से दूर न किया । मैं
उसके साथ खराई से रहा और मैं ने आप को अपनी बुराई
२४ से बचा रक्खा । इस लिये परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान

और उसकी आंखों के आगे मेरे हाथ की पवित्रता के समान
२५ मुझे प्रतिफल दिया। दयाल के साथ तू आप को दयाल
दिखावेगा खरा मनुष्य के साथ तू आप को खरा दिखावेगा।
२६ पवित्र को तू अपने तईं पवित्र दिखलावेगा और हठीले के
२७ साथ तू आप को हठीला दिखावेगा। क्योंकि तू दुःखी को
२८ बचावेगा परन्तु ऊंची दृष्टि को नीचा करेगा। तू मेरा दीपक
बारेगा परमेश्वर मेरा ईश्वर मेरे अंधियारे को उंजियाला
२९ करेगा। क्योंकि मैं ने तुझ से एक जथा को तोड़ा है मैं अपने
३० ईश्वर से एक भीत फांद गया हों। ईश्वर का मार्ग सिद्ध है
परमेश्वर का वचन ताया गया है वुह अपने आश्रितों की ढाल
३१ है। क्योंकि परमेश्वर को छोड़ ईश्वर कौन है? अथवा हमारे
३२ ईश्वर को छोड़ दूसरा पहाड़ कौन है?। ईश्वर मेरी कटि
३३ दृढ़ता से बांधता है और मेरा मार्ग सिद्ध करता है। वुह मेरे
पांव को हरणियों का सा बनाता है और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों
३४ पर खड़ा करता है। वुह मेरे हाथों को लड़ाई सिखाता है
३५ यहां लों कि खेड़ी का धनुष मेरी बांह से टूटता है। तू ने
अपनी मुक्ति की ढाल भी मुझे दिई है और तेरे दहिने हाथ ने
३६ मुझे संभाला है और तेरी कोमलता ने मुझे बढ़ाया है। तू ने
मेरे तले मेरे डगों को बढ़ाया है यहां लों कि मेरी घुट्टियां न
३७ फिसलीं। मैं ने अपने बैरियों का पीछा किया है और उन्हें
३८ जा लिया मैं पीछे न फिरा जब लों उन्हें नाश न किया। मैं ने
उन्हें घायल किया है ऐसा कि वे उठ न सके वे मेरे पांव तले गिरे
३९ हैं। क्योंकि तू ने संग्राम के लिये मेरी कटि दृढ़ता से बांधी है
४० और जो मेरे बिरुद्ध उठे तू ने उन्हें झुकवाया है। तू ने मेरे
बैरियों के गले मुझे सौंप दिये हैं जिसतें मैं अपने बैरियों को नाश
४१ करों। वे चिल्लाये परन्तु कोई बचवैया न था उन्हों ने परमेश्वर को
४२ पुकारा परन्तु उसने उन्हें उत्तर न दिया। तब मैं ने बयार के
आगे की धूल की नाईं उन्हें पीसा मैं ने मार्गों की कीच की नाईं

४३ उन्हें निकाल फेंका। तू ने मुझे लोगों के झगड़ों से छुड़ाया है तू ने मुझे अन्यदेशियों का अध्यक्ष किया है जिन लोगों को मैं ने ४४ नहीं जाना वे मेरी सेवा करेंगे। मेरे विषय में सुनतेही वे ४५ मेरी बात मानेंगे परदेशियों के वंश मुझसे दबेंगे। परदेशी ४६ मुरझा जायेंगे और अपने छिपे स्थानों में डरेंगे। परमेश्वर जीवता है और मेरा पहाड़ धन्य, मेरी मुक्ति का ईश्वर महान ४७ होवे। ईश्वर मेरा बैर लेता है और लोगों को मेरे बश में ४८ करता है। वुह मुझे मेरे बैरियों से छुड़ाता है हां जो मेरे बिरुद्ध उठते हैं तू मुझे उन पर उभाड़ता है तू ने मुझे अंधेरी ४९ से छुड़ाया है। इस लिये हे परमेश्वर मैं अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानोंगा और लोगों के मध्य में तेरे नाम की स्तुति ५० गाओंगा। वुह अपने राजा का बड़ा बचाव करता है और अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उसके वंश पर सनातन लों दया करता है।

१९ उन्नीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ स्वर्ग ईश्वर की महिमा वर्णन करते हैं और आकाश उसके २ हाथ की क्रिया दिखाते हैं। दिन दिन से बातें करता है और ३ रात रात को ज्ञान दिखाती है। न बोली, न बातें उनका ४ शब्द सुना न जाय। सारी पृथिवी में उनकी रेखा निकल गई है और उनके वचन जगत के अंतलों, उसने ५ उनमें सूर्य के लिये तंबू रक्खा है। जो दूल्हा की नाईं कोठरी से निकलता है और बलवंत जन की नाईं दौड़ारी में ६ दौड़ने से आनंद करता है। उसका निकलना स्वर्ग के खूंट से है और उसका चक्र उसके अंतलों और उसके घाम से कुछ ७ नहीं छिपा है। परमेश्वर की व्यवस्था सिद्ध होके मन को सुधारती है परमेश्वर की साक्षी सच्ची है भोलों को बुद्धिमान

८ करती है। परमेश्वर की व्यवस्था ठीक हो के मन को आनन्दित करती है परमेश्वर की आज्ञा शुद्ध होके आंखों को उंजियाला
९ करती है। परमेश्वर का भय पवित्र होके सर्वदा लों ठहरता
१० है परमेश्वर का बिचार सरासर सच्चा और धर्ममय है। वुह सोने से हां बज़त चोखे सोने से चाहने के योग्य है और मधु
११ से भी और मधु छत्ते के बूंद से भी मीठा है। और उनसे तेरा दास चेताया जाता है और उन्हें पालन करने में बड़ा फल है।
१२ अपनी भूल चूकों को कौन समझ सक्ता है तू मुझे गुप्त पापों से
१३ पवित्र कर। अपने दास को साहस के पापों से बचा उन्हें मुझ पर राज्य करने मत दे तब मैं सिद्ध होऊंगा और बज़त
१४ अपराध से निर्दोष होऊंगा। हे परमेश्वर तू मेरा पहाड़ और मेरा त्राणकर्त्ता मेरे मुंह की बातें और मेरे मन का ध्यान तेरे आगे ग्राह्य होवे।

२० बीसवां गीत।

प्रधान बजनिये को दाऊद का गीत।

१ विपत्ति के दिन परमेश्वर तेरी सुने याक़ूब के ईश्वर का नाम
२ तुझे बढ़ावे। वुह अपने धर्मधाम से तेरी सहाय करे और
३ सैहून में से तुझे संभाले। तेरी सारी भेंटों को स्मरण करे
४ तेरे होम के बलिदान को भस्म करे, सीलाह। वुह तेरे मन के
५ समान तुझे देवे और तेरे सारे परामर्श पूरे करे। हम तेरी मुक्ति से आनंदित होंगे हम अपने ईश्वर के नाम पर अपने झंडे खड़े करेंगे परमेश्वर तेरी सारी बिनतियां पूरी करे।
६ अब मैं जानता हों कि परमेश्वर अपने अभिषिक्त को बचाता है वुह अपने दहिने हाथ की मुक्ति के पराक्रम से अपने पवित्र
७ सिंहासन पर से उसकी सुनेगा। कितने रथों पर और कितने घोड़ों पर भरोसा रखते हैं परन्तु हम परमेश्वर अपने
८ ईश्वर के नाम को स्मरण करेंगे। वे झुके और गिर पड़े परन्तु

९ हम उठे और सीधे खड़े ऊए। हे परमेश्वर बचा जब हम पुकारें राजा हमारी सुने ।

२१ एकीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर तेरे बल से राजा आनंद करेगा और वुह तेरी
२ मुक्ति पर क्याही आनंद करेगा। तू ने उसके मन की इच्छा उसे दिई है और उसके होंठों की बिनती को न रोका, सेलाह।
३ भलाई के आशीषों से तू उसके आगे जाता है तू चोखे सोने
४ का मुकुट उसके सिर पर रखता है। उसने तुझ से जीवन चाहा और तू ने उसे जीवन की बढ़ती सर्वदा के लिये दिई।
५ तेरी मुक्ति से उसका बड़ा विभव है तू ने उस के लिये प्रतिष्ठा और
६ महिमा रक्खा है। क्योंकि तू ने उसे सर्वदा का आशीष कर रक्खा है तू ने उसे अपने रूप के आनंद से उसे आनंदित
७ किया। क्योंकि राजा परमेश्वर पर भरोसा रखता है और अति
८ महान की दया से वुह टलाया न जायगा। तेरा हाथ तेरे सारे बैरियों को ढूंढ़ निकालेगा तेरा दहिना हाथ तेरे बैरियों को
९ पकड़ लेगा। तू अपने क्रोध के समय उन्हें अग्निमय भट्ठी की नाईं दहकावेगा परमेश्वर उन्हें अपने कोप से निगल जायगा
१० और आग उन्हें खा लेगी। तू पृथिवी पर से उनका फल और
११ मनुष्यों के सन्तानों में से उनके वंश को नष्ट करेगा। क्योंकि उन्हों ने तेरे विरुद्ध बुराई चाही और ऐसी बुरी चिंता सोची
१२ जो उनसे न बन पड़ेगी। जब तू लैस होके उनके विरुद्ध अपना
१३ पनच चढ़ावेगा तब तू उनसे पीठ फेरावेगा। हे परमेश्वर तू अपनेही बल से महान हो और हम तेरी महिमा की स्तुति और बड़ाई गावेंगे ।

२२ बाईसवां गीत।

अजीलेत ऋहार पर प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ा है? तू मेरी
२ मुक्ति से और मेरे चिल्लाने की बातों से क्यों दूर है। हे मेरे
ईश्वर मैं दिन को रोता हों पर तू नहीं सुनता और रात को
३ मुझे कुछ चैन नहीं। परन्तु तू पवित्र है जो इसराईल की स्तुति
४ में वास करता है। हमारे पितरों ने तुझ पर भरोसा किया
५ उन्हों ने भरोसा किया और तू ने उन्हें छुड़ाया। उन्हों ने तेरी
दोहाई दिई और छुड़ाये गये उन्हों ने तुझ पर भरोसा रक्खा
६ और न घबराये। पर मैं कीड़ा और मनुष्य नहीं मनुष्यों
७ की निन्दा और लोगों में तुच्छ। सब जो मुझे देखते हैं मुझ
पर हंसते हैं वे होंठों को खोल खोल सिर हला हला कहते
८ हैं। कि उसने छूटने के लिये ईश्वर पर भरोसा किया जो
९ वुह उससे प्रसन्न है तो वही उसे छुड़ावे। परन्तु तूही मुझे गर्भ
से बाहर लाया मेरी माता की गोद में तू ने मुझे आशा दिई।
१० मैं कोख में से तुझ पर डाला गया मेरी माता के गर्भ से तू
११ मेरा ईश्वर है। मुझसे दूर मत रह क्योंकि दुःख आ पहुंचा
१२ और कोई सहायक नहीं। बहुतसे बैलों ने मुझे घेरा है
१३ बाशान के बलवंतों ने मुझे घेर रक्खा है। उन्हों ने मुझ पर
१४ फड़वैये और गर्जवैये सिंह की नाईं मुंह पसारा है। मैं पानी
की नाईं बहा जाता हों और मेरी सारी हड्डियां अलग हो
चली हैं मेरा मन मोम की नाईं मेरे हृदय में पिघल गया।
१५ मेरा पराक्रम ठिकरे की नाईं सूखा है मेरी जीभ तालू से
१६ लगी जाती है और तू मुझे मृत्यु की धूल पर लाया है। क्योंकि
कुत्तों ने मुझे घेरा है दुष्टों की मंडली ने मुझे घेर लिया है
१७ उन्हों ने मेरे हाथ और मेरे पांव बेधे। मैं अपनी सारी

१८ हड्डियों को गिन सक्ता हों वे मुझे घूर के देखते हैं। वे मेरे कपड़े आपुस में बांटते हैं और मेरे बागे पर चिट्ठी डालते हैं।
१९ पर हे परमेश्वर तू मुझसे दूर मत हो हे मेरे बल मेरी सहाय
२० के लिये चटक कर। मेरे प्राण को तलवार से और मेरे प्रिय को
२१ कुत्ते के वश से बचा। सिंह के मुंह से मुझे बचा क्योंकि तूने मुझे
२२ गैड़ों के सींगों से बचाया है। मैं अपने भाइयों में तेरा नाम लेउंगा और मंडली के मध्य में मैं तेरी स्तुति करोंगा।
२३ परमेश्वर के डरवैयो तुम उसकी स्तुति करो हे याक़ूब के सारे वंश उसकी महिमा करो हे इसराईल के सारे वंश उससे डरो।
२४ क्योंकि उसने पीड़ित की पीड़ा को तुच्छ न जाना न घिन किया न उसने उससे अपना मुंह फेर लिया परन्तु जब उसने उसे
२५ पुकारा उसने सुना। बड़ी मंडली में मैं तेरी स्तुति करोंगा जो उससे डरते हैं मैं उनके आगे अपनी मनौती पूरी करोंगा।
२६ कोमल खायेंगे और तृप्त होवेंगे जो परमेश्वर के खोजी हैं सो
२७ उसकी स्तुति करेंगे उनके मन सदा लों जीते रहेंगे। जगत के सारे खूंट चेत करके परमेश्वर की ओर फिरेंगे जातिगणों के
२८ सारे घराने तेरी सेवा करेंगे। क्योंकि राज्य परमेश्वर का है
२९ और जातिगणों में वही अध्यक्ष है। पृथिवी के सारे पुष्ट लोग खायेंगे और सेवा करेंगे सब जो धूल में उतरते हैं उसके आगे
३० झुकेंगे और कोई अपनेही प्राण को जीता नहीं रख सक्ता। एक वंश उसकी सेवा करेगा जो परमेश्वर की निज पीढ़ी में गिना
३१ जायगा। वे आवेंगे और उन लोगों को, जो उत्पन्न होंगे, यह कहिके उसका धर्म्म वर्णन करेंगे कि उसने यह किया है।

२३ तेईसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१।२ परमेश्वर मेरा गड़रिया है मुझे घटती न होगी। वुह मुझे कोमल घास की चराई में लेटाता है वुह स्थिर जल के लग

३ मेरी अगुआई करता है। वुह मेरा प्राण फेर लाता है और
४ अपने नाम के लिये मुझे धर्म्म के पथों में लेजाता है। हां
यदि मैं मृत्यु की छाया की तराई में जाओं तो मुझे डर नहीं
क्योंकि तू मेरे साथ है तेरी छड़ी और तेरी लाठी मुझे शान्ति
५ देती है। तू ने मेरे बैरियों के आगे मेरे लिये मंच बिछाता है
तू ने मेरे सिर पर तेल मला मेरा कटोरा भर के छलकता
६ है। निश्चय भलाई और दया जीवन भर मेरे साथ साथ
रहेंगी और मैं परमेश्वर के मन्दिर में सदालों बास करोंगा।

२४ चौबीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ पृथिवी और उसकी भरपूरी जगत और उसके सारे बासी
२ परमेश्वर के हैं। क्योंकि उसने उसकी नेंउ समुद्रों पर रक्खी
३ और उसे बाढ़ों पर स्थिर किया। परमेश्वर के पहाड़ पर कौन
चढ़ेगा और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा होगा?।
४ वही जिसके हाथ शुद्ध और जिसका मन पवित्र है जिसने
अपने प्राण को व्यथा की ओर न उठाया जिसने छल से किरिया
५ न खाई। वुह परमेश्वर से आशीष और अपने मुक्तिदाता
६ ईश्वर से धर्म्म प्राप्त करेगा। यह वुह बंश है जो उसका खोजी
७ है और तेरे रूप का खोजी है हे याक़ूब सीलाह। हे फाटको
अपने अपने सिरों को उठाओ और हे सनातन के द्वारो ऊंचे
८ होओ और महिमा का राजा भीतर आवेगा। महिमा का
राजा कौन है? वुह परमेश्वर पराक्रमी और शक्तिमान
९ परमेश्वर जो संग्राम में बलवंत है। हे फाटको अपने अपने
सिरों को उठाओ और हे सनातन के द्वारो उन्हें उभाड़ो और
१० महिमा का राजा भीतर आवेगा। यह महिमा का राजा
कौन है? सेनाओं का परमेश्वर वही महिमा का राजा है,
सीलाह।

२५ पचीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१।२ हे परमेश्वर मैं अपने प्राण को तेरी ओर उठाता हों। हे
मेरे ईश्वर मैं तुझ पर भरोसा रखता हों मुझे लज्जित होने
३ न दे और मेरे वैरी को मुझ पर जय पाने न दे। हां जो
तेरी बाट जोहते हैं उन्हें लज्जित होने न दे परन्तु वे जो
४ अकारण अपराध करते हैं सो लज्जित होवें। हे परमेश्वर
५ मुझे अपने मार्ग दिखला मुझे अपने पथ सिखला। अपनी
सत्यता में मुझे ले चल और मुझे सिखा क्योंकि तू मेरी मुक्ति
६ का ईश्वर है दिन भर मैं तेरी बाट जोहता हों। हे परमेश्वर
अपनी दया और अपने कोमल प्रेम को स्मरण कर क्योंकि वे
७ प्राचीन समय से होते आये हैं। मेरी तरुणाई के पापों और
अपराधों को स्मरण मत कर अपनी दया के समान अपनी भलाई
८ के लिये हे परमेश्वर मुझे स्मरण कर। परमेश्वर भला
९ और खरा है इसलिये वुह पापियों को मार्ग सिखावेगा। वुह
नम्रों को बिचार पर चलावेगा और नम्र लोगों को अपने मार्ग
१० सिखावेगा। जो परमेश्वर के नियम और साक्षी का पालन
करते हैं उनके लिये उसके सारे पथ दया और सचाई है।
११ हे परमेश्वर अपने नाम के लिये मेरे पाप क्षमा कर क्योंकि
१२ वुह बड़ा है। वुह कौनसा मनुष्य है जो परमेश्वर को डरता
१३ है वुह अपने चुनेहुए मार्ग पर उसे चलावेगा। उसका प्राण
चैन से रहेगा और उसका वंश पृथिवी का अधिकारी होगा।
१४ परमेश्वर का भेद उसके डरवैयों पर है और वुह उन्हें अपना
१५ नियम दिखावेगा। मेरी आंखें सदा परमेश्वर की ओर हैं
१६ क्योंकि वही मेरे पांव फंदे से निकालेगा। मेरी ओर फिर
१७ और मुझ पर दया कर क्योंकि मैं एकेला और दुःखी हों। मेरे
१८ मन के दुःख बढ़ गये मेरे दुःखों में से तू मुझे छुड़ा। मेरे

दुःख और पीड़ा को देख और मेरे सारे पापों को क्षमा कर।
१९ मेरे वैरियों को सोच क्योंकि वे बहुत हैं और अंधेर के वैर से
२० मुझ से वैर रखते हैं। मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा
मुझे लज्जित होने न दे क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हों।
२१ धर्म और खराई मेरे रक्षक होवें क्योंकि मैं तेरी बाट जोहता
२२ हों। हे ईश्वर इसराईल को उसके सारे दुःखों से छुड़ा।

२६ छबीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर मेरा बिचार कर क्योंकि में अपने धर्म से चला हों
२ मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न बिचलोंगा। हे
परमेश्वर मुझे परख और मुझे ताड़ मेरे मन और अंतःकरण
३ को जांचले। क्योंकि तेरा कोमल प्रेम मेरी आंखों के आगे है
४ और मैं तेरी सच्चाई में चला हों। मैं व्यथा लोगों के संग नहीं
५ बैठा हों और कपटियों के साथ न जाओंगा। कुकर्म्मियों की
६ मंडली से मैं ने बैर रक्खा है और दुष्टों के साथ न बैठोंगा। मैं
निर्मलता में अपने हाथ धोऊंगा तब हे परमेश्वर मैं तेरी
७ बेदी की प्रदक्षिण करोंगा। जिसतें मैं धन्यवाद के शब्द से प्रचारों
८ और तेरे सारे आश्चर्य कर्म्म का वर्णन करों। हे परमेश्वर मैं ने
तेरे निवास के घर से और तेरे बिभव के तंबू से प्रेम किया है।
९ मेरे प्राण को पापियों में और मेरे जीवन बधिकों में मत
१० बटोर। जिनके हाथों में बुराई है और उनका दहिना हाथ
११ अकोर से भरा है। परन्तु मैं जो हों अपनी खराई से चलोंगा
मुझे छुड़ा और मुझ पर दया कर मेरा पांव समथर स्थान
पर खड़ा है मैं मंडलियों में परमेश्वर का धन्यवाद करोंगा।

२७ सताईसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

१ परमेश्वर मेरा उंजियाला और मेरी मुक्ति मैं किसे डरों?
२ परमेश्वर मेरे जीवन का बल है मुझे किसका भय? । जब दुष्ट अर्थात् मेरे बैरी मेरा मांस खाने को मुझ पर चढ़ आये तो
३ ठोकर खाके गिर पड़े । यद्यपि सेना मेरे विरुद्ध छावनी करे तो मेरा मन न डरेगा और यदि मेरे विरुद्ध संग्राम उभड़े
४ तो इस में मैं भरोसा रक्खोंगा । मैं ने परमेश्वर से एक बात चाही है वही मैं ढूढ़ोंगा कि मैं जीवन भर परमेश्वर के मंदिर में रहों और परमेश्वर की सुंदरता देखों और उसके मंदिर में
५ उसे ढूढ़ों । क्योंकि बिपत्ति के दिन वुह मुझे अपने तंबू में छिपावेगा अपने डेरे के आड़ में मुझे छिपावेगा और मुझे
६ पहाड़ पर बैठावेगा । सो अपने चारो ओर के बैरियों पर मेरा सिर उभाड़ा जायगा इस लिये मैं उसके मन्दिर में आनंद से बलि चढाऊंगा मैं गाओंगा हां मैं परमेश्वर की स्तुति
७ गाओंगा । हे परमेश्वर जब मैं शब्द से प्रार्थना करों तो
८ सुन के मुझ पर दया भी कर और उत्तर दे । जब तू ने कहा कि मेरे मुंह को खोज तो मेरा मन बोल उठा कि हे परमेश्वर मैं
९ तेरे मुंह को खोजोंगा । हे मेरे मोक्ष के ईश्वर मुझसे मुंह मत छिपा और अपने दास को क्रोध से दूर मत कर तू मेरी सहाय
१० ऊआ है मुझे त्याग मत कर और मुझे छोड़ मत दे । जब मेरी माता पिता मुझे त्यागे तब परमेश्वर मुझे समेटेगा ।
११ हे परमेश्वर मुझे अपना मार्ग सिखा और मेरे बैरियों के
१२ कारण मुझे सीधे मार्ग पर चला । मेरे बैरियों की इच्छा पर मुझे मत सौंप क्योंकि झूठे साक्षी और जो क्रूर सांस लेते हैं
१३ मुझ पर उठे हैं । यदि जीवन की भूमि में परमेश्वर के अनुग्रह देखने का मेरा बिश्वास न होता तो मैं निरास होजाता ।

१४ परमेश्वर की बाट जोह और ठियाव कर और वुह तेरे मन को बल देगा मैं फिर कहता हों कि परमेश्वर की बाट जोह।

२८ अठाईसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ मैं तुझे पुकारता हों हे परमेश्वर मेरे पहाड़ मुझे चुपका मत हो न होवे कि जो तू चुप होरहे तो मैं गड़हे में के पड़वैये
२ की नाईं होजाओं। जब मैं तेरे आगे चिल्लाऊं और तेरे पवित्र मंदिर की ओर अपने हाथ उठाऊं तब तू मेरी बिनती
३ का शब्द सुनले। दुष्टों और कुकर्म्मियों के साथ, जो अपने परोसियों से कुशल की बातें करते हैं परन्तु उनके मन में बुराई
४ है मुझे मत खींच। उनकी क्रिया के और उनकी दुष्टता के जुगत के समान उन्हें पलटा दे उनके हाथों के कार्य्य के समान
५ उन्हें दे उन्हें प्रतिफल दे। क्योंकि वे परमेश्वर के कार्य्य और उसके हाथों की क्रिया को नहीं मानते सो वुह उन्हें नष्ट
६ करेगा और न बनावेगा। परमेश्वर धन्य है क्योंकि उसने
७ मेरी बिनतियों का शब्द सुना है। परमेश्वर मेरा बल और मेरी ढाल है मेरे मन ने उसपर भरोसा किया और मैं सहाय पाता हों सो मेरा मन अत्यंत आनंदित है मैं उसकी
८ स्तुति गाओंगा। परमेश्वर उनका पराक्रम है और वुह अपने
९ अभिषिक्त के बचाव का बल है। अपने लोगों को बचा और अपने अधिकार को आशीष दे उन्हें पाल और उन्हें सदा के लिये बढ़ा।

२९ उंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ परमेश्वर के लिये कहो हे बलवंत के पुत्रो कहो कि परमेश्वर ही
२ के लिये महिमा और बल है। उसके नाम की प्रतिष्ठा

परमेश्वर को देओ पवित्रता की सुंदरता में परमेश्वर की सेवा
३ करो। परमेश्वर का शब्द पानियों पर है महिमा का ईश्वर
४ गर्जता है परमेश्वर बड़े पानियों पर है। परमेश्वर का शब्द
५ बलवंत है परमेश्वर का शब्द ऐश्वर्यमान है। परमेश्वर का
शब्द आरज पेड़ों को तोड़ता है हां परमेश्वर लबनान के
६ आरज पेड़ों को तोड़ता है। वुह उन्हें बछेड़े की नाईं और
लबनान और शिरियून को गैड़े के बच्चे की नाईं कुदाता है।
७।८ परमेश्वर का शब्द आग की लवर को काटता है। परमेश्वर
का शब्द बन को कंपाता है परमेश्वर कादश के बन को कंपाता
९ है। परमेश्वर का शब्द हरणियों को पीड़ में डालता है और
जंगलों को उभाड़ता है उसके मंदिर में हर एक उसके विभव
१० की बात कहता है। परमेश्वर बाढ़ पर बैठा है परमेश्वर
११ सदा के लिये राज्य के सिंहासन पर बैठा है। परमेश्वर अपने
लोगों को बल देगा परमेश्वर अपने लोगों को कुशल का
आशीष देगा।

३० तीसवां गीत।

दाऊद के घर के स्थापित करने का गीत और गान।

१ हे परमेश्वर मैं तुझे बड़ा कर के मानोंगा क्योंकि तू ने मुझे
बढ़ाया और मेरे बैरी को मुझ पर आनंद करने न दिया है।
२ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तुझे पुकारा और तू ने मुझे चंगा
३ किया है। हे परमेश्वर तू ने मेरे प्राण को समाधि से उठाया
है और तू ने मुझे जीता रक्खा है जिसतें मैं गड़हे में न गिरों।
४ हे परमेश्वर के सिद्धो उसका गान करो और उसकी पवित्रता
५ के स्मरण के लिये धन्यबाद करो। क्योंकि उसकी रिस पलभर
की है और उसकी कृपा में जीवन है सांझ को बिलाप होवे
६ परन्तु विहान को गान होता है। मैं ने अपनी बढ़ती में
७ कहा कि मैं कभी टलाया न जाउंगा। हे परमेश्वर तू ने

अपनी कृपा से मेरे पहाड़ को अति स्थिर किया तू ने अपना
८ मुंह छिपाया और मैं दुःखी हुआ। हे परमेश्वर मैं तेरे आगे
९ चिल्लाया और मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई। जब मैं गड़हे
में उतरों तब मेरे लोहू में क्या लाभ होगा? क्या धूल
१० तेरी स्तुति करेगी? क्या वुह तेरी सत्यता को वर्णन करेगी। हे
परमेश्वर सुन और मुझ पर दया कर हे परमेश्वर तू मेरा
११ सहायक हो। तू ने मेरे रोने को नाचने से पलट दिया तू ने
मेरा टाट खोल डाला है और मेरी कटि में आनंद का पटुका
१२ बांधा। जिसतें मेरा ऐश्वर्य तेरी स्तुति गावे और चुपका न
रहे हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं सर्वदा लों तेरा धन्यबाद
करता रहोंगा।

३१ एकतीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये को दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर मैं तुझ पर भरोसा रखता हों मुझे कभी लज्जित
२ होने न दे अपने धर्म्म से मुझे मुक्ति दे। अपने कान मेरी
ओर झुका और झट पट मुझे छुड़ा मुबचाने के लिये बल का
३ पहाड़ और आड़ का घर हो। क्योंकि तूही मेरा पहाड़ और
मेरा गढ़ है सो तू अपने नाम के लिये मुझे ले चल और मेरा
४ अगुआ हो। तू उस जाल से मुझे निकाल जो उन्हों ने छिप
५ के मेरे लिये बिछाया है क्योंकि तूही मेरा बल है। मैं अपने
आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हों हे परमेश्वर सत्यता के ईश्वर
६ तूने मुझे छुड़ाया है। मैं उनसे बैर रखता हों जो झूठा
बृथा मानते हैं और मेरा भरोसा परमेश्वर पर है।
७ मैं तेरी दया पर आनंदित और आल्हादित होंगा क्योंकि
तू ने मेरे दुःख को बूझा है और तू ने मेरे प्राणों को बिपत्ति में
८ पहिचाना है। और मुझे अपने बैरी के हाथ में बंद न किया है
९ तू ने फैलाव स्थान में मेरा पांव रक्खा है। हे परमेश्वर मुझ

पर दया कर क्योंकि मैं दुःख में हों मेरी आंख और मेरे प्राण
१० और मेरा उदर शोक से क्षीण ऊए हैं। क्योंकि मेरा जीवन
शोक से क्षीण ऊआ है और मेरी बय कहरने से, मेरा बल मेरे
११ पाप के मारे घट चला और मेरी हड्डियां नष्ट ऊईं। मैं अपने सारे
बैरियों में निज करके परोसियों में अपनिंदा ऊआ और अपने
जान पहिचानों के लिये डर जिन्हों ने मुझे देखा मुझ से बाहर
१२ भागे। मैं उस मृतक की नाईं हों जो मन से बिसराया ऊआ
१३ है मैं नष्ट पात्र के तुल्य हों। क्योंकि मैं ने बऊतों का अपवाद
सुना है जब कि उन्हों ने आपुस में मेरे बिरुद्ध में परामर्श किया
और उन्हों ने मेरे प्राण मारने की युक्ति किई तब चारों ओर
१४ भय था। पर हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा मैं ने
१५ कहा कि तू मेरा ईश्वर है। मेरे समय तेरे हाथ में हैं मुझे
मेरे बैरियों के हाथ से और उनसे जो मुझे सताते हैं बचाले।
१६ अपने अपने सेवक पर अपना रूप चमका अपनी दया के
१७ लिये मुझे बचा ले। हे परमेश्वर मुझे लज्जित होने न दे क्योंकि
मैं ने तुझे पुकारा है दुष्ट को लज्जित कर और वे समाधि
१८ में चुपके पड़े रहें। झूठे होठों को जिनसे घमंड की कठोरता
और अहंकार की बातें धर्मियों के बिरुद्ध निकलती हैं चुप
१९ कर। तू ने अपने डरवैयों के लिये कैसी बड़ी कृपा धर रक्खी
है जो तू ने मनुष्यों के संतानों के आगे अपने आश्रितों के
२० लिये बना रक्खा है। मनुष्य के अहंकार से तू उन्हें अपने
आगे के गुप्त में छिपा रक्खेगा तूही उन्हें जी के झगड़े से
२१ अपने तंबू में रक्खेगा। परमेश्वर धन्य है क्योंकि उसने दृढ़
२२ नगर में अपनी आश्चर्य कृपा मुझे दिखलाई है। मैं उतावली
से कहि बैठा कि मैं तेरे आगे से कट गया हों तिस पर भी
जब मैं तेरे आगे चिल्लाया तब तू ने मेरी बिनती का शब्द सुन
२३ लिया। हे परमेश्वर के संतो उससे प्रेम रक्खो क्योंकि परमेश्वर
बिश्वासी लोगों का रखवाल है और अहंकारियों को बऊताई

२४ से दंड देता है। हे परमेश्वर के आश्रितो तुम सब हियाव करो और वुह तुम्हारे मन को दृढ़ करेगा।

३२ बत्तीसवां गीत।

उपदेश देने का दाऊद का गीत।

१ जिसका अपराध क्षमा किया गया और पाप ढापा गया सो
२ धन्य है। जिस पर परमेश्वर पाप नहीं लगाता और जिसके
३ मन में कपट नहीं सो धन्य है। जब मैं चुप रहा तब सारे दिन
४ मेरी हड्डियां कहरते कहरते गल गईं। क्योंकि तेरा हाथ रात दिन मुझ पर भारी था मेरी तरावट गरमी की झुराहट से
५ पलट गई, सीलाह। मैं ने तेरे आगे अपने पाप को मान लिया और मैं ने अपना अधर्म नहीं छिपाया मैं ने कहा कि मैं परमेश्वर के आगे अपने अपराधों को मान लेउंगा और तू ने मेरे
६ पाप का अधर्म क्षमा किया, सीलाह। इसी लिये हर एक ईश्वरीय जन तुझे पाने करने के समय में तेरी प्रार्थना करेगा
७ निश्चय बड़े पानियों के बाढ़ उसके पास न आवेंगे। तू मेरे छिपने का स्थान है तू मुझे दुःखों से बचावेगा और बचाव के
८ गान से मुझे घेरेगा, सीलाह मैं तुझे सिखाओंगा और जिस मार्ग में तुझे चलना है उपदेश करोंगा और मैं
९ अपनी आंखों से तुझे मंत्र देउंगा। तुम घोड़ा अथवा खच्चर के समान मत होओ जिसे समझ नहीं और जिसका मुंह ढाठी
१० और बाग से बंद करने पड़ता है न होवे कि वे तुझ पास आवें। दुष्ट पर बहुतसी बिपत्ति होगी परन्तु जिसका भरोसा
११ परमेश्वर पर है उसे दया घेरेगी। हे धर्मियो आनंदित होओ और परमेश्वर से मगन होओ और सारे खरे अंतःकरणो आनंद के मारे चिल्लाओ।

३३ तेंतीसवां गीत ।

१ हे धर्मियो परमेश्वर में आनंदित होओ क्योंकि खरों को स्तुति
२ सजती है। बीणा से परमेश्वर की स्तुति करो और लवम
३ और दस्तार का बाजा बजाते उसके लिये गाओ। उसके
४ लिये नया गीत गाओ सुघरापे से बड़े शब्द से बजाओ। क्योंकि
परमेश्वर का बचन ठीक है और उसके सारे कार्य्य सचाई के
५ साथ हैं। वुह धर्म्म और न्याय से प्रेम करता है पृथिवी उसकी
६ दया से भरी ऊई है। परमेश्वर के वचन से खर्ग बनगये और
७ उनकी सारी सेना उसके मुंह के खास से। वुह समुद्र का
जल ढेर की नाईं एकट्ठे करता है वुह गहिरायों को भंडार में
८ धरता है। सारी पृथिवी परमेश्वर से डरती रहे और संसार
९ की सारी बस्ती उसका भय माने। क्योंकि उसने कहा और हो
१० गया उसने आज्ञा किई और खड़ा ऊआ। परमेश्वर अन्यदेशियों
के परामर्ष को व्यर्थ करता है वुह लोगों की युक्ति को मिथ्या
११ करदेता है। परमेश्वर का मंत्र सर्बदा लों स्थिर रहता है उसके
१२ मन की चिंता पीढ़ी से पीढ़ी लों। वे लोग धन्य हैं जिनका ईश्वर
परमेश्वर है और जिन लोगों को उसने अपने अधिकार के
१३ लिये चुन लिया है। परमेश्वर खर्ग पर से देखता है वुह
१४ मनुष्य के संतान पर दृष्टि करता है। वुह अपने निवासस्थान
१५ से पृथिवी के सारे निवासियों को देखता है। वुह उनके
अंतःकरणों को एकसां बनाता है वुह उनके सारे कार्यों को
१६ बूझता है। कोई राजा अपनी सेना की बऊताई से बचाया
१७ नहीं जाता बीर जन बऊत बल से छुड़ाया नहीं जाता। बचाने
के लिये घोड़ा व्यर्थ है न वुह अपने बड़े बल से किसी को
१८ छुड़ावेगा। देखो परमेश्वर की आंख उन पर है जो उसे डरते
१९ हैं जो उसकी दया पर आशा रखते हैं। जिसतें उनके प्राणों
२० को मृत्यु से छुड़ावे और उन्हें अकाल में जीता रक्खे। हमारा
प्राण परमेश्वर की बाट जोहता है वही हमारा उपकार

२१ और हमारी ढाल है। क्योंकि हमारा अंतःकरण उसी से
आनंदित होगा इस कारण कि हमने उसके पवित्र नाम पर
२२ भरोसा किया है। हे परमेश्वर जैसी हमारी आशा तुझ पर
है तैसा तेरी दया हम पर होवे।

३४ चौंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत जब उसने अपनी चाल अबीमलक
के आगे बदल डाली और उसने उसे खेद दिया
और वुह जाता रहा।

१ मैं हर समय में परमेश्वर का धन्य मानोंगा उसकी स्तुति सदा
२ मेरे मुंह में होगी। मेरा प्राण परमेश्वर की बड़ाई करेगा
३ दीन लोग सुनेंगे और आनंदित होंगे। मेरे साथ ईश्वर की
४ महिमा करो हम मिलके उसके नाम को बढ़ावें। मैं ने
परमेश्वर को खोजा उसने मेरी सुनी और मेरे सारे भय से
५ मुझे छुड़ाया। उन्हों ने उस पर दृष्टि किई और उंजियाले हो
६ गये और उनके मुंह लज्जित न ऊए। यह कंगाल चिल्लाया
और परमेश्वर ने सुना और उसको सारी विपत्ति से उसे
७ बचाया। जो परमेश्वर से डरते हैं उसका दूत उनकी चारों
८ ओर छावनी करता है और उन्हें बचाता है। अहो चीखो
और देखो कि परमेश्वर भला, जिसका भरोसा उस पर है
९ सो मनुष्य धन्य है। हे संतो परमेश्वर को डरो क्योंकि वे
१० जो उसे डरते हैं उन्हें कुछ कमी नहीं। तरुण सिंह आहार
रहित हैं और भूख सहते हैं पर वे जो परमेश्वर के खोजी हैं
११ उन्हें किसी अच्छी बस्तु की कमी नहीं। आओ हे
बालको मेरी सुनो मैं तुम्हें परमेश्वर का भय सिखाओंगा।
१२ कौन मनुष्य जीवन को चाहता है और मंगल देखने के लिये
१३ बय की बढ़ती चाहता है। तू अपनी जीभ को बुराई से
१४ और होंठों को झूठ बोलने से रोक रख। बुराई से भाग और

१५ भलाई कर कुशल को ढूंढ़ श्रीर उसी का पीछा कर । परमेश्वर की आंखें धर्मियों पर हैं श्रीर उसके कान उनकी दुहाई
१६ पर । परमेश्वर का मुंह कुकर्मी से विरुद्ध है जिसतें उनका
१७ स्मरण पृथिवी पर से कट जाय । धर्मी चिल्लाते हैं श्रीर परमेश्वर सुनता है श्रीर सारे दुःखों से उन्हें छुड़ाता है ।
१८ परमेश्वर चूर्ण अंतःकरणियों के पास है श्रीर टूटे मन के जन
१९ को बचाता है । धर्मी पर बहुतसी बिपत्ति है परन्तु परमेश्वर
२० उन सभों से उसे छुड़ाता है । वुह उसकी सारी हड्डियों का
२१ रक्षक है उनमें से एक टूटने नहीं पाती । बुराई दुष्ट को नाश करेगी श्रीर जो धर्मी से बैर करते हैं सो उजड़ जायेंगे ।
२२ परमेश्वर अपने दासों के प्राण को छुड़ाता है श्रीर जिनका भरोसा उस पर है उनमें से कोई नाश न होगा ।

३५ पैंतीसवां गीत ।

दाऊद का ।

१ हे परमेश्वर मेरे विवादियों के साथ तू विवाद कर श्रीर जो
२ मुझसे लड़ते हैं उनसे लड़ । ढाल श्रीर फरी पकड़ श्रीर मेरे
३ सहाय के लिये खड़ा हो । भाला भी निकाल श्रीर मेरे सताऊ के विरुद्ध मार्ग रोक मेरे प्राण को कह कि तेरी मुक्ति मैं हों ।
४ मेरे प्राण के गाहकों को घबरा दे श्रीर लज्जित कर श्रीर जो मेरी बुराई की जुगत में हैं उन्हें हटा दे श्रीर लज्जित कर ।
५ वे पवन के आगे की भूसी की नाईं होवें परमेश्वर का दूत उन्हें
६ खेदे । उनका मार्ग अंधियारा श्रीर बिकलाहल होवे श्रीर
७ परमेश्वर का दूत उन्हें सतावे । क्योंकि उन्हों ने अकारथ मेरे लिये गड़हे में अपना जाल छिपाया जो उन्हों ने अकारण मेरे
८ प्राण के लिये खोदा । उस पर अचानक नाश पड़े श्रीर वुह अपने छिपाये हुए जाल में आपही फसे श्रीर उसी नाश में
९ आप पड़े । पर मेरा प्राण परमेश्वर में आनंदित होगा श्रीर

१० वुह उसकी मुक्ति में मगन होगा। मेरी सारी हड्डियां कहेंगी कि हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है जो दरिद्रों को बलवान के हाथ से और कंगाल और अधीन को उसके लुटेरे से छुड़ाता
११ है। झूठे साक्षी उठे जो मुझसे वुह प्रश्न करते हैं जिन्हें मैं नहीं
१२ जानता था। उन्हों ने मेरे प्राण की टूटी के लिये भलाई की
१३ संती मुझसे बुराई किई है। परन्तु मैं जो हों जब वे रोगी थे मैं ने टाट का पहिरावा पहिना और ब्रत रख रख अपने प्राण को दुःखी किया और मेरी प्रार्थना मुझी पर लौट
१४ आई। मैं ने अपने हित और भाई की नाईं उनसे व्यवहार किया और माता के विलापी की नाईं मैं शोक से झुक गया।
१५ पर वे मेरी बिपत्ति में आनंद से मिलके एकट्ठे ऊए और सारे नीच लोग मेरे बिरुद्ध बटुर गये और मैं न जानता
१६ था उन्हों ने मुझे फाड़ा और न थमे। जेवनारों में कपटी
१७ ठठेलुओं के साथ उन्हों ने मुझ पर दांत किचकिचाये। हे परमेश्वर कबलों तू देखा करेगा? उनके बिनाश से मेरे प्राण
१८ को हां इसी अकेले को सिंह से छुड़ा। मैं बड़ी मंडली में तेरा धन्यबाद करोंगा मैं बलवानों में तेरी स्तुति करोंगा।
१९ मेरे बैरियों को मुझ पर वृथा आनंदित होने न दे और जो अकारथ मुझसे बैर करते हैं मुझ पर आंख मारने न दे।
२० क्योंकि वे कुशल की बात नहीं कहते परन्तु जो देश में चैन करते
२१ हैं वे उनसे छल की जुगत करते हैं। हां उन्हों ने मेरे बिरुद्ध अपना मुंह पसार के कहा कि अहा अहा हमारी आंखों ने
२२ देखा है। हे परमेश्वर तू ने यह देखा है चुपका मत रह
२३ हे परमेश्वर मुझसे दूर मत रह। हे मेरे ईश्वर हे मेरे प्रभु मेरे पद के लिये आप को उभाड़ और मेरे निपटाव के लिये जाग।
२४ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने धर्म्म के समान मेरा बिचार कर
२५ और उन्हें मुझ पर आनंदित होने मत दे। वे अपने मन में कहने न पावें कि वाह वाह हम यह चाहते थे उन्हें कहने न दे

२६ कि हम उसे निगल गये। जो मेरे दुःख से आनंदित होते हैं उन्हें लज्जित करके घबरा जो मेरे विरुद्ध फूलते हैं उन्हें
२७ निरादर और लाज का पहिरावा पहिना। जो मेरे धर्म्म से आनंद और प्रसन्न होते हैं सो आनंद के मारे ललकारें हां वे नित कहा करें कि परमेश्वर की महिमा होवे जो अपने सेवक
२८ की बढ़ती से प्रसन्न है। और मेरी जीभ तेरा धर्म्म और तेरी स्तुति की चर्चा दिन भर कहती रहेगी।

३६ छतीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत ।

१ दुष्ट का आज्ञाभंगकरना मेरे मन में कहता है कि उसकी
२ आंखों के आगे ईश्वर का भय नहीं। क्योंकि जबलों उसके अधर्म्म की बुराई घिनित नहो वुह अपनी दृष्टि में आप को
३ भुलाता है। उसके मुंह की बातें अधर्म्म और छल की हैं उसने
४ समझ को और भलाई करने को छोड़ दिया है। वुह अपने बिछौने पर पड़े पड़े कुबिचार बांधता है वुह आप कुपथ में
५ खड़ा रहता है वुह बुराई से घिन नहीं करता। हे परमेश्वर
६ तेरी दया स्वर्ग में है और तेरी सचाई मेघ लों। तेरा धर्म्म ईश्वरीय पर्वतों की नाईं है तेरे न्याय बड़े गहिरे हैं हे परमेश्वर
७ तू मनुष्य और पशुन का रक्षक है। हे ईश्वर तेरा कोमल प्रेम कैसा बड़ मूल्य है इस लिये मनुष्य के संतान तेरे डयने की छाया
८ तले भरोसा करते हैं। वे तेरे घर की चिकनाई से संतुष्ट
९ होंगे और तू अपने सुखों की नदी से उन्हें पिलावेगा। क्योंकि जीवन का सोता तुझ पास है तेरे उंजियाले से हम उंजियाला
१० देखेंगे। तू अपने ज्ञानियों पर अपना कोमल प्रेम और खरे
११ मन पर अपना धर्म्म बढ़ा। घमंडियों का पांव मेरे विरुद्ध न पड़े और दुष्टों का हाथ मुझे टालने न पावे कुकर्म्मी वहां गिरे हुए हैं वे ढकेले गये हैं वे कभी उठ न सकेंगे।

३७ सैंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ कुकर्म्मियों के कारण तू मत कुढ़ और अधर्म्मियों के विरुद्ध डाह
२ न कर। क्योंकि वे घास की नाईं झट से काटे जायेंगे और
३ हरियाली की नाईं मुरझावेंगे। परमेश्वर पर भरोसा रख
और भला कर सो तू देश में बास करेगा और निश्चय
४ भरोसा से। परमेश्वर से भी आनन्दित ऊआ कर और वुह
५ तेरे मन की इच्छा तुझे देगा। अपना मार्ग परमेश्वर पर छोड़ दे
६ उस पर भरोसा भी रख और वही पूरा करेगा। वुह तेरे धर्म्म
को उंजियाले की नाईं और तेरे न्याय को दो पहर दिन की नाईं
७ प्रगट करेगा। परमेश्वर के आगे चुप होके संतोष से उसकी
बाट जोह और जो मनुष्य अपने मार्ग में बढ़ती पाता है और
८ कुमंत्रणा करता है उनके लिये मत कुढ़। क्रोध को छोड़ दे और
कोप को त्याग और बुराई करने को किसी बात में मत कुढ़।
९ क्योंकि कुकर्म्मी काटे जायेंगे परन्तु जो परमेश्वर पर आशा
१० रखते हैं सो पृथिवी के अधिकारी होंगे। क्योंकि तनिक और
फेर दुष्ट न होगा हां तू ढूंढ़ ढूंढ़ उसका स्थान खोजेगा और
११ वुह न होगा। परन्तु कोमल लोग पृथिवी के अधिकारी होंगे
१२ और बऊत कुशल से मगन होंगे। दुष्ट धर्म्मियों के विरुद्ध युक्ति
१३ बांधता है और उस पर दांत किचकिचाता है। परमेश्वर
उस पर हंसेगा क्योंकि वुह उसके दिन को आते देखता है।
१४ कंगालों और दीनों को गिराने को और खरे चालियों को घात
करने को दुष्टों ने तलवार निकाली है और अपना धनुष खींचा
१५ है। उनकी तलवार उन्हीं के हृदय में पैठेगी और उनके
१६ धनुष टूट जायेंगे। धर्मी जन की थोड़ी दुष्टों के बऊत धन
१७ से अधिक भली है। क्योंकि दुष्टों की भुजा तोड़ी जायेंगी परन्तु
१८ परमेश्वर धर्म्मियों को संभालता है। परमेश्वर खरों के दिनों

१९ को जानता है और उनका अधिकार सर्वदा लों होगा। वे कुसमय में लज्जित न होंगे और अकाल के दिनों में तृप्त
२० रहेंगे। परन्तु दुष्ट नष्ट होंगे और परमेश्वर के वैरी मेम्ना की
२१ चिकनाई की नाईं मिट जायेंगे वे धूआं होके जाते रहेंगे। दुष्ट उधार लेता है और भर नहीं देता पर धर्मी दया करता है
२२ और देता है। क्योंकि उसके आशीर्वादी पृथिवी के अधिकारी
२३ होंगे और उसके स्रापित कट जायेंगे। उत्तम मनुष्य के डग को परमेश्वर स्थिर रखता है और वुह उसकी चाल से आनंदित
२४ है। यद्यपि वुह गिर जाये तथापि वुह सर्वथा पड़ा न रहेगा क्योंकि
२५ परमेश्वर उसका हाथ थामता है। मैं तरुण था अब वृद्ध हुआ हों तिस पर भी मैं ने धर्मी को कभी त्यक्त होते और उसके वंश को
२६ टुकड़े मांगते न देखा। वुह दिन भर दयाल होके उधार देता
२७ है और उसका वंश आशीषित है। बुराई से अलग हो और
२८ भलाई कर और सदा लों बना रह। क्योंकि परमेश्वर न्याय से प्रीति रखता है और अपने संतों को नहीं त्यागता वे सर्वदा
२९ लों बचाये जाते हैं पर दुष्टों का वंश काटा जायगा। धर्मी
३० भूमि के अधिकारी होंगे और उसमें नित्य बसेंगे। धर्मी का मुंह बुद्धि की बात कहता है और उसकी जीभ से न्याय का
३१ बचन निकलता है। उसके ईश्वर की व्यवस्था उसके मन में है
३२ उसका डग कभी न रपटेगा। धर्मी की घात में दुष्ट लगा
३३ रहता है और उसे घात करने चाहता है। परमेश्वर उसके हाथ में उसे न छोड़ेगा और न्याय में उसे दोषी न ठहरावेगा।
३४ परमेश्वर पर ठहर और उसके मार्ग को पालन कर और वुह तुझे भूमि के अधिकार के लिये बढ़ावेगा जब दुष्ट काटे जायेंगे
३५ तो तू देखेगा। मैं ने दुष्टों को महा पराक्रमी और आप को उस हरे पेड़ की नाईं फैलाते देखा है जो अपनीही मिट्टी में ऊगता
३६ है। तथापि वुह ऐसा जाता रहा जैसा कि वुह नहीं था मैं ने
३७ उसे ढूंढ़ा परन्तु वुह कहीं न पाया गया। सिद्ध को चीन्ह और

३८ खरे को देख रख क्योंकि ऐसे का अंत कुशल है। पर अपराधी
३९ नाश हो जायेंगे दुष्ट का अंत नाश है। परन्तु धर्मियों की मुक्ति
४० परमेश्वर से है दुख के समय में वुह उनका बूता है। परमेश्वर
उनकी सहाय कर के उन्हें छुड़ावेगा वुह उन्हें दुष्टों से छुड़ावेगा
और बचावेगा क्योंकि उनका भरोसा उस पर है।

३८ अठतीसवां गीत।

स्मरण कराने के लिये दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर अपने क्रोध से मुझे मत दपट और अपने कोप
२ से मुझे ताड़ना मत कर। क्योंकि तेरे बाण मुझ में लग रहे हैं
३ और तेरा हाथ मुझे दबाडालता है। तेरी रिस के मारे
मेरे देह को चैन नहीं और मेरे पापों के मारे मेरी हड्डियों
४ में कल नहीं। क्योंकि मेरे अधर्म मेरे सिर पर हो गये हैं
५ और भारी बोझ की नाईं वे मेरे लिये बहुत भारी हैं। मेरी
६ मूर्खता के कारण मेरे घाव सड़के बसाते हैं। मैं थका हों और
७ झुक गया हूं मैं दिन भर बिलाप करता हूं। क्योंकि मेरी कटि
८ घिनित रोग से भरी है और मेरे देह में कल नहीं। मैं निर्बल
और अति चूर्ण हों और अपने मन की बेकली के मारे चिल्लाता
९ हों। हे परमेश्वर मेरी सारी इच्छा तेरे आगे है और मेरा
१० कहरना तुझ से छिपा नहीं। मेरा मन हांपता है मेरा बूता मुझ
११ में घटता है और मेरी आंखों की ज्योति भी जाती रही। मेरे
प्रिय और मेरे मित्र मेरी चोट के कारण मुझ से दूर खड़े हैं और
१२ मेरे कुटुम्ब परे खड़े हैं। मेरे प्राण के गांहक भी जाल बिछाते
हैं और मेरे दुःख के चाहक बुरी बातें कहते हैं और दिन भर
१३ छल की चिंता करते हैं। पर बहिरे के समान होके मैं ने न
सुना और गूंगे के समान जो अपना मुंह नहीं खोलता।
१४ यों मैं उस मनुष्य की नाईं ऊआ जो नहीं सुनता और जिसके
१५ मुंह में उत्तर नहीं। हे परमेश्वर मैं तेरी बाट जोहता हों

१६ हे मेरे प्रभु ईश्वर तू सुनेगा। क्योंकि मैं ने कहा कि मेरी सुन
नहो कि वे मुझ पर आनंदित होवें और जब मेरा पांव फिसले
१७ तो वे देखके फूलें। क्योंकि मैं टलने पर हों और मेरा
१८ शोक सदा मेरे आगे है। क्योंकि मैं अपना अधर्म बताओंगा
१९ और अपने पाप से उदास होंगा। परन्तु मेरे बैरी जीते होके
२० बलवंत हैं और मेरे बैरी अकारथ बहुत होगये। जो भलाई
की संती बुराई करते हैं सो मेरे बैरी हैं क्योंकि मैं भलाई का
२१ पीछा करता हों। हे परमेश्वर मुझे मत त्याग हे मेरे ईश्वर
२२ मुझसे दूर मत रह। हे मेरे मुक्ति दाता ईश्वर मेरी सहाय के
लिये चटक कर।

३९ उंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये यदूथून के पास दाऊद का गीत।

१ मैं ने कहा कि मैं चौकसी से चलोंगा जिसतें जीभ से पाप
न करों और जबलों दुष्ट मेरे आगे है मैं अपने मुंह पर
२ मुंहेड़ी रक्खोंगा। मैं गूंगासा चुप रहा और भला कहने से
३ भी रहगया और मेरा शोक उभड़ा। मेरा मन मुझ में तप्त
४ था मेरे सोचते सोचते आग भड़की तब मैं बोल उठा। हे
परमेश्वर मेरा अंत और मेरी बय के दिन कितने हैं मुझे जना
५ कि यहां मेरा समय कितना है। देख तू ने मेरी बय
बित्ता भर की किई है और मेरा जीवन तेरे आगे तुच्छ है
निश्चय हर एक जन अपनी पूरी अवस्था में सर्वथा वृथा
६ है, सीलाह। निश्चय हर एक मनुष्य मूर्त्ति की नाईं चलता
फिरता है निश्चय वे अकारथ बिकल होते हैं वुह ढेर
७ करता है परन्तु नहीं जानता कि उन्हें कौन बटोरेगा। अब
हे परमेश्वर मैं किसकी बाट जोहों मुझे तेरीही आशा है।
८ मेरे सारे अपराधों से मुझे छुड़ा मूर्खों की निंदा मुझे मत
९ कर। मैं गूंगा रहा अपना मुंह न खोला क्योंकि तू ने किया

१० है । अपनी चोट मुझे अलग कर मैं तो तेरे हाथ की मार
११ से नाश हुआ हों । जब अधर्म के लिये तू मनुष्य को दपट से
ताड़ना करता है तू उसमें की वांछित को गला देता है निश्चय
१२ हर एक मनुष्य वृथा है, सीलाह । हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना
सुन और मेरे रोने पर कान धर मेरे आंसूओं से अचेत मत
रह क्योंकि मैं अपने सारे पितरों की नाईं एक परदेशी और
१३ टिकक हों । यहां से न जाने से और फेर न रहने से आगे
मुझे हाथ उठा जिसतें मैं बल पाओं ।

४० चालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत ।

१ परमेश्वर की बाट जोहते जोहते वुह मेरी ओर झुका और
२ मेरी दुहाई सुनी । वुह मुझे भयंकर गड़हे से भी और दलदल
से बाहर निकाल लाया और मेरे पांव पहाड़ पर रक्खे
३ और मेरी चाल को स्थिर किया । और उसने मेरे मुंह में एक नया
गीत डाला अर्थात् ईश्वर की स्तुति, बहुतेरे देखेंगे और डरेंगे
४ और परमेश्वर पर भरोसा करेंगे । जो मनुष्य परमेश्वर
पर भरोसा रखता है और अहंकारियों को और जो झूठ
५ की ओर झुकते हैं नहीं मानता सो धन्य है । हे परमेश्वर मेरे
ईश्वर तेरे आश्चर्य्य कर्म्म जो तू ने किये हैं और हमारी ओर
तेरी चिंता बहुत हैं वे अलग अलग तेरे लिये गिने नहीं जा सक्तीं
६ जो मैं उन्हें वर्णन किया चाहों तो वे गिनती से परे हैं । बलि
और भेंट की इच्छा तू ने नहीं किई तू ने मेरे कान छेदे हैं होम
७ की भेंट और पाप की भेंट को तू ने नहीं चाहा । तब मैं ने
कहा कि देख मैं आता हों पुस्तक के पिलंडी में मेरे विषय में
८ लिखा है । हे मेरे ईश्वर मैं तेरी इच्छा मान्ने को आनंदित हों
९ तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में है । बड़ी मंडली में मैं ने धर्म्म को
प्रचारा है देख हे परमेश्वर तू जानता है कि मैं ने अपने होंठ

१० को नहीं रोका । मैं ने तेरे धर्म को अपने मन में नहीं छिपा रक्खा मैं ने तेरी सचाई और तेरी मुक्ति को वर्णन किया है मैं ने तेरा कोमल प्रेम और तेरे सत्य को बड़ी मंडली से न
११ छिपाया । हे परमेश्वर अपनी कोमल दया को मुझ से न रख छोड़ तेरे कोमल प्रेम और तेरी सचाई नित्य मेरी रक्षा करें ।
१२ क्योंकि अगणित बुराइयों ने मुझे घेर लिया है मेरे अधर्म ने मुझे पकड़ा है ऐसा कि मैं अपनी आंख ऊपर नहीं उठा सक्ता वे मेरे सिर के बालों से भी बहुत हैं इस लिये मेरा प्राण जाता
१३ है । हे परमेश्वर मुझे बचा हे परमेश्वर शीघ्र मेरी सहाय
१४ कर । जो मेरा जीव लेने का पीछा करते हैं उन्हें एकट्ठे लज्जित कर और घबरा दे जो मेरी बुराई चाहते हैं उन्हें हटा दे
१५ और लज्जित कर । जो मुझ पर अहा अहा करते हैं सो
१६ अपनी लाज के पलटा से नाश होवें । जो तेरे खोजी हैं आनन्दित और प्रसन्न होवें और जो तेरी मुक्ति के प्रेमी हैं सो
१७ नित्य कहा करें कि परमेश्वर की महिमा होय । परन्तु मैं तो कंगाल और दीन हों तथापि परमेश्वर मेरी चिंता करता है
१८ मेरी सहाय मेरा छुड़ानेवाला तू ही है । हे मेरे परमेश्वर विलंब मत कर ।

४१ एकतालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत ।

१ जो कंगालों की चिंता करता है सो धन्य है परमेश्वर बुराई के
२ दिन में उसे छुड़ावेगा । परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा और उसे जीता रक्खेगा और वुह भूमि पर आशीषित होगा और
३ तू उसके बैरी के वश में उसे न कर देगा । रोग के बिछौने पर परमेश्वर उसे बल देगा उसके रोग में तू उसका बिछौना
४ उलट पुलट करेगा । मैं ने कहा कि हे परमेश्वर मुझ पर दया कर मेरे प्राण को चंगा कर क्योंकि मैं ने तेरे बिरुद्ध पाप

५ किया है। मेरे बैरी मेरे विषय में बुरा कहते हैं कि वुह कब
६ मरेगा और उसका नाम कब मिट जायगा। और जो वुह
देखने को आवे तो मिथ्या बातें करता है उसके मन में अधर्म
७ भरा है वुह बाहर जाके उसे कहता है। सब जो मुझसे बैर
रखते हैं मेरे विरुद्ध फुसफुसाते हैं मेरी बुराई में वे जुगत
८ बांधते हैं। और कहते हैं कि एक बुरा रोग उसे लगा है और
९ अब जो वुह पड़ा है फेर न उठेगा। मेरे कुशल का जन जिस
पर मैं भरोसा करता था जो मेरी रोटी खाता था उसने
१० मुझ पर लात उठाई है। पर हे परमेश्वर तू मुझ पर दया
११ कर और मुझे खड़ा कर जिसतें मैं उनसे पलटा लेउं। इस्से
मैं जानता हों कि तू मुझ पर कृपा करता है कि मेरे बैरी
१२ मुझ पर जय नहीं पाते। तू मेरी खराई में मुझे संभालता
१३ है और सदा मुझे अपने आगे रखता है। परमेश्वर
इसराईल का ईश्वर सनातन से सनातन लों धन्य है आमीन
आमीन।

४२ बयालीसवां गीत।

कोरह के संतानों के लिये प्रधान बजनिये के पास
उपदेश करने का गीत।

१ जैसा कि हरणी पानी की नालियों के लिये बिबिआती है
२ तैसाही हे ईश्वर मेरा प्राण तेरे लिये हांपता है। मेरा
प्राण ईश्वर के लिये जीवत ईश्वर के लिये पियासा है मैं ईश्वर
३ के आगे कब पऊंचोंगा। रात दिन मेरे आंसू मेरे भोजन
ऊए हैं जब कि वे प्रति दिन मुझे कहा करते हैं कि तेरा ईश्वर
४ कहां है?। जब मैं इन बातों को सोचता हों तब मैं अपना प्राण
उंड़ेलता हों क्योंकि मैं मंडली के साथ गया मैं उनके साथ
आनंद और स्तुति का शब्द करता ऊआ अर्थात् उस मंडली
५ के साथ जो पर्ब्ब रखती थी ईश्वर के मंदिर में गया। हे मेरे

प्राण तू क्यों झुका जाता है? और तू क्यों मुझ में बेचैन है? ईश्वर पर भरोसा रख क्योंकि निश्चय मैं उसके रूप की सहाय
६ के लिये उसकी स्तुति करोंगा। हे मेरे ईश्वर मेरा प्राण मुझ में झुका जाता है इस लिये यर्दन की और हरमूनी की भूमि से
७ मिज़हार के पहाड़ से तुझे स्मरण करोंगा। तेरे पनिबहा के शब्द से गहिराव गहिराव को पुकारता है तेरी सारी लहरें
८ और तेरे ढेव मेरे सिर पर से जाते रहे दिन को परमेश्वर अपनी कोमल दया को आज्ञा करेगा और रात को मैं उसका गीत गाओंगा मेरी प्रार्थना मेरे जीवन के ईश्वर की ओर
९ होगी। मैं अपने पहाड़ ईश्वर को कहोंगा कि तू मुझे क्यों भूलगया है? मैं क्यों बैरी के अंधेर से तेरे आगे बिलाप करता
१० चला जाता हों। मेरी हड्डियों में तलवार की नाईं मेरे बैरी निंदा करते हैं जब लों वे प्रति दिन मुझे कहते हैं कि तेरा
११ ईश्वर कहां?। हे मेरे प्राण तू क्यों झुका जाता है और तू क्यों बेचैन है ईश्वर पर भरोसा रख क्योंकि मैं अब भी उसकी स्तुति करोंगा जो मेरे मुंह का कुशल और मेरा ईश्वर है।

४३ तेंतालीसवां गीत।

१ हे ईश्वर मेरा बिचार कर और अधर्म्म जाति के बिरुद्ध मेरे पद का पक्ष कर मुझे कपटी और अधर्मी मनुष्य से छुड़ा।
२ क्योंकि तू मेरे बल का ईश्वर है क्यों तू मुझे दूर करता है मैं
३ बैरी के अंधेर के मारे क्यों रोता चला जाता हों। हाय अपनी ज्योति और अपनी सच्चाई को भेज वे मेरी अगुआई करें वे
४ मुझे तेरे पवित्र पहाड़ पर और तेरे तंबू में ले जावें। तब मैं ईश्वर की बेदी पर अपने आनन्द की मगनता के ईश्वर पास जाओंगा हे ईश्वर हे मेरे ईश्वर बीण बजाके मैं तेरी स्तुति
५ करोंगा। हे मेरे प्राण तू क्यों झुका जाता है और तू मुझ में क्यों बेचैन है ईश्वर पर भरोसा रख क्योंकि अब भी मैं उसकी स्तुति करोंगा जो मेरे मुंह का कुशल और मेरा ईश्वर है।

४४ चौंतालीसवां गीत ।

कोरह के पुत्रों के लिये प्रधान बजनिये को मस्किल ।

१ हे ईश्वर हमने अपने कानों से सुना और उन कामों को जो तू ने उनके दिनों में और उनसे आगे किये हैं हमारे पितरों
२ ने हमसे कहा । कि तू ने अन्यदेशियों को क्योंकर अपने हाथ से दूर किया और उन्हें जमाया और तू ने उन लोगों को
३ दुःख दिया और उन्हें बाहर किया । क्योंकि उन्हों ने अपनीही तलवार से देश को वश में न किया न उनकी भुजा ने उन्हें बचाया परन्तु तेरे दहिने हाथ ने और तेरी भुजा ने और
४ तेरे रूप की ज्योति ने इसलिये कि तेरी कृपा उन पर थी । हे ईश्वर तू मेरा राजा है याकूब के लिये छुटकारों की आज्ञा
५ कर । तुझसे हम अपने बैरियों को ठेलेंगे जो हम पर उभड़ते
६ हैं हम तेरे नाम से उन्हें लताड़ेंगे । क्योंकि मैं अपने धनुष पर
७ भरोसा न करोंगा न मेरी तलवार मुझे बचावेगी । परन्तु तू ने हमें हमारे बैरियों से बचाया है और हमारे शत्रुन को
८ लज्जित किया है । हम दिन भर ईश्वर की बड़ाई करते हैं और
९ सदा तेरे नाम की स्तुति करते हैं, सीलाह । परन्तु तू ने हमें त्यागा है और लज्जित किया और हमारी सेनाओं
१० के साथ नहीं जाता । तू बैरी से हमें पीठ फेरवाता है और
११ हमारे शत्रु हमें लूट लेते हैं । तू ने हमें भेड़ों की नाईं उनका भोजन किया है और अन्यदेशियों में हमें छिन्न भिन्न
१२ किया है । तू अपने लोगों को बिन धन से बेंचता है और
१३ उनके मोल से नहीं बढ़ता है । तू हमें हमारे परोसियों में निन्दित और हमारे आस पासियों में हलुका और तुच्छ
१४ करता है । तू ने हमें अन्यदेशियों में एक कहावत और लोगों में
१५।१६ सिरधुन्ना बनाता है । निन्दक और पाषंड के शब्द के लिये बैरी पलटादायक के कारण से मेरी घबराहट नित मेरे आगे

१७ है और मेरे मुंह की लाज ने मुझे ढांपा है। यह सब कुछ हम पर पड़ा है तदभी हम तुझे नहीं भूले हैं और न तेरी
१८ वाचा से मिथ्या व्यवहार किया है। हमारा मन नहीं फिरा है
१९ और न हमारी चाल तेरे मार्ग से फिरी। यद्यपि तू ने अजगरों के स्थान में हमें कुचला है और मृत्यु की छाया से हमें ढांपा।
२० यदि हमने अपने ईश्वर के नाम को बिसराया है अथवा उपरी
२१ देव की ओर हाथ फैलाया है। तो क्या ईश्वर इसका भेद न
२२ लेगा? क्योंकि वुह मन के भेदों को जानता है। हां तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं और घात की भेड़ गिने जाते
२३ हैं। हे प्रभु जाग तू क्यों सोता है उठ सदा के लिये हमें मत
२४ त्याग। तू क्यों अपना मुंह छिपाता है और हमारे दुःख और
२५ अंधेर को क्यों बिसराता है। क्योंकि हमारा प्राण धूल लों
२६ झुका है हमारा पेट भूमि से चिपका है। हमारे सहाय के लिये उठ और अपनी दया के कारण हमें बचा ले।

४५ पैंतालीसवां गीत।

कोरह के पुत्रों के लिये शोशनिम पर प्रधान बजनिये के पास मस्किल प्रेम का गान।

१ मेरे मन में अच्छा अभिप्राय उबलता है मैं उन बातों के विषय में कहता हों जो मैं ने राजा के लिये किया है मेरी जीभ चटक
२ लेखक की लेखनी है। तू मनुष्य के संतानों से अति सुन्दर है तेरे होंठों में अनुग्रह उंडेला गया है इसी लिये ईश्वर ने तुझे
३ सदा के लिये आशीष दिया है। हे शक्तिमान बिभव और
४ महात्म्य से अपनी तलवार जांघ पर लटका। सचाई और कोमलता और धर्म पर अपने महात्म्य और सफलता से चढ़ और तेरा दहिना हाथ तुझे भयंकर कार्य्य दिखावेगा।
५ राजा के बैरियों के अंतःकरण में तेरे बाण चोखे हैं लोग तेरे
६ तले गिर जाते हैं। हे ईश्वर तेरा सिंहासन सनातन और

७ सनातन के लिये है तेरा राज्य दंड ठीक दंड है। तू धर्म से प्रेम और दुष्टता से बैर करता है इसी लिये ईश्वर ने जो तेरा ईश्वर है आनन्द की चिक्कनाई से तेरे संगियों से तुझे अधिक
८ अभिषिक्त किया है। हाथी दांत के भवनों में से तेरे पहिरावा से बोल और अगर और तज का सुगंध आता है जिनसे
९ उन्हों ने तुझे आनंदित किया है। राजाओं की बेटियां तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में हैं रानी ऊफीर के सोने से बिभूषित तेरे
१० दहिने हाथ पर खड़ी थी। ओ बेटी सुन ले और सोच और अपने कान लगा अपनेही लोगों और अपने पिता के घर को
११ भी भूल जा। सो राजा तेरी सुन्दरता का निपट अभिलाषी
१२ होगा क्योंकि वुह तेरा प्रभु है तू उसकी सेवा कर। और भेंट के साथ सूर की बेटी अर्थात् लोगों की धनमान तेरे मुंह की
१३ बिनती करेगा। राजा की पुत्री भीतर भीतर महिमा से भरी
१४ हुई है उसका पहिरावा सोनहला है। बूटे काढ़े हुए पहिरावा में राजा के आगे वुह पहुंचाई जायगी उसकी संगी कुमारियां जो उसके पीछे पीछे जाती हैं तुझ पास पहुंचाई जायेंगी।
१५ आनन्द होते हुए वे प्रसन्नता से पहुंचाई जायेंगी वे राजा के
१६ भवन में प्रवेश करेंगी। तेरे पितरों की संती तेरे संतान होंगे जिन्हें तू सारी पृथिवी का अध्यक्ष करे सारी पीढ़ियों में मैं तेरा नाम स्मरण कराऊंगा इस लिये लोग सर्वदा तेरी स्तुति करेंगे।

४६ छयालीसवां गीत।

कोरह के पुत्रों के लिये प्रधान बजनिये के पास एक गान अलामूस पर।

१ ईश्वर हमारा शरण और बल है और दुःख में और समय
२।३ में सहायक है। यद्यपि पृथिवी टल जाय और यद्यपि पर्ब्बत समुद्र में डाले जायें। और उसके पानी हड़हड़ावें और

उछल जायें यद्यपि उसके उभड़ने से पर्ब्बत थर्थरावें तथापि हम
४ न डरेंगे सीलाह। एक नदी है जिसकी धारें ईश्वर के नगर को
अर्थात् अतिमहान के पवित्र तंबूओं को आनन्दित करती हैं।
५ ईश्वर उसके मध्य में है वुह कभी टलाया न जायगा ईश्वर तड़केही
६ उसकी सहाय करेगा। अन्यदेशी कोपित ऊए राज्य हिल गये
७ उसने शब्द किया पृथिवी पिघल गई। परमेश्वर सेनाओं
का ईश्वर हमारे साथ है याक़ूब का ईश्वर हमारा शरण है
८ सीलाह। आओ परमेश्वर के कार्य्यों को देखो उसने पृथिवी
९ पर कैसी कैसी बिनाशता किई। वुह पृथिवी के अंत्यलों
लड़ाइयों को उठा डालता है वुह धनुष तोड़ता है और भाले दो
१० टुकड़े करता है गाड़ियों को आग से जलाता है। धीरज धरो
और जान रक्खो कि मैं ईश्वर हों मैं अन्यदेशियों में प्रतिष्ठित
११ होंगा मैं पृथिवी पर प्रतिष्ठित होंगा। सेनाओं का परमेश्वर
हमारे साथ है याक़ूब का ईश्वर हमारा शरण है सीलाह।

४७ सैंतालीसवां गीत।

कोरह के बेटों के लिये प्रधान बजनिये के पास
एक गीत।

१ हे लोगो तुम सब तालियां बजाओ जय के शब्द से ईश्वर की
२ स्तुति करो। क्योंकि अति महान परमेश्वर भयंकर है वुह सारी
३ पृथिवी पर महाराज है। वुह लोगों को हमारे बश में और
४ देशियों को हमारे पांवतले करेगा। वुह हमारा अधिकार
अर्थात् अपने प्रिय याक़ूब की महिमा को हमारे लिये चुनेगा
५ सीलाह। ईश्वर महा शब्द के साथ उठ गया है अर्थात् परमेश्वर
६ तुरही के शब्द के साथ। ईश्वर की स्तुति करो स्तुति करो हमारे
७ राजा की स्तुति करो स्तुति करो। क्योंकि ईश्वर सारे जगत का
८ राजा है समुझ के साथ उसकी स्तुति करो। ईश्वर अन्यदेशियों
पर राज्य करता है ईश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर बैठा है।

९ लोगों के अध्यक्ष एकट्ठे ऊए हैं अर्थात् वे जो इबराहीम के ईश्वर के लोग हैं क्योंकि पृथिवी की ढालें ईश्वर के बश में हैं वुह अत्यंत प्रतिष्ठित ऊआ है।

४८ अठतालीसवां गीत ।

कोरह के बेटों के लिये गान और गीत ।

१ हमारे ईश्वर के नगर में उसी के पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर
२ महान और अत्यंत स्तुति के योग्य है। सैहून पर्व्वत सुन्दर स्थान सारी पृथिवी का आनन्द है उत्तर अलंगों में महाराज का
३ नगर है। ईश्वर उसके भवनों में शरण के लिये बिदित है।
४ क्योंकि देख राजा बटुर गये और एकसाथ उतर गये।
५।६ देख के वे आश्चर्य्यित ऊए व्याकुल होके वे निकल भागे। वहां डर
७ और जनती स्त्री की पीड़ा की नाईं पीड़ा ने उन्हें पकड़ा। तू
८ तरशीश की जहाज़ों को पूरबी पवन से तोड़ता है। सेनाओं के परमेश्वर के नगर में अर्थात् अपने ईश्वर के नगर में जैसा हमने सुना है तैसाही देखा ईश्वर उसे सदा स्थिर रक्खेगा
९ सीलाह। हे ईश्वर तेरे मन्दिर के मध्य में हमने तेरे कोमल
१० प्रेम को सोचा है। हे ईश्वर जैसा तेरा नाम है तैसी तेरी स्तुति पृथिवी के चारो खूंट में है तेरा दहिना हाथ धर्म्म से
११ भरा है। तेरे न्यायों के कारण सैहून पहाड़ आनन्दित होवे
१२ यहूदा की बेटियां आनन्द करें। सैहून के आस पास फिरो और उसकी चारो ओर जाओ और उसके गुम्मटों को गिनो।
१३ तुम उसके गढ़ पर अपना मन लगाओ और उसके भवनों को
१४ सोचो जिसतें अगिली पीढ़ियों को कहि रक्खो। क्योंकि यही ईश्वर हमारा सनातन का ईश्वर है और मृत्यु लों वही हमारा अगुआ होगा।

४९ उंचासवां गीत ।

कोरह के बेटों के लिये प्रधान बजनिये के पास ।

१।२ हे लोगो यह सुनो जगत के सारे बासियो । क्या छोटे क्या
३ बड़े क्या धनी क्या कंगाल एकट्ठे कान धरो । मेरे मुंह से बुद्धि
की बातें निकलेंगी और मेरे मन का ध्यान समझ का होगा ।
४ मैं एक दृष्टांत की ओर अपना कान झुकाओंगा मैं अपना
५ गुप्त भेद बीणा पर खोलोंगा । जब मेरी एड़ी का अधर्म आस
पास से मुझे घेरेगा ऐसी बुराई के दिनों में किस लिये डरों ।
६ वे जो अपने धन पर भरोसा करते हैं और अपनी संपत्ति की
७ बहुताई पर फूलते हैं । उनमें से कोई किसी भांति से अपने
भाई को छुड़ा नहीं सक्ता न उसके कारण ईश्वर को प्रायश्चित
८ दे सक्ता । क्योंकि उनके प्राणों का प्रायश्चित बहुमूल्य है और
९ सर्बदा असाध्य है । जिसतें वुह सर्बदा जीता रहे और नाश
१० न देखे । क्योंकि वुह बुद्धिमान को मरते देखता है और मूढ़
और पशुवत प्राणी भी नष्ट होते हैं और अपनी संपत्ति औरों
११ के लिये छोड़ जाते हैं । वे समझते हैं कि हमारे घर सदा
लों और हमारे निवास पीढ़ी से पीढ़ी लों स्थिर रहेंगे वे अपनी
१२ भूमि पर अपना नाम रखते हैं । तथापि प्रतिष्ठित मनुष्य
१३ नहीं ठहरता वुह पशुन की नाईं नाश हो जाता है । उनकी
चाल उनकी मूर्खता है तथापि उनके संतान उन्हीं की बात से
१४ आनन्दित हैं सीलाह । वे भेड़ों की नाईं समाधि में डाले जाते
हैं मृत्यु उन्हें खाया करेगी और खरे लोग बिहान को उन पर
प्रभुता करेंगे और परलोक में पड़े पड़े उनकी सुन्दरता जाती
१५ रहेगी । परन्तु ईश्वर परलोक के हाथ से मेरे प्राण को
१६ छुड़ावेगा क्योंकि वुह मुझे ग्रहण करेगा सीलाह । जब कोई
धनमान हो जाय अथवा उसके घर का बिभव बढ़ जाय तो
१७ मत डर । क्योंकि वुह मरने में कुछ साथ न ले जायगा और

१७ उसका विभव उसके पीछे पीछे न उतरेगा यद्यपि वुह अपने जीते जी अपने प्राण को आशीष देता था पर जब तू अपनी
१८ भलाई करेगा मनुष्य तेरी स्तुति करेंगे। उसका प्राण उसके पितरों की पीढ़ी में मिल जायगा वे कभी उंजियाला न देखेंगे।
२० प्रतिष्ठित मनुष्य जो असमझ है सो नाशमान पशु की नाईं है।

५० पचासवां गीत।

असाफ के लिये गीत।

१ शक्तिमान ईश्वर परमेश्वर ने कहा है और पृथिवी को सूर्य के
२ उदय से उसके अस्त लों बुलाया। अत्यंत सुन्दरता सैहून में से
३ ईश्वर चमका। हमारा ईश्वर आवेगा और चुपचाप न रहेगा एक आग उसके आगे आगे भस्म करेगी और उसके आस पास
४ बड़ा अंधिआरा होगा। वुह ऊपर से स्वर्ग को और पृथिवी
५ को पुकारेगा जिसतें वुह अपने लोगों का न्याय करे। मेरे संतों को मेरे पास एकट्ठे करो जिन्हों ने मेरे साथ बलिदान से
६ बाचा बांधी?। स्वर्ग उसके धर्म को प्रगट करेंगे क्योंकि ईश्वर न्यायी
७ है सीलाह। हे मेरे लोग सुन और मैं कहोंगा हे इसराईल
८ मैं तेरे विरुद्ध साक्षी देऊंगा मैं ईश्वर तेरा ईश्वर हों। मैं तेरे बलिदानों अथवा तेरे होम की भेंटों के लिये नित मेरे आगे
९ होने के लिये तुझे न दपटोंगा। मैं तेरे घर का बैल और
१० तेरी झुंड का बकरा न लेउंगा। क्योंकि बन के सारे पशु
११ और सहस्र पहाड़ों के ढोर मेरे हैं। मैं पहाड़ के सारे पंछियों
१२ को जानता हों और चैागान के बन्यपशु मेरे हैं। जो मैं भूखा होता तो तुझे न कहता क्योंकि जगत और उसकी भर
१३ पूरी मेरी है। क्या मैं बैल का मांस खाऊंगा अथवा बकरों का
१४ लोहू पीओंगा। धन्यबाद की भेंट ईश्वर को चढ़ा और अपनी
१५ मनौतियां अति महान के आगे पूरी कर। और विपत्ति के दिन मुझे पुकार मैं तुझे छुड़ाओंगा और तू मेरी महिमा प्रगट

१६ करेगा। परन्तु दुष्ट से ईश्वर यों कहता है तुझे मेरी विधिन को वर्णन करने से क्या काम है अथवा अपने मुंह में मेरी वाचा
१७ क्यों लेता है?। तू तो उपदेश से घिन करता है और मेरे
१८ वचन को अपने पीछे डालता है। जब तू चोर को देखता है तो उसे मिल जाता है और व्यभिचारियों का साझी होता है।
१९ तू अपने मुंह से बुराई की बातें करता है और जीभ से छल
२० बांधता है। तू बैठ के अपने भाई के विरोध में बोलता है तू
२१ अपनीही माता के बेटे के विषय में झूठ बोलता है। तू ने यह काम किया है और मैं चुपका होरहा तू ने समझा कि मैं तुझीसा हों पर मैं तुझे दपटोंगा और उन्हें एक एक करके
२२ तेरी आंखों के आगे धरोंगा। अब हे ईश्वर के बिसरवैयो इसे सोचो नहो कि मैं तुम्हें टुकड़ा टुकड़ा करों और कोई छुड़वैया
२३ न हो। जो स्तुति की भेंट देता है सो मेरी महिमा प्रगट करता है और जो सुचाल चलता है मैं उसको ईश्वर की मुक्ति दिखलाऊंगा।

५१ एकावनवां गीत।

जब वुह बैथशीबा पास गया और नासान भविष्यद्वक्ता उस पास भेजा गया प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ हे ईश्वर अपने कोमल प्रेम से मुझ पर दया कर और अपनी
२ कोमल दया की अधिकाई से मेरे अपराधों को मिटा दे। मुझे मेरे अधर्म से सर्वथा धो और मुझे मेरे पाप से पावन कर।
३ क्योंकि मैं अपने अपराधों को मानलेता हों और मेरा पाप
४ सदा मेरे आगे है। मैं ने केवल तेराही अपराध किया है और तेरेही आगे बुराई किई है जिसतें तू अपनी बातों में निर्दोष
५ और अपने विचारों में बेलाग ठहरे। देख अधर्म में मेरा
६ डौल ऊआ और पाप में मेरी माता ने मुझे सेवा। देख

तू अंतर में सच्चाई चाहता है और गुप्त स्थान में मुझे बुद्धि
७ जनावेगा। जूफा से मुझे पावन कर और मैं पवित्र हो जाओंगा
८ मुझे धो और मैं पाला से अधिक उजला होजाओंगा। मुझे
आनन्द और मगनता का संदेश सुना जिसतें मेरी हड्डियां जिन्हें
९ तूने तोड़ा है आनन्दित हों। मेरे पापों से अपना मुंह छिपा
१० और मेरे सारे अधर्म मिटा डाल। हे ईश्वर मुझ में एक पवित्र
११ मन उत्पन्न कर और एक स्थिर आत्मा मुझ में डाल। मुझे
अपने आगे से मत हांक और अपना धर्मात्मा मुझसे मत ले।
१२ अपनी मुक्ति की आनंदता मुझे फिर दे और अपने निर्बंध
१३ आत्मा से मुझे थाम। तब अपराधियों को मैं तेरा मार्ग
१४ सिखाऊंगा और पापी तेरी ओर फिराये जायेंगे। हे ईश्वर
मेरे मुक्तिदाता ईश्वर मुझे हत्या के पाप से छुड़ा और मैं
१५ अपनी जीभ से तेरे धर्म के गीत गाओंगा। हे प्रभु मेरे होंठों
१६ को खोल और मेरा मुंह तेरी स्तुति वर्णन करेगा। क्योंकि तू
बलिदान नहीं चाहता नहीं तो मैं देता होम के बलिदान
१७ में तेरी आनंदता नहीं। ईश्वर के बलिदान चूर्ण मन हैं हे
१८ ईश्वर तू टूटे और चूर्ण अंतःकरण को तुच्छ न जानेगा। अपनी
बांछा से सैहून का भला कर यिरोशलीम की भीतों को बना।
१९ तब तू धर्म के बलिदानों और होम की भेंट और होम की
पूरी भेंटों से आनंदित होगा तब वे तेरी बेदी पर बैल चढ़ावेंगे।

५२ बावनवां गीत ।

जब अदूमी दोयेगने आके साऊल से कहा कि
दाऊद अहिमलक के घर आया है दाऊद का
मस्किल प्रधान बजनिये के पास।

१ हे बलवान मनुष्य बुराई पर तू क्यों फूलता है? ईश्वर का अनुग्रह
२ नित है। तेरी जीभ छल कर के चोखे छुरे की नाईं बुराई की
३ जुगत करती है। तू बुराई को भलाई से और झूठ बोलने

४ को सत्य कहने से अधिक चाहता है, सीलाह। हे छली जीभ
५ तू भक्षक बातों को चाहती है। इसी रीति से ईश्वर भी तुझे सदा दे मारेगा वुह तुझे दूर करेगा और तुझे तेरे निवास स्थान से उखाड़ेगा और जीवन की भूमि से तुझे उखाड़ डालेगा,
६ सीलाह। धर्मी देखेंगे और डरेंगे और उस पर हंस के
७ कहेंगे। कि देखो इस जन ने ईश्वर को अपना बल न जाना परंतु अपने धन की अधिकाई पर भरोसा रक्खा और अपनी
८ दुष्टता में आप को प्रबल किया। परंतु ईश्वर के मंदिर में मैं जलपाई के हरे पेड़ की नाईं हों ईश्वर की दया पर सदा
९ भरोसा रखता हों। मैं सर्वदा तेरी स्तुति करोंगा क्योंकि तू ने किया है और तेरे नाम की बाट जोहोंगा क्योंकि तेरे संतों के आगे यह भला है।

५३ तिरपनवां गीत।

दाऊद का मस्किल महालात पर प्रधान बजनिये के पास।

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर नहीं वे सड़े हैं और उन्हों ने घिनित अधर्म किया है और उनमें कोई भला नहीं
२ करता। ईश्वर ने देखने को स्वर्ग पर से मनुष्य के संतान पर दृष्टि किई कि कोई समझवैया अथवा ईश्वर का खोजी है।
३ उनमें से हर एक हट गया है वे सब के सब अशुद्ध ऊए हैं
४ कोई सुकर्मी नहीं एक भी नहीं। क्या कुकर्मियों में समझ नहीं? वे मेरे लोगों को रोटी की नाईं खाते हैं उन्हों ने ईश्वर
५ की प्रार्थना न किई। जहां डर न था तहां वे बऊत डर गये क्योंकि जो तेरे विरुद्ध छावनी करते हैं ईश्वर ने उनकी हड्डियों को छिन्न भिन्न किया है तू ने उन्हें लज्जित किया क्योंकि
६ ईश्वर ने उन्हें तुच्छ किया है। सैहून से कौन इसराईल को मुक्ति देगा जब कि ईश्वर अपने लोगों की बंधुआई को फेरेगा तो याकूब आनंदित और इसराईल मगन होगा।

५४ चौवनवां गीत ।

जब जफीमियों ने आके साऊल से कहा क्या दाऊद अपने तईं हमारे पास नहीं छिपाता दाऊद का मस्खिल नगीनूत पर प्रधान बजनिये के पास ।

१ हे ईश्वर अपने नाम से मुझे बचा और अपने पराक्रम से
२ मेरा न्याय कर । हे ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन और मेरे मुंह
३ की बातों पर कान धर । क्योंकि परदेशी मेरे विरोध में मुझ पर उठे हैं और सताऊ मेरे प्राण के गांहक हैं उन्हों ने
४ ईश्वर को अपने आगे नहीं समझा, सीलाह । देखो ईश्वर
५ मेरा सहायक है प्रभु मेरे प्राण के सहायकों के साथ है । वही मेरे बैरी को बुराई का पलटा देगा अपनी सच्चाई से उन्हें
६ नष्ट करेगा । हे परमेश्वर मैं मनमंता तुझे बलि चढ़ाओंगा मैं तेरे नाम की स्तुति करोंगा क्योंकि यह भला है । इस लिये
७ कि सारी बिपत्ति से तू ने मुझे बचाया है और मेरी आंखों ने मेरे बैरी को देखा है ।

५५ पचपनवां गीत ।

दाऊद का मस्खिल नगीनूत पर प्रधान बजनिये के पास ।

१ हे ईश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी बिनती से
२।३ आप को मत छिपा । मेरी ओर सुरत लगा के मेरी सुन बैरी के शब्द के और दुष्टों के अंधेर के कारण मैं दुहाई देके बिलाप कर कर चिल्लाता हों क्योंकि वे मुझ पर अधर्म लगाते
४ हैं और कोप से मुझे घिनाते हैं । मेरा मन मुझ में अति
५ पीडित है और मैं मृत्यु के भय में पड़ा हों । और डरना और थर्थराना मुझ पर आ पड़ा और धड़का ने मुझे ढांपा
६ है । मैं ने कहा हाय कि कपोत के से मेरे पंख होते तो मैं

७ उड़ जाता और चैन पाता। हां मैं तो दूर भ्रमण कर जाता
८ और जंगल में रहता सीलाह। मैं आंधी और झक्कड़ से झट
९ बच निकलता। हे प्रभु उन्हें नाश कर और उनकी जीभ को
बिभाग कर क्योंकि मैं ने नगर में अंधेर और झगड़ा देखा
१० है। रात दिन वे उसकी भीतों पर चलते हैं और बुराई
११ और शोक उसके मध्य में होता रहता है। दुष्टता उसके
मध्य में है छल और कपट उसके सड़कों से जाता नहीं
१२ रहता। बैरी ने मेरी निंदा न किई तब मैं सहलेता और
न मेरा घिनवैया मेरे बिरुद्ध फूला तब तो मैं उसे छिप
१३ रहता। परंतु तू मेरेही पद का जन और मेरा अगुआ
१४ और मेरा चिन्हार। जिसने परामर्श को मिठाया और एक
१५ साथ ईश्वर के मंदिर में गये। मृत्यु उन्हें पकड़े और वे
झट समाधि में उतर पड़ें क्योंकि उनमें और उनके निवास
१६ में दुष्टता है। मैं तो ईश्वर की बिनती करोंगा
१७ और परमेश्वर मुझे बचावेगा। सांझ बिहान और मध्यान्ह
को मैं प्रार्थना करोंगा और चिल्लाओंगा और वुह मेरा
१८ शब्द सुन लेगा। मेरे बिरुद्ध के संग्राम से उसने मेरा प्राण
१९ छुड़ाया है क्योंकि मेरे संग बहुत थे। ईश्वर सुनके उन्हें
दुःख देगा अर्थात् वुह जो सनातन से स्थिर है, सीलाह
क्योंकि उन पर ऊंच नीच नहीं पड़ा इसलिये वे ईश्वर से नहीं
२० डरते। उसने अपने मिलापियों पर हाथ बढ़ाया है उसने
२१ बाचा को अशुद्ध किया। उसका मुंह मखन सा चिकना था
पर मन में संग्राम उसकी बातें तेल से भी कोमल तथापि
२२ नंगी तलवारें। अपना बोझ परमेश्वर पर डाल और वुह
तुझे संभालेगा वुह कभी धर्मी को टलाया जाने न देगा।
२३ पर हे ईश्वर तू उन्हें नाश के गड़हे में उतारेगा हत्यारा
और छली मनुष्य अपने आधे बय ताईं न पहुंचेंगे परंतु मैं
तुझ पर भरोसा रक्खोंगा।

५६ छपनवां गीत ।

दाऊद का मिकताम योनातईलमरीकूकिम पर प्रधान बजनिये के पास जब फलस्तानियों ने गाथ में उसे पकड़ा ।

१ हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मनुष्य मुझे निंगला चाहता २ है वुह लड़ाई कर कर प्रति दिन मुझे सताता है। मेरे अगोरक मुझे निंगलते हैं क्योंकि वे अति महान बझत हैं जो ३ मुझसे लड़ते हैं। जब मैं डरता हों तो मैं तुझ पर भरोसा ४ करोंगा। ईश्वर में मैं उसके बचन की स्तुति करोंगा मेरा भरोसा ईश्वर पर है जो कुछ मनुष्य मुझसे कर सक्ता है मैं उससे ५ न डरोंगा। वे प्रति दिन मेरी बातों को पकड़ते हैं और सदा ६ मेरी बुराई की चिंता करते हैं। वे एकट्ठे होके ढूके में रहते हैं और मेरे डग को चीन्ह रखते हैं वे मेरे प्राण की घात में ७ लगे हैं। क्या वे अधर्म से बच निकलेंगे? हे ईश्वर अपने क्रोध ८ से उन लोगों को गिरा दे। तू मेरे भरमना को गिनता है तू मेरे आंसुओं को अपने पात्र में रख छोड़ क्या वे यह तेरी ९ पुस्तक में नहीं?। जब मैं बिनती करों तो मेरे बैरी हटजायेंगे १० मैं यह जानता हों कि ईश्वर मेरे साथ है। ईश्वर में मैं उसके बचन की स्तुति करोंगा हां मैं परमेश्वर में उसके बचन की स्तुति ११ करोंगा। मैंने ईश्वर पर भरोसा रक्खा है जो कुछ मनुष्य १२ मुझसे कर सक्ता है मैं उससे न डरोंगा। हे ईश्वर तेरी मनौती १३ मुझ पर हैं मैं तेरी स्तुति करोंगा। क्योंकि तूने मेरे प्राण को मृत्यु से बचाया है और क्या तू मेरे पांव को गिरनेसे न संभालेगा? जिसतें मैं ईश्वर के आगे जीवन के उंजियाले में फिरों।

५७ सतावनवां गीत ।

दाऊद का मिकताम अलतसकित जब वुह कंदला में साऊल से भागा प्रधान बजनिये के पास ।

१ मुझ पर दया कर हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मेरा प्राण तेरा भरोसा करता है हां जब लों कि संकष्ट टल न जाय
२ मैं तेरे डैनों की छाया में शरण लेउंगा । मैं अति महान ईश्वर को पुकारोंगा अर्थात् ईश्वर को जो मेरा उपकार
३ करता है । वुह स्वर्ग से भेजेगा और मुझे उनकी निंदा से जो मुझे निंगला चाहते हैं बचावेगा, सीलाह ईश्वर अपनी
४ कृपा और अपनी सचाई को भेजेगा । मेरा प्राण सिंहों में है मैं उनके मध्य में लेटा हों जो आग पर हैं अर्थात् मनुष्य के पुत्रों में जिनके दांत बरछियां और बाण और जिनकी जीभ चोखी
५ तलवार है । हे ईश्वर तू स्वर्गों से ऊंचे महान हो और सारी
६ भूमि पर तेरा ऐश्वर्य हो । उन्हों ने मेरे डग के लिये जाल बिछाया है मेरा प्राण झुका ऊआ है उन्हों ने मेरे आगे गड़हा
७ खोदा है जिसमें वे आप गिरे हैं, सीलाह । मेरा मन सिद्ध है हे ईश्वर मेरा मन सिद्ध है मैं गाओंगा मैं स्तुति करोंगा ।
८ हे मेरे विभव जाग हे बीणा और मुचंग जाग मैं तड़के उठोंगा ।
९ हे प्रभु मैं लोगों के मध्य में तेरी स्तुति करोंगा मैं जातिगणों के
१० बीच तेरा गान करोंगा । क्योंकि तेरी दया स्वर्ग लों और तेरी
११ सचाई मेघ लों बड़ी है । हे ईश्वर तू स्वर्गों से ऊंचे महान हो सारी पृथिवी से ऊंचे तेरा ऐश्वर्य हो ।

५८ आठावनवां गीत ।

दाऊद का मिकताम अलतसकित प्रधान बजनिये के पास ।

१ हे मंडली तुम निश्चय धर्म की बातें बोलती हो हे मनुष्य के

२ पुछो क्या तुम खरा बिचार करते हो? । हां तुम मन से दुष्टता करते हो तुम अपने हाथों के अंधेर को पृथिवी पर
३ तौलते हो। कोख से दुष्ट फिर गये वे उदर से भटक के झूठ
४ बोलते हैं। उनका बिष सर्प कासा बिष है वे उस बहिरे
५ नाग की नाईं हैं जो अपने कान मूंदता है। और मदारी का शब्द नहीं सुनता यद्यपि वुह अत्यंत मोह न मंत्र करे।
६ हे ईश्वर उनके दांत उनके मुंह में तोड़ हे परमेश्वर युवा
७ सिंह की दाढें तोड़ डाल। उन्हें नित के बहते पानी की नाईं पिघला जब वुह बाण को पनच में जोड़ता है तो उन्हें टुकड़ा
८ टुकड़ा कर। वे घोंगे की नाईं गलजावें वे स्त्री के गर्भपात के
९ समान सूर्य को न देखें। उस्से आगे कि उनका हांडी कांटों से गरम हो वुह बौंडर की नाईं उन्हें जीते जी क्रोध
१० से उड़ा देगा। प्रति फल को देखतेही धर्मी आनन्दित
११ होगा वुह दुष्ट के लोहू से अपने चरण धोवेगा। ऐसा कि मनुष्य कहेगा कि निश्चय धर्मी के लिये प्रतिफल है निःसंदेह एक ईश्वर है जो पृथिवी का न्याय करता है।

५९ उनसठवां गीत ।

जब साऊल ने भेज के उसे घात करने को घर की चौकसी किई दाऊद का अलतश्चित मिकताम प्रधान बजनिये के पास।

१ हे मेरे ईश्वर मेरे बैरियों से मुझे छुड़ा जो मेरे बिरोध में
२ उठे हैं उनसे मुझे उभाड़। मुझे कुकर्मियों से छुड़ा और
३ हत्यारों से रक्षा कर। क्योंकि देख वे मेरे प्राण के घात में लगे हैं पराक्रमी मेरे बिरोध में एकट्ठे ऊए हैं हे परमेश्वर
४ मेरे कुछ पाप और अपराध के लिये नहीं। वे निर्दोष पर दौड़ के आप को लैस करते हैं मेरी सहाय के लिये जाग
५ और देख। सो हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर इसराईल

के ईश्वर उठ के सारे अन्यदेशियों को पलटा दे किसी
६ दुष्ट अपराधियों पर दया मत कर, सीलाह । वे सांझ
को फिर आते हैं वे कुत्ते की नाईं भूंकते हैं और नगर की
७ चारो ओर फिरते हैं। देख वे अपने मुंह से डकारते हैं
८ और उनके होंठों में तलवारें हैं क्योंकि कौन सुनता है। पर
तू हे परमेश्वर उन पर हंसेगा तू सारे अन्यदेशियों को ठट्ठों
९ में उड़ावेगा । उसके बल के कारण मैं तेरी बाट जोहोंगा
१० क्योंकि ईश्वर मेरा ऊंचा स्थान है । मेरी दया का ईश्वर
मेरे आगे होगा ईश्वर मुझे मेरे बैरियों पर अपनी इच्छा
११ दिखावेगा । हे प्रभु हमारी ढाल उन्हें घात मत कर नहो कि
मेरे लोग भूल जायें उन्हें अपने पराक्रम से छिन्न भिन्न कर और
१२ गिरादे । उनके मुंह के पाप और होंठों की बात के लिये
और झूठ और साप कहने के लिये उन्हें उनके अहंकार में
१३ पकड़वा । क्रोध से उन्हें नाश कर जिसतें न रहें और उन्हें
जना कि ईश्वर याक़ूब में पृथिवी के अंत्य लों राज्य करता है,
१४ सीलाह । और सांझ को उन्हें फिरा और उन्हें कुत्ते की
१५ नाईं भुका और नगर की चारो ओर फिरा । उन्हें खाने के
१६ लिये भमा और जो तृप्त न होवें तो उन्हें चिलवा। परन्तु
मैं तो तेरे पराक्रम का गान करोंगा हां मैं बिहान को पुकार
पुकार तेरी दया के गीत गाऊंगा क्योंकि मेरी बिपत्ति के दिन
१७ तू मेरा बचाव और शरण है । हे मेरे बल मैं तेरी स्तुति
करोंगा क्योंकि ईश्वर मेरा बचाव और मेरी दया का ईश्वर है।

६० साठवां गीत ।

दाऊद का मिकताम शुशानिदूत पर प्रधान बजनिये के पास उपदेश करने के लिये जब उसने आरामनहराईम से और आराम सोबा से झगड़ा जब जोआब ने लौट के लोन की तराई में बारह सहस्र अदूमियों को मारा ।

१ हे ईश्वर तू ने हमें त्यागा है तू ने हमें चूर किया तू उदास ऊआ
२ है हाय हमारी ओर लौट। तू ने एथिवी को कंपाया है तू ने उसे तोड़ा है उसके दरारों को सुधार क्योंकि वुह हिलती है।
३ तू ने अपने लोगों को कठोरता दिखलाई है तू ने हमें आश्चर्य की
४ मदिरा पिलाई है। तू ने अपने डरवैयों को एक ध्वजा दिई है
५ कि वुह सत्य के लिये फैलाई जाय, सीलाह। जिसतें तेरा प्रिय बच जावे तू अपने दहिने हाथ से बचाले और मेरी सुन।
६ ईश्वर ने अपने पवित्रता में कहा है कि मैं आनन्दित होंगा मैं श्क़ीम को विभाग करोंगा और सकूत की तराई को नापोंगा।
७ जलआद मेरा है और मनस्सा मेरा अफ़राईम मेरे सिर का बल
८ है यहूदा मेरा व्यवस्थादायक है। मोआब मेरे धोने का पात्र है मैं अदूम पर जूता चलाऊंगा फलस्तिया तू मुझ पर
९ जय जय कर। दृढ़ नगर में मुझे कौन ले जायगा? अदूम लों
१० मुझे कौन पऊंचावेगा?। हे ईश्वर तू ने जो हमें त्यागा क्या तू यह न करेगा? हे ईश्वर क्या तू हमारी सेनाओं के संग न
११ चलेगा?। दुःख में हमारी सहाय कर क्योंकि मनुष्य का बचाव
१२ वृथा है। ईश्वर के द्वारा से हम शूरता करेंगे क्योंकि वही हमारे बैरियों को लताड़ेगा।

६१ एकसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के पास नगिनः दाऊद का गीत।

१ हे ईश्वर मेरा चिल्लाना सुन और मेरी प्रार्थना पर सुरत
२ लगा। जब मेरा मन दबाऊआ है तो मैं एथिवी के अंत्य से तुझी को पुकारोंगा तू मुझे उस पहाड़ ताईं पऊंचा जो मुझसे
३ ऊंचा है। क्योंकि तू मेरे लिये एक आड़ ऊआ है और बैरी से
४ एक दृढ़ गढ़। मैं तेरे तंबू में सदा रहा करोंगा मैं तेरे पंख के
५ आड़ में शरण लेउंगा, सीलाह। हे ईश्वर तू ने मेरी मनौतियों को सुना है तू ने अपने नाम के डरवैयों का अधिकार मुझे

६ दिया है। तू राजा के दिनों में दिन बढ़ावेगा और उसके
७ बरसों में पीढ़ी से पीढ़ी की नाईं। वुह ईश्वर के आगे सदा
बना रहेगा तू अपनी दया और सत्य से उसको रक्षा कर।
८ सो मैं सदा तेरे नाम की स्तुति करोंगा जिसतें प्रति दिन अपनी
मनौती पूरी करों।

६२ बासठवां गीत।

प्रधान बजनिये यदूथून को दाऊद का गीत।

१ मेरा प्राण केवल ईश्वर की बाट जोहता है मेरी मुक्ति उसे
२ है। वही एकेला मेरा चटान और मेरी मुक्ति है और मेरा
३ ऊंचा स्थान मैं टलाया न जाऊंगा। तुम कब लों एक मनुष्य
के बिरोध में बुरी चिंता करोगे तुम सब के सब मारे जाओगे
और झुकी ऊई भीत और डगमाते बाड़े की नाईं होओगे।
४ वे केवल उसके महत्व से नीचे गिराने का परामर्ष करते हैं वे
झूठ से आनन्दित होते हैं वे अपने मुंह से आशीष देते हैं
५ परन्तु मन से स्राप, सीलाह। हे मेरे प्राण तू केवल ईश्वर
६ की बाट जोह क्योंकि मेरी आशा उसी से है। वही अकेला
मेरा चटान और मेरी मुक्ति और मेरा बचाव है सो मैं
७ टलाया न जाऊंगा। मेरी मुक्ति और मेरा बिभव ईश्वर
८ में है मेरे बल का चटान और मेरा शरण ईश्वर है। सदा
उसपर भरोसा रक्खो हे लोगो अपने अंतःकरण उसके
आगे उंडेलो क्योंकि ईश्वर हमारे लिये शरण है, सीलाह।
९ निश्चय तुच्छ लोग वृथा और महान मनुष्य झूठे हैं तुला में
१० धरने से वे नास्ति से भी छोटे हैं। अंधेर पर भरोसा न करो
और बटमारी से न फूलो जो धन बढ़े तो उस पर मन न
११ लगाओ। ईश्वर ने एक बार कहा मैं ने दोबार यह सुना है
१२ कि पराक्रम ईश्वर का है। और दया भी तुझी से है हे ईश्वर
क्योंकि तू हर मनुष्य को उसके कार्य्य के समान पलटा देता है।

६३ तिरसठवां गीत ।

दाऊद का गीत जब वुह यहूदा के बन में था ।

१ हे ईश्वर तू मेरा ईश्वर है मैं तड़के तुझे ढूंढोंगा मेरा प्राण तेरे लिये प्यासा है और मेरा शरीर थके और बिन जल के २ देश में तेरे लिये लालसा करता है। जिसतें तेरे पराक्रम और तेरे बिभव को देखे जैसा कि मैं ने तुझे धर्म धाम में देखा ३ है। इस लिये कि तेरा कोमल प्रेम जीवन से भला है मेरे ४ होंठ तेरी स्तुति करेंगे। अपने जीवन भर तेरी स्तुति करोंगा ५ और तेरा नाम ले ले अपने हाथ उठाऊंगा। मेरा प्राण ऐसा तृप्त होगा जैसा चिकनाई पर चिकनाई से और मेरा मुंह ६ आनंदित होंठों से तेरी स्तुति करेगा। जब कि मैं तुझे अपने बिछौने पर स्मरण करता हों और रात के पहर पहर में ध्यान ७ करता हों। क्योंकि तू मेरा सहायक ऊआ है इसी लिये तेरे ८ पंखों की छाया तले में आनंद करोंगा। मेरा प्राण तेरे पीछे ९ धाया जाता है तेरा दहिना हाथ मुझे संभालता है। परन्तु जो मेरे प्राण को नाश करने के गांहक हैं पृथिवी के नीचे के १० स्थानों में जाते रहेंगे। तलवार से उन्हें भगा वे लोमड़ियों के ११ लिये एक भाग होवेंगे। परन्तु राजा ईश्वर से आनन्दित होगा हर एक मनुष्य जो उसकी किरिया खाता है बड़ाई करेगा परन्तु झूठों का मुंह बंद किया जायगा।

६४ चौंसठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत ।

१ हे ईश्वर मेरी प्रार्थना का शब्द सुन और बैरी के डर से मेरा २ प्राण बचा। दुष्टों के गुप्त मंत्र और कुकर्मियों के ऊल्लर से मुझे ३ छिपा। जो अपनी जीभ को तलवार की नाईं चोखी करते हैं ४ और कड़वी बातों के बाण चलाते हैं। जिसतें छिप के सिद्ध

५ को मारें वे अचानक उसे मारते हैं और नहीं डरते। वे बुरी बोली से आप को उभाड़ते हैं वे गुप्त फंदा छिपाने का
६ परामर्श करते हैं और कहते हैं कि हमें कौन देखेगा?। वे अधर्म को खोज के निकालते हैं वे खोज से खोज करते हैं उनमें
७ से हर एक का मन और अंतर गहिरा है। परन्तु ईश्वर उन
८ पर बाण चलावेगा वे अचानक घायल हो जायेंगे। सो वे
९ अपनी जीभ अपनेही पर लावेंगे उनके देखवैये भागेंगे। और सारे मनुष्य डरेंगे और ईश्वर के कार्य्य को बर्णन करेंगे क्योंकि
१० वे उसके कार्य्यों को बुद्धि से समझेंगे। धर्मी जन परमेश्वर में आनन्दित होंगे और उस पर भरोसा करेंगे और सारे खरे अंतःकरण स्तुति करेंगे।

६५ पैंसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गान और गीत।

१ हे ईश्वर सैहून में तेरे लिये स्तुति ठहरती है और तेरे लिये
२ मनौती पूरी किई जायगी। हे प्रार्थना के श्रोता तुझ पास
३ सारे शरीर आवेंगे। अधर्म की बातें मुझ पर प्रबल होती
४ हैं हमारे अपराधों को तूही पावन करेगा। जिसे तू भावता है और अपने पास पहुंचवाता है जिसतें वुह तेरे आंगनों में रहे सो धन्य है हम तेरे घर अर्थात् तेरे पवित्र मंदिर
५ के कुशल से तृप्त होंगे। भयंकर वस्तुन से तू धर्म में से उत्तर देगा हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर पृथिवी के सारे सिवानों का और उनका भी जो दूर समुद्र के मध्य में हैं भरोसा है।
६ जो पराक्रम से कटि बांध के अपने सामर्थ्य से पहाड़ों को
७ दृढ़ करता है। जो समुद्रों के ऊछलर को और उनकी लहरों
८ के हौरा को और लोगों को धूम को स्थिर करता है। वे भी जो पृथिवी के खूंटों में बसते हैं तेरे चिन्हों से डरते हैं तू सांझ

बिहान के निकासों को आनंद और प्रसन्न करता है।
९ तू सींच के पृथिवी से भेंट करता है तू उसे ईश्वर की नदी से जो जल से परिपूर्ण है अति धनी करता है जब तू ने उसके लिये यों सिद्ध किया है तू उनके लिये अन्न उत्पन्न करता है।
१० तू उसकी रिघारियों को बज़ताई से सींचता है तू उसके ढेलों को भिंगाता है तू मेहों से उसे गलाता है तू उसके
११ कोंपलाने पर आशीष देता है। तू अपनी भलाई से बरस को मुकुट पहिनाता है और तेरे पथों से चिकनाई टपकती है।
१२ वे बन की चराई पर टपकती हैं छोटी पहाड़ियां चारो
१३ ओर आनन्द से गथी हैं। चराई ने झुंडों का पहिरावा पहिना है और तराई भी अन्न से छपी हैं वे आनन्द से उछलती कूदती हैं और पहचाड़ती हैं।

६६ छयासठवां गीत।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गान और गीत।

१ हे सारी पृथिवी आनन्द से चिल्ला के ईश्वर का नाम ले।
२ पुकार के उसके नाम की प्रतिष्ठा गाओ और उसके बिभव को
३ स्तुति करो। ईश्वर से कहो कि तेरे कार्य्य कैसाही भयंकर हैं तेरे
४ पराक्रम की बज़ताई से तेरे सारे बैरी तुझे दबेंगे। सारी पृथिवी तुझे दंडवत करेगी और तेरा गान करेगी वे तेरे
५ नाम का गान करेंगी, सीलाह। आओ ईश्वर के कार्य्य को देखो
६ कि मनुष्य के पुत्र के विषय में उसके कार्य्य भयंकर हैं। उसने समुद्र को सुखा दिया वे बाढ़ में से पांव पांव चले गये वहां हम
७ उसमें आनन्दित ज़ए। वुह अपने पराक्रम से सदा राज्य करता है उसकी आंखें देशियों को देखती हैं जिसतें दंगइत अपने
८ को न उभाड़े, सीलाह। हे मनुष्यो हमारे ईश्वर का धन्यबाद
९ करो और उसकी स्तुति का शब्द सुनाओ। जो हमारे प्राण को जीता रखता है और हमारे पांव को टलने नहीं देता।

१० हे ईश्वर तूने हमें परखा है तूने हम को यों जांचा है
११ जैसी चांदी जांची जाती है। तू हमें जाल में लाया है तूने
१२ हमारी कटि पर दुःख रक्खा है। तूने मनुष्यों को हमारे सिरों पर चढ़ाया है हम आग और पानी में से चले
१३ गये पर तूने हमें सींचे ऊर में पऊंचाया है। मैं होम की भेंट लेके तेरे मन्दिर में जाओंगा मैं तेरे लिये अपनी मनौती
१४ पूरी करोंगा। विपत्ति के समय में जो मैं ने अपने होठों से
१५ निकाला है और अपने मुंह से माना है। मैं पुष्ट पशु के होम का बलि मेढ़ों के सुगंध समेत तेरे लिये चढ़ाओंगा मैं बछड़े
१६ और बकरे चढ़ाओंगा, सीलाह। हे लोगो जो ईश्वर से डरते हो तुम सब आओ सुनो और मैं वर्णन करोंगा कि उसने मेरे
१७ प्राण से क्या क्या कुछ किया। मैं अपने मुंह से उस पास
१८ चिल्लाया वुह मेरी जीभ से बढ़ाया गया। जो मैं अपने
१९ अंतःकरण में अधर्म ठानोंगा तो परमेश्वर न सुनेगा। पर ईश्वर ने तो निश्चय सुना वुह मेरी प्रार्थना के शब्द की ओर
२० झुका है। धन्य हैं ईश्वर जिसने मेरी प्रार्थना को और अपनी दया को मुझ से दूर न किया।

६७ सतसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के पास नगीनूत पर गान अथवा गीत।

१ ईश्वर हम पर दयाल होवे और हमें आशीष देवे और
२ अपने रूप को हम पर चमकावे, सीलाह। जिसतें तेरा मार्ग पृथिवी में और तेरा त्राण सारे जातिगणों में जाना जाय।
३ लोग तेरी स्तुति करें हे ईश्वर सारे लोग तेरी स्तुति करें। जातिगण आनंदित होवें और आनन्द के मारे गावें क्योंकि तू धर्म से लोगों का बिचार करेगा और पृथिवी के जातिगणों
५ की अगुआई करेगा, सीलाह। हे ईश्वर लोग तेरी स्तुति करें

६ सारे लोग तेरी स्तुति करें। तब पृथिवी अपनी बढ़ती देगी
७ ईश्वरही हमारा ईश्वर हमें आशीष देगा। ईश्वर हमें आशीष देगा और पृथिवी के सारे खूंट उसे डरेंगे ।

६८ अठसठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गान अथवा गीत ।

१ ईश्वर उठे उसके बैरी छिन्न भिन्न होवें जो उसे घिनातेभी हैं
२ सो उसके मुंह के आगे से भागें । जैसे धूआं हांका जाता है तैसा उन्हें हांक दे जैसे मोम आग के आगे पिघलता है तैसा
३ दुष्ट ईश्वर के आगे नाश होवें। परंतु धर्मी आनंदित होवें और ईश्वर के सन्मुख आनन्द करें हां आनन्द के मारे फूले
४ न समावें। ईश्वर का गान करो उसके नाम की स्तुति गाओ जो स्वर्गों पर चढ़ा है उसका जाह नाम लेले उसकी महिमा
५ करो और उसके आगे आनन्द करो। अनाथों का पिता
६ और रांड़ों का विचारी अपने धर्मधाम में ईश्वर है। ईश्वर एकेले को गृहस्थ बनाता है जो सीकरों से बंधे ऊओं को वही
७ छुड़ाता है परंतु दंगइत भुराहट में रहते हैं। हे ईश्वर जब तू अपने लोगों के आगे आगे निकला जब तू बन में से गया,
८ सीलाह। पृथिवी थर्थराई और स्वर्ग भी ईश्वर के आगे टपके, सीना भी ईश्वर के आगे जो इसराईल का ईश्वर है टला।
९ हे ईश्वर तू ने बऊताई से बरसा के अपने थके अधिकार को
१० स्थिर किया। तेरी मंडली उसमें रही है हे ईश्वर तू ने अपने
११ अनुग्रह में से कंगालों के लिये सिद्ध किया है। परमेश्वर ने आज्ञा
१२ दिई और प्रचारक की सेना बढ़ गई। सेनाओं के राजा भाग
१३ भाग गये और जो घर में रही वुह लूट बांट लिया। यद्यपि तुम हांडियों के मध्य में पड़े हो तथापि तुम चांदी से कपोत के डैने और चोखे सोने से मढ़ेऊए उसके पर की नाईं

१४ होओगे । जब सर्बसामर्थी ने राजाओं को उसके लिये छिन्न
१५ भिन्न किया वुह सलमून के पाले की नाईं श्वेत थी । ईश्वर का
पहाड़ बासान के पहाड़सा है बासान के पहाड़ की नाईं एक
१६ ऊंचा पहाड़ है । हे ऊंचे पहाड़ो तुम क्यों कुदक्का मारते हो?
ईश्वर इस पहाड़ पर रहने चाहता है हां परमेश्वर उसमें
१७ सर्बदा रहेगा । ईश्वर के रथ बीस सहस्र हैं हां सहस्रों पर सहस्र
१८ दूत हैं प्रभु जैसा धर्मधाम सीना में है तैसा उनमें है । तू ऊंचे
पर चढ़ा है तू बंधुआई को बंधुआ में ले गया है तू ने मनुष्यों को
हां दंगैलों के लिये भी दान प्राप्त किया है जिसतें ईश्वर परमेश्वर
१९ उनमें बसे । धन्य प्रभु जो प्रति दिन हम पर अनुग्रह का बोझ
२० धरता है वही हमारा मुक्तिदाता ईश्वर है, सीलाह । हमारा
ईश्वर मुक्ति का ईश्वर है और मृत्यु से निकास प्रभु ईश्वरहीं से है ।
२१ परन्तु ईश्वर अपने बैरियों के सिर और उन मनुष्यों की खोपड़ी के
बालों को, जो अब भी अपराध करता जाता है चूर कर देगा ।
२२ प्रभु ने कहा कि मैं बासान से अपने लोगों को फेर लाओंगा
२३ हां मैं समुद्र के गहिराओं में से फेर लाऊंगा । जिसतें तेरा
पांव और तेरे कुत्तों की जीभ तेरे बैरियों के लोहू से लाल होवें ।
२४ हे ईश्वर उन्हें ने तेरी चालें देखीं मेरे ईश्वर मेरे राजा
२५ की चालें धर्मधाम में देखीं । गायक आगे आगे चले बजनिये
पीछे पीछे और कुआंरियां उनमें मृदंग बजाती जातीं थीं ।
२६ मंडलियों में ईश्वर को और तुम जो इसराईल के सोते में से
२७ हो प्रभु को धन्य कहो । छोटा बनियामीन उनका आज्ञाकारी
और यहूदा के अध्यक्ष अपने संगी सहित और जबलून और
२८ नफ़ताली के अध्यक्ष वहां हैं । तेरे ईश्वर ने तेरे बल की आज्ञा
किई है हे ईश्वर जो कार्य्य तू ने हमारे लिये किया है उसे दृढ़
२९ कर । यिरोशलीम के मंदिर के लिये राजा तेरे लिये भेंट
३० लावेंगे । तू नरकट के बनपशु को अर्थात् जातिगणों के बछड़ों
की प्रबल मंडली को जो चांदी के टुकड़ों को लिये हुए उछलती

कूदती है दपट, जो लोग संग्राम से प्रीति रखते हैं उन्हें छिन्न
३१ भिन्न कर। अध्यक्ष मिसर से आवेंगे कोश हाली अपने हाथ
३२ ईश्वर की ओर बढ़ावेंगे। हे पृथिवी के राज्यो ईश्वर का गान
३३ करो और प्रभु की स्तुति गाओ, सीलाह। जो पहिले से स्वर्गों
के स्वर्ग पर चढ़ा है देख वुह अपना शब्द अपना महा शब्द
३४ उच्चारता है। तुम ईश्वर का पराक्रम मानो उसका महात्म्य
३५ इसराईल पर है और उसका बल आकाशों में है। हे ईश्वर तू
अपने धर्मधाम में भयंकर है इसराईल का ईश्वर वुह है जो
बल और सामर्थ्य अपने लोगों को देता है ईश्वर धन्य है।

६९ उनहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये को शुशन्निम पर दाऊद का गीत।

१ हे ईश्वर तू मुझे बचा ले क्योंकि पानी मेरे प्राण लों पहुंचे हैं।
२ मैं गहिरे दलदल में धसा जाता हों जहां खड़ा नहीं रहा
जाता मैं पानियों के गहिराव में पड़ा जहां बाढ़ मेरे ऊपर से
३ जाते हैं। मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया मेरा गला सूख गया अपने
४ ईश्वर की बाट जोहते जोहते मेरी आंखें घट गईं। जो अकारण
मुझसे बैर रखते हैं सो मेरे सिर के बालों से अधिक हैं जो
मुझे नाश किया चाहते हैं और अकारण मेरे बैरी हैं सो
५ बली हैं जो मैं ने नहीं लिया सो मैं ने फेर दिया। हे ईश्वर
तू मेरी मूर्खता को जानता है और मेरी अपराधता तुझ से
६ छिपी नहीं। हे प्रभु सेनाओं के ईश्वर जो तेरी बाट जोहते
हैं मेरे कारण उन्हें लज्जित न होने दे हे इसराईल के ईश्वर
७ तेरे खोजी मेरे कारण हदियाने न पावें। क्योंकि तेरे लिये
८ मैं ने निंदा सही और लाज ने मेरे मुंह को ढांपा। मैं
अपने भाइयों में परदेशी बना हों और अपनी माता के
९ बालकों में पराया ऊआ हों। क्योंकि तेरे घर के ज्वलन ने
मुझे खालिया और तेरे निंदकों की निंदा मुझ पर पड़ी।

१० उपवास कर के मेरे प्राण का रोना मेरी निंदा का कारण ऊआ।
११ मैंने टाट को अपना वस्त्र बनाया और मैं उनका कहावत
१२ ऊआ। फाटक पर के बैठवैये मेरे विरुद्ध कहते हैं और मैं
१३ पिअक्कड़ का गान ऊआ। परंतु हे परमेश्वर मैं जो हों मेरी
प्रार्थना तेर आगे सु समय में है हे ईश्वर अपनी दया की
१४ बज्ञताई से अपनी मुक्ति की सत्यता से मेरी सुन ले। मुझे
दल दल से निकाल और मुझे फसने न दे मेरे बैरियों से
१५ और गहिरे पानियों में से मुझे छुड़ा। पानी की बाढ़ मुझ
पर बढ़ने न पावे और गहिराव मुझे निंगलने न पावे गड़हा
१६ मुझे अपने मुंह में बंद करने न पावे। हे परमेश्वर मेरी
सुन ले क्योंकि तेरा कोमल प्रेम भला है अपनी कोमल दया की
१७ बज्ञताई के समान मेरी ओर दृष्टि कर। अपने सेवक से अपना
मुंह न छिपा क्योंकि मैं विपत्ति में हों मेरी सुन्ने को चटक कर।
१८ मेरे प्राण के पास बढ़ के उसे बचा मेरे बैरी के कारण मुझे
१९ बचा। तू ने मेरी निन्दा और मेरी लज्जा और मेरे अनादर
२० को जाना है मेरे सारे बैरी तेरे आगे हैं। निंदा ने मेरा
मन तोड़ा है मैं उदासी से भरा हों मैं ने अपने संगी विलापी
की बाट जोही परन्तु कोई न था और शांतिदायकों के लिये और
२१ न पाया। उन्हों ने मुझे खाने को संती पित्त दिया और पियास
२२ में उन्हों ने मुझे पीने को सिरका दिया। ऐसा कर कि
उनका मंच उनके लिये फंदा हो और उनकी भलाई उनके लिये
२३ जाल होवे। उनकी आंखें अंधियारी होवें जिसतें वे न देखें और
२४ उनकी कटि को नित कंपा। अपनी जलजलाहट उन पर उंडेल
२५ और तेरा कोपाग्नि उन पर पड़े। उनका भवन उजड़ जाय और
२६ उनके तंबूओं में बसवैया न होवे। क्योंकि वे तेरे मारे ऊए को
सताते हैं और तेरे घायल किये ऊओं के शोक की बातें करते हैं
२७ उनके अधर्म पर अधर्म मिला उन्हें अपने धर्म में आने मत दे।
२८ उन्हें जीवतों की बही से मिटा और धर्मियों में लिखे जाने न पावें।

२९ क्योंकि मैं कंगाल और दुःखी हों हे ईश्वर तेरी मुक्ति मुझे
३० उभाड़े। मैं गीत में ईश्वर के नाम की स्तुति करोंगा और
३१ धन्यवाद से उसकी महिमा करोंगा। परमेश्वर को बैल और
बछड़े से, जो सींग और खुर रखते हैं यह अधिक प्रसन्न होगा।
३२ दीन लोग देखके आनन्दित होंगे और तुम जो ईश्वर के
३३ खोजी हो तुम्हारा मन जीयेगा। क्योंकि परमेश्वर कंगालों की
३४ सुनता है और अपने बंधुओं की निन्दा नहीं करता। आकाश
और पृथिवी और समुद्र और हर एक वस्तु जो उनमें रेंगती
३५ है उसकी स्तुति करें। क्योंकि ईश्वर सैहून को बचावेगा और
यहूदा के नगरों को बनावेगा जिसतें वे उनमें बसें और
३६ अधिकार में रक्खें। उसके सेवकों के वंश भी उसके अधिकारी
होंगे और जो उसके नाम के प्रेमी हैं सो उसमें रहा करेंगे।

७० सत्तरहवां गीत।

चेत करने के लिये प्रधान बजनिये के पास दाऊद
का गीत।

१ हे ईश्वर मुझे छुड़ाने को चटक कर हे परमेश्वर मेरी सहाय
२ के लिये चटक कर। मेरे प्राण के गांहक को लज्जित कर और
हदिया, जो मेरी बुराई चाहते हैं उन्हें उलटा फिरा दे उन्हें
३ हदिया। जो कहते हैं अहा हा उनको लाज के पलटा के लिये
४ उन्हें उलटा फिरा। जो तेरे खोजी हैं वे सब तुझ से आनन्दित
और मगन होवें ऐसा कि जो तेरी मुक्ति के प्रेमी हैं सो
५ सदा कहा करें कि ईश्वर की महिमा होय। परन्तु मैं कंगाल
और दीन हों हे ईश्वर हाली मेरे पास आ तूही मेरा सहायक
और मेरा मुक्तिदाता हे परमेश्वर विलम्ब न कर।

७१ एकहत्तरवां गीत।

१ हे परमेश्वर मेरा भरोसा तुझ पर है मुझे हदियाजाने न दे।

२ अपने धर्म में निस्तार करके मुझे छुड़ा मेरी ओर कान झुका
३ और मुझे बचा। तू मेरे निवास का पर्वत हो जहां में नित्य
जाया करों तूही ने मेरी मुक्ति की आज्ञा किई है क्योंकि तू मेरा
४ पहाड़ और मेरा गढ़ है। हे मेरे ईश्वर दुष्ट के हाथ से और
५ अधर्मी और क्रूर के हाथ से मुझे छुड़ा। क्योंकि हे प्रभु ईश्वर
६ तू मेरी आशा और लड़काई से मेरा भरोसा है। कोख में
से मैं तुझ्से थमा ऊआ हों मेरी माता के उदर से तू ने मुझे
७ निकाला मैं नित तेरी स्तुति करोंगा। मैं बऊतों के लिये एक
८ अचंभा हों परन्तु तू मेरा दृढ़ शरण है। मेरा मुंह अपनी
९ स्तुति और प्रतिष्ठा से दिन भर भरा रख। बुढ़ापे में मुझे दूर
१० न कर मेरी निर्बलता के समय में मुझे मत त्याग। क्योंकि मेरे
बैरी मेरे बिरोध में कहते हैं और वे जो मेरे प्राण के घात में
११ हैं युक्ति बांधते हैं। और आपुस में कहते हैं कि ईश्वर ने उसे
त्यागा है सो उसे पकड़ के सताओ क्योंकि उसका छुड़वैया
१२ कोई नहीं। हे ईश्वर मुझ से दूर मत हो हे मेरे ईश्वर
१३ झट मेरी सहाय कर। जो मेरे प्राण के बैरी हैं सो हदिया
के नष्ट होवें जो मेरी बुराई चाहते हैं सो निन्दा और
१४ अनादर से ढांपे जावें। पर मैं नित तेरी आशा रक्खोंगा
१५ और तेरी स्तुति किये जाउंगा। मेरा मुंह दिन भर
तेरा धर्म और तेरी मुक्ति बर्णन किया करेगा क्योंकि मैं उनकी
१६ गिनती नहीं जानता। मैं ईश्वर परमेश्वर के पराक्रम से
१७ चलोंगा मैं केवल तेरेही धर्म की चर्चा करोंगा। कि हे ईश्वर
तू ने मुझे लड़काई से सिखाया है और अब लों मैं तेरी आश्चर्य
१८ क्रिया बर्णन किया करता हों। अब भी बुढ़ापे और पके बाल
लों हे ईश्वर मुझे मत त्याग जब लों कि मैं तेरे बल इस पीढ़ी
१९ पर और तेरे पराक्रम को हर एक अवैया पर प्रगट करों। हे
ईश्वर तेरा धर्म अति ऊंचा है जिसने बड़े बड़े काम किये हे
२० ईश्वर तेरे तुल्य कौन है?। तू ने मुझे बड़ी बड़ी बिपत्ति

दिखलाई हैं तू मुझे फेर जिलावेगा और पृथिवी के गहिरायों
२१ से मुझे फेर उठालेगा। तू मेरी महिमा बढ़ावेगा और मुझे
२२ चौदिशा से शांति देगा। हे मेरे ईश्वर मैं भी बीणा बजा बजा
के तेरी स्तुति करोंगा हे इसराईल के धर्ममय मैं मुरचंग से
२३ तेरा गान करोंगा। जब मैं तेरे आगे गाओंगा तब मेरे
होंठ और मेरे प्राण जिसे तू ने छुड़ाया अत्यंत आनन्दित
२४ होंगे। मेरी जीभ भी दिन भर तेरे धर्म के विषय में कहती
रहेगी क्योंकि जो मेरी बुराई चाहते हैं सो हदिया गये और
लज्जित हुए।

७२ बहत्तरवां गीत।

सुलेमान के लिये।

१ हे ईश्वर राजा को अपना बिचार और राज पुत्र को अपना
२ धर्म दे। वुह तेरे लोगों का धर्म से और तेरे कंगालों का
३ न्याय से बिचार करेगा। पहाड़ तेरे लोगों के लिये कुशल
४ और पहाड़ियां धर्म पहुंचावेंगी। वुह कंगाल लोगों का न्याय
करेगा और दीन के संतानों को बचावेगा और अंधेरियों को
५ टुकड़ा टुकड़ा करेगा। जबलों सूर्य्य और चंद्रमा ठहरेंगे पीढ़ियां
६ तुझसे डरा करेंगी। मेंह की नाईं वुह काटी हुई घास पर
७ झड़ी की नाईं जो पृथिवी को सींचती है उतरेगा। उसके दिनों
में धर्मी लहलहावेंगे और जबलों चांद रहे बहुत कुशल होगा।
८ समुद्र से समुद्र ताईं और नदी से पृथिवी के अंत्य ताईं वुह
९ प्रभुता करेगा। जो बनवासी हैं सो उसके आगे झुकेंगे और
१० उसके बैरी माटी चाटेंगे। तरशीश और टापुओं के राजा
भेंट लावेंगे और शीबा और सीबा के राजा भेंट चढ़ावेंगे।
११ हां सारे राजा उसके आगे दंडवत करेंगे सारे देश गण उसकी
१२ सेवा करेंगे। क्योंकि वुह रोने में दीन को और कंगाल को भी
१३ और जिनका कोई सहायक नहीं बचावेगा। वुह दरिद्र और

दीनहीन लोगों को छोड़ेगा और अनाथों का प्राण बचावेगा ।
१४ वुह उनके प्राण को छल और अंधेर से छुड़ावेगा उनका लहू
१५ उसकी दृष्टि में बहुमूल्य होगा । वुह जीयेगा और शीबा का
सोना उसे दिया जायगा सदा उसकी प्रार्थना होगी प्रति दिन
१६ उसकी स्तुति किई जायगी । उस समय एक मुट्ठी भर अनाज
भूमि में अथवा पहाड़ों की चोटियों पर गिरेंगे उनके
फल लबनान की नाईं भर भरावेंगे और नगर के मनुष्य
१७ पृथिवी के घास की नाईं लहलहावेंगे । उसका नाम सदा
रहेगा वुह अपने पिता का नाम चलाने के लिये पुत्र की नाईं
होगा और मनुष्य उसमें आशीष पावेंगे सारे जातिगण उसे
१८ धन्य कहेंगे । ईश्वर परमेश्वर इसराईल का ईश्वर जो एकेला
१९ आश्चर्य्य कार्य्य करता है धन्य है । उसका विभवमय नाम
सदा लों धन्य है सारी पृथिवी उसके ऐश्वर्य से भर पूर होवे
२० आमीन और आमीन । यस्सी के बेटे दाऊद की प्रार्थना
समाप्त है ।

७३ तिहत्तरवां गीत ।

असाफ़ के लिये ।

१ निश्चय ईश्वर इसराईल के लिये पवित्र अंतःकरणों के लिये
२ क्याही भला है । परन्तु मैं जो हां मेरे पांव टलही गये और
३ मेरे डग रपटही गये । क्योंकि जब मैं ने दुष्टों की बढ़ती देखी
४ मैं मूढ़ों पर डाह किया । क्योंकि उनके मृत्यु में कुछ पीड़ा नहीं
५ परन्तु उनका बल पुष्ट है । वे और मनुष्य की नाईं दुःख में
६ नहीं और न मनुष्यों की नाईं उन पर विपत्ति पड़ती । इस
लिये घमंड उन्हें सीकर की नाईं घेरता है और अंधेर उन्हें
७ वस्त्र की नाईं छिपाता है । उनकी आंखें भी चिकनाई से उभरी
८ ऊई हैं और वे अपनी चिंता से अधिक पाते हैं । वे सड़े हैं
और दुष्टाई से अंधेर की बातें कहते हैं वे घमंड से बोलते हैं ।

९ वे अपने मुंह स्वर्गों के बिरुद्ध रखते हैं और उनकी जीभ
१० पृथिवी के सर्वत्र फिरती है। इस कारण उसके लोग इधर फिर
११ आते हैं और भर पूर जल उन्हें निचोड़े जाते हैं। वे कहते हैं
कि ईश्वर क्योंकर जानता है? और क्या अतिमहान में कुछ ज्ञान
१२ है?। देखो ये अधर्मी हैं जो संसार में फलते हैं उनका धन
१३ बढ़ता जाता है। निश्चय मैं ने अपने मन को वृथा शुद्ध किया
१४ है और निर्मलता में अपने हाथ धोये। क्योंकि दिन भर मैं
दुःखी ऊआ हों और हर विहान को मैं ताड़ा जाताथा।
१५ जो मैं कहों कि यों वर्णन करोंगा तो देख मैं तेरे बालकों की
१६ पीढ़ी को उदास करता। जब मैं ने इसका भेद जान्ने चाहा
१७ वुह मेरे लिये अति कष्ट ऊआ। पर जब मैं ने ईश्वर के
धर्मधाम में प्रवेश किया तब मैं ने उनका अंत समझा।
१८ निश्चय तू ने उन्हें फिसलने के स्थानों में रखा और तू उन्हें
१९ नाश में डालता है। वे पलमात्र में क्याही उजड़ गये और
२० वे भय से सर्वथा मिट गये हैं। स्वप्न की नाईं जब कोई जाग
उठे सो हे प्रभु जब तू जागेगा तू उनकी मूर्त्ति की निंदा करेगा।
२१।२२ यों मेरा मन व्याकुल और मेरा अंतःकरण पीडित था। मैं
२३ ऐसा मूर्ख और अज्ञान था और तेरे आगे पशु था। तथापि
मैं सर्वदा तेरेही संग हों और तू ने मेरे दहिने हाथ को धरा
२४ है। तू अपने मंत्र से मेरी अगुआई करेगा और उसके
२५ पीछे मुझे बिभव में पऊंचावेगा। स्वर्ग में मेरा कौन है? और
२६ पृथिवी में तेरे तुल्य मेरा वांछित कौन है?। मेरा शरीर और
मेरा मन घटा जाता है पर ईश्वर मेरे मन का बल है और
२७ सदा मेरा भाग है। क्योंकि देखो जो तुझसे दूर हैं सो नष्ट
होंगे जो तुझसे व्यभिचार की ओर फिर गये हैं तू ने उन सभों
२८ को नष्ट किया है। परन्तु ईश्वर के पास बढ़ने को मेरे लिये
भला है मैं ने ईश्वर परमेश्वर पर भरोसा रखा है जिसतें
मैं तेरे सारे कार्यों को वर्णन करों।

७४ चौहत्तरवां गीत ।

उपदेश देने को असाफ़ का गीत ।

१ हे ईश्वर तू ने सर्वदा के लिये हमें क्यों त्यागा है? तेरी चराई
२ की भेड़ों पर तेरी रिस क्यों भड़कती है?। अपनी उस मंडली
को जिसे तू ने आगे से मोल लिया है और अपने अधिकारी
की गोष्ठी को जिसे तू ने छुड़ाया है इस सैहून पहाड़ को जिसमें
३ तू रहा है स्मरण कर। नित के उजाड़ों के लिये अपना लात
४ उठा सारे बैरियों ने धर्मधाम में क्या क्या दुष्टता किई है। तेरी
मंडली के मध्य में तेरे बैरी गर्जते हैं वे चिन्ह के लिये अपना
५ झंड़ा खड़ा करते हैं। घने पेड़ों पर कुल्हाड़ी उठाने के समान
६ मनुष्य कीर्त्तिमान था। पर अब वे उसके खोदे हुए कार्य्य
७ को एक साथ कुल्हाड़ी और हथौड़ियों से तोड़ते हैं। उन्हों
ने तेरे धर्मधाम में आग लगाई है उन्हों ने तेरे नाम के निवास
८ स्थान को भूमि लों अशुद्ध किया है। उन्हों ने अपने मन में कहा
कि आओ उन्हें एक साथ तोड़ देवें उन्हों ने देशों में से ईश्वर
९ के सभा स्थानों को जलादिया है। हम अपना चिन्ह नहीं
देखते हैं कोई भविष्यवक्ता नहीं और हमारे मध्य कोई
१० नहीं जो जाने कि यह कबलों होगा?। हे ईश्वर बैरी कबलों
निन्दा करेगा? क्या बैरी सदा तेरे नाम की अपनिन्दा
११ करेगा?। तू क्यों अपना हाथ अर्थात् दहिना हाथ खींचता
१२ है? कांख से उसे निकाल। क्योंकि ईश्वर मेरा प्राचीन राजा है
१३ जो पृथिवी के मध्य में मुक्ति के कार्य्य करता है। तू ने अपने
पराक्रम से समुद्र को फाडा तू पानियों में अजगरों के सिरों
१४ को कुचलता है। तू घरियाल के सिर को टुकड़ा टुकड़ा करता
है और उन्हें बनवासियों के भोजन के लिये दिया है।
१५ तू ने सोते को और बाढ़ को चीरा तू ने प्रबल नदियों को
१६ सुखा दिया। दिन तेरा और रात भी तेरी है तू ने उंजियाला

१७ और सूर्य्य को सिद्ध किया है। तू ने पृथिवी के सारे सिवानों को ठहराया है और तूहीं ने गरमी और जाड़ा बनाया है।
१८ हे परमेश्वर उसे स्मरण कर कि बैरी ने निन्दा किई है और
१९ मूढ़ लोगों ने तेरे नाम को अपनिन्दा किई है। अपनी पंडुकी का प्राण दुष्टों की मंडली के बश में न कर और अपनी
२० दीन मंडली को कभी न बिसरा। अपनी बाचा को चेत कर क्योंकि पृथिवी के अंधियारे स्थान क्रूरता के निवासों से पूर्ण
२१ हैं। हाय सताये ऊए को लज्जित करने को मत लौट दुःखी
२२ और दीन तेरे नाम की स्तुति करें। हे ईश्वर उठ और अपने हीं पद का बिबाद कर और स्मरण कर कि मूर्ख जन प्रतिदिन
२३ कैसी तेरी निन्दा करता है। अपने बैरियों के शब्द को मत भूल उनका कोलाहल जो तेरे बैर में उभड़ते हैं नित बढ़ता जाता है।

७५ पचहत्तरवां गीत ।

आसाफ़ का गीत अथवा गान अलतसचित प्रधान बजनिये के पास ।

१ हे ईश्वर हम तेरी स्तुति करते हैं हम तेरी स्तुति करते हैं क्योंकि तेरे आश्चर्य कार्य्य तेरे नाम के पास होने को प्रगट करते हैं।
२ जब मैं मंडली पर प्रधान होऊंगा तो मैं खराई से बिचार
३ करोंगा। पृथिवी और उसके सारे निवासी मिट गये मैं उसके
४ खंभों को संभालता हों, सीलाह। मैं ने मूर्खों से कहा कि
५ मूर्खता न करो और दुष्टों को कि सींग मत उभाड़ो। अपना
६ सींग ऊंचा न करो और कठोर गले से मत बोलो। क्योंकि बढ़ती न पूर्ब से न पच्छिम से और न दक्खिन से आती है।
७ परंतु ईश्वर न्यायी है वुह एक को उतारता है और दूसरे
८ को उभाड़ता है। क्योंकि परमेश्वर के हाथ में एक कटोरा है और मदिरा लाल है जो मिलावट से भरा है और वुह

उसी से उंडेलता है परंतु उसकी तलछट को एथिवी के सारे
९ दुष्ट निचोड़ पोयेंगे। परंतु मैं सदा वर्णन करोंगा और याक़ूब
१० के ईश्वर की स्तुति करोंगा। मैं दुष्टों के सारे सींग भी काट
डालोंगा परंतु धर्मियों के सींग बढ़ाये जायेंगे ।

७६ छिहत्तरवां गीत ।

असाफ़ का गीत अथवा गान नगीनूत पर प्रधान
बजनिये के पास ।

१ ईश्वर यहूदा में प्रसिद्ध है उसका नाम इसराईल में महान
२ है। सालिम में भी उसका तंबू है और सैहून में उसका निवास
३ स्थान। वहां उसने धनुषों के बाण और ढाल और तलवार
४ और लड़ाइयां तोड़ी हैं। तू अहेर के पर्ब्बत से अधिक
५ बिभवमय और उत्तम है। हियाई लुटगये और अपनी नींद
ले लिया है और बलवानों में से किसी ने अपने हाथ नहीं
६ पाये हैं। हे याक़ूब के ईश्वर तेरी दपट से रथ और घोड़े
७ बड़ी नींद में पड़ गये। तुझी से डरा चाहिये और जहां तू
८ क्रुध ज्ञआ तो कौन तेरे आगे ठहर सके?। तू ने स्वर्ग पर से
९ बिचार सुनाया और एथिवी डर के मारे थम गई। जब ईश्वर
न्याय के लिये उठा कि एथिवी के सारे कोमलों को बचावे,
१० सीलाह। निश्चय मनुष्य का क्रोध तेरी स्तुति करेगा और तू
११ उबरे ज्ञए क्रोध को रोक लेगा। परमेश्वर अपने ईश्वर की
मनौती मान के उसे पूरी करो सब जो उसके आस पास हैं
१२ भेंट चढ़ावें। वुह अध्यक्षों के मन को काटेगा वुह एथिवी के
राजाओं के लिये भयंकर है।

७७ सतहत्तरवां गीत ।

असाफ़ का गीत प्रधान बजनिये के पास यदूथून
को ।

१ मैं ईश्वर के आगे अपने शब्द से चिल्लाया हां ईश्वर के आगे शब्द
२ से सो उसने मेरी ओर कान धरा। विपत्ति के दिन मैं ने ईश्वर
को खोजा और मेरे हाथ रात को निरंतर उठे रहे और मेरे
३ प्राण ने शांति न मानी। मैं ने ईश्वर को स्मरण किया और
व्याकुल ज़आ मैं ने हाय किया और मेरा अंतःकरण दब गया,
४ सीलाह। तू मेरी आंखें को जागती रखता है मैं व्याकुलता
५ के मारे बोल नहीं सक्ता। मैं ने अगिले दिनों को और प्राचीन
६ बरसों के समयों को सोचा है। मैं रात को अपना गान
स्मरण करता हों और अपने मनही मन बतिआता हों और
७ मेरे आत्मा ने ध्यान से खोज किया। क्या प्रभु मुझे सदा के
८ लिये त्यागेगा? और फिर मुझ पर कृपा न करेगा?। क्या
उसकी दया सदा के लिये जाती रही क्या उसकी वाचा पीढ़ी
९ से पीढ़ी लों घट गई। क्या अनुग्रह करने को ईश्वर भूलगया है?
१० क्या उसने क्रोध से अपनी कोमल दया को बंद किया?। मैं ने
कहा कि यह मेरी निर्बलता है परंतु मैं अति महान के दहिने
११ हाथ के बरसों को चेत करोंगा। मैं परमेश्वर के कार्य्यों को
स्मरण करोंगा निश्चय मैं तेरे प्राचीन आश्चर्य्यों को स्मरण
१२ करोंगा। मैं तेरे सारे कार्य्यों को भी सोचोंगा और तेरे कार्य्यों
१३ की चर्चा करोंगा। हे ईश्वर तेरा मार्ग धर्मधाम में है हमारे
१४ ईश्वर के समान कौन ऐसा महेश्वर है। तू आश्चर्य्य कर्त्ता
१५ ईश्वर है तू ने लोगें पर अपने बल को प्रगट किया है। तू ने
अपने लोग याक़ूब और यूसफ़ के संतानों को अपनी भुजा से
१६ छुड़ाया है, सीलाह। हे ईश्वर पानियों ने तुझे देखा पानियों
ने तुझे देखा वे डर गये और गहिराव भी व्याकुल ज़ए।
१७ मेघ जल सहित उंडेले गये और आकाशों ने शब्द किया और
१८ तेरे बाण उड़ निकले। तेरे गर्जन का शब्द स्वर्ग में ज़आ
बिजुलियों ने जगत को उंजियाला किया पृथिवी थर्थरा के
१९ कांप गई। तेरा मार्ग समुद्र में है और तेरा पथ बड़े पानियों

२० में तेरे पांव के चिन्ह नहीं जाने गये। तू ने मूसा और हारून के हाथ से भुंड़ की नाईं अपने लोगों की अगुवाई किई।

७८ अठहत्तरवां गीत।

असाफ़ का मसकिल।

१ हे मेरे लोगो मेरी व्यवस्था पर कान धरो और मेरे मुंह की
२ बातों को कान धर के सुनो। मैं अपना मुंह एक दृष्टांत में
३ खोलोंगा और मैं प्राचीन गुप्त भेदों को प्रगट करोंगा। जिन्हें हमने सुना है और जाना और हमारे पितरों ने हम से कहा।
४ हम उनके बालकों से न छिपावेंगे और परमेश्वर की स्तुति और उसका पराक्रम और उसके आश्चर्य कार्य्य, जो उसने
५ किये आवेया पीढ़ी पर प्रगट करेंगे। क्योंकि उसने याक़ूब में एक बाचा स्थिर किई और इसराईल में एक व्यवस्था ठहराई जो उसने हमारे पितरों को आज्ञा किई कि वे अपने
६ बालकों को सिखावें। जिसतें आवैया पीढ़ी अर्थात् जो बालक आगे उत्पन्न होंगे उन्हें जानें और वे उठके अपने बालकों को
७ सिखावें। जिसतें वे ईश्वर पर अपना आसा रक्खें और ईश्वर के कार्य्यों को न भूलें परन्तु उसकी आज्ञाओं को पालन करें।
८ और अपने पितरों की नाईं भगरे दंगइत पीढ़ी न होवें ऐसी पीढ़ी जिन्हों ने अपने मन को सिद्ध न किया और जिनका मन
९ ईश्वर पर दृढ़ न था। अफ़राईम के संतान हथियारबंद और
१० धनुषधारी लड़ाई के दिन हट गये। उन्हों ने ईश्वर की बाचा को न माना और उसकी व्यवस्था पर चलने को नाह किया।
११ और उसके कार्य्यों को और उसके आश्चर्यों को, जो उसने उन्हें
१२ दिखाये थे भूल गये। उसने मिसर देश में और सोआन के चौगान में उनके पितरों के आगे आश्चर्य कर्म किये।
१३ उसने समुद्र का भाग किया और उन्हें पार पऊंचाया और
१४ उसने पानियों को ढेर की नाईं खड़ा किया। दिन को भी मेघ

से और रातभर आग की ज्योति से उसने उनकी अगुआई
१५ किई। उसने बन में पर्वतों को और जैसा कि महा गहिराव
१६ से उन्हें पिलाया। उसने पर्व्वत में से धारें निकालीं और नदी
१७ की नाईं पानी बहाया। पर उन्हों ने उसके
विरुद्ध अधिक पाप करके उस अति महान को बन में क्रोध
१८ दिलाया। और उन्हों ने अपनी लालसा के लिये मांस मांग
१९ के अपने मन में ईश्वर को परखा। हां उन्हों ने ईश्वर के विरुद्ध
कहा और बोले, क्या ईश्वर बन में हमारे लिये मंच सिद्ध
२० करसक्ता है?। देखो उसने पर्वत को मारा ऐसा कि पानी फूट
निकला और धारें बहिचलीं क्या वुह रोटी भी दे सक्ता? और
२१ अपने लोगों के लिये मांस सिद्ध करसक्ता?। सो परमेश्वर ने
सुना और क्रुद्ध होके याकूब में एक आग भड़काई इसराईल के
२२ विरुद्ध उसका क्रोध उभड़ा। क्योंकि उन्हों ने ईश्वर पर बिश्वास
२३ न किया और उसकी मुक्ति पर भी भरोसा न रक्खा। यद्यपि
उसने ऊपर से मेघों को आज्ञा किई और स्वर्ग के द्वार खोले।
२४ और उनके खाने के लिये मन्न बरसाया और उन्हें स्वर्गीय
२५ अन्न दिया। मनुष्यों ने दूतों का भोजन खाया उसने उन्हें
२६ अघाके खिलाया। उसने स्वर्ग में पूरबी पवन चलाया और
२७ उसके बल से दक्खिन का पवन बहा। उसने उन पर धूल की
२८ नाईं मांस और समुद्र के बालू की नाईं पंछी बरसाये। और
उसने उन्हें उनकी छावनी के बीच में और उनके बसाव के
२९ आस पास गिराया। सो उन्हों ने खाया और तृप्त ऊए क्योंकि
३० उसने उन्हें उन्हीं की इच्छा दिई। वे अपनी लालसा से अलग
३१ न ऊए परन्तु जब कि उनका भोजन उनके मुंहों में था। तब
ईश्वर का क्रोध उन पर आया और उनके पुष्ट लोग मारे गये
३२ और इसराईल के तरुण लोग झुकाये गये। तिस पर
भी फिर उन्हों ने पाप किया और उसके आश्चर्य कार्यों का
३३ बिश्वास न किया। इस लिये उसने उनके दिनों को अनर्थ में

३३ और उनके बरसों को विपत में बिताया। और जब उसने
३४ उन्हें मारा तब उन्हों ने उसे ढूंढ़ा और फिर आये और तड़के
३५ ईश्वर के खोजी हुए। और चेत किया कि ईश्वर उनका पहाड़
३६ और महेश्वर उनका मुक्तिदाता था। तिस पर भी उन्हों ने
अपने मुंह से उसे चापलूसी किई और अपनी जीभों से उसे
३७ झूठ बोले। क्योंकि उनके मन उसकी ओर ठीक न थे और वे
३८ उसकी वाचा पर स्थिर न हुए। पर उसने अपनी मया को
भरपूरी से उनके अधर्म को क्षमा किया और उन्हें नाश न किया
हां बारंबार उसने अपने क्रोध को रोका और उसने अपने
३९ सारे क्रोध को न भड़काया। क्योंकि उसने स्मरण किया कि वे
मांस हैं जैसे एक पवन जो जातारहता है और फिर नहीं
४० आता। उन्हों ने उसे बन में कईवार क्रोध दिलाया और
४१ उजाड़ में उसे उदास किया। हां वे फिर गये और ईश्वर को
४२ परखा और इसराईल के धर्ममय का सीमा बांधा। उन्हों ने
उसके हाथ को और उस दिन को जब कि उसने उन्हें बैरियों
४३ से छुड़ाया स्मरण न किया। कि उसने मिसर में क्योंकर अपने
४४ चिह्न और सोआन के चैागान में आश्चर्य दिखाये। और उनकी
नदियों को और बाढ़ों को लोहू करडाला कि वे पी न सके।
४५ उसने उनमें भांति भांति की मक्खियां भेजीं जो उन्हें खा गईं
४६ और मेंढ़क जिन्हों ने उन्हें नष्ट किया। उसने उनकी बढ़ती
४७ कीड़ों को और उनका परिश्रम टिड्डियों को खिलाया। उसने
उनके दाख को ओलों से और उनके गूलरपेड़ों को पाले से
४८ नष्ट किया। उसने उनके ढोरों को भी ओलों को और उनके झुंड
४९ बिजुली को सैांपा। उसने बुरे दूतों को भेजके उन पर अपना
महा क्रोध और कोप और जलजलाहट और व्याकुलता
५० उंडेली। उसने अपने क्रोध के लिये एक मार्ग खोला उसने
उनके प्राण को मृत्यु से न छोड़ा परन्तु उनका प्राण मरी को
५१ सैांपे। उसने मिसर में सारे पहिलैांठे को हाम के तंबूओं में

५२ उनके बल की श्रेष्ठता को मारा। पर अपनेही लोगों को भेड़ों की नाईं चलाया और बन में झुंड की नाईं उनकी अगुआई किई।
५३ और उन्हें कुशल से लेगया ऐसा कि वे न डरे परन्तु समुद्र ने
५४ उनके बैरियों को ढांप लिया। उसने उन्हें अपने धर्मधाम के सिवाने में पहुंचाया अर्थात् इस पहाड़ पर जिसे उसके दहिने
५५ हाथ ने मोल लिया। उसने अन्यदेशियों को भी उनके आगे से दूर किया और रस्सी से उन्हें अधिकार बांटा और इसराईल की
५६ गोष्ठियों को उनके तंबुओं में बसाया। तिसपर भी उन्हों ने अति महान ईश्वर को परखा और रिस दिलाया और उसकी साक्षी
५७ का पालन न किया। परन्तु फिर गये और अपने पितरों की नाईं
५८ छल किया और छली धनुष की नाईं एक ओर फिर गये। क्योंकि उन्हों ने अपने ऊंचे स्थानों से खिजा के उसे रिस दिलाया और
५९ अपनी खोदी हुई मूरतों से उसको झल दिलाया। ईश्वर यह
६० सुन के क्रुद्ध हुआ और इसराईल से अति घिन किया। यहां लों कि उसने शैलू के तंबू को जिस तंबू को, उसने लोगों
६१ में खड़ा किया था त्यागा। और उसने अपने बल को बंधुआई में और अपने विभव को बैरी के हाथ में सौंप दिया।
६२ उसने अपने लोगों को तलवार को भी सौंप दिया और अपने
६३ अधिकार से क्रुद्ध हुआ। आग ने उनके तरुणों को भस्म किया
६४ और उनकी कुंआरियां ब्याहीं न गईं। उनके याजक तलवार
६५ से मारे गये और उनकी रांडों ने बिलाप न किया। तब परमेश्वर नींद से उठे हुए जन की और मदिरा के मारे ललकारते
६६ हुए महावीर की नाईं जाग उठा। और उसने अपने बैरियों की पछाड़ी मारी और उसने उन्हें सदा लज्जित किया।
६७ और उसने यूसफ़ के तंबू को नाह किया और अफ़राईम की
६८ गोष्ठी को न चुना। पर यहूदा की गोष्ठी सैहून के पहाड़ को,
६९ जो उसका प्रिय था चुन लिया। और उसने अपना धर्मधाम ऊंचे भवनों की नाईं और पृथिवी की नाईं सदा के लिये

७० उसकी नेवें डालीं। उसने अपने सेवक दाऊद को भी चुन लिया
७१ और भेड़शालों में से उसे निकाल लिया। उसने उसे गर्भिणी
भेड़ों के पीछे से लेलिया कि अपने लोग याक़ूब के वंश को और
७२ अपने अधिकार इसराईल को चरावे। सो उसने अपने मन
की खराई से उन्हें चराया और अपने हाथों की गुणता से
उनको ले आया।

७९ उनासीवां गीत।

आसाफ का गीत।

१ हे ईश्वर अन्यदेशीयों ने तेरे अधिकार में प्रवेश कर के तेरे
पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया उन्हों ने यिरोशलीम को ढेर
२ ढेर कर रक्खा है। तेरे सेवकों की लोथों को उन्हों ने आकाश
के पंछियों का और तेरे साधुन के मांस को पृथिवी के बन
३ पशुन का आहार किया। उन्हों ने उनके लोहू को यिरोशलीम
की चारों ओर पानी की नाईं बहाया और गाड़ने को कोई न
४ रहा। हम तो अपने परोसियों के लिये निंदित ऊए हैं
५ और अपने आसपासियों के लिये ठट्ठे और तुच्छ ऊए। कबलों
हे परमेश्वर क्या तू सदा लों रिसिआवेगा? क्या तेरा झल
६ आग की नाईं सदा बरा करेगा?। अन्य देशियों पर, जिन्हों
ने तुझे नहीं पहिचाना और उन राज्यों पर जिन्होंने तेरा
७ नाम न लिया अपना कोप उंडेल। क्योंकि उन्हों ने याक़ुब को
८ निंगल लिया और उसके निवास को उजाड़ दिया। हमारे
पिछले अधर्मों को स्मरण मत कर अपनी कोमल दया से हमें
९ हाली रोक क्योंकि हम बऊत घटाये गये। हे हमारे मुक्तिदाता
ईश्वर अपने नाम की महिमा के लिये हमारी सहाय कर और
हमें बचा और अपने नाम के लिये हमें अपने पापों से पवित्र
१० कर। अन्यदेशी लोग किस लिये कहें कि उनका ईश्वर कहां
है? अपने दासों के बहाए ऊए लोहू का पलटा लेके अन्यदेशियों

११ के मध्य में हमारी दृष्टि के आगे आप को प्रगट कर। बंधुओं का कहरना तेरे आगे पहुंचे अपनी भुजा की महिमा के
१२ समान उन्हें, जो मृत्यु के लिये ठहराये गये हैं बचाले। हे प्रभु हमारे परोसियों की निंदा को, जिस्से उन्हों ने तेरी निंदा किई
१३ है उनकी गोद में सतगुण पलटा दे। सो हम तेरे लोग और तेरी चराई की भेड़ें सदा तेरा धन्य मानेंगे हम पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरी स्तुति प्रगट करेंगे।

८० अस्सीवां गीत।

शोशन निमीदूथ पर आसाफ का गीत प्रधान बजनिये के पास।

१ हे इसराईल के गड़रिये तू जो यूसफ़ को झुंड की नाईं लेजाता है तू जो करोबीम के मध्य में रहता है कान धर और चमक।
२ अफराईम और बनिआमीन और मनस्सा के आगे अपना बल
३ उघार और हमारे बचाव के लिये आ। हे ईश्वर हमें फिरा और अपने रूप को हमपर चमका और हम बचजायेंगे।
४ हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर अपने लोगों की प्रार्थना के बिरुद्ध
५ कबलों तेरा धूआं उठा करेगा?। तू उन्हें आंसूओं की रोटी
६ खिलाता है और बहुताई से आंसू पिलाता है। तू हमें अपने परोसियों का झगड़ा करता है और हमारे बैरी आपुस में
७ हंसते हैं। हे सेनाओं के ईश्वर हमें फिरा और अपना रूप
८ चमका और हम बचजायेंगे। तू एक लता को मिसर से निकाल लाया है तू ने अन्यदेशियों को बाहर किया और उसे
९ लगाया है। तू ने उसके लिये ठिकाना किया और ऐसा किया और उसे गहिरी जड़ पकड़वाई और देश में फैलगई।
१० उसकी छाया से पहाड़ ढंप गये और उसको डालें सुन्दर
११ आरज पेड़ की नाईं हुईं। उसने अपनी डारें समुद्र ताईं
१२ फैलाई और अपनी डालियां नदी लों। तू ने उसके बाड़ को

१३ क्यों तोड़ा है यहां लों कि पथिक उसे चोंथते हैं। बनैले सूअर
१४ उसे उजाड़ते हैं और वन पशु उसे भक्षते हैं। हे सेनाओं के
ईश्वर हम तेरी बिनती करते हैं कि लौट आ स्वर्ग पर से झांक
१५ और इस लता को देख। जो दाख की बारी जिसे तेरे
दहिने हाथ ने लगाया है और डाली जिसे तू ने अपने लिये
१६ पोढ़ किया। वुह आग से जलाई गई और काटी गई वे तेरे
१७ रूप के दपट से नाश होती हैं। तू अपने दहिने हाथ के
मनुष्य पर अर्थात् मनुष्य के पुत्र पर जिसे तू ने अपने लिये बली
१८ किया अपना हाथ धर। सो हम तुझ से न फिरेंगे हमें जिला
१९ और हम तेरा नाम लिया करेंगे। हे परमेश्वर सेनाओं के
ईश्वर हमें फिरा और अपना रूप चमका और हम बचजायेंगे।

८१ एकासीवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास गित्तिथ पर आसाफ़ का।

१ हमारे बल के ईश्वर के लिये पुकार के गाओ याक़ूब के ईश्वर
२ के लिये आनंद का शब्द करो। नबल के साथ तबल और
३ बीन लाओ और गीत गाओ। अमावास्या में और हमारे
४ ठहराये ज़ए पर्बों के दिन में तुरी बजाओ। क्योंकि यह
इसराईल के लिये विधि और याक़ूब के ईश्वर की व्यवस्था थी।
५ जब यूसफ़ मिसर देश के सन्मुख पज़ंचा जहां मैं ने भाषा सुनी
और नसमुझी उसने उसके लिये इसे एक साक्षी ठहराई।
६ मैं ने उसके कांधे पर से बोझ उतारा उसके हाथों को हांडियों से
७ छुड़ाया। तू ने विपत्ति में पुकारा और मैं ने तुझे छुड़ाया
मैं ने गर्जन के गुप्त स्थान से तुझे उत्तर दिया मैं ने झगड़ा के
८ पानियों पर तुझे परखा, सीलाह। हे मेरे लोगो सुनो हे
इसराईल जो तू मेरी सुनेगा तो मैं तेरे लिये साक्षी देउंगा।
९ तुझ में कोई उपरी देव नहोवे तू किसी उपरी देव की पूजा
१० न कर। परमेश्वर तेरा ईश्वर मैं हों जो तुझे मिसर देश से बाहर

११ लाया अपना मुंह फैला और मैं उसे भरदोंगा। पर मेरे लोगों ने मेरा शब्द न सुना और इसराईल ने मुझे न चाहा।
१२ तब मैं ने उन्हें उनके मन की भावना में छोड़ दिया और वे
१३ अपनेही मत पर चले किये। हाय कि मेरे लोग मेरी सुनते
१४ और इसराईल मेरे मार्गों पर चलते। मैं हाली उनके बैरियों को उनके वश में करता और उनके बैरियों के बिरुद्ध अपना
१५ हाथ फेरता। वे जो परमेश्वर से घिनाते हैं उस्से दब जाते
१६ परंतु उनका समय सदा रहता। वुह उन्हें गोहूं की चिकनाई भी खिलाता और पहाड़ की मधु से उन्हें तृप्त करता।

८२ बयासीवां गीत ।

आसाफ का गीत ।

१ ईश्वर बलवानों की मंडली में खड़ा है देवों के मध्य में वुह
२ बिचार करता है। तुम कबलों अधर्म बिचार करोगे और
३ दुष्टों का पक्ष करोगे, सीलाह। कंगाल और अनाथों का
४ बिचार करो दुःखी और दीनों का न्याय करो। कंगाल और
५ दीन को बचाओ दुष्टों के हाथों से उन्हें छुड़ाओ। वे नहीं जानते और न समझेंगे वे अंधियारे में चले जाते हैं पृथिवी
६ की सारी नेवें टल गई हैं। मैं ने तो कहा कि तुम सब देव
७ हो और तुम सबके सब अतिमहान के पुत्र हो। पर तुम मनुष्यों की नाईं मरोगे और राजपुत्रों में से एक की नाईं
८ गिरजाओगे। हे ईश्वर उठ पृथिवी का बिचार कर क्योंकि तू सारे देशगणों का अधिकारी होगा।

८३ तिरासीवां गीत ।

आसाफ का गान अथवा गीत ।

१ हे ईश्वर चुप मत हो चुप का मत रह और हे ईश्वर चैन न ले।
२ क्योंकि देख तेरे बैरी ऊधम करते हैं और वे जो तुझसे डाह

३ रखते हैं सिर उठाये हैं। उन्हों ने तेरे लोगों के विरोध में छल का परामर्ष किया है और तेरे छिपे ज़ए लोगों के विरोध में चिंता
४ करते हैं। उन्हों ने कहा है कि आओ उन्हें एक जाति होने से
५ काट डालें जिसतें इसराईल का नाम स्मरण न रहे। क्योंकि
६ उन्हों ने एक मन से परामर्ष किया है। अदूम के सारे तंबू
७ और इस्माईली और मवाबी और सारे हाजरीन। और जाबाल और अमून और अमालक़ और फ़लस्तानी सूर के
८ बासियों समेत तेरे विरुद्ध मिल गये हैं। असूरी भी उनमें
९ मिले हैं वे लूत के संतान के सहायक हैं। उनसे ऐसा कर जैसा कि मदयानियों और सिसरा और याबिन से कैसन की नाली
१० पर किया। जो इंदूर में नाश ज़ए और पृथिवी पर के बिष्ठा
११ ज़ए। उनके कुलीनों को ओरेब और ज़ेब की नाईं कर हां
१२ उनके सारे राजपुत्र को ज़बह और ज़लमूना के। जिसने
१३ कहा कि आओ ईश्वर के मंदिरों को अपने बश में करें। हे मेरे ईश्वर उन्हें एक पहिये की नाईं कर और पवन के सन्मुख
१४ की खूथी की नाईं। जैसा आग बन को जलाती है और
१५ जैसा लवर पहाड़ों को जलाती है। तैसा अपनी आंधी से
१६ उन्हें सता और अपने झकोर से उन्हें डरा। हे परमेश्वर उनके मुंह को लाज से भर दे जिसतें वे तेरे नाम के खोजी
१७ होवें। वे सदा व्याकुल होवें और घबराजावें हां वे लज्जित होके नाश हों जिसतें मनुष्य जानें कि केवल जिसका नाम अद्वितीय परमेश्वर है वुह सारी पृथिवी में अति महान तूही है।

८४ चौरासीवां गीत ।

कोराह के पुत्रों के लिये गित्तिथ पर प्रधान बजनिये के पास गीत।

१।२ हे सेनाओं के परमेश्वर तेरे तंबू कैसे सुन्दर हैं। मेरा प्राण परमेश्वर के आंगनों के लिये अभिलाषी और मूर्छित है मेरे

३ तन मन जीवत ईश्वर के लिये पुकारते हैं। हे सेनाओं के परमेश्वर मेरे राजा और मेरे ईश्वर गौरा ने तेरी वेदियों में खोसला और सुपाबीना ने अपने लिये खोंता पाया जहां वे
४ अपने गेदे रक्खें। धन्य वे हैं जो तेरे मंदिर में बसते हैं और
५ सदा तेरी स्तुति करेंगे, सीलाह। जिसका बल तुझ में है सो
६ मनुष्य धन्य जिसका मन उनके मार्ग में है। जो वाक्का की तराई में से जाते ऊए उसे कूआ बनाता है और कुंड भी मेंह से भरे
७ हैं। वे बढ़ते जाते हैं और जथा से जथा को जाते हैं और
८ ईश्वर के आगे सैहून में पऊंचते हैं। हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन हे याकूब के ईश्वर कान धर, सीलाह।
९ हे ईश्वर हे हमारी ढाल अपने अभिषिक्त के मुंह पर दृष्टि कर।
१० क्योंकि तेरे आंगनों में एक दिन सहस्र से भला है अपने ईश्वर की डेवढ़ी पर बैठना दुष्टता के तंबूओं में रहने से मुझे अधिक
११ प्रसन्न है। क्योंकि ईश्वर परमेश्वर एक सूर्य और ढाल है परमेश्वर अनुग्रह और बिभव देगा जो खराई से चलते हैं
१२ उनसे वुह कोई भलाई न रख छोड़ेगा। हे सेनाओं के परमेश्वर धन्य वुह मनुष्य जो तेरा भरोसा करता है।

८५ पचासीवां गीत ।

कोराह के पुत्रों के लिये प्रधान बजनिये के पास।

१ हे परमेश्वर तू अपने देश पर अति प्रसन्न ऊआ है तू याकूब
२ की बंधुआई को फेर लाया है। तू ने अपने लोगों के अधर्म को क्षमा किया है तू ने उनके सारे पापों को ढांपा है, सीलाह।
३ तू ने अपने सारे क्रोध को अलग किया है तू ने अपने क्रोध को
४ भड़कने न दिया। हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर हमें फिरा और
५ अपनी रिस को हम पर से रोक। क्या तू सदा हम पर रिसियावेगा?
६ क्या तू सारी पीढ़ी लों अपने क्रोध को बढ़ाता रहेगा?। क्या तू हमें फिर न जिलावेगा जिसतें तेरे लोग तुझ से आनंद करें?।

७ हे परमेश्वर हमें अपनी दया दिखा और अपनी मुक्ति हम
८ को दे। मैं सुनोंगा कि परमेश्वर ईश्वर क्या कहेगा वुह तो अपने लोगों को और अपने साधुन को कुशल की बात कहेगा
९ परन्तु वे मूर्खता में फेर न फिरें। निश्चय उसकी मुक्ति उनके
१० डरवैयों के पास है जिसतें महिमा हमारे देश में बसे। दया और सच्चाई ने भेट किया धर्म और कुशल ने चूमा लिया है।
११।१२ सच्चाई पृथिवी से उगेगी और धर्म स्वर्ग से झांकेगा। हां परमेश्वर भलाई देगा और हमारा देश अपना फल देगा।
१३ धर्म उसके आगे आगे चलेगा और हमारे डग को उसके मार्ग पर चलावेगा।

८६ छयासीवां गीत।

दाऊद की प्रार्थना।

१ हे परमेश्वर अपना कान झुका और मेरी सुन क्योंकि मैं कंगाल
२ और दीन हों। मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं तेरा अनुग्रहीत हों हे मेरे ईश्वर तू अपने भरोसा रखनेवाले दास
३ को बचा। हे मेरे प्रभु मुझ पर दयाल हो क्योंकि मैं दिन
४ भर तुझे पुकारता हों। अपने दास के प्राण को आनंदित कर
५ क्योंकि हे प्रभु मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता हों। क्योंकि हे प्रभु तू भला है और क्षमा करने को सिद्ध है और सब
६ के लिये जो तुझे पुकारते हैं तेरी दया बहुत है। हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी विनती के शब्द को
७ मान। मैं अपनी विपत्ति के दिन तुझे पुकारोंगा क्योंकि तू
८ मुझे उत्तर देगा। हे प्रभु देवों में तेरे तुल्य कोई नहीं और
९ तेरे कार्य के समान कुछ नहीं। हे प्रभु सारे देशी जिन्हें तू ने सिरजा है आवेंगे और तेरे आगे दंडवत करेंगे और
१० तेरे नाम की बड़ाई करेंगे। क्योंकि तू महान और आश्चर्य
११ कर्त्ता है तूही अकेला ईश्वर। हे परमेश्वर मुझे अपना मार्ग बता मैं तेरी सच्चाई में चलोंगा अपने नाम को डरने के

१२ लिये मेरे चित्त को बटोर। हे प्रभु मेरे ईश्वर मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करोंगा और मैं सदा तेरे नाम की बड़ाई करोंगा।
१३ क्योंकि तेरी दया मुझ पर बड़ी है और तू ने मेरे प्राण को
१४ अति नीचो समाधि से छुड़ाया है। हे ईश्वर अहंकारी मुझ पर उभड़े हैं और भयंकर मंडलियां मेरे प्राण के पीछे पड़ी
१५ हैं और उन्हों ने तुझे अपने आगे न समझा। परंतु हे प्रभु तू दयामय ईश्वर और कृपाल और धीर है तेरी दया और
१६ सच्चाई बहुत हैं। मेरी ओर फिर और मुझ पर दया कर अपनी सामर्थ्य अपने दास को दे और अपनी दासी के पुत्र
१७ को बचा। मुझे भलाई का कोई चिह्न दिखा जिसतें वे जो मेरा बैर रखते हैं देखके लज्जित होवें इस कारण कि हे परमेश्वर तू ने मेरी सहाय किई और मुझे धीरज दिया।

८७ सतासीवां गीत।

कोराह के पुत्रों के लिये गीत अथवा गान।

१।२ उसकी नेंव पवित्र पर्ब्बतों में है। परमेश्वर सैहून के फाटकों
३ को याक़ूब के सारे निवासों से अधिक प्रीति रखता है। हे ईश्वर के नगर तेरे विषय में अनोखी बातें किई जाती हैं.
४ सीलाह। मैं उनके आगे, जो मुझे पहिचानते हैं राहाब और बाबुल की चर्चा करोंगा देख फलस्तिया और सूर कोश के
५ संग कि यह वहां उत्पन्न हुआ। और सैहून के विषय में कहा जायगा कि यह और वुह जन उसमें उत्पन्न हुआ और अत्यंत
६ महान आप उसे स्थिर करेगा। जब परमेश्वर लोगों को लिखेगा तो वुह गिनेगा कि यही उसमें उत्पन्न हुआ था.
७ सीलाह। जैसे गायक वैसेही बजनिये होंगे मेरे सारे सोते तुझ में हैं।

८८ अठासीवां गीत ।

इज़राही हीमान का उपदेश देना महालासलिअन्नूस पर कोराह के पुत्रों के लिये गीत अथवा गान प्रधान बजनिये के पास ।

१ हे मेरे मुक्तिदाता ईश्वर परमेश्वर मैं ने रात दिन तेरे आगे बिनती
२ किई । मेरी प्रार्थना तेरे आगे पहुंचे अपने कान मेरी बिनती
३ पर झुका । क्योंकि मेरा मन बिपत्ति से भरा है और मेरा
४ प्राण समाधि के लग आ रहा है । मैं उनमें गिना गया हों
५ जो गड़हे में पड़ते हैं मैं निर्बल मनुष्य की नाईं हों । म्टतकों
में उन मारेगयों की नाईं हों जो समाधि में पड़े हैं जिन्हें
६ तू स्मरण नहीं करता और वे तेरे हाथ से काटे गये हैं । तू ने
मुझे अत्यंत नीचे गड़हे में अंधियारे में गहिराओं में डाला
७ है । तेरा कोप मुझे दबाये डालता है तू ने अपने सारे लहरों
८ से मुझे दुःख दिया है. सीलाह । तू ने मेरे चिन्हारों को मुझ से
दूर किया है तू ने उनके आगे मुझे घिनित किया है बन्द
९ होके मैं निकल नहीं सक्ता । मेरी आंखें दुःख के मारे
बिलाप करती हैं हे परमेश्वर मैं ने प्रतिदिन तुझे पुकारा है
१० मैं ने अपने हाथ तेरी ओर फैलाये हैं । क्या तू म्टतक को अपना
आश्चर्यित दिखावेगा? क्या म्टतक उठके तेरी स्तुति करेंगे?
११ सीलाह । क्या समाधि में तेरी कोमल दया और बिनाश में
१२ तेरी सचाई का बर्णन होगा? । क्या तेरे आश्चर्य अंधियारे में
१३ जानेजायंगे? और तेरा धर्म भुलावा के देश में? । परन्तु हे
परमेश्वर मैं तुझे पुकारता हों मेरी प्रार्थना बिहान को तुझे
१४ रोकेगी । हे परमेश्वर तू क्यों मेरे प्राण को त्यागता है? और
१५ अपना मुंह मुझ से छिपाता है? । मैं दुःखी होके लड़काई से
१६ मरने पर हों मैं तेरे भय को सह सह के घबराता हों । तेरे
क्रोध की दपट मुझ पर बीती जाती है तेरे भय मुझे काट

१७ डालते हैं। वे पानी की नाईं दिन भर मुझे चारों ओर घेरते
१८ हैं उन्हों ने एकट्ठे मुझे घेर लिया है। प्रिय और मित्र को
और मेरे चिन्हारों को अंधियारे में तू ने मुझ से दूर किया है।

८९ नवासीवां गीत ।

यजराही ईथान का उपदेश देना ।

१ मैं सदालों परमेश्वर की दया को गाया करोंगा मैं पीढ़ी से
पीढ़ी लों अपने मुंह से तेरी सच्चाई का संदेश देऊंगा।
२ क्योंकि मैं ने कहा है कि दया सदा लों बनी रहेगी तू अपनी
३ सच्चाई को स्वर्ग पर स्थिर करेगा। मैं ने अपने चुनेहुए से एक
बाचा बांधी है मैं ने अपने दास दाऊद से किरिया खाई है।
४ मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रक्खोंगा और तेरे सिंहासन को
५ सारी पीढ़ी लों ठहराओंगा. सीलाह। हे परमेश्वर स्वर्ग
में तेरे आश्चर्यों की और सिद्धों की मंडली में तेरी सच्चाई की
६ स्तुति किईजायगी। क्योंकि स्वर्ग पर परमेश्वर के तुल्य कौन
हो सक्ता है और बलवानों के संतान में परमेश्वर के तुल्य कौन
७ हो सक्ता है। ईश्वर सिद्धों की सभा में अत्यंत डरने के योग्य
८ है और उन सबका जो उसको चारों ओर हैं प्रतिष्ठा के। हे
परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरे तुल्य कौन बलवान परमेश्वर है
९ अथवा तेरे आसपास तेरी सच्चाई के। तू समुद्र के हाहाकार
पर प्रभुता करता है जब उसकी लहरें उठती हैं तू उन्हें स्थिर
१० करता है। किसी जूझे हुए के समान तू ने राहाब को तोड़ के
टुकड़े टुकड़े किया तू ने अपनी भुजा के बल से अपने बैरियों
११ को छिन्न भिन्न किया है। स्वर्ग तेरे और पृथिवी भी तेरी जगत
१२ और उसकी भरपूरी तू ने बनाई। उत्तर और दक्खिन को
तू ने सिरजा है ताबूर और हरमून तेरे नाम में आनंदित
१३ होंगे। तेरा बाहु बल सहित है तेरा हाथ शक्तिमान तेरा
१४ दहिना हाथ ऊंचा है। धर्म और बिचार तेरे सिंहासन की

१५ दृढ़ता है दया और सत्य तेरे आगे आगे जायेंगे। जो तेरे मंगल शब्द को जानते हैं सो लोग धन्य हैं हे परमेश्वर वे तेरे सरूप
१६ की ज्योति में चलेंगे। तेरे नाम में वे दिन भर आनंद करेंगे
१७ तेरे धर्म में वे बढ़ाये जायेंगे। क्योंकि उनके बल का विभव तू
१८ है और तेरी कृपा से हमारे सींग बढ़ाये जायेंगे। क्योंकि परमेश्वर हमारा बचाव है और इसराईल का धर्ममय
१९ हमारा राजा है। तू दर्शन में अपने धर्ममय से यह कहिके बोला कि मैं ने एक सामर्थी पर सहाय रक्खी है
२० मैं ने लोग में से एक चुनेहुए को बढ़ाया। मैं ने अपने दास दाऊद को पाया है मैं ने उसे अपने पवित्र तेल से अभिषिक्त
२१ किया है। मेरा हाथ उसके साथ स्थिर रहेगा मेरी भुजा भी
२२ उसे बल देगी। बैरी उसे निचोड़ न सकेगा और दुष्टता का
२३ संतान उसे क्लेश न देगा। और मैं उसके बैरियों को उसके सन्मुख दे मारोंगा और उसके घिनवैयों को मरी से मारोंगा।
२४ परंतु मेरी सचाई और मेरी दया उसके संग होगी और
२५ मेरे नाम से उसका सींग बढ़ायाजायगा। मैं उसका हाथ भी समुद्र पर और उसका दहिना हाथ नदियों पर रक्खोंगा।
२६ वुह मुझे कहेगा कि तू मेरा पिता मेरा ईश्वर और मेरी मुक्ति
२७ का पर्वत है। मैं भी उसे अपना पहिलौंठा और पृथिवी
२८ के राजाओं से बड़ा बनाओंगा। मैं अपनी दया सदा उसके लिये रक्खोंगा मेरी बाचा उसके साथ दृढ़ होगी।
२९ उसके बंश को भी सदालों स्थिर करोंगा और उसके सिंहासन
३० को स्वर्ग के दिन लों। जो उसके बालक मेरी ब्यवस्था को त्यागें
३१ और मेरे न्यायों पर न चलें। जो वे मेरी बिधि को अपवित्र
३२ करें और मेरी आज्ञाओं को पालन न करें। तो मैं उनके पापों को छड़ी से और उनके अधर्म को कोड़ों से पलटा
३३ लेउंगा। तथापि मैं अपने प्रेम की दया उसे व्यर्थ न करोंगा
३४ और अपनी सचाई मिथ्या न होनेदोंगा। मैं अपनी बाचा को

भंग न करोंगा और जो मेरे होंठ से निकलगया सो न बदलोंगा।
३५ मैं ने एकबार अपनी पवित्रता की किरिया खाके कहा कि
३६ दाऊद से झूठ न बोलोंगा। उसका बंश सदालों रहेगा और
३७ उसका सिंहासन मेरे आगे सूर्य की नाईं बना रहेगा। वुह
चंद्रमा की नाईं और स्वर्ग में सच्चे साक्षी के समान सदा स्थिर
३८ रहेगा. सीलाह। पर तू ने तो दूर किया है और घिन किया
३९ है तू तो अपने अभिषिक्त से क्रुद्ध ऊआ है। तू ने अपने दास के
नियम को व्यर्थ किया है तू ने उसके मुकुट को भूमि में अपवित्र
४० किया है। तू ने उसकी सारी बाड़ों को तोड़डाला है तू ने उसके
४१ दृढ़ गढ़ों को बिनाश किया है। सारे पथिक उसे लूटते हैं
४२ वुह अपने परोसियों के लिये एक ओलाना है। तू ने उसके
शत्रुन के दहिने हाथ को ऊंचा किया है तू ने उसके सारे बैरियों
४३ को मगन किया है। तू ने उसकी तलवार की धार को भी मोड़
४४ दिया है और युद्ध में उसे ठहरने न दिया है। तू ने उसके बिभव
को खोदिया है और उसके सिंहासन को भूमि पर दे मारा।
४५ तू ने उसकी तरुणाई के दिनों का अल्प किया है तू ने उसे लाज से
४६ ढांपा है। हे परमेश्वर क्या तू सदा अपने को छिपाये रहेगा?
४७ क्या तेरा क्रोध आग की नाईं जलता रहेगा?। चेत कर कि मेरा
समय कितना थोड़ा है तू ने मनुष्य को किस लिये व्यर्थ बनाया
४८ है। कौन सा मनुष्य जीता है जो मृत्यु को न देखेगा? क्या वुह
४९ समाधि के हाथ से अपना प्राण बचावेगा? सीलाह। हे प्रभु
तेरे अगले प्रेम की दया कहां है जिन्हों के कारण तू ने दाऊद से
५० अपनी सच्चाई की किरिया खाई। हे परमेश्वर अपने दास की
निंदा को स्मरण कर मैं समस्त बलवानों को अपनी गोद में
५१ लिये ऊए हों। हे परमेश्वर जिस्से तेरे बैरी निंदा करते हैं
और तेरे अभिषिक्त के पांव के चिन्ह को निन्दा करते हैं।
५२ परमेश्वर सदा धन्य हो आमीन आमीन।

९० नब्बेवां गीत ।

ईश्वर के जन मूसा की प्रार्थना ।

१ हे परमेश्वर पीढ़ी से पीढ़ी लों हमारा निवास स्थान तूही रहा।
२ पहाड़ के उत्पन्न होने के पहिले अथवा पृथिवी और जगत
३ सिरजे गये अर्थात् सनातन से सनातन लों तूही ईश्वर है। तू
मनुष्य को नाश में फेर देता है और कहता है कि हे मनुष्य के
४ संतान फिरो। क्योंकि सहस्र बरस तेरे आगे कल की नाईं हैं
५ जब बीत गया और रात के एक पहर की नाईं। तू उन्हें जैसे
बाढ़ से लेजाता है वे नींद में हैं घास की नाईं बिहान को
६ मुरझाये हैं। जो बिहान को लहलहाती है और ऊगती है
७ संध्या को काटी जाती है और मुरझा जाती है। क्योंकि हम
८ तेरे क्रोध से भस्म हो गये और तेरे कोप से व्याकुल ऊए। तू ने
हमारे अधर्म को अपने आगे और हमारे गुप्त पाप अपने
९ रूप के प्रकाश में रक्खा है। क्योंकि हमारी सारी वय तेरे क्रोध
१० में फिर गई और हमारे बरस ध्यान की नाईं। हमारे जीवन
के दिन सत्तर बरस हैं और यदि बल से अस्सी बरस
होजाय तथापि उनका बल क्लेश और दुःख है क्योंकि वुह शीघ्र
११ काटा जाता है और हम जाते रहते हैं। तेरे क्रोध का पराक्रम
१२ कौन जानता है? जैसा तेरा डर वैसा तेरा कोप है। सो
हमारे दिनों को हमें गिन्ने सिखा ऐसा कि हम ज्ञान में
१३ अपना मन लगावें। लौट हे परमेश्वर कब लों? और अपने
१४ सेवकों के विषय में पछता। तड़के अपनी दया से हमें तृप्त कर
जिसतें हम अपने जीवन भर आनंदित और मगन रहें।
१५ दुःख देने के दिनों के और बुराई देखने के बरसों के समान
१६ हमें आनंदित कर। अपना कार्य अपने दासों को और अपना
१७ विभव उनके संतानों को दिखला। और हमारे प्रभु ईश्वर की
सुन्दरता हम पर होवे और हमारे हाथों के कार्यों को हम पर
दृढ़ कर हां तू हमारे हाथों के कार्यों को दृढ़ कर।

९१ एकानवेवां गीत।

१ जो कि अतिमहान के गुप्तस्थान में बास करता है सो
२ सर्वशक्तिमान की छाया तले टिकेगा। मैं परमेश्वर के विषय
में कहोंगा कि मेरा शरण और मेरा गढ़ और मेरा ईश्वर
३ जिस पर मेरा भरोसा है। वुह निश्चय तुझे व्याधा के जाल
४ से और घोर मरी से मुक्ति देगा। वुह तुझे अपने पर तले
छिपावेगा और तू उसके पंख के तले भरोसा रखेगा उसकी
५ सच्चाई तेरी ढाल और फरी होगी। तू रात के भय से
६ अथवा दिन के उड़ते बाण से न डरेगा। और न उस मरी
से जो अंधियारे में चलती है और न उस नाश से जो मध्याह्न
७ में उजाड़ करता है। तेरे लग सहस्र गिरजावेंगे और दस
सहस्र तेरे दहिने ओर, परन्तु वुह तुम्हारे पास न आवेगी।
८ केवल तू अपनी आंखों से देखा करेगा और दुष्टों का प्रतिफल
९ देखेगा। क्योंकि तूने परमेश्वर अतिमहान मेरे शरण को
१० अपना निवास बनाया है। तुझ पर कोई बिपत्ति न पड़ेगी
११ और कोई मरी तेरे निवास के पास न आवेगी। क्योंकि तेरे
सारे मार्गों में तेरी रक्षा करने को अपने दूतों को तेरे लिये
१२ आज्ञा करेगा। वे तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे नहो कि
१३ तेरे पांव पत्थर पर लगें। तू सिंह और सांप पर पांव धरेगा
तू सिंह के बच्चे और अजगर को अपने पांव तले कुचलेगा।
१४ इस कारण कि उसने मुझ पर प्रेम रक्खा है मैं उसे बचाओंगा
और मैं इस लिये उसे बढ़ाओंगा कि उसने मेरा नाम
१५ पहिचाना है। वुह मेरी प्रार्थना करेगा और मैं उत्तर देऊंगा
बिपत्ति में मैं उसके संग होऊंगा मैं उसे छुड़ाऊंगा और
१६ उसे प्रतिष्ठा देऊंगा। मैं उसको बय बढ़ा के उसे संतुष्ट करोंगा
और अपनी मुक्ति को उसे दिखाओंगा।

९२ बानवेवां गीत ।

गीत अथवा गान विश्राम दिन के लिये ।

१ परमेश्वर का धन्य मान्ना और अतिमहान के नाम की स्तुति
२ गाना भला है। दस्तार के बाजे पर और बीन और मुरचंग
३ सुन्दर शब्द से बजा बजा के। बिहान को तेरे कोमल प्रेम को
४ और रात को तेरी सच्चाई को प्रगट करना। क्योंकि हे
परमेश्वर तू ने अपने कार्य से मुझे आनंदित किया है मैं तेरे
५ हाथों की क्रिया से मगन होंगा। हे परमेश्वर तेरे कार्य क्याही
६ बड़े हैं और तेरी चिंता अति गहिरी हैं। पशुवत जन नहीं
७ जानता है और मर्ख उसे क्या समुझता है। जब दुष्ट घास
की नाईं ऊगते हैं और सारे कुकर्मी कुम्हलाते हैं यह इस लिये
८ है कि वे सदा नाश होवें। परंतु परमेश्वर तू सर्वदा लों
९ महान रहेगा। क्योंकि हे परमेश्वर देख तेरे बैरी क्योंकि देख
१० तेरे बैरी नाश होंगे सारे कुकर्मी छिन्न भिन्न होंगे। तू गैंड़े
की सींग की नाईं मेरे सींग बढ़ावेगा परंतु मैं टटके तेल से
११ अभिषिक्त होऊंगा। परंतु मेरी आंख मेरे बैरियों को देखेंगी
और मेरे कान दुष्टों को जो मेरे बिरोध में उठते हैं सुनेंगे।
१२ धर्मी ताल पेड़ की नाईं लहलहावेगा और लबनान के सरों
१३ वृक्ष के समान बढ़ेगा। वे जो परमेश्वर के घर में लगाये गये
१४ हैं हमारे ईश्वर के आंगन में लहलहावेंगे। वे बुढ़ापे में फलेंगे
१५ वे मोटे और हरे होंगे। जिसतें प्रगट करें कि परमेश्वर मेरा
पर्वत खरा है उसमें अनीति नहीं।

९३ तिरानवेवां गीत ।

१ परमेश्वर राज्य करता है वह बिभव का वस्त्र पहिने हुए है
परमेश्वर बल से बिभूषित है उसने अपनी कटि बांधी है जगत
२ भी स्थिर है कि वुह टलाया जा नहीं सक्ता। तेरा सिंहासन तब
३ से स्थिर है तू सनातन से है। हे परमेश्वर बाढ़ उठे हैं और

बाढ़ों ने अपना शब्द उठाया बाढ़ों ने अपनी लहरें उठाईं ।
४ महान परमेश्वर बहुत से पानियों के शब्द से और समुद्र की
५ बड़ी लहरों से अतिशक्तिमान है । तेरी साक्षियां अत्यंत सच्ची
हैं हे परमेश्वर सर्वदा तेरे मंदिर के लिये पवित्रता उचित है ।

९४ चौरानवेवां गीत ।

१ हे परमेश्वर बैर लेनेवाले ईश्वर हे बैर लेनेवाले ईश्वर प्रकाश
२ हो । हे पृथिवी के बिचारी उठ और घमंडियों को पलटा दे ।
३।४ हे परमेश्वर दुष्ट कबलों दुष्ट कबलों फूला करेंगा? । वे कबलों
५ कठोर बचन निकालेंगे? और सारे कुकर्मी फूला करेंगे? । हे
परमेश्वर वे तेरे लोगों को टुकड़ा टुकड़ा करते हैं और तेरे
६ अधिकार को दुख देते हैं । वे रांड को और परदेशी को
७ घात करते हैं और अनाथों को घात करते हैं । तथापि कहते
हैं कि परमेश्वर न देखेगा और याकूब का ईश्वर चिंता न
८ करेगा । अरे पशुवत लोगो समझो और अरे मूर्खो तुम कब
९ बुद्धिमान होओगे? । क्यों जिसने कान दिया वुह न सुनेगा?
१० जिसने आंखें बनाईं क्या वुह न देखेगा? । जो अन्यदेशी को
ताड़ना करता है क्या वुह शिक्षा न देगा? जो मनुष्य को ज्ञान
११ देता है क्या वुह न जानेगा? । परमेश्वर मनुष्य की चिंतों को
१२ जानता है कि वे मिथ्या हैं । हे परमेश्वर जिसे तू ताड़ना
करता है सो मनुष्य धन्य है और अपनी व्यवस्था में से उसे
१३ सिखाता है । जिसतें तू उसे विपत्ति के दिनों में चैन देवे जब
१४ लों कि दुष्टों के लिये गड़हा न खोदाजाय । क्योंकि परमेश्वर
अपने लोगों को दूर न करेगा और अपने अधिकार को न
१५ त्यागेगा । परन्तु धर्म के लिये बिचार टपकेगा और सारे खरे
१६ अंतःकरणी उसका पीछा करेंगे । मेरे लिये दुष्टों पर कौन
१७ उठेगा मेरे लिये अधर्मियों का कौन साम्हा करेगा । जो
परमेश्वर मेरा सहायक न होता तो तनिक था कि मेरा प्राण

१८ चुपके में रहता। जब मैं ने कहा कि मेरा पांव फिसलता है
१९ तब हे परमेश्वर तेरी दया ने मुझे थामलिया। मेरे मन की अधिकाई की चिंतों में तेरी शांति ने मेरे प्राण को
२० आनंदित किया। अधर्म के सिंहासन जो व्यवस्था के द्वारा
२१ बुराई ठहराते हैं तुझे कुछ मेल है। वे धर्मी के प्राण के बिरोध में एकट्ठे होते हैं और निर्दोष लोहू को दोषी
२२ ठहराते हैं। परन्तु परमेश्वर मेरा बचाव है और मेरा
२३ ईश्वर मेरे शरण का पहाड़। वुह उन्हीं का अधर्म उन्हीं पर लावेगा और उनकी दुष्टता में उन्हें काटडालेगा हां परमेश्वर हमारा ईश्वर उन्हें काटडाले।

६५ पंचानवेवां गीत।

१ आओ हम परमेश्वर के लिये गावें आओ हम अपनी मुक्ति
२ के पहाड़ के लिये आनन्द का शब्द करें। आओ हम धन्यवाद करते हुए उसे रोकें और उसके आगे गान से आनन्द का
३ शब्द करें। क्योंकि परमेश्वर महेश्वर है और वुह सारे
४ देवों पर महाराज है। जिसके हाथ में पृथिवी की गहिराइयां
५ हैं पहाड़ों की ऊंचाइयां भी उसी की हैं। जिसका समुद्र है और उसने उसे बनाया और उसी के हाथों ने सूखी का डौल
६ किया। आओ हम दंडवत करें और झुकें और अपने
७ कर्त्ता परमेश्वर के आगे घुठने टेकें। क्योंकि वुह हमारा ईश्वर है और हम उसके झुंड के लोग और उसके हाथ की भेड़ें हैं
८ आज के दिन जो तुम उसका शब्द सुनोगे। तो अपने मन को कठोर मत करो जैसा झगड़े में और परीक्षा के दिन
९ बन में किया। जब कि तुम्हारे पितरों ने मुझे परखा और
१० जांचा और मेरा कार्य्य देखा। चालीस बरस लों मैं उस पीढ़ी से उदास था और मैंने कहा कि ये वे हैं जो अपने मन से
११ चूक करते हैं और मेरे मार्गों को न पहिचाना। उनके कारण

मैंने अपने क्रोध में किरिया खाई कि यदि वे मेरे चैन में प्रवेश करें ।

९६ छयानवेवां गीत ।

१ परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ सारी पृथिवी परमेश्वर के
२ लिये गावे । परमेश्वर का गान करो उसके नाम का धन्य मानो
३ और प्रतिदिन उसकी मुक्ति को प्रगट करो । अन्यदेशियों में उसकी महिमा का और सारे लोगों में उसके आश्चर्यों का
४ संदेश देउ । क्योंकि परमेश्वर महान और अत्यंत स्तुति के योग्य
५ है सारे देव से अधिक वुह भय के योग्य है । क्योंकि जातिगणों के सारे देव मूर्त्ति हैं परंतु परमेश्वर ने स्वर्गों को सिरजा ।
६ प्रतिष्ठा और महिमा उसके आगे हैं बल और सुंदरता
७ उसके धर्मधाम में । हे लोगों के परिवारो परमेश्वर को जानो
८ और पराक्रम और महिमा परमेश्वर ही की जानो । परमेश्वर के नाम की बडाई करो भेंट लेके उसके आंगनों में आओ ।
९ महिमा के धर्मधाम में परमेश्वर को भजो हे सारी पृथिवी
१० उसके आगे डरो । अन्यदेशियों में कहो कि परमेश्वर राज्य करता है जगत भी स्थिर रहेगा जिसतें वुह टलाया न जाय
११ वुह धर्म से लोगों का विचार करेगा । स्वर्ग आनंद करें और पृथिवी मगन होवे समुद्र और उसकी भरपूरी हाहा करें ।
१२ खेत और जो उसमें हैं आनंदित होवें तब बन के सारे पेड़
१३ परमेश्वर के आगे आनंद करेंगे । क्योंकि वुह आता है वुह पृथिवी का न्याय करने को आता है वुह सच्चाई से जगत का और धर्म से लोगों का न्याय करेगा ।

९७ सतानवेवां गीत ।

१ परमेश्वर राज्य करता है पृथिवी आनंदित होवे बड़े बड़े टापू
२ हर्षित होवें । मेघ और अंधियारे उसके आसपास हैं धर्म

२ और न्याय उसके सिंहासन की स्थिरता है। एक आग उसके आगे आगे जाती है और उसके बैरियों को चारों ओर जलाती
४ है। उसकी बिजुलियों ने जगत को उंजियाला किया पृथिवी
५ ने देखा और थर्थरा उठी। पहाड़ परमेश्वर के आगे अर्थात्
६ सारे जगत के प्रभु के आगे मोम की नाईं पिघलगये। स्वर्ग उसके धर्म को प्रगट करते हैं और सारे लोग उसके विभव को
७ देखते हैं। जो खोदी हुई मूर्त्तिन को पूजते हैं और प्रतिमा की बड़ाई करते हैं वे सब हरिया जायं सारे देवगण उसकी
८ सेवा करो। सैहून ने सुना और मगन हुई तेरे विचार के
९ कारण हे परमेश्वर यहूदा की बेटियां आनंदित हुईं। क्योंकि हे परमेश्वर तू सारी पृथिवी पर महान है तू सारे देवों से
१० अत्यंत बढ़ाया गया है। हे परमेश्वर के प्रेमियो बुराई से घिन करो वह अपने सिद्धों के प्राणों की रक्षा करता है वही उन्हें
११ दुष्टों के हाथ से छुड़ाता है। धर्मियों के लिये उंजियाला
१२ बोयागया है और आनंदता खरे अंतःकरणियों के लिये है। हे धर्मियो परमेश्वर से आनंदित होओ और उसकी पवित्रता के स्मरण के लिये धन्यवाद करो।

९८ अठानवेवां गीत।

१ परमेश्वर के लिये एक नया गीत गाओ क्योंकि उसने आश्चर्य कार्य किये हैं उसके दहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उसे जय
२ दिलाया है। परमेश्वर ने अपनी मुक्ति को प्रगट किया है उसने
३ अपने धर्म को अन्यदेशियों की दृष्टि में प्रगट किया है। उसने इसराईल के घराने के लिये अपनी दया और सचाई को स्मरण किया है पृथिवी के सारे खूंटों ने हमारे ईश्वर की मुक्ति
४ को देखा है। हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये आनंद का
५ शब्द कर बड़ा शब्द कर के आनंदित हो और स्तुति गा। बीणा से परमेश्वर के लिये गाओ बीणा से और गान के शब्द से

६ गाओ। तुरी और भेरी बजाते ऊए परमेश्वर राजा के आगे
७ आनन्द का शब्द करो। समुद्र और उसकी भरपूरी हाहा
८ करें और जगत और उसके रहनेवाले। बाढ़ें ताली बजावें
और पहाड़ियां परमेश्वर के आगे मिल के आनन्दित होवें।
९ क्योंकि वुह पृथिवी का न्याय करने आता है वुह धर्म से जगत
का और खराई से लोगों का न्याय करेगा।

९९ निन्नानवेवां गीत।

१ परमेश्वर राज्य करता है लोग थर्थरावें वुह करोबियों के मध्य
२ में बैठा है पृथिवी डगमगावे। परमेश्वर सैहून में महान है
३ और सारे लोगों से बड़ा है। वे तेरे बड़े और भयंकर पवित्र
४ नाम की स्तुति करें। राजा का बल भी बिचार से प्रीति रखता
है तू सचाई को स्थिर करता है और तू न्याय और धर्म याक़ूब
५ में करता है। परमेश्वर हमारे ईश्वर को बढ़ाओ और उसके
६ चरण पर झुको क्योंकि वुह पवित्र है। मूसा और हारून
उसके याजकों में और समूईल उनमें जो उसके नाम
लेते हैं उन्होंने परमेश्वर की प्रार्थना किई और उसने उन्हें
७ उत्तर दिया। वुह मेघ के खंभे में से उनसे बोला उन्हों ने
८ उसकी दिई ऊई साक्षियों और बिधि को पालन किया। हे
परमेश्वर हमारे ईश्वर तू ने उन्हें उत्तर दिया हे ईश्वर तू ने उन
पर क्षमा किया यद्यपि तू ने उनकी भावना का पलटा उनसे
९ लिया। परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और उसके
पवित्र पहाड़ के आगे दंडवत करो क्योंकि परमेश्वर हमारा
ईश्वर पवित्र है।

१०० सावां गीत।

स्तुति का गीत।

१ हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये आनन्द का शब्द कर।

२ आनन्दता से परमेश्वर की सेवा कर गातेऊए उसके आगे
३ पऊंच । जाने कि परमेश्वर ईश्वर है हमने आप को नहीं
परंतु उसीने हमें सिरजा हम उसके लोग और उसकी चराई
४ की भेड़ें हैं । धन्यबाद करतेऊए उसके फाटकों में और स्तुति
करतेऊए उसके आंगनों में प्रवेश करो उसका धन्य माना उसके
५ नाम का धन्यबाद करो । क्योंकि परमेश्वर भला है उसकी दया
सदा है और उसकी सचाई पीढ़ी से पीढ़ी लों है ।

१०१ एक सा एकवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

१ मैं दया और न्याय के बिषय में गाओंगा हे परमेश्वर मैं तेरे
२ आगे गाओंगा । मैं चैाकसी से सिद्ध मार्ग में चलोंगा हाय तू
मुझ पास कब आवेगा? मैं सिद्ध मन से अपने घर में
३ टहलोंगा । मैं अपनी आंखों के आगे बुरी बस्तु को न
रक्खोंगा मैं भटके ऊओं के कार्य से बैर रखता हों वह मुझे
४ लिपटा न रहेगा मुझे कुटिल अंतःकरण दूर होगा मैं
५ दुष्ट जन से अज्ञान रहोंगा । जो छिप के अपने परोसी पर
फुसफुसाता है मैं उसे नष्ट करोंगा जो ऊंची दृष्टि और अभिमानी
६ मन रखता है मैं उसकी न सहोंगा । मेरी आंखें पृथिवी के
बिश्वस्तों पर होंगी कि वे मेरे संग रहें जो सिद्धमार्ग में
७ चलता है सो मेरी सेवा करेगा । जो छली है सो मेरे घर में
८ न रहेगा और झूठा मेरे आगे स्थिर न होगा । मैं देश के
सारे दुष्टों को सवेरे नाश करोंगा जबलों परमेश्वर के नगर
से सारे कुकर्मियों को काट न डालों ।

१०२ एक सा दूसरा गीत ।

दुःखियों की प्रार्थना जब वुह डूबा जाके परमेश्वर
के आगे अपना दुःख बर्णन करता है ।

१ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन और मेरा रोना तेरे आगे
२ पहुंचे। मेरे दुःख में अपना मुंह मुझसे न छिपा मेरी ओर
कान झुका जिस दिन मैं प्रार्थना करों शीघ्र मुझे उत्तर दे।
३ क्योंकि मेरे दिन धूए की नाईं मिटगये और मेरी हड्डियां
४ चूल्हे की नाईं जल गईं। मेरा मन मारा गया और घास की
नाईं मुरझागया यहां लों कि रोटी खाने का मुझे चेत नहीं।
५ मेरे कराहने के शब्द से मेरी हड्डियां मेरे मांस से सट गईं।
६।७ मैं बनैले गडूर के तुल्य ऊआ मैं अरण्य का उल्लू बना। मैं
८ जागता हों और गौरे की नाईं छतपर एकेला हों। मेरे बैरी
दिन भर मेरी निन्दा करते हैं वे जो मेरे बिरोध में उन्मत्त हैं
९ मेरे बिरोध में किरिया खायेहैं। मैं रोटी की संती धूल फांकताहों
१० और अपने पानी में आंसू मिलाताहों। तेरे जलजलाहट
और कोप के कारण से क्योंकि तू ने मुझे उठा लिया और दे मारा।
११ मेरा वय छाया के समान घटताहै और मैं हरयाली की नाईं
१२ मुर्झायाहों। परंतु हे परमेश्वर तू सदालों बना रहेगा और
१३ तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों। तू उठेगा और सैहून पर
दया करेगा क्योंकि उसकी कृपा का समय हां उसका ठहराया
१४ समय पहुंचाहै। क्योंकि तेरे सेवक उसके पत्थरों से मगन
१५ होतेहैं और उसकी धूल पर अनुग्रह करतेहैं। अन्यदेशी
परमेश्वर के नाम से डरेंगे और पृथिवी के सारे राजा तेरी
१६ महिमा से। जब परमेश्वर सैहून को बनावेगा तब वुह अपने
१७ ऐश्वर्य में प्रगट होगा। वुह अनाथों की प्रार्थना को बूझेगा
१८ और उनकी प्रार्थना को तुच्छ न जानेगा। अवैया पीढ़ी के लिये
यह लिखाजायगा और लोग जो उत्पन्न होवेंगे परमेश्वर की
१९ स्तुति करेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने अपने धर्मधाम की ऊंचाई
२० से झांका है परमेश्वर ने स्वर्ग पर से पृथिवी पर देखा। जिसतें
बंधुए का कहरना सुने जिसतें मृत्यु के संतान को छुड़ावे।
२१ जिसतें वे सैहून में परमेश्वर का नाम प्रगट करें और

२२ यिरोशलीम में उसकी स्तुति करें। जब कि लोग और राज्य
२३ परमेश्वर की सेवा के लिये एकट्ठे ऊए हैं उसने मार्ग में मेरा
२४ बल घटादिया और मेरी बय को घटाया। मैं ने कहा हे मेरे
ईश्वर मेरे दिनों के मध्य में मुझे न उठाले तेरे बरस सारी पीढ़ी
२५ लों हैं। तू ने आरंभ में पृथिवी की नेवं डाली है और स्वर्ग
२६ तेरे हाथों का कार्य है। वे नाश होयेंगे परन्तु तू स्थिर रहेगा
हां वे सब वस्त्र की नाईं पुराने होजायेंगे तू उन्हें पहिरावा
२७ की नाईं पलटडालेगा और वे पलटजायेंगे। पर तू एकसां है
२८ और तेरे बरसों का अंत नहीं। तेरे सेवकों के लड़के बने
रहेंगे और उनके बंश तेरे आगे स्थिर रहेंगे।

१०३ एक सौ तीसरा गीत।

दाऊद का गीत।

१ हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान और सब जो मुझ में हैं
२ उसके पवित्र नाम का धन्य मानें। हे मेरे प्राण परमेश्वर का
३ धन्य मान और उसके सारे अनुग्रहों को मत भूल। वुह तेरे
सारे अधर्मों को क्षमा करता है और तेरे सारे रोगों को चंगा
४ करता है। वुह तेरे प्राण को नाश से छुड़ाता है वुह कोमल
५ दया और अति प्रेम का मुकुट तुझ पर रखता है। वुह तेरा
मुंह भलाई से तृप्त करता है तेरी तरुणाई गिद्ध की नाईं नवीन
६ होती है। परमेश्वर सारे सताये ऊए के लिये धर्म और बिचार
७ करता है। उसने अपने मार्ग मूसा को और अपने कार्य
८ इसराईल के संतानों को जनाया। परमेश्वर दयाल और
९ अनुग्राहक क्रोध में धीमा और दया में बड़ा है। वुह सदा न
१० ताड़ेगा वुह सदा रिसियाता न रहेगा। उसने हमारे पापों
की नाईं हमसे व्यवहार नहीं किया और हमारे अधर्म के
११ समान पलटा नहीं दिया। क्योंकि पृथिवी से स्वर्ग की ऊंचाई के
१२ समान उसके डरवैयों पर उसकी दया बड़ी है। जैसा पश्चिम

से पूर्व दूर है तैसा उसने हमारे पापों को हमसे दूर किया है।
१३ जैसा पिता अपने बालकों पर मया करता है तैसा परमेश्वर
१४ अपने डरवैयों पर मया करता है। क्योंकि वुह हमारे आकार
को पहिचानता है वुह स्मरण करता है कि हम धूल हैं।
१५ मनुष्य के दिन घास की नाईं हैं वुह खेत के फूल की नाईं
१६ लहलहाता है। क्योंकि पवन उस पर बहता है और वुह
१७। १८ नहीं है और उसका स्थान उसे न जानेगा। परंतु
परमेश्वर की दया उसके डरवैयों पर सनातन से सनातन लों
है और जो उसके नियम को धारण करते हैं और उसकी
आज्ञाओं को पालने के लिये स्मरण करते हैं उसका धर्म
१९ संतानों के संतानों पर है। परमेश्वर ने स्वर्ग पर अपना सिंहासन
२० सिद्ध किया है और उसका राज्य सब पर प्रभुता करता है। हे
उसके दूतो बल में सामर्थी जो उसकी आज्ञाओं पर चलते हो
और उसके वचन के शब्द को सुनते हो परमेश्वर का धन्यमानो।
२१ हे उसकी सारी सेनाओ और उसके सेवको जो उसकी इच्छा
२२ पर चलते हो परमेश्वर का धन्यमानो। हे उसके सारे कार्यो
उसके राज्य के सारे स्थानों में परमेश्वर का धन्यमानो हे
मेरे प्राण परमेश्वर का धन्यमान।

१०४ एक सौ चौथा गीत।

१ हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्यमान हे परमेश्वर मेरे ईश्वर
२ तू अति महान तू प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य से विभूषित है। जो वस्त्र
की नाईं ज्योति को ओढ़ता है और स्वर्गों को घूंघट की नाईं
३ फैलाता है। जो अपनी कोठरियों की कड़ियों को पानियों पर
रखता है और मेघों को अपना रथ बनाता और पवन के डैनों
४ पर चलता है। जो अपने दूतों को आत्मा और अपने
५ सेवकों को आग की लबर बनाता है। जिसने पृथिवी को
उसकी नेंव के आधारों पर रक्खा है कि वुह कभी टलाई न

६ जाय। तू ने उसे वस्त्र की नाईं गहिराव से ढांपा और पानी
७ पहाड़ों के ऊपर ठहर गये। वे तेरे दपट से भाग गये और
८ तेरे गर्जन के शब्द से भट जाते रहे। वे पहाड़ के ऊपर जाते
हैं और तराई के लग उस स्थान में जिसे तू ने उनके लिये
९ बनाया जाते हैं। तू ने ऐसा सिवाना बांधा है कि वे उसे
पार नहीं जासक्ते और पृथिवी को फिर के ढांप नहीं लेते।
१० जो सोतों को नीचाई में भेजता है जो पहाड़ों में बहते हैं।
११ वे खेत के हरएक पशुन को पिलाते हैं बनैले गदहे उनसे
१२ अपनी पियास मिटाते हैं। उनके आस पास आकाश के पंछी
१३ बसेंगे जो डाल डाल पर चहचहाते हैं। वुह अपनी कोठरियों
से पर्वतों को सींचता है और तेरे कार्य के फलों से पृथिवी
१४ तृप्त है। पशु के लिये घास और मनुष्य की सेवा के लिये
हरियाली वही उगाता है जिसतें वुह उनके लिये पृथिवी से
१५ आहार उत्पन्न करे। और मदिरा जो मनुष्य के मन को मगन
करती है और चिकनाई जो मुंह को चमकाती है और रोटी
१६ जो मनुष्य के मन को बल देती है। परमेश्वर के पेड़ अर्थात्
१७ लबनान के सरव जो उसने लगाये। जिसमें पंछी खोंते बनाते हैं
और बकुला का वास देवदारु पेड़ों पर है रस से भरपूर
१८ है। ऊंचे पहाड़ बन बकरियों के लिये और खरहों के लिये
१९ पर्वत शरण है। वुह ऋतुन के लिये चंद्रमा को
ठहराता है और सूर्य अपना अस्त होना पहिचानता है।
२० तू अंधियारा करताहै और रात होतीहै जिसमें सारे बन
२१ पशु फिरतेहैं। सिंह बच्चे अपने अहेर के लिये गर्जतेहैं और
२२ ईश्वर से अपना आहार ढूंढ़ते हैं। सूर्य उदय होतेही वे
२३ एकट्ठे होतेहैं और अपनी अपनी मांदों में जाबैठते हैं। मनुष्य
अपने कार्य के लिये और अपने परिश्रम के लिये सांझ लों
२४ बाहर निकलताहै। हे परमेश्वर तेरी रचना क्याही बहुत
है तूने उन सभों को बुद्धि से बनाया है पृथिवी तेरे धन से

२५ पूर्ण है। यह ऐसा बड़ा और चौड़ा समुद्र है जिसमें अगणित
२६ रेंगवैये छोटे बड़े जंतु हैं। उसमें जहाज़ें चलती हैं और तू ने
२७ लीवियाथान को उसमें कलोल करने को बनाया है। ये सब
तेरी ओर तकते हैं जिसतें तू समय पर उनका आहार पहुंचावे।
२८ जो तू उन्हें देता है सो वे लेते हैं तू अपनी मुट्ठी खोलता है
२९ तो वे उत्तम वस्तु से तृप्त होते हैं। तू अपना मुंह छिपाता है
वे दुःखी होते हैं तू उनके श्वास को फेर लेता है वे मरजाते हैं
३० और अपनी धूल में फिर जाते हैं। तू अपने आत्मा को
भेजता है वे उत्पन्न होते हैं और पृथिवी के स्वरूप को नवीन
३१ करता है। परमेश्वर का ऐश्वर्य सर्बदा होवेगा परमेश्वर अपनी
३२ क्रिया से आनन्दित होगा। वुह पृथिवी को देखता है और वुह
थर्थराती है वुह पहाड़ों को छूता है और उनसे धूआं उठते हैं।
३३ मैं तो जब लों जीता रहोंगा तबलों परमेश्वर की स्तुति करोंगा
मैं जब ताईं जीता रहोंगा परमेश्वर को सराहता रहोंगा।
३४ मेरा ध्यान उसके विषय में क्याही मीठा है मैं परमेश्वर से
३५ आनन्दित होंगा। पापी भूमि पर से नाश होजावें और दुष्ट
न होवें हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्यमान परमेश्वर की
स्तुति करो।

१०५ एक सौ पांचवां गीत।

१ परमेश्वर का धन्यमानो और उसका नाम लेउ और लोगों में
२ उसके कार्यों को वर्णन करो। उसका गीत गाओ उसकी
३ स्तुति गाओ उसके सब आश्चर्य कार्यों की चर्चा करो। उसके
पवित्र नाम की बड़ाई करो परमेश्वर के खोजियों का मन
४ आनन्दित होवे। परमेश्वर को और उसके बल को ढूंढ़ो सदा
५।६ उसके रूप को ढूंढ़ो। हे उसके दास इबराहीम के बंश और
उसके चुने हुए याक़ूब के घराने उसके आश्चर्य कार्य और
आश्चर्यों को जो उसने किये हैं और उसके मुंह के बिचार

७ को स्मरण करो। वही परमेश्वर हमारा ईश्वर है सारी पृथिवी
८ में उसका न्याय है। उसने अपने नियम को और उस वचन
९ को जो उसने सहस्र पीढ़ियों से कहा चेत रक्खो। जो उसने
१० इबराहीम से किया और इसहाक से किरिया खाई। और
उसे उसने याक़ूब को व्यवस्था के लिये और इसराईल के
११ लिये सर्वदा के नियम के कारण ठहरा के कहा। कि मैं किनान
१२ की भूमि तुझे देऊंगा यह तेरे अधिकार का भाग है। जब कि
वे गिनती में थोड़े थे हां बहुत थोड़े और उस में परदेशी थे।
१३।१४ जब वे देश देश और राज्य राज्य में फिरे किये। तब
उसने किसी को उन्हें सताने न दिया हां उसने उनके लिये
१५ राजाओं को यों दपटा। कि मेरे अभिषिक्त को मत छूओ
१६ और मेरे भविष्यद्वक्तों को न सताओ। और वुह उस देश
१७ पर अकाल लाया उसने रोटी के सारे टेक को तोड़ा। उसने
उनके आगे एक मनुष्य अर्थात् यूसफ़ को भेजा जो दास होने के
१८ लिये बेंचागया। जिसके पाओं को उन्हों ने सीकरों से दुख दिया
१९ उसका प्राण लोहे में पड़ा। जब लों परमेश्वर का वचन पूरा
२० न हुआ उसको वचन ने उसे परखा। राजा ने भेज के उसे छुड़ाया
२१ लोगों के अध्यक्ष ने उसे छोड़दिया। उसने उसे अपने घर
२२ और अपने सारे अधिकार पर प्रधान किया। कि उसके
अध्यक्षों को मनमंता बांधडाले और उसके मंत्रियों को बुद्धि
२३ सिखलावे। इसराईल भी मिसर में आया और याक़ूब हाम
२४ के देश में टिका। और उसने अपने लोगों को बहुत बढ़ाया
२५ और उन्हें उनके बैरियों से बलवान किया। अपने लोगों से
बैर अपने सेवकों से चतुराई से व्यवहार करने को उसने उनके
२६ मन को फेरा। उसने अपने दास मूसा को और अपने चुनेहुए
२७ हारुन को भेजा। उन्होंने उनके मध्य में वचन के चिह्न और
२८ हाम के देश में आश्चर्य दिखाये। उसने अंधियारा भेजा सो
२९ अंधियारा हुआ और वे उसके वचन से फिर न गये। उसने

उनके पानियों को लहू बनाया और उनकी मछलियों को
३० मारडाला। उनके देश ने उनके राजाओं की कोठरियों में
३१ बहुतसे मेंढ़क उपजाये। उसने आज्ञा किई और नानाप्रकार
३२ की मक्खियां और जूंईं उनके सारे सिवानों में आईं। उसने
मेंह की संती उन्हें ओले और उनके देश में बरती आग
३३ दिई। उसने उनके दाख और गूलर पेड़ को बिनाश किया
३४ और उनके सिवानों के पेड़ों को तोड़डाला। उसने आज्ञा
३५ किई और टिड्डियां और असंख्य कीड़े निकले। और वे उनकी
भूमि की सारी हरियालियां खागईं और उनके देश के फल
३६ भक्षण करगईं। उसने उनके देश में सारे पहिलौठों को
३७ उनके बल के प्रधान को मारा। और वुह उन्हें सोना चांदी
सहित निकाल लाया और उनकी गोष्ठियों में एक भी दुर्बल
३८ नथा। उनके निकलजाने से मिसर आनन्दित हुआ क्योंकि उनका
३९ भय उन पर पड़ाथा। उसने ढांपने के लिये एक मेघ फैलाया
४० और रात के उंजियाले के लिये आग दिई। उन्हों ने मांगा
और वुह बटेर लाया और उनको स्वर्गीय रोटियों से तृप्त
४१ किया। उसने पत्थर खोला और पानी बहिचला पानी नदी
४२ की नाईं सूखी भूमि पर बहा। क्योंकि उसने अपने पवित्र
४३ वचन को और अपने दास इबराहीम को स्मरण किया। वुह
अपने सेवकों को आनन्द के संग और अपने चुनेहुए को गाते
४४ बजाते निकाल लाया। उसने उन्हें अन्यदेशियों का देश दिया
४५ उन्हों ने लोगों के परिश्रम को अधिकार में पाया। जिसतें वे
उसकी विधि को मानें और उसकी व्यवस्था को पालें
परमेश्वर का धन्यमानो।

१०६ एक सौ छठवां गीत।

१ परमेश्वर की स्तुति करो परमेश्वर का धन्यमानो क्योंकि वुह
२ भला है और उसकी दया सदा है। कौन परमेश्वर के

पराक्रम के कार्यों को बर्णन करसक्ता है? उसकी सारी स्तुति
३ कौन करसक्ता है?। जो विचार को पालन करते हैं और
४ जो नित धर्म करता है सो धन्य। अपने लोगों के अनुग्रह से
५ हे परमेश्वर मुझे स्मरण कर हां मुझे भेंट कर। जिसतें मैं
तेरे चुने ऊओं की भलाई देखों और तेरे लोगों के आनन्द में
आनन्दित होओं और तेरे अधिकार के संग बड़ाई करों।

६ हम ने अपने पितरों की नाईं पाप किया है हम से अधर्म
७ ऊआ है हम ने दुष्टता किई है। हमारे पितरों ने मिसर में तेरे
आश्चर्यों को न समुझा उन्हों ने तेरे दया की अधिकाई को
स्मरण न किया परन्तु समुद्र पर अर्थात् लाल समुद्र पर तुझे
८ खिजाया। तथापि उसने अपने नाम के लिये उन्हें बचाया
९ जिसतें वुह अपने बड़े पराक्रम को जनावे। उसने लाल समुद्र
को भी दपटा और वुह सूख गया वुह उन्हें गहिरापे में से
१० जैसा बन में से पार ले गया। शत्रु के हाथ से उसने उन्हें
११ बचाया और बैरी के हाथों से छुड़ाया। पानियों ने उनके
१२ बैरियों को ढांप लिया उनमें से एक भी न बचा। तब वे
१३ उसकी बातों पर विश्वास लाये उन्हों ने उसकी स्तुति गाई। वे
झट उसके कार्यों को भूल गये उन्हों ने उसके मंत्र की बाट न
१४ जोही। परन्तु उन्हों ने बन में कुइच्छा किई और बन में ईश्वर
१५ को परखा। उसने उनकी बांछा पूरी किई परन्तु उनके प्राण
१६ में दुर्बलता भेजी। उन्हों ने तंबू में मूसा पर और
१७ परमेश्वर के सिद्ध हारुण पर डाह किया। सो पृथिवी फटी
और दासान को निंगल गई और अबिराम की जथा को ढांप
१८ लिया। और उनकी जथा में आग बरी उस लवर ने
१९ दुष्टों को भस्म किया। उन्होंने होरेब में एक बछिया
२० बनाई और ढाली ऊई मूर्त्ति के आगे दंडवत किई। इसी
रीति से उन्हों ने उसके ऐश्वर्य को एक बैल की मूर्त्ति से जो घास
२१ खाता है बदलडाला। वे अपने मुक्तिदाता ईश्वर को जिस ने

२२ मिसर में बड़े बड़े कार्य किये भूल गये। और आश्चर्य कार्य
२३ हाम के देश में और भयंकर कार्य लाल समुद्र पर। इस
लिये उसने कहा कि मैं उन्हें नाश करोंगा यदि उसका चुना
हुआ मूसा उस दरार में उसके आगे न खड़ा होता जिसतें
२४ उसके क्रोध को फेरे न होवे कि वुह नाश करडाले। हां
उन्हों ने मनोनीत भूमि को तुच्छ जाना वे उसके बचन पर
२५ विश्वास न लाये। परन्तु अपने तंबू में कुड़कुड़ाये और परमेश्वर
२६ के शब्द के श्रोता न हुए। तब उसने अपना हाथ उनके
२७ विरोध में उठाया कि उन्हें बन में गिरा दे। और उनके
वंश को भी जातिगणों में गिरा दे और उन्हें देशों में बिथरावे।
२८ वे एकट्ठे होके बाआलफाऊर से भी मिल गये और
२९ मृतकों के बलिदान खाने लगे। यों उन्हों ने अपनी चालों से
३० उसे खिजा के रिसाया और मरी उनमें पैठी। उस समय में
फिनहास खड़ा हुआ और उसने न्याय किया सो मरी
३१ थम गई। और यह उसके लिये पीढ़ी से पीढ़ी लों सर्वदा के
३२ लिये धर्म गिना गया। उन्हों ने फिर उसे झगड़े के
पानियों पर भी रिसाया यहां लों कि उनके कारण
३३ मूसा का बुरा हुआ। क्योंकि उन्हों ने उसके आत्मा को
खिजाया ऐसा कि वुह अपने होंठों से अनुचित बोला।
३४ उन्हों ने उन जातिगणों को जिनके विषय में परमेश्वर की
३५ आज्ञा हुई नाश न किया। परन्तु अन्यदेशियों में मिल गये
३६ और उनके कार्य सीखे। और उन्हों ने उनकी मूर्त्तिन की सेवा
३७ किई जो उनके लिये फंदा हुआ। उन्हों ने तो अपने बेटों
और अपनी बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया।
३८ और निर्दोष लोहू को अर्थात् अपने बेटों और अपनी बेटियों
को घात किया कि उन्हों ने उनको किनान की मूर्त्तिन के आगे
३९ बलि किया और देश लोहू से अशुद्ध हुआ। यों वे अपने
कार्यों में अपवित्र हुए और अपनी अपनी भावना से व्यभिचार

४० किया। तब परमेश्वर का क्रोध अपने लोगों पर भड़का ऐसा
४१ कि उसने अपने अधिकार से घिन किया। और उसने उन्हें अन्यदेशियों के हाथ में कर दिया सो उनके वैरियों ने उन
४२ पर प्रभुता किई। उनके शत्रुन ने भी उन्हें सताया आर वे
४३ उनके हाथ के वश में होगये। उसने कईबार उन्हें छुड़ाया परंतु उन्हें ने अपने परामर्ष से उसे खिजाया और अपने
४४ अधर्म के कारण दीनहीन होगये। तथापि उसने उनका रोना
४५ सुनतेही उनके दुःख को बूझा। उसने उनके लिये अपनी बाचा को स्मरण किया और अपनी दया को अधिकाई के
४६ समान पछताया। उसने ऐसा किया कि उन सभों ने भी जो
४७ उन्हें बंधुआ करके ले गये उन पर मया किई। हे परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें बचा और हमें अन्यदेशियों में से बटोर जिसतें तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें और तेरी स्तुति में
४८ आनन्दित होवें। परमेश्वर इसराईल का ईश्वर सनातन से सनातन लें धन्य और सारे लोग बोलें आमीन परमेश्वर का धन्यवाद करो।

१०७ एक सो सातवां गीत ।

१ परमेश्वर का धन्यमाने क्योंकि वुह भला है और उसकी दया
२ सदा है। परमेश्वर के तारित यों कहें जिन्हें उसने वैरियों के
३ हाथ से छुड़ाया है। और उन्हें देशों से एकट्ठा किया पच्छिम
४ और पूर्ब उत्तर और समुद्र से। वे बन में सूने मार्ग में भ्रमते
५ थे और उन्हें कोई बसाव के लिये नगर न मिलताथा। भूखे
६ प्यासे उनका प्राण मूर्छित था। तब उन्हों ने अपनी बिपत्ति में
७ परमेश्वर को पुकारा उसने उनके क्लेशों से उन्हें छुड़ाया। और वुह उन्हें सीधे पथ में लेगया जिसतें वे बसाव के नगर में
८ पहुंचे। उसकी भलाई के और मनुष्य के संतानों पर उसके आश्चर्य कार्यों के लिये हाय कि मनुष्य के संतान परमेश्वर की

९ स्तुति करते। क्योंकि वुह लालसित प्राणी को तृप्त करता है
१० और भूखे प्राणी को संतुष्ट करता है। जो दुख
और लोहे से बंधायमान होके अंधेरे में और मृत्यु की छाया
११ में बैठे हैं। क्योंकि वे ईश्वर के बचन से फिर गये और अति
१२ महान के मंत्र को तुच्छ जाना। इस लिये उसने उनके
अंतःकरण को परिश्रम से घटाया वे गिरपड़े और कोई
१३ सहायक न था। तब अपनी बिपत्ति में उन्होंने परमेश्वर को
१४ पुकारा और उसने उन्हें उनके क्लेशों से छुड़ाया। उसने उन्हें
अंधियारे और मृत्यु की छाया से बाहर निकाला और उनके
१५ बंधनों को तोड़डाला। उसकी भलाई के लिये और मनुष्य
के संतानों पर उसके आश्चर्य कार्यों के लिये हाय कि मनुष्य
१६ परमेश्वर की स्तुति करते। क्योंकि उसने पीतल के फाटकों को
१७ तोड़ा है और लोहे के अड़ंगों को काटा। मूर्ख लोग
१८ अपने अपराध से और अधर्म से कष्टित हैं। उनका प्राण
हरप्रकार के भोजन से घिन करता है और वे मृत्यु के फाटकों
१९ के लग आ पहुंचते हैं। तब वे अपनी बिपत्ति में परमेश्वर
२० को पुकारते हैं और वुह उन्हें उनके क्लेशों से छुड़ाता है। उसने
अपना बचन भेज के उन्हें चंगा किया और उनके नाशों से
२१ उन्हें छुड़ाया। उसकी भलाई के लिये मनुष्य के संतानों पर
और उसके आश्चर्य कार्यों के लिये हाय कि मनुष्य परमेश्वर की
२२ स्तुति करते। वे धन्यवाद का बलि चढ़ावें और गातेहुए उसके
२३ कार्यों का वर्णन करें। जो जहाज़ों में समुद्र पर जाते
२४ हैं जो बड़े पानियों में कार्य रखते हैं। वेही परमेश्वर के कार्यों
२५ को और गंभीर में उसके आश्चर्यों को देखते हैं। क्योंकि वुह
आज्ञा करता है और आंधी उठाता है जो उसकी लहरें उठाती
२६ है। वे स्वर्ग लों चढ़तेहैं और फिर गंभीर में उतरतेहैं उनका
२७ प्राण दुख के मारे गलजाता है। वे मतवाले की नाईं डगमगाते
२८ फिरते हैं उनके ज्ञान संपूर्ण लोप होगये हैं। तब वे अपनी

विपत्ति में परमेश्वर को पुकारते हैं और वुह उनके कष्टों से
२९ उन्हें छुड़ाता है। वुह आंधी को स्थिर करता है ऐसा कि उसकी
३० लहरें थमजाती हैं। तब चैन मिलने के कारण वे आनन्दित
होते हैं सो जिस घाट में वे जाया चाहते हैं वुह उन्हें ले
३१ पहुंचाता है। उसकी भलाई के लिये और मनुष्यों के संतानों पर
उसके आश्चर्य कार्यों के लिये हाय की मनुष्य परमेश्वर की स्तुति
३२ करते। लोगों की मंडली में भी वे उसे बढ़ावें और प्राचीनों
३३ की सभा में उसकी स्तुति करें। वुह नदियों को बन और
३४ पानी के सोतों को सूखी भूमि बनाडालता है। बसवैये की दुष्टता
३५ के कारण से वुह फलवंत देश को नोनखार बनाता है। वुह बन
३६ को झील और सूखी भूमि को सोते बनाता है। वहां वुह भूखों
३७ को बसाता है जिसतें वे बसाव के लिये नगर सिद्ध करें। और
खेती करें और दाखों की बारी लगावें जो बढ़ती का फल
३८ उगावे। वुह उन्हें भी आशीष देता है सो वे बहुत बढ़जाते हैं
३९ और उनके पशु को घटने नहीं देता। वे अंधेर और विपत्ति
४० और शोक के मारे दीनहीन होते हैं और घटजाते हैं। वुह
अध्यक्षों को तुच्छ करता है और अपथ अरण्य में उन्हें भ्रमाता
४१ है। तब वुह कंगाल को दुःखों से उभाड़ता है और झुंड की
४२ नाईं उसका घराना बनाता है। धर्मी देखेंगे और आनन्दित
४३ होंगे और सारा अधर्म अपना मुंह बंद करेगा। बुद्धिमान
कौन है जो इन वस्तुन का सोच करेगा वे ही परमेश्वर की
कोमल दया को समझेंगे।

१०८ एक सौ आठवां गीत।

दाऊद का गान अथवा गीत ।

१ हे ईश्वर मेरा मन लैस है मैं अपने विभव के संग गाओंगा
२ और स्तुति करोंगा। जाग हे नबल और बीणा मैं भोर को
३ जागोंगा। हे परमेश्वर मैं लोगों के मध्य में तेरी स्तुति करोंगा

४ और देश गणों में तेरी स्तुति गाओंगा। क्योंकि तेरी दया स्वर्गों
५ से ऊंची है और तेरी सच्चाई मेघ लों पहुंचती है। हे ईश्वर
तू स्वर्गों से ऊपर बढ़ाया जा और तेरा बिभव सारी पृथिवी
६ से ऊपर। जिसतें तेरा प्रिय छुड़ाया जाय अपने दहिने हाथ
७ से बचा और मेरी सुन। ईश्वर ने अपनी पवित्रता में कहा है
कि मैं आनन्दित होंगा मैं शखीम को बिभाग करोंगा और
८ सकूस की तराई को नापोंगा। गिलियाद मेरा मनस्सा मेरा
अफरायम भी मेरे सिर का बल है यहूदा मेरा व्यवस्थादायक।
९ मवाब मेरे धोने का पात्र अदूम पर मैं अपनी जूती चलाऊंगा
१० फिलस्तिया पर मैं जय शब्द करोंगा। दृढ़ नगर में कौन मुझे
११ ले जायगा? अदूम में मुझे कौन पहुंचावेगा?। हे ईश्वर क्या तू
नहीं जिसने हमें त्यागा है हे ईश्वर तू क्या हमारी सेनाओं के
१२ संग न चलेगा?। दुःख से हमें बचा क्योंकि मनुष्य की सहाय
१३ वृथा है। ईश्वर से हम शूरता करेंगे क्योंकि वही हमारे
बैरियों को रौंदडालेगा।

१०९ एक सौ नौवां गीत।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१।२ हे मेरे स्तुति के ईश्वर चुप मत हो। क्योंकि दुष्टों और छल
का मुंह मेरे विरुद्ध खुला है वे झूठी बातें मेरे बिषय में
३ कहते हैं। उन्होंने बैर की बातों से मुझे घेरलिया है और वे
४ अकारण मुझसे लड़ते हैं। वे मेरे प्रेम की संती मेरे बैरी हैं
५ परंतु मैं प्रार्थना करता हों। उन्होंने मेरी भलाई की संती बुराई
६ और मेरे प्रेम की संती बैर का पलटा दिया है। तू
एक दुष्ट जन को उस पर ठहरा और उसके दहिने हाथ
७ में शैतान को खड़ा कर। जब उसका बिचार कियाजावे तो
८ वुह दोषी ठहरे और उसकी प्रार्थना पाप होवे। उसके दिन
९ थोड़े होवें उसका पद दूसरा लेवे। उसके संतान अनाथ

१० और उसकी स्त्री रांड होवे। उसके संतान नित बहेतू होके भीख
११ मांगें वे उजाड़ों में ढूंढ़ते फिरें। उसका सब कुछ निचोरी लेवें
१२ और परदेशी उसके परिश्रम को लूट लेवें। कोई उस पर दया
१३ न करे उसके अनाथ संतानोंपर कोई अनुग्रह न करे। उसके
परिवार काटेजायें और उनका नाम अवैया पीढ़ी में
१४ मिटायाजाय। उसके पितरों के अधर्म परमेश्वर के आगे
स्मरण कियेजायें और उसकी माता का पाप मिटाया न जाय।
१५ वे परमेश्वर के आगे नित बने रहें जिसतें वुह उनका स्मरण
१६ पृथिवी पर से काटडाले। क्योंकि उसने दया करने को स्मरण
न किया परंतु उसने दरिद्र और दीनहीन को सताया जिसतें
१७ टूटे अंतःकरण को मारडाले। जैसा उसने स्राप को चाहा
तैसा उस पर आपड़े और जैसा वुह आशीष से उदास रहा
१८ तैसा वुह उस्से दूर रहे। जैसा उसने स्राप को वस्त्र की नाईं
पहिन लिया तैसा वुह पानी की नाईं उसकी अंतड़ियों में और
१९ तेल की नाईं उसकी हड्डियों में पैठे। वुह उसके लिये ऐसा
होवे जैसे वस्त्र जो उसे छिपा लेता है और जैसे पटूका जो
२० सदा उसकी कटि में लिपटा रहताहै। परमेश्वर की ओर
से मेरे बैरियों का और उनका जो मेरे प्राण के विरोध में
२१ बुरा कहतेहैं यह पलटा होगा। पर हे परमेश्वर ईश्वर
अपने नाम के लिये दया कर कि तेरी दया अच्छी है तू मुझे
२२ छुड़ादे। क्योंकि मैं कंगाल और दीन हों और मेरा अंतःकरण
२३ मुझ में घायलहै। मैं ढलती ऊई छाया की नाईं जातारहा
२४ मैं टिड्डी की नाईं चंचल हों। मेरे घुठने उपवास से निर्बल
२५ होगये और मेरे मांस में चिकनाई न रही। मैं उनके लिये
२६ निन्दा ऊआ वे मुझे देखते हैं और सिर हिलातेहैं। हे
परमेश्वर मेरे ईश्वर मेरी सहाय कर अपनी दया के समान
२७ मुझे मुक्ति दे। जिसतें वे जानें कि यह तेरा हाथ है और
२८ तुझ परमेश्वर ने यह किया है। वे स्राप देवें पर तू आशीष

दे जब वे उठें तो लज्जित होजायें पर तेरा सेवक आनन्दित
२९ होवे। मेरे बैरी को लाज का वस्त्र पहिना और उन्हें
३० घबराहट की चादर उढ़ा। मैं अपने मुंह से परमेश्वर की
३१ अत्यंत स्तुति करोंगा मैं मंडली में उसकी स्तुति करोंगा। क्योंकि
वुह कंगाल के दहिने हाथ खड़ा होगा जिसतें उसे उसके
प्राण के बिचारियों से छुड़ावे।

११० एक सौ दसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ परमेश्वर ने निश्चय मेरे प्रभु को कहा कि तू मेरे दहिने हाथ बैठ
२ जब लों मैं तेरे बैरियों को तेरे चरण का पीढ़ा करों। परमेश्वर
बल का राजदंड सैहून में से भेजेगा तू अपने बैरियों के मध्य में
३ प्रभुता कर। तेरे लोग तेरे सामर्थ्य के दिन पवित्रता के
सौंदर्य्य में मनमनता बली होंगे और तेरी तरुणाई की ओस
४ विहान की कोख से अधिक होगी। परमेश्वर ने किरिया खाई
है और वुह न पछतावेगा कि तू मलकीसिदक की पांती में
५ सदा याजक है। प्रभु अपने क्रोध के दिन तेरे दहिने हाथ
६ राजाओं को दे मारेगा। वुह अन्यदेशियों के मध्य में बिचार
करके लोथों से पूर्ण करेगा वुह बहुत से देशों पर सिर को
७ घायल करेगा। वुह मार्ग में नाली से पीयेगा इसी लिये वुह
सिर उठावेगा।

१११ एक सौ ग्यारहवां गीत।

१ परमेश्वर की स्तुति करो मैं खरों की सभा में और मंडली में मैं सारे
२ मन से परमेश्वर की स्तुति करोंगा। परमेश्वर के कार्य्य महान
३ हैं जो उस्से आनन्दित हैं सो उसे ढूंढ़ते हैं। उसका कार्य
प्रतिष्ठित और ऐश्वर्यमान है और उसका धर्म सर्वदा लों रहता
४ है। उसने अपना आश्चर्य कार्य स्मरण करवाया है परमेश्वर

५ कृपाल और दया से पूर्ण है। उसने अपने डरवैयों को भोजन
६ दिया है वुह अपनी वाचा को सदा मन में रक्खेगा। उसने
अपने कार्यों का बल अपने लोगों को दिखलाया है जिसतें वुह
७ उन्हें अन्यदेशियों का अधिकार देवे। उसके हाथों की क्रिया
८ सत्यता और बिचार हैं उसकी सारी आज्ञा सत्य हैं। वे सदा
और सदा के लिये स्थिर हैं वे सचाई और खराई से कियेगये
९ हैं। उसने अपने लोगों के लिये मुक्ति भेजी अपनी बाचा को
सदा के लिये आज्ञा किई है उसका नाम पवित्र और भयानक
१० है। परमेश्वर का भय ज्ञान का आरंभ है और जो उन्हें
मानते हैं उनकी बुद्धि उस पर कार्य करती है स्तुति सदा
उसी के लिये है।

११२ एक सौ बारहवां गीत।

१ ईश्वर की स्तुति करो जो परमेश्वर से डरता है और उसकी
२ आज्ञाओं से अत्यंत आनन्दित है सो धन्य है। उसका बंश
पृथिवी पर बलवंत होगा खरों के संतान आशीषित होंगे।
३ उसके घर में धन और संपत्ति होगी और उसका धर्म सदा
४ रहता है। खरों के लिये अंधियारे में उंजियाला चमकता है
५ वुह कृपाल और दया से पूर्ण और धर्मी है। उत्तम मनुष्य
अनुग्रह करके ऋण देता है वुह अपने कार्यों को बिचार के
६ साथ सुधारता है। निश्चय वुह कभी टलाया न जायगा।
७ धर्मी सदा स्मरण कियाजायगा वुह कुसमाचार से भय न
करेगा उसका मन दृढ़ है उसका भरोसा परमेश्वर पर है।
८ उसका मन स्थिर है जब लों वुह अपनी इच्छा बैरी पर न देखे
९ वुह न डरेगा। उसने बिथराया है उसने कंगालों को दिया है
उसका धर्म सदा लों रहता है उसका सींग प्रतिष्ठा से उठाया
१० जायगा। दुष्ट देखेगा और कुढ़ेगा और दांत किड़मिड़ावेगा
और गल जायगा दुष्टों का अभिलाष नाश होजायगा।

११३ एक सौ तेरहवां गीत ।

१ परमेश्वर की स्तुति करो हे परमेश्वर के दासो उसकी स्तुति
२ करो परमेश्वर के नाम की स्तुति करो। परमेश्वर का नाम इस
३ घड़ी से सदा लों धन्य होवे। सूर्य के उदय से लेके उसके अस्त
४ लों परमेश्वर के नाम की स्तुति होय। परमेश्वर सारे जातिगणों
५ पर महान है और उसका ऐश्वर्य स्वर्गों से ऊपर है। परमेश्वर
हमारे ईश्वर की नाईं कौन है जो रहने के लिये अपने को
६ उभाड़ता है। जो स्वर्ग और पृथिवी पर दृष्टि करने के लिये आप
७ को दीन करता है। वुह कंगालों को धूलि में से उभाड़ता है
८ और दीन को घूर पर से उठाता है। जिसतें वुह उसे
अध्यक्षों के संग अर्थात् अपने लोगों के अध्यक्षों के संग बैठावे।
९ वुह बांझ स्त्री को घर में बसाता है जिसतें वुह बच्चों की माता
आनंद के संग हो परमेश्वर की स्तुति करो।

११४ एक सौ चौदहवां गीत ।

१ जब इसराईल मिसर से निकला और याकूब का घराना
२ परदेशी बोली के लोगों में से। तो यहूदा उसका धर्मधाम
३ हुआ और इसराईल उसका राज्य। समुद्र देख के भागा
४ और अर्दन उलटी बही। पहाड़ों ने मेंढ़ों की नाईं और टीलों
५ ने मेम्नों की नाईं कुदक्का मारा। हे समुद्र तुझे क्या हुआ जो
६ तू भागा? और हे अर्दन कि तू उलटी बही?। और क्या
हुआ हे पहाड़ो जो तुम ने मेंढ़ों की नाईं और हे टीलो तुम
७ ने मेम्नों की नाईं कुदक्का मारा है। हे पृथिवी तू प्रभु के आगे
८ और याकूब के ईश्वर के आगे कांप। जो पर्वत को झील
बनाता है और पथरी को पानियों का सोता।

११५ एक सौ पन्दरहवां गीत ।

१ हे परमेश्वर हमारे लिये नहीं हमारे लिये नहीं परन्तु अपनी दया के लिये और अपनी सचाई के लिये तेरे ही नाम की प्रतिष्ठा २। ३ होवे। अन्यदेशी क्यों कहें कि उनका ईश्वर कहां है?। परन्तु हमारा ईश्वर तो स्वर्ग पर है जो कुछ उसने चाहा सो किया ४ है। उनकी मूर्त्ति मनुष्यों के हाथ की बनाई ऊई सोना चांदी हैं। ५ वे मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं वे आंखें रखती हैं पर देखती ६ नहीं। वे कान रखती हैं पर सुनती नहीं उनकी नाक हैं परन्तु ७ सूंघती नहीं। वे हाथ रखती हैं पर छूती नहीं वे पाओं रखती ८ हैं पर चलती नहीं वे अपने गले से बोल नहीं सक्तीं। उनके बनवैये और वे सब जो उनका भरोसा रखते हैं उन्हीं की ९ नाईं हैं। हे इसराईल परमेश्वर पर भरोसा रख वही उनका १० सहायक और उनकी ढाल है। हे हारून के घराने परमेश्वर ११ पर भरोसा रख कि वही उनका सहायक और ढाल है। तुम जो परमेश्वर से डरते हो परमेश्वर पर भरोसा रक्खो वही १२ उनका सहायक और ढाल है। परमेश्वर ने हमें स्मरण किया है वही आशीष देगा वुह इसराईल के घराने पर आशीष १३ देगा वुह हारून के घराने को आशीष देगा। वुह उनको जो परमेश्वर से डरते हैं छोटों बड़ों सहित आशीष देगा। १४ परमेश्वर तुम को और तुम्हारे लड़कों को बढ़ाता जायगा। १५ तुम आकाश और पृथिवी के सृष्टिकर्ता परमेश्वर के आशीषित १६ होओ। स्वर्ग अर्थात् स्वर्गगण परमेश्वर के हैं परन्तु उसने १७ पृथिवी मनुष्य के वंश को दिई है। मृतक परमेश्वर की स्तुति १८ नहीं करते और न वे सब जो समाधि में उतरते हैं। परन्तु हम इस समय से लेके सदा लों परमेश्वर की स्तुति किया करेंगे परमेश्वर का धन्यबाद करो।

११६ एक सौ सोलहवां गीत ।

१ मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हों इस कारण कि उसने मेरा शब्द
२ और मेरी बिनतियां सुनी। और उसने मेरी ओर कान
झुकाया सो जब लों मैं जीता रहोंगा उसका नाम लिये
३ जाओंगा। मृत्यु के दुःखों ने मुझे घेरा और समाधि की
४ पीड़ा ने मुझे पकड़ा मैं दुःखी और शोकित हुआ। तब मैं ने
परमेश्वर का नाम लिया कि हे परमेश्वर कृपा करके मेरा
५ प्राण बचा। परमेश्वर अनुग्राहक और धर्मी है और हमारा
६ ईश्वर दयाल है। परमेश्वर सूधे लोगों को रक्षा करता है मैं
७ दीन होगया था और उसने मेरी सहाय किई। हे मेरे प्राण
अपने बिश्राम में फिरजा क्योंकि परमेश्वर ने तुझ पर मन
८ खोल के व्यवहार किया है। तू ने मुझे मृत्यु से और मेरी
आंखों को आंसू से और मेरे पाओं को फिसलने से बचाया है।
९।१० जीवतों के देश में मैं परमेश्वर के आगे चलोंगा। मैं बिश्वास
लाया इसी लिये मैं ने कहा, मुझ पर बड़ी बिपत्ति थी।
११ मैं ने अपनी व्याकुलता में कहा कि सारे मनुष्य झूठे हैं।
१२ मैं परमेश्वर को उसके सारे पदारथों के लिये जो मुझ पर
१३ हैं क्या देउं। मैं मुक्ति का कटोरा लेके परमेश्वर का नाम
१४ लेउंगा। मैं अब उसके सारे लोगों के आगे अपनी मनौती
१५ पूरी करोंगा। परमेश्वर की दृष्टि में उसके साधुन की मृत्यु
१६ बहुमूल्य है। हे परमेश्वर मैं निश्चय तेरा दास हों मैं तेरा
१७ दास और तेरी दासी का पुत्र तू ने मेरे बंधन खोले। मैं तेरे
आगे धन्यवाद का बलि चढ़ाओंगा और परमेश्वर का नाम
१८ लेउंगा। मैं अभी उसके सारे लोगों के आगे अपनी मनौती
१९ परमेश्वर के लिये पूरी करोंगा। परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों
में और तुझ में हे यिरोशलीम तेरे मध्य में परमेश्वर का
धन्यवाद होवे।

११७ एक सौ सत्तरहवां गीत ।

१ हे सारे जातिगण परमेश्वर की स्तुति करो हे सारे लोगो
२ उसका धन्यमानो । क्योंकि उसकी दया हम पर बक़त है
और उसकी सच्चाई सदा है परमेश्वर का धन्यवाद करो ।

११८ एक सौ अठारहवां गीत ।

१ परमेश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि वुह भला है और उसकी
२ दया सदा है । इसराईल अब कहे कि उसकी दया सदा
३ है । हारुन का घराना अब कहे कि उसकी दया सदा है ।
४ वे जो परमेश्वर से डरते हैं अब कहें कि उसकी दया सदा है ।
५ मैं ने दुःख में परमेश्वर का नाम लिया परमेश्वर ने मुझे
६ बिस्तारित स्थान में उत्तर दिया । परमेश्वर मेरी ओर है
७ मैं न डरोंगा, मनुष्य मेरा क्या करसक्ता है । परमेश्वर मेरे
सहायकों में से है सो मैं अपने घृणाकारियों को देखोंगा ।
८ मनुष्य पर भरोसा करने से परमेश्वर पर भरोसा करना
९ भला है । अध्यक्षों पर भरोसा करने से परमेश्वर पर
१० भरोसा करना भला है । सारे जातिगणों ने मुझे घेर लिया
११ परंतु मैं परमेश्वर के नाम से उन्हें नाश करोंगा । उन्हों ने
तो मुझे घेरा उन्हों ने तो मुझे घेरा पर मैं परमेश्वर के नाम
१२ से उन्हें नाश करोंगा । उन्हों ने तो मुझे मधुमाखी की नाईं
घेरा वे कांटों की आग के समान बुझगये क्योंकि मैं तो
१३ परमेश्वर के नाम से उन्हें नाश करोंगा । तू ने मुझे गिराने
के लिये अत्यंत गोदा परंतु परमेश्वर ने मेरी सहाय किई ।
१४ परमेश्वर मेरा बल और मेरा गान है और वही मेरी मुक्ति
१५ हुआ । धर्मियों के तंबूओं में आनन्द का और मुक्ति का शब्द
१६ है परमेश्वर का दहिना हाथ शूरता करता है । परमेश्वर
का दहिना हाथ बढ़ायागया परमेश्वर का दहिना हाथ शूरता
१७ करता है । मैं न मरोंगा परन्तु जीओंगा और परमेश्वर

१८ की क्रिया का वर्णन करोंगा। परमेश्वर ने मुझ पर अति
१९ ताड़ना किई परंतु उसने मुझे मृत्यु के वश में न किया। धर्म
के फाटक मेरे लिये खोलो, मैं उनमें से प्रवेश करोंगा और
२० परमेश्वर की स्तुति करोंगा। परमेश्वर का यह फाटक जिसमें
२१ से धर्मी भीतर जायेंगे। मैं तेरी स्तुति करोंगा क्योंकि तू ने मेरी
२२ सुनलिई और तू मेरी मुक्ति ऊआ। जिस पत्थर को थवइयों
२३ ने निकम्मा ठहराया सो कोनेका सिरा ऊआ। यह परमेश्वर
२४ से है और हमारी दृष्टि में आश्चर्य है। यह दिन परमेश्वर
ने बनाया है हम तो उसमें आनन्द करेंगे और मगन होवेंगे।
२५ हे परमेश्वर मैं बिनती करता हों बचा हे परमेश्वर मैं बिनती
२६ करतहों भाग्यमानी दे। धन्य है वुह जो परमेश्वर के नाम से
आता है हम परमेश्वर के मन्दिर में से तुम्हें आशीष दिया है।
२७ परमेश्वर वुह ईश्वर है जिसने हमें उंजियाला दिखलाया है
बलिदान को यज्ञबेदी के सींगोंही पर रस्सियों से बांधो।
२८ तू मेरा ईश्वर है मैं तेरी स्तुति करोंगा तू मेरा ईश्वर है मैं तुझे
२९ बढ़ाओंगा। परमेश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि वुह भला है
और उसकी दया सदा है।

११९ एक सौ उन्नीसवां गीत।

अलिफ।

१ जो मार्ग में सिद्ध हैं और जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलते
२ हैं सो धन्य हैं। जो उसकी साक्षियों को धारण करते हैं
३ और अपने सारे मन से उसे ढूंढ़ते हैं सो धन्य हैं। वे अधर्म
४ भी नहीं करते वे उसके मार्गों पर चलते हैं। तू ने ध्यान से
५ अपनी आज्ञा पर चलने को आज्ञा किई। हाय कि तेरी
६ विधिन को पालन करने को मैं चलाया जाओं। जब मैं तेरी
७ सारी आज्ञाओं को मानोंगा तब मैं लज्जित न होंगा। जब मैं
तेरे धर्म के बिचारों को सीखोंगा तब मैं मन की खराई से

८ तेरी स्तुति करोंगा। मैं तेरी विधि को पालन करोंगा तू मुझे सर्वथा मत त्याग।

बेत ।

९ तरुण मनुष्य किस रीति से अपने मार्ग को पवित्र करेगा?
१० तेरे वचन के समान चौकस होने से। मैं ने अपने सारे मन से तेरी खोज किई है तू अपनी आज्ञाओं से मुझे भरमने
११ मत दे। मैं ने तेरे वचन को अपने मन में छिपाया है
१२ जिसतें मैं तेरे विरुद्ध पाप न करों। हे परमेश्वर तू धन्य है
१३ अपनी विधि मुझे सिखला। मैं ने अपने होंठों से तेरे मुंह
१४ के सारे न्याय को बर्णन किया। मैं तेरी साक्षियों के मार्ग
१५ में ऐसा आनन्दित हुआ हों जैसे सारे धन से। मैं तेरी
१६ आज्ञाओं पर ध्यान करोंगा और तेरे मार्गों को मानोंगा। मैं तेरी विधि से संतुष्ट होओंगा मैं तेरे वचन न भूलोंगा।

गिमिल ।

१७ अपने सेवक से मन खोल के व्यवहार कर जिसतें जीओं
१८ और तेरे वचन को पालों। मेरी आंखें खोल जिसतें
१९ मैं तेरी व्यवस्था में आश्चर्य कार्य देखों। मैं पृथिवी पर परदेशी हों अपनी आज्ञाओं को मुझ से मत छिपा।
२० मेरा प्राण हरघड़ी तेरे न्याय की लालसा के मारे फटता
२१ है। तू ने अहंकारी स्रापितों को जो तेरी आज्ञाओं से
२२ भटकते हैं दपटा है। निन्दा और तुच्छता को मुझ से दूर कर
२३ क्योंकि मैं ने तेरी साक्षियों को पालन किया है। अध्यक्षों ने भी बैठ के मेरे बिरुद्ध कहा परंतु तेरे सेवक ने तेरी विधि पर
२४ ध्यान लगाया है। तेरी साक्षियां मेरा आनन्द और मंत्र के जन हैं।

डालेथ ।

२५ मेरा प्राण धूल से सटा है तू अपने वचन के समान मुझे

२६ जिला । मैं ने अपने पथ प्रगट किये और तू ने मेरी सुनी
२७ है मुझे अपनी बिधि सिखला । अपनी आज्ञा का मार्ग मुझे
२८ समझा जिसतें मैं तेरे आश्चर्य कार्यों की चर्चा करों । मेरा मन
उदासी के मारे झुकाजाता है अपने बचन के समान मुझे दृढ़
२९ कर । मुझे झूठे मार्ग से बचा और अनुग्रह से अपनी व्यवस्था
३० मुझे दे । मैं ने सचाई के मार्ग को चुना है और तेरे बिचारों
३१ को सन्मुख रक्खा । मैं तेरी साक्षियों से लवलीन होरहा हों
३२ हे परमेश्वर मुझे लज्जित न कर । जब तू मेरा मन बढ़ावेगा
तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ोंगा ।

हे ।

३३ हे परमेश्वर तू अपनी बिधि का मार्ग मुझे सिखा और मैं
३४ उसे अंत्य लों धारण करोंगा । मुझे समझ दे और मैं
तेरी व्यवस्था को पालोंगा और मैं अपने सारे मन से
३५ उन्हें मानोंगा । मुझे अपनी आज्ञाओं के मार्ग में चला
३६ क्योंकि उस्से मैं आनन्दित हों । मेरे मन को लालच की ओर
३७ नहीं परंतु अपनी साक्षियों की ओर झुका । मेरी आंखों को
३८ वृथा देखने से फेरदे और अपने मार्ग में मुझे जिला । अपने
बचन को अपने सेवक के लिये स्थिर कर क्योंकि वुह तेरे भय में
३९ रहता है । उस निन्दा को जिस्से मैं डरता हों मुझ से दूर
४० कर क्योंकि तेरे न्याय भले हैं । देख मैं तेरी आज्ञा का
लालसिक हों अपने धर्म में मुझे जिला ।

वाउ ।

४१ हे परमेश्वर अपनी दया और अपनी मुक्ति को अपने बचन
४२ के समान मुझ पास आने दे । सो मैं अपने निन्दकों को
उत्तर देऊंगा क्योंकि मैं तेरे बचन पर भरोसा रखता हों ।
४३ और मेरे मुंह से सत्य बचन सर्वथा दूर मत कर क्योंकि तेरी
४४ आज्ञाओं पर मेरी आशा है । सो मैं तेरी व्यवस्था को सदा

४५ सर्वदा लों पालन करोंगा। और मैं निर्बन्ध फिरोंगा क्योंकि मैं तेरी
४६ आज्ञा का खोजी हों। राजाओं के आगे भी मैं तेरी साक्षियों
४७ की चर्चा करोंगा और लज्जित न होऊंगा। और तेरी
आज्ञा से आनन्दित होओंगा क्योंकि मैं उन पर प्रेम करता हों।
४८ मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिन पर मैं ने प्रेम किया है अपने
हाथ भी उठाओंगा और तेरी विधिन का ध्यान करोंगा।

ज़ैन ।

४९ अपने सेवक के लिये उस बचन को स्मरण कर जिस पर तू ने
५० मुझे आशा दिलाई है। यह मेरे दुःख में मेरी शांति है
५१ क्योंकि तेरे बचन ने मुझे जिलाया है। अहंकारियों ने मुझे
५२ ठट्ठे में उडाया है तद भी मैं तेरी व्यवस्था से न हटा। हे
परमेश्वर मैं ने तेरे पुरातन बिचारों को स्मरण किया और
५३ अपने को शांति दिया। उन दुष्टों के कारण जो तेरी व्यवस्था
५४ को त्यागता है धड़का ने मुझे पकड़ लिया है। मेरी यात्रा
५५ के घर में तेरे बिधि मेरे गान ऊए हैं। हे परमेश्वर मैं ने तेरा
नाम रात को स्मरण किया है और तेरी व्यवस्था को पालन
५६ किया है। यह मैं ने पाया क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को
पालन किया।

खेथ ।

५७ हे परमेश्वर तू मेरा भाग है मैं ने तो कहा कि मैं तेरे बचन को
५८ पालन करोंगा। म अपने सारे मन से तेरे रूप का खोजी हों
५९ तू अपने बचन के समान मुझ पर दया कर। मैं ने अपने
मार्गों को सोचा और तेरी साक्षियों की ओर चरण फेरा।
६० मैं ने चटक किया और तेरी आज्ञा को पालन करने में ढील
६१ न किई। दुष्टों के जथा ने मुझे लूटा पर मैं तेरी व्यवस्था को
६२ भूल न गया। तेरे धर्म बिचार के कारण मैं आधीरात को
६३ उठके तेरा धन्यमानोंगा। मैं तेरे सारे डरवैयों का संगी हों

६४ और तेरी आज्ञा को पालन करते हैं। हे परमेश्वर पृथिवी तेरी दया से पूर्ण है मुझे अपनी विधि सिखला ।

टेथ ।

६५ हे परमेश्वर अपने वचन के समान तू ने अपने सेवक से अच्छा
६६ व्यवहार किया है। मुझे सु बिचार और ज्ञान सिखा क्योंकि
६७ मैं तेरी आज्ञा पर विश्वास लाया हों। दुःखी होने से आगे
६८ मैं भटकगया पर अब मैं ने तेरे वचन को पाला है। तू भला है और भलाई करता है मुझे अपनी विधि सिखला।
६९ अहंकारियों ने मुझ पर झूठ बना रक्खा है पर मैं सारे मन
७० से तेरी आज्ञा को पालन करोंगा। उनके मन पर चिकनाई
७१ छागई है पर मैं तेरी व्यवस्था से आनन्दित हों। भला हुआ
७२ कि मैं दुःख में पड़ा जिसतें तेरी विधिन को सीखों। तेरे मुंह की व्यवस्था मेरे लिये सहस्रों सोना चांदी से अच्छी है।

जाद ।

७३ तेरे हाथों ने मुझे सिरजा और डौल किया है मुझे समझ दे
७४ जिसतें मैं तेरी आज्ञा सीखों। वे जो तुझ से डरते हैं मुझे देख के आनन्द होंगे क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर आशा रक्खी।
७५ हे परमेश्वर मुझे निश्चय है कि तेरा विचार धर्म है और तू ने
७६ उचित से मुझे दुःख दिया है। अपने सेवक को अपने वचन के समान तेरी कोमल दया मेरी शांति के कारण होवे।
७७ तेरी कोमल दया मुझ पर होवे जिसतें मैं जीओं क्योंकि तेरी
७८ व्यवस्था मेरी आनन्दता है। अहंकारी लोग लज्जित होवें क्योंकि उन्होंने क्रूरता से मुझ से व्यवहार किया परन्तु मैं तेरी
७९ आज्ञा पर ध्यान करोंगा। जो तुझ से डरते हैं और जिन्होंने
८० तेरी साक्षियों को जाना है सो मेरी ओर फिरें। मेरा मन तेरे विधि में सिद्ध होजाय जिसतें मैं लज्जित न होऊं।

काफ़ ।

८१ मेरा प्राण तेरी मुक्ति के लिये मूर्छित होता है परन्तु मैं तेरे
८२ बचन पर आशा रखता हों। मेरी आंख तेरे बचन के लिये
८३ घटी जाती हैं तू मुझे कब शांति देगा?। क्योंकि मैं धूएं में
के कुप्पे की नाईं ऊआ तथापि तेरे बिधि को नहीं भूलता।
८४ तेरे सेवक के दिन कितने हैं तू कब मेरे सताऊ को दंड देगा?।
८५ अहंकारियों ने जो तेरी व्यवस्था का पीछा नहीं करते हैं मेरे
८६ लिये गड़हे खोदे हैं। तेरी सारी आज्ञा बिश्वास मय हैं वे
८७ अकारण मुझे सताते हैं तू मेरी सहाय कर। तनिक था कि वे
पृथिवी पर से मुझे मिटाडालते परन्तु मैं ने तेरी आज्ञाओं को
८८ त्याग न किया। अपने कोमल प्रेम से मुझे जिला सो मैं तेरे
मुंह की साक्षियों को पालन करोंगा।

लामद ।

८९।९० हे परमेश्वर तेरा वचन स्वर्ग पर सदा स्थिर है। तेरी
सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों है कि तू ने पृथिवी को स्थिर किया और
९१ वुह ठहरी है। वे तेरी व्यवस्था के समान आज लों स्थिर हैं
९२ क्योंकि सब तेरे सेवक हैं। जो तेरी व्यवस्था मेरी आनन्दता
९३ न होती तो मैं अपनी बिपत्ति में नाश होजाता। मैं तेरी
आज्ञाओं को कभी न भूलोंगा क्योंकि तू ने उनके कारण से
९४ मुझे जिलाया है। मैं तेरा हों मुझे बचा ले क्योंकि मैं तेरी
९५ आज्ञा का खोजी हों। दुष्ट मुझे नाश करने को घात में लगे
९६ हैं परन्तु मैं तेरी साक्षियों को सोचोंगा। मैं ने सारी सिद्धता
का अन्त देखा परन्तु तेरी आज्ञा अत्यंत चौड़ी हैं।

मीम ।

९७ आह मैं तेरी व्यवस्था से कैसी प्रीति रखता हों सारे दिन वही
९८ मेरा ध्यान है। तू ने अपनी आज्ञाओं से मुझे मेरे बैरी से भी

९९ बुद्धिमान किया क्योंकि वे सदा मेरे संग हैं। मैं अपने सारे उपदेशकों से अधिक समझ रखता हों क्योंकि तेरी साक्षियों
१०० पर मेरा ध्यान है। मैं प्राचीनों से अधिक समझता हों क्योंकि
१०१ मैं तेरी आज्ञाओं को पालन करता हों। मैं ने हर एक कु मार्ग से अपने पांव को फेर रक्खा है जिसतें मैं तेरे वचन को
१०२ पालन करों। मैं तेरे बिचारों से नहीं फिरा क्योंकि तू ने मुझे
१०३ सिखाया है। तेरी बातें मेरे तालू में मधु से भी मीठी हैं।
१०४ तेरी आज्ञा के कारण से मैं समझ पाता हों इस लिये मैं हर एक झूठे मार्ग से घिन करता हों।

नून।

१०५ तेरा बचन मेरे पांव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये
१०६ उंजियाला है। मैं ने किरिया खाई है और उसे पूरा करोंगा
१०७ कि मैं तेरे धर्म बिचारों को पालन करोंगा। हे परमेश्वर
१०८ मैं अति दुःखी हों अपने बचन के समान मुझे जिला। हे परमेश्वर मेरे मुंह की मनमनता भेंट को ग्रहण कर और
१०९ अपने न्याय मुझे सिखला। मेरा प्राण सदा मेरी हथेली पर
११० है तथापि मैं तेरी व्यवस्था को नहीं बिसराता। दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है तथापि मैं तेरी आज्ञा से न चूका।
१११ मैं ने सर्बदा के अधिकार की नाईं तेरी साक्षियों को लेलिया
११२ क्योंकि मेरा मन उनसे आनन्दित है। मैं ने अपने मन को सदा तेरी बिधिन पर झुकाया है जिसतें अंत्य लों उन्हें पालन करों

सामिख़।

११३ मैं कुभावना को घिन करता हों परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रेम
११४ रखता हों। तू मेरे छिपने का स्थान और मेरी ढाल है और
११५ मैं तेरे वचन पर आशा रखता हों। हे कुकर्मियो मेरे पास से दूर होओ क्योंकि म तो अपने ईश्वर की आज्ञाओं
११६ को पालोंगा। अपने बचन के समान मुझे संभाल जिसतें

मैं जीओं और मुझे मेरी आशा से लज्जित न कर ।
११७ मुझे थाम और मैं बचोंगा और मैं सदा तेरी बिधिन को
११८ मानोंगा। तू ने उन सभों को लताड़ा है जिन्हों ने तेरी बिधिन
११९ से चूक किया कि उनका छल मिथ्या है । तू ने पृथिवी के सारे
दुष्टों को मैल की नाईं दूर किया इस लिये मैं तेरी साक्षियों
१२० से प्रीति रखता हों । मेरा शरीर तेरे डर के मारे थर्थराता
है और मैं तेरे न्याय से डरता हों ।

ऐन ।

१२१ मैं ने न्याय और धर्म किया है मुझे मेरे सतानेवाले के बश
१२२ में न छोड़ । भलाई के लिये अपने दास का बिचवई हो
१२३ अहंकारी को मुझे सताने न दे । मेरी आंखें तेरी मुक्ति के
१२४ और तेरे धर्म के बचन के कारण घटी जाती हैं । अपने दास
से अपनी दया के समान व्यवहार कर और मुझे अपनी
१२५ बिधि सिखा । मैं तेरा दास हों मुझे समझ दे जिसतें
१२६ मैं तेरी साक्षियों को पहिचानों । परमेश्वर के कार्य करने का
१२७ समय है क्योंकि उन्हों ने तेरी ब्यवस्था को वृथा किया है । मैं
इस लिये तेरी आज्ञाओं को सोने से हां चोखे सोने से अधिक
१२८ प्रीति रखता हों । इस लिये मैं तेरी सारी आज्ञाओं को सब
बस्तों से ठीक जानता हों और हर एक मिथ्या मार्गों से घिन
करता हों ।

पे ।

१२९ तेरी साक्षियां आश्चर्यित हैं इस लिये मेरा प्राण उन्हें पालन
१३० करता है । तेरी बातों का प्रवेश उंजियाला देता है वे सूधों
१३१ को समझ देती हैं । मैं ने अपना मुंह खोला और हांपा
१३२ क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का अभिलाषी था । जैसा तेरी दृष्टि
अपने नाम के प्रेमियों पर है तैसा मुझ पर दृष्टि करके दया
१३३ कर । अपने बचन में मेरे डग को चला और कोई अधर्म

१३४ मुझ पर राज्य करने न पावे। मनुष्य के सताने से मुझे
१३५ बचा सो मैं तेरी आज्ञाओं को पालन करोंगा। अपने दास
पर अपने मुंह को चमका और मुझे अपनी विधि सिखा।
१३६ पानी की नदियां मेरी आंखों से बहती हैं क्योंकि वे तेरी
व्यवस्था को नहीं मानते।

ज़ादि।

१३७ हे परमेश्वर तू धर्म्मी है और तेरे विचार खरे हैं।
१३८ तेरी आज्ञा की साक्षियां धर्म और विश्वासमय हैं।
१३९ मेरे ज्वलन ने मुझे काटडाला है क्योंकि मेरे बैरियों ने तेरे
१४० वचन को बिसराया है। तेरा वचन अति चोखा किया
१४१ गया है इस कारण तेरा दास उसे प्यार करता है। मैं तुच्छ
१४२ और निंदित हों पर मैं तेरी आज्ञा को नहीं बिसराता। तेरा
१४३ धर्म सनातन का धर्म है और तेरी व्यवस्था सत्य है। विपत्ति
और कष्ट ने मुझे पकड़ा है परन्तु तेरी आज्ञा मेरे
१४४ आनन्द हैं। तेरी साक्षियों का धर्म सनातन है मुझे समझ
दे कि मैं जीओं।

क़ाफ।

१४५ मैं अपने सारे मन से रोया हे परमेश्वर मेरी सुन मैं तेरी
१४६ विधि को पालोंगा। मैं ने तुझे पुकारा है मुझे बचा ले
१४७ जिसतें मैं तेरी साक्षियों को पालन करों। मैं भोर से पहिले
१४८ रोया मैं ने तेरे वचन की आशा किई। मेरी आंखें पहरों को
१४९ रोकती हैं जिसतें मैं तेरे वचन पर ध्यान करों। हे परमेश्वर
अपनी कोमल दया के समान मेरा शब्द सुन और अपने
१५० विचार के समान मुझे जिला। जो बुराई का पीछा करते हैं
१५१ सो समीप बढ़ते हैं वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं। हे परमेश्वर तू
१५२ पास है और तेरी सारी आज्ञा सत्य हैं। तेरी साक्षियों के

विषय में मैं ने आगे से जाना है कि तू ने उनकी जड़ को सदा के लिये स्थिर किया।

रेष।

१५३ मेरी बिपत्ति को बूझ और मुझे छुड़ा क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था
१५४ को नहीं भूलता। मेरे पद का बिवाद कर और मुझे छुड़ा
१५५ अपने बचन के समान मुझे जिला। दुष्टों से मुक्ति दूर है
१५६ क्योंकि वे तेरी बिधि के खोजी नहीं। हे परमेश्वर तेरी कोमल
१५७ दया बहुत हैं अपने न्याय के समान मुझे जिला। मेरे सताऊ और मेरे बैरी बहुत हैं तथापि मैं तेरी साक्षियों से नहीं
१५८ फिरता। मैं ने अपराधियों को देखा और उदास हुआ क्योंकि
१५९ उन्हों ने तेरे वचन को न पाला। देख मैं तेरी आज्ञा से प्रीति रखता हों हे परमेश्वर अपनी कोमल दया से मुझे
१६० जिला। आरंभ से तेरा बचन सच्चा है और तेरा हर एक धर्म्म न्याय सदा के लिये है।

शीन।

१६१ अध्यक्षों ने अकारण मुझे सताया है परन्तु मेरे मन में तेरे
१६२ वचन का भय है। मैं तेरे बचन से उसकी नाईं आनन्दित
१६३ हों जिसे बड़ी लूट मिलती है। मैं झूठ से घिन और बैर
१६४ रखता हों परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हों। मैं तेरे धर्म न्यायों के कारण दिनभर में सातबार तेरी स्तुति करता हों।
१६५ तेरी व्यवस्था के प्रेमियों को बड़ा चैन है उनके लिये कोई ठोकर
१६६ न होगी। हे परमेश्वर मैं ने तेरी मुक्ति की आशा रक्खी है
१६७ और तेरी आज्ञा के समान किया है। मेरे प्राण ने तेरी साक्षियों को पाला है और मैं उन पर अत्यन्त प्रेम रखता हों।
१६८ मैं ने तेरी आज्ञा और तेरी साक्षियों को पालन किया है क्योंकि मेरी सारी चाल तेरे आगे हैं।

ता।

१६९ हे परमेश्वर मेरा रोना तेरे आगे पऊंचे अपने बचन के
१७० समान मुझे समझ दे। मेरी बिनती तेरे आगे पऊंचे और
१७१ अपने बचन के समान मुझे छुड़ा। अपनी बिधि मुझे सिखा
१७२ तब मेरे होंठों से तेरी स्तुति निकलेगी। मेरी जीभ तेरे बचन
के विषय में कहा करेगी क्योंकि तेरी सारी आज्ञा धर्म्म हैं।
१७३ अपने हाथ से मेरी सहाय कर क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञा को
१७४ चुना है। हे परमेश्वर मैं ने तेरी मुक्ति की लालसा किई है
१७५ और तेरी व्यवस्था मेरा आनन्द है। मेरा प्राण जीवे और
१७६ तेरी स्तुति करेगा और तेरे न्याय मेरी सहाय करें। मैं
खाई ऊई भेड़ की नाईं भटक गया हों अपने दास को ढूंढ़ कि
मैं तेरी आज्ञाओं को नहीं भूलता।

१२० एक सै। बीसवां गीत।

पदें। का गान।

१ अपने दुःख में मैं ने परमेश्वर को पुकारा और उसने मेरी
२ सुनी। हे परमेश्वर मेरे प्राण को झूठे होंठों से और छली
३ जीभ से छुड़ा। हे झूठी जीभ तुझे क्या दिया जायगा? और
४ तुझे क्या मिलेगा?। बीर के चोखे बाण और जलतेऊए अंगारे।
५ मुझ पर संताप है जो मैं मिशिक में और केदार के तंबूओं में
६ रहता हों। मेरा प्राण कुशल के बैरियों के संग बऊत रहा है।
७ मैं तो कुशल चाहता हों परन्तु जब मैं बोलता हों तो वे
लड़ाई के लिये लैस होते हैं।

१२१ एक सै। एकीसवां गीत।

पदें। का गान।

१ मैं आंख उठा के पहाड़ों पर दृष्टि करोंगा जहां से मेरी सहाय
२ आती है। मेरी सहाय परमेश्वर से है जिसने स्वर्ग और

३ पृथिवी को सिरजा वुह तेरा पांव टलने न देगा वुह जो तेरा
४ रखवाल है न ऊंघेगा। देख वुह जो इसराईल का रक्षक है
५ कभी न ऊंघेगा न सोवेगा। परमेश्वर तेरा रखवाल है परमेश्वर
६ तेरे दहिने हाथ पर छाया है। सूरज दिन को और चंद्रमा
७ रात को तुझे कुछ दुःख न देगा। परमेश्वर सारी बुराइयों से
८ तुझे बचावेगा वुह तेरे प्राण को बचावेगा। परमेश्वर इस समय से सदा के लिये बाहर जाने में और भीतर आने में तेरी रक्षा करेगा।

१२२ एक सौ बाईसवां गीत ।

दाऊद के पदों का गान ।

१ जब उन्हों ने मुझे कहा कि आओ परमेश्वर के मन्दिर में जावें
२ मैं आनन्दित हुआ। हे यिरोश्लीम हमारे पांव तेरे फाटकों
३ में स्थिर होंगे। यिरोश्लीम एक ठोस नगर की नाईं बनाहुआ
४ है। जिधर वे गोष्ठियां अर्थात् परमेश्वर की गोष्ठियां इसराईल के साक्षी कने परमेश्वर के नाम का धन्यवाद करने को चढ़ती
५ हैं। क्योंकि उसमें न्याय के सिंहासन अर्थात् दाऊद के घराने
६ के सिंहासन धरेहुए हैं। यिरोश्लीम के कुशल के लिये प्रार्थना
७ करो वे जो तुझसे प्रेम रखते हैं भाग्यमान होंगे। तेरी भीतों
८ के भीतर कुशल और तेरे भवनों में भाग्य होवे। मैं अपने भाइयों और संगियों के लिये अब कहता हों तुझ कुशल
९ होवे। परमेश्वर हमारे ईश्वर के मन्दिर क कारण मैं तेरा मंगल ढूंढ़ोंगा।

१२३ एक सौ तेईसवां गीत ।

पदों का गान ।

१।२ हे स्वर्गबासी मैं अपनी आंख तेरी ओर उठाता हों। देखो जिस रीति से सेवक अपने स्वामी के हाथ की ओर और दासी

की आंखें अपनी स्वामिनी के हाथों की ओर तकती रहती हैं वैसी हमारी आंखें परमेश्वर हमारे ईश्वर पर हैं जब लों वुह
३ हम पर दया न करे। हे परमेश्वर हम पर दया कर हम पर
४ दया कर क्योंकि हम अत्यन्त निन्दा से भरे हैं। सुखियों की निन्दा और अहंकारियों के ठट्ठों से हमारे प्राण अत्यन्त भरगये।

१२४ एक सौ चौबीसवां गीत।

दाऊद के पदों का गान।

१ अब इसराईल कहे कि जो परमेश्वर हमारी ओर न होता।
२।३ जब मनुष्य हमारे बिरोध में उठे। जब कि उनका क्रोध हमारे बिरोध में भड़का था जो परमेश्वर हमारी ओर न
४ होता तो वे हमें जीते निंगल जाते। तब हमें जल डुबालेता
५ धारा हमारे प्राण के उपर जाती। अहंकारी जल हमारे
६ प्राण पर बीतजाते। धन्य परमेश्वर जिसने हमें उनके दांतों
७ का अहेर होने न दिया। हमारा प्राण पंछी की नाईं ब्याधा के जाल से बच निकला है जाल टूटा और हम बच निकले।
८ हमारी सहाय परमेश्वर के नाम में है जिसने स्वर्ग और पृथिवी को सिरजा।

१२५ एक सौ पचीसवां गीत।

पदों का गान।

१ परमेश्वर के आश्रित सैहून पर्वत की नाईं हैं जो अचल और
२ सदा स्थिर हैं। जैसा यिरोशलीम के आस पास पर्वत हैं तैसा परमेश्वर इस समय से लेके सदा लों अपने लोगों को घेरेऊए
३ ह। दुष्टता का दंड धर्मियों के भाग पर न पड़ेगा न होवे
४ कि धर्मी अधर्म की ओर अपने हाथ बढ़ावें। हे परमेश्वर
५ भलों से और खरे अन्तःकरणियों से भलाई कर। परन्तु वे जो अपने टेढ़े मार्गों पर चलते हैं परमेश्वर उन्हें कुकर्मियों के संग चलावेगा परन्तु कुशल इसराईल के लिये है।

१२६ एक सौ छब्बीसवां गीत ।

पर्दों का गान ।

१ जब परमेश्वर ने सैहून की बंधुआई को फिराया तब हम
२ स्वप्नदर्शी की नाईं हुए। तब हमारे मुंह हंसी से और हमारी जीभ गान से भर गई तब अन्यदेशियों में चर्चा हुई कि परमेश्वर
३ ने उनसे बड़ा व्यवहार किया। परमेश्वर ने हम से बड़ा
४ व्यवहार किया हम आनन्दित हैं। हे परमेश्वर दक्खिन की
५ धारों की नाईं हमारी बंधुआई को पलट दे। जो आंसुओं में
६ बोते हैं सो गाना के लवेंगे। जो बाहर जाता है और रोता हुआ बहुमूल्य बीज फैलता है सो निःसंदेह आनन्द करते हुए अपनी पूलियां साथ लेके फिर आवेगा।

१२७ एक सौ सताईसवां गीत ।

सुलेमान के लिये पर्दों का गान ।

१ जो परमेश्वर घर न बनावे तो बनवैया का परिश्रम अकारथ है जो परमेश्वर नगर की रक्षा न करे तो रखवाल का जागना
२ व्यर्थ है। तुम्हारा तड़के का उठना और अबेर का सोना और शोक की रोटियां खाना वृथा क्योंकि वुह अपने प्रिय को
३ विश्राम देता है। देखो कि लड़के परमेश्वर के एक अधिकार
४ हैं और गर्भ का फल उसका प्रतिफल। जैसे बलवान मनुष्य
५ के हाथ में बाण तैसेही तरुणों के लड़के हैं। धन्य वुह मनुष्य जिसका तूण उनसे भरा है वे लज्जित न होंगे परन्तु फाटक पर बैरियों से बोलेंगे।

१२८ एक सौ अठाईसवां गीत।

पदों का गान।

१ जो मनुष्य परमेश्वर से डरता है और उसके मार्गों पर
२ चलता है सो धन्य है। क्योंकि तू अपने हाथों का परिश्रम
३ खायेगा तू भाग्यमान है और तेरा भला है। तेरी पत्नी
फलवंत दाख की नाईं होगी जो तेरे घर के आस पास है तेरे
बच्चे तेरे मंच की चारों ओर जलपाई पेड़ की नाईं होंगे।
४ देखो जो परमेश्वर से डरता है वुह ऐसा आशीर्वादी होगा।
५ परमेश्वर सैहून में से तुझे आशीष देगा और तू अपने जीवन
६ भर यिरोशलीम की भलाई देखेगा। निश्चय तू अपने बच्चों के
बच्चे और इसराईल का कुशल देखेगा।

१२९ एक सौ उंतीसवां गीत।

पदों का गान।

१ अब इसराईल बोले कि मेरी तरुणाई से उन्हों ने बारंबार
२ मुझे सताया है। मेरी तरुणाई से बारंबार उन्हों ने मुझे
३ सताया है तदभी वे मुझ पर प्रबल न हुए। हरवाहों ने मेरी
४ पीठ जोत के अपनी रिघारियां लंबी कियां। परमेश्वर धर्मी
५ है उसने दुष्टों की रस्सियों को काटडाला है। सब जो सैहून
६ से बैर रखते हैं लज्जित होवें और हटायेजावें। वे छत पर की
घास की नाईं होवें जो बढ़ने से पहिले मुरझा जाती है।
७ जिस्से घसिहारा अपनी मुट्ठी नहीं भरता और आंटी का
८ बंधवैया अपनी अंकवार नहीं भरता। और वे जो उधर से
जाते हैं नहीं कहते कि परमेश्वर तुझे आशीष देवे हम परमेश्वर
के नाम पर तुझे आशीष देते हैं।

१३० एक सौ तीसवां गीत।

पर्दों का गान।

१।२ हे परमेश्वर मैं ने गहिरावों में से तुझे पुकारा है। हे प्रभु मेरा शब्द सुन और मेरी बिनतियों के शब्द पर कान धर।
३ हे परमेश्वर यदि तू अधर्म का लेखा लेवे तो हे प्रभु कौन
४ ठहरेगा। पर तेरे पास तो क्षमा है तुझसे डरा चाहिए।
५ मैं परमेश्वर की बाट जोहता हों मेरा प्राण उसकी बाट जोहता
६ है और मुझे उसके बचन पर आशा है। जैसा पहरू बिहान की बाट जोहते हैं हां जैसा पहरू बिहान की बाट जोहते हैं
७ उस्से अधिक मेरा प्राण प्रभु की बाट जोहता है। हे इसराईल परमेश्वर पर आशा रख क्योंकि दया परमेश्वर के पास है और
८ मुक्ति की बहुताई उसके पास है। और वही इसराईल को उसके सारे अधर्म से छुड़ावेगा।

१३१ एक सौ एकतीसवां गीत।

दाऊद के पर्दों का गान।

१ हे परमेश्वर मेरा मन अहंकारी नहीं और न मेरी दृष्टि ऊंची है मैं बड़ी बातों में और आश्चर्यित बस्तुन में प्रेरण नहीं
२ करता। निश्चय मैं रीति से चला और मैं अपने मन को शांत किया है जैसे दूध छुड़ाया हुआ बालक अपनी माता से होता
३ है हां मेरा मन दूध छुड़ाये हुए बालक की नाईं है। अब से सदा लों इसराईल परमेश्वर पर आशा रक्खे।

१३२ एक सौ बत्तीसवां गीत।

पर्दों का गान।

१ हे परमेश्वर दाऊद को और उसके सारे कष्टों को स्मरण
२ कर। कि उसने क्योंकर परमेश्वर की किरिया खाई और याकूब
३ के पराक्रमी की मनौती मानी। निश्चय मैं तो अपने घर की

४ छत तले न जाओंगा और न अपनी खाट पर चढ़ोंगा। मैं अपनी आंखों को नींद न देउंगा और न औंघाई अपनी पलकों
५ को। जब लों कि परमेश्वर के लिये स्थान और याक़ूब के
६ पराक्रमी के लिये बसाव न पाओं। देखो हम ने उसके विषय में अफ़राता में सुना और हमने उसे अरण्य के खेतों में
७ पाया। हम उसके तंबूओं में जायेंगे और उसके पांव के पीढ़े
८ के आगे दंडवत करेंगे। हे परमेश्वर तू और तेरे पराक्रम
९ की मंजूषा अपने चैन में उठ। तेरे याजक धर्म से पहिराये
१० जायें और तेरे साधु आनन्द से ललकारें। अपने दास दाऊद के कारण अपने अभिषिक्त का मुंह मत मोड़।
११ परमेश्वर ने सचाई से दाऊद से किरिया खाई है जिस्से वुह न हटेगा कि मैं तेरे गर्भ के फल में से तेरे सिंहासन पर
१२ बैठाओंगा। यदि तेरे लड़के मेरी बाचा और मेरी साक्षी को जो मैं उन्हें सिखाओंगा पालन करेंगे तो उनके लड़के भी
१३ तेरे सिंहासन पर सदा लों बैठेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने
१४ सेहून को चुना और अपने निवास के लिये चाहा। यह सदा मेरी चैन का स्थान है मैं इस में बसोंगा क्योंकि मैं ने उसे
१५ चाहा है। मैं निश्चय उसके भोजन पर आशीष देऊंगा मैं
१६ उसके कंगालों को रोटी से तृप्त करोंगा। मैं उसके याजकों को मुक्ति से पहिराओंगा और उसके सिद्ध आनन्द के मारे
१७ ललकारेंगे। वहां मैं दाऊद का सींग उगाओंगा मैं ने अपने
१८ अभिषिक्त के लिये एक दीपक ठहराया है। और उसके बैरियों को लाज से पहिराओंगा परन्तु उसका मुकुट उसी पर लहलहावेगा।

१३३ एक सौ तेंतीसवां गीत।

दाऊद के पदों का गान।

१ देखो भाईयों को एकट्ठे और एक मत से रहने में कैसी अच्छी

२ और सुन्दर बात है। यह सिर पर के बहुमूल्य सुगंध तेल की नाईं है जो दाढ़ी पर और दाढ़ी अर्थात् हारून की दाढ़ी पर
३ बहा जो उसके पहिरावा के खूंटों लों बहआया। और हरमून की ओस की नाईं जो सैहून के पहाड़ों पर उतरी क्योंकि वहां परमेश्वर ने आशीष और अनंत जीवन के विषय में आज्ञा दिई।

१३४ एक सौ चौंतीसवां गीत।

पदों का गान।

१ हे परमेश्वर के सब दासो देखो जो रात को परमेश्वर के घर
२ में रहते हो परमेश्वर का धन्यबाद करो। धर्मधाम में अपने
३ हाथ उठाओ और परमेश्वर का धन्यबाद करो। वुह परमेश्वर जिसने स्वर्ग और पृथिवी को सिरजा तुझे सैहून में से आशीष देवे।

१३५ एक सौ पैंतीसवां गीत।

१ परमेश्वर की स्तुति करो परमेश्वर के नाम की स्तुति करो
२ हे परमेश्वर के सेवको परमेश्वर की स्तुति करो। तुम जो परमेश्वर के घर में और हमारे ईश्वर के घर के आंगनों में
३ खड़े रहते हो। परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि परमेश्वर
४ भला है उसके नाम की स्तुति गाओ क्योंकि सुन्दर है। क्योंकि परमेश्वर ने याक़ूब को अपने लिये चुना है और इसराईल
५ को अपने विशेष भंडार के लिये। क्योंकि मैं जानता हों कि परमेश्वर महान है और हमारा प्रभु सारे देवों से श्रेष्ठ
६ है। जो कुछ परमेश्वर ने चाहा सो उसने स्वर्ग और पृथिवी
७ और समुद्र और सारे गहिरे स्थानों में किया। वही पृथिवी के खूंटों से फूही उठाता है और बिजली मेंह के लिये बनाता
८ है और पवन को अपने भंडारों से निकालता है। उसी ने
९ मिसर के पहिलौंठे मनुष्य से लेके पशु लों मारे। हे मिसर

तेरे मध्य में फरऊन पर और उसके सारे सेवकों पर उसी ने
१० लक्षण और आश्चर्य दिखलाये। उसीने बड़े बड़े जातिगणों
११ को और पराक्रमी राजाओं को। अमूरियों के राजा सैहून
को और वाशान के राजा ऊज को और किनान के सारे
१२ राज्यों को नाश किया। और अपने इसराईली लोगों को
१३ उनका देश अधिकार में दिया। हे परमेश्वर तेरा नाम सर्वदा
१४ है हे परमेश्वर तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों रहेगा। क्योंकि
परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा और अपने दासों के
१५ लिये पछतायगा। अन्यदेशियों की मूर्त्ति सोना और रूपा
१६ और मनुष्यों की क्रिया हैं। वे मुंह रखती हैं पर बोलती
१७ नहीं वे आंखें रखती हैं पर देखती नहीं। वे कान रखती हैं
१८ पर सुनती नहीं वे तो मुंह से सांस भी नहीं लेतीं। जो उनके
बनवैये हैं सो उन्हीं के समान हैं और हर एक जिसका भरोसा
१९ उन पर है सो ऐसाही है। हे इसराईली घराने परमेश्वर
का धन्यवाद करो हे हारून के घराने परमेश्वर का धन्यवाद
२० करो। हे लावी के घराने परमेश्वर का धन्यवाद करो तुम जो
परमेश्वर से डरते हो परमेश्वर का धन्यवाद करो परमेश्वर
सैहून में धन्य है और यिरोशलीम में बास करता है परमेश्वर
की स्तुति करो।

१३६ एक सौ छत्तीसवां गीत।

१ परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वुह भला है और उसकी
२ दया सर्वदा है। ईश्वरों के ईश्वर का धन्य मानो क्योंकि उसकी
३ दया सर्बदा है। प्रभुओं के प्रभु का धन्य मानो क्योंकि
४ उसकी दया सर्बदा है। उसी का जो एकेला बड़े आश्चर्य
५ करता है क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। उसी का जिसने
अपनी बुद्धि से स्वर्ग बनाये क्योंकि उसकी दया सर्बदा है।
६ उसी का जिसने पृथिवी को पानियों के ऊपर फैलाया क्योंकि

७ उसकी दया सर्बदा है। उसी का जिसने बड़ी बड़ी ज्योति
८ बनाईं क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। सूर्य जिसकी प्रभुता
९ दिन पर है क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। और चंद्रमा और
तारागण जिनकी प्रभुता रात पर है क्योंकि उसकी दया
१० सर्बदा है। उसी का जिसने मिसर को उसके पहिलौंठों समेत
११ मारा क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। और इसराईलियों को
१२ उनमें से निकाल लाया क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। अपने
प्रबल हाथ से और फैली हुई भुजाओं से क्योंकि उसकी दया
१३ सर्बदा है। उसी का जिसने लाल समुद्र को दो भाग किया
१४ क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। और इसराईलियों को उसके
१५ मध्य से पार लेगया क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। परन्तु
फरऊन को उसकी सेना समेत लाल समुद्र में झाड़ डाला
१६ क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। उसी का जो अरण्य में अपने
१७ लोगों का अगुआ हुआ क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। उसी का
जिसने बड़े बड़े राजाओं को मारडाला क्योंकि उसकी दया
१८ सर्बदा है। और प्रसिद्ध राजाओं को मारडाला क्योंकि उसकी
१९ दया सर्बदा है। अर्थात् अमूरियों के राजा सीहून को क्योंकि
२० उसकी दया सर्बदा है। और बाशान के राजा ऊज को क्योंकि
२१ उसकी दया सर्बदा है। और उनकी भूमि को अधिकार में
२२ दिया क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। अपने दास इसराईल का
२३ अधिकार किया क्योंकि उसकी दया सर्बदा है। जिसने हमारी
दुर्दशा में हमें स्मरण किया क्योंकि उसकी दया सर्बदा है।
२४ और हमें हमारे बैरियों से छुड़ाया क्योंकि उसकी दया सर्बदा
२५ है। उसी का जो सारे शरीरों को आहार देता है क्योंकि
२६ उसकी दया सर्बदा है। स्वर्ग के ईश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि
उसकी दया सर्बदा है।

१३७ एक सै। सैंतीसवां गीत ।

१ बाबुल की नदियों के तीर पर जहां हम बैठ गये और सैहून
२ को स्मरण कर के विलाप किया। हम ने अपनी बीणा को
३ उसके बीच के नलों पर टांग दिया। क्योंकि जो हमें बंधुआ
कर के लेगये उन्हों ने वहां हम से चाहा कि हम कुछ गावें और
जिन्हों ने हमें उजाड़ा उन्हों ने हम पर हंसी किई और
४ कहा कि सैहून के गीतों में से गाओ। हाय परदेशियों की
५ भूमि में हम क्योंकर परमेश्वर के गीत गावें। हे यिरोशलीम
६ यदि मैं तुझे भूलों तो मेरा दहिना हाथ भूलजाय। यदि
मैं तुझे स्मरण न करों तो मेरी जीभ तालू से लगजाये और
यदि मैं यिरोशलीम को अपनी आनन्दता से श्रेष्ठ न जानों।
७ हे परमेश्वर यिरोशलीम के दिन में अदूम के संतानों को स्मरण
कर जिसने कहा कि उसे उजाड़ो उसे जड़ मूल से उजाड़ो।
८ हे बाबूल की बेटी जो उजाड़ा जाना है धन्य है वुह जो
तेरे व्यवहार का जो तू ने हम से किया तुझ से पलटा लेगा
धन्य वुह जो तेरे नन्हें बालकों को पकड़ पकड़ के पत्थर पर
पटके।

१३८ एक सै। अठतीसवां गीत ।

दाऊद का गान ।

१ मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करोंगा देओं के आगे मैं तेरी
२ स्तुति गाओंगा। मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दंडवत करोंगा
और तेरी सत्यता और तेरे कोमल प्रेम के कारण तेरे नाम
की स्तुति करोंगा क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने सारे नाम
३ से अधिक बढ़ाया है। जिस दिन मैं ने प्रार्थना किई तब तू ने
४ मेरी सुनी और बल से मेरे आत्मा को बली किया। हे
परमेश्वर पृथिवी के सारे राजा तेरे मुंह का वचन सुन के तेरी
५ स्तुति करेंगे। हां वे परमेश्वर के मार्गों में गायेंगे क्योंकि

६ परमेश्वर का ऐश्वर्य महान है। यद्यपि परमेश्वर महान है तथापि वुह नम्रों को चेत करता है परन्तु अहंकारियों को दूर
७ जानता है। यद्यपि मैं बिपतों के मध्य में चलों तथापि तू मुझे जिलावेगा तू मेरे बैरियों के क्रोध पर अपना हाथ बढ़ावेगा
८ और तेरा दहिना हाथ मुझे बचालेगा। परमेश्वर मेरे लिये कार्य सिद्ध करेगा हे परमेश्वर तेरी दया सर्वदा है अपने हाथ की क्रिया को त्याग न कर।

१३९ एक सौ उंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१।२ हे परमेश्वर तू ने मुझे खोजा है और पहिचाना। तू मेरे बैठने और उठने को जानता है तू मेरी चिंता को दूर से
३ बूझता है। तू ने मेरे मार्ग और मेरे शयन को घेरा और
४ मेरी सारी चालों को जानता है। क्योंकि देख मेरी जीभ में कोई ऐसी बात नहीं जिसे हे परमेश्वर तू सर्वथा नहीं जानता।
५ तू ने आगे पीछे मुझे घेरा है और तू ने अपना हाथ मुझ पर
६ धरा है। ऐसा ज्ञान मेरे लिये आश्चर्यित है यह ऊंचा है मैं
७ इसे नहीं पासक्ता। तेरे आत्मा से मैं किधर जाऊं? अथवा
८ तेरे आगे से किधर भागों?। यदि मैं स्वर्ग पर चढ़ जाओं तो तू वहां है यदि मैं परलोक में बिछौना बनाऊं तो देख तू वहां
९ भी है। यदि मैं बिहान के पंख लेके समुद्र के अंतसिवानों लों
१० जा बसों। तो वहां भी तेरा हाथ मुझे पहुंचावेगा और तेरा
११ दहिना हाथ मुझे पकड़ेगा। यदि मैं कहों कि निश्चय अंधियारा
१२ मुझे छिपावेगा रात मेरे आस पास उंजियाली होजायगी। निश्चय अंधियारा तुझ से अंधियारा नहीं करसक्ता परन्तु दिन की नाईं
१३ रात चमकती है दिन रात दोनों एकसां हैं। क्योंकि तू मेरे
१४ अंतःकरण का स्वामी है तू ने मुझे माता की कोख में ढांपा। मैं तेरी स्तुतिही करोंगा क्योंकि मैं भयंकर और आश्चर्य से बना हों

१५ तेरे कार्य्य अचंभित हैं मेरा प्राण भले जानता है। जब कि
मैं गुप्त में सिरजा जाके पृथिवी की नीचाई में विचित्रता से
१६ बनाया जाता था तो मेरा तत्व तुझ से छिपा न था। मैं अब लों
अधूड़ा था और तेरी आंखें मेरे पिंड को देखती थीं जब लों
उनमें से कोई न था तबसे तेरी पुस्तक में लिखा हुआ था कि
१७ कौन किस दिन बनेगा। हे ईश्वर तेरे सोच मेरे लिये क्याही
१८ बहुमूल्य हैं उनका जोड़ क्याही बहुत है। मैं उन्हें क्या गिनों
वे तो गिनती में बालू से अधिक हैं जब मैं जागों तद भी तेरेही
१९ पास हों। हे ईश्वर तू निश्चय दुष्टों को नाश करेगा सो हे
२० घातियो मुझ से दूर होजाओ। क्योंकि वे तेरे विरुद्ध में दुष्टता
की बातें करते हैं तेरे बैरी तो तेरा नाम अकारथ लेते हैं।
२१ हे परमेश्वर क्या मैं तेरे बैरियों से बैर नहीं करता? क्या मैं
२२ उनसे जो तेरे बिरोधी हैं उदास नहीं?। मैं अत्यन्त बैर से
२३ उनसे बैर करता हों मैं उन्हें अपनी बैरी गिनता हों। हे
ईश्वर मुझे ढूंढ़ और मेरे अंतःकरण को जान मुझे ताड़ और
२४ मेरी चिंता को पहिचान। देख यदि मुझ में किसी रीति की
बुराई होवे तो मुझे सनातन के मार्ग पर लेजा।

१४० एक सौ चालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के पास दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर मुझे दुष्ट मनुष्य से छुड़ा अंधेरी जन से मुझे बचा।
२ जो अपने मन में बुरी चिंता करते हैं वे युद्ध के लिये नित
३ एकट्ठे हैं। उन्हों ने अपनी जीभ को सांप की नाईं चोखी किई
४ है उनके होठों के नीचे नागों का विष है. सोलाह। हे परमेश्वर
दुष्टों के हाथ से मेरी रक्षा कर अंधेरी मनुष्य से मुझे बचा
क्योंकि उन्हों ने मेरी चालों को उलटाने को ठाना है।
५ अहंकारियों ने मेरे लिये फंदे और रस्सियां छिपाई हैं उन्हों
ने मार्ग की ओर जाल बिछाया है उन्हों ने मेरे लिये फंदा

६ बिछाया है. सीलाह। मैं ने परमेश्वर से कहा कि तू मेरा ईश्वर
७ है हे परमेश्वर मेरी बिनतियों का शब्द सुन। हे परमेश्वर
प्रभु मेरी मुक्ति के पराक्रम संग्राम के दिन में तू ने मेरे सिर
८ पर आड़ किया है। हे परमेश्वर दुष्ट की इच्छा पूरी न कर
९ उसकी दुष्ट जुगत को मत बढ़ा नहो कि वे फूलें. सीलाह। जिन्हों
ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है उनके होंठों की बुराई
१० उन्हीं के सिरों पर पड़े। उन पर जलते अंगारे बरसें वे आग
में झोंकेजायें और गहिरे गड़हों में जिसतें वे फिर न उठें।
११ कुवक्ता पृथिवी पर स्थिर होने न पावें बुराई अंधेरी जन को अहेर
१२ करके नाश करे। मैं जानता हों कि परमेश्वर दुःखियों के
१३ और दरिद्रों के पद का पक्ष करेगा। निश्चय धर्मी तेरे नाम
का धन्य मानेंगे और खरे लोग तेरे आगे बसेंगे।

१४१ एक सौ एकतालीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ।

१ हे परमेश्वर मैं तेरे आगे चिल्लाता हों मेरी ओर चटक कर
२ जब मैं प्रार्थना करों मेरे शब्द पर कान धर। मेरी प्रार्थना
तेरे आगे सुगंध की नाईं पहुंचे और मेरे हाथों का उठना
३ सांझ के बलि की नाईं हो। हे परमेश्वर मेरे मुंह पर पहरु
४ बैठाव मेरे होंठों के द्वार की रक्षा कर। कुकर्मियों के संग
दुष्ट कर्म करने के लिये मेरे मन को किसी बुरी बात की ओर
५ झुकने न दे और उनके स्वादित भोजन मुझे खाने न दे। धर्मी
कृपा से मुझे थपरावे और डपटे उनका सुगंध तेल मेरे
सिर को न फोड़ेगा क्योंकि तद भी उनकी बिपतों में मेरी
६ प्रार्थना होगी। जब उनके न्यायी पथरैले स्थानों में उलटाये
७ गये हैं तब वे मेरी बातें सुनेंगे क्योंकि वे मीठी हैं। हमारी
हड्डियां समाधि के मुंह में ऐसी बिथरी हैं जैसे पृथिवी पर
८ कोई लकड़ी चीरता है। परन्तु हे प्रभु ईश्वर मेरी आंखें तेरी

और हैं मेरा भरोसा तुझ पर है मेरे प्राण को एकेला मत
९ छोड़। उनके बिछाये डए जाल से और कुकर्मियों के फंदों से
१० मुझे बचा। दुष्ट अपने अपने जाल में पड़ेंगे जबलों मैं
बच जाओं।

१४२ एक सौ बयालीसवां गीत।

दाऊद का मश्किल एक प्रार्थना जब वुह खोह में था।

१ अपने शब्द से मैं परमेश्वर के आगे चिल्लाया मैं ने परमेश्वर
२ से चिल्ला के बिनती किई। मैं अपना दुःख उसके आगे
३ उंडेलोंगा। मैं अपना दुःख उसके आगे वर्णन करोंगा। जब
मेरा प्राण मुझ में डूबगया तब तू ने मेरा पथ जाना जिस
मार्ग में मैं चलता हों उन्हों ने छिप के उसमें मेरे लिये फंदा
४ लगाया है। मैं ने अपनी दहिनी ओर ताका और देखा
परन्तु कोई मनुष्य को न पाया जो मुझे पहिचानता शरण
५ मुझ से नष्ट ऊआ कोई मेरे प्राण का पुछवैया न था। हे परमेश्वर
मैं तेरे आगे चिल्लाया और मैं ने कहा कि जीवन के देश में तू
६ मेरा शरण और भाग है। मेरे रोने पर सुरत लगा क्योंकि
मैं बज़त झुकाया गया हों मेरे सतानेवालों से मुझे छुड़ा क्योंकि
७ वे मुझ से बली हैं। मेरे प्राण को बंदीगृह से छुड़ा जिसतें मैं तेरे
नाम की स्तुति करों धर्मी मुझे घेरलेंगे क्योंकि तू मुझ से मन
खोल के व्यवहार करेगा।

१४३ एक सौ तेंतालीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ हे परमेश्वर मेरा रोना सुन मेरी बिनतियों पर कान लगा
२ अपनी सच्चाई में और अपने धर्म में मुझे उत्तर दे। और
अपने दास से लेखा न ले क्योंकि कोई जीता प्राणी तेरी दृष्टि में

३ निर्दोष न ठहरेगा। क्योंकि बैरी ने मेरे प्राण को सताया है। उसने मेरे जीवन को भूमि लों मारा है उसने मुझे उनकी नाईं अंधियारे ४ में बैठाया है जो बज़त दिनों से मर गये हैं। इस लिये मेरा प्राण मुझ में डूब गया है मेरा मन मुझ में उजड़ गया है। ५ मैं अगिले दिनों को स्मरण करता हों मैं तेरे सारे कार्यों को ६ सोचता हों मैं तेरे हाथ की रचना पर ध्यान करता हों। मैं अपने हाथ तेरी ओर बढ़ाता हों मेरा प्राण प्यासी भूमि की ७ नाईं तेरा प्यासा है. सीलाह। हे परमेश्वर झट मेरी सुन मेरा प्राण घटाजाता है मुझ से मुंह मत छिपा नहो कि मैं ८ उनकी नाईं होओं जो गड़हे में गिरते हैं। मुझे सवेरे अपने प्रेम का अनुग्रह सुना क्योंकि मेरा भरोसा तुझ पर है जिस मार्ग में मुझे चला चाहिये उसमें मुझे चला क्योंकि मैं अपना ९ प्राण तेरी ओर उठाता हों। हे परमेश्वर मेरे बैरियों से मुझे १० छुड़ा क्योंकि मैं ने तेरा आड़ पकड़ा है। अपनी इच्छा पर चलने को मुझे सिखला क्योंकि तूही मेरा ईश्वर है तेरा उत्तम ११ आत्मा मुझे सीधे मार्ग लों पज़ंचावे। हे परमेश्वर मुझे अपने नाम के लिये जिला अपने धर्म के लिये मेरे प्राण को बिपत्ति १२ से छुड़ा। और अपनी दया से मेरे बैरियों को नाश कर और जो मेरे प्राण को दुःख देते हैं उन्हें नाश कर क्योंकि मैं तेरा सेवक हों।

१४४ एक सौ चौंतालीसवां गीत

दाऊद का गीत।

१ परमेश्वर मेरा पहाड़ धन्य हो वे जो मेरे हाथों को युद्ध करना २ और मेरी अंगुलियों को लड़ना सिखलाता है। मेरी आशा और मेरा गढ़ मेरा ऊंचा गुम्मट और मेरा छुड़ानेवाला मेरी ढाल जिस पर मेरा भरोसा है जो मेरे लोगों को मेरे बश ३ में करता है। हे परमेश्वर मनुष्य क्या है जो तू उसकी सुधि लेता

४ हे और मनुष्य का पुत्र कौन है जो तू उसे गिने। मनुष्य तो व्यर्थ की नाईं है और उसके दिन एक छाया की नाईं हैं जो
५ बीतीजाता है। हे परमेश्वर अपने स्वर्ग को झुका और उतर
६ आ पहाड़ों को छू और उनसे धूआं उठेगा। बिजुली गिरा और उन्हें बिथरा अपना बाण चला और उन्हें नाश कर।
७ ऊपर से अपना हाथ फैला और मुझे छुड़ा मुझे बहुत पानियों
८ से और परदेशी संतानों के हाथ से बचा। जिनका मुंह व्यथा बातें बोलता है और उनका दहिना हाथ झूठ का दहिना
९ हाथ है। हे ईश्वर मैं तेरे लिये नया गीत गाओंगा और बीन
१० और दस तार का बाजा बजा के तेरी स्तुति गाओंगा। तूही है जो राजाओं को जय देता है और अपने दास दाऊद को
११ दुःखदायक तलवार से छुड़ाता है। परदेशियों के वंश के हाथों से जिनका मुंह व्यथा बातें बोलता है और जिनका दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है मुझे छुड़ा और बचा।
१२ जिसतें हमारे बेटे अपनी तरुणाई में पौधों की नाईं होवें और हमारी बेटियां कोने के उन पत्थरों की नाईं होजावें जो सदन
१३ की नाईं खोदेजावें। जिसतें हमारे खत्ते में पूर्ण होके नानाप्रकार के भंडार पायेजावें और हमारी भेड़ें सहस्रों लाखों
१४ हमारे सड़कों में जनें। और हमारे बैल लदाव के योग्य होवें कि कोई पैठ के उन्हें बेढ़ न लेजावे और हमारे मार्गों में
१५ दुहाई न हो। धन्य वे लोग जिनकी यह दशा हो धन्य वुह मंडली जिसका ईश्वर परमेश्वर है।

१४५ एक सौ पैंतालीसवां गीत।

दाऊद की स्तुति।

१ हे ईश्वर मेरे राजा मैं तेरी स्तुति करोंगा और मैं सदा तेरे
२ नाम का धन्यवाद करोंगा। मैं प्रतिदिन तेरा धन्यवाद करोंगा
३ और सदा तेरे नाम की स्तुति करोंगा। परमेश्वर महान है

और वह अत्यन्त स्तुति के योग्य है और उसकी महिमा अखोज
४ है। एक पीढ़ी दूसरी से तेरे कार्यों की स्तुति करेगी और तेरे
५ महत कार्य को वर्णन करेगी। मैं तेरी महिमा की विभव मय
६ प्रतिष्ठा और तेरी आश्चर्य क्रिया के विषय में कहोंगा। लोग
तेरे भयंकर कार्यों की चर्चा करेंगे और मैं तेरी बड़ाई का
७ वर्णन करोंगा। वे तेरी अत्यन्त भलाई का स्मरण बड़ताई से
८ उच्चारण करेंगे और तेरे धर्म के विषय में गायेंगे। परमेश्वर
कृपाल और दया से पूर्ण है और क्रोध करने में धीर और
९ बड़ा दयाल है। परमेश्वर सब पर भला है और उसके सारे
१० कार्य पर उसकी कोमल दया है। हे परमेश्वर तेरी सारी
क्रिया तेरी स्तुति करेगी और तेरे संत तेरा धन्यवाद करेंगे।
११ वे तेरे राज्य के ऐश्वर्य की चर्चा करेंगे और तेरे सामर्थ्य की बातें
१२ करेंगे। जिसतें मनुष्य के संतान पर उसकी बड़ाई और उसके
१३ राज्य का विभव प्रगट होवे। तेरा राज्य सनातन का राज्य है
१४ और तेरी प्रभुता सारी पीढ़ी लों रहती है। सारे गिरवैयों
१५ को परमेश्वर थामता है और झुके ऊओं को उठाता है। सब
की आंखें तुझी को ताकती हैं और समय पर तू उन्हें भोजन
१६ देता है। तू अपनी मुट्ठी खोलता है और हर एक जीवधारी
१७ को संतुष्ट करता है। परमेश्वर अपने सारे मार्गों म धर्मी है
१८ और अपने सब कार्यों में दयाल है। जो उसे पुकारते हैं
अर्थात् सब जो सच्चाई से उसका नाम लेते हैं परमेश्वर उनके
१९ पास है। वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा वही
२० उनकी दुहाई सुनेगा और उन्हें बचावेगा। परमेश्वर अपने
सारे प्रेमियों का रक्षक है परन्तु वह सारे दुष्टों को नाश
२१ करेगा। मेरा मुंह परमेश्वर की स्तुति करेगा और सारे
प्राणी सदा उसके पवित्र नाम का धन्यवाद करें।

१४६ एक सै। छयालीसवां गीत।

१ परमेश्वर की स्तुति करो हे मेरे प्राण परमेश्वर की स्तुति कर।
२ जब लों मैं जीता रहोंगा परमेश्वर की स्तुति करोंगा जब लों
३ मेरी शक्ति है मैं ईश्वर की स्तुति गाओंगा। अध्यक्षों पर और
४ मनुष्य के वंश पर भरोसा न करो जिन में मुक्ति नहीं। उसका
श्वास निकल जाता है वुह अपनी मिट्टी में फिर जाता है उसी
५ दिन उसकी सारी चिंता नाश होजाती हैं। धन्य वुह जिसका
उपकारक याक़ूब का ईश्वर है और जिसका भरोसा उसके
६ ईश्वर परमेश्वर पर है। जिसने स्वर्ग और पृथिवी और
समुद्र और सब को जो उनमें है सिरजा जो सदा सच्चाई की
७ रक्षा करता है। जो सताये हुओं की दुहाई सुनता है और
८ भूखों को खिलाता है परमेश्वर बंधुओं को छुड़ाता है। परमेश्वर
अंधों की आंखें खोलता है परमेश्वर झुके हुओं को उठाता है
९ परमेश्वर धर्मियों से प्रेम रखता है। परमेश्वर परदेशियों का
रखवाल है वुह अनाथों और राड़ों की सहाय करता है
१० परन्तु दुष्टों के मार्ग को उलट देता है। परमेश्वर सनातन लों
अर्थात् हे सैहून तेरा ईश्वर पीढ़ी से पीढ़ी लों राज्य करेगा
परमेश्वर की स्तुति करो।

१४७ एक सै। सैंतालीसवां गीत।

१ परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि हमारे ईश्वर की स्तुति गाना
२ भला और मनोहर है और स्तुति करना सुन्दर है। परमेश्वर
यिरोशलीम की जोड़ाई करता है वुह इसराईल के निकाले
३ हुओं को एकट्ठा करता है। वुह चूर्ण अंतःकरणियों को चंगा
४ करता है वुह उनके शोक को मिटाता है। वुह तारों की
गिनती बतलाता है और उनका नाम ले ले बुलाता है।
५ हमारा प्रभु महान है और महा सामर्थ्य रखता है उसकी
६ समुझ अगणित है। परमेश्वर दीनों को उभाड़ता है और

७ दुष्टों को भूमि पर दे मारता है। परमेश्वर का धन्यबाद
८ गाओ वीणा बजाके हमारे ईश्वर की स्तुति करो। जो
स्वर्ग को मेघों से ढांपता है जो पृथिवी के लिये मेंह सिद्ध करता
९ है जो पहाड़ों पर घास उगाता है। जो पशुन को और
बन कउओं के बच्चों को जो चिल्लाते हैं आहार पहुंचाता है।
१० घोड़े के बल से वुह आनन्दित नहीं और पुरुष की पिंडुलियों
११ से प्रसन्नता नहीं। जो उसे डरते हैं और जो उसकी दया के
१२ आश्रित हैं परमेश्वर उनसे प्रसन्न है। हे यिरोशलीम परमेश्वर
१३ की स्तुति कर और हे सैहून अपने ईश्वर की स्तुति कर। क्योंकि
उसने तेरे फाटकों के अड़बंगों को दृढ़ किया है और तुझ में
१४ तेरे बालकों को आशीर्वाद दिया। वुह तेरे सिवानों में चैन
१५ देता है और तुझे गेहूंओं की चिकनाई से भर देता है। वुह
अपनी आज्ञा पृथिवी पर भेजता है उसका वचन अत्यन्त चोखाई
१६ से चलता है। पाला को ऊन की नाईं देता है वुह राख की
१७ नाईं हिम बिथराता है। वुह अपने पाला को ग्रास की नाईं
१८ भेजता है उसके शीत के आगे कौन ठहर सक्ता?। वुह अपना
वचन भेजता है और उन्हें गलाता है वुह अपने पवन चलाता
१९ है और पानियों को बहाता है। वुह अपना वचन याकूब पर
और अपने न्याय और अपनी विधि इसराईल पर प्रगट
२० करता है। उसने किसी देश से ऐसा व्यवहार न किया और
न उन्हों ने उसके न्यायों को पहिचाना परमेश्वर की स्तुति करो।

१४८ एक सौ अठतालीसवां गीत।

१ परमेश्वर की स्तुति करो स्वर्गों पर से परमेश्वर की स्तुति करो ऊंचों
२ में से उसकी स्तुति करो। उसके सारे दूतो उसकी स्तुति करो
३ उसकी सारी सेनाओ उसकी स्तुति करो। हे सूर्ज और हे
चान्द उसकी स्तुति करो हे सारे ज्योति के तारो उसकी
४ स्तुति करो। हे स्वर्गों के स्वर्ग हे पानियों जो स्वर्ग के ऊपर हो

५ उसकी स्तुति करो। वे परमेश्वर के नाम की स्तुति करें क्योंकि
६ उसकी आज्ञा से वे सिरजे गये। उसने उन्हें सनातन के
लिये स्थिर किया है उसने एक आज्ञा ठहराई है जो टल न
७ जायगी। हे अजगरो और हे गहिरायो पृथिवी पर से उसकी
८ स्तुति करो। आग और ओले पाले और कुहिरे और बड़ी
९ आंधी जो उसके कहने में हो। सब पहाड़ों और पहाड़ियो
१० फलमान पेड़ और सारे सरो पेड़। पशु और सारे चौपाये
११ और कीड़े मकोड़े और डयने के पंछी। पृथिवी के राजा और
१२ सारे लोग और राजपुत्र और पृथिवी के सारे न्यायी। तरुण
१३ और तरुणी भी और वृद्ध और बालक। परमेश्वर के नाम की
स्तुति करें क्योंकि उसका नाम एकेला श्रेष्ठ है उसका ऐश्वर्य
१४ पृथिवी और स्वर्ग के ऊपर है। वही अपने लोगों के सींग को
और अपने सारे सिद्धों की स्तुति को अर्थात् अपने समीपी
लोग इसराईल के संतान को बढ़ाता है परमेश्वर की स्तुति
करो।

१४९ एक सा उंचासवां गीत ।

१ परमेश्वर की स्तुति करो परमेश्वर के लिये नये गीत गाओ
२ सिद्धों की सभा में उसकी स्तुति करो। इसराईल अपने
सृष्टिकर्त्ता से आनन्द करे सैहून के बंश अपने राजा से आनन्द
३ करें। वे नाच में उसका नाम लेले के स्तुति करें ढोल और
४ बीणा बजाते ऊए उसकी स्तुति गावें। क्योंकि परमेश्वर अपने
लोगों से प्रसन्न है वुह दुःखियों को अपनी मुक्ति से बिभूषित
५ करेगा। सिद्ध लोग गौरव से आनन्दित होवें और अपने
६ बिछौनों पर पुकार के गावें। उनके मुंह में ईश्वर की बड़ी
७ स्तुति होवे और दोधारा खड्ग उनके हाथों में। जिसतें अन्य
८ देशियों से पलटा लेवें और लोगों को दंड देवें। और उनके
राजाओं को सीकरों से और उनके अध्यक्षों को लोहे की

१८ बिछाना वृथा है। वे अपने लोहू के लिये ढूके में हैं वे अपने
१९ प्राण के लिये घात में हैं। धन के लोभी की चाल ऐसीही है
२० जो अपने स्वामियों के प्राण को ले लेता है। उत्तम बुद्धि बाहर
२१ पड़ी पुकारती है वुह सड़कों में शब्द करती है। वुह सभास्थान
में और फाटकों के निकास में पुकारती है नगर में वुह अपने
२२ बचन उच्चारती है। हे भोले लोगो कबलों भोलेपन से प्रीति
रक्खोगे और निंदक अपनी निंदा में आनंद करेंगे और मूढ़
२३ ज्ञान से बैर रक्खेंगे। मेरे दपट से फिरो देखो मैं अपने आत्मा
को तुम पर बहाओंगा और अपने बचन तुम्हें जनाऊंगा।
२४ इसकारण कि मैं ने बुलाया पर तुम ने नाह किया
२५ मैं ने अपना हाथ बढ़ाया पर किसी ने नमाना। पर तुमने
मेरे समस्त मंत्र को तुच्छ जाना और मेरे दपट को नमाना।
२६ मैं भी तुम्हारी विपत्ति से हंसेंगा जब तुम पर भय आवेगा मैं
२७ ठट्ठे मारोंगा। जब तुम्हारा भय उजाड़ की नाईं आवेगा और
तुम्हारा विनाश बौंडर की नाईं आजायेगा जब कष्ट और दुःख
२८ तुम पर पड़ेगा। तब वे मुझे पुकारेंगे परंतु मैं उत्तर नदेऊंगा
२९ वे मुझे तड़के ढूंढ़ेंगे परंतु मुझे नपावेंगे। क्योंकि उन्होंने ज्ञान
३० का बैर रक्खा और परमेश्वर का भय नचुना। उन्होंने मेरे
मंत्र को नमाना और उन्होंने मेरी सारी दपट की निंदा
३१ किई। सो वे अपनीही चाल का फल खावेंगे और अपनीही
३२ भावना से पूर्ण होवेंगे। क्योंकि भोलों का चैन उन्हें नाश करेगा
३३ और भकुओं का भाग्य उन्हें नाश करेगा। परंतु जो मेरी
सुनता है सो चैन से रहेगा और बुराई के भय से बचा रहेगा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ हे मेरे बेटे यदि तू मेरे बचन को मानेगा और मेरी आज्ञाओं
२ को अपने पास छिपा रक्खेगा। यहां लों कि अपने कान को
बुद्धि की ओर झुकावे और समुझ की ओर अपना मन लगावे।

३ हां यदि तू ज्ञान के लिये पुकारेगा और समुझ के लिये
४ अपना शब्द बढ़ावेगा। यदि तू चांदी की नाईं उसे खोजेगा
५ और छिपेहुए धन की नाईं उसे ढूंढ़ेगा। तब तू परमेश्वर के
६ भय को समुझेगा और ईश्वर के ज्ञान को पावेगा। क्योंकि
परमेश्वर बुद्धि देताहै उसके मुंह से ज्ञान और समुझ है।
७ वुह धर्मियों के लिये चोखी बुद्धि धररखताहै वुह उनके लिये
८ जो खराई से चलतेहैं एक ढाल है। वुह बिचार के पथ की
रक्षा करताहै और अपने सिद्धों के मार्ग की चौकसी करताहै।
९ तबही तू ठीक खराई और बिचार और धर्म को और हर
१० एक अच्छा पथ समुझेगा। जब बुद्धि तेरे मन में
११ प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरे जीव को अच्छा लगेगा। तब
सोच तेरी रक्षा करेगी और समुझ तेरी रखवाली करेगी।
१२ क्योंकि तुझे दुष्ट के मार्ग से और उस मनुष्य से जो हठ की
१३ बातें करताहै। उनसे जो खराई के पथ को छोड़देतेहैं जिसतें
१४ अंधियारे मार्गों पर चलें। जो बुराई करने से आनंद होतेहैं
१५ और दुष्टों के हठ से आनंद होतेहैं। जिन की चालें टेढ़ी हैं
१६ और अपने पथों में तिरछे हैं उनसे तुझे बचावे। कि तुझे
पर स्त्री से बचावे उस उपरी स्त्री से जो अपने बचन से
१७ फुसलातीहै। जो अपनी युवती के अगुआ को त्याग करतीहै
१८ और अपने ईश्वर की बाचा को बिसरातीहै। क्योंकि उसका
घर मृत्यु की ओर और उसके पथ मृतकों की ओर झुकतेहैं।
१९ जो उस पास जातेहैं सो फिर नहीं आते वे जीवन के मार्गों को
२० नहीं धरते। जिसतें तू भलाई की चाल पर चले और धर्मियों
२१ के पथों को धरे रहे। क्योंकि देश में खरे बसेंगे और सिद्ध
२२ उसमें बने रहेंगे। परंतु दुष्ट पृथिवी पर से काटडालेजावेंगे
और अपराधी उस्से उखाड़ेजायेंगे।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ हे मेरे बेटे मेरी व्यवस्था को मत भूल परंतु तेरा मन मेरी
२ आज्ञाओं को पालन करे। क्योंकि वे दिनों की बढ़ती और
३ जीवन के बरस और कुशल तुझे देंगे। ऐसा मत कर कि दया
और सत्यता तुझे त्यागकरें परंतु उन्हें अपने गले में लपेट और
४ उन्हें अपने मन की पटिया पर लिख। सो तू ईश्वर की और
५ मनुष्य की दृष्टि में कार्य सिद्ध पावेगा। अपने सारे
मन से परमेश्वर पर भरोसा रख और अपनी समुझ की
६ ओर मत झुक। अपने सारे मार्गों में उसे मानले और वुह
७ तेरी चाल को सुधारेगा। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान मत हो
८ परमेश्वर से डर और बुराई से अलग हो। वुह तेरी नाभी के
९ लिये ओषध और तेरी हड्डियों के लिये तरावट होगा। अपनी
संपत्ति में से और अपनी सारी बढ़ती के पहिले फल से
१० परमेश्वर की प्रतिष्ठा कर। सो तेरे खत्ते बहुताई से भरजायेंगे
११ और तेरे कोल्हू नई मदिरा से फूट निकलेंगे। मेरे
बेटे परमेश्वर की ताड़ना को निंदा मत कर और उसके दंड से
१२ थक मत जा। क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उसे ऐसा
ताड़ना करता है जैसा बाप अपने दुलारे बेटे को।

१३ धन्य वुह मनुष्य जिसने बुद्धि को प्राप्त किया और वुह
१४ मनुष्य जिसने समुझ को पाया। क्योंकि उसका व्यापार चांदी
के व्यापार से और उसका लाभ चोखे सोने के लाभ से
१५ अच्छा है। वुह लालों से बहुमूल्य है और समस्त वस्तु जिनकी
१६ तू लालसा करसक्ता है उसके तुल्य नहीं। दिनों की बढ़ती
उसके दहिने हाथ में धन और प्रतिष्ठा उसके बायें हाथ में।
१७ उसके मार्ग आनंदता के मार्ग हैं और उसके समस्त पथ
१८ कुशल के हैं। वुह उनके लिये जो उसे ग्रहण करते हैं जीवन
१९ का वृक्ष है धन्य वुह जो उसे रखलेता है। परमेश्वर ने बुद्धि से
पृथिवी की नेंव डाली और समुझ से स्वर्ग को स्थिर किया।

२० उसके ज्ञान से गहिराइयां फूट निकलतीहैं और मेघों से
२१ ओस टपकतीहै। मेरे बेटे उन्हें अपनी आंखों से अलग मत
२२ होनेदे चोखी बुद्धि और सोच को धर रख। सो वे तेरे प्राण
२३ के लिये जीवन और तेरे गले के लिये अनुग्रह होंगे। तब तू
अपने मार्ग में बचके चलेगा और तेरा पांव ठोकर नखायगा।
२४ जब तू लेटजायगा नडरेगा हां तू सो रहेगा और तेरी निंदा
२५ भी होगी। अचानक दुःख से और दुष्टों के उजाड़ से जब वुह
२६ आताहै मत डर। क्योंकि परमेश्वर तेरा भरोसा होगा तेरे
२७ पांव को फंदे से बचावेगा। भलाई को उनके स्वामियों
से भलाई अलग मत रख जब कि तेरे हाथ में करने को
२८ सामर्थ्य होय। तेरे पास होतेही अपने परोसी को मत कह
२९ कि जा फिर आइयो और मैं कल देउंगा। और अपने परोसी
से बुरा व्यवहार मत कर क्योंकि वुह चैन से तेरे पास रहताहै।
३० किसी मनुष्य से अकारथ मत झगड़ यदि उसने तुझ से खोटाई
३१ नकिई। अंधेरी पर डाह मत कर और उसके कोई मार्ग
३२ को मत चुन। क्योंकि क्रूर से परमेश्वर को घिन है परंतु उसका
३३ भेद धर्म्मियों पास है। दुष्टों के घर पर परमेश्वर का स्राप परंतु
३४ सज्जन के निवास पर आशीष देताहै। निश्चय वुह निंदकों
की निंदाकरताहै परंतु वुह दीनों पर दयाकरताहै।
३५ बुद्धिमान विभव के अधिकारी होंगे परंतु मूढ़ों की बढ़ती
लाज होगी।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ हे बालको पिता के उपदेश को सुनो और समझ पर ध्यान
२ करो। क्योंकि मैं तुम्हें अच्छा उपदेश देताहों मेरी व्यवस्था को
३ त्याग मत करो। क्योंकि मैं अपने पिता का बेटा था और
४ अपनी माता का एकलौता लाड़िला। उसने भी मुझे सिखलाया
और मुझे कहा कि मेरा बचन तेरे मन में धरा रहे मेरी

५ आज्ञाओं को पालन कर और जीता रह। बुद्धि और समझ प्राप्त कर मत भूल और मेरे मुंह की बातों से मुंह मत फेर।
६ उसे त्याग मत कर वुह तेरी रक्षा करेगी उसे प्यार कर और
७ वुह तेरी रक्षा करेगी। बुद्धि मूल वस्तु है सो तू बुद्धि प्राप्त कर
८ और अपने समस्त प्राप्त में समझ प्राप्त कर। उसे बढ़ा वुह तुझे उभारेगी जब तू उसे गोद में लेगा तब वुह तुझे प्रतिष्ठा
९ देगी। वुह तेरे सिर पर अनुग्रह का आभूषण रक्खेगी वुह तुझे
१० बिभव का मुकुट देगी। मेरे बेटे सुन और मेरे कहावतों को
११ ग्रहण कर और तेरे जीवन के बरस बज्ञतसे होंगे। मैं ने तुझे बुद्धि का मार्ग सिखाया है मैं ने तुझे ठीक पथों में चलाया है।
१२ जब तू चलेगा तेरे डग सकेत न होंगे जब तू दौड़ेगा तू ठोकर
१३ न खायगा। उपदेश को दृढ़ता से धर रख उसे जाने मत दे
१४ उसे रखछोड़ क्योंकि वुह तेरा जीवन। दुष्टों के पथ में मत बैठ
१५ और बुराई के मार्ग में मत जा। उस्से बच रह उसके पास
१६ से मत जा उधर से फिर जा और निकल जा। क्योंकि जबलों वे बुराई न कर लेवें तबलों सोते नहीं और जबलों किसी
१७ को गिरा न देवें उन्हें नींद नहीं आती। क्योंकि दुष्टता
१८ की रोटी खाते हैं और अंधेर की मदिरा पीते हैं। परंतु सज्जन की चाल चमकती ज्योति के समान है जो मध्याह्न लों
१९ चमकती जाती है। दुष्टों का मार्ग अंधकार है वे नहीं जानते हैं
२० कि किस्से ठोकर खाते हैं। मेरे बेटे मेरी बातों पर ध्यान रख और
२१ मेरे कहावतों पर झुक। उन्हें अपनी दृष्टि से जाने मत दे
२२ उन्हें अपने अंतःकरण में धारण कर। क्योंकि वे उनके लिये जो उन्हें प्राप्त करते हैं जीवन और उनके सारे शरीर के लिये
२३ ओषध हैं। अपने अंतःकरण को समस्त धारण से धारण कर
२४ क्योंकि जीवन की धारा उसी से है। मुंह की हठ को अपने से अलग कर और होंठों की टेढ़ाई अपने पास से दूर रख।
२५ तेरी आंखें आगे देखा करें और तेरी पलकें तेरे साम्हने देखें।

२६ अपने पांव के पथ को तैाल सो तेरे सारे मार्ग ठीक कियेजायेंगे।
२७ अथवा दहिने बायें हाथ को मत मुड़ परंतु अपने पांव को बुराई से हटा।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ मेरे बेटे मेरी बुद्धि पर ध्यान कर और मेरे समुझ की ओर
२ अपने कान झुका। जिसतें तू सोच करे और तेरे होंठ
३ ज्ञान को धारण करें। क्योंकि पर स्त्री के होंठ से मधु का छत्ता
४ टपकताहै और उसका तालू तेल से अधिक चिकना है। पर उसका अंत नागदाैना की नाईं कड़ुवा है और दोधारे खड्ग
५ की नाईं चोखा। उसके पांव मृत्यु में उतरतेहैं उसके डग
६ नरक को धारण करतेहैं। नहो कि तू जीवन के पथ को तैाले
७ उसके मार्ग चलायमान हैं तू नहीं जानसक्ता। सो हे बालको मेरी सुनो और मेरे मुंह के बचन से अलग मत होओ।
८ अपना मार्ग उस्से दूर हटाओ और उसके घर के द्वार के
९ पास मत जाओ। ऐसा नहोवे कि तू अपनी प्रतिष्ठा औरों
१० को और अपने बरस क्रूरों को देवे। नहोवे कि पराये लोग तेरे बल से पूर्ण होवें और तेरा सारा परिश्रम उपरी के घर
११ में उठे। जब तेरा मांस और तेरा देह क्षीण होजाय तब तू
१२ अंत में बिलाप करके कहे। हाय मैं ने उपदेश से बैर रक्खा
१३ और मेरे मनने तेरे दपट की निंदा किईहै। और अपने उपदेशकों के शब्द को नमाना और जो मुझे उपदेश
१४ देतेथे मैं उनकी ओर कान नझुकाये। मैं मंडली के मध्य में
१५ और सभा में कुछ कुछ छोड़ समस्त बुराई में था। अपनेही कुंड
१६ से पानी पी और अपनेही कूंये से बहता पानी। तेरे सोते
१७ बाहर फैलायेजावें और नदियों के पानी सड़कों में। वे अकेला
१८ तेराही होवें और कोई पराया तेरा साथी नहोवे। तेरे सोते में आशीष होवे और अपनी युवावस्था की पत्नी से

१९ आनंद हो। उसे ऐसा प्यार कर जैसे प्रिय हरणी और मन भाया हरणी का गदेला हर समय में उसके स्तनों से संतुष्ट
२० हो और उसके प्यार से सदा आनंदित हो। और हे मेरे बेटे तू किस लिये पर स्त्री से आह्लादित होवेगा और उपरी को
२१ किस लिये समेटेगा। क्योंकि मनुष्य की चाल परमेश्वर की आंखों के आगे है और वुह उसकी सारी चलन को जांचताहै।
२२ उन्हीं की बुराइयां दुष्टों को पकड़लेंगी और वुह अपनेही
२३ पाप की डोरियों से जकड़ाजायगा। वुह बिना शिक्षा से मरजायगा और अपनी अति मूढ़ता में भटका फिरेगा।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ मेरे बेटे यदि तू अपने मित्र का बिचवई ऊआहो यदि तू ने
२ किसी परदेशी से हाथ माराहो। तो तू अपनेही मुंह की बातों से फंसगया और अपनेही मुंह की बातों से पकड़ागया।
३ मेरे बेटे अब यह कर और आप को बचा कि जब तू अपने मित्र के हाथ में पड़जाय तो आप को नम्र कर इस भांति से तू
४ अपने मित्र को बश में करेगा। अपनी आंखों को नींद मत दे
५ और अपनी पलकों को ऊंघने मत दे। अपने को हरिण के गदेले की नाईं व्याधा के हाथ से और चिड़िया के समान चिड़ियामार
६ के हाथ से बचा। हे आलसी चिउंटी के पास जा उसके
७ मार्गों को बूझ और बुद्धिमान हो। जो अगुआ करोड़ा और
८ आज्ञाकारी न रखके। ग्रीष्म में अपने लिये भोजन सिद्ध करतीहै
९ और लवनी में अपना आहार बटोरतीहै। हे आलसी तू
१० कबलों सोवेगा तू कब अपनी नींद से उठेगा। थोड़ा सोना और थोड़ा ऊंघना और थोड़ा हाथों को नींद के लिये समेटलेना।
११ सो तेरी कंगालपन पथिक की नाईं आवेगी और तेरी
१२ दरिद्रता हथियारबंध की नाईं। क्रूर जन और दुष्ट मनुष्य
१३ मुंह की हठ से चलताहै। वुह अपनी आंखों से मारताहै

वुह अपने पांओं से बोलताहै वुह अपनी अंगुलियों से
१४ सिखाताहै। टेढ़ाई उसके मन में है वुह सदा बुराई पर सोच
१५ करताहै वुह बिगाड़ फैलाताहै। सो उसपर अचानक बिपत्ति
१६ आपड़ेगी वुह बिना औषध टूट जायगा। परमेश्वर
इन छवों से बैर रखताहै हां सात से उसका जीव घिन
१७ करताहै। अहंकारी आंख झूठी जीभ और हाथ जो निर्दोष
१८ का लोहू बहाताहै। मन जो बुरा बिचार बांधताहै पांव जो
१९ बुराई के लिये बेग दौड़तेहैं। झूठा साक्षी झूठ बोलताहै
२० और वुह जो भाइयों में बिगाड़ बोताहै। मेरे बेटे
अपने पिता की आज्ञा को पालन कर और अपनी माता की
२१ व्यवस्था को त्याग मत कर। उन्हें सदा अपने मन में बांधले
२२ और उन्हें अपने गले में लपेट। जब तू चलेगा वुह तेरी
अगुआई करेगी जब तू सोयेगा वुह तेरी रक्षा करेगी और
२३ जब तू जागेगा वुह तुझ से बातें करेगी। क्योंकि आज्ञा जो
है सो एक दीपक है और व्यवस्था उंजियाला है और
२४ उपदेश की दपट जीवन के मार्ग। जिसतें तुझे बुरी स्त्री से
२५ और पराई जीभ की फुसलाहट से अलग रक्खें। अपने मन में
उसके रूप का इच्छा मत कर और उसे अपनी आंखों की
२६ पलकों से आपको पकड़ने मत दे। क्योंकि ब्यभिचारिणी के
कारण से पुरुष टुकड़ा मांगाकरताहै और ब्यभिचारिणी
२७ महंगमोल प्राण का अहेर करतीहै। क्या मनुष्य अपनी गोद
२८ में आग लेवे और उसके कपड़े नजलें। क्या कोई अंगारा
२९ पर चले और उसके पांव नजलें। ऐसाही अपने परोसी
की पत्नी के पास जो कोई जाताहै सो निर्दोष नरहेगा।
३० यदि चोर अपनी भूख मिटाने के लिये चोरी कर के अपने
३१ प्राण को संतुष्ट करे तो उसकी निंदा नहीं होती। पर यदि वुह
पकड़ाजाय तो सातगुण भर देगा वुह अपने घर की समस्त
३२ संपत्ति देगा। जो कोई किसी स्त्री से ब्यभिचार करताहै

सो निर्बुद्धि है वुह अपने प्राण को नाश करने के लिये करता है।
३३ वुह घाव और निरादर पावेगा और उसका कलंक मिटाया
३४ न जायगा। कि झल मनुष्य का कोप है सो वुह पलटा के दिन
३५ न छोड़ेगा। किसी भांति के छुड़ावा को न मानेगा यद्यपि तू उसे
बज़त दान देवे तथापि वुह न मानेगा।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ मेरे बेटे मेरी बातों को धारण कर और मेरी आज्ञाओं को
२ अपने पास धर रख। मेरी आज्ञाओं को धारण कर और
जीता रह और मेरी व्यवस्था को अपनी आंख की पुतली की
३ नाईं कर। उन्हें अपनी अंगुलियों पर बांध उन्हें अपने मन
४ की पटरी पर लिख। बुद्धि को कह कि तू मेरी बहिन और
५ समुझ को अपना कुटुंब। जिसतें वे तुझे परस्त्री से और
उस उपरी से जो तुझे अपनी बातों से फुसलाती है बचारक्खें।
६ क्योंकि मैं ने अपने घर की खिड़की के झरोखे से देखा।
७ और भकुओं में और तरुणों में एक असमुझ को देखा।
८ उसके घर के कोने के पास सड़क से चला जाता था और वुह
९ उसके घर की ओर गया। गोधूली में सांझ को बड़ी अंधियारी
१० रात को। और देखो कि वेश्या के पहिरावा में उसे एक स्त्री
११ मिली जो चतुर थी। अब मार्गों में और हर एक कोनों में
१२ अगोरती है। वुह चिल्लाती है और ढीठ है उसके पांव घर में
१३ नहीं ठहरते। उसने उसे पकड़ा और उसका चूमा लिया
१४ और निर्लज्ज से उसे कहा। कि मेरे यहां कुशल की भेटें हैं
१५ आज के दिन मैं ने अपनी मनौतियां पूरी किई हैं। इस लिये
मैं तुझे मिलने को निकली हों कि यत्न से तुझे ढूढ़ों और
१६ तुझे पाया है। मैं ने अपने बिछौने को मिसर के बूटे काढ़े ऊए
१७ झीने बस्त्र से सवांरा है। मैं ने अपने बिछौने को मुर
१८ और एलवा और दारचीनी से सुगंध किया है। आव

प्रातःकाल लों प्रेम से मिल के उन्मत्त होवें आव आपुस में
१९ प्यार से जी बहलावें। क्योंकि वुह भला मनुष्य तो अपने घर में
२० नहीं उसने दूर की यात्रा किई है। वुह एक थैला रोकड़ अपने
२१ हाथ में लेगया है और परिवा को घर आवेगा। सो उसने
अपनी छल की बातों से उसे बश में किया और अपने होंठों के
२२ फुसलाने से उसे खींचा। वुह अचानक उसके पीछे चलाजाता है
जैसे बरदा घात होने को जाता है अथवा मूढ़ की नाईं जो
२३ काठ में ठोके जाने के लिये जाता है। यहां लों कि बरछी उसके
कलेजे के पार होगई उस चिड़िया के समान जो जाल की
ओर शीघ्र जाती है और नहीं जानती कि वहां उसका प्राण
२४ जायगा। सो अब हे बालको मेरी सुनो और
२५ मेरे मुंह के बचन पर ध्यान रक्खो। अपने मन को उसके
मार्गों पर झुकने मत देओ भटक कर उसके पथों में मत जाओ।
२६ क्योंकि उसने बज़तों को घायल करके गिरादिया है हां बज़त से
२७ सूर उसे जूझगये हैं। उसका घर नरक के मार्ग हैं जो मृत्यु के
भवनों में पज़ंचते हैं।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ क्या बुद्धि नहीं पुकारती और क्या समुझ अपना शब्द नहीं
२ उठाती। वुह ऊंचे स्थानों के ऊपर की चोटियों पर और उन
स्थानों में जो सड़क के बीच में हैं मार्ग पर खड़ी रहती है।
३ वुह फाटकों पर और नगर के पैठ पर और भीतर आने के
४ द्वारों पर पुकारती है। कि हे लोगो मैं तुम्हें बुलाती हूं और
५ मनुष्य के संतानों को पुकारती हों। हे भोलो बुद्धि को
६ समुझो और हे मूर्खो समुझ का मन रक्खो। सुनो क्योंकि
मैं अच्छी अच्छी बातें कहूंगी और मेरे होंठों के खुलने से ठीक
७ बातें निकलेंगी। क्योंकि मेरा मुंह सच सच कहेगा और दुष्टता से
८ मेरे होंठों को घिन है। मेरे मुंह की सारी बातें धर्म की हैं

९ उनमें टेढ़ी तिरछी कोई वस्तु नहीं। समझवैया के लिये सब
१० खुला है और ज्ञानी के लिये सब ठीक। मेरे उपदेश
को ग्रहण करो रुपे को नहीं और ज्ञान को चोखे सोने से
११ अधिक चुनो। क्योंकि बुद्धि लाल से भी अच्छी है और समस्त
वस्तें जिनकी लालसा किईजातीहैं उसके तुल्य हो नहीं
१२ सकतीं। मैं जो बुद्धि हों चौकसी के साथ रहतीहों और
१३ चतुराई के भेद के ज्ञान को प्राप्त करतीहों। बुराई से घिन
करना परमेश्वर का भय है और म अहंकार और अभिमान
१४ और कुमार्ग और कुवचन से बैर रखतीहों। मंत्र और ठीक
१५ बुद्धि मेरी हैं मैंही समुझ हों और मुझी में बल है। मुझे
१६ राजा राज्य करते हैं और राजपुत्र बिचार करतेहैं। मुझे
प्रधान और अध्यक्ष और पृथिवी के सारे न्यायी प्रभुता
१७ करतेहैं। मैं उन पर प्रेम करतीहों जो मुझे प्रेम रखतेहैं
१८ और वे जो मुझे तड़के ढूंढ़तेहैं मुझे पावेंगे। धन और
१९ प्रतिष्ठा हां दृढ धन और धर्म्म मेरे साथ हैं। मेरा फल सोने से
२० हां चोखे सोने से और मेरा कर चोखी चांदी से भलाहै। मैं धर्म्म के
२१ मार्ग में और बिचार के पथ के मध्य में लेजातीहों। जिसतें मैं
उन्हें जो मुझे प्यार करते हैं संपत्ति का अधिकारी करों और
२२ मैं उनके भंडार भरदेउंगी। परमेश्वर अपने मार्ग
के आरंभ में अपने प्राचीन कार्य्यों से आगे मुझे रखताथा।
२३ मैं सनातन से स्थापित किईगई आरंभ से पृथिवी के होने से
२४ आगे। जब गहिराव नथे मैं उत्पन्न हुई जब पानीभरे सोते
२५ नथे। मैं पहाड़ों के स्थिर होनेसे पहिले और पहाड़ियों से
२६ आगे उत्पन्न हुई। जबलों उसने पृथिवी न बनाईथी न खुला स्थान
२७ न जगत की मिट्टी के श्रेष्ठ स्थान। जब कि उसने स्वर्ग बनाये
२८ और गहिराव के मुंह को घेरलिया मैं वहां थी। जब उसने
ऊपर को ठहराया और जब कि उसने गहिराव के सोतों को
२९ दृढ किया। जब उसने समुद्र को आज्ञा दिई कि पानी उसकी

आज्ञा से बाहर नजावें जब उसने पृथिवी की नेंवें डालीं।
३० तब मैं उसके पास प्रतिपालित के समान थी और मैं प्रति दिन
३१ आनंदित थी और सदा उसके आगे आनंद करतीथी। मैं
उसकी पृथिवी के बसाव के टुकड़े पर आनंद करतीथी और
३२ मेरा आनंद मनुष्य के संतान के साथ था। सो अब हे बालको
मेरी सुनो क्योंकि जो मेरे मार्ग को धारण करतेहैं सो धन्य हैं।
३३ उपदेश सुनो और बुद्धिमान होओ और उसे टाल मत देओ।
३४ धन्य वुह मनुष्य जो मेरी सुनताहै और जो प्रति दिन मेरे
फाटकों पर बाट जोहताहै और मेरे द्वारों के खंभों पर
३५ ठहरताहै। क्योंकि जिस किसीने मुझे पाया उसने जीवन
३६ को पाया और परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करेगा। परंतु जो
मेरा पाप करताहै सो अपने प्राण का बैर करताहै वे सब
जो मुझसे बैर रखतेहैं मृत्यु से प्रेम करतेहैं।

९ नवां पर्ब्ब।

१ बुद्धि ने अपना घर बनायाहै उसने अपने सात खंभे गढ़ेहैं।
२ उसने अपने बधनों को बधकियाहै उसने अपनी मदिरा को
३ मिलायाहै उसने अपना मंच भी सिद्ध कियाहै। उसने अपनी
सहेलियों को भेजाहै वुह नगर के ऊंचे से ऊंचे स्थानों पर
४ पुकारतीहै। जो कोई भोला हो सो इधर फिरे वुह असमुझ
५ को कहतीहै। आओ और मेरी रोटियों में से खाओ और
६ मेरी मिलाईऊई मदिरा में से पीयो। मूढ़ता त्यागो और
७ जीओ और समुझ के मार्गों में जाओ। जो निंदकों
को झिड़कताहै सो अपने लिये लाज प्राप्त करताहै और जो दुष्ट
८ को दपटताहै सो आपही कलंक पाताहै। निंदकों को मत
झिड़क नहो कि वुह तुझसे बैर करे बुद्धिमान को झिड़क और
९ वुह तुझसे प्रेम रक्खेगा। बुद्धिमान को उपदेश कर और वुह
अधिक बुद्धिमान होगा सज्जन को सिखला और वुह विद्या में

१० बढ़ेगा। परमेश्वर का भय बुद्धि का आरंभ और पवित्रमय का
११ ज्ञान समुझ है। क्योंकि मुझसे तेरे दिन बढ़जायेंगे और तेरे
१२ जीवन के बरस अधिक होंगे। यदि तू बुद्धिमान होवे तो अपनेही
लिये बुद्धिमान होगा यदि तू निंदा करे तूही अकेला सहेगा।
१३।१४ मूढ़ स्त्री झगड़ालू है भोली कुछ नहीं जानती। वुह
अपने घर के द्वार पर और नगर के ऊंचे स्थानों में पीढ़ी पर
१५ बैठीहै। जिसतें पथिकों को जो अपने सीधे मार्गों पर चलेजातेहैं
१६ बुलावे। कि जो कोई भोला हो सो इधर फिरे और वुह
१७ बुद्धिहीन से कहतीहै। चोरी के पानी मीठे हैं और छिपी
१८ छिपी रोटी अच्छीलगतीहैं। परंतु वुह नहीं जानता कि वहां
मृतक हैं और उसके पाऊन नरक के गहिरापे में हैं।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ सुलेमान के दृष्टांत बुद्धिमान बेटा पिता को आनंदित करताहै
२ परंतु मूढ़ बेटा अपनी माता की उदासी है। दुष्टता के भंडार
३ से कुछ प्राप्त नहीं परंतु धर्म्म मृत्यु से छुड़ाताहै। परमेश्वर
धर्म्मी के प्राण को भूख से मरने नदेगा परंतु वुह दुष्टों को
४ उनकी दुष्टता के कारण त्याग करेगा। जो ढीले हाथ से
बांटताहै सो कंगाल होताहै परंतु चालाकों का हाथ धनी
५ करताहै। जो ग्रीष्म में बटोरताहै सो बुद्धिमान पुत्र है
६ परंतु जो लवनी में सोताहै सो लाज देवैया पुत्र है। सज्जन
के सिर पर आशीष हैं परंतु अंधेर दुष्ट के मुंह को ढ़ांपताहै।
७ सज्जन का स्मरण धन्य है परंतु दुष्टों का नाम सड़ जायगा।
८ अंतःकरण का बुद्धिमान आज्ञा मानेगा परंतु होंठों का मूर्ख
९ मारा जायगा। जो खराई से चलताहै सो सचाई से चलताहै
परंतु जो अपने मार्ग को बिगाड़ताहै सो प्रगट होजायगा।
१० जो आंख से मटकाताहै सो शोक कराताहै परंतु गप्पी मूर्ख
११ माराजायगा। धर्मी का मुंह जीवन का कूआं है परंतु अंधेर

१२ दुष्टों के मुंह को ढांपेगा। बैर झगड़ा उठाताहै पर प्रेम सारे
१३ पापों को ढांपताहै। समुझवैया के होंठ में बुद्धि पाईजातीहै
१४ परंतु मन हीन की पीठ के लिये छड़ी है। बुद्धिमान ज्ञान
१५ धर रखताहै मूर्ख का मुंह नाश के समीप है। धनमान का
धन उसका दृढ़ नगर है कंगालों की कंगालपन उनका नाश है।
१६ धर्मियों का परिश्रम जीवन के लिये है परंतु दुष्टों का फल
१७ पाप के लिये है। जो उपदेश धारण करताहै सो जीवन के
मार्ग पर है परंतु जो दपट को नहीं मानताहै सो चूक
१८ करताहै। जो झूठे होंठों में बैर छिपाताहै और जो अपबाद
१९ को उच्चारताहै सो मूर्ख है। बचन की बकताई में पाप की
घटती नहीं है परंतु जो अपने होंठों को रोकताहै सो
२० बुद्धिमानहै। सज्जन की जीभ चुनीहुई चांदी है दुष्ट का मन
२१ थोड़े मोल का है। धर्मियों के होंठ बहुतों को खिलातेहैं परंतु
२२ मूर्ख लोग मनहीनता से मरतेहैं। परमेश्वरही का आशीष
धनी करताहै और वुह उसके साथ शोक नहीं मिलाता।
२३ बुराई करना मूर्ख के लिये ठट्ठा है परंतु समझवैया के पास
२४ बुद्धि है। दुष्टों का भय उन पर पड़ेगा परंतु धर्मियों की इच्छा
२५ पूर्ण होगी। जिस रीति से बौंडर जाताहै वैसाही दुष्ट
२६ नबचेगा परंतु धर्मी सनातन की नेंव हैं। जैसा दांतों के लिये
सिरका और आंखों के लिये धूआं ऐसाही आलसी अपने
२७ भेजवैया के लिये है जो उसे भेजतेहैं। परमेश्वर का भय बय
२८ को बढ़ाताहै परंतु दुष्टों के बरस घटायेजायेंगे। धर्मियों की
२९ आशा आनंद है परंतु दुष्टों की आशा नाश होगी। परमेश्वर
का मार्ग खरे लोगों के लिये बल है परंतु कुकर्मियों के लिय
३० बिनाश। धर्मी कभी टलाये नजायेंगे परंतु दुष्ट पृथिवी के
३१ अधिकारी नहोंगे। सज्जन के मुंह से बुद्धि निकलतीहै परंतु
३२ टेढ़ी जीभ काटडाली जायेगी। धर्मी के होंठ जानते हैं कि
ग्राह्य के योग्य क्या परंतु दुष्ट का मुंह टेढ़ा है।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ छल की तुला परमेश्वर को घिन है परंतु पूरा बटखरा उसकी
२ प्रसन्नता है। अहंकार जब आता है तब लज्जा आती है परंतु
३ नम्रता के साथ बुद्धि है। खराई की सचाई उनकी अगुआ
४ होगी परंतु अपराधियों की टेढ़ाई उन्हें नाश करेगी। कोप के
दिन धन से लाभ नहीं होता परंतु धर्म्म मृत्यु से छुड़ाता है।
५ सिद्ध का धर्म उसके मार्ग को सुधारेगा परंतु दुष्ट अपनी दुष्टता ही
६ से गिरपड़ेगा। खरे का धर्म उन्हें छुड़ावेगा परंतु अपराधी
७ नटखटी में पकड़े जायेंगे। जब दुष्ट मनुष्य मरता है तब उसकी
आशा नष्ट होती है और असत्य की आशा नष्ट होती है।
८ धर्म्मी दुःख से छुड़ाया जाता है और उसकी संती दुष्ट पकड़ा
९ जाता है। कपटी मनुष्य मुंह से अपने परोसी को नाश करता है
१० परंतु सज्जन ज्ञान के द्वारा से छुड़ाया जायगा। जब धर्म्मियों
पर भलाई बीतती है तब नगर आनंदित होता है और जब
११ दुष्ट नष्ट होता है तब ललकारा जाता है। खरों के आशीष से
नगर बढ़ाया जाता है परंतु दुष्टों के मुंह से उलटाया जाता है।
१२ जो मनहीन है सो परोसी की निंदा करता है परंतु समुझवैया
१३ चुपका रहता है। लुतड़ा मनुष्य भेद प्रगट करता है परंतु जिसका
१४ बिश्वस्त प्राण है सो बात छिपाता है। जहां परामर्ष नहीं तहां
लोग गिरपड़ते हैं परंतु मंत्रियों की बहुताई से बचाव है।
१५ जो परदेशी का बिचवई होता है सो पछतावेगा और जो
१६ बिचवई होने से बैर रखता है सो निर्भय है। अनुग्रहीत स्त्री
प्रतिष्ठा रखछोड़ती है और बलवंत पुरुष धन को रखछोड़ता है।
१७ दयाल मनुष्य अपनेही प्राण पर भलाई करता है परंतु कठोर
१८ अपनेही मांस को दुःख देता है। दुष्ट छल के कार्य करता है
१९ परंतु जो धर्म बोता है सो अवश्य प्रतिफल पायेगा। जैसा
धर्म से जीवन है वैसा जो बुराई का पीछा करता है सो अपनेही
२० मृत्यु के लिये है। जिनका मन टेढ़ा है सो परमेश्वर के आगे

घिनित हैं परंतु जिन की चाल खरी है सो उसका आनंद है ।
२१ यद्यपि हाथ से हाथ मिले तथापि दुष्ट निर्दंड नजायगा परंतु
२२ धर्मियों का बंश छुड़ाया जायगा । रूपवती स्त्री जो लाज को
छोड़ती है सो उस सूअर की नाईं है जिसके थूथुनोंम सोने
२३ की नथुनी है । धर्मियों की लालसा केवल भलाई है परंतु
२४ दुष्टों की आशा क्रोध है । कोई तो बिथराता है तथापि बटोरता
है और कोई उचित से अधिक रखछोड़ता है परंतु दरिद्रता
२५ का कारण होजाता है । आशीष का अंतःकरण मोटा होगा
२६ और वुह जो सींचता है आप भी सींचाजायगा । जो अन्न रख
छोड़ताहै उसपर स्राप होगा परंतु बेचवैया के सिरपर आशीष
२७ होगा । जो यत्न से भलाई ढूंढ़ताहै सो अनुग्रह प्राप्त करता है
२८ परंतु जो बुराई को ढूंढ़ता है वुह उसी पर आवेगी । जो अपने
धन पर भरोसा रखता है सो गिरपड़ेगा परंतु धर्मी डाली
२९ की नाईं लहलहावेगा । जो अपने घराने को सताता है
सो पवन का अधिकारी होगा और मूर्खजन बुद्धिमान
३० अंतःकरण का सेवक होगा । धर्मी जीवन का वृक्ष है और जो
३१ प्राणों को जीत्ता है बुद्धिमान है । देख धर्मी को पृथिवी
पर पलटा दियाजायगा तो कितना अधिक दुष्ट और
पातकी को ।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ जो कोई उपदेश से प्रेम रखता है ज्ञान से प्रेम रखता है परंतु
२ जो दपट से बैर रखता है सो पशुवत है । उत्तम परमेश्वर का
अनुग्रह पाता है परंतु दुष्ट जुगती मनुष्य को दोषी ठहरावेगा ।
३ दुष्टता से मनुष्य स्थिर नकिया जायगा परंतु धर्मियों की जड़
४ टलाई नजायगी । सुकर्म्मी स्त्री अपने पति के लिये मुकुट है
परंतु जो लज्जित कराती है सो उनकी हड्डियों में सड़ाहट की
५ नाईं है । धर्मियों की चिंता ठीक है परंतु दुष्टों के परामर्ष

६ कपट हैं। दुष्टों की बातें घात के लिये ढूके में रहती हैं परंतु
७ खराई का मुंह उन्हें छुड़ावेगा। दुष्ट लोग उलटायेगये हैं
८ और नहीं हैं परंतु धर्मियों का घर स्थिर रहेगा। मनुष्य का
सराहना उसकी बुद्धि के समान होगा परंतु जो अंतःकरण
९ का टेढ़ा है सो निंदित है। जिसका सेवक है सो उस्से भला
है जो अपनी प्रतिष्ठा करता है और रोटी का अधीन है।
१० धर्मी अपने पशुन के प्राण की चिंता करता है परंतु दुष्टों की
११ कोमल दया कठोरता है। जो भूमि को जोता बोया करता है
सो रोटी से तृप्त होगा परंतु जो तुच्छ का पीछा करता है
१२ सो असमुझ है। दुष्ट बुराई का जाल चाहता है परंतु धर्मियों
१३ की जड़ प्राप्त देती है। होंठों के पाप से दुष्ट बझाया जाता है
१४ परंतु सज्जन दुःख से निकल आवेगा। अपने मुंह के अच्छे फलों
से मनुष्य तृप्त किया जायगा करंतु मनुष्य के हाथों का प्रतिफल
१५ उसे दिया जायगा। मूढ़ की चाल उसकी दृष्टि में भली है
१६ परंतु जो मंत्र को मानता है सो बुद्धिमान है। मूर्ख का क्रोध
१७ तुरंत जाना जाता है परंतु चतुर लाज को ढांपता है। जो
सच बोलता है सो धर्म को प्रगट दिखलाता है परंतु झूठा
१८ साक्षी छल देता है। किसी की बोली ऐसी है जैसे खड्ग का
१९ चुभना परंतु बुद्धिमान की जीभ कुशल ह। सच्चाई के होंठ
सदा लों स्थिर रहेंगे परंतु झूठी जीभ पल भर की है।
२० कुचिंतक के मन में छल है परंतु मिलाप के मंत्रियों को आनंद
२१ है। सज्जन पर कोई बिपत्ति न पड़ेगी परंतु दुष्ट बुराई से
२२ पूर्ण होगा। झूठे होंठों से परमेश्वर को घिन है परंतु जो सच्चा
२३ व्यवहार करते हैं सो आनंदित हैं। चतुर मनुष्य ज्ञान को
२४ छिपाता है परंतु मूर्खों का मन मूर्खता प्रचारता है। चालाक का
हाथ प्रभुता करेगा परंतु आलसी कर के वश में होगा।
२५ मनुष्य का शोक उसे निझड़ाता है परंत सुबचन मगन करता
२६ है। धर्मी अपने परोसी से अति भला है परंतु दुष्टों का मार्ग

२७ उन्हें भटकाताहै। आलसी अपनी अहेर को नहीं भूंजता परंतु
२८ चालाक मनुष्य की संपत्ति बड़मूल्यहै। धर्म के मार्ग में जीवन
है और उसके पथ में मृत्यु नहीं।

१३ तेरहवां पर्व्व।

१ बुद्धिमान बेटा अपने पिता का उपदेश सुनताहै परंतु निंदक
२ दपट को नहीं सुनता। मनुष्य अपने मुंह के फल में से अच्छा
३ खायगा परंतु अपराधियों का प्राण अंधेर। जो अपने मुंह को
संभालताहै सो अपने प्राण की रक्षा करताहै परंतु जो अपने
४ होंठों को पसारताहै सो नाश होगा। आलसियों का मन
बड़त कुछ चाहताहै और कुछ नहीं पाता परंतु चालाकों का
५ मन पुष्ट होगा। धर्मी जन झूठ से बैर रखताहै परंतु दुष्ट
६ घिनितहै और लाज को पड़ंचता है। खराचाली की रक्षा
७ धर्म करता है परंतु पापी को दुष्टता उलट देतीहै। कोई आप
को धनी बनाताहै तथापि कुछ नहीं कोई आप को कंगाल
८ करताहै तथापि बड़ा धनी है। मनुष्य के प्राण का प्रायश्चित्त
९ उसीका धन परंतु कंगाल दपट को नहीं सुनता। धर्मियों की
ज्योति आनंद होतीहै परंतु दुष्टों का दीपक बुझाया जायगा।
१० झगड़ा केवल अहंकार से उठता है परंतु सुमंत्रित के साथ
११ बुद्धिहै। अनर्थ से प्राप्त कियागया धन घटजायगा परंतु जो
१२ परिश्रम से बटोरताहै सो बढ़जायगा। आशा का टालना मन
को रोगी करताहै परंतु आशा का पूर्णहोना जीवन का वृक्षहै।
१३ जो कोई बचन की निंदा करताहै नाश किया जायगा परंतु
१४ वुह जो आज्ञा से डरताहै कुशल से रहेगा। ज्ञानी का व्यवहार
१५ जीवन का सोताहै जिसतें मृत्यु के जाल से अलग होवे। अच्छी
समझ अनुग्रह देतीहै परंतु अपराधियों का मार्ग कठिनहै।
१६ हर एक चतुर जन ज्ञान से व्यवहार करता है परंतु मूर्ख
१७ अपनी मूर्खता फैलाताहै। दुष्ट दूत बुराई में पड़ताहै परंतु

१८ बिश्वस्त दूत कुशल है। कंगालपन और लाज उसके लिये है जो उपदेश को नहीं मानता परंतु जो दपट को मानता है सो
१९ प्रतिष्ठा पावेगा। इच्छा का पूर्ण होना प्राण को मीठा है परंतु
२० बुराई को छोड़ना मूर्खों को घिन है। जो बुद्धिमान के संग चलता है सो बुद्धिमान होगा परंतु मूर्खों का संगी चूर्ण होगा।
२१ बुराई पापियों के पीछे पड़ी है परंतु धर्मियों को उत्तम प्रतिफल
२२ मिलेगा। उत्तम अपने पोतों के लिये अधिकार छोड़ जाता है
२३ परंतु पापियों का धन धर्मियों के लिये धरा है। कंगाल के जोतने बोने में बहुतसा भोजन है परंतु कोई तो बिचार बिना
२४ नाश होता है। जो अपनी छड़ी को रोकता है सो अपने बेटे से बैर रखता है परंतु जो उसे प्यार करता है सो उसी को आगे
२५ से ताडना करता है। धर्मी अपने प्राण की संतुष्टता के लिये खाता है परंतु दुष्ट का पेट नहीं भरता।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ हर एक बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है परंतु अज्ञान
२ उसे अपने हाथों सें ढ़ाती है। जो अपनी खराई से चलता है सो परमेश्वर से डरता है परंतु कुमार्गी उसकी निंदा करता है।
३ मूर्खों के मुंह में घमंड की लाठी है परंतु बुद्धिमानों के होंठ
४ उनकी रच्छा करेंगे। जहां बैल नहीं तहां चरनी छूछी हैं परंतु
५ अनाज की अधिकाई बैल के बल से है। बिश्वस्त साच्छी झूठ
६ नबोलेगा करंतु झूठा साच्छी झूठ उच्चारण करेगा। निंदक बुद्धि की खोज करता है और नहीं पाता परंतु ज्ञान समुझवैया
७ के लिये सहज है। जब तू ज्ञान के होंठ नहीं देखता है तब मूर्ख
८ से अलग होजा। चतुर की बुद्धि यह है कि अपना मार्ग बूझे
९ परंतु मूढ की मूढता कपट है। मूढ पाप को ठट्ठा जानते हैं
१० परंतु धर्मियों में कृपा है। प्राण की कड़वाहट को प्राणही जानता है
११ और उपरो मनुष्य उसकी आनंदता को नहीं छेड़ता। दुष्ट का

१२ घर नष्ट होजायगा परंतु खरे का तंबू लहलहावेगा। एक मार्ग है जो मनुष्य को ठीक दिखलाई देताहै परंतु उसका अंत
१३ मृत्यु का मार्ग है। हंसने में भी मन शोकितहै और उस
१४ आनंद का अंत उदासी है। मन का हटाऊआ अपनेही मार्गों
१५ से तृप्त होजायगा और उत्तम मनुष्य आपही से। भोला हर एक बचन को प्रतीति करता है परंतु चतुर देख भाल के
१६ चलताहै। बुद्धिमान डरताहै और बुराई से भागताहै परंतु
१७ मूर्ख कोपित है और भरोसा रखता है। जो शीघ्र क्रोध करताहै सो मूर्खता से व्यवहार करताहै और दुष्ट जुगती से बैरहै।
१८ भकुआ मूर्खता के अधिकारी हैं परंतु चतुरों के सिर पर ज्ञानका
१९ मुकुट है। बुरा भले के आगे झुकता है और दुष्ट धर्मियों के
२० फाटकों के आगे। कंगाल से उसका परोसी भी बैर रखताहै
२१ परंतु धनी के बऊत से प्रिय हैं। जो अपने परोसी की निंदा करताहै सो पाप करताहै परंतु जो कंगाल पर दया करताहै
२२ सो धन्य। जो बुरी युक्ति करते हैं क्या वे चूक नहीं करते
२३ परंतु दया और सत्य उनपर है जो भले जुगती हैं। समस्त परिश्रम में लाभहै परंतु होंठों की बोली से केवल दरिद्रता है।
२४ बुद्धिमान का मुकुट उनके धन हैं परंतु मूर्खों की मूर्खता है।
२५ सच्चा साक्षी प्राण छुड़ाताहै परंतु छली झूठ बोलताहै।
२६ परमेश्वर के डर में दृढ़ बिश्वास है और उसके बालकों को
२७ शरण स्थान मिलेगा। परमेश्वर का डर जीवन का सोता है
२८ जिसतें मृत्यु के फंदों से अलगहोवे। लोगों की बऊताई में राजा की प्रतिष्ठा है परंतु लोगों के नहोने में राजपुत्रों का नाशहै।
२९ क्रोध में धीमा बड़ी समझ का है परंतु अल्प मन मूर्खता बढ़ाताहै।
३० शरीर का जीवन शुद्ध मन है परंतु डाह हड्डियों की सडाहट है।
३१ जो कंगालों पर अंधेर करताहै सो उसके कर्त्ता की निंदा करताहै परंतु जो उसकी प्रतिष्ठा करताहै कंगालों पर
३२ दया करता है। दुष्ट अपनी दुष्टता में खदेड़ा जाता है परंतु

३३ धर्मी अपनी मृत्यु में आशा रखता है। समुझवैया के मन में
३४ बुद्धि रहती है परंतु मूढ़का मन प्रगट होता है। धर्म लोग को
३५ बढ़ाता है परंतु पाप किसी लोग के लिये कलंक है। बुद्धिमान
सेवक पर राजा की कृपा है परंतु जो लाज दिलाता है उसका
क्रोध उसपर है।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब ।

१ कोमल उत्तर क्रोध को फेर देता है परंतु कटुक बचन क्रोध को
२ उभाड़ते हैं। बुद्धिमान की जीभ ज्ञान से ठीक ब्यवहार करती है
३ परंतु मूर्खों का मुंह मूर्खता ढकारता है। परमेश्वर की आंखें
४ सबस्थानों में बुरे भले को देखतियां हैं। जीभ का चंगा करना
जीवन का वृक्ष है परंतु उसका बिगड़ना आत्मा की टूटी है।
५ मूर्ख अपने पिता के उपदेश को तुच्छ जानता है परंतु जो घुरकी
६ को मान लेता है सो चतुर है। धर्मी के घर में बहुत धन है
७ परंतु दुष्ट की उगाहियों में दुःख है। बुद्धिमान के होंठ ज्ञान
८ फैलाते हैं परंतु मूर्ख का मन ऐसा नहीं। दुष्ट के बलिदान से
परमेश्वर को घिन है परंतु खरे की प्रार्थना उसकी प्रसन्नता है।
९ दुष्ट की चाल से परमेश्वर को घिन है परंतु जो धर्म का पीछा
१० करता है वुह उसे प्रेम रखता है। जो मार्ग को छोड़देता है
उसके लिये दुःख और जो दपठ से बैर रखता है सो मरजायगा।
११ नरक और नाश परमेश्वर के आगे हैं तो मनुष्य के संतान के
१२ अंतःकरण कितने अधिक। निंदक उसे प्रेम नहीं रखता जो
१३ उसे दपटता है न वुह बुद्धिमान पास जायगा। मगन मन
रूपको आनंद करता है परंतु मन के शोक से मन टूट जाता है।
१४ समुझवैया का मन ज्ञान को खोजता है परंतु मूर्खों का मुंह
१५ मूर्खता आहार करता है। दुःखी के जीवन के दिन दुःख हैं
परंतु जिसका मन मगन है उसके लिये सदा जेवनार है।
१६ परमेश्वर का भय उसे भला है कि बड़ा भंडार झंझट के साथ।

१७ साग पात का भाजन प्रेम के साथ उस्से भलाहै कि पला हुआ
१८ बर्दा बैर के साथ। क्रोधी मनुष्य झगड़ा उभाड़ताहै परंतु जो
१९ क्रोध में धीमाहै सो झगड़े को धीमा करताहै। आलसी का
मार्ग कांटों का बाड़ा है परंतु धर्मियों का मार्ग चैारस बना है।
२० बुद्धिमान लड़का पिता को आनंद करता है परंतु मूर्ख अपनी
२१ माता की निंदा करता है। मूढ़ता निर्जीव के लिये आनंद है
२२ परंतु समुझवैया मनुष्य खराई से चलता है। बिना परामर्श
से ठानी हुई वृथा होती हैं परंतु मंत्रियों की बहुताई से
२३ वे दृढ़ होती हैं। मनुष्य अपने मुंह के उत्तर से आनंदित होता
२४ है और समय पर की बात कैसी अच्छी है। जीवन का मार्ग
बुद्धिमान के लिये ऊंचा है जिसतें वुह नीचे नरक से निकल जाय।
२५ परमेश्वर घमंडियों का घर ढादेगा परंतु वुह रांड़ों के सिवाने
२६ को स्थिर करेगा। दुष्टों की चिंता से परमेश्वर को घिन है परंतु
२७ पवित्र की बात पवित्रता है। जो लाभ की लालच करता है
सो अपने घराने को दुःख देताहै परंतु जो दान से बैर रखता
२८ है सोई जीयेगा। धर्मी का मन उत्तर देनेको सोचता है परंतु
२९ दुष्टों का मुंह बुरी बातें उगलताहै। परमेश्वर दुष्टों से दूर
३० है परंतु वुह धर्मियों की प्रार्थना सुनताहै। आंखों की ज्योति
मन को आनंद करतीहै और सुसंदेश हड्डियों को पुष्ट करताहै।
३१ जो कान जीवन की झिड़की सुनता है सो बुद्धिमानों में
३२ रहताहै। जो उपदेश को नहीं मानता सो अपनेही प्राण
की निंदा करताहै परंतु जो दपट को मानताहै सो जीव
३३ रखताहै। परमेश्वर का भय बुद्धि का उपदेश है और प्रतिष्ठा
के आगे दीनताई है।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ मनुष्य के मन का सिद्ध करना और उसकी जीभ का उत्तर
२ परमेश्वर की ओर से है। मनुष्य की सारी चालें अपनी आंखों

३ के आगे पवित्र हैं परंतु परमेश्वर मन को तौलताहै। अपने समस्त कार्य्य परमेश्वर को सौंप और तेरी चिंता स्थिर
४ होजायेंगी। परमेश्वर ने सब कुछ अपने लिये बनायाहै हां दुष्टों
५ को भी बुराई के दिन के लिये। हर एक अहंकारी से परमेश्वर को घिन है यद्यपि हाथ हाथ में मिले तथापि वुह निर्दोष
६ न ठहरेगा। दया और सत्य से बुराई दूर होती है और
७ परमेश्वर के भय से बुराई से अलग होते हैं। जब मनुष्य की चाल परमेश्वर को अच्छी लगती है तब वुह उसके बैरी को भी
८ उस्से मेल कराता है। थोड़ासा जो धर्म के साथ हो बहुत
९ उगाहियों से जो बिना धर्म की होवें अच्छा है। मनुष्य का मन अपना मार्ग ठहराता है परंतु परमेश्वर उसके डग को
१० सुधारताहै। दैव्य बचन राजा के होंठों में है और उसका
११ मुंह न्याय में अपराध नहीं करता। खरी तौल और तुला
१२ परमेश्वर के हैं थैली के सारे बटखरे उसके कार्य हैं। दुष्टता के करने से राजाओं को घिन है क्योंकि सिंहासन धर्म से दृढ़
१३ होताहै। धर्म्मी होंठ राजाओं को प्रसन्न हैं और जो ठीक
१४ बोलताहै वे उस्से प्रेम रखते हैं। राजा के क्रोध मृत्यु के दूत हैं
१५ परंतु बुद्धिमान उसे धीमा करेगा। राजा के रूप के ज्योति में
१६ जीवन है और उसकी कृपा पिछले मेंह की नाईं है। बुद्धि को प्राप्त करना सोने से कितना भला है और समुझ को प्राप्त करना
१७ रूपे से कितना भला है। खरे का राजमार्ग बुराई से निकल जाताहै जो अपने मार्ग को चौकस रखताहै सो अपने प्राण
१८ की रक्षा करता है। नाश से पहिले अहंकार और गिरपड़ने
१९ से आगे मन का घमंड है। दीनों के साथ दीन होना उस्से
२० अच्छा है कि अहंकारियों के साथ लूट बांटना। जो बुद्धि के साथ बात समझता है सो भलाई पावेगा और जो परमेश्वर
२१ पर भरोसा रखताहै सो धन्य है। बुद्धिमान चतुर कहलावेगा
२२ और होंठ की मीठाई बिद्या बढ़ाती है। समझवैयों के लिये

समुझ जीवन का सोता है परंतु मूर्खों का उपदेश मूर्खता है ।
२३ बुद्धिमान का अंतःकरण उसे बुद्धिमान करता है और उसके
२४ होंठों को बिद्या देता है । मन भावनी बातें मधु के छत्ते के
समान प्राण को मीठी लगती हैं और हड्डियों के लिये चैन हैं ।
२५ एक मार्ग है जो मनुष्य को ठीक लगता है परंतु उसका अंत
२६ मृत्यु का मार्ग है । परिश्रमी का प्राण अपने लिये परिश्रम
२७ करता है क्योंकि उसका मुंह उसके आगे झुकता है । बिलयाली
मनुष्य बुराई को खोदके निकालता है और उसके होंठों में जलती
२८ आग की नाईं है । क्रूर मनुष्य झगड़ा उठाया करता है और
२९ फुसफुसहा मित्रों में बिभाग करता है । अंधेरी मनुष्य अपने
परोसी को फुसलाता है और उसे उस मार्ग से लेजाता है
३० जो भला नहीं । वुह आखें मूंदता है जिसतें टेढ़ी बात की युक्ति
३१ करे और होंठ हिलाके बुराई के लिये जाता है । उजला सिर
३२ बिभव का मुकुट है यदि धर्म के मार्ग में पाया जाय । क्रोध में
धीमा सामर्थी से भला है और जो अपने मन को वश में
३३ रखता है सो नगर के लेवैये से । चिट्ठी गोद में डालीगई
परंतु उसका ठिकानालगाना परमेश्वर से है ।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब ।

१ रूखा ग्रास चैन के साथ और भी भला है कि घरभरा बलिदान
२ झगड़े के साथ । बुद्धिमान सेवक उस पुत्र पर प्रभुता करेगा
जो लज्जित करता है और भाइयों में अधिकार का भाग
३ पावेगा । चांदी के लिये घरिया और सोने के लिये भट्ठी परंतु
४ परमेश्वर अंतःकरणों को जांचता है । कुकर्मी झूठे होंठों को
५ मानता है और झूठा कुबचन का श्रोता होता है । जो कंगाल
को चिढ़ाता है सो उसके कर्त्ता को कलंक लगाता है जो
औरों की बिपत्ति से आनंदित होता है सो निर्दोषी न
६ ठहरेगा । बालकों के बालक बृद्धों के मुकुट हैं और बालकों का

७ बिभव उनके पिताके। होंठों की शोभा मूर्ख को नहीं सजती
८ कितना अधिक झूठे होंठ राज पुत्रों को। जो दान रखताहै
सो उसकी आखों में अनुग्रह का मणि है जहां कहीं वुह
९ फिरताहै फलताहै। जो अपराध को छिपाताहै सो प्रेम का
खोजीहै परंतु जो बात को दुहराताहै सो मित्रों में बिभाग
१० करताहै। एक झिड़की बुद्धिमान को अधिक चितातीहै कि
११ सौ मार मूर्ख को। दुष्ट केवल दंगा का खोजीहै सो उस पर
१२ कठोर दूत भेजाजायगा। उस भालु से जिसके छौने चोरायेगये
हैं भेटकरना मनुष्य को उस्से भलाहै कि मूर्ख से उसकी
१३ मूर्खता में। जो भलाई की संती बुराई करताहै बुराई उसके
१४ घरसे अलग न होगी। झगड़े का आरंभ जैसे पानी का छोड़ना
१५ है इसलिये छेड़ने से आगे झगड़े से हाथ उठा। जो दुष्ट को
निर्दोष और जो सज्जन को दोषी ठहराताहै दोनो के दोनो
१६ परमेश्वर से घिनित हैं। मूर्ख के हाथ में बुद्धि पाने का दाम
१७ किसलिये है उसका मन तो हईनहीं। मित्र सदा प्रेम करताहै
१८ और भाई बिपत्ति के लिये उत्पन्न हुआ है। निर्जीव मनुष्य
हाथ मारताहै और अपने मित्र के आगे बिचवई होताहै।
१९ जो झगड़े से प्रीति रखताहै सो अपराध से प्रीति रखताहै जो
२० अपने फाटक को उभाड़ताहै सो नाश को ढूंढ़ताहै। जिसके
मन में हठहै सो भलाई प्राप्त नहीं करता और जो टेढ़ी जीभ
२१ रखताहै सो बुराई में पड़ताहै। जो मूर्ख उत्पन्न करताहै सो
अपनेही शोक के लिये करताहै और लड़के के पिता को आनंद
२२ नहीं। आनंदित मन औषध की नाईं भला करता है परंतु
२३ टूटा मन हड्डियों को सुखाता है। दुष्ट मनुष्य गोद में घूस
२४ लेताहै कि न्याय को फेरदेवे। समझवैये के आगे बुद्धि है
२५ परंतु मूर्ख की आखें पृथिवी के सिवानेलों हैं। मूढ़ पुत्र अपने
पिता के लिये शोक है और अपनी जननी के लिये कड़वाहट।
२६ सज्जन को दंड देना और कुअरों को याथार्थ्य के लिये मारना

भला नहीं ज्ञानी संभाल के बोलताहै समुझवैया शीतल मन है ।
२७ मूर्ख भी जब वुह चुपका रहता है बुद्धिमान गिना जाताहै
और समुझवैया अपने होंठों को बंद कर रखताहै ।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

१ जो आपको अलग करताहै सो अपनी इच्छा के समान ढूंढ़ता
२ है और हर एक कार्य में छेड़ताहै। मूर्ख को समुझ नहीं
३ भावती परंतु जिसतें उसका मन आप को प्रगट करे। जब
दुष्ट आताहै तब निंदा भी आती है और दुर्गति के साथ अपयश
४ आताहै। मनुष्य के मुंह की बातें गहिरे जल हैं और बुद्धि का
५ सोता बहता नाला है। धर्मी को न्याय में पलटने को दुष्ट का
६ पक्ष करना अच्छा नहीं। मूर्ख के होंठ बिवाद में पैठते
७ हैं और उसका मुंह थपेड़ा मांगताहै। मूर्ख का मुंह उसका
८ बिनाश है और उसके होंठ उसके प्राण के फंदे। फुसफुसहा
की बातें घाव की नाईं हैं और वे अंतःकरण लों पैठजातीहैं।
९ जो अपने कार्य्य में आलसीहै सो वृथा उठान करवैये का
१० भाई है। परमेश्वर का नाम एक दृढ़ गढ़ है धर्मी उसमें दौड़
११ के बच रहताहै। धनी मनुष्य का धन उसका दृढ़ नगर और
१२ उसीकी समुझ एक ऊंची भीत की नाईं है बिनाश के आगे
मनुष्य का मन फूलताहै और प्रतिष्ठा के आगे दीनताई है।
१३ जो बिनसुने बचन कहबैठता है उसके लिये मूर्खता और
१४ लाज है। मनुष्य का प्राण उसकी निर्बलता को संभालेगा परंतु
१५ टूटे मन को कौन सह सक्ताहै। चतुर का मन ज्ञान प्राप्त
१६ करताहै और बुद्धिमान का कान ज्ञान ढूंढ़ताहै। मनुष्य का
दान उसके लिये ठिकाना करलेताहै और उसे महज्जनों
१७ पास पंहुचाताहै। जो अपनेही पद में पहिला है सो ठीक
जानाजाता है परंतु उसका परोसी आके उसे जांचताहै।
१८ चिट्ठी डालना झगड़ों को मिटादेता है और बलवानों को

१९ अलग करताहै । उदास भाई को मिलालना और भी कठिन
है कि दृढ़ नगर को लेवे और उनके झगड़े गढ़ के अड़ंगे
२० की नाईं हैं । मनुष्य का पेट उसके मुंह के फलों से तृप्त होताहै
२१ और अपने होठों की बढ़ती से संतुष्ट होता है । जीवन और
मरण जीभ के वश में हैं और जो उस्से प्रीति रखते हैं उसका
२२ फल खायेंगे । जो पत्नी को प्राप्त करता है सो उत्तम वस्तु प्राप्त
२३ करता है और परमेश्वर से अनुग्रह पाताहै । कंगाल बिनती
२४ कियाकरताहै परंतु धनी कड़ा उत्तर देताहै । मनुष्य के मित्र
को उचितहै कि मित्रता दिखावे और एक मित्र ऐसा है जो
भाई से अधिक सटा रहता है ।

१९ उंनीसवां पर्ब्ब ।

१ जो कंगाल अपनी सचाई में चलताहै सो उस्से अच्छाहै जो
२ टेढ़े होंठ से चलताहै और मूढ़ है । प्राण का अज्ञान रहना
भी अच्छा नहीं और जो पांव से बेग करताहै सो पाप
३ करताहै । मनुष्य की मूर्खता उसके मार्ग बिगाड़तीहै और
४ उसका मन परमेश्वर से उदास होताहै । धन बहुतसा मित्र
बनाता है परंतु कंगाल अपने मित्र से अलग कियागयाहै ।
५ झूठा साक्षी निर्दोष नठहरेगा और मिथ्यावादी नबचेगा ।
६ बहुतसे लोग राजपुत्रों की दया के लिये बिनती करेंगे और
७ हर एक मनुष्य दाता का मित्र है । कंगाल के तो सारे भाई
उसका बैर रखते हैं सो कितना अधिक उसके मित्र दूर जाते हैं
वुह गिड़गिड़ाके पीछा करताहै परंतु वे नहीं मानते ।
८ जो बुद्धि को प्राप्त करताहै सो अपने प्राण को प्यार करताहै
९ जो समझ रखताहै सो भलाई पावेगा । झूठा साक्षी का दंड
१० न छूटेगा और मिथ्यावादी नाश होजायगा । आनंदता
मूर्ख को नहीं सजती और कितना अधिक कि सेवक कुअंर
११ पर राज्य करे । मनुष्य की चतुराई उसके क्रोध को टालतीहै

१२ और अपराध में न जाने में उसकी प्रतिष्ठा है। राजा का कोप सिंह के गर्ज्जने की नाईं है परंतु उसकी कृपा घास पर
१३ की ओस की नाईं है। मूढ़ पुत्र अपने पिता की बिपत्ति है और
१४ पत्नी का झगड़ा रगड़ा नित्य का टपकना है। घर और धन पितरों का अधिकार और बुद्धिवती पत्नी परमेश्वर से मिलती
१५ है। आलस भारी नींद में डाल देताहै और आलसी प्राणी
१६ भूखा मरेगा। जो आज्ञाको पालन करता है सो अपने प्राण की रक्षाकरता है और जो अपनी चाल को तुच्छ जानता है
१७ सो माराजायगा। जो कंगाल पर दया करताहै सो परमेश्वर को उधार देताहै और उसका कियाहुआ उसे फेर
१८ दियाजायगा। आशा रहतेही अपने बेटे को ताड़ना दियेजा
१९ और उसके रोने पर मया मत कर। अति कोपित मनुष्य दंडही पावेगा क्योंकि यदि तू उसे छोड़े तो तुझे फेर फेर देने
२० पड़ेगा। मंत्र को सुन और उपदेश को ग्रहण कर जिसतें
२१ अंत में तू बुद्धिमान होवे। मनुष्य के मन में बहुतसी
२२ युक्ति है तथापि परमेश्वर का मंत्र ठहरेगा। मनुष्य की इच्छा
२३ उसकी दया है और झूठेसे कंगाल अच्छाहै। परमेश्वर का भय जीवन के लिये है और जिसमें वुह है सो निश्चिंत रहेगा परंतु
२४ बुराई उसके पास नआवेगी। आलसी अपने हाथ गोद में छिपाता है और इतना नकरेगा कि उसे अपने मुंह लों लावे।
२५ ठठेलू को थपराव और भोला चतुर होजायगा और
२६ समुझवैये को दपट और वुह ज्ञान को समुझेगा। जो अपने पिता को क्षीण करताहै और अपनी माता को खदेड़ताहै सो
२७ पुत्र लाज दिलाता है और कलंक लाताहै। हे मेरे बेटे ऐसे
२८ उपदेश को मत मान जो ज्ञान की बातों से फिराता है। झूठा साक्षी न्यायी की निंदा करताहै और दुष्ट का मुंह बुराई
२९ निगलता रहताहै। ठठेलू के लिये दंड की आज्ञा धरी है और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

१ मदिरा ठठेलू है और मद्य कोपित और जिस किसीने इनसे
२ छल खाया है सो बुद्धिमान नहीं है। राजा का भय सिंह के
गर्ज्जने के समान है जो कोई उसे रिसियाता है सो अपने प्राण
३ का घातक है। मनुष्य की प्रतिष्ठा झगड़े से रुकजाने में है
४ परंतु हर एक मूढ़ छेड़ा करेगा। आलसी मनुष्य जाड़े के
मारे न जोतेगा इसकारण वुह लवनी में भीख मांगेगा और
५ न पावेगा। मनुष्य के मन का मंत्र गहिरे जल के समान है
६ परंतु समुझवैया मनुष्य उसे खींचेगा। बज्ञत मनुष्य अपनी
अपनी भलाई प्रचारेगा परंतु विश्वस्त मनुष्य को कौन पासक्ता है।
७ सज्जन मनुष्य अपनी खराई पर चलता है उसके पीछे उसके
८ बालक धन्य हैं। राजा जो न्याय के सिंहासन पर बैठता है
९ सो सारी बुराई को अपनी आंखों से दूर करता है। कौन
कहिसक्ता कि मैंने अपने मन को पावन किया है मैं अपने
१० पाप से पवित्र हूं। बटखरा पर बटखरा और तौल पर तौल
११ दोनों के दोनों परमेश्वर को घिन हैं। बालक भी अपनी
चाल से जानाजाता है चाहे उसके कार्य पावन अथवा अपावन
१२ होवें। सुन्ने का कान और देखने की आंखें परमेश्वर ने दोनों
१३ को बनाया है। बज्ञत नींद से प्रीति मतकर न होवे कि
कंगालपना तुझपर आजावे अपनी आंखें खोल और तू रोटी
१४ से तृप्त होगा। गांहक कहता है कि कुछ नहीं कुछ नहीं परंतु
१५ जब वुह चलनिकलता है तब बड़ाई करता है। सोना है और
बज्ञत से मणि हैं परंतु ज्ञान के होंठ बज्ञमूल्य गहने हैं।
१६ जो उपरी के लिये बिचवई होवे उसका कपड़ा ले और उपरी
१७ स्त्री के लिये उसे बंधक ले। छल की रोटी मनुष्य को मीठी
लगती है परंतु पीछे उसका मुंह कंकरों से भर जाता है।
१८ हर एक कार्य्य परामर्श से स्थिर होता है और सुमंत्र से युद्ध
१९ कर। जो लुतरे की नाईं फिरा करता है सो अपने भेदों को

प्रगट करता है इसकारण जो अपने होठों से फुसलाता है
२० उसे मत छेड़ । जो कोई अपने पिता अथवा अपनी माता
को स्राप देताहै उसका दीपक महांधकार में बुतायाजायगा ।
२१ आरंभ में शीघ्रता से अधिकार प्राप्त कियागया परंतु उसका
२२ अंत नफलेगा । मत कह कि मैं बुराई का पलटा लेउंगा परंतु
२३ परमेश्वर पर ठहर वहो तुझे बचावेगा । नाना बठखरों में
परमेश्वर को घिन है और छल की तुला कुछ अच्छी नहीं ।
२४ मनुष्य की चाल परमेश्वर से है फेर मनुष्य क्योंकर अपनी चाल
२५ को समुझ सके । मनुष्य को फंदा है कि पवित्र बस्तु को भक्षण
२६ करे और मनौती के पीछे पूछाकरे । बुद्धिमान राजा दुष्टों को
२७ छिन्न भिन्न करताहै और उन पर पहिया फिरवाता है । मनुष्य
का आत्मा परमेश्वर का दीपकहै जो मनुष्य के ओद्रके अंत को
२८ ढूंढ़ा करताहै । दया और सत्य राजा की रक्षा करतेहैं और
२९ उसका सिंहासन दया से उभड़ाऊआहै । तरुण मनुष्यों का
बिभव उनका बल है परंतु वृद्धों की शोभा उनके उजले बाल ।
३० जैसाकि घावकी नीलाई बुराई को दूर करनेका ओषधहै वैसा
मार ओद्रके अंतोंको शुद्ध करताहै ।

२१ एकीसवां पर्ब्ब ।

१ राजा का मन परमेश्वर के हाथ में है वुह उसे नदियों के
२ जल कीनाईं जिधर चाहताहै उधर फेरताहै । मनुष्य की हर
एक चाल अपनी दृष्टि में ठीक है परंतु परमेश्वर मन को
३ जांचताहै । न्याय और बिचार करना परमेश्वर को बलिदान
४ से अधिक प्रसन्नता है । ऊंची दृष्टि और अभिमानी मन और
५ दुष्टों का जोतना पाप है । चालाकों की चिंता केवल बढ़ताई
के लिये है परंतु हर एक जो बगहै केवल कंगालता के लिये ।
६ झूठी बोलीसे भंडार प्राप्त करना एक वृथा है जिसे मृत्यु का खोजी
७ इधर उधर टारता है । दुष्टों को उनकी बटमारी ढाहेगी

८ क्योंकि उन्हों ने बिचार को नमाना । मनुष्य के मार्ग टेढ़े और
९ तिरछे हैं परंतु जो पवित्र है उसका कार्य्य ठीक है। घर के
काठे के एक कोने में रहना झगड़ालू स्त्री के साथ फैलाव
१० स्थान में रहने से अच्छा है। दुष्टका प्राण बुराई चाहता उसका
११ परोसी उसकी दृष्टि में कृपा नहीं पाता। जब निंदक दंड
पाताहै तब भोला बुद्धिमान होताहै और जब बुद्धिमान
१२ उपदेश पाता है तब वुह समुझ प्राप्त करता है। धर्मी मनुष्य
बुद्धि से दुष्ट के घर को सोचताहै परंतु परमेश्वर दुष्टता के
१३ कारण से उन्हें गिरादेताहै। जो कंगाल के रोने से अपने कान
मूंदताहै वुह आपभी रोवेगा परंतु उसका रोना सुना नजायगा।
१४ गुप्तदान क्रोध को धीमा करता है और गोद में प्रतिफलदेना
१५ महा कोप को ठंडा करताहै। सज्जन के न्याय में आनंद है
१६ परंतु कुमार्गियों के लिये नाश है। जो मनुष्य समुझ के मार्ग
१७ से भटकताहै सो मृतकों की मंडली में पड़ारहेगा। जो
लीला से प्रीति रखता है सो कंगाल जो मदिरा और
१८ चिकनाई से मन लगाता है सो धनी नहोगा। धर्मियों की
संती दुष्ट और अपराधियों की संती खरे पलटा दियेजायेंगे।
१९ अरण्य में रहना और भी भलाहै कि झगडालू और
२० क्रोधी स्त्री के साथ। अच्छे भंडार और तेल बुद्धिमानों के
२१ निवास में हैं परंतु मूर्ख मनुष्य उसे उड़ा डालेगा। जो धर्म
और दया का पीछा करता है सो जीवन और धर्म और
२२ प्रतिष्ठा पाताहै। बुद्धिमान मनुष्य सामर्थी के नगर पर
२३ चढ़जाताहै और उसके भरोसे के बल को ढादेताहै। जो अपने
मुंह और अपनी जीभ को वश में रखता है अपने प्राण को
२४ दुःख से बचाताहै। अहंकारी और अभिमानी निंदक उसका
२५ नामहै जो अहंकार और क्रोध से कार्य्य करताहै। आलसी
की इच्छा उसे बधन करतीहै क्योंकि उसके हाथ परिश्रम को
२६ नाह करते हैं। वुह दिनभर अत्यंत लालच करताहै परंतु

२७ धर्मी दान करताहै और नहीं रखछोड़ता । दुष्टों का बलिदान घिनितहै कितना अधिक जब कि वुह दुष्टता से लाताहै ।
२८ झूठा साची नाश होवेगा परंतु जो जन सुन लेताहै सो नित्य
२९ बोला करता है । दुष्ट मनुष्य अपने मुंह को भी कठोर करता
३० है परंतु खरा अपने मार्ग को सोचताहै । कोई बुद्धि कोई समझ और कोई परामर्ष परमेश्वर के आगे नलहेगा ।
३१ संग्राम के दिन के लिये घोड़ा सिद्ध है परंतु जय परमेश्वर से है ।

२२ बाईसवां पर्व्व ।

१ शुभ नाम बड़े धन से अधिक चुने जाने के योग्य है और कृपा
२ सोने रूपे से अधिक । धनमान और कंगाल एकट्ठे मिलते हैं
३ परमेश्वर उन सभों का कर्त्ता है । बुराई को आगे से देख के चतुर आप को छिपाता है परंतु भोले लोग उसमें बढ़ेजातेहैं और दंड
४ पातेहैं । दीनताई का फल और परमेश्वर का भय धन और
५ प्रतिष्ठा और जीवन है । हठीले के मार्ग में कांटे और जाल हैं जो अपने प्राण की रचा करता है सो उनसे दूर रहेगा ।
६ जिस मार्ग में बालक को चला चाहिये उसमें उसे चला और
७ जब बूढ़ा हुआ वुह उस्से नफिरेगा । कंगाल पर धनमान
८ प्रभुता करता है और उधारनिक धनिक का सेवक है । जो बुराई बोताहै सो व्यथा लवेगा और वुह अपने क्रोध की छड़ी से नाश
९ होजायगा । जिस की आंखें अच्छी हैं सो आशीष पावेगा
१० क्योंकि वुह अपनी रोटी में से कंगालों को देताहै । निंदकों को निकाल देओ और झगड़ा मिट जायगा हां झगड़ा और
११ कलंक जातेरहेंगे । जो मन की पवित्रताई से प्रेम रखताहै और होंठों में अनुग्रह रखताहै राजा उसका मित्र होगा ।
१२ परमेश्वर की आंखें ज्ञान की रचा करतीहैं और वुह अपराधियों
१३ के व्यवहार को उलट देताहै । आलसी कहताहै कि बाहर
१४ सिंह है मैं गलियों में फाड़ाजाओंगा । पराई स्त्री का मुंह एक

गहिरा गड़हा है जिस्से परमेश्वर घिन करताहै बही उसमें
१५ गिरताहै । बालक के मन में मूढ़ता बंधीऊई है परंतु ताड़ना
१६ की छड़ी उसे उसमें से दूर करेगी । जो कंगाल पर अंधेर
१७ करताहै और जो धनी को देताहै निश्चय दरिद्र होगा । अपने
कान को झुका और बुद्धिमानों के बचन सुन और मेरे ज्ञान
१८ से अपना मन लगा । क्योंकि यह अच्छीबात है कि तू उन्हें
अपने हृदय में धारण करे और उस्से अधिक वे तेरे होंठों में
१९ सजेंगे । जिसतें तेरा भरोसा परमेश्वर पर होवे मैंने आज के
२० दिन तुझे जनाया तूभी भरोसा रख । क्या मैंने तुझे अच्छे
२१ अच्छे ज्ञान और परामर्ष नहीं लिखे । जिसतें मैं सच्ची बातों
को निश्चय तुम्हें जनाओं कि तू उनके उत्तर में जिन्होंने तुझे
२२ भेजाहै सच्ची बातों का उत्तर देसके । इसकारण कंगाल से मत
चुरा कि वुह कंगाल है और फाटक में दुःखी को मत सता ।
२३ क्योंकि परमेश्वर उनके पद का बिवाद करेगा और उनके प्राणों
२४ को लूटेगा जिन्हों ने उनको लूटा । क्रोधी मनुष्य से मित्रता मत
२५ कर और अति कोपित के साथ मत जा । नहो कि तू उसकी
२६ चालें सीखे और अपने प्राण को फंदे में फंसावे । तू उनमें मत
हो जो हाथ मारते हैं अथवा उनमें जो ऋण के कारण बिचवई
२७ होतेहैं । यदि तुझ पास कुछ भरदेने को नहो तो किस लिये
२८ तेरे नीचे का बिछौना खींच लेजावे । पुराने सिवाने को जो
२९ तेरे पितरों ने बांधेहैं मत तोड़ । तू किसी को अपने काम में
चालाक देखता है वुह राजाओं के आगे खड़ा होगा तुच्छ जन
के आगे खड़ा नहोगा ।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

१ जब तू आज्ञाकारी के साथ भोजन पर बैठे चौकसी से
२ सोच कि तेरे आगे क्या है । यदि तू पेटू है तो अपने गले पर
३ छूरी लगा । उसके स्वादित भोजन की लालच मत कर क्योंकि

४ वह छल का भोजन है। धनी होने के लिये परिश्रम मत कर
५ अपनीही बुद्धि से थम जा। क्या तू अपनी आंखें उस पर
दौड़ावेगा जो नहीं है क्योंकि धन निश्चय अपने लिये पंख बनाता
६ और गिद्ध की नाईं आकाश की ओर उड़ जाता है। कुदृष्टि
की रोटी मत खा और उसके स्वादित भोजनों की लालसा
७ मत कर। क्योंकि जैसा वुह अपने मन में चिंता करता है वुह
वैसाही है वुह तुझे कहता है खा और पी परंतु उसका मन
८ तेरी ओर नहीं। ग्रास जो तूने खाया है उसे उछाल देगा
९ और अपनी मीठी बातें गवांयेगा। मूढ़ के कानों में अपनी
बातें मत कह क्योंकि वुह तेरे बचन की बुद्धि की निंदा करेगा।
१० पृथिवी के पुराने सिवानों को मत टाल और अनाथों के खेत में
११ मत पैठ। क्योंकि उनका मुक्तिदाता सामर्थी है वुह तुझे
१२ उनके पद का बिवाद करेगा। उपदेश से अपना मन लगा
१३ और ज्ञान की बातों पर कान धर। बालक से ताड़ना अलग
मत रख क्योंकि यदि तू उसे छड़ी मारेगा वुह मर न
१४ जायगा। तू उसे छड़ी मारेगा और नरक से उसके प्राण को
१५ बचावेगा। मेरे बेटे यदि तेरा मन बुद्धिमान होवे तो मैंही
१६ आनंदित होंगा। और जब तेरे होंठों से सच्ची बातें निकलेंगी
१७ तब मेरा हृदय आनंदित होगा। तेरा मन पापियों से डाह
करने नपावे परंतु तू सारे दिन परमेश्वर से डरता रह।
१८ क्योंकि निश्चय आगे एक प्रतिफल है और तेरी आस
१९ घट नजायगी। मेरे बेटे तू सुन और बुद्धिमान हो और
२० मार्ग में अपने मन को चला। तू मद्यपों में और उनमें जो
२१ बऊताई से मांस खाते हैं मतजा। क्योंकि मद्यप और पेटू
२२ कंगाल होजायेंगे और नींद चिथड़े पहिनायेगी। अपने
जन्मदाता पिता की बात सुन और जब तेरी माता वृद्ध
२३ होवे उसकी निंदा मत कर। सच्चाई को मोल ले और मत
२४ बेच बुद्धि और उपदेश और समझ भी। धर्मी का पिता

अत्यंत अनंदित होगा और जो बुद्धिमान उत्पन्न करता है उसे
२५ आनंद प्रावेगा। तेरी माता पिता आनंद होंगे और जो तुझे
२६ जनी सो आनंदित होगी। मेरे बेटे अपना मन मुझे दे
२७ और तेरी आंखें मेरे मार्गों को सोचाकरें। क्योंकि बेश्या एक
२८ गहिरी खांई है और उपरी स्त्री सकेत गड़हा है। वुह बटमार
की नाईं घात में लगी है और मनुष्यों में अपराधों को बढ़ाती
२९ है। किस पर संताप है? किस पर शोक है? कौन झगड़े मे
पड़ता है? किसको बकवाध है? और किसको घाव अकारण
३० है? और किस की आंखें लाल हैं?। वे जो मदिरा के पास
अबेरलों ठहरते हैं वे जो मिलौऊई मदिरा की खोजमें
३१ रहते हैं। जब मदिरा लाल होवे और उसका रंग कटोरे में
देख पड़े और जब वुह अच्छी भांति से हिलता है तब उसे
३२ मत ताक। अंत को वुह नाग के समान काटती है और नागिन
३३ की नाईं डंसती है। तेरी आंखें पराई स्त्रियों को देखेंगी और
३४ तेरा मन अनुचित बातें निकालेगा। निश्चय तू उसके समान
होजायगा जो समुद्र के मध्य में पड़ारहता है अथवा उसकी
३५ नाईं जो गुनरखा की चोटी पर लेटता है। तू कहेगा कि उन्हों ने
मुझे मारा मैं तो रोगी नऊआ उन्हों ने मुझे मारा मैं ने
नजाना मैं कब उठोंगा मैं फिर उसे खोजोंगा।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ बुरे मनुष्यों से डाह मत कर और उनकी संगति की चाह मत
२ रख। क्योंकि उनके मन बिनाश का सोच करते हैं और उनके
३ होंठ बुराई बोलते हैं। बुद्धि से घर उठाया जाता है और
४ समझ से वुह दृढ़किया जाताहै। और ज्ञान से कोठरियां
५ ब[illegible] और सुंदर धन से भर जायेंगी। बुद्धिमान मनुष्य
६ बली है हां ज्ञानी मनुष्य बल बढ़ाता है। क्योंकि बुद्धि के मंत्र
से तू अपना युद्ध करेगा और मंत्रियों की बऊताई से बचाव है।

७ बुद्धि मूर्खों के लिये अति ऊंची है वुह फाटक पर अपना मुंह
८ नखोलेगो। जो बुराई की चिंता करता है सो बिगाड़ जन
९ कहलायेगा। मूर्खता की चिंता पाप है और ठट्ठेल से मनुष्यों
१० को घिन है। यदि तू बिपत्ति के दिन मूर्छित होजावे तो तेरा
११ बल थोड़ा है। यदि तू म्टत्यु के खींचेगयों को और उन्हें जो मारे
१२ जाने पर हैं बचा नले। यदि तू कहे कि देखो हम जानतेनथे
तो क्या वुह जो अंतःकरण को जांचता है यह नहीं सोचता
और जो तेरे प्राण का रक्षक है सो क्या नहीं जानता और
१३ क्या मनुष्य को उसके कार्य्यके समान पलटा नदेगा। मेरे बेटे
तू मधु खा इस कारण कि वुह अच्छा है और मधुका छत्ता जो
१४ तेरे तालू में मीठा है। सो बुद्धि का ज्ञान तेरे प्राण को होगा
जब तू उसे पावे उसका प्रतिफल होगा और तेरी आशा
१५ वृथा न होगी। हे दुष्ट धर्मी के निवास की घात में मत लग
१६ उसके चैन के स्थान को मत लूट। क्योंकि सज्जन सात बार
गिरताहै और फिर उठता है परंतु दुष्ट बुराई में गिरजायेंगे।
१७ जब तेरा बैरी गिरपड़े आनंदित मत हो और जब वुह
१८ ठोकरखाय तेरा मन मगन नहोनेपावे। नहो कि परमेश्वर
देखे और उसकी दृष्टि में बुरा लगे और अपना क्रोध उसपर
१९ से उठालेवे। दुष्ट की संगति मत कर और दुष्टों पर डाह
२० मत कर। क्योंकि बुरेको सुफल न मिलेगा और दुष्टों का दीपक
२१ बुझायाजायगा। मेरे बेटे तू परमेश्वर से और राजा से
२२ डर और अस्थिरों को मत छेड़। क्योंकि उनकी बिपत्ति अचानक
आपड़ेगी और उन दोनों के बिनाश को कौन जानता है।
२३ बुद्धिमान के ये भी हैं न्याय में मनुष्यत्व पर दृष्टि करना भला
२४ नहीं। जो दुष्ट को कहताहै कि तू धर्मी है लोग उसपर स्राप
२५ देंगे और जातिगण उसे घिन करेंगे। परंतु जो उन्हें दपटते
हैं उनके लिये आनंदित होंगे और उनपर अच्छा आशीष
२६ होगा। जो ठीक उत्तर देताहै उसके होंठ चूमेजायेंगे।

२७ बाहर में अपना कार्य सिद्ध कर और अपने लिये खेत में उसे
२८ ठीक कर उसके पीछे अपना घर बना। अपने परोसी पर
अकारण साक्षी मत हो और अपने होंठों से मत छल।
२९ मत कह कि मैं उसे ऐसा करोंगा जैसा उसने मुझे किया
३० मैं मनुष्य को उसके काम के समान पलटा देऊंगा। मैं आलसी
के खेत के पास से और असमुझ के दाख की बाटिका के पास
३१ से गया। और देखो कांटों से छारहा था और ऊटंकटारे
उसे ढांपलिये थे और उसकी पत्थर की भीत टूटी ऊई।
३२ तब मैंने देखा और संभलगया उस पर दृष्टि किई और
३३ उपदेशपाया। थोड़ा सोना और थोड़ा ऊंघना और सोने के
३४ लिये हाथ को समेटना। सो तेरी दरिद्रता पथिक की नाईं
और तेरी लालसा ढलइत मनुष्य के समान आवेगी।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

१ ये भी सुलेमान के दृष्टांत जिन्हें यहूदा के राजा हिज़किया के
२ लोगों ने उतारा। बात को छिपाना ईश्वर का विभव है परंतु
३ राजा की प्रतिष्ठा बात को खोज लेनेमें है। स्वर्ग ऊंचाई में
और पृथिवी नीचाई में राजाओं के मन का भेद नहीं मिलता।
४ रूपे का मैल छांटडाल और रसायनी के लिये एक पात्र
५ निकल आवेगा। दुष्ट को राजा के पास से दूरकर तब उसका
६ सिंहासन धर्मसे दृढ़ होगा। राजा के आगे अपना विभव
७ मत दिखा और महानों के स्थान पर खड़ा मत हो। क्योंकि
भला है कि तुझे कहाजाय ऊपर आओ कि तू कुअंर के
८ आगे जिसे तूने देखा है घटायाजाय। झगड़ने को शीघ्र मत जा
नहोकि अंत्य में क्या करे जब तेरा परोसी तुझे लज्जित करे।
९ तू अपने परोसी से अपने पद का बिवाद करले और गुप्त को
१० दूसरे पर प्रगट न कर। नहो कि सुनवैया तुझे लज्जित करे और
११ तेरा अपयश किसी रीति से नमिटे। जून पर बचन कहना

१२ सोने के आता के समान जो चांदी के चित्र पर हो। जैसे सोने की बाली और चोखे सोने का गहना वैसेही बुद्धिमान
१३ घुड़कवैया अधीन कान पर। जैसे पाले का शीत लवनी में वैसेही विश्वस्त दूत अपने भेजवैयों के लिये है क्योंकि वुह अपने
१४ खामियों के मन को उभाड़ता है। जो कोई झूठाई के दान पर अपनी बड़ाई करताहै बिनमेह के मेघ और पवन के समान है।
१५ बड़े धीरज से कुंअर मान लेताहै और कोमल जीभ हड्डी को
१६ तोड़तीहै। क्या तूने मधु पाया तू इतनाही खा जितना तेरे लिये बस है नहोवे कि तू अधिक खाजाय और उक्लाल डाले।
१७ अपने परोसी के घर में कधी कधी जा नहो कि वुह तुझसे
१८ अघाजाय और तुझसे बैर रक्खे। जो मनुष्य अपने परोसी पर झूठी साक्षीदेता है सो लट्ठ और एक खड्ग और चोखा बाण
१९ है। दुःखमें अविश्वस्त मनुष्य का भरोसा रखना टूटे दांत
२० और उखड़े ऊए पाओं के समान है। जैसा जो जाड़े में बस्त्र लेताहै और जवखार पर सिरका वैसा रागगाना शोकित
२१ मन के आगे। यदि तेरा बैरी भूखा होवे उसे रोटी खाने को
२२ दे यदि वुह पियासा होवे उसे पानी पीने को दे। क्योंकि तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर करेगा और
२३ परमेश्वर तुझे प्रतिफल देगा। जिस रीति से उतरहिया पवन मेंह लाताहै वैसा चवाई जीभ क्रोधित रूपको लातीहै।
२४ छत के एक कोने में रहना और भी भला है कि झगड़ालू स्त्री के
२५ साथ चौड़े घर में। जैसे पियासे के लिये ठंडा पानी वैसा
२६ मंगल समाचार दूर देश से। धर्मी मनुष्य का दुष्ट के आगे झुकना ऐसा है जैसे गिहड़ोरा ऊआ सोता अथवा गदला
२७ धारा। जैसा बऊत मधु खाना अच्छा नहीं वैसा अपना
२८ बिभव ढूंढ़ना ठीक नहीं। जो अपने प्राण को वश में नहीं रखता सो एक नगर के समान है जो गिराऊआ बिन भीत का हो।

२६ छबीसवां पर्ब्ब ।

१ जैसा तपन में पाला और लवनी में मेंह वैसा मूर्ख को प्रतिष्ठा
२ नहीं सजती। जैसे चिड़ियों का भमना और सुपाबीना का
३ उड़तेफिरना वैसा स्राप अकारथ न आवेगा। घोड़े के लिये
कोडा और गदहे के लिये ढाठी और मूर्ख की पीठ के लिये
४ छड़ी। मूर्ख को उसकी मूर्खता के समान उत्तर मत दे नहो
५ कि तू भी उसके समान हो जाय। मूर्ख को उसकी मूर्खता के
समान उत्तर दे नहो कि वुह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान होवे।
६ जो मूर्ख के हाथ से संदेश भेजता है सो पांव काटताहै और
७ अंधेर पीताहै। लंगड़े की टांगें उठी रहतीहैं सो मूर्खों के
८ मुंह में दृष्टांत ऐसाही है। जैसे कोई मणि को पत्थर की ढेर
९ में रक्खे मूर्ख को प्रतिष्ठा देना ऐसाही है। जैसा कांटा मद्यप
१० के हाथ में गड़जाताहै वैसा मूर्खों के मुंह में दृष्टांत है। सब का
सृष्टिकर्त्ता महान है वुह मूर्खों और अपराधियों दोनों को
११ प्रतिफल देताहै। जैसा कुत्ता अपने छांड़ को फिर जाताहै
१२ वैसा मूर्ख अपनी मूर्खता फिर फिर प्रगट करताहै। तू देखता
है कि मनुष्य अपनी दृष्टि में बुद्धिमान है मूर्ख की आशा और
१३ भी है कि उसकी। आलसी कहताहै कि मार्ग में सिंह है सिंह
१४ गलियोंमें है। जैसा द्वार अपनी चूल पर फिरताहै वैसा
१५ आलसी अपने बिछौने पर। आलसी अपना हाथ गोद में
१६ छिपाता है और उसे मुंह में फेर लाना बड़ा दुःख है। आलसी
अपनी समुझ में सात मनुष्यों से जो बिचार लासक्ते हैं आप
१७ को अधिक बुद्धिमान जानताहै। जो चल निकलने में औरों के
झगड़े से छेड़ताहै सो ऐसाहै जैसा कोई कुत्ते का कान धरलेताहै।
१८ जैसा बौड़हा जो लवर को और बाण और मृत्यु को फेंकताहै।
१९ जो मनुष्य अपने परोसी को छल देकर कहताहै कि मैंने तो
२० ठट्ठा किया सो ऐसाही है। इंधन बिना आग बुझजाती है वैसे
२१ जहां लुतड़ा नहीं तहां झगड़ा मिटजाताहै। जैसा अंगारों

पर कोइले और आग पर ईंधन वैसा झगड़ालू मनुष्य झगड़ा
२२ उठाने में । लुतड़े की बातें घाओं की नाईं हैं जो पेट के अंतरों
२३ में पऊंचती हैं । जलते होंठ और दुष्ट मन चांदी के मैल से
२४ ढंपे ऊए ठीकरे के समान । जो बैर रखता है सो होंठों से
२५ जानाऊआ है और मन में छल रख छोड़ता है । जब वुह
अनुग्रह का शब्द करता है उसकी प्रतीति मत कर क्योंकि उसके
२६ मन में सात घिन हैं । जिसका डाह गुप्त में छिपा है उसकी
२७ दुष्टता मंडली के आगे दिखाई जायगी । जो गड्हा खोदता है
सो उसमें गिरेगा और जो पत्थर ढुलकाता है वुह पलटके
२८ उसी पर पड़ेगा । जो झूठी जीभ से दुःखित है उस्से वुह डाह
रखती है और लुतड़ा का मुंह बिनाश करता है ।

२७ सताईसवां पर्ब्ब ।

१ कलकी बड़ाई आज मत कर क्योंकि तू नहीं जानता कि दिनभर
२ में क्या होगा । दूसरा मनुष्य तेरी बड़ाई करे तेराही मुंह
३ तेरेही होंठ नहीं । पत्थर भारी है और बालू गरू परंतु मूढ़
४ का कोप दोनों से भारी है । क्रोध क्रूर है और रिस उभड़ती
५ है परंतु कौन है जो झल के आगे ठहर सके । प्रगट झिड़की
६ गुप्त प्रेम से उत्तम है । स्नेही के घाव बिश्वस्त हैं परंतु बैरी के चूमा
७ छली हैं । अघाया मन मधु को लताड़ता है परंतु भूखे प्राणी के
८ लिये हर एक कड़वी बस्तु मीठी है । जो मनुष्य अपने स्थान से
भ्रमता है वुह चिड़िया के समान है जो अपने खोंते से भ्रमती
९ है । सुगंध तेल मन को आनंदित करता है वैसा मनुष्य के
१० लिये उसके मित्र की मीठाई प्राण के मंत्र से है । अपने मित्र
और अपने पिता के मित्र को त्याग मत कर और अपने विपत्ति
के दिन भाई के घर मत जा क्योंकि समीप का परोसी दूर के
११ भाई से अच्छा है । मेरे बेटे बुद्धिमान हो और मेरे मन को
आनंद कर जिसतें मैं उसे जो मुझे ओराहना देते हैं उत्तर

१२ द सकों। चतुर आगे से बुराई को देखता है और आप को
१३ छिपाता है परंतु भोले बढ़जाके दंडपातेहैं। जो परदेशी का
बिचवई होवे तू उसके कपड़े लेले और उस्से जो परदेशी स्त्री
१४ का हो बंधक मांगले। जो बिहान को उठके अपने मित्र को
बड़े शब्द से आशीष देताहै सो उसके लिये एक स्राप
१५ गिनाजायगा। झड़ो के दिनका सदा टपकना और झगड़ालू
१६ स्त्री दोनों एक हैं। जो उसे छिपाताहै सो पवन को छिपाता
है अथवा दहिने हाथ का सुगंध जो आप को प्रगट करताहै।
१७ जैसा लोहा लोहे को चोखा करता है वैसा मनुष्य अपने मित्र
१८ के रूपको चोखा करता है। जो गूलर के वृक्ष की रक्षा करताहै
सो उसका फल खायगा उसी रीति से जो अपने स्वामी की
१९ सेवामें रहताहै सो प्रतिष्ठा पावेगा। जैसा पानी में मुंह मुंह
२० के समान वैसा मनुष्य का मन मनुष्य के समान। नरक और
२१ नाश नहीं भरते वैसा मनुष्य की आखें तृप्त नहीं होतीं। जिस
रीति से चांदी के लिये घड़िया और सोने के लिये भट्ठी है उसी
२२ रीति से मनुष्य की बड़ाई मनुष्य के लिये। यद्यपि तू मूढ़ को
गोहूं के साथ ओखली में डाल के मूसल से कूटे तथापि उसकी
२३ मूढ़ता उस्से दूर न होगी। अपने झुंडों की दशा को जानने में
२४ यत्न कर और अपने ढोरों पर मनलगा। क्योंकि बल सदा
२५ नहीं रहता और क्या मुकुट पीढ़ी से पीढ़ी लों। पुआल और
कोमल घास दिखाई देती है और पहाड़ों के सागपात बटोरे
२६ जाते हैं। मेम्ने तेरे पहिरावा के लिये हैं और बकरी तेरे खेतके
२७ मोलहैं। और बकरियों का दूध तेरे खानेके लिये और तेरे
घरानेके लिये और तेरी लौंड़ियों की जीविका के लिये।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब ।

१ दुष्ट भागता है जब कोई उनका पीछा नहीं करता परंतु धर्मी
२ सिंह के समान साहसी है। देश के अपराध के कारण बहुत

से कुंअर हैं परंतु समुझवैया और बुद्धिमान से वुह बढ़ाया
३ जायगा। जो कंगाल कंगाल को सताता है सो बिनाअन्न के
४ बौछाड़ कीनाई है। जो व्यवस्था को त्याग करते हैं सो दुष्टों की
स्तुति करते हैं परंतु व्यवस्था के पालक उनसे बिवाद करते हैं।
५ बुरे मनुष्य न्याय को नहीं समुझते पर जो परमेश्वर के खोजी हैं
६ सो सब कुछ समुझते हैं। जो अपने मार्ग से भटका ऊआ है सो
यद्यपि धनी होय तथापि वुह कंगाल जो अपनी खराई पर
७ चलता है उस्से भला है। जो व्यवस्था को पालन करता है सो
बुद्धिमान पुत्र है परंतु जो खाऊको खिलाता है सो अपने
८ पिताको लज्जित करताहै। जो ब्याज और अधर्म से अपनी
संपत्ति को बढ़ाताहै सो उसके लिये जो कंगालों पर दया करेगा
९ बटोरता है। जो व्यवस्था के साम्ने से अपने कान को फेरदेता है
१० उसकी प्रार्थना घिनित है। जो धर्मी को भटकाके बुरे मार्ग
पर चलाता है सो अपने गड़हे में आप गिरेगा परंतु खरा
११ अच्छी बस्तु का अधिकारी होगा। धनी मनुष्य अपनी दृष्टि में
बुद्धिमान है परंतु कंगाल जो बुद्धिमान है उसे पहिचान लेताहै।
१२ जब धर्मी आनंद करताहै तब बड़ा बिभव है परंतु जब दुष्ट
१३ उभड़ते हैं तब मनुष्य का खोज होताहै। जो अपने पापों को
ढांपता है सो भाग्यमान न होगा परंतु जो उन्हें मान लेताहै और
१४ उसे छोड़ताहै सो दया पावेगा। धन्य है वुह जन जो सदा डरा
करताहै परंतु जो अपने मनको कठोर करताहै सो बुराई में
१५ गिरेगा। जैसा गर्ज्जता ऊआ सिंह और भ्रमता ऊआ रीछ
१६ वैसाही दुष्ट आज्ञाकारी कंगालों पर है। असमुझ राजा
भी महा अंधेरी है परंतु जो लोभ से बैर रखता है सो अपनी
१७ बय बढ़ावेगा। जो मनुष्य अंधेर से किसी को घात करताहै सो
१८ भाग के गड़हे में गिरेगा उसे कोई न रोकेगा। जो खराई से
चलताहै सो बच जायगा परंतु जो कुचाली है सो अाकस्मात
१९ गिर पड़ेगा। जो अपनी भूमि जोता बोयाकरता है सो बऊत

भोजन प्राप्त करेगा परंतु जो वृथा लोगों का पीछा करताहै सो
२० कंगालपन से पूर्ण होगा। विश्वस्त मनुष्य आशीषों से उभड़ेगा
परंतु जो धनी होनेके लिये उतावली करता है निर्दंड नजायगा।
२१ मनुष्यों का पक्ष करना अच्छा नहीं क्योंकि ऐसा मनुष्य रोटी के
२२ टुकड़ेके लिये पाप करेगा। जो बुरी आंख रखताहै सो
धनी होनेको उतावली करताहै और नहीं सोचता कि बिपत्ति
२३ उस पर आपड़ेगी। जो मनुष्य को दपटताहै सो आगे को उस्से
२४ अधिक अनुग्रह पावेगा जो अपनी जीभ से फुसलाताहै। जो
अपनी माता अथवा पिता को लूटता है और कहताहै कि यह
२५ अपराध नहीं सो बिनाशक का संगी है। जिस के मन में घमंड है
सो झगड़ा उभाड़ताहै परंतु जिसका भरोसा परमेश्वर पर है
२६ सो पुष्ट किया जायगा। जो अपने मन पर भरोसा रखताहै
सो मूर्ख है परंतु जो बुद्धि से चलता है सोई छुड़ाया जायगा।
२७ जो कंगालों को देता है उसकी घटी नहोगी परंतु जो आंखें
२८ छिपाताहै बहुत स्राप पावेगा। जब दुष्ट उभड़तेहैं तब मनुष्य
आप को छिपाते फिरतेहैं परंतु जब वे नष्ट होतेहैं तब धर्मी
बढ़ते हैं।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब ।

१ दपटाहुआ मनुष्य जो अपने गलेको कठोर करताहै सो बिना
२ औषध आकस्मात माराजायगा। जब धर्मी बढ़ते हैं तब
लोग आनंदित होतेहैं परंतु जब दुष्ट प्रभुताकरता है तबलोग
३ शोक करते हैं। जो बुद्धि से प्रेम रखता है सो अपने पिता
को मगन करता है परंतु जो वेश्या की संगति करता है सो
४ अपनी संपत्ति उठाता है। राजा न्याय से देश को स्थिर करता
५ है परंतु भेंटों का जन उसे खोता है। जो मनुष्य अपने
परोसी से चापलूसी करता है सो उसके पांव के लिये जाल
६ बिछाता है। दुष्ट मनुष्य के अपराध में एक जाल है परंतु

७ धर्मी गाता है और मगन होताहै। धर्मी मनुष्य कंगालों
के पद को बूझता है परंतु दुष्ट जानेकी चिंता नहीं करता।
८ निंदक नगर में आग लगाता है परंतु बुद्धिमान क्रोध को फेर
९ देतेहैं। यदि बुद्धिमान मूर्ख से झगड़े चाहे कोपकरे चाहे
१० हंसे तो चैन नहीं। घातक खरे से बैर रखतेहैं परंतु सज्जन
११ उसका प्राण ढूंढ़ते हैं। मूर्ख अपना सारा मन उचारता है
१२ परंतु बुद्धिमान आगे के लिये रोकता है। यदि आज्ञाकारी झूठ
१३ को सुनाकरे तो उसके समस्त सेवक दुष्ट हैं। कंगाल और
ब्याजग्राहक एकट्ठे होतेहैं परमेश्वर उन दोनों की आंखें उंजियाली
१४ करताहै। जो राजा धर्म से कंगालों का न्याय करता है उसका
१५ सिंहासन सदा स्थिर रहेगा। छड़ी और दपट बुद्धि देती है
परंतु छोड़ाऊआ बालक अपनी माता को लज्जित करताहै।
१६ जब दुष्ट बढ़जाते हैं तब अपराध बढ़ता है परंतु धर्मी लोग
१७ उनका पतन देखेंगे। अपने बेटे को ताडना कर और वुह तुझे
१८ चैन देगा हां वुह तेरे आत्मा को आनंदित करेगा। जहां दर्शन
नहीं तहां लोग नष्ट होतेहैं परंतु जो ब्यवस्था को पालन करताहै
१९ सो धन्य है। सेवक वचन से ताड़ना न पावेगा क्योंकि यद्यपि
२० वुह समुझे तथापि वुह उत्तर नदेगा। तू देखता है कि मनुष्य
२१ शीघ्र से बोलता है मूर्ख से उस्से अधिक आशा है। जो लड़काई
से अपने सेवक को सुकुआरी से पालता है अंत को वुह उसका
२२ बेटा बनेगा। क्रोधी मनुष्य झगड़ा उभाड़ताहै और कोपित मनुष्य
२३ अपराध में घाट नहीं। मनुष्य का अहंकार उसे नीचे करेगा
२४ परंतु प्रतिष्ठा दीनात्मा को संभालेगी। जो चोर का साझी है
सो अपनेही प्राण का बैरी है वुह साप सुनता है और उसे प्रगट
२५ नहीं करता। मनुष्य का डर जाल लाताहै परंतु जो परमेश्वर
२६ पर भरोसा रखता है सो उभाड़ाजायगा। बऊत हैं जो आज्ञाकारी
२७ का रूप ढूंढ़ते हैं परंतु मनुष्य का न्याय परमेश्वर से है। अधर्मी
मनुष्य धर्मियों के लिये घिन है और खरा दुष्टों के लिये घिन।

३० तीसवां पर्ब्ब।

१ याकीह के बेटे आजूर के वचन अर्थात् भविष्य वाणी जो उसने
२ एतियाल अर्थात् एतियाल और यूकाल से कहा। निश्चय मैं
हर एक मनुष्य से अधिक पशुवत् हों और मनुष्य कीसी बुद्धि
३ मुझ में नहीं। मैंने न बुद्धि सीखी न धर्मियों की पहिचान
४ प्राप्त किई। कौन स्वर्ग पर उठगया अथवा उतरा किसने पवन
को अपनी मुट्ठी में एकट्ठा किया किसने पानियों को बस्त्र
में बांधा किसने पृथिवी के सारे सिवानों को दृढ़ किया
यदि तू कहि सके उसका नाम क्या और उसके बेटे का
५ नाम क्या। ईश्वर का हर एक बचन शुद्ध कियागया है
६ जिनका भरोसा उस पर है वुह उनके लिये ढाल है। तू उसके
बचन में मत मिला नहो कि वुह तुझे दपटे और तू झूठा
७ ठहरे। मैंने तुझ से दो बात चाहीहै सो जीतेजी मुझ से अलग
८ मत रख। वृथा और झूठ को मुझ से अलगकर और मुझे
न कंगालपन दे न धन दे मेरी दशा के योग्य मुझे भोजन दे।
९ नहोवे कि मैं तृप्त हो जाउं और झूठ बोलके कहों कि ईश्वर
कौन अथवा कंगाल होके चोरी करों और अपने ईश्वर का नाम
१० अकारथ लेऊं। अपनी जीभ से सेवक को उसके स्वामी के आगे
दुःख मत दे नहोकि वुह तुझे स्राप दे और तू दोषी ठहरे।
११ एक पीढ़ी ऐसीहै जो अपने पिता को स्राप देतीहै और अपनी
१२ माता को धन्य नहीं कहती। एक पीढ़ी अपनीही दृष्टि में पवित्र
१३ है परंतु अपनी मलीनता से धोई नहींगई। एक पीढ़ी है
हाय उसकी आंखें उभड़ी हुई हैं और उसकी पलकें उठी
१४ हुई हैं। एक पीढ़ी ऐसीहै जिसके दांत खड्ग हैं और दाढ़ें छुरियां
जिसतें कंगालों को पृथिवी परसे और दरिद्रों को मनुष्यों में
१५ से भक्षण करे। जोंक की दो बेटियां हैं जो देदे पुकारतियां
हैं तीन हैं जो कभी तृप्त नहीं होतीं चार नहीं कहतीं कि बस।
१६ समाधि और बांझ और पृथिवी जो जलसे पूर्ण नहीं और

१७ आग नहीं कहती है कि बस । आंखें जो पिता को चिढ़ाती हैं और अपनी माता को मानना तुच्छ जानती हैं बनैले कउए उसे निकाल
१८ लेंगे और गिद्धके चिंगने उसे खालेंगे । मेरे लिये तीन अति
१९ अचंभित हैं चार जिन्हें मैं नहीं जानता । गिद्ध का मार्ग आकाश में और सांप की चाल चटान पर और समुद्रके मध्य में जहाज़
२० की चाल और मनुष्य की चाल कन्या के साथ । व्यभिचारिणी का मार्ग ऐसा है कि वुह खाती है और अपना मुंह पोंछती है
२१ और कहती है क्या मैंने कुछ दुष्टता किई । तीन के लिये पृथिवी
२२ दुःखित है हां चार का भार उठा नहीं सक्ती । सेवक के लिये जब वुह राज्य करता है और मूढ़ से जब वुह भोजन से तृप्त है ।
२३ निर्लज्ज से जब वुह बियाही जावे और दासी से जो अपनी
२४ स्वामिनी की अधिकारिणी होवे । चार हैं जो पृथिवी पर छोटी
२५ हैं परंतु अति बुद्धिमान हैं । चिउंटी बलवान नहीं तथापि वे
२६ अपने लिये भोजन तपन में बटोरती हैं । खरहा निर्बल है
२७ तथापि पहाड़ियों में अपनी मांद बनाता है । टिड्डी के राजा
२८ नहीं तथापि वे एकट्ठी होके निकलती हैं । और मकड़ी जो अपने पांओं से पकड़ती है और राजाओं के भवनों में है ।
२९ तीन हैं जो सुरीति से चलती हैं हां चार की चाल सुंदर है ।
३० सिंह जो पशुन में प्रबल है और किसी के साम्ने से फिरता नहीं ।
३१ अहेरी कुत्ता और बकरा भी और राजा जिसके विरोध में
३२ उठना नहीं । यदि तूने मूढ़ता से आप को उभाड़ा अथवा यदि तूने बुरी चिंता किई तो हाथ अपने मुंह पर रख निश्चय दूध मथने से माखन निकलाता है और नाक मरोड़ने से लोहू निकलता है वैसा कोप को छेड़ने से झगड़ा उठता है ।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब ।

१ लमूईल राजा के बचन भविष्य बाणी जो उसकी माता ने उसे
२ सिखाई । क्या मेरे बेटे और मेरे कोख के बेटे और क्या मेरी

३ मनैातियों के बेटे। अपना बल स्त्रियें को मत दे और अपनी
४ चाल उसे जो राजाओं को नष्ट करता है। राजाओं को
हे लमूईल राजाओं को मद्यपान करना ठीक नहीं और तीक्ष्ण
५ पान राजपुत्रों को नहीं। न होवे कि वे पीवें और व्यवस्था
को भूलजायें और दुःखित के समस्त पुत्र के न्याय को पलटडालें।
६ तीक्ष्ण पान उसे देओ जो नाश होने पर है और दाखरस
७ उन्हें जिनका मन उदास है। वे उसे पीएं और अपनी
कंगालपन भूल जायें और अपनी बिपत्ति को फिर चेत न
८ करें। अपना मुंह गूंगे के लिये खोल उनके समस्त पुत्र के पद
९ के लिये जो नाश होने पर हैं। अपना मुंह खोल के धर्मन्याय
१० कर और दीन और कंगालों के पद के लिये बिवाद कर। धर्मी स्त्री
को कौन पासक्ता है क्योंकि उसका मोल लालों से अधिक है।
११ उसके पति का मन चैन से उसकी प्रतीति करता है यहांलों
१२ कि वुह लूट का अधीन न होगा। वुह अपने जीवन भर उसे
१३ भलाई करेगी बुराई नहीं। वुह ऊन और सन ढूंढ़ती है और
१४ अपने हाथों से बांछा के साथ कार्य करता है। वुह ब्यापारियें
के जहाज़ों के समान है वुह अपना भोजन दूरसे लेआती है।
१५ वुह रात रहते ऊए उठती है और अपने घराने को भोजन
१६ देती है और अपनी कन्याओं को भाग देती है। वुह एक खेत
सोचती है और उसे लेलेतीहै और अपने हाथों के फल से
१७ दाख की बाटिका लगाती है। वुह अपनी कटि को कसती है
१८ और अपनी भुजाओं को पोढ़ करती है। वुह सभ्भुती है कि
१९ मेरा ब्यापार भलाहै रात को उसका दीपक नहीं बुझता। वुह
तकले पर अपने हाथ चलाती है और उसके हाथ अटेरन
२० पकड़ते हैं। वुह कंगालों की ओर अपना हाथ बढ़ाती है हां
२१ वुह अपने हाथ अधीनों की ओर फैलाती है। वुह अपने घराने
के लिये पाला से नहीं डरती है क्योंकि उसके समस्त घराने
२२ दोहरे बस्त्र पहिने हैं। वुह अपने लिये बूटा काढ़ेऊए का ओढ़ना

२३ बनाती है उसका बस्त्र पाटंबर और बैंजनी है। जब उसका पति फाटकों में देश के प्राचीनों के संग बैठता है तब वुह प्रसिद्ध
२४ है। वुह झीना कपड़ा बनाती है और बेंचती है और कटिबंध
२५ ब्यापारियों को सौंपती है। बल और प्रतिष्ठा उसका पहिरावा
२६ है और आगे को आनंदित होगी। वुह अपना मुंह बुद्धि से
२७ खोलती है उसकी जीभ में दया की ब्यवस्था है। वुह अपने घराने की चाल को अच्छी रीति से देखती है और आलस की
२८ रोटी नहीं खाती। उसके बालक उठते हैं और उसे धन्य
२९ कहते हैं और उसका पति उसे सराहता है। बज्जतेरी बेटियों
३० ने धन प्राप्त किया परंतु तू सब से उत्तम है। कृपा छली है और सुंदरता ब्यथा परंतु वुह स्त्री जो परमेश्वर से डरती है सराही जायगी उसे उसके हाथों का फल देओ और उसीके कार्य फाटकों में उसे सराहें।

उपदेशक की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

कई दृष्टान्तों से दिखाना कि संसारिक वस्तु वृथा हैं १—११ उपदेशक का पद और बुद्धि का खोजना और झंझट बताना १२—१८।

१ यिरोशलीम के राजा दाऊद के बेटे उपदेशक के बचन। २ उपदेशक कहता है, व्यर्थों का व्यर्थ, व्यर्थों का व्यर्थ, सब व्यर्थ। ३ अपने सारे परिश्रम जो सूर्य्य के तले मनुष्य करता है उन से ४ क्या लाभ है?। पीढ़ी बीती जाती है और पीढ़ी आती है ५ परन्तु पृथिवी सदा बनी रहती है। सूर्य्य उदय होता है और सूर्य्य अस्त भी होता है और जहां से उदय हुआ तहां के लिये ६ हांफता है। पवन दक्खिन की ओर बहता है और उत्तर को घूमजाता है वुह नित्य घूमा करता है और फेर अपने चक्र के ७ समान फिर आता है। सारी नदियां समुद्र में बहती हैं तथापि समुद्र भरा नहीं जहां से नदियां निकलती हैं तहां वे ८ फिर जाती हैं। परिश्रम से सब कुछ भरा है मनुष्य उच्चार नहीं सक्ता देखने से आंख और सुन्ने से कान तृप्त नहीं होते। ९ जो वस्तु हुई है सोई होवेगी और जो कि किया गया है सोई किया १० जायगा और सूर्य्य के तले कुछ नया नहीं। क्या कोई ऐसी वस्तु है जिसके विषय में कहाजाय देख यह नई? हमारे आगे ११ पुरातन समय से यह हुआ है। अगली वस्तुन का स्मरण नहीं

१६ अपने मन में कहा कि यह भी व्यथा है। क्योंकि बुद्धिमान का स्मरण मूर्ख से अधिक, सदा न किया जायगा क्योंकि जो अब है सो आवैये समयों में भुलाया जायगा और कैसा बुद्धिमान
१७ मूर्ख की नाईं मरता है। इस लिये मैं जीवन से उदास हुआ क्योंकि जो कार्य्य सूर्य्य के तले बना है सो मेरे लिये शोकमय
१८ है क्योंकि सब व्यथा और जीव का झंझट। हां मैं अपने सारे परिश्रम से, जो सूर्य्य के तले परिश्रम किया था उदास हुआ क्योंकि जो जन मेरे पीछे होगा मुझे उसके लिये छोड़ने
१९ पड़ेगा। और कौन जाने कि वुह बुद्धिमान अथवा मूर्ख होवे तथापि वुह मेरे सारे परिश्रम पर प्रभुता करेगा जिन पर मैं ने परिश्रम किया है और जिन में मैं ने सूर्य्य के नीचे
२० अपने तईं बुद्धिमान दिखाया है यह भी व्यथा है। इस लिये मैं ने सूर्य्य के तले सारे परिश्रमों से अपने मन को निरास
२१ कराया। क्योंकि एक जन है जिसका परिश्रम बुद्धि में और ज्ञान में और नीति में है तथापि वुह उस जन के लिये भाग छोड़ जायगा जिस ने परिश्रम नहीं किया यह भी व्यथा और
२२ बड़ी बुराई। क्योंकि उसके सारे परिश्रम से और मन के सारे झंझट से जो उसने सूर्य्य के तले परिश्रम किया है मनुष्य के
२३ लिये क्या है?। क्योंकि उसका सारा समय दुःख और उसका परिश्रम उदास, हां उसका मन रात को भी चैन नहीं पाता
२४ यह भी व्यथा है। मनुष्य के लिये खाने पीने और मन को अपने परिश्रम में आनन्द करने से भला नहीं यह भी मैं ने देखा कि
२५ ईश्वर की ओर से है। क्योंकि मुझ से अधिक कौन खा सकता है
२६ अथवा शीघ्र करसकता है। क्योंकि जो जन ईश्वर के आगे भला है उसे ईश्वर बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है परन्तु पापियों को बटोरने को और ढेर करने को परिश्रम देता है जिसतें वुह उसे देवे जो ईश्वर के आगे भला है, यह भी व्यथा और जीव का झंझट है।

संसारिक व्यवहार की अस्थिरता १—१५ अनुचित कर्म्म के लेखा देने का और पशु की नाईं मनुष्य के मरने का बर्णन करना १६—२२ ।

१ हर एक के लिये एक समय है और आकाश के तले के हर एक
२ ठहरायेहुए के लिये एक काल । जन्मे का समय और मरने का समय लगाने का समय लगायेहुए के उखाड़ने का समय ।
३ घात करने का समय और चंगा करने का समय और ढाने
४ का समय और बनाने का समय । बिलाप करने का समय और हंसने का समय हाय हाय करने का समय और नाचने
५ का समय । पत्थर फेंक देने का समय और पत्थर बटोरने का समय और मिलने का समय और अलग होने का समय ।
६ पाने का समय और खोने का समय और रखने का समय और
७ फेंक देने का समय । फाड़ने का समय और सीने का समय चुप
८ होने का समय और बोलने का समय । प्रेम करने का समय और घिनाने का समय संग्राम करने का समय और मिलाप
९ करने का समय । जिसमें मनुष्य परिश्रम करता है उसमें उसे
१० क्या लाभ है? । मैं ने उस परिश्रम को देखा है जो ईश्वर ने
११ मनुष्य के पुत्रों को व्यवहार के लिये दिया है । अपने अपने समय में उसने हर एक को सुन्दर बनाया है और उसने संसार को उनके मन में रक्खा है यहां लों कि जो कार्य्य ईश्वर करता
१२ है मनुष्य उसे आदि से अन्त लों नहीं पासक्ता । मैं जानता हों कि उनमें कुछ अच्छा नहीं परन्तु यह कि आनन्द होके
१३ अपने जीवन में भलाई करे । और यह भी कि हर एक मनुष्य खाय पीये और अपने सारे परिश्रम की भलाई भोगे यही
१४ ईश्वर का दान है । मैं जानता हों कि जो कुछ ईश्वर करता है सो सदा के लिये होगा उसमें कुछ मिलाया नहीं जासक्ता न उस्से लिया जासक्ता ईश्वर करता है जिसतें मनुष्य उसके
१५ आगे डरें । जो हुआ है सो अब है और जो होना है सो

ऊआ है जो बीता है ईश्वर उसका लेखा चाहता है ।

१६ मैं ने सूर्य्य के तले भी बिचारस्थान देखा कि दुष्टता
१७ वहां और धर्म्म के स्थान में बुराई । मैं ने मन में कहा कि
ईश्वर धर्मी और दुष्ट का बिचार करेगा क्योंकि हर एक बांछा
१८ और हर एक कार्य्य का समय है । मैं ने मनुष्य के पुत्रों की दशा
के विषय में अपने मन में कहा जिसतें वे ईश्वर को निर्दोष
१९ ठहरावें और उन्हें सूझ पड़ें कि हम पशु हैं । क्योंकि जो मनुष्य
के पुत्रों पर बीत्ता है सो पशु पर बीत्ता है सभों पर एकही
बीत्ता है जैसा एक मरता है तैसा दूसरा मरता है हां सभों
का एक श्वास है यहां लों कि पशुन से मनुष्य की कुछ श्रेष्ठता नहीं
२० है क्योंकि सब व्यथा । सब एकही स्थान को जाते हैं सब के सब
२१ धूल से हैं और सब धूल में फिर जाते हैं । मनुष्य के पुत्रों के
प्राण को जो ऊपर जाता है और पशु के प्राण को जो पृथिवी
२२ में उतरता है कौन जानता है ? । इस लिये मैं देखता हों इसे
भला कुछ नहीं कि मनुष्य अपनेही कार्य्य में आनन्द करे क्योंकि
यह उसका भाग इस कारण कि उसके पीछे जो होगा सो उसे
दिखाने को कौन लावेगा ? ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

अन्धेर का और नाना पाप का वर्णन १—८
मित्रता और प्रेम का लाभ ९—१२ और राजीय
विभव का व्यर्थ होना १३—१६ ।

१ सो मैं फिरा और सूर्य्य के तले के सारे अन्धेरों को सोचा और
क्या देखता हों कि सतायेऊए का आंसू और उनका कोई
शान्तिदायक नहीं और उनके अन्धेरी के हाथ में पराक्रम
२ परन्तु उनका कोई शान्तिदायक न था । इस लिये मैं ने मृतकों
की जो मरचुके हैं उन जीवतों से जो अब जीते हैं अधिक स्तुति
३ किई । हां वुह उन दोनों से अच्छा है जो अब लों नहीं ऊआ

है और जिस ने सूर्य्य के तले के बुरे कार्य्यों को नहीं देखा है।
४ फेर मैं ने सारे परिश्रम और सारे कार्य्य को खरा
सोचा कि इस बात के लिये मनुष्य अपने परोसी के डाह में पड़ता
५ है यह भी वृथा और जीव का झंझट। मूर्ख अपना हाथ
६ समेट के अपनाही मांस खाता है। कुशल के साथ मुट्ठी भर
भला है कि परिश्रम और जीव के झंझट के साथ दो मुट्ठी भर।
७। ८ तब मैं फिरा और सूर्य्य के तले वृथा देखा। एक है
और दूसरा नहीं हां उसके न बालक हैं न भाई तथापि
उसके परिश्रम का अन्त नहीं न उसकी आंख धन से तृप्त है
न वुह कहता है कि मैं किस के लिये परिश्रम करता हों और
अपने प्राण के सुख को खोताहूं? यह भी वृथा हां अति
९ परिश्रम। दो एक से भला है इस कारण कि वे
१० अपने परिश्रम का सफल पाते हैं। क्योंकि यदि वे गिरें तो एक
अपने संगी को उठावेगा परन्तु जो जन अकेला होके गिरता
११ है उस पर सन्ताप क्योंकि उसे उठाने को दूसरा नहीं। फेर
यदि दो एक साथ लेटें तो गरमाते हैं परन्तु अकेला क्यों कर
१२ गरमावे?। और यदि एक उसके विरुद्ध प्रबल होवे तो दो
उसका साम्ना करेंगे और तेहरी रस्सी झट नहीं टूटती।
१३ वृद्ध और मूर्ख राजा जो चिताया न जाय उस्से कंगाल
१४ और बुद्धिमान लड़का भला है। क्योंकि वुह बन्दीगृह से राज्य
करने को आता है और जो भी उसके राज्य में उत्पन्न होता
१५ है सो कंगाल होता है। मैं ने सूर्य्य के तले के जीवधारियों को
उस दूसरे बालक सहित जो उसकी सन्ती उठेगा सोचा।
१६ सारे लोगों का अन्त नहीं अर्थात् सब जो उनसे आगे ऊए हैं
वे भी जो पीछे आते हैं उस्से आनन्दित न होंगे निश्चय यह
भी वृथा और जीव का झंझट।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

कई बात से मनुष्य को चिताना १—८ धन का वृथा होना ९—१७ ईश्वर की डर में उठान करना १८—२० ।

१ जब तू ईश्वर के मन्दिर में जाय तब अपना पांव चौकसी से रख और मूर्ख के बलि चढ़ाने से सुन्ने को अधिक सिद्ध हो
२ क्योंकि वे नहीं सोचते कि हम बुरा करते हैं। अपने मुंह से उतावली मत कर और मन से ईश्वर के आगे शीघ्रता से मत उच्चार क्योंकि ईश्वर स्वर्ग पर और तू पृथिवी पर इस लिये
३ तेरे बचन थोड़े होवें। क्योंकि कार्य्य की बड़ताई से स्वप्न होता है और बचन की बड़ताई से मूर्ख का शब्द जाना जाता है।
४ जब तू ईश्वर के लिये मनौती माने तब पूरा करने को टाल मत क्योंकि मूर्खों से वुह प्रसन्न नहीं है जो तू ने माना है सो
५ पूरा कर। मनौती न मान्ने से भला है कि तू मनौती माने
६ और पूरा न करे। तेरे शरीर से तेरा मूंह पाप कराने न पावे और न दूत के आगे कह कि यह चूक थी किस लिये ईश्वर तेरे शब्द से रिसिया के तेरे हाथ के कार्य्य को नष्ट
७ करे। क्योंकि स्वप्न की और बचन की बड़ताई में भी वृथा
८ है परन्तु तू ईश्वर से डर। यदि तू दरिद्र पर अन्धेर और प्रदेश में अति बिरुद्ध न्याय और बिचार देखे तो उस्से आश्चर्य मत मान क्योंकि जो सब से बड़े से बड़ा है सो देखता
९ है और उनसे भी बड़ा है। अधिक पृथिवी का लाभ सब के लिये है और राजा भी खेत से पाला जाता है।
१० जो चांदी से प्रीति रखता है सो चांदी से तृप्त न होगा और न जो बड़ताई से प्रीति रखता है बड़ताई से, यह भी वृथा
११ है। जब संपत्ति बढ़ती है तो उसके खवैये भी बढ़ते हैं केवल अपनी आंखों से देखने से उसके स्वामियों को क्या लाभ।
१२ परिश्रमियों की नीन्द चाहे थोड़ा खाय चाहे बहुत मीठी है

१३ परन्तु धनमान को बहुताई उसे सोने न देगी। मैं ने सूर्य्य के तले एक अति बुराई देखी है कि धन अपने स्वामियों की घटी
१४ के लिये रक्खा जाता। परन्तु ऐसे धन बुरे परिश्रम से नष्ट होते हैं और वुह पुत्र जन्माता है और उसके हाथ में कुछ
१५ नहीं। जैसा वुह अपनी मा की कोख से आया फिर जाने में वुह नंगा जायगा और वुह अपने हाथ में अपने परिश्रम का कुछ फल अपने संग न लेजायगा जो वुह अपने हाथ में लेजाय।
१६ और यही भी अति बुराई है कि सब बातों में जैसा वुह आया तैसा जायगा जिसने पवन के लिये परिश्रम किया है उसे क्या
१७ लाभ है!। उसने अपने जीवन भर अन्धियारे में और रोग
१८ सहित अति दुःख में और कोप में खाता है। जो मैं ने यह देखा है खाने पीने और अपने सारे परिश्रम में, जो सूर्य्य के तले जीवन भर मनुष्य करता है जो ईश्वर उसे देता है उसका फल भोगे यह भला और शुभ है क्योंकि उसका भाग है।
१९ हर एक मनुष्य को भी जिसे ईश्वर ने धन और संपत्ति दिई है और उसे खाने को और अपना भाग लेने को और अपने परिश्रम में आनन्द करने को पराक्रम दिया है यह ईश्वर का
२० दान है। क्योंकि वुह अपने जीवन के दिनों को बहुत स्मरण न करेगा इस कारण कि उसके मन की आनन्दता में ईश्वर उसे उत्तर देता है।

६ छठवां पर्ब्ब।

धन का और बड़े परिवार और जीवन का वृथा होना १—६ जगत में बुद्धिमान और निर्बुद्धि में थोड़ा बीच होना ७—८ बेचैन अभिलाष का और मनुष्य के जीवन का और उसके सारे भोग का वृथा होना ९—१२।

१ मैं ने सूर्य्य के तले एक बुराई देखी है और लोगों में प्रसिद्ध है।

२ कि ईश्वर ने मनुष्य को धन और संपत्ति और महिमा दिई है यहां लों कि अपने मन की सारी बांछा में घटी नहीं है तिस पर भी ईश्वर ने उसे खाने की सामर्थ्य न दिई है परन्तु उपरी उसे
३ खाता है यही ब्यर्थ और बुरा रोग है। यदि मनुष्य सौ जन्मावे और बहुत बरस लों जीवे यहां लों कि उसके बरसों के दिन बहुत होवें और उसका मन भलाई से न भरे और वुह गाड़ा भी न जाय तो मैं कहता हों कि गर्भपात उस्से भला
४ है। क्योंकि वुह बृथा आता है और अन्धियारे में जाता है
५ और उसका नाम अन्धियारे से ढांपा जायगा। उसने सूर्य्य को भी न देखा न जाना यह अगिले से अधिक सुख पाता है।
६ हां जो वुह सहस्र बरस दूना जीवे तो भी कुछ सुख नहीं देखता क्या सब के सब एकही स्थान को नहीं जाते हैं?।
७ मनुष्य का सारा परिश्रम अपने मुंह के लिये है तिस पर भी उसका
८ जी नहीं भरता। क्योंकि बुद्धिमान मूर्ख से क्या अधिक रखता है? और कंगाल जो जीवतों के आगे चलने को जानता है सो
९ क्या रखता है?। आंखों की दृष्टि मन के भ्रमने से अच्छी है
१० यह भी ब्यर्थ और जीव का झंझट। जो हुआ है उसका नाम होचुका और जानागया कि वुह मनुष्य है वुह अपने से
११ बलवान का सामना न करे। बृथा बढ़ानेवाली बहुत
१२ बस्तु हैं मनुष्य को क्या फल?। क्योंकि मनुष्य जो अपने बृथा जीवन के सारे दिन जिन्हें वुह छाया के समान गवांता है कौन जानता है कि मनुष्य के लिये क्या भला है? क्योंकि मनुष्य को कौन कहि सक्ता है कि सूर्य्य के तले उसके पीछे क्या होगा?।

७ सातवां पर्ब्ब ।

शुभनाम का और मृत्यु का और कष्ट और दपट का लाभ १—६ अन्धेर घूस आदि का बिचार ७—१० बुद्धि का लाभ ११—१२ कुबियों से बुद्धिमानों

का जोखिम में पड़ना १३—१८ मनुष्य का सिद्धता में उत्पन्न होना और आप को भ्रष्ट करना १९।

१ बहुमूल्य सुगंध से सुनाम भला है और जन्म दिन से मरने
२ का दिन अच्छा। बिलाप के घर जाना जेवनार के घर में
जाने से भला है क्योंकि वुह हर एक जन का अंत और जीवत
३ अपने मन में सोचेगा। हंसी से शोक भला है क्योंकि मुंह की
४ मलीनता से मन सुधर जाता है। बुद्धिमान का मन बिलाप
के घर में है परन्तु मूर्ख का मन सुख अभिलाष के घर में।
५ मूर्खों का गीत सुन्ने से बुद्धिमान का दपट सुन्ना अति भला है।
६ क्योंकि जैसा हांडी के नीचे कांटे का पटपटाना तैसा मूर्ख का
७ हंसना यह भी व्यर्थ है। अन्धेर बुद्धिमान को
८ बौड़हा करता है और घूस मन को नाश करता है। बस्तु का
अन्त उसके आरंभ से भला है और संतोषी अहंकारी से
९ भला है। मन में शीघ्र कोपित मत हो क्योंकि मूर्खों के मन में
१० क्रोध बसता है। मत कह कि अगिले दिन इन से भले थे क्योंकि
११ इस के बिषय में तू बुद्धि से नहीं बूझता। बुद्धि
अधिकार के साथ भली है और सूर्य्य के दर्शी के लिये लाभ।
१२ क्योंकि बुद्धि एक आड़ है और रोकड़ बचाव, परन्त
ज्ञान की उत्तमता यह कि बुद्धि अपने स्वामियों को जीवन
१३ देती है। ईश्वर का कार्य्य सोच क्योंकि जो उसने सीधा किया
१४ है उसे टेढ़ा कौन करसक्ता?। सुदशा के दिन में आनन्दित
हो परन्तु दुर्दशा के दिन में सोच, ईश्वर ने भी उन्हें सन्मुख
१५ रक्खा है जिसतें मनुष्य अपने पीछे कुछ न पावे। मैं ने
अपने बृथा के दिन में सब देखा है एक धर्मी अपने धर्म्म में
नष्ट होता है और एक दुष्ट अपनी दुष्टता में बढ़ता है।
१६ अति धर्म्मी मत हो और आप को अति बुद्धिमान मत कर तू
१७ क्यों उजाड़ होवे। अति दुष्ट मत हो और मूर्ख भी मत हो
१८ असमय में क्यों मरे?। इसे ग्रहण करना तेरे लिये भला है

हां इस्से भी अपने हाथ मत उठा क्योंकि जो जन ईश्वर को
१९ डरता है सोई उन सभों से बच निकल आवेगा बुद्धिमान
को बुद्धि. नगर के दस बलवन्त से अधिक बलवन्त करती है।
२० क्योंकि पृथिवी में एक धर्म्मी नहीं है जो भला करता हो
२१ और पाप न करे। सब बातों पर, जो कही जाती हैं मन
२२ मत लगा नहो कि तू अपने सेवक का स्राप सुने। क्योंकि
तेरा मन भी बहुधा जानता है कि तू ने भी औरों को स्रापा।
२३ मैं ने बुद्धि से यह सब परखा है मैं ने कहा कि मैं
२४ बुद्धिमान होउंगा परन्तु वह मुझ्से दूर थी। जो बहुत दूर
२५ है और अति गहिरा है उसे कौन पा सक्ता? । मैं ने अपने मन
को जान्ने और बिचारने को और बुद्धि और कारण ढूंढ़ने को
और मूर्ख की दुष्टता और बौड़हे की मूर्खता जान्ने को
२६ लगाया। और मैं ने उस स्त्री को मृत्यु से अति कड़ुई पाया
जिसका मन फन्दा और जाल और उसके हाथ बन्धन हैं जो
ईश्वर के आगे भला है सो उस्से बचेगा परन्तु पापी उस्से पकड़ा
२७ जायेगा। देख उपदेशक कहता है कि कारण पाने को मैं ने
२८ एक एक बात को तौला और मैं ने यह पाया। जिसे तब भी
मेरा प्राण खोजता है पर मैं नहीं पाता सहस्र मनुष्य में से मैं ने
एक पाया है परन्तु इन सभों में एक स्त्री को न पाया देख केवल
यही पाया है कि ईश्वर ने मनुष्य को खरा बनाया परन्तु उन्हों ने
बहुतसी युक्ति निकाली है।

८ आठवां पर्ब्ब।

बुद्धि का सराहना १— ईश्वर के लिये राजा के बश
में होना २—५ निश्चिन्तता से मनुष्य का दुःख,
समय का खोना और मृत्यु का आना ६—८
पराक्रम और ईश्वर का सन्तोष का न बूझना और
मनुष्य का विपत्ति में पड़ना ९—११ धर्म्मी का

सुख और अधर्मी का दुःख १२—१५ ईश्वर के मंत्र और कार्य्य अखोज हैं १६—१७।

१ बुद्धिमान के तुल्य कौन? और बात का अर्थ कौन जानता! मनुष्य की बुद्धि उसके मुंह को प्रकाश करती है और उसके
२ मुंह की दृढ़ता भी पलट जायगी। ईश्वर की
३ किरिया के कारण राजा की आज्ञा को पालन कर। उसकी दृष्टि से अलग होने को उतावलो मत कर पाप की बात पर
४ खड़ा मत हो क्योंकि जो वुह चाहता है सो करता है। जहां राजा का बचन तहां सामर्थ्य है और कौन उसे कहिसके कि
५ यह आप क्या करते हैं?। जो जन आज्ञा मानता है सो बिपत्ति न जानेगा बुद्धिमान का मन समय को और बिचार
६ को बूझता है। क्योंकि हर एक ठहराएहुए का समय और
७ बिचार है इस लिये मनुष्य का दुःख उस पर बड़ा है। क्योंकि जो होगा सो वुह नहीं जानता है क्योंकि उसे कौन कहि सक्ता
८ है कि कब होगा?। आत्मा को रख छोड़ने में आत्मा पर किसी मनुष्य का पराक्रम नहीं मरने के दिन में भी पराक्रम नहीं रखता और उस लड़ाई में बचाव नहीं और दुष्टता अपने
९ दासों को न बचावेगी। यह सब मैं ने देखा है और अपने मन को सूर्य्य के तले के सारे कार्य्यों पर लगाया है ऐसा समय है कि एक जन दूसरे जन पर अपनीही बुराई के लिये प्रभुता
१० करता है। और ऐसा मैं ने दुष्ट को गाड़े जाते देखा जो पवित्र स्थान से आया गया था और जिस नगर में उन्हों ने यह कार्य्य
११ किया था उस में वे बिसरायेगये यह भी वृथा। झटपट कुकर्म्म का दंड न होने के कारण मनुष्यों के पुत्रों के मन बुरा करते हैं।
१२ यद्यपि पापी सौ बार बुराई करे और उसका समय बढ़जाय तथापि मैं निश्चय जानता हों कि उन्हीं का भला होगा जो
१३ ईश्वर से डरते हैं जो उसके आगे डरा करते हैं। परन्तु दुष्टों का भला न होगा और वुह अपनी छाया के समान दिन

न बढ़ावेगा क्योंकि वुह ईश्वर के आगे नहीं डरता।

१४ पृथिवी में एक व्यथा है कि धर्मी पर दुष्टों के कार्य्य के समान बीता है फेर दुष्टों पर धर्मी के कार्य्य के समान बीता है मैं ने
१५ कहा कि यह भी व्यथा। तब मैं ने सुख बिलास को सराहा इस कारण कि सूर्य्य के तले मनुष्य को इस्से भला नहीं कि खाये पीये और आनन्द करे क्योंकि उसके जीवन के दिनों में, जो ईश्वर ने
१६ उसे सूर्य्य के तले दिया है यही उसके साथ रहेगा। जब मैं ने अपने मन को बुद्धि जान्ने को और पृथिवी पर, जो कार्य्य किया गया है देखने को लगाया (क्योंकि रात दिन उसकी आंखें
१७ नींद नहीं देखती हैं)। तब मैं ने ईश्वर के सारे कार्य्यों को देखा सूर्य्य के तले जो कार्य्य होता है उसे मनुष्य पा नहीं सक्ता इस कारण मनुष्य यद्यपि उसे परिश्रम करके ढूंढे तथापि न पावेगा हां बुद्धिमान भी जो उसे जान्ने चाहे तिस पर भी उसे न पावेगा।

९ नवां पर्ब्ब।

भले बुरे पर समान बीतना १—३ मृत्यु के लिये जीवन का सुख और कार्य्य आनन्द से करना ४—१० महा दुःख मनुष्य पर पड़ना ११—१२ बताना कि संसार में बुद्धि की और सुकर्म्म की थोड़ी प्रतिष्ठा है १३—१८।

१ इन बातों के लिये मैं ने मन लगाया अर्थात सभों का बर्णन करने को कि धर्म्मी और बुद्धिमान और उनके कार्य्य ईश्वर के हाथ में हैं अपने आगे की सारी बातों से कोई मनुष्य प्रेम अथवा बैर
२ को नहीं जानता। सब के लिये सब समान है धर्मी पर और दुष्ट पर भले और पवित्र और अपवित्र पर जो बलि चढ़ाता है उस पर और जो बलि नहीं चढ़ाता है उस पर एकही बात बीती है जैसा भला तैसा बुरा जैसा किरियक

३ तैसा अकिरियक । सूर्य्य के तले सब जो किया जाता है उसमें यह बुरा है कि सब पर एकही बात बीत्ती है हां मनुष्य के पुत्रों का मन बुराई से भी भरा है और जब लों जीते हैं उनके मन में बौड़हापन है और उसके पीछे मृतकों में जाते हैं।
४ क्योंकि जो जीवतों में मिला है उसके लिये आशा है इस लिये
५ कि जीता कुत्ता मरे सिंह से भला है। क्योंकि जीते जानते हैं कि हम मरेंगे परन्तु मृतक कुछ भी नहीं जानते और फेर उनका प्रतिफल नहीं क्योंकि उनका स्मरण भी बिसर जाता
६ है। उनका प्रेम भी और उनका बैर और उनका डाह अब नष्ट हैं फेर सदा के लिये सूर्य्य के तले की बस्तुन में उनका कुछ
७ भाग नहीं है। सो अपना मार्ग ले आनन्द से अपनी रोटी खा और मगन मन से अपना दाखरस पी क्योंकि अब ईश्वर
८ तेरे कार्य्य को ग्रहण करता है। तेरा बस्त्र सदा उजला होवे
९ और तेरे सिर की चिकनाई कधी न घटे। सो अपनी प्रिय पत्नी के साथ अपने ब्यर्थ के जीवन के सारे दिन जो उसने सूर्य्य के तले तुझे दिये हैं अपने वृथा के सारे दिन आनन्द से रह क्योंकि जीवन में और सूर्य्य के तले के परिश्रम में यही तेरा
१० भाग। जो कुछ तेरे हाथ से हो सके सो अपनी सामर्थ्य भर कर क्योंकि समाधि में जहां तू जाता है तहां न कार्य्य है न युक्ति
११ न ज्ञान न बुद्धि है। मैं फिर आया और सूर्य्य के तले देखा कि चालाकों के लिये दांव और बलवन्त के लिये संग्राम नहीं और न बुद्धिमान के लिये रोटी और न ज्ञानियों के लिये धन और न गुणियों के लिये कृपा परन्तु समय और
१२ होनिहार इन सभों पर बीत्ता है। क्योंकि मनुष्य भी अपना समय नहीं जानता जैसे मछलियां बुरे जाल में पकड़ी जाती हैं और जैसे पंछी फन्दे में बझाये जाते हैं तैसाही बुरे समय में मनुष्यों के सन्तान बझाये जाते हैं जब अचानक उन पर पड़ती
१३ है। यह भी बुद्धि मैं ने सूर्य्य के तले देखी है और

१४ वुह मेरे लिये बड़ी है। एक छोटा नगर था और उसमें थोड़े मनुष्य थे और उसके विरोध में एक महाराज ने आके उसे
१५ घेर लिया और उसके सन्मुख बड़े बड़े गढ़ बनवाये। अब उसमें एक कंगाल बुद्धिमान पाया गया जिसने अपनी बुद्धि से उस नगर को बचाया तिस पर भी उस कंगाल मनुष्य को किसी ने
१६ स्मरण न किया। तब मैं ने कहा कि बल से बुद्धि अच्छी तिसपर भी कंगाल की बुद्धि की निन्दा होती है और उसकी बात सुनी
१७ नहीं जाती। बुद्धिमानों की बात चुपके में उनके चिल्लाने से
१८ अधिक सुनी जाती है मूर्खों पर प्रभुता करते हैं। संग्राम के हथियार से बुद्धि अच्छी परन्तु एक पापी बहुतसी भलाई को नाश करता है।

१० दसवां पर्ब्ब ।

बुद्धिमान और निर्बुद्धि की चाल १—३ राजा और प्रजा की चूक का व्याख्यान ४—२०।

१ जैसा मूई माखी से गंधी का तेल बसाता है तैसा तनिक मूढ़पना
२ उनके लिये जो बुद्धि और प्रतिष्ठा में प्रसिद्ध हैं। बुद्धिमान का
३ मन उसकी दहिनी ओर परन्तु मूर्ख का मन बाईं ओर। हां मूर्ख जब मार्ग में भी जाता है उसका मन घट जाता है और
४ वुह सब से कहता फिरता है कि मैं मूर्ख हों। जो अध्यक्ष का मन तेरे विरुद्ध उठे तो अपना स्थान मत छोड़
५ क्योंकि मान लेना बड़े बड़े दोष को शांति करता है। सूर्य्य के तले मैं ने यह बुराई देखी एक चूक की नाईं अध्यक्ष से निकलती
६ है। मूर्खता महात्म पर धरी है और धनी नीच स्थान
७ पर बैठता है। मैं ने सेवकों को घोड़ों पर और अध्यक्षों
८ को सेवकों की नाईं भूमि पर चलते देखा है। जो गड़हा खोदता है सो उसमें गिरेगा और जो बाड़ा तोड़ता है उसे
९ सांप डंसेगा। जो जन पत्थर टालता है सो उस्से चोट पावेगा

१० और जो लकडी चीरता है उसी से जोखिम में पड़ेगा। यदि लोहा भोता होवे और सान पर उसकी धार न चढ़ावे तो अधिक
११ बल आवश्यक है परन्तु बताने के लिये बुद्धि लाभ है। निस्चय मंत्र बिना सांप डंसेगा और बड़बड़िया उसे अच्छा नहीं।
१२ बुद्धिमान के मुंह के बचन छपा हैं परन्तु मूर्ख के होंठ उसी को
१३ लील जायेंगे। उसके मुंह के बचन का आरंभ मूर्खता है और
१४ उसके मुंह का अन्त नटखटी और बौड़हापन है। मूर्ख भी बचन बढ़ाता है मनुष्य नहीं कहिसक्ता कि क्या होगा और जो
१५ कुछ उसके पीछे होगा उसे कौन कहिसक्ता है। मूर्ख का परिश्रम उनमें से हर एक को थका डालता है क्योंकि वुह नगर
१६ में जाने को नहीं जानता। हे देश जब तेरा राजा बालक और तेरे अध्यक्ष बिहान को खाते हैं तब तुझ पर
१७ सन्ताप। हे देश जब तेरा राजा कुलीनों का बेटा और तेरे अध्यक्ष समय पर बल के लिये खाते हैं और मतवाले होने
१८ को नहीं तू धन्य है। अति आलस के लिये जोड़ाई घटी जाती है और हाथों के आलस के मारे घर गिर पड़ता है।
१९ हंसी के लिये जेवनार किया जाता है और दाखरस जीवन को
२० मगन करता है परन्तु रोकड़ सब कार्य्य का है। राजा को स्राप मत दे हां मन में भी मत दे और धनी को अपने शयन स्थान में भी स्राप मत दे क्योंकि आकाश का पंछी शब्द पऊंचावेगा और डैनाधारी बात कहिदेगा।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

सुकार्य्य का उपदेश १—६ भाग्य में दुःख और मृत्यु की बाट जोहनी ७—८ तरुणों को न्याय का चेत करना ९—१०।

१ पानी में अपनी रोटी फेंक दे क्योंकि बऊत दिन के पीछे उसे
२ पावेगा। सात जन को भाग दे हां आठ को भी भाग क्योंकि

पृथिवी में जो जो बिपत्ति होगी सो सो तू नहीं जानता ।
३ यदि मेघ बर्षा से पूरे होवें तब वे पृथिवी पर छूछे होते हैं
और यदि दक्खिन अथवा उत्तर की ओर पेड़ गिरे तो जहां
४ पेड़ गिरेगा तहां पड़ा रहेगा। जो बायु पारखी है सो
५ न बोयेगा और जो मेघों को मानता है सो न लवेगा। तू जैसे
आत्मा के मार्ग को और गर्भिणी की कोख में के हाड़ बढ़ने को
नहीं जानता तैसा तू ईश्वर के कार्य्य को नहीं जानता जो सब
६ बनाता है। बिहान को अपना बीज बो और सांझ को भी
अपना हाथ मत उठा क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन ठीक
होगा यह अथवा वुह अथवा यदि दोनों के दोनों भले होंगे।
७ निश्चय उंजियाला मीठा है और आंखों को सूर्य्य का दर्शन
८ उत्तम। परन्तु यदि मनुष्य बहुत दिन जीवे और उन सभों
में आनन्द करे तथापि अंधियारे दिनों का चेत रक्खे क्योंकि
९ बहुत होंगे जो सब आता है सो वृथा है। हे तरुण जन
अपनी तरुणाई में मगन हो और तेरी तरुणाई के दिनों में
तेरा मन तुझे आनन्दित करे और अपने मन के मार्ग पर
और अपनी आंखों की दृष्टि में चल परन्तु जानरक्खो कि इन
१० सारी बातों के लिये ईश्वर तेरा बिचार करेगा। इस लिये
अपने मन से शोक को दूर कर और अपने शरीर से बुराई
निकाल डाल क्योंकि लड़काई और तरुणाई वृथा है।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

तरुणाई में ईश्वर की खोज करनी बुढ़ापे की दुर्बलता
और मृत्यु के समीप होना १—७ सब का वृथा
होना और ईश्वर की भक्ति का मूल बताना
८—१४ ।

१ अब अपनी तरुणाई के दिनों में अपने सिरजनहार को स्मरण
कर जबलों बुराई के दिन और वे बरस न आवें जब तू कहेगा

२ कि इन में मुझे आनन्द नहीं है। जबलों सूर्य्य अथवा उंजियाला अथवा चंद्रमा अथवा तारे अन्धियारे न होवें और बरसने
३ के पीछे मेघ फेर न आवें। जब घर के रखवाल थर्थराने लगेंगे और बलवन्त जन कुबड़े होवेंगे और पिसवैये थोड़े के मारे घट जायेंगे और जो खिड़की से देखते हैं अन्धियारे
४ हो जायेंगे। और सड़क सड़क केवाड़े बन्द हो जायेंगे जब चक्की का शब्द धीमा हो जायगा और वुह पंछी का शब्द करते उठेगा और गान की सारी कन्या घट जायेंगी।
५ और वे ऊंचो वस्तु से भी डरेंगी और जब मार्ग में भय होगा और बादाम का पेड़ लहलहावेगा और फनगा भारी होगा और इच्छा घट जायगी क्योंकि मनुष्य अपने बहुत दिन के घर
६ को जाता है और बिलापी सड़क सड़क फिरते हैं। अथवा चांदी की डोरी खोली न जाय अथवा सोने की कटोरी तोड़ी न जाय अथवा सोतों में घड़ा तोड़ा न जाय अथवा कुंड में
७ चाक टूट न जाय। तब जैसो थी तैसी धूल पृथिवी में फिर जायगी और आत्मा ईश्वर पास फिर जायगा जिसने उसे दिया
८ है। उपदेशक कहता है वृथा पर वृथा सब वृथा।
९ और जैसा कि उपदेशक बुद्धिमान था उसने लोगों को ज्ञान सिखायाकिया हां मन लगाया और खोजखोज के बहुतसे
१० दृष्टांतों को सिद्ध किया। उपदेशक ने मन भावनी बात पाने को ढूंढ़ा
११ और लिखा हुआ ठीक और सत्य बचन। बुद्धिमानों के बचन अरई और कीलों की नाईं जो सभाओं के सामियों से दृढ़
१२ किईगई जो एक गड़रिया से दिईगई है। और हे मेरे बेटे इन बातों से चेताया बहुत पुस्तक बनाने का अन्त नहीं और बहुत
१३ पढ़ना शरीर को थकाता है। अब आओ सारी बातों का अभिप्राय सुनें ईश्वर से डर और उसकी आज्ञा पालन कर क्योंकि मनुष्यों के
१४ लिये यह सब कुछ है। क्योंकि ईश्वर हर एक कार्य्य का और एक गुप्त बात का न्याय करेगा चाहे भला हो चाहे बुरा।

सुलेमान का गीत ।
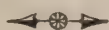
१ पहिला पर्ब्ब ।

मंडली का मसीह का प्रेम चाहना और अपना समाचार प्रगट करना १—७ मसीह का उसे उपदेश करना और शान्ति देना ८—११ आपुस का व्याख्यान और प्रेम १२—१७ ।

१।२ सुलेमान के गीतों का गीत। वुह अपने मुंह के चूमे से मुझे
३ चूमे क्योंकि तेरे प्रेम दाखरस से भले। तेरे सुगन्धों के बास के कारण तेरा नाम उंडेला हुआ सुगन्ध है इस लिये कन्या
४ तुझे प्रेम रखती हैं। मुझे खींच हम आप की ओर दौड़ेंगे, राजा मुझे अपने अंतःपुरों में लाया है हम आप से आनन्द और मगन होंगी, हम आप के प्रेम को दाखरस से अधिक स्मरण
५ करेंगी, खरे जन आप से प्रेम रखते हैं। हे यिरोशलीम की पुत्रियो मैं काली, परन्तु सुन्दरी हों किदार के तम्बुओं की नाईं
६ और सुलेमान के ओभलों की नाईं। मुझे मत देखो क्योंकि मैं काली हों इस कारण कि सूर्य्य मुझ पर पड़ा है मेरी मां के बालक मुझसे बहुत रिसियाये उन्हों ने मुझे दाख की बारी की रखवाली करवाई परन्तु मैं ने अपने ही दाख की बारी की रखवाली
७ न किई। हे मेरे मन के प्रिय मुझे बताइये कि आप कहां चराते हैं मध्यान्ह में कहां चैन कराते हैं क्योंकि मैं उसकी नाईं क्यों बनों जो आप के संगियों की झुंड के अलंग के आड़ में

८ हों। हे स्त्रियों में अति सुन्दरी, जो तू न जाने तो झुंड के पगचिन्हों पर जा और अपने मेम्नों को गडरियों के तम्बुओं
९ के लग चरा। हे प्रिये मैं ने तुझे फरऊन के रथों के
१० घोड़ों की जथा से उपमा दिई है। तेरे गाल पांती पांती से और
११ तेरा गला सीकरों से शोभित। हम तेरे लिये सोने के गोंट
१२ चांदी की फुलिया सहित बनावेंगे। जबलों राजा अपने मंच पर है मेरे जटामासी से सुगन्ध निकलता है।
१३ मेरा प्रिय मेरे लिये गन्धरस की पोटली है वुह रात भर मेरी
१४ छातियों के मध्य में पड़ा रहेगा। मेरा प्रिय मेरे लिये अनगदी
१५ के दाख की बारी के कपूर का गुच्छा है। हे मेरी प्रिये देख
१६ तू सुन्दरी देख तू सुन्दरी तेरी आंखें कपोतों की। हे मेरी प्रिये देख तू सुन्दरी हां मन भावनी आ हमारा बिछौना भी
१७ हरा है। हमारे घर के लट्ठे आरज के और धरन देवदारु की।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

मसीह का बिभव मंडली की उत्तमता और आपुस का प्रेम १—७ मंडली अपने प्रिय का शब्द सुनती है ८—९ उसका उसे नेउता देना और बैरियों से चिताना १०—१५ मंडली का प्रभु से मिलने का अभिलाष १६—१७।

१।२ मैं शारून की सेवती और तराइयों का सौसन। जैसा सौसन
३ कांटों में तैसी मेरी प्रिया पुत्रियों में। जैसा बन के पेड़ों में चकोतरे का पेड़ तैसा मेरा प्रिय पुत्रों में, मैं बड़ी आनन्दता से उसकी छाया तले बैठी और उसका फल मेरे तालू में मीठा।
४ वुह मुझे दाख रस के घर में लेगया और उसकी ध्वजा मुझ
५ पर प्रेम की थी। बिशेष पान पात्रों से मुझे संभालो चकोतरे
६ से मुझे मगन करो क्योंकि प्रेम से रोगिनी हों। उसका बांयां हाथ मेरे सिर तले और उसका दहिना हाथ मुझे समेटता है।

७ हे यिरोशलीम की पुत्रियो मैं बन के हरिण और हरिणियों की किरिया तुम्हें देती हों कि मेरे प्रिय को मत उठाओ और ८ मत जगाओ जबलों वुह आप न चाहे। मेरे प्रिय का शब्द, देखो पर्ब्बतों पर उछलते और टीलों पर कुदक्का ९ मारते आता है। मेरा प्रिय हरिण की अथवा युवा हरिण की नाईं, देखो वुह हमारी भीति के पीछे खड़ा है, वुह खिड़कियों से देखता है, झंझरी में से आप को दिखाता है।

१० मेरा प्रिय यह कहिके मुझे बोला कि हे प्रिये, हे ११ सुन्दरी उठ चली आ। क्योंकि देखो जाड़ा बीतगया बरखा १२ होगई और जाती रही, । पृथिवी पर फूल दिखाते हैं गाने १३ का और हमारे देश में कपोत के शब्द का समय आया। गूलर पेड़ हरा हरा गूलर फलता है, और लता और कोमल अंगूर से सुगंध निकलता है, हे प्रिये हे सुन्दरी चली आ।

१४ हे मेरे कपोत चटानों के दरारों में और सीढ़ियों के छिपे स्थानों में अपना रूप मुझे दिखा अपना शब्द मुझे सुना क्योंकि १५ तेरा शब्द मीठा और तेरा रूप सुन्दर। लोमड़ियों को, छोटी छोटी लोमड़ियों को, जो लता को नष्ट करती हैं हम्में से दूर कर १६ क्योंकि हमारी लता पर कोमल अंगूर लगे हैं। मेरा प्रिय १७ मेरा और मैं उसकी, वुह सोसनों में चरता है। जबलों पो नफटे और छाया जाती रहें तबलों हे प्रिय लौट और हरिण की और बिभाग के पर्ब्बतों पर के युवा हरिण की नाईं हो।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

दूलहिन का अपने प्रिय को खोजना और उसे पाना १—५ उसके संगी का उसका व्याख्यान करना ६— सब मिलके प्रिय के बिभव का वर्णन करना ७—११।

१ रात को मैं ने अपने बिछौने पर अपने प्राण के प्रिय को खोजा

२ मैं ने उसे खोजा पर न पाया। अब मैं उठोंगी और नगर में गली गली फिरोंगी और चौड़े मार्गों में अपने प्राण प्रिय ३ को ढूंढ़ोंगी मैं ने उसे ढूंढ़ा पर न पाया। नगर के भ्रमक रखवालों ने मुझे पाया उनसे मैं ने पूछा कि तुमने मेरे प्राण के ४ प्रिय को देखा?। परन्तु मैं उनसे तनिक आगे बढ़ गई और अपने प्राण के प्रिय को पाया मैं ने उसे पकड़ा और न छोड़ा जबलों मेरी मां के घर और अपनी जननी के अंतःपुर में ५ उसे लेगई। हे यिरोशलीम की पुत्रियो मैं तुम्हें हरिण और जंगली हरिणियों की किरिया देती हों कि तुम मेरे प्रिय को मत उठाओ और मत जगाओ जबलों वुह आप न चाहे।

६ धूए के खंभों की नाईं गंधरस और लोबान और बैपारियों की सारी बुकनी से सुगंधित होके बन से कौन आता है।

७ देखो उसका बिछौना जो सुलेमान का उसके आस पास ८ इसराईल के वीरों में से साठ वीर जन हैं। सब के सब खड्ग धारी और संग्राम में निपुण हर एक जन रात की डर के मारे ९ अपनी जांघ पर तलवार लटकाये ऊए है। सुलेमान राजा ने १० अपने लिये लबनान के काठ का एक चौपाला बनवाया। उसने उसके खंभे चांदी के और उसके चार पाये सोने के और उसका चंद्वा बैंजनी बनवाये और उसका बिछावन यिरोशलीम की ११ पुत्रियों के प्रेम से बनाया ऊआ था हे सैहून की पुत्रियो निकल के मुकुट पहिरे ऊए सुलेमान राजा को देखो जो उसकी मां ने उसके ब्याह के दिन में और उसके मन की मगनता के दिन में उसे पहिनाया।

४ चौथा पर्ब्ब ।

मसीह की मंडली का व्याख्यान करना और उसे नेंउता देना १—१५ दूलहिन का अपने प्रेम बढ़ाने की बांछा १६— ।

१ लो हे मेरी प्रिये तू सुन्दरी है लो तू सुन्दरी है, तेरे अलकों के नीचे तेरी आंखें कपोतों कीसी हैं तेरे बाल बकरी की झुंड की
२ नाईं जो गिलियाद पहाड़ से देखाती हैं। तेरे दांत कतरे झुए झुंड की नाईं जो नहान से निकलती हैं हर एक उनमें से जोड़ा
३ जनती है और उनमें कोई बांझ नहीं। तेरे होंठ लाल सूत की नाईं और तेरी बोली सुन्दर तेरी कनपटियां तेरे अलकों के
४ नीचे अनार के टुकड़े की नाईं। तेरा गला दाऊद के गुंम्मट की नाईं जो अस्त्र के लिये बना जिन पर सहस्र ढाल टंगी
५ हैं सब महाबीरों की ढालें। तेरे दो स्तन दो तरुण हरिण
६ की नाईं जो जोड़ा होवें और सोसनों में चरते हैं। पौ फटने और छाया के ढलने लों मैं गन्धरस के पर्ब्बतों पर और लोबान
७ के टीले लों जाओंगा। हे मेरी प्रिये तू निर्धार सुन्दरी है
८ तुझ में कोई धब्ब नहीं। हे पत्नी लबनान से मेरे संग चल लबनान से मेरे संग चल अमाना के टीले पर से शिनर और हरमून के टीले पर से सिंहों की मांदों में से और
९ चीतों के पर्ब्बतों में से देख। हे बहिन हे पत्नी तू ने मेरे मन को मोह लिया अपनी एक आंख से अपने गले की एक सीकर
१० से मेरे मन को मोह लिया। हे बहिन, हे पत्नी, तेरे प्रेम कैसे सुन्दर हैं दाख रस से तेरा प्रेम कितना भला है और
११ तेरे सुगन्ध के बास सारे सुगन्धों से। हे पत्नी तेरे होंठ मधु के छत्ते की नाईं टपकते हैं तेरी जीभ तले मधु और दूध है
१२ और तेरे बस्त्र के बास लबनान की बास की नाईं। मेरी बहिन मेरी पत्नी घेरीझई बारी बंधा झआ सोता और छाप किया
१३ झआ झरना। तेरे पेड़ अनारों के फलवन्त पेड़ हैं मन भावने
१४ फल सहित कपूर जटामासी सहित। जटामासी और केसर और गौरगाछ और दारचिनी और लोबान के सारे पेड़ सहित गन्धरस और येलुआ सारे उत्तम सुगन्ध द्रव्य सहित।
१५ बारियों का सोता अमृत जल का कूआ और लबनान से धारें।

१६ हे उतरहा पवन जाग और हे दखिनहा आ मेरी बारी पर बह जिसतें उसका सुगन्ध द्रव्य उभड़े अब मेरा प्रिय अपनी बारी में आवे और अपने मन भावन फल खाय।

५ पांचवां पर्ब्ब।

मसीह का अपने बाटिका में आके आनन्द होना १—६ दुलहिन का अपनी निद्रा बताना और प्रभु का लोप होना २—६ उसकी दुर्दशा और ७—८ उसके संगी का उसके प्रिय का भेद बूझना ९—१६।

१ हे बहिन हे पत्नी मैं ने अपनी बारी में अपना गन्धरस और सुगन्ध द्रव्य बटोरा है मैं ने अपने मधु के साथ अपने मधु छत्ता खाया है मैं ने अपने दूध के साथ अपना दाख रस पीया है २ हे मित्रो खाओ पीओ हे प्रिय बहुताई से पीओ। मैं सोती हों पर मेरा मन जागता है मेरे प्रिय का शब्द खटखटाता है मेरी बहिन मेरी प्रिये मेरे कपोत मेरे शुद्ध मेरे लिये खोल क्योंकि मेरा सिर ओस से भर गया है और मेरे अलक ३ रात के बुंदों से। मैं ने अपना बस्त्र उतारा है मैं उसे क्योंकर पहिनों मैं ने अपने पांव धोये हैं मैं उन्हें क्योंकर अशुद्ध करों?। ४ मेरे प्रिय ने बिल में से हाथ डाला और मेरा मन उसके लिये ५ उभड़ा। अपने प्रिय के लिये मैं खोलने को उठी और मेरे हाथों ने गन्धरस टपकाया और मेरी अंगुलियों ने ताली की ६ कड़ियों पर सुबास गन्धरस। मैं ने अपने प्रिय के लिये खोला परन्तु मेरा प्रिय आप को अलग करके चला गया उसकी बोली से मेरा प्राण मूर्छित हुआ मैं ने उसे ढूंढ़ा परन्तु पा न सकी मैं ने उसे पुकारा परन्तु उसने मुझे उत्तर न दिया। ७ नगर के भ्रमक रखवालों ने मुझे पाया उन्हों ने मुझे मारा और घायल किया भीतों के रखवालों ने मुझ से मेरा घूघट लेलिया। ८ हे यिरोशलीम की पुत्रियो मैं तुम्हें किरिया देती हों जो

मेरे प्रिय को पाओ तो उसे कहियो कि मैं प्रेम से रागिनी हों ।
९ तेरा प्रिय प्रिय से अधिक क्या है? हे सारी स्त्रियों से सुन्दरी तेरा प्रिय प्रिय से अधिक क्या है? जो तू हमें यूं
१० किरिया देती है?। मेरा प्रिय गोरा और लाल है दस
११ सहस्रों में ध्वजा धारी। उसका सिर चोखा सोना उसकी अलक
१२ गुच्छे और काले कव्वे की नाईं। उसकी आंखें नदी के जलों के लग के कपोतों की सी दूध से धोई हुई भरी पुरी बैठी हैं।
१३ उसके गाल सुगन्ध द्रव्य की कियारी की और फूलों की गुम्मट की नाईं, उसके होंठ सोसन की नाईं सुबास गन्धरस टपकाते हैं।
१४ उसके हाथ पद्मरागमणि जड़ी हुई सोने की अंगूठियों की नाईं उसके पेट नीलकान्त मणि से मढ़े हुए चमकते हाथी दांत
१५ की नाईं। उसके पांव चोखे सोने की चूलों पर बैठाये हुए मर्मर के खंभों की नाईं उसके रूप लबनान की नाईं और आरजपेड़ों
१६ की नाईं उत्तम। उसका तालू अति मीठा है हां वुह सर्वथा प्रिय है हे यिरोशलीम की पुत्रियो यही मेरा प्रिय और यही मेरा मित्र।

६ छठवां पर्ब्ब ।

यिरोशलीम की कन्या का मसीह के खोजने को ठानना १—३ मसीह का व्याख्यान और प्रेम बताना ४—१३ ।

१ हे स्त्रियों में अति सुन्दरी तेरा प्रिय कहां गया? तेरा प्रिय
२ किधर मुड़ा है? जो तेरे संग हम भी उसे ढूंढ़ें। मेरी प्रिये अपनी बारी में सुगंध द्रव्य की कियारियों में बारियों में खाने को
३ और सोसन बटोरने को उतरगया। मैं अपने प्रिय की और
४ मेरा प्रिय मेरा वुह सोसनों में चरता है। हे मेरी प्रिये तू तरज़ा की नाईं रूपवती है यिरोशलीम की नाईं
५ सुन्दरी और ध्वजा सहित की नाईं भयावनी। अपनी आंखें

मुझ से अलग कर क्योंकि उन्हों ने मुझे मोह लिया तेरा बाल
६ जलियाद के झुंड की बकरियों सा दिखाता है। तेरे दांत भेड़
की झुंड की नाईं जो नहान से निकलती हैं जिन में से हर एक
जोड़ा जोड़ा जनती है और उन में से एक भी बांझ नहीं।
७ तेरे अलकों के नीचे तेरी कनपटियां अनार के टुकड़े की
८ नाईं। साठ रानियां और अस्सी सहेलियां और अगणित
९ कुमारियां वहां हैं। मेरा कपोत मेरा शुद्ध एकही है अपनी
माता की एकही है अपनी जननी की चुनौऊई है पुत्रियों ने
उसे देखा और उसे धन्य कहा हां रानियां और सहेलियां
१० और उन्हों ने उसे सराहा। वुह कौन जो बिहान के तुल्य
चंद्रमा के समान, सुन्दरी सूर्य की नाईं निर्मल और ध्वजा
११ सहित की नाईं भयावनी दिखाई देती है। मैं तराई के फलों
को देखने को और कि यदि लता लहलहाती हैं और अनार में
कली लगी हैं मैं देखने को एगोज की बारी में उतर गया।
१२ मैं जानता न था मेरे प्राण ने मुझे मेरे बांछित लोगों के रथों
१३ पर बैठाया। लौट आ लौट आ हे शुलामी लौट आ लौट आ
जिसतें हम तुझ पर दृष्टि करें तुम शुलामी में क्या देखोगी?
जैसे दो सेना की जथा।

७ सातवां पर्ब्ब ।

मंडली का व्याख्यान १—५ मसीह का उस पर
प्रेम बताना ६—९ मंडली का उस्से आनन्द होना
१०—१३।

१ हे राज कन्या जूती से तेरे पांव कैसे सुन्दर हैं तेरी जांघ
२ की गांठें आभूषण की नाईं गुनकारी के हाथ का कृत्य। तेरी
नाभी एक गोल पात्र की नाईं जिस में दाखरस की घटी नहीं
तेरा पेट गोहूं की ढेर की नाईं जो सोसनों से घेरा हुआ हो।
३। ४ तेरे दो स्तन दो जमल युवा हरिण की नाईं। तेरा गला

हाथी दांत के गुम्मट की नाईं तेरी आंखें बासरब्बिम फाटक के लग के हश्बून में के मछली कुंडों की नाईं तेरी नाक लबनान
५ के गुम्मट की नाईं जो दमिश्क की ओर देखता है। तेरा सिर करमिल की नाईं और तेरे सिर का बाल बैंजनी की नाईं
६ राजा अलकों में बंधा है। हे प्रिये तू कैसी सुन्दरी
७ और आनन्दों के लिये मन भावनी। तेरा यह डील खजूर
८ पेड़ की नाईं तेरे स्तन गुच्छों की नाईं। मैं ने कहा कि मैं खजूर पेड़ पर जाऊंगा मैं उसकी डारों को पकड़ोंगा अब भी तेरे स्तन लता के गुच्छों की नाईं होंगे और तेरी नाक का गंध
९ चकोतरों की नाईं। तेरा तालू मेरे प्रिय के लिये जो सीधे सीधे चलता है अच्छे से अच्छे दाख रस की नाईं जो सोए ऊए के
१० होंठों से बुलवाता है। मैं अपने प्रिय की और उसकी
११ बांछा मेरी ओर। हे प्रिय चलो खेत में जायें आओ गांओं में
१२ टिकें। चलो तड़के दाख की बारियों में जायें आओ देखें यदि लता लहलहाती है यदि कोमल दाख लगा है और अनार में
१३ कली लगी हैं वहां मैं अपना प्रेम तुझे देउंगी। दूदायीम महंकते हैं और हमारे फाटकों पर समस्त रीति के मन भावन नये पुराने फल हैं जो हे प्रिय मैं ने तेरे लिये धर रक्खा है।

८ आठवां पर्ब्ब ।

दूलहिन का अपने प्रिय से उपदेश चाहना १—४ प्रिय पर उठंगते ऊए बन से आना ५—७ अन्य देशियों का बुलाया जाना ८—१० सुलेमान के दाख की बारी और उसके फल ११—१२ मसीह के और दूलहिन के अंत बचन १३—१४।

१ हाय की तू मेरे भाई की नाईं होता जिसने मेरी माता के स्तन को चूसा जब मैं तुझे बाहर पाती तो तुझे चूमती, हां
२ मेरी निन्दा न होती। मैं तुझे अपनी माता के घर में ले जाती

जो मुझे सिखाती मैं तुझे अपने अनार के रस के सुगंध दाख
३ रस पिलाती। उसका बायां हाथ मेरे सिर के तले और
४ उसका दहिना हाथ मुझे समेटता। हे यिरोशलीम की
पुत्रियो मैं तुम्हें किरिया देती हों मेरे प्रिय को मत जगाओ और
५ मत उठाओ जब लों वुह आप न चाहे। यह कौन
है जो बन से अपने प्रिय पर ओठंगती ऊई ऊपर आती है? मैं
ने तुझे चकोतरे के पेड़ तले से उठाया जहां तेरी माता तुझे
६ जनी जहां तेरी जननी तुझे जनी। मुझे अपने
मन में छाप की नाईं रख अपनी भुजा पर की छाप की नाईं
क्योंकि प्रेम मृत्यु की नाईं प्रबल है डाह समाधि की नाईं कठिन,
उसके अंगारे आग के अंगारे एक अति धधकती ऊई लवर।
७ बऊत से जल प्रेम को बुझा नहीं सक्ते और बाढ़ उसे डुबा
नहीं सक्ते यदि मनुष्य अपने घर की सारी संपत्ति प्रेम के लिये
८ देता तो सर्वथा निन्दा होती। हमारी एक
छोटी बहिन है और उसके स्तन नहीं हम अपनी बहिन के
९ लिये उस दिन क्या करें जब उसकी बात चलेगी?। जो वुह
भीत होवे तो हम उस पर चांदी का भवन बनावेंगी और
जो वुह द्वार होवे तो हम उसे आरज की पटियों से ढांपेंगी।
१० मैं भीत हों और मेरे स्तन गुम्मटों की नाईं तब मैं उसकी दृष्टि
११ में कुशल पायेऊए की नाईं ऊई। बालहमून में
सुलेमान की एक दाख की बारी थी उसने उस दाख की बारी
को रखवालों को ठीका में दिया जिसके फल के लिये हर एक
१२ को उसे सहस्र चांदी देना था। मेरी दाख की बारी जो
मेरी है मेरे आगे है हे सुलेमान तू सहस्र ले और जो उसके
१३ फल की रखवाली करते हैं दो सौ। तू जो बारियों में बास
१४ करता है जथा तेरा शब्द सुनतियां हैं मुझे सुना। हे मेरे
प्रिय उड़जा और हरिण अथवा सुगंध द्रव्य के पर्व्वतों पर की
हरिणी की नाईं होजा।

आशिया भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

१ पहिला पर्व्व।

१ अमूस के बेटे आशिया ने जो दर्शन यहूदः और यिरोशलीम के विषय में यहूदः के राजा ऊज़िया और यूसाम और अहाज़
२ और हिज़क़िया के दिनों में देखा था। हे आकाश सुनो और हे पृथिवी कान धर क्योंकि परमेश्वर ने कहाहै कि मैं ने
३ लड़कों को पालापोसा पर वे मुझ से फिरगयेहैं। बैल अपने स्वामी को पहिचानताहै और गदहा अपने प्रभु की झोंपड़ी को
४ परंतु इसराईल नहीं जानते मेरे लोग नहीं सोचते। हाय पापमय देशी पाप से लदी ऊई मंडली कुकर्म्मियों के वंश बिगाड़ू लड़के उन्होंने परमेश्वर को त्यागा है और इसराईल के
५ धर्म्ममय को खिजाया है वे मार्ग से उलटे फिरे। क्यों अधिक शासन कियेजाओगे तुम अधिक फिरतेजाओगे सारा सिर
६ रोगी है और सारा मन दुर्ब्बल। तलवा से लेके सिर लाईं उसमें कहीं आरोग्यता नहीं परन्तु घाव और चोट और सड़ेऊए घाव हैं वे न दबायेगये न बांधेगये और किसी ने तेल
७ मल के उन्हें कोमल न किया। तुम्हारा देश उजाड़ है तुम्हारी बस्तियां जलगईं परदेशी तुम्हारी भूमि को तुम्हारे आगे निंगलतेहैं वुह उजाड़ है जैसा कि उसे परदेशियों ने नाश
८ करदिया। एक झोंपड़ी की नाईं जो दाख की बाटिका में हो अथवा छपरिया की नाईं जो ककड़ी के खेत में हो अथवा घेरेऊए
९ नगर की नाईं सैहून की पुत्री अकेली छोड़ीगई। यदि सेनाओं का परमेश्वर हमारे लिये थोड़े से थोड़ा न छोड़ता तो हम

१० सदूम की नाईं और अमूरा के तुल्य होजाते। हे सदूम के अध्यक्षो परमेश्वर का बचन सुनो हे अमूरा के लोगो हमारे
११ ईश्वर की व्यवस्था पर कान धरो। परमेश्वर कहताहै कि तुम्हारे बलिदानों की बऊताई से मुझे क्या प्रयोजन है मैं मेढों के होम की भेंट से और पलेऊए चौपायों की चिकनाई से छकगयाहों और मैं बछड़ों और मेम्नों और बड़े बड़े बकरों के
१२ लोहू से कुछ प्रसन्न नहीं। जब तुम लोग मेरे आगे आके दिखाई देतेहो तो कौन मेरे आंगनों में चलने को तुम से यह
१३ चाहताहै। अब आगे को मिथ्या भेट मत लाओ लोबान से मुझे घिन है मैं तुम्हारे नये चांद और बिश्रामों और सभाओं के नेवतों का संतोष नहीं करसक्ता तुम्हारा कार्यों से अलग रहनाभी
१४ कुकर्म्म है। मेरे जीव को तुम्हारे नये चांदों और तुम्हारे पर्ब्बों
१५ से बैर है वे मेरे लिये भार हैं मैं उनसे थकगया। जब तुम अपने हाथ फैलाओगे तब मैं न ताकोंगा हां जब तुम बिनती पर बिनती करोगे मैं न सुनोंगा तुम्हारे तो हाथ लोहू लोहान हैं।
१६ अपने को धोओ आप को पवित्र करो अपने कुकर्मों को मेरी
१७ दृष्टि के आगे से दूर करो कुचाल से हटिआओ। सुकर्म सीखो न्याय का पीछा करो अंधेरियों का निपटाव करो अनाथों की
१८ दुहाई सुनो बिधवों के उपकार करो। परमेश्वर कहताहै अब आओ हम आपुस में बिचार करें यद्यपि तुम्हारे पाप लाल होवें तथापि पाला की नाईं श्वेत होजायेंगे और यद्यपि वे बैंजनी
१९ होवें तथापि ऊनके समान उजले होंगे। जो तुम चाहक और
२० अधीन होओगे तो भूमि की बढ़ती खाओगे। परन्तु जो तुम नाहकरो और फिरजाओ तो खड्ग का कौर होजाओगे क्योंकि
२१ परमेश्वर ने कहाहै। वुह बस्ती जो निरधार पावन थी कैसी ब्यभिचारिणी होगई वुह तो न्याय से भरीथी उसमें
२२ धर्म निवास करताथा पर अब तो उसमें हत्यारे रहतेहैं। तेरा
२३ रूपा मैल होगया तेरे दाखरस में पानी मिलगया। तेरे

राजपुत्र दंगइत और चोरों के साथी ऊए उनमें से हरएक अकोर का मित्र और दान का खोजी है वे अनाथों का न्याय नहीं करते और बिधवों की दुहाई उन तक नहीं पऊंचती।
२४ इसलिये प्रभु सेनाओं का परमेश्वर जो इसराईल का सामर्थ्यमय है यों कहताहै कि आह मैं अपने शत्रुन को नाश करोंगा
२५ और अपने बैरियों से अपना पलटा लेउंगा। मैं तुझ पर हाथ बढ़ाओंगा और भट्ठी में झोक के तेरा मैल दूर करोंगा और
२६ तेरे सब रांगों को अलग करोंगा। और मैं तेरे न्यायी को आग की नाईं और तेरे मंत्रियों को आरंभ के समान स्थापित करोंगा उसके पीछे तू धर्मी नगर और बिश्वस्त निवास कहलायेगा।
२७ सैहून न्याय से और उसके फिरे ऊए धर्म के द्वारा से छुड़ाये
२८ जायेंगे। पापी और कुकर्मी एकट्ठे तोड़ेजायेंगे और जो
२९ परमेश्वर को त्यागते हैं सो नाश कियेजायेंगे। क्योंकि वे अपने बांछित बलूत वृक्षों से लज्जित होंगे और तुम अपनी चुनीऊई
३० बाटिकों के कारण लज्जित होगे। और तुम पत्ते मुरझायेऊए बलूत की नाईं और बाटिका बिन जल की नाईं होजाओगे।
३१ वहां का बलवंत सन की नाईं होगा और उसका कार्य चिनगारी की नाईं वे दोनो एक साथ जलेंगे और कोई उन्हें न बुझावेगा।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ वुह बचन जो यहूदः और यिरोशलीम के बिषय में अमूस के
२ बेटे आशिया पर प्रगट ऊआ। पिछले दिनों में ऐसा होगा कि परमेश्वर के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटियों पर बनाया जायगा और सारी पहाड़ियों से ऊंचा कियाजायगा और
३ सारे जातिगण उसकी ओर रेले चलेजायेंगे। और बऊतसे लोग जायेंगे और कहेंगे कि आओ हम परमेश्वर के पहाड़ पर चढ़ें और याक़ूब के ईश्वर के घर में जावें और वुह अपना मार्ग

हमें सिखावेगा और हम उसके पथ पर चलेंगे क्योंकि व्यवस्था सैहून से और परमेश्वर का वचन यिरोशलीम से निकलेगा।
४ और वुह जातिगणों में न्याय करेगा और बज्जतसे लोगों को डांटेगा और वे अपनी तलवारों को तोड़ तोड़ के फाले और अपने भालों को हंसुवे बनाडालेंगे और देशी देशी पर तलवार न उठावेंगे और वे फिर कभी लड़ाई न सीखेंगे।
५ हे याकूब के घराने आओ हम परमेश्वर की ज्योति में चलें।
६ तू ने अपने लोगों को अर्थात याकूब के घराने को इसलिये त्यागाहै कि वे फलस्तानियों से अधिक टोनहों से भरगये और वे परदेशियों के लड़कों से प्रसन्न हैं।
७ और उनकी भूमि भी सोने रुपे से भरी है और उनके भंडार का कुछ अंत नहीं और उनका देश घोड़ों से भरा है और उनकी गाड़ियों की कुछ गिनती नहीं।
८ और उनकी भूमि मूर्त्तिन से भरपूर है वे अपने हाथों के कार्यों को और अपनी अंगुलियों के कृत्य को पूजते हैं।
९ और तुच्छ मनुष्य भुकताहै और महान दीन होताहै इस लिये तू उन पर क्षमा न करेगा।
१० परमेश्वर के भय के मारे और उसकी महिमा के बिभव के कारण पहाड़ में पैठ और धूल में छिप।
११ मनुष्य की ऊंची दृष्टि उतारी जायेगी और मनुष्य का अहंकार भुकायाजायगा और उस दिन केवल परमेश्वर की महिमा होगी।
१२ क्योंकि परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर का दिन हरएक अहंकारी और अभिमानी और हरएक उभड़ेज्जए पर होगा और वुह उतारा जायगा।
१३ और लबनान के सारे ऊंचे और उभड़े ज्जए अरज वृक्षों के और बासान के सारे बलूत वृक्षों के।
१४ और सारे ऊंचे पहाड़ों के और सारी उभड़ी ज्जई पहाड़ियों के।
१५ और हरएक ऊंचे गुम्मट के और हरएक दृढ़ गढ़ के।
१६ और तरशीश के सारे जहाज़ों के और सारे सुन्दर चित्रों पर होगा।
१७ और मनुष्य का अहंकार भुकायाजायगा और लोगों का अभिमान उतारा जायगा और उस दिन

१८ केवल परमेश्वर की महिमा होगी। और मूरतें सर्बथा जाती
१९ रहेंगी। वे परमेश्वर के भय से और उसके बिभव की महिमा
से जब वुह भयानक रीति से एथिवी को झरझराने को उठेगा
तब वे पहाड़ों की कंदला में और भूमि के गड़हों में पैठेंगे।
२० उस दिन मनुष्य अपने रुपेकी मूरतों और सोने की मूरतों को
जो उन्होंने अपनी पूजा के लिये बनाई हैं छछूंदरों और
२१ चमगूदड़ों के आगे फेंकेंगे। परमेश्वर के भय के और उसके
बिभव की महिमा के मारे जब वुह भूमि को भयंकर रीति से
झरझराने को उठेगा तब वे चटानों के दरारों खड़बिड़ में
और चटानों की चोटियों में घुसजायेंगे मनुष्य का भरोसा
न करो जिसका श्वास उसके नथुनों में है क्योंकि वुह किस
लेखे में है।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ क्योंकि देखो कि प्रभु सेनाओं का परमेश्वर यिरोश्लीम और
यहूदः में से सहारे और लाठी को रोटी के सारे सहारे और
२ पानी के सारे सहारे को। और बीर और योद्धा और न्यायी
और भविष्यद्वक्ता और ज्योतिषी और प्राचीन को भी। पचास के
३ प्रधान और प्रतिष्ठितलोग और मंत्री और प्रवीण कार्यकारी
४ और सुबक्ताओं को उठालेगा। और मैं लड़कों को उनका राजा
५ बनाओंगा और बालक उन पर प्रभुता करेंगे। और लोग
एक एक से और हरएक मनुष्य अपने पड़ोसी से सताया
जायगा और लड़का वृद्ध से और तुच्छ प्रतिष्ठित से घमंड
६ करेगा। इस लिये मनुष्य अपने पिता के घराने में से अपने
भाई का खूंट पकड़ेगा और कहेगा कि आ तेरे पास बस्त्र है
तू हमारा अध्यक्ष हो और तेरा हाथ हमारे नष्ट राज्य को
७ संभाले। तब वुह किरिया खा के कहेगा कि मैं तुम्हारे ढायेऊओं
का उठानेवाला न होऊंगा क्योंकि मेरे घर में न रोटी है न

८ कपड़ा मुझे लोगों का अध्यक्ष मत कर। क्योंकि यिरोशलीम उजड़गई और यहूदः गिरगया क्योंकि उनकी बोलचाल परमेश्वर की आंख के विभव को खिजाने के लिये विरुद्ध हैं।
९ उनका रूप उन पर साक्षी देताहै वे अपने पाप को सदूम की नाईं प्रगट करतेहैं और नहीं छिपाते उनके प्राणों पर संताप क्योंकि उन्होंने अपने पर बुराई उतारीहै।
१० धर्मियों पर आशीर्वाद कहो निश्चय उनके लिये कल्याण
११ होगा क्योंकि वे अपनी चाल का फल खायेंगे। और दुष्ट पर संताप है क्योंकि उसका भाग बुराई होगी कि जैसा उसके हाथों ने कियाहै वैसाही उसे उसका पलटा दियाजायगा।
१२ मेरे लोग पर लड़के अंधेर करतेहैं और स्त्रियां उन पर प्रभुता करतीहैं हे मेरे लोगो तेरे अगुवा तुझे भुलातेहैं
१३ और तेरे पथ के मार्गों को बिगाड़तेहैं। परमेश्वर न्याय के लिये उठताहै और अपने लोगों में विवाद करने के लिये
१४ खड़ाहोताहै। परमेश्वर अपने लोगों के प्राचीनों और उनके राजपुत्रों का विचार करेगा क्योंकि तुम दाख की बाटिका को चटकरगये और कंगालों की लूट तुम्हारे घरों में है।
१५ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहताहै उसके क्या अर्थ कि तुम मेरे लोग को चूर करतेहो और कंगालों के मुंह को पीसतेहो।
१६ परमेश्वर फिर कहताहै जैसा कि सैहून की बेटियां अहंकारी हैं और गले की कठोर हैं और अंजन से आंखें सुन्दर बनातियांहैं और अपने पाओं से ठोकर मारती हुई
१७ और अपने पावं से ठंठनातियां चली जातियांहैं। इस लिये प्रभु सैहून की बेटियों की चांदी को गंजी करडालेगा और
१८ परमेश्वर उनके गुप्त स्थानों को उघार डालेगा। उस दिन परमेश्वर उनके आभूषण और बनबट की सज और जालियां
१९ और चांद। और झुमका और खड़वे और मेहीन घूंघट।
२० और मकुट और पैकड़ियां और पटके और सुगंध पात्र

२१ और बिजायठ और कुंडल। और अंगूठियां और नथुनियां।
२२ और बूटेदार पहिरावा और झूला और घोंघरी और बटूये।
२३ और दर्पण और महीन वस्त्र और पगड़ियां और घूंघटों को
२४ दूर करेगा। और सुगंध की संती दुर्गंध और अच्छे पटुके की संती चोथरे और चोटी की संती चंदलापन और घेला की संती टाट का टुकड़ा और रूप की संती घाम से झौंसा हुआ
२५ चाम होगा। तेरे लोग तलवार से और तेरे योद्धा युद्ध में
२६ गिरजायेंगे। उसके फाटक बिलाप और रोदन करेंगे और वुह उजाड़ भूमि पर बैठेगी।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ उस दिन सात सात स्त्री एक एक पुरुष के पीछे पड़ेंगी और कहेंगी कि हम अपनी अपनी रोटी खायेंगी और अपने अपने बस्त्र पहिनेंगी केवल हम तेरे नाम की कहलावें जिसतें हमारा
२ अपयश मिटे। उस दिन परमेश्वर की डाली सुन्दर और बिभवमय होगी और भूमि का फल इसराईल के
३ बचेहुओं के लिये खादित और मनमान होगा। और ऐसा होगा कि सैहून में का बचाहुआ और यिरोशलीम में का धराहुआ हां हरएक जिसका नाम यिरोशलीम के जीवतों में
४ लिखा होगा पवित्र कहलायेगा। जब परमेश्वर सैहून की बेटियों की मैल को धोडालेगा और यिरोशलीम के लोहू को उसके मध्य में से न्याय के आत्मा से और जलाने के आत्मा से
५ शुद्ध करेगा। तब परमेश्वर सैहून पर्वत के निवास पर और उस की सभा पर दिन को एक मेघ और धूवां और रात को एक उंजियाली लवर उत्पन्न करेगा क्योंकि सारे बिभव पर
६ छाया होगी। और एक तंबू होगा जो दिन को तपन में छाया के लिये और आंधी पानी के लिये आड़ का और शरण का स्थान होगा।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ अब मैं अपने प्रिय के लिये उसके दाख की बाटिका के बिषय में प्रेम का गीत गाओंगा मेरे प्रिय की दाख की बाटिका ऊंचे और
२ फलवंत पहाड़ी पर है। और उसने उसके चारों ओर बाड़ा बांधा और उसके पत्थर बटोर लिये और अच्छे से अच्छे दाख लगाये और उसके बीचोंबीच गढ़ बनाया और एक कोल्हू भी उसमें खोदा और उसने लालसा किई कि उसमें दाख लगे
३ परन्तु उसमें बनैले दाख लगे। अब हे यिरोशलीम के बासियो और यहूदा के पुरुषो मेरे और मेरे दाख की बाटिका के मध्य
४ में आपही न्याय कीजिये। कि मुझे अपने दाख की बाटिका में और कौनसा यत्न करना था जो मैं ने न किया और जब मैं ने उसके दाखों की लालसा किई तो किस लिये यह जंगली दाख
५ फला। सो अब आओ जो मैं अपने दाख की बाटिका से करोंगा सो तुम्हें बताता हों कि मैं उसका बाड़ा गिरादेउंगा और वुह भक्षण कियाजायगा उसका बाड़ा तोड़ाजायगा और वुह
६ लताड़ा जायगा। और मैं उसे उजाड़ करोंगा वुह न छांटा जायगा न उसके थाले खोदेजायेंगे परन्तु उसमें सदागुलाब और कांटे ऊगेंगे और मैं मेघों को आज्ञा करोंगा कि उस पर
७ मेंह न बरसावें। सो परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के दाख की बाटिका निश्चय इसराईल का घराना है और यहूदा के लोग उसके आनंद के पौधे हैं उसने न्याय की बाट जोही पर उसने अंधेर देखा वुह धर्म का अभिलाषी था पर उसने रोदन का शब्द
८ सुना। उन पर संताप है जो घर से घर और खेत से खेत मिलाते हैं जबतांईं स्थान न मिले जिसतें केवल वे देश के
९ मध्य में बसें। परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने मेरे कान में प्रकाश किया सच तो यों है कि बहुतसे और बहुत सुन्दर घर
१० उजाड़ होंगे और कोई बसवैया न होगा। हां तीस बीगहे दाख की बाटिका से एकही बास फलेंगे और एक ओमर

११ बीज से एक अफा अनाज। उन पर संताप है जो तड़के उठते हैं कि तीक्ष्ण मद का पीछा करें और सांझ लों बने रहते हैं
१२ कि मद उन्हें तपा देवे। और उनके जेवनार में मदिरों के संग बीणा और सारंगी और ढोलक और बांसली हैं परन्तु वे परमेश्वर के कार्य्य को नहीं सोचते और उसके हाथों की क्रिया
१३ को बिचार नहीं करते। इस कारण मेरे लोग अज्ञानता के कारण बंधुआई में जाते हैं और उनके प्रतिष्ठित भूख से मरगये
१४ और उनके नीचलोग पियास से झुरागये। सो समाधि ने अपने को फैलाया है और अपना मुंह बेपरिमाण पसारा है और उनके बिभव और उनकी मंडली और उनका हुल्लड़ और
१५ जो आनन्द करते हैं उसमें पड़ेंगे। और तुच्छ मनुष्य झुकाया जायेगा और महाजन उतारा जायगा और अहंकारियों
१६ की आंखें नीची होजायेंगी। परन्तु सेनाओं का परमेश्वर न्याय में महान होगा और धर्म को प्रगट करने में धर्ममय
१७ ईश्वर पवित्र मानाजायगा। उस समय में मेम्ने बेमेड़ चरेंगे और सुखबिलासियों के उजाड़ खेतों पर बकरी के बच्चे चरेंगे।
१८ उन पर संताप जो कुकर्म को लंबी लहासी की नाईं और पाप को गाड़ी की मोटी रस्सी की नाईं बढ़ावते हैं।
१९ और कहते हैं कि वुह बेग करे और फुरती से अपना काम करे कि हम देखें और इसराईल के संतान के धर्ममय का मंत्र समीप हो और आपहुंचे कि हम उसे जानें।
२० उन पर संताप जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं और उंजियाले की संती अंधियारा और अंधियारे की संती उंजियाला रखते हैं और मिठास की संती
२१ कड़ुआ और कड़ुआ की संती मिठास रखते हैं। उन पर संताप जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं और अपनी समझ
२२ में चतुर हैं। उन पर संताप जो मदिरा पीने में बली और
२३ अमल की वस्तु मिलाने में वीर हैं। जो दुष्टों को घूस के लिय

२४ निर्दोष ठहराते हैं और धर्मियों के धर्म को मिटादेते हैं। सो जिस रीति से आग खूंटियों को चाटजाती है और लवर भूसे को भस्म करता है इसी रीति से उनकी जड़ सड़जायगी और उनका फूल धूल की नाईं उड़जायगा क्योंकि उन्होंने सेनाओं के परमेश्वर की निंदा किई है और इसराईल के धर्ममय
२५ के वचन को तुच्छ जाना। इस लिये ईश्वर का क्रोध उसके लोगों पर भड़का और उसने विरोध में अपना हाथ उन पर बढ़ाया और उन्हें मारा है और पहाड़ कांपगये और उनकी लोथें मार्गों में गोबर की नाईं पड़ी हैं तथापि उसका क्रोध दूर नहीं हुआ
२६ परन्तु उसका हाथ अबलों बढ़ाया हुआ है। और वुह देशगणों के लिये दूर से एक झंडा खड़ा करेगा और उन्हें पृथिवी के अंत से सीटीबजा के बुलावेगा और देख वे झटपट
२७ आवेंगे। कोई उन में न थकेगा और ठोकर न खायगा कोई न ऊंघेगा न सोवेगा और न किसी का पटुका खुलजायगा न
२८ किसीकी जूती का बंद खुलजायगा। उनके बाण चोखे हैं और उनके सारे धनुष खिंचेहुए हैं उनके घोड़ों के खुर चक़मक़ के पत्थर की नाईं होंगे और उनके चक्र बौंड़र के समान होंगे।
२९ उनका गर्जना सिंहिनी का गर्जना है हां सिंह के बच्चों की नाईं वे गर्जेंगे वे गुर्रायेंगे और अहेर पकड़ेंगे और उसे अलग
३० लेजायेंगे और कोई उसे न छुड़ावेगा। और उस दिन वे उन पर समुद्र की नाईं हुल्लर मचायेंगे और ये स्वर्ग की ओर और पृथिवी की ओर देखेंगे तो देखो अंधकार और विपत्ति होंगे और उंजियाला कुहिरे के अंधकार से ढंपजायेगा।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ जिस बरस ऊज़ियाः राजा मरगया मैं ने परमेश्वर को एक अति ऊंचे सिंहासन पर बैठे देखा और उसके वस्त्र की खूंट
२ से मंदिर भरगया। उसके ऊपर सराफ़ीम खड़े थे उनमें से

हरएक के छः छः पंख थे उनमें से दो से अपना मुंह ढांपताथा
२ और दो से अपना पावं और दो से वुह उड़ताथा। और एक
ने दूसरे को पुकारा और कहा पवित्र पवित्र पवित्र सेनाओं
का परमेश्वर उसके विभव से सारी पृथिवी परिपूर्ण है। और
४ उनके पुकारने के शब्द से ओसारों के खंभे हिलगये और मंदिर
५ धूवें से भरगया। तब मैं बोल उठा कि हाय मुझ
पर मैं गूंगा होगया क्योंकि मैं अशुद्ध होठों का मनुष्य हों
और मैं उन लोगों के मध्य में बसता हों जिनके होंठ अशुद्ध हैं
क्योंकि मेरी आंखों ने राजा को सेनाओं के परमेश्वर को
६ देखा है। उस समय में सराफीमों में से एक ने सुलगाऊआ
कोयला चिउंटे पर यज्ञवेदी में से उठालिया अपने हाथ में लेके
७ मेरी ओर उड़ताऊआ आया। और उसे मेरे मुंह को
छूआ और कहा कि देख इसने तेरे होंठों को छूआ सो तेरे
८ कुकर्म दूरऊए और तेरे पाप का प्रायश्चित ऊआ। उस समय
मैं ने यह कहतेऊए परमेश्वर का शब्द सुना कि मैं किसको भेजों
और हमारे कारण कौन जायगा तब मैं बोला मैं हों मुझे भेज।
९ उसने कहा कि जा और उन लोगों को कह कि सुनते तो हो
१० पर समझते नहीं देखते तो हो पर सूझता नहीं। इन लोगों
के मन को मोटा कर और उनके कानों को भारी और
उनकी आंखें मूंद न हो कि वे अपनी आंखों से देखें और अपने
कानों से सुनें और अपने मन में समझें और फिरजायें
११ और मैं उन्हें चंगा करों। तब मैं ने कहा हे परमेश्वर यह
कबलों उसने उत्तर दिया जबलों कि बस्तियां ऐसी उजाड़ीजावें
कि कोई निवासी और घर न रहें यहांलों कि कोई मनुष्य न
१२ होवे और भूमि सर्वथा उजड़जावे। जबलों परमेश्वर मनुष्यों
को दूर न करे और देश के मध्य में अनेक त्यक्त स्त्री न होवें।
१३ और यद्यपि उसमें दसवां भाग रहिजाय तथापि वे भी बारंबार
नाश होंगे तिस पर भी बलूत और बतम वृक्ष की नाईं होगा

जो यद्यपि काटाजावे पर आप उसमें जमने का खूंथ है सो एक पावन बीज देशी के जमने का एक खूंथ होगा।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ यहूदा राजा ऊज़ियाः के बेटे यूताम के बेटे अहाज़ के समय में ऐसा ऊआ कि सिरिया का राजा रज़ीन और इसराईल का राजा रामालिया का बेटा पीकाह यिरोशलीम के बिरोध में
२ लड़ने को चढ़िआये परन्तु उस पर प्रबल न ऊए। और जब दाऊद के घराने को यह संदेश दियागया कि अफ़राईम ने सिरिया का सहाड़ा किया सो राजा का मन और उसके लोगों
३ का मन यों थर्थरा उठा जैसे बन के वृक्ष आंधी से हिलते हैं। तब परमेश्वर ने आशिया को कहा कि तू अपने बेटे शीयरयाशूब को लेके ऊंचे पोखरे की नाली के कोने पर जो धोबी के खेत की सड़क
४ में है अहाज़ से जामिल। और उसे कह सैंचेत हो और स्थिर रह इन दो धूंएंवाली जलने की पोंछों के कारण अर्थात सुरयानी रज़ीन और रामालिया के बेटे के अतिक्रोध के कारण मत डर
५ और तेरा मन न घटे। क्योंकि सिरिया और अफ़राईम और
६ रामालिया के बेटे ने तेरे बिरोध में कुबिचार करके कहा है। कि आओ हम यहूदा पर चढ़ जायें और उसे सतावें और अपने लिये उसमें से कुछ अलग करें और उसके मध्य में एक राजा
७ अर्थात टाबील के बेटे को बैठावें। अब प्रभु ईश्वर यों कहता है कि
८ वुह न ठहरेगा न होवेगा। यद्यपि सिरिया का मस्तक दमिश्क है और दमिश्क का मस्तक रज़ीन तथापि पैंसठ बरस के भीतर भीतर अफराईम तोड़ाजायगा और वुह फेर मंडली न होगा।
९ यद्यपि अफराईम का मस्तक सामरः है और सामरः का मस्तक रामालिया का बेटा यदि तुम मुझ पर बिश्वास न लाओ तुम
१० दृढ़ता न पाओगे। फेर परमेश्वर अहाज़ को कहिके
११ बोला। कि परमेश्वर अपने ईश्वर से कोई लक्षण मांग लीजाई

१२ में समाधिलों अथवा ऊंचाई में स्वर्गलों। पर अहाज़ ने कहा कि मैं न मांगोंगा और मैं परमेश्वर की परीक्षा न करोंगा।
१३ और उसने कहा हे दाऊद के घराने अब तुम सुनो मनुष्य को सताना सहज बात है कि तुम मेरे ईश्वर को भी सताओगे।
१४ इस लिये परमेश्वर तुम को एक लक्षण देगा देखो एक कुआंरी पेट से होगी और बेटा जनेगी और उसका नाम अमनवाईल
१५ रक्खेगी। वुह मखन और मधु खायगा जिसतें वुह बुरे को छोड़ने
१६ का और भले को चुनलेने का ज्ञान रक्खे। क्योंकि उस लड़के के बुरे को त्यागने से और भले के चुनलेने के ज्ञान से आगे वुह भूमि जिसके दो राजाओं के कारण तू दुखित है उजाड़
१७ होजायगी। परन्तु परमेश्वर तुझ पर (अर्थात् सुरिया के राजा पर) और तेरे लोगों और तेरे पिता के घराने पर ऐसा समय लावेगा कि उस दिन से जो अफराईम यहूदा से अलग ऊए आजलों कभी न लायाथा और उस दिन ऐसा
१८ होगा कि परमेश्वर उस मक्खी को जो मिसर की नदी के उस सिरे पर है और उस मधु माखी को जो असूर की भूमि में
१९ है सीटी बजा के बुलावेगा। सो वे सब आवेंगी और उजाड़ नीचाईयो में और चटानों के दरारों में और सब कटीलों में
२० और समस्त कंदाला में बैठेंगी। उसी दिन परमेश्वर भाड़े के छरे से उन लोगों से जो नदी के पार हैं अर्थात असूर के राजा से सिर और पाओं के बाल मूड़ेगा और दाढ़ी भी नष्ट
२१ होजायगी। और उस दिन ऐसा होगा कि यदि कोई मनुष्य
२२ एक बछिया और दो भेड़ें पालेगा। और ऐसा होगा कि उनके दूध की अधिकाई से वुह मखन खायगा क्योंकि हरएक जो उस देश के मध्य में छोड़ाजायगा मखन और मधुही
२३ खायाकरेगा। और उस दिन ऐसा होगा कि हरएक दाख की बाटिका जिसमें सहस्र लता होंगी जिसका सहस्र रुपये का
२४ दाम होगा उनकी संती सदा गुलाब और कटीले होंगे। वे

धनुष और वाण लेके उधर आवेंगे क्योंकि सारे देश में कटीले
२५ और सदा गुलाब होंगे। और सारे पहाड़ को जो कुल्हाड़ी
से सुधारेगयेथे जहां कांटों और ऊंटकटारों का भय कभी न
ऊआ सो बैल के रखांत और भेड़ के लताड़ने के कारण होंगे।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि एक बड़ी पटिया ले और चित्रकार
की टांकी से उस पर लिख कि लूट के लिये शीघ्र करना और
२ अहेर को शीघ्रतासे लेना। और मैं ने औरियाः याजक और
जिबेरिकियाह के बेटे ज़करिया को जो विश्वस्त साक्षी हैं
३ बुलाया। और मैं आगमज्ञानिनी के पास गया और वुह गर्भिणी
होके बेटा जनी तब परमेश्वर ने मुझे कहा उसका नाम
४ महरशललहशबज रख। कि उससे आगे कि यह लड़का माता
पिता उच्चार सके दमिश्क़ का धन और सामरः की लूट असूर
५ के राजा के आगे ढोईजायेगी। उसके पीछे परमेश्वर
६ ने मुझे कहा। इस कारण कि इन लोगों ने शीलुवा के जल
को जो धीरे बहताहै त्याग किया और रज़ीन और रामालिया
७ के बेटे से आनंदित ऊए। सो अब देखो कि परमेश्वर की बेगवती
और तरखानदी के जल को अर्थात आसूर के राजा और
उसकी सेना को उन पर चढ़ालावेगा और वुह उनके सारे नालों
के पार आवेगा और उनके धारों पर और उनके सारे कड़ारों
८ के पार जायगा। और वुह यहूदा के भीतर से फैलते फैलते
बहि निकलेगा हां वुह गलेताईं पऊंचजायगा और उसके परों
के फैलाओं से हे अमनवाईल तेरे देश की सारी चौड़ाई ढंप
९ जायगी। हे लोगो इसे जान रक्खो और घबराजाओ
और हे समस्त दूरदेशियो इस पर कान धरो अपनी कटि
बांधो और घबराजाओ अपनी कटि बांधो और घबराजाओ।
१० आपुस में परामर्ष करो परन्तु कुछ न होगा बातें बनाओ
और न ठहरेंगी क्योंकि ईश्वर हमारे संग है।

११ क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यों कहा जैसे कि मेरा हाथ पकड़ के
उसने मुझे सिखाया कि तू इन लोगों की चाल पर मत चल।
१२ तुम हरएक वस्तु को जिसे ये लोग पवित्र कहते हैं पवित्र मत
१३ कहो और उनके डरके कारण से न डरो। तुम केवल
सेनाओं के ईश्वर को पवित्र जानो और वही तुम्हारा डर
१४ और तुम्हारा भय होवे। और वही तुम्हारे लिये शरण स्थान
होगा परन्तु इसराईल के दोनों घरानों के लिये धक्के का
और ठोकर खिलाने का पत्थर और यिरोशलीम के निवासियों
१५ के लिये फंदा और जाल होवेगा। और उनमें से बहुतसे
ठोकर खायेंगे और गिरेंगे और टूटजायेंगे और जाल में
१६ फसेंगे और पकड़ेजायेंगे। साक्षी को समाप्त करो मेरे
१७ शिष्यों में आज्ञा पर छाप करो। इसी लिये मैं परमेश्वर की
बाट जोहोंगा जो याक़ूब के घराने से अपना मुंह छिपाताहै
१८ तथापि मैं उसकी बाट जोहोंगा। देखो मैं और लड़के जिन्हें
परमेश्वर ने मुझे दिया है सेनाओं के परमेश्वर की ओर से जो
सैहून के पहाड़ में रहताहै इसराईलियों में चिह्न और
१९ आश्चर्य के लिये हों। और जब वे तुम को कहें कि तुम टोनहे
और ओझे को जो भीतर भीतर बोलतेहैं और गुनगुनातेहैं
खोजो तो क्या लोगों को उचित नहीं कि अपने ईश्वर को ढूंढ़ें
२० और क्या जीते की संती मृतक को खोजें। व्यवस्था और साक्षी
में खोजें यदि वे इस वचन के समान न बोलें तो यह इस लिये
२१ है कि उनमें ज्योति नहीं। हरएक उनमें से देशमें से दुःखी
और भूखा चलाजायगा और ऐसा होगा कि जब वे भूखे होंगे
तो घबरा जायेंगे और वुह अपने राजा और अपने ईश्वर को
२२ धिक्कारेगा। और वे पृथिवी की ओर ताकेंगे और देखो कि
विपत और अंधकार और घोरता और कष्ट और घोर
२३ अंधकार। परन्तु फेर जो देश दुःखी था उसमें अंधकार न
होगा कि जब उस पर विपत पड़ी थी कि पहिले उसने

जाबलून और नफ़ताली की भूमि को तुच्छ किया परन्तु पिछले समय में देशियों के जलील में अर्दन नदी के पार समुद्र की ओर महिमा दिई।

९ नवां पर्व्व।

१ जो लोग अंधिआरे में चलतेथे उन्होंने बड़ी ज्योति देखी और उन पर जो मृत्युकी परछाहीं के देश में रहतेथे ज्योति चमकी।
२ तू ने देशी को बढ़ाया और उनके आनंद अधिक किये वे तेरे आगे ऐसे आनंद करते हैं जैसे लवने के समय में करतेहैं और
३ उनके समान जो लूट बांटते हैं आनंद करतेहैं। क्योंकि तू ने उसके बोझ के जूये को और उसके कांधे के लठको जो उस पर अंधेर करताथा ऐसा तोड़ा जैसा कि मदियान के दिन में किया।
४ क्योंकि युद्ध में हथियार बंधेहुए जोधोंके पिंडुरी के टोप और वस्त्र लहू में बोरेहुए जलाने के लिये आग के इंधन न होंगे।
५ क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ और हमें एक पुत्र दियागया जिसके कांधे पर प्रभुता होगी और वुह इस नाम से कहायाजायगा आश्चर्यमय मंत्री शक्तिमान ईश्वर सनातन का
६ पिता कुशल का राजपुत्र। उसकी प्रभुता और उसके कुशल की अधिकाई का कुछ अंत न होगा वुह दाऊद के सिंहासन पर और उसके राज्य पर आज से सनातन लों न्याय और बिचार स्थापे और स्थिर करे सेनाओं के परमेश्वर का तेज यही
७ करेगा। परमेश्वर ने याक़ूब के विरुद्ध एक बचन भेजा
८ और वुह इसराईल पर उतरा। इस कारण कि सारे लोग क्या अफ़राईम और क्या सामरः के बासी गर्व से चलतेहैं
९ और अहंकार और अभिमान से कहतेहैं। ईंटें तो गिरगईं परन्तु हम ढोकों से जोड़ाई करेंगे गूलर काटेगये परन्तु हम
१० आरज बृक्ष को लगायेंगे। इस लिये परमेश्वर उसके बिरोध में रज़ीन के अध्यक्षों को उभाड़ेगा और उसके बैरियों को एकट्ठे

११ उठावेगा। पूर्ब से सुरयानी को और पच्छिम से फ़लस्तानीयों को और वे इसराईल को चारों ओर से भक्षण करजायेंगे तथापि उसका क्रोध नहीं उतरा परन्तु उसका हाथ अबलों
१२ बढ़ायाहुआहै। तथापि ये लोग उसकी ओर जिसने उन्हें मारा नहीं फिरे और वे सेनाओं के परमेश्वर के खोजी नहीं
१३ हुए। इस लिये परमेश्वर इसराईल से सिर और पूंछ और
१४ डाली और नरकट को एकही दिन में काटडालेगा। जो वृद्ध और प्रतिष्ठित है वही सिर है और जो आगमज्ञानी झूठी
१५ बातें सिखलाता है सोई पूंछ है। क्योंकि इन लोगों के अगुवा इन्हें भरमावते हैं और वे जो उनका पीछा करतेहैं भक्षण कियेजायेंगे।
१६ सो परमेश्वर उनके तरुणों से आनंदित न होगा और वुह उनके अनाथों और उनकी बिधवों पर दया न करेगा क्योंकि हरएक उनमें कपटी और कुकर्मी है और हरएक मुंह मूढ़ता बकताहै तथापि उसका क्रोध नहीं उतरा परन्तु उसका हाथ
१७ अबलों बढ़ायाहुआहै। क्योंकि दुष्टता आग की नाईं जलती है वुह सदा गुलाब और कंटिले को भस्म करेगी और बन के झाड़ों को बारेगी और वे धूयें के धरहरे की नाईं उठेंगे।
१८ सेनाओं के परमेश्वर के क्रोधके मारे देश अंधियारा होगया और लोग आग के ईंधन की नाईं होवेंगे और मनुष्य
१९ अपने भाई को न छोड़ेगा। परन्तु वुह दहिने हाथ पर उचक लेगा तथापि भूखा होगा और वुह बायें ओर भक्षण करेगा और तृप्त न होगा हरएक मनुष्य अपने पड़ोसी का
२० मांस खायगा। मनस्सा अफ़राईम को और अफ़राईम मनस्सा को भक्षण करेगा और दोनो एकसाथ यहूदा से बिरुद्ध होंगे तथापि उसका क्रोध उतर नहीं गया परन्तु उसका हाथ अबलों बढ़ायाहुआहै।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ उन पर संताप है जो अन्याय को स्थापन करते हैं और लेखकों
२ पर भी जो अंधेर ठहराते हैं। कि दीनों को न्याय से फेरदें और
मेरे लोगों के दरिद्रों का पद चुरावें कि रांड को अपना अहेर
३ बनावें और अनाथों को लूटें। और बिचार के दिन में और
बिपत्ति के दिन में जो दूर से आवेंगे तुम क्या करोगे तुम किसके
४ आड़ में भागोगे और तुम अपना धन कहां रक्खोगे। मुझ
बिना वे बंधुओं के नीचे झुकायेजायेंगे और घातित के तले
पातित होंगे तथापि उसका क्रोध उतर नहीं गया परन्तु उसका
५ हाथ अबलों बढ़ायाहुआ है। हे असूरिया मेरे क्रोध का
सोंटा वुह लठ जिसके हाथ में मेरे जलजलाहट का हथियार
६ है। मैं उसे एक छली देशियों पर भेजोंगा और उन लोगों के
बिरोध में जो मेरे क्रोध के कारण हैं एक आज्ञा देउंगा कि
लूट को बटोरे और अहेर को लेजावे और उनको मार्गों की
७ कीचड़ की नाईं लताड़े। परन्तु वुह ऐसा नहीं समझता और
उसका मन यों नहीं चाहता पर उसके मनमें है कि नाश करे
८ और बहुत से देशियों को काटडाले। क्योंकि वुह कहता है क्या
९ मेरे राजपुत्र सबके सब राजा नहीं। क्या कालनू कारकमश
की नाईं नहीं है क्या हमास अरफाद की नाईं नहीं है और
१० सामरः दमिश्क की नाईं नहीं है। जैसा कि मेरे हाथ ने
मूर्तिन के राज्यों को धररक्खा है जिनकी खोदीहुई मूरतें सामरः
११ और यिरोशलीम कीसे श्रेष्ठ थीं। जैसा मैंने सामरः और
उसकी मूर्तिन से किया ऐसा यिरोशलीम से और उसकी
१२ मूर्तिन से न करोंगा। परन्तु ऐसा होगा कि जब परमेश्वर
सैहून के पहाड़ पर और यिरोशलीम पर अपने समस्त कार्य
करचुकेगा तब मैं असूरिया के राजा के गर्वित अंतःकरण के
कारण को और उसकी जयमान दृष्टि की अभिमान आंखों को
१३ दंड देउंगा। क्योंकि उसने कहा है कि मैं ने अपनी भुजा के

बल से और अपनी बुद्धि से यह किया है क्योंकि मैं बुद्धिमान हूं मैं ने लोगों के सिवाने हटाये और उनके बटोरे हुए भंडारों को लूटलिया और जो दृढ़ता से बैठेहुए थे मैं ने उन्हें उतारदिया।
१४ और मेरे हाथ ने लोगों का धन एक घोसले की नाईं यों लेलिया जैसा कि कोई त्यक्त अंडों को समेट ले वैसा मैं ने समस्त पृथिवी को समेट लिया और कोई न था कि पर फैलावे अथवा चोंच
१५ खोले अथवा चहचहावे। क्या कुल्हाड़ी कुठार धारक पर फूल सक्ती है और खिचवैयों से आरा अहंकार करसक्ता है यह ऐसा है जैसा कि दंड दंडधारी को हिलावे और सोंटा अपने स्वामी को
१६ उठावे। इस कारण प्रभु सेनाओं का परमेश्वर उसके मोटे लोगों पर दुर्बलता भजेगा और उसकी महिमा के नीचे एक
१७ लवर आग की नाईं वारेगा। और इसराईल की ज्योति आग होजायगी और उसका धर्म्ममय एक लवर वुह उसके कटीले और सदा गुलाब को दिन भर में जलाके भस्म करदेगा।
१८ हां उसके जंगल के और उसके फलवंत खेत के विभव को प्राण से मांस लों भस्म करेगा और ऐसा होगा जैसे कोई आग से
१९ भाग निकले। और उसके बन के रहेहुए वृक्ष ऐसे थोड़े होंगे
२० कि एक बालक भी उन्हें लिख ले। और उस दिन ऐसा होगा कि इसराईलियों में के बचेहुए और याकूब के घराने के भागेहुए उस पर सहारा न करेंगे जिसने उन्हें मारा परन्तु इसराईल के धर्म्ममय परमेश्वर पर सच्चाई से भरोसा करेंगे।
२१ बचेहुए अर्थात वे जो याकूब से बचे होंगे शक्तिमान ईश्वर की
२२ ओर फिरेंगे। क्योंकि हे इसराईल यद्यपि तेरे लोग समुद्र की बालू की नाईं हैं पर उनमें केवल बचेहुए फिरेंगे और वुह
२३ ठीक न्याय जिसकी आज्ञा किईगईहै परिपूर्ण होगा। क्योंकि सेनाओं का प्रभु वुह दंड की भरपूरी जो ठहराईगईहै देश के
२४ मध्य में पूरा करेगा। सो सेनाओं का प्रभु यह कहता है कि हे मेरे लोगो जो सैहून में बसे हो असूरानियों के

कारण मत डरो वुह तुझ को लट्ठ से मारेगा और मिसर के
२५ मार्ग में तुझ पर अपना सोंटा उठावेगा। परन्तु एक थोड़ीही
देर होगी कि मेरा जलजलाहट और मेरा क्रोध जो उनके
२६ बिनाश के कारण होगा समाप्त होगा। और सेनाओं का
परमेश्वर मदयानियों के प्रहार के समान जो औरेब की पहाड़ी
पर हुआ उस पर कोड़ा उठावेगा और उस छड़ी के समान जो
उसने समुद्र पर उठाई हां वुह उसे मिसर की नाईं उठावेगा।
२७ और उस दिन ऐसा होगा कि उसका बोझ तेरे कांधे पर से और
उसका जूआ तेरे गले पर से अलग कियाजायगा हां वुह जूआ तेरे
२८ कांधे पर से अभिषिक्त के कारण नाश होगा। वुह अयात
में आयाहै वुह मगरून से चल के मकमाश में अपनी बहीड़
२९ रक्खेगा। वे घाटी पार गये वे गीबा में रातभर टिके रामा
३० डरगयाहै साऊल का गबिया भाग निकला। हे गलाम की पुत्री
अपने शब्द से चीख़मार हे लाईस उसकी सुन और हे
३१ अनातूत उसे उत्तर दे। मदमीना चलागया गबीम के बासी
३२ भागने पर लैस होरहेहैं। अभीतो वुह नूब में है सो उस दिन
वुह अपना हाथ सैहून की बेटी के टीले में जो यिरोशलीम की
३३ पहाड़ी है हिलावेगा। देखो प्रभु सेनाओं का परमेश्वर गिरने
के भयानक शब्द से उस लहलहाती डाली को काटडालेगा और
वे जो लंबे लंबे हैं काटेजायेंगे और वे जो ऊंचेहैं नीचे किये
३४ जायेंगे। और वह जंगल के झुंडों को लोहे से काटडालेगा और
लबनान एक बलवंत के हाथ से गिरजावेगा।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ परन्तु यस्सी के खूंटी से एक डाली निकलेगी और उसकी जड़ों
२ से एक टहनी फलवती होगी और परमेश्वर का आत्मा और
ज्ञान का और बुद्धि का आत्मा और मंत्र और सामर्थ्य का
आत्मा और परमेश्वर के भय और ज्ञान का आत्मा उस पर

३ ठहरेगा। और वुह परमेश्वर के भय में चटक बिवेकी होगा यहां लों कि वुह अपनी आंखों की दृष्टि के समान आज्ञा न
४ करेगा और अपने कानों के सुन्नेके अनुसार न दपटेगा। परन्तु वुह धर्म से दीनों का न्याय करेगा और न्याय से एथिवी के नम्रों के लिये ताड़ना करेगा और अपने मुंह के झकोर से एथिवी को मारेगा और अपने होठों के श्वास से दुष्ट को नाश
५ करडालेगा। उसकी कटि का पटुका धर्म होगा और सच्चाई
६ उसकी कटि बंधिनी होगी। और मेम्ना के संग भेड़िया भी रहेगा और बकरी के बच्चे के संग चीता भी बैठेगा और गाय और सिंहबच्चे और पुष्ट पशु मिलेजुले रहेंगे और नन्हा बालक
७ उन्हें चरावेगा। कलोर और भलुकी मिल के चरेंगे उनके बच्चे मिलेजुले लेटेंगे और सिंह बैल की नाईं पुआल खायेगा।
८ और दूध पीउआ बालक सांप की बांबी पर खेलेगा और दूध
९ छुड़ायाऊआ बालक काले की बांबी में हाथ डालेगा। वे मेरे समस्त पवित्र पर्वत में न दुःख देंगे न फाड़ेंगे क्योंकि जिस रीति से समुद्र के गहिराव पानियों से भरेहैं उसी रीति से
१० एथिवी ईश्वर के ज्ञान से परिपूर्ण होगी। और उस दिन यों होगा कि यस्सी का मूल लोगों की ध्वजा के लिये गाड़ाजायगा जातिगण उस पास जायेंगे और उसका आश्रय
११ बिभवमय होगा। और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर दूसरे बार अपने हाथ को बढ़ा के उनको जो उसके लोगों में बचेऊए होंगे जो असूर और मिसर और पतरुस और कूश और ऐलाम और शीनार और हामात और पश्चिम के
१२ देशों के बचेऊए को फेर लावेगा। और वुह देशगणों के लिये एक झंडा खड़ा करेगा और इसराईल के अजातिओं को एकट्ठा करेगा और यहूदा के बिथरेऊओं को एथिवी के चारों
१३ खूंट से समेटेगा। और अफ़राईम का डाह मिटजायगा और यहूदा का बैर न रहेगा और अफ़राईम यहूदा से डाह न

१४ करेंगे और यहूदा अफ़राईम से बैर न रक्खेंगे। परंतु वे पच्छिम की ओर फ़लस्तानियों के सिवानों पर चढ़ेंगे और एकट्ठे होके वे पूर्ब के बालकों को लूटेंगे और वे अदूम और मवाब पर १५ हाथ डालेंगे और अम्मून के संतान उनके अधीन होंगे। और परमेश्वर मिसर के समुद्र की जीभ को सूखाहट से मारेगा और अपनी प्रचंड बयार से नदी पर अपना हाथ हिलावेगा और उसको सातनाली करदेगा और उन्हें सूखे पांव पार १६ करावेगा। और वहां उसके बचे ऊए दासों के लिये जो असूरियों में से बच रहेंगे ऐसा सड़क होगा जैसे इसराईल के लिये था जिस दिन कि वे मिसर की भूमि से निकल आये।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ और उस दिन तू कहेगा कि हे परमेश्वर मैं तेरा धन्यबाद करेंगा क्योंकि यद्यपि तू मुझ से क्रुद्ध था तेरा क्रोध उतर गया २ और तू ने मुझे शांति दिई। देखो ईश्वर मेरी मुक्ति है मैं उस पर आशा रक्खेंगा और न डरेंगा क्योंकि परमेश्वर मेरा बूता ३ और मेरा गान है और वुह मेरी मुक्ति ऊआ है। और जब ४ तुम आनंद से मुक्ति के सोतों से पानी भरोगे। उस दिन तुम कहोगे कि परमेश्वर का धन्य मानो उसीका नाम लेओ उसके पराक्रम के कार्य को लोगों में जनाओ और टांक रक्खो कि उस ५ का नाम कैसा महान ऊआ है। परमेश्वर का गान करो इस लिये कि उसने एक महत कार्य किया जो समस्त पृथिवी में ६ प्रगट है। हे सैहून की निवासिनी तू चिल्ला और ललकार कि तेरे मध्य में इसराईल का धर्ममय महान है।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१ बाबुल के विषय का बचन जो आमूस के बेटे आशिया पर प्रकाश २ ऊआ। तुम ऊंच पहाड़ पर एक ध्वजा खड़ी करो शब्द उठाओ

और हाथ से सैन करो जिसतें वे अध्यक्षों के फाटकों में पैठें।
३ मैं ने अपने ठहरायेहुए योद्धाओं को आज्ञा दिई है मैं ने अपने
बीरों को अर्थात उनको जो मेरे महत्व से आनंदित हैं बुलाया है
४ कि मेरे क्रोध का पलटा लेवें। पहाड़ों में एक मंडली का शब्द
है जैसे कोई महत लोगों का यह राज्यों का और एकट्ठे किये
हुए जातिन के दंगे का शब्द है क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर
५ लड़ाई के लिये सेना की गिनती लेता है। वे एक दूरदेश से
स्वर्गों के अंत से आते हैं अर्थात परमेश्वर और उसके क्रोध के
हथियार कि समस्त देश को नाश करे।
६ बिलाप करो क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है वुह सर्वशक्तिमान
७ की ओर से बिनाश की नाईं आवेगा। इस लिये सारे हाथ ढीले
होजायेंगे और हरएक मनुष्य का मन पिघलजायेगा और वे
८ भयातुर होंगे। यंत्रणा और शोक उन्हें पकड़ लेगा वे ऐसे
पीड़ित होंगे जैसे स्त्री पर जन्ने की पीर लगती हैं सो वे ऐसे
घबराजायेंगे कि एक दूसरे को पड़ा ताकेगा और उनके रूप
९ आग की लवर की नाईं होंगे। देखो परमेश्वर का निर्दय दिन
आता है अर्थात जलजलाहट और ज्वलत्कोप जिसतें देश को
उजाड़ करे और उसके पापियों को उस पर से बिनाश करदे।
१० हां स्वर्ग के तारे और उसके नक्षत्र अपनी ज्योति न देंगे और
सूर्य्य उदय होते होते अंधकार होजायेगा और चंद्रमा अपनी
११ ज्योति न देगा। और मैं जगत को उसकी बुराई के कारण से
और दुष्टों को उनके कुकर्म के कारण से दंड दूंगा और मैं
अभिमानियों का अभिमान मिटाऊंगा और भयंकर के अहंकार
१२ को ढादूंगा। मैं एक पुरुष को चोखे सोने से हां एक पुरुष को
१३ ओफ़ीर के सोने से बहुमूल्य करोंगा। और सेनाओं के परमेश्वर
के जलजलाहट के मारे और उसके ज्वलत्कोप के दिन में स्वर्गों
को थर्थरा दूंगा और पृथिवी अपने ठिकाने से हिल जायगी।
१४ और बचेहुए ऐसे होंगे जैसे खदेड़ाहुआ हरिण और बिनचरवाहे

की भेड़ सो उनमें हरएक अपने लोगों की ओर फिरेगा और
१५ हरएक अपने अपने देश को भागेगा। हरएक जो पकड़ाजायगा
बेधाजायगा और समस्त जो एकट्ठे ऊएहोंगे खड्ग से मारे
१६ पड़ेंगे। उनके बालक भी उनकी आंखों के आगे पटके जायेंगे
उनके घर लूटेजायेंगे और उनकी पत्नियों को अपत कर डालेंगे।
१७ देखो मैं मादियों को उनके बिरोध में उठाऊंगा वे रुपे को कुछ
१८ न समझेंगे और सोने से आनंद न होंगे। उनके धनुष तरुणों
को पटकेंगे और वे गर्भ के फल पर दया न करेंगे और उनकी
१९ आंखे बालकों पर भी मया न करेंगी। और बाबुल जो राज्यों
का सौंदर्य था और कलदिया की बड़ाई का बिभव परमेश्वर के
हाथ से उलटायेऊए सदूम और अमूरा की नाईं होजायगा।
२० वुह कभी बसाया न जायगा और पीढ़ी से पीढ़ी लों कभी उसमें
बस्ती न होगी वहां कधी अरब लोग तंबू खड़ा न करेंगे और
२१ वहां गड़रिये गोड़ा न बनावेंगे। परन्तु जंगली बन्यपशु वहां
बसेंगे और उनके घरों में अद्भुत जंतु भरजायेंगे वहां उल्लू के
२२ बच्चे रहेंगे और बानर नाचेंगे। और ऊंडार उनके भवनों में
और अजगर उनके सुन्दरस्थानों में आपुस में बोलेंगे उसका
समय समीप पऊंचाहै और उसके दिन बढ़ाये न जायेंगे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ क्योंकि परमेश्वर याकूब पर दया करेगा और इसराईलियों को
फिर चुनेगा और उन्हें उन्हीं के देश में फिर चैन देगा और
परदेशी उनमें मिलजायगा और याकूब के घराने से सटारहेगा।
२ और जातिगण उन्हें लेके उन्हीं के स्थान में पऊंचावेंगे और
इसराईल के घराने परमेश्वर के देश में उनके स्वामी होके उन्हें
दास और दासी की नाईं अपने करेंगे और आप जिनके बंधूवे
थे उनको बधुआई में लेजायेंगे और अपने अंधेरियों पर
३ प्रभुता करेंगे। और उस दिन ऐसा कुछ होगा कि जब

परमेश्वर तेरे शोक और तेरी चिंता से और उस कठोर सेवा से
४ जो तुझ पर रक्खागईथी तुझ को चैन देगा। तब तू बाबुल के
राजा पर यह दृष्टांत देगा और कहेगा क्योंकर अंधेरी लुप्त
५ होगई और सुबर्णकी निचोरीनी लोप होगई। परमेश्वर ने
६ दुष्टों का लट्ठ और आज्ञाकारियों का दंड तोड़ाहै। जिसने लोगों
को क्रोध से मारा और मारने में न थमा जो लोगों पर क्रोध से
७ प्रभुता करताथा ताड़ित ज़आ और कोई नहीं रोकता। सारी
८ पृथिवी शांत और निश्चिंत है और आनंद से गाती है। हां
देवदारु के वृक्ष और लबनान के अरज वृक्ष तुझ पर आनंदित
हैं कि जब से तू पतित ज़आ तब से कोई लकड़हारा हम
९ पर चढ़ न आया। तेरे आतेज़ए परलोक नीचे से हिलगया
कि तुझे आमिले वुह तेरे लिये पराक्रमी मृतकों को और
पृथिवी पर के महत लोगों को जगाताहै उसने लोगों के सारे
१० राजाओं को उनके सिंहासनों पर उठाखड़ा किया। सब के सब
बोलेंगे और तुझे कहेंगे क्या तू भी हमारे समान दुर्बल
११ होगया क्या तू हमारे तुल्य होगया। क्या तेरा अहंकार और
तेरे बाजे का आनंदित शब्द समाधि में उतारागया क्या कीड़ा
१२ तेरी शैय्या और कीड़ाही तेरा ओढ़ना होगया। हे तारे
प्रातःकाल के पुत्र तू क्योंकर स्वर्ग पर से पतित ज़आ तू जिसने
जातिगण को बश में किया क्योंकर पृथिवी पर ढायागया।
१३ तूने तो अपने मन में कहाथा कि मैं स्वर्गों पर चढ़ोंगा मैं अपने
सिंहासन को ईश्वर के तारों से ऊंचा करोंगा और मैं उत्तर
१४ की ओर ईश्वर के साक्षात पहाड़ पर चढ़ के बैठोंगा। मैं मेघों
की ऊंचाई पर चढोंगा मैं अति महान के तुल्य होओंगा।
१५।१६ परन्तु तू समाधि में गड़हे की ओर उतारागया। जो तुझे
देखेंगे ध्यान से तुझ पर दृष्टि करेंगे और तुझे अच्छी रीति से
बूझेंगे क्या यह वही मनुष्य है जिसने पृथिवी को थर्थरादिया
१७ और राज्यों को हिलादिया। जिसने जगत को सूना किया

ओर बस्तियां उजाड़ीं जिसने बंधुओं को अपने अपने घर में न
१८ छोड़ दिया। जातिगण के समस्त राजा अपनी अपनी समाधि
१९ में विभव के संग चैन करतेहैं। परन्तु तू घिनित वृक्ष की नाईं
समाधि से निकाल फेंकागया और लताड़ाहुई लोथ की नाईं
उनके साथ जो गड़हे के पत्थर लों उतारेजातेहैं और खड्ग से
२० बेधेहुए और जूझेहुए से पहिनायागया। तू उनके संग कभी
समाधि में मिलाया न जायगा क्योंकि तू ने अपने देश को
उजाड़ किया और अपनी प्रजा को घात किया कुकर्मियों का बंश
२१ कभी प्रसिद्ध न होगा। उनके पितरों के पाप के कारण उनके
बालकों के लिये घात सिद्ध करो न हो कि वे उठें और
२२ पृथिवी को बश में कर के जगत को नगरों से भरदेवें। क्योंकि
सेनाओं का परमेश्वर कहताहै कि मैं उनके बिरुद्ध में उठोंगा
परमेश्वर कहताहै मैं बाबुल से नाम और चिह्न मिटादेउंगा
और उनके बचेहुए को बेटों और पोतों समेत काटडालोंगा।
२३ सेनाओं का परमेश्वर कहताहै कि मैं उसे साहीं का अधिकार
और पानी के पोखरे बनाडालोंगा और मैं उसे नाश
२४ के चहले के दरार में बोरदूंगा। सेनाओं के परमेश्वर ने
किरिया खाके कहा कि निश्चय जैसा मैं ने चाहाहै वैसाही
होजायगा और जैसा मैं ने ठानाहै वैसाही प्रगट होगा।
२५ कि मैं असूरियों को अपने देश में चूर करोंगा और उसे
अपने पहाड़ों पर लताड़ूंगा तब उसका जूआ उन पर से
उतरेगा और उसका बोझ उनके कंधों पर से टलजायगा।
२६ यह वुह आज्ञा है जो सारे जगत के लिये ठहराईगई और
२७ यह वुह हाथ है जो समस्त जातिगण पर बढ़ायाहुआ है।
क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर ने ठानाहै सो कौन उसे टाल
सक्ताहै और उसही का हाथ बढ़ायाहुआ है सो कौन उसे
२८ फेर सक्ताहै। जिस बरस कि अहाज़ राजा मरगया
२९ उसी बरस यह बचन सौंपागया। हे फिलिस्तियो एकमता

होके आनंद मत करो क्योंकि उसका लट्ठ जिसने तुझे मारा टूटा क्योंकि सर्प के मूल से एक नाग निकलेगा और उसका
३० बंश एक प्रज्वलित उड़वैया सांप होगा। क्योंकि कंगाल मेरे चुनेऊए पहिले फल खायेंगे और दुःखी चैन से बैठेंगे परन्तु वुह तेरी जड़ को सुखाहट से नाश करेगा और तेरे बचेऊए लोग
३१ घात कियेजायेंगे। अरे ओ फाटक बिलाप कर अरे ओ नगर चिल्ला और हे फिलिस्तिया तू निरधार घबराहट में पड़गया क्योंकि उत्तर से एक धूआं उठेगा और उसके लोगों में से कोई
३२ भटकाऊआ न होगा। उस समय में देशियों के दूत से क्या उत्तर दियाजायगा कि परमेश्वर ने सैहून की नेउं डालीहै और उसके लोग के दरिद्र उसमें शरण लेंगे।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

मवाब के विषय का वचन।

१ इस लिये कि रात को आर नष्ट ऊआ मवाब उखड़गया इस
२ लिये कि रात को कीर नष्ट ऊआ मवाब उखड़गया। वुह बसदीबून को ऊंचे स्थानों पर बिलाप करने जाताहै मवाब नबू पर और मदबा पर हाय हाय करेगा हरएक सिर पर
३ चंदुलापन है हरएक दाढ़ी मूंड़ी है। वे अपने मार्गों में टाट का पटुका बांधतेहैं और अपनी छतों पर और अपने चौड़े
४ स्थानों में हरएक चिल्लाताहै और रोते रोते उतरताहै। हश्बून और इलियाली चिल्ला चिल्ला के रोतेहैं उनका शब्द ऐयाज़ लों सुनाजाताहै हां मवाब की कटिलों चिल्लातीहैं उसका प्राण
५ उसके लेखे भार है। मवाब का मन कलोर के बिंबिआने की नाईं ज़ुग़ार लों उसीमें रोताहै हां लोहीस की चढ़ाई पर वे रोतेऊए चढ़ेंगे हां हरुनाईम में वे नाश का शब्द उठातेहैं।
६ क्योंकि नमरीम के जल जातेरहेंगे इस लिये चराई मुरझागई
७ और कोमल पौधा घटताहै और साग पात न रहा। इस लिये

कि जो धन उन्होंने प्राप्त किये सो न होंगे और जो कुछ कि उन्होंने
८ बेंत के वन में रक्खाहै उसे लेजायेंगे। क्योंकि मवाब के सिवाने को
रोलाताहै उसका बिलाप अग़लीम ताईं और उसका हाहाकार
९ बीरालीम लों पहुंचताहै। हां दीमून के जल लहू से भरे हैं
तथापि मैं दीमून पर और मवाब के बचेहुए पर और अरिएल
और अदमा के रहेहुए पर अधिक बुराई लाओंगा।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ मैं बन के सीला से सैहून की पुत्री के पहाड़ पर देशाध्यक्ष के
२ पुत्र को भेजोंगा। और ऐसा होगा कि जिस रीति से घोंसले
से हांकाहुआ पक्षी भ्रमताहै उसी रीति से मवाब की बेटियां
३ अरनून के घाटों में होंगी। परामर्ष दे बिचार कर मध्याह्न में
अपनी छाया रात के तुल्य कर अजातियों को छिपाले भगोड़ों
४ को प्रगट न कर। मवाब के अजाती तेरे संग बास करें तू उनके
लिये नाशक से आड़ होगा क्योंकि अन्यायी न रहा और नाशक
५ का अंत है जिसने तुम्हें लताड़ाथा देश में से नष्ट हुआ। और
सिंहासन दया के साथ स्थिर होगा और उस पर निश्चय
दाऊद के तंबू में एक न्यायी होके बैठेगा और यत्न से बिचार
६ करेगा और धर्म को फैलायेगा। हम ने मवाब का
अहंकार सुनाहै वुह अत्यहंकारी उसका गर्ब और अहंकार
७ और क्रोध है पर उसके झूठ व्यथा हैं। सो मवाब चिल्ला चिल्ला
के विलाप करेगा क्योंकि वुह मवाब के समस्त लोगों के लिये
बिलाप करेगा करहारोस के लोगों के लिये तुम हाय हाय
८ करोगे। क्योंकि हश्बून के खेत और सिबमा के दाख बज्जित
हुए जिनकी अच्छी टहनियों ने देशियों के बलवंत अध्यक्षों को
बश में किया वे याज़ीर लों पहुंचे वे जंगल को भटकगये उसकी
९ डालियां फैलगईं वे समुद्र पार गये। सो मैं याज़ीर के बिलाप
के समान सिबमा के दाख के लिये बिलाप करोंगा ओ हश्बून

हे इलियाली मैं तुझे अपने आंसूओं से सोचेंगा क्योंकि तेरे ग्रीष्मकाल के फल पर और दाख के फल पर नाशक गिरपड़ा।
१० और फलवंत खेत से मगन और आनंदता उठाईगई और वे दाख की बाटिकों में न गायेंगे न ललकारेंगे और मांठों में ललाड़नेवाला दाखरस को फेर न लताड़ेगा उनके ललकारने
११ का अंत ऊआ। सो मेरा पेट मवाब के लिये और मेरी अंतड़ियां करहारीस के लिये बीणा के समान शब्द करेंगी।
१२ और ऐसा होगा कि जब मवाब देखेगा कि मैं ने आप को ऊंचे स्थान में थका दिया तो वुह अपने धर्मधाम में आके बिनती
१३ करेगा परन्तु कुछ बन न पड़ेगा। यह वुह बचन है जो परमेश्वर
१४ ने मवाब के विषय में बऊत दिन से कहा है। पर अब परमेश्वर यह कहता है बनिहार के बरसों के समान तीन बरस के पीछे मवाब का बिभव उसकी समस्त मंडली समेत तुच्छ कियाजायगा और बचेऊए लोग थोड़े और छोटे और निर्बल होजायेंगे।

१७ सतरहवां पर्व्व ।

दमिश्क के विषय का बचन ।

१ देखो दमिश्क यों उठायागया कि अब नगर नहीं कहलाता
२ हां वुह उजाड़ का ढेर होजायेगा। और अरईर की बस्तियां छोड़ीगईं बेभुंडों को दिईजायेंगी वे पड़ेरहेंगे और कोई उन्हें
३ न डरावेगा। और अफराईम से गढ़ और दमिश्क से राज्य उठजायेगा सुरिया का अहंकार इसराईल के संतान के बिभव की नाईं होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है।
४ और उस दिन ऐसा होगा कि याक़ूब का बिभव घटजायगा
५ और उसके देह की चिकनाई दुबली होजायगी। यह ऐसा होगा जैसा कोई लवने के समय में अनाज एकट्ठा करे और अपने हाथों से बालें काटे अथवा जैसे कोई रफ़ाईम की नीचाई
६ में बिनिया करे। और उसमें बीनने के लिये बचरहेंगे जैसा

कि जलपाई के वृक्ष हिलायेजाने से दो तीन फल फुनगी पर चार पांच बियरीऊई उसकी फलवती डालों पर परमेश्वर
७ इसराईल का ईश्वर कहताहै। उस दिन मनुष्य अपने सृष्टिकर्त्ता पर दृष्टि करेगा और उसकी आंखें इसराईल के
८ धर्ममय पर दृष्टि करेंगी। और वुह अपने हाथों की बनाईऊई यज्ञवेदियों पर जो उसके हाथ के कार्यों के लिये स्थापीगईहैं दृष्टि न करेगा और वुह अपनी अंगुलियों की बनाईऊई वस्तुन की क्या वाटिका और क्या मूर्त्ति किसी की प्रतिष्ठा न
९ करेगा। उस दिन उसके दृढ़ नगर हवी और अमूरी के उजाड़ के समान होंगे जब कि वे देश को इसराईल के संतानों
१० के आगे छोड़ भागे और देश उजड़गया। क्योंकि तू अपने मुक्तिदाता ईश्वर को भूलगया और अपने बल के पर्वत को चेत नकिया सो जब तू उत्तम पौधा लगावेगा और परदेश से
११ गाभ जमायेगा। उस दिन जब तू अपने पौधे को बढ़ावेगा और विहान में जब तू अपने गाभ को उगायेऊए होगा परन्तु प्राप्त के दिन फल लेजायेंगे और आशाहीन उदास होगा।
१२ संताप लोगों की बऊताई मंडलियों पर जो समुद्र की नाईं शब्द करतीहैं और देशियों की नाईं गर्जतीहैं ऐसी गर्जतीहैं
१३ जैसे महा जल गर्जतेहैं। देशगण धडल्ले के रेले के समान शब्द करेंगे परन्तु ईश्वर उन्हें दपटेगा और वे दूर भागजायेंगे और उस पर्वत की भूसी के समान जो आंधी से उड़ती फिरे अथवा
१४ उस पत्ते के समान जो बोंडर में घूमें मारे मारे फिरेंगे। और देखो संझा के समय तो भय है और विहान नहीं होते नाशहै वे जो हमको उजाड़ते हैं यह उनका अधिकार है और जो हमको लूटतेहैं यह उनका भाग है।

१८ अठारहवां पर्व्व ।

१ हे देश जो कूश की नदियों के तीर पर हैं और अपने पंखों से
२ छारहा है। समुद्र और जल के ऊपर पतेरा की नैकाओं पर
दूतों को भेजता है कि हे चालाक दूतो तुम उस देश के लोग
पास जाओ जो बढ़ायेऊए और समथर कियेगयेहैं और
आरंभ से अबलों भयानक लोग हैं जो रस्सी से नापेगये और
३ लताड़ेगयेहैं और जिन्हों के देश को नदियों ने पाला है। हे
जगत के समस्त बासियो और हे पृथिवी के निवासियो जब
पहाड़ों पर झंडा खड़ा कियाजाय तब देखो और जब कि
४ नरसिंगा फूंकाजाय तब सुनो। क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यों
कहा है कि मैं वृष्टि के पीछे के फरछा घाम की नाईं और लवने
के दिन में ओसैले मेघ के समान बैठ के अपने स्थापित निवास
५ को देखतारहोंगा। दाख संग्रह करने से पहिले जब कि फली
पूर्ण होवे और फूल झड़ के दाख बने उस समय वुह गाभों को
हंसुओं से काटडालेगा और डालियों को काट के फेंकदेगा।
६ वे पहाड़ के अहेरी पक्षियों और बनैले पशु के लिये पड़ेरहेंगे
कि अहेरी पक्षी उन पर घाम के समय में बास करेंगे और
७ पृथिवी के सारे बनैले पशु उन पर जाड़ा काटेंगे। तब सेनाओं
के परमेश्वर के पास उन लोगों से जो लम्बाई में बढ़ायेगये
और समथर कियेगये और आरंभ से अबलों भयानक लोग
हैं जो रस्सी से नापेगये और लताड़ेगये जिन्हों के देश को
नदियों ने पाला है सो वे सेनाओं के परमेश्वर के नाम के स्थान
पर जो सैहून का पहाड़ है आगे भेट लावेंगे।

१९ उन्नीसवां पर्व्व ।

मिसर के विषय का बचन ।

१ देखो परमेश्वर चालाक मेघ पर चढ़ के मिसर में आता है
और मिसर की मूर्त्ति उसके आगे से सरक जायेंगी और

१ मिसरियों के अंतःकरण उसके मध्य में पिघलजायेंगे। और मैं मिसरियों को मिसरियों के बिरुद्ध में उभाड़ोंगा उनमें हरएक अपने भाई से और हरएक अपने परोसी से नगर नगर से
२ और राज्य राज्य से लड़ेगा। और मिसर के मन उसके मध्य में घटजायेंगे और मैं उसके मंत्र को निंगलजाऊंगा और वे मूर्त्तिन का और गणकों का और टोनहों का और ओझाओं
४ का पीछा करेंगे। परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहताहै कि मैं मिसर को क्रूर अध्यक्षों के वश में करदोंगा और एक भयानक
५ राजा उन पर प्रभुता करेगा। उस घड़ी समुद्र के जल
६ घटजायेंगे और नदियां घट के सूखजायेंगी। और धारे दुर्गंध होजायेंगे और मिसर की नालियां छूछी होंगी और सूखजायेंगी
७ और नल और कमल मुरझाजायेंगे। तराईयां जो नालियों के तीर पर हैं अर्थात नदियों के मोहाने पर हैं और सब जो नालियों के समीप बोयेजातेहैं मुरझाजायेंगे झुलसजायेंगे
८ और फिर न होंगे। और मछवे बिलाप करेंगे और रोवेंगे और वे सब जो नदी में कंटिआ फेंकतेहैं और वे जो पानियों
९ पर जाल डालतेहैं निर्बल होजायेंगे। और वे जो महीन सन का काम करतेहैं और जालों के बिनवैये हैं लज्जित होजायेंगे।
१० और सब जो मछलियों के पोखरों से लाभ प्राप्त करतेहैं उनके
११ भंडार तोड़ेजायेंगे। निश्चय सुआन के अध्यक्ष मूर्ख होगये फ़रऊन के बुद्धिमान मंत्रियों ने पशुवत मंत्र दिया सो क्योंकर तुम फ़रऊन से बड़ाई करतेहो कि मैं बुद्धिमान का पुत्र और
१२ प्राचीन राजाओं का वंश। वे कहां जातेरहे और तेरे बुद्धिमान कहां वे आवें और अब तुझ से कहें और प्रगट करें कि सेनाओं के परमेश्वर ने मिसर के बिरुद्ध में क्या
१३ ठहरायाहै। सुआन के अध्यक्ष मूर्ख होगये नूफ के अध्यक्ष छल खागये उन्होंने मिसर को अर्थात उनके गोत्र के प्रधान
१४ खंभों को भरमाया। परमेश्वर ने एक डगमगातेहुए आत्मा को

उनके मध्य में मिलाया है और उन्हों ने मिसरियों को उनके सब कार्य्यों में उस मद्यप के समान भटकाया जो उछलता हुआ
१५ अपने छांड़ में भूलता है। और मिसर में कोई काम न रहेगा
१६ जिसे सिर अथवा पूंछ अथवा डाली अथवा नल बनावे। जो सेनाओं के परमेश्वर के हाथ हिलाने के कारण से वुह मिसरियों पर हिलावेगा उस दिन मिसरी लोग स्त्रियों की नाईं
१७ होके थर्थरायेंगे और डरेंगे। और यहूदा का देश मिसर के लिये भयानक होगा कि यदि कोई उसकी चर्चा उनसे करे सेनाओं के परमेश्वर के मंत्र के कारण जो उसने उनके बिरोध
१८ में मंत्र दिया वे डरजायेंगे। उस दिन मिसर के पांच नगर किनानी भाषा बोलेंगे और सेनाओं के परमेश्वर की किरिया खायेंगे उनमें एक का नाम सूर्य नगर
१९ कहलावेगा। उस दिन मिसर देश के मध्य में परमेश्वर की एक यज्ञबेदी और उसके सिवाने में परमेश्वर का एक खंभ
२० होगा। और वुह मिसर देश में परमेश्वर के लिये एक चिह्न और एक साक्षी होगा कि जब वे अंधेरियों के कारण से परमेश्वर को पुकारें तो वुह उनके लिये एक मुक्तिदाता और
२१ पक्षबादी भेजेगा और वही उनको छुड़ावेगा। उस दिन परमेश्वर मिसर में पहिचानाजायगा और मिसरी परमेश्वर को जानेंगे और वे बलिदान और भेंट से उसकी सेवा करेंगे हां वे परमेश्वर के लिये मनौती मानेंगे और उसे पूरी करेंगे।
२२ और परमेश्वर मिसर को मारेगा मारते मारते और उसे चंगा करतेजायेगा और वे परमेश्वर की ओर फिरेंगे और वुह
२३ उनकी बिनती सुनेगा और उन्हें चंगा करेगा। उस दिन मिसर से असूर लों एक बड़ा सड़क होगा और मिसरी असूर में आवेंगे और मिसरी असूरानियों के साथ सेवा करेंगे।
२४ उस दिन इसराईल पृथिवी के मध्य में एक आशीष होगा वुह
२५ मिसर और असूर के संग तीसरा गिनाजायगा। जिन्हें

सेनाओं के परमेश्वर ने यह कह के आशीष दिया कि मिसर मेरे लोग और असूर मेरे हाथ का कार्य और इसराईल मेरा अधिकार धन्य होवे।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ जिस बरस तारतान अशदूद को गया जिधर वुह असूर का राजा सरगून की ओर से भेजागया और उसने अशदूद
२ से लड़ाई करके उसे लेलिया। उस समय में परमेश्वर ने आमूस के बेटे आशिया की ओर से यों कहा कि जा और टाट का वस्त्र अपनी कटि से दूर कर और अपने पांओं से जूता उतार और उसने ऐसाही किया कि वुह नग्न और नंगे
३ पांव फिराकिया। और परमेश्वर ने कहा कि जिस रीति से मेरा सेवक आशिया नग्न और नंगे पांव तीन बरस लों फिराकिया जिसतें मिसरियों के और कोशके लिये लक्षण
४ और चिह्न हो। इसी रीति से असूर का राजा मिसर के बंधुओं को और कोश के बंधुओं को उनके तरुणों और दृद्धों को नग्न और नंगे पांव और उनके पुट्ठेलों उघारे हुए
५ मिसरियों की लज्जा के लिये लेजायगा। और वे डरेंगे और कोश से जिनका वे भरोसा करतेथे और मिसर से जो उनके
६ विभव थे लज्जित होंगे। और उस दिन इस देश के बासी कहेंगे कि देख हमारे कैसे आश्रय थे कि हम शरण के लिये उन पास भागे कि हम असूर के राजा के आगे से बच निकलें सो अब हम किस रीति से बचेंगे।

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

समुद्र के अरण्य के विषय का वचन।

१ जिस रीति से कि दक्षिण की आंधी प्रचंडता से उठी चली आतीहै उसी रीति से एक भयंकर देश से अर्थात अरण्य से

२ वुह आताहै। एक भयंकर स्वप्न मुझ पर प्रकाश हुआ लुटेरा लूटागया और नाशक नाश हुआ हे ईलाम चढ़जा और हे
३ मदिआ़ घेरले मैं ने उसके सारे दुःखों को मिटादिया। सो मेरी कटि में टीस है जैसा कि जन्ने के समय में स्त्री को पीर लगतीहै इसी रीति से पीड़ा ने मुझे धर रक्खाहै मैं यहां लों ऐंठगयाहों कि सुन नहीं सक्ता और घबरागयाहों कि देख
४ नहीं सक्ता। मेरा मन घबराया हुआहै और डर ने मुझे भड़कायाहै सांझ को जिसका मैं लालसिक था उसने भयंकर
५ करदिया। मंच बिछायागया चौकी बैठाईगई वे खातेहैं और
६ पीतेहैं उठो हे अध्यक्षो ढाल पर तेल मलो। क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यों कहाहै जा ठिकाने में पहरू बैठा कि जो कुछ वुह
७ देखे तुझे संदेश दे। और उसने एक रथ और दो रथी देखा एक तो गदहे पर चढ़ा था और दूसरा ऊंट पर और
८ उसने अत्यंत ध्यान से यत्न करके ताका। और उसने जो पहरे पर देखताथा पुकारा कि हे मेरे प्रभु मैं अपने ठिकाने पर दिनभर हों और मैं रात रात अपने स्थान पर बना रहा।
९ और देख उन दो चढ़वैयों में से एक मनुष्य आताहै और कहताहै बाबुल गिरपड़ा गिरपड़ा और उसके देवों की सारी
१० खोदी हुई मूरतें भूमि पर तोड़ीगईं। हे मेरे झाड़ना और हे मेरे अनाज की ढेर जो कुछ मैं ने इसराईल के ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर से सुना सो मैं ने तुझ से कहदिया।

अदूम के विषय का वचन।

११ साईर से शब्द मुझे पुकारताहै कि हे पहरू रात का क्या
१२ समाचार हे पहरू रात का क्या समाचार। पहरू ने उत्तर दिया कि बिहान होताहै और रात भी यदि तुम पूछतेहो तो पूछो फिर आओ।

अरब के विषय का वचन।

१३ हे दीदानी यात्रिको तुम सांझ को बन में रहोगे।

१४ हे दक्षिण देश के बासियो बढ़ के पियासे के लिये पानी लाओ
१५ भागेहुए के लिये रोटी लेके निकलो। क्योंकि वे खड्ग के डर से और नंगे खड्ग से और चढ़ाये हुए धनुष से और युद्ध के कष्ट
१६ से भागे। क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यह कहा कि बनिहार के बरसों के समान एक बरस के भीतर केदार का सारा बिभव
१७ जातारहेगा। और धनुषधारी बीरलोग जो बचेहुए हैं केदार के पुत्रों में से घटजायेंगे क्योंकि परमेश्वर इसराईल के ईश्वर ने यों कहाहै।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

दर्शन के अरण्य के बिषय का वचन ।

१ अब तुझे क्या हुआ जो तेरे सारे बासी छतों पर चढ़गये।
२ अरे तू जो कोलाहल से भरा हुआथा हे दंगइत नगर हे आनंदित बस्ती तेरे जूझेहुए खड्ग से नहीं जूझगये न वे युद्ध में
३ मरगये। परन्तु तेरे सारे नायक एकसाथ निकल गये वे धनुष से भागगये जितने तुझ में थे सब के सब भागगये वे दूर निकल
४ गये। इसी लिये मैं ने कहा कि मुझसे फिरजाओ मैं बिलख बिलख के रोऊंगा मुझे शांति देने की चिंता मत कर क्योंकि मेरे लोगों की बेटी के उजाड़ के लिये मुझे शांति देने की चिंता न कर।
५ क्योंकि यह बिपत्ति का और रौंदने का और घबराहट का दिन है दर्शन के अरण्य में प्रभु सेनाओं के ईश्वर की भीत तोड़ने का
६ और पहाड़ में हाहाकार होने का दिन है। ईलाम तूण धारण करताहै सुरियानी रथों और घोड़चढ़ों के साथ आता है और
७ कीर ढाल को उघारताहै। और ऐसा होगा कि तेरी चुनीहुई नीचाई रथों से भरजायेगी और घोड़चढ़े फाटक के सन्मुख
८ परे बांधेंगे। और यहूदा का बाड़ा खोल दियाजायगा और
९ तू उस दिन बन के हथियार स्थान की ओर दृष्टि करेगा। और दाऊद के नगर के दरारों को देखोगे कि वे बहुत हैं और

१० तुम नीचे के पोखरे के पानी एकट्ठा करोगे। और तुम यिरोशलीम के घरों को गिनोगे और तुम घरों को ढ़ादोगे कि
११ उस भीत को दृढ़ करो। तुम प्राचीन पोखरे के पानियों के लिये दो भीतों के मध्य में एक खाईं बनाओगे परन्तु तुम उसके कर्त्ता का ओर नहीं देखते हो और जिसने प्राचीन
१२ समय से उसे बनाया है उसे नहीं सोचते। और उस दिन प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने बिलाप और हाहाकार के लिये और सिर मुड़ाने और टाटका पटूका बंधवाने के लिये
१३ पुकारा। परन्तु देखो कि आनंद और आल्हाद और गाय बैल को बध करना और भेड़ बकरी को मारना मांस खाना और मदिरा पीना कि आओ खा पीलें क्योंकि कल तो हम मरेंगे।
१४ और सेनाओं के परमेश्वर का शब्द मेरे कान में प्रकाश हुआ कि निश्चय तुम्हारे इस कुकर्म का प्रायश्चित्त न होगा जब लों न मरो प्रभु सेनाओं का ईश्वर यों कहता है।

१५ प्रभु सेनाओं का ईश्वर यों कहता है कि जा और इस भंडारी अर्थात शबना पास जो घर पर ठहरायागया है जा
१६ और उसे कह। अरे तू जो अपने लिये ऊंचाई पर समाधि खोदता है और अपने लिये पर्वत में निबास खोदता है तेरा
१७ यहां क्या है और तेरा यहां कौन है। देख परमेश्वर तुझे निकाल फेंकेगा वुह बल से तुझे बाहर फेंकके निश्चय तुझे ढांपेगा।
१८ वुह निःसंदेह तुझे गेंद के समान घुमा घुमा के चौड़े देश में निकाल फेंकेगा वहीं तू मरेगा और वहां तेरे बिभव के रथ
१९ तेरे स्वामी के घर की लाज होजायेंगी। और मैं तुझे तेरे ठिकाने से हांक दूंगा और तेरे पद से तुझे उलट डालोंगा।
२० और उस दिन ऐसा होगा कि मैं अपने सेवक हलक़िया के
२१ बेटे इलियाक़ीम को बुलाओंगा। और मैं तेरा बस्त्र उसे पहिनाऊंगा और तेरे पटुके से उसे दृढ़ करोंगा और तेरा राज्य उसके हाथ में सौंपोंगा और वुह यिरोशलीम के बासियों

२२ और यहूदा के घराने का पिता होगा। और मैं दाऊद के घर की कुंजी उसके कांधे पर धरोंगा सो वुह खोलेगा और कोई बंद न करेगा और वुह बंद करेगा और कोई न खोलेगा।
२३ और मैं उसको कील की नाईं निश्चिंत स्थान में दृढ़ करोंगा और
२४ वुह अपने पिता के घर के लिये एक महिमा का बैठक होगा। और वे उसके पिता के घराने का सारा बिभव और छोटे बड़े पद के वंश हरएक पात्र कटोरों से लेके भांति भांति के तुच्छ
२५ पात्रों को उस पर लटकावेंगे। सेनाओं का परमेश्वर कहताहै कि उस दिन वुह कील जो निश्चिंत स्थान में दृढ़ कियागयाहै हिलायाजायगा और काटाजायगा और गिरपड़ेगा और उस पर का भार गिरजायगा क्योंकि परमेश्वर ने कहा है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

सूरके बिषय का बचन ।

१ हे तारशीश के जहाज़ो बिलाप करो क्योंकि वुह सर्वथा भीतर
२ बाहर नष्ट ऊई कतीम के देश से उन पास संदेश पऊंचा। हे समुद्रतीर के बासियो चुपरहो सैदून के उन बैपारियों ने जो
३ समुद्र पार जातेहैं तुझ में भीड़ किया। और पानियों की बऊताई से नील नदी के बीज ऊगते और नदी का लाभ
४ उसका कर है सो वुह देशियों का व्यापार स्थान ऊई। हे सैदून तू लज्जित हो कि समुद्र और समुद्र का दृढ़ गढ़ यह कहके बोला मैं ऐसा हों जैसा कि पीर न उठायेहों और पुत्र न जनेहों जैसा कि मैं तरुणों को न पालेहों और कुंआरियों
५ को शिक्षा न दियेहों। यह संदेश मिसर को पऊंचतेही वे
६ सूरके संदेशों से अति पीड़ित होंगे। तुम तारशीश पार उतर
७ जाओ हे समुद्रतीर के वासियो बिलाप करो। क्या यही तुम्हारा जय नगर है जिसकी प्राचीनता आदि से है उसीके
८ पांव उसको लेजाके दूर बसावेंगे। किसने सूर के बिरोध में

यह ठहराया किसने मुकुटों को बांटदियाहै और जिसके
९ ब्यापारी राजपुत्र थे और जिसके बणिज भूपति थे। सेनाओं
के परमेश्वर ने यह मंत्र दियाहै कि सुन्दरता के सारे
अभिमान को अशुद्ध करे और पृथिवी के सारे भूपतिन को
१० निंदित करे। हे तारशीश की बेटी अपने देश से नदी के
११ समान बढ़जा क्योंकि और बल न रहा। उसने समुद्र पर
अपना हाथ बढ़ाया उसने राज्यों को हिलादिया परमेश्वर
ने किनान के बिषय में आज्ञा किईहै कि उसके दृढ़ स्थानों को
१२ ढावें। और उसने कहा कि तुम फिर आनंदित न होओगी
और हे सैद्दन की कुवांरी नष्ट कन्या उठ पार कतीम को जा
१३ कि वहां भी तू चैन न पावेगी। कलदानियों के देश को दख ये
लोग कुछ गिनती में न थे जबतांईं कि असूरानियों ने उसे बन
बासियों के लिये न बसाया उन्होंने उसके पहरे के गर्गज बनाये
१४ उन्होंने उसके भवन उठाये उन्होंने उसे नष्ट किया। हे तारशीश
के जहाज़ो बिलाप करो क्योंकि तुम्हारा दृढ़ गढ़ नष्ट ऊआ।
१५ और उस दिन ऐसा होगा कि सूर एक राजा के समय के
समान सत्तर बरस लों चेत में न आवेगा और सत्तर बरस के
१६ पीछे सूर ऐसा गायेगा जैसा बेश्या गातीहै। हे बऊत दिन
की भूलीऊई बेश्या बीणा उठा ले नगर में फिर युक्ति से बीणा
१७ बजा और बऊत गान कर कि तू फेर चेत किईजाय। और
सत्तर बरस के पीछे ऐसा होगा कि परमेश्वर सूर पर दृष्टि
करेगा और वुह अपने लाभ के ब्यवहार को फेर करनेलगेगी
और जगत के सारे राज्यों से जो पृथिवी पर हैं बेश्या का कर्म
१८ करेगी। परन्तु उसके ब्यापार का फल और उसकी खरची
परमेश्वर के लिये पवित्र होगी वुह ढेर न कियाजायगा और
न वुह भंडार में रक्खा जायगा क्योंकि उनका वाणिज्य उनके
लिये होगा जो परमेश्वर के समीपी हैं कि परिपूर्ण भोजन
और टिकाऊ बस्त्र के लिये होवे।

२४ चौवीसवां पर्व्व ।

१ देखो परमेश्वर देश को छूछा और उजाड़ करताहै और
२ उलटताहै और उसके बासियों को बिथराताहै। और ऐसा
होगा कि जैसी लोगों की तैसी याजक की जैसी दास की तैसी
उसके स्वामी की जैसी दासी की तैसी उसकी स्वामिनी की जैसी
गाहक की तैसी बेचवैये की जैसी धनिक की तैसी उधारनिक की
३ जैसी ब्याजग्राहक की तैसी ब्याजदायक की दशा होगी। देश
सर्वथा छूछा कियाजायगा और सर्वथा लूटाजायगा क्योंकि
४ परमेश्वर ने यह बचन कहाहै। देश बिलाप करताहै और
मुरझाजाताहै जगत गलाजाताहै और मुरझाजाताहै देश के
५ अहंकारी लोग गलजातेहैं। देश भी अपने बासियों के नीचे
अशुद्ध ज़आ क्योंकि उन्होंने ब्यवस्थों को उलंघन किया और
ठहरायेज़ए को पलटडाला और अनंत बाचा को भंग किया।
६ इस लिये स्राप ने देश को निंगल लिया इस कारण कि उसके
बासी अपराधी ज़ए इस लिये कि देश के बासी नष्ट ज़ए और
७ उसमें थोड़े मनुष्य बचरहे। नया दाखरस रोताहै दाख
कुम्हलाताहै सारे आनंदित अंतःकरण हाय हाय करतेहैं।
८ मृदंग का आनंदित शब्द होचुका जय का शब्द जातारहा बीणा
९ का आनंदित शब्द होचुका। अब वे गागा के दाख रस न
१० पीवेंगे जो ताड़ी पीतेहैं उनके लिये वुह कड़वी होगी। नगर
टूट के उजड़गया हरएक घर रुकगया यहां लों कि कोई
११ भीतर जा नहीं सक्ता। सड़क में दाख रस के लिये कलकल
होरहाहै सारी आनंदता बीतगई सारे देश का आनंद
१२ दूर कियागया। नगर उजड़ पड़ाहै और बड़े कोलाहल
१३ से फाटक ढायेगये। देश के मध्य में लोगों के बीच
ऐसा होगा जैसे जलपाई के वृक्ष का झकोरना और दाख के
१४ बटोरने के पीछे का बीनना। परन्तु ये अपना शब्द उठा के
गावेंगे और वे जल में से परमेश्वर के महिमा का शब्द करेंगे।

१५ सो तुम दूर के सिवाने से परमेश्वर की महिमा करो समुद्र के दूर सिवानें में इसराईल के ईश्वर परमेश्वर के नाम की स्तुति
१६ करो। देश के अत्यंत सिवाने से हमने गान सुनाहै कि धर्मी धन्य हैं परन्तु मैं ने कहा हाय मेरी दुर्गति मेरी दुर्गति मुझ पर संताप है लूटेरों ने लूटा हां लुटेरे अति लूट पाट
१७ किये चलेजातेहैं। हे देश के बासी तुझ पर भय और
१८ गड़हा और जाल हैं। और ऐसा होगा कि जो डर से भागेगा सो गड़हे में गिरेगा और जो गड़हे से बच निकलेगा सो जाल में फंसेगा क्योंकि ऊपर से बाढ़ के फाटक खुलगये और
१९ पृथिवी की नेवें थर्थरातीहैं। देश अत्यंत हिलायागयाहै देश सर्वथा टुकड़ा टुकड़ा होगया देश अपने स्थान से बल से
२० सरकायागया। देश मतवाले की नाईं इधर उधर डगमगाताहै और रात भर की झोंपड़ी की नाईं हिलताहै क्योंकि उसकी बुराई उसे दबा रही है वुह गिरेगा और फेर न उठेगा।
२१ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर महानों की सेना को ऊपर और पृथिवी के राजाओं को पृथिवी
२२ पर पलटादेगा। और वे गड़हे के लिये गठरी की नाईं बटोरेजायेंगे और चौकसी से बंदीगृह में बांधे जायेंगे
२३ और बहुत दिनों के पीछे उनकी खोज होगी। तब चंद्रमा घबराजायगा और सूर्य लज्जित होगा क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर सैहून के पहाड़ पर और यिरोशलीम में राज्य करेगा और वुह अपने प्राचीनों के आगे महिमा पावेगा।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

हे परमेश्वर तू मेरा ईश्वर है मैं तेरी बड़ाई करोंगा मैं तेरे नाम की स्तुति करोंगा क्योंकि तू ने आश्चर्यित कार्य किये हैं तेरे पुरातन मंत्र और प्रतिज्ञा अचलता से सत्य हैं। क्योंकि तू ने

नगर का एक ढेर कररक्खाहै और दृढ़ कियेगये गढ़ को एक उजाड़ अहंकारियों के सदन को ऐसा किया कि बस्ती न रही
३ कि वुह फिर बनाया नजाय। इस कारण दुर्जन लोग तेरी स्तुति करेंगे और भयंकर जातिगणों का नगर तुझे डरेगा।
४ क्योंकि तू दरिद्रों का बचाव हुआ और विपत के समय में अधीन का बचाव और आंधी से शरण और घाम से छाया जिस समय कि भयंकर लोगों के क्रोध आंधी के समान भीत
५ पर चले। परदेशियों के हुल्लर को तू यों उतार देगा जैसे झोंसेहुए देश पर का घाम और तू भयंकर के जय जय को
६ ऐसा नीचा करेगा जैसा गाढ़े मेघ से घाम को। और सेनाओं का परमेश्वर इस पहाड़ में सारे लोगों के लिये पुराने दाख रस और उत्तम भोजन से नेउता करेगा हां पुरातन और निर्मल दाख रस के साथ अत्युत्तम और सुथरे
७ भोजन से नेउता करेगा। और वुह इस पहाड़ पर उस ओट को जो सारे जातिगणों पर पड़ाहै और उस घूंघट को जो सारे
८ देशियों के ऊपर फैलाहै नाश करेगा। वुह मृत्यु को सर्वथा नाश करेगा और परमेश्वर ईश्वर सभों के मुंह पर से आंसू भी पोंछेगा और अपने लोगों के अपमान को सारी पृथिवी पर
९ से मिटादेगा क्योंकि परमेश्वर ने कहाहै। उस दिन में वे कहेंगे कि देखो यही हमारा ईश्वर है हमने उस पर आशा रक्खीहै उसने हमें बचायाहै यही परमेश्वर है हमने उस पर भरोसा रक्खाहै हम उसकी मुक्ति से आनंद और
१० मगन होंगे। क्योंकि परमेश्वर का हाथ इसी पहाड़ पर चैन देगा और मवाब अपने स्थान में ऐसा झाड़ाजायगा जैसे
११ पुआल गाड़ी के पहिये के नीचे झाड़ाजाताहै। और वुह उनके मध्य में अपने हाथ ऐसा फैलावेगा जैसे डूबता हुआ पैरने को अपना हाथ फैलाताहै परन्तु ईश्वर उसके अहंकार
१२ को उसके हाथों की लूट समेत उतारेगा। और वुह तेरी ऊंची

भीतों की गढ़ी को ढादेगा वुह उन्हें भूमि पर गिरादेगा धूलहीं में मिलावेगा।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ उस दिन यहूदा के देश में यह गीत गायाजायगा कि हमारा एक दृढ़ नगर है मुक्ति को वुह उसके लिये भीत और कोट
२ ठहरावेगा। तुम फाटकों को खोलो और धर्मी लोग जो मन
३ की स्थिरता से सचाई में बनारहाताहै उसमें प्रवेश करे। तू उनको नित्य कुशल में रक्षा करेगा क्योंकि उन्होंने तुझ पर भरोसा
४ रक्खाहै। सर्वदा परमेश्वर पर भरोसा रक्खो क्योंकि प्रभु
५ परमेश्वर में अनंत सामर्थ्य है। वुह ऊंचे स्थान के बासियों को नीचे उतारेगा और ऊंचे नगर को नीचा करेगा वुह उसे भूमि
६ लों उतार के धूल में मिलावेगा। दरिद्रों के पांव हां दीनोंही
७ के पांव उसे लताड़ेंगे। 　　साधुन का मार्ग सर्वथा खरा
८ है तू ने साधुन के मार्ग को समथर कियाहै। हे परमेश्वर हम तेरी व्यवस्था को बाट में तेरे नाम पर विश्वास रखतेहैं हमारे
९ मन में तेरे स्मरण का अभिलाष है। रात को मेरा प्राण तेरा अभिलाष रखताहै हां मैं अपने मनहीं से भोर को तुझे ढूंढ़ताहूं क्योंकि जब पृथिवी पर तेरे न्याय होवें तब जगत के बासी धर्म
१० सीखेंगे। यद्यपि कि दुष्ट पर दया दिखाई जावे तथापि वुह धर्म न सीखेगा वुह धर्महीके देश में उलटा चलेगा और
११ परमेश्वर के महिमा को न मानेगा। हे परमेश्वर जब तेरा हाथ उठायाजायगा तब भी वे न देखेंगे परन्तु तेरे ताप को तेरे लोगों के कारण वे घबराहट से देखेंगे आग तेरे शत्रुन को भस्म
१२ करदेगी। 　　हे परमेश्वर तू हमारे लिये कुशल ठहरायेगा क्योंकि तूहीं ने हमारे सारे सामर्थी कार्यों को हमारे लिये
१३ कियाहै। हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तुझे छोड़ औरहां बहुतसे प्रभु हम पर प्रभुता करतेथे परन्तु हम अब से केवल

१४ तेरे हां तेरेही नाम की बड़ाई करेंगे। वे मरगये वे न जीयेंगे वे मृतक अंधेरी हैं वे न उठेंगे इस लिये तू ने उनके पास जा के उन्हें नाश किया और तू उनके स्मरण की वस्तु को मिटा
१५ डालेगा। हे परमेश्वर तू ने लोगों को बढ़ाया तू ने लोगों को बढ़ाया तू ऐश्वर्यमान है तू ने देश के सारे सिवाने को बढ़ाया।
१६ हे परमेश्वर हम ने कष्ट में तुझे ढूंढ़ा है और जब तेरा दंड
१७ हम पर पड़ाथा हम ने दीनताई से प्रार्थना किई। जैसे कि गर्भिणी स्त्री जिसके जन्ने के दिन पड़ंचे पीड़ा में है और अपनी पीड़ा में चौखेंमारती है तैसे हे परमेश्वर हम तेरे आगे
१८ ऊएहैं। हम गर्भवती ऊएहैं हम पीड़ित ऊएहैं पर हम ऐसा जैसा पवन जन बैठे देश में मुक्ति नहीं बनी और न जगत के
१९ वासी पतित ऊए। तेरे मृतक जी उठेंगे मेरी लोथ समेत वे उठ खड़ेहोंगे तुम जो धूल में रहतेहो जागो और गाओ क्योंकि तेरी ओस प्रातःकाल की ओस की नाईं है और पृथिवी अंधेरी मृतकों को गर्भपात की नाईं उछाल देगी।
२० हे मेरे लोग अपने एकांत की कोठरियों में प्रवेश कर और पीछे से अपने द्वार मूंदले और आपको थोड़े लों क्षणमात्र
२१ छिपा यहां लों कि जलजलाहट बीतजाय। क्योंकि देखो परमेश्वर अपने स्थान से निकल आताहै कि पृथिवी के वासी को उनके अपराध का दंड देवे और पृथिवी अपने ऊपर के लोह्न को प्रगट करेगी और अपने जूझेऊओं को फिर न ढांपेगी।

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

१ उस दिन परमेश्वर अपने खड्ग से अपने तेजस्वी महा दृढ़ खड्ग से उस लवियातान को जो बलवान नाग है अर्थात उस लवियातान को जो पेचीला सर्प है दंड देगा और समुद्री कुम्भीर को मार
२ डालेगा। उस दिन तुम प्रिय दाख की वाटिका दया के विषय

३ में प्रश्नोत्तर गान करो। मैं परमेश्वर उसका रक्षक हों मैं उसे पल पल सींचोंगा मैं रात को उसकी रक्षा करोंगा और
४ दिन को उसकी चौकसी करोंगा। मेरे बचाव के लिये भीत होय कि मेरे लिये कांटा और सदा गुलाब का बाड़ा होता मैं लड़ाई में उनका सामना करता और उन्हें एकट्ठे जलादेता।
५ वुह ऐसा करे कि मेरे शरण को गहे मुझे मिलाप करे हां वुह
६ मुझे मिलाप करे। वे जो याक़ूब की जड़ से निकलतेहैं लहलहावेंगे और इसराईल में कोंपलें निकलेंगी और वे जगत
७ को फल से भरदेंगे। क्या उसने उसे ऐसा मारा जैसा आप अपने घातकों को मारताहै और अपने घातकों के
८ समान क्या आप घात ज़ुआ। जब तू मारताहै सोच बिचार के साथ हां प्रचंड़ आंधी में और पुरवा पवन के दिन में उचित
९ परिमाण में तू उनसे बिवाद करेगा। सो इसी रीति से याक़ूब के पाप का प्रायश्चित्त कियाजायगा और वुह यों अपने पाप के मिटने का फल पावेगा यदि वुह यज्ञबेदी के सारे पत्थरों को ऐसा करदेगा जैसे चूने के बिथरे ज़ुए पत्थर और यदि कुंज
१० और मूर्ति फेर स्थापित न होवें। परन्तु वुह दृढ़ कियागया नगर उजाड़ और त्यक्त बस्ती और शून्य बन होगा वहां बैल चरेगा और लेट रहेगा और उसकी कोमल टहनीयों
११ को चराकरेगा। जब उसकी डालें मुरझाजायेंगी तब तोड़ी जायेंगी स्त्री आयेंगी और उन्हें जलायेंगी निश्चय निर्बुद्धि मंड़ली है इस लिये जिसने उसे सिरजा वुह उन पर दया न करेगा और जिसने उन्हें निर्म्माण किया वुह उस पर क्षपा न करेगा।
१२ उस समय में ऐसा होगा कि परमेश्वर नदी के बाढ़ से लेके मिसर की धारा तांईं उसके फल को झड़झड़ायेगा और हे
१३ इसराईल के संताना तुम एक एक करके बीनेजाओगे। और उस दिन ऐसा होगा कि बड़ा नरसिंगा फूंकाजायगा और असरिया के देश के मरणीय और मिसर देश के छिन्नभिन्न

आवेंगे और यिरोशलीम के पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर को दंडवत करेंगे।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

१ अफराईम के मतवालों के अहंकार के मुकुट को और उनके तेजस्वी सुन्दरता के मुरझायेहुए फूल को और जो फलवंत अरख्य के सिरे में हैं जो दाखरस से उनमत्त हैं उनको धिक्कार २ है। देखो पराक्रमी और अति बलवान ओले की आंधी की नाईं और नाशक प्रचंड बायु की नाईं और महा पानियों के बाढ़ की धारा गिरने की नाईं अपने हाथ से उन्हें भूमि पर पटक ३ देगा। वे अफराईम के मतवालों के अहंकारी मुकुटों को पांव ४ तले लताड़ेंगे। उनके तेजस्वी उनकी सुन्दरता के मुरझाये हुए फूल को जो फलवंत बन के सिरे पर है ऐसा होगा जैसे ग्रीष्म के आगे का फल कि जो कोई उसे देखताहै तुरंत तोड़लेताहै ५ और वुह हाथ में लेतेही उसे निगलजाताहै। उस दिन परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर अपने बचेहुए लोगों के लिये सुन्दर ६ मुकुट और तेजस्वी किरीट होगा। और न्यायियों के लिये न्याय का आत्मा और उनके लिये जो फाटकों से लड़ाई हटा ७ देतेहैं बल होगा। परन्तु येभी दाखरस के कारण भ्रमे वे मद्यपान के कारण से डगमगाये याजक और भविष्यद्वक्ता मद्यपान करके भ्रमे वे दाखरस के बश में पड़े वे मद्यपान के कारण डगमगाये वे दर्शन में भ्रमें वे बिचार में ठोकर खाये। ८ क्योंकि उनके सारे मंच छांड़ और मल से भरे हुएहैं यहां लों ९ कि कोई स्थान निर्मल नहीं। वे कहतेहैं वुह किसको ज्ञान सिखाताहै और किसको उपदेश पहुंचाताहै क्या उनको जिनका दूध छुड़ायागया और जो स्तन से अलग कियेगये। १० क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा है आज्ञा पर आज्ञा पांती पर पांती ११ पांती पर पांती थोड़ा यहां और थोड़ा वहां। हां निश्चय

तुतले होंठों से और पर भाषा से वुह इन लोगों से बोलेगा।
१२ क्योंकि जब उसने उन्हें कहा कि यह सत्य बिश्राम है सो थके
हुओं को बिश्राम देओगे और यही सुस्ताना है उन्होंने न सुना।
१३ इस कारण परमेश्वर का बचन निश्चय उनके लिये आज्ञा पर
आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा पांती पर पांती पांती पर पांती थोड़ा
यहां थोड़ा वहां होगा कि वे बढ़जावें और पीछे गिरपड़ें और
१४ टूटें और जाल में फसें और पकड़ेजायें। सो हे निंदको जो
यिरोशलीम के लोगों पर राज्य करतेहो परमेश्वर का बचन
१५ सुनो। इस लिये कि तुम ने तो कहाहै कि हमने मृत्यु से बाचा
बांधाहै और हमने समाधि से नियम कियाहै और जब मरी
की बाढ़ आरंपार जायगी तो वुह हम लों न पहुंचेगी क्योंकि
हम ने झूठ को अपना शरण कियाहै और हम ने आप को छल
१६ के नीचे छिपायाहै। सो प्रभु ईश्वर यों कहताहै कि देखो
मैं सैहून में नेंव के लिये एक पत्थर रखताहूं एक परीक्षित पत्थर
एक कोने का बहुमूल्य और अटलस्थिर पत्थर वुह जो उस पर
१७ भरोसा रखताहै व्याकुल न होगा। और मैं न्याय को शलाका
से नापोंगा और साहुल से नीति को परखोंगा और झूठ के
आश्रय को ओला बहा लेजायगा और छिपने के स्थान को जल
१८ डुबादेंगे। और तुम्हारी बाचा जो मृत्यु से है तोड़ीजायगी
और तुम्हारा नियम जो समाधि से है न ठहरेगा और जब
मरी की बाढ़ आरंपार जायगी तब तुम उसके नीचे मारे
१९ जाओगे। वुह आरंपार जातेहीं तुम्हें पकड़लेगी हां प्रातःकाल पर
प्रातःकाल रात और दिन आरंपार जायगी हां उसका केवल
२० संदेश भय दिलावेगा। क्योंकि खाट ऐसा छोटा है कि कोई
उस पर अपने डील को फैला नहीं सक्ता और ओढ़ना ऐसा सकेत
२१ है कि कोई उस्से आप को ढांप नहीं सक्ता। कि परमेश्वर ऐसा
उठेगा जैसा परासीम के टीले पर जैसा जबियून की तराई में
था तैसा वुह क्रोध से जगेगा कि वुह अपना कार्य अपना अनोखा

२२ कार्य करे और अपना कार्य करे अपना आश्चर्यित कार्य। सो अब तुम ठट्ठेलू न बनो न होवे कि तुम्हारे दंड बढ़जायें क्योंकि मैं ने ईश्वर परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर से पूरी और दृढ़ आज्ञा
२३ सारी भूमि पर सुनीहै। तुम कान धरो और मेरा
२४ शब्द सुनो ध्यान करो और मेरी कथा सुनो। क्या किसान बीज बोने के लिये प्रतिदिन हल जोताकरताहै और वुह
२५ अपने खेत के ढेले फोड़ाकरताहै। और जब उसको समथर करचुका तब क्या वुह तिल और जीरा नहीं छींटता और गोहूं परिमाण से नहीं बोता और जव और उरिद अलग अलग
२६ उनके उनके ठिकाने में नहीं बोता। क्योंकि उसका ईश्वर उसको ठीक रीति से सिखाताहै और वुह उसे ज्ञान देताहै।
२७ कि तिल को दावने की वस्तु से नहीं दावता और जीरे के ऊपर गाड़ी का चक्र नहीं घुमाता परन्तु तिल को लाठी से
२८ पीटता है और जीरे को छड़ी से। रोटी के अन्न पर दौंरी चलाताहै परन्तु वुह उसे सदा नहीं पीटतारहता और अपनी गाड़ी के चक्र से उसे रौंदा नहीं करता और पशु के खुर से
२९ उसे नहीं कुचला करता। यहभी परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर से निकलताहै वुह अपने को मंत्र में आश्चर्यित और कार्य में महान दिखाताहै।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

१ आरिएल पर आरिएल नगर पर जिसे दाऊद ने घेर लियाथा धिक्कार बरस बरस मिलायेजाओ पर्ब क्रम क्रम से
२ आयाकरेगा। तथापि मैं आरिएल पर विपत्ति लाओगा वहां रोदन और उदासी नित्य हुआ करेंगी और वुह मेरे लिये बड़ी
३ यज्ञबेदी के चुल्हे की नाईं होगा। मैं तेरे सन्मुख दाऊद की नाईं छावनी करूंगा और गढ़ बना के तुझे सेनाओं से घेरोंगा
४ और तेरे बिरोध में गढ़ बनाओंगा। और तू नीचे उताराजायगा

और तू जैसा कि माटी के नीचे से बोलेगा और धूलि में से तू धीमी बोली उच्चारेगा और तेरा शब्द भूमि में से टोनहे कासा निकलेगा और तेरा बचन धूलि में से सूक्ष्म पतला शब्द देगा।
५ परन्तु अहंकारियों की मंडली सूक्ष्म धूलि की नाईं होजायगी और भयानक की मंडली उड़ती भूसी की नाईं होगी हां
६ यह क्षणमात्र में होजायगा। सेनाओं के परमेश्वर से गर्जन और भूमिकंप और सामर्थी शब्द और आंधी और झक्काड़ और भस्मक आग की लवर के संग तुझ पर अचानक दंड
७ आपडेंगे। और स्वप्न और रात्री के दर्शन की नाईं सारे देशगणों की मंडली पर जो अरिएल से लड़ेगी और उनकी सारी सेनाओं पर और उनके गढ़ों पर और जो उसे
८ सतातेहैं ऐसाही होगा। जैसा कि जब भूखा मनुष्य स्वप्न में देखताहै कि आप खाताहै परन्तु जाग उठताहै और उसकी भूख जैसी की तैसी रहती है अथवा जैसा पियासा मनुष्य स्वप्न देखताहै कि आप पीता है परन्तु जागतेही वुह दुर्बल और पियासे का पियासा बना रहताहै तैसा सारे जातिगणों की मंडली पर जो आप को सैहून के पहाड़ के बिरोध में परे
९ बांधतीहै होगा। और वे मूर्छित ऊए और आश्चर्यित होके खड़े रहे वे निर्बुद्धि की नाईं तकरहे वे मतवाले हैं परन्तु
१० दाख रस से नहीं वे डगमगातेहैं परन्तु तीक्ष्ण मदिरा से नहीं। कि परमेश्वर ने तुम पर भारी नींद का आत्मा उंडेला है और तुम्हारी आंखें बंदकियां और तुम्हारे भविष्यद्वक्तों और
११ अध्यक्षों और दर्शियों की आखों पर पट्टी बांधी। यहां लों कि सारे दर्शन तुम्हारे लिये छाप से बंद कियाऊआ होगा जैसे पुस्तक के बचन के समान है जिसे यदि लोग एक पढ़ेगुने को यह कह के देवें कि आप इसे पढ़िये वुह उत्तर देवे कि मैं इसे पढ़
१२ नहीं सक्ता क्योंकि ऊपर छापा किया ऊआहै। अथवा यदि वुह पोथी एक अक्षर से अपरिचित को देवे और कहे कि इसे

१३ पढ़िये और वुह कहे कि मैं अक्षर से अपरिचित हों। सो परमेश्वर ने कहा है जैसा कि ये लोग अपने मुंह से मेरे पास आते हैं और अपने होठों से मेरी प्रतिष्ठा करते हैं जबलों उनके मन मुझ से दूर हैं परन्तु मनुष्यों की आज्ञाओं को चिताके मेरा
१४ भय उनमें वृथा है। सो देखो मैं उन लोगों के मध्य में एक बड़ा आश्चर्यित और अचंभित कार्य करोंगा कि बुद्धिमानों की बुद्धि नाश होजायगी और पंडितों की पंडिताई लुप्त होजायेगी।
१५ धिक उन पर है जो अपने गुप्त अभिप्रायों से परमेश्वर से भी गहिरे हैं जिनके कार्य अंधकार में हैं और जो कहते हैं कौन
१६ हम को देखता है और कौन हमें जानता है। जैसाही तुम लोग मूढ़ हो क्या कुम्हार मिट्टी की नाईं गिनाजायगा क्या कृत्य कर्त्ता के बिषय में कहेगा कि उसने मुझे नहीं बनाया और क्या निर्माण किईहुई वस्तु निर्माणकर्त्ता के विषय में कहेगी कि
१७ वुह निर्बुद्धि है। कुछ ऐसी अबेर न होगी कि लबनान करमिल के समान होजायगा और करमिल एक जंगल की नाईं
१८ दिखाईदेगा। तब बहिरे पुस्तक की बातें सुनेंगे और अंधों की आखें जो आगे अंधियारे और मेघों से ढांपीहुईथीं देखेंगी।
१९ और कोमल अपने आनंद को परमेश्वर में बढ़ावेगा और दीन
२० इसराईल के धर्ममय में आह्लादित होंगे। क्योंकि भयानक जन घटगये और ठट्ठेलू न रहा और सारे जो कुकर्म में चौकस
२१ थे सर्बथा काटडालेजायेंगे। जो बातों में दरिद्रों को बगदातेथे और जो फाटकों में प्रश्नोत्तर करताथा उसके लिये फंदा
२२ लगाया और झूठ से धर्मी को उलट दिया। सो परमेश्वर जो इबराहीम का मुक्तिदाता है याकूब के घराने के बिषय में यों कहता है कि याकूब फेर लज्जित न होगा और उसका मुंह
२३ घबराहट से ढांपा न जायगा। परन्तु जब उसके संतान मेरे हाथ के कार्य को देखेंगे तो वे आपुस में मेरे नाम को पवित्र करेंगे और याकूब के धर्ममय को पवित्र मानेंगे और इसराईल

२४ के ईश्वर के आगे थर्थरायेंगे। और वे जो भरमाने के आत्मा से भटकायेगये ज्ञान प्राप्त करेंगे और क्रूर लोग उपदेश पर मन लगावेंगे।

३० तीसवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर कहता है दंगइत बालकों पर संताप है जो परामर्ष बांधते हैं परन्तु मुझ से नहीं और बाचा बांधते हैं परन्तु मेरे
२ आत्मा से नहीं जिसतें पाप पर पाप मिलावें। वे चलनिकलते हैं कि मिसर को उतरजायें कि फरऊन के बल से आप को बली करें और कि मिसर की छाया का भरोसा रक्खें पर उन्होंने
३ मुझ से न पूछा। इस लिये फरऊन का बल तुम्हारी लाज होगी और मिसर की छाया का भरोसा करना तुम्हारी घबराहट।
४ कि उसके अध्यक्ष सोआन में थे और उनके दूत हानीस लों
५ पहुंचे। जिनसे उन्हें कुछ लाभ न हुआ और जो निरुपकार और निर्लाभ थे परन्तु लज्जा और निंदा उनके लिये ठहरी वे
६ सब के सब ऐसे लोगों से लज्जित हुए। उन पशुन के बोझ जो दक्षिण की ओर बिपत और कष्ट के देश से होके यात्रा करते हैं जहां से सिंहिनी और क्रूर सिंह और नाग और अग्नीय उड़वैये सर्प निकलते हैं वे अपना धन तरुण पशुन के कांधों पर और ऊटों की पीठ पर धर के उस मंडली के लिये लेजायेंगे जिस्से
७ उनको कुछ लाभ न पहुंचेगा। क्योंकि मिसर एक बाफ मात्र है वे दृथा सहाय करेंगे सो मैं ने पुकार के कहिदिया है
८ कि उनका बल स्थिर रहने में है। अब जा उनके आगे पटिआ पर लिख और पुस्तक में अक्षरों से टांक रख
९ कि सनातन की साक्षी के लिये रहे। कि यह एक दंगइत मंडली है झूठे लड़के और लड़के जो परमेश्वर की व्यवस्था को सुन्ने
१० नहीं चाहते। जो दर्शकों को कहते हैं कि मत देखो और भविष्यद्वक्तों को कि हम को सच्ची बातों का संदेश मत दो

११ हम से चिकनी बातें करो और झूठा संदेश दो मार्ग से अलग जाओ सीधे पथ से एक ओर जाओ और इसराईल के धर्ममय
१२ को हमारी दृष्टि से उठा दो। सो इसराईल का धर्ममय यों कहता है जैसा कि तुमने इस बचन को दूर किया और अंधेर और उलटाई पर भरोसा रक्खा है और निर्धार उसी पर
१३ आशा किई। इस लिये यह अपराध तुम्हारे लिये ऐसा होगा जैसे एक फूलीऊई और फटीऊई भीत गिरने पर हो जिनकी
१४ बिनाशता अकस्मात पलमात्र में होवे। और वुह ऐसा तोड़ा जायगा जैसे कोई कुम्हार के बर्त्तन को तोड़ता है वुह पटक के चूर करता है और उसे नहीं छोड़ता है यहां लों कि उसके टुकड़ों में से पाई नजावे कि चूल्हे से आग उठावे अथवा कूएं में से पानी
१५ निकालाजावे। कि प्रभु ईश्वर इसराईल का धर्ममय निश्चय यों कहता है कि अपने अपने मार्ग से फिर आने में और चुप के रहन में तुम बचजाओगे चुपके में और भक्ति भरोसे में
१६ तुम्हारा बल होगा पर तुम ने न सुना। परन्तु तुम ने तो कहा कि नहीं परन्तु हम घोड़े पर भागेंगे इस लिये तुम भगायेजाओगे और कि हम चालाकियों पर चढ़ेंगे वे जो तुम्हारा पीछा करेंगे
१७ चालाक होंगे। एक की घुरकी से सहस्र और पांच की घुरकी से दस सहस्र भागेंगे जब लों तुम पर्बत के ऊपर की ध्वजा के समान
१८ और ऊंचे पहाड़ के चिह्न के तुल्य होजाओगे। तथापि इसके लिये परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करने के लिये ताकता रहेगा हां इसके लिये वुह चुपके से बाट जोहेगा कि तुम पर दया करे क्योंकि परमेश्वर न्यायी का ईश्वर है वे सब धन्य हैं
१९ जिनका भरोसा उस पर है। जब पवित्र लोग सैहून में बसेंगे जब तू यिरोशलीम में बिलाप करके उसको बिनती करेगा वुह तेरे रोने का शब्द सुन के तुझ पर बड़ताई से कृपा करेगा
२० वुह सुनतेही तुझे उत्तर देगा। यद्यपि परमेश्वर ने तुम्हें कष्ट की रोटी और दुःख का पानी दिया है तथापि तेरे उपदेशक

तुझ से फेर न निकालेजायेंगे परन्तु तेरी आंखें तेरे उपदेशकों
२१ को देखेंगी। और वह कहतेहुए तेरे कान पीछे से यह बचन
सुनेंगे यही मार्ग है इसी में चल दहिने अथवा बायें मत फिर।
२२ और तुम अपने रूपे की मूर्त्तिन के और सोने की ढालीहुई
प्रतिमा के बस्त्रों को अशुद्ध जानोगे और उन्हें अशुद्ध लत्ते की नाईं
२३ फेंकदोगे और उन्हें कहोगे कि चल मुझ से दूर हो। तब वुह
तेरे बोने के बीज के लिये जल बृष्टि और भूमि के फल की
रोटी देगा और वुह बहुत बढ़ती होगी तब तेरे गोरू फैलाव
२४ चराई में चरेंगे। और तरुण गदहे जो भूमि को जोतते हैं सूप
२५ और चलनी से चालेहुए बिना भूसी के अन्न को खायेंगे। और
महा संहार के दिन में हरएक ऊंचे पहाड़ पर और हरएक
ऊंचे टीले पर जिस समय पराक्रमी गिरजायेंगे झरने और
२६ पानी की धारा होंगी। जिस दिन परमेश्वर अपने लोगों के
दरार को सुधारेगा और उनके मार के घाव को चंगा करेगा
उस दिन चंद्रमा की ज्योति मध्याह्न के सूर्य के समान होगी और
२७ मध्याह्न के सूर्य की ज्योति सतगुण होगी। देखो परमेश्वर
का नाम दूर से चला आताहै और उसका क्रोध बरताहै और
उसकी लवर अत्यंत धधकतीहै उसके होंठ जलजलाहट से
२८ भरेहैं और उसकी जीभ भस्मक आग की नाईं है। उसका
आत्मा बाढ़ की धारा की नाईं वुह गले के मध्यताईं पहुंचेगी कि
देशगणों को बिनाश के छाज से फटकने को आताहै भ्रमावने के लिये
२९ लोगों के दाढ़ में ढाठी होगी। और तुम ऐसा गान करोगे जैसा
पर्ब्ब की रात्री में प्रचार कियाजाताहै मन के ऐसे आनंद से
फूलोगे जैसे कोई परमेश्वर के पर्वत का जो इसराईल का चटान है
३० जाने के लिये बांसुरी के शब्द के साथ साथ जाताहै। परमेश्वर
अपना तेजस्वी शब्द सुनावेगा और वुह जलजलाहट क्रोध से और
भस्मक आग की लवर से प्रचंड आंधी और महा झड़ी और
३१ ओलों से अपने बांह का उतरना दिखलावेगा। क्योंकि परमेश्वर

के शब्द से असूरानी जो अपने लठसे मारने को सिद्ध था मारा
३२ पड़ेगा। और ऐसा होगा कि परमेश्वर उस पर भारी राजदंड मारेगा जब वुह जहां कहीं ताड़ना का दंड जायगा जिसे परमेश्वर बल से उसे लगावेगा सो सारंगी और बीणा के साथ साथ होगा और भयानक लड़ाइयों से वुह उनसे लड़ेगा।
३३ क्योंकि टोफ़टने आरंभ से ठहराया हां राजा के लिये वुह सिद्ध कियागया है उसने उसे गहिरा और चैाड़ा बनाया है उसकी ढेर आमेय और बज़त ईंधन है और परमेश्वर का श्वास गंधक की धारा के समान उसको बारेगा।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

१ उन पर संताप जो सहाय के लिये मिसर को उतर जाते हैं और अपने सहाय के लिये घोड़ों पर भरोसा करते हैं और रथों की बज़ताई पर और बलवंत घोड़चढ़ों पर आशा रखते हैं परन्तु इसराईल के धर्ममय पर दृष्टि नहीं करते और परमेश्वर से
२ परामर्ष नहीं पूछते। परन्तु वुह अपनी बुद्धि से उन पर बुराई लावेगा और अपने बचन को अलग न करेगा परन्तु दुष्टों के घर पर और कुकर्मियों के उपकारियों के बिरोध में उठेगा।
३ क्योंकि मिसरी तो मनुष्य हैं ईश्वर नहीं और उनके घोड़े मांस हैं आत्मा नहीं सो परमेश्वर अपना हाथ बढ़ावेगा और उपकारक गिरपड़ेगा और उपकृत उलटायाजायेगा और
४ सब के सब एकट्ठे नाश होजायेंगे। क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यों कहा है कि जैसा सिंह और तरुण सिंह अपने अहेर पर गर्जता है यद्यपि सारे गड़रियों के जथा उस पर एकट्ठे किये जावें उनके शब्द से वुह न डरेगा न वुह उनके हैारा से दबकेगा तैसा सेनाओं का परमेश्वर सैहून पर्ब्बत के और अपनेही टीले
५ के लिये लड़ने को उतरेगा। जैसा कि पंछियां अपने बच्चों पर मड़राती है तैसा सेनाओं का परमेश्वर रच्छा करते करते

और बचाते बचाते और आगे उछलते उछलते छुड़ाते छुड़ाते
६ यिरोशलीम की रखवाली करेगा। इसराईल के संतानों
७ तुम जिसके विरोध में उलझे हो उसकी ओर फिरो। निश्चय
उसी दिन हरएक मनुष्य अपने रूपे की और सोने की मूर्तों को
जो पाप उन्हीं के हाथों ने बनायेहैं तुच्छ समझ के फेंकदेगा।
८ तब असूरानी एक खड्ग से जो मनुष्य का नहीं है एक खड्ग से
जो मर्त्तव्य का नहीं है उसे नाश करेगा और वुह खड्ग के सन्मुख
से भागनिकलेगा और उसके मनोनीत मनुष्य का वियाव घट
९ जायगा। और वुह भयकेमारे अपने दृढ़ गढ़ के परे भागजावेगा
और उसके भागने से उसके अध्यक्ष भय से घबराजावेंगे
परमेश्वर जिसकी आग सैहून में है और जिसका भट्ठा
यिरोशलीम में है यों कहताहै।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ देखो एक राजा धर्म से राज्य करेगा और राजपुत्र न्याय
२ से प्रभुता करेंगे। और जैसे आंधी में छावनी और बाढ़ में
जैसे आश्रय और जैसे सूखे स्थान में पानियों की बालीयां और
जैसे घाम से झोंसेहुए देश में बड़े पर्वत की छाया तैसा एक
३ मनुष्य होगा। और दर्शकों की आंखें उसे देखेंगी और श्रोता
४ के कान सुनेंगे। अविवेकी का मन भी समझेगा और ज्ञान
प्राप्त करेगा और तोतले की जिह्वा सहज से और खोल के
५ बोलेगी। मूर्ख प्रतिष्ठित न कहलावेगा और कृपण फेर दाता
६ न कहावेगा। क्योंकि मूर्ख मूर्खता उच्चारण किया करेगा और
उसका अंतःकरण बुराई बिचारेगा अर्थात काल्पनिकता किया
करेगा विपरीत से बोला करेगा कि मूर्खों के प्राण को घटादेवे
७ और प्यासों को जल से रोके। कृपण के हथियार भी बुरे हैं वुह
बुरा बिचार बांधताहै कि नम्र लोगों को झूठी बातों से फसावे
८ और कि बिचार में कंगालों की बातों को उलटावे। परन्तु

दाता तो दातृत्व बात विचार करेगा और अपने दान की इच्छा
९ से स्थिर कियाजायगा। हे चैन से बैठीऊई स्त्रियो
उठो मेरा शब्द सुनो हे कन्याओ जो बचाव में बस्ती हो मेरी
१० बातों पर कान धरो। हे निश्चिंत स्त्रियो तुम बरस बरस बेचैन
होओगी क्योंकि दाख का फल घटगया और समेटने का
११ समय न होगा। अरे जो चैन में रहतेहो थर्थराओ हे
निश्चिंत बेचैन हो अपने को उघारो और नंगी होओ और
१२ टाट अपनी कटि पर और छाती पर बांधो। सुन्दर खेत
१३ के लिये और फलवान दाख के लिये बिलाप करो। मेरे
लोगों के देश पर हां सारे आनंदित घरों पर और हर्षित
१४ नगरों पर कांटे और सदा गुलाब छगेंगे। तब ताईं भवन
त्याग कियेजायेंगे और बसा ऊआ नगर उजाड़ छोड़ाजायगा
और पहरे का गढ़ बऊत दिन ताईं मांद और फलवंत खेत
१५ जंगली गदहे का आनंदित और भुंडों की चराई होगा। जब
लों ऊपर से हम पर आत्मा बहाया नजाये और बन फलवंत
१६ खेत न होवे उजाड़ न गिनाजावे। तब न्याय बन में बसेगा और
१७ फलवान खेत में धर्म निवास करेगा। और धर्म का कार्य
कुशल होगा और धर्म का फल सदा का सुख और बचाव
१८ होगा। और मेरे लोग चैनमय भवन में और बचाव के
१९ निवासों में और चैन के स्थानों में निश्चिंत रहेंगे। परन्तु ओले
पड़ेंगे और बन गिरजायेंगे और नगर चौगान के तुल्य समथर
२० होगा। तुम धन्य हो जो अच्छे सींचेऊए स्थान में बोतेहो और
बैल और गदहों के पांव चलातेहो।

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब ।

१ हे नाशक जो आप नाशा न गया और हे लुटेरा जो लूटा न
गयाथा तुझ पर संताप जब तू नाश करने में थकजायगा तू
नाश कियाजायगा जब तू लूटने में थकजायगा वे तुझे लूटेंगे।

२ हे परमेश्वर हम पर दया कर क्योंकि हम तेरा भरोसा रखते हैं तू हरबिहान हमारा बल हो और बिपत में हमारी मुक्ति।
३ तेरे भयानक शब्द से लोग भागे ज्योंहीं तूने आप को उठाया
४ जातिगण छिन्न भिन्न होगये। तेरी लूट ऐसी एकट्ठी किई जायगी जैसे टिड्डी संग्रह करतीहै जैसा कीड़ा इधर उधर दौड़ताहै तैसा
५ वे दौड़के उसे पकड़लेंगे। परमेश्वर महान है हां वुह ऊपर
६ रहताहै उसने धर्म और न्याय से सैहून को भरदिया। बुद्धि और ज्ञान नित्य के त्राण का अधिकार तेरे समय के दृढ़ता
७ होंगे और परमेश्वर का भय तेरी संपत्ति होगी। देख बलवान लोगों ने बिलाप का शब्द कियाहै और मिलाप के
८ दूत बिलख बिलखके रोये। राजमार्ग सुनसान हैं कि यात्रिक नहीं उसने चैनकी बाचा भंग किई उसने देनेके नगरों को
९ तुच्छ जाना वुह किसी मनुष्य को लेखे में नलाया। देश बिलाप करके घटजाताहै लबनान लज्जित होके मुरझाजाताहै शारून तो बन की नाईं है और बाशान और करमिल अपनी सुन्दरता
१० से उतारेगये। परमेश्वर कहताहै कि अब मैं उठोंगा अब मैं
११ आप को ऊपर उठाओंगा अब मैं बढ़ायाजाऊंगा। तुम भूसा का गर्भ धारण करोगे तुम खूंटी जनोगे और मेरा श्वास आग
१२ की नाईं तुम्हें भस्म करेगा। और लोग चूने के समान जलेंगे
१३ और काटेहुए कांटों की नाईं आग में जलायेजायेंगे। अरे ओजो दूर हो मेरी करतूत को सुनो और अरे ओजो समीप
१४ हो मेरे सामर्थ्य को मानलो। सैहून के पापी डर से मारे हुएहैं और भय ने कपटियों को पकड़रक्खाहै कौन हम्में से इस भसक अग्नि को सह सके कौन हम्में से नित्य के जलन में
१५ रह सके। वुह जो सिद्ध धर्म में चलताहै और खरी बातें करताहै वुह जो अंधेर के लाभ को तुच्छ जानताहै और अपने हाथ को घूस से उठालेताहै और हत्या के बिचार से अपने कान मूंद लेताहै और बुराई के रूप से अपनी आंखें मूंदलेताहै।

१६ ऊंचे स्थानों में उसका बास होगा पहाड़ के दृढ़ गढ़ उसके ऊंचे गढ़ होंगे समय में उसको रोटी मिलेगी और उसका जल न
१७ घटेगा। तेरी आंखें राजा को उसकी सुन्दरता में देखेंगी
१८ और अपने देश को दूर फैलेहुए देखेंगी। तेरा मन पिछले भय को सोचेगा कि कहां है लेखक कहां है करका बया गढ़ों का
१९ गिनवैया कहां है। तू उस मूर्ख लोग को फेर न देखेगा जिसकी बोली गहिरी थी कि तू सुन न सका और तोतली
२० जीभ जिसे तू समुझ न सका। तू हमारे पर्व्वों के नगर सैहन को देखेगा यिरोशलीम को जो चैन का निवास और दृढ़ तंबू जिसके खंभे कभी उखाड़े नजायेंगे और जिसकी
२१ रस्सियां कभी न टूटेंगी तेरी आंखें देखेंगी। परन्तु परमेश्वर का ऐश्वर्यमान नाम हमारे लिये धारों के संगम की चौड़ी नदियों का स्थान होगा और जिस पर कोई डांड़ की जहाज न चलेगी
२२ और न कोई महानौका उस पर से जायगी। क्योंकि परमेश्वर हमारा न्यायी है परमेश्वर व्यवस्थादाता परमेश्वर हमारा
२३ राजा है वही हमें मुक्ति देगा। तेरी पाल ढीली हैं वे उन्हें कस नहीं सके तेरा गुनरखा दृढ़ नहीं है वे झंडी उड़ा नहीं सके तब लूट की बहुताई बांटीजायगी लंगड़े भी अहेर
२४ पकड़ेंगे। वहां के बासी न कहेंगे कि मैं रोग से दुर्बल हों वहां के बासी अपने पाप के दंड से छूटगये हैं।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ हे जातिगणों तुम समीप आके सुनो और हे लोगो मेरी ओर ध्यान करो पृथिवी और उसकी भरपूरी और सब कुछ
२ जो उससे ऊगते हैं सुनें। कि परमेश्वर का कोप सारे जातिगणों पर भड़का और उसका क्रोध सारे पद के लोगों पर उसने उन्हें सौंपदिया उसने उन्हें संहार के लिये दिया।
३ और उनके संहारित बाहर फेंकेजायेंगे उनकी लोथों से

४ दुर्गंध उठेगा और पहाड़ उनके लोहू से पिघलजायेंगे । स्वर्ग का सारी सेना गलजायगी और पत्र की नाईं स्वर्ग लपेटेजायेंगे और उनकी सारी सेना ऐसी मुरझाजायेंगी जैसे मुरझाया हुआ पत्ता दाख से गिरताहै और जैसे सूखा फल गूलर के
५ वृक्ष से । क्योंकि मेरा खड्ग स्वर्ग में उघारागयाहै देखो वुह अदूम पर और उन पर जो मुझ से उचिताई से नाश को सौंपागयाहै
६ उतरेगा । परमेश्वर का खड्ग लोहू से अघायाहुआहै वुह चिकनाई से और मेम्नों के और बकरियों के रुधिर से और मेढ़ों के कलेजे की चिकनाई से छकाहुआहै क्योंकि परमेश्वर बासरा में
७ यज्ञ और अदूम की भूमि में एक महा संहारकर्त्ता है । और बनैली बकरियां उनके साथ और सांड़ों के साथ बैल गिरजायेंगे और उन्हीं का देश उनके रुधिर से मतवाला होगा और उनकी
८ धूल चिकनाई से धनवती होजायगी । क्योंकि परमेश्वर के पलटा लेनेका दिन और सैहून के कारण के रक्षक के प्रतिफल
९ लेनेका बरस है । उनकी धारें राल होजायेंगी और उनकी धूल
१० गंधक और उसके सारे देश जलते राल होजायेंगे । रात दिन कभी न बुझेगी उसका धूआं सर्वदा लों उठता रहेगा पीढ़ी से पीढ़ी लों वुह उजाड़ रहेगी सनातन लों उसमें कोई न चलेगा ।
११ परन्तु गडुर और साही उसके अधिकारी होंगे उल्लू और जंगली काग उसमें बसेंगे और उस पर वुह उजाड़ का सूत और शून्यता का साऊल उसके भुलसेऊर चौगान पर डालेगा ।
१२ वे फेर राज्य की कीर्त्ति की बड़ाई न करेंगे परन्तु उनके सारे
१३ अध्यक्ष निर्धार घटजायेंगे । और कांटे उसके भवनों में और ऊंटकटारे और सदा गुलाब उसके गढ़ों में जमेंगे और वुह नागों का निवास और उल्लूओं की राजधानी होगी ।
१४ और गीदड़ और बनैले बिलार आपुस में भेंट करेंगे और हनुमान अपने संगी को पुकारेगा और पेचा उतर के अपने
१५ लिये चैन का स्थान पावेगा । वुह बड़ा उल्लू वहां खोता लगा के

अपने अंडे देगी और उन्हें सेवेगी और अपने बच्चे को अपनी छायातले बटोरेगी वहां गिद्ध भी एकट्ठे किये जायेंगे और
१६ हरएक अपने अपने जोड़े से भेंट करेगी। तुम परमेश्वर की पुस्तक को बिचार करके पढ़ो उनमें से एक भी न घटेगा और किसी का जोड़ा न घटेगा क्योंकि परमेश्वर के मुंह ने यह आज्ञा
१७ किई है और उसी के आत्मा ने उन्हें एकट्ठे किया। और उसने उनके लिये चिट्ठी डाली है और उसके हाथ ने नपुवी डोरी से उन्हें भाग करदिया सो वे देश को सनातन के लिये अधिकार पावेंगे और पीढ़ी से पीढ़ी लों उसमें बसेंगे।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ बन और उजाड़ आनंदित होंगे जंगल आनंदित होके
२ लहलहावेगा। सेवती की नाईं वुह सुंदरता से लहलहावेगा और लबनान का बिभव और करमिल और सारून की सुंदरता उसे दिईजायगी और ये परमेश्वर के तेज और हमारे ईश्वर
३ के ऐश्वर्य को देखेंगे। निर्बल हाथों को बली करो डगमगाते
४ घुटनों को दृढ़ करो। डरपोकनों को कहो कि बलवान होओ डरो मत अपने ईश्वर को देखो कि ईश्वर के प्रतिफल देने के पलटालेने का समय आवेगा हां वुह आपही आवेगा और
५ तुम्हें बचावेगा। उस समय अंधों की आंखें और बहिरों के
६ कान खुलजायेंगे। उस समय हरिण के समान लंगड़े उछलेंगे गूंगे की जीभ गावेगी क्योंकि जंगल में पानी और बन में
७ धारे फूट निकलेंगे। और जलताहुआ बालू पोखरा और पीयासी भूमि उबलतेहुए सोते होंगे नागों के निवास में
८ घास और नल नागरमोथे के साथ उगेंगे। और वहां एक सड़क होगी और वुह पवित्रमार्ग कहलावेगा कोई अपावन जन उसमें से न जायगा परन्तु वुह आप उनके साथ
९ साथ चलेगा और मूर्ख भी उसमें चूक न करेगा। वहां सिंह

न होगा और पशुन का अंधेरक उधर न जायगा न वुह वहां
१० पाया जायगा परन्तु वे जो छुड़ायेगयेहैं उसमें चलेंगे । हां
परमेश्वर के छुड़ायेऊए फिरेंगे और जयशब्द के साथ सैहून
में आवेंगे और उनके सिर पर नित्यानंद का मुकुट होगा वे
आनन्द और आह्लाद प्राप्त करेंगे और शोक और आह
भागेंगे ।

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब ।

१ हिज़क्रिया राजा के चौदहवें बरस में ऊआ कि असूरियों का
राजा सनाखिरिब यहूदा के सारे आड़ वाड़ नगरों पर
२ चढ़ा और उन्हें ले लिया । और असरियों के राजा ने रवशाकी
को बड़ी सेना के साथ लाकीश से हिज़क्रिया के पास यिरोशलीम
को भेजा और वुह ऊपर के कुंडे की नालियों पर जो धोबी
३ के खेत को जाताहै सड़क में दिखाईदिया । उस समय
हिलकिया का बेटा अलियाक़ीम जो घर का अध्यक्ष था और
शबना लेखक और असाफ का बेटा यूआह स्मारक निकल के
४ उस पास आये । और रवशाकी ने उनसे कहा कि जाके
हिज़क्रिया से कहो कि महाराज असूरीयों का राजा यह
कहताहै तेरी आशा की कौनसी जड़ है जिस पर तू भरोसा
५ रखताहै । तू ने कहाहै परन्तु वे अनर्थ बातें हैं कि मुझ में युद्ध
के लिये मंत्र और सामर्थ्य पूर्ण हैं अब तेरा भरोसा है कि तू
६ मेरे बिरोध में फिर जाताहै । तू निश्चय इस टूटे नल मिसर के
सहाड़े पर भरोसा रखताहै उस पर यदि कोई आसा करे
तो वुह उसके हाथ में बेध जायेगा सो मिसर का राजा
फ़रऊन उन सब के साथ जो उस पर भरोसारखतेहैं
७ ऐसाही है । परन्तु यदि तुम मुझे कहो कि हमारा भरोसा
परमेश्वर अपने ईश्वर पर है क्या वुह नहीं कि जिसके ऊंचे
स्थान और जिसकी यज्ञवेदी को हिज़क्रिया ने दूर किया और

यहूदा और यिरोशलीम को आज्ञा किई कि तुम इस
८ यज्ञवेदी के आगे पूजा कियाकरो। सो अब मेरे प्रभु असूर
के राजा को बाचा दीजिये और मैं तुझे दो सहस्र घोड़े देउंगा
९ यदि तू उनके लिये चढ़वैये सिद्ध करसके। सो तू यह बात
क्योंकर करसके कि तू मेरे प्रभु के दासों में से जो तेरे सन्मुख
आते हैं छोटे से छोटे आज्ञाकारी को हटादेवे और क्या तू
मिसर की गाड़ियों और घोड़चढ़ों पर भरोसा रखता है।
१० और क्या मैं परमेश्वर बिना इस देश को नाश करने आयाहूं
परमेश्वरही ने तो मुझे कहा कि इस देश पर चढ़जा और
११ उसे नाश कर। तब इलियाक़ीम और शबना और
यूअह ने रबशाक़ी को कहा कि हम तेरी बिनती करते हैं कि
सुरियानी बोली में अपने दासों से बात कीजिये क्योंकि हम
इसे समझते हैं और लोगों के सुन्ने में जो भीत पर हैं यहूदी
१२ भाषा में हम से मत कह। तब रबशाक़ी बोला क्या मेरे प्रभु
ने मुझे तेरे प्रभु पास अथवा तुझ पास ये बातें कहने को
भेजा है और क्या उसने मुझे उन लोगों के पास जो भीत पर
बैठे हैं नहीं भेजा कि वे तुम्हारे साथ अपना बिष्ठा खावें और
१३ मूत्र पीवें। फिर रबशाक़ी खड़ाहुआ और यहूदी भाषा में
पुकार के बोला और यों कहा कि असूर के महाराज की
१४ बात सुनो राजा यों कहता है कि हिज़क़िया तुम्हें छल न देवे
१५ क्योंकि वुह तुम्हें बचा न सकेगा। और हिज़क़िया तुम्हें यह
कहके उभारने न पावे कि तुम परमेश्वर पर भरोसा रक्खो
कि परमेश्वर निश्चय हमें बचायेगा और यह नगर असूर
१६ के राजा के हाथ में न सौंपाजायेगा। हिज़क़िया की न सुनो
क्योंकि असूर का राजा यों कहता है कि मुझसे मिलाप करके
मुझ पास बाहर निकल आओ और तुम्में से हरएक अपने
अपने दाख का और अपने अपने गूलर वृक्ष का फल खावे
१७ और अपने अपने कुंड का पानी पीवे। जब लों मैं आओं

और तुम्हारे देश की नाईं तुम्हें एक देश में लेजाओं क्योंकि वुह अन्न और दाख रस का देश है वुह रोटी और दाख की
१८ बारी का देश है। यह कहके हिज़क़िया तुम्हें छल देने न पावे कि परमेश्वर हमें मुक्ति देगा भला देशियों के देव में से कोई अपने देश को असूर के राजा के हाथ से बचा सका है।
१९ हामास और अरफाद के देव कहां हैं और सफ़ारवाईम के
२० देव कहां हैं क्या वे सामरः को मेरे हाथ से बचासके। इन देशों के देवों में से कौन है जो अपने देश को मेरे हाथ से बचासके कि परमेश्वर भी यिरोशलीम को मेरे हाथ से
२१ बचासके। परन्तु लोग चुपके होरहे और उत्तर में उसे एक बात न कही क्योंकि राजा की आज्ञा यह थी कि उसे उत्तर
२२ मत दीजियो। तब हिज़क़िया का बेटा अलियाक़ीम जो घर का अध्यक्ष था और शबना लेखक और असफ का बेटा यूअह स्मारक अपने वस्त्र फाड़ेहुए हिज़क़िया पास आये और उन्होंने रबशाक़ी की बातें उसे कह सुनाईं।

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब।

१ हिज़क़िया राजा ने यह सुन के अपने कपड़े फाड़े और टाट
२ ओढ़ा और परमेश्वर के मंदिर में गया। और उसने घर के अध्यक्ष अलियाक़ीम को और शबना लेखक को और याजकों के प्राचीनों को टाट ओढ़ा के आमूस के बेटे आशिया भविष्यद्वक्ता
३ पास भेजा। और उन्होंने उसे कहा कि हिज़क़िया यों कहता है कि आज का दिन दुख और दपट और अपमान का दिन है क्योंकि बालक उत्पन्न होते हैं और जनडालने का
४ बल नहीं। हाय कि परमेश्वर तेरा ईश्वर रबशाक़ी की बातें सुने जिसे उसके प्रभु असूर के राजा ने भेजा कि जीते ईश्वर की निंदा करे और कि वुह उन बातों को जो परमेश्वर तेरे

ईश्वर ने सुनी हैं पलट देवे और तू बचेहुए लोगों के लिये प्रार्थना
५ करे। सो हिज़किया राजा के सेवक आशिया पास आये।
६ और आशिया ने उन्हें कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो
कि परमेश्वर यों कहता है कि तू उन बातों से जिन्हें असूर के
राजा के सेवकों ने कहके मेरी अपनिंदा किई भय मत कर।
७ देख मैं उसमें एक आत्मा डालोंगा और वुह एक हौरा सुन के
अपनेही देश को फिरजायगा और मैं उसे उसही के देश में
८ खड्ग से गिरवाओंगा। सो रबशाक़ी फिरगया और
उसने असूर के राजा लबना को घेरेहुए पाया क्योंकि उसने
९ सुनाथा कि वुह लखीश से कूच करगया। और जब सनाख़रिब
ने संदेश पाया कि कोश का राजा तरहाका उससे लड़ने को
चलाआता है उसने दूतों को यह कहके हिज़किया पास फिर
१० भेजा। कि यहूदा के राजा हिज़किया से यों कहो कि तेरा
ईश्वर जिस पर तू भरोसा रखताहै तुझे इस बात का छल न
देवे कि यिरोशलीम असूर के राजा के हाथ में न पड़ेगा।
११ तू ने निश्चय सुनाहै कि असूर के राजाओं ने सारी भूमि को
क्या किया जिन्हें उन्होंने सर्वथा बिनाश किया और क्या तू
१२ बचजायगा। क्या उन देशगणों के देव उन्हें बचासके जिन्हें मेरे
पितरों ने बिनाश किया जैसा कि गोज़ान और हरान और
१३ रासाफ़ और अदन के बेटे जो तिलासार में थे। हमास का
राजा और अरफाद का राजा और सफ़रवाईम के नगर का
१४ राजा और हना और ऐवा कहां है। सो हिज़किया
ने दूतों से पत्री को पाके पढ़ा और उठ के परमेश्वर के
मंदिर में चढ़गया और हिज़किया ने उसे परमेश्वर के आगे
१५ फैला दिई। और हिज़किया परमेश्वर के आगे प्रार्थना करके
१६ बोला। कि हे सेनाओं के परमेश्वर इसराईल के ईश्वर जो
करोबीम पर बैठा है तू अकेला पृथिवी के समस्त राज्यों का
१७ ईश्वर है तूही ने आकाश और पृथिवी को सिरजा। हे परमेश्वर

कान झुका और सुन हे परमेश्वर अपनी आंखें खोल और देख और सनाख़रिब की सारी बातों को जो उसने भेज के
१८ जीवते ईश्वर की निन्दा किई सुन ले। सत्य है हे परमेश्वर कि असूर के राजाओं ने सारे देशियों को और उनकी भूमि को बिनाश किया और उनके देवों को आग में झुकादिया।
१९ क्योंकि वे देव न थे परन्तु मनुष्यों के हाथ के बनायेहुए लकड़ी
२० और पत्थर थे सो उन्होंने उन्हें नाश किया। और अब हे परमेश्वर हमारे ईश्वर हम तेरी बिनती करतेहैं कि हमें उसके हाथ से बचाले कि सारी पृथिवी के राज्य जानें कि
२१ परमेश्वर तूही एकेला ईश्वर है। तब आमूस के बेटे आशिया ने हिज़किया को कहलाभेजा कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहताहै कि तू ने प्रार्थना में जो कुछ सुरिया के
२२ राजा सनाख़रिब के बिषय में कहा मैं ने सुना। यह वुह बचन है जो परमेश्वर ने उसके बिषय में कहा कि सैहून की कुंआरी कन्या ने तेरी निन्दा किई और तुझ पर हंसी और यिरोशलीम
२३ की बेटी ने तुझ पर सिर हिलाया। तू ने किसकी निन्दा किई और किसे कुवचन कहा और तू ने किसके बिरोध में अपना शब्द उठाया और अपनी आंखें चढ़ाईं इसराईल के धर्म्ममय के
२४ बिरोध में। तू ने अपने दूतों की सहाय से परमेश्वर की निन्दा करके कहा कि मैं अपने रथों की बहुताई से पहाड़ों की ऊंचाई पर और लबनान की ओर चढ़ा और मैं उसके सब से ऊंचे अरज वृक्षों और उसके चुनेहुए देवदारु के अच्छे वृक्षों को काटोंगा और मैं उसके अंत्य के गुप्त स्थानों में और उसके
२५ बन के घनों में पैठोंगा। मैं ने खोद के परदेश के पानी पीये और मैं ने अपने पांओं के तलवों से घेरेहुए स्थानों की सारी
२६ नालियां सुखादियां। क्या तू ने प्राचीनता से नहीं सुना कि मैं ने ठहराया और अगले समयों से कि मैं ने डौल किया अब मैं ने पूरा किया कि तू योद्धा देशियों को और घेरेहुए

२७ दृढ़ नगरों को उजाड़ करे। इस लिये वहां के निवासी अल्प
बल ऊए और व्याकुल होके लज्जित ऊए वे खेतकी घास
और हरयाली और छतों पर की घास की नाईं थे और उस
२८ अन्न की नाईं जो बढ़ने से आगे मुरझागये। परन्तु मैं तेरा
बैठना और बाहर भीतर आनाजाना और मुझ पर तेरा
२९ झुंझलाना जानताहों। इस कारण कि मुझ पर तेरा झुंझलाना
और तेरी मगराई मेरे कान लों पहुंचीहैं इस लिये मैं अपना
कांटा तेरी नाक में और अपनी ढाठी तेरे दाढ़ में लगाऊंगा
और जिस मार्ग से तू आयाहै उसही मार्ग से मैं तुझे
३० फिराऊंगा। और यही तेरे लिये चिह्न होगा कि अबकी
बरस वुह जो आपसे उगताहै खाओ और दूसरे बरस
जो उसीसे उगताहै और तीसरे बरस बोओ और लवो
और दाख की बारी लगाओ और उनके फल खाओ।
३१ और यहूदा के घराने के उबरे ऊए जो बचनिकलेंगे फिरके
नीचे जड़ पकड़ेंगे और ऊपर फलेंगे क्योंकि उबरे ऊए
यिरोश्लीम से और बचेऊए सैहून के पहाड़ से निकलेंगे
३२ परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर का ताप इसे पूरा करेगा। सो
असूर के राजा के विषय में परमेश्वर यों कहताहै कि वुह इस
नगरमें प्रवेश न करेगा और उसमें बाण न चलावेगा न वुह
३३ ढाल उसके सन्मुख करेगा न उसके आगे मेंड़ बांधेगा। परन्तु
परमेश्वर कहताहै कि जिस मार्ग से वुह आया उसी मार्ग से
३४ फिर जायगा और इस नगर में न आसकेगा। कि मैं अपनेही
लिये और अपने सेवक दाऊद के लिये इस नगर का बचाव
३५ करके इसे छुड़ाओंगा। सो ऐसा ऊआ कि परमेश्वर के दूतने
निकल के असूरियों की छावनी में एकलाख पचासी सहस्र
मनुष्य प्राण से मारे और जब लोग बिहान को तड़के उठे तो क्या
३६ देखतेहैं कि वे सब मृतक पड़ेहैं। सो असूर का राजा सनाखरिब
३७ कूच करके फिर गया और नैनवी में आरहा। और जिस

समय वुह अपने देव निसराख़ के मंदिर में पूजा करताथा उसके बेटे अदरामलख़ और शरायज़र ने उसे खड्ग से घात किया और वे आप अरमनी के देश को भागगये और उसका बेटा एसरहद्दन ने उसकी संती राज्य किया।

३८ अठतीसवां पर्ब्ब।

१ उन दिनों में हिज़क़िया को मारू रोग हुआ तब आमूस के बेटे आशिया भविष्यदक्ता ने उस पास आके कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि अपने घर के लिये आज्ञा कर क्योंकि तू मर
२ जायगा और आगे न जीयेगा। तब हिज़क़िया ने अपना मुंह भीत की ओर फेरा और परमेश्वर से प्रार्थना करनेलगा।
३ और कहा कि हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हों स्मरण कर कि मैं सच्चाई से और सिद्ध मन से तेरे आगे चलनेका पीछा किया और जो तेरी दृष्टि में भला है सोई किया और
४ हिज़क़िया रोया और अत्यंत बिलाप किया। उस समय
५ परमेश्वर की बाणी आशिया पर प्रगट हुई। कि जा और हिज़क़िया से कह कि परमेश्वर तेरे पितर दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी मैं ने तेरे आंसूओं को देखा सो देख मैं तेरी आयुर्दाय पंदरह बरस और बढ़ाऊंगा।
६ और मैं तुझ को और इस नगर को असूर के राजा के हाथ से
७ बचाओंगा और मैं इस नगर की रक्षा करोंगा। और आशिया ने कहा कि यह आप के लिये ईश्वर की ओर से चिह्न
८ होगा कि परमेश्वर अपने बचन को पूरा करेगा। देख मैं अहाज़ के छायाजंत्र को जिस पर से सूर्य ढला है दस क्रम फेर देऊंगा सो सूर्य उस छायाजंत्र में जिस पर से वुह ढल गयाथा उनसे दस क्रम फिर हटगया तब आशिया ने कहा कि गूलरों का एक पिंड लेवें और उन्हें मांस के फोड़े पर
९ लेप चढ़ावें कि वुह चंगा होजायगा। यहूदा का राजा

हिज़किया का लिखा हुआ जब कि वुह रोगी था और अपने
१० रोग से चंगा हुआ। मैं ने अपनी आयुर्दाय के घटने के दिन
में कहा कि मैं समाधि के फाटकों में से प्रवेश करजाऊंगा
११ मेरे रहे हुए बरस मुझ से लियेगये। मैं ने कहा कि हां
जीवतों की भूमि में परमेश्वर को फेर न देखोंगा मनुष्य और
१२ जगत के बासी मुझे फिर दिखाई न देंगे। मेरा निवास
गड़रिये के पाल के समान मुझ से अलग कियागया मैं ने
जुलाहे के समान अपना जीवन काटडाला वुह मुझ को राछ
से काटडालेगा दिनभर में तू मेरे स्थान को पूरा करडालेगा।
१३ उसने मेरी सारी हड्डियों को ऐसा तोड़ा कि मैं बिहान लों
१४ सिंह की नाईं गर्जाकिया। मैं सारस और सुपाबीना के
समान चौंचीं किया मैं कपोत के समान कुड़ता हों ऊपर
देखते देखते मेरी आंखें घटगईं हे परमेश्वर मैं दुःखी हों मेरा
१५ उपकारी हो भला मैं क्या कहों उसने तो मुझे आपही
बाचा दिई और आपही पूरी किई सो मैं अपने रहेहुए
१६ बरसों में मन की कड़वाहट को सोचा करोंगा। क्योंकि इस
कारण हे परमेश्वर तेरे विषय में कहाजायगा कि तू ने मेरे
आत्मा को जिलाया है तू ने मुझे निरोगी किया और मेरा
१७ जीवन बढ़ाया। देख मेरा कष्ठ सुख से पलटगया और
तू ने मेरे प्राण को बिनाश से खींचलिया हां तू ने मेरे
१८ सारे पापों को अपने पीछे फेंकदिया। निश्चय समाधि
तेरी स्तुति कर नहीं सक्ती और मृत्यु तेरा धन्य न मानेगी
वे जो गढे में उतरपड़ते हैं तेरी सचाई की बाट न जोहेंगे।
१९ जीवते लोग तेरी स्तुति करेंगे जैसा कि मैं आज के दिन
करता हों पिता अपने बालकों पर तेरी सचाई प्रगट करेगा।
२० परमेश्वर मेरे बचाने पर समीप था इसही लिये हम बीणा
बजा के जब लों जीयेंगे परमेश्वर के मंदिर में भजन गाते
२१ रहेंगे। क्योंकि आशिया ने कहाथा कि गूलरों का

एक पिंड लेवें और उन्हें मांस के फोड़े पर लेप चढ़ावें कि वुह चंगा होजायगा।

३९ उंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ उस समय बालादान के बेटे मीरोदक बालादान ने जो बाबुल का राजा था हिज़क़िया के लिये पत्री और भेंट भेजे क्योंकि उसने सुनाथा कि वुह रोगी था और चंगा हुआ। २ और हिज़क़िया उनके आने से निपट मगन हुआ और उसने अपने भंडार और रुपा और सोना सुगंध द्रव्य और महंग मोला तेल और अपने सारे हथियारस्थान और सब जो उसके भंडारों में समाया हुआथा उन्हें दिखलाया उसके घर में और उसके सारे राज्य में ऐसी कोई वस्तु न थी जो हिज़क़िया ने उन्हें न दिखलाई। ३ तब आशिया भविष्यद्वक्ता ने हिज़क़िया पास आके उसे पूछा कि ये लोग क्या संदेश लाये और ये कहां से आप पास आये हिज़क़िया ने उत्तर दिया कि दूरदेश से बाबुल से मुझ पास आयेहैं। ४ तब उसने पूछा कि उन्होंने आपके घर में क्या देखाहै हिज़क़िया ने उत्तर दिया उन्होंने मेरे घर का सब कुछ देखा है मेरे भंडारों में कुछ नहीं है जो मैं ने उन्हें नहीं दिखलाया। ५ तब आशिया ने हिज़क़िया को कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की बात सुन। ६ परमेश्वर कहताहै कि देख वे दिन आतेहैं कि सब जो तेरे घर में है और जो कुछ तेरे पितरों ने आज लों एकट्ठा कररक्खा है बाबुल को उठायेजायेंगे कि कोई वस्तु छोड़ी न जायगी। ७ और वे तेरे बेटों में से जो तुझ से निकलेंगे और तुझ से उत्पन्न होंगे लेजायेंगे और वे बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक होंगे। ८ हिज़क़िया ने आशिया को कहा कि परमेश्वर का वचन जो तू ने कहा भला है फेर उसने यह कहा कि मेरे समय में तो मिलाप और सच्चाई होगी।

४० चालीसवां पर्व्व ।

१ तुम्हारा ईश्वर कहताहै कि शांति देओ मेरे लोगों को शांति
२ देओ। यिरोशलीम को शांति की बात कहो और उन पर प्रगट
करो कि उसका संग्राम समाप्त हुआ और उसके पाप का
प्रायश्चित्त ग्रहण कियागया और उसने परमेश्वर के हाथ से
३ अपने पापों के दंड से दूना आशीष पाया। शब्द
पुकारताहै कि परमेश्वर के मार्ग को बन में सुधारो और बन में
४ हमारे ईश्वर के लिये एक सीधा सड़क सिद्ध करो। हरएक
नीचाई ऊंची किईजायगी और हरएक पहाड़ और टीला
नीचा कियाजायगा और टेढ़ी सीधी होजायगी हरएक खड़बिड़
५ स्थान समथर चैागान कियाजायगा। और परमेश्वर की महिमा
प्रगट होगी और समस्त प्राणी एकट्ठे होके ईश्वर की मुक्ति देखेंगे
६ क्योंकि परमेश्वर के मुंह ने यह कहाहै। एक शब्द हुआ कि
प्रचार करो तब मैं ने कहा कि मैं क्या प्रचार करों सारे प्राणी
घास हैं और उनका सारा विभव खेत के फूल की नाईं है।
७ घास मुरझातीहै फूल कुम्हलाते हैं क्योंकि परमेश्वर का पवन
८ उस पर बहताहै निश्चय ये लोग घास हैं। घास मुरझातीहै
फूल कुम्हलातेहैं परन्तु हमारे ईश्वर का बचन सदा लों स्थिर है।
९ हे कन्या जो सैहून को मंगलसमाचार पहुंचाती है ऊंचे
पहाड़ पर चढ़जा हे कन्या जो यिरोशलीम को मंगलसमाचार
पहुंचातीहै पराक्रम से शब्द को उठा और मत डर यहूदा के
१० नगरों से कह कि देखो अपने ईश्वर को। देखो प्रभु ईश्वर
बलवंत विरोध में आवेगा और उसकी भुजा उसके लिये प्रबल
होगी देखो उसका पलटा उसके साथ है और उसके कार्य का
११ प्रतिफल उसके आगे। वुह अपनी झुंड को गड़रिये की नाईं
चरावेगा वुह मेम्नों को अपने हाथ से एकट्ठा करेगा और अपनी
गोद में उठाके ले जायगा और जो दूधपिलातियां हैं उन्हें
१२ धीरे धीरे ले जायगा। किसने पानियों को अपने हाथ के चुल्लू

म नापा और आकाश को अपने बित्ता से नापा और पृथिवी
की धूल को पात्र में समवाया और पलड़ों में पहाड़ों को
१३ और पहाड़ियों को तुला में तौला। किसने परमेश्वर के आत्मा
को सिखायाहै अथवा उसका मंत्री होके उसे जताया।
१४ किसने उसे परामर्ष कियाहै कि वुह उसे सिखावे और
उसे न्याय के पथ का उपदेश करे कि उसे बिद्या देवे और
१५ उसे बुद्धि के मार्ग पर चलावे। देखो कि जातिगण उसके आगे
डोल के एक बूंद की नाईं हैं और पलड़े की धूल के समान वे
गिनेजायेंगे देखो वुह टापूओं को एक अण्ड की नाईं उठालेताहै।
१६ और लबनान जलाने के लिये बस नहीं है न उसके पशु यज्ञ
१७ के लिये। समस्त जातिगण उसके आगे तुच्छ की नाईं हैं वे
१८ उसके आगे नास्ति से भी छोटे हैं। सो अब तुम ईश्वर को
किस्से उपमा देओगे और कौनसी वस्तु उसके तुल्य है जिस्से
१९ तुम उसे उपमा देओगे। कार्यकारी मूर्ति ढालताहै और
सुनार सोने का पत्र उस पर मढ़ताहै और उसके लिये रुपे
२० की सीकरें बनाताहै। जो ऐसा दरिद्र है कि भेंट के लिये
उस पास कुछ नहीं वुह एक वृक्ष लेताहै जिसमें घुन न
लगे और एक अच्छे कार्यकारी को ढूंढ़ताहै कि वुह उसकी
२१ मूर्ति स्थापन करे जो हिलाई नजाय। क्या तुम न जानोंगे
क्या तुम न सुनोगे क्या आरंभ से तुम्हें यह नहीं कहागया
२२ क्या तुम ने धरती की नेंउ से उसे नहीं बूझा। वुह भूमि के
मंडल पर बैठाहै और उसके बासी उसके आगे फनके के
समान हैं वुह आकाश को सूक्ष्म घूंघट की नाईं फैलाताहै
२३ उन्हें निवास के तंबू की नाईं खींचताहै। जो अध्यक्षों को तुच्छ
करडालताहै जो पृथिवी के न्यायियों को शून्यमात्र करताहै।
२४ हां वे अपने पीछे एक पौधा न छोड़जायेंगे वे बोये न जायेंगे हां
उनके मूल भूमि में जड़ न बांधेंगे यदि वुह उन पर फूंकमारे
तो वे तुरंत सूखजातेहैं और बौंडर उनको खूंटी की नाईं उड़ा

२५ लेजायेंगे। धर्म्ममय कहताहै कि तुम मुझको किसे उपमा
२६ देओगे और मैं किसके समान कियाजाओंगा। अपनी आंखें ऊपर उठाओ और देखो किसने इन्हें सिरजाहै वुह उनकी सेनाओं को गिनगिन के निकालताहै वुह उन सभों को नाम लेले के पुकारताहै उसके बलके महत्व से और उसके पराक्रम के सामर्थ्य के कारण उनमें से एक भी अलग नहीं रहता।

२७ हे याक़ूब तू फिर क्यों कहताहै और हे इसराईल तू किस लिये यों बोलताहै कि मेरा मार्ग परमेश्वर से छिपा है
२८ और मेरे व्यवहार पद के लिये ईश्वर नहीं पूछता। क्या तू ने नहीं जाना और क्या तू ने नहीं सुना कि परमेश्वर सनातन का ईश्वर है पृथिवी के सिवानों का सृष्टिकर्त्ता वुह न निर्बल होताहै
२९ न थकताहै उसकी बुद्धि अखोज है। वुह निर्बल को बल देताहै
३० और दुर्बलों के बलको बढ़ाताहै। तरुण जन निर्बल होके थकजायेंगे और चुनेहुए तरुण ठोकर खाके गिरजायेंगे।
३१ परन्तु वे जो परमेश्वर पर भरोसा रखतेहैं नया बल प्राप्त करेंगे वे गिद्ध की नाईं नये पर निकालेंगे वे दौड़ेंगे और न थकेंगे वे आगे बढ़ेंगे और निर्बल न होवेंगे।

४१ एकतालीसवां पर्ब्ब।

१ हे दूरदेशियो मन के नवीन बल से मेरे पास चलेआओ और लोग अपने बल फेर प्राप्त करें और समीप आके बात करें
२ आओ हम गंभीर चर्चा करें। किसने उस धर्मी पुरुष को पूर्ब से उठाया और अपने डगडग पर चलने को बुलाया जातियों को उसके आगे वश में किया और उसे राजाओं पर राज्य दिया उसके खड्ग के आगे उन्हें धूल के समान बनाया
३ और उसके धनुष के आगे उड़ती हुई खूथी की नाईं। वुह उनका पीछा करताहै और उस मार्ग से होके कुशल से जाताहै
४ जिसे वुह अपने पांवतले न कियाथा। किसने ये बातें बनाईं

और पूरा किया कि आरंभ से पीढ़ियों को बुलाया मैं परमेश्वर
५ पहिले और पिछले के साथ मैं वही हों। द्वीपियों ने देखा
और डरगये पृथिवी के अंत भयखागये वे एकट्ठे होके पास
६ आये। हरएक ने अपने पड़ोसी की सहाय किई और अपने
७ भाई से कहा कि हियाव कर। चित्रकार लोहार को और जो
हथौड़े से चिकना करताहै उसको जो निहाई पर मारताहै
समुझा के कहतेहैं कि जोड़न अच्छाऊआहै और वुह मूर्त्ति को
कील से स्थापित करताहै ऐसा कि वुह न हिले।

८ परन्तु हे इसराईल मेरा दास हे याक़ूब जिसे मैं ने चुना जो
९ मेरे मित्र इबराहीम का वंश तूही है। जिसे मैं ने जगत के
अंतो में से हाथेहाथ पऊंचाया और उसके सिवानों में से
बुलाया और मैं ने तुझे कहा कि तू मेरा दास मैं ने तुझ को
१० चुना और तुझे त्याग न करोंगा। डर मत क्योंकि मैं तेरे साथ
हों घबरा मत क्योंकि मैं ईश्वर हों मैं ने तुझे पराक्रम दिया
मैं ने तेरी सहाय किई हां मैं तुझ को अपने धर्म के दहिने हाथ
११ से उभाड़ाहै। देख जो तुम पर क्रुद्ध थे वे लज्जित होके घबरा
जायेंगे और वे जो तुझ से झगड़तेथे सो तुच्छ की नाईं और
१२ सर्वथा नाश होजायेंगे। तू उन्हें ढूंढ़ेगा और न पावेगा अर्थात
उनको जो तुझ से झगड़ा करतेथे हां वे जो युद्ध में तेरा साम्ना
करतेथे तुच्छ की नाईं और अति अभाव की नाईं होजायेंगे।
१३ क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा दहिना हाथ दृढ़ता से
धरताहों जो तुझे कहताहों मत डर कि मैं तेरा सहायक हों।
१४ डर मत हे कीड़े याक़ूब और हे इसराईल के मरणीय मनुष्यो
परमेश्वर कहताहै मैं तेरा सहायक हों और इसराईल का
१५ धर्ममय तेरा पलटा लेनेवाला। देख मैं तुझे दावने की एक
नई गाड़ी कि जिसके बऊतसे दांत हों बनाओंगा उस्से तू
पहाड़ों को दाय के चूर चूर करेगा और टीलों को भूसा बना
१६ डालेगा। तू उन्हें ओसावेगा और पवन उन्हें लेजायेगा और

आंधी बिथरा देगी और तू परमेश्वर में आनंद होगा और
१७ इसराईल के धर्ममय से जय जय करेगा। दरिद्र और कंगाल
पानी ढूंढ़ते फिरेंगे और पानी न होगा और उनकी जिह्वा
मारे प्यास के सूखजायगी तो मैं परमेश्वर उनको सुनोंगा
१८ इसराईल का ईश्वर मैं उन्हें त्याग न करोंगा। मैं नदियों को
ऊंचे स्थानों में और तराई के मध्य में सोतों को खोलोंगा मैं
बन को स्थिर पोखरा और सूखी भूमि को पानियों की धारें
१९ बनाऊंगा। मैं बन में आरज और खैर के वृक्ष और हदस
और जितवृक्ष और बन में देवदारु और सरल और ताम्राव
२० के वृक्ष एकट्ठे लगाओंगा। कि वे देखें और जानें और समुझें
और बूझें कि परमेश्वर के हाथ ने इसे कियाहै और कि
२१ इसराईल के धर्ममय ने इसे सिरजाहै। परमेश्वर
कहताहै कि समीप आओ अपने पद को प्रगट करो याकूब
का राजा कहताहै कि अपने पराक्रमों के इन सामर्थ्य को प्रगट
२२ करो। वे आगे बढ़े और जो बातें आगे बीतेंगी जो वे हैं हमें
कहें और हम उन्हें बूझगे और हम अंत को जानेंगे अथवा
२३ अवैया समाचार हमें सुनावें। बताओ कि पिछले समयों में
क्या होगा तब हम जानेंगे कि तुम ईश्वर हो हां भला अथवा
बुरा कुछ तो करो तब हम आश्चर्य और भय खायजायेंगे।
२४ परन्तु देखो तुम तुच्छ से भी छोटे हो और तुम्हारा कार्य
२५ अवस्तु से भी लघु है वुह जो तुम्हें चुनताहै घिनित होवे। मैं ने
उत्तर से एक को उभाड़ाहै और वुह आवेगा वुह सूर्य के
उदय से मेरा नाम लेगा और वुह राजपुत्रों को गारा की नाईं
२६ लताड़ेगा अर्थात जैसे कुम्हार माटी को रौंदताहै। आरंभ से
किसने इसे बर्णन किया कि हम उसे जानते और आगे से कि
हम कहते कि आगम की बात सची है आगे से किसी ने न
कहा एक ने भी उसे बर्णन न किया तुम्हारी बातों को एक ने
२७ भी न सुना। मैं ने पहिले सैहून को कहा देखो वे यहां हैं और

२८ यिरोशलीम को मैं ने मंगल समाचार का दूत दिया। परन्तु मैं ने देखा और कोई मनुष्य न था और मूर्त्तिन में और कोई
२९ न था कि चिता देवे। और मैं ने उन्हें पूछा पर कोई उत्तर दे न सका देखो वे सब के सब झूठे हैं उनके कार्य तुच्छ हैं उनकी ढालीहुई मूर्तें निरा पवन और शून्यता हैं।

४२ बयालीसवां पर्ब्ब ।

१ देखो मेरा दास जिसे मैं उभाड़ोंगा मेरा चुना हुआ जिस्से मेरा प्राण संतुष्ट है मैं अपने आत्मा को उस पर स्थापोंगा वुह
२ जातिगणों पर न्याय प्रचारेगा। वुह न पुकारेगा न कोलाहल करेगा और सामान्य स्थानों में अपना शब्द न सुनायेगा।
३ कुचलेहुए सेंठे को न तोड़ेगा और धूआं उठतेहुए सन को न बुझावेगा न्याय को यहां लों प्रचारेगा कि उसे निश्चय से
४ स्थापित करे। वुह अब लों पृथिवी पर न्याय को दृढ़ता से स्थापित न करले और दूरदेशीगण उसकी व्यवस्था की बाट
५ न जोहलेवें। उसका बल न घटेगा न टूटेगा ईश्वर अर्थात परमेश्वर जिसने आकाशों को सिरजा और उन्हें खींचा और पृथिवी और उसमें की उत्पत्ति को फैलाया जो उस पर के लोगों को श्वास देता है और उनको जो उस पर
६ चलते फिरते हैं आत्मा देता है यों कहता है। मुझ परमेश्वर ने तुझ को धर्म के लिये बुलाया है मैं तेरा हाथ थामोंगा और तेरी रक्षा करोंगा और लोगों की वाचा के लिये और जातिगण की
७ ज्योति के लिये तुझे दूंगा। कि अंधों की आंखें खोले और बंधुओं को बंधुआई से और भकसी से जो अंधकार में रहते हैं उन्हें
८ निकाले। मैं परमेश्वर हूं यह मेरा नाम है और मैं अपना विभव दूसरे को और अपनी स्तुति खोदीहुई मूर्त्तिन को न
९ दूंगा। देखो आगे की कहीहुई बातें संपूर्ण हुईं और अब मैं नई बातें बतलाताहूं उनके होने से पहिले मैं उन्हें जनाताहों।

१० परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ हे समुद्रगामियो और समस्त जो उसे भरतेहो और हे समुद्रतीर के दूरसिवाना और तुम जो उसमें रहतेहो जगत के अंतों से उसीकी स्तुति
११ करो। बन और उसमें के नगर और केदार के नगर और उसमें के बासी और पथरैले देश के बासी आनंद का शब्द करें
१२ पहाड़ों की चोटियों पर से वे ललकारें। वे परमेश्वर का
१३ महिमा करें और दूरदेशियों में उसकी स्तुति करें। परमेश्वर बीर के समान निकल खड़ा होगा वुह सामर्थी लड़ाके के समान भल को उसकायेगा वुह पुकारेगा और ललकारेगा वुह
१४ अपने शत्रुन पर अपना बल भड़कायेगा। मैं चुपका हो रहा क्या मैं सदा को चुपका होरहोंगा क्या मैं मटिआये रहोंगा मैं जनती ऊई स्त्री की नाईं चिल्लाओंगा हांपोंगा और
१५ श्वास को रोका करोंगा। मैं पहाड़ों और टीलों को उजाड़ करडालोंगा और उन पर के समस्त घास को सुखाडालोंगा और नदियों को अरण्य करदोंगा और पोखरों को भुलसा
१६ दोंगा। और जिस मार्ग को अंधे न जानतेथे उसे उन्हें और जिन पथों से वे अज्ञान थे मैं उन्हें उनमें चलाओंगा मैं उनके आगे अंधकार को ज्योति करदोंगा और खड़बिड़ मार्गों को समथर चौगान करदोंगा मैं उनसे ये बातें करोंगा और उन्हें
१७ त्याग न करोंगा। वे पिछाड़ी हटायेगये वे सर्वथा घबरागये जो खोदीऊई मूर्त्तिन का भरोसा रखतेहैं और ढालीऊई मूर्त्तिन को कहतेहैं तुम हमारे देव हो सो पिछाड़ी हटायेगये वे सर्वथा
१८ घबरागये। हे बहिरो सुनो हे अंधो ध्यान से ताको
१९ जिसतें तुम देखो। मेरे दास को छोड़ अंधा कौन है और बहिरा उनके समान कौन है जिन पास मैं ने अपने अगुए भेजे उसके समान अंधा कौन है जिसने सुंदर उपदेश पाया और परमेश्वर के दास के समान अंधा और बहिरा कौन है।
२० तू ने निश्चय देखा परन्तु चिंता न किई तेरे कान खुलेहैं तथापि

२१ तू सुनेगा नहीं। तथापि परमेश्वर अपने धर्म के लिये उस पर कृपालु था उसने अपनी स्तुति को बढ़ाया और उसे
२२ महिमा दिई। परन्तु ये लोग भ्रष्ट और लूटे हुए हैं उनके चुने हुए समस्त तरुण परिश्रमों में फसगये हैं और अंधियारे भकसों में भुकायेगये हैं वे अहेर बनगये हैं और छुड़वैया कोई
२३ न था वे लूट बनगये और कोई नहीं कहता फेर दो। कौन है तुम्हारे बीच जो इस पर कानधरे और आगे को सुने
२४ और माने। किसने याक़ूब को लूट के लिये और इसराईल को नष्ट के लिये दिया क्या परमेश्वर ने नहीं कि जिसके शत्रु होके उन्हों ने पाप किया और न चाहा कि उसके मार्गों पर
२५ चलें और उसकी व्यवस्था को उन्हों ने न माना। इस लिये उसने अपने क्रोध का तेज और युद्ध की प्रबलता उन पर ढाला और उसको चारों ओर लवर बरउठी तथापि उसने न माना और उसे जलाडाला तथापि उसने न सोचा।

४३ तेंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ तथापि अब परमेश्वर जिसने तुझे सिरजा हे याक़ूब और जिसने तेरा डौल किया हे इसराईल यों कहता है मत डर क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ाया मैं ने तेरा नाम लेके तुझे बुलाया तू
२ मेरा है। जब तू पानियों में से चलेगा तो मैं तेरे साथ हों और नदियों में से तो वे तुझे न डुबायेंगी जब तू आग में चलेगा
३ तो तू भुलस न जायेगा और लवर तुझे धर न लेगी। क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं इसराईल का धर्ममय तेरा मुक्तिदाता मैं ने तेरी संती मिसर को और तेरे कारण कोश और
४ सीबा को देदिया। इस लिये कि तू मेरी दृष्टि में बहुमूल्य था तू ने प्रतिष्ठा पाई और मैं ने तुझ पर प्रेम किया इस कारण मैं मनुष्यों को तेरी संती और तेरे प्राण के पलटे लोगों को देऊंगा।
५ मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूं मैं तेरे बालकों को पूर्व से ले

६ आऊंगा और तुझे पच्छिम से एकट्ठा करोंगा। मैं उत्तर से कहोंगा कि देडाल और दक्षिण से कि रखमतछोड़ मेरे बेटों को दूर से और मेरी बेटियों को पृथिवी के अंतों से ला। हरएक
७ को जो मेरे नाम से कहायाजाताहै जिसे मैं ने अपने बिभव के लिये सिरजाहै जिसे मैं ने डौल कियाहै हां जिसे मैं ने बनायाहै।
८ आंखरखतेऊए अंधों को और कान रखतेऊए बहिरों को
९ बाहर लाओ। समस्त जातिगण एकट्ठे होवें उनमें कौन इसे वर्णन करेगा और जो पहिले बीतेगा कौन हमें बतावेगा वे अपने साक्षियों को निकालें कि वे निर्दोष होवें अथवा वे
१० अपनी पारी में सुनें और कहें कि यह सच है। परमेश्वर कहताहै तुम मेरे साक्षी हो अर्थात मेरा दास जिसे मैं ने चुना है जिसतें तुम जानो और मुझ पर बिश्वास लाओ और समझो कि मैं वही हूं मुझ से आगे कोई ईश्वर न बनाथा
११ और मेरे पीछे भी कोई न होगा। मैं अर्थात मैंही परमेश्वर
१२ हूं और मुझे छोड़ कोई मुक्तिदाता नहीं। मैं ने अपना ठहराया ऊआ वर्णन किया और मैं ने बचालिया और मैं ने जनाया तुम्में कोई परदेशी देव न था परमेश्वर कहताहै कि मैं ईश्वर
१३ हों और तुम मेरे साक्षी हो। हां समय न होतेही मैंही हों और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ासके जो मैं ने कियाहै
१४ कौन है उसे अन्यत करसक्ताहै। परमेश्वर तुम्हारा मुक्तिदाता इसराईल का धर्ममय यों कहताहै तुम्हारे कारण मैं ने बाबुल को भेजाहै और उनके सारे दृढ़ छड़कों को उतारोंगा और अपने जहाजों पर फूलतेऊए कलदानियों को।
१५ मैं परमेश्वर तुम्हारा धर्ममय इसराईल का सृष्टिकर्त्ता तुम्हारा
१६ राजा हों। परमेश्वर जिसने समुद्र में एक मार्ग और
१७ महाजलों में एक पथ बनाया यों कहताहै। जिसने घोड़े और घोड़चढ़े को सेना और जोधा को निकालाहै वे एकट्ठे पड़गये
१८ वे फेर न उठे वे ठंडे होगये वे सन के समान बुझगये। तुम

अगली बस्तों को स्मरण न करो और पुरानी बस्तों को मन में
१९ न लाओ। देखो मैं एक नई बस्तु बनाताहों हां वुह अब
प्रगट होगी क्या तुम उसे मन में न लाओगे हां मैं बन में एक
२० मार्ग और अरण्य में धारें बनाओंगा। बन्य पशु और नाग
और उल्लू मेरी प्रतिष्ठा करेंगे क्योंकि मैं ने बन में पानी और
अरण्य में बहती धारें दियां कि मेरे लोगों को मेरे चुने हुओं
२१ को पानी देवें। मैं ने इन लोगों को अपने लिये बनाया वे मेरी
२२ स्तुति करेंगे। परन्तु हे याक़ूब तू ने मेरा नाम नहीं
लिया और हे इसराईल तू ने मेरे कारण परिश्रम न किया।
२३ तू अपने होम का मेम्ना मुझ पास न लाया न अपने बलिदानों
से मेरा आदर किया मैं ने यज्ञ की इच्छा से तुझ पर भार
नहीं दिया और तू ने सुगंध की भेंट से मेरी प्रतिष्ठा नहीं किई
२४ मैं ने भेंट के कष्ट से तुझे न थकाया। तू ने रुपेसे मेरे लिये
बच मोल न लिया और तू ने मुझे अपने बलिदान की चिकनाई
से तृप्त न किया उसके बिपरीत तू ने अपने पापों से मुझ पर
२५ बोझ दिया तू ने मुझे अपने कुकर्म से थकादिया। हां मैंही हूं
मैं अपनेही कारण तुम्हारे अपराधों को मिटाताहूं और मैं तेरे
२६ पाप को स्मरण न करोंगा। स्मरण करा आ आपुस में बिबाद
२७ करें बर्णन कर जिसतें तू निर्दोष ठहरे। तेरे प्रधान अगुआ ने
२८ पाप किया और तेरे आचार्य मुझ से फिरगये। तेरे अध्यक्षों
ने मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया इस कारण मैं ने याक़ूब को
स्राप के लिये और इसराईल को निंदा के लिये सौंप दिया।

४४ चौंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ परन्तु अब हे मेरे सेवक याक़ूब और हे इसराईल जिन्हें मैं ने
२ चुना सुन। तेरा सृष्टिकर्त्ता और जिसने गर्भ से तुझे निर्माण
किया और जो तेरी रक्षा करेगा सो परमेश्वर यों कहताहै

हे मेरे दास याकूब और हे यशूरन जिसे मैं ने चुनाहै
३ मतडर। क्योंकि मैं पियासे पर पानी और सूखी भूमि पर
धारे बहाओंगा मैं अपना आत्मा तेरे वंश पर डालोंगा और
४ अपने आशीष तेरे संतान पर। और वे पानियों में के घास के
५ समान और नाली के तीर पर के बेंत की नाईं उगेंगे। एक तो
कहेगा कि मैं परमेश्वर का हूं और दूसरा याकूब के नाम से
पुकाराजायगा और यह परमेश्वर के लिये अपने हाथ से
लिखेगा और इसराईल के नाम से उसकी पदवी होगी।
६ परमेश्वर इसराईल का राजा और उसका मुक्तिदाता सेनाओं
का परमेश्वर यों कहताहै मैं आदि और मैं अंत हों और
७ मुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं है। और कौन मेरे तुल्य है जो इस
समय को बुला के निकाले और आगे से जनावे और उसे मेरे
लिये सुधारे उस दिन से कि मैं ने ठहरायेहुए समय के लोगों
को रोपा सो जो बातें अब आतीहैं और आगे आवेंया हैं
८ वे हम से उन्हें वर्णन करें। तुम मत डरो और भय मतखाओ
क्या मैं ने आरंभ से उसे तुझ को न कहा हां मैं ने उसे आगे से
तुझे दिखाया और तुम मेरे साक्षी हो क्या मुझे छोड़ कोई
ईश्वर है हां कोई दूसरा ठीक रक्षक नहीं मैं दूसरा नहीं
९ जानता। वे जो खोदीहुई मूर्त्तिं बनातेहैं सो सब के
सब वृथा हैं और उनके चित्रकार से कुछ लाभ न होगा हां
उनके कार्य उन पर साक्षी देतेहैं वे न देखतेहैं न समुझतेहैं
१० कि हरएक लज्जित हो। कि उसने एक देव बनाया और खोदी
११ हुई मूर्त्ति ढाली जिस्से लाभ नहीं। देख उसके संगी लज्जित होंगे
और उनके कार्यकारी मनुष्य हैं वे सब के सब एकट्ठे होंगे और
आप को आगे करेंगे वे डरजायेंगे और एकट्ठे लज्जित होवेंगे।
१२ लुहार लोहे का टुकड़ा काटताहै और कोइलों में उसे कमाताहै
और हथौड़ियों से उसका डौल करताहै और अपनी भुजा के
बल से उसे गढ़ताहै हां वुह भूखा है और उसका बल घटताहै

१३ वुह पानी नहीं पीता और मूर्छित है। बढ़ई उस पर सूत खींचताहै और लाल मट्टी से लकीर करके डौल खींचताहै और रन्दों से चिकना करताहै और परकार से उस पर रूप खींचताहै और मनुष्य के सुडौल रूप के तुल्य बनाताहै जिसतें
१४ वुह घर में रहे। वुह अपने कार्य के लिये आरज वृक्ष को काटताहै और देवदारु और आलोन वृक्ष को लेताहै और बन के वृक्षों में से अच्छी ढेर लगाताहै वुह आस वृक्ष लगाताहै
१५ और बरखा उसका पालन करताहै। जिसतें वुह मनुष्य के ईंधन के काम के लिये होवे क्योंकि वुह उसे लेताहै और आप को तापताहै हां वुह उसे भट्ठी को तप्त करताहै और रोटी पकाताहै वुह उसे देव भी बनाताहै और उसे दंडवत करताहै वुह उसे खोदीहुई मूर्त्ति बनाताहै और उसके आगे
१६ झुकताहै। उसका कुछ लेके आग में जलाताहै और उसमें कुछ लेके मांस पकाताहै और खाताहै वुह मांस भूनताहै और उसकी भूख मिटजातीहै वुह आप को तापता भीहै और
१७ कहताहै कि वाह मैं तात हुआ मैं आग से सुखी हुआ। और उसकी बचीहुई से एक देव अर्थात अपनी खोदीहुई मूर्त्ति बनाताहै और उसके आगे दंडवत करताहै और उसकी पूजा करताहै और उसकी प्रार्थना करके कहताहै कि मुझे बचाले
१८ क्योंकि तू मेरा देव है। वे नहीं जानते और नहीं समुझते क्योंकि उनकी आंखें मूंदीगईं कि वे देख नहीं सक्ते और उनके
१९ मन कि वे समुझ नहीं सक्ते। और कोई अपने मन में नहीं सोचता और न किसीमें ज्ञान और समझ है कि कहे कि मैं ने तो उसका कुछ आग में जलाया और मैं ने उसके कोइलों पर रोटी भी पकाई और मैं ने मांस भूना और खाया और क्या मैं बचेहुए से घिनित बनाओं क्या मैं पेड़ की खूथी के
२० आगे दंडवत करों। वुह राख खाताहै छलित मन ने उसको ऐसा बहकादिया कि वुह अपना प्राण बचा नहीं सक्ता न

२१ कहिसक्ता कि क्या मेरे दहिने हाथ में झूठ नहीं। हे याक़ूब और इसराईल इन बातों को स्मरण कर क्योंकि तू मेरा दास है मैं ने तुझे बनायाहै तू मेरा सेवक है हे इसराईल मुझ से
२२ तू विसराया नजायगा। मैं ने तेरे अपराधों को घटा के समान और तेरे पापों को कुहिरा के समान छांटडाला मेरी ओर
२३ फिर क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ालियाहै। हे आकाशो गाओ कि परमेश्वर ने ऐसा कियाहै और हे पृथिवी के गहिराओ आनंद का शब्द करो और हे पहाड़ो और हे बन और उस में के हरएक वृक्ष गाओ और न समाओ क्योंकि परमेश्वर ने याक़ूब को छुड़ालियाहै और इसराईल में ऐश्वर्य पावेगा।
२४ परमेश्वर तेरा त्राणकर्त्ता और वुह जिसने तुझे गर्भ से निर्माण किया यों कहताहै कि मैं परमेश्वर हों जो सब कुछ बनाताहों जो एकेला आकाशों को फैलाताहों और जो आप स्थिर
२५ पृथिवी को बिछाताहूं। मैं वही हों जो टोनहोंके छल को मिटाताहों और दैवज्ञों को उन्मत्त करताहूं और पंडितों के विचार को उलट देताहूं और उनके ज्ञान को अज्ञान कर
२६ देताहूं। और अपने दास के वचन को स्थिर करताहूं और अपने दूतों के मंत्र को पूरा करताहूं और यिरोशलीम को कहताहूं कि तू बसाईजायगी और यहूदा के नगरों को कि तुम बनाये जाओगे
२७ और उसके उजाड़ स्थानों को बसाऊंगा। और गहिरे को कहताहूं कि सूखजा और मैं तेरी नदियों को सुखाडालोंगा।
२८ और कोरश को कहताहूं तू मेरा गड़रिया है और वुह मेरा समस्त अभिलाष पूरा करेगा और यिरोशलीम को कहताहूं कि तू बनाईजायेगी और मंदिर को कि तेरी नेवें डालीजायेंगी।

४५ पैंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर अपने अभिषिक्त कोरश को कहताहै कि जिसका दहिना हाथ मैं दृढ़ता से पकड़ताहों जिसतें मैं जातिगणों को उसके

बश में करदेओं और मैं राजाओं की कटि खोलोंगा जिसतें मैं दोहरे द्वार उसके लिये खोल दों और फाटक बंद किये नजायेंगे । २ मैं तेरे आगे आगे चलोंगा और टेढ़े स्थानों को समघर करोंगा और पीतल के द्वारों को टुकड़े टुकड़े करोंगा और लोहे के अड़ंगों ३ को तोड़डालोंगा । और मैं अंधियारे के धन को और गुप्तस्थानों के छिपे ऊए भंडार को तुझे दूंगा जिसतें तू जाने कि इसराईल का ईश्वर जो तुझे तेरा नाम लेके बुलाताहै सो मैं परमेश्वर हों । ४ क्योंकि मैं ने अपने दास याक़ूब और अपने चुनेऊए इसराईल के लिये तुझे तेरा नाम लेके बुलाया हां मैं ने तुझे पदवी दिई है ५ यद्यपि तू ने मुझे न जाना । मैंही परमेश्वर हों और कोई नहीं मुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं है मैं तेरी कटि बांधोंगा ६ यद्यपि तू ने मुझे न जाना । जिसतें वे सूर्य के उदय से पश्चिम लों जानें कि मुझे छोड़ कोई नहीं मैं परमेश्वर हों और कोई ७ नहीं । मैं उंजियाला बनाताहों और अंधियाला सिरजताहों मैं मिलाप करताहों और बिगाड़ उत्पन्न करताहों मैं परमेश्वर ८ इन सभों का कर्त्ता हों । हे आकाशो और कुहिरो ऊपर से टपक पड़ो और मेघ भी धर्म्म बरसावे पृथिवी अपनी गोद खोले और मुक्ति अपना फल उगावे और न्याय एकट्ठे कली निकाले ९ परमेश्वर जिसने उसे सिरजा मैं हों । हाय उस पर जो अपने सृष्टिकर्त्ता से झगड़े ठीकरा भूमि के ठीकरों से झगड़े क्या माटी कुम्हार को कहेगी कि तू क्या करताहै और कार्यकारी १० को कि तेरे हाथ नहीं । हाय उस पर जो अपने पिता से कहताहै कि तू क्या उत्पन्न करताहै और अपनी माता को कि ११ तू क्या जनती है । परमेश्वर इसराईल का धर्म्ममय और उसका कर्त्ताहै यों कहताहै कि मेरे बालकों के कारण मुझ से प्रश्न करतेहो और मेरे हाथों के कार्य के बिषय में क्या मुझे १२ बतातेहो । मैं ने पृथिवी बनाई है और उस पर के मनुष्य को मैं ने सिरजा मेरे हाथों ने आकाशों को फैलाया और उनकी

१३ समस्त सेनाओं को मैं ने आज्ञा किई। सेनाओं का परमेश्वर कहताहै कि मैं ने उसको धर्म में उठाया और मैं उसके सारे मार्गों को समथर करोंगा वुह मेरा नगर बनावेगा और मेरे
१४ बंधुओं को बिना दाम और बिना पलटा छोड़देगा। परमेश्वर यों कहताहै कि मिसर के धन और कोश के बैपार और लंबे लंबे डील के साबियानी तुझ पास आके तेरे होवेंगे वे सीकरों में तेरे पीछे पीछे चले आवेंगे वे तेरे आगे झुकेंगे वे तेरे आगे बिनय के बचन से कहेंगे कि केवल तुझहीं में ईश्वर है और तुझे
१५ छोड़ कोई दूसरा ईश्वर कहीं नहीं। निश्चय तू एक ईश्वर है जो अपने रूंच को छिपाताहै हे मुक्तिदाता इसराईल के ईश्वर।
१६ वे सब के सब लज्जित ऊए हां उसके सारे बैरी घबरागये वे
१७ जो मूर्त्ति निर्माण करतेहैं एकट्ठे घबरा के हटजायेंगे। परन्तु इसराईल परमेश्वर में हो के अनंत मुक्ति के साथ मोक्ष पावेंगे
१८ सनातन लों तुम न लजाओगे न घबराओगे। क्योंकि परमेश्वर यों कहताहै कि जिसने आकाश उत्पन्न किया वही ईश्वर है जिसने पृथिवी को निर्माण करके बनाया उसीने उसे स्थिर किया उसीने उसे अकारथ सृष्टि नहीं किया क्योंकि उसने उसे बसाने के लिये बनाया मैं परमेश्वर हों और कोई दूसरा नहीं।
१९ मैं ने पृथिवी के अंधकार और गुप्त स्थान में तो नहीं कहा मैं ने याक़ूब के बंश को अकारथ नहीं कहा कि तुम मेरी खोज करो मैं परमेश्वर हों जो सत्य कहताहूं मैं ठीक ठीक उत्तर देताहों।
२० तुम जो देशगणों से बच निकलेहो एकट्ठे होओ और मंडली बांधके आओ जो अपने खोदेऊए काष्ठ को लिये फिरतेहैं और उस देव की जो बचा नहीं सक्ता प्रार्थना
२१ करतेहैं वे कुछ नहीं जानतेहैं। तुम प्रचार करो और उन्हें पास लाओ हां मिल के परामर्ष करो कि आगे से इस को किसने जनाया आरंभ से किसने कहा क्या मुझ परमेश्वर ने नहीं जिसको छोड़ और ईश्वर नहीं एक ईश्वर जो सत्य कहताहै

२२ और मुक्तिदेताहै मुझे छोड़ कोई नहीं है। हे जगत के दूर के लोगो मेरी ओर देखो और बचजाओ क्योंकि मैं ईश्वर हों
२३ और दूसरा कोई नहीं। मैं ने अपनी किरिया खाईहै सत्यता मेरे मुंह से निकलगई वुह बचन जो टाला नजायगा कि निश्चय हरएक घुटना मेरे आगे झुकेगा और हरएक जीभ
२४ यह कहके किरिया खायेगी। कि केवल परमेश्वर में मुक्ति और सामर्थ्य है उसके पास वे आवेंगे सब जो उसके बिरोध में
२५ हैं लज्जित होंगे। इसराईल के समस्त बंश परमेश्वर में निर्दोष होके बड़ाई करेंगे।

४६ छयालीसवां पर्ब्ब।

१ बेल झुकताहै नीबो निहुड़ताहै उनकी मूर्त्ति पशुन पर और चौपायों पर लदीहैं उनके लदाव भारी हैं वे थकेहुए पशुन
२ पर अति बोझ हैं। वे निहुड़तेहैं वे एकहुं झुकतेहैं वे अपने
३ बोझे को बचा न सके हां वे आप बंधुआ होगये। हे याकूब के घराने और हे इसराईलके घर के सारे बचेहुए लोगो जिन्हें
४ जन्मते मैं लियेफिरा और जो गर्भ से उठायेगये मेरी सुनो। मैं तुम्हारे बुढ़ापे लों एकसा हों और पक्के बाल लों मैं तुम्हें लिये फिरोंगा मैं ने बनाया और मैं उठाऊंगा और मैं लेजाऊंगा और
५ मैंहीं बचाऊंगा। तुम मुझ को किस्से उपमा देोगे और मुझे किसके तुल्य करोगे और मुझे किस्से मिलाओगे जिसतें
६ हम समान होवें। तुम जो थैली से सोना उठातेहो और जो रूपे को तखड़े में तोलतेहो वे सुनार को बनी में
७ लातेहैं और वे उसके आगे दंडवत करतेहैं। वे उसे कांधे पर उठालेतेहैं वे उसे लियेफिरतेहैं और उसे अपने स्थान पर उतार देतेहैं और वुह खड़ा रहताहै वुह अपने स्थान से निकल न जायगा जो उसे पुकारताहै वुह उसको उत्तर नहीं
८ देसक्ता न वुह उसके दुःख से उसे छुड़ावेगा। इसे चेत करो

और आप को मनुष्य दिखाओ हे फिरे ऊओ ध्यान से इसे
९ सोचो। प्राचीन समय की अगिली बातों को स्मरण करो
निश्चय मैं ईश्वर हों और कोई नहीं मैं ईश्वर हों और मेरे
१० तुल्य कोई नहीं है। आरंभ से अंत्य लों और अगिले समयों से
जो अब लों पूरी नहीं ऊई बताताहूं और कहताहूं मेरा मंत्र
स्थिर होगा और मैं अपनी समस्त इच्छा को पूरा करोंगा।
११ मैं एक गिद्ध को पूर्व से और अपने मंत्र के पुरुष को दूरदेश
से बुलाताहों जैसा मैं ने कहाहै वैसा मैं पूरा करोंगा मैं ने
१२ ठहरायाहै और उसे करडालोंगा। हे कठोर अंतःकरणो तुम
१३ जो बचाव से दूर हो मेरी सुनो। मैं अपनी बाचा के परित्राण
को समीप लाताहों वुह दूर न होगा और मेरी मुक्ति
बिलम्ब न करेगी और मैं सैहून में अपनी मुक्ति देऊंगा और
इसराईल को अपना विभव देऊंगा।

४७ सैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ हे बाबुल की कुंआरी कन्या उतरआ धूल पर बैठ हे कलदानियों
की पुत्री बिनासिंहासन भूमि पर बैठजा क्योंकि तू आगे को
२ कोमल और सुकुआर न कहलायेगी। चक्की ले और अन्न
पीस अपनी चोटी खोल और अपने बड़े बाल दिखा अपनी
३ टंगरी उघार और नदियों में से हलजा। तेरी नंगापन
उघारीजायेगी और तेरी लाज देखीजायेगी मैं पूरा पलटा
लूंगा और मैं किसी मनुष्य को बिनती न करने देऊंगा।
४ हमारा प्रतिफल दाता परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर इसराईल
५ का धर्ममय उसका नाम है। हे कलदानियों की पुत्री चुपके
हो बैठ और अंधकार में जा क्योंकि तू आगे को राजाओं के
६ राज्यों की स्वामिनी न कहलायेगी। मैं अपने लोगों से क्रुद्ध था
मैं ने अपने अधिकार को अशुद्ध किया और तेरे हाथ में उन्हें
सौंप दिया तू ने उन पर दया न किई तू ने बूढ़ों पर भी अपने

७ जुआ का भारी बोझ बढ़ाया। और तू ने कहा कि मैं स्वामिनी सदा रहोंगी इस कारण कि तू ने इन वस्तुन का सोच न किया ८ और अंत में जो तुझ पर बीतेगा उसकी चिंता न किई। हे भोगबिलासिनी जो निश्चिन्त बैठी है तू जो अपने मन में कहती है कि मैं हों और दूसरी नहीं मैं रांड न बैठोंगी और ९ निःसंतानहोना न जानोंगी अब इसे सुन। यद्यपि तेरे टोनहों की मंडली और तेरे मंत्र के महाबल होय तथापि पल मात्र में यही बिपत्ति तुझ पर आपड़ेगी कि दिनभर बंश का खोना १० और बिधवापन वे अचानक तुझ पर चढ़ेंगे। क्योंकि तू ने अपनी दुष्टता पर भरोसा किया और कहा कि मुझे कोई नहीं देखता तेरी बुद्धि और तेरे ज्ञान ने तेरे मन को बिगाड़ दिया यहां लों कि तू ने अपने मन में कहाहै कि मैंही हों और ११ कोई नहीं। इस कारण तुझ पर बुराई पड़ेगी जिसे तू मिटा न सकेगी और तुझ पर बिपत्ति आयेगी जिसका तू प्रायश्चित्त न करसकेगी अचानक नाश तुझ पर आवेगा जिसकी सुधि १२ तुझे न रहेगी। अब अपना टोना और अपने मंत्र की बहुताई कियाकर जिस पर तू ने अपनी युबावस्था से परिश्रम कियाहै १३ जिसतें तू लाभ उठावे जिसतें तू उनसे बल पावे। तू अपने परामर्ष की बहुताई से थकगई अब आकाश के बिचारी और नक्षत्र के दर्शक और हरएक जो अमावास्या का भविष्य कहताहै कि तुझ पर क्या क्या बीतेगा वे अब उठखड़े होवें और तुझे १४ बचावें। देख वे खूंटी की नाईं होंगे आग उन्हें भस्म करेगी वे अपने प्राण को लवर के सामर्थ्य से बचा न सकेंगे उनमें से तापने को एक अंगारा न होगा और समीप बैठने को आग न १५ होगी। वे तेरे लिये ऐसे होंगे जिनके साथ तू ने परिश्रम किया तेरे मंत्री जिनके साथ तू ने अपनी युबावस्था से कार्य किया हरएक उनमेंसे अपने अपने कार्य को निकलजायेगा कोई तुझे न छुड़ावेगा।

४८ अठतालीसवां पर्ब्ब।

१ यह सुनो हे याकूब के घराने जो इसराईल के नाम से कहलाते हो और जो यहूदा के सोते से निकले हो जो परमेश्वर का नाम लेके किरिया खाते हो और प्रगट में इसराईल के
२ ईश्वर को मानते हो परन्तु न सीधाई से न सचाई से। जो पवित्र नगर के से अपना नाम लेते हैं और इसराईल के ईश्वर को अपना सहाड़ा करते हैं उसका नाम सेनाओं का
३ परमेश्वर है। मैं ने आरंभ से अगिली बातों को तुम पर प्रगट किया है और वे मेरे मुंह से निकली हैं और मैं ने उन्हें बर्णन किया मैं ने अकस्मात उन्हें किया है और वे संपूर्ण
४ हुईं। क्योंकि मैं ने जाना कि तू मगरा था और तेरे गले
५ की नस लोहे की है और तेरा ललाट पीतल का। इस कारण पहिले ही मैं ने उन्हें तुझ पर प्रगट किया उनके आने के आगे मैं ने तुझे उनको सुनाया न होवे कि तू कहे कि मेरी मूर्त्ति उनके कारण है और मेरी खोदी हुई और मेरी ढाली
६ हुई मूर्त्ति ने यह भेद बताया है। तू ने आगे से सुना है देखो यह समस्त संपूर्ण हुई और क्या तुम उसे खोल के मान न लोगे मैं अब से नई बस्तें जो आगे से गुप्त थीं जिसका तू कुछ ज्ञान नहीं
७ रखता है सुनाता हों। वे अभी निकाली गईं और प्राचीनता से नहीं और इस दिन से आगे तू ने उन्हें नहीं सुना नहो कि
८ तू कहे देखो मैं उन्हें जानता था। हां तू ने नहीं सुना हां तू ने नहीं जाना हां आरंभ से तेरे कान खुले न थे कि उन्हें ग्रहण करे क्योंकि मैं तो जानता था कि तू छल का काम करेगा जन्म
९ से तेरा नाम ईश्वर त्यागी था। मैं अपने नाम के लिये अपने क्रोध को थामोंगा और अपनी स्तुति के कारण मैं उसे तुझ से
१० रोकोंगा जिसतें मैं तुझे सर्वथा काट नडालों। देख मैं ने तुझे आग में चोखा किया पर चांदी के समान नहीं मैं ने तुझ को

११ कष्ट के भट्ठे में परखा। मैं यह अपने लिये अपनेही लिये करोंगा कि मेरे नाम की अपनिंदा क्योंकर होवे मैं तो अपना
१२ बिभव दूसरे को न देउंगा। हे याक़ूब मेरे दास और हे इसराईल जिसे मैंने बुलाया मेरी सुन वुह मैंही हों
१३ मैंही आदि और मैंही अंत हों। मेरेही हाथ ने पृथिवी की नेव डाली और मेरेही दहिने हाथ ने स्वर्गों को बित्ता में किया
१४ मैं उन्हें पुकारताहों वे सब के सब एकट्ठे होजातेहैं। तुम सब मिल के एकट्ठे होओ और सुनो तुम्में किसने इन बस्तुन का आगम कहाहै परमेश्वर ने जिस पर प्रेम कियाहै वही उसकी इच्छा को बाबुल पर और उसका सामर्थ्य कलदानियों पर
१५ प्रगट करेगा। मैं ने हां मैं नेही कहाहै हां मैं ने उसे बुलायाहै मैं उसे लायाहों और वुह अपने मार्ग में भाग्यमान होगा।
१६ मेरे पास आओ और इसे सुनो आरंभ से मैं ने छिपके कुछ नहीं कहाहै जिस समय से उसकी अस्ति होनेलगी मैं ने उसे ठहरायाहै और अब प्रभु परमेश्वर ने और उसके आत्मा ने
१७ मुझे भेजा है। परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता इसराईल का धर्ममय यों कहताहै कि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर हों जो तुझे तेरे लाभ की बातें सिखलाताहों और तुझे वुह मार्ग सिखलाताहों जिसमें
१८ तुझे जाना आवश्यक है। हाय कि तू मेरी आज्ञा मानता तब तेरा कुशल नदी की नाईं और तेरा आशीष समुद्र के बाढ़
१९ की नाईं होता। तेरे बंश समुद्र की बालू के समान और तेरे गर्भ के संतान उसके कंकरों के तुल्य होते तेरा नाम मेरे आगे से काटा और मिटाया न जाता।

२० तुम बाबुल से निकलो आनन्द के शब्द से कलदानियों के देश से भागो इसे प्रचारो और पृथिवी के अंत लों इसे सुनाओ और कहो कि परमेश्वर ने अपने सेवक याक़ूब को
२१ छुड़ायाहै। और जब वुह बन में से उन्हें लेगया वे पियासे न ऊए उसने उनके लिये पहाड़ी से पानी निकाला हां उसने

पहाड़ी को फाड़ा और पानी धड़धड़ा के निकले परमेश्वर कहता है कि दुष्टों के लिये कुछ कुशल नहीं है।

४९ उंचासवां पर्व्व ।

१ हे दूरदेशो मेरी सुनो और हे लोगो दूर से कान धरो परमेश्वर ने मुझे कोख से बुलाया मेरी माता के गर्भ में से उसने मेरा २ नाम लिया। और उसने मेरे मुंह को चोखा खड्ग बनाया और अपने हाथ की छाया तले उसने मुझे छिपाया हां उसने मुझे ३ चमकता बाण बनाया और अपने तूण में मुझे धर रक्खा। और मुझे कहा कि हे इसराईल तू मेरा दास है जिसमें मैं बिभव ४ पाओंगा। तब मैं ने कहा कि मैं ने वृथा परिश्रम किया मैं ने अकारथ और वृथा अपना बल गवांया तथापि मेरा ब्यवहार पर परमेश्वर के पास है और मेरे कार्य का प्रतिफल मेरे ईश्वर ५ के पास है। और परमेश्वर जिसने मुझे अपने दास होने को कोख से निर्माण किया अब यों कहता है कि मैं ने याकूब को उस पास फेर लाओं और इसराईल को उसके समीप एकट्ठा करों इस लिये मैं परमेश्वर की दृष्टि में ऐश्वर्यमान होओं ६ और मेरा ईश्वर मेरा बल है। तेरे लिये यह छोटी बात है कि तू मेरा दास होवे कि याकूब की गोष्ठियों को बढ़ावे और इसराईल की डालियों को फेर देवे हां मैं तुझे ज्योति के लिये अन्यदेशियों को देउंगा और अपनी मुक्ति पृथिवी के अंत के ७ लिये। परमेश्वर इसराईल का मुक्तिदाता उसका धर्ममय उसे जिसे मनुष्य धिक्कारता है और उसे जिसे देशी घिन करते हैं और उसे जो अध्यक्षों की प्रजा है यों कहता है कि राजा उसे देख के उठ खड़े होंगे क्योंकि परमेश्वर के कारण जो सच्चा है और इसराईल के धर्ममय के क्योंकि उसने तुझे चुना है राजपुत्र तेरी ८ पूजा करेंगे। परमेश्वर यों कहता है कि ग्राह्य के समय में मैं ने तेरी सुनी है और मुक्ति के दिन में मैं ने तेरी सहाय किई है और मैं

तेरी रक्षा करोंगा और तुझे बाचा के लिये मंडली को देउंगा कि देश पर चैन होवे और उजाड़ अधिकारों को वश में देवे।
९ कि बंधुओं को कहे कि निकल जाओ और उनको जो अंधियारे में हैं कि प्रगट होओ वे पथ के निकट चरेंगे और सारे ऊंचे ऊंचे
१० स्थान उनकी चराई होंगे। वे भूखे और पियासे न होंगे तपन का ताप और सूर्य उनको न मारेगा क्योंकि जिसकी दया उन पर है वुह उनकी अगुआई करेगा और पानी के फूटेऊए
११ सोतों पास लेजायगा। और मैं अपने सारे पहाड़ों को समथर मार्ग बनाडालोंगा और मेरे मार्ग ऊंचे कियेजायेंगे।
१२ देख यह दूर से और यह उत्तर और पच्छिम से और ये
१३ सिनिम के देश से आवेंगे। हे स्वर्गो पुकारके गाओ और हे पृथिवी आनंद हो और हे पहाड़ो फूट के गाओ कि परमेश्वर ने अपने लोगों को शांति दिईहै और वुह अपने
१४ दुःखियों पर दया करेगा। परन्तु सैहून ने कहा कि परमेश्वर ने
१५ तो मुझे छोड़दियाहै और मेरा ईश्वर मुझे भूलगयाहै। क्या स्त्री अपने दूधपीवक को भूलसक्तीहै कि वुह अपनी कोख के बालक पर मया न करे हां वुह भूले तो भूले परन्तु मैं तुझे न भूलोंगा।
१६ देख मैं ने तेरा रूप अपने हाथों की हथेलियों पर लिखा है
१७ और तेरी भीतें प्रतिदिन मेरी दृष्टि में हैं। जिन्हों ने तुझे उजाड़ाहै बेग तुझे बनानेलगेंगे और जिन्होंने तुझे उजाड़ छोड़ा
१८ तेरे संतान होंगे। अपनी आंखे चारो ओर उठा और देख सब एकट्ठे होके तुझ पास आतेहैं परमेश्वर कहताहै कि अपने जीवन सों निश्चय तू उन सभों से आप को ऐसा बिभूषित करेगी जैसा बऊमूल्य वस्त्र से और अपने पर उन्हें ऐसा बांधेगी
१९ जैसे दूल्हिन आभूषण को। क्योंकि तेरे बिगड़े और उजड़ स्थान और तेरे सत्यानाश कियेगये देश अब निवासियों से सकेत होंगे
२० और वे जो तुझे निंगलगयेथे वे दूर कियेजायेंगे। तेरे खोये ऊए लड़के फेर तेरे कानों में कहेंगे कि यह स्थान हमारे लिये

२१ सकेत है हमें स्थान दे कि हम बसें। तब तू अपने मन में कहेगी कि इन्हें कौन मेरे लिये जनी मैं तो अपने बालक खोचुकीथी और उजाड़ और अकेली थी और मारी मारी फिरतीथी फेर किसने इनका प्रतिपाल कियाहै मैं त्यक्त और अकेली थी
२२ सो ये कहां थे। प्रभु परमेश्वर यों कहताहै कि देखो मैं देशगणों पर अपना हाथ उठाओंगा और लोगों के लिये अपना झंडा खड़ा करोंगा और वे तेरे बेटों को अपनी गोद में लिये आवेंगे
२३ और तेरी बेटी उनके कांधों पर उठाई जायेंगी। और राजा तेरे प्रतिपालक पिता होंगे और उनकी रानियां तेरी प्रतिपालिका माता वे तेरे आगे औंधे मुंह झुकेंगे और तेरे पाओं की धूल चाटेंगे और तू जानेगी कि मैंही परमेश्वर हों वे जो मुझ पर
२४ भरोसा रखतेहैं लज्जित न होवेंगे। क्या बलवंत से लूट लिया
२५ जायगा अथवा भयानक का अहेर छीनाजायगा। परन्तु परमेश्वर यों कहताहै हां बलवंत का अहेर फेर लियाजायेगा और भयानक की लूट छीनीजायगी क्योंकि जो तुझसे झगड़तेहैं
२६ मैं उससे झगड़ोंगा और मैं तेरे बालकों को छुड़ाओंगा। मैं तेरे अंधेरियों को उन्हीं का मांस खिलाओंगा मीठी मदिरा के समान मैं उन्हीं के लोहू से उन्हें भिंगाओंगा और सारे प्राणी जानेंगे कि मैं ईश्वर तेरा त्राणकर्त्ता हों और कि याकूब का शक्तिमान तेरा मुक्तिदाता है।

५० पचासवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर यों कहताहै कि तेरी माता का त्यागपत्र जिससे मैं ने उसे छोड़ दिया कहां है और मेरे धनिकों में से वुह कौन है जिसके हाथ मैं ने तुम्हें बेचाहै देखो तुम अपने पापों के कारण आपको बेचेहो। और तुम्हारे अपराधों के कारण तुम्हारी माता निकालीगई।
२ इस लिये जब मैं आया तब कोई मनुष्य न था मैं ने पुकारा पर किसीने उत्तर न दिया तो क्या मेरा हाथ सकेताही होगया

कि मैं छुड़ा नहीं सक्ता और क्या मुझ में मुक्ति देनेका बल नहीं देखो मैं अपनी घुरकी से समुद्र को सुखादेताहों नदियों को बन करडालताहों कि उनकी मछलियां निर्जल के कारण
३ सूखगईं और पियास के मारे मरगईं। मैं स्वर्गों को कालिख से पहिनाताहों और उनका ओढ़ना टाट वस्त्र बनाताहों।
४ प्रभु परमेश्वर ने मुझे विद्यामान की जीभ दिईहै जिसतें मैं जानों कि थकेहुए को समय पर बात कहों वुह बिहान बिहान जागताहै वुह मेरे कान को जगाताहै कि बिद्यार्थी की नाईं ध्यान
५ से सुनों। प्रभु परमेश्वर ने मेरा कान खोलाहै और मैं दंगइत
६ नथा और अपने को हटा नलिया। मैं ने अपनी पीठ ताड़कों को दिई और अपने गाल उनको जिन्होंने बालनोचे मैं ने लाज
७ और थूक से अपना मुंह न छिपाया। क्योंकि प्रभु परमेश्वर मेरा सहायक है इस लिये मैं लज्जित न हों इस लिये मैं ने पथरी के समान अपना मुंह धरा और मुझे निश्चय है
८ कि मैं लज्जित न होंगा। वुह जो मुझे निर्दोष ठहराताहै पास है कौन मेरा सामा करेगा आओ आपुस में देखलें कौन
९ है मेरा बैरी सो युद्ध के लिये आवे। देखो प्रभु परमेश्वर मेरा पक्षबादी है वुह कौन है जो मुझ पर दोष लगावे देख वे सब के सब बस्त्र के समान पुराने होजायेंगे कीड़ा उन्हें खाजायेगा।
१० तुम्में वुह कौन है जो परमेश्वर से डरताहै जो उसके सेवक की आज्ञा मानताहै जो अंधकार में चलताहै और ज्योति नहीं रखता सो परमेश्वर के नाम पर भरोसा रक्खे और अपने ईश्वर के
११ सहाड़े पर रहे। देखो सब जो आग सुलगाते हो और अपने को इंधन से घेरतेहो अपनीही आग की ज्योति में और उस इंधन को जिसे तुम ने बाराहै चलो तुम मेरे हाथ से यही पाओगे कि शोक में पड़े रहोगे।

५१ एकावनवां पर्ब्ब।

१ तुम जो धर्म का पीछा करतेहो और परमेश्वर के खोजी हो मेरी सुनो जिस पहाड़ी से तुम तोड़ेगयेहो और जिस खोह
२ के गड़हे से खोदेगयेहो उन्हें देखो। अपने पिता इबराहीम पर और सारा पर जो तुम्हें जनी दृष्टि करो क्योंकि जब वुह एकही था मैं ने उसे बुलाया और उसही को आशीष दिया
३ और बढ़ाया। इसी रीति से परमेश्वर सैहून को शांति देगा वुह उसके सारे उजड़े स्थानों को धीरज देगा वुह उसके बन को अदन की नाईं और उसके जंगल को परमेश्वर की बाटिका की नाईं बनाडालेगा आनंद और आह्लाद और
४ धन्यबाद और स्तुति का शब्द उसीमें पायाजायगा। हे लोगो मेरी सुनो और हे जातिगण मेरी ओर कान धरो क्योंकि व्यवस्था मुझ से निकलेगी और मैं अपना न्याय लोगों की ज्योति के लिये
५ देओंगा। मेरा धर्म निकट है मेरी मुक्ति चलनिकलीहै और मेरी भुजा लोगों का न्याय करेगी और दूरदेश मेरी बाट
६ जोहेंगे और मेरी भुजों की आशा तावेंगे। अपनी आंखें स्वर्गों की ओर उठाओ और नीचे पृथिवी पर निश्चय स्वर्ग धूयें के समान पिघलजायेंगे और पृथिवी बस्त्र की नाईं पुरानी होगी और उसके बासी तुच्छ कीट की नाईं नष्ट होंगे परन्तु मेरी मुक्ति सनातन लों ठहरेगी और मेरा धर्म लोप न होगा।
७ हे लोगो तुम जो धर्म जानतेहो जिसके हृदय में मेरी व्यवस्था है मेरी सुनो दुर्गति मनुष्य की निंदा से मतडरो और उनके
८ चिड़ाने से दबाये नजाओ। क्योंकि बस्त्र की नाईं कीड़े उन्हें चाटजायेंगे और कीट उनको ऊन की नाईं खाजायगा पर मेरा धर्म सनातन लों और मेरी मुक्ति पीढ़ी से पीढ़ी लों धरी
९ रहेगी। जाग जाग हे परमेश्वर की भुजा और बल से विभूषित हो जाग जैसा कि अगिले दिनों में प्राचीन पीढ़ियों में हुआ क्या तू वही नहीं है जिसने राहाब को मारा और

१० अजगर को घायल किया। क्या तू वही नहीं जिसने समुद्र को और बड़े गहिराव के पानियों को सुखाडाला है जिसने समुद्र के गहिराव को मार्ग बनाडाला है कि छुड़ायेहुए लोग पारजावें।
११ इसी रीति परमेश्वर के छुड़ायेहुए लोग लौटेंगे और गाते बजाते सैहून में आवेंगे और सनातन का आनंद उनके सिरों का मुकुट होगा और वे आनंद और आह्लाद प्राप्त
१२ करेंगे और शोक और बिलाप करना भागजायगा। मैं अर्थात मैंही हूं जो तुझे शांतिदेताहों तू कौन है कि दुर्गति मनुष्य से जो मरताहै और मनुष्य के पुत्र से जो घासके समान होजायेगा
१३ डरे। और तू अपने कर्त्ता परमेश्वर को भूलजाय जिसने स्वर्गों को फैलाया और पृथिवी की नेउंडाली और प्रतिदिन अंधेरी के कोप से डराकरे जैसा कि वुह नाश करने को सिद्ध
१४ है और अब अंधेरी का कोप कहां है। जो बंधुआ को निर्बंध करने को आताहै सो शीघ्रता से चला आताहै जिसतें वुह
१५ भकस में न मरे और जिसतें उसकी रोटी न घटे। क्योंकि मैं ईश्वर परमेश्वर हों जो समुद्र को एकक्षण में स्थिर करताहों यद्यपि उसके ढेव हा हा करतेहैं जिसका नाम परमेश्वर सेनाओं
१६ का ईश्वर है। मैं ने अपनी बातें तेरे मुंह में डालीहैं और तुझे अपने हाथ की छाया तले ढांपाहै कि मैं स्वर्गों को फैलाओं और कि पृथिवी की नेवें डालों और कि सैहून को कहों कि तू
१७ मेरा लोग है। हे यिरोशलीम उठ अपने को जगा अपने को जगा तू ने तो परमेश्वर के हाथ से उसके कोप के कटोरे से पीया तू ने थर्थराहट के कटोरे का तलछट पीया तू ने उन्हें
१८ निचोड़ लिया। उन सारे बेटों के मध्य में जिन्हें वुह जनी कोई नहीं जो उसका अगुआ हो और उन सब लड़कों के
१९ बीच जिन्हें उसने पाला एक नहीं जो उसका हाथ पकड़े। ये दो बस्तें तुझ पर आपड़ीं उजाड़ और नाश अकाल और खड्ग
२० कौन तेरे लिये बिलाप करेगा कौन तुझे शान्ति देगा। तेरे

बेटे घबरापड़ेहैं वे बझेड़ए भैंसा के समान हैं वे परमेश्वर के
२१ कोप से तेरे ईश्वर के दपट से भरेहैं। सो अब यह सुन हे
२२ दुःखित पुत्री और तू जो बिना मद्य से मतवाली है। प्रभु
परमेश्वर जो अपने जन का पलटा लेताहै यों कहताहै कि देख
तेरे हाथ से मैं थर्थराहट का कटोरा और अपने कोप के
२३ कटोरे के तलछट लेताहों तू फेर उसे न पीयेगी। और मैं उसे
उनके हाथ में देओंगा जो तुझे सतातेहैं जो तुझे कहतेहैं कि
झुकजा जिसतें हम ऊपर से जायें और तू भूमि की नाईं और
सड़क की नाईं पथिकों के लिये अपनी पीठ को फैलाताहै।

५२ बावनवां पर्ब्ब।

१ जाग जाग हे सैहून और अपना बल पहिन हे पवित्र बस्ती
यिरोश्लीम अपने तेजस्वी वस्त्र पहिनले क्योंकि आगे को
२ कोई अखतनः और अपवित्र तुझ में प्रवेश न करेगा। हे
यिरोश्लीम अपनी धूल झाड़ अपने ऊंचे आसन पर बैठ
३ और हे सैहून की बंधुई कन्या अपने गले से बंधन खोल। क्योंकि
परमेश्वर यों कहताहै कि तुम सेंत से बेचेगये और बिना दाम
४ छोड़ायेजाओगे। कि प्रभु ईश्वर यों कहताहै कि आरंभ में
मेरे लोग मिसर में बास करने को उतरगये और अंत में
५ असूरियों ने उन पर अंधेर किया। सो परमेश्वर यह कहताहै
कि अब मैं यहां क्या करों मेरे लोग तो सेंत से पकड़ेगये परमेश्वर
कहताहै और वे जो उन पर राज्य करतेहैं उसे फूलतेहैं और
६ प्रतिदिन मेरे नाम की निंदा होतीजातीहै। सो मेरे लोग
उस दिन मेरा नाम जानेंगे क्योंकि मैं वही परमेश्वर हों
जिसने बाचा दिई और देखो मैं वहां हों।
७ आनंदित दूत के अर्थात उसके जो कुशल सुनाताहै मंगल
समाचार का आनन्दमय दूत के अर्थात उसके जो मोक्ष
सुनाताहै उसके जो सैहून से कहताहै कि तेरा ईश्वर राज्य

सारताहै उनके चरण पहाड़ों पर कैसे सुन्दर दिखाईदेतेहैं।
८ तेरे सारे रखवाल अपने शब्द उठातेहैं वे एक साथ उठातेहैं
जब परमेश्वर सैहून की ओर फिरेगा वे परस्पर देखेंगे।
९ आनंद से फूटनिकलो मिलके शब्द करो हे यिरोशलीम के
उजाड़ो क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को शांति दिईहै उसने
१० इसराईल को मुक्ति दिईहै। परमेश्वर ने समस्त जातिगण की
दृष्टि में अपनी पवित्र भुजा को उघाराहै और पृथिवी के सारे
११ सिवानों ने हमारे ईश्वर की मुक्ति को देखाहै। बिदा होओ बिदा
होओ उस्से निकलजाओ कोई अपवित्र वस्तु मत छूओ उसके
मध्यमें से निकलो और तुम जो परमेश्वर के पात्रों को उठातेहो
१२ पवित्र होओ। निश्चय शीघ्रता से निकल न जाओगे और न भाग
के निकल जाओगे क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे आगे आगे चलेगा
और इसराईल का ईश्वर तुम्हारे पिछले को पहुंचावेगा।
१३ 　　देखो मेरा दास भाग्यमान होगा वुह उभाड़ाजायगा
१४ और महान और अत्यंत ऊंचा कियाजायगा। तुझ से बहुतेरे
आश्चर्यित हुए उसका रूप मनुष्य के रूप से अधिक और उसकी
१५ मूर्त्ति मनुष्यन के संतानकी से अधिक बिगाड़ीगई। इसी रीति
से वुह बहुतसी मंडलियों पर छिड़केगा और राजा उसके आगे
अपना मुंह बंद करेंगे क्योंकि जो आगे उन पर नहीं वर्णन
कियागया सो देखेंगे और जो उन्होंने नहीं सुनाथा वे ध्यान से
सोचेंगे।

५३ तिरपनवां पर्ब्ब।

१ हमारे संदेश पर कौन बिश्वास लायाहै और परमेश्वर की भुजा
२ किस पर प्रगट हुई। क्योंकि वुह उनकी दृष्टि में कोमल पौधे
की नाईं उगताहै और सूखी भूमि की जड़ के समान उसमें
न कुछ डौल है न सुन्दरता है कि हम उसे कुछ समझें और
उसका रूप और उसकी सुंदरता ऐसी कुछ नहींहै कि हम

३ उसे चाहें। वुह निंदितहै और मनुष्यन में उसकी कुछ गिनती नहीं दुःखी मनुष्य और शोक से परिचित है वुह ऐसा निन्दित था और हमने उसे कुछ न समझा जैसा कोई अपना मुंह हमसे
४ छिपाता है। निश्चय वुह हमारी दुर्बलता को और हमारे शोकों को लेगया तथापि हमने उसे बिचार से माराहुआ हां
५ ईश्वर का ठोंकाहुआ और सतायाहुआ समझा। परन्तु वुह हमारे अपराधों के लिये घायल कियागया और हमारी बुराइयों के लिये मारागया जिस ताड़ना से हमारा कुशल प्राप्त है सो उस पर धरीगई और उसके कुचलेजाने से हम
६ चंगेहुए। हम सब भेड़ों की नाईं भटकगये हम्में से हरएक अपने अपने मार्ग पर फिर गया और परमेश्वर ने हम सब का
७ कुकर्म्म उस पर धरा। वुह उसे लियागया और उसीके सिर पड़ा और उसने अपना मुंह न खोला जैसे मेम्ना को घात के लिये लेजाते हैं और जैसे भेड़ रोम कटवैये के आगे गूंगा है
८ सो उसने अपना मुंह नहीं खोला। वुह अनीति के बिचार से बाहर निकालागया और कौन उसकी वंशावली का वर्णन करसके क्योंकि वुह जीवतों के देश से काटगया मेरे लोग
९ के अपराधों के कारण उसका प्राण घात हुआ। दुष्टों के साथ उसकी समाधी ठहराईगई परन्तु धनमान के संग उसकी समाधि हुई यद्यपि उसने कुछ अनुचित न किया और उसके
१० मुंह में कुछ छल न था। तथापि परमेश्वर को अच्छालगा कि उसे कष्ट से कुचले यदि उसका प्राण प्रायश्चित्त का बलि करे तो वुह अपने वंश को देखेगा वुह अपनी आयुर्दाय को बढ़ावेगा
११ और परमेश्वर की दया का नियम उसके हाथ में फलेगा। वुह अपने प्राण की पीड़ा का फल देख के संतुष्ट होगा मेरा सेवक अपने ज्ञान से बहुतों को निर्दोष ठहरावेगा क्योंकि वुह उनकी
१२ बुराइयों का दंड आप भोगेगा। सो मैं बहुत लोगों को उसके भाग में देऊंगा और बली लोग उसकी लूट के भागी होंगे

इस कारण कि उसने अपना प्राण मृत्यु को सौंप दिया और अपराधियों में गिनागया और बहुतों के पाप उठा लिये और अपराधियों के लिये बिनती किई ।

५४ चौवनवां पर्ब्ब ।

१ हे बांझ जो न जनीथी आनंद के मारे चिल्ला हे तू जिसे पीर न लगीथी आनंद से फूट फूट के गा और आह्लादित हो क्योंकि परमेश्वर कहताहै कि उजाड़ के बालक बिवाहिता के २ बालकों से अधिक हैं। अपने तंबू का स्थान बढ़ा और तेरे निवास की चांदनी फैलाईजाय चूक न कर अपने रस्से लम्बा ३ कर और अपने खूंटे को दृढ़ता से गाड़। क्योंकि तू दहिने और बायें बढ़ के फूट निकलेगी और तेरे बंश अन्यदेशियों का अधिकार प्राप्त करेंगे और उजाड़ नगरों में बास करेंगे। ४ मत डर कि तू घबरा नजाये और लज्जित मत हो कि तेरा अपमान न कियाजायगा क्योंकि तू अपनी तरूणाई की लाज भूलजायेगी और तू अपने रंडापे के अपमान को फेर स्मरण ५ न करेगी। कि तेरा कर्त्ता तेरा पति है उसका नाम परमेश्वर ६ सेनाओं का ईश्वर है। और तेरा मुक्तिदाता इसराईल का धर्म्मय है वुह सारी पृथिवी का ईश्वर कहलावेगा क्योंकि तेरा ईश्वर कहताहै कि त्यक्त और अति दुःखित स्त्री की नाईं और युवावस्था में ब्याहीगई परन्तु पीछे त्यक्तपत्नी की नाईं परमेश्वर ७ ने तुझे फिरके बुलाया। तनिक क्रोध में मैं ने तुझे त्यागा ८ परन्तु बड़ी दया के साथ तुझे फेर ग्रहण करोंगा। तनिक क्रोध में मैं ने तुझसे पलमात्र अपना मुंह छिपायाथा परन्तु मैं सनातन की दया से तुझ पर दया करोंगा तेरा मुक्तिदाता ९ परमेश्वर यों कहताहै। कि मैं अब वही करोंगा जैसा नूह के दिनों में मैं ने किरिया खाईथी कि नूह के ऐसे जल पृथिवी पर फेर कभी न पड़ेंगे तैसा मैं ने किरियाखाईहै

१० कि मैं तुझ से क्रुद्ध न होंगा और न तुझे डपटोंगा। क्योंकि पहाड़ टलायेजायेंगे और पहाड़ियां उलटाईजायेंगी परन्तु तुझ पर से मेरी दया टलाई न जायेगी और मेरे कुशल की बाचा उलटाई न जायेगी परमेश्वर जो तुझ पर अति कोमल प्रेम
११ रखताहै यों कहताहै। हे आंधी की मारीऊई दुःखित और शांति रहित देख मैं तेरे पत्थरों पर सिंदूर का रंग
१२ करोंगा और तेरी नेवें नीलमणि की। और मैं तेरे मुंडेरे वैदुर्य और तेरा फाटक सूर्यकांत के बनाऊंगा और तेरी भीत
१३ के चारों ओर महंग मोले पत्थरों के बनाओंगा। और तेरे सारे लड़के परमेश्वर की सिक्षा पावेंगे और तेरे लड़कों का
१४ भाग्य बड़ा होगा। तू धर्म में दृढ़ किईजायेगी तू अंधेर से दूर रहेगी हां तू उनसे न डरेगी और भय से क्योंकि वुह तेरे पास
१५ न आवेगा। देख वे एकट्ठे होंगे परन्तु मेरी आज्ञा से नहीं जो
१६ कोई तेरे बिरोध में एकट्ठे होंगे वे तेरे लिये गिरेंगे। देख मैं ने लोहार को सिरजाहै जो कोइलों को फूंक के बनाताहै और अपने कार्य्य के लिये हथियार निकालताहै और मैं ने
१७ नाशक को उजाड़ करने के लिये सिरजाहै। जो हथियार तेरे बिरोध में बनाहै न फलेगा और जो जो जीभ तेरे बिरोध में झगड़ेगी तू उन्हें दोषी करेगा परमेश्वर के दासों का अधिकार यह है और उनकी निर्दोषता मुझ से है परमेश्वर कहताहै।

५५ पंचपनवां पर्ब्ब।

१ हे हरएक पियासो जल के पास आओ और जिसके पास कुछ चांदी नहीं है आओ मोल लेओ और खाओ हां आओ बिना चांदी और बिना दाम दाखरस और दूध मोल लेओ।
२ तुम उसके लिये क्यों चांदी तौलते हो जो रोटी नहीं और अपने धन उसके लिये जिस्से जी न भरेगा ध्यान से मेरी सुनो और उसे

खाओ जो निश्चय अच्छा है और तुम्हारा मन नाना पदारथों से
३ आनंदित होगा। कान झुकाओ और मुझ पास आओ सुनो और
तुम्हारा प्राण जीयेगा और मैं तुम से एक सनातन की बाचा
बांधोंगा और मैं अनुग्रह की बाचा जो दाऊद से किईगई जो
४ कधी न घटेगी तुम्हें देओंगा। देखो मैं ने उसे लोगों के साची के
लिये दियाहै और जातिगण के लिये अगुवा और आज्ञाकारी।
५ देख परमेश्वर अपने ईश्वर और इसराईल के धर्ममय के लिये
तू देशी को जिसे तू न जानताथा बुलावेगा और वुह देशी जो
तुझे नहीं पहिचानताथा तेरे पीछे दौड़ेगा क्योंकि उसने तुझे
६ महान कियाहै। जबलों परमेश्वर पायाजावे
७ तबलों उसे ढूंढ़ो जबलों वुह पास है तुम उसे पुकारो। दुष्ट
अपने मार्ग को और अधर्मी अपनी भावना को त्यागे और
परमेश्वर की ओर फिरे क्योंकि वुह दया से उसे ग्रहण करेगा
और हमारे ईश्वर की ओर आवे क्योंकि वुह क्षमा से परिपूर्ण है।
८ क्योंकि परमेश्वर कहताहै कि मेरी चिंता तेरी नहीं है और न तेरे
९ मार्ग मेरे मार्ग हैं। क्योंकि जैसे कि स्वर्ग पृथिवी से ऊंचे हैं वैसे मेरे
मार्ग तेरे मार्गों से और मेरी चिंता तेरी चिंताओं से ऊंची हैं।
१० निश्चय जैसा कि वृष्टि और पाला आकाश से बरसतेहैं और फेर
उधर नहीं जाते परन्तु पृथिवी को सींचतेहैं और उसे फलवती
करतेहैं और उसकी बढ़ती दिलातेहैं कि वुह बोवैये को बीज
११ और खवैये को रोटी देवे। मेरा तैसा बचन होगा जो मेरे मुंह
से निकलताहै सो मुझ पास निष्फल न फिरेगा परन्तु मेरी
बांछा को पूरा करेगा और जिस के लिये मैं ने उसे भेजा उसे
१२ फलवंत करेगा। निश्चय तुम आनंद से निकलोगे और कुशल से
बढ़ायेजाओगे पहाड़ और पहाड़ियां तुम्हारे आगे फूट फूट के गायेंगे
१३ और खेत के सारे पेड़ तालीं बजावेंगे। कांटों के झाड़ की संती
देवदारु का वृक्ष ऊगेगा और वुह परमेश्वर के स्मरण के लिये
सनातन का चिह्न होगा जो कभी मिटाया न जायगा।

५६ छपनवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर यों कहताहै कि तुम न्याय को धारण करो और धर्म का कार्य करो क्योंकि मेरी मुक्ति समीप है आने पर सिद्ध
२ है और मेरा धर्म प्रगट होने पर। धन्य वुह मनुष्य जो यह करताहै और मनुष्य का पुत्र जो दृढ़ता से उसे धारण करताहै जो बिश्राम को पालन करताहै और उसे अशुद्ध नहीं करता
३ और अपना हाथ कुकर्म करने से खींचे रहताहै। परदेशी का पुत्र जो परमेश्वर से मिलगयाहै न कहे कि परमेश्वर ने मुझे अपने लोगों से निर्धार अलग करदियाहै और नपुंसक न कहे
४ कि देख मैं एक सूखा वृक्ष हों। क्योंकि परमेश्वर नपुंसकों को यों कहताहै कि उनमें से जो कोई मेरे बिश्राम को पालन करतेहैं और जो मेरी इच्छा को चाहतेहैं और जो दृढ़ता से
५ मेरी बाचा को थामतेहैं। उन्हें मैं अपने घर में और अपनी भीतों में एक स्मारक और एक नाम जो बेटे बेटियों से अच्छे हैं देओंगा मैं उन्हें सनातन का नाम देओंगा जो कभी
६ मिटाया नजायेगा। और परदेशी के बेटे जो परमेश्वर की सेवा करने को और परमेश्वर के नाम से प्रीति रखने को और उसके सेवक होने को उस्से मिलगयेहैं हरएक जो बिश्राम को पालन करतेहैं और उसे अशुद्ध नहीं करते और जो मेरी बाचा को
७ दृढ़ता से थामेंरहतेहैं। मैं उनको अपने पवित्र पहाड़ पर लाओंगा और अपने मंदिरमें उन्हें आनंदित करोंगा उनके होम की भेंट और उनके बलिदान मेरी यज्ञबेदी पर ग्राह्य
८ होंगे क्योंकि मेरा घर सारे लोगों के कारण प्रार्थना का घर कहलायेगा। परमेश्वर ईश्वर जो इसराईल के अजातियों को एकट्ठा करताहै यों कहताहै कि उन एकट्ठे कियेगयों से अधिक मैं औरों को भी उनके पास एकट्ठे करोंगा।
९ हे खेत के पशुओ चलेआओ हे बनैले पशुओ आओ भक्षण करो।
१० उसके सारे रखवाल अंधे हैं वे सब मूर्ख हैं वे सब गूंगे कुत्ते हैं

वे भूंक नहीं सक्ते और स्वप्न दर्शी आलसी और ऊंघने में प्रसन्न
११ हैं। हां वे भूखे कुत्ते हैं जो तृप्ति को नहीं जानते गड़रिये आप
समुझ नहीं सक्ते वे सब के सब अपने अपने मार्ग चलेजाते हैं
हरएक छोटे से बड़े लों अपने अपने स्वारथ की ओर जाताहै।
१२ हरएक कहताहै कि आओ मदिरा लावें आओ तीक्ष्ण मदिरा
सोखें और आजही की नाईं कलकी आनन्दता होगी हां इस्से
भी अधिक होगी।

५७ सतावनवां पर्ब्ब।

१ धर्मी नाश होताहै और कोई नहीं सोचता और भक्त लोग
उठायेजातेहैं और कोई नहीं बूझताहै कि धर्मी बुराई से
२ उठायेजातेहैं। वुह कुशल में जायगा वुह अपने बिछौनों पर
चैन करेगा अर्थात सिद्ध जन जो सीधे मार्ग चलताहै।
३ परन्तु हे टोनहिन के बेटो और हे छिनला और छिनाल
४ के बंशो इधर आओ। तुम किसको ठट्ठे में उड़ातेहो किस
पर अपना मुंह फैलातेहो और जीभ निकालतेहो क्या तुम
५ ईश्वरत्यागी के बालक मिथ्या बंश नहीं हो। जो अपने को
हरएक हरे पेड़ के नीचे मूर्त्तिन की कामना से जलातेहो जो
पर्बत की कंदलों में और तराइयों में बालकों को घात
६ करतेहो। नीचाई के चिकने पत्थरों में तेरा अंश है ये तेरे
भाग हैं अर्थात इन्हों के लिये तर्पण किया और तू ने अर्पण
७ किया क्या मैं प्रसन्नता से ऐसे कार्य देख सक्ताहों। अति ऊंचे
पर्बत पर तू ने अपना बिछौना बिछाया और वहां भी बलिदान
८ करने को चढ़ा। द्वारों और चौखटों के पिछवाड़े तू ने अपना
स्मारक स्थापन किया तू मुझ से फिरगया और ऊपर चढ़गया
तू ने अपना बिछौना बढ़ाया और उनके साथ बाचा बांधी
तू ने उनके बिछौने से मन लगाया और तू ने उनके लिये
९ एक स्थान सिद्ध किया। और तू राजा के आगे तेल की

भेंट लेके गयाहै और अपने बज़मूल्य तेलों को बढ़ायाहै और अपने दूतों को दूर भेजाहै और आप को परलोक लों
१० नीचा कियाहै। तू ने अपनी दूर दूर की यात्रों से आप को थकादियाहै तू ने कहाहै कि कुछ आशा नहीं तू ने अपने परिश्रम से अपनी जीवनवृत्ति पाईहै इस लिये तू सर्वथा निर्बल
११ नहीं ऊआहै। और तू किस्से ऐसा डरगयाहै कि तू ने ऐसी मिथ्या कही और तू ने मुझे स्मरण न किया और अपने मन में न सोचा क्या इस लिये नहीं कि मैं चुपका होरहा और
१२ आनाकानी किई और तू मुझसे नहीं डरता। परन्तु मैं अपने धर्म को। वर्णन करोंगा और तेरे कार्य तेरे काम न आवेंगे।
१३ जब तू रोवे तब तेरे संगी तुझे छुड़ावें परन्तु पवन उनसभों को उड़ालेजायगा एकही स्वास उन्हें लेजायेगा परन्तु जो मुझ पर भरोसा रखताहै वुह देश को प्राप्त करेगा और मेरे पवित्र
१४ पहाड़ का अधिकारी होगा। तब मैं कहोंगा तुम मार्गों को बनाओ मार्गों को बनाओ समथर करो मेरे लोगों की सड़क
१५ में से हरएक रोकको उठादेओ। क्योंकि अति महान परमेश्वर जो सनातन निवासी जिसका नाम धर्म्ममय है यों कहताहै कि मैं ऊंचे और पवित्र स्थान में वास करोंगा और उनके संग जिनका मन चूर्ण और दीन है वास करोंगा कि दीन के मन को
१६ उभाड़ों और चूर्णांतःकरण को जिलाओं। क्योंकि मैं सदा अपवाद न करोंगा और नित्य कोपित न होंगा क्योंकि मेरे आगे से आत्मा और जीवत प्राण जिन्हें मैंने बनायाहै दबमरते।
१७ मैं उसके लोभ के कुकर्म्म के लिये क्रुद्ध ऊआ और उसे मारा मैं ने क्रोध में अपना मुंह छिपाया और वुह भटक के
१८ जिधर उसका मन चाहा उधर फिरगया। मैं ने उसकी चालों को देखाहै और मैं उसे चंगा करोंगा और उसका अगुआ होओंगा और उसको और उसके बिलापियों को
१९ फिर शांति देओंगा। परमेश्वर कहताहै कि मैं होठों के

फल को उत्पन्न करताहों कुशल कुशल उसको जो समीप है
२० और उसको जो परे है और मैं उसे चंगा करोंगा। परन्तु
दुष्ट तरंगित समुद्र के समान हैं जो कधी स्थिर नहीं होसक्ता
२१ परन्तु जिसके जल कीच और मैल उछालतेहैं। मेरा ईश्वर
कहताहै कि दुष्टों के लिये कुशल नहीं।

५८ अठावनवां पर्व्व।

१ चिल्लाके पुकार ठहर मत नरसिंगे के समान अपना शब्द
उठा और मेरे लोगों पर उनके अपराध और याक़ूब के घराने
२ पर उनके पापों को वर्णन कर। तथापि वे प्रतिदिन मुझे
खोजतेहैं और उस जाति के समान जो धर्म का कार्य करतीहै
और अपने ईश्वर के विधि को नहीं छोड़ाहै वे मेरे मार्गों को
जान्ने के लिये आनंदित हैं वे न्याय के बिधिन के विषय में नित्य
३ मुझे पूछतेहैं वे ईश्वर के समीप आने को आनंदित हैं। हमने
किस लिये ब्रत कियाहै और तू नहीं देखताहै हमने क्यों
अपने प्राण पर दुख उठाया और तू चिंता नहीं करता देखो
तुम अपने ब्रत के दिन में आनंद करतेहो और अपनी
४ आवती बनी को निचोड़के लेतेहो। देखो तुम झगड़े और
अपवाद के लिये ब्रत करतेहो और कंगालों को घूंसे मारतेहो
इस रीति से तुम मेरे आगे क्यों ब्रत करते हो कि अपने
५ शब्द को ऊपर सुनाओ। क्या ऐसे ब्रत को मैं चाहताहों
कि मनुष्य दिन भर के लिये अपने प्राण को कष्ट देवे क्या यह
कि वुह झाऊ की नाईं सिर झुकावे और टाट और राख
बिछावे क्या यही ब्रत और परमेश्वर की प्रसन्नता का दिन
६ कहावेगा। क्या यह वुह ब्रत नहीं जिसे मैं ने ग्राह्य कियाहै
कि अंधेर दुष्टता की गाठें खोलडालो और अंधेर के बोझे को
ढीला करो और अंधेर से पिसेहुए का उद्धार करो और जिसतें
७ तुम लोग हरएक जूआ तोड़डालो। क्या यह नहीं कि तू भूख

को अपनी रोटी बांटे और तू सारे फिरतेऊए कंगाल को अपने घर में लावे और जब जब किसी को नंगा देखे तू उसे पहिनावे
८ और तू आपको अपने मांस से न छिपावे । तब तेरी ज्योति प्रातःकाल के समान फूट निकलेगी और तेरे घाव शीघ्र चंगे होंगे और तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा और परमेश्वर
९ का तेज तेरे पीछे पीछे चलेगा। तब तू पुकारेगा और परमेश्वर उत्तर देगा तू चिल्लायेगा और वुह बोलउठेगा मैं यहां हों यदि तू अपने मध्य में से उस जुए को और अंगुलियां हिलाने
१० को और कुवचन को निकाल फेंके। और यदि तू भूखों को अपनी रोटी देवे और दुःखित प्राण को संतुष्ट करे तो अंधकार में तेरी ज्योति उदय होगी और तेरा अंधकार मध्याह्न के समान होगा।
११ और परमेश्वर सदा तेरी अगुआई करेगा और अत्यंत झुराहट के समय में तेरे प्राण को संतुष्ट करेगा और तेरे बल को नवीन करेगा और तू सींची ऊई बाटिका का और बहतेऊए सोते
१२ के समान जिसका जल कधी न घटे होजायेगा। और तुझ से जो उत्पन्न होंगे पुराने उजाड़ों को बनाडालेंगे वे पुरानी नेवों को उठावेंगे और तू टूटीऊई मेड़ का सुधारक और देशवासियों के पथ का बनवैया कहावेगा ।

१३ यदि तू मेरे पवित्र दिन में अपने अभिलाष को करने से और विश्राम से अपना पांव रोक लेगा और विश्राम को आनंद का दिन और परमेश्वर के पवित्र पर्ब्ब को प्रतिष्ठित कहेगा और अपनी इच्छा से अलग रह के अपने आनंद पर चलने से और वृथा बात चीत से अलग रहके उसकी प्रतिष्ठा करेगा ।
१४ तब तू परमेश्वर से आनंदित होगा और मैं तुझे पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चढ़ाओंगा और मैं तुझे तेरे पिता याक़ूब का अधिकार खिलाओंगा क्योंकि यह परमेश्वर का मुख बचन है।

५९ उनसठवां पर्ब्ब।

१ देखो परमेश्वर का हाथ सिकुड़ नहीं गया कि वुह बचा न सके
२ और उसके कान भारी नहीं कि सुन न सके। परन्तु तुम्हारी
बुराइयों ने तुम्हारे और तुम्हारे ईश्वर में बिभाग किया है और
तुम्हारे पापों ने उसके मुंह को तुम से छिपाया ऐसा कि वुह
३ नहीं सुनता। क्योंकि तुम्हारा हाथ लोहू से और तुम्हारी
अंगुलियां बुराई से अशुद्ध हैं तुम्हारे होंठ झूठ बोलते हैं और
४ तुम्हारी जीभ दुष्टता गुनगुनाती है। न्याय को कोई नहीं पूछता
और कोई सच्चाई के लिये बाद नहीं करता वे तुच्छ पर
भरोसा रखते हैं और झूठ बोलते हैं वे बुराई धारण करते हैं
५ और पाप जनते हैं। वे नाग के अंडे सेवते हैं और मकड़ियों का
जाला बीनते हैं जो उनके अंडों में से कुछ खाता है सो मरजाता है
६ और जो टूटजाता है उसमें से संपोला निकलता है। उनके जाले
से पहिरावा न बनेगा वे आपको अपने कार्य से न ढापेंगे उनके
कार्य अधर्म के कार्य हैं और अंधेर का कार्य उनके हाथों में है।
७ उनके पांव बुराई में शीघ्रता से दौड़ते हैं और वे निर्दोष का लोहू
बहाने को लैस हैं उनकी चिंता बुराई की चिंता हैं और नाश
८ और बिपत्ति उनके मार्गों में हैं। वे कुशल का मार्ग नहीं जानते
और उनकी चालों में न्याय नहीं उन्हों ने अपने लिये टेढ़े मार्ग
बनाये हैं सो जो कोई उन में जाता है कुशल को नहीं जानता।

९ इस लिये न्याय हम से दूर है और धर्म हमें नहीं ग्रहण
करता हम ज्योति की बाट जोहते हैं परन्तु देखो अंधकार और
१० हम उंजाला चाहते हैं परन्तु अंधियारे में चलते हैं। हम भीत
को अंधे की नाईं टटोलते हैं और अदृष्टि की नाईं भ्रमते हैं हम
मध्याह्न को संध्याकाल की नाईं ठोकर खाते हैं सुभोजन के मध्य में
११ ऐसे हैं जैसे मृतकों में। हम सब के सब भालू की नाईं गर्जते हैं
और कपोतों की नाईं बिलाप किया करते हैं हम न्याय की बाट
जोहते हैं परन्तु नहीं है और मुक्ति के खोजी हैं पर वुह हम

१२ से दूर है। क्योंकि हमारे अपराध तेरे आगे बढ़गयेहैं और हमारेही पाप हम पर अपवाद करतेहैं क्योंकि हमारे पाप हमसे मिलके हुएहैं और हम अपनी बुराइयों को मानलेतेहैं।
१३ परमेश्वर से फिरजाने से और झूठ बोलने से और अपने ईश्वर की ओर से उलटा फिरने से बिगाड़ की बात बोलने से आज्ञा उलंघन धारण करने से और मिथ्या बातों को मन में सोचने से।
१४ बिचार उलटा फिरगया और न्याय दूर खड़ाहै क्योंकि सत्य सड़क में ठोकर खागया और खराई प्रवेश नहीं करसक्ती।
१५ और सत्यता सर्वथा खोगई और वुह जो बुराई से बचरहताहै सो आपको लुटायेजाने के खटके में डालताहै परमेश्वर ने
१६ यह देखा और उदास हुआ कि न्याय न था। और उसने देखा कि कोई मनुष्य न था और उसने आश्चर्य किया क्योंकि कोई बिचवई नहीं तब उसीकी भुजा ने उसके लिये मुक्ति सिद्ध
१७ किई और उसके धर्म ने उसे संभाला। क्योंकि उसने धर्म को झिलम की नाईं पहिना और मुक्ति का टोप उसके सिर पर था और उसने वस्त्र की संती बैरलेने का पहिरावा पहिना और
१८ उसने चादर की नाईं ताप को पहिना। वुह प्रतिफल देने में सामर्थी है वुह जो प्रतिफल देने में शक्तिमान है पलटा लेगा वुह अपने बैरियों पर क्रोध करेगा और अपने बैरियों को भी प्रतिफल
१९ देगा और दूरदेशियों से प्रतिफल लेगा। जब वुह रुकीहुई नदी की नाईं जिसे प्रचंड बयार उड़ालेजातीहै आवेगा तब परमेश्वर का आत्मा उसके बिरुद्ध एक झंडा खड़ा करेगा तब पश्चिम के बासी परमेश्वर के नाम से डरेंगे और पूर्व के निवासी उसको
२० महिमा देंगे। और परमेश्वर कहताहै कि मुक्तिदाता सैहून
२१ में आवेगा और याकूब से अधर्म को फेरदेगा। और परमेश्वर कहताहै कि उनके साथ मेरी यह बाचाहै कि मेरा आत्मा जो तुझ पर है और मेरी बातें जो मैं ने तेरे मुंह में डालीहैं तेरे मुंह से और तेरे वंश के मुंह से और तेरे वंश के वंश के मुंह से इस समय से सनातन लों जाती न रहेंगी।

६० साठवां पर्व्व ।

१ उठ और ज्योतिमान हो क्योंकि तेरी ज्योति आ पहुंचीहै और
२ परमेश्वर का तेज तुझ पर उदय हुआहै। क्योंकि देख अंधकार
पृथिवी को और अन्यदेशियों को घना बुहिरा घेरलेगा परन्तु
परमेश्वर तुझ पर उदय होगा और उसका तेज तुझ पर
३ प्रत्यक्ष होगा। और देशगण तेरी ज्योति में और राजगण
४ तेरे सूर्य के उदय के चमक में चलेंगे। तू आंख उठा के चारों
ओर देख वे सब के सब एकट्ठे होतेहैं वे तेरे पास आतेहैं तेरे
बेटे दूर से आवेंगे और तेरी बेटियां तेरी गोद में उठाईजायेंगी।
५ जब समुद्र के धन तुझ पर ढालेजायेंगे और जब जातिगण के
द्रव्य तुझ पास आवेंगे तब तू डरेगी और आनंद के मारे न
समायेगी और तेरा अंतःकरण व्याकुल होके बढ़ जायेगा।
६ ऊंटों की बहुताई तुझे ढांपलेगी और मदयान की और ईफ़ा
की सांड़नियां सबके सब शीबा से आवेंगे और सोना और लोबान
७ लावेंगे और आनंद से परमेश्वर की स्तुति का प्रचार करेंगे। केदार
के सारे झुंड तेरे पास एकट्ठे होंगे और नबायूस के सारे मेंढ़े
तेरी सेवा करेंगे वे ग्राह्य के साथ मेरी यज्ञवेदी पर चढ़ेंगे और
८ मैं अपने सुन्दरघर को अधिक सुन्दर करोंगा। ये सब कौन हैं
जो मेंढ़ों की नाईं हैं और कपोतों की नाईं उड़े चलेआतेहैं।
९ निश्चय दूर तीर और पहिलों में तरशीश के जहाज तेरे ईश्वर
परमेश्वर के नाम के और इसराईल के धर्ममय के कारण से आवेंगे
क्योंकि उसने तुम्हें ऐश्वर्यमान किया तेरे बेटों को दूर से उनके
१० सोने और चांदी समेत लानेको मेरी बाट जोहेंगे। और
परदेशियों के बेटे तेरी भीतें उठावेंगे और उनके राजा तेरी
सेवा करेंगे क्योंकि मैं ने अपने क्रोध में तुझे मारा परन्तु अपने
११ अनुग्रह में मैं ने अति कोमल दया से तुझे समेटलिया। और
तेरे फाटक नित खुले रहेंगे वे रात दिन कभी बंद न होंगे कि
देशगण के धन तुझ पास लावें और जिसतें उनके राजा धूमधाम

१२ से आवें। क्योंकि जो जाति और जो राज्य तेरी सेवा न करेंगे सो सर्वथा नाश होजायेंगे हां वे देशगण सर्वथा नष्ट
१३ होजायेंगे। लबनान का विभव तुझ पास आवेगा और देवदारु और तिदहार और आशोर के वृक्ष एकट्ठे होके मेरे पवित्र स्थान को बिभूषित करने को आवेंगे जिसतें अपने चरण के पीढ़े को
१४ शोभित करों। और तेरे अंधेरियों के संतान जिन्होंने तुझे सताया निहुड़ते निहुड़ते तुझ पास आवेंगे और जितनों ने तेरी निंदा करके तुझे त्याग किया वे सब तेरे चरण को प्रणाम करेंगे और वे परमेश्वर का नगर इसराईल के धर्ममय का
१५ सैहून तेरा नाम रक्खेंगे। तेरे त्यक्त होने और घिनित होनेकी संती यहां लों कि कोई तेरे मध्यमें से नहीं जाताथा मैं तुझे सदा की बड़ाई और सनातन की पीढ़ियों के आनंद का कारण
१६ बनाओंगा। और तू जातिगणों का दूध पीयेगी हां राजाओं की गोद में पालीजायगी और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता और तेरा निस्तारकर्त्ता याक़ूब का सामर्थ्यमय
१७ है। पीतल की संती मैं सोना लाओंगा और लोहे की संती रुपा और काष्ठ की संती पीतल और पत्थरों की संती लोहा लाऊंगा और तेरे कड़ोरा को शांत और तेरे निचोरियों को
१८ धर्मी करोंगा। आगे को तेरे देश में अंधेर और तेरे सिवाने में बिनाश और बिपत्ति न सुनेजायंगे परन्तु तू अपनी भीतों का
१९ नाम मुक्ति और अपने फाटकों का नाम स्तुति रक्खेगी। और आगे को दिन को तेरी ज्योति सूर्य से और रात को तेरी चांदनी चंद्रमा से न होगी क्योंकि परमेश्वर तेरी सनातन की
२० ज्योति और तेरा ईश्वर तेरा महिमा होगा। तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और तेरा चंद्रमा न घटेगा क्योंकि परमेश्वर तेरा नित्य का ज्योति होगा और तेरे बिलाप के दिन जाते
२१ रहेंगे। तेरे समस्त लोग धर्मी होंगे वे सदा देश के अधिकारी होंगे और मेरे हाथ का कार्य मेरी लगाईहुई टहनी जिसतें

२२ में ऐश्वर्यमान होओं। छोटे एक सहस्र होंगे और तनिकएक से एक बलवंत जाति होगी मैं परमेश्वर ठीक समय में इसे शीघ्र करोंगा।

६१ एकसठवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर ईश्वर का आत्मा मुझ पर है क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अभिषिक्त किया उसने मुझे भेजा कि दीनों को संदेश देओं कि चूर्णअंतःकरणों को बांधों और बंधुओं के लिये मोक्षका और
२ बंधेऊओं के लिये निरधार छुट्टी पाने का प्रचार करों। कि परमेश्वर के ग्राह्य के बरस को और अपने ईश्वर के पलटालेने के दिन को प्रचार करों कि सारे शोकितों को शांति देऊं।
३ और सैहून के बिलापियों को आनंद देऊं उनको राख की संती सुन्दर मुकुट और उदास की संती आनंद की चिकनाहट और मन की उदासी की संती स्तुति का वस्त्र देऊंगा कि वे मनोनीत वृक्ष और उसके विभव के लिये परमेश्वर की वाटिका
४ कहावें। और जो तुझसे उत्पन्न होंगे प्राचीन समय के उजाड़ों को बनावेंगे वे पुराने उजाड़ों को सुधारेंगे और उजड़ेऊए नगरों को और बऊत पीढ़ी से पीढ़ियों के उजाड़ों को सुधारेंगे।
५ और परदेशी खड़े होके तेरी झुंड को चरावेंगे और परदेशी
६ के पुत्र तेरे किसान और अंगूर के रखवाल होंगे। परन्तु तुम परमेश्वर के याजक कहलाओगे हमारे ईश्वर का सेवक तुम्हारा पद होगा जातिगण का धन तुम खाओगे और उनके विभव
७ में तुम फूलोगे। क्योंकि अपनी लाज की संती तुम दूना अधिकार पाओगे और अपनी दुर्दशा की संती उनके भाग से आनंदित होओगे क्योंकि उनके देशमें दूना अंशाधिकार पाओगे
८ और तुम सदा का आनंद पाओगे। क्योंकि मैं परमेश्वर न्याय से प्रेम रखताहों और लूटपाट और कुकर्म से बैर रखताहों और मैं सचाई से उनके कार्य का प्रतिफल उन्हें दोंगा और

९ उनके साथ एक सदा की बाचा बाधेंगा। और उनके वंश देशियों में और उनके संतान लोगों में प्रसिद्ध होंगे सब जो उन्हें देखेंगे उनको मानलेंगे कि वे परमेश्वर के आशीर्वादी
१० वंश हैं। मैं परमेश्वर से निपट आनंदित होओंगा मेरा मन ईश्वर में मगन होगा क्योंकि उसने मुक्ति के वस्त्र मुझे पहिनाये और धर्मकी चादर से मुझे ढांपा जिस रीति से दूल्हा याजक के मुकुट से आप को संवारताहै और जिस रीति से दुलहिन
११ अपने बहुमूल्य गहने से अपने को सवांरतीहै। निश्चय जिस रीति से पृथिवी अपनी कोमल टहनीयां उगाती है और जिस रीति से वाटिका अपने बीज को उगातीहै इसी रीति से प्रभु ईश्वर धर्म को और स्तुति को समस्त जातियों के साक्षात उगावेगा।

६२ बासठवां पर्व्व।

१ सहून के कारण मैं चुप न रहोंगा और यिरोशलीम के लिये मैं चैन न करोंगा जब लों कि उसका धर्म तेजस्वी ज्योति के समान न चमके और उसकी मुक्ति दीपिका के समान प्रकाश
२ न हो। और देशगण तेरे धर्म को और समस्त राजा तेरे विभव को देखेंगे और तेरा एक नया नाम होगा जिसे परमेश्वर का
३ मुंह तुझ पर ठहरावेगा। और तू परमेश्वर के हाथ में एक सुन्दर मुकुट होगा और ईश्वर की मूठी में एक राजमुकुट।
४ तू आगे को त्यक्त न कहलावेगी और तेरी भूमि को फेर न कहाजायगा कि हे उजाड़ परन्तु तू मेरे आनंद का कारण कहलायेगी और तेरी भूमि बिवाहिता कहीजायगी क्योंकि परमेश्वर तुझसे आनंदित होगा और तेरी भूमि व्याही
५ जायगी। क्योंकि जैसे तरुण मनुष्य कुंआरी को व्याह लाताहै इसी रीति से तेरा मुक्तिदाता तुझे व्याहेगा और जिस रीति से दूल्हा दुलहिन से आनंदित है उसी रीति से तेरा ईश्वर

६ तुझ पर आनंदित होगा। हे यिरोशलीम मैं ने तेरी भीतों पर दिन भर पहरू बैठलाये हैं वे रातभर चुप नरहेंगे तुम जो परमेश्वर के नाम को प्रचार करतेहो चुप के न रहो और उसे
७ चैन न दो। जब लों वुह यिरोशलीम को स्थिर न करले और
८ पृथिवी में उसकी स्तुति न करवाले। परमेश्वर ने अपने दहिने हाथ की और अपनी बलवती भुजा को किरिया खाई है कि मैं आगे को तेरा भोजन तेरे शत्रुन को न दोंगा और परदेशी के लड़के तेरे दाखरस में से जिसके लिये तू ने परिश्रम किया है
९ न पीयेंगे। परन्तु जो लवते हैं सो उसे खायेंगे और परमेश्वर की स्तुति करेंगे और जो दाख को एकट्ठा करते हैं मेरे पवित्र
१० आंगनों में उसे पीयेंगे। चलेजाओ फाटकों में से चलेजाओ लोगों के लिये मार्ग सुधारो सड़क बनाओ सड़क बनाओ उसके
११ पत्थर दूर करो जातिगण के लिये एक झंडा खड़ा करो। देख परमेश्वर ने पृथिवी के अंत्य लों यह प्रचार किया है कि तुम सैहून की कन्या से कहो कि देख तेरा मुक्तिदाता आता है देख उसका प्रतिफल उसके साथ और उसके कार्य का फल उसके
१२ आगे है। और वे पवित्र लोग परमेश्वर के छुड़ायेहुए कहावेंगे और तू अति इष्ट और अत्यक्त नगरी कहलायेगी।

६३ तिरसठवां पर्ब्ब।

१ यह कान है जो अदूम से और जो गाढे रंगीले वस्त्र पहिने हुए बासरः से आता है यही जिसका वस्त्र ऐश्वर्यमान है और अपने बल के महत्व से चलाआता है मैं जो धर्म का प्रचार करता हों और
२ मुक्ति देने में सामर्थी हों। तेरे वस्त्र किस लिये लाल हैं और तेरा पहिरावा उसकी नाईं क्यों है जो कोल्हू में दाख लताड़ता है।
३ कोल्हू को मैं ने एकेला लताड़ा है और लोगों में से मेरे साथ कोई नथा और मैं ने उन्हें अपने क्रोध से लताड़ा और अपने जलजलाहट से उन्हें रौंदा और उनके प्राण का लोहू मेरे

बस्त्र पर छिड़कागया और मेरे सारे पहिरावा पर छीटा पड़ा।
४ क्योंकि मेरे मन में पलटालेने का दिन था और मेरे छुड़ायेहुओं
५ का बरस आया था। मैं ने देखा और कोई सहायक न था
और मैं ने आश्चर्य किया कि सहायक कोई न था इस
लिये मेरीही भुजा ने मेरे लिये मुक्ति सिद्ध किई और मेरे
६ जलजलाहट ने मुझे संभाला। और मैं ने अपने क्रोध से लोगों
को लताड़ा और अपने जलजलाहट से उन्हें कुचला और
मैं ने उनके प्राण के लोहू को भूमि पर बहाया।
७ और परमेश्वर के सारे दान के और इसराईल के घराने के
लिये उसकी अत्यंत भलाई के समान जिसे उसने अपनी
कोमल और बड़ी दया से उन्हें दिई है मैं परमेश्वर की दया को
८ और परमेश्वर की स्तुति को लिखोंगा। क्योंकि उसने कहा है
कि निश्चय वे मेरे लोग हैं और लड़के जो झूठ न बोलेंगे सो
९ वुह उनका मुक्ति दाता हुआ उनके सारे दुःखों में वुह दुखी
हुआ। उसके आगे के दूत ने उन्हें बचाया उसने अपने प्रेम
और दया में उन्हें मुक्ति दिई और उसने उन्हें उठालिया और
१० सारे प्राचीन दिनों में उन्हें लियेफिरा। परन्तु वे फिरगये
और उन्हों ने उसके धर्मात्मा को खिजाया यहां लों कि वुह
११ उनका शत्रु होगया और उनसे लड़ा। फिरउस ने प्राचीन
दिनों को और अपने दास मूसा को स्मरण किया कि वुह
उन्हें क्योंकर समुद्र में से अपनी झुंड के गड़रिये के साथ निकाल
१२ लाया उसने क्योंकर उसके मन में धर्मात्मा रक्खा। उसने
अपने बिभव की भुजा से मूसा की यात्रा में उसकी दहिनी
ओर साथ साथ था और उनके आगे समुद्र को चीरा कि
१३ अपने लिये एक सनातन का नाम करे। और उन्हें गहिराओं
१४ में से चौगान में के घोड़े के समान बेअंटक चलाया। जिस
रीति से गोरू तराई में उतरते हैं इसी रीति से परमेश्वर का
आत्मा उन्हें लेगया सो तू ने अपने लोगों की अगुआई किई कि

१५ अपने लिये एक बड़ा नाम बनावे। स्वर्ग पर से दृष्टि कर और अपने पवित्र और महिमा के स्थानसे देख कि तेरा तेज और तेरा बल और तेरी अतिशक्ति और तेरे हृदय का मरोड़ना और तेरा
१६ कोमल प्रेम कहां है क्या वे हमसे रोकेगये। निश्चय तू हमारा पिता है यद्यपि इबराहीम हमसे अज्ञान है और इसराईल हमें नहीं ग्राहश करता हे परमेश्वर तू हमारा पिता है अपने
१७ नाम के कारण हमें बचा। हे परमेश्वर तू ने क्यों हमें अपने मार्ग से भटकने दिया कि अपने डरसे हमारे मनों को कठोर करे अपने सेवकों के लिये अर्थात अपने अधिकार की गोष्ठियों
१८ के कारण फिरआ। यह तो छोटी बात है कि उन्होंने तेरे पवित्र पहाड़ को अपना कररक्खा और हमारे शत्रुन ने तेरे
१९ शरण स्थान को लताड़ा। हम बज्जत दिन से उनके समान ज्जए जिनपर तू ने प्रभुता न किई जो तेरे नाम से न कहायेगये।

६४ चौसठवां पर्ब्ब ।

१ हाय कि तू स्वर्ग को फाड़े और उतरपड़े जिसतें पहाड़ तेरे
२ आगे से बहिपड़े। जिस रीति से कि आग सूखे इंधन को बारतीहै और जैसा कि आग पानी को उबालतीहै वैसा तेरा नाम तेरे बैरियों पर प्रगट होवे जिसतें जातिगण तेरे
३ आगे थर्थराजायें। जब तू ने ऐसे आश्चर्य कार्य किये जिनके होने का हम को भरोसा नथा तू नीचे उतरा पहाड़ तेरे
४ आगे बहि पड़े। क्योंकि किसीने कधी न सुना न किसी के कानों में पज्जंचा और हे ईश्वर तुझे छोड़ किसीने आंखोंसे न
५ देखा जो तू अपने आश्रित से करताहै। तू उसे मिलताहै जो धर्म के कार्य करताहै और जो तेरे मार्ग में तुझे स्मरण करताहै देख तू क्रुद्ध है क्योंकि हमने पाप कियाहै तेरा
६ व्यवहार नित्य है और हम बच जायेंगे। हम सब अशुद्ध बस्तु की नाईं हैं और हमारे सारे धर्म त्यक्त बस्त्र की नाईं हैं

और पत्ते के समान हम सब मुरझा जातेहैं और हमारी
७ बुराइयां पवन की नाईं हमें उड़ा लेगईं। ऐसा कोई नहीं
जो तेरा नाम ले और आप को उभाड़ के तेरा आसा पकड़े
क्योंकि तूने अपना मुंह हमसे छिपायाहै और हमें हमारी
८ बुराई के हाथ में सौंपा। परन्तु हे परमेश्वर तूही हमारा
पिता है कि हम माटी हैं और तूने हमारा डौल कियाहै
९ और हम सब तेरे हाथ के बनायेहुएहैं। हे परमेश्वर अत्यंत
कोपित मत हो और कुकर्म को सदा स्मरण न कर दृष्टि कर
१० देख हम तेरी स्तुति करते हैं हम सब तेरे लोग हैं। तेरे
पवित्र नगर अरण्य होगये सैहून एक जंगल होगयाहै और
११ यिरोशलीम उजाड़ है। हमारा पवित्र और बिभवमय मंदिर
जिसमें हमारे पितरों ने तेरी स्तुति किई आग से सर्वथा
१२ जलगया और हमारी बांछित उजाड़ होगईं। हे परमेश्वर
क्या तू इन बातों से अपने को रोक रक्खेगा और क्या तू
चुपका होके हमें अब लों नियट सताता रहेगा।

६५ पैंसठवां पर्व्व।

१ जिन्होंने मेरे बिषय में न पूछा उन पर मैं जनायागया जिन्होंने
मेरी खोज न किई उनसे मैं पायागया मैंने उस जाति से
२ कहा जिसने मेरा नाम न लिया मुझे देख मैं यहां हों। मैं
एक दंगइत लोगों की ओर जो कुमार्ग में अपनीही इच्छा
३ पर चलतेहैं अपने हाथ दिन भर फैला रहाहों। वे लोग जो
मेरे मुंह पर नित्य मुझे खिजातेहैं और बाटिकों में बलि
४ करतेहैं और खपरैल पर सुगंध जलाया करतेहैं। जो
समाधिन में रहतेहैं और खोहों में बास करतेहैं जो सूअरों
का मांस खातेहैं और घिनित मांस का जूस उनके पात्रों में है।
५ जो कहतेहैं अलग खड़ा रह मेरे पास मतआ क्योंकि मैं तुझ
से पवित्र हों वे मेरे नथुनों में धूआं बारतेहैं और एक आग

६ जो दिन भर बरा करतीहै। देखो मेरे आगे लिखाऊआहै
७ मैं चुप न रहोंगा परन्तु निश्चय पलटा लेउंगा। परमेश्वर कहताहै कि मैं उनकी बुराइयों और उनके पितरों की बुराइयों का जो पहाड़ों में सुगंध जलातेहैं और टीलों में मेरा अनादर करतेहैं मैं उनकी गोद में उनका पलटा देउंगा हां मैं उन्हीं की गोद में उन अगिले कार्यों के लिये पूरी तौल देउंगा।
८ परमेश्वर यों कहताहै जिस रीति से कोई गुच्छे में उत्तम दाख पाके कहताहै कि उसे नष्ट न कर क्योंकि उसमें आशीष है वैसा मैं अपने सेवकों के कारण करोंगा मैं सब को नाश न
९ करोंगा। वैसा मैं याक़ूब में से एक बीज और यहूदा में से अपने पहाड़ों का एक अधिकारी निकालोंगा और मेरा चुनाऊआ देश का अधिकारी होगा और मेरे सेवक वहां
१० बसेंगे। और झुंड के लिये शारून गोंड़ा होगा और अकूर की तराई लेहंड़े के चैन के स्थान अपने लोगों के लिये जो मेरे
११ खोजीहैं करोंगा। परन्तु तुम जो परमेश्वर को त्याग कियेहो और मेरे पवित्र पहाड़ को भूलगये हो और जाद के लिये मंच सिद्ध करते हो और मनी के लिये बिटाने का तर्पण करतेहो।
१२ सो मैं तुम्हें गिन गिन के तलवार को सैापोंगा और तुम सब के सब संहार के आगे झुकोगे इस कारण कि मैं ने बुलाया और तुम ने उत्तर न दिया मैं बोला और तुम ने न सुना परन्तु तुम न मेरी आंखों के साम्ने बुराई किई और वुह बस्तु चुना कि जिस्से
१३ मैं आनंद नथा। सो परमेश्वर ईश्वर यों कहताहै कि देखो मेरे सेवक खायेंगे परन्तु तुम भूखे मरोगे देखो मेरे सेवक पीयेंगे परन्तु तुम पियासे रहोगे देखो मेरे सेवक आनंदित होंगे
१४ परन्तु तुम घबराजाओगे। देखो मेरे सेवक मन की आनंदता से गायेंगे परन्तु तुम मन की उदासी के कारण चिल्ला चिल्ला के
१५ रोओगे और चूर्णअंतःकरण के शोक से तुम चिल्लाओगे। और तुम मेरे चुनेऊओं के कारण अपने नाम को साप के लिये छोड़

जाओगे और प्रभु परमेश्वर तुझे घात करेगा और उसके
१६ सेवक दूसरे नाम से पुकारेजायेंगे। कि जो कोई पृथिवी में
आप पर आशीष देताहै सच्चे ईश्वर से अपने को आशीष देगा
और जो कोई पृथिवी पर किरिया खायगा सच्चे ईश्वर की
किरिया खायगा क्योंकि अगली खिजावट भूलगई और वे
१७ मेरी आंखों से छिपेहैं। क्योंकि देखो मैं नये स्वर्ग और नई
पृथिवी बनाताहों और अगिले स्मरण न कियेजायेंगे वे मन में
१८ फेर न कियेजायेंगे। परन्तु अवैया समय में जो मैं सिरजताहों
तुम आनन्द करके आह्लादित होओगे क्योंकि देखो मैं
यिरोशलीम को आनंद और उसके लोगों को आह्लाद का
१९ कारण बनाओंगा। और मैं यिरोशलीम से मगन और
अपने लोगों से आनंदित होंगा और उसमें फेर रोने पीटने
२० और बिलाप का शब्द न सुनाजायगा। उसमें थोड़ो वय
का कोई बालक न होगा न कोई वृद्ध जो अपने दिन को पूरा
न करे क्योंकि वुह जो सौ बरस का होके मरे सो लड़का
मरेगा परंन्तु जो पापी सौ बरस का होके मरे सो स्रापित
२१ गिनाजायगा। वे घर बनावेंगे और उनमें बसेंगे और वे
२२ दाख की बारी लगावेंगे और उसके फल खायेंगे। और वे
न बनावेंगे कि दूसरा बास करे वे न बोवेंगे कि दूसरा खावे
क्योंकि मेरे लोगों के दिन वृक्ष के दिनके समान होंगे और वे
२३ अपने हाथों के कार्य से अधिक रहेंगे। मेरे चुनेहुए वृथा
परिश्रम न करेंगे और थोड़ी आयुर्दाय के वंश उन से उत्पन्न न
होंगे क्योंकि वे अपने संतान सहित परमेश्वर के आशीष के वंश
२४ होंगे। और ऐसा होगा कि उनके पुकारने से पहिले मैं उत्तर
२५ देउंगा और उनके कहते कहते मैं सुन लिये होंगा। भेड़िया
और भेड़ एकट्ठे चराकरेंगे और सिंह बैल के समान घास
खायेगा परन्तु सर्प जो है सो धूल फांकेगा परमेश्वर कहताहै
कि वे मेरे सारे पवित्र पहाड़ पर न दुख देंगे न नाशकरेंगे।

६६ छयासठवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर यों कहताहै कि स्वर्ग मेरा सिंहासन है और पृथिवी मेरे चरण की पीढ़ी वुह घर कहां है जो तुम मेरे लिये बनातेहो
२ और मेरा चैनस्थान कहां है। क्योंकि मेरे हाथ ने उन सभोंको बनाया है परमेश्वर कहताहै कि ये सब मेरे हैं पर मेरी दृष्टि उस मनुष्य पर अर्थात उस पर है जो दीन और चूर्णअंतःकरण
३ का है और जो मेरे बचन से थर्थरताहै। जो बैल घात करताहै सो जैसे मनुष्य को घात करताहै और जो मेम्ना बलि करताहै जैसा कि कुत्ते का सिर काटा वुह जो भेंट चढ़ाताहै जैसा सूअर का लोहू चढ़ाताहै जो सुगंध जलाताहै जैसा मूर्त्ति को आशीष देताहै हां उन्होंने अपने अपने मार्गों को चुना है
४ और उनके प्राण उनके घिनितों से आनंदित हैं। मैं भी उनकी बिपतों को चुनलोंगा और उनका डर उन पर लाओंगा क्योंकि मैं ने बुलाया और किसीने उत्तर न दिया मैं बोला तो उन्होंने कुछ न सुना परन्तु उन्होंने मेरी आंखों के साम्ने बुराई किई
५ और उस बात को चुनलिया जिस्से मैं आनंदित नथा। तुम जो परमेश्वर की बात से कांपतेहो उसका बचन सुनो अपने भाइयों से जो तुम्हारा बैर करतेहैं और जो मेरे नाम के कारण से तुम्हें खदेड़ते हैं कहो कि परमेश्वर महान होगा और वही तुम्हारे आनंद के लिये प्रगट होगा और वे घबराजायेंगे।
६ नगर से ऊलूर का शब्द और मंदिर से शब्द और उसके
७ शत्रुन को परमेश्वर के दंड देने का शब्द है। उसे पीड़ लगने से पहिले वुह जन बैठी और उसकी पीड़ आने से आगे वुह
८ बालक जनी। ऐसी बात किसने सुनी और किसने ऐसी बस्तुन को देखा क्या देश का देश दिन भर में उत्पन्न होताहै क्या क्षण मात्र में जाति की जाति उत्पन्न होतेहैं क्योंकि ज्यों सैहून को
९ पीड़लगी त्यों वुह बालक जन बैठी। परमेश्वर कहताहै क्या मैं जन्ने पर लाओं और न जनाओं ईश्वर कहताहै क्या मैं जो

१० जनाताहों जन्ने से रोकों। यिरोशलीम के साथ आनंद करो और तुम जो उस्से प्रेम रखतेहो उसके साथ आह्लादित होओ और तुम सब जो उस पर बिलाप करतेहो उसके साथ
११ अत्यंत आनंद करो। जिसतें तुम चूसो और उसकी शांति के स्तन से संतुष्ट होओ जिसतें तुम उसके भंडार की बज्जताई
१२ से स्वाद पाओ। क्योंकि परमेश्वर यों कहताहै कि देखो मैं उस पर बढ़ती महा नदी के समान और जातिगणों के धन को बहती धारा के समान फैलाताहों और तुम स्तन चूसोगे और कोरोंमें उठायेजाओगे और घुटनों पर नचाये
१३ जाओगे। जैसा माता अपने बेटे को शांति देतीहै तैसा मैं तुम्हें शांति देंगा और तुम यिरोशलीम में शांति पाओगे।
१४ तुम यह देखोगे और तुम्हारा मन आनंदित होगा और तुम्हारी हड्डियां हरियाली के समान लहलहायेंगी और परमेश्वर का हाथ उसके सेवकों पर प्रगट होगा और
१५ उसका जलजलाहट उसके शत्रुन पर भड़केगा। क्योंकि देखो परमेश्वर आग की नाईं और उसके रथ बौंडर की नाईं आवेंगे कि वुह अपने क्रोध को बरतेऊए तेज में और
१६ उसका दपटना आग की लवर से फूंके। क्योंकि परमेश्वर सारे मनुष्यों पर आग से और अपने खड्ग से दंड देगा और
१७ परमेश्वर के जूझे ऊए बज्जतसे होंगे। और वुह जो अखाद की रीति पर बाटिकों में आप को पावन और शुद्ध करतेहैं उनके मध्यमें जो सूअर का मांस और घिनित और खेतके चूहे खातेहैं
१८ परमेश्वर यों कहताहै सब के सब नाश होजायेंगे। क्योंकि मैं उनके कार्यों और उनकी युक्ति को जानताहों और मैं आताहों कि सारे देशगण और भाषाओं को एकट्ठा करों और वे सब
१९ आवेंगे और मेरा बिभव देखेंगे। और मैं उन्हें एक चिह्न देऊंगा और उनमें से बचजायेंगे मैं देशगणों की ओर अर्थात तारशिश और फल और लूद जो धनुष धारी है और तूबाल और

यवन के दूर के तीरों पर और जिन्होंने कधी मेरा नाम न
सुना और मेरे बिभव को नहीं देखा उनके पास भेजोंगा
१० और वे देशियों में मेरा बिभव बर्णन करेंगे। और परमेश्वर
कहताहै कि वे तुम्हारे सारे भाइयों को सारे देशगणोंमें से
घोड़ों पर और गाड़ियों पर और मियानों में और खच्चरों
पर और सांड़नियों पर मेरे पवित्र पहाड़ यिरोशलीम में
परमेश्वर की भेंट के लिये जिस रीति से कि इसराईल के संतान
पावन पात्रों में भेंट रख के परमेश्वर के मंदिर में लातेथे
२१ लावेंगे। और परमेश्वर कहताहै कि मैं उनमें से याजक और
२२ लावीभी बनाओंगा। क्योंकि परमेश्वर कहताहै कि जिस रीति
से नये स्वर्ग और नई पृथिवी जिन्हें मैं बनाताहों मेरे आगे
२३ बनेरहेंगी वैसे तुम्हारा नाम और तुम्हारे वंश होंगे। और
ऐसा होगा कि अमावास्या से अमावास्या लों और बिश्राम से
बिश्राम लों परमेश्वर कहताहै कि सारे मनुष्य आके मेरे
२४ आगे सेवा करेंगे। और वे निकल के उन मनुष्यों की लोथों को
जो मुझ से फिरगयेथे देखेंगे क्योंकि उनके कोड़े न मरेंगे और
उनकी आग न बुझेगी और सारे मनुष्यन से वे घिनित होंगे।

इरमियाः भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

इरमियाः का समाचार १—१० उसका दर्शन और हियाव पाना ११—१९।

१ बनियामीन की भूमि के अनातूत बासी हिलकियाः के पुत्र
२ याजकों में से इरमियाः के बचन। अमून के बेटे यहूदा के राजा युसैया के दिनों में उसके राज्य के तेरहवें बरस में परमेश्वर
३ का बचन उस पर उतरा। और यहूदा के राजा युसैया के बेटे युहायाकीम के भी दिनों में यहूदा के राजा युसैया के बेटे सिदकियाः के ग्यारहवें बरस के समाप्त होने लों यिरोशलीम को
४ बंधुआई की पांचव मास में पहुंचाये जाने लों। अर्थात्
५ यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मुझ पर पहुंचा। मैं ने तेरा डौल कोख में करने से आगे तुझे जाना और तेरा जन्म होने से आगे मैं ने तुझे पवित्र किया और जातिगणों के
६ लिये मैं ने तुझे भविष्यद्वक्ता ठहराया। तब मैं ने कहा, हाय प्रभु परमेश्वर देख मैं बोल नहीं सक्ता क्योंकि बालक हों।
७ परंतु परमेश्वर ने मुझे कहा कि मत कह कि बालक हों क्योंकि जिन सभों के पास मैं तुझे भेजोंगा तू जायगा और जो
८ कुछ मैं तुझे आज्ञा करों सो कहेगा। तू उनसे मत डर क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुझे बचाने को मैं तेरे साथ होंगा।
९ तब परमेश्वर ने अपना हाथ बढ़ा के मेरा मुंह छूआ और मुझे परमेश्वर ने कहा कि देख मैं ने अपने बचन तेरे मुंह में

१० डाले हैं। देख मैं ने तुझे आज के दिन जातिगणों को और राज्यों को उखाड़ने और ढ़ाने और नाश करने और उलटने और जोड़ाई करने और बोने का पराक्रम दिया है।

११ और यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा कि इरमियाः तू क्या देखता है? मैं ने कहा कि बादाम पेड़ की एक

१२ टहनी देखता हों। तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि तू ने ठीक

१३ देखा है क्योंकि मुझे अपने बचन को पूरा करना है। दूसरे बार परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए मुझ पर पऊंचा कि तू क्या देखता है? मैं ने कहा कि उसिन्ने का हंडा देखता हों जिसे

१४ भाप निकलता है और उसका रुख उत्तर से है। तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि इस देश के सारे वासियों पर उत्तर से बुराई

१५ निकल आवेगी। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देख मैं उत्तर के राज्यों के सारे परिवारों को बुलाओंगा और वे आवेंगे और हर एक जन अपना अपना सिंहासन यिरोशलाम के फाटकों की पैठ में और उसकी चारों ओर की भीतों पर और यहूदा

१६ के सारे नगरों पर रक्खेंगे। और उनकी सारी दुष्टता के लिये मैं उनके विरुद्ध अपना विचार उचारोंगा क्योंकि उन्हों ने मुझे त्याग किया है और आन देवों के लिये धूप जलाया है

१७ और अपने ही हाथ के कृत्य की सेवा किई है। और तू जो है अपनी कटि बांध के उठेगा और जो मैं तुझे आज्ञा करोंगा सो उनसे कहियो उनसे मत डरना नहो कि मैं उनके आगे तुझे

१८ लजवाओं। क्योंकि देख आज मैं ने तुझे इस सारे देश के विरुद्ध यहूदा के राजाओं के विरुद्ध और उसके राजपुत्रों के विरुद्ध और उसके याजकों के विरुद्ध और देशक लोगों के विरुद्ध दृढ़

१९ किये ऊए की नाईं और लोहे के खंभे की नाईं और पीतली भीत की नाईं बना रक्खा है और वे तेरे विरुद्ध लड़ेंगे परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुझे बचाने को मैं तेरे साथ होंगा।

ईश्वर का यहूदा और इसराईल पर अपबाद लगाना और उन पर बिपत्ति पड़नी १—१९
उनका नाना पाप २०—३७।

१ फेर परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए मुझ पर पऊंचा।
२ कि तू जाके यिरोशलीम के कानों में पुकार के कह कि परमेश्वर यूं कहता है कि मैं तुझे अर्थात् तेरी तरुणाई की दया जो तुझ पर दिखाई गई है और तेरे बियाह के प्रेम को स्मरण करता हों जब तू बन में बिन जोते बोए देश में मेरे पीछे पीछे गया।
३ इसराईल और उसके पहिले फल की बढ़ती परमेश्वर के लिये पवित्रता थी सब जो उसे भक्षा करेंगे सो अपराधी होंगे
४ परमेश्वर कहता है कि उन पर बुराई होगी। हे याकूब के घराने और हे इसराईल के घराने के सारे परिवार परमेश्वर
५ का बचन सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे पितरों ने मुझ में कौनसी बुराई देखी जो वे मुझसे दूर ऊए और वृथा
६ के पीछे जाके व्यर्थ ऊए?। उन्हों ने नहीं कहा कि परमेश्वर कहां है जो हमें मिसर देश से निकाल लाया है और अरण्य में से पऊंचाया बड़े ऊजड़ देश और गड़हे में से और अवृष्टि और मृत्यु की छाया के देश में से ऐसे देश में से जिस में से कोई नहीं गया जहां कोई मनुष्यजोनि न बसा? ऐसे अरण्य में
७ हमें पथ दिखाया। उसका उत्तम फल खाने के लिये मैं तुम्हें फलवंत देश में भी उसके फल और उसकी अच्छी बस्तु खाने को लाया परन्तु जब तुम लोग उस में पऊंचे तब मेरे देश को
८ अशुद्ध किया और मेरे अधिकार को घिनित किया। याजकों ने नहीं कहा कि परमेश्वर कहां है? और व्यवस्था के ज्ञातों ने मुझे नहीं जाना उनके रखवाल भी मुझसे फिर गये और भविष्यद्वक्तों ने बआल के नाम से भविष्य कहा और निर्लाभ बस्तुन के
९ पीछे चले गये। इस लिये परमेश्वर कहता है कि मैं तदभी तुम्हों से बिवाद करोंगा और तुम्हारे सन्तानों के

१० सन्तानों से बिचार करोगा। पार उतर के किटिम के टापूओं को देखो और किदार में लोगों को भेज के अच्छी रीति से
११ बूझो और देख रक्खो कि जो ऐसी बस्तु ज़ई है। क्या किसी देश के लोगों ने अपने देवों को पलटा है यद्यपि वे देव न थे? परन्तु मेरे लोगों ने अपनी महिमा को उसके लिये पलटा जिसे
१२ लाभ नहीं। हे स्वर्गो इसे अचंभित होओ और अत्यंत
१३ डरजाओ परमेश्वर कहता है कि अत्यंत उजड़ जाओ। क्योंकि मेरे लोगों ने दो बुराइयां किई हैं उन्हों ने मुझ अमृत जल के सोते को त्यागा है और अपने लिये टूटे कुंड खोदे हैं जिन में
१४ जल नहीं ठहरता। क्या इसराईल दास है? अथवा यदि वुह घर का बालक है तो फेर क्यों लूटा गया?।
१५ युवा सिंह उस पर गर्जेंगे और उन्हों ने शब्द उठाया है और उसके देश को एक उजाड़ बनाया है और उसके नगर
१६ बिना निवासी जलगये हैं। नफ के और तफनीज़ के सन्तानों ने
१७ भी तेरे सिर के मुकुट को तोड़ा है। क्या तू ने इसे अपने लिये नहीं कमाया जो तू ने अपने ईश्वर परमेश्वर को त्यागा है जब
१८ उसने मार्ग में तेरी अगुआई किई?। और अब सैहूर का जल पीने को तुझे मिसर के मार्ग में क्या काम है? अथवा नदी
१९ के पानी पीने को तुझे असूर के मार्ग में क्या काम है?। तेरी ही दुष्टता तुझे ताड़ना करेगी और तेरा फिर फिर जाना तुझे दपटेगा बुह भी जान और देख ले कि अपने ईश्वर परमेश्वर को बिसराने में बुरा और कड़वा है क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर
२० कहता है कि मेरा भय तुझ में नहीं। निश्चय बज़त दिन से तू ने अपना जूआ तोड़ा है और अपने बंधनों को झटका डाला है और कहा है कि मैं बश में न रहोंगा क्योंकि हर एक ऊंचे टीले पर और हर एक हरे पेड़ तले छिनाला
२१ करते करते मैं अपने तईं बेश्याई में छोड़ोंगा। और यद्यपि मैं ने तुझे उत्तम दाख और चोखा बीज बोया था फेर तू

क्योंकर उपरी लता का बिगड़ा हुआ पेड़ मेरे लिये हुआ है।
२२ यद्यपि तू आपको सज्जी से धोवे और बहुतसा साबुन लेवे तथापि परमेश्वर कहता है कि तेरी बुराई मेरे आगे टांकी
२३ गई है। तू क्योंकर कहि सक्ता है कि मैं अपवित्र नहीं हों मैं बआलिम के पीछे नहीं गया हों? अपनी चालों को तराई में देख
२४ और अपने किये हुए को मान ले। एक चालाक सांडनी जिसने बन परिचित जंगली गदही अपने साथ लिई है जो अपने प्राण की बांछा में पौन को सुरकती है उसके प्रयोजन में कोन उसे फेर सकता है! उसकी खोज में कोई नहीं आपको
२५ थकावेगा परन्तु जब वुह जुड़ाय तब वे उसे पावेंगे। तू अपने पांव को बिन खर्पे से और अपने होंठ बिन जल से अलग रख परन्तु तू ने कहा है कि असाध्य है, नहीं, क्योंकि मैं ने उपरीयों
२६ से प्रीति किई है और उन्हीं के पीछे जाओंगा। जैसा पकड़े जाने में चोर लज्जित है तैसा इसराईल का घराना वे और उनके राजा और उनके राजपुत्र और उनके याजक और उनके
२७ भविष्यद्वक्ता लजाये गये हैं। जो एक टुकड़े लकड़ी से कहते हैं कि तू मेरा पिता और पत्थर को कि तू ने मुझे जना है निश्चय उन्हों ने मेरी ओर पीठ फेरी पर मुंह नहीं परन्तु अपने दुःख
२८ के समय में कहेंगे कि उठके हमारी रक्षा कर। परन्तु तेरे देव कहां हैं जिन्हें तू ने अपने लिये बनाया है वे उठें यदि तेरे दुःख के समय तेरी रक्षा करसकें क्योंकि हे यहूदा तेरे नगरों
२९ की गिनती के समान तेरे देव हुए हैं। तुम लोग किस बात के लिये मुझसे बिवाद करोगे परमेश्वर कहता है कि तुम सब
३० के सब मेरे बिरुद्ध फिरगये हो। वृथा मैं ने तुम्हारे बालकों को मारा है उन्हों ने उपदेश नहीं ग्रहण किया है तुम्हारी ही तलवार ने नाशक सिंह के समान तुम्हारे भविष्यद्वक्तों को भक्षण
३१ किया है। हे इस पीढ़ी के लोगो परमेश्वर के पद को देखो क्या मैं इसराईल के लिये अरण्य अथवा अंधियारा देश

हुआ हो मेरे लोगों ने क्यों कहा है कि हम अपने ही स्वामी हैं
३२ हम तेरे पास फिर न आवेंगे। क्या कुंआरी अपने आभूषण
को भूल सकी है? अथवा दुलहिन अपना पहिरावा? तथापि
३३ मेरे लोग अनगिनित दिन से मुझे बिसरा रहे हैं। प्रेम
ढूंढने के लिये तू क्यों अपने मार्ग को सिद्ध करेगा? इस लिये
३४ तू ने अपना मार्ग दुष्टों को सिखाया है। तेरे अंचलों में भी लोहू
पाया गया है अर्थात् दरिद्र निर्दोषों के प्राण, मैं ने खोदे हुए
३५ गड़हे में नहीं पाया परन्तु हर एक बलूत पेड़ पर। तथापि
तू ने कहा है कि मेरे निर्दोष होने के कारण निश्चय उसका
कोप मुझ से जाता रहेगा देख मैं तेरा विचार करोंगा क्योंकि
३६ तू ने कहा है कि मैं ने पाप नहीं किया। तू आप को अपनी
चालों को फेर फेर बर्णन करके अत्यन्त तुच्छ करेगा कि मिसर
के कारण भी तू लजाया जायगा जैसे असूर के विषय में
३७ लजायागया है। हां यहां से अपने सिर पर हाथ रक्खे हुए
तू निकल जायगा क्योंकि परमेश्वर ने तेरे भरोसा की बस्तुन को
त्याग किया है और तू उनमें भाग्यमान न होगा।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

परमेश्वर का यहूदा को नेंउता देना १—५ यहूदा
का पाप इसराईल के से अधिक होना उन्हें उपदेश
करना और लोगों का समाचार ६—२५

१ कहते हैं कि यदि मनुष्य अपनी पत्नी को त्यागे और वुह जाके
दूसरे पुरुष की हो जाय तो क्या वुह उसे फेर ग्रहण करेगा?
क्या वुह देश अशुद्ध न होगा? परन्तु तू ने बहुत से जारों
से छिनाला किया है तथापि परमेश्वर कहता है कि अब
२ भी मेरी ओर फिरो। ऊंचे स्थानों पर अपनी आंखें उठा
और देख कहां तू अशुद्ध न किई गई तू अरब की नाईं
मार्गों में बन में उनकी बाट जोह रही थी तू ने अपने

छिनालों से और अपनी दुष्टता से देश को अशुद्ध किया है।
३ यद्यपि झड़ी रोकीगई और अंत का बरखा भी नहीं हुआ
तथापि तू बेश्या का कपाल रखती है क्योंकि तू ने निर्लज्ज होने
४ को ठान रखा है। क्या अब भी तू पुकार के मुझे न कहेगी कि
५ हे मेरे पिता तू मेरी तरुणाई का अगुआ था। क्या सदा उदास
की दृष्टि रक्खेगा अथवा सदा अपराध का टांकना होगा? देख
तू ने कहा और किया है और दुष्टता किई है और प्रबल हुई है।
६ युसेया राजा के दिनों में भी परमेश्वर ने मुझे कहा कि तू ने
देखा है कि फिरे हुए इसराईल ने क्या किया है? वुह हर
एक ऊंचे पर्ब्बत पर चढ़ गई है और हर एक हरे पेड़ तले और
७ वहां छिनाला किया है। इन सारी बातों के पीछे मैं ने उसे
कहा कि मेरी ओर फिर आ परन्तु वुह न फिरी और उसकी
८ बिश्वास घातिनी बहिन यहूदा ने देखा। और जब मैं ने देखा
कि फिरे हुए इसराईल के सारे छिनाले के मारे जो उसने
किया था मैं ने उसे त्यागा और उसे त्याग पत्र दिया तो भी
उसकी बिश्वास घातिनी बहिन यहूदा न डरी परन्तु आप
९ भी जाके छिनाल कर्म्म किया। और ऐसा हुआ कि अपने
निर्लज्ज छिनालपने से देश को अशुद्ध और पत्थर और लकड़ी
१० के साथ ब्यभिचार किया। और परमेश्वर कहता है कि इन
सारे कर्म्मों के पीछे उसकी बिश्वास घातिनी बहिन यहूदा
११ अपने सारे मन से मेरी ओर न फिरी परन्तु छल से। इस
लिये परमेश्वर ने मुझे कहा कि बिश्वास घातिनी यहूदा से भी
अधिक फिरे हुए इसराईल ने आप को निर्दोष ठहराया
१२ है। तू उत्तर की ओर जाके यह प्रचार के कह कि परमेश्वर
कहता है हे फिरे हुए इसराईल फिर आ और उदासी से
मैं तुझ पर दृष्टि न करोंगा क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं
१३ दयाल हूं मैं सदा उदासी दृष्टि न रक्खोंगा। केवल अपनी
बुराई को मान जो कि मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध फिर

गया और हर एक हरे पेड़ के तले उपरियों से मनमंता चला
हों परमेश्वर कहता है कि तुम्हों ने मेरे शब्द को नहीं माना है।
१४ परमेश्वर कहता है कि फिरे ऊए सन्तानो फिर आओ क्योंकि
मैं तुम्हों में पति ऊआ हों और तुम्हें नगर में से एक को और
१५ गोष्ठी में से दो को निकाल के सेहन में लाऊंगा। और मैं
अपने ही मन के समान तुम्हें आज्ञाकारी देउंगा और वे ज्ञान
१६ के और समुझ के साथ तुम पर प्रभुता करेंगे। और परमेश्वर
यों कहता है कि उन दिनों में ऐसा होगा कि जब तुम लोग
देश में बढ़ोगे और बऊत होओगे वे फेर न कहेंगे कि परमेश्वर
के नियम की मंजूषा और वुह उनके मन की आनन्दता न होगी वे
स्मरण न करेंगे और उसकी चिंता न करेंगे और फिर बनाया
१७ न जायगा। उस समय सें यिरोशलीम परमेश्वर का सिंहासन
कहावेगा और सारे जातिगण परमेश्वर के नाम से उसमें
जायेंगे और वे फेर अपने बुरे मन की लालसा के समान न
१८ चलेंगे। उन्हीं दिनों में यहूदा का घराना इसराईल के घराने
में जायेंगे और वे उत्तर देश में से एकट्ठे होके इस देश में
१९ आवेंगे जो मैं ने तुम्हारे पितरों का अधिकार किया था। जब
मैं ने कहा कि मैं तुझे बेटों में क्योंकर रक्खों और वांछित देश
तुझे देओं जातिगणों की सेना के विभव का अधिकार तब मैं ने
कहा तू मुझे पिता करके पुकारेगा और मेरे पीछे आने से
२० फिर न जायगा। परमेश्वर कहता है निश्चय जैसा कि दुष्ट स्त्री
विश्वास घात करती है तैसा हे इसराईल के घराने तुम लोगों
२१ ने मेरी ओर से बिश्वास घात किया है। चौगानों में शब्द
सुना गया है कि इसराईल के सन्तान बिलाप करते हैं और
बिनती करते हैं इस कारण कि उन्हों ने अपनी चाल को बिगाड़ा
२२ है और अपने ईश्वर परमेश्वर को बिसराया है। हे फिरे
ऊए बालको फिर आओ मैं तुम्हारे धर्म्म त्यागों को चंगा
करोंगा देख हम तेरी ओर आते हैं क्योंकि तू हमारा ईश्वर

२३ परमेश्वर है। निश्चय टीले और बज़त से पर्ब्बत झूठे हैं निश्चय हमारे ईश्वर परमेश्वर में इसराईल की मुक्ति है।
२४ क्योंकि हमारी तरुणाई से लज्जित बस्तु ने हमारे पितरों की संपत्ति को उनके भेड़ और उनके ढोर और उनके बेटे
२५ बेटियों को भक्ष्य किया है। और हम अपनी लाज में पड़े रहेंगे और हमारा लज्जित कर्म्म हमें ढांपेगा इस कारण कि हमने और हमारे पितरों ने तरुणाई से आज लों अपने ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध पाप किया और अपने ईश्वर परमेश्वर का शब्द नहीं माना है।

४ चौथा पर्ब्ब ।

इसराईल को और यहूदा को उपदेश करना १—४ उनके पाप के मारे संग्राम की बिपत्ति की भविष्य बाणी ५—१८ इरमियाः का उनके लिये बिलाप करना १९—३१ ।

१ हे इसराईल यदि तू फिर आवेगा तो परमेश्वर कहता है कि मेरी ओर फिर और यदि तू अपनी घिनितों को मेरी दृष्टि से दूर
२ करेगा तो तू मेरे आगे से दूर न किया जायगा। परन्तु तू सचाई से और बिचार से और धर्म्म से परमेश्वर के जीवन की किरिया खायगा और जातिगण उसमें आप आप को आशीष
३ देंगे और उसी की बड़ाई करेंगे। परमेश्वर यहूदा और यिरोशलीम के लोगों से यह कहता है कि अपनी भूमि में
४ किसनई करो और कांटों में मत बोओ। हे यहूदा के मनुष्यो और हे यिरोशलीम के बासियो परमेश्वर के लिये ख़तनः किये जाओ और अपने अपने मन की खलड़ी को अलग करो न होवे कि तुम्हारी चाल की बुराई के कारण मेरा क्रोध आग की नाईं फूट निकले और ऐसा बर उठे कि कोई उसे बुता न
५ सके। यहूदा में प्रगट करो और यिरोशलीम में यह कहि के

प्रचारो देश में तुरही का शब्द करो और सर्वत्र प्रचार के
६ कहो कि एकट्ठे होओ और बाड़ित नगरों में चलो। सैहून में
ध्वजा खड़ा करो और हटो खड़ा मत होओ क्योंकि मैं उत्तर
७ से बुराई लाता हों अर्थात् बड़ा बिनाश। एक सिंह अपनी
झाड़ी से निकला है और जातिगणों का नाशक अपने मार्ग में
है वुह तेरा देश उजाड़ने को अपने स्थान से निकला है और
८ तेरे नगर बिना निवासी उजाड़ होंगे। इस लिये टाट
बस्त्र कसो और रोओ और बिलाप करो क्योंकि परमेश्वर का
९ महा कोप उस्से फिर नहीं गया है। परमेश्वर कहता है कि
उस दिन ऐसा होगा कि राजा का और राजपुत्रों का मन घट
जायगा और याजक आश्चर्यित होंगे और भविष्यद्वक्ता अचंभित।
१० तब मैं ने कहा हाय प्रभु परमेश्वर निश्चयं तू ने लोगों को और
यिरोशलीम को यह कहि के भुलाया है कि तुम लोग कुशल
११ पाओगे यद्यपि तलवार प्राण लों पहुंचती है। उस समय
यिरोशलीम के और इन लोगों के बिषय में यह कहा जायगा कि
मेरे लोगों की पुत्री की ओर बन के चौगानों से एक पवन झोंसता
१२ है कुछ बुहार ने और पावन करने को नहीं आता। पूरा पवन
मेरी आज्ञा से बहेगा अब मैं हीं न्यायी के साथ उनसे व्यवहार
१३ करोंगा। देखो वुह मेघ की नाईं चढ़ आता है और उसके
रथ बौंडर की नाईं उसके घोड़े गिद्ध से भी बेग हैं हाय हम
१४ सभों पर क्योंकि हम उजाड़े गये। हे यिरोशलीम अपने मन
को दुष्टता से पवित्र कर जिसतें तू मुक्ति पावे कबलों तेरी
१५ बुराई की युक्ति तुझ में बनी रहेगा। क्योंकि दान से एक शब्द
प्रगट करता है और अफराईम पहाड़ से बुराई प्रचारता
१६ है। जातिगणों में प्रचारो देखो यिरोशलीम के बिरुद्ध प्रचारो
कि दूर देश से पहरू आते हैं और यहूदा के नगरों के बिरुद्ध
१७ अपना शब्द उठावेंगे। खेत के रखवालों की नाईं वे उसके बिरुद्ध
चारो ओर हैं क्योंकि परमेश्वर कहता है कि वुह मेरे बिरुद्ध

१८ फिर गई है। तेरी चाल और तेरे कर्म्म की कमाई ये हैं और यही तेरी बिपत्ति क्योंकि वुह कड़वी है तेरे अंतःकरण लों पहुंची है।
१९ मेरी अंतड़ियां मेरी अंतड़ियां मेरे अंतःकरण की भांतें पीड़ित हैं और मेरा अंतःकरण मुझे व्याकुल करता है मैं चुप रह नहीं सक्ता इस लिये कि मैं ने तुरही का शब्द सुना है और मेरा
२० प्राण लड़ाई का खटका। नाश पर नाश आया है क्योंकि सारा देश नाश हुआ है और मेरे तंबू अचानक लुट गये हैं और
२१ मेरे ओझल पल मात्र में। कब लों मैं ध्वजा को देखों और
२२ तुरही का शब्द सुनोंगा। निश्चय मेरे लोग मूर्ख हैं और उन्हों ने मुझे नहीं पहिचाना वे मूर्ख बालक हैं वे अज्ञान हैं वे कुकर्म्म
२३ में बुद्धिमान परन्तु सुकर्म में असमुझ हैं। और मैं ने पृथिवी को देखा और क्या देखता हों कि औल थौल और गड़बड़
२४ और आकाश की ओर भी उंजियाला न था। और मैं ने पर्ब्बतों को देखा और क्या देखता हों कि वे थर्थराये और सारे
२५ टीले हिल गये। और मैं ने देखा और क्या देखता हों कि कोई मनुष्य नहीं और आकाशों के सारे पंछी उड़ गये।
२६ और मैं ने देखा और क्या देखता हों कि फलवंत खेत अरण्य होगया है और परमेश्वर के आगे उसके कोप के अति तपन के
२७ आगे उसके सारे नगर गिराये गये हैं। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि सारा देश उजाड़ हो जायगा तथापि मैं समाप्त
२८ न करोंगा। इस बात के लिये पृथिवी बिलाप करेगी और आकाश कालिख से ढांपे जायेंगे क्योंकि मैं ने कहा है और
२९ नहीं पछताता और मैं ने ठाना है और न हटोंगा। और घोड़चढ़ों के और धनुष धारियों के शब्द के मारे हर एक नगर भागता है वे गाढ़े बन में जा रहे हैं और वे टीलों पर चढ़ गये हैं हर एक नगर त्यागा गया है और उनमें कोई पुरुष बास
३० नहीं करता। लूटे जाने पर तू क्या करेगी यद्यपि तू आप को लाल बस्त्र से बिभूषित करती है यद्यपि तू सोने के आभूषण से

आप को सवांरती है यद्यपि तू अपनी आखें में सुरमा लगाती है तथापि दृथा तू अपनी सुन्दरता प्रगट करती है क्योंकि तेरे

३१ जारों ने तुझे त्यागा है और वे तेरे प्राण के गाहक होंगे। क्योंकि मैं ने पीड़ित स्त्री का चिल्लाना सुना है उसके दुःख की नाईं जो पहिलौंठा पुत्र जनती है सैह्रन की पुत्री का चिल्लाना, वुह हांपती है वुह अपने हाथ फैला के यह कहती है कि हाय मुझ पर क्योंकि बधिकों के कारण मेरा प्राण घटा जाता है।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

यहूदियों के पाप के लिये ईश्वर का कोप १—१४ उनकी मूर्त्तिपूजा अंधापन, और मिथ्या आचार्यों पर कृपा करनी १५—३१ ।

१ यिरोशलीम की सड़कों में आरंपार दौड़ो और देखो और जानो उसके चौड़े स्थानों में ढूंढ़ो यदि एक भी जन पा सको यदि एक भी न्यायकर्त्ता है जो सत्य को ढूंढ़ता है जिसतें मैं

२ उसे क्षमा करों। परन्तु यद्यपि वे कहते हैं कि परमेश्वर के

३ जीवन सों निश्चय वे झूठी किरिया खाते हैं। हे परमेश्वर क्या तेरी आंखें सत्य पर नहीं हैं? तू ने उन्हें मारा है परन्तु वे शोकित न ऊए तू ने उन्हें क्षीण किया है परन्तु उन्हों ने शासन ग्रहण न किया उन्हों ने अपने मुंह को पत्थर से भी अधिक

४ कठोर किया हैं फिर आने में उन्हों ने नाह किया है। तब मैं ने कहा कि निश्चय ये नीच लोग हैं जिन्हों ने मूर्खता किई है क्योंकि उन्हों ने अपने परमेश्वर के मार्ग को और अपने ईश्वर के

५ न्याय को नहीं जाना है। मैं महतों के पास जाओंगा और उनसे कहोंगा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के मार्ग को और अपने ईश्वर के विचार को जाना है परन्तु इन्हों ने भी जूआ को सर्वथा

६ तोड़ दिया है उन्हों ने बंधनों को झटक दिया है। इस लिये बन में से सिंह उन्हें घात करेगा बनैले ऊंडार उन्हें नाश करेंगे

एक चीता उनके नगरें को अगोरेगा हर एक जो उन में से निकलेगा सो टुकड़ा टुकड़ा किया जायगा इस लिये कि उनका फिर जाना बढ़गया है और उनका धर्म्म त्यागना अधिक
७ ऊआ है इस्से मैं तुझे क्योंकर क्षमा कर सकों तेरे संतानों ने मुझे बिसरा दिया है और उनकी किरिया खाई है जो देव नहीं हैं और जब मैं ने उन्हें संतुष्ट किया तब उन्हों ने व्यभिचार
८ किया और कंचनों के घर में एकट्ठे ऊए। वे सांड़ घेड़ों के समान कामी ऊए और हर एक अपने अपने परोसी की पत्नी के
९ पीछे हिनहिनाया किया। परमेश्वर कहता है कि इन बातों के लिये क्या मैं पलटा न लेओंगा और ऐसे लोगों से क्या मेरा
१० प्राण बैर न लेगा। तुम उनकी भीतों पर चढ़ के नाश करो परन्तु समाप्त न करो उनकी डालियां दूर करो क्योंकि वे परमेश्वर को
११ नहीं हैं। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि इसराईल के घराने और यहूदा के घराने ने मेरे बिरुद्ध अति बिश्वास घात किया
१२ है। वे परमेश्वर से मुकर गये हैं और कहा है कि वुह नहीं और बिपत्ति हम पर न आवेगी और हम तलवार और
१३ अकाल न देखेंगे। परन्तु भविष्यद्वक्ता पवन होजायेंगे और बचन
१४ उनमें नहीं है उन पर ऐसाही होगा। इस लिये सेनाओं का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग जो यह बात कहते हो सो देखो मैं अपने बचन को तेरे मुंह में आग की नाईं करोंगा और इन लोगों को लकड़ी को, और वे उन्हें भक्ष
१५ करेंगे। हे इसराईल के घराने देखो मैं दूर देश से तुम्हारे बिरुद्ध एक जाति लाओंगा वुह बलवंत जाति है और वुह प्राचीन जाति एक जाति जिसकी भाषा तू नहीं जानता और
१६ जिसका कहना तू नहीं समझता। उनका तोण खुली समाधि
१७ है वे सब के सब बलवंत हैं। तेरी लवन और तेरी रोटी जो तेरे बेटे बेटियों को खाना था वे खा जायेंगे तेरी झुंड और तेरे ढोर खाजायेंगे वे तेरे दाख और तेरे गूलर पेड़ खा जायेंगे

ये तेरे बाड़ित नगरों को, जिन पर तेरा भरोसा है तलवार से
१८ उजाड़ेंगे। तथापि परमेश्वर कहता है कि मैं उन दिनों में तुम्हें
१९ समाप्त न करोंगा। जब तुम लोग कहोगे कि हमारे परमेश्वर
ईश्वर ने यह सब हम पर क्यों किया तब यों होगा कि तू उन्हें
यों कहियो, जैसा कि तुम लोगों ने मुझे त्याग के अपने देश में
उपरी देवों की सेवा किई है तैसा तुम लोग परदेश में उपरी
२० को सेवा करोगे। याक़ूब के घराने में इसे जनाओ और यहूदा
२१ में यह कहिके प्रचारो। अब इसे सुनो हे मूर्खो और हे
अज्ञानों जो आंख रखते हैं पर नहीं देखते और कान रखते हैं
२२ पर नहीं सुनते। परमेश्वर कहता है कि क्या तुम लोग मुझे
नहीं डरते मेरे साक्षात से न थर्थराओगे जिसने समुद्र के
सिवाने के लिये बालू सदा की बिधि के लिये ठहरा रक्खा है
और वुह उसे आगे बढ़ नहीं सक्ता यद्यपि उसकी लहरें उठा
करें तथापि वे प्रबल न होंगी यद्यपि वे गर्जें तथापि वे पार
२३ नहीं जासक्तीं। परन्तु इस लोग का मन हटा ऊआ और
२४ फिरा ऊआ है वे हट के चले गये हैं। वे अपने मन में नहीं
कहते कि चलो अपने ईश्वर परमेश्वर से डरें जो रितु में
अगले और पिछले मेह देता है लवनी के ठहराए ऊए अठवारों
२५ को हमारे लिये रख छोड़ता है। तुम्हारी बुराइयों ने इन वस्तुन
को दूर किया है और तुम्हारे पापों ने तुम से भलाई को रोक
२६ रक्खा है। क्योंकि मेरे लोगों में दुष्ट पायेजाते हैं जो ब्याधा
की नाईं घात में रहते हैं वे मनुष्यों के पकड़ने को कल
२७ बैठाते हैं। जैसे पिंजड़ा चिड़ियों से भराऊआ है तैसे उनका
२८ घर छल से भराऊआ इस लिये वे बढ़ के धनी ऊए हैं। और
वे मोटे होके चमकते हैं हां वे दुष्टों की क्रिया से बढ़ गये हैं
तथापि वे पद का अर्थात् अनाथों का पद नहीं बिचारते तथापि
वे भाग्यमान होते हैं और वे दरिद्रों का बिचार नहीं करते।
२९ परमेश्वर कहता है कि क्या इन बातों के लिये मैं पलटा न

२० लेओगा और ऐसी जाति से क्या मेरा प्राण बैर न लेगा। देश
२१ में एक आश्चर्यित और घिनित बस्तु ऊई है। भविष्यदक्ता झूटा भविष्य कहता है और याजक भी उनके द्वारा से प्रभुता करत है और मेरे लोग ऐसाही चाहते हैं परन्तु उसके अंत में तुम लोग क्या करोगे।

६ छठवां पर्ब्ब।

बैरियों के हाथ यहूदियों का सौंपा जाना १—९
लोगों का पाप और बिपत्ति बर्णन करना १०—१५
उन्हें चिताके ईश्वर के कोप का सन्देश देना १६—३०।

१ हे बनियामीन के संताने। यिरोशलीम के मध्य में से भागने को बटुर जाओ और टिकुआ में तुरही बजाओ और बैतहकसरेम में आग का चिन्ह खड़ा करो क्योंकि उत्तर से
२ बुराई दिखाई देती है अर्थात् एक बड़ा नाश। मैं ने सैहून
३ की पुत्री को एक सुकवारी से उपमा दिई है। और गड़रिये अपनी झुंडों के साथ उस पास आवेंगे, वे उसके चारो ओर डेरे खड़े करेंगे और हर एक उसके आस पास चरावेगा।
४ उसके बिरुद्ध में संग्राम लैस करो उठो मध्यान्ह को चढ़जायें हाय हम पर, क्योंकि दिन ढलता है और सांझ की छाया
५ बढ़गई है। उठो रात को चढ़जायें और उसके भवनों को
६ नाश करें। क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर ने कहा है कि उसके पेड़ों को काटो और यिरोशलीम के बिरुद्ध टीला उठाओ इस लिये कि यह नगर पलटा के लिये पक रहा है उसके मध्य में
७ हर प्रकार का अन्धेर है। जैसा सोता अपने पानी बहाता है तैसा वुह अपनी दुष्टता फैलाती है उपद्रव और लूट उसमें सुना जाता है शोक और मार पीट मेरे साक्षात
८ है। हे यिरोशलीम सुधर जा ऐसा न होवे कि मेरा मन

तुझसे अलग हो जाय नहो कि मैं तुझे एक उजाड़ और
९ सूना देश बनाओं। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है
कि वे इसराईल के उबरे ऊए को, लता की नाईं सर्वथा बीनेंगे,
दाख के बटोरवैये की नाईं टोकरों में अपने हाथ फेर दे।
१० मैं किसे कहों और चिताओं जिसतें वे सुनें उनका कान
अख़तनः है यहां लों कि वे सुन नहीं सक्ते देखो परमेश्वर का
बचन उनमें वृथा वस्तु ऊआ है वे उसे आनन्दित नहीं होते।
११ इस लिये मैं परमेश्वर के कोप से भरपूर हों और सहने
से थक गया हों मैं मार्गों में लड़कों पर उंड़ेलोंगा और युवा
पुरुषों को मंडली पर भी हां पत्नी समेत पति भी और पुरनिये
१२ पूर्ण बय सहित धरे जायेंगे। और उनके घर और उनकी
भूमि और स्त्री सहित औरों के होजायेंगे क्योंकि परमेश्वर
कहता है कि देश के बासियों पर मैं अपना हाथ बढ़ाओंगा।
१३ क्योंकि सब से छोटे से सब से बड़े लों हर एक कामाभिलाष में
लिप्त हैं और भविष्यदक्ता से लेके याजक लों झूठ कर्म करते
१४ हैं। उन्हों ने मेरे लोगों की पुत्री के घाव को यह कहिके बाहर
१५ बाहर चंगा किया है, कि कुशल कुशल जब कुशल नथा। क्या
घिनित कार्य्य करके वे लज्जित ऊए? नहीं वे तनिक लज्जित न
ऊए वे लाज न करसके इस लिये एक पर एक गिरेगा परमेश्वर
कहता है कि अपने पलटे के समय में वे गिराये जायेंगे।
१६ परमेश्वर ने कहा है कि मार्गों के पास खड़े होके देखो और
पुराने पथों के विषय में पूछो कि वुह उत्तम मार्ग कहां है? और
उसी में चलो यों तुम लोग अपने जी में जी पाओगे परन्तु, उन्हों
१७ ने कहा कि हम न चलेंगे। मैं तुम पर पहरू बैठाओंगा तुरही का
१८ शब्द सुनो परन्तु उन्हों ने कहा कि हम न सुनेंगे। इस लिये हे
१९ जातिगणो सुनो और हे मंडली जो उनमें है जान। हे पृथिवी
सुन जो उन्हों में है देखो मैं इस लोग पर बुराई लाता हों
अर्थात् उन्हीं की भावना का फल, इस लिये कि उन्हों ने मेरे

वचन को न सुना और मेरी व्यवस्था जो है उसे उन्हों ने त्यागा
२० है। और मेरे लिये धूप शीबा से क्यों पहुंचाया जाय?
अथवा दूरदेश से सुगन्धद्रव्य, तुम्हारे होम की भेंटें ग्राह्य नहीं
२१ और बलि भी प्रसन्न नहीं। परमेश्वर यों कहता है कि
देखो मैं इस लोग के आगे ठोकरें धरता हों और पिता
और पुत्र उनसे ठोकर खायेंगे निवासी और उसका संगी एकट्ठे
२२ नष्ट होंगे। परमेश्वर यों कहता है कि देखो उत्तर देश से
एक लोग आता है और एक बड़ी जाति पृथिवी के अन्तों से
२३ उभाड़ी जायगी। वे धनुष और भाले को हाथ में लेंगे वे बड़े
क्रूर हैं और दया न दिखावेंगे उनका शब्द समुद्र की नाईं हा
हा करेगा और वे घोड़े पर चढ़ेंगे सो हे सीहून की पुत्री वे
तेरे विरुद्ध योद्धाओं की नाईं पांती बान्धेंगे।
२४ हमने उसका समाचार सुना है हमारे हाथ दुर्बल हुए
हैं और पीड़ित स्त्री की पीड़ा की नाईं व्याकुलता ने हमें पकड़
२५ रक्खा है। खेत में मत निकल जाओ और राजमार्गों में भी
मत फिरो क्योंकि बैरी के पास खड्ग है और चारो ओर भय।
२६ हे मेरे लोग की लड़की टाट पहिन और राख में लोट दुलारे
बालक के लिये हाय हाय और अत्यन्त विलाप कर क्योंकि
२७ लुटेरा हमपर अचानक आवेगा। मैं ने तुझे ठहराया है कि
मेरे लोगों के सोने के विषय में परीक्षा करो जब तू उनकी
२८ चाल को परखेगा तो जानेगा। वे सब के सब अति फिरे
हुए के मैल हैं खोटे सिक्के से चलते हैं वे सब के सब पीतल
२९ और लोहे वे बिगड़े हुए हथियार हैं। धौंकनी जलगई सीसा
भस्म हो गया ठठेरे ने व्यर्थ गलाया है क्योंकि उसमें की मैल
अलग नहीं हुई उन्हें खोटा चान्दी करके कहो क्योंकि ईश्वर ने
उन्हें त्यागा है।

७ सातवां पर्ब्ब ।

इरमियाः का यहूदियों को चिताना १—११
यिरोशलीम के उजाड़ का संदेश देना १२—१५
उनके नष्ट होने का वर्णन करना १६—२८
बिलाप का उपदेश करना २९—३४ ।

१ यह कहते हुए परमेश्वर का बचन इरमियाः पास पहुंचा।
२ कि तू परमेश्वर के मन्दिर के फाटक पर खड़ा हो और इसबचन को प्रचार के कह कि हे सारे यहूदा, जो परमेश्वर की सेवा के लिये
३ इन फाटकों से भीतर जाते हो परमेश्वर का बचन सुनो। सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि अपनी अपनी चाल और अपनी अपनी करनी को सुधारो और मैं इस
४ स्थान में तुम्हें रक्खोंगा। उन पर भरोसा मत करो जो झूठाई से कहते हैं कि परमेश्वर का मन्दिर परमेश्वर का मन्दिर परमेश्वर
५ का मन्दिर यह है। क्योंकि जो तुम लोग अपनी अपनी चाल और अपनी अपनी करनी को निर्धार सुधारोगे और जो मनुष्य में और उसके परोसी के मध्य में सर्वथा न्याय करोगे।
६ यदि तुम लोग परदेशी और अनाथ और बिधवा पर अंधेर न करोगे और इस स्थान में निर्दोष लोहू न बहाओगे और
७ अपनी घटी के लिये उपरी देवों का पीछा न करोगे। तो मैं इस देश में, जो तुम्हारे पितरों को दिया इस स्थान में तुम्हारे
८ साथ सनातन से सनातन लों बास करोंगा। देखो तुम लोग
९ उन पर भरोसा रखते हो जो अकारथ झूठ बोलते हैं। क्या जबलों चोरी और हत्या और पर स्त्री गमन करतेहो और झूठी किरिया खातेहो और बआल के लिये धूप जलातेहो और उपरी देवों का पीछा करतेहो जिन्हें तुम जानते न थे।
१० तुम लोग तब मेरे आगे इस मन्दिर में, जो मेरे नाम से कहा जाता है खड़ेहोगे और कहोगे कि हमें छुड़ा जिसतें हम ये
११ सारे घिनित कार्य्य करें?। यह मन्दिर जो मेरे नाम से प्रसिद्ध

है क्या तुम्हारी दृष्टि में चोरों की मांद है परमेश्वर कहता
१२ है कि देखो मैं ने हां मैंही ने देखा है। परन्तु अब मेरे
स्थान में जा जो शीलूह में था जहां अगिले समय में मैं ने
अपना नाम स्थापन किया था और देखो मैं ने अपने इसराईल
१३ लोगों की दुष्टता के कारण उसे क्या किया है। और अब
परमेश्वर कहता है इस कारण कि तुम लोगों ने ये सारे कार्य्य
किये हैं और मैं ने तड़के उठ उठ के तुम से कहा किया है परन्तु
तुम ने न सुना मैं ने तुम्हें पुकारा परन्तु तुम ने उत्तर न दिया।
१४ इस लिये मैं इस मन्दिर से, जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है जिस
पर तुम लोग भरोसा करते हो और इस स्थान से, जो मैं ने
तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया वही करोंगा जो मैं ने
१५ शीलूह से किया है। मैं तुम्हें अपने आगे से दूर करोंगा जैसा
मैं ने तुम्हारे सारे भाईबन्द अफराईम के सारे सन्तानों को
१६ दूर किया। पर तू जो है इस लोग के लिये प्रार्थना मत कर
और उनके निमित्त प्रार्थना अथवा बिनती मत कर और
१७ मुझ से बिचवई मत कर क्योंकि मैं तेरी न सुनोंगा। क्या तू नहीं
देखता कि यहूदा के नगर में और यिरोशलीम के सड़कों में
१८ ये लोग क्या करते हैं। कि लड़के ईंधन बटोरते हैं और
पितर आग बारते हैं और स्त्री आंटा गूंधती हैं जिसतें स्वर्ग के
राजाओं के लिये रोटी बनावें और उपरी देवों के लिये तर्पण करें
१९ जिसतें मुझे रिस दिलावें। परमेश्वर कहता है कि क्या वे मुझे
रिसियावते हैं? क्या वे अपनेही मुंह की घबराहट के लिये
२० आपही नहीं रिसियावते हैं। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि देखो इस स्थान पर और मनुष्य पर और पशुन पर
और चौगान के पेड़ों पर और भूमि के फलों पर मेरी रिस
और मेरा कोप उंडेला जायगा वुह बरेगा और बुताया न
२१ जायगा। इसराईल का ईश्वर सेनाओं का परमेश्वर यों कहता
है कि तुम लोग अपने बलिदानों में अपने होम की भेंट

२२ मिलाओ और मांस खाओ। क्योंकि जिस दिन मैं ने तुम्हारे पितरों को मिसर के देश में से निकाल लाया उन्हें बलिदान और होम की भेंट के निमित्त नहीं कहा और उन्हें आज्ञा

२३ किया। परन्तु इसी बात के लिये मैं ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि मेरे शब्द को मानो और मैं तुम्हारे लिये ईश्वर होओंगा और तुम मेरे लिये एक लोग होओगे और सारे मार्गों में चलियो जो मैं तुम्हें आज्ञा करोंगा जिसतें तुम्हों पर भला होवे।

२४ परन्तु उन्हों ने न सुना न कान झुकाया परन्तु अपने बुरे मन की भावना के समान चले और पीछे हटे और आगे न बढ़े।

२५ जिस दिन से तुम्हारे पितर मिसर के देश से निकल आये आज लों मैं ने तुम्हारे पास अपने सारे सेवक भविष्यद्वक्तों को

२६ प्रति दिन तड़के उठ उठ के भेजा है। परन्तु उन्हों ने मेरी न सुनी और न अपने कान झुकाये परन्तु अपने गले को कठोर

२७ किया और अपने पितरों से भी अधिक दुष्ट कर्म किया। अब जब तू यह सारी बातें उन्हें कहेगा वे तेरी न सुनेंगे और जब

२८ तू उन्हें पुकारेगा वे तुझे उत्तर न देंगे। इस लिये तू उन्हें कहियो कि यह एक जाति है जिस ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को न सुना और ताड़ना न मानी सचाई घट गई और उनके

२९ मुंह से जाती रही। अपनी नसरानी की चोटी मुड़ा और उन्हें फेंक दे और खुले चौगान में बिलाप कर क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को त्यागा है और अपने कोप की पीढ़ी को बहा

३० दिया है। इस लिये परमेश्वर कहता है कि यहूदा के संतानों ने मेरी दृष्टि में बुराई किई है उन्हों ने अपने घिनितों को उस घर में जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है अपवित्र करने को स्थापना किया

३१ है। और उन्हों ने अपने बेटे बेटियों को आग में जलाने को तोफेत के ऊंचे ऊंचे स्थानों को, जो हन्नूम के बेटे की तराई में है स्थापन किया है जो मैं ने आज्ञा न किई और न मेरे लिये

३२ ग्राह्य था। इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन

आते हैं कि वुह तोफेत अथवा हन्नूम के बेटे की तराई न कहावेगी परन्तु जूझ की तराई और वे तोफेत में यहां लों
३३ गाड़ेंगे कि स्थान न मिलेगा। और लोगों की लोथें आकाश के पंक्षियों के लिये और पृथिवी के पशुन के लिये भोजन होंगे
३४ और कोई उन्हें न हांकेगा। और मैं यहूदा के नगरों से और यिरोशलीम की सड़कों से आनन्द का शब्द और सुख बिलास का शब्द दूल्हा और दूल्हिन का शब्द उठवाऊंगा क्योंकि देश उजाड़ हो जायगा।

८ आठवां पर्ब्ब।

यहूदियों के पापों के लिये बिपत्ति की भविष्य बाणी १—३ उनका नाना पाप बताना ४—१२ उनके घेरे जाने की भविष्य बाणी १३—१७ उनकी बिपत्ति के लिये इरमियाः का शोकित होना १८—२२।

१ परमेश्वर कहता है कि उस समय में वे यहूदा के राजाओं की हड्डियां को और उनके राजपुत्रों की हड्डियों को और याजकों की हड्डियों को और भविष्यद्वक्तों की हड्डियों को और यिरोशलीम के निवासियों की हड्डियों को उनकी समाधिन में से निकाल
२ फेंकेंगे। और सूर्य्य और चांद और स्वर्ग की सारी सेना जिन्होंसे उन्हों ने प्रीति किई है और जिनकी सेवा किई है और जिनके पीछे गये हैं और जिनकी खोज किई है और जिन्हें दंडवत किई है वे उनके आगे उन्हें उघारेंगे वे बटोरी न जायेंगी और गाड़ी न जायेंगी परन्तु वे भूमि पर के मल की
३ नाईं होंगी। और सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सारे उबरे हुए, जो इस बुरे घराने से हर एक स्थान में रह जायेंगे, जहां जहां मैं ने उन्हें खेदा है मृत्यु को जीवन से अधिक चाहेंगे।
४ परमेश्वर यों कहता है कि तू उनसे यह भी कह कि जो गिरेंगे

सा क्या फेर न उठेंगे? अथवा जो जाता है सो फिर न
५ आवेगा?। सो ये लोग अर्थात् यिरोशलीम सदा के धर्म त्याग
से किस लिये फिर गये? उन्हों ने छल को दृढ़ता से पकड़ रक्खा
६ है और फिर आने को नाह किया है। मैं ने ध्यान से सुना कि
उन्हों ने ठीक न कहा और यह कहिके कोई अपनी दुष्टता
से नहीं पछताता कि मैं ने क्या किया जैसे घोड़ा लड़ाई में
घुसा जाता है तैसा हर एक, जो फिर जाता है अपना जी लेके
७ भागता है। आकाश की जांघिल अपने समय को जानती है
और पंडुकी और घोंघला और सुपाबीना अपने आने की
रितु को जानती हैं परन्तु परमेश्वर कहता है कि मेरे लोगों ने
८ न्याय को नहीं बूझा है। तुम क्योंकर कहते हो कि हम बुद्धिमान
हैं और परमेश्वर की व्यवस्था हमारे पास है देख उसने उसे
व्यर्थ किया निश्चय लेखकों की झूठी लिखनी ने इन्हें झूठ बना
९ रक्खा है। बुद्धिमान जन घबरा गये और बिस्मित हुए
और बझाये गये देखो उन्हों ने परमेश्वर के बचन की अवज्ञा
१० किई और उनमें किस बात की बुद्धि है?। इस लिये मैं उनकी
पत्नियों को औरों को देओंगा और उनके खेत उन्हें, जो
उनके अधिकार में पैठेंगे क्योंकि उनमें सब से छोटे से
सब से बडे लों सर्बथा कामाभिलाषी, भविष्यद्वक्ता से लेके
११ याजक लों हर एक झूठा व्यवहार करता है। और उन्हों ने
मेरे लोग की पुत्री के घाव को बाहरी बाहर यह कहिके चंगा
१२ किया है कि कुशल कुशल जब कि कुशल न था। क्या वे अपने
घिनित कर्म्म से लज्जित थे? नहीं वे लज्जित होने न जानते
थे इस लिये परमेश्वर कहता है कि वे एक दूसरे पर गिरेंगे
१३ वे अपने दंड के समय गिराये जायेंगे। परमेश्वर कहता है
कि मैं सर्बथा उन्हें नाश करोंगा लता में दाख न होंगे और
गूलर पेड़ में गूलर न होंगे पत्ते भी मुरझायेंगे क्योंकि मैं ने
१४ ठहराया है कि ये जाते रहें। हम क्यों चुपके बैठ रहे हैं?

आओ एकट्ठे होवें और दृढ़ नगरों में पैठें और वहां चुपके ठहरें क्योंकि हमारे ईश्वर परमेश्वर ने हमें चुप किया है और विष का जल हमें पीने को दिया है क्योंकि हमने परमेश्वर के
१५ विरुद्ध पाप किया है। और हमने कुशल की बाट जोही परन्तु कुछ भलाई नहीं है चंगा होने के समय के लिये भय देखता
१६ हों। क्योंकि दान से उसके घोड़ों का फर्राना सुना जाता है और उसके बलवन्त घोड़ों के फर्राहट के शब्द से सारा देश थर्थरा रहा है वे आये भी हैं और देश को और सब को जो
१७ उसमें हैं नगर और उसमें के बासियों को खा गये हैं। निश्चय परमेश्वर कहता है कि देखो मैं तुम्हारे विरुद्ध सर्पों को अर्थात् नागों को भेजता हों जो मोहे नहीं जासक्ते और वे तुम्हें
१८ डसेंगे। असाध्य शोक मुझ पर पड़ा है मेरा मन मुझ
१९ में मूर्छित है। देखो मेरे लोग की पुत्री का शब्द दूर देश से क्या परमेश्वर सीहून में नहीं? क्या उसका राजा उसमें नहीं? तो उन्हों ने क्यों मुझे अपनी खोदी ऊई मूर्त्तिन से और अपनी
२० उपरी व्यर्थता से खिजाया है?। लवनी हो गई ग्रीष्म
२१ जातारहा तथापि हम कुड़ाये न गये। अपने लोग की लड़की के घाव के कारण से मेरा मन चूर हो रहा है मैं बिलाप
२२ करता हों घबराहट ने मुझे ग्रासा है। क्या गिलियाद में औषध नहीं है? वहां कोई बैद्य नहीं फेर मेरे लोग की लड़की का घाव क्यों नहीं अच्छा ऊआ?।

९ नवां पर्ब्ब।

उनके पाप के लिये इरमियाः का शोक और ईश्वर का न्याय १—१६ उन्हें चिता के उपदेश करना १७—२६।

१ हाय कि मेरा सिर जल हो जाता और मेरी आंखें आंसुओं का सोता जिसतें मैं अपने लोग की जूझीऊई लड़कियों के

२ लिये विलाप करों। हाय कि बन में मेरे लिये पथिकों का टिकाव होता जिसतें मैं अपने लोग को छोड़ के उनसे चला जाता क्योंकि वे सब परस्त्री गामी हैं और छल व्यवहारक
३ की मंडली। धनुष की नाईं उन्हों ने अपनी जीभ खींची है झूठ से और सत्य के समान नहीं वे देश में बलवन्त ज़ए हैं परमेश्वर कहता है कि निश्चय वे दुष्टता से दुष्टता में बढ़ गये हैं
४ और मुझे नहीं जाना। हर एक जन अपने अपने संगी से चौकस रहे और कोई भाई पर भरोसा न करे क्योंकि हर एक भाई निश्चय शठता करेगा हर एक संगी ठगता फिरेगा।
५ और हर एक जन अपने अपने संगी को छलेगा और वे सच सच न कहेंगे उन्हों ने अपनी जीभ को झूठ बोलने में बान
६ लगाई है और पाप करते करते थक गये। कि तेरा निवास स्थान कपट के मध्यमें है परमेश्वर कहता है कि छल के मारे
७ मुझे जान्ने में उन्हों ने नाह किया है। इसी लिये सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि देख मैं उन्हें पिघला के जांचोंगा और क्योंकर अपने लोग की लड़की के विषय में व्यवहार
८ करों। उनकी जीभ घातक के समान जिनके मुंह में वचन कपट है वुह अपने संगी से कुशल की बात कहेगा परन्तु मनहीं
९ मन उस पर अचानक आ पड़ने को ठानेगा। परमेश्वर कहता है कि क्या इन बातों के लिये मैं दंड न देउंगा और मेरा प्राण
१० ऐसी जाति से पलटा न लेगा। मैं पहाड़ों पर रोना पीटना लाओंगा और चैगान की चराई पर विलाप क्योंकि वे यहां लों जल गये कि कोई उसमें से नहीं जाता और वे ढोर का शब्द नहीं सुनते परन्तु आकाश के पंछी और पशु उड़ के जाते
११ रहे। और मैं यिरोशलीम को ढेर ढेर और नागों की बांबी बनाओंगा और मैं यहूदा के नगरों को बिना निवासी का
१२ उजाड़ करोंगा। बुद्धिमान कौन है जो इसे बूझे और परमेश्वर के मुंह ने किसे कहा कि वुह प्रगट करसके देश किस लिये

नाश ऊआ है और अरण्य की नाईं यहां लों जल गया है कि
१३ कोई उसमें से नहीं जाता? । परमेश्वरही ने कहा है
इस कारण कि उन्हों ने मेरी व्यवस्था को त्यागा है जो मैं ने उनके
आगे रक्खी और मेरे शब्द को नहीं माना और उसके समान
१४ नहीं चले। परन्तु अपने अपने मन की भावना के पीछे चले
गये और उन देवों के पीछे जो उन्हों ने अपने पितरों से सीखा।
१५ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर और इसराईल का ईश्वर यह
कहता है कि देख मैं उन्हें नागदवना खिलाओंगा और विष
१६ जल पीने को देओंगा। और मैं उन्हें जातिगणों में छिन्नभिन्न
करोंगा जिन्हें न उन्हों ने न उनके पितरों ने जाना है और मैं
उनके पीछे तलवार भेजोंगा जब लों मैं उन्हें मिटा न डालों।
१७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सोचो और विलापिनियों
को बुलाओ और वे आवें और गुणकारियों कने भेज और वे
१८ आवें। और वे शीघ्र हम पर विलाप आरंभ करें जिसतें हमारी
१९ आंखें आंसू बहावें और हमारी पलकें जल ढालें। निश्चय
विलाप का शब्द सीहून से सुना गया है कि हम कैसे नष्ट ऊए
हैं हम अति घबरा गये हैं क्योंकि हमने देश को छोड़ दिया
२० है क्योंकि उन्हों ने हमारे निवासों को ढा दिया है। इस लिये
हे स्त्रियो परमेश्वर का बचन सुनो और तुम्हारे कान उसके मुंह
की बात ग्रहण करें और अपनी लड़कियों को विलाप सिखाओ
२१ और हर एक अपने अपने संगी को विलाप सिखावे। क्योंकि
मृत्यु हमारी खिड़कियों में से चढ़ आई है और हमारे भवनों में
पैठी है उसने सड़कों में से बालकों को घात किया है और
२२ चौड़े स्थानों से तरुणों को नाश किया है। मनुष्यों की लोथ
मल की नाईं खेतों पर गिरेंगी और लवैयों की मुट्ठी मुट्ठी
२३ भर की नाईं जब कि बिनिया न होवे। परमेश्वर यह
कहता है कि बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर बड़ाई न करे और
बलवान अपने बल पर बड़ाई न करे और धनमान अपने धन

२४ पर बड़ाई न करे। परन्तु जो बड़ाई करता है सो मेरी समझ और ज्ञान रखने में बड़ाई करे कि मैं परमेश्वर पृथिवी पर दया और न्याय और सचाई का व्यवहार करता हों क्योंकि परमेश्वर
२५ कहता है कि मैं इन बातों में आनन्दित हों। परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं कि मैं ख़तना को अख़तनः के साथ।
२६ मिसर को और यहूदा को और अदूम को और अमून के सन्तानों को और मोआब को और सब को जिनका सिवाना अलग किया हुआ है जो बन में बास करते हैं दंड देउंगा क्योंकि सारे देशगण अख़तनः हैं और इसराईल के मन के अख़तने सारे घराने को।

१० दसवां पर्ब्ब ।

अन्यदेशियों को मूर्त्ति पूजा से चिताना १—५ परमेश्वर के तुल्य कोई नहीं ६—१६ उन्हें बन्धुआई का संदेश देना १७—२५।

१ जो वचन परमेश्वर ने कहा है उसे सुनो हे इसराईल के
२ घराने परमेश्वर ने तुम्हीं से यों कहा है। अन्यदेशियों की चाल पर मत चलो और स्वर्ग के चिन्हों से विस्मित मत होओ यद्यपि
३ अन्यदेशी उनसे विस्मित होवें। क्योंकि लोगों के ठहराये हुए कार्य्य वृथाही हैं इस लिये वे बन में से पेड़ काटते हैं यह उसी के
४ कार्य्यकारी का है जो चोखे हथियार से कार्य्य करता है। वे सोने चांदी से विभूषित करते हैं और कील और हथौड़ी से उन्हें
५ दृढ़ करते हैं जिसतें वे न डगमगावें। वे खजूर पेड़ की नाईं पोढ़ हैं परन्तु बोल नहीं सक्ते उन्हें सर्वथा लेजाने पड़ेगा क्योंकि वे चल नहीं सक्ते उन्हें मत डरो क्योंकि वे दुःख नहीं दे सक्ते
६ और भलाई करने में बे अशक्त हैं। हे परमेश्वर तेरे तुल्य कोई नहीं तू महान है और पराक्रम में तेरा नाम भी बड़ा
७ है। हे जातिगणों के राजा तेरे आगे आने में तुझ से कौन न

डरेगा जैसा कि जातिगणों में के सारे बुद्धिमानों में और उनके
८ सारे राज्यों में तेरे तुल्य कोई नहीं। परन्तु जब वे आगे आते
हैं तो भद्दे और मूढ़ हैं और काष्ठ लों वृथा के दपटवैये हैं।
९ पीटी ऊई चांदी तर्शीश से और सोना उफाज से पऊंचाया
जाता है सोनार के और ठठेरों के हाथों के कार्य्य नीला और
१० बैंजनी पहिरावा है सब के सब गुणी के कार्य्य से। परन्तु
परमेश्वर सत्य ईश्वर जीवता ईश्वर और सनातन का राजा
उसके कोप से पृथिवी थर्थरावेगी और जातिगण उसके
११ जलजलाहट को नहीं सहि सकेगा। उन्हें इस रीति से कहो
कि जिन देवों ने स्वर्ग और पृथिवी को नहीं बनाया पृथिवी पर
१२ से और स्वर्ग के तले से नष्ट होंगे। उसने अपनी सामर्थ्य से
पृथिवी को सिरजा है और अपनी बुद्धि से जगत को स्थिर किया
१३ और अपनी समझ से भी स्वर्गों को फैलाया है। जब वुह
अपने शब्द को बढ़ाता है तब जल का कोलाहल आकाश में
होता है और पृथिवी के सिवानों से मेघों को उठाता है और
वुह मेंह के साथ बिजुली निकालता है और अपने भंडारों से
१४ बायु निकालता है। हर एक मनुष्य मान लेने से पशु होता है
हर एक सोनार खोदने से लजा जाता है जब उन्हों ने पूजने के
लिये झूठी झूठी वस्तु खड़ी किई है और ऐसी जिनमें कुछ
१५ स्वास नहीं। वे व्यर्थ हैं उनका कार्य्य, जो बऊत चूक करते हैं
१६ अपने पलटा के समय में वे नाश होंगे। याक़ूब का भाग
उनकी नाईं नहीं है क्योंकि वुह सर्व लोक का कर्त्ता और
इसराईल उसके अधिकार का दंड है उसका नाम सेनाओं का
१७ परमेश्वर है। हे गढ़ के निवासी देश से अपनी सामग्री
१८ को बटोरो। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देखो मैं अब की
बार देश के निवासियों को ढेलवांसों से मारोंगा और मैं उन्हें
१९ यहां लों सकेत करोंगा कि वे पकड़े जायेंगे। मेरी चोट के
कारण हाय मुझ पर मेरा घाव दुखता है परन्तु मैं ने कहा है

२० कि निश्चय यह कष्ट है तथापि मैं ने उसे सहा है। मेरा तंबू
उजाड़ पड़ा है और मेरी सारी रस्सियां टूटी हैं मेरे बालक
मुझ में से निकल गये और नहीं हैं फेर मेरा तंबू खड़ा करने
२१ को अथवा मेरे ओझलों को टांगने को कोई नहीं। क्योंकि
चरवाहे पशुवत ऊए उन्हों ने परमेश्वर को नहीं ढूंढ़ा इस लिये
वे भाग्यमान न ऊए और उनकी सारी झुंड छिन्न भिन्न ऊई है।
२२ शब्द सुनो देखो यहूदा के नगरों को उजाड़ने और अजगरों
का निवास करने को उत्तर देश से एक बड़ा कोलाहल बढ़ा
२३ आता है। मैं परमेश्वर को जानता हों कि उसकी चाल
मनुष्य की सी नहीं है और वुह मनुष्य की नाईं व्यवहार
२४ नहीं करता। हे परमेश्वर मुझे ताड़ना कर परन्तु थोड़ा थोड़ा
२५ अपने क्रोध में नहीं न होवे कि मुझे चूर करडाले। अन्य देशी
पर जिन्हों ने तुझे नहीं जाना है अपना कोप उंडेल और
घरानों पर जिन्हों ने तेरे नाम की प्रार्थना नहीं किई ह
क्योंकि उन्हों ने याकूब को भक्ष करके भस्स किया है और उसके
निवास स्थान को उजाड़ा है।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

इरमियाः का ईश्वर की वाचा प्रचारनी १—१०
उन पर ईश्वर का कोप प्रगट करना ११—२३।

१ परमेश्वर का वचन यह कहते ऊए इरमियाः पास आया।
२ इस वाचा का वचन सुनो और यहूदा के मनुष्यों से और
३ यिरोशलीम के निवासियों से कह। वुह जन स्रापित है जो
४ इस वाचा के वचन को न सुनेगा। जो मैं ने तुम्हारे पितरों से
उस दिन कहा जब मैं उन्हें मिसर देश के लोहे के भट्ठे से
५ यह कहिके निकाल लाया। मेरा शब्द सुनो और मेरी सारी
आज्ञा पालन करो सो तुम मेरे लिये एक लोग होओगे और
मैं भी तुम्हारे लिये ईश्वर होओंगा जिसतें मैं अपनी उस किरिया

को जो मैं ने तुम्हारे पितरों से खाई है कि उन्हें दूध और मधु बहते हुए एक देश को देऊं जैसा आज के दिन है तब मैं ने उत्तर
६ देके कहा कि हे परमेश्वर ऐसाही होवे। परमेश्वर ने मुझे कहा कि इन सारी बातों को यहूदा के नगरों में और यिरोशलीम की सड़कों में प्रचार के कह कि इस बाचा के बचन को सुनो
७ और उन्हें पालन करो। क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे पितरों को मिसर देश से निकाल लाया उस दिन से आज लों तड़के उठते बड़े यत्न से उन्हें चिता चिता के कहा कि मेरे शब्द को
८ मानो। परन्तु उन्हों ने न माना न अपना कान झुकाया परन्तु हर एक अपने अपने दुष्ट मन के अभिलाष पर चला इस लिये मैं इस बाचा की सारी धमकियों को उन पर लाया जो मैं ने उन्हें पालने को आज्ञा किई परन्तु उन्हों ने न पाला।

९ परमेश्वर ने यह भी मुझे कहा कि यहूदा के मनुष्यों में और
१० यिरोशलीम के बासियों में मेल हुआ है। और वे अपने पितरों की बुराइयों में फिर पलट गये हैं जिन्हों ने मेरे बचन पालने को नाह किया है यह भी उपरी देवों के पीछे सेवा करने को गये हैं इसराईल के घराने और यहूदा के घराने ने मेरी बाचा को भंग किया है जो मैं ने उनके पितरों से किई थी।
११ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन पर बिपत्ति लाने पर हों जिस्से वे अपने को छुड़ा न सकेंगे और यद्यपि वे
१२ मेरी प्रार्थना करें तथापि मैं न सुनोंगा। और यहूदा के नगर और यिरोशलीम के सारे निवासी जायेंगे और उन देवों की प्रार्थना करेंगे जिनके लिये वे धूप जलाते हैं परन्तु उनकी
१३ बिपत्ति के समय में वे उन्हें न बचावेंगे। क्योंकि हे यहूदा तेरे नगर की गिनती के समान तेरे देव हुए हैं और यिरोशलीम के सड़कों की गिनती के समान एक लज्जित बस्तु के लिये बेदी स्थापन किये हैं और बआल के लिये धूप जलाने को बेदी है।
१४ इस लिये तू इस लोग के लिये प्रार्थना मत कर न उनके निमित्त

बिनती अथवा प्रार्थना कर क्योंकि उनकी बिपत्ति के समय में
१५ मैं उनकी प्रार्थना न सुनोंगा। मेरे घर में मेरी प्रिया से क्या
काम जब लों वुह दुष्टता करती है क्या तुझे मनौती और पवित्र
मांस आने पावेगा? जब लों तू द्रोह करे क्या तू आनन्द करेगी।
१६ परमेश्वर ने तेरा नाम हरा सुन्दर और अच्छे जलपाई का पेड़
रक्खा था उसने बड़े हुल्लड़ के शब्द से ऊपर चढ़ते हुए आग
बारी है अर्थात् उसकी डालियों को भस्म करने के लिये।
१७ क्योंकि जिसने तुझे रोपा इसराईल के घराने और यहूदा के
घराने की बुराई के लिये जो उन्हों ने मुझे रिस दिलाने को
बआल के लिये धूप जलाया जो उन्हों ने अपने बिरुद्ध किया
१८ सेनाओं के परमेश्वर ने तुझ पर बुराई उचारी है। परमेश्वर
ने भी मुझ पर प्रगट किया और मैं ने जाना तब तू ने उनका
१९ व्यवहार मुझे दिखाया। क्योंकि मैं पोसे हुए मेम्ने की नाईं था
जो घात के लिये पहुंचाया जाता है पर मैं ने न जाना कि
उन्हों ने मेरे बिरुद्ध यह कहिके युक्ति बान्धी थी कि फल सहित
पेड़ को लाओ नाश करें और जीवतों के देश में से उसे काट
२० डालें जिसतें उसका नाम फेर न लिया जाय। परन्तु हे
सेनाओं के परमेश्वर जो धर्म से बिचार करता है जो लंकों और
मन को जांचता है मैं तेरा बैर लेना उन पर देखों क्योंकि मैं ने
२१ अपना पद तेरे आगे धरा है। इस लिये परमेश्वर यों कहता है
कि अनासूस के मनुष्यों के बिषय में, जो यह कहि के तेरे प्राण
के गांहक हैं परमेश्वर के नाम से भविष्य मत कह जिसतें तू
२२ हमारे हाथ से मारा न जाय। इस कारण सेनाओं का परमेश्वर
यों कहता है कि देख मैं उन पर दंड बिचार करने पर हों
तरुण मनुष्य तलवार से मारे जायेंगे और उनके बेटे बेटियां
२३ अकाल से मरेंगे। और उनमें से कोई न बचेगा क्योंकि मैं अनासूस
के मनुष्यों पर बुराई और उनके पलटे का बरस लाओंगा।

इरमियाः का ईश्वर से बिनती करनी १—४ ईश्वर का उत्तर देना ५—१३ यहूदियों के बैरियों के दंड की भविष्य बाणी १४—१७।

१ हे परमेश्वर जब कभी मैं तुझे अपवाद करों तू धर्मी है तथापि बिचार के बिषय में मैं तुझे संबाद करों कि दुष्टों का मार्ग क्यों भाग्यमान होता है जो छल से व्यवहार करते हैं सो सब के सब २ चैन से हैं। तू ने उन्हें लगाया है और उन्हों ने जड़ भी पकड़ी है वे बढ़गये और फल लाये तू उनके मुंह के पास है परन्तु उनके ३ मन से दूर है। परन्तु हे परमेश्वर तू ने मुझे जाना है और जांच के तू बूझ सक्ता है कि मेरा मन तुझ पास है उन्हें घात के लिये भेड़ की नाईं निकाल और न्याय के दिन के लिये उन्हें ४ अलग कर। उसमें के बासियों की दुष्टता के मारे कबलों देश बिलाप करेगा और हर एक खेत की घास भुरा जाय पशु पंछी तो मिटगये क्योंकि उन्हों ने कहा है कि वुह हमारा ५ अंत न देखेगा। यदि पगइत के संग दौड़ने में उन्हों ने तुझे थकाया फेर तू घोड़ों के साथ क्योंकर दौड़ेगा और यद्यपि कुशल के देश पर तुझे भरोसा हो तथापि अर्दन के बाढ़ में तू ६ क्या करेगा। जब कि तेरे भाई बन्दों ने भी और तेरे पिता के घराने अर्थात् इन्हों ने भी तुझे छल का व्यवहार किया है और इन्हों ने भी ललकारते ललकारते तेरा पीछा किया है उनकी ७ प्रतीत मत कर जो वे तुझे मित्रता से बात करें। मैं ने अपने घर को त्यागा है मैं ने अपने अधिकार को छोड़ दिया है और ८ अपने प्राण के प्रिय को उनके बैरियों के हाथ में दिया है। मेरे लिये मेरा अधिकार बन में के सिंह की नाईं हुआ है उसने मेरे बिरुद्ध अपना शब्द बढ़ाया है इसलिये मैं ने उसे घिन ९ किया। मेरा अधिकार मेरे लिये मरभुखा फुट फुटिया पंछी के समान हुआ मरभुखे पंछी उसके बिरुद्ध चारों ओर से, १० आये हैं खेत के सारे पशुओ एकट्ठे होके खाने आओ। बहुतसे

चरवाहों ने मेरी दाख की बारियों को नष्ट किया उन्हों ने मेरे अधिकार को पांव तले रौंदा है और मेरा सुन्दर अधिकार
११ उजाड़ अरण्य करडाला है। उन्हों ने उसे एक उजाड़ बनाया है वुह उजाड़ होके मेरे लिये रोता है सारा देश उजाड़ हुआ
१२ है तथापि कोई उसे नहीं सोचता है। बन के सारे चौगानों पर लुटेरे आये हैं निश्चय तलवार परमेश्वर के ठहराने से भक्षण करती है देश के एक ओर से दूसरी ओर लों किसी का कुशल
१३ नहीं है। उन्हों ने गोहूं बोया है पर कांटे लवा है वे रखते थे परन्तु लाभ न पावेंगे परमेश्वर के बड़े कोप के मारे वे तुम्हारे
१४ अनाज से धोखा पावेंगे मेरे सारे बुरे परोसियों के विषय में जो अधिकार को छेड़ते हैं जो मैं ने इसराईल लोगों का अधिकार किया है परमेश्वर कहता है कि देखो मैं उन्हें उनके देश से उखाड़ डालोंगा और यहूदा के घराने को उनमें से
१५ उखाड़ोंगा। और उन्हें उखाड़ने के पीछे मैं फिर उन पर दया करोंगा और हर एक को अपने अपने अधिकार और अपने
१६ अपने देश में फेर लाओंगा। यदि वे निश्चय मेरे लोगों की चालें सीखेंगे कि मेरे नाम से किरिया खाय कि जीवते परमेश्वर सों जैसा उन्हों ने मेरे लोगों को बआल की किरिया सिखाई है
१७ तो यों होगा कि वे मेरे लोगों के मध्य में जोड़े जायेंगे। परन्तु यदि वे न मानेंगे तब परमेश्वर कहता है कि मैं उस जाति को उखाड़ोंगा उखाड़ते उखाड़ते नाश करोंगा।

१३ तेरहवां पर्व्व।

यहूदियों की बंधुआई का समाचार १—१४ पश्चात्ताप के लिये उपदेश और लोगों के पाप के लिये विलाप करना १५—२१ लोगों के मन की कठोरता २२—२७।

१ परमेश्वर ने मुझे यों कहा कि तू जाके एक सूती पटुका ले और

२ अपनी कटि पर बांध परन्तु पानी में मत डालना। सो परमेश्वर के बचन के समान मैं ने पटूका लेके अपनी कटि पर बांधा।
३ फेर परमेश्वर का बचन दूसरे बार यह कहते ऊए मेरे पास
४ पक्रंचा। कि अपनी कटि पर का बन्धा ऊआ पटूका ले और उठके फरात नदी पर जा और चटान की एक दरार में उसे
५ छिपा। सो जैसा परमेश्वर ने मुझे आज्ञा किई थी तैसाही
६ जाके मैं ने उसे फरात के लग छिपाया। फिर बक्रत दिनों के पीछे ऐसा ऊआ कि परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ फरात को जा और वुह पटूका जो मैं ने तुझे वहां छिपाने को आज्ञा किई
७ थी ले। और मैं फरात को गया और खोदा जहां मैं ने पटूका छिपाया था वहां से उसे लिया और क्या देखता हों कि वुह
८ पटूका ऐसा बिगड़ गया कि किसी काम का न रहा। तब परमेश्वर
९ का बचन यह कहते ऊए मुझ पास पक्रंचा। परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस भांति से यहूदा की और यिरोशलीम की
१० उत्तमता को अति नाश करोंगा। ये दुष्ट लोग जो मेरे बचन सुन्ने को नाह करते हैं और अपनेही मन की लालसा के समान चलते हैं और सेवा करने और दंडवत करने को उपरी देवों के पीछे गये हैं वे इस पटूके की नाईं होंगे जो किसी काम का
११ नहीं। क्योंकि जैसे पटूका मनुष्य की कटि पर लिपटा रहता है तैसा इसराईल के सारे घरानों को अपने से लिपटाया और परमेश्वर कहता है कि यहूदा के सारे घराने को अपने लिये एक लोग और एक नाम और स्तुति और बिभव बनाया पर
१२ उन्हों ने न सुना। तू उनसे यह भी बचन कह कि इसराईल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि हर एक पात्र दाख रस से भरा जायगा और वे तुझे कहेंगे कि हम क्या निश्चय यह नहीं जानते कि हर एक पात्र दाख रस से भरा जायगा।
१३ तब उन्हें कह कि परमेश्वर कहता है कि देखो मैं इस देश के सारे बासियों को और राजाओं को जो दाऊद के सिंहासन

पर बैठते हैं और याजकों और भविष्यद्वक्तों को और यिरोशलीम
१४ के सारे निवासियों को मतवालपन से मारेंगा। और परमेश्वर कहता है कि मैं उन्हें एक दूसरे पर पटकेंगा और पुत्र सहित पिता पर मैं मया न करेंगा और न छोड़ेंगा और मैं ऐसी
१५ दया न दिखाओंगा जिसतें मैं उन्हें नाश न करों। सुनो और
१६ सोचो गर्व न करो निश्चय परमेश्वर ने कहा है। अन्धियारा न होने से और उदासीन पर्व्वतों पर अपने पांव के ठोकर खाने से आगे अपने ईश्वर परमेश्वर की स्तुति करो जब तुम लोग उंजियाले की बाट जोहो तब मृत्यु की छाया के लिये अर्थात्
१७ घोर अन्धकार के लिये पलट जाय। परन्तु जबलों तुम लोग चैन में हो जो न सुनोगे तो मेरा मन अपने देह में से शोक करेगा और बज्जत रोदन करेगा और मेरी आंखों से आंसू बहि निकलेगा क्योंकि परमेश्वर की झुंड बन्धुआई
१८ में पज्ञंचाई गई। राजा और रानी से कहो कि अपने अपने को दीन करो और नीचे होओ क्योंकि वुह तुम्हारे
१९ सिर के मुकुट और बिभव को गिरादेगा। दक्खिन के नगर बंद हैं और कोई नहीं खोलता यहूदा की बंधुआई भरपूर
२० ज्ञई है सभों की बंधूआई ज्ञई है। अपनी आंखें उठाओ और उन्हें देखो जो उत्तर दिशा से आते हैं तुझे दिई गई झुंड
२१ तेरे बिभव की भेड़ें कहां हैं। जब पलटा तुझ पर आवेगा तो क्या करेगा क्योंकि तू तो उन्हें अपने ऊपर प्रधानता और प्रभुता सिखाता है और क्या पीड़ित स्त्री की नाईं
२२ पीर तुझे न पकड़ेगी। और जब तू अपने मन में कहेगा कि ये बातें मुझ पर क्यों पड़ी हैं तेरी बुराई की बज्जताई के लिये तेराही पुट्ठा उघारा गया और तेरी एड़ी भी उघारी छोड़ी गई।
२३ क्या हबशी अपने चाम को अथवा चीता अपने बिंदों को पलट सक्ता है? तब भी तुम कुकर्म्मियों को सुकर्म्म करना सिखा सको।
२४ इस लिये सुकर्म मैं उन्हें बन पवन के आगे के खूंथे की नाईं

२५ छिन्न भिन्न करोंगा। परमेश्वर कहता है कि यही तेरा भाग मेरी ओर से तेरा नपा ऊआ अंश जिसने मुझे बिसराया है
२६ और झूठ पर भरोसा किया है। इस लिये मैं ने तेरे पुट्ठों को तेरे आगे उघारा है जिसतें तेरी लाज और तेरा ब्यभिचार
२७ और तेरा हिनहिनाना देखा जाय। तू ने टीलों पर अपने छिनाले की जुगत बांधी है खेतों में मैं ने तेरी घिनितों को देखा है हे यिरोशलीम तुझ पर हाय तू पवित्र न होगी होने में कब लों न होगी।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

देश का अकाल और इरमियाः की प्रार्थना और ईश्वर का उत्तर १—१२ झूठा भविष्यदक्ता उसका कारण १३—१६ लोगों के लिये बिलाप करने की आज्ञा और इरमियाः की बिनती १७—२३।

१ परमेश्वर का बचन जो इरमियाः पास पऊंचा झुराहट के
२ मारे। यहूदा बिलाप करता है और उसके फाटक घटे जाते हैं और देश के लिये अति बिलाप है और यिरोशलीम का रोना
३ ऊपर पऊंचा। कुलीनों ने भी अपने बालकों को पानी के लिये भेजा वे कूए पर आये परन्तु पानी न पाया वे छूछे पात्र लेले फिर आये वे लज्जित होके घबराये और सिर ढांपा।
४ जैसा कि देश में बर्षा न होने के कारण भूमि धूल हो गई है
५ किसानों ने लज्जित होके अपना सिर ढांपा। हरिणी भी खेतों में ब्यिानी परन्तु घास के न होने से उसे त्याग किया।
६ बनैले गदहे चौगानों में खड़े रहे उन्हों ने अजगर की नाईं पवन को सुरुक लिया और हरयाली न होने से उनकी
७ आंखें घट गईं। यद्यपि हमारी बुराइयों ने हम पर साक्षी दिई हैं तथापि हे परमेश्वर अपनेही नाम के लिये कार्य कर क्योंकि हमारा फिर फिर धर्म त्यागना बऊत ऊआ है

८ हम ने तेरे बिरोध में पाप किया है। हे इसराईल की आशा विपत्ति में उसका निस्तारक तू देश में क्यों परदेशी के समान होता है और जैसा पथिक की नाईं जो रात भर के टिकने के लिये
९ भीतर आता है। तू उसके समान क्यों होता है जो भारी नीन्द में है उस मनुष्य के समान जो बचाने का पराक्रम नहीं रखता है परमेश्वर तू तो हमारे मध्य में है और हम तेरे नाम
१० से पुकारे जाते हैं तू हमें मत छोड़ जा। परमेश्वर ने इस लोग के विषय में यों कहा है कि वे भरमने ऐसा चाहते हैं कि उन्हों ने अपने पांव को नहीं रोका है जब परमेश्वर ने उन्हें न कुचला अब वुह उनकी बुराइयों को स्मरण करेगा और उनके पापों का
११ लेखा लेगा। इस लिये परमेश्वर ने मुझे कहा कि इस लोग के
१२ लिये हित से प्रार्थना मत कर। वे जब ब्रत करें तब मैं उनकी प्रार्थना न सुनोंगा और जब वे होम की अथवा मांस की भेंट चढ़ावें तो मैं उन्हें ग्रहण न करोंगा परन्तु तलवार से और
१३ अकाल से और मरी से उन्हें मिटाडालोंगा। तब मैं ने कहा कि हाय हे प्रभु परमेश्वर देख भविष्यद्वक्ता उन्हें कहते हैं कि तुम लोग तलवार न देखोगे और तुम्हों पर अकाल न पड़ेगा
१४ परन्तु निश्चय मैं तुम्हें इस स्थान में कुशल देओंगा। तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि भविष्यद्वक्ता मेरे नाम से झूठ भविष्य कहते हैं मैं ने उन्हें नहीं भेजा और न आज्ञा किई और न उन्हें कहा झूठा दर्शन और गणकता और वृथा और अपनेही मन की कुटिलता तुम्हों पर प्रगट करते हैं।
१५ इस लिये उन भविष्यद्वक्तों के विषय में जो मेरे नाम से भविष्य कहते हैं यद्यपि मैं ने उन्हें नहीं भेजा परन्तु वे आप से आप कहते हैं कि इस देश पर तलवार और अकाल न होगा परमेश्वर यों कहता है कि तलवार और अकाल से वे
१६ भविष्यद्वक्ता नाश होंगे। और जिन लोगों से वे भविष्य कहते हैं सो अकाल और तलवार के द्वारा से यिरोशलीम के

सड़कों में फेंके जायेंगे और उन्हें और उनकी पत्नियों को और उनके बेटे बेटियों को गाड़ने को कोई न होगा और मैं उन्हीं की दुष्टता उन पर उंडेलोंगा। १७ और तू उन्हें यह बचन कह कि मेरी आंखें रात दिन आंसू टपकाया करें और न थमें क्योंकि मेरे लोगों की कुंआरी लड़की ने बड़ा दुःख पाया है अति पीड़ित चोट पाई है। १८ यदि मैं बाहर खेतों में जाऊं तो उन्हें देखता हों कि तलवार से जूझे हैं और जब नगर में भीतर आओं तो क्या देखता हों कि अकाल से गले ऊए तथापि भविष्यद्वक्ता और याजक भी नगर में फिर फिर बनिज करते हैं और ज्ञान नहीं सीखते। १९ क्या तू ने यहूदा को सर्बथा त्यागा है? और क्या तेरा मन सैहून से घिनाया है? तू ने हमें ऐसा क्यों मारा है जिसका कुछ उपाय नहीं हम कुशल की बाट जोहते हैं और भलाई नहीं है चंगा होने के समय के लिये परन्तु भय देखता हों। २० हे परमेश्वर हम अपनी दुष्टता और अपने पितरों की बुराई मानलेते हैं क्योंकि हम लोगों ने तेरे बिरुद्ध पाप किया है। २१ तू अपने नाम के लिये हमारा अपमान मत कर और अपने बिभव के सिंहासन का निरादर मत कर हम से अपने नियम को स्मरण कर और अनर्थ न कर। २२ और अन्यदेशियों के ब्यर्थों में कोई है जो बरसा सक्ता है अथवा आकाश झाड़ी देसक्ता है हे परमेश्वर हमारे ईश्वर क्या तू वुह नहीं है और हमने तेरी ओर आंख उठाई है क्योंकि तू ही ने इन बातों को किया है।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

अपना कोप यहूदियों पर प्रगट करने का ईश्वर को ठान्ना १—९ इरमियाः का अपबाद और ईश्वर का उसे शान्ति देना १०—१४ फेर उसका अपबाद और ईश्वर का उसे शान्ति देना १५—२१।

१ तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि यद्यपि मूसा अथवा समूईल मेरे आगे खड़ा होवे तो भी इन लोगों पर कृपा करने को मेरा मन न उभड़ता मेरे आगे से उन्हें दूर कर वे चले जायें।
२ और यों होगा कि जब वे तुझे कहें कि हम किधर जायं तो उन्हें कहियो कि परमेश्वर यों कहता है कि जो मृत्यु के लिये हैं सो मृत्यु को और जो तलवार के लिये हैं सो तलवार को और जो अकाल के लिये हैं सो अकाल को और जो बंधुआई
३ के लिये हैं सो बंधुआई को। परमेश्वर कहता है कि मैं उनके विरुद्ध चार प्रकार ठहराओंगा घात करने को तलवार और घसीटने को कुत्ते और भक्षण और नाश करने को आकाश
४ के पंछियों को और बनैले पशुओं को। और यहूदा के राजा हिज़किया के बेटे मनस्सा के लिये सब जो उसने यिरोशलीम में किया था उसके लिये मैं उन्हें पृथिवी के सारे राज्यों में झंझट
५ के लिये सौंपोंगा। हे यिरोशलीम तुझ पर कौन मया करेगा और कौन तेरे साथ विलाप करेगा और कौन अलंग जाके
६ तेरी भलाई के लिये बिनती करेगा। परमेश्वर कहता है कि तू ने मुझे त्यागा है तू पीछे हटा जायगा इस लिये तुझे नाश करने
७ को मैं ने तेरे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाया है। उन पर क्षमा करने से मैं थक गया हों इस लिये मैं ने उन्हें एक हरावल से बिथराया है मैं अपने बेंडर से देश को निर्वंश किया है मैं ने अपने लोग को नाश किया है वे अपने मार्गों से नहीं फिरे।
८ उनकी विधवा समुद्र की बालू से भी अधिक मुझे बढ़ाई गई हैं उनकी माता के विरुद्ध मध्यान्ह में मैं एक चुनाऊआ नाशक लाया हों मैं ने उन पर अचानक एक बैरी और भय
९ पहुंचवाया है। जो सात जनी है सो दुर्बल हुई है और प्राण त्यागा है दिन रहते उसका सूर्य्य अस्त हुआ है वुह लजाती और घबराती है परमेश्वर कहता है कि उन्हे बैरी के मुंह के आगे मैं
१० उनके बचेहुए तलवार को सौंपोंगा। हे मेरी माता मुझ पर

संताप क्योंकि तू मुझे एक विवादी पुरुष जनी है और सारे देश में एक झगड़ालू पुरुष तथापि मैं ने ब्याज के लिये रिण नहीं
११ दिया न उन्हों ने मुझे ब्याज लिया। परमेश्वर ने कहा सभों ने मेरी निंदा किई है क्या मैं ने तेरी भलाई नहीं किई है और बुराई के समय में और बैरी के विरुद्ध दुःख के समय में तेरे पास नहीं
१२ खड़ा हुआ। क्या वुह लोहे को टुकड़ा टुकड़ा करेगा उत्तर
१३ के लोहे और पीतल को। तेरी संपत्ति और तेरे भंडार तेरे सारे सिवानों में कुछ मोल के लिये नहीं परन्तु तेरे सारे पाप
१४ के लिये ये सब लूट के निमित्त देउंगा। और मैं उन्हें तेरे शत्रुन के साथ एक देश में जिसे तू ने नहीं जाना है पहुंचाओंगा क्योंकि एक आग मेरे क्रोध में बरी है जो तुझ पर जलेगी।
१५ तू ने जाना है हे परमेश्वर मुझे स्मरण कर और मेरी भेंट को आ मेरे सताऊ से पलटा ले अपने कोप में मुझे मत गिन
१६ जानरख तेरेही कारण मैं निंदित हुआ हों। तेरे वचन पाये गये और मैं ने उन्हें धारण किया और तेरी आज्ञा मेरे मन के लिये आनंद और मगनता थी क्योंकि हे परमेश्वर सेनाओं
१७ के ईश्वर मैं तेरे नाम से पुकारा जाता था। मैं सुख बिलासियों में नहीं बैठा और तेरे कोप के कारण आनंद न किया मैं एकान्त बैठा इस कारण कि तू ने मुझे जलजलाहट से भर दिया।
१८ मेरा शोक निरन्तर क्यों हुआ है और मेरा घाव माल्चंगा होने में नाह करता है क्या तू मेरे लिये सर्वथा धोखे पानियों
१९ की नाईं होगा जिनका ठिकाना नहीं। इस लिये परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुझे फिराओं यदि तू फिरेगा तो तू मेरे आगे खड़ा होगा और यदि तू मन्द को बहुमूल्य से अलग करेगा तो तू मेरे मुंह के समान होगा और ये तेरी ओर फिरे और तू
२० उनकी ओर न फिरना। और मैं तुझे इन लोगों के सन्मुख पीतल की एक दृढ़ भीत बनाओंगा जब वे तुझ से लड़ेंगे तो तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि बचाने को

२१ और छुड़ाने को मैं तेरे साथ होंगा। और दुष्ट जन के हाथ से मैं तुझे छुड़ाओंगा और मैं तुझे भयंकरों की मूठी से निकाल लेओंगा।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

लोगों के चिन्ह के लिये इरमियाः का आज्ञा पानी १—९ लोगों के पाप उनकी बिपत्ति का कारण होना १०—१३ दया और न्याय की भविष्य बाणी १४—२१ ।

१।२ परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मुझ पास पहुंचा। तू इस स्थान में अपने लिये पत्नी मत कर और न बेटे बेटियां तेरे लिये ३ होवें। क्योंकि जो बेटे बेटियां इस स्थान में उत्पन्न होंगे उनके बिषय में और उनकी जननी माता के बिषय में और उनके पिता के बिषय में जिन से वे इस देश में उत्पन्न हुए हैं ४ परमेश्वर कहता है। कि वे मारू रोगों से मरेंगे उनके लिये बिलाप न किया जायगा न वे गाड़े जायेंगे वे भूमि पर के मल के लिये होंगे तलवार से और अकाल से नाश किये जायेंगे उनकी लोथें आकाश के पंछी और बनैले पशुओं के भक्ष्य के लिये ५ होंगे। निश्चय परमेश्वर ने यों कहा है कि बिलाप के घर में मत पैठ और बिलापी पास न जाना और उनके साथ शोक न करना क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपना कुशल और कृपा प्रेम और कोमल दया इस लोग से उठा लिया है। ६ बड़े छोटे इस देश में मरेंगे वे गाड़े न जायेंगे न बिलाप किये जायेंगे कोई उनके लिये आपको न काटेगा न कोई उनके लिये ७ आपको मुड़ावेगा। मृतकों के लिये उसे शांति देने को बिलाप में उनके निमित्त रोटी तोड़ी न जायगी और उनकी माता अथवा ८ पिता के लिये शांति का कटोरा न देगा। उनके साथ बैठके ९ खाने पीने को जेवनार के घर मत जाइयो। क्योंकि सेनाओं का

परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देखो तुम्हारी आंखों के आगे और तुम्हारे दिनों में मैं इस स्थान से आनन्द का शब्द और हर्ष का शब्द और दूल्हे का शब्द और दुल्हिन
१० का शब्द मिटाने पर हों। ऐसा होगा कि जब तू इस लोग पर ये बातें प्रगट करेगा और वे तुझे कहें कि परमेश्वर ने क्यों यह सारी बड़ी बुराई हमारे बिरुद्ध उचारी है और हमारी बुराई क्या और हमारा पाप क्या जो हम ने अपने ईश्वर
११ परमेश्वर के बिरुद्ध किया है तब तू उन्हें कहियो। कि परमेश्वर कहता है इस कारण कि तुम्हारे पितरों ने मुझे त्यागा है और उपरी देवों के पीछे गये हैं और उनकी सेवा और पूजा किई है
१२ और मुझे त्यागा है और मेरी ब्यवस्था पालन न किई। और तुम लोगों ने आप अपने पितरों से अधिक दुष्टता किई है और देखो मुझे न मान के तुम सब अपनेही दुष्ट मन की इच्छा पर
१३ चलते हो। इस लिये मैं तुम्हें इस देश से उस देश में निकाल डालोंगा जिसे न तुम ने न तुम्हारे पितरों ने जाना है और वहां तुम लोग रात दिन उपरी देवों की सेवा करोगे
१४ इस कारण कि मैं तुम्हों पर कृपा न करोंगा। इसके पीछे परमेश्वर कहता है कि देखो ऐसा समय आता है जिस में फेर कहा न जायगा कि जीवते ईश्वर सों जो इसराईल के
१५ सन्तानों को मिसर देश से निकाल लाया। परन् जीवते परमेश्वर सों जो इसराईल के सन्तानों को उत्तर देश से और सारे देसों में से जिधर जिधर उसने उन्हें खेद दिया था निकाल लाया क्योंकि मैं उन्हीं के देश में उन्हें फेर पहुंचाओंगा जो मैं
१६ ने उनके पितरों को दिया था। परमेश्वर कहता है कि देख मैं बहुतसे मछुओं को बुलवा भेजोंगा और वे उन्हें बझावेंगे उसके पीछे मैं बहुतसे अहेरियों को बुलवा भेजोंगा जो हर एक पहाड़ और पहाड़ियों से और कंदलों में से उन्हें
१७ अहेरेंगे। क्योंकि मेरी आंखें उनकी सारी चालों पर हैं वे मेरे

आगे से छिपी नहीं हैं उनकी बुराई मेरी दृष्टि से गुप्त नहीं।
१८ मैं उनकी बुराई और उनके पापों का दूना पलटा देउंगा क्योंकि उन्हों ने अपने निन्दित और घिनित व्यावहारों से मेरा देश अशुद्ध किया है और उनके घिनित कर्म्म मेरे अधिकार पर
१९ फैल गये हैं। हे परमेश्वर मेरा बल और मेरा गढ़ और बिपत्ति के दिन में मेरा शरण पृथिवी के खूंट खूंट में से जातिगण आवेंगे और कहेंगे कि निश्चय हमारे पितर झूठाई से वृथा
२० मानते थे उन में कोई नहीं है जिस्से लाभ होवे। क्या मनुष्य अपने लिये देवों को बनावेगा जब कि वे आप देव नहीं हैं।
२१ इस लिये देख मैं उन्हें अबकी बार उपदेश करताहों और उन पर अपनी भुजा और अपना बल भी दिखाओंगा और वे जानेंगे कि मेरा नाम परमेश्वर है।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब ।

यहूदियों की मूर्त्ति पूजा और बंधुआई का दंड १—४ मनुष्य के आश्रित का स्रापित होना ५—८ मन की बुराई और अधर्मी का दंड और ईश्वर के त्यागने का पाप ९—१३ इरमियाः की प्रार्थना और अपवाद और दोहाई देनी १४—१८ बिश्राम दिन का संदेश देना १९—२७।

१।२ जब लों उनके बालक हरे पेड़ों के लग और सब से ऊंचे टीलों पर अपनी वेदियों और कुंजों को स्मरण करते हैं तबलों यहूदा के पाप लोहे की लेखनी से और हीरा की नोक से उनके अन्तःकरण की पटिया पर और उनकी वेदियों के सींगों पर
३ खोदे गये हैं। हे मेरे पर्ब्बत खेत में तेरी संपत्ति और तेरे सारे भंडार और तेरे दृढ़ गढ़ तेरे सार सिवानों में तेरे पापों
४ के लिये मैं लुटा देऊंगा। तेरे बिभव को उस अधिकार से जो मैं ने तुझे दिया है बिदा करोंगा और मैं तुझे अपने वैरियों

की एक ऐसे देश में सेवा कराओंगा जिसे तूने नहीं जाना है क्योंकि मेरी रिस में एक आग बरी है जो नित जला करेगी।
५ परमेश्वर यह कहता है कि जो मनुष्य पर भरोसा रखता है और मांस को अपनी भुजा बनाता है जिसका मन परमेश्वर
६ से हट जाता है सो स्रापित मनुष्य है। क्योंकि वुह अरण्य के झुराये हुए पेड़ की नाईं होगा जो भलाई आने से अचेत है परन्तु अरण्य में ऊपर और निर्बसाव देश में नित झुलसने
७ की शंका में रहेगा। जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है और
८ जिसका विश्वास परमेश्वर है सो मनुष्य धन्य है। क्योंकि वुह उस पेड़ के तुल्य होगा जो पानी के लग लगाया जाय जो धारा के पास अपनी जड़ फैलाता है और घाम उसे नहीं सताता है परन्तु उसका पत्ता हरा है और अवृष्टि के बरस में वुह निश्चिंत है और फलफलने में चूक नहीं करता।
९ मन सारी बस्तुन से अधिक छली और असाध्य है उसे कौन
१० जानसक्ता। मैं परमेश्वर मन को जांचता हों और अन्तरों को परखता हों जिसतें हर एक जन को उसकी चाल के समान और
११ उसकी करणी के फल के तुल्य देओं। जैसा तीतरी उपरी अंडा को सेवती है तैसाही जो अधर्म्म से धन प्राप्त करता है सो अपने दिनों के मध्य में उसे छोड़ देगा और अपने अन्त में अपराधी
१२ होगा। हमारा पवित्र स्थान जो इसराईल की आशा का पात्र
१३ है एक तेजस्वी सिंहासन आरंभ से उभाड़ा गया है। हे परमेश्वर सब जो तुझे त्यागते हैं सो लज्जित होंगे और वे सब पृथिवी में फिरे हुओं में टांके जायेंगे क्योंकि उन्हों ने अमृत
१४ जलों के सोते परमेश्वर को त्यागा है। हे परमेश्वर मुझे चंगा कर और मैं चंगा होंगा मुझे बचा और मैं बचोंगा क्योंकि तू
१५ मेरा स्तुति पात्र है। देख ये मुझे कहते हैं कि परमेश्वर का
१६ बचन कहां वुह अभी आवे। परन्तु मैं ने तेरी अगुआई से बढ़ जाने को शीघ्रता न किई और मैं ने घातक दिन न चाहा

१७ हे मेरे होंठों से जो निकला है सो तेरे आगे ऊआ है। तू मेरे लिये एक भय मत होना क्योंकि बिपत्ति के दिन तू मेरा शरण
१८ है। मेरे सताऊ लज्जित होवें परन्तु मुझे लज्जित होने न दे वे बिस्मित होजायें परन्तु मुझे बिस्मित होने न दे बिपत्ति का दिन
१९ उन पर ला और दूने नाश से उन्हें नाश कर। परमेश्वर ने मुझे यों कहा कि लोगों के सन्तानों के फाटक में जिसमें से यहूदा के राजा बाहर भीतर आया जाया करते हैं और यिरोशलीम
२० के सारे फाटकों में खड़ा हो। और उनसे कह कि हे यहूदा के राजा और सारे यहूदा और यिरोशलीम के सारे बासियो जो इन फाटकों में से जाते हो परमेश्वर का बचन
२१ सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि तुम आप आप से चौकस रहो और बिश्राम के दिन में बोझा मत ढोओ और न
२२ यिरोशलीम के फाटकों में से ले जाओ। और बिश्राम दिन में अपने अपने घर से बोझ मत ले जाओ और कोई व्यवहार मत करो परन्तु जैसा मैं ने तुम्हारे पितरों को आज्ञा किई है
२३ बिश्राम दिन को पवित्र रक्खो। पर उन्हों ने न सुना न कान झुकाया परन्तु अपने गले को कठोर किया जिसतें न सुनें और
२४ उपदेश न मानें। परमेश्वर कहता है कि यदि निश्चय तुम लोग मेरी सुनोगे यहां लों कि बिश्राम दिन में इस नगर के फाटकों में से कोई बोझ न ले जाओ और बिना व्यवहार करने से
२५ बिश्राम दिन को पावन रक्खो। तो ऐसा होगा कि दाऊद के सिंहासन पर बैठते ऊए रथ और घोड़ों पर चढ़ चढ़ राजा और अध्यक्ष और उनके प्रधान और यहूदा के लोग और यिरोशलीम के बासी इसी नगर के फाटकों में से भीतर जायेंगे और यह
२६ नगर सदा स्थिर रहेगा। और यहूदा के नगरों में से और यिरोशलीम की चारों ओर से और बनियामीन के देश से और चैागान से और पर्ब्बत देश से और दक्खिन से होम की भेंट और बलि और मांस की भेंट और धूप ले ले और स्तुति

२७ को भेंट लिये ऊए परमेश्वर के मन्दिर में आवेंगे। परन्तु यदि विश्राम दिन को पवित्र रखने को और कोई बोझ ढोके यिरोशलीम के फाटकों में से जाने को मेरी न सुनोगे तब मैं उसके फाटकों में एक आग बारोंगा और वुह यिरोशलीम में के भवनों को भस्म करेगी और वुह बुताई न जायगी।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

ईश्वर का पराक्रम और कार्य्य १—१० लोगों को चिताना ११—१७ लोगों का बैर और भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना १८—२३।

१ यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन इरमियाः पास पऊंचा।
२ उठके कुम्हार के घर को उतर जा और मैं वहां अपने बचन
३ तुझे सुनाओंगा। तब मैं कुम्हार के घर को उतर गया और
४ क्या देखताहों कि वुह चाक पर कुछ बना रहा है। और जो मिट्टी का बर्त्तन वुह बना रहा था सो कुम्हार के हाथ से बिगड़ गया तब उसने फेर के अपनी इच्छा के समान एक बर्त्तन
५ बनाया। तब यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पास
६ पऊंचा। कि हे इसराईल के घराने क्या तुम्हारे विषय में मैं इस कुम्हार की रीति नहीं करसक्ता? परमेश्वर कहता है कि हे इसराईल के घराने देखो जैसा मिट्टी कुम्हार
७ के बश में है तैसा तुम लोग मेरे बश में हो। जब कभी मैं किसी जाति के अथवा राज्य के उखाड़ने के और गिरा देने के
८ और नाश करने के विषय में कहों। और जिस देश के विषय में मैं ने कहा है सो अपनी दुष्टता से फिरे तो जो बुराई मैं ने
९ उस पर करने को ठानी थी उसे पछताओंगा। और जब कभी मैं किसी देश के अथवा राज्य के बनाने और लगाने के
१० विषय में कहों। और वुह वही करे जो मेरी दृष्टि में बुराई है और मेरे शब्द को न माने तो जो भलाई मैं ने उसके

११ निमित्त करने को कहा था उसे मैं पछताओंगा। अब यहूदा के मनुष्यों को और यिरोशलीम वासियों को कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुम्हारे विरोध बुराई ठहराता हों और तुम्हारे विरुद्ध युक्ति बांधता हों सो तुम्में से हर एक जन अपनी अपनी बुराई से फिर आवे और अपनी अपनी चाल
१२ और अपना व्यावहार सुधारे। परन्तु उन्हों ने कहा कि आशा नहीं है क्योंकि हम अपनी अपनी भावना पर चलेंगे
१३ और हम अपने अपने बुरे मन की लालसा पर चलेंगे। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि अब अन्य देशियों में बझो किस ने ऐसी ऐसी बातें सुनी है कि इसराईल की कुंआरी
१४ ने बड़ा बड़ा छिनालपन किया है। क्या चटान के खेत के आगे लबनान अपने पाला को छोड़ेगा और क्या लोग बहते
१५ पानी को छोड़ छिठाई से उपरी पानी क लिये खनेगा। परन्तु मेरे लोगों ने मुझे बिसराया है और व्यर्थ के लिये धूप जलाया है और उन्हों ने पुरातन पथों से उनकी चालों में उन्हें ठोकर
१६ दिलाया जिसतें खड़बिड़ पथों पर उन्हें चलावें। वे उनके देश को बिस्मय का और नित्य फुफकारने का पात्र बनाते हैं और हर एक जो उधर से जाता है आश्चर्य मानेगा और अपना सिर
१७ धुनेगा। पुरुआ पवन की नाईं मैं उन्हें उनके बैरियों के आगे छितराओंगा उनके नाश के दिन में मैं अपनी पीठ उनको
१८ और फेरोंगा अपना मुंह नहीं। तब उन्हों ने कहा कि आओ हम इरमियाः की विरुद्धता में युक्ति बांधें क्योंकि याजक से व्यवस्था घट न जायगी और न बुद्धिमान से परामर्श और न भविष्यद्वक्ता से बचन सो आओ हम उसे जीभ पर मारें और
१९ हम उसका कोई बचन न मानें। हे परमेश्वर मेरी ओर सुरत
२० लगा और मेरे बैरियों का शब्द सुन। क्या भलाई की संती बुराई किई जायगी निश्चय उन्हों ने मेरे प्राण के लिये गड़हा खोदा है स्मरण कर मैं तेरे आगे उनकी भलाई के

लिये बिनती करने को खड़ा हुआ हों जिसतें तेरा कोप उनसे
२१ फिर जाय। इस लिये उनके लड़कों को अकाल को सौंप
और तलवार के द्वारा से उन्हें खींच ले उनकी स्त्रियां निर्बंश
और रांड़ होवे और उनके पुरुष मरी से मारे जायें और
२२ उनके तरुण संग्राम में तलवार से जुझाये जायें। जब तू
अचानक उन पर एक जथा लावेगा तो उनके घरों से रोना
पीटना सुना जाय क्योंकि उन्हों ने मुझे पकड़ने को गड़हा खोदा
है और चुपके से मेरा पांव बझाने के लिये जाल बिछाया है।
२३ परन्तु हे परमेश्वर मेरे प्राण के विरुद्ध तू उनका सारा परामर्श
जानता है तू उनकी बुराई के लिये प्रायश्चित्त ग्रहण न कर
और अपने आगे से उनके पाप को मत मिटा परन्तु तेरे
साक्षात वे उलटाये जायें अपने कोप के समय में उनका
बिरोध कर।

१९ उन्नीसवां पर्व्व ।

भविष्यद्वक्ता का यहूदियों और यिरोशलीम पर
ईश्वर के कोप का वर्णन करना १—१५।

१ परमेश्वर यह कहता है कि तू जाके कुम्हार का एक मटिहा
पात्र और लोगों में के प्राचीनों में से और याजकों के प्राचीनों
२ में से ले। और हिन्नुम के बेटे की तराई में निकल जा जो सूर्य्य
फाटक के आगे और जो बचन मैं तुझे कहोंगा सो प्रचारियो।
३ और कहियो कि हे यहूदा के राजाओ और यिरोशलीम
निवासियो परमेश्वर का बचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर
इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस स्थान पर ऐसी
बिपत्ति लाता हों कि जो कोई उसे सुनेगा उसके कान झंझना
४ उठेंगे। क्योंकि उन्हों ने हां उन्हों ने और उनके पितरों ने और
यहूदा के राजाओं ने मुझे त्यागा है और इस स्थान को छोड़
दिया और उपरी देवों के लिये धूप जलाया है जिसे उन्हों ने

नहीं जाना है और इस स्थान को निर्दोषियों के लोहू से भर
५ दिया है। और बआल के ऊंचे स्थानों को खड़ा किया है
जिसतें अपने बेटों को बआल के होम की भेंट के लिये आग में
जलावें जो मैं ने आज्ञा न किई और न कहा न मेरे लिये
६ ग्राह्य थी। इस लिये परमेश्वर कहता है कि वुह समय आता है
जब कि यह स्थान फेर तोफेत न कहावेगा अथवा हिन्नुम के
७ बेटे की तराई परन्तु जूझ की तराई। क्योंकि मैं इस स्थान में
यहूदा का और यिरोशलीम का परामर्श वृथा करोंगा और
मैं उन्हें उनके बैरीयों के आगे और जो उनके प्राण के गाहक हैं
तलवार से गिराओंगा और मैं उनकी लोथों को आकाश के
८ पंछियों के और बनैले पशुन के आहार के लिये देओंगा। और
मैं इस नगर को आश्चर्यित का और फुफकार का पात्र बनाओंगा
हर एक जो उसके पास से जाता है उसकी सारी मरियों के
९ लिये आश्चर्यित होके फुफकारेगा। और मैं उन्हें उनके बेटे
और बेटियों का मांस खिलाओंगा और घेरे जाने में और
विपत्ति में जिन से उनके बैरी और उनके प्राण के गांहक उन्हें
सकेती में डालेंगे हर एक अपने अपने संगी का मांस खायगा।
१०।११ तब उस बर्त्तन को अपने संगियों के आगे तोड़ दे। और
तू उन्हें कहियो कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं
इस लोग को और इस नगर को ऐसा तोड़ोंगा जैसा वुह
कुम्हार के पात्र को फोड़ता है और फेर समुचा नहीं होसक्ता
और लोग तोफेत में गाड़ेंगे जब लों गाड़ने का स्थान न रहे।
१२ परमेश्वर कहता है कि मैं इस स्थान को और उसमें के बासियों
को ऐसा करोंगा अर्थात् इस नगर को तोफेत की नाईं बनाओंगा।
१३ और यिरोशलीम के घर और यहूदा के राजाओं के घर तोफेत
की नाईं उन सारे घरों सहित जिन की छतों पर उन्हों ने स्वर्ग
की सारी सेनाओं के लिये और उपरी देवों के लिये अर्प्पण किया
१४ और धूप जलाया अशुद्ध होंगे। तब इरमियाः तोफेत से आया

जिधर परमेश्वर ने उसे भविष्य कहने को भेजा था और परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में खड़े होके सारे लोगों से कहा।
१५ कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर पर और इस में के सारे नगरों पर सारी बुराई, जो मैं ने उसके विरुद्ध उचारी है लाताहों इस कारण कि उन्हों ने अपने गले को कठोर किया है जिसतें मेरे बचन को न सुनें।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

इरमियाः का थपराया जाना और काठ में पड़ना और भविष्यबाणी १—६ उसका अति बिलाप और ईश्वर से आनन्द होना ७—१३ अपने जन्म को स्रापना १४—१८ ।

१ जब इम्मर याजक के बेटे पाशूर ने इरमियाः की भविष्य बातें
२ सुनी क्योंकि वुह भी ईश्वर के मन्दिर का प्रधान था। तो पाशूर ने इरमियाः भविष्यदक्ता को मारा और उसे दंडगृह में डाल दिया जो बनियामीन के ऊपर के फाटक में परमेश्वर के मन्दिर
३ के लग था। और दूसरे दिन यों हुआ कि जब पाशूर ने इरमियाः को दंडगृह से छोड़ दिया तब इरमियाः ने उसे कहा कि परमेश्वर ने तेरा नाम पाशूर नहीं रक्खा परन्तु
४ मगोरमिस्सबिब। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देख मैं तुझी को अपने लिये और तेरे सारे मित्रों के लिये भयानक बनाताहों और वे अपने बैरियों की तलवार से गिरेंगे और तेरी आंखें भी देखा करेंगी और सारे यहूदा को मैं बाबुल के राजा के हाथ में सौंपोंगा और वुह उन्हें बंधुआई में बाबुल को ले जायगा और वहां उन्हें तलवार से घात करेगा।
५ और मैं इस नगर के सारे पराक्रम को और उसके सारे परिश्रम को और उनमें के सारे बहुमूल्य को और यहूदा के

राजा के सारे भंडारों को उनके बैरियों के हाथ में सौंपोंगा और वे उन्हें लूटेंगे और उन्हें पकड़ के बाबुल को ले जायेंगे।
६ और तू हे पाश्हूर और सब जो तेरे घर में निवास करते हैं बंधुआई में जायेंगे और तू बाबुल में जाके वहां मरेगा और गाड़ा जायगा तू और तेरे सारे मित्र जिन्हें तू ने झूठा भविष्य
७ कहा है। हे परमेश्वर तू ने मुझे फुसलाया है और मैं फुसलाया गया और तू ने मुझे उभाड़ा है और प्रबल ऊआ है मैं प्रति दिन सवांग बना हों और मैं अत्यंत ठट्ठे में उड़ाया
८ गया हों। क्योंकि जब जब मैं कहताहों चाहे अधर्म के बिरोध में पुकारों अथवा बिनाश प्रचारों परमेश्वर का बचन मेरे बिरोध
९ में नित निन्दा और ठट्ठे में पलटा जाता है। परन्तु जब मैं कहताहों कि अब मैं उसके विषय में न कहोंगा और फेर उसके नाम से न कहोंगा तब वुह मेरी हड्डियों में बन्द होके बरती आग की नाईं मेरे अन्तःकरण में होता है और यद्यपि मैं थम
१० थम के थक जाओं मैं रोक नहीं सक्ता। निश्चय यह कहते ऊए मैं ने बक्तों का बड़बड़ाना सुना है चारो ओर भय का सन्देश देओ और हम सन्देश देंगे, मेरे सारे हित मेरे ठोकर खाने की बाट जोह रहे हैं और कहते हैं कि क्या जाने वुह अलग खींचा जाय जिसतें हम प्रबल होवें और उसे अपना बैर
११ लेवें। परन्तु परमेश्वर भयंकर पराक्रमी मेरी ओर है इस लिये मेरे सताऊ ठोकर खायेंगे और प्रबल न होंगे वे सनातन की लाज से जो भुलाई न जायगी अति लज्जित हैं
१२ इस कारण कि उनसे कुछ बन न पड़ा। और हे सेनाओं के परमेश्वर जो धर्म्मियों को परखता है अन्तःकरण को और अन्तरों को देखता है मैं तेरा दंड उन पर देखोंगा क्योंकि मैं ने
१३ अपनी बिपत्ति तेरे आगे खोली है। परमेश्वर का गान करो परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि उसने कुकर्म्मियों के हाथ से
१४ कंगालों के प्राण को छुड़ाया है। मेरे जन्म दिन पर धिक्कार

होवे जिस दिन में मेरी माता मुझे जनी उस पर आशीष न
१५ होवे। उस जन पर धिक्कार जो यह कहते ऊए मेरे पिता
पास यह सन्देश लाके उसे अत्यंत आनन्दित किया कि तेरे
१६ पुत्र उत्पन्न ऊआ। वुह जन उन नगरों की नाईं होवे जिन्हें
परमेश्वर ने उलट दिया और न पछताया अर्थात् विहान को
१७ रोना पीटना सुना और मध्याङ्क को शंका जिसने मुझे कोख
में से घात न किया जिसतें मेरी माता अर्थात् मेरी जननी की
१८ कोख सदा के लिये मेरी समाधि होती। शोक और दुःख
भोगने को कोख से क्यों मैं बाहर निकला कि मेरे दिन लाज
में बीत जायें।

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

राजा का प्रश्न और भविष्यद्वक्ता का उत्तर १—१०
राजा को उपदेश करना और नगर के नष्ट होने
की भविष्य बाणी ११—१४।

१ जब राजा सिदकिया ने मलकीआ का बेटा पाशूर को और
मासिया याजक के बेटे सफनिया से इरमियाः से कहिला
२ भेजा। कि परमेश्वर के आगे हमारे लिये बिनती कर क्योंकि
बाबुल का राजा नबूक़दनज़ार हमसे संग्राम करता है सो क्या
जाने परमेश्वर अपने सारे आश्चर्य्य कार्य्य के समान हमसे
३ व्यवहार करे और वुह हम्में से जाता रहे। तब परमेश्वर
का बचन इरमियाः पास पऊंचा और उसने उन्हें कहा कि
४ सिदकिया से यों कहो। इसराईल का ईश्वर परमेश्वर यों
कहता है कि देख मैं तुम्हारे संग्राम के हथियारों को, जिनसे
तुम बाबुल के राजा से और कलदियों से, जो भीत के बाहर से
तुम्हें घेरे हैं फेर देउंगा और मैं उन्हें इस नगर के मध्य में एकट्ठा
५ करोंगा। और मैं आप फैलाये ऊए हाथ से और पराक्रमी
भुजा से और रिस से और जलजलाहट और बड़े कोप के

६ साथ तुम्हों से लड़ोंगा। और मैं इस नगर के निवासियों को क्या मनुष्य क्या पशु को मारोंगा और वे एक बड़ी मरी से मरेंगे।
७ परमेश्वर कहता है कि इस के पीछे मैं यहूदा के राजा सिदकिया को और उसके सेवकों को और लोगों को अर्थात जो इस नगर में छूटे हैं मरी से, और तलवार से, और अकाल से, बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के हाथ में और उनके वैरियों के हाथ में और उनके प्राण के गाहकों के हाथ में सौंपोंगा और वुह उन्हें तलवार की धार से मारेगा वुह उन पर मया न करेगा
८ वुह न छोड़ेगा और वुह उन पर दया न करेगा। और इस लोग से कहियो कि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं तुम्हारे
९ आगे जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग धरताहों। जो इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेगा परन्तु जो बाहर जायगा और अपने को कलदानियों को सौंपेगा जो तुम्हें चारो ओर घेरे हैं वही जीयेगा और
१० अपने प्राण को लूट में पावेगा। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने बुराई के लिये अपना मुंह इस नगर के विरुद्ध किया है और मित्रता के लिये नहीं यह बाबुल के राजा के हाथ में
११ सौंपा जायगा और वुह उसे आग से जलावेगा। यहूदा के
१२ राजा के घराने के विषय में परमेश्वर का वचन सुनो। हे दाऊद के घराने परमेश्वर यों कहता है कि सत्य खोज खोज के न्याय कर अंधेरियों के हाथों से लूटे हुए को छुड़ा नहो कि मेरा कोप आग के समान फूट निकले और बरे और तुम्हारी बुराई के
१३ कारण उसका बुतवैया कोई न होवे। हे चटान के समथर किये हुए के बासियो तुम लोग जो कहते हो कि कौन हम पर दरार करेगा अथवा हमारे निवासों में कौन पैठेगा परमेश्वर कहता है
१४ कि देखो मैं तुम्हारे विरुद्ध हों। परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारी वृत्ति के फल के समान तुम्हें दंड देओंगा और उसके अरण्य में एक आग बारोंगा और वुह उसकी चारो ओर भस्म करेगी।

भविष्यद्वक्ता का राज भवन में सन्देश पहुंचाना १—६ उसका लोगों को चिताना १०—२३ राज घराने की दुर्गति २४—३० ।

१ परमेश्वर यों कहता है कि तू यहूदा के राजा के घर को उतर
२ जा और वहां यह वचन कह । कि हे यहूदा के राजा जो दाऊद के सिंहासन पर बैठता है तू और तेरे सेवक और तेरे लोग जो इन फाटकों में से प्रवेश करते हैं परमेश्वर का वचन
३ सुनें । परमेश्वर यों कहता है कि न्याय और विचार करो और अंधेरियों के हाथ से सताये हुए को छुड़ाओ और परदेशी और अनाथों और रांड़ों से छल न करो और अंधेर से न
४ सताओ और न इस स्थान में निर्दोष लोहू बहाओ । क्योंकि जो निश्चय तुम लोग इस वचन के समान करोगे तो दाऊद की सन्ती उसके सिंहासन पर के बैठवैया राजा रथ पर और घोड़ों पर चढ़े हुए वुह और उसके सेवक और उसके लोग
५ इस घर के फाटकों में से भीतर जायेंगे । परन्तु यदि तुम लोग इन बातों को न मानोगे परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनीही
६ किरिया खाई कि निश्चय यह घर उजाड़ होजायगा । क्योंकि यहूदा के राजा के घराने के विषय में परमेश्वर यों कहा है कि मेरे लिये तू गिलियाद हे लबनान की चोटी निश्चय मैं तुझे
७ एक उजाड़ और अबसाव नगर बनाओंगा । और मैं तेरे बिरोध में नाशकों को भेजोंगा हर एक जन को अपना अपना हथियार लिये हुए और वे चुन चुन के तेरे आरज पेड़ों को
८ काटेंगे और आग में डालेंगे । और बहुत जातिगण इस नगर के पास से जायेंगे और वे आपुस में कहेंगे कि परमेश्वर
९ ने इस बड़े नगर पर यों क्यों किया है । तब वे उत्तर देके कहेंगे कि उन्हों ने अपने ईश्वर परमेश्वर की बाचा को त्यागा है और
१० उपरी देवों की पूजा और सेवा किई । मृतक के लिये बिलाप और शोक मत करो परन्तु उसके लिये बहुत रोओ जो चला

गया है क्योंकि वुह फिर न आवेगा और अपनी जन्म भूमि न
११ देखेगा। क्योंकि यहूदा के राजा युसैया के बेटे शालूम के विषय
में जो अपने पिता युसैया की संती राज्य पर बैठा जो इस
स्थान से निकल गया उसके विषय में परमेश्वर यों कहता है कि
१२ वुह इधर फेर न आवेगा। परन्तु जहां वे उसे बंधुआई में ले
१३ गये हैं तहां वुह मरेगा और इस देश को फेर न देखेगा। जो
जन अधर्म्म से अपना घर उठाता है और अंधेर से अपनी
उपरौटी कोठरियां बनाता है और सेंत से अपने परोसी से काम
१४ कराता है और उसे बनी नहीं देता। जो कहता है कि मैं अपने
लिये बड़ा घर और ऊंची ऊंची कोठरियां बनाऊंगा जो अपने
लिये खिड़कियां भी काटता है और आरज की लकड़ी से छत
१५ ढांपता है और सिन्दूर से रंगता है उस पर सन्ताप। क्या तू
आरज से आप को घेर के राज्य करेगा क्या तेरे पिता ने खा
पी के ठीक और न्याय नहीं किया तब वुह भाग्यमान हुआ।
१६ उसने दुःखी और दरिद्रों के पद का पक्ष किया तब मुझे जान्ना
१७ परमेश्वर कहता है भाग्यमानी न था। परन्तु तेरी आंख और
तेरा मन केवल कुइच्छा पर है और निर्दोष लोहू बहाने पर
१८ और अन्धेर पर और निचोर ब्यवहार पर। इसी लिये परमेश्वर
यहूदा के राजा युसैया का बेटा यहूयाकीम के विषय में कहता
है कि वे उसके लिये यह बिलाप न करेंगे कि हाय मेरे भाई
और हाय बहिन वे उसके लिये यों बिलाप न करेंगे कि हाय
१९ प्रभु अथवा हाय उसका विभव। वुह गदहे के गड़ाव से गाड़ा
जायगा और यिरोशलीम के फाटकों के बाहर फेंका जायगा।
२० लबनान पर जाके चिल्ला और बाशान पर अपना शब्द उठा
और सिवानों से पुकार निश्चय तेरे सारे कृपाल टूट गये
२१ हैं। तेरे कुशल के समयों में मैं ने तुझे कहा पर तू ने कहा
मैं न सुनेंगा तरुणाई से यही तेरी रीति थी क्योंकि तू ने मेरे
२२ शब्द को नहीं माना है। एक झोंका तेरे सारे रखवालों को

बहा ले जायगा और तेरे मित्र बंधुआई में जायेंगे तब तू निश्चय लज्जित हो जायगा और अपनी सारी दुष्टता के कारण
२३ घबरा जायगा। हे लबनान के निवासी जो आरज पर अपना बसेरा बनाता है जब तुझ पर पीड़ित स्त्री की नाईं पीड़ा
२४ पड़ेगी तब तू कैसा दीन होगा। परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों यद्यपि यहूदा के राजा यहूयाकीम का बेटा कोनिया मेरे दहिने हाथ की अंगूठी होता तथापि मैं वहां से तुझे
२५ उखाड़ता। और मैं तुझे तेरे प्राण के गाहकों को सौंप देउंगा और जिन से तू डरता है उनके हाथ में तुझे सौंप देओंगा अर्थात् बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के हाथ में और
२६ कलदियों के हाथ में। मैं तुझे और तेरी जननी को परदेश में निकाल फेंकोंगा जहां तुम उत्पन्न नहीं हुए और तहां मरोगे।
२७ परन्तु जिस देश में उन्हों ने फिरने को मन लगाया है उसमें
२८ फिर न आवेंगे। क्या यह जन कोनिया टूटी हुई मूर्त्ति है अथवा एक पात्र जिसे कोई परसन्न नहीं वुह और उसका वंश किस लिये बाहर निकाले गये और जिस देश से वे अज्ञान थे
२९ उसमें फेंके गये। हे धरती हे धरती हे धरती परमेश्वर का
३० बचन सुन। परमेश्वर यों कहता है कि इस जन को निर्बंश लिख रक्खो यह जन अपने दिनों में भाग्यमान न होगा क्योंकि उसका कोई बंश दाऊद के सिंहासन पर बैठते हुए और यहूदा पर फेर राज्य करते हुए भाग्यमान न होगा।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

उनके विपत्ति की और फिर आने की और मसीह के धर्म्म की भविष्यवाणी १—८ याजक और मिथ्या आचार्य्य की दुष्टता से ९—१५ लोगों का चिताया जाना १६—३२ निंदकों को दपटना ३३—४०।

१ परमेश्वर कहता है कि नाशक गड़रियों पर सन्ताप जो मेरी

२ चराई के भेड़ों को छिन्न भिन्न करते हैं। इस लिये इसराईल का ईश्वर परमेश्वर उन गड़रियों के विषय में कहता है जो मेरे लोग को चराते हैं तुम्हों ने मेरी झुंड को छिन्न भिन्न किया और उन्हें खेद दिया है और उनकी रखवाली न किई सो परमेश्वर कहता है कि देखो मैं तुम्हारे बुरे कार्य्यों के लिये तुम्हें प्रतिफल
३ देताहों। परन्तु मैं अपनी झुंड के उबरे ऊओं को सारे देशों से जहां जहां मैं उन्हें खदेड़ा है बटोरोंगा और उन्हीं की झुंड में
४ उन्हें फेर लाओंगा और वे फलवंत होके बढ़ेंगे। और मैं उनके लिये गड़रियों को ठहराओंगा जो उन्हें चरावेंगे परमेश्वर कहता है कि वे फेर न डरेंगे और न विस्मित होंगे और उन
५ पर विपत्ति न पड़ेंगी। परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के लिये एक धर्म्मी शाखा को उदय करोंगा और एक राजा राज्य करेगा और बुद्धि से कार्य्य
६ करेगा और देश में धर्म्म न्याय करेगा। उसके दिनों मे यहूदा बचाया जायगा और इसराईल कुशल से रहेगा और इसी
७ नाम से पुकारा जायगा कि परमेश्वर हमारा धर्म्म। इसके पीछे परमेश्वर कहता है कि वे दिन आवेंगे जब कि वे फिर न कहेंगे कि परमेश्वर के जीवन सों जो इसराईल के सन्तान को
८ मिसर देश से निकाल लाया। परंतु परमेश्वर के जीवन सों जिसने इसराईल के घराने के बंश को उत्तर देश से और सारे देशों से जहां जहां मैं ने उन्हें खेदा था निकाल लाया जिसतें
९ वे अपनीही भूमि में बास करें। भविष्यद्वक्तों के बिषय में मेरा अन्तःकरण मुझ में चूर हो रहा है मेरी सारी हड्डियां हिलती हैं और परमेश्वर के धर्म वचन के लिये मैं मतवाला जन की नाईं ऊआहों और उस जन की नाईं जिसे मद्य ने बश में किया।
१० निश्चय देश ब्यभिचार से भरा है निश्चय इन बातों के कारण देश बिलाप करता है और अरण्य की चराई झुरा गई और उनकी
११ इच्छा भी दुष्टता थी और उनकी सामर्थ्य ठीक नहीं। परमेश्वर

कहता है कि हां भविष्यदक्ता और याजक ने हठ किया है हां
१२ मैं ने उनकी दुष्टता को अपने मन्दिर में पाया है। इस लिये
उनका मार्ग बिछलान स्थानों की नाईं होगा अंधियारे में वे
ढकेले जायेंगे और उसमें गिरेंगे निश्चय परमेश्वर कहता है कि
मैं उन पर बुराई लाओंगा अर्थात् उनके दंड पाने का बरस।
१३ जैसा मैं ने सामरा के भविष्यदक्तों में घिनित कार्य्य देखा उन्हों
ने बआल के नाम से भविष्य कहि के मेरे इसराईल लोगों को
१४ भुलाया है। तैसा यिरोशलीम के भविष्यदक्तों में मैं ने एक भयानक
बस्तु देखी है अर्थात् व्यभिचार कर्म्म और झूठी चाल वे दुष्टों के
हाथों को भी दृढ़ करेंगे जिसतें कोई अपनी दुष्टता से न फिरे
वे सब के सब मेरे लिये सदूम की नाईं और उसके निवासी
१५ अमूरा की नाईं ऊए हैं। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर
भविष्यदक्तों के विषय में यों कहता है कि देखो मैं उन्हें नागदौना
खिलाओंगा और पित्त का जल पिलाओंगा क्योंकि यिरोशलीम
१६ के भविष्यदक्तों से हठ सारे देश में फैला है। सेनाओं का
परमेश्वर यों कहता है कि भविष्यदक्तों के बचन मत सुनो जो
वृथा भावना तुम्में डालते हैं वे अपनेही मन के दर्शन उच्चारते
१७ हैं परमेश्वर के मुंह के समान नहीं कहते। वे परमेश्वर के
बचन के निन्दकों से कहते हैं कि तुम पर कुशल होगा और
जबलों हर एक जन अपने अपने मन की लालसा के समान
चलता है उन्हों ने कहा है कि तुम पर कधी बुराई न होगी।
१८ क्योंकि परमेश्वर के मंत्र में कौन खड़ा ऊआ है और किस ने
उस बात को देखा सुना है अथवा किस ने सुरत लगा के उसके
१९ बचन को सुना है। परमेश्वर के बौंडर को देखो वुह तेज से
निकलता है अर्थात् एक स्थिर बौंडर दुष्टों के सिर पर ठहरेगा।
२० परमेश्वर का रिस न फिरेगा जब लों वुह कार्य्य न करे और जब
लों वुह अपने मन के ठहराये ऊए को पूरा न करे पिछले दिनों
२१ में तुम लोग अच्छी रीति से बूझोगे। मैं ने इन भविष्यदक्तों

को नहीं भेजा परन्तु वे आप से आप दौड़ गये मैं ने उनसे नहीं
२१ कहा पर उन्हों ने आप से आप भविष्य कहा। परन्तु जो वे
मेरे मंत्र में होते तो वे मेरे लोगों को मेरे बचन सुनाते और
उन्हें उनके बुरे मार्ग से और दुष्टता के कार्य्य से फिराते।
२३ परमेश्वर कहता है कि क्या मैं समीप का ईश्वर हों और दूर
२४ का ईश्वर नहीं। परमेश्वर कहता है कि क्या कोई अपने को
ऐसे गुप्त स्थानों में छिपासक्ता है जो मैं उसे न देखों परमेश्वर
कहता है कि क्या मैं स्वर्ग और पृथिवी में परिपूर्ण नहीं हों।
२५ मैं ने सुना है जो भविष्यद्वक्तों ने कहा है जो यह कहिके मेरे
नाम से झूठा भविष्य कहता है कि मैं ने स्वप्न देखा है मैं ने
२६ स्वप्न देखा है। मन में कबलों आग रहेगी भविष्यद्वक्ता झुठाई
का भविष्यद्वक्ता है और अपने मन के छल के भविष्यद्वक्ता।
२७ जैसा उनके पितरों ने बआल के कारण मेरे नाम को बिसराया
है तैसा वे मेरे लोगों को अपने स्वप्नों से मेरे नाम को भुलवाने
की चिंता करते हैं जिन्हें हर एक अपने अपने परोसी के आगे
२८ बर्णन करता है। जिस भविष्यद्वक्ता के पास स्वप्न है सो स्वप्न कहे
परन्तु जिस पास मेरा बचन है सो मेरे बचन को सचाई से
२९ कहे परमेश्वर कहता है कि भूसी को नव से क्या काम। परमेश्वर
कहता है कि मेरे बचन का पराक्रम क्या आग के समान नहीं?
और हथौड़ो की नाईं नहीं जिस्से चटान टुकड़े टुकड़े किये जाते
३० हैं। परमेश्वर कहता है कि इस लिये देखो मैं भविष्यद्वक्तों के
बिरुद्ध हों हर एक जो अपने अपने परोसी से मेरा बचन
३१ चुराता है। देखो मैं भविष्यद्वक्तों के बिरुद्ध हों जो अपनी ही
३२ जीभ से कहते हैं कि उसने कहा है। परमेश्वर कहता है कि
देखो मैं झूठे स्वप्न के भविष्यद्वक्तों के बिरुद्ध हों जिन्हों ने उन्हें
बर्णन भी किया और अपने बेजड़ के झूठों से मेरे लोगों को
छल दिया परन्तु मैं ने उन्हें नहीं भेजा और नहीं ठहराया
परमेश्वर कहता है कि उन्हीं लोगों के लिये कुछ लाभ न

३३ होगा। और जब ये लोग अथवा भविष्यद्वक्ता अथवा याजक यह कहिके तुझे पूछें कि परमेश्वर का बोझ क्या है? तब उन्हें कहियो कि तुम लोग उसके बोझ हो परमेश्वर कहता है कि
३४ मैं तुझे निकाल देओंगा। और भविष्यद्वक्ता और याजक और लोग जो कहेंगे कि परमेश्वर का बोझ मैं उसी जन को
३५ और उसके घराने को दंड देउंगा। हर एक मनुष्य अपने अपने परोसी से और अपने अपने भाई से यों कहेगा कि परमेश्वर ने क्या उत्तर दिया है? और परमेश्वर ने क्या
३६ कहा है। परन्तु परमेश्वर का बोझ तुम लोग फेर न कहोगे क्योंकि हर एक जन का बोझ उसी का वचन होगा क्योंकि जीवते ईश्वर के और सेनाओं के परमेश्वर के और हमारे
३७ ईश्वर के वचन को तुम्हों ने बिगाड़ा है। तुम भविष्यद्वक्ता से यों कहियो कि परमेश्वर ने तुम्हें क्या उत्तर दिया है? और परमेश्वर
३८ ने क्या कहा है। परन्तु जो तुम लोग कहोगे कि परमेश्वर का बोझ तो इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग जो यह वचन कहते हो कि परमेश्वर का बोझ यद्यपि मैं ने यह कहिके तुम पास भेजा कि तुम परमेश्वर का बोझ मत कहो।
३९ इस लिये देख मैं तुम्हें सर्व्वथा उठा लेउंगा और मैं तुम्हें उस नगर सहित, जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया था
४० अपने आगे से त्याग करोंगा। और मैं तुम पर सनातन की निन्दा और नित का अपमान लाओंगा जो भुलाया न जायगा।

२४ चौबीसवां पर्व्व ।

भविष्यद्वक्ता का दर्शन पाना और उसका अर्थ ।

१ बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के यहूदा के राजा यहूयाकीम के बेटे यकूनिया को और यहूदा के अध्यक्षों को और कार्य्यकारियों को और अस्त्रकारकों को यिरोशलीम से बाबुल को बन्धुआई में लेजानेके पीछे परमेश्वर ने मुझे दिखाया तो क्या देखताहों

व्यवस्था के समान दो टोकरी गूलर परमेश्वर के मन्दिर के
२ आगे चढ़ाये गये। एक टोकरी में अच्छे से अच्छे गूलर जैसा
आरंभ के गूलर की नाईं होता है और दूसरी टोकरी गूलर
३ बुरे से बुरे जो बुराई के मारे खाये न जासके। तब परमेश्वर
ने मुझे कहा कि हे इरमियाः तू क्या देखता है? मैं ने कहा कि
गूलर अच्छे गूलर बज्जतही अच्छे और बुरे बज्जतही बुरे जो
४ बुराई के मारे खाये नहीं जासक्ते। तब परमेश्वर का बचन
५ यह कहते ज्जए मुझ पास पज्जंचा। कि परमेश्वर इसराईल का
ईश्वर यों कहता है कि मैं इन अच्छे गूलरों की नाईं यहूदा
की बन्धुआई में कृपा के साथ बेवरा करोंगा जिन्हें मैं ने इस
६ स्थान से कलदियों के देश में भेजा है। और मैं कृपा के साथ
उन्हें देखा करोंगा और उन्हें इस देश में फेर लाओंगा और
उन्हें जोड़ाई करोंगा और ढा न देउंगा और उन्हें लगाओंगा पर
७ न उखाड़ोंगा। और अपने को पहिचान्ने का मन उन्हें देउंगा
कि मैं परमेश्वर हों जब वे अपने सारे मनसे मेरी ओर
लवटेंगे तब वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका ईश्वर होंगा।
८ परन्तु बुरे गूलर जो बुराई के मारे खाये नहीं जासक्ते निश्चय
परमेश्वर यों कहता है कि मैं यहूदा के राजा सिदकिया को
और उसके अध्यक्षों को और यिरोशलीम के उबरे ज्जओं को,
जो इस देश में छूटे हैं और जो मिसर के देश में बसते हैं
९ ऐसाही करोंगा। और उन्हें निन्दा और कहावत और ठट्ठा
१० और स्राप के लिये सर्ब स्थान में, जहां जहां मैं उन्हें खेदोंगा
उन्हें क्लेश के लिये पृथिवी के सारे राज्यों में सौंपोंगा। मैं उन
में तलवार और अकाल और मरी यहां लों भेजोंगा कि वे उस
देश में से जो मैं ने उन्हें और उनके पितरों को दिया है
मिट जायें।

इरमियाः के द्वारा से यहूदियों का उपदेश पाना और उनकी निन्दा १—७ बन्धुआई की भविष्य बाणी ८—१४ और राज्यों के नाश होने की भविष्य बाणी १५—३८।

१ यहूदा के राजा यूसिया के बेटे यहूयाकीम के चौथे बरस जो बाबुल के राजा नबूकदनज़ार का पहिला बरस था यहूदा के सारे लोगों के विषय में जो बचन इरमियाः पास २ आया। जिसे इरमियाः भविष्यद्वक्ता ने यह कहिके यहूदा के सारे लोगों को और यिरोश्लीम के सारे बासियों को कहा।
३ यहूदा के राजा अमून के बेटे यूसिया के तेरहवें बरस से आज लों अर्थात् तेईस बरस लों परमेश्वर का बचन मुझ पास आया और मैं ने तुम्हें कहा तड़के उठ उठ के कहा पर तुम लोगों ४ ने न माना। और परमेश्वर ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता सेवकों को कहिके तुम्हारे पास भेजा तड़के उठ उठ के भेजा परन्तु ५ तुम्हों ने न माना और कान न झुकाया। यह कहते ऊए कि हर एक अपने अपने बुरे मार्ग से और दुष्टता के कार्य्य से फिरे और उस देश में बसो जिसे परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे ६ पितरों को सदा के लिये दिया है। और उपरी देवों के पीछे उनकी सेवा और पूजा करने को मत जाना और अपने हाथों के कार्य्य से मुझे रिस मत दिलाओ और मैं तुम्हें दुःख न ७ देउंगा। परन्तु परमेश्वर कहता है कि तुम लोगों ने मेरा बचन नहीं माना और तुम लोगों ने अपनेही दुःख के लिये ८ अपने हाथ के कार्य्यों से मुझे जान बूझके रिस दिलाया। इस ९ लिये सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है। कि तुम लोगों ने जो मेरा बचन नहीं माना देखो परमेश्वर यों कहता है कि मैं उत्तर के सारे घराने को और अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनज़ार को भेजता हों और देश के बिरुद्ध और उसके निवासियों के बिरुद्ध और चारो ओर के सारे देशगणों के बिरुद्ध लाओंगा

और उन्हें सर्वथा नाश करोंगा और उन्हें एक आश्चर्यित और
१० फुफकार और नित का उजाड़ बनाओंगा। और मैं उनमें
से आनन्द का शब्द और आल्हाद का शब्द और दूल्हा और
दूल्हिन का शब्द और जांते का शब्द और दीपक की ज्योति
११ मिटाओंगा। और यह सारा देश एक उजाड़ और
आश्चर्यित होगा और ये जातिगण सत्तर बरस लों बाबुल के
१२ राजा की सेवा करेंगे। परमेश्वर कहता है कि यों होगा जब
सत्तर बरस पूरे होंगे तब मैं बाबुल के राजा और उसके
देशियों को उनके पापों के कारण और कलदियों के देश को
१३ दंड देओंगा और उसे सनातन का उजाड़ करोंगा। और
अपने सारे बचन को जो मैं ने उसके विषय में कहा है सब जो
इस पुस्तक में लिखा है जो इरमियाः ने जातिगणों के विषय में
१४ भविष्य कहा है मैं उस देश पर लाओंगा। क्योंकि उनसे अर्थात्
इन्हों से बहुत से जातिगण और बड़े बड़े राजा सेवा लेंगे और
उनकी क्रिया के समान और उनके हाथ के कार्य्य के समान मैं
१५ उन्हें पलटा देओंगा। निश्चय इसराईल के ईश्वर परमेश्वर ने
मुझे यों कहा कि मेरे हाथ से इस कोप की मदिरा के
कटोरे को ले और सारे जातिगणों को, जिन पास मैं तुझे
१६ भेजोंगा, पीने को दे। वे पीयें और डगमावें और तलवार
१७ के कारण, जो मैं उन पर भेजने पर हों, उन्मत्त होवें। तब
मैं उस कटोरे को परमेश्वर के हाथ से लेके उन सारे देश
१८ गणों को जिन पास परमेश्वर ने मुझे भेजा था। अर्थात्
यिरोशलीम को और यहूदा के नगरों को और उसके राजाओं
को और उसके अध्यक्षों को, उजाड़ करने और आश्चर्यित और
फुफकार और स्राप बनाने को पीने को दिया जैसा आज के दिन है।
१९ और मिसर के राजा फरऊन को और उसके दासों को और
अध्यक्षों को और उसके सारे लोगों को और सारे मिले जुले
२० लोगों को। और ऊज़ के देश के सारे राजाओं को और

फलस्तानियों के देश के सारे राजाओं को और अश्कलून को और गज़ा को और अकरून को और अशदुद के उबरे ऊओं
२१ को। और अदूम को और मवाब को और अमून के सन्तानों को।
२२ और सूर के सारे राजाओं को और सीदून के सारे राजाओं
२३ को और समुद्रतीर के टापू के सारे राजाओं को। और दिदान को और तमा को और बूज़ को और सभों को जो दूर के सिवानों
२४ में रहते हैं। और अरब के सारे राजाओं को और जंगल के
२५ मिलेजुले निवासी लोगों के सारे राजाओं को। और जिमरी के सारे राजाओं को और ईलाम के सारे राजाओं को और
२६ माज़ी के सारे राजाओं को। और उत्तर के सारे राजाओं को जो नेरे हैं और दूर हैं एक दूसरे के साथ और पृथिवी के सारे राज्यों को जो भूमि पर हैं और शीशाख का राजा उनके पीछे
२७ पीयेगा। और तू उन्हें कहना कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि तलवार के आगे जो मैं तुम्हों पर भेजता हों उसे पीयो और मतवाले होओ और छांट करो
२८ और ऐसा गिरो कि फेर न उठो। और यों होगा कि जो वे पीने को तेरे हाथ से कटोरा लेने को नाह करें तो तू उन्हें कहियो कि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम निश्चय पीयोगे।
२९ क्योंकि देखो मैं उस नगर पर जो मेरे नाम से कहा जाता है बुराई लाने को आरंभ करता हों और क्या तुम सर्वथा अदंडित रहोगे तुम अदंडित न रहोगे क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं पृथिवी के सारे निवासियों के बिरुद्ध तलवार
३० को लाता हों। इन सारी बातों को भी तू उनसे भविष्य कह और उन्हें बोल कि परमेश्वर ऊपर से गर्जेगा और अपने पवित्र निवास से अपने शब्द को उच्चारेगा वुह अपने चैन स्थान के बिरुद्ध गर्जेगा वुह दाख पेरकों की नाईं पृथिवी के सारे
३१ निवासियों के बिरुद्ध ललकारेगा। पृथिवी के अंत लों हौरा पऊंच गया है क्योंकि परमेश्वर का झगड़ा देश गणों से है

वुह सारे दुष्टों के वंशों का बिचार करेगा परमेश्वर कहता है
३२ कि उन्हें तलवार को सौंपेगा। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर
यों कहता है कि देखो जाति से जाति पर बुराई निकलती है
३३ और पृथिवी के अंतों से एक बड़ा बौंडर उठेगा। उस दिन
परमेश्वर के जुझाये ऊए पृथिवी के एक खूंट से पृथिवी के दूसरे
खूंट लों होगा और उनके लिये बिलाप न किया जायगा
वे एकट्ठे न किये जायेंगे न गाड़े जायेंगे क्योंकि वे भूमि पर
३४ घूर की नाईं होंगे। हे गड़रियो बिलाप करके रोओ हे
झुंड के प्रधानो राख में लोटो क्योंकि तुम्हारे जूझने के और
छिन्न भिन्न होने के दिन पूरे ऊए और तुम बऊमूल्य पात्र के
३५ समान गिरोगे। और भागने के उपाय गड़रियों से और
३६ बचने के झुंड के प्रधानों से कट जायेंगे। गड़रियों के चिल्लाने
का और झुंड के प्रधान के बिलाप करने का शब्द इस कारण
३७ कि परमेश्वर ने उनकी चराई को उजाड़ा है। और परमेश्वर
३८ के भयंकर कोप के मारे कुशल के निवास उजड़ गये। सिंह के
समान उसने अपना लुकान छोड़ा है निश्चय उसके महा कोप
के मारे और उपद्रवी ज्वलन के मारे उनका देश एक उजाड़
ऊआ है।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

इरमियाः का मन्दिर में से संदेश पऊंचाना १—९ और अपना उत्तर देना और निर्दोष ठहरना १०—१९ यूरीजा भविष्यद्वक्ता का समाचार २०—२४।

१ यहूदा के राजा यूसिया के बेटे यहूयाकीम के राज्य के आरंभ
२ में यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन पऊंचा। परमेश्वर यह
कहता है कि परमेश्वर के मंदिर के आंगन में खड़ा हो और
यहूदा के सारे नगरों से जो परमेश्वर के मंदिर में सेवा करने को

आते हैं सारी बातें जो मैं ने तुझे कहने को आज्ञा किई है
३ उन्हें कह बात भर मत घटा। क्या जाने वे सुनें और हर
एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे जिसतें मैं उस बुराई से
पछताओं जो मैं उनके कुकर्म्म के लिये उन पर करने को
४।५ ठहराता हों। उन्हें तू यह भी कह कि परमेश्वर यह कहता है
कि जो तुम लोग मेरे सेवक भविष्यद्वक्तों के बचन सुन्ने को, जिन्हें
मैं तुम्हारे पास भेजता हों तड़के उठ उठ के भेजता हों
जैसा कि तुमने नहीं माना है मेरी व्यवस्था पर जो मैं तुम्हारे
६ आगे धरता हों चलने को न सुनोगे। तो मैं इस घर को शीलू
की नाईं बनाओंगा और पृथिवी के सारे जातिगणों में मैं इस
७ नगर को स्रापित करोंगा। और याजक और भविष्यद्वक्ता
और सारे लोगों ने इरमियाः को ईश्वर के मन्दिर में यह
८ बचन कहते सुना। और यों ऊआ कि जब इरमियाः सब
बातें कहि चुका जो परमेश्वर ने उसे सारे लोगों से कहने को
आज्ञा किई थी तब याजकों ने और भविष्यद्वक्तों ने और सारे
९ लोगों ने उसे पकड़ के कहा कि तू निश्चय मारा जायगा। तू ने
यह कहि के परमेश्वर के नाम से क्यों भविष्य कहा है कि यह
मन्दिर शीलू की नाईं होगा और यह नगर बिना निवासी उजाड़
किया जायगा और सारे लोग परमेश्वर के मन्दिर में इरमियाः
१० के बिरुद्ध बटुर गये। जब यहूदा के अध्यक्षों ने ये बातें सुनीं
तब वे राजा के घर से परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गये और
११ परमेश्वर के मन्दिर के नये फाटक की पैठ में बैठ गये। तब
याजकों और भविष्यद्वक्तों ने राजपुत्रों से और सारे लोगों से
कहा कि यह जन मारे जाने के योग्य है इस कारण कि उसने
इस नगर के विषय में भविष्य कहा है जैसा तुम्हों ने अपने अपने
१२ कानों से सुना है। तब इरमियाः सारे राजपुत्रों और सारे
लोगों से कहिके बोला कि जो सारी बातें तुम लोगों ने सुनी
हैं सो परमेश्वर ने इस मन्दिर के और इस नगर के

१३ विषय में मुझे भविष्य कहने को भेजा है। परन्तु अब अपना अपना मार्ग और चाल सुधारो और अपने ईश्वर परमेश्वर का शब्द मानो और परमेश्वर उसे जो तुम्हारे विरुद्ध में
१४ कहा है पछतावेगा। और मैं जो हों देखो मैं तुम्हारे बश में हों जो तुम्हारी दृष्टि में ठीक और भला होवे सो मुझे करो।
१५ केवल निश्चय जान रक्खो जो तुम लोग मुझे घात करोगे तो निर्दोष लोहू को अपने ऊपर और इस नगर पर और उसके बासियों पर लाओगे क्योंकि परमेश्वर ने निश्चय मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हारे कानों में ये सारी बातें कहों।
१६ तब राजपुत्रों ने और सारे लोगों ने याजकों से और भविष्यद्वक्तों से कहा कि यह जन मारे जाने के योग्य नहीं क्योंकि
१७ इसने हमारे ईश्वर परमेश्वर के नाम से हमें कहा है। तब देश के कितने प्राचीनों ने भी उठके लोगों की सारी सभा से
१८ कहा। मोरासीथी मीकाह ने यहूदा के राजा हिज़किया के दिनों में भविष्य कहा और यहूदा के सारे लोगों से यह कहा कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सैहून खेत की नाईं जोता जायगा और यिरोशलीम ढेर ढेर होगा और इस
१९ नगर का पर्ब्बत, बन के ऊंचे ऊंचे स्थानों की नाईं होगा। क्या यहूदा के राजा हिज़किया ने और सारे यहूदा ने उसे घात किया? उसने क्या परमेश्वर को डर के उसकी कृपा न चाही? यहां लों कि परमेश्वर उस बुराई से पछताया जो उसने उनके विरुद्ध उचारी थी परन्तु हम लोग अपने पर बड़ी बुराई
२० करते हैं। परन्तु इरमियाः के सारे बचन के समान कर्य्यास यारीम के एक जन शिमाया के बेटे उरिया ने भी परमेश्वर के नाम से भविष्य कहा था और उसने इस नगर के विरुद्ध और
२१ इस देश के बिरुद्ध भविष्य कहा। और जब यहूयाकीम राजा और उसके सारे महत जन और सारे राजपुत्रों ने उसकी बातें सुनीं तब राजा ने उसे घात करने चाहा परन्तु उरिया

२२ सुन के डर गया और मिसर को भागा। परन्तु यहूयाकीम राजा ने मिसर में बरियों को अर्थात् अकबर के बेटे इलनासान
२३ को और उसके साथ कितने जनों को भेजा। और वे मिसर से उरिया को निकाल लाये और उसे यहूयाकीम राजा पास पहुंचाया जिसने उसे तलवार से घात किया और उसकी लोथ
२४ को लोगों के सन्तान को समाधिस्थान में फेंक दिया। परन्तु जिसतें वुह घात के लिये लोगों के हाथ में सौंपा न जाय शाफान के बेटे अहीकाम का हाथ इरमियाः पर था।

२७ सताईसवां पर्ब्ब ।

इरमियाः का अपने गले में जुआ पहिन्ने की और उन्हें राजाओं पास भेजने की आज्ञा पानी १—११ सिदक़िया को वही मंत्र देना और चौकस करना १२—२२।

१ यहूदा के राजा यूशिया के बेटे सिदकिया के राज्य के आरंभ
२ में परमेश्वर का बचन इरमियाः पास पहुंचा। परमेश्वर ने मुझे यों कहा कि तू अपने लिये बंधन और जूआ बना और
३ उन्हें अपने गले पर धर। और उन्हें अदूम के राजा पास और मवाब के राजा पास और अमून के सन्तान के राजा और सूर के राजा पास और सैदून के राजा पास मंत्रियों के द्वारा से जो यहूदा के राजा सिदकिया पास यिरोशलीम में
४ आये हैं भेज। और उनके स्वामियों के पास यह सन्देश भेज कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि
५ तुम लोग अपने अपने प्रभु को यह कहो। कि मैं ने पृथिवी को और मनुष्यों को और पशुन को जो पृथिवी पर हैं अपने बड़े पराक्रम से और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से सिरजा है और
६ जिसे चाहों उसे देउंगा। और अब मैं ने इन सारे देशों को अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के हाथ में दिया

है और उसकी सेवा के लिये मैं ने खेत के पशुन को भी उसके
७ बश में किया है। और जब लों उसके देश का समय अर्थात्
उसीका न आवे अब बहुत से जातिगण और बड़े बड़े राजा
उस्से सेवा लेंगे तबलों सारे जातिगण उसकी और उसके
८ बेटों की और उसके पोतों की सेवा करेंगे। और ऐसा होगा
कि जो देशी और राज्य बाबुल के राजा नबूकदनज़ार की सेवा न
करेंगे और अपना गला बाबुल के राजा के जूआ तले न रक्खेंगे
परमेश्वर कहता है कि जबलों मैं उसके हाथ से उन्हें नाश न
करों तबलों तलवार से और अकाल से और मरी से उसी
९ देश को दंड देओंगा। इस लिये अपने भविष्यद्वक्तों की और
अपने दैवज्ञों की और अपने स्वप्न ब्यवहारियों की और अपने
गणकों की और मोहकों की न सुनो जो तुम्हें कहते हैं कि बाबुल
१० के राजा की सेवा मत करो। क्योंकि वे तुम्हारे आगे मिथ्या
भविष्य कहते हैं जिसतें तुम्हें तुम्हारे देश से दूर करें और मैं तुम्हें
११ बाहर खेद देऊं और तुम नष्ट हो जाओ। परन्तु जो देशी
अपना गला बाबुल के राजा के जूए तले धरेंगे और उसकी सेवा
करेंगे परमेश्वर कहता है कि मैं उन्हें उन्हीं के देश में कुशल से
रहने देओंगा और वे उसमें जोतें बोवेंगे और उसमें बसेंगे।
१२ और इन सारी बातों के समान मैं ने यहूदा के राजा
सिदकिया से कहा कि अपने अपने गलों को बाबुल के राजा के
जूए तले लाओ और उसकी और उसके लोगों की सेवा करो
१३ और जीते रहो। परमेश्वर के बचन के समान जो उसने उस
देशी के बिषय में कहा है जो बाबुल के राजा की सेवा न करेंगे
क्यों तुम लोग अथवा तू और तेरे लोग तलवार से और
१४ अकाल से और मरी से मारे जायेंगे। और भविष्यद्वक्ता की
बातों को जो तुम से कहते हैं कि तुम बाबुल के राजा की सेवा
न करोगे, मत मानियो क्योंकि वे तुम से मिथ्या भविष्य कहते
१५ हैं। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा है परन्तु

वे मेरे नाम से मिथ्या भविष्य कहते हैं जिसतें मैं तुम्हें खेद देओं और तुम लोग और भविष्यदक्ता जो तुम्हें भविष्य कहते
१६ हैं नष्ट हो जाओ। मैं ने यह बचन याजकों से और सारे लोगों से भी कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग अपने भविष्यदक्तों की बातें मत मानियो जो कहते हैं कि देखो परमेश्वर के मन्दिर के पात्र थोड़े दिन के पीछे बाबुल से फेर
१७ लाये जायेंगे क्योंकि वे तुम से झूठा भविष्य कहते हैं। उनकी बात मत सुनो बाबुल के राजा की सेवा करो और जीओ
१८ यह नगर किस लिये उजाड़ होजाय?। परन्तु यदि वे भविष्यदक्ता होवें और परमेश्वर का बचन उन पास होवे तो वे सेनाओं के परमेश्वर से बिनती करें कि जो पात्र परमेश्वर के मन्दिर में और यहूदा के राजा के घर में और यिरोशलीम में
१९।२० छूटा है बाबुल को जाने न पावे। जब कि बाबुल का राजा नबूकदनज़ार यहूदा के राजा यहूयाकीम के बेटे यकूनियः को और यहूदा और यिरोशलीम के सारे कुलीनों को यिरोशलीम से बाबुल को ले गया उन खंभों के और समुद्र के और आधारों के और नगर के पात्रों के विषय में जिन्हें वुह नहीं लेगया परमेश्वर
२१ यों कहता है। निश्चय उन पात्रों के विषय में, जो परमेश्वर के मन्दिर में और यहूदा के राजा के घर में और यिरोशलीम में बच रहे हैं इसराईल का ईश्वर सेनाओं का परमेश्वर यों कहता
२२ है। कि वे बाबुल में पहुंचाये जायेंगे और जबलों मैं उन से भेंट न करों तबलों वे वहां रहेंगे परमेश्वर कहता है उसके पीछे मैं उन्हें इस स्थान में फेर लाओंगा।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब ।

बाबुल से पात्रों के फिर आने का सन्देश और इरमियाः का बही चाहना १—९ जूये का तोड़ना और इरमियाः का लोहे का बनाने की आज्ञा पानी

१०—१४ हनानियः के मरने की भविष्य वाणी १५—१७ ।

१ यहूदा के राजा सिदकियाः के राज्य के आरंभ के चौथे बरस के पांचवें मास में गबियूनी आज़ूर के बेटे हनानियः भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के मन्दिर में याजकों के और सारे लोगों के आगे मुझे २ कहा। सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता ३ है कि मैं ने बाबुल के राजा का जूआ तोड़ डाला है। परमेश्वर के मन्दिर के सारे पात्र जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनज़ार इस स्थान से बाबुल को ले गया मैं उन्हें दो बरस के भीतर ४ भीतर इस स्थान में फेर लाओंगा। और परमेश्वर कहता है कि मैं यहूदा के राजा यहूयाकीम के बेटे यकूनियः को और यहूदा के सारे बंधुओं को, जो बाबुल में पऊंचाये गये मैं इस स्थान में फेर लाओंगा क्योंकि बाबुल के राजा के जूए को ५ तोड़ोंगा। तब इरमियाः भविष्यद्वक्ता ने याजकों के और सारे लोगों के आगे, जो परमेश्वर के मन्दिर में खड़े थे ६ हनानियः भविष्यद्वक्ता से कहा। इरमियाः भविष्यद्वक्ता ने कहा, आमीन परमेश्वर ऐसाही करे तू ने जो परमेश्वर के मन्दिर के पात्रों को और सारे बंधुओं को बाबुल से इस स्थान में फेर लाने के बिषय में, भविष्य कहा है परमेश्वर तेरे वचन को ७ पूरा करे। तिसपरभी वचन सुन जो मैं तेरे सुन्ने में औरसार ८ लोगों के सुन्ने में कहता हों। भविष्यद्वक्तों ने भी, जो मुझ से और तुझ से आगे प्राचीन समय में थे बऊत से जातिगणों के और बड़े बड़े राज्यों के विषय में संग्राम और विपत्ति और मरी का ९ संदेश दिया था। जो भविष्यद्वक्ता कुशल का भविष्य कहेगा उस भविष्यद्वक्ता के वचन के पूरे होने से जाना जायगा कि निश्चय १० परमेश्वर ने उसे भेजा है। तब हनानियः भविष्यद्वक्ता ने इरमियाः भविष्यद्वक्ता के गले पर से जूआ उतार के तोड़ डाला। ११ और हनानियः ने सारे लोगों के आगे यह कहा कि परमेश्वर

योंं कहता है कि दो बरस के भीतर भीतर मैं इसी रीति से बाबुल के राजा नबूकदनज़ार का जूआ सारे देशगणों के गले से
१२ तोड़ोंगा उसके पीछे इरमियाः भविष्यद्वक्ता चला गया। जब कि हनानियः भविष्यद्वक्ता ने इरमियाः भविष्यद्वक्ता के गले पर से जूआ तोड़ा था तब यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन इरमियाः
१३ पास पऊंचा। कि जा और हनानियः से कह परमेश्वर यों कहता है कि तू ने तो लकड़ी के जूओं को तोड़ा है परन्तु उसकी संती
१४ तू लोहे के जूए बना। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने इन सारे देशगणों के गले पर लोहे का जूआ रक्खा है जिसतें वे बाबुल के राजा नबूकदनज़ार की सेवा करें और वे उसकी सेवा करेंगे और मैं ने भूमि के
१५ पशुन को भी उसे दिया है। और इरमियाः भविष्यद्वक्ता ने हनानियः भविष्यद्वक्ता से भी कहा कि हे हनानियः सुन परमेश्वर ने तुझे नहीं भेजा है परन्तु तू इन
१६ लोगों को झूठ की प्रतीति कराई है। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझे भूमि पर से फेंकता हूं तू इसी बरस
१७ मरजायगा क्योंकि तू ने परमेश्वर के विरुद्ध कहा है। और उसी बरस के सातवें मास में हनानियः भविष्यद्वक्ता मर गया।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

इरमियाः के बंधुओं पास शांति बचन लिखना १—९ सत्तर बरस पीछे उनके छूटने का भविष्य बचन १०—१४ यिरोशलीमियों के नाश होने का और दो मिथ्या आचार्य्य की मृत्यु का सन्देश देना २०—२३ शिमाया का बाबुल से पत्री लिखनी और उसके मरने का सन्देश इरमियाः का देना २४—३२।

१।२।३ अब यकूनियाः राजा और रानी और नपुंसक और यहूदा

और यिरोशलीम के राजपुत्रों के और कार्य्यकारियों और अस्त्रकारकों के यिरोशलीम से जाने के पीछे शाफ़ान के बेटे इलासा के और हिलकिया के बेटे गमरिया के हाथों से, जिन्हें यहूदा के राजा सिदकियाः ने बाबुल के राजा नबूकदनज़ार पास भेजा था जिस पत्री को इरमियाः भविष्यद्वक्ता ने यह कहिके यिरोशलीम से बंधुआई से उबरे हुए प्राचीनों के और याजकों के और भविष्यद्वक्तों के और सारे लोगों के पास भेजो, जिन्हें नबूकदनज़ार यिरोशलीम से बाबुल को लेगया था उसका
४ बचन यह है। इसराईल का ईश्वर सेनाओं का परमेश्वर सारी बंधुआई से यों कहता है, जिन्हें मैं ने यिरोशलीम से
५ बाबुल को बंधुआई में पहुंचाया। घर बना बना बसो और
६ बारी लगा लगा उनके फल खाओ। और बियाह करो और बेटे बेटियां जन्माओ और अपने बेटों के लिये पत्नियां लेओ और अपनी बेटियों का बियाह करो जिसतें वे बेटा बेटी जनें
७ और वहां बढ़ो और मत घटो। और जिस नगर में मैं ने तुम्हें बंधुआई में पहुंचवाया उसका कुशल चाहो क्योंकि उसके कुशल
८ में तुम्हारा कुशल है। क्योंकि इसराईल का ईश्वर सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे भविष्यद्वक्ता जो तुम्हारे मध्य में हैं और तुम्हारे दैवज्ञ तुम्हें छल न देने पावें और अपने स्वप्न व्यवहारियों को मत मानो जिन्हें तुम स्वप्न दिखवाते हो।
९ क्योंकि वे मेरे नाम से तुम से मिथ्या भविष्य कहते हैं परमेश्वर
१० यों कहता है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा है। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि निश्चय बाबुल में सत्तर बरस पूरे होने के पीछे मैं तुमसे भेंट करोंगा और तुम्हें इस स्थान में फेर लाने को
११ तुम पर अपनी अच्छी प्रतिज्ञा पूरी करोंगा। क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में अपने मन की बांछा जानता हों अर्थात् कुशल की परन्तु दुःख की बांछा नहीं जिसतें तुम्हारी पिछली दशा को आशा
१२ की बनाओं। तब तुम लोग मुझे पुकारोगे और मेरी प्रार्थना

१३ करोगे और मैं तुम्हारी सुनोंगा। तुम मुझे ढूंढोगे और
१४ जब अपने सारे मन से ढूंढ़ोगे तो पाओगे। और परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हों से पाया जाउंगा और तुम्हारी बंधुआई को पलट देउंगा और तुम्हें सारे जातिगणों में से और सारे स्थानों में से, जहां जहां मैं ने तुम्हें खदेड़ा है परमेश्वर कहता है मैं तुम्हें बटोरोंगा और तुम्हें इस स्थान में, जहां से मैं ने
१५ तुम्हें बंधुआई में पऊंचवाया फेर लाओंगा। तुम लोगों ने जो कहा है कि परमेश्वर ने हमारे लिये बाबुल में भविष्यद्वक्तों को
१६ खड़ा किया है। इस लिये राजा के बिषय में, जो दाऊद के सिंहासन पर बैठा है और इस नगर के सारे निवासियों के बिषय में परमेश्वर ने कहा है कि तुम्हारे भाई बंद जो तुम्हारे
१७ साथ बंधुआई में गये थे। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है, देख मैं उन पर तलवार और अकाल और मरी भेजने पर हों और उन्हें तुच्छ गूलर की नाईं बनाओंगा जो बुराई के मारे
१८।१९ खाया नहीं जा सक्ता। परमेश्वर कहता है, मेरे बचन को न सुन्ने के कारण से जब मैं ने अपने दास भविष्यद्वक्ता सेवकों को तड़के उठते उनके पास भेजा और भेजते ऊए तुम्हों ने उनकी न मानी परमेश्वर कहता है कि मैं उन्हें तलवार से और अकाल से और मरी से सताओंगा और मैं उन्हें एथिवी के सारे राज्यों में स्राप के लिये और आश्चर्य्यित के लिये और फुफकार के लिये और निन्दा के लिये सारे जातिगणों में, जहां
२० जहां मैं ने उन्हें खेदा है झंझट के लिये सौंपोंगा। इस लिये हे बंधुआई के सारे लोगो जिन्हें मैं ने यिरोशलीम से
२१ बाबुल में भेजा है। परमेश्वर का बचन सुनो कोलयाः के बेटे अहाब के बिषय में और मआसियाः के बेटे सिदकियाः के बिषय में, जो मेरे नाम से तुम्हें मिथ्या भविष्य कहता है सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है, देखो मैं उन्हें
२२ बाबुल के राजा नबूखदनज़ार के हाथ में सौंपोंगा। और वुह

उन्हें तुम्हारी आंखों के आगे मार डालेगा और उनसे, जो बाबुल में यहूदा के सारे बंधुओं में हैं यह स्राप लिया जायगा कि परमेश्वर तुझे सिदकियाः और अहाब की नाईं बनावे
२३ जिन्हें बाबुल के राजा ने आग में भूना था। क्योंकि उन्हों ने इसराईल में पाप व्यवहार किया है और अपने परोसियों की पत्नियों से व्यभिचार किया है और मेरे नाम से मिथ्या कहा है जो मैं ने उन्हें आज्ञा न किई परमेश्वर कहता है कि मैं
२४ जानता हों और साक्षी हों। नहीलामी शिमायाः से भी यह
२५ कहा कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर कहता है इस कारण कि तू ने अपने नाम से यिरोशलीम के सारे लोगों के पास और मआसियाः याजक के बेटे सिफनियाः को और
२६ सारे याजकों के पास यह कहिके पत्री भेजी है। कि यहायदा याजक की संती परमेश्वर ने तुझे याजक किया है जिसतें परमेश्वर के मन्दिर में प्रधान होवे और हर एक बौड़हे को और जो अपने को भविष्यद्वक्ता बनाता है तू उसे शासन के
२७ स्थान और बंदी गृह में डाले। अब किस लिये, तू ने अनातूसी इरमियाः को नहीं दपटा जो अपने को तुम्हारे आगे
२८ भविष्यद्वक्ता दिखाता है। क्योंकि उसने यह कहिके हमारे पास बाबुल में कहला भेजा है कि बज़त दिन हैं घर बना बना के
२९ बसो और बारी लगा के उनके फल खाओ। और सिफनियाः याजक ने इस पत्री को इरमियाः भविष्यद्वक्ता के आगे पढ़ा।
३० तब परमेश्वर का यह बचन इरमियाः पास पज़ंचा कि सारे
३१ बंधुआई में कहला भेज। नहीलामी शिमायाः के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि शिमायाः ने जो तुम्हें भविष्य कहा है जब कि मैं ने उसे नहीं भेजा परंतु उसने तुम्हें झूठ पर भरोसा
३२ करवाया है। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं नहीलामी शिमायाः को और उसके बंश को दंड देओंगा और उसके परिवार का एक भी उसके लोगों में न रहने

पावेगा और जो भलाई मैं अपने लोगों पर करोंगा परमेश्वर कहता है वुह उसे न देखेगा इस कारण कि उसने परमेश्वर के बिरुद्ध कहा है ।

३० तीसवां पर्ब्ब ।

यहूदियों का बंधुआई से फिर आने की और मन्दिर के बने की भविष्य वाणी १—१८ उनका भाग्यमान और दुष्टों का नष्ट होना १९—२४ ।

१ यह कहते हुए परमेश्वर का बचन इरमियाः पास पहुंचा ।
२ परमेश्वर इसराईल के ईश्वर ने यों कहा है कि सारे बचन जो
३ मैं ने तुझे कहा है पुस्तक में लिख । क्योंकि परमेश्वर कहता है कि वुह समय आता है जब कि मैं अपने इसराईल और यहूदा लोगों की बंधुआई को पलटोंगा और परमेश्वर कहता है कि मैं उन्हें उस देश में फेर लाओंगा जो उनके पितरों को दिया
४ था और वे उसके अधिकारी होंगे । यह वुह बचन है जो परमेश्वर ने इसराईल और यहूदा के विषय में कहा है ।
५ निश्चय परमेश्वर यों कहता है कि हम ने थरथराहट का शब्द
६ सुना है भय है और कुशल नहीं । अब पूछो और देखो यदि पुरुष जन सक्ता है मैं ने हर एक पुरुष को पीड़ित स्त्री की नाईं अपनी अपनी कटि पर हाथ धरे हुए क्यों देखा है सब
७ का मुंह पीला हो रहा है । हाय, क्योंकि वुह दिन बड़ा है यहां लों कि उसके तुल्य नहीं है वुह याक़ूब की बिपत्ति का
८ समय होगा परन्तु वुह उसे बच जायगा । क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि उस दिन ऐसा होगा कि मैं उसका जूआ उसके गले पर से तोड़ देउंगा और उसके बंधनों को झटका देउंगा और परदेशी उस्से फेर सेवा न करावेंगे ।
९ परन्तु वे अपने ईश्वर परमेश्वर की और अपने राजा दाऊद की
१० सेवा करेंगे जिसे मैं उनके लिये उठाओंगा । इस लिये परमेश्वर

कहता है, हे मेरे दास याकूब, मत डर, और हे इसराईल विस्मित मत हो क्योंकि देख दूर से मैं तुझे कुशल से पहुंचाओंगा और तेरे वंशों को उनकी बंधुआई के देश से, और याकूब फेर चैन करेगा और निर्भय से भी रहेगा और उसे कोई न
११ डरावेगा। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि बचाने को मैं तेरे साथ होंगा और जब मैं सारे देशगणों को, जहां जहां मैं ने तुझे बिथराया है मिटाओंगा तब मैं तुझे सर्वथा न मिटाओंगा परन्तु तुझे परिमाण से ताड़ना करोंगा और तुझे निर्धार न
१२ उजाड़ोंगा। निश्चय परमेश्वर यों कहता है कि तेरी चोट
१३ असाध्य है और तेरा घाव दुःखदायक। तुझे चंगा करने को कोई हाथ नहीं बढ़ाता, अच्छा करने का औषध तुझ पर कोई
१४ नहीं लगाता। तेरे सारे मित्र तुझे भूल गये वे तेरी खोज नहीं करते तेरे पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के कारण निश्चय मैं ने एक बड़ी ताड़ना से बैरी की मार
१५ से तुझे मारा है। अपनी चोट के मारे क्यों चिल्लाता है तेरे पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के कारण मैं
१६ इन बातों को तुझ पर लाया और तेरा कष्ट असाध्य है। सब जो तुझे भक्षते हैं पीछे आप भक्षे जायेंगे और तेरे सारे बैरी बंधुआई में जायेंगे और जो तुझे लूटते हैं सो आप लूट बनेंगे और जो तुझे नष्ट करते हैं उन्हें मैं नष्ट को सौंपोंगा।
१७ क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं तुझे फेर चंगा करोंगा और तेरा घाव अच्छा करोंगा यद्यपि उन्हों ने तेरा नाम अजाती
१८ सीहून रक्खा है जिसकी सुधि कोई नहीं लेता। परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं याकूब के तंबूओं की बंधुआई को पलटोंगा और उसके निवास स्थानों पर दया करोंगा और नगर अपनी ढेर पर बनाया जायगा और राज भवन अपने ठिकाने पर
१९ स्थिर होगा। और उनमें से धन्यबाद और आनन्दित लोगों का शब्द निकलेगा और मैं उन्हें बढ़ाओंगा और वे घटाये न

२० जायेंगे मैं उन्हें प्रतिष्ठा देउंगा और वे तुच्छ न होंगे। उसके बालक आगे की नाईं होंगे और उसकी मंडली मेरे आगे स्थिर होगी और मैं उनके अंधेरकों से लेखा लेउंगा।
२१ उसका राजपुत्र उसी के कुल में का होगा और उसका अध्यक्ष उसके मध्य में से निकलेगा और मैं उसे खींचोंगा जिसतें वुह मेरे पास आवे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि कौन है जिसने मेरे पास आने को अपना मन सिद्ध किया है।
२२।२३ और तुम मेरे लोग होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर। देख परमेश्वर का बौंडर प्रचंड होके निकलता है अर्थात् स्थिर बौंडर
२४ जो दुष्टों के सिर पर ठहरेगा। जब लों परमेश्वर कार्य्य न करे और अपने मन का ठाना हुआ पूरा न करे तब लों उसका महा कोप न फिरेगा और पिछले दिनों में तुम लोग देखोगे।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब ।

इसराईल के कुल पर परमेश्वर का प्रेम और आशीष की बाचा १—१४ बालकों के लिये राहील का बिलाप १५—१७ अफ़राईम का पछताना और दया पानी १८—२० यहूदा और इसराईल के आशीषका और मसीह के जन्म की भविष्य बाणी २१—२८ अपने अपने पाप का लेखा देना और नई बाचा का संदेश देना २९—३४ इसराईल पर ईश्वर की कृपा और यिरोशलीम का फिर बनाये जाने का संदेश देना ३६—४०।

१ परमेश्वर कहता है कि उस समय में मैं इसराईल के सारे
२ परिवार का ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे। परमेश्वर कहता है कि तलवार से उबरे हुए लोगों ने अर्थात् इसराईल
३ ने बन में कृपा पाई जब कि मैं उसे चैन देने गया। दूर से

परमेश्वर ने मुझे दिखाई देते ऊए कहा कि मैं ने सनातन के प्रेम से तुझे प्रेम किया इसी लिये मैं ने तुझ पर दया बढ़ाई
४ है। हे इसराईल की कन्या तथापि मैं तुझे फेर के बनाओंगा और तू बन जायगी तू फेर अपने मृदंग से आपको सिंगारेगी
५ और आनन्दित लोगों के साथ नाच में जायगी। तू फेर के सामरा के पर्ब्बतों पर दाख की बारी लगायेगा हे बोवैयो बोओ
६ और उसका फल खाओ। क्योंकि दिन आया है इफराईम पहाड़ पर के पहरू ने प्रचारा है कि उठ हम अपने ईश्वर
७ परमेश्वर के पास सीहून पर चढ़ जायें। क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि याकूब के लिये आनन्द से गाओ और जाति गणों के श्रेष्ठ के साथ बधाई देओ, प्रचारो स्तुति करके कहो कि परमेश्वर ने तेरे लोगों को, अर्थात् इसराईल के उबरे ऊओं
८ को बचाया है। देख मैं उत्तर देश से उन्हें लाओंगा और पृथिवी के खूंटों से उन्हें एकट्ठा करोंगा और उनमें अंधे और लंगड़े और गर्भिणी और जो पीर में हैं एक बड़ी मंडली फिर
९ आवेगी। वे बिलाप करते करते आवेंगे और बिनती करते करते मैं उन्हें लाऊंगा मैं उन्हें जल की धारे लों पऊंचाओंगा मैं उन्हें समथर मार्ग में; जिसमें वे ठोकर न खायेंगे, क्योंकि मैं इसराईल का पिता ऊआ हों और इफराईम मेरा पहिलौंठा था।
१० हे अन्यदेशियो परमेश्वर का बचन सुनो और सिवानों में सुना के कहो कि जिसने इसराईल को छिन्न भिन्न किया वही उसे बटोरेगा और जैसे गड़रिया अपनी झुंड की रखवाली करता
११ है तैसा वुह उसको करेगा। क्योंकि परमेश्वर ने याकूब को छुड़ालिया है और जो उससे बलवंत हैं उसके हाथ से छुड़ावेगा।
१२ इस लिये वे आके सैहून के टीले पर ललकारेंगे और परमेश्वर की अच्छी बस्तुन को अर्थात् अन्न और नया दाख रस और तेल और झुंड के और लहड़े के बच्चों को भाग लेने को एकट्ठे होंगे और उनका प्राण सींची बारी की नाईं होगा और वे भूख के

१३ मारे चीण न होंगे। तब कन्या नाच में और तरुण और पुरनिया एकट्ठे आनन्दित होंगे क्योंकि मैं उनके बिलाप को आनंद से पलट डालोंगा और उनके शोक के पीछे मैं
१४ उन्हें शांति देके मगन करोंगा। परमेश्वर कहता है कि मैं याजकों की बांछा को पदारथों से अघाओंगा और मेरे लोग
१५ मेरी अच्छी वस्तु से संतुष्ट होंगे। परमेश्वर यह कहता है कि रामा में एक शब्द सुना गया और अति बिलाप का हाहाकार, राखील अपने बालकों के लिये रोती है और
१६ शांति नहीं होती क्योंकि वे नहीं हैं। परमेश्वर कहता है कि अपने बिलाप के शब्द को और आंखों से आंसू को रोक ले क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तेरा कार्य्य का प्रतिफल होगा
१७ और वे बैरियों के देश से फिर आवेंगे। परमेश्वर कहता है कि तेरे अंत में भरोसा है और तेरे बालक अपनेही सिवाने
१८ में आवेंगे। निश्चय मैं ने इफराईम को बिलाप करते सुना है कि तू ने मुझे शासन किया है और मैं ने बिन निकाले ऊए बछवे की नाईं शासन पाया तू मुझे फिरा और मैं फिराया
१९ जाऊंगा क्योंकि तू परमेश्वर मेरा ईश्वर है। निश्चय मेरे फिराये जाने से मैं पछताया और चिताये जाने के पीछे अपनी जांघ पर हाथ मारा मैं लज्जित ऊआ और लाज से भर गया
२० क्योंकि मैं ने अपने तरुणाई की निन्दा सही। क्या इफराईम मेरा प्रिय पुत्र नहीं? क्या वुह दुलारा बालक नहीं! क्योंकि मेरा बचन ज्योंहीं उसके मन में पऊंचा मैं ने उसे फेर स्मरण किया इस लिये मेरा मन उसके लिये व्याकुल ऊआ परमेश्वर
२१ कहता है कि निश्चय मैं उस पर दया करोंगा। पथचिह्न अपने लिये स्थाप अपने लिये लंबी लंबी लग्गी खड़ी कर राज मार्ग की ओर मन लगा हे इसराईल की कन्या जिस मार्ग से तू
२२ गई फिर आ अपने इन नगरों की ओर फिर आ। हे भगरी कन्या तू कबलों फिर फिर जायगी क्योंकि परमेश्वर पृथिवी में

२३ एक नई बात सिरजने पर है कि स्त्री पुरुष को घेरेगी। सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि जब मैं उनकी बंधुआई को पलटोंगा तब वे यहूदा देश में और उसके नगरों में यह बचन कहेंगे कि हे धर्म के निवास हे अति धार्म्मिक के
२४ पर्ब्बत परमेश्वर तुझे आशीष देगा। और यहूदा उसमें और उसके सारे नगरों में किसानों के साथ बसेंगे और वे झुंडों को
२५ लिये ऊए फिरेंगे। क्योंकि मैं ने पियासे प्राणी को संतुष्ट किया है और हर एक मर भुखे प्राणी को तृप्त किया है।
२६ उसे मैं जाग उठा और देखा पर मेरी नींद सुखकी
२७ थी। परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि मैं इसराईल के घराने को और यहूदा के घराने को मनुष्य के
२८ और पशु के बंश से बोओंगा। और परमेश्वर कहता है कि यों होगा कि जैसा मैं उन्हें उखाड़ने को और ढाने को और उलटने को और नाश करने को और दुःख देने को चौकस
२९ ऊआ हों तैसा उन्हें बनाने और बोने को चौकस होंगा। उन दिनों में वे फेर न कहेंगे कि पितरों ने खट्टा अंगूर खाया है और
३० बालकों का दांत खट्टा ऊआ है। परन्तु हर एक जन अपनेही बुराई के लिये मरेगा और जिस जन ने खट्टा अंगूर खाया है
३१ उसके दांत खट्टे होंगे। परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं जिसमें मैं इसराईल के घराने से और यहूदा के
३२ घराने से एक नई बाचा बांधोंगा। उस बाचा के समान नहीं जो मैं ने उनके पितरों से किई थी जब कि मैं उनका हाथ पकड़ के मिसर के देश से निकाल लाया परमेश्वर कहता है मेरी उस बाचा को उन्हों ने भंग किया यद्यपि मैं उनका पति
३३ था। परन्तु परमेश्वर कहता है कि उन दिनों के पीछे मैं इसराईल के घराने से यह बाचा बांधोंगा और मैं अपनी ब्यवस्था उनके अंतःकरण में डालोंगा और उनके मन में लिखोंगा और मैं उनका ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे।

३४ और वे फेर अपने अपने परोसी और अपने अपने भाई को यह कहिके न सिखावेंगे कि परमेश्वर को जानो क्योंकि परमेश्वर कहता है कि छोटे से बड़े लों सब मुझे जानेंगे क्योंकि मैं उनकी बुराई को क्षमा करोंगा और उनका पाप फेर स्मरण न
३५ करोंगा। परमेश्वर यों कहता है कि किसने दिन के उंजियाले के लिये सूर्य्य को ठहराया है और रात के उंजियाले क लिये चांद और तारों की बिधि किई है और समुद्र को यहां लों लहराता है कि उनके ढेउ हाहा करते हैं सेनाओं का परमेश्वर
३६ उसका नाम है। परमेश्वर कहता है जो ये व्यवस्था मुझे जाती रहें तो इसराईल के बंश भी मेरे आगे नित्य एक जाति होने
३७ से जाते रहेंगे। परमेश्वर यों कहता है कि यदि ऊपर स्वर्ग नापा जासके अथवा पृथिवी के नीचे की नेओं को थाह लिई जाय तो परमेश्वर कहता है कि मैं भी उनकी सारी करनी के कारण
३८ इसराईल के सारे बंश को त्यागोंगा। परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं कि हननियेल के गुम्मट से कोने के फाटक
३९ लों नगर परमेश्वर के बनाने से बन जायगा। और नापने की रस्सी गरब पहाड़ के ऊपर से होके गोआसा को घेर लेगी।
४० और लोथों के और राख की सारी तराई और सारे खेत कद्रोन नाली लों पूर्ब्ब के घोड़फाटक के कोने लों परमेश्वर के लिये पवित्र होंगे और उखाड़ा न जायगा और फेर कधी गिराया न जायगा।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

इरमियाः का बन्दीगृह में डाला जाना १—५ उसका खेत मोल लेना और प्रार्थना करनी ६—२५ बिपत्ति का संदेश पाना २६—३५ आशीष पाने की भविष्यबाणी ३६—४४।

१ यहूदा के राजा सिदकियाः के दसवें बरस, जो नबूकदनज़ार

का अठारहवां बरस था परमेश्वर का वचन इरमियाः पास
२ पहुंचा। और उस समय कलदानियों की सेना ने यिरोशलीम
को सकेती से घेर रक्खा था और इरमियाः भविष्यद्वक्ता बन्दी
गृह के आंगन में, जो यहूदा के राजा के भवन का था बन्द था।
३ क्योंकि यहूदा के राजा सिदकियाः ने यह कहिके उसे बंधन में
रक्खा कि तू ने क्यों यों भविष्य कहा है कि परमेश्वर कहता है
कि देख मैं इस नगर को बाबुल के राजा के हाथ में सौंपता हों
४ और वुह इसे ले लेगा। और यहूदा का राजा सिदकियाः
कलदानियों के हाथ से न छूटेगा परन्तु निश्चय बाबुल के राजा
के हाथ में सौंपा जायगा और वुह उस्से मुहें मुह बोलेगा
५ और इसकी आंखें उसकी आंखों पर पड़ेंगी। और वुह
सिदकियाः को बाबुल में निकाल देगा और परमेश्वर कहता है
कि जबलों मैं उस्से पलटा न लेओं वुह वहीं रहेगा जब तुम
लोग कलदानियों से संग्राम करोगे तो भाग्यमान न होओगे।
६ और इरमियाः ने कहा कि यह कहते हुए परमेश्वर का
७ वचन मुझ पास पहुंचा। देख तेरे चचा शालूम का बेटा
हनामील यह कहते हुए तुझ पास आवेगा कि मेरा खेत,
जो अनातूस में है अपने लिये मोल ले क्योंकि व्यवस्था की
८ रीति से उसे छुड़ाने का तेरा पद है। तब मेरे चचा के बेटे
हनामील ने परमेश्वर के वचन के समान बन्दीगृह के आंगन
में आके मुझे यह कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों कि
मेरा खेत, जो बनियामीन देश के अनातूस में है मोल ले
क्योंकि व्यवस्था के समान तेरा अधिकार है और छोड़ाना
तेरा है तू अपने लिये मोल ले तब मैं ने जाना कि यह
९ परमेश्वर का वचन है। इस लिये मैं ने उस खेत को, जो
अनातूस में था अपने चचा हनामील के बेटे से मोल लिया
१० और उसे रोकड़ दिया अर्थात सत्तरह शेकल चांदी। और
बिक्रय पत्र लिखके छापा और साक्षी करवाई और रोकड़

११ को तौल दिया। और मैं ने छाप किये ऊए बिक्रय पत्र को लिया अर्थात् सौंपा ऊआ और न सौंपा ऊआ और जो
१२ खुला था। और वुह बिक्रय पत्र मेरे चचे के बेटे हनामोल के आगे और बिक्रयपत्र के साक्षियों के आगे और सारे यहूदियों के आगे, जो बन्दीगृह के आंगन में बैठे थे मासिया के बेटे
१३ निरियाः के बेटे बारूक को सौंप दिया। और उनके आगे मैं
१४ ने बारूक को यह कहि के आज्ञा किई। कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि इन लिखे ऊए बिक्रय पत्र को ले छापे ऊए को और खुले ऊए को और उन्हें एक
१५ मिट्टी के पात्र में रख जिसतें बऊत दिन ठहरें। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है, कि घर और खेत और दाख की बारी इस देश में फेर पाई जायगी।

१६ जब मैं ने निरियाः के बेटे बारूक को वुह बिक्रय पत्र सौंप
१७ दिया तब यह कहि के मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई। हाय प्रभु परमेश्वर देख तू ने अपने महा पराक्रम से और अपनी बढ़ाई ऊई भुजा से स्वर्ग और पृथिवी को सिरजा है और तेरे लिये
१८ कुछ कठिन नहीं है। जो सहस्रों पर दया करता है और पितरों की बुराई उनके पीछे उनके बालकों की गोद में, जो उनके पीछे आते हैं पलटा देता है अत्यंत महान और अत्यंत पराक्रमी ईश्वर जिसका नाम सेनाओं का परमेश्वर है।
१९ परामर्थ में महान और कार्य्यों में बऊत जिसकी आंखें मनुष्य के पुत्रों की सारी चालों पर खुली हैं जिसतें हर एक को उसकी चाल के समान और उसके कार्यों के प्रतिफल के तुल्य देवे।
२० जिसने मिसर देश में और इसराईल में और मनुष्यों में लक्षण और आश्चर्य दिखाये हैं और अपने लिये आज के समान
२१ नाम कर रक्खा है। और अपने इसराईल लोगों को मिसर देश से लक्षण और आश्चर्य और दृढ़ हाथ से और फैलाई
२२ ऊई भुजा से और भयंकर रीति से निकाल लाया है। और

यह देश उन्हें दिया है जिसके बिषय में तू ने उनके पितरों से किरिया खाई थी कि दूध और मधु का देश उन्हें देउंगा।
२३ और वे प्रवेश करके उसके अधिकारी ऊए परन्तु उन्हों ने तेरा शब्द न माना और तेरी व्यवस्था पर न चले और तेरी आज्ञाओं को उन्हों ने पालन न किया इसी कारण तू ये सारी बिपत्ति
२४ उन पर लाया है। देखो नगर लेने को वे पास बढ़ गये हैं और नगर कलदानियों के हाथ में, जो उसके बिरुद्ध लड़ते हैं तलवार के और अकाल के और मरी के कारण दियेगये हैं और जो तू देखता है कि जो कुछ तू ने कहा है सो पूरा
२५ ऊआ है। तथापि हे परमेश्वर तू ने मुझे कहा है कि रोकड़ से अपने लिये खेत मोल ले और साक्षी करा जब कि नगर
२६ कलदानियों के हाथ में दिया गया है। तब परमेश्वर का
२७ बचन यह कहिके इरमियाः पास पऊंचा। देख मैं परमेश्वर सारे प्राणियों का ईश्वर क्या मेरे लिये कुछ कठिन होसक्ता है?।
२८ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं यह नगर कलदानियों के हाथ में और बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के
२९ हाथ में देताहों और वुह उसे ले लेगा। और कलदानी जो इस नगर से लड़ते हैं पैठेंगे और इस नगर में आग लगावेंगे और उसे और उन घरों को जिन के छतों पर मुझे रिस दिलाने को उन्हों ने बआल के लिये धूप जलाया है और उपरी
३० देवों के लिये तर्पण किया है जलादेंगे। क्योंकि इसराईल के संतान और यहूदा के संतान अपनी युवावस्था से वही बात करते हैं जो मेरी दृष्टि में बुरी है परमेश्वर कहता है कि निश्चय इसराईल के संतान अपनेही हाथों के कार्य्यों से मुझे रिस
३१।३२ दिला रहे हैं। क्योंकि इसराईल के संतानों की और यहूदा के संतानों की दुष्टता के कारण, जो उन्हों ने मुझे रिस दिलाने को उन्हों ने और उनके राजाओं ने और उनके राजपुत्रों ने और उनके याजकों ने और उनके भविष्यद्वक्तों ने और

यहूदा के मनुष्यों ने और यिरोशलीम निवासियों ने किया क्योंकि यह नगर जब से उन्हों ने बनाया है आज लों मेरे आगे से दूर करने को मेरे कोप का जूआ और मेरे
३३ जलजलाहट का जूआ हो रहा है। क्योंकि उन्हों ने मेरी ओर पीठ फेरी और मुंह नहीं और जब मैं ने उन्हें भोर को उठ उठ के उपदेश किया और सिखाया तो उपदेश ग्रहण
३४ करने को किसी ने न सुना। और जो घर मेरे नाम से कहावता है उसे अशुद्ध करने को उन्हों ने उसमें घिनौनियों को
३५ स्थापन किया है। और यहूदा पर अपराध लाने को उन्हों ने यह घिनित कार्य्य किया और उन्हों ने बआल के लिये ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये जो हिन्नूम के बेटे की तराई में है जिसतें अपने बेटे बेटियों को उस में से मोलक कने पऊंचावें जो मैं ने
३६ उन्हें बजा था और जो मेरे आगे ग्राह्य न था। परन्तु इसके पीछे इस नगर के विषय में, जिसकी अवस्था में तुम लोग कहते हो कि तलवार से और अकाल से और मरी से बाबुल के राजा के हाथमें सौंपा गया है परमेश्वर इसराईल
३७ का ईश्वर यों कहता है। देख जहां जहां मैं ने उन्हें अपने रिस में और जलजलाहट में और महा कोप में खेदा है मैं उन्हें उन सारे देशों से बटोरोंगा और फेर उन्हें इस स्थान में लाके
३८ निर्भय से बसाओंगा। और वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका
३९ ईश्वर होंगा। और मैं उन्हें एक मन और एकही मार्ग उनकी भलाई के लिये और उनके पीछे उनके संतानों की
४० भलाई के लिये देउंगा जिसतें मुझे नित्य डरा करें। और मैं उनका उपकार करने को उनसे एक सनातन की बाचा बांधोंगा जो मैं उनके बंश से उठा न लेउंगा और मैं अपना भय उनके
४१ मन में डालोंगा जिसतें वे मुझे फिर न जायें। उन पर भलाई के लिये मैं उनसे आनन्दित होंगा और निश्चय मैं उन्हें अपने सारे अंतःकरण और अपने सारे प्राण से इस देश में

४२ बसाओंगा। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं इन लोगों पर यह सारी महा विपत्ति लायाहों तैसाही मैं उन पर सारी भलाई लाओंगा जो मैं ने उनके विषय में कही है।
४३ और इस देश में खेत फेर मोल लिया जायगा जिसके विषय में तुम लोग कहते हो कि वुह बिन मनुष्य और बिन पशु
४४ उजाड़ है और कलदानियों के हाथ में दिया गया है। परमेश्वर कहता है कि बनियामीन देश में यिरोशलीम के आस पास और यहूदा के नगरों में और पर्ब्बत देश के नगरों में और चौगान के नगरों में और दक्खिन के नगरों में मनुष्य रोकड़ से खेत मोल लेंगे और मोल लेने का पत्र भी लिख के छाप कर कर साक्षी करावेंगे क्योंकि मैं उनकी बंधुआई को पलट डालोंगा।

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब ।

यहूदियों के बंधुआई से फिरने की और यिरोशलीम के फेर बन्ने की और नाना आशीष पाने की भविष्य बाणी १—१३ मसीह के आने का और बाचा पूरी होनी का संदेश देना १४—२६ ।

१ इरमियाः के बन्दीगृह के आंगन में बन्द रहतेही परमेश्वर का वचन उस पास यह कहते ऊए दूसरे बार पऊंचा।
२ उसका कारक परमेश्वर यों कहता है उसका सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर, जो उसे स्थिर भी करता है सेनाओं का परमेश्वर
३ उसका नाम है। मेरी विनती कर, मैं तुझे उत्तर देउंगा और बड़े बड़े कार्य्य और छिपी छिपी वस्तु, जो तू नहीं जानता
४ दिखाओंगा। क्योंकि इस नगर के घरों के और यहूदा के राजाओं के घरों के विषय में, जो टीलों से और तलवार से गिराये गये हैं परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है।
५ जो कलदानियों की ओर से संग्राम को आये हैं उन्हें मनुष्यों की लोथों से भरने को जिन्हें मैं ने अपनी रिस और क्रोध में

मारा है और जिनकी सारी दुष्टता के कारण मैं ने अपना
६ मुंह इस नगर से छिपाया है। देख मैं उसे सर्बथा नीरोग
और चंगा करोंगा और कुशल और सचाई के लिये उनको
७ प्रार्थना सुनोंगा। और मैं यहूदा की और इसराईल की
बंधुआई को फेर लाओंगा और पहिले के समान उन्हें जोड़ाई
८ करोंगा। और मैं उनकी सारी बुराइयों से, जो उन्हों ने मेरे
बिरुद्ध अपराध किया है उन्हें पवित्र करोंगा और उनकी
सारी बुराइयों को, जो उन्हों ने मेरे बिरोध अपराध किया है
और जो उन्हों ने हठ से मेरा बिरोध किया है क्षमा करोंगा।
९ और मेरे द्वारा से पृथिवी के सारे जातिगणों में, जो मेरी
सारी भलाइयों को, जो मैं उन पर करता हों सुनेंगे आनंद का
नाम और स्तुति और बिभव होगा और सारी भलाई के
कारण और सारे भाग्य के कारण जो मैं उन्हें मंगल देउंगा वे
१० डरेंगे और कांपेंगे। परमेश्वर यों कहता है कि जिस स्थान के
विषय में तुम लोग कहते हो कि मनुष्य बिना और पशु बिना
उजाड़ है यहूदा के नगरों में और यिरोशलीम के मार्गों में
जो मनुष्य बिना उजाड़ हैं अ ात् निवासी और पशु बिना।
११ उस स्थान में फेर आनंद का शब्द और सुख बिलास का शब्द और
दूल्हा का शब्द और दूल्हिन का शब्द और उनका शब्द सुना
जायगा जो कहते हैं, कि सेनाओं के परमेश्वर की स्तुति करो
क्योंकि परमेश्वर कृपाल है उनके लिये जो परमेश्वर के मन्दिर
में स्तुति करते हैं उसकी दया सदा लों रहती है क्योंकि
परमेश्वर कहता है कि मैं पहिले के समान देश की बंधुआई को
१२ फेर देउंगा। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि इस स्थान
में जो मनुष्य बिना और पशु बिना उजाड़ है और उसके सारे
नगरों में भेड़ों के गोंड़े करवैये गड़रियों के निवास फिर होंगे।
१३ परमेश्वर कहता है कि पर्ब्बत देश के नगरों में और चौगान के
नगरों में और दक्खिन के नगरों में और बनियामीन के देश में

और यिरोशलीम के आस पास के स्थानों में और यहूदा के नगरों में उनके बताने के समान जो उनको अगुआई करता है
१४ झुंड फेर उसमें फिरेंगे। परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं जो मैं ने इसराईल के घराने के और यहूदा के घराने के विषय में कहा है उस अच्छी बात को पूरा करोंगा।
१५ क्योंकि उस समय में मैं दाऊद के बंश से एक धर्म की डाली उभाड़ोंगा और वुह देश में बिचार और न्याय करेगा।
१६ उन दिनों में यहूदा मुक्ति पावेगा और यिरोशलीम निर्भय से बसेगा और वुह इस नाम से पुकारा जायगा कि, परमेश्वर हमारा
१७ धर्म। परमेश्वर निश्चय यों कहता है कि इसराईल के घराने के सिंहासन पर बैठने को दाऊद की पांती में एक भी न घटेगा।
१८ होम की भेंट और मांस के होम की भेंट मेरे आगे चढ़ाने को और नित्य बलि चढ़ाने को लावी याजकों की पांती में भी एक न
१९ घटेगा। यह कहते ऊए भी परमेश्वर का बचन इरमियाः पास
२० पऊंचा। परमेश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग दिन के मेरे नियम को और रात के मेरे नियम को व्यथा करसको यहां लों कि
२१ प्रति दिन प्रति रात समय में न होवे। तो मेरे दास दाऊद से मेरा नियम व्यथा होगा कि उसके सिंहासन पर राज्य करने को पुत्र न होवे और याजक लावियों से कि वे मेरी सेवा
२२ न करें। जैसे स्वर्ग की सेना गिनी नहीं जासक्ती है और समुद्र की बालू तौली जा नहीं सक्ती तैसा मैं अपने दास दाऊद के
२३ बंश को और अपने सेवक लावियों को बढ़ाओंगा। परमेश्वर
२४ का बचन यह भी कहते ऊए इरमियाः पास पऊंचा। कि इन लोगों की इस बात पर क्या तू ने सुरत नहीं लगाई जिन दो घराने को परमेश्वर ने चुना है उसने उन्हें भी त्यागा है और उन्हों ने मेरे लोगों को तुच्छ जाना यहां लों कि उन्हें एक जाति
२५ करके न समझें। परमेश्वर यों कहता है, जो प्रति दिन का और प्रति रात का मेरा नियम न हो और स्वर्ग पृथिवी की

२६ जो मैं ने ठहराई है बिधि न हो । तब मैं याक़ूब के बंश को और अपने दास दाऊद को त्यागोंगा यहां लों कि वे इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब के बंश के लिये उनके बंश में से प्रभुता के लिये न लेउं परन्तु मैं उनकी बंधुआई को पलट डालोंगा और उन पर दया करोंगा ।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब ।

नगर के लिये जाने का और सिदकिया को बंधुआई में पहुंचाये जाने का भविष्य बचन १—७ दासों के बिषय में लोगों का छल करना ८—११ उन पर परमेश्वर का कोप पड़ने का समाचार १२—२२ ।

१ जब बाबुल का राजा नबूक़दनज़ार और उसकी सारी सेना और पृथिवी के सारे राज्य जो उसके अधीन थे और सारे लोग यिरोश्लीम के और उसके सारे नगरों के बिरुद्ध संग्राम कर रहे थे तब परमेश्वर का यह बचन इरमियाः पास पहुंचा । २ परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि तू जाके सिदकियाः से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं बाबुल के राजा के हाथ में यह नगर सौंपता हों और वुह ३ उसे जलादेगा । और तू उसके हाथ से न बचेगा परन्तु निश्चय पकड़ा जायगा और उसके हाथ में सौंपा जायगा और तेरी आंखें बाबुल के राजा की आंखें देखेंगी और वुह मुंहे ४ मुंह तुझे कहेगा और तू बाबुल को जायगा । तथापि हे यहूदा के राजा सिदकियाः परमेश्वर का बचन सुन, परमेश्वर ने तेरे बिषय में यों कहा है कि देख तू तलवार से मारा न ५ जायगा । तू कुशल से मरेगा और अपने पितर अगिले राजाओं के जलाने के समान तेरे लिये जलावेंगे और तेरे लिये यों बिलाप करेंगे, कि हे प्रभु क्योंकि परमेश्वर कहता है ६।७ कि मैं ने बचन कहा है । जब बाबुल के राजा की सेना

यिरोशलीम के और यहूदा के सारे रहे हुए नगरों के विरुद्ध और लाकिश के और अज़ीका के विरुद्ध लड़रही थीं, क्योंकि यहूदा के नगरों में ये बाड़ित नगर रहि गये थे तब इरमियाः भविष्यदक्ता ने यहूदा के राजा सिदकियाः को ये सारी बातें
८ यिरोशलीम में कहीं। जब सिदकियाः राजा ने सारे लोगों के साथ, जो यिरोशलीम में थे छुटकारा प्रचारने के लिये
९ नियम किया। कि हर एक अपने अपने इबरी दास दासी को छोड़ देवे और कोई अपने यहूदी भाई से सेवा न लेवे तब
१० परमेश्वर का बचन इरमियाः पास पहुंचा। और सारे राजपुत्रों ने और लोगों ने, जिन्हों ने अपनेही दास दासी को छोड़ने को और उनसे सेवा न लेने को नियम किया था उसे मान के उन्हें
११ छोड़ दिया। परन्तु उसके पीछे उन्हों ने अपने दास दासियों
१२ को, जिन्हें उन्हों ने छोड़ दिया था फेर लिया। इस लिये परमेश्वर का बचन परमेश्वर से इरमियाः पास पहुंचा।
१३ परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि जिस दिन मैं तुम्हारे पितरों को मिसर देश से बंधुआई के घर से निकाल लाया उस दिन मैं ने यह कहिके उनके साथ एक बाचा
१४ बांधी। कि सात सात बरस पीछे, जब तुम उनसे छः बरस की सेवा लेउगे तो हर एक जन अपने अपने इबरी भाई को, जो तुझ पास बेचा गया हो अपने पास से छोड़ देना परन्तु
१५ तुम्हारे पितरों ने मेरा बचन सुन्ने को कान न झुकाये। और अबकी जब तुम लोग फिरे और हर एक जन ने अपने अपने परोसी पर छुटकारा प्रचारने को मेरी दृष्टि में भलाई किई थी और इस मन्दिर में, जो मेरे नाम से कहा जाता है
१६ मेरे साथ नियम किया। परन्तु हर एक जन ने अपने अपने दास और अपनी दासी को, जिन्हें तुम्हों ने उनकी इच्छा पर चलने को छोड़ दिया था फेर के लिया और उन्हें दास और
१७ दासी बरबस बनाया। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि

हर एक अपने अपने भाई और अपने अपने परोसी रप छुटकारा प्रचारने में तुम लोगों ने मेरी न मानी परमेश्वर कहता है कि देख मैं तुम्हारे लिये तलवार और मरी और अकाल को छुटकारा प्रचारता हों और तुम्हें पृथिवी के सारे
१८ राज्यों में झंझट में डालोंगा। और जिन लोगों ने मेरी बाचा को उलंघन किया है जिन्हों ने उस बाचा की बातों को पूरी न किई जो उन्हों ने बछिया के आगे किई थी जिसे वे दो टुकड़े
१९ करके उनके मध्य में होके गये थे। अर्थात् यहूदा के अध्यक्षों को और यिरोशलीम के अध्यक्षों को और नपुंसकों को और याजकों को और देश के सारे लोगों को जो बछिया के टुकड़ों
२० के मध्य में से गये थे। मैं उन्हें अर्थात् उन्हीं को बैरियों के हाथ में और उनके प्राण के गाहकों के हाथ में सोंपोंगा और उनकी लोथें आकाश के पंछियों के लिये और पृथिवी के पशुन के लिये
२१ भोजन होंगे। और यहूदा के राजा सिदकियाः को और उसके राजपुत्रों को उनके बैरियों के हाथ में और उनके प्राण के गांहकों के हाथ में सोंपोंगा अर्थात् बाबुल के राजा की सेना
२२ के हाथ में जो तुम्हों से उठगई। परमेश्वर कहता है कि देखो मैं आज्ञा करोंगा और उन्हें इस नगर में फेरोंगा और वे इसे लड़ेंगे और लेके आग से जलावेंगे और मैं यहूदा के नगरों को एक उजाड़ और निवासी रहित बनाओंगा।

३५ पैंतीसवां प॰।

अपने पितर की बात मान्ने का रिकाबियों का समाचार १—११ यहूदियों का आज्ञा विरुद्ध चलना १२—१७ रिकाबियों के लिये बाचा होनी १८—१९।

१ यहूदा के राजा यूसियाः के बेटे यहूयाकीम के समय में परमेश्वर
२ का वचन यह कहते हुए इरमियाः पास पहुंचा। तू रिकाबियों

के घर जा और उन्हें कहिके परमेश्वर के मन्दिर में की एक
३ कोठरी में ले और उन्हें पीने को दाख रस दे। तब मैं ने
हबसिनियाः के बेटे इरमियाः के बेटे यहासनियाः को और
उसके भाइयों को और उसके सारे बेटों को और रिकाबियों
४ के सारे परिवार को लिया। और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर
में ईश्वर के जन इगदलियाः के बेटे हनान के बेटों की कोठरी
में लाया जो अध्यक्षों की कोठरी के लग थी, जो द्वारपाल
५ शालूम के बेटे मअासिया की कोठरी के ऊपर था। और मैं
ने रिकाबियों के घराने के पुत्रों के आगे हंड़े भर भर दाख रस
और कटोरियां धर दिया और उन्हें कहा कि दाख रस
६ पीओ। पर उन्हों ने कहा कि हम दाख रस न पीयेंगे क्योंकि
हमारे पितर रिकाब के बेटे यूनादाब ने हमें यह कहिके
चिताया कि तुम और तुम्हारे बेटे कभी दाख रस न पिना।
७ और न घर उठाना न बीज बोना न दाख की बारी लगानी
न उसका अधिकारी होना परन्तु अपने जीवन भर तंबुओं में
रहा करो जिसतें देश में, जहां तुम परदेशी हो बहुत दिन लों
८ जीओ। और हमने सारी बातों में अपने पितर रिकाब के
बेटे यूनादाब का शब्द माना यहां लों कि हम और हमारी
पत्नियां और हमारे बेटे और हमारी बेटियां अपने जीवन
भर दाख रस न पीवें और न अपने लिये निवास स्थान बनावें।
९।१० और न हम दाख की बारी न खेत न बीज रखते हैं। परन्तु
हम तंबुओं में रहते हैं और अपने पितर यूनादाब की सारी
११ आज्ञा के समान हमने किया है। परन्तु यों हुआ कि जब
बाबुल का राजा नबूकदनज़ार देश पर चढ़ आता था तब
हम लोगों ने कहा कि कलदानियों की सेना के डर के मारे और
सुरियानियों की सेना के डर के मारे चलो यिरोशलीम में पैठें
१२ तबहीं से हम यिरोशलीम में रहते हैं। तब परमेश्वर का
१३ वचन इरमियाः पास यह कहते हुए पहुंचा। कि सेनाओं का

परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि तू जा यहूदा के लोगों को और यिरोशलीम के निवासियों को कह कि परमेश्वर कहता है क्या तुम लोग मेरा बचन सुन के उपदेश ग्रहण न करोगे?। १४ जो बचन रिकाब के बेटे यूनादाब ने अपने बेटों को दाख रस न पीने को आज्ञा दिई थी सो दृढ़ता से पाली गई क्योंकि उन्हों ने आज लों दाख रस नहीं पीआ है परन्तु अपने पितरों की आज्ञा मानी है मैं ने तुम से भी कहा है तड़के उठ उठ के कहा पर तुम्हों ने नहीं माना। १५ और मैं ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता सेवकों को तुम्हारे पास भेजा है तड़के उठ उठ के यह कहिला भेजा कि तुम्में से हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे और अपनी चाल को सुधारे और उपरी देवों की सेवा के लिये उनकें पीछे न जाय और जो देश मैं ने तुम्हें और तुम्हार पितरों को दिया है उसमें बसो पर तुम्हों ने अपना कान न झुकाया और न मेरी सुनी। १६ इस कारण कि रिकाब के बेटे यूनादाब के बेटों ने अपने पिता की आज्ञाओं को पूरा किया जो उसने उन्हें दिई थी परन्तु इन लोगों ने मेरी बात न मानी। १७ इसी लिये सेनाओं का ईश्वर परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं यहूदा पर और यिरोशलीम के सारे निवासियों पर सारी बुराई, जो मैं ने उनके बिरुद्ध में कही है लाता हों क्योंकि मैं ने उन्हें कहा है पर उन्हों ने न माना और मैं ने उन्हें बुलाया। पर उन्हों ने उत्तर न दिया १८ और इरमियाः ने रिकाबियों के घराने से कहा कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम्हों ने अपने पिता यूनादाब की आज्ञा मानी है और उसकी सारी शिक्षा को माना है और उसकी सारी आज्ञा के समान चला है। १९ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि रिकाब के बेटे यूनादाब की पांती में मेरे आगे नित खड़े होने के लिये एक भी न घटेगा।

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब ।

भविष्य बचन बारुक का लिखना और उसे प्रत्यक्ष में पढ़ना १—१९ राजा के आगे पढ़ा जाना और उसे आग में जलाना और कोपित होना २०—२६ इरमियाः का वही बचन बारुक को फिर लिखाना २७—३२ ।

१ यहूदा के राजा यूसिया के बेटे युहायाकीम के चौथे बरस यों हुआ कि परमेश्वर का बचन इरमियाः पास यह कहते
२ हुए पहुंचा। जब से मैं ने तुझे कहना आरंभ किया जुसैया के दिनों से आजलों सारी बातें जो मैं ने तुझे इसराईल के और यहूदा के और सारे जातिगणों के विषय में कही हैं अपने लिये
३ पुस्तक का पिलुंडा ले और उसमें लिख। क्या जानें यहूदा क घराने सारी बुराइयों को, जो मैं ने उन पर लाने को ठानी है मानें यहां लों कि हर एक अपने अपने कुमार्ग से फिरे और
४ मैं उनका अपराध और पाप क्षमा करों। तब इरमियाः ने निरियाः के बेटे बारुक को बुलाया और बारुक ने सारी बातें इरमियाः के मुंह से, जो उसने उसे कहीथीं पुस्तक के पिलुंडे में
५ लिखीं। और इरमियाः ने यह कहि के बारुक को आज्ञा दिई कि मैं बंधन में हों मैं परमेश्वर के मन्दिर में जा नहीं सक्ता।
६ इस लिये ब्रत के दिन में तू परमेश्वर के मन्दिर में जा के इस पिलुंडे में से परमेश्वर का बचन, जो तू ने मेरे मुंह से लिखा है लोगों के सुन्ने में और सारे यहूदा के भी सुन्ने में जो उनके
७ नगरों से बाहर आते हैं पढ़ियो। क्या जाने वे प्रार्थना में परमेश्वर के आगे दंडवत करें और हर एक जन अपनी अपनी बुराई से फिरे क्योंकि परमेश्वर का कोप और जलजलाहट
८ बड़ा है जो परमेश्वर ने इन लोगों के बिरुद्ध कहा है। तब निरिया के बेटे बारुक ने इरमियाः भविष्यद्वक्ता की सारी आज्ञा के समान परमेश्वर के मन्दिर में पुस्तक में परमेश्वर के

९ बचन को पढ़ा । क्योंकि यहूदा के राजा जुसैया के बेटे यहूयाकीम के पांचवें बरस के नवें मास में ऐसा ऊआ कि यिरोशलीम के सारे लोगों ने और सारे लोगों ने जो यहूदा के नगरों से निकल
१० आये थे यिरोशलीम में परमेश्वर के आगे ब्रत प्रचारा । तब बारुक ने इरमियाः के बचन को परमेश्वर के मन्दिर में राजा के लेखक शाफान के बेटे गिमरियाः की कोठरी के बड़े आंगन में परमेश्वर के मन्दिर के नये फाटक की पैठ में सारे लोगों के
११ सुन्ने में पढ़ा । और शाफान के बेटे गिमरियाः के बेटे मीका ने उस पुस्तक से परमेश्वर के सारे बचन को सुना तब वुह
१२ राजा के घर को लेखक की कोठरी में उतर गया । और क्या देखता है कि सारे अध्यक्ष अर्थात् इलीशमा लेखक और शिमायाः का बेटा दिलायाः और अकबर का बेटा इलनासान और शाफान का बेटा गिमरियाः और हनानियाः का बेटा
१३ सिदकियाः और सारे अध्यक्ष बैठे हैं । जब बारुक ने लोगों के सुन्ने में पुस्तक पढ़ी तब मिकायाः ने सारे बचन को जो उसने
१४ सुना था उनके आगे दुहराया । तब सारे अध्यक्षों ने कूशी के बेटे शिलिमियाः के बेटे नसानिया यहूदी को बारुक के पास यह कहिके भेजा कि जो पिलुंडा तू ने लोगों को पढ़ सुनाया है उसे हाथ में लेके जा तब निरियाः का बेटा पिलुंडा हाथ में लिये
१५ ऊए उन पास आया । और उन्हों ने उसे कहा कि अब बैठ
१६ और हमें पढ़ सुना तब बारुक ने उन्हें पढ़ सुनाया । और ऐसा ऊआ कि जब उन्हों ने सारी बातें सुनी तो डर के मारे एक दूसरे को देखने लगा और बारुक से कहा कि इन सारी
१७ बातों के बिषय में निश्चय हम राजा से कहेंगे । और उन्होंने यह कहि के बारुक से पूछा कि अब हम से कह, तू ने ये सारी
१८ बातें क्योंकर उसके मुंह से लिखीं । तब बारुक ने उन्हें कहा कि उसने ये सारी बातें अपने मुंह से मेरे आगे दुहराईं और
१९ उसके पीछे पीछे मैं ने इस पुस्तक में लिखीं । तब अध्यक्षों ने

बारुक से कहा कि जा छिप रह तू और इरमियाः और कोई
२० जानने न पावे कि तुम कहां हो। और वे आंगन में राजा पास
गये परन्तु उन्हों ने उस पिलुंडे को इलिशमा लेखक की कोठरी
२१ में धर रक्खा और राजा के आगे ये सारी बातें कहीं। तब
राजा ने यहूदी को पिलुंडा लाने को भेजा और वुह जाके
इलीशमाः लेखक की कोठरी में से निकाल लाया और यहूदी
ने राजा को और उसके आस पास के सारे अध्यक्षों को पढ़
२२ सुनाया। नवें मास में राजा जाड़े की कोठरी में बैठा
था और उसके आगे अंगेठी में बरता ऊआ कोइला था।
२३ ऐसा ऊआ कि जब यहूदी ने तीन चार भाग पढ़ा तब राजा
ने लेखक की छूरी से उसे काट डाला और अंगेठी की आग में
डाल दिया यहां लों कि सारा पिलुंडा अंगेठी की आग से भस्म
२४ ऊआ। परन्तु न तो राजा न उसके कोई सेवक जिन्हों ने इन
२५ बातों को सुना था डरे न अपने कपड़े फाड़े। और यद्यपि
इलनासान ने और दिलायाः ने और गिमरियाः ने राजा से
बिनती किई कि इस पिलुंडे को मत जलाइये तथापि उसने
२६ उनकी न मानी। और राजा ने अपने बेटे यरामील को और
अज़रिईल के बेटे सिरायाः को और अबदीईल के बेटे शिलीमियाः
को आज्ञा किई कि बारुक लेखक को और इरमियाः भविष्यद्वक्ता
२७ को पकड़ो परन्तु परमेश्वर ने उन्हें छिपाया। जब राजा ने
उस पिलुंडे को और जो बचन कि बारुक ने इरमियाः के मुंह
से लिखा था जला दिया तब परमेश्वर का बचन इरमियाः
२८ पास पऊंचा। कि तू फेर एक दूसरा पिलुंडा ले और उसमें
सारे बचन जो अगिले पिलुंडे में थे जो यहूदा के राजा
२९ यहूयाकीम ने जलाया है उसमें लिख। और यहूदा के राजा
यहूयाकीम से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि तू ने यह कहिके
इस पिलुंडे को जलाया है कि तू ने उसमें ऐसा क्यों लिखा है
बाबुल का राजा निश्चय आवेगा और इस देश को नष्ट करेगा

और इस में से मनुष्य को और पशु को मिटा डालेंगा।
३० क्योंकि यहूदा के राजा यहूयाकीम के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि दाऊद के सिंहासन पर बैठने को उसके लिये एक भी न रहेगा और उसकी लोथ दिन के घाम में और
३१ रात के पाले में बाहर फेंकी जायगी। और मैं उसके और उसके बंश के और उसके सेवकों के अपराधों का पलटा लेउंगा और सारी बुराई, जो मैं ने उनके बिरुद्ध उचारी है जो उन्हों ने न मानी मैं उन पर और यिरोशलीम के
३२ निवासियों पर और यहूदा के मनुष्यों पर लाउंगा। तब इरमियाः ने एक दूसरा पिलुंडा लिया और निरियाः के बेटे बारुक लेखक को दिया और उसने उसमें इरमियाः के कहने से पुस्तक की सारी बातें लिखीं जो यहूदा के राजा यहूयाकीम ने आग में जलाई थी और वैसाही बहुतसी बातें उसमें मिलाई गईं।

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब ।

कलदानियों का फिर जाना और उनके फिर आने की भविष्यवाणी १—१० इरमियाः का बंधन में पड़ना ११—१५ राजा का उसे बूझना और आपुस का संवाद १६—२१।

१ और कूनियाः के बेटे यहूयाकीम के स्थान पर युसैयाः के बेटे सिदकियाः ने राज्य किया जिसे बाबुल के राजा नबूक़द्नज़ार
२ ने यहूदा देश में राजा किया था। परन्तु न तो उसने न उसके सेवकों ने और न देश के लोगों ने परमेश्वर के बचन पर, जो उसने इरमियाः भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था मन
३ लगाया। और सिदकियाः राजा ने शिलिमियाः के बेटे यहूकल और मअ़ासियाः याजक के बेटे सफनियाः से इरमियाः भविष्यद्वक्ता को कहला भेजा कि हमारे लिये अब हमारे

४ ईश्वर परमेश्वर से प्रार्थना कर। क्योंकि इरमियाः लोगों में बाहर भीतर आया जाया करता था और उन्हों ने उसे
५ बंदी गृह में न डाला था। और फरऊन की सेना मिसर से निकल आई थी और जब यिरोशलीम के घेरवैये कलदानियों ने उसका समाचार सुना तो वे यिरोशलीम के आगे से कूच
६ कर गये। तब यह कहते ज़ए परमेश्वर का बचन इरमियाः
७ भविष्यदक्ता पास पज़ंचा। कि यहूदा के राजा को, जिसने मुझे बूझने को तुझे भेजा है यों कहना कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देखो फरऊन की सेना, जो तुम्हारे सहाय के लिये आई है मिसर में अपनेही देश को फिर जायगी।
८ और कलदानी फेर आके इस नगर से लड़ेंगे और इसे लेलेंगे
९ और उसे जलादेंगे। परमेश्वर यों कहता है कि यह कहि के अपने को मत छल देउ कि कलदानी निश्चय हम से जाते रहेंगे
१० क्योंकि वे न जायेंगे। परन्तु यद्यपि तुम लोग कलदानियों की सारी सेना को, जो तुम से लड़ते हैं मारे होते और उनमें केवल घायल लोग अपने अपने तंबू में रहि जाते तथापि वे उठके
११ इस नगर को जला देते। और ऐसा ज़आ कि जब फरऊन की सेना के कारण से कलदानियों की सेना यिरोशलीम
१२ के आगे से कूच कर गई। तब इरमियाः बनियामीन के देश में जाने को यिरोशलीम से बाहर निकल गया जिसतें लोगों
१३ में से भाग लेवे। और जब वुह बनियामीन के फाटक में पज़ंचा तब हनानियाः का बेटा शिलिमियाः का बेटा इरीजा नाम पहरे का प्रधान वहां था उसने यह कहि के इरमियाः को
१४ पकड़ा। कि तू कलदानियों के पास जाता है तब इरमियाः ने कहा कि झूठ, मैं कलदानियों के पास नहीं जाता हों परन्तु उसने न माना और इरीजा इरमियाः को पकड़ के अध्यक्षों
१५ कने लाया। तब अध्यक्षों ने इरमियाः को रिसिया के मारा और उसे यूनासान लेखक के घर में बंद किया क्योंकि उन्हों ने

१६ उसे बंदीगृह बना रक्खा था। जब इरमियाः भकस की कोठरी में गया और वहां बहुत दिन रहा तब सिदकियाः राजा ने
१७ उसे बुला मंगाया। और राजा ने अपने घर में उसे एकांत में यह कहिके पूछा कि परमेश्वर की ओर से कोई बचन है? इरमियाः ने कहा कि है क्योंकि उसने कहा है कि तू बाबुल के
१८ राजा के हाथ में सोंपा जायगा। फेर इरमियाः ने सिदकियाः राजा से कहा कि मैं ने आप के और आप के सेवकों के अथवा इन लोगों के विरुद्ध क्या अपराध किया जो आप लोगों ने
१९ मुझे बन्दीगृह में डाला है। अब आप के भविष्यदक्ता कहां हैं जिन्हों ने तुम्हारे आगे भविष्य कहा था कि बाबुल का राजा
२० तुम्हारे विरुद्ध इस देश में न आवेगा?। परन्तु हे मेरे प्रभु राजा अब मेरी सुनिये और मेरी प्रार्थना आप के आगे ग्राह्य होवे मुझे यूनासान लेखक के घर में फेर न भेजवाइये और
२१ वहां मुझे मरने न दीजिये। तब सिदकियाः राजा की आज्ञा से उन्हों ने इरमियाः को बन्दीगृह के आंगन में रक्खा और जबलों नगर में से सारी रोटी चुक जाय उसे रोटी पोअक के सड़क में से एक एक रोटी प्रति दिन मिला करे और इरमियाः बन्दीगृह के आंगन में रहा किया।

३८ अठतीसवां पर्ब्ब।

इरमियाः का भकस में डालाजाना १—६ एक कोश्री की बिनती से निकाला जाना ७—१३ राजा को उसका मंत्र देना १४—२३ नगर के लेने लों उसका बंधन में पड़ा रहना २४—२८।

१ जब मतन के बेटे शफटियाः ने पाशूर के बेटे गदलियाः ने और शिलिमियाः के बेटे यूकाल ने और मलकीजाः के बेटे पाशूर ने इरमियाः की बातें सुनीं जो वुह सारे लोगों से
२ कहा करता था। परमेश्वर यों कहता है कि जो कोई इस

नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेगा परन्तु जो कोई कलदानियों कने जायगा सो जीता रहेगा और उसका प्राण उसके लिये लूट के समान होगा
३ और वुह जीयेगा। परमेश्वर यों कहता है कि यह नगर निश्चय बाबुल के राजा की सेना के हाथ में सौंपा जायगा जो
४ उसे लेवेगा। तब अध्यक्षों ने राजा से कहा कि हम आप की बिनती करते हैं कि यह जन घात किया जाय क्योंकि वुह योद्धाओं के हाथों को, जो इस नगर में रहते हैं और सारे लोगों के हाथों को ऐसे ऐसे बचन कहि कहि के दुर्बल करता है निश्चय यह जन इन लोगों का भला नहीं चाहता परन्तु
५ बुरा। तब सिदकियाः राजा ने कहा कि देखो वुह तुम्हारे बश
६ में है क्योंकि तुम्हारे बिपरीत राजा कुछ नहीं कर सक्ता। तब उन्हों ने इरमियाः को लिया और राजा के बेटे मलकीजा के भकस में, जो बन्दीगृह के आंगन में था डाल दिया और उन्हों ने इरमियाः को रस्सों से नीचे डाल दिया और भकस में पानी न था परन्तु दलदल, सो इरमियाः दलदल में फंस
७ गया। जब नपुंसक कोशी अबदमलक ने, जो राजा के घर में उस समय था सुना कि उन्हों ने इरमियाः को भकस
८ में डाला। उस समय राजा बनियामीन के फाटक पर बैठा था तब अबदमलक राजा के घर से बाहर जाके राजा से यह
९ कहिके बोला। हे मेरे प्रभु राजा इन लोगों ने जो कुछ इरमियाः भविष्यद्वक्ता से किया, जिसे उन्हों ने भकस में डाला है बुरा किया क्योंकि जब नगर में रोटी न रहेगी वुह भूख के मारे
१० मर जायगा। तब राजा ने कोशी अबदमलक को यह कहिके आज्ञा किई कि तू यहां से तीस जन अपने संग ले और इरमियाः
११ भविष्यद्वक्ता को मरने से आगे भकस में से निकाल। तब अबदमलक ने उन लोगों को अपने साथ लिया और राजा के भवन के भंडार की कोठरी के नीचे गया और उसमें से टूटे

फूटे पुराने चिथड़े लिये और उन्हें रस्सियों से भकस में इरमियाः
१२ के पास लटका दिया। और कोशी अबदमलक ने इरमियाः
से कहा कि अब इन टूटे फूटे और पुराने चिथड़ों को रस्सी के
नीचे अपने कांख तले डाल और इरमियाः ने वैसाही किया।
१३ और उन्हों ने रस्सियों से इरमियाः को भकस में से खींच लिया
१४ और इरमियाः बन्दीगृह के आंगन में रहा किया। तब
सिदकियाः राजा ने सेवकों को भेजा कि इरमियाः भविष्यद्वक्ता को
अपने पास तीसरे पैठ में, जो परमेश्वर के मन्दिर में है मंगवा
लिया और राजा ने इरमियाः से कहा कि मैं तुझ से एक बात
१५ पूछता हों मुझ से कुछ मत छिपा। तब इरमियाः ने सिदकियाः
से कहा कि जो मैं आप से कहों तो निश्चय मुझे आप घात न
करेंगे और जब मैं आप को मंत्र दिये होंगा तो आप मेरी
१६ न मानेंगे। तब सिदकियाः ने गुप्त में इरमियाः से किरिया
खा के कहा कि परमेश्वर के जीवन सों जिसने हमारा प्राण
सिरजा है मैं तुझे घात न करोंगा और न तुझे उन मनुष्यों
१७ को सौंपोंगा जो तेरे प्राण के गांहक हैं। तब इरमियाः ने
सिदकियाः से कहा कि सेनाओं का ईश्वर इसराईल का ईश्वर
परमेश्वर यों कहता है कि जो तू निश्चय बाबुल के राजा के
अध्यक्षों के पास जायगा तो तेरा प्राण बचेगा और यह नगर
जलाया न जायगा परन्तु तू अपने परिवार सहित बच जायगा।
१८ परन्तु जो तू बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास न जायगा
तो यह नगर कलदानियों के हाथ में सौंपा जायगा और वे
१९ उसे जलादेंगे और तू आप उनके हाथ से न बचेगा। उसके
पीछे सिदकियाः राजा ने इरमियाः से कहा कि मैं उन यहूदियों
से डरता हों जो कलदानी पास गये हैं क्या जाने वे मुझे
२० उनके हाथ में सौंपें और वे मेरी दुर्दशा करें। परन्तु इरमियाः
ने कहा कि वे तुझे न सौंपेंगे मैं तेरी बिनती करता हों कि
परमेश्वर का शब्द, जो मैं तुझे कहता हों मान जिसतें तेरा

२१ भला होवे और तेरा प्राण बचे। परन्तु जो तू बाहर जाने को नाह करे तो परमेश्वर ने यही बचन मुझ पर प्रगट किया
२२ है। अर्थात् देखो सारी स्त्रियां जो यहूदा के राजा के भवन में रहिगई हैं बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास पहुंचाई जायंगी और वे यह कहेंगी कि तेरे परमहितों ने तुझे उभाड़ा और तुझ पर प्रबल हुए उन्हों ने तेरा पांव दलदल में फंसाया है और
२३ फिर गये हैं। और तेरी सारी पत्नियों को और तेरे बालकों को वे कलदानियों के पास पहुंचावेंगे और तू उनके हाथ से न बचेगा परन्तु बाबुल के राजा के हाथ से पकड़ा जायगा और
२४ तू इस नगर के जलाने का कारण होगा। तब सिदकियाः ने इरमियाः से कहा कि यह वचन किसी से मत कहना और तू
२५ मारा न जायगा। परन्तु जो अध्यक्ष सुने कि मैं ने तुझ से बात चीत किई है और तुझ पास आवे कहें कि तू ने राजा से जो कहा है सो हमें बता और हम से मत छिपा और हम तुझे घात न करेंगे और राजा ने जो तुझे कहा है सो भी कह।
२६ तब उनसे कहियो कि मैं ने नम्रता से राजा की बिनती किई
२७ कि वुह मुझे यूनासान के घर मरने को फेर न भेजे। उसके समान सारे अध्यक्ष इरमियाः पास आये और उसे पूछा और उसने उन्हें राजा की आज्ञा के समान सारे बचन कहे और
२८ वे उस्से और न बोले क्योंकि बात चीत न सुनी गई। और जिस दिन लों यिरोशलीम लिया गया इरमियाः बन्दीगृह के आंगन में रहा और जब यिरोशलीम लिया गया वुह वहीं था।

३९ उंतालीसवां पर्ब्ब।

यिरोशलीम का लिया जाना और राजा का पकड़ा जाना १—१० इरमियाः पर दया होनी ११—१४ कोशी अबदमलक पर ईश्वर की कृपा होनी १५—१८।

१ यहूदा के राजा सिदकियाः के नवें बरस के दसवें मास बाबुल का राजा नबूक़दनज़ार अपनी सारी सेना समेत यिरोशलीम
२ पर आया और उसे घेर लिया। सिदकियाः के ग्यारहवें
३ बरस के चौथे मास की नवीं तिथि में नगर तोड़ा गया। और बाबुल के राजा के सारे अध्यक्ष अर्थात् नरगलशरीसर समगार और नबू सरसिकिम रबसरीस, और नरगाल शरीसर रबमाग, और बाबुल के राजा के सारे रहे ऊए अध्यक्ष पैठ के मध्य के
४ फाटक में रहिगये। और ऐसा ऊआ कि जब यहूदा के राजा ने और सारे वीरों ने उन्हें देखा तो भाग के राते रात राजा की बारी के मार्ग में दो भीतों के मध्य के फाटक से हो नगर
५ से बाहर निकल गये। परन्तु कलदानियों की सेना ने उनका पीछा किया और अरीहा के चौगानों में सिदकियाः को जा लिया और उसे पकड़ के हमास देश के रिबलाह में बाबुल के राजा नबूक़दनज़ार पास लाये और उसने उन पर आज्ञा
६ दिई। और बाबुल के राजा ने सिदकियाः के बेटों को रिबलाह में उसकी आंखों के आगे घात किया और बाबुल के राजा ने
७ यहूदा के सारे कुलीनों को भी मारडाला। और उसने सिदकियाः की आंखें निकाल डालीं और उसे बाबुल में ले
८ जाने के लिये पीतल की सीकरों से जकड़ा। और कलदानियों ने राजभवन को और लोगों के घरों को जला दिया और
९ यिरोशलीम की भीतें तोड़ डालीं। तब नबूसरादान पहरूओं के प्रधान ने नगर के रहे ऊए लोगों को और जो भाग के उन पास गये थे अर्थात् बचे ऊए लोगों को जो बच रहे थे बाबुल
१० में ले गया। परन्तु नबूसरादान पहरूओं के प्रधान ने तुच्छ लोगों को, जिनकी संपत्ति न थी यहूदा देश में छोड़ दिया और उसी
११ समय उन्हें खेत और दाख की बारियां दिईं। और बाबुल के राजा नबूक़दनज़ार ने इरमियाः के विषय में
१२ नबूसरादान पहरूओं के प्रधान से कहा। कि उसे लेके देखा

कर और उसे किसी रीति का दुःख मत दे परन्तु उसके कहे
१३ के समान उसे व्यवहार कर। तब राजा के पहरुओं के
प्रधान नबूसरादान और नबूशाज़बान रबसारीस, और
१४ निरगलशरीसार रबमाग। और बाबुल के सारे प्रधान भेज
के इरमियाः को बन्दीगृह के आंगन से निकाल लाये और
शाफान के बेटे अहीकाम के बेटे गिदलियाः को उसे घर पहुंचाने
१५ को सौंपा और वुह लोगों में रहने लगा। और जिस समय
इरमियाः बन्दीगृह के आंगन में बंद था परमेश्वर का बचन
१६ उस पास पहुंचा। कि जा कोशी अबदमलक से कह कि सेनाओं
का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस
नगर पर अपने बचन को बुराई के लिये लाता हों और भलाई
१७ के लिये नहीं और उस दिन वे तेरे आगे होंगे। परन्तु
परमेश्वर कहता है कि उसी दिन में तुझे बचाओंगा और जिन
लोगों से तू डरता है उन लोगों के हाथ तू सौंपा न जायगा।
१८ परन्तु निश्चय मैं तुझे छुड़ाओंगा और तू तलवार से न गिरेगा,
परमेश्वर कहता है कि मुझ पर भरोसा रखने के कारण तेरा
प्राण लूट की नाईं तुझे दिया जायगा।

४० चालीसवां पर्ब्ब।

इरमियाः का कलदानियों से छुट्टी पानी और
गदालियाः पास फिरना १—६ यहूदियों का उस
पास आना ७—१२ यूहानान का गदालिया को
इशमाईल का युक्ति बताना १३—१६।

१ परमेश्वर का बचन जो इरमियाः के पास उसके पीछे पहुंचा
जब कि पहरुओं का प्रधान नबूज़रअदान ने उसे लेके रामाह
से छोड़ दिया क्योंकि यिरोशलीम के और यहूदा के सारे बंधुओं
में जो बाबुल में बंधुआई में पहुंचाये गये वुह सीकरों से उनमें
२ बंध था। और पहरुओं के प्रधान ने इरमियाः को लेके उसे

कहा कि तेरे ईश्वर परमेश्वर ने इस स्थान के विरुद्ध बिपत्ति
३ प्रगट किई है। अब परमेश्वर ने आके अपने कहने के समान
पूरा किया है इस कारण कि तुम्हों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप
किया था और उसका वचन नहीं माना इस लिये तुम पर यह
४ पड़ा है। और देख मैं ने आज तेरी हथकड़ी से तुझे छुड़ाया है
जो मेरे संग बाबुल में जाने को तुझे अच्छा लगे तो चल और
मैं तेरी सुधि लेउंगा परन्तु जो मेरे संग बाबुल में जाने को
तुझे बुरा लगे तो रहि जा देख सारा देश तेरे आगे है जिधर
जाने को अच्छा लगे और जिधर तेरी दृष्टि में जाने को ठीक
होवे तिधर जा जबलों योंहीं है तबलों अलग न किया
५ जायगा। इस लिये शाफान के बेटे अहिकाम के बेटे गिदलियाः
के पास फिर जा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा के नगरों पर
अध्यक्ष किया है और उसके संग लोगों में रह अथवा जिधर
तेरी दृष्टि म जाने को अच्छा लगे तिधर जा उसके पीछे पहरुओं
६ के प्रधान ने उसे भोजन और दान देके बिदा किया। तब
इरमियाः अहिकाम के बेटे गिदलियाः के पास मिसपह में
गया और उसके संग उन लोगों में रहा जो देश में छोड़े
७ गये। जब सारे सेनापतियों ने, जो चौगान में
थे सुना कि बाबुल के राजा ने अहिकाम के बेटे गिदलियाः
को देश पर अध्यक्ष किया और कि उसने पुरुष और स्त्री
और लड़के बाले उसे सौंप दिये अर्थात् देश के कितने एक
८ कंगालों को जो बाबुल को बंधुआई में न पहुंचाये गये। तब
वे अर्थात् नितानियाः का बेटा इश्माईल और करियाः
के बेटे यूनासान और यूहानान और तनहूमेस का बेटा
सिरायाः और नीटोफाटी ईफाई के बेटे और एक मआकाती
का बेटा यज़ानियाः वे और उनके जन मिसपह में गिदलियाः
पास आये। तब शाफान के बेटे अहिकाम के बेटे गिदलियाः
ने उनसे और उनके जनों से किरिया खा के कहा कि तुम

लोग कलदानियों की सेवा करने को मत डरो बाबुल के राजा की सेवा करो और देश में रहो और इसी में
१० तुम्हारा भला होगा। मैं जो हों देखो जो कलदानी हमारे पास आवेंगे उनके आगे खड़ा होने को मैं मिसपह में रहोंगा परन्तु तुम लोग दाखरस और ग्रीष्म फल और तेल एकट्ठा करके अपने अपने पात्रों में रक्खो और अपने अपने नगरों
११ में जो तुमने लिया है बसो। जब सारे यहूदियों ने, जो मवाब में और अमून के सन्तानों में और अदूम में और जो सारे देश में थे सुना कि बाबुल का राजा यहूदा में कुछ लोग छोड़ गया और कि उसने शाफान के बेटे अहिकाम के बेटे गिदलियाः
१२ को उन पर अध्यक्ष कियाथा। तब सब यहूदी सारे स्थानों से जहां जहां वे खेदे गयेथे यहूदा के देश मिसपह में गिदलियाः पास आये और दाख रस और ग्रीष्म फल बहुताई से एकट्ठे
१३ किये। और करियाः का बेटा योहानान और सेना के सारे प्रधान जो चैागान में थे मिसपह में गिदलियाः पास आये।
१४ और उसे कहा कि तुझे चेत है कि अमून के सन्तान के राजा बालिस ने नसानियाः के बेटे इश्माईल को तेरा प्राण लेने को भेजा है परन्तु अहिकाम के बेटे गिदलियाः ने उनकी प्रतीति
१५ न किई। तब करियाः के बेटे योहानान ने मिसपह में गिदलियाः से चुपके से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों कि मुझे जाने दे जिसतें मैं नसानियाः के बेटे इश्माईल को घात करों और कोई न जानेगा वुह किसलिये तेरा प्राण लेवे और सारे यहूदा, जो तुझ पास एकट्ठे हुए हैं यहूदा के रहे हुए नष्ट
१६ होंं?। परन्तु अहिकाम के बेटे गिदलियाः ने करियाः के बेटे योहानान से कहा कि तू ऐसा काम मत कर निश्चय तू इश्माईल के विषय में झूठ कहता है।

इश्माईल का उपद्रव १—१० यूहानान का लोगों को उसके हाथ से छुड़ाना और मिसर की ओर रुख करना ११—१८ ।

१ और सातवें मास में ऐसा हुआ कि राजवंश इलीशमा के बेटे नसानियाः का बेटा इश्माईल और राजा के बड़े बड़े प्रधान दस जन उसके संग मिसपह में अहिकाम के बेटे गिदलियाः
२ पास आये और उन्हों ने मिसपह में एकट्ठे रोटी खाई। तब नसानियाः का बेटा इश्माईल और उसके संगी दस जन उठे और शाफान के बटे अहिकाम के बेटे गिदलियाः को, जिसे बाबुल
३ के राजा ने देश पर अध्यक्ष किया था। खड्ग से मार के घात किया और सारे यहूदी, जो गिदलियाः के संग मिसपह में थे और कलदानी योडा जो वहां पाये गये उन्हें इश्माईल ने घात
४ किया। और गिदलियाः के घात करने के दूसरे दिन जब लों
५ कोई न जानता था यों हुआ। कि लोग शिकम से और शीलूह से और सामरा से अस्सी जन दाढ़ी मुड़ाये हुए और कपड़ फाड़े हुए और अपने को काटे हुए परमेश्वर के मन्दिर में
६ नैबेद्य और धूप अपने हाथ में लिये हुए आये। तब नसानियाः का बेटा इश्माईल मिसपह से रोते रोते उनसे भेंट करने को गया और उनसे भेंट होतेही उसने उन्हें कहा कि
७ अहिकाम के बेटे गिदलियाः के पास चलो। और यों हुआ कि जब वे नगर के मध्य में आये तब नसानियाः के बेटे इश्माईल और उसके संगियों ने उन्हें घात करके एक गड़हे में डालदिया।
८ परन्तु उनमें दस जन पाये गये जिन्हों ने इश्माईल से कहा कि हमें घात मत कर क्योंकि हमारे पास खेतों में गोहूं और जव और तेल और मधु छिपे हुए धरे हैं इस लिये उसने
९ उनके भाइयों में उन्हें घात न किया। अब जिस गड़हे में इश्माईल ने उन मनुष्यों की लोथों को फेंका था, जिन्हें उसने गिदलियाः के साथ घात किया सोई था जिसे राजा आसा

ने इसराईल के राजा बअशः के कारण बनाया था नसानियाः
१० के बेटे इश्माईल ने जूझे ऊओं से भर दिया। और मिसपह के बचेऊओं को बंधुआई में ले गये अर्थात् राज पुत्रियों को और मिसपह के सारे रहेऊओं को, जिन्हें नवूज़रदनज़ार पहरूओं के प्रधान ने अहिकाम के बेटे गिदलियाः को सौंपा था उन्हें नसानियाः का बेटा इश्माईल बंधुआ करके अमून के
११ सन्तान के देश की ओर चल निकला। परन्तु जब करियाः के बेटे यूहानान ने और उसके साथ के सारे सेनापतियों ने सारी बुराई सुनी जो नसानियाः के बेटे इश्माईल ने
१२ किई थी। तब वे सारे लोगों को लेके नसानियाः के बेटे इश्माईल से लड़ने को निकले और गबियून के महा जलों पर
१३ उसे जा ही लिया। और ऐसा ऊआ कि जब इश्माईल के संग के लोगों ने करियाः के बेटे यूहानान को और उसके संग उन के
१४ सारे अध्यक्षों को देखा तो आनन्दित ऊए। तब जितने लोगों को इश्माईल ने मिसपह से बंधुआ किया था वे लौट के
१५ करियाः के बेटे योहानान के पास गये। परन्तु नसानियाः का बेटा इश्माईल आठ जन के संग यूहानान से बच निकल के
१६ अमूनियों के सन्तानों कने गया। तब करियाः के बेटे यूहानान ने और उसके संग के सेनाओं के सारे अध्यक्षों ने सारे बचे ऊओं को लिया जिन्हें उसने अहिकाम के बेटे गिदलियाः के घात होने के पीछे मिसपह से नसानियाः के बेटे इश्माईल के हाथ से छुड़ाया था बलवंत योद्धाओं को और स्त्रियों को और बालकों को और नपुंसकों को, जिन्हें वुह गबियून से फेर
१७ लाया था। और वे गीरुसकिमहाम में, जो बैतुल्लहम के लग है जा रहे जिसतें कलदानियों की पऊंच से परे होके मिसर
१८ को जायें। क्योंकि नसानियाः के बेटे इश्माईल के अहिकाम के बेटे गिदलियाः को, जिसे बाबुल के राजा ने देश पर अध्यक्ष किया था घात करने के कारण से वे उनसे डरते थे।

यूहानान का इरमियाः से परमेश्वर से बूझवाना १—६ उसका बताना कि यहूदियः में भला परन्तु मिसर में बुरा होना ७—१८ उनका कपट प्रगट करना १९—२२ ।

१ तब सारे सेनापति और करियाः का बेटा यूहानान और होशाइयाः का बेटा यज़नियाः और छोटे बड़े सारे लोग
२ पास आये । और इरमियाः भविष्यद्वक्ता से कहा कि हमारी बिनती तेरे आगे पहुंचे और हमारे लिये अर्थात् इन सारे बचे हुए के लिये अपने ईश्वर परमेश्वर से प्रार्थना कर क्योंकि
३ तेरी आंखें हमें देखती हैं, बहुत से हम थोड़े रहगये । जिसतें तेरा ईश्वर परमेश्वर हमें जतावे कि किस मार्ग पर हम चलें
४ और कौनसा कार्य्य करें । तब इरमियाः भविष्यद्वक्ता ने उन्हें कहा कि मैं ने सुना सो देखो तुम्हारे वचन के समान मैं तुम्हारे ईश्वर परमेश्वर की प्रार्थना करोंगा और जो कुछ परमेश्वर उत्तर देगा मैं तुम पर प्रगट करोंगा और न छिपाओंगा ।
५ तब उन्हों ने इरमियाः से कहा कि जो तेरा ईश्वर परमेश्वर कहे उसके समान जो वुह तेरे द्वारा से हम से कहे यदि हम न करें तो परमेश्वर सच्चा और विश्वस्त साक्षी हम पर होवे ।
६ चाहे भला हो चाहे बुरा हम अपने ईश्वर परमेश्वर का जिस पास हम तुझे भेजते हैं शब्द मानेंगे जिसतें जब हम अपने ईश्वर परमेश्वर का शब्द मानें तब हमारा भला होवे ।
७ दस दिन पीछे यों हुआ कि परमेश्वर का वचन इरमियाः
८ पास पहुंचा । तब उसने करियाः के बेटे योहानान को और उसके साथ के सेनापतियों को और छोटे से बड़ सारे लोगों
९ को बुला के कहा । कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर जिसके पास तुम लोगों ने अपनी बिनती पहुंचाने को मुझे
१० भेजा यों कहता है । कि जो तुम लोग निश्चय इस देश में बने रहोगे तो मैं तुम्हें बनाओंगा और न ढाओंगा परन्तु तुम्हें

लगाओंगा और न उखाड़ोंगा क्योंकि मैं ने जो तुम्हारी बुराई
११ किई है उसे मैं पछताताहों। बाबुल के राजा को, जिसे डरतेहो
मत डरो परमेश्वर कहता है कि उसे मत डरो क्योंकि तुम्हें
उद्धार करने को और उसके हाथ से छुड़ाने को मैं तुम्हारे
१२ साथ होंगा। और मैं तुम पर दया करोंगा और वुह तुम
पर दया करेगा और तुम्हें तुम्हारेही देश में स्थिर करेगा।
१३ परन्तु जो तुम लोग कहो कि हम इस देश में न रहेंगे यहां
लों कि अपने ईश्वर परमेश्वर का बचन न मान के कहो कि
१४ नहीं। हम मिसर के देश को जायेंगे जिसतें हम लड़ाई न
देखें और तुरही का शब्द न सुनें और रोटी के मारे भूखे न
१५ होवें और वहां रहेंगे। इस लिये अब भी हे यहूदा के बचे
ऊए लोगो परमेश्वर का बचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर
१६ इसराईल का ईश्वर यों कहता है। कि जो तुम लोग सर्वथा
मिसर में जाने को और रहने को रुख करोगे तो ऐसा होगा
कि जिस तलवार से तुम लोग डरते हो वही तुम्हें मिसर में
जाही लेगी और जिस अकाल के तुम लोग खटके में हो वुह
तुम्हारे पीछे पीछे मिसर में जायगा और तुम लोग वहां
१७ मरोगे। और यों होगा कि सारे लोग जिन्हों ने बसने के
लिये मिसर में जाने को रुख किया है सो तलवार से और
अकाल से और मरी से मरेंगे और उनमें से एक भी उस
१८ बुराई से, जो मैं उन पर लाओंगा न बचेगा। क्योंकि सेनाओं
का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि जैसा मेरा
कोप और क्रोध यिरोशलीम के निवासियों पर उंडेला गया
तैसा जब तुम लोग मिसर में पऊंचोगे मेरा कोप तुम पर
उंडेला जायगा और तुम लोग एक घिन और आश्चर्य और
साप और निन्दा होओगे और इस स्थान को फेर न देखोगे।
१९ हे यहूदा के बचे ऊये लोगो परमेश्वर तुम्हारे विषय में यों
कहता है, मिसर को मत जाओ तुम लोग निश्चय जानोगे

२० क्योंकि आज मैं ने तुम्हारे आगे साक्षी दिई है। निश्चय तुम्हों ने अपने प्राण के विरुद्ध छल किया है क्योंकि मुझे यह कहिके तुम लोगों ने अपने ईश्वर परमेश्वर के पास भेजा कि हमारे लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर को प्रार्थना कर और सब जो हमारा ईश्वर परमेश्वर कहेगा सो हम से कह और हम मानेंगे।
२१ और आज के दिन मैं ने तुम्हों पर प्रगट किया है परन्तु तुम ने अपने ईश्वर परमेश्वर का शब्द और किसी बात को जिस के
२२ लिये उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है नहीं माना है। अब इस लिये निश्चय जानोगे कि जिस स्थान को तुम लोगों ने वास करने को चुना है उसमें तुम तलवार से और अकाल से और मरी से मरोगे।

४३ तेंतालीसवां पर्ब्ब ।

सभों को लेके यूहानान का मिसर को जाना १—७ मिसर के कलदानियों के वश में होने का भविष्य वचन ८—१३।

१ और यों हुआ कि जब इरमियाः सारे लोगों को परमेश्वर के सारे बचन, जिनसे उनके ईश्वर परमेश्वर ने उसे उन पास
२ कहिला भेजा था कहिचुका। तब होशायाः के बेटे अजरियाः ने और करियाः के बेटे योहानान ने और सारे अहंकारियों ने इरमियाः से यों कहा कि तू झूठ कहता है हमारे ईश्वर परमेश्वर ने यह कहने को तुझे नहीं भेजा है कि मिसर में
३ बसने को मत जा। परन्तु हमें कलदानियों के हाथ में घात के लिये सौंपने को और बाबुल में बंधुआई में ले जाने को
४ निरियाः के बेटे बारुक ने तुझे हमारे विरुद्ध उभाड़ा है। इस कारण करियाः के बेटे योहानान ने और सारे सेनापतियों ने और सारे लोगों ने यहूदा के देश में रहने को परमेश्वर का
५ शब्द न माना। परन्तु करियाः के बेटे योहानान और सारे

सेनापतियों ने यहूदा के बचे ऊए सारे लोगों को, जो सारे जातिगणों में से जहां जहां वे खेदे गये थे यहूदा देश में बसने के
६ लिये फिर आये। अर्थात् पुरुषों और स्त्रियों को और लड़कों को और राजपुत्रियों को और हर एक जन को जिसे पहरुओं के अध्यक्ष नबूसरादान ने शाफान के बेटे अहिकाम के बेटे गिदलियाः के साथ छोड़ा था और इरमियाः भविष्यद्वक्ता को
७ और निरियाः के बेटे बारूक को। लेके मिसर देश को गये क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर का शब्द नहीं माना और वे तहफ़नहीज़
८ लों पऊंचे। तब परमेश्वर का यह बचन तहफ़नहीज़
९ में इरमियाः पास यह कहते ऊए पऊंचा। कि अपने हाथ में बड़े बड़े पत्थर ले और उन्हें ईंट की भट्ठी की मिट्टी में जो
१० तहफ़नहीज़ में फरऊन के घर की पैठ में है यहूदा के कई जनों की दृष्टि में छिपा। और उनसे कह कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं भेज के अपने दास बाबुल के राजा नबूकदनज़ार को लाऊंगा और उसके सिंहासन को इन्हीं पत्थरों के ऊपर रक्खोंगा जिसे मैं ने छिपाया है और
११ वह अपना बिभव उन पर फैलावेगा। और वुह आके मिसर देश को मारेगा, जो मृत्यु के लिये है मृत्यु से, और जो बंधुआई के लिये है बंधुआई से और जो तलवार के लिये है तलवार से
१२ मारेगा। और मैं मिसर के देवों के मन्दिरों में एक आग बारोंगा और वुह उन्हें जलावेगा और उन्हें बंधुआई में ले जायगा और जैसे गड़रिया अपने वस्त्र पहिनता है तैसाहीं वुह मिसर देश को पहिनेगा और वुह वहां से कुशल से चला
१३ जायगा। और वुह सूर्य्य के मन्दिर की मूर्त्तिन को जो, मिसर के देश में हैं टुकड़ा टुकड़ा करेगा और मिसर के देवों के मन्दिरों को आग से जला देगा।

मूर्त्ति पूजा के लिये यहूदियों के साथ परमेश्वर का संबाद करना १—१० उनका नाश बताना ११—१४ यहूदियों का मूर्त्तिन से पिलचा रहना १५—१९ उनके और मिसर के राजा के नाश का समाचार २०—३०।

१ सारे यहूदियों के बिषय में जो मिसर देश में और मगदूल में और तहफनीज़ में और नोफ में और पात्रोस के देश में रहते
२ थे यह कहते हुए बचन इरमियाः पास पहुंचा। सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि बुराइयों को जो मैं यिरोशलीम पर और यहूदा के सारे नगरों पर लाया हों
३ तुम लोगों ने देखा है। क्योंकि देखो उनकी दुष्टता के कारण जो उन्हों ने उपरी देवों की सेवा के लिये जिन्हें वे और उनके पितर न जानते थे मुझे रिस दिलाने के लिये धूप जलाया वे आज
४ के दिन उजाड़ हैं और उनमें कोई निवासी नहीं। और मैं ने अपने भविष्यद्वक्ता सेवकों से तड़के उठते हुए तुम्हों को कहला भेजा कि यह घिनित कार्य्य जिस्से मैं घिन करता हों मत करो।
५ और उपरी देवों के लिये धूप मत जलाओ परन्तु उन्हों ने न
६ सुना और अपनी दुष्टता से फिरने को कान न झुकाये। इस लिये मेरा कोप और मेरी रिस यहूदा के नगरों के बिरुद्ध और यिरोशलीम के सड़कों के बिरुद्ध उंडेली गई है और मेरी रिस बर उठी है और वे आज के दिन की नाईं एक उजाड़
७ और शून्य हो रहे हैं। और अब सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि यहूदा के मध्य में से पुरुष और स्त्री और बालक और दूधपिउआ काट डालने को जिसतें तुम्हें बचे हुए न रहें तुम लोग अपने प्राण के
८ बिरुद्ध क्यों बुराई करते हो?। कि मिसर देश में जहां तुम लोग बसने गये हो उपरी देवों के लिये धूप जलाने में अपने हाथ की क्रियों से मुझे रिस दिलाते हो जिसतें तुम्में से काटा

जाय और जिसतें तुम लोग एक स्राप और पृथिवी के सारे
९ जाति गणों में निन्दित होओ? । अपने पितरों की दुष्टताओं
को और यहूदा के राजाओं की दुष्टताओं को और राजपुत्रों
की दुष्टताओं को और अपनेही दुष्टताओं को और अपनी
पत्नियों की दुष्टताओं को, जो उन्हों ने यहूदा के देश में और
१० यिरोशलीम की सड़कों में किई हैं भूल गये हो? । वे आज लों
न पछताये और न डरे और मेरी व्यवस्था और मेरी बिधिन
को, जो मैं ने तुम्हारे और तुम्हारे पितरों के आगे धरी हैं
११ पालन नहीं किया । इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराईल
का ईश्वर यों कहता है, देखो बुराई के लिये अर्थात् यहूदा को
काट डालने के लिये मैं अपना मुंह तुम्हारे बिरुद्ध करता हों ।
१२ और मैं यहूदा के बचे ऊओं को जिन्हों ने मिसर के देश में
जाके रहने को रुख किया है लेउंगा और वे सब के सब मिसर
देश में नष्ट होंगे वे तलवार से और अकाल से नष्ट होंगे अति
छोटे से अति बड़े लों तलवार से और अकाल से मर जायेंगे
और वे धिक्कार और घबराहट और स्राप और निन्दा हो
१३ जायेंगे । क्योंकि जैसा मैं ने तलवार से और अकाल से और
मरी से यिरोशलीम से पलटा लिया है तैसा मैं मिसर के
१४ निवासियों से पलटा लेउंगा । और यहूदा के जो बचे ऊए
लोग मिसर में बास करने को आये हैं और यहूदा देश में
फिर जाने को जिधर फिर जाने को और वहां रहने को
अपना मन लगाया है एक भी न बचेगा और न जीयेगा बचे
१५ ऊओं को छोड़ कोई न फिरेगा । तब सारे लोगों ने
जो जानते थे कि हमारी पत्नियों ने उपरी देवों के लिये धूप
जलाया था और सारी स्त्रियों ने जो पास खड़ी थीं एक बड़ी
जथा अर्थात् सारे लोगों ने जो मिसर देश में पतरूस में रहते
१६ थे इरमियाः को उत्तर दे के कहा । कि जो बचन तू ने परमेश्वर
१७ के नाम से हमें कहा है हम तेरी न मानेंगे । परन्तु जैसा हमारे

मुंह से निकल गया स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाने में और तर्पण करने में जैसा हमने और हमारे पितरों ने और हमारे राजाओं ने और हमारे अध्यक्षों ने यहूदा के नगरों में और यिरोशलीम की सड़कों में किया था जब हमारा भोजन बहुत था और हम भाग्यमान थे और बिपत्ति न देखते थे जैसा
१८ हमारे मुंह से निकल गया तैसा हम निश्चय करेंगे। परन्तु जब से हम लोग स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाना और तर्पण करना छोड़ दिया तब से हमारे लिये हर बात की घटती हुई और हम तलवार से और अकाल से क्षीण हुए हैं।
१९ और जब हम स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाते थे और तर्पण करते थे तब क्या हम ने अपने पुरुषों को छोड़ के उसकी पूजा के लिये रोटी बनाई और उसके लिये नैवेद्य चढ़ाया।
२० तब इरमियाः ने सारे लोगों को क्या पुरुष क्या स्त्रियों को अर्थात् सारे लोगों को जिन्हों ने उसे उत्तर दिया था यह कहा।
२१ तुमने यहूदा के नगरों में और यिरोशलीम की सड़कों में तुम ने और तुम्हारे पितरों ने और तुम्हारे राजाओं ने और तुम्हारे अध्यक्षों ने और देश के लोगों ने उनके साथ जो धूप जलाये थे तो क्या परमेश्वर ने उसे स्मरण नहीं किया? और क्या वुह उसके
२२ आगे ग्रहण हुआ?। परन्तु तुम्हारी दुष्ट क्रिया के कारण और तुम्हारे घिनित कार्यों के लिये परमेश्वर सहि न सका इस लिये तुम्हारा देश एक उजाड़ और चमत्कार और स्राप हुआ है
२३ यहां लों कि आज के दिन की नाईं निवासी रहित है। इस कारण कि तुम्हों न धूप जलाया है और परमेश्वर का अपराध किया है और परमेश्वर का शब्द नहीं माना और उसकी व्यवस्था और उसकी विधिन और साक्षियों के समान नहीं चले इस लिये यही बिपत्ति तुम लोगों पर पड़ी जैसा
२४ आज है।　　इरमियाः ने सारे लोगों से और सारी स्त्रियों से यह भी कहा कि हे सारे यहूदा जो मिसर देश में

हैं परमेश्वर का वचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर इसराएल
२५ का ईश्वर यों कहता है। कि तुम लोगों ने और तुम्हारी स्त्रियों
ने जिन्हों ने तुम्हारे द्वारा से कहा है और तुम लोगों ने अपने
हाथों से यह कहि के पूरा किया है कि अपनी मनौतियों को जो
हम ने स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाने को और तर्पण
करने को मानी हैं निश्चय पूरी करेंगे वे निश्चय तुम्हारी
मनौतियां पूरी करेंगे वे निश्चय तुम्हारी मनौतियां पूरी करेंगे।
२६ इस लिये सारे यहूदा जो मिसर देश में रहते हैं परमेश्वर
का वचन सुनो परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं ने अपने
महत नाम की किरिया खाई है यह कहि के मेरा नाम यहूदा
के किसी जन से मिसर के सारे देश में फेर लिया न जायगा कि
२७ परमेश्वर के जीवन सों। देखो मैं बुराई के लिये उन्हें अगोरोंगा
और भलाई के लिये नहीं और मिसर देश में के यहूदा के
हर एक जन को तलवार से और अकाल से क्षीण करोंगा
२८ जबलों वे बिलाय न जायें। और तलवार से बचे हुए जो
मिसर देश से यहूदा के देश में फिर आवेंगे गिनती में थोड़े
होंगे और यहूदा के सारे उबरे हुए लोग जो मिसर में
रहने को आये हैं जानेंगे कि किस का वचन ठहरेगा मेरा
२९ अथवा उनका। और यह तुम्हारे लिये एक पता होगा कि
मैं हीं हों जो इस स्थान में तुम्हें पलटा देता हों जिसतें तुम जानो
३० कि मेरे वचन निश्चय तुम्हारे दुःख के लिये पूरे होंगे। देखो
जैसा मैं ने यहूदा के राजा सिदकिया को, उसके बैरी बाबुल के
राजा नबूक़दनज़ार के हाथ में सौंपा, जो उसके प्राण का गाहक
था तैसा मैं मिसर के राजा फरऊन हफ़रा को उसके बैरियों
के हाथ और उसके प्राण गाहकों के हाथ सौंपोंगा।

बारूक का बिस्मित होना और शांति पानी १—५ ।

१ जो वचन इरमियाः भविष्यद्वक्ता ने यहूदा के राजा युसैया के बेटे यऊयाकीम के चौथे बरस में निरियाः के बेटे बारूक से
२ उसके पीछे कहा कि उसने इन बातों को लिखा। हे बारूक तेरे
३ विषय में परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है। कि तू ने कहा है कि हाय मुझ पर क्योंकि परमेश्वर ने मेरे दुःख पर शोक मिलाया है मैं अपनी ठंडी सांसों से थक गया और
४ चैन न पाया है। तू उसे यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख जो मैं ने बनाया है सो ढाता हों और जो मैं ने लगाया
५ है सो उखाड़ता हों अर्थात् यह सारा देश। क्या तू अपने लिये बड़ी बात खोजता है? मत खोज क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देख मैं सब प्राणियों पर बुराई लाता हों परन्तु तू जहां कहीं जायगा मैं तेरे प्राण को लूट के लिये तुझे देउंगा।

४६ छयालीसवां पर्ब्ब ।

फरउननीकू की सेना के नाश का भविष्यवचन १—१२ और मिसर का नबूकदनज़ार के बश में पड़ना १३—२६ याकूब के उभड़ने का वचन २७—२८ ।

१ परमेश्वर का वचन जो जातिगणों के विषय में इरमियाः
२ भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा। मिसर के विषय में, मिसर के राजा फरऊननीकू की सेना के विषय में जो फरात नदी पास करकमश में थी जिसे यहूदा के राजा युसैया के बेटे यहूयाकीम
३ के चौथे बरस बाबुल के राजा नबूकदनज़ार ने मारा था। तुम
४ फरी और ढाल की आज्ञा करके संग्राम के लिये बढ़ो। घोड़ों पर साज रक्खो हे घोड़चढ़ो टोप पहिन पहिन लैस हो रहो
५ और भालों को चमकाओ झिलम पहिनो। मैं ने तुझे क्यों बिस्मित देखा है? भागो उनके बलवंत मारे पड़े हैं और वे

शीघ्रता से भाग गये पीछे नहीं ताका है परमेश्वर कहता है कि
६ चारो ओर डर है। चालाक भागने न पावें और बलवंत बचने
न पावेंगे उत्तर की ओर फुरात नदी के लग ठोकर खाये हैं और
७ गिर पड़े। यह कौन है जो नदी की नाईं उमड़ा आता है जिसके
८ पानी बाढ़ की नाईं बढ़ते हैं। नदी की नाईं मिसर उठता है
और उसके पानी बाढ़ की नाईं बढ़ते हैं वुह कहता है कि मैं बढ़ोंगा
और देश को छालोंगा और नगर को उसके निवासी सहित
९ नाश करोंगा। हे घोड़ो चढ़ जाओ और भय से कार्य्य करो
हे रथो गर्जो और योद्धा अर्थात् कोश और फट ढाल लिये
१० ऊए और लूदीम जो धनुष बिद्या में निपुण निकलो। परन्तु यही
परमेश्वर का दिन है क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर के पलटे का
दिन, जिसतें अपने बैरियों से पलटा लेवे और तलवार
खालेगी वुह उनके लोहू में बोरी जाके अघायगी क्योंकि उत्तर
देश में फुरात नदी के लग सेनाओं के प्रभु परमेश्वर का एक
११ यज्ञ है। हे मिसर की कुंआरी पुत्री गिलियाद को चढ़ जा
और ओषध ले तू ने ब्यथा ओषध बटोरा है क्योंकि तू चंगी न
१२ होगी। जातिगणों ने तेरा अपमान सुना है और तेरे चिल्लाने
से पृथिवी भर गई है क्योंकि बलवंतों ने बलवंतों पर ठोकर खाया
१३ है वे दोनों एकट्ठे गिरे हैं। जो बचन परमेश्वर ने इरमियाः
भविष्यद्वक्ता से बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के आने और
१४ मिसर के देश के मारने के विषय में कहा। मिसर में प्रगट
करो मदगल में प्रचारो, नोफ में भी प्रचारो और तफ़नहीज़
में कहो, स्थिर खड़ा रह और आप को लैस कर क्योंकि तलवार
१५ ने तेरी चारो ओर के लोगों को खाया है। तेरा बलवंत क्यों
गिराया गया? वुह न ठहरा क्योंकि परमेश्वर ने उसे ढकेल
१६ दिया। उसने बहुतों को ठोकर खिलाया हां गिराया है इस
लिये उन्हों ने एक दूसरे से कहा कि उठो हम अंधेरी की तलवार
के कारण अपने अपने लोगों में और अपनी जन्म भूमि में

१७ फिर जावें। वहां वे चिल्लाये कि हे मिसर के राजा फरऊन
१८ एक हौरा ने ठहराये ऊए समय को भंग किया है। राजा
जिसका नाम सेनाओं का परमेश्वर कहता है, अपने जीवन
सों जैसे पर्ब्बत तावोर और जैसे करमिल समुद्र के लग निश्चय
१९ एक जन आवेगा। हे मिसर की निवासी पुत्री निकलजाने को
अपनी संपत्ति सिद्ध कर क्योंकि नोफ एक उजाड़ हो जायगा
वुह नाश भी किया जायगा जिसतें कोई निवासी न होवे।
२० मिसर एक सुन्दर रूप कलार है उत्तर से एक झोंका उसके
२१ विरुद्ध आता है। उसकी भड़इत सेना उसके मध्य में मोटे बैलों
की नाईं है तथापि ये भी अपनी पीठ फेरे हैं और एकट्ठे भाग
हैं और न ठहरे क्योंकि उनके नाश का दिन आया था उनके
२२ पलटा का दिन उन पर पऊंचा था। उसका शब्द सांहक के
समान निकलेगा जब वे सेना और कुल्हाड़ी लिये ऊए जायेंगे
२३ और लकड़हाड़ों की नाईं उनके विरुद्ध आओ। परमेश्वर
कहता है कि उसका वन काट डालो जिसतें ढूंढ़ते ऊए पाये
न जायें यद्यपि वे टिड्डी से भी अधिक, और अगणित हैं।
२४ मिसर की कन्या घबरा गई वुह उत्तर के लोगों के हाथ में सौंपी
२५ गई। सेनाओं के परमेश्वर इसराईल के ईश्वर ने कहा है कि
देख मैं अमून को और नू को और फरऊन को और मिसर को और
उनके देवों को और उनके राजाओं को अर्थात् फरऊन को और
२६ उसके आश्रितों को दंड देउंगा। और उन्हें अपने प्राण के गाहकों
के हाथ अर्थात् बाबुल के राजा नबूक़दनज़ार के हाथ और
उसके सेवकों के हाथ सौंपोंगा परन्तु परमेश्वर कहता है कि
उसके पीछे वुह अगिले दिनों के समान बसाया जायगा।

२७ परन्तु हे मेरे दास याक़ूब तू मत डर और हे इसराईल
तू बिस्मित मत हो क्योंकि देख मैं तुझे बड़े दूर से और तेरे
वंश को उनकी बंधुआई के देश से लाओंगा और याक़ूब फेर
चैन पावेगा और वुह निर्भय से रहेगा और उसे कोई न

२८ डरावेगा। परमेश्वर कहता है कि हे मेरे दास याक़ूब तू मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ होऊंगा जहां जहां मैं ने तुझे खेदा है मैं वहां के सारे देश गणों का अंत करोंगा तथापि तेरा अंत सर्वथा न करोंगा परन्तु मैं तुझे तौल के ताड़ना करोंगा और सर्वथा दंड रहित तुझे न छोड़ोंगा।

४७ सैंतालीसवां पर्ब्ब ।

फलस्तानियों के बिरुद्ध भविष्य वचन १—७ ।

१ फरऊन के गज़ा मारने से आगे परमेश्वर का बचन फलस्तानियों
२ के विषय में इरमियाः भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा। परमेश्वर यों कहता है, देख उत्तर से जल चढ़े आते हैं और उमड़ती हुई एक धारा होगी और देश को और सब को जो उसमें हैं और नगर को और उसके निवासियों को डुबावेगी तब मनुष्य
३।४ चिल्लावेंगे और देश के सारे निवासी बिलाप करेंगे। सारे फलस्तानियों के उजाड़ करने का और सूर और सैदून से उबरे हुए सहायक को काट डालने के दिन के आने के कारण उसके चालाकों के खुरों के घोड़ों के शब्द से और उसकी पहियों की बहुताई के हांकने के हड़हड़ाने से पिता अपने हाथ की ढीलाई के कारण से अपने बालकों को देखने को न फिरे क्योंकि परमेश्वर फलस्तानियों को और कफतूर देश के
५ रहे हुए को उजाड़ेगा। गज़ा पर चंदुलापन आई है, अश्क़लून चुप किया गया, उनकी तराई के उबरे हुए तू आप को कबलों
६ चीरेगा। हे परमेश्वर की तलवार तू कबलों चैन न करेगी तू
७ अपनी काठी में हट जा, फिर जा, और स्थिर हो। जबलों अश्क़लून के बिरुद्ध और समुद्र के बिरुद्ध परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई है वुह क्योंकर चैन कर सके वहां उसे ठहराया है।

मोआब के विरुद्ध भविष्यबचन १—१० और उसका भाग्यमान होना ११—१५ उसका नाना पाप १६—४७ ।

१ मोआब के विषय में सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि हाय निबू पर, क्योंकि वुह लूटा गया है किरियातार्इम घबराया ऊआ और लिया गया है ऊंचा गढ़ २ घबराया ऊआ और बिस्मित ऊआ है । हश्बून के लिये मोआब बड़ाई न करेगा उन्हों ने यह कहिके उस पर बुरी युक्ति बांधी है कि आओ हम जातिगणों में से उसे काटें तू भी हे मदमन चुपकिया ३ जायगा और एक तलवार तेरे पीछे पड़ेगी । होरोनायिम से रोने का शब्द और उजाड़ और बड़ा बिनाश सुना जाता है । ४ मोआब उजाड़ा गया उसके घटाये ऊओं ने रोना सुनाया है । ५ निश्चय लुहित की चढ़ाई में बिलाप पर बिलाप उठेगा निश्चय होरोनायिम के उतार में मेरे बैरियों ने नाश का रोना सुना है । ६ भागो अपना अपना प्राण बचाओ और अरण्य में मुरझाये ऊए ७ पेड़ की नाईं हो जाओ । क्योंकि तू ने अपनी कमाई पर भरोसा किया है इस लिये तू अपने धन के संग पकड़ा जायगा और कमोश अपने पुरोहित और अध्यक्ष सहित बंधुआई में जायगा । ८ और लूटेरा भी हर एक नगर पर आवेगा और कोई नगर न बचेगा परमेश्वर के कहने के समान तराई नष्ट हो जायगी ९ और चैागान उजाड़ा जायगा । मोआब को उड़ जाने के लिये पंख दे और उसके नगरों को एक उजाड़ होने दे जिसतें १० उनमें कोई निवासी न होवे । जो मनुष्य छल से परमेश्वर का कार्य्य करता है वुह स्रापित है और जो अपनी तलवार को ११ लोह्न से रख छोड़ता है सो स्रापित है । मोआब अपनी तरुणाई से चैन में और अपने तरछट पर बैठा है और पात्र से पात्र में नहीं उंडेला गया और वुह बंधुआई में न गया इस लिये उसका स्वाद उसमें बना है और उसका बास नहीं

१२ पलटा। तथापि देख परमेश्वर कहता है कि वे दिन आते हैं जब कि मैं उसके पास श्रमिकों को भेजोंगा जो उसे भ्रमावेंगे और वे उसके पात्र छूछे करेंगे और उनके कुप्पे फाड़ डालेंगे।
१३ जैसा इसराईल का घराना अपनी आशा बैतील से लज्जित
१४ ऊआ तैसा मोआब कमोश से लज्जित होगा। तुम लोग क्योंकर कहोगे कि हम बलवंत और संग्राम के लिये बीर
१५ जन हैं। राजा जिसका नाम सेनाओं का परमेश्वर है यों कहता है कि मोआब का और उसके नगरों का नाशक चढ़ गया है और उसके चुने ऊए तरुण घात करने को उतर गये
१६ हैं। मोआब का बिनाश पऊंचता है और उसको बिपत्ति
१७ शीघ्र बढ़ी आती है। उसके चारो ओर के सारे लोगो बिलाप करो तुम सब जो उसका नाम जानते हो कहो कि बलका
१८ राजदंड और सुन्दर छड़ी कैसी टूटी पड़ी है। हे दीबोन की निवासिनी पुत्री अपने ऐश्वर्य से उतर और प्यासी बैठ क्योंकि मोआब का नाशक तेरे बिरुद्ध चढ़ आया है वुह तेरे दृढ़ गढ़ों
१९ का नाशक। हे अरूईर की निवासिनी मार्ग के लग खड़ी होके देख और भगवैये से और बचे ऊए से पूछ कि क्या ऊआ है?।
२० मोआब घबराया है क्योंकि वुह ढाया गया है बिलाप करो
२१ और रोओ अरनून में प्रचारो कि मोआब लुट गया। समथर भूमि पर और होलून पर और यहास पर और मेफास
२२ पर। और दैबून पर और नबू पर और बैतदिबलासाईम
२३ पर। और किरियासाईम पर और बैतगामूल पर और
२४ बैतमऊन पर। और किरियूस पर और बसरा पर और मोआब के देश के सारे नगरों पर जो दूर हैं और पास हैं
२५ दंड बिचार आता है। परमेश्वर कहता है कि मोआब का
२६ सींग कट गया है और उसकी भुजा टूटी है। उसे मतवाला करो क्योंकि उसने आप को परमेश्वर के बिरोध में फुलाया है और मोआब पर उसके छांड़ में थपेड़ी पीटो जिसतें उसकी

२७ भी निन्दा होवे। क्योंकि क्या तू इसराईल का निन्दक न था वह क्या चोरों में पाया गया कि तू अपने वचन के सारे पराक्रम
२८ से उसे खिझाता? । हे मोआब के निवासियो नगरों को छोड़ के चटान पर बसो और एक पंडुकी की नाईं हो जो गढ़े के
२९ मुंह के असिंगों में अपना खोंता बनाती है। हम ने मोआब की बड़ाई सुनी है उसका फूलना और उसकी बड़ाई भी और उसका अंहकार और उसके मन का उभड़ना अत्यंत है।
३० परमेश्वर कहता है कि मैं उसका महा कोप जानता हों परन्तु उसकी सामर्थ्य ऐसी नहीं है वह पूरा करने में ऐसा नहीं है।
३१ इस लिये मैं मोआब के लिये बिलाप करोंगा हां मैं सारे मोआब के लिये रोओंगा याज़र करहरीस के मनुष्यों के आगे
३२ बिलाप के मारे बिना शब्द हाय हाय करेगा। हे सिबमा के दाख मैं तेरे लिये बिलाप करोंगा और तेरी लता समुद्र पार चली गई वे याजर लों पड़ंच गये तेरे ग्रीष्म फलों पर और तेरे
३३ दाख के फलों पर लुटेरा पड़ा है। और फलवंत खेत से अर्थात् मोआब के देश से आनन्द और मगनता उठाया जायगा और कोल्हुओं में से मैं ने दाख के रस को रोंका है लताड़ू न लताड़ेगा
३४ और ललकारना ललकारना न होगा। हश्बून के रोने से येलियालेः लों और जहाज़ लों और सोआर से होरनाईम लों तीन बरस की कलोर की नाईं उन्हों ने अपना शब्द बढ़ाया है
३५ क्योंकि निमरिम के जल भी जाते रहेंगे। परमेश्वर कहता है कि जो मनुष्य ऊंचा स्थान बनाता है और अपने देवों के लिये
३६ धूप जलाता है मैं उसे मोआब से मिटाओंगा। इस लिये मेरा मन मोआब के लिये बांसुलियों की नाईं बजेगा और करहरिस के लोगों के लिये मेरा मन बांसुलियों की नाईं शब्द
३७ करेगा क्योंकि उसका धन नष्ट ऊआ है। निश्चय हर एक का सिर मुंडा है और हर एक की दाढ़ी कतरी है सब के हाथों पर कटा
३८ कटा है और सब के कटि में टाट बस्त्र है। मोआब की सारी छतों

पर और उसकी सड़कों में बिलाप भर पूर है क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मोआब को मैं ने ऐसा तोड़ा है जैसा पात्र
३९ जिसे कोई प्रसन्न नहीं। वुह कैसा तोड़ा गया है वे चिल्लाये हैं कि मोआब ने कैसी पीठ फेरी है मोआब लज्जित है और अपने चारों ओर के सारे लोगों के लिये एक ठट्ठे का और
४० भय का चिन्ह होगा। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देख गिद्ध की नाईं एक उड़ेगा और मोआब पर अपने पंख फैलावेगा।
४१ नगर और दृढ़ गढ़ अकस्मात् लिये गये और मोआब के बलवंत जनों का मन उस दिन पीड़ित स्त्री के मन की नाईं
४२ होगा। मोआब ऐसा नाश होजायगा कि फेर एक लोग न रहेगा इस कारण कि उसने अपने को परमेश्वर के विरुद्ध
४३ फुलाया है। परमेश्वर कहता है कि हे मोआब के निवासी
४४ डर और गड़हा और जाल तुझ पर हैं। परमेश्वर कहता है कि जो भय से भागता है सो गड़हे में गिरेगा और जो गड़हे से निकलता है सो जाल में पकड़ा जायगा क्योंकि मैं मोआब
४५ पर बिलाप अर्थात् उसके दंड पाने का बरस लाओंगा। जो भाग गये सो बल के लिये हश्बून की छाया तले ठहर गये परन्तु एक आग हश्बून से और एक लवर सिहून के मध्य से बाहर निकल गई है और मोआब के कोने को और कोलाहल
४६ के पुत्रों के सिर की खोंपड़ी को खा जायेगी। हाय तुझ पर हे मोआब तू नष्ट हुआ हे कमोश के लोगो, क्योंकि उन्हों ने तेरे पुत्रों को बंधुआ किया है और तेरी पुत्रियों को भी बंधुई।
४७ परन्तु परमेश्वर कहता है कि पिछले दिनों में मैं मोआब की बंधुआई को फेरोंगा इहां लों मोआब का बिचार।

४९ उंचासवां पर्ब्ब ।

अमून के सन्तानों के बिषय में १—६ अदूमियों के ७—२२ दमिश्किकयों के २३—२७ किदार और

इब्रू के २८—३३ ईलामियों के ३४—३९ ।

१ अमून के सन्तानों के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि क्या इसराईल के बेटे नहीं? उसका कोई अधिकारी नहीं? फेर मलकून गाद को क्यों बश में किया है? और उसके लोग
२ उसके नगरों में बसे?। इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं जिनमें मैं अमूनियों के रब्बह में संग्राम का भय सुनाऊंगा और वुह उजाड़ का एक ढेर होगा और उसकी पुत्रियां आग से नष्ट होंगी परमेश्वर कहता है कि तब इसराईल
३ उनका अधिकार होगा जैसा वे उसके अधिकार थे। हे हश्बून चीखें मार क्योंकि अई लटा गया है रब्बह की पुत्रियो रोओ और टाट बस्त्र कसो और बिलाप करो और बाड़ों के भीतर इधर उधर दौड़ो क्योंकि मलकूम अपने पुरोहित
४ और अध्यक्ष सहित बंधुआई में किया जायगा। हे हठीली कन्या यद्यपि तेरी तराई फलवंत है तू तराइयों की क्यों बड़ाई करती है? जो अपने धन पर बड़ाई करती है और अपने मन
५ में कहती है कि कौन मुझ पास आवेगा। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख अपनी चारो ओर से तुझ पर एक भय लाऊंगा और तुझ में से हर एक उसके आगे आगे खेदा
६ जायगा और भागे हुए को कोई नहीं फिरा सकेगा। परन्तु परमेश्वर कहता है कि इसके पीछे मैं अमून के संतान की
७ बंधुआई को फेरोंगा। अदूमी के विषय में सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि क्या तीमान में और बुद्धि न रही? और क्या चतुरों से मंत्र जाता रहा? क्या उनकी बुद्धि लोप
८ होगई। हे दिदान के निवासियो भागो अपनी अपनी पीठ फेरो बसने को गहिरे उतर जाओ इस कारण कि मैं ऐस की
९ बिपत्ति अर्थात् उसके दंड का समय उस पर लाया हों। जो दाख के बटोरक तुझ पास आवें तो क्या वे बिनिया न छोड़ेंगे जो रात
१० को चोर, तो क्या वे लूट के न अघावेंगे। परन्तु मैं ने ऐस को

छूछा किया और उसके गुप्तस्थानों को उघारा है यहां लों कि
वुह आप को छिपा नहीं सक्ता उसके वंश और उसके भाईबंद
और उसके अरोसी परोसी लूटे गये हैं और उसका कुछ
११ नहीं बचा। क्या मैं तेरे अनाथ बालकों के जीव की रक्षा करों?
१२ अथवा क्या तेरी रांड़ मुझ पर बिश्वास करें। क्योंकि परमेश्वर
ने निश्चय यों कहा है कि देखो जिनका भाग पीना न था
उन्हों ने कटोरे से निश्चय पीआ है और क्या तू अर्थात् तूही
सर्वथा निर्दंड जायगा तू निर्दंड न जायगा परन्तु तू निश्चय
१३ पीयेगा। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनीही किरिया
खाई है कि बसरा आश्चर्य्यित और निन्दा और उजाड़ और
घिनित होगा और उसके सारे नगर सदा उजाड़ रहेंगे।
१४ मैं ने परमेश्वर से एक प्रचार सुना है और एक दूत जातिगणों
के पास यह कहते हुए भेजा गया कि आप आप को एकट्ठे करके
१५ उसके बिरुद्ध संग्राम को चढ़ो। देखो मैं ने तुझे जातिगणों में
छोटा किया है और जिन मनुष्यों से तू अत्यंत डरता है उनमें तुझे
१६ निन्दित किया है। हे चटान के खोह के निवासी जो पहाड़ के
टीले पर रहता है तेरे मन के अहंकार ने तुझे छला है जो तू
गिद्ध की नाईं अपने खोंते को ऊंचा बनावे तो परमेश्वर कहता है
१७ कि वहां से मैं तुझे उतारोंगा। अदूम आश्चर्य्यित का कारण होगा
हर एक जो उस पास से जायगा सो आश्चर्य्यित होगा और उसकी
१८ सारी बिपत्ति के लिये फुफकारी मारेगा परमेश्वर कहता है
कि सदूम और अमूरः और आस पास के स्थानों के उलटने
के समान उसमें एक मनुष्य न बसेगा हां मनुष्य का पुत्र भी
१९ उसमें न रहेगा। देख जैसा एक सिंह एक बलवंत अर्दन के
उमड़ने से गोंड़े पर आता है जब मैं उसे घबराओं मैं उसे
उसके आगे से भगवाओंगा और जो चुना गया है उसके बिरुद्ध
आज्ञा करोंगा क्योंकि कौन मेरे समान है? जो मुझे बतावेगा
अथवा कौन वुह गड़रिया है जो मेरे आगे खड़ा हो सक्ता?।

२० इस लिये परमेश्वर के परामर्श को, जो उसने अदूम के बिरुद्ध किया है और उसके ठहराये हुए जो उसने तीमान के निवासियों के बिरुद्ध ठहराया है सुनो निश्चय झुंड के छोटे छोटे में से खींचे जायेंगे निश्चय वुह उनके निवास को उनसे आश्चर्य्यित
२१ करेगा। उनके गिरने के शब्द से पृथिवी थर्थराती है, वुह
२२ चिल्लाती है, उसका शब्द लाल समुद्र लों सुना जाता है। देखो वुह गिद्ध की नाईं उड़ने उठेगा और बसरा पर अपने डैने फैलावेगा और जननी के पीड़ा के मन की नाईं मोआब के
२३ बलवंतों का मन उस दिन होगा। दमिश्क के बिषय में हमास और आरफाद घबरा गये हैं क्योंकि उन्हों ने कुसंदेश सुना है वे समुद्र की ब्याकुलता से पिघल गये जो स्थिर नहीं
२४ हो सक्ता। दमिश्क दुर्बल हुआ है और भागने के लिये फिरा है और थर्थराहट ने उसे जकड़ा है पीड़ित जननी की पीड़ा
२५ की नाईं बिपत्ति ने उसे ग्रासा है। क्योंकर उन्हों ने उसे एक
२६ स्तुति का नगर मेरे आनन्द का नगर नहीं छोड़ा है। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि उसके तरुण और सारे संग्रामी उसके चौड़े स्थानों में गिरेंगे और उस दिन थे चुप
२७ किये जायेंगे। और मैं दमिश्क की भीत पर एक आग बारोंगा
२८ और वुह बिनहदाद के भवनों को भस्म करेगी। किदार के बिषय और हसूर के राज्यों के बिषय में जिन्हें बाबुल के राजा नबूकदनज़ार ने मारा परमेश्वर ने यों कहा है कि उठो
२९ किदार को चढ़ जाओ और पूर्बी लोगों को लूटो। उनके तंबुओं को और झुंडों को ले जायें उनके ओझल और उनकी सारी संपत्ति और उनके ऊंट अपनेही कार्य्य के लिये ले जायें और
३० हर एक ओर से वे उन पर डर लावें। परमेश्वर कहता है कि हे हसूर के निवासियो भागो शीघ्र बढ़ो और गहिरे बसने को उतरो क्योंकि तुम्हारे बिरोध में बाबुल के राजा नबूकदनज़ार ने परामर्श किया है और तुम्हारे बिरोध में एक युक्ति बांधी है।

३१ परमेश्वर कहता है कि उठो और उस देश के बिरुद्ध चढ़ जाओ जो चैन से और निर्भय से रहता है जिनके न फाटक
३२ न अड़ंगे हैं वे आपस में अलग रहते हैं। परमेश्वर कहता है कि उनके ऊंट लूट के लिये होंगे और उनके ढोर की बहुताई लूट के लिये और जो कोनों कोनों में हैं उन्हें मैं पवन से छिन्न भिन्न करोंगा और उनके सारे अलंगों से मैं उन पर बिपत्ति
३३ लाओंगा। और हसूर अजगरों का निवास सदा उजाड़ होगा और कोई जन उसमें न बसेगा और न कोई मनुष्य का
३४ बंश उसमें बास करेगा। परमेश्वर का बचन जो यह कहते हुए यहूदा के राजा सिदकियाः के राज्य के आरंभ में
३५ ईलाम के बिषय में इरमियाः भविष्यद्वक्ता पास पहुंचा। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं ईलाम के धनुष उनके
३६ बल के श्रेष्ठ भाग को तोड़ता हों। और मैं स्वर्ग के चारो खूंटों से चार पवनों को ईलाम के बिरुद्ध लाओंगा और उन सारे पवनों के आगे उन्हें छिन्न भिन्न करोंगा और कोई ऐसी जातिगण
३७ न होगी जिनमें ईलाम का निकाला हुआ न आवे। और मैं ईलाम को उनके बैरियों के आगे और उनके प्राण के गाहकों के सन्मुख बिस्मित कराओंगा और परमेश्वर कहता है कि मैं उन पर बुराई अर्थात् अपना प्रचंड कोप लाओंगा और जबलों मैं उन्हें नष्ट न करों तबलों उनके पीछे पीछे तलवार भेजोंगा।
३८ परमेश्वर कहता है कि मैं अपना सिंहासन ईलाम में रक्खोंगा
३९ और राजा को और अध्यक्षों को वहां से नष्ट करोंगा। परन्तु परमेश्वर कहता है कि दिनों के अंत में यों होगा कि मैं ईलाम की बंधुआई को फेर देउंगा।

५० पचासवां पर्ब्ब।

बाबुल के बिरुद्ध की और इसराईल पर दया होने की भविष्य बाणी १—३४।

१ परमेश्वर का वचन इरमियाः भविष्यद्वक्ता के द्वारा से बाबुल
२ और कलदानियों के देश के विषय में पहुंचा। कि जातिगणों
में कहो और प्रचारो और ध्वजा खड़ी करो प्रचारो मत
छिपाओ कहो कि बाबुल लिया गया है और बेल घबरा गया है
मरूदाक टूट गया है उसकी मूरतें घबरा गईं और उसकी
३ घिनितें तोड़ी गई हैं। क्योंकि उत्तर से उसके बिरुद्ध एक देशी
चढ़ आया है जो उसके देश को उजाड़ करेगा यहांलों कि
उसमें कोई निवासी न होगा मनुष्य और पशु भाग गये हैं
४ उन दिनों में वे चले गये। परन्तु परमेश्वर कहता
है कि उस समय इसराईल के संतान, वे और यहूदा के
संतान एकट्ठे आवेंगे वे जायेंगे वे रोते रोते जायेंगे और
५ अपने ईश्वर परमेश्वर को खोजेंगे। वे अपनी रुख सैहून की
ओर करते करते उसे खोजेंगे वे आवेंगे और सर्वदा की वाचा
६ में परमेश्वर से मिल जायेंगे जो भुलाई न जायगी। मेरे लोग
खोई हुई भेड़ के समान हुए हैं और उनके गड़रियों ने उन्हें
पर्ब्बतों पर छिन्न भिन्न करवाया है वे पर्ब्बत से टीलों पर फिरे हैं
७ वे चले गये वे अपने चैन स्थान को भूल गये हैं। जितनों ने उन्हें
पाया उन सभों ने उन्हें भक्षण किया क्योंकि उनके बैरियों ने कहा
कि हम अपराध नहीं करते इस कारण कि उन्हों ने धर्म्म के धाम
परमेश्वर के बिरुद्ध अर्थात् अपने पितरों के भरोसा परमेश्वर
८ के बिरुद्ध पाप किया है। बाबुल में से निकल जाओ और
कलदानियों के देश से बाहर जाओ और झुंडों के आगे के
९ बकरों की नाईं होजाओ। क्योंकि देखो मैं उठने पर हूं और
बाबुल के बिरुद्ध उत्तर देश से बड़ी बड़ी जातिगणों की मंडली
को लाओंगा और उनके बिरुद्ध उनसे पांती बांधोंगा जिस्से
वुह लिया जायगा निपुण संग्रामियों की नाईं उनके बाण छूछे
१० न फिरेंगे। परमेश्वर कहता है कि कलदिया लूट के लिये
११ होगा सब जो उन्हें लूटेंगे तृप्त होंगे। हे मेरे अधिकार क

लुटेरो जब तुम लोग आनन्द कर चुकोगे और जय पा चुकोगे जब तुम लोग घास खाऊ कलार की नाईं मोटाओगे और
१२ घोड़ों की नाईं हिनहिनाओगे। तब तुम्हारी माता बज्जत घबरावेगी, तुम्हारी जननी लज्जित होजायगी सारे देशगणों के पीछे उसे देखो सब से पीछे एक अरण्य और भुराया ज्ञआ
१३ देश और एक बन। परमेश्वर के कोप के मारे वुह फेर स्थिर न होगा परन्तु वुह सर्वथा उजाड़ होगा हर एक जो बाबुल के पास से जायगा आश्चर्यित होगा और उसकी सारी बिपत्ति
१४ के कारण फुफकारेगा। अपने तईं बाबुल के विरुद्ध चारो ओर लैस हो रहो तुम जो धनुष खींचते हो उस पर बाण चलाओ धोखा मत करो क्योंकि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।
१५ उसके चारो ओर ललकारो उसने आप को सौंप दिया है उसके मुंडेरे गिरे ज्ञए हैं और उसकी भीतें भी गिराई गई हैं इस कारण कि यह परमेश्वर का पलटा है सो उसे पलटा
१६ लेओ जैसा उसने किया है तैसा उसे करो। बोवैयों को और उसे जो लवनी में हसुआ पकड़ता है बाबुल में से काट डालो हर एक उन में से नाशक की तलवार के मारे अपने अपने लोगों को फिर जायगा और उन में हर एक अपने अपने देश
१७ को भाग जायगा। छिन्न भिन्न भेड़ इसराईल को सिंहों ने फाड़ा है पहिले असूर के राजा ने उसे भक्षण किया और इस पिछले ने अर्थात् बाबुल के राजा नबूकदनजार ने उसके हाड़ों
१८ चाेथ लिया। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि देख जैसा मैं ने असूर के राजा को दंड दिया है तैसा बाबुल के राजा को और उसके देश को
१९ दंड देउंगा। परन्तु मैं इसराईल को उसी के गोंड़े में फेर लाओंगा और वुह करमल और बाशान पर चराई करेगा और उन दिनों में उसकी क्षुधा इफराईम पर्ब्बत पर और
२० गिलियाद पर तृप्त होगी। परमेश्वर कहता है कि उस समय

इसराईल की बुराई खोजी जायगी और पाई न जायगी और यहूदा के पाप का विचार किया जायगा परन्तु पाया न जायगा क्योंकि जिन्हें मैं ने रख छोड़ा है उनको क्षमा करोंगा।
२१ परन्तु परमेश्वर कहता है कि हे खड्ग देश की कड़वाहटों के विरुद्ध चढ़ जा और उसे और उसके निवासियों को दंड दे और उनके बंश को सर्वथा नष्ट कर और मेरी सारी आज्ञा
२२ के समान कर। देश में संग्राम का अर्थात् बड़े नाश का शब्द
२३ है। सारी पृथिवी की हथौड़ी कैसी काटी और तोड़ी गई
२४ देशगणों में बाबुल कैसा एक आश्चर्यित हुआ है। हे बाबुल जब तू अचेत था तब मैं ने तेरे लिये जाल बिछाया है और तू पकड़ा भी गया है तू ने परमेश्वर के साथ झगड़ा है तू पाया
२५ गया है और अचानक पकड़ा गया है। परमेश्वर ने अपना अस्त्रस्थान खोला है और अपने जलजलाहट के हथियार निकाले हैं क्योंकि कलदानियों के देश में सेनाओं के परमेश्वर
२६ प्रभु का यह कार्य्य है। दूर सिवाने से उस पर चढ़ आओ उसके भंडारों को खोलो उसे ढेर ढेर कर के लताड़ो परन्तु
२७ उसे सर्वथा नष्ट करो कुछ भी न बचे। उसके सारे बैलों को बधन करो और उन्हें घात के लिये उतरने देओ हाय उन पर क्योंकि उनका दिन आया है अर्थात् उनके दंड पाने
२८ का समय। हमारे ईश्वर परमेश्वर का पलटा अर्थात् उसके मन्दिर का पलटा सैहून में सुनाओ जो भाग गये और बाबुल
२९ देश से बच गये हैं उनका शब्द यही है। बाबुल के विषय में प्रधानों ने प्रचारा है सब जो धनुष खींचते हो उसके विरुद्ध चारो ओर छावनी करो और कोई बचने न पावे उसके कार्य्य के समान उसे पलटा देओ उसके सारे किये हुए के समान उसे करो इस कारण कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध अहंकार से कार्य्य किया है अर्थात् इसराईल के धर्म्ममय के विरुद्ध।
३० इस लिये परमेश्वर कहता है कि उसके तरुण उसके फैलाव

स्थानों में गिरेंगे और उसके सारे योद्धा उस दिन चुप किये
३१ जायेंगे। हे अहंकारी, सेनाओं का परमेश्वर प्रभु कहता है
कि मैं तेरे विरुद्ध हों निश्चय तेरा दिन अर्थात् तेरे दंड का
३२ समय आया है। और अहंकारी ठोकर खाके गिरेगा और
उसे उठाने को कोई न होगा और मैं उसके नगरों में आग
३३ बारोंगा और वुह उसकी चारो ओर भस्म करेगी। सेनाओं
का परमेश्वर यों कहता है कि इसराईल के संतान और यहूदा
के संतान एकट्ठे सताये गये और सभों ने जो उन्हें बंधुआई में
ले गये उन्हें दृढ़ता से पकड़ रक्खा उन्हों ने उन्हें छोड़ने को नाह
३४ किया। उनका मुक्तिदायक बली है उसका नाम सेनाओं का
परमेश्वर वुह निश्चय उनके पद का पक्ष करेगा यहां लों कि
पृथिवी में कोलाहल करावेगा और बाबुल के निवासियों को
३५ कंपवावेगा। और परमेश्वर कहता है कि कलदानियों
पर और बाबुल के निवासियों पर और उसके अध्यक्षों पर
३६ और उसके बुद्धिमानों पर तलवार पड़ेगी। छलदायकों पर
तलवार है और उनकी बुद्धि मारी जायगी उनके वीरों पर
३७ तलवार और वे विस्मित होंगे। उनके घोड़ों पर और उनके
रथों पर और उनकी सारी मिली हुई मंडली पर जो उसके
मध्य में हैं तलवार, और वे स्त्रियों की नाईं हो जायेंगे उनके
३८ भंडारों पर तलवार और वे लूटे जायेंगे। उनके जलों पर
तलवार और वे सूख जायेंगे क्योंकि वुह खोदी हुई मूर्त्तिन का
३९ देश है और वे मूर्त्तिन से बड़ाई करते हैं। इस कारण
वनबिलाव सियारों के साथ रहेंगे ऊंटपक्षी की चिंगनियां भी
उसमें रहेंगी वुह फेर कधी स्थिर न किया जायगा और पीढ़ी से
४० पीढ़ी लों वुह बसाया न जायगा। परमेश्वर यों कहता है कि
जैसा ईश्वर ने सदूम और अमूरा और उसके आस पास के
स्थानों को उलट दिया उसमें कोई न बसेगा और मनुष्य का
४१ कोई पुत्र उसमें वास न करेगा। देख उत्तर से एक बड़ी जाति

आती है और पृथिवी के अंतों से बक्तसे राजा उभड़ेंगे ।
४२ वे धनुष और बरछी हाथ में लेंगे वे क्रूर हैं और दया न दिखावेंगे उनका शब्द समुद्र की नाईं गर्जेगा और वे घोड़ों पर चढ़ेंगे हे बाबुल की पुत्री वे तेरे बिरुद्ध संग्रामियों की नाईं
४३ पांती बांधेंगे। बाबुल के राजा ने उनकी चर्चा सुनी है और उसके हाथ दुर्बल ऊए हैं जननी की पीड़ा के समान पीड़ा ने
४४ उसे पकड़ा है। देख सिंह की नाईं एक बलवंत अर्दन के उभड़ने से गोंड़े के बिरुद्ध चढ़ आता है जब मैं उसे गड़बड़ाओंगा मैं उन्हें उसे भगाओंगा और जो चुना ऊआ है मैं उसे उसके बिरुद्ध आज्ञा करोंगा क्योंकि मेरी नाईं कौन है? अथवा कौन मुझे बतावेगा अथवा कौन वुह गड़रिया है जो मेरे आगे
४५ ठहर सक्ता। इस लिये परमेश्वर का परामर्श सुनो जो उसने बाबुल के बिरुद्ध किया है और उसके ठहराये ऊए जो उसने कलदिया के निवासियों के बिरुद्ध ठहराया है वे झुंड के छोटे छोटों में से खींचे जायेंगे वुह निश्चय उनके निवासियों को उनसे आश्चर्यित करेगा बाबुल लिया गया इस बात के शब्द से पृथिवी सरक गई और उसका रोना अन्यदेशियों लों सुना गया है।

५१ एकावनवां पर्ब्ब ।

बाबुल पर महा कोप की भविष्यवाणी १—५८
सिराया का उसे बाबुल में ले जाने की आज्ञा
और पढ़ के उसे नदी में डुबा देना ५९—६४।

१ परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं बाबुल के बिरुद्ध और उनके बिरुद्ध जो मेरे बैरियों के मध्य में रहते हैं एक नाशक
२ पवन उभाड़ोंगा। मैं बाबुल के बिरुद्ध ओसवैयों को भेजोंगा और वे उसे ओसावेंगे और उसका देश छूछा करेंगे क्योंकि बिपत्ति के दिन मार्ग के अलंग वे उसके बिरुद्ध चारों ओर

३ होंगे। धनुषधारी अपना धनुष खींचे और वुह आप को अपने भिलम में उभाड़ने न पावे और उसके तरुणों को मत छोड़ो
४ उसकी सारी सेना को सर्वथा नाश करो। और वे कलदानियों के देश में जूझ जायेंगे और उसके सड़कों में गोदे हुए।
५ क्योंकि न इसराईल न यहूदा अपने ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर से त्यागा नहीं गया है परन्तु उनका देश इसराईल के धर्ममय
६ के द्वारा से अपराध की भेंट से परिपूर्ण हे। बाबुल में से भाग निकलो और हर एक अपना अपना प्राण बचावे जिसतें उसके दंड में तुम लोग काटे न जाओ क्योंकि परमेश्वर के पलटे का
७ समय है वुह उसे प्रतिफल देगा। सारी पृथिवी को मतवाली करते हुए परमेश्वर के हाथ में बाबुल एक सोने का कटोरा है अन्य देशियों ने उसमें का दाखरस पीया है इस लिये अन्यदेशी
८ बड़ाई करेंगे। कि बाबुल अचानक गिरपड़ी है और टूट गई उसके लिये चिल्लाओ उसके दुःख के लिये ओषध लेउ क्या
९ जाने वुह चंगी होजाय। हमने बाबुल पर ओषध लगाया है परन्तु वुह चंगी न हुई उसे छोड़ देउ और चलो हर एक अपने अपने देश को जाये क्योंकि उसका दंड स्वर्ग लों पहुंचा
१० है और आकाश लों उठ गया है। परमेश्वर ने हमारे बचाव प्रगट किये हैं आओ हम सहून में अपने ईश्वर परमेश्वर का
११ कार्य्य प्रगट करें। बाण जगमगाओ चोण भरो परमेश्वर ने माज़ी के राजाओं के मन को उभाड़ा है क्योंकि बाबुल को नष्ट करने को उसने ठहराया है निश्चय वुह परमेश्वर का पलटा
१२ अर्थात् उसके मंदिर का पलटा है। बाबुल की भीतों पर ध्वजा खड़ी करो और दृढ़ पहरू रक्खो पहरे बैठाओ और छूकियों को लैस करो क्योंकि जैसा परमेश्वर ने ठहराया है जो कुछ उसने कहा है सो उसने बाबुल के निवासियों के विषय में
१३ किया भी। अरे तू जो बहुतसे जलों के अलंग में रहती है जिसमें धन मुक्ता है तेरा अंत पहुंचा और तेरी लालच

४ होचुकी। सेनाओं के परमेश्वर ने अपनीही किरियाखाई कि मैं तुझे मनुष्यों से जैसा टिड्डियों से भर देउंगा और वे तेरे विरुद्ध
५ ललकारेंगे। उसने अपने पराक्रम से पृथिवी को सिरजा है, अपनी बुद्धि से जगत को स्थिर किया है, अपने ज्ञान से भी
६ उसने स्वर्गों को फैलाया है। जब वुह अपना शब्द बढ़ाता है आकाशों में जलों का कोलाहल होता है पृथिवी के अंत से वुह मेघों को उठाता है वुह वृष्टि के साथ बिजुलियां निकालता
७ है वुह अपने भंडारों से पवन निकालता है। हर एक जन मानलेने में पशुवत ज़आ है और हर एक सोनार प्रतिमा से लज्जित किया जाता है क्योंकि उसकी ढाली ज़ई मूर्त्ति झूठी हैं
८ और उन में सांस नहीं। ये वृथा हैं और उनका कार्य जो बज़त चूक करते हैं अपने दंड आने के समय में वे नष्ट होंगे।
९ याक़ूब का भाग ऐसा नहीं क्योंकि वुह सृष्टि का कर्त्ता है और इसराईल उसके अधिकार का दंड उसका नाम सेनाओं का
० परमेश्वर है। हे संग्राम के कुल्हाड़े तू मेरे संग्राम का हथियार होगा और जातिगणों को मैं तुझी से टुकड़ा टुकड़ा करोंगा
१ और तुझी से राज्यों को नष्ट करोंगा। और तुझी से मैं घोड़े को और उसके चढ़वैयों को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा और तुझी से रथ को और उसके सारथी को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा।
२ और तुझी से पति पत्नी को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा और तुझी से बूढ़े और लड़के को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा और तुझी से
३ तरुण पुरुष और कुंआरियों को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा। और तुझी से गड़रियों को और उसकी झुंड को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा और तुझी से मैं किसान को और उसके जोड़े को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा और तुझी से मैं न्यायी और आज्ञाकारियों
४ को टुकड़ा टुकड़ा करोंगा। और परमेश्वर कहता है कि मैं बाबुल को और कलदानी के सारे निवासियों को उनकी सारी बुराई का, जो उन्हों ने सैहून में किई हैं तुम्हारी आंखों के आगे

२५ प्रतिफल देउंगा परमेश्वर कहता है कि हे नाशक पर्ब्बत जो सारी पृथिवी को नाश करता है मैं तेरे विरुद्ध हों और अपना हाथ तुझ पर बढ़ाओंगा और तुझे टीलों पर से लुढ़काओंगा
२६ और तुझे एक जलता पर्ब्बत बनाओंगा। परमेश्वर कहता है कि वे तुझ से कोने के लिये एक पत्थर अथवा नेंव के लिये पत्थर
२७ न लेंगे परन्तु तू सदा का उजाड़ होगा। देश में ध्वजा खड़ी करो जातिगणों में तुरही बजाओ उसके विरुद्ध जातिगणों को भरती करो और आरारात और मिनी और अशकिनाज़ के राज्यों को उसके विरुद्ध बुलाओ और उसके विरुद्ध सेनापति को ठहराओ घोड़चढ़ों को भयंकर टिड्डी की नाईं उन पर मंगवाओ
२८ माज़ी का राजा और उसके सारे अध्यक्ष और उसके राज्य के सारे देश और अन्यदेशियों को उनके विरुद्ध भरती करो।
२९ और देश थर्थरा के पीड़ित होवे क्योंकि परमेश्वर का ठहराया हुआ बाबुल के बिरोध में स्थिर है जिसतें बाबुल के देश को बिना
३० निवासी एक उजाड़ बनावे। बाबुल के बीर संग्राम से थम गये वे दृढ़ स्थानों में रहि गये उनका बल घट गया वे स्त्रियों की नाईं हुए हैं उसके निवास जल गये उनके अड़ंगे टूट गये।
३१ दौड़हा दौड़हे से मिलने को दौड़ेगा और दूत दूत से भेंट करने को, जिसतें बाबुल के राजा को संदेश देवे कि उसका
३२ नगर एक अलंग से दूसरे लों लिया गया है। पथ अचानक लिये गये और ओसारे को उन्हों ने जला दिया और संग्रामी
३३ भयातुर हुए। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि बाबुल की पुत्री खलिहान की नाईं है उसके झाड़ने का समय तनिक और आ पहुंचता है और
३४ उसके समाप्त का समय। बाबुल के राजा नबूक़द्नज़ार ने हमें भक्ष किया है और नष्ट किया है उसने हमें छूछे पात्र किये हैं वुह अजगर के समान हमें लील गया है उसने अपनी दाढ़ भर दिया है हमारे आनंद स्थान से उसने हमें बाहर किया है।

३५ सैहून की निवासिनी यों कहेगी कि जो अंधेर मेरे शरीर पर
किये गये हैं सो बाबुल पर होवें और यिरोशलीम कहेगी
३६ कि मेरा लोहू कलदिया के निवासियों पर होवे। इस लिये
परमेश्वर यह कहता है कि देख मैं तेरा पक्षवादी होउंगा
और मैं तेरा पलटा लेउंगा और मैं उसके समुद्र को खींच
३७ लेउंगा और उसके सोते को सुखाड़ालोंगा। और बाबुल
ढेर ढेर हो जायगा अर्थात् अजगरों का निवास, और बिन
३८ निवास आश्चर्य का और फुफकारने का कारण होगा। वे सिंहों
के समान एक साथ गर्जेंगे वे सिंह के बच्चों की नाईं उभड़ेंगे।
३९ परमेश्वर कहता है कि उनके ताप में मैं उन्हें पिलाओंगा और
मैं उन्हें मतवाला करोंगा जिसतें वे मगन होवें और सनातन
४० की नींद में पड़े रहें और फेर न जागें। मेम्ने और मेढ़े के
समान बकरे सहित घात करने के लिये म उन्हें उतारोंगा।
४१ शीशाक कैसा और सारी पृथिवी की स्तुति शीशाक कैसा आकस्मात्
लिया गया है देशगणों में बाबुल कैसा आश्चर्यित ऊआ है।
४२ बाबुल पर समुद्र पऊंच गया है जो उसके लहरों से ढांपा
४३ गया है। उसके नगर एक उजाड़ हो रहे हैं झूरा देश और
बन, उसमें कोई न बसेगा और मनुष्य के पुत्र उसमें से न
४४ जायेंगे। और बाबुल में बेल को मैं दंड देउंगा और जो
उसने लीला सो उसके मुंह से बाहर करोंगा और देशगण
४५ उस पास फेर न बटुरेंगे बाबुल की भीत भी गिरी है। हे मेरे
लोगो उसके मध्य में से निकल जाओ और हर एक अपने
अपने प्राण को परमेश्वर के ज्वलित कोप के मारे बचावे।
४६ नहो कि देश में की चर्चा सुन्ने के कारण तुम्हारे मन घट जायें
और तुम लोग डर जाओ क्योंकि एक बरस में चर्चा होगी
और चर्चा के बरस के पीछे देश में अंधेर और आज्ञाकारी
४७ के विरुद्ध आज्ञाकारी। इसके पीछे देखो वे दिन आते हैं
जिन में मैं बाबुल की खोदी ऊई मूर्त्तिन को दंड देओंगा और

उसका सारा देश घबरा जायगा और उसके सारे जूझ ऊए
४८ उसके मध्य में मारे पड़ेंगे । तब स्वर्ग और पृथिवी और सब जो
उनमें हैं बाबुल पर ललकारेंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि
४९ लुटेरे उसके बिरोध में उत्तर से आवेंगे । जैसा बाबुल ने
इसराईल के जूझाये ऊए को गिरवाया है तैसा बाबुल के कारण
५० सारी पृथिवी में से जूझ जायेंगे । तुम जो उसकी तलवार से बच
निकले हो जाओ खड़े मत होओ दूर से परमेश्वर को स्मरण
५१ करो और यिरोशलीम तुम्हारे मन में आवे । हम घबरा
गये हैं क्योंकि हम ने निंदा सुनी है और लाज ने हमारे मुंह
को ढांपा है क्योंकि परदेशी परमेश्वर के मंदिर के पवित्र
५२ स्थान में पैठे हैं । इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन
आते हैं कि मैं उनकी खोदी ऊई मूर्त्ति को दंड देउंगा और
५३ उसके सारे देश में घायल लोग कहरेंगे । परमेश्वर कहता है
कि यद्यपि बाबुल स्वर्ग लों चढ़ी ऊई हो और वुह अपने बल को ऊंचा
५४ बाढ़ित किये हो तो भी मुझ से लुटेरे उस पास आवेंगे । बाबुल में
से रोने का और कलदी के देश से बड़ा बिनाश का शब्द ।
५५ क्योंकि परमेश्वर बाबुल को नष्ट करता है और उस्से महा शब्द
को नाश करता है उनकी लहरें भी बड़े पानियों की नाईं गर्जती
५६ हैं उनके शब्द के कारण कोलाहल ऊआ । क्योंकि निश्चय उसके
बिरुद्ध अर्थात् बाबुल के बिरुद्ध एक नाशक आया है और
उसके बलवंत जन पकड़े जायेंगे और उनका हर एक धनुष
टूटेगा क्योंकि पलटा का ईश्वर परमेश्वर निश्चय पलटा लेगा।
५७ राजा, जिसका नाम सेनाओं का परमेश्वर सो कहता है कि
मैं उनके अध्यक्षों को और उनके बुद्धिमानों को और उसके
सेनापतियों को और उसके आज्ञाकारियों को और उसके
बलवंतों को मतवाला करोंगा और वे सनातन की नींद से
५८ सोआ करेंगे और कभी न जागेंगे । सेनाओं का परमेश्वर यों
कहता है कि बाबुल की चौड़ी भीति सर्वथा उखाड़ी जायगी

और उसके ऊंचे ऊंचे फाटक आग से जलाये जायेंगे लोग वृथा परिश्रम करेंगे और जातिगण आगमें और वे थक
५९ जायेंगे ।   इरमियाः भविष्यद्वक्ता का बचन जो उसने मश्रासियाः के बेटे नेरियाः के बेटे सिरायाः को आज्ञा किई थी जब वुह यहूदा के राजा सिदकियाः की ओर से उसके राज्य के चौथे बरस में बाबुल को गया था क्योंकि सिरायाः भेंट ले
६० गया था । और इरमियाः ने सारी बुराइयों को जो बाबुल पर बीतनी थीं एक पुस्तक में लिखा ये सारी बातें बाबुल के विषय
६१ में लिखीं । और इरमियाः ने सिरायाः से कहा कि जब तू बाबुल में पहुंचे तब देख के इन सारी बातों को पढ़ना और
६२ कहना । कि हे परमेश्वर तू ने इस स्थान के काट डालने के विषय में कहा है यहां लों कि उसमें कोई निवासी मनुष्य अथवा पशु न रहेगा परन्तु सनातन उजाड़ रहेगा और यों होगा
६३ कि जब तू इस पुस्तक को पढ़ चुकेगा तब उसमें एक पत्थर बांध के फुरात के मध्य फेंक देना और कहना कि यों बाबुल डूब जायगा और उस बुराई के कारण जो मैं उस पर लाताहों फेर न उठेगा यहां लों इरमियाः के बचन ।

५२ बावनवां पर्ब्ब ।

सिदकियाः का बुरा राज्य और बाबुल में बंधुआ होना १—११ मन्दिर और नगर का जलाया जाना और लोगों का बंधुआई में पड़ना १२—२३ कुलीनों का मारा जाना २४—२७ बंधुओं की गिनती २८—३० यहूयाकीम पर कृपा होनी ३१—३४ ।

१ सिदकियाः एकीस बरसका था जब राज्य करने लगा और उसने यिरोशलीम में ग्यारह बरस राज्य किया और उसकी माता का नाम हमीताल जो लिबनाही इरमियाः की बेटी थी ।

२ और उसने यहूयाकीम की सारी क्रिया के समान परमेश्वर
३ की दृष्टि में बुराई किई। क्योंकि यिरोशलीम और यहूदा के
बिरोध में परमेश्वर के कोप के कारण ऐसा हुआ था कि जबलों
उसने उन्हें अपनी दृष्टि से दूर किया सिदकियाः राजा भी
४ बाबुल के राजा के विरुद्ध फिर गया। और उसके
राज्य के नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में ऐसा
हुआ कि बाबुल का राजा नबूकदनज़ार वुह और उसकी
सारी सेना यिरोशलीम के विरुद्ध आई और उसके साम्ने
छावनी किई और उसके बिरुद्ध चारो ओर गढ़ बनाये।
५ और सिदकियाः राजा के ग्यारहवें बरस लों नगर घेरा रहा।
६ चौथे मास की नवीं तिथि में जब नगर में बड़ा अकाल था और
७ देश के लोगों के लिये रोटी न रही। तब नगर तोड़ा गया
और सारे योद्धा भागे और दोनों भीतों के फाटक में से जो
राजा की बारी के लग है रात को नगर से निकल गये और
वे चौगान की ओर गये जबलों कलदानी नगर की चारो ओर
८ थे। परन्तु कलदानियों की सेना ने राजा का पीछा किया
और अरीहा के चौगानों में सिदकियाः को जा ही लिया और
९ उसकी सारी जथा उससे छिन्न भिन्न थीं। और उन्हों ने राजा
को पकड़ा और हमास देश के रिबलाह में बाबुल के राजा
१० पास लाये और उसने उसका बिचार किया। और बाबुल
के राजा ने सिदकियाः की आंखों के आगे उसके पुत्रों को घात
किया और उसने रिबलाह में यहूदा के अध्यक्षों को भी
११ मारडाला। और उसने सिदकियाः की आंखें निकालीं और
उसे पीतल की सीकरों से जकड़ा और बाबुल का राजा उसे
बाबुल में ले गया और उसके मरने लों उसे बन्दीगृह में रक्खा।
१२ बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के उन्नीसवें बरस के
पांचवें मास की दसवीं तिथि में बाबुल के राजा का समीपी
पहरुओं का प्रधान नबूज़रादान यिरोशलीम में आया।

१३ और परमेश्वर के मन्दिर को और राजा के भवन को जलादिया और यिरोशलीम के सारे घर अर्थात् हर एक बड़ा घर आग
१४ से जलादिया। और पहरुओं के प्रधान के संग के कलदानियों की सारी सेनाओं ने यिरोशलीम की चारों ओर की सारी
१५ भीतें तोड़ डालीं। तब पहरुओं के प्रधान नबूज़रादान ने लोगों में के कितने कंगालों और नगर में के रहे हुए लोगों को और भगेडुओं को जो बाबुल के राजा की ओर गये अर्थात्
१६ रहीहुई मंडली बंधुआई में ले गया। परन्तु पहरुओं के प्रधान नबूज़रादान ने देश के कितने एक कंगालों को दाख की
१७ बारी के और किसनई के लिये छोड़ दिया। और परमेश्वर के मन्दिर में के पीतल के खंभे और आधार और परमेश्वर के मन्दिर में के पीतल का समुद्र कलदानियों ने तोड़ डाला
१८ और उनका सारा पीतल बाबुल को ले गये। वे कड़ाहे भी और फावड़े और कतरनीयां और कटोरे और करछुलें और
१९ सारे पीतल के पात्र जिनसे वे सेवा करते थे ले गये। बर्त्तन और धूपदानी और कटोरे और कड़ाहे और दीअट और करछुल और कटोरियां और जो कुछ सोनेका था सोने को और जो कुछ चांदीका था चांदी को पहरुओं का प्रधान ले
२० गया। दो खंभे और समुद्र और पीतल के बारह बैल जो नीचे थे और आधार जिन्हें सुलेमान राजा ने परमेश्वर के मन्दिर
२१ के लिये बनाया था इन पात्रों का पीतल बेतौल था। क्योंकि खंभे, एक एक खंभे की ऊंचाई अठारह हाथ थी और बारह हाथ की रस्सी उसको गोलाई थी और पोला होके वुह चार
२२ अंगुल मोटा था। और उस पर पीतल का मथाल था और एक मथाल की उंचाई पांच हाथ और मथाल की चारों ओर जालकार्य्य और अनार थे और सब पीतल के और इसी
२३ रीति से दूसरे खंभे पर भी अनार। एक एक ओर छानवे अनार और जाल कार्य्य पर के चारों ओर के अनार एक सौ।

२४ और पहरुओं के प्रधान ने सिरायाः प्रधान याजक को और दूसरे याजक सिफनियाः को और तीन द्वारपालों को लिया।
२५ और नगर में से उसने एक नपुंसक को, जो योद्धा का प्रधान था और सात जन राजा के समीपियों में से, जो नगर में पाये गये और सेना के श्रेष्ठ लेखक को, जो देश के लोगों की गिनती करता था, और देश में के साठ जन को, जो नगर के
२६ मध्य पाये गये। नबूज़रादान प्रधान और पहरुओं का प्रधान
२७ उन्हें लेके रिबला में बाबुल के राजा पास ले आया। और बाबुल के राजा ने उन्हें मारा और हमास देश के रिबला में उन्हें घात किया और यहूदा को उनके देश में से बंधुआई में
२८ ले गया। ये वे लोग हैं जिन्हें नबूकदनज़ार सातवें बरस में बंधुआई में ले गया अर्थात् तीन सहस्र तेईस यहूदी।
२९ नबूकदनज़ार के अठारहवें बरस में वुह यिरोशलीम से आठसौ
३० बत्तीस जन को ले गया। नबूकदनज़ार के तेईस वें बरस में नबूज़रादान पहरुओं का प्रधान सात सौ पैंतालीस यहूदियों को बंधुआई में ले गया सारे लोग चार सहस्र छःसौ थे।
३१ यहूदा के राजा यहूयाकीन की बंधुआई के सैंतीसवें बरस के बारहवें मास की पचीसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल के राजा ईवलिमिरोदाक ने अपने राज्य के पहिले बरस में यहूदा के राजा यहूयाकीन को उभाड़ा और उसे बंदीगृह से निकाल
३२ लाया। और उस्से अनुग्रह की बातें किईं और उसके सिंहासन को अपने संग के राजाओं के सिंहासन से जो बाबुल में थे
३३ सभों से बढ़ाया। यहां लों कि उसने उसके बंदीगृह के बस्त्रों को पलट डाला और वुह अपने जीवन भर नित्य उसके आगे
३४ भोजन करता रहा। और उसके जीवन भर की जीविका मरने लों नित्य की जीविका बाबुल के राजा की आज्ञा से प्रति दिन परिमाण से दिई जाती थी।

इरमियाः का विलाप ।

१ पहिला पर्व्व ।

यिरोशलीम और यहूदियों के कष्ट के मारे इरमियाः का विलाप १—११ औरों की सुधि और दया चाहनी १२—१७ परमेश्वर का न्याय मान्ना और उसकी दया के लिये प्रार्थना १८—२२ ।

१ लोगों से भरी ऊई नगरी क्यों अकेली बैठी है जो जातिगणों में बड़ी थी सो विधवा की नाईं होगई जो प्रदेशों में रानी थी २ सो करदायक ऊई । वुह रात को बिलख बिलख रोती है उसके आंसू उसके गालों पर, उसके सारे प्रेमियों में उसका शांतिदायक कोई नहीं, उसके सारे संमित्रों ने उसे छल का ३ व्यवहार किया है वे उसके बैरी ऊए हैं । अति सेवा के मारे और कष्ट के कारण यहूदा बंधुआई में निकल गई है वुह अन्यदेशियों में वास करती है वुह चैन नहीं पाती उसके सारे ४ खेदाऊ ने उसे सकेतियों में जाही लिया । सैहून के मार्ग बिलाप करते हैं क्योंकि बड़े पर्व्व में कोई नहीं आता उसके सारे फाटक उजाड़ हैं उसके याजक हाय हाय करते हैं उसकी ५ कुंआरियां कष्टित हैं और वुह आप कड़वाहट में है । उसके बैरी श्रेष्ठ और उसके शत्रु भाग्यमान ऊए हैं उसके अपराधों की बऊताई के लिये परमेश्वर ने उसे दुःख दिया है उसके ६ बालक एक बैरी के आगे बंधुआई में किये गये हैं । सैहून की कन्या से उसकी सारी सुन्दरता जाती रही उसके राजपुत्र उन

हरिणों की नाईं है जो चराई नहीं पाते, और खेदाऊ के आगे
७ निर्बल चले गये। यिरोशलीम ने अपने दुःख और हेठाई के
दिनों में अपने पुरातन दिनों की सारी मन भावनी वस्तुन को
चेत किया है जब उसके लोग बैरी के हाथ में पड़े और उसका
सहायक कोई न ऊआ बैरियों ने देखा और उसके न ठहरने
८ पर हंसे। यिरोशलीम ने बऊतही पाप किया है इस लिये
वुह उसकी नाईं हो गई है जो अशुद्ध के लिये अलग किई गई
उसके सारे आदरदायकों ने उसको निन्दा किई है क्योंकि
उन्हों ने उसकी नग्नता देखी है वुह हाय हाय करते करते
९ फिर आती है। उसकी अपवित्रता उसके अंचलों में थी उसने
अपने अंत को नहीं सोचा इसी लिये वुह आश्चर्य्यित से उतारी
गई, उसका शांतिदायक कोई नहीं हे परमेश्वर देख बैरी ने
१० मेरे कष्ट को बढ़ाया है। बैरी ने उसकी सारी मनभावनी
वस्तुन पर अपना हाथ फैलाया है निश्चय उसने जातिगणों को
अपने पवित्र स्थान में पैठते देखा है जिनके विषय में तू ने आज्ञा
११ किई है कि वे मेरी मंडली में न पैठें। उसके सारे लोग हाय
हाय करते हैं वे रोटी ढूंढ़ते हैं उन्हों ने अपना जीव पालने को
भोजन के लिये अपने मोल की वस्तु दिई है, हे परमेश्वर देख
१२ और सोच मैं कैसा तुच्छ बना हों। हे पथिको हाय
कि तुम्में से कोई दृष्टि करके देखे यदि मेरे दुःख के समान जो
मुझ पर ऊआ है कोई दुःख होवे जिसे परमेश्वर ने अपने महा
१३ कोप के दिन में मुझे कष्टित किया है। ऊपर से उसने आग भेजी
है और उसे मेरी हड्डी हड्डी में प्रवेश करवाया है उसने मेरे
पांव के लिये जाल बिछाया है उसने मुझे उलटा फेर दिया है
१४ उसनें मुझे उजाड़ा और दिन भर घटाया है। मेरे अपराध
चौकसी से देखे गये हैं जिसतें उसके हाथ से उभलजायें उसका
जूआ मेरे गले पर, मेरे बल को घटाया है परमेश्वर ने मुझे
१५ हाथों के बल गिराया है मैं उठ नहीं सक्ता हों। परमेश्वर ने

मेरे मध्य में सारे बलवंत जनों को रौंदा है उसने मेरे तरुणों को चूर करने को मेरे बिरुद्ध जथा बुलाई है परमेश्वर ने यहूदा की कुआंरी पुत्री को दाख के कोल्हू की नाईं रौंदा है। इन बातों
१६ के लिये मैं बिलाप करता हों मेरी आंख से जल बहता है क्योंकि मेरे प्राण के सहायक शांतिदायक दूर हैं मेरे बालक उजड़ गये हैं इस कारण मेरे बैरी मुझ पर प्रबल हुए हैं।
१७ सैहून अपने हाथ फैलाती है उसका शांतिदायक कोई नहीं परमेश्वर ने याकूब के बिषय में आज्ञा किई है उसके बैरी उसके चारों ओर हैं उनमें यिरोशलीम अलग किई गई अशुद्ध
१८ की नाईं हुई है। परमेश्वर धर्मी है क्योंकि मैं उसकी आज्ञा से फिर गया हों हे सारे लोगो सुन रक्खो और मेरे दुःख को सोचो मेरी कुंआरी और मेरे तरुण बंधुआई में पहुंचाये गये
१९ हैं। मैंने अपने प्रेमियों को बुलाया पर वे मुझे छली ठहरे मेरे याजक और मेरे प्राचीनों ने अपना अपना जीव पालने को अपने लिये भोजन खोजते खोजते नगर में प्राण त्यागा।
२० हे परमेश्वर देख मैं कैसा दुःखी हों मेरी अंतड़ियां तड़पातियां हैं मुझ में मेरा अंतःकरण उलट पुलट हुआ है क्योंकि मैं ने तेरे बिरुद्ध अति सिर उठाया हों बाहर बाहर तलवार नष्ट
२१ करती है और घरही में मृत्यु की नाईं है। उन्हों ने सुना है कि मैं कैसा हाय हाय करता हों मेरा शांतिदायक कोई नहीं मेरे सारे बैरियों ने मेरी बिपत्ति को सुना है तेरे यह करने से वे आनन्दित हुए जो तू ने उच्चारा है सोई दिन तू लाया है वे
२२ मेरे समान होंगे। उनकी सारी दुष्टता तेरे आगे आवे और तू उनसे ऐसा ब्यवहार कर जैसा तू ने हमसे सारे अपराधों के लिये ब्यवहार किया है क्योंकि मेरा हाय हाय करना बहुत है और मेरा मन निर्बल।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

यिरोशलीम का उजाड़ यहूदियों का कष्ट और इर्मियाः का बिलाप १—१२ उनकी बिपत्ति और बिलाप के लिये प्रार्थना १३—१९ परमेश्वर की दया चाहनी २०—२२ ।

१ परमेश्वर अपनी रिस से सैहून की कन्या को घटा से कैसे ढांपा है उसने इसराईल की शोभा को स्वर्ग से पृथिवी पर डाल दिया है और अपनी रिस के दिन अपने पांव की पीढ़ी को
२ स्मरण नहीं किया है। परमेश्वर याक़ूब के सारे शुभस्थानों को निर्दय से लील गया है उसने अपने कोप से यहूदा की लड़की के दृढ़ गढ़ों को गिरा दिया है उसने उसे भूमि पर उतार दिया है उसने राज्य को और उसके अध्यक्षों को अशुद्ध किया
३ है। उसने अपनी अति रिस से इसराईल के हर एक सींग को काट डाला है उसने बैरियों के आगे से अपना दहिना हाथ खींचा है उसने याक़ूब में धधकती आग की नाईं बारा
४ है जो चारो ओर भक्षण करती है। उसने बैरी की नाईं अपना धनुष खींचा है उसका दहिना हाथ बैरी की नाईं बढ़ाया हुआ है और हर एक तरुण की आंख की सारी बांछा को सैहून की पुत्री के तम्बू में घात किया है उसने आग की
५ नाईं अपने कोप को उंडेला है। परमेश्वर बैरी की नाईं हुआ है वुह इसराईल को लील गया है वुह उसके सारे भवनों को लील गया है उसने उसके दृढ़ गढ़ों को नाश किया है और
६ यहूदा की पुत्री में हाहा कार और बिलाप बढ़ाया है। उसने अपनीही बाड़ित बारी पर बरियाई भी किई है उसने अपनी मंडली को नष्ट किया है परमेश्वर सैहून में बड़े पर्ब्ब और बिश्राम को भूल गया है और अपनी रिस की जलजलाहट से
७ उसने राजा को और याजक को तुच्छ जाना है। परमेश्वर ने अपनी बेदी को त्यागा है उसका पवित्र स्थान स्रापित है उसने

उसके भवनों की भीतों को बैरी के हाथ में सौंपा है बड़े पर्ब्ब के दिन की नाईं उन्हों ने परमेश्वर के मंदिर में शब्द उठाया है।
८ परमेश्वर ने सैहून की पुत्री की भीत को नाश करने को ठाना है उसने रस्सी फैलाई है उसने नाश करने में अपना हाथ नहीं उठाया है परन्तु उसने कोट और भीत से विलाप करवाया है
९ वे मिलके घट गये हैं। उसके फाटक मिट्टी में गिर गये हैं उसने उसके अड़ंगों को तोड़ के विनाश किया है उसका राजा और राजपुत्र अन्यदेशियों में हैं व्यवस्था नहीं है उनके
१० भविष्यद्वक्ता ने भी परमेश्वर से दर्शन नहीं पाया है। सैहून की पुत्री के प्राचीन भूमि पर बैठे हैं वे चुप चाप हैं उन्हों ने अपने सिरों पर धूल डाली है उन्हों ने टाट वस्त्र कसा है यिरोशलीम
११ की कुंआरियों ने भूमि लों सिरों को झुकाया है। आंसुओं से मेरी आंखें घट गई हैं मेरी अंतड़ियां व्याकुल हैं मेरे लोगों की पुत्री के दरार के मारे मेरा कलेजा भूमि पर उंडेला गया है जबलों बालक और दूध पीवक नगर के चौड़े स्थानों में
१२ मूर्छित पड़े हैं। जबलों वे नगर के चौड़े मार्गों में के घायलों की नाईं मूर्छित हैं जबलों उनकी माता की गोद में उनका प्राण निकलता है वे अपनी अपनी माता से कहते हैं अन्न और
१३ दाख रस कहां। हे यिरोशलीम की पुत्री मैं तुझे कौनसी बात से उभाड़ों और किसे उपमा देउं? हे सैहून की कुंआरी पुत्री तुझे शांति देने को मैं तुझे किसके तुल्य करों निश्चय तेरा दरार समुद्र की नाईं चौड़ा है कौन तुझे चंगा कर सक्ता।
१४ तेरे भविष्यद्वक्तों ने तेरे लिये वही भविष्य कहा है जो वृथा और अनर्थ है उन्हों ने तेरी बंधुआई फेर लाने को तेरे आगे तेरी बुराई प्रगट नहीं किई है परन्तु उन्हों ने तेरे लिये अर्थात् जब
१५ वे निकाले गये वृथा बोझ भविष्य कहा है। मार्ग के सारे पथिकों ने तुझ पर थपोड़ी मारी है वे यिरोशलीम की पुत्री पर सिर धुन के फुफकारी मार मार कहते हैं क्या यह वही नगरी

१६ हे जो पूरी सुन्दरी और सारी पृथिवी का आनन्द । तेरे सारे बैरियों ने तेरे बिरुद्ध मुंह खोला है उन्हों ने फुफकारी और दांत किचकिचा के कहा कि हम उसे लील गये हैं निश्चय हम इसी दिन की बाट जोहते थे हमने पाया है हमने देखा
१७ है । परमेश्वर ने अपनी युक्ति को करडाला उसने अपने वचन को पूरा किया है जो उसने अगिले दिनों में ठहराया सो उसने नाश किया और न छोड़ा परन्तु उसने एक बैरी को तुझ पर आनन्द कराया है उसने तेरे बैरियों के
१८ सींग को उभाड़ा है । उनके मन ने परमेश्वर के आगे ध्यान से प्रार्थना किई हे सैहून की पुत्री रात दिन धारा की नाईं अपने आंसू बहने दे आप को चैन मत दे अपनी आंख की पुतली को स्थिर
१९ मत होने दे । उठ रात्री के पहरों के आरंभ में चिल्ला चिल्ला रो अपना मन पानी की नाईं परमेश्वर के आगे उंडेल अपने नन्हें बालकों के प्राण के लिये अपने हाथ उठा जो सारे मार्गों
२० के सिरे में भूख के मारे मूर्छित हैं । कह कि हे परमेश्वर देख और सोच कि तू ने किस्से यह ब्यवहार किया है क्या स्त्री अपने कोख का फल जो बालक हाथ में नचाया गया भक्षेगी क्या याजक और भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के पवित्र स्थान
२१ में मारेजायेंगे । बालक और वृद्ध मार्गों में पड़े हुए हैं मेरी कुंआरियां और मेरे युवा पुरुष तलवार से गिरे हैं तू ने उन्हें अपनी रिस के दिन में घात किया है तू ने उन्हें मार डाला है
२२ और दया न किई । तू ने ठहराये हुए दिन के समान मेरे भय को चारो ओर बटोरा है यहां लों कि परमेश्वर की रिस के दिन में कोई न छूटा न बचा जिन्हें मैं ने पाला पोसा था वे सब मेरे बैरी हुए ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

इरमियाः का विलाप करना १—२० परमेश्वर की दया और सत्यता को मानना और कष्ट का फल बताना २१—३६ लोगों को परमेश्वर की ओर उभाड़ना ३७—४१ पापों को मान लेना ४२—५४ बैरियों के बिरुद्ध परमेश्वर की दोहाई देनी ५५—६६ ।

१ मैं वुह मनुष्य हों जिसने उसके कोप के दंड का दुःख देखा है।
२ उसने मुझे अंधियारे में चलाया है परन्तु उंजियाले में नहीं।
३ केवल वुह मेरे बिरुद्ध बैठा है वुह दिन भर अपना हाथ फेर
४ फेरा है। उसने मेरा मांस और मेरा चाम गला दिया है
५ उसने मेरी हड्डियों को तोड़ा है। उसने मुझ पर जुड़ाई किई
६ है और मेरे सिर को घेर के थकाया है। उसने उनकी नाईं जा
बव के मर गये हैं मुझे अंधियारे के मध्य में रहने कराया है।
७ उसने मेरी चारो ओर बाड़ा बांधा है कि मैं निकल नहीं सक्ता
८ उसने मेरी सीकरें भारी किई हैं। हां जब मैं चिल्ला चिल्ला
९ पुकारता हों वुह मेरी प्रार्थना को रोक्ता है। उसने ढाएहुए
पत्थर से मेरा मार्ग बन्द किया है उसने मेरे पथों को टेढ़ा किया
१० है। वुह घात में लगे हुए भालू की और छिपे हुए सिंह की
११ नाईं मेरे लिये है। वुह मुझ पर फिर बैठा है और मुझे टुकड़े
१२ टुकड़े किया है उसने मुझे उजाड़ा है। उसने अपना धनुष
१३ खींचा है और मुझे बाण के लिये चिन्ह कर रक्खा है। उसने
१४ अपने तूण के बाण को मेरे लंकों में बेधवाया है। मैं अपने
सारे लोगों के लिये सवांग और दिन भर उनका बाजा हुआ
१५ हों। उसने मुझे कड़वाहट से भर दिया है और नागदवने से
१६ मतवाला किया है। उसने कंकड़ से मेरे दांत को भी तोड़ा है
१७ उसने मुझे राख पर नीचे बैठाया है। और मेरा प्राण कुशल
१८ से दूर किया गया मैं भाग्य को भूल गया। तब मैं ने कहा कि

१९ परमेश्वर ने मेरा बल और मेरी आशा घटवाया है। मेरे क्लेश और मेरे नीच होने का कारण नागदवना और पित्त है।
२० बिना स्मरण से मेरा प्राण रहि नहीं सक्ता और मुझ में घटा जाता
२१ है। यह मैं अपने मन में दुहराता हों इस लिये मैं आशा
२२ रक्खोंगा। परमेश्वर की दया से हम क्षय नहीं होते क्योंकि उसकी
२३ दया नहीं घटती है। क्योंकि उसकी कृपा हर बिहान को नई है
२४ और तेरी सत्यता बड़ी है। मेरा प्राण कहता है कि परमेश्वर
२५ मेरा भाग इस लिये मैं उस पर भरोसा रक्खोंगा। जो उसकी बाट जोहता है जो प्राणी उसे खोजता है परमेश्वर
२६ उस पर कृपाल है। वुह परमेश्वर की मुक्ति की आशा की बाट
२७ चुपके से जोहे क्योंकि वुह कृपाल है। वुह मनुष्य पर कृपाल
२८ है जब वुह अपनी तरुणाई में जूआ उठावे। जब उस पर
२९ धरा जाय तब वुह चुपका और एकांत बैठा रहे। वुह अपने
३० मुंह को धूल पर रक्खे क्या जाने आशा होवे। वुह थपड़ाऊ
३१ की ओर गाल फेरे वुह अपमान से भर पूर होवे। क्योंकि
३२ परमेश्वर सदा त्याग न करेगा। परन्तु यद्यपि वुह क्लेश देवे तथापि वुह अपनी दया की बहुताई के समान मया करेगा।
३३ क्योंकि वुह मनुष्य के पुत्रों को दुःख देने अथवा शोकित करने में
३४ आनन्द नहीं है। कि देश के सारे बंधुओं को अपने पांव तले
३५ रौंदे। और बड़ों के आगे मनुष्य के बिचार को फेर देवे।
३६ और मनुष्य का पद बिगाड़ने में परमेश्वर को नहीं भावता।
३७ जब परमेश्वर ने आज्ञा न दिई तो किसने कहा है और पूरा
३८ हुआ है। क्या भला बुरा अति महान की आज्ञा से नहीं
३९ निकलता। जीवता मनुष्य अपने पाप के लिये कष्ट पाने में क्यों
४० दोहाई देवे। आओ हम अपने मार्ग ढूंढ़ें और परखें और
४१ परमेश्वर की ओर फिर जायें। आओ हम अपने अंतःकरण
४२ और हाथ स्वर्ग को ईश्वर की ओर उठावें। हमने अपराध
४३ किया है और फिर गये हैं तू ने क्षमा नहीं किया है। तू ने

अपनी रिस से घेरा है और खेदा है तूने घात किया है और
४४ नहीं छोड़ा है। तूने अपनी चारो ओर मेघ से घेरा है जिसतें
४५ प्रार्थना प्रवेश न करे। तूने हमें लोगों के मध्य में घोअन और
४६ कूड़ा किया है। हमारे सारे बैरियों ने हमारे बिरुद्ध मुंह
४७ खोले हैं। भय और गड़हा और उजाड़ और नाश हम पर
४८ पड़ा है। मेरे लोगों की पुत्री के नाश के कारण मेरी आंखें
४९ जल की धारा बहाती हैं। मेरी आंख टपकते टपकते नहीं थमती
५० यहां लों कि उसे चैन का अंतर नहीं। परमेश्वर जब लों ऊपर
५१ से न देखे और स्वर्ग से न बूझे। तब लों मेरे नगर की सारी
५२ पुत्रियों के कारण मेरी आंखों से प्राण को कष्ट होता है। मेरे
५३ बैरी मुझे चिड़िया की नाईं खेदते हैं। उन्हों ने मेरे प्राण को
५४ गड़हे में काटा है मुझ पर पत्थर धर दिया है। मेरे सिर के
५५ ऊपर से पानी बढ़ गये मैं ने कहा कि मैं कट गया हों। हे
५६ परमेश्वर मैं ने नीचे के भकस में से तेराही नाम लिया। तूने
मेरा शब्द सुना है मेरे रोने पर सहाय करने में अपना कान
५७ मत छिपा। जब मैं ने तुझे पुकारा पास आके तूने कहा कि
५८ मत डर। हे परमेश्वर तूने मेरे प्राण के पद का बिवाद किया
५९ है तूने मेरे जीव को छुड़ाया। हे परमेश्वर जो अनीति मुझ
६० पर ऊई सो तूने देखी है मेरा न्याय कर। मेरे बिरुद्ध तूने
६१ उनके सारे बैर और सारी युक्तों को देखा है। हे परमेश्वर
तूने उनकी निन्दा और मेरे बिरुद्ध उनकी सारी युक्तों को।
६२ बैरियों का होंठ और उनका कुड़कुड़ाना मेरे बिरुद्ध दिन भर
६३।६४ सुना है। देख उनके बैठने उठने में मैं उनका बाजा हूं। हे
परमेश्वर उनके हाथों के कार्य्य के समान तू उन्हें प्रतिफल देगा।
६५।६६ तू अपने मनही से उन्हें धिक्कारेगा। हे परमेश्वर तू रिस
से उनका पीछा करेगा और स्वर्ग के तले से उन्हें नाश करेगा।

४ चैाथा पर्ब्ब।

नगर के और लोगों के नाश के लिये इरमियाः का बिलाप करना १—१२ भविष्यद्वक्ता के और याजकों के पाप के कारण उनपर विपत्ति १३—२० सैहून के शांति का और अदूम के दंड की भविष्य वाणी २१—२२।

१ सोना क्यों मलीन हुआ चोखे से चोखा सोना क्योंकर पलटा गया
२ पवित्र पत्थर सड़क के हर एक सिरे पर छितरे हैं। सैहून के अत्युत्तम पुत्र चोखे सोने के तुल्य कुम्हार के बनाये हुए मिट्टी के
३ घड़े की नाईं क्यों समझे जाते हैं। जलचरी भी अपने स्तनों को निकाल निकाल अपने बच्चों को पीलाती है मेरे लोगों की पुत्री
४ अरण्य के ऊंटपक्षियों की नाईं क्रूर है। दूध के बालक की जीभ प्यास के मारे तालू से लगी है नन्हें बालकों ने रोटी मांगी परन्तु
५ किसी ने उन्हें न दिई। जो सुस्वाद खाते थे वे सड़क में त्यक्त हैं
६ जो लाल वस्त्र पर पाले गये थे सो घूरों पर लोटते हैं। मेरे लोगों की पुत्री का दंड सदूम के दंड से भी बड़ा है जो पल मात्र
७ के तुल्य उलटाया गया उसमें हाथ दुर्बल न हुए। उसके कुलीन पाले से भी शुद्ध थे वे दूध से अतिश्वेत थे उनकी हड्डी पद्मराग
८ मणि से भी लाल उनकी नस नील मणि थी। उनका रूप कालिख से काला है वे सड़कों में जाने नहीं जाते उनका चमड़ा उनके हाड़ों से सटा हुआ है जो सूखे काठ की नाईं
९ हुआ है। जो तलवार से मारे गये हैं सो अकाल से मारे हुओं से अच्छे हैं क्योंकि वे बेधे हुए जाके खेत के फलों से आगे
१० जाते रहते हैं। मयाल स्त्रियों के हाथों ने अपनेही बालकों को उसिना है जो मेरे लोगों की पुत्री के नाश में उनके लिये भोजन
११ हुए। परमेश्वर ने अपने कोप को प्रगटा है उसने अपने रिस की जलजलाहट उडेली है और सैहून में एक आग बारी है
१२ यहां लों कि उसकी नेओं को भस्म किया है। पृथिवी के राजाओं ने और जगत के सारे बासियों ने प्रतीति न किई कि

१३ बैरी और शत्रु यिरोशलीम के फाटकों में पैठेंगे। उसके भविष्यद्वक्तों के पाप और उसके याजकों की बुराइयों के कारण
१४ जिन्हों ने धर्मियों का लोहू उसमें बहाया। लोहू से अशुद्ध होके वे पागल हो हो सड़कों में से दैाड़ गये जिन्हें वे बश में कर न सके उन्हों ने उनके कपड़े छूये लोग उन्हें पुकार पुकार के कहते
१५ थे कि अरे अपवित्र दूर होओ दूर होओ दूर होओ छूओ मत उनके झगड़ालू होने के कारण हां जब वे भगेड़ू थे लोगों ने
१६ जातिगणों में कहा कि वे फेर वहां टिकेंगे। उनका भाग अर्थात् परमेश्वर का रूप उन पर फेर दृष्टि न करेगा उन्हों ने याजकों का आदर नहीं किया और उन्हों ने प्राचीनों पर कृपा
१७ न दिखाई। अबलों हम लोग बने थे अपनी आशा की ओर ताकते ताकते हमारी आंखें घट गईं पहरे के गुम्मट पर हमने एक
१८ जाति की बाट वृथा जोही जो बचा नहीं सक्ती। वे हमारे डग अहेरते थे यहां लों कि हम अपने मार्गों में चल न सक्ते थे हमारा अंत आ पहुंचा हमारे दिन पूरे हुए हां हमारा अंत आया
१९ है। हमारे खेदुये आकाश के गिद्धों से अधिक बेगवान थे उन्हों
२० ने हमें पर्ब्बतों पर खेदा वे जंगल में हमारे ढूके में लगे। कि हमारे नथुनों का श्वास अर्थात् परमेश्वर का अभिषिक्त उनके यत्न में पकड़ा गया जिसकी छाया के तले हम लोगों ने कहा कि
२१ अन्यदेशियों में रहेंगे। हे अदूम की पुत्री जो ऊज़ के देश में बास करती है तू आनंद कर और मगन हो कटोरा तुझ पर भी पहुंचेगा तू भी मतवाली होगी और अपनी नग्नता
२२ उघारेगी। हे सैहून की पुत्री तेरे दंड का अंत हुआ है तुझे फेर कभी दूसरे देश में बंधुआई में न पहुंचावेगा हे अदूम की पुत्री तेरा दंड आता है तेरे पापों के कारण तुझे बंधुआई में जाना है।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

यहूदियों का अपने पाप के लिये कष्ट और प्रार्थना १—१८ परमेश्वर की दया चाहनी १९—२२।

१ हे परमेश्वर जो कुछ हम पर बीता है सो स्मरण कर और
२ हमारे अपमान को देख। हमारा अधिकार उपरियों को और
३ हमारे घर परदेशियों को सौंपे गये हैं। हम अनाथ ऊए
आैर पिता रहित और हमारी माता विधवा की नाईं।
४ हमने रोकड़ देके जल पीया है हमारा ईंधन मोल से आता
५ है। हम अपने गले के जूये से नित बोझित हैं हम परिश्रम
६ करते हैं और हमें बिश्राम नहीं मिलता। अरे मिसरी हमने
अपने तईं सौंपा है अरे असूरी जिसतें हम भोजन से तृप्त होवें।
७ हमारे पितरों ने पाप किया है परन्तु वे नहीं हैं हमने उनकी
८ बुराइयों का दंड भोगा है। सेवकों ने हम पर प्रभुता किई है
९ और उनके हाथ से हमें छुड़ाने को कोई नहीं। बन की
तलवार के मारे हम अपनी रोटी जो जोखिम से पाते हैं।
१० भूख की आंधी के झोके के मारे हमारे चाम भट्ठी की नाईं झौंस
११ गये। सैहून में स्त्रियों पर और यहूदा के नगरों में
१२ कुआंरियों पर बलात्कार किया है। उनके हाथ से राज पुत्र
१३ लटकाये गये और प्राचीनों की प्रतिष्ठा न ऊई। तरुणों को चक्की
१४ पीसने पड़ा और छोकड़े लकड़ी तले बैठगये। प्राचीन फाटक
१५ में से और तरुण अपने बाजे से घट गये हैं। हमारे मन का
आनन्द जाता रहा है हमारा नाच विलाप के लिये पलट गया
१६ है। हमारे सिर से मुकुट गिरा है हाय हम पर कि हमने
१७ पाप किया है। इसी कारण हमारा मन घट गया है इन बातों
१८ के कारण हमारी आंखें धुंधला गईं। क्योंकि सैहून पहाड़ के
१९ कारण जो उजड़ है लोमड़ियां उसमें फिरी हैं। परन्तु हे
परमेश्वर तू सदा स्थिर रहेगा तेरा सिंहासन पीढ़ी से पीढ़ी
२० लों। तू क्यों हमें सर्वथा भूलेगा क्या तू हमें बऊत दिन लों
२१ त्यागेगा?। हे परमेश्वर हमें अपनी ओर फिरा तब हम
२२ फिरेंगे आगे की नाईं हमारे दिनों को पलट दे। क्योंकि
निश्चय तू ने हमें सर्वथा त्यागा है तू हम पर अत्यंत कोपित
ऊआ है।

इज़किये़ल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

इज़किये़ल भविष्यद्वक्ता का पद पाना १—३ उसका दर्शन ४—२५ ईश्वर का बिभव २६—२८।

१ अब तीसवें बरस के चौथे मास की पांचवीं तिथि में ऐसा हुआ कि किबार नदी के लग जब मैं बन्धुआई में था स्वर्ग खुल २ गये और मैंने ईश्वर के दर्शन पाये। यहूयाकीन राजा की ३ बन्धुआई के पांचवें बरस के मास की पांचवीं तिथि में। किबार नदी के लग कलदानियों के देश में बूज़ी के बेटे इज़किये़ल याजक पास परमेश्वर का बचन बिशेष करके पहुंचा और ४ परमेश्वर का हाथ वहां उसपर था। और मैंने दृष्टि किई तो क्या देखता हों कि उत्तर से एक बौंड़र एक महा मेघ और बरती हुई आग और उसके आसपास एक चमक आये और उसके मध्य में से अर्थात आग में से तेलस्फटिक का सा रंग। ५ और उसके मध्य में से भी चार प्राणी की नाईं और वे मनुष्यों ६ की नाईं दिखाई देते थे। और हरएक के चार चार मुंह ७ और चार चार डयने थे। उनके पांव सीधे पांव और उनके पांव के तलवे बछरू के पांव के तलवे की नाईं और वे चमकते ८ पीतल की नाईं चमकते थे। और उनके चारो अलंग डयनों के नीचे मनुष्य के हाथ थे और उन चारो के मुंह और डयने ९ थे। उनके डयने एक एक से जोड़े हुए थे और चलने में १० वे फिरते न थे उनमें हरएक सीधा बढ़ता था। उनके दहिने

अलंग उन चारों के मुंह मनुष्य के मुंह की नाईं और सिंह के मुंह की नाईं थे और बांई अलंग उन चारों के मुंह बैल के से
११ थे और उन चारों के मुंह गिद्ध के से भी थे। उनके मुंह योंहीं और उनके डयने ऊपर से बिभाग थे हरएक के दो डयने एक दूसरे से जोड़े ऊए थे और दो उनके देह ढांपते थे।
१२ उनमें से हरएक सीधा बढ़ा जाता था जिधर आत्मा को जाना था
१३ वे जाते थे वे जाने में फिरते न थे। उन प्राणियों का स्वरूप जो था सो आग के जलते अंगारों की नाईं और देखने में दीपकों की नाईं प्राणियों में ऊपर नीचे जाते थे और वुह आग तेज थी
१४ और उस आग में से बिजुली निकलती थी। और वे प्राणी देखने में बिजुली की चमक की नाईं दौड़ते थे और फिर आते
१५ थे। सो जब मैं उन प्राणियों को देख रहा था तो क्या देखता हों कि उन प्राणियों के लग एथिवी पर चार
१६ मुंह का एक चक्र है। चक्र और उनका कार्य्य बैदूर्य रंग के समान और चारों एकही समान थे और देखने और कार्य में
१७ चक्र के मध्य में चक्र की नाईं थे। चलने में वे अपने चारों
१८ अलंगों पर चलते थे और चलने में वे फिरते न थे। और उनकी गोलाई जो थी सो ऐसी ऊंची थी कि वे भयंकर थे और उनकी गोलाई में चारों ओर आंखें भरी ऊई थीं।
१९ प्राणियों के चलने में चक्र उनके पास पास जाते थे और जब
२० प्राणी एथिवी से उठाये जाते थे चक्र भी उठाये जाते थे। जहां कहीं आत्मा को जाना था वे जाते थे तहां उनके आत्मा को जाना था, और उनके सन्मुख चक्र उठाये जाते थे क्योंकि जीवन
२१ का आत्मा चक्र में था। उनके चलने में चलते थे और उनके ठहरने में ठहरते थे और जब वे एथिवी से उठाये जाते थे चक्र उनके सन्मुख उठाये जाते थे क्योंकि चक्रों में जीवन का
२२ आत्मा था। उन प्राणियों के सिरों पर आकाश की नाईं भयंकर स्फटिक के रंग के समान उनके सिरों के ऊपर फैला था।

२३ और आकाश के तले उनके डयने सीधे एक दूसरे की ओर हरएक के दो दो थे जो इस अलंग को ढांपते थे और हरएक
२४ के दो दो थे जो उनके शरीर के उस अलंग को ढांपते थे। और जब वे चलते थे मैं ने उनके डयनों का शब्द जैसे बहुत से पानियों का शब्द सुना, सर्व्व शक्तिमान के शब्द की नाईं बोली का शब्द सेना के शब्द की नाईं खड़े होने में वे डयने सिकोड़ लेते थे।
२५ जब वे खड़े होते और पर को सिकोड़ते थे तब उनके सिर के
२६ ऊपर आकाश से शब्द होता था। और उनके सिरों पर के आकाश के ऊपर देखने में नीलकांत की नाईं एक सिंहासन था और सिंहासन के रूप पर मनुष्य के रूप की नाईं उसके
२७ ऊपर था। और उसके भीतर चारो ओर आग की नाईं तेलस्फटिक की नाईं मैं ने देखा अर्थात उसकी कटि के स्वरूप ऊपर लों और उसकी कटि से नीचे लों मैं ने आग की नाईं देखा
२८ और उसकी चारो ओर चमक थी। उस धनुष की नाईं जो बरसने के दिन मेघ पर होता है चारो ओर की चमक देखने में वैसीही थी परमेश्वर का बिभव देखने में ऐसाही था और देखतेही मैं औंधे मुंह गिरा और एक के कहने का मैं ने शब्द सुना।

२ दूसरा पर्ब्ब।

इज़किएल का इसराईल पास भेजा जाना १—५ उसका चिताया जाना ६—८ और पिंडी का पाना ९—१०।

१ और उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अपने पांव पर खड़ा
२ हो और मैं तुझ से कहोंगा। और उसका मुझ से कहतेही आत्मा ने मुझ में प्रवेश किया और मुझे पांव पर खड़ा किया और जो
३ मुझ से कहि रहा था मैं ने उसकी सुनी। उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र मैं तुझे इसराईल के सन्तानों के पास दंगइत

जातिगणों के पास जो मुझ से फिरगये हैं भेजता हों उन्हों ने और
४ उनके पितरों ने आजलों मेरा अपराध किया है। क्योंकि वे
ढीठ और करेर मन के सन्तान हैं मैं तुझे उन पास भेजता हों
५ और उनसे कहियो कि परमेश्वर ईश्वर यों कहता है। और
चाहें वे सुनें चाहें न सुनें क्योंकि वे दंगइत घराने हैं तथापि वे
६ जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता हम्में ऊआ है। हे मनुष्य के
पुत्र तू उनसे मत डर न उनके बचन से डर यद्यपि दंगइत और
कांटे तेरे साथ होवें और तू बिच्छुओं में बास करे उनके बचन से
मत डर और उनकी दृष्टि से बिस्मित मत हो यद्यपि वे दंगइत
७ घराने होवें। और मेरे बचन उनसे कहियो चाहें वे सुनें
८ चाहें न सुनें क्योंकि वे अति दंगइत हैं। परन्तु हे मनुष्य के
पुत्र तू मेरा कहना सुन तू उस दंगइत घराने के समान दंगइत
मत हो जो मैं तुझे देता हों उसे अपना मुंह खोल के खा।
९ और दृष्टि करके क्या देखता हों कि एक हाथ मेरे पास
भेजा गया और क्या देखता हों कि उसमें एक पुस्तक की
१० पिलंडी है। और उसने मेरे आगे उसे खोला और बाहर
भीतर लिखा था उसमें बिलाप और शोक और सन्ताप
लिखा था।

३ तीसरा पर्ब्ब।

इज़कियल का पिलंडी को खाना और ईश्वर से
उभाड़ा जाना १—११ उसका बंधुआई में पऊंचाया
जाना १२—१५ उसका उपदेश पाना १६—२७।

१ उसे अधिक उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो तू पावे
सो खा इस पिलंडी को खा और इसराईल के घराने से कह।
२ सो मैं ने मुंह खोला और उसने वुह पिलंडी मुझे खिलाई।
३ फिर उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो मैं तुझे देता हों
उसे अपने पेट में डाल और उसे अपना ओझ भर तब मैं ने

३ खाई और वुह मेरे मुंह में मधु की नाईं मीठी थी। फिर उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू इसराईल के घराने
५ पास जा और मेरे बचन उनसे कह। क्योंकि उपरी भाषा और गहू बोली के लोगों पास तू नहीं भेजा जाता है परन्तु
६ इसराईल के घराने के पास। उपरी भाषा और गहू बोली के बज्जत से लोगों पास नहीं जिनके बचन तू समझ नहीं सक्ता जो मैं तुझे उन पास भेजता तो वे निश्चय तेरी मानते।
७ परन्तु इसराईल के घराने तेरी न सुनेंगे क्योंकि मेरी न सुनेंगे इसलिये कि इसराईल के सारे घराने निर्लज्ज और कठोर
८ अन्तःकरण के हैं। देख उनके मुंह के आगे मैंने तेरे मुंह को दृढ़ किया है और तेरे कपाल को उनके कपाल के सन्मुख दृढ़
९ किया है। मैंने तेरे कपाल को हीरे की नाईं चकमक से भी करेर किया है उनसे मत डर और उनके रूप से बिस्मित मत
१० हो यद्यपि वे दंगइत धराने हैं। उसने मुझे अधिक कहा कि हे मनुष्य के पुत्र सारे बचन को जो मैं तुझे कहोंगा अपने मन में
११ ग्रहण कर और अपने कानों से सुन। और उठके अपने लोगों के सन्तानों के बंधुआइयों पास जा और उन्हें कहिके बोल कि परमेश्वर यों कहता है चाहें वे सुनें चाहें न सुनें।
१२ फिर आत्मा ने मुझे उठालिया और मैंने अपने पीछे एक बड़ी झपट का शब्द सुना कि अपने स्थान से परमेश्वर के महात्म
१३ का धन्यबाद। और मैंने प्राणियों के भिड़े ज़ए डयनों का शब्द भी सुना और उनके साम्ने के चक्रों का शब्द और एक बड़ी
१४ झपट का शब्द सुना। सो आत्मा मुझे उठाके लेगया और मैं अपने मन के रिस की अति कड़वाहट से गया परन्तु परमेश्वर
१५ का हाथ बल से मुझ पर था। तब मैं तिलबिब में किबार नदी के तीर बंधुआइयों के पास पज्ज़चा और जहां वे बैठे थे तहां मैं बैठ गया और उनमें सात दिनलों आश्चर्यित रहि गया।
१६ सात दिनों के पीछे यों ज़आ कि परमेश्वर का बचन यह

१७ कहते ऊए मुझ पास पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र मैं ने तु
इसराईल के घराने के लिये रखवाल बनाया है इसलिये मे
१८ मुंह से बचन सुन और मेरी ओर से उन्हें चिता। जब
दुष्ट से कहों कि तू निश्चय मरेगा और तू उसे न चितावे और
दुष्ट को उसका प्राण बचाने को उसकी दुष्टता से फिराने के
न चितावे तो दुष्ट अपनी बुराई में मरेगा परन्तु उसके लोह
१९ का पलटा मैं तुझ से लेओंगा। तथापि यदि तू दुष्ट को चितावे
और वुह अपनी दुष्टता से और अपने दुष्ट मार्ग से न फिरे तो
वुह अपनी बुराई में मरेगा परन्तु तू ने अपना प्राण छुड़ाया
२० है। फिर जब धर्मी अपने धर्मों से फिर जाय और बुराई
करे और मैं उसके आगे ठोकर रक्खों तो वुह मरेगा इस
कारण कि तू ने उसे नहीं चिताया वुह अपने पाप में मरेगा
और उसका धर्म कर्म स्मरण न किया जायगा परन्तु उसके
२१ लोहू का पलटा मैं तेरे हाथ से लेऊंगा। तथापि यदि तू
धर्मी को चितावे कि पाप न कर और वुह पाप न करे तो वुह
चिताये जाने के कारण से अवश्य जीयेगा और तू ने भी अपना
२२ प्राण छुड़ाया। और वहां परमेश्वर का
हाथ मुझ पर पड़ा और उसने मुझे कहा कि उठ चौगान को
२३ जा और वहां मैं तुझ से बातें करोंगा। तब मैं उठके चौगान
में गया और क्या देखता हों कि परमेश्वर का महात्म उस
महात्म की नाईं जो मैं ने किबार नदी के तीर देखा था खड़ा
२४ है और मैं मुंह के बल गिरा। तब आत्मा ने मुझमें प्रवेश
करके मुझे खड़ा किया और मुझ से कहिके बोला कि जा अपने
२५ घर में आप को बंद कर। परन्तु हे मनुष्य के पुत्र देख वे तुझ
पर बंधन डालेंगे और उनसे तुझे बांधेंगे और तू उनमें फेर
२६ बाहर न जायगा। और तुझे गूंगा करने को मैं तेरी जीभ
को तेरे तालू से लगाऊंगा और तू उनका दपटवैया न होगा
२७ क्योंकि वे दंगइत घराने हैं। परन्तु जब मैं तुझ से कहों मैं तेरा

मुंह खोलोंगा और तू उनसे कहना कि ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जो सुनता है सो सुने और जो न सुने सो न सुने क्योंकि वे दंगइत घराने हैं ।

४ चैाथा पर्ब्ब ।

यिरोशलीम का घेरा जाना बताना १—८ निवासियों पर अकाल पड़ना ९—१७ ।

हे मनुष्य के पुत्र तू एक खपरा ले और अपने आगे रख और उस पर यिरोशलाम नगर का चित्र उतार। और उसके बिरुद्ध घेर और उसके सन्मुख गढ़ बना और उसके बिपरीत मुरचा बांध और उसके बिरुद्ध छावनी भी कर और उसके बिरुद्ध चारों ओर ढाहक लगा। और अपने लिये एक लोहे का पत्र ले और अपने और नगर के मध्य में उसे एक लोहे की भीत खड़ी कर और उसके बिरुद्ध हो और वुह घेरा जायगा और तू उसके बिरुध उसे घेरना यही इसराईल के घराने के लिये एक चिन्ह होगा। तू अपने बायें करवट भी लेटना और इसराईल के घराने की बुराई उस पर धर तू अपने लेटने के दिनों की गिनती के समान उनकी बुराई को सहना। क्योंकि मैं ने तुझ पर उनकी बुराइयों के बरसों के दिनों की गिनती के समान तीन सैा नब्बे दिन धरा है इस रीति से तू इसराईल के घराने की बुराई को सहेगा। और उन्हें पूरा करके फिर अपने दहिने करवट लेटजा और चालीस दिन लों यहूदा के घराने की बुराई को सहना मैं ने बरस बरस के लिये तुझे एक एक दिन दिया है। इस लिये तू यिरोशलीम के घेरेजाने की ओर रुख कर और तेरी भुजा उघारी हुई और उसके बिरुद्ध भविष्य कह। और देख मैं तुझ पर बंधन डालोंगा और अपने घेरेजाने के दिनों के समाप्त लों करवट से करवट लों न फिरेगा। तू अपने लिये गोहूं और जव और उरिद और तिल और

बाजरा और मसूर ले और उन्हें एक पात्र में रख और अपनें करवट के दिनों की गिनती के समान उनकी रोटी बना
१० तू तीन सौ नब्बे दिन लों उन्हें खाया कर। और तौल तौल के
११ बीस शेकल भर भोजन दिन भर में जब तब खाया करना। तू एक हिन का छठवां भाग तौल तौल के जल भी जब तब पीया
१२ करना। और उसे जव का फुलका सा खाना और तू उनकी
१३ दृष्टि में मनुष्यों के विष्ठा से उसे पकाया कर। और परमेश्वर ने कहा कि मैं जिधर उन्हें खेदोंगा इसराईल के संतान इसी
१४ रीति से अपनी अशुद्ध रोटी अन्यदेशियों में खायेंगे। तब मैं ने कहा कि हाय ईश्वर परमेश्वर देख मेरा प्राण अशुद्ध नहीं हुआ है क्योंकि तरुणाई से अब लों आप से आप मरा हुआ अथवा फाड़ा हुआ मैं ने नहीं खाया है और न घिनित मांस मेरे मुंह
१५ में पड़ा। तब उसने मुझे कहा कि देख मैं ने मनुष्य के विष्ठा की संती गोइंठा तुझे दिया है और तू अपनी रोटी उसे
१६ पकाया कर। उसने मुझे यह भी कहा कि हे मनुष्य के पुत्र देख मैं यिरोशलीम में रोटी की लाठी तोड़ डालोंगा और वे चिंता से रोटी तौल तौल खायेंगे और आश्चर्यित से जल नाप
१७ नाप पीयेंगे। जिसतें वे अन्न जल के मारे हों और एक दूसरे से चकचौंधी हों और अपने पाप के मारे क्षीण होजावें।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

यहूदियों से ईश्वर के व्यवहार का चिन्ह बताना १—४ लोगों का अति पाप और दंड उचारना ५—१७ ।

१ हे मनुष्य के पुत्र एक चोखी छूरी ले और एक नापित का छूरा ले और उन्हें अपने सिर पर और दाढ़ी पर चला तब तौलने
२ और भाग करने की तुला ले। जब घेरे जाने के दिन पूरे होवें तब नगर के मध्य में तू तीसरा भाग आग से जला और

तीसरा भाग लेके उसके आस पास छूरी मार और तीसरा भाग पवन में उड़ाउ और मैं उनके पीछे तलवार खींचोंगा।
४ तू उनमें से थोड़ासा भी लेके अपने खूंट में बांध। फिर उनमें से लेके आग में डाल और आग से उन्हें जलाउ क्योंकि उसमें से आग सारे इसराईल के घराने में निकलेगी। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यही यिरोशलीम है मैंने उसे चारो ओर के जातिगणों और देशों के मध्य में रक्खा है। और जातिगणों से अधिक उसने मेरी नीति को दुष्टता से और अपने चारो ओर के देशों से मेरी बिधिन को अधिक पलट डाला है क्योंकि उन्होंने मेरी नीतिन को और मेरी बिधिन को नाह किया है और उन्हें नहीं माना है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम लोग अपनी चारो ओर के जातिगणों से बढ़ गये और मेरी बिधिन पर न चले और न मेरी नीतिन को पाला है और न चारो ओर के जातिगणों की नीति के समान किया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैंहीं तेरे बिरुद्ध हों और अन्यदेशियों की दृष्टि में तेरे मध्य में दंड देओंगा। और तेरी सारी घिनित क्रिया के समान मैं तुझ में वही करोंगा जो मैंने नहीं किया
१० है और वैसा फेर कधी न करोंगा। इस लिये तेरे मध्य में पिता पुत्र को खायेंगे और पुत्र पिता को खायेंगे और मैं तुझ में दंड देओंगा और तुम्हारा सारा बचा हुआ चौदिसा में
११ छितरा देउंगा। इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों निश्चय जैसा तू ने अपनी सारी तुच्छ और सारी घिनित वस्तुन से मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है तैसा मैं भी तुझे घटाओंगा और मेरी आंख न छोड़ेगी और मैं मया
१२ न करोंगा। तेरा तीसरा भाग मरी से मरेगा और तेरे मध्य में अकाल से छीण होजायेंगे और तीसरा भाग तेरी चारो ओर के तलवार से गिरेंगे और मैं सारे पवन में तीसरे भाग

१३ को छितरा देउंगा और उनके पीछे तलवार खींचोंगा। इस रीति से मैं अपनी रिस दिखाओंगा और मैं अपना कोप उनपर धरोंगा तब मैं शान्ति पाओंगा और जब मैं अपने कोप को उन पर उतार चुकोंगा तब वे जानेंगे कि मुझ परमेश्वर ने
१४ अपने ज्वलन में कहा है। अधिक मैं तुझे चारो ओर के जातिगणों में एक उजाड़ और सारे पथिकों की दृष्टि में निन्दित
१५ बनाओंगा। जब मैं रिस ओर कोप और जलजलाहट दपट में तुझे दंड देउंगा तो तू चारो ओर के जातिगणों के लिये एक निन्दा और ठट्ठा और चितावनी और आश्चर्यित होगा
१६ मैंहीं परमेश्वर ने कहा है। जब कि मैं उनपर अकाल के बुरे बाण भेजोंगा जो नाश के लिये होंगे जिन्हें मैं तुम्हें नाश करने को भेजोंगा और मैं अकाल को तुम पर बढ़ाओंगा और
१७ तुम्हारी रोटी का आधा तोड़ोंगा। इसी रीति से मैं तुम पर अकाल और क्रूर पशुन को भेजोंगा और वे तुझे हीन करेंगे और मरी और लोहू तुझ में से प्रवेश करेगा मैं तलवार तुझ पर लाऊंगा मैंहीं परमेश्वर ने कहा है।

६ छठवां पर्ब्ब।

मूर्त्तिन का और उनके पुजेरियों का नाश और बचे हुए की भलाई बतानी १—१० लोगों पर उनके पाप प्रगट करना ११—१४।

१।२ परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मुझ पास पहुंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र इसराईल के पर्ब्बतों की ओर रुख कर और उनके
३ विरुद्ध भविष्य कह। और बोल कि हे इसराईल के पर्ब्बतो प्रभु परमेश्वर का वचन सुनो प्रभु परमेश्वर पर्ब्बतों को ओर टीलों को और नदियों को और तराइयों को कहता है कि देखो मैंहीं तुम पर तलवार लाके तुम्हारे ऊंचे स्थानों को नाश करोंगा।
४ और तुम्हारी बेदियां उजड़ जायेंगी और तुम्हारी मूर्त्ति तोड़ी

जायेंगी और तुम्हारी प्रतिमा के आगे मैं तुम्हारे जूझे ऊओं
५ को डाल देउंगा। और मैं इसराईल के संतानों की लोथ उनकी प्रतिमाओं के आगे रक्खोंगा और मैं तुम्हारे हाड़ों को
६ तुम्हारी वेदियों की चारो ओर छितराओंगा। तुम्हारे सारे निवासों में नगर खंड़हर किये जायेंगे और ऊंचे स्थान उजाड़े जायेंगे जिसतें तुम्हारी वेदियां खंड़हर किई जायें और उजाड़ी जायें और तुम्हारी प्रतिमा तोड़ी जायें और नरहें और तुम्हारी मूर्त्ति काटी जायें और तुम्हारे कार्य मिटाये जायें।
७ और जूझे ऊए लोग तुम्हारे मध्य में गिरेंगे और तुम लोग
८ जानोगे कि मैं परमेश्वर हों। तथापि मैं बचे ऊए को छोड़ोंगा जिसतें जब कि तुम लोग देशों में छिन्न भिन्न होगे तब
९ जातिगणों में तलवार से बचे ऊए तुम्में होवें। और जो तुम्में से बच निकलेंगे सो जातिगणों में जहां जहां वे बंधुआई में पऊंचाये जायेंगे मुझे स्मरण करेंगे इस कारण कि मैं उनके वेश्याई मन से, जो मुझसे फिर गया है और उनकी मूर्त्तिन के पश्चातगामी आंखों से टूटा ऊआ हों और वे अपनी सारी बुराइयों के लिये जो उन्हों ने अपने सारे घिनितों में किई हैं वे
१० आप से घिनावेंगे। और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों और मैं ने यह बुराई उन पर लाने को वृथा न कहा।

११ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हाथ से थपड़ा और पांव देदे मार और कह कि इसराईल के घराने की बुरी घिनितों के लिये हाय क्योंकि वे तलवार से और अकाल से और मरी से
१२ गिरेंगे। जो दूर है सो मरी से मरेगा और जो पास है सो तलवार से गिरेगा और जो रहिगया है और घेरा ऊआ है सो अकाल से मरेगा इस रीति से मैं अपना कोप उन पर
१३ पूरा करोंगा। और जब उनके जूझे ऊए उनकी मूर्त्तिन में उनकी वेदी की चारो ओर हर एक ऊंचे पर्ब्बत पर और पर्ब्बतों के सारे टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले और हर

एक मोटे आलोन पेड़ तले जिस स्थान में उन्हों ने अपनी सारी प्रतिमा के लिये सुगंध जलाया था होंगे तब तुम लोग जानेगे
१४ कि मैं परमेश्वर हों। इस रीति से मैं उन पर अपना हाथ बढ़ाओंगा और उनके देशों को उनके सारे निवासों में दिबलास बन से अधिक उजाड़ करोंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।

७ सातवां पर्ब्ब ।

इसराईल के उजाड़ होने की भविष्यबाणी १—१५ बचे ऊए की विपत्ति १६—१९ पाप के मारे पवित्र स्थान का अशुद्ध किया जाना २०—२२।

१।२ परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए मेरे पास पऊंचा। हे मनुष्य के सन्तान प्रभु परमेश्वर इसराईल के देशों से भी यों कहता है
३ कि एक अंत, देश के चारो कोनों पर अंत आया है। अब तुझ पर अंत आ पऊंचा है और मैं अपनी रिस तुझ पर भेजोंगा और तेरी चालों के समान तेरा बिचार करोंगा और
४ तेरे सारे घिनितों का पलटा तुझे देऊंगा। मेरी आंख तुझे न छोड़ेगी मैं मया न करोंगा परन्तु तेरी चालों का पलटा तुझे देऊंगा और तेरे घिन तेरे मध्य में होंगे और तुम जानेगे
५ कि मैं परमेश्वर हों। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि एक
६ बुराई, देखो केवल बुराई आई है। अंत पऊंचा है अंत पऊंचा है जो तेरे बिरुद्ध जागता है देख वुह आ पऊंचा है।
७ हे देश के निवासी बिहान तुझ पर पऊंचा है समय पऊंचा है दुःख का दिन पास आया है और पर्ब्बतों का प्रतिशब्द नहीं।
८ अब मैं तुझ पर अपना कोप ऊंडेलोंगा और अपनी रिस तुझ पर पूरी करोंगा और तेरी चाल के समान तेरा बिचार करोंगा
९ और तेरे सारे घिनितों का पलटा तुझे देओंगा। और मेरी आंखें न छोड़ेंगी और मया न करोंगा तेरी चाल और

तेरे घिनितों के समान जो तेरे मध्य में हैं मैं तुझे पलटा देओंगा
१० और तुम लोग जानोगे कि मैं दंडदायक परमेश्वर हों। वुह दिन
देखो देखो वुह पहुंचा है बिहान निकल चला है छड़ी फूली है
११ अहंकार में कली निकली है। अंधेर से दुष्टता की छड़ी
बनगई है न वे न उनका दंगा न उनके दंगइत रहेंगे और न
१२ उनके लिये शोक किया जायगा। समय आया है दिन
आपहुंचा किनवैया आनंद न करे और न बेचवैया
शोक करे इसलिये कि उसकी सारी मंडली पर कोप है।
१३ क्योंकि बेचवैया बेचे हुए की ओर न फिरेगा यद्यपि अबलों
उनमें जीव हुआ होता क्योंकि दर्शन उसकी सारी मंडलियों के
विषय में है जो न लौटेगा और न कोई अपनी बुराई की चाल
१४ में आप को दृढ़ करेगा। लैस करने को उन्हों ने तुरही फूंकी है
परन्तु कोई संग्राम को नहीं जाता क्योंकि उसकी सारी
१५ मंडली पर मेरा कोप है। तलवार बाहरी बाहर और
अकाल और मरी भीतर भीतर खेत में का तलवार से मारा
जायगा और नगर में का अकाल और मरी से भक्षा
१६ जायगा। परन्तु जो उनमें से बच निकलेंगे
सो बच निकलेंगे और हरएक अपनी अपनी बुराई के लिये
तराइयों के पंडुकों की नाईं सबके सब पर्ब्बतों पर बिलाप करते
१७ हुए होंगे। सारे हाथ दुर्बल होंगे और सारे घुठने पानी
१८ होजायेंगे। वे अपने पर टाट भी लपेटेंगे भय उन्हें ढांपेगा और
सभों के मुंह पर लाज होगी और सभों के सिरों पर मुंड़ापन।
१९ वे अपना अपना चांदी सड़कों में फेंक देंगे और उनका सोना
अलग किया जायगा परमेश्वर के क्रोध के दिन में उनका सोना
चांदी उन्हें न बचासकेगा वे अपने प्राण को तृप्त न करेंगे
न अपने पेट भरेंगे क्योंकि वुह उनके ठोकर खाने की बुराई
२० है। वुह अपने आभूषण की सुंदरता में
बिभव से बैठा है परन्तु उन्हों ने अपने घिनितों की और अपनी

तुच्छ वस्तुन की मूरतें उसमें बनाईं हैं इसलिये मैं ने उसे उनसे
२० दूर रक्खी है। और मैं उसे अहेर के लिये परदेशियों के
हाथ और लूट के लिये पृथिवी के दुष्टों को सौंपोंगा और वे
२१ उसे अशुद्ध करेंगे। मैं अपना मुंह भी उनसे फेरोंगा और
वे मेरा गुप्त स्थान अशुद्ध करेंगे क्योंकि बटमार उसमें पैठ के उसे
२३ अशुद्ध करेंगे। एक सीकर बना क्योंकि देश
लोहू के अपराधों से और नगर अंधेर से भरा हुआ है।
२४ इसलिये मैं अति बुरे अन्यदेशियों को लाओंगा और वे उनके
घर को वश में करेंगे मैं बलवंतों का विभव मिटाओंगा और
२५ उनके पवित्र स्थान अशुद्ध किये जयेंगे। नाशक आता है और
२६ वे मिलाप चाहेंगे और न होगा। दुर्दशा पर दुर्दशा
आवेगी और चर्चा पर चर्चा तब वे भविष्यद्वक्ता से दर्शन चाहेंगे
परन्तु याजक से व्यवस्था और प्राचीनों से मंत्र नष्ट होजायगा।
२७ राजा शोक करेगा और राजपुत्र बिनाश से पहिराया जायगा
और देश के लोगों का हाथ चंचल होगा और उनकी चाल
के समान मैं उनसे करोंगा और उनके विचार के समान उनसे
बिचार करोंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।

८ आठवां पर्ब्ब।

भविष्यद्वक्ता का दर्शन में यिरोशलीम में और
मन्दिर में पहुंचाया जाना १—४ उसकी झल की
मूर्त्ति और इसराईल की मूर्त्ति पूजा देखना ५—१६
ईश्वर का प्रश्न १७—१८।

१ छठवें बरस के छठवें मास की पांचवीं तिथि में ऐसा हुआ कि
मैं अपने घर में बैठा था और यहूदा के प्राचीन मेरे आगे बैठे थे
२ कि प्रभु परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा। तब मैं ने दृष्टिकिई
और क्या देखता हों कि आग का सा सरूप उसकी कटि से
नीचेलों आगकी सी और उसकी कटि से ऊपर लों चमक

१ कीसी तेज स्फटिक के रंग की नाईं। और उसने हाथ कासा डौल बाहर निकाला और मेरे सिर की चोटी पकड़ लिई और आत्मा ने मुझे अधर में उठालिया और ईश्वरीय दर्शनों से मुझे यिरोश्लीम में उत्तर की ओर के भीतर के फाटक के द्वार पर पहुंचाया जहां झल की मूर्त्ति का ३ आसन था जो झल करावती है। और क्या देखता हों कि जो दर्शन मैंने चौगान में देखा था वैसाही इसराईल के ५ ईश्वर का विभव वहां था। तब उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र उत्तर के मार्ग की ओर अपनी आंखें उठा सो मैं ने उत्तर के मार्ग की ओर आंखे उठाईं और क्या देखता हों कि झल की यही मूर्त्ति उत्तर की ओर यज्ञ बेदी के फाटक की ६ पैठ में। फिर उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू उनकी क्रिया देखता है? अर्थात बड़े बड़े घिनित जो इसराईल के घराने यहां करते हैं जिसतें मैं अपने पवित्र स्थान से दूर जाउं परन्तु तू फेर के लौट और इनसे बड़े बड़े घिनित कार्य्य देखेगा।

७ तब वुह मुझे आंगन के द्वार पर लाया और देखते हुए ८ मैं ने भीत में एक छेद देखा। तब उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अब भीत खोद तब भीत खोदते हुए मैं ने एक ९ द्वार देखा। फिर उसने मुझे कहा कि भीतर जा और जो १० जो घिनित वे यहां करते हैं उन्हें देख। तब मैं ने भीतर जाके देखा और क्या देखता हों कि चारो ओर भीत पर हरएक रेंगवैये बस्तु के रूप और घिनित पशु और इसराईल के घराने ११ की सारी मूर्त्तिन का चित्र है। और इसराईल के घराने के प्राचीनों के सत्तर जन उनके आगे खड़े हैं और उनके मध्य में शाफान का बेटा यज़नियः खड़ा है हरएक जन धूपावरी हाथ १२ में लिये हुए और धूप का एक घना मेघ उठरहा है। तब उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तूने देखा है जो इसराईल के घराने के प्राचीन अंधियारे में हरएक जन अपनी अपनी मूर्त्तिन

की कोठरियों में करता है? क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर हमें नहीं देखता और परमेश्वर ने तो पृथिवी को त्यागा है।
१३ उसने मुझे यह भी कहा कि तू फेर लौट और उनके कर्म से
१४ बड़े बड़े घिनित कर्म देखेगा। तब वुह परमेश्वर के मन्दिर की उत्तर ओर के फाटक पर मुझे ले आया और क्या देखता हों कि
१५ एक स्त्री तम्मज़ के लिये वहां बैठके बिलाप कररही है। तब उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तूने यह देखा है तू फिर लौट और
१६ इन से भी बड़े बड़े घिनित देखेगा?। फिर वुह मुझे परमेश्वर के मन्दिर के भीतर के आंगन में लाया और क्या देखता हों कि परमेश्वर के मन्दिर के ओसारे और बेदी के मध्य के द्वार पर एक पचीस जन, पीठ परमेश्वर के मन्दिर की ओर किये हुए और उनके मुंह पूर्ब की ओर और पूर्ब की ओर वे सूर्य
१७ पूजते थे। तब उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तूने यह देखा है? क्या यहूदा के घराने के लिये यह सहज बात है कि वे घिनित कार्य करें जो यहां करते हैं? क्योंकि उन्हों ने देश को अंधेर से भर दिया है और मुझे रिस दिलाने को लौटे हैं और
१८ देखो वे अपनी नाक पर डाली लगाते हैं। इस लिये मैं भी कोप से व्यवहार करोंगा मेरी आंख न छोड़ेगी और मया न करोंगा और यद्यपि वे मेरे कानों में चिल्ला चिल्ला रोवें तथापि मैं उनकी न सुनोंगा।

९ नवां पर्ब्ब।

यिरोशलीम के नाशक बिभव के मन्दिर का त्यागना और ईश्वर के जन पर चिन्ह रखना १—४ नाशकों का नाश करना ५—७ ईश्वर का लोगों को पाप बताना ८—११।

१ उसने यह कहते हुए बड़े शब्द से भी मेरे कान में पुकारा कि जिन के वश में नगर है उन्हें आगे बढ़ा अर्थात हरएक जन अपना

नाशक हथियार अपने हाथ में लिये ज़ए। और क्या देखता हों कि छः जन ऊपर के फाटक के मार्ग में से जो उत्तर के अलंग है चले आये और हरएक जन के हाथ में घात का हथियार और उनमें से एक पर सूती वस्त्र था और उसकी कटि पर लेखक का मसिपात्र और वे भीतर गये और पीतल की वेदी के लग खड़े ज़ए। ३ और इसराईल के ईश्वर का बिभव करूब से, जिस पर वुह था उठके मन्दिर की डेहरी पर गया और उसने उस जन को जो सूती वस्त्र पहिने था, जिसकी कटि में लेखक का मसिपात्र था पुकारा। ४ और परमेश्वर ने उसे कहा कि नगर के मध्य में से यिरोशलीम के मध्य में से जा और हरएक जन, के कपाल पर जो उसके मध्य के सारे घिनित कार्यों के लिये ठंडी सांस भरता है और रोता है चिन्ह से चिन्ह कर। ५ और उसने मेरे सुन्ने में औरों से कहा कि तुम लोग उसके पीछे पीछे नगर के आरंपार जाओ और मारो तुम्हारी आंख न छोड़े मया मत करो। ६ पुरनिया को और युवा को कुंआरियों को, और नन्हें बालकों और स्त्रियों को नाश लों घात करो परन्तु जिन पर चिन्ह है उनमें से किसी जन के पास मत जाओ और मेरे पवित्र स्थान से आरंभ करो तब उन्हों ने प्राचीन जनों से, जो घर के आगे थे आरंभ किया। ७ और उसने उन्हें कहा कि घर को अशुद्ध करो और जूझे ज़ओं से आंगन को भर देओ और उन्हों ने निकल के नगर में घात किया। ८ और जब वे उन्हें घात कर रहे थे और मैं छोड़ा गया तब यों ज़आ कि मैं मुंह के बल गिरा और चिल्लाके कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर अपने कोप को यिरोशलीम पर उंडेलते ज़ए क्या इसराईल के सारे बचेज़ओं को तू नाश करेगा?। ९ तब उसने मुझे कहा कि यहूदा और इसराईल के घराने की बुराई अत्यन्त बड़ी है और देश लोहू से भरा ज़आ है और नगर अनीति से भरा है क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर ने पृथिवी को त्यागा है और

१० परमेश्वर नहीं देखता। और मैं भी जो हों मेरी आंख न
छोड़ेगी, मया न करोंगा मैं उनके सिर पर उनकी चाल को
११ पलटा देऊंगा। और क्या देखता हों कि जो जन सूती वस्त्र
पहिने था, जिसकी कटि पर मसिपात्र था उसने यह कहिके
उत्तर दिया कि तेरी आज्ञा के समान मैं ने किया है।

१० दसवां पर्ब्ब।

नगर पर अंगारा छिड़काना १—७ जीव धारियों का
दर्शन और बिभव के मन्दिर को त्यागना ८—२२।

१ जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हों कि करोबियों के सिर के
ऊपर के आकाश में उनके ऊपर नीलकांत मणि का सा दिखाई
२ दिया जो देखने में सिंहासन कासा था। और वुह सूती
वस्त्र पहिने ऊए जन से कहि के बोला कि करूब के नीचे चक्रों के
मध्य में जा और अपने चिल्लू को करोबियों के मध्य से आग के
अंगारे भर और नगर के ऊपर छिड़क और वुह मेरे देखते
३ में चलागया। जब वुह जन भीतर गया तब करोबी घर के
दहिने अलंग खड़े ऊए और भीतर का आंगन मेघ से भर
४ गया। तब परमेश्वर का बिभव करूब पर से उठाया गया
और घर की डेहरी पर ऊआ और घर मेघ से भर गया और
५ परमेश्वर के बिभव की चमक से आंगन पूर्ण ऊआ। और
करोबियों के परों का शब्द बाहर के आंगन लों सुना गया
सर्वशक्तिमान ईश्वर के शब्द की नाईं जब वुह बोलता है।
६ और यों ऊआ कि जब उसने सूती वस्त्र पहिने ऊए जन को यह
कहके आज्ञा किई कि करोबियों के मध्य के चक्रों के बीच में से
७ आग ले तब वुह भीतर जाके चक्रों के लग खड़ा ऊआ। तब
करोबियों के मध्य में से एक करूब ने अपना हाथ उस आग
की ओर बढ़ाया जो करोबियों के मध्य में थी और लेके सूती
वस्त्र पहिने ऊए जन के हाथ में रक्खा जो लेके बाहर गया।

८ और करोबियों में उनके पंख के तले मनुष्य के हाथ का डौल
९ दिखाई दिया। और जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या
देखता हों कि करोबियों के लग चार चक्र एक करोब के लग
एक चक्र और दूसरे करोब के लग दूसरा चक्र और चक्र देखने
१० में मरकत मणि का सा दिखाता था। और चारो एक सां
११ दिखाई देते थे जैसा कि चक्र के मध्य में चक्र। जब वे
चलते थे ये अपने चारो अलंग पर जाते थे और चलने में वे न
फिरते थे परन्तु जिधर सिर का रुख था उधरही वे उसके
१२ पीछे पीछे जाते थे चलने में वे फिरते न थे। और उनके सारे
देह और पीठ और हाथ और डैने और चक्र चारो ओर
१३ आंखों से भरे थे अर्थात उन चारों के चक्र। और चक्र जो थे
१४ वे मेरे सुन्ने में पुकारे गये कि हे चक्र। और हरएक के चार
चार मुंह थे पहिला मुंह एक करूब का मुंह और दूसरा
मुंह मनुष्य का मुंह और तीसरा सिंह का मुंह और चौथा
१५ गिद्ध का मुंह। और करूब उठाये गये इसी प्राणी को मैं ने
१६ किबार नदी के लग देखा था। और जब करोबी चलते
थे चक्र उनके लग जाते थे और जब करोबी पृथिवी पर
से उठने को पंख उठाते थे वेही चक्र भी उनके पास से न
१७ फिरते थे। उनके ठहरने में ठहरते थे और जब वे उठाये
जाते थे आप को उठाते थे क्योंकि प्राणी का आत्मा उनमें था।
१८ तब परमेश्वर का विभव घर के डेहरी पर से जातारहा और
१९ करोबियों के ऊपर ठहर गया। और करोबियों ने अपने
डैने उठाये और मेरे देखने में पृथिवी पर से उठ गये जब वे
निकल गये चक्र भी उनके लग थे और हरएक परमेश्वर के
मन्दिर के पूर्ब फाटक के द्वार पर खड़ा हुआ और इसराईल
२० के ईश्वर का विभव उनके ऊपर था। मैं ने इसी प्राणी को
किबार नदी के लग इसराईल के ईश्वर के नीचे देखा था और
२१ मैं ने जाना कि वे करोबी थे। हरएक के चार चार मुंह थे

और हरएक के चार चार डैने और उनके डैनेके नीचे मनुष्य
२२ के हाथ सा। वेही और उनके स्वरूप और उनके मुंह वेही
मुंह थे जो मैं ने किबार नदी के लग देखा था उनमें से हरएक
बराबर आगे बढ़ता था।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

दुष्टों का मंत्र और उनके बिरुद्ध भविष्यवाणी
१—१२ पिलातियाः का मरना और बंधुओं को
बचा देना १३—२१ तेज का नगर छोड़ना और
भविष्यद्वक्ता का फेर पहुंचाया जाना २२—२५ ।

१ इससे अधिक आत्मा ने मुझे उठाके परमेश्वर के मन्दिर के पूर्व
ओर के पूर्व फाटक पर पहुंचाया और क्या देखता हों कि पचीस
पुरुष फाटक के द्वार पर, जिनमें मैं ने लोगों के अध्यक्ष अज़ूर के
बेटे ज़ाज़नियाः और बिनायाः के बेटे पिलातियाः को देखा।
२ तब उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र यही लोग बुरी
३ जुगत बांधते हैं और इस नगर में कुमंत्र देते हैं। जो कहते
हैं कि पास नहीं है चलो घर बनावें यही कड़ाहा और हम
४ मांस। इसलिये उनके बिरुद्ध भविष्य कह हे मनुष्य के पुत्र
५ भविष्य कह। तब परमेश्वर का आत्मा मुझ पर पड़ा और
मुझे कहा कि बोल परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराईल के
घराने तुम लोगों ने यों कहा है क्योंकि मैं हरएक बात को जो
६ तुम्हारे मन में आती है जानता हों। तुम ने अपने जूझे ऊए को
इस नगर में बढ़ाया है और उसके सड़कों को जूझे ऊए से भर
७ दिया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे जूझे
ऊए, जिन्हें तुमने इसके मध्य में धरा है सो मांस है और यह
नगर कड़ाहा परन्तु मैं तुम्हें उसके मध्य में से निकालोंगा।
८ तुम लोग तलवार से डरे हो और प्रभु परमेश्वर कहता है कि
९ मैं तुम्हों पर तलवार लाओंगा। और मैं तुम्हें उसके मध्य में से

निकाल लाओंगा और तुम्हें परदेशियों के हाथ में सौंपेंगा
० और दंड देउंगा । तुम लोग तलवार से गिरोगे मैं इसराईल
के सिवाने में तुम्हारा न्याय करोंगा और तुम लोग
११ जानोगे कि मैं परमेश्वर हों । यह नगर तुम्हारा कड़ाहा न
होगा और तुम लोग उसमें के मांस मैं इसराईल के सिवाने में
१२ तुम्हारा न्याय करोंगा। और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर
हों क्योंकि तुम लोग मेरी विधिन पर नहीं चले और न मेरे
बिचारों को माना है परन्तु चारो ओर के अन्यदेशियों की
१३ रीति पर चले हो । और मेरे भविष्य कहने से
यों हुआ कि बिनायाः का बेटा पिलातियाः मर गया तब मैं
मुंह के बल गिरा और चिल्ला के कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर
क्या तू इसराईल के बचे हुओं को सर्बथा मिटा डालेगा ? ।
१४ फेर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मुझ पर पहुंचा ।
१५ हे मनुष्य के पुत्र तेरेही भाईबन्द को तेरे कुनबे के जन को
और इसराईल के सारे घराने को यिरोशलीम निवासियों ने
कहा है कि परमेश्वर से परे हो जाओ देश हमारे बश में किया
१६ गया है । इसलिये कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
यद्यपि मैं ने उन्हें अन्यदेशियों में दूर फेंका है और यद्यपि मैं ने
उन्हें देशों में छिन्न भिन्न किया है तथापि जिस जिस देश में वे
१७ जायेंगे मैं उनके लिये एक छोटा पवित्र स्थान होंगा । इसलिये
कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हें लोगों में से
एकट्ठा करोंगा और तुम लोग जिस जिस देश में बिथराये गये
हो मैं उनमें से तुम्हें बटोरोंगा और इसराईल का देश तुम्हें
१८ देउंगा । और वे वहां आवेंगे और वे वहां से सारी तुच्छता
१९ और सारी घिनितों को दूर करेंगे । और मैं उन्हें एकही
मन देउंगा और तुम्में एक नया आत्मा डालोंगा और उनके
मांस में से पत्थरैला मन निकालोंगा और उनमें एक मांसिक
२० मन डालोंगा । जिसतें वे मेरी विधिन पर चलें और मेरी

व्यवस्थों को पालन करें और उन्हें मानें और वे मेरे लोग होंगे
२१ और मैं उनका ईश्वर होंगा। परन्तु जिनका मन अपने
तुच्छ और घिनित वस्तुन पर चलता है प्रभु परमेश्वर कहता है
कि मैं उनकी चाल का पलटा उन्हींके सिर पर देउंगा।
२२ तब करोबियों ने अपने अपने पंख उठाये और चक्र उनके
२३ लग और इसराईल के ईश्वर का विभव उनके ऊपर था। फिर
परमेश्वर का विभव नगर के मध्य में से उठ गया और नगर के
२४ पूर्ब अलंग पहाड़ पर खड़ा ऊआ। उसके
पीछे आत्मा ने मुझे उठाया और ईश्वर का आत्मा दर्शन से
मुझे कलदिया में बंधुआई के पास लाया और जो दर्शन मैं ने
२५ पाया सो ऊपर जाता रहा। फिर जो परमेश्वर ने मुझे
दिखाया था सो मैं ने भी बंधुओं को कहि सुनाया।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

यिरोशलीमके लिये जाने का चिन्ह बताना १—१६
अकाल का चिन्ह बताना १७—२० उनके नाश
का समीप होना २१—२८।

१।२ यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा। कि हे
मनुष्य के पुत्र तू एक दंगइत लोगों में वास करता है जो देखने
की आंख रखते हैं पर नहीं देखते और सुन्ने के कान रखते हैं
३ पर नहीं सुनते क्योंकि वे दंगइत घराने हैं। इसलिये हे
मनुष्य के पुत्र सिधारने के लिये सामग्री सिद्ध कर और उनके
देखतेही दिन को सिधार तू अपने स्थान स दूसरे स्थान को
उनके देखतेही सिधार यद्यपि वे दंगइत घराने हैं क्या जानें
४ वे सोचें। तब तू दिन में उनके आगे अपनी सामग्री को
सिधारने की सामग्री के समान निकाल ला और सांझ को
उनके देखते देखते उनके समान निकल जा जो बंधुआई को
५ निकल जाते हैं। उनके देखतेही भीत को खोद के उसमें से

निकाल लेजा। उनके देखतेही तू गोधूली में अपने कंधे पर उठा लेजा जिसतें भूमि न देखे तू अपना मुंह ढांप ले क्योंकि इसराईल के घराने के लिये मैं ने तुझे एक चिन्ह बना रक्खा है।
७ और आज्ञा के समान मैं ने किया और बंधुआई के लिये सामग्री के समान मैं ने दिन को अपनी सामग्री बाहर निकाली और सांझ को मैंने अपने हाथ से अपने लिये भीत खोदी और उनके देखतेही मैं अपने कंधों पर गोधूली में निकाल
८ लाया। और बिहान को यह कहते हुए परमेश्वर
९ का बचन मुझ पास पहुंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र क्या इसराईल के घराने ने वुह दंगइत घराने ने तुझे नहीं कहा कि तू क्या करता
१० है?। उनसे कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यिरोशलीम के राजा का और उनमें के इसराईल के सारे घराने का यह
११ बोझ। कह कि मैं तुम्हारा चिन्ह हों जैसा मैं ने किया है तैसा
१२ उनसे किया जायगा वे सिधार के बंधुआई में जायेंगे। और जो राजा उनमें है सो अपने कंधे पर उठाये हुए गोधूली को निकल जायगा वे बाहर ले जाने को भीत खोदेंगे और जिसतें
१३ आंखों से भूमि न देखें वुह अपना मुंह ढांपेगा। मैं अपना जाल भी उस पर बिछाओंगा और वुह मेरे फंदे में बझ जायगा और मैं उसे कलदानियों के देश में बाबुल को लाओंगा यद्यपि वुह वहां मरेगा तथापि उसे न देखेगा।
१४ और मैं उसके आस पास के सारे सहायकों को और उसकी सारी जथाओं को हरएक दिशा में छिन्न भिन्न करोंगा और
१५ मैं उनके पीछे तलवार खींचोंगा। और जब मैं उन्हें जाति गणों में छिन्न भिन्न करोंगा और देशों में उन्हें बिथराओंगा
१६ तब वे मुझ परमेश्वर को जानेंगे। परन्तु मैं तलवार से और अकाल से और मरी से उनमें से गिने हुए जनों को छोड़ोंगा जिसतें वे अपनी घिनितों को अन्यदेशियों में, जहां जहां वे पहुंचे प्रगट करें और वे मुझ परमेश्वर को जानेंगे।

१७ फिर यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा।
१८ हे मनुष्य के पुत्र तू थर्थराते ऊए अपनी रोटी खा और कांपते
१९ ऊए चिंता के साथ अपना जल पी। और देश के लोगों से
कह कि यिरोशलीम बासियों के और इसराईल देशियों के
बिषय में प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे अपनी रोटी चिंता
के साथ खायेंगे और अपना जल आश्चर्यित के साथ पीयेंगे
जिसतें उसके सारे बासियों के उपद्रव के कारण देश अपनी
२० भरपूरी से उजड़ जाय। और बसे ऊए नगर उजाड़े जायेंगे
और देश उजाड़ा जायगा और तुम लोग मुझ परमेश्वर को
२१ जानोगे। फिर यह कहते ऊए परमेश्वर का
२२ बचन मुझ पास पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र यह कहते ऊए
तुम लोग इसराईल के देश में क्या कहावत रखते हो कि दिन
२३ बढ़ गये और हरएक दर्शन घट गया। इस लिये उन्हें कह
कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस कहावत को मिटा
डालोंगा और वे इसराईल में उसे कहावत के समान फेर न
कहा करेंगे परन्तु उन्हें कहो कि दिन और हरएक दर्शन का फल
२४ समीप है। क्योंकि फेर बृथा दर्शन अथवा भुलाने का मंत्र
२५ इसराईल के घराने में न होगा। क्योंकि मैं परमेश्वर मैं
कहोंगा और जो बचन मैं कहोंगा सो पऊंचेगा वुह बिलंब न
करेगा क्योंकि हे दंगइत घराने प्रभु परमेश्वर कहता है कि
तुम्हारे दिनों में मैं बचन कहोंगा और पूरा करोंगा।
२६ फिर यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पास पऊंचा।
२७ कि हे मनुष्य के पुत्र देख इसराईल के घराने यह कहते हैं कि
जो दर्शन वुह देखता है सो बऊत दिनों के लिये है और वुह
२८ दूर का भविष्य कहता है। इस लिये उन्हें कह कि प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि मेरा कोई बचन फेर बिलंब न
करेगा परन्तु प्रभु परमेश्वर कहता है कि जो मैं ने कहा सो
होगा।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

मिथ्या भविष्यद्वक्ता के विरुद्ध भविष्य बाणी १—९ उनकी दुष्टता का चिन्ह १०—१६ और मिथ्या भविष्यद्वक्ती के विरुद्ध भविष्य बाणी १७—२३ ।

फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मुझ पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र इसराईल के भविष्यद्वक्तों के विरुद्ध जो भविष्य कहते हैं भविष्य कहि के उनसे बाल और जो अपने अपने मन से भविष्य कहते हैं उनसे कह कि परमेश्वर का बचन सुनो । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मूर्ख भविष्यद्वक्तों पर संताप जो अपने मन के समान चलते हैं और कुछ नहीं देखा है । हे इसराईल तेरे भविष्यद्वक्ता बनैली लोमड़ियों की नाईं हैं । तुम लोग दरारों पर चढ़ नहीं गये और परमेश्वर के दिन में संग्राम में खड़ा होने को इसराईल के घराने के लिये बाड़े को बाड़ित न किया । वे झूठ और मिथ्या दैवज्ञता देख के कहते हैं कि परमेश्वर कहता है और परमेश्वर ने उन्हें नहीं भेजा है उन्हों ने औरों को आशा दिई है जिसतें बचन को स्थिर करें । क्या तुम ने झूठा दर्शन नहीं देखा क्या तुम ने मिथ्या दैवज्ञता न कही यद्यपि तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर ने कहा है यद्यपि मैं ने नहीं कहा । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोगों ने जो व्यर्थ कहा और मिथ्या देखा इस लिये देखो प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध हों । और मेरा हाथ व्यर्थ दर्शक आचार्यों पर और मिथ्या मंत्रणाकारियों पर फैलेगा और वे मेरे लोगों के मंत्र में न रहने पावेंगे न वे इसराईल के घराने के लिखेहुए में लिखे जायेंगे और न वे इसराईल के देश में पहुंचेंगे और तुम जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हों । इस कारण कि उन्हों ने यह कहिके मेरे लोगों को भरमाया है कि कुशल, और कुशल न

था और किसी ने भीत उठाई और देखो दूसरे ने उसे कच्चा
११ पोता है। जो कच्चा पोत्ता है उनसे कह कि गिरेगी उबली
ऊई झड़ी होगी और तुम पर हाय बड़े बड़े ओले पड़ेंगे आंधी
१२ उसे फाड़ेगी। देखो जब वुह भीत गिरेगी तब तुम से कहा न
जायगा कि अब वुह पोतना कहां है जिस्से तुम ने पोता है?।
१३ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं अपने कोप की
आंधी से उसे फाड़ोंगा और मेरी रिस में उबली ऊई झड़ी
१४ और नाश करने को मेरे कोप में बड़े बड़े ओले पड़ेंगे। यों
मैं भीत को जिसे तुम ने कच्ची पोतनी से पोता है तोड़ोंगा और
भूमि लों गिराओंगा यहां लों उसकी नेंउ उघारी जायगी और
वुह गिरेगी और तुम उसके बीच नष्ट होओगे और जानोगे कि
१५ मैं परमेश्वर हों। यों मैं उस भीत पर और उन पर जिन्हों ने
कच्चा पोता है अपना क्रोध पूरा करोंगा और तुम से कहोंगा
१६ कि न भीत न उसके पोतवैये हैं। इसराईल के भविष्यद्वक्तों ने
यिरोशलीम के विषय में भविष्य कहता है और जो कुशल का
दर्शन उसके लिये देखता है और प्रभु परमेश्वर कहता है कि
१७ कुशल नहीं। हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों की
पुत्रियों के बिरुद्ध जो अपनेही मन से भविष्य कहती हैं अपना
१८ रुख कर और उनके बिरुद्ध भविष्य कह। और बोल कि प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि जो सारी केऊनियों के लिये उसीसा
सीती हैं और प्राण को अहेर करने के लिये हर एक प्रतिमा के
सिर के लिये अंगोछा बनाती हैं उन पर संताप तुम क्या मेरे
लोगों के प्राण को अहेर करोगी और क्या तुम अपनी ओर के
१९ प्राणियों को बचाओगी। जिन प्राणियों का मरना न था उन्हें
घात करने को और जिन्हें जीना न था उन्हें जिलाने को मेरे
लोगों से जो तुम्हारा झूठ सुनते हैं झूठ बोल बोल के क्या तुम
लोग मुट्ठी भर भर जव के लिये और रोटी के टुकड़ों के लिये
२० मुझे मेरे लोगों में अशुद्ध करोगे। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों

कहता है कि देखो मैं तुम्हारे उसीसों के बिरुद्ध हों जिसे तुम प्राणों को उड़ाने के लिये अहेरती हो और जिन प्राणों को उड़ाने के लिये तुम अहेरती हो मैं उन्हें तुम्हारे बाहों से
२१ फाड़ोंगा और प्राणों को छुड़ाओंगा। और मैं तुम्हारे अंगो के भी फाड़डालोंगा और अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाओंगा और अहेर के लिये वे फिर तुम्हारे हाथ में न होंगे
२२ और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हों। इस कारण कि तुम लोगों ने धर्म्मी के मन को झूठ से उदास किया जिन्हें मैं ने उदास न किया और जी देदे के दुष्टों के हाथ में बल दिया
२३ जिसतें वुह अपने दुष्ट मार्ग से न फिरे। इस लिये तुम वृथा न देखोगे और न दैववाणी कहोगे क्योंकि मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथों से छुड़ाओंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हों।

१४ चैादहवां पर्ब्ब ।

प्राचीन मूर्त्ति पूजकों का दपटा जाना १—५ पश्चात्ताप का उपदेश ६—११ ईश्वर के कोप का टलाया न जाना १२—२१ थोड़े के बचने की बाचा २२—२३ ।

१।२ तब इसराईल के कई प्राचीन मेरे आगे आ बैठे। और यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पास पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र इन मनुष्यों ने अपनी अपनी मूर्त्तिन को अपने मन में स्थापा है और अपनी बुराई के ठोकर को अपने आगे धर रक्खा है क्या मैं ऐसों से बूझा जाऊं?। इस लिये उन्हें कह और उन्हें बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इसराईल के घराने में से हर एक जो अपने अंतःकरण में अपनी मूर्त्तिन को स्थापन करके अपनी बुराई का ठोकर अपने आगे धरता है और भविष्यद्वक्ता पास आता है मैं परमेश्वर उसकी मूर्त्ति की

५ बड़ताई के समान उसे उत्तर देउंगा। जिसतें मैं इसराईल के घराने को उन्हों के मनहीं में पकड़ों इस कारण कि वे सब के
६ सब अपनी मूर्त्तिन के लिये मुझ से फिर गये हैं। इस लिये इसराईल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि पश्चात्ताप करके अपनी मूर्त्तिन से फिरो और अपने सारे
७ घिनितों से अपने अपने मुंह फेरो। क्योंकि इसराईल के घराने के हर एक अथवा इसराईल का परदेशी निवासी जो मुझ से अलग होता है और अपने मन में अपनी मूर्त्तिन को रोपता है और अपनी बुराई के ठोकर को अपने आगे धरता है और मेरे विषय में बूझने को भविष्यद्वक्ता पास आता है उसे मैंही परमेश्वर
८ आपही उत्तर देउंगा। और मैं अपना रुख उसी जन के विरुद्ध करोंगा और उसे एक चिन्ह और कहावत बनाओंगा और अपने लोगों के मध्य में से उसे उखाड़ोंगा और तुम लोग
९ जानोगे कि मैंही परमेश्वर हों। और यदि भविष्यद्वक्ता कोई बात कहिके भरमाया जाय तो मुझ परमेश्वर ने उस भविष्यद्वक्ता को भ्रमाया है और मैं अपना हाथ उस पर बढ़ाओंगा और
१० अपने इसराईल लोगों के मध्य में से उसे नष्ट करोंगा। और वे अपनी बुराई का दंड भोगेंगे उसके बूझवैये का दंड
११ भविष्यद्वक्ता के दंड के समान होगा। जिसतें इसराईल का घराना फेर मुझ से भटक न जाये और अपने सारे अपराधों से अशुद्ध न होजायें परन्तु प्रभु ईश्वर कहता है जिसतें वे मेरे
१२ लोग होवें और मैं उनका ईश्वर। तब यह कहते
१३ ऊए परमेश्वर का वचन मुझ पास पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र जब अति अपराध करने के कारण से देश मेरे विरुद्ध पाप करे तब मैं अपना हाथ उस पर बढ़ाओंगा और उसके भोजन की लाठी तोड़ डालोंगा और उस पर अकाल भेजोंगा और
१४ मनुष्य को और पशु को उस से मिटा डालोंगा। प्रभु परमेश्वर कहता है कि यद्यपि ये तीन जन अर्थात् नूह और दानियाल और

ऐयूब उसमें होते तो वे अपने धर्म्म से केवल अपनेही प्राण
५ बचाते। यदि मैं फड़वैये पशुन को देश में से प्रवेश कराओं
और वे उन्हें ऐसा नष्ट करें कि पशुन के मारे कोई मनुष्य
६ उसमें से न जाये। प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन
सों जो ये तीन जन उसके मध्य में होते तो बेटे बेटियों को न
७ बचाते केवल वेही बच जाते परन्तु देश उजाड़ होता। अथवा
जो मैं उस देश पर तलवार लाऊं और कहों कि हे तलवार
देश में से प्रवेश कर जिसतें मैं उसे मनुष्यों को और पशुन को
८ नष्ट करों। प्रभु परमेश्वर कहता है अपने जीवन सों जो ये
तीन जन उसमें होते तो न बेटे न बेटियों को छुड़ा सक्ते परन्तु
९ वे आपही को छुड़ाते। यदि मैं मरी उस देश में भेजों और
मनुष्यों को और पशुन को उसे नाश करने का लोहू से अपना
१० क्रोध उस पर उंडेलों। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने
जीवन सों जो नूह और दानियाल और ऐयूब उसमें होते
तो वे बेटा बेटी को न छुड़ाते वे अपनेही धर्म से अपनेही
११ प्राण को छुड़ाते। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है तो कितना
अधिक जब मैं यिरोशलीम पर मनुष्यों और पशुन को नष्ट
करने के लिये अपना चार बड़ा दंड अर्थात तलवार और
१२ अकाल और फड़वैयें पशु और मरी को भेजों। तथापि देख
बेटे बेटियों का बचा हुआ उसमें छोड़ा जायगा जो बाहर
किये जायेंगे और देखो वे तुम्हारे पास बाहर आवेंगे और
तुम उनकी चाल और उनके व्यवहार देखोगे और सारी
बुराई के विषय में जो मैं यिरोशलीम पर लाया हों तुम लोग
शांति पाओगे अर्थात सभों के विषय में जो मैं उस पर लाया।
१३ और जब तुम उनकी चाल और व्यवहारों को देखोगे तो वे
तुम्हें शांति देंगे और प्रभु परमेश्वर कहता है कि यह सब
तुम जानोगे जो मैं ने उसमें किया सो बिना कारण नहीं।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

दाख़ की सूखी लता का दृष्टांत १—८।

१।२ यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पास पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र दाख पेड़ दूसरे पेड़ से अधिक क्या है अथवा बन के ३ पेड़ों में की डाली से?। क्या किसी काम के लिये उस्से लकड़ी लिई जायगी? अथवा पात्र टांगने के लिये कोई उस्से खूंटी ४ लेगा। देखो वुह आग में ईंधन के लिये डाला जाता है और आग उसके दोनों टोंक को भस्म करती है और उसके ५ मध्य जल जाता है क्या वुह किसी काम का है?। देख जब वुह समूचो थी वुह किसी काम की न थी कितना अधिक अब वुह किसी काम की नहीं जब आग उसे भस्म कर गई और ६ वुह जल गई। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जैसा बन के पेड़ों में दाख की लता को, जो मैं ने आग के ईंधन के लिये दिया है तैसा मैं यिरोशलीम के निवासियों को देउंगा। ७ और मैं अपना रुख उनके बिरुद्ध करोंगा वे एक आग में से निकलेंगे और दूसरी आग उन्हें भस्म करेगी और जब मैं अपना रुख उनके बिरुद्ध करों तब तुम लोग जानोगे कि मैं ८ परमेश्वर हों। प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उनके अपराध करने के कारण देश को उजाड़ डालोंगा।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

यिरोशलीम की अगिली दशा १—५ उस पर ईश्वर की दया ६—१४ उनका ब्यभिचार कर्म्म १५—३४ उसके दंड का समाचार ३५—४३ उनके पाप सदूम और सामरः के पाप से अधिक ४४—५९ अन्त में उन पर दया होनी ६०—६३।

१ फिर यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पास पऊंचा। २ हे मनुष्य के पुत्र यिरोशलीम को उसकी घिनित क्रिया जनाउ।

और कह कि प्रभु परमेश्वर यिरोशलीम से यों कहता है कि तेरा निवास और तेरा जन्म किनान देश का है और तेरा पिता अमूरी और तेरी माता हत्ती। और तेरा जन्म जो है जब तू उत्पन्न हुई तेरी नाभी काटी न गई जब मैं ने तुझे देखा तू जल से नहवाई न गई थी और तुझ पर लोन लगाया न गया था और कपड़ों से लपेटी न गई थी। इन बातों के लिये तुझ पर दया करने को किसी की आंख ने तुझ पर मया न किई परन्तु अपने जन्म दिन में अपने घिन के लिये तू बाहर खेत में फेंकी गई थी। और जब मैं तेरे पास से होके गया और तुझे तेरे ही लोहू में अशुद्ध देखा तब मैं ने तुझे तेरे लोहू में होते हुए कहा कि जी, हां मैं ने तुझे तेरे लोहू में कहा कि जी। मैं ने खेत की कली की नाईं तुझे बढ़ाया है और तू बढ़ते बढ़ते महान हुई और तू शोभा से, और तेरे स्तन के डौल हुए और तेरा बाल बढ़ गया है पर आगे तू नग्न और उघारी थी। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं तेरे पास से जाता था और तुझ पर दृष्टि किई और क्या देखाता हों कि तेरा समय प्रेम का समय है और मैं ने अपना अंचल तुझ पर फैलाया और तेरी नग्नता ढांपी हां मैं ने तुझ से किरिया खाई और तेरे साथ बाचा बांधी और तू मेरी हुई। तब मैं ने तुझ जलसे धोया हां मैं ने तेरा सारा लोहू तुझ से धो डाला और तुझ पर तेल मला। मैं ने बूटा काढ़े से तुझे पहिराया और तुझे तालसचाम की जूती पहिनाई और मैं ने तेरी कटि पर झीना वस्त्र लपेटा और मैं ने तुझे चिउली ओढ़ाया। मैं ने तुझे गहनों से आभूषित किया और तेरे हाथों में कंकण और तेरे गलेमें हार पहिनाया। मैं ने तुझे नथ पहिनाया और तेरे कानों में कर्णफूल और तेरे सिर पर सुन्दर मुकुट धरा। इस रीति से तू सोना चांदी से शोभित हुई और तेरे वस्त्र झीने और चिउली और बूटे काढ़े हुए थे तू ने चोखे पिसान और मधु और तेल खाया और तू

१४ परमसुंदरी ऊई और तू एक राज्य लों भाग्यवती ऊई। और तेरी सुन्दरता अन्यदेशियों में विदित ऊई क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मेरी सुन्दरता के कारण जो मैं ने तुझ पर रक्खी
१५ थी तेरी सुन्दरता अत्यंत ऊई। परन्तु तू ने अपनी सुन्दरता पर भरोसा रक्खा और अपने विदित के कारण वेश्याई किई और हरएक जवैये पर अपने व्यभिचार को
१६ उंडेला वुह उसका ऊआ। और तू ने अपने वस्त्रों से लेके अपने ऊंचे स्थानों को नाना रंग से शोभित किया और उस
१७ पर वेश्याई किई ऐसा न आवेगा और न होगा। और तू ने मेरे दिये ऊए सोने चांदी के गहने लेके अपने लिये
१८ पुरुष की मूर्त्ति बनाईं और उनसे व्यभिचार किया। और अपने बूटे काढ़े ऊए वस्त्र को लेके उन्हें ओढ़ाया और मेरा
१९ तेल और धूप उनके आगे धरा। और मेरा दिया ऊआ भोजन भी और जिस चोखे पिसान और तेल और मधु से मैं ने तुझे खिलाया तू ने उन्हें सुगंध के लिये उनके आगे धरा ह
२० प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यांहीं ऊआ। और जो बेटे बेटी तू मेरे लिये जनी थी तू ने उन्हें लेके उनके भक्ष के लिये
२१ बलि चढ़ाया है तेरी यही वेश्याई क्या थोड़ी है?। कि तू ने मेरे बालकों को घात किया है और सौंप के उनके लिये
२२ आग में से चलाया है?। और अपने सारे घिनितों में और वेश्याई में तू ने अपने युवा के दिनों को स्मरण न किया जब कि तू नग्न और उघारी थी और अपने लोह्न में अशुद्ध थी।
२३ और तेरी सारी दुष्टता के पीछे यों ऊआ (प्रभु परमेश्वर
२४ कहता है) कि सन्ताप सन्ताप तुझ पर। तू ने अपने लिये वेश्यास्थान भी बना रक्खा है और हरएक सड़क में ऊंचा
२५ स्थान बना रक्खा है। मार्ग के हरएक निकास में तू ने अपना ऊंचा स्थान बना रक्खा है और अपनी सुन्दरता घिनाई है और हरएक के लिये जो तुझ पास से जाता है अपने पांव

२६ पसारा है और अपनी छिनालपन बढ़ाई है। अपने परोसी पुष्ट मिसरियों के साथ तू ने व्यभिचार भी किया है और मुझे
२७ रिसियाने को अपनी छिनालपन बढ़ाई है। इस लिये देख मैं ने अपना हाथ तुझ पर बढ़ाया है और तेरे प्रति दिन का भोजन घटाया है और तुझे फलस्तियों के नगरों को, जो तेरी बेश्याई चाल से लज्जित हैं और तुझ से बैर रखते हैं उनकी इच्छा
२८ पर तुझे सौंपा है। अपने असन्तोष के कारण तू ने असूरियों से भी छिनाल कर्म किया है हां तू ने उनसे छिनाल कर्म किया
२९ है तथापि सन्तुष्ट न हुई। किनान देश में कलदिया लों तू ने अपने व्यभिचार को भी अधिक बढ़ाया है और उस्से भी तू सन्तुष्ट
३० न हुई। प्रभु परमेश्वर कहता है कि तेरा मन कैसा निर्बल है जो तू ये सारे कर्म्म करती है जो निर्लज्ज छिनाल के कर्म्म हैं।
३१ तू जो हरएक मार्ग के सिरे पर अपना ऊंचा स्थान बनाती है और हरएक सड़क में ऊंचा स्थान बनाती है और इस बात में
३२ बेश्या की नाईं न हुई कि तू खरची को तुच्छ जानती है। परन्तु व्यभिचारिनी पत्नी की नाईं जो अपने पति की सन्ती उपरी को
३३ लेती है। लोग सारी बेश्या को खरची देते हैं पर तू अपने जारों को दान देती है और जिसतें वे चारों ओर से तेरे छिनालपने
३४ से तुझ पास आवें तू उन्हें घूस देती है। और अपने छिनालपन में तू और स्त्रियों से बिरुद्ध है क्योंकि व्यभिचार कर्म के लिये तेरे पीछे कोई नहीं जाता और इस में कि तू खरची देती है और तुझे खरची नहीं दिई जाती इस लिये तू बिपरीत है।
३५।३६ सो अरे वेश्या परमेश्वर का बचन सुन। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरे जारों के और तेरी सारी घिनित मूर्त्तिन के साथ तेरे छिनाल कर्म के कारण तेरी अशुद्धता उंडेली गई और तेरी नग्नता उघारी गई और अपने
३७ बालकों के लोहू के कारण जो तू ने उन्हें दिया है। इस लिये देख मैं तेरे सारे जारों को, जिनसे तू आनन्दित हुई है और

सब को जिनसे तू ने प्रीति किई है और सभों को जिनसे तू ने घिन किया है बटोरोंगा हां मैं उन्हें तेरे बिरुद्ध तेरी चारो ओर एकट्ठे करोंगा और उन पर तेरी नग्नता उघारोंगा जिसतें
३८ वे तेरी सारी नग्नता देखें। और मैं तेरा न्याय ऐसा करोंगा जैसा बिवाह भंजित और हिंसक स्त्रियों के न्याय किये जाते हैं और मैं कोप से और झल से तुझे लोहू देउंगा। और
३९ मैं तुझे उनके हाथ में भी सौंपोंगा और वे तेरे ऊंचे स्थान को ढादेंगे और तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़ देंगे वे तेरे कपड़े भी उतार लेंगे और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे और तुझे
४० नंगी और उघारी छोड़ेंगे। और वे तेरे बिरुद्ध एक जथा लावेंगे और तुझे पत्थर से पथरावेंगे और अपनी तलवारों से
४१ तुझे बेधेंगे। और वे तेरे घर जलावेंगे और बज़तसी स्त्रियों के देखने में तुझे दंड देंगे और मैं तुझे छिनाल कर्म से
४२ छुड़ाओंगा और तू फेर खरचो न देगी। इसरीति से मैं अपने कोप को तेरी ओर शान्त करोंगा और मेरा झल तुझसे जाता रहेगा और मैं शान्त होऊंगा और फेर न रिसियाऊंगा।
४३ इस कारण कि तू ने अपनी युवावस्था के दिनों को स्मरण न किया परन्तु इन सब बातों में मुझे उदास किया है इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि देख मैं तेरे सिर पर तेरी चाल का पलटा देउंगा और अपने सारे घिनितों से अधिक तू यही
४४ लंपटता न करेगी। देख हरएक जो कहावत कहता है यही कहावत तेरे बिरुद्ध कहेगा कि जैसी माता तैसी
४५ पुत्री। तू अपनी माता की पुत्री जो अपने पति और बालकों से घिन करती है और तू अपनी बहिनों की बहिन है जिन्हों ने अपने अपने पति और बालकों से घिन किया है तुम्हारी माता
४६ हित्ती और तुम्हारा पिता अमूरी था। और तेरी जेठी बहिन सामरी है वुह और उसकी पुत्रियां जो तेरी बाईं ओर रहती हैं और तेरी लहुरी बहिन जो तेरी दहिनी ओर रहती है

४७ सो सदूम और उसकी पुत्रियां। तथापि तू उनकी चाल पर न चली है और उनके घिनित के समान न किया परन्तु थोड़ी बस्तु के समान तू अपनी सारी चालों में उनसे अधिक सड़
४८ गई। प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों तेरी बहिन सदूम ने न किया न उसने न उसकी बेटियों ने जैसा तू ने और
४९ तेरी पुत्रियों ने किया है। देख तेरी बहिन सदूम की बुराई यह थी उसमें और उसकी पुत्रियों में अहंकार और भोजन की भर पूरी और आलस की बऊताई थी और उसने कंगाल
५० और दरिद्रों के हाथ को बल न दिया। और उन्हों ने अभिमानी हो हो मेरे आगे घिनित कर्म्म किया इस लिये
५१ जैसा मैं ने देखा तैसा उन्हें दूर किया। सामरः ने भी तेरे पाप का आधा न किया परन्तु तू ने अपने घिनितों को उनसे अधिक बढ़ाया है और अपने सारे किये ऊए घिनितों से अपनी
५२ बहिनों को निर्दोष ठहराया है। तू ने जो अपनी बहिनों का बिचार किया तू भी अपने पाप के कारण जो तू ने उनसे अधिक घिनित कर्म किया है अपनीही लाज भोग वे तुझसे भी धर्म्मी हैं हां तू भी घबरा जा और तू ने जो अपनी बहिनों को
५३ निर्दोषी ठहराया है अपनी लाज भोग। जब मैं उनकी बंधुआई को फेर लाओंगा अर्थात सदूम और उसकी बेटियों की और सामरः की और उसकी बेटियों की बंधुआई तब मैं तेरी बंधुआई
५४ के बंधुओं को उनके मध्य में लाओंगा। जिसतें तू अपनीही लाज भोगे और अपने सारे किये ऊए कार्य्य में घबरा जाय
५५ तू उनके लिये शान्त है। जब तेरी बहिनें सदूम और उसकी लड़कियां अपनी अगिली दशा में फिर आवेंगी और सामरः और उसकी लड़कियां अपनी अगिली दशा में फिर आवेंगी तब तू और तेरी लड़कियां अपनी अगिली दशा में फिरेंगी।
५६ तेरे अहंकारों के दिन में तेरी बहिन सदूम तेरे मुंह से सुनाई
५७ न गई। तेरी दुष्टता के प्रगट होने से आगे उस समय के समान

जब कि तू ने अरम की लड़कियों की और उसके सारे चारो ओर की फलस्तियों की लड़कियों की निन्दा किई जो तेरी
५८ चारो ओर तुझे लूटतियां हैं। परमेश्वर कहता है कि तू ने
५९ अपने घिनितों और लंपटता को भोगा है। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरी करणी के समान मैं तुझसे भी व्यवहार करोंगा जिसने नियम को भंग करके किरिया की निन्दा
६० किई है। तिसपरभी मैं तेरे साथ तेरी युवावस्था के नियम को स्मरण करोंगा और तेरे साथ एक
६१ सनातन का नियम स्थिर करोंगा। जब तू अपनी जेठी और लहुरी बहिनों को ग्रहण करेगी तब तू अपनी चालों को स्मरण करके लज्जित होगी और मैं उन्हें पुत्रियों के लिये तुझे देउंगा
६२।६३ परन्तु तेरे नियम से नहीं। और मैं अपने नियम को तुझसे स्थिर करोंगा और तू जानेगी कि मैंही परमेश्वर हों प्रभु परमेश्वर कहता है जब कि मैं तेरी सारी करनी के लिये तेरी ओर शान्त हुआ हों तब तू स्मरण कर और अपनी लाज के मारे घबराजा और फेर अपना मुंह न खोल।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

दो गिद्ध और दाख का दृष्टांत १—१० इकूनियाः और सिदकियाः उसका अर्थ ११—२१ मसीह के राज्य का समाचार २२—२४।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मुझ पर पहुंचा।
२ कि हे मनुष्य के पुत्र एक पहेली निकाल और इसराईल के
३ घराने से एक दृष्टांत कह। और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बड़े बड़े डयने का एक बड़ा गिद्ध लंबे लंबे पंख का, पर से भरा हुआ बूटेदार रंग का लबनान में आके
४ आरज पेड़ की सब से ऊंची डाली लेगया। और उसने उसकी कोमल कनखियों की फुनगी चोंथ डाली और बैपार

के देश में ले गया और उसे बैपारियों के नगर में लगाया। और वुह देश का बीज भी ले गया और उसे फलवान खेत में लगाया और उसे बड़े पानियों के लग लगाया और बेंत पेड़ के लग उसे बोया। और वुह बढ़ के फैलती छोटी जाति की लता ऊई जिसकी डालियां उसकी ओर मुड़ीं और उसकी सोर भी उसके नीचे ऊई वुह यों दाख की लता हो गई और डालियां निकालीं और कनखियां फुटवाईं। और बड़े बड़े डयने और बऊत पर का एक दूसरा बड़ा गिद्ध था और देखो यह लता अपनी सोरें उसकी ओर झुकाईं और उसकी ओर अपनी डालियां बढ़ाईं जिसतें अपनी कियारी की नाली से उसे सींचे। और वुह बड़े बड़े पानियों के लग अच्छी मिट्टी में लगाई गई जिसतें डालियां फूटें और फल फले और अच्छी लता होवे। तू कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है, क्या वुह लहलहावेगी? उसे सुखाने के लिये क्या वुह उसकी जड़ न उखाड़ेगा और उसका फल न काटेगा जिसतें वुह सूखजाय? उसके बसंत के सारे पत्ते सूख जायेंगे अर्थात् जड़ से बिना पराक्रम अथवा बऊत लोग से उखाड़ी जायगी। हां देख लगाई जाके क्या वुह लहलहावेगी? क्या जब पुरबा पवन उस पर लगेगा वुह सर्वथा सूख न जायगी? वुह नाली में जहां उगी तहां सूख जायगी।

११ फेर यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा।
१२ अब दंगइत घराने से कह क्या तुम लोग इन बातों का अर्थ नहीं जानते? कह कि देखो बाबुल का राजा यिरोसलीम पर आया है और उसके राजा को और उसके अध्यक्षों को पकड़ा
१३ है और उन्हें अपने साथ साथ बाबुल को लेगया है। और राजा के बंशों में से लिया है और उसे नियम बांधा और उसे किरिया लिई और उसने देश के बलवंतों को भी पकड़ा।
१४ जिसतें राज्य तुच्छ होवे और आप को न उभाड़े कि उसके
१५ नियम को पाले और उसपर स्थिर होवे। परन्तु वुह दूतों

को मिसर में भेजके उससे घोड़े और बड़तसे लोग मंगवावे उसके विरुद्ध फिर गया क्या वुह भाग्यमान होगा? क्या ऐसे कार्य्यकारी बचेगा? अथवा नियम को तोड़ के वुह छूट जायगा।
१६ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों निश्चय जिस स्थान में राजा ने उसे राजा किया जिसकी किरिया की उसने निन्दा किई और जिसका नियम उसने तोड़ा उसके साथ वुह बाबुल में
१७ मरेगा। अपनी पराक्रमी सेना और बड़ी जथा से बड़त से लोगों को जुभाने के लिये मुरचा और गढ़ बना बना के फरऊन से
१८ संग्राम में उसके लिये कुछ न बन पड़ेगा। क्योंकि नियम भंग करके उसने किरिया की निन्दा किई जब कि लो उसने अपने हाथ से लिखा था और इनसब बातों को करके वुह न बचेगा।
१९ इस लिये प्रभु ईश्वर कहता है कि अपने जीवन सों निश्चय मेरी किरिया जिसकी उसने निन्दा किई और मेरे नियम जो उसने
२० भंग किया है उसी का पलटा मैं उसी के सिर पर देउंगा। और मैं अपना जाल उस पर फैलाओंगा और वुह मेरे फंदे में पकड़ा जायगा और मैं उसे बाबुल को लाऊंगा और उसके अपराध के लिये जो उसने मेरे विरुद्ध अपराध किया है मैं वहां उसे बिचार
२१ करोंगा। और उसके सारे भगेड़ू और सारी जथा तलवार से मारी जायेंगी और बचे ड़ए चौदिशा छिन्न भिन्न होंगे और
२२ तुम लोग जानोगे कि मुझ परमेश्वर ने कहा है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ऊंचे आरज पेड़ के ऊंचे से ऊंची डाली लेके लगाऊंगा और ऊपर की कोमल टहनियों में से एक को काटोंगा और उसे एक ऊंचे और उत्तम पर्ब्बत पर
२३ लगाऊंगा। इसराईल के ऊंचे पहाड़ पर मैं उसे लगाओंगा और उसे डालियां निकलेंगी और फलेंगी और सुन्दर आरज पेड़ होगा और हर डैने के सारे पंछी उसके तले बसेंगे उसकी
२४ डालियों की छाया तले वे बसेंगे। और बन के सारे पेड़ जानेंगे कि मुझ परमेश्वर ने ऊंचे पेड़को उतारा और नीचे

पेड़ को बढ़या मैं ने हरे पेड़ को सुखा दिया और सूखे पेड़ को लहलहवाया मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और किया है ।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर का यहूदियों को दपटना और धर्मी से अपना व्यवहार १—९ दुष्ट और धर्मी पुत्र से उसका व्यवहार १०—१८ हर एक जन से उसकी चाल के समान ईश्वर का व्यवहार १९—२४ उसके व्यवहार का धर्म और यहूदियों का पाप २५—२९ पश्चात्ताप का उपदेश ३०—३२ ।

फेर यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा । तुम लोगों का अभिप्राय क्या जो इसराईल के देश के विषय में यह कहावत कहते हो कि पितरों ने खट्टा दाख खाया है और बालकों के दांत खट्टे ऊए ? । प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों तुम लोग फेर इसराईल में इस कहावत का कारण न पाओगे । देख सारे प्राण मेरे हैं पिता के प्राण के समान पुत्र का प्राण भी मेरा है जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा ।

परन्तु यदि मनुष्य धार्म्मिक होवे और न्याय और धर्म्म करे । और पहाड़ पर भोजन न किया है और इसराईल के घराने की मूर्त्तिन की ओर आंखें न उठाई हैं और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध न किया है और रजस्वला स्त्री के पास न गया है । और किसी को न सताया है रिण का बन्धक फेर दिया है और अंधेर से किसी को न लूटा है और भूखों को अपनी रोटी खिलाई है और उघारे ऊए को कपड़ा ओढ़ाया है । वियाज पर नहीं दिया है और कुछ बढ़ती नहीं लिया है और बुराई से अपना हाथ खींच लिया है और मनुष्य और मनुष्य के मध्य में ठीक बिचार किया है । मेरी विधिन पर चला है और सच्चाई से व्यवहार करने को मेरे बिचार को

पालन किया है सो धर्मी है प्रभु परमेश्वर कहता है कि व
१० निश्चय जीयेगा। यदि उस्से बेटा उत्पन्न होवे जो
बटमार और घातक और इन में से कोई बात के समान करे
११ और उनमें की कोई बातों को न करे परन्तु पहाड़ों पर खाय
१२ ह और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध किया है। कंगाले
और दरिद्रों को सताया है और अंधेर से लूटा है और बन्ध
को फेर नहीं दिया है और मूर्त्तिन की ओर आंखें उठाई
१३ और घिनित किया है। बियाज में दिया है और बढ़ती लि
है तो क्या वुह जीयेगा? वुह न जीयेगा उसने ये सारे घिनि
कार्य्य किये हैं वुह निश्चय मरेगा उसके लोहू उस पर पड़ेंगे।
१४ और यदि उस्से बेटा उत्पन्न होवे जो अपने पित
के किये हुए सारे पाप को देखे और सोच के ऐसा न करे
१५ और पहाड़ों पर नहीं खाया है और इसराईल के घराने क
मूर्त्तिन पर आंखें नहीं उठाई हैं और अपने परोसी की पत्नी के
१६ अशुद्ध न किया है। और किसी को न सताया है और बंधक के
बंधक न रक्खा है और न अंधेर से लूटा है परन्तु अपनी रोट
१७ भूखों को दिई है और उघारे हुए को वस्त्र ओढ़ाया है। औ
अपना हाथ कंगालों पर से उतारा है और बियाज और बढ़त
नहीं लिई है और मेरे न्यायों को पालन किया है और मेरी
बिधिन पर चला है वुह अपने पिता की बुराई के लिये
१८ मरेगा निश्चय वुह जीयेगा। उसके पिता ने क्रूरता से सता
अंधेर से अपने भाई को लूटा और अपने लोगों में जो भला
न थी सो उसने किई देखो वुह अपनी बुराई में मरेगा
१९ तथापि तुम लोग कहते हो कि किस लिये? क्या बेटा बाप क
बुराई नहीं भोगता जब बेटे ने उचित और ठीक किया है औ
मेरी सारी बिधिन को पाला है और उन्हें माना है वुह अवश
२० जीयेगा। जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा बेटा बाप क
बुराई न भोगेगा और न बाप बेटे की बुराई भोगेगा धर्म

का धर्म्म उसी पर होगा और दुष्ट की दुष्टता उसी पर पड़ेगी।
२१ परन्तु यदि दुष्ट अपने किये ऊए सारे पापों से फिरे और मेरी सारी बिधिन को पाले और उचित और ठीक करे
२२ तो वुह निश्चय जीयेगा वुह न मरेगा। उसके सारे अपराध कर्म्म उसे सुनाये न जायेंगे वुह अपने धर्म्म कर्म्म में जीयेगा।
२३ प्रभु परमेश्वर कहता है कि क्या दुष्ट की मृत्यु से मैं किसी बात में प्रसन्न हों और इस्से नहीं कि वुह अपनी चाल से फिरे और
२४ जीये?। परन्तु जब धर्मी अपने धर्म्म से फिरके बुराई करे और दुष्ट के समान सारे घिनित कार्य्य करे क्या वुह जीयेगा? उसके सारे धर्म कार्य्य न कहे जायेंगे वुह अपने किये ऊए अपराध
२५ में और अपने किये ऊए पाप में मरेगा। तबभी तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं सो हे इसराईल के घरानों अब सुनो क्या मेरा मार्ग सम नहीं? क्या तुम्हारा मार्ग
२६ असम नहीं?। जब धर्मी अपने धर्म से फिरे और अधर्म करे
२७ और उसमें मरे वुह अपनी किई ऊई बुराई में मरेगा। फेर जब दुष्ट अपनी दुष्टता स फिरे और उचित और ठीक करे
२८ तो अपने प्राण को कुशल से रक्खेगा। क्योंकि उसने सोचा और अपने किये ऊए सारे अपराध से फिरा वुह निश्चय जीयेगा वुह
२९ न मरेगा। तथापि इसराईल के घराने कहते हैं कि प्रभु का मार्ग सम नहीं हे इसराईल के घराने क्या मेरे मार्ग सम नहीं? क्या
३० तुम्हारे मार्ग असम नहीं?। इसी लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि हे इसराईल के घराने मैं हर एक की चाल के समान तुम्हारा बिचार करोंगा पछताओ और अपने अपने सारे अपराधों से
३१ फिरो और बुराई के लिये नष्ट न होओगे। जिस जिस अपराध से तुम सभोंने अपराध किया है उन्हें त्याग करो और अपने लिये नया मन और नया आत्मा बनाओ क्योंकि हे इसराईल के
३२ घराने तुम क्यों मरोगे?। क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मरणीय की मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं सो फिरो और जीयो।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब ।

राज घराने पर बिलाप १—९ दाख से उनका दृष्टान्त १०—१४ ।

१।२ अधिक इसराईल के अध्यक्षों के लिये एक बिलाप उठा । और कह कि तेरी माता क्या? एक सिंहिनी वुह सिंहों में लेट गइ
३ उसने युवा सिंहों में अपने बच्चों को पाला । और उसने अपने एक बच्चे को प्रतिपाल किया और वुह युवा सिंह ऊआ और अहेर पकड़ने सीखा वुह मनुष्यों को भक्षने लगा।
४ जातिगणों ने भी उसका समाचार पाया और वुह उनके गाड़ में पकड़ा गया और वे उसे सीकरों से मिसर देश में लाये।
५ और जब उसने देखा कि मैंने बाट जोही और आशा जाती रही तब उसने अपने बच्चों में से दूसरे को लिया और उसे
६ युवा सिंह किया। और वुह सिंहों में फिरते फिरते तरुण सिंह ऊआ और अहेर पकड़ना सीखा और मनुष्यों को
७ भक्षने लगा। उसने उनके उजाड़ भवनों को जाना और उनके नगरों को उजाड़ किया और देश और उसको भर पूरी
८ उसके गर्जने के शब्द से उजड़ गई । तब चारों ओर के प्रदेशों से जातिगण उसके बिरुद्ध ऊए और उस पर अपना जाल
९ फैलाया वुह उनके गाड़ में पकड़ा गया। और उन्हों ने उसे सीकर से बांध के बंधन में किया और बाबुल के राजा पास ले गये और उन्हों ने उसे बंधन में डाला जिसतें उसका शब्द
१० इसराईल के पर्ब्बतों पर फेर सुना न जाय। तेरी माता दाखकी लता के समान तेरी नाईं जल के लग लगाई गई है वुह
११ मुक्ता जल के मारे फलमय होके डालों से भर गई। और आज्ञाकारियों के राज दंडों के लिये उसकी छड़ें पोढ़ थीं और वुह घनी डालियों में बढ़ गई वुह अपनी डालियों की बऊताई
१२ से अपनी ऊंचाई से देखी जाती थी। परन्तु वुह कोप से उखाड़ी जाके भूमि पर फेंकी गई और पुरबा पवन ने उसके

फल को झुरा दिया उसकी पोढ़ छड़ें टूट के सूख गईं आग ने
१३ उन्हें भस्म किया। और अब वुह सूखी और तृषित भूमि में
१४ बन में लगाई गई है। और उसकी डालियों में की एक
छड़ से आग निकली है जिसने उसके फलों को भक्ष किया यहां
लों कि प्रभुता करने को राज दंड के लिये उसकी कोई पोढ़
छड़ न रही यह बिलाप है और बिलाप का कारण होगा।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

ईश्वर प्राचीनों की नहीं सुनता १—३ ईश्वर का व्यवहार और लोगों का पाप ४—३२ दुष्टों का दंड और चुने ज़ए का बचना ३३—४४ यिरोशलीम के नाश की भविष्यवाणी ४५—४९ ।

१ सातवें बरस के पांचवें मास की दसवीं तिथि में यों ज़आ कि
परमेश्वर से बूझने को इसराईल के कई प्राचीन मेरे आगे आ
२ बैठे। तब यह कहते ज़ए परमेश्वर का बचन मुझ पास
३ पज़ंचा। हे मनुष्य के पुत्र इसराईल के प्राचीनों से यह
कहिके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग
मुझ से बूझने को आये हो? प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने
४ जीवन सों मैं तुम से बूझा न जाऊंगा। हे मनुष्य के पुत्र क्या
तू उनके लिये मुझ से पक्ष करेगा? उनके पितरों के घिनित कार्य्य
५ उन्हें जना। और उनसे कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
जिस दिन मैं ने इसराईल को चुना और याक़ूब के बंशों के लिये
अपना हाथ उठा के किरिया खाई और मिसर देश में आप
को उन पर प्रगट किया जब यह कहिके मैं ने उनके लिये हाथ
६ उठाया कि मैं तुम्हारा ईश्वर परमेश्वर हों। जिस दिन उन्हें
मिसर देश से निकाल लाने को, और उस देश में लाने को
जो मैं ने उनके लिये देख रक्खा था जिसमें मधु और दूध
बहता है और सब देशों से अधिक शोभायमान है मैं ने

७ उनके लिये अपना हाथ उठाया। उस दिन मैं ने उन्हें कहा कि तुम्म से हरएक जन अपनी अपनी आंखों की घिनित वस्तु को त्यागे और मिसर की मूर्त्तिन से अपने तईं अशुद्ध मत
८ करो मैं हीं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर। परन्तु वे मेरे विरुद्ध फिर गये और मेरी न मानी उन्हों में से हरएक ने अपनी अपनी आंखों की घिनित वस्तुन को और मिसर की मूर्त्तिन को न त्यागा तब मैं ने कहा कि मिसर देश के मध्य में अपनी रिस उनके विरुद्ध पूरा करने को अपना कोप उन पर
९ उंड़ेलोंगा। परन्तु जिसतें अन्यदेशियों के आगे, जिनमें वे थे जिन की दृष्टि में मिसर देश से बाहर लाने में मैं ने आप को उन पर जनाया कि मेरा नाम अशुद्ध न किया जाय मैं ने अपने
१० नाम के लिये कार्य्य किया। इसी कारण मैं
११ उन्हें मिसर देश से निकाल के बन में लाया। और अपनी विधि उन्हें दिई और अपना नाम उन्हें जनाया जिन्हें यदि
१२ मनुष्य पालन करे तो उनमें जीयेगा। उस्से अधिक मेरे और उनके मध्य में चिन्ह होने को मैं ने उन्हें अपने विश्रामों को दिया जिसतें वे जानें कि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हों।
१३ परन्तु इसराईल के घराने बन में मेरे विरुद्ध फिर गये और वे मेरी विधिन पर न चले और मेरे न्यायों को निन्दा किई जिन्हें यदि मनुष्य पालन करे तो वुह उनमें जीयेगा और उन्हों ने मेरे विश्रामों को अति अशुद्ध किया तब मैं ने कहा कि मैं उन्हें नष्ट करने के निमित्त अपना कोप उन पर बन में उंड़ेलोंगा।
१४ परन्तु जिसतें अन्य देशियों के आगे, जिन की दृष्टि में मैं उन्हें निकाल लाया मेरा नाम अशुद्ध न होवे मैं ने अपने नाम के
१५ लिये कार्य्य किया। तब भी मैं ने अपना हाथ बन में उनके लिये उठाया कि जिस देश को मैं ने उनको दिया था जिसमें दूध और मधु बहता है, जो सारे देशों से सोभायमान है
१६ मैं उसमें उन्हें न लाओं। इस कारण कि उन्हों ने मेरे न्यायों

की निन्दा किई और मेरी बिधिन पर न चले परन्तु मेरे बिश्रामों को अशुद्ध किया क्योंकि उनका मन अपनी मूर्त्तिन के
१७ पीछे पीछे गया। परन्तु नाश करने से मेरी आंखों ने उन्हें
१८ छोड़ दिया और मैं ने बन में उन्हें मिटा न डाला। परन्तु बन में उनके सन्तानों को कहा कि तुम लोग अपने पितरों की बिधिन पर मत चलो और उनके बिचार को मत मानो और
१९ उनकी मूर्त्तिन से आप को अशुद्ध न करो। मैंही परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर मेरी बिधि पर चलो और मेरी नीति पालो
२० और मानो। और मेरे बिश्रामों को पवित्र मानो और वे मेरे और तुम्हारे मध्य में चिन्ह होंगे जिसतें जानो कि मैंहीं
२१ परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। तिसपरभी उनके सन्तान मेरे बिरुद्ध फिर गये वे मेरी बिधिन पर न चले और मेरे बिचारों पर चलने को न माना जिन्हें यदि मनुष्य माने तो उनमें जीयेगा और मेरे बिश्रामों को अशुद्ध किया तब मैं ने कहा कि अपनी रिस बन में उन पर पूरी करने को अपना
२२ कोप उन पर उंड़ेलोंगा। तथापि मैं ने अपना हाथ उठा लिया और अपने नाम के लिये कार्य्य किया जिसतें अन्यदेशियों की दृष्टि में जिनके आगे मैं उन्हें बाहर लाया अशुद्ध न होने
२३ पावे। मैं ने बन में भी अपना हाथ उन पर उठाया कि मैं उन्हें
२४ अन्यदेशियों में बिथराओं और देशों में छिन्न भिन्न करों। इस कारण कि उन्हों ने मेरी नीतिन को न माना परन्तु मेरी बिधिन की निन्दा किई थी और मेरे बिश्रामों को अशुद्ध किया और उनकी आंखें अपने पितरों की मूर्त्तिन के पीछे पीछे गईं
२५ थीं। इस लिये मैं ने भी उन्हें बिधि दिई जो अच्छी न थी
२६ और न्याय जिस्से वे न जीयें। और मैं ने उन्हें इस बात में उन्हीं के दान से अशुद्ध किया कि कोख से सारे उत्पन्न हुए को उन्हों ने आग में चलाया है जिसतें वे मुझ परमेश्वर को जानें
२७ कि मैं ने उन्हें उजाड़ा। इस लिये हे मनुष्य के

पुत्र तू इसराईल के घराने को यह कहिके बोल कि प्र
परमेश्वर यों कहता है कि इस बात में भी तुम्हारे पितरों
मेरी अपनिन्दा किई और मेरे विरुद्ध उल्लंघन करके अपरा
२८ किया। क्योंकि जब मैं उन्हें उस देश में लाया जिसे उन्हें देने के
मैं ने अपना हाथ उठाया था तब उन्हों ने हरएक ऊंचे पहाड़ के
और सारे घने पेड़ों को देखा और उन्हों ने वहां अपने बलि
चढ़ाये और वहां उन्हों ने अपनी रिस की भेंट चढ़ाई और
वहां उन्हों ने अपना सुगंध भी बनाया और उसी स्थान में
२९ अपनी पीने की भेंट उंड़ेली। तब मैं ने उन्हें कहा कि किस
ऊंचे स्थान में जाते हो? उसका नाम आज लों बामह है।
३० इस लिये इसराईल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है, क्या तुम अपने पितरों के समान अशुद्ध ऊए हो
और तुम भी उनके घिनितों के समान व्यभिचार करते हो?।
३१ इस लिये आज लों जब तुम लोग भेंट चढ़ाते हो और
अपने बेटों को आग में से चलाते हो तब तुम अपनी सारी
मूर्त्तिन से आप को अशुद्ध करते हो सो हे इसराईल के घराने
क्या मैं तुम्हों से बूझा जाऊं? प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने
३२ जीवन सों मैं तुम से बूझा न जाऊंगा। जो तुम्हारे मन में
आता है सो कधी न होगा क्योंकि तुम कहते हो कि काठ और
पत्थर की सेवा में हम अन्यदेशियों के और देश के घरानों के
३३ समान होंगे। प्रभु परमेश्वर कहता है कि
अपने जीवन सों पराक्रमी हाथ से और बढ़ाई ऊई भुजा से
३४ और उंड़ेले ऊए कोप से मैं तुम पर राज्य करोंगा। और मैं
तुम्हें लोगों म से बाहर निकाल लाओंगा और जिस जिस देश
में तुम छिन्न भिन्न हो मैं तुम्हें पराक्रमी हाथ से और बढ़ाई
३५ ऊई भुजा से और उंड़ेले ऊए कोप से एकट्ठा करोंगा। और
मैं तुम्हें लोगों के बन में लाऊंगा और मुंह मुंह तुम्हों से विवाद
३६ करोंगा। जैसा मैं ने तुम्हारे पितरों के साथ मिसर देश के

बन में बिवाद किया था प्रभु परमेश्वर कहता है तैसा मैं तुम्हों
७ से भी बिवाद करोंगा। और मैं तुम्हें दंड के नीचे से चलाओंगा
८ और तुम्हें नियम के बंधन में लाओंगा। और तुम्हों में से दंगइतों
को और उन्हें जो मेरे बिरुद्ध अपराध करते हैं दूर करोंगा और
उनके टिकने के देश में उन्हें निकाल लाऊंगा और वे इसराईल
के देश में प्रवेश न करेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर
९ हों। हे इसराईल के घराने प्रभु परमेश्वर तुम्हारे
बिषय में यों कहता है कि तुम लोग जाओ और हरएक जन
अपनी अपनी मूर्ति की सेवा करे और इसके पीछे जो मेरी न
सुनोगे परन्तु अपनी भेंटों और अपनी मूरतों से मेरा पवित्र
० नाम फेर अशुद्ध न करो। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि मेरे पवित्र पर्ब्बत पर इसराईल के ऊंचे पहाड़ पर सारे
इसराईल के घराने सबके सब देश में मेरी सेवा करेंगे और
वहां मैं उन्हें ग्रहण करोंगा और वहां मैं तुम्हारी भेंट और
तुम्हारे नैवेद्य का पहिला फल तुम्हारी सारी पवित्र बस्तुन के
१ साथ चाहोंगा। जब मैं तुम्हें लोगों में से निकाल लाया और
देशों में से, जिनमें तुम छिन्न भिन्न हुए हो बटोरोंगा तब मैं
तुम्हें तुम्हारे सुगंध द्रव्य सहित ग्रहण करोंगा और अन्यदेशी
२ लोगों के आगे तुम्हों में पवित्र किया जाओंगा। और जब
मैं तुम्हें इसराईल की भूमि में उस देश में जिसे तुम्हारे पितरों
को देने को मैं ने अपना हाथ उठाया था लाओंगा जब तुम
३ जानोगे कि मैं परमेश्वर हों। और वहां तुम अपनी अपनी
चालों को और अपनी सारी क्रिया को, जिनमें अशुद्ध हुए हो
स्मरण करोगे और अपनी किई हुई सारी बुराइयों के लिये
४ आप को अपनीहों दृष्टि में घिनाओगे। और हे इसराईल के
घराने प्रभु परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुम्हारी दुष्ट चालों
के समान और तुम्हारी कुक्रिया के समान तुम से ब्यवहार न
करोंगा परन्तु अपने नाम के लिये तब तुम जानोगे कि मैं

४५ परमेश्वर हों। फेर यह कहते हुए परमेश्वर
४६ का वचन मुझ पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र अपना मुंह
दक्खिन ओर कर और दक्खिन ओर उचार और दक्खिन के
४७ चौगान के बन के विरुद्ध भविष्य कह। और दक्खिन के बन से
कह कि परमेश्वर का वचन सुन प्रभु परमेश्वर कहता है कि
देख मैं तुझ में एक आग बारोंगा और वुह हरएक हरे पेड़
और सूखे पेड़ को भक्षेगी बरती लवर न बुझेगी और उसमें
४८ दक्खिन से उत्तर लों सभों का मुंह जल जायगा। और सारे
लोग देखेंगे कि मुझ परमेश्वर ने उसे बारा है वुह न बुझेगी।
४९ तब मैं ने कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर वे मेरे विषय में कहते
हैं कि क्या वुह दृष्टान्त नहीं कहता।

२१ एकीसवां पर्ब्ब ।

यहूदियों के मारे जाने की भविष्य वाणी १—७
फेर वैसीही भविष्य वाणी ८—१७ यिरोशलीम
के घेरे जाने का समाचार १८—२४ सिदकियाः
का दंड और अमून के नाश की भविष्य वाणी
२५—३२ ।

१।२ यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मुझ पास पहुंचा। हे मनुष्य
के पुत्र अपना रुख यिरोशलीम की ओर कर और पवित्र
स्थानों की ओर उचार और इसराईल के देश के विरुद्ध भविष्य
३ कह। और इसराईल के देश से कह कि परमेश्वर यों कहता
है कि देख मैं तेरे विरुद्ध हों और अपनी तलवार को काठी
से निकालोंगा और धर्मियों को और दुष्टों को तुझ में से नष्ट
४ करोंगा। सो जैसा कि मैं तेरे मध्य से धर्मियों को और दुष्टों
को नष्ट करोंगा इस लिये मेरी तलवार अपनी काठी से उत्तर
५ से दक्खिन लों सारे शरीरों के विरुद्ध निकलेगी। जिसतें सारे
शरीर जानें कि मुझ परमेश्वर ने अपनी तलवार काठी से

६ निकाली है वुह फेर न लौटेगी। इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपनी कटि के टूटने से हाय हाय कर और उनकी आंखों के
७ आगे बिलख बिलख के हाय हाय कर। और ऐसा होगा कि जब वे तुझे पूछें कि तू क्यों हाय हाय करता है तब उत्तर देना कि संदेशों के लिये क्योंकि वुह आता है और हर एक का मन पिघल जायगा और सारे हाथ दुर्बल होंगे और हर एक अन्तःकरण मूर्छित होगा और सारे घुठने पानी होजायेंगे प्रभु ईश्वर कहता है कि देख वुह आता है और पऊंचाया जायगा।

८ यह कहते ऊए फेर परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा।
९ हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह और बोल कि परमेश्वर यों कहता है कि एक तलवार एक तलवार धार किई गई और चमकाई
१० गई भी। वुह चमकाई गई है जिसतें जगमगावे वुह बड़ी जूझ के लिये चोखी किई गई है तो क्या हम आनंद करें? वुह मेरे बेटे की लाठी है वुह हर एक पेड़ की निन्दा करता
११ है। वुह धरे जाने के लिये चमकाई गई है यह तलवार घातक के हाथ में दिई जाने को चोखी किई गई और जगमगाई गई
१२ है। हे मनुष्य के पुत्र रो रो के चिल्ला क्योंकि यह मेरे लोगों पर होगा वुह इसराईल के सारे अध्यक्षों पर होगा तलवार
१३ के भय के मारे मेरे लोगों पर भय पड़ेगा जांघ पीट। जब परीक्षा ऊई तब क्या? वुह निन्दित दंड के लिये भी न होगा प्रभु
१४ परमेश्वर कहता है कि न होगा। इस लिये हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह और हाथ पीट और तीसरे बार तलवार जूझे ऊए की तलवार दुहराई जाय वुह तलवार महत जूझे ऊओं की है जो
१५ उनकी कोठरियों में पैठती है। मैंने तलवार की नोक उनके सारे फाटकों पर धरा है जिसतें उनका मन निर्बल होवे और खंडहर बढ़ाये जायें हाय वुह चमकाई गई है वुह जुझाने के लिये
१६ चोखी किई गई है। तू एक ओर अथवा दूसरी ओर दहिने
१७ अथवा बायें जा जिधर तेरा रुख होवे। मैं अपना हाथ भी

पीटोंगा और अपना कोप धीमा करोंगा मुझ परमेश्वर ने
१८ कहा है ।　　　　　　　　यह कहते ऊए परमेश्वर का वचन
१९ मुझ पर पऊंचा । हे मनुष्य के पुत्र तू भी अपने लिये दो मार्ग
ठहरा जिसतें बाबुल के राजा की तलवार आवे एकही देश से
दोनों निकलेंगे तू एक स्थान को चुन नगर के पथ के सिरे पर
२० उसे चुन । एक मार्ग ठहरा जिसतें तलवार अमूनियों के रब्बास
पर और बाड़ित यिरोशलीम में यहूदा पर तलवार आवे ।
२१ क्योंकि बाबुल का राजा मार्ग के भाग पर दोनों मार्ग के सिरे
पर गणना करने को खड़ा ऊआ उसने अपने बाण को चमकाया
उसने मूर्त्ति से मंत्र लिया है और उसने कलेजे में देखा ।
२२ उसकी दहिनी ओर यिरोशलीम के लिये गणना ऊई कि जूझ
में मुंह खोलने को और शब्द से ललकारने को सेना पतिन को
ठहरावे टीला और गढ़ उठाने को कि फाटकों के साम्ने ढाहक
२३ ठहरावे । और उनकी दृष्टि में उनके लिये वुह झूठी गणना की
नाईं होगी अर्थात् जिन्हों ने किरिया खाई है परन्तु पकड़े जाने में
२४ वुह अपनी बुराई को स्मरण करेगा । इस लिये परमेश्वर यों
कहता है कि तुम्हारे अपराध यहां लों उघारे गये हैं कि तुम्हार
सारे कार्यों में तुम्हारा पाप देख पड़ता है तुम ने अपने अधर्म
को स्मरण कराया है इस लिये प्रभु परमेश्वर यह कहता है कि
तुम्हारे चेत में आने के कारण तुम हाथ से पकड़े जाओगे ।
२५　　　　अरे इसराईल के अधर्म दुष्ट अध्यक्ष तेरा दिन
२६ पऊंचा है तब बुराई का अन्त होगा । प्रभु परमेश्वर कहता है
कि मुकुट दूर कर और किरीट को उतार यह वही न होगा
२७ नीचे को उभाड़ ऊंचे को घटा । मैं उसे बिगाड़ोंगा बिगाड़ोंगा
बिगाड़ोंगा और जिसका पद है वुह जब लों न आवे वुह न
२८ रहेगा और मैं उसे देउंगा ।　　　　　　और हे मनुष्य के
पुत्र तू भविष्य प्रचार के कह कि प्रभु परमेश्वर अमूनियों के
विषय में और उनकी निंदा के विषय में यों कहता है कि तू

कह कि तलवार तलवार खींची गई जुझाने के लिये जगमगाई
९ गई और नाश करने को चमकाई गई । तुझे दुष्टों के जूझेहुओं
के गले पर पहुंचाने को वे तेरे लिये वृथा देखते हैं और
मिथ्या आगम कहते हैं जिसका दिन पहुंचा है जब कि
० उनकी बुराई का अन्त होगा । क्या मैं उसे उसकी काठी म
फेरवाओं? मैं तुझे उस स्थान में तेरा न्याय करोंगा तेरे जन्म
१ देश में जहां तू उत्पन्न हुआ । मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर
उडेलोंगा मैं अपने कोप की आग तेरे बिरुद्ध बारोंगा और
तुझे पशुवत जन के और निपुण नाशक के हाथ में सौंपोंगा ।
२ तू आग के लिये ईंधन होगा और तेरा लोहू देश के मध्य में
होगा और तू फिर स्मरण किया न जायगा क्योंकि मुझ
परमेश्वर ने कहा है ।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

यिरोशलीम के पापों का वर्णन १—१६ परमेश्वर
का उन्हें जांचना १७—२२ सारे लोगों की दुष्टता
बतानी २३—३१ ।

१२ यह कहते हुए फेर परमेश्वर का बचन मुझ पर पहुंचा । हे
मनुष्य के पुत्र क्या तू इन के लिये बिवाद करेगा क्या तू इस घातक
नगर के लिये बिवाद करेगा? अवश्य तू उसे उसके सारे घिनित
कार्य जना । तब तू कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिसतें
इस नगर का समय आवे वुह अपने मध्य में लोहू बहाता है
और आप को अशुद्ध करने के लिये अपने बिरुद्ध मूर्त्ति बनाता
है । तू लोहू बहा के दोषी हुआ है और अपनी बनाई हुई मूर्त्तिन
से आप को अशुद्ध किया है और अपना दिन समीप करवाया है
और अपने बरस लों पहुंचा है इस लिये मैं ने तुझे अन्यदेशियों
के लिये निन्दित और सारे देशों के लिये एक ठट्ठा बनाया है।
तेरा नाम अशुद्ध और तू बिपत्ति में बहुत तेरे पास के और

६ दूरके तुझे चिड़ावेंगे। देख इसराईल के अध्यक्ष अपनी सामर्थ्य
७ भर लोहू बहाने के लिये हर एक तेरे मध्य में थे। तुझी में उन्हों
ने माता पिता को तुच्छ जाना है तेरे मध्य में उन्हों ने परदेशियों
से छल व्यवहार किया है तुझ में उन्हों ने अनाथ और रांड़ों को
८ सताया है। तू ने मेरी पवित्र वस्तुन की निन्दा किई है और
९ मेरे विश्रामों को अशुद्ध किया है। तुझ में लोहू बहाने को
मिथ्यापवादी हैं और तुझ में पर्वतों पर भोजन करते हैं वे तेरे
१० मध्य में लंपट कर्म करते हैं। तुझ में उन्हों ने अपने पिता की
नग्नता उघारी है तुझ में वे हैं जो अशुद्धता के लिये अलग
११ किई गईयों को ग्रहण किया है। हर एक ने अपने परोसी की
पत्नी से घिनित कर्म किया है और किसी ने लंपटता से अपनी
पतोह को ग्रहण किया है और किसी ने तुझ में अपनी पिता की
१२ कन्या अर्थात् अपनी बहिन को नष्ट किया है। तुझ में उन्हों ने
लोहू बहाने को घूस लिया है तू ने ब्याज और बढ़ती लिई है
तू ने अपने परोसी को निचोर के लालच से कमाया है प्रभु
१३ परमेश्वर कहता है कि तू ने मुझे त्यागा है। देख तेरे हाथ
की अधर्म कमाई पर और तेरे मध्य मे के लोहू पर मैं ने अपना
१४ हाथ मारा है। क्या तेरा मन सह सकेगा अथवा जिन दिनों में
मैं तुझसे व्यवहार करोंगा क्या तेरे हाथ प्रबल होंगे? मुझ परमेश्वर
१५ ने कहा और करोंगा। और मैं तुझे अन्यदेशियों में
बिथराओंगा और देशों में तुझे छिन्न भिन्न करोंगा और तेरी
१६ अपवित्रता तुझ में से मिटा डालोंगा। और अन्यदेशियों के
मध्य में तू आप में अशुद्ध होगा और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर
१७ हों। यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर
१८ पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र इसराईल का घराना मेरे लिये मैल
होरहा है वे सब घरिये के मध्य में पीतल और जस्ता और
१९ लोहा और सीसा ऊए हैं और चांदी के मैल हैं। इस लिये
प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम सब मैल ऊए हो

सो अब देखो मैं तुम्हें यिरोशलीम के मध्य में एकट्ठा करोंगा ।
२० जैसा चांदी और पीतल और लोहा और सीसा और जस्ता
को घरिया के मध्य में पिघलाने को एकट्ठा करते हैं तैसा मैं
अपने कोप और रिस में तुम्हें बटोरोंगा और उसमें धर के
२१ पिघलाओंगा । मैं अवश्य तुम्हें बटोरोंगा और अपने क्रोध की
आग से तुम्हें फूकोंगा और तुम उसके मध्य में पिघलाये जाओगे ।
२२ जैसा चांदी घरिया में गलाई जाती है तैसा तुम लोग उसके
मध्य में गलाये जाओगे और तुम जानोंगे कि मुझ परमेश्वर
२३ ने अपना कोप तुम पर उंडेला है । फेर यह कहते
२४ हुए परमेश्वर का वचन मुझ पर पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र
उसे कह कि तू वही देश जो पवित्र नहीं किया गया और
२५ झलझलाहट के दिन में तुझ पर बरसाया नहीं गया । उसके
मध्य में उसके भविष्यद्वक्ता का एका करना अहेर के फड़वैये
गर्जनहारे सिंह की नाईं उन्हों ने प्राणों को भक्षण किया है
उन्हों ने धन और बहुमूल्य वस्तु लिया है उन्हों ने उसके मध्य
२६ में बहुतों को विधवा किया है । उनके याजकों ने मेरी व्यवस्था
पर अंधेर किई है और मेरी पवित्र वस्तुन को अशुद्ध किया
है और उन्हों ने पवित्र में और अपवित्र में कुछ भेद नहीं
किया है न शुद्ध अशुद्ध में कुछ भेद किया है और मेरे बिश्रामों
से अपनी आंखें छिपाईं हैं और मैं उनमें अशुद्ध हुआ हों ।
२७ उसके मध्य में अध्यक्ष घात करने में और प्राणों को नाश करने
२८ में और अधर्म कमाई में अहेर के फड़वैये हुंडार की नाईं हैं । और
उसके भविष्यद्वक्तों ने व्यर्थ देख देख और मिथ्या गणित कर कर
उन पर कच्चा गारा पोता है और कहते हैं कि प्रभु परमेश्वर
२९ यों कहता है और परमेश्वर ने नहीं कहा है । देश के लोगों ने
छल करके बटमारी किई है और दरिद्रों को और दीनों को
खिजाया है और उन्हों ने सेंत से परदेशियों को सताया है ।
३० बाड़ा बनाने को और देश के लिये मेरे आगे दरार में खड़ा

होने को मैं ने उनमें एक जन को ढूंढ़ा जिसतें उन्हें नाश न
३१ करों परन्तु किसी को न पाया। इस लिये मैं ने उन पर अपनी जलजलाहट उंड़ेली है मैं ने अपने कोप की आग से उन्हें भस्म किया है प्रभु परमेश्वर कहता है कि उनकी चाल का पलटा मैं ने उनके सिर पर डाला है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

दृष्टान्त में इसराईल की मूर्त्ति पूजा बतानी १—४
उनके पिछले पाप और दंड बताना ५—४९।

१।२ फेर परमेश्वर का बचन मुझ पर पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र
३ दो स्त्रियां एक माता की पुत्रियां थीं। और उन्हों ने मिसर में व्यभिचार किये और उन्हों ने अपनी तरुणाई में व्यभिचार किये और वहां उनके स्तन दबाये गये और वहां उन्हों ने अपने
४ कुंआरपन का स्तन मीसा। उनमें की जेठी का नाम आहोलाह और उसकी बहिन आहोलिबाह वे मेरी थीं और वे बेटे बेटियां जनीं उनके ये नाम आहोलाह सामरः है और
५ आहोलिबाह यिरोशलीम। मेरे होते हुए आहोलाह ने बेश्याई किई और वुह अपने जार परोसी असूरों पर मर
६ रही थी। जो सेनापति और आज्ञाकारी नीला पहिने हुए घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़ चढ़े सब के सब मनोहर युबा
७ पुरुष। यों उसने अपने व्यभिचारों को उन्हें सौंपा असूर के सन्तान के चुने हुए के संग और सभों पर वुह मर रही थी
८ उनकी सारी मूर्त्तिन से उसने आप को अशुद्ध किया। उसने मिसर से भी अपने व्यभिचार को न त्यागा क्योंकि उसकी तरुणाई में उन्हों ने उसे अकर्म्म किया और उन्हों ने उसके कुंआरपन के स्तनों को मीसा और अपना व्यभिचार उस पर
९ उंड़ेला। इस लिये मैं ने उसे उसके जारों के हाथ में सौंपा
१० अर्थात असूरियों के हाथ जिन पर वुह मर रही थी। इन्हों ने

उसका नंगापन उघारा उन्हों ने उसके बेटे बेटियों को लिया और उसे तलवार से घात किया और वुह स्त्रियों में नामी
१ हुई क्योंकि उन्हों ने उस पर दंड की आज्ञा किई थी। और जब उसकी बहिन आहोलिबाह ने देखा तो उसने अपने अति मोह से उसे अधिक अशुद्ध किया और अपने व्यभिचार
२ में अपनी बहिन के व्यभिचार से अधिक बढ़ गई। वुह अपने परोसी असूरियों पर जो भड़कीले से बिभूषित और घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़ चढ़े सब के सब मनोहर युवा पुरुष
३ सेना और आज्ञाकारियों पर मर रही थी। तब मैं ने
४ देखा कि वुह अशुद्ध हुई दोनों एकही मार्ग में गईं। और उसने अपने व्यभिचार कर्म्म बढ़ाये क्योंकि जब उसने मनुष्यों को चित्रित अर्थात कलदानियों की सूरत सिन्दूर से चित्रित भीत
५ पर देखा। कटि में पटुका बंधा हुआ अति रंगीली पगड़ी उनके सिरों पर सब के सब अपनी जन्म भूमि कलदी के
६ बाबुलियों कीं नाईं देखने में अध्यक्ष। देखतेही वुह उन पर मरने लगी और उन पास कलदियों में उन्हों ने दूत भेजे।
७ और बाबुल के सन्तान उस पास प्रीति के बिछौने पर आये और उन्हों ने अपने व्यभिचार से उसे अशुद्ध किया और वुह
८ उनके संग अशुद्ध हुई और उसका मन उनसे फिर गया। यों उसने अपने व्यभिचार उघारे और अपनी नग्नता उघारी सो जैसा मेरा मन उसकी बहिन से हट गया वैसा उससे भी
९ हटा। तथापि अपनी तरुणाई के दिनों को स्मरण कर के जिनमें मिसर देश में वेश्याई किई थी उसने अपने व्यभिचार
१० बढ़ाये। क्योंकि वुह अपने जारों पर मरने लगी उनका मांस गदहों का सा मांस और उनका वीर्य्य घोड़ों का सा।
११ अपनी तरुणाई के स्तनों को मिसरियों से अपनी छाती मिसाने में तू ने अपनी लंपटता को स्मरण किया।

१२ इस लिये हे आहोलिबाह प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि

देख मैं तेरे जारों को तेरे विरुद्ध उभाड़ोंगा जिनसे तेर
मन हटा है और मैं उन्हें चारो ओर से तेरे विरुद्ध लाओंगा
२३ बाबलूनी और सारे कलदानी पीकूद और शूआ और कूअ
और उनके संग सारे असूरी सब के सब मनोहर यवा पुरु
सेनापति और आज्ञाकारी और बड़े बड़े नामी अध्यक्ष सब के स
२४ घोड़े पर चढ़े ऊए। और वे रथों को और छकड़ों को और चक्रे
को बऊत से लोगों को साथ लेके तेरे विरुद्ध आवेंगे और ढाल और
फरी और टोप चारो ओर तेरे विरुद्ध होंगे और मैं उनके आगे
न्याय रक्खोंगा और वे अपने विचार के समान तेरा विचार करेंगे
२५ और मैं अपना झल तेरे विरुद्ध रक्खोंगा और वे अति कोप से
तुझसे व्यवहार करेंगे वे तेरी नाक कान काटेंगे और तेरे बचे
ऊए लोग तलवार से मारे जायेंगे वे तेरे बेटे बेटियों को लेंगे
२६ और तेरे बचे ऊए आग से भस्म होंगे। वे तेरे वस्त्र भी तुझसे
२७ उतारेंगे और तेरा अच्छा अभूषण ले लेंगे। मैं तेरी लंपटता
और मिसर देश के व्यभिचार को इसी रीति से मिटा डालोंगा
यहां लों कि तू अपनी आंखें उनकी ओर न उठावेगी और
२८ फेर मिसर को स्मरण न करेगी। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि देख जिनसे तू घिन करती है और जिनसे
तेरा मन हटा ऊआ है मैं तुझे उन्हीं के हाथ में सौंपोगा।
२९ वे घिन से तेरे संग व्यवहार करेंगे और तेरा सारा
परिश्रम ले जायेंगे और तुझे नंगी और उघारी छोड़ेंगे
और तेरे व्यभिचार की नंगापन तेरी लंपटता और तेरे
३० व्यभिचार देखे जायेंगे। मैं इस कारण यह कार्य्य तुझसे
करोंगा कि तू अन्यदेशियों की ओर व्यभिचार के लिये
चली गई है और इस कारण कि तू उनकी मूर्त्तिन से
३१ अशुद्ध ऊई है। तू अपनी बहिन की चाल पर चली है इस
३२ लिये मैं उसका कटोरा तेरे हाथ में देउंगा। प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि तू अपनी बहिन के बड़े और गहिरे कटोरे से

पीयेगी तेरी हंसी और निन्दा किई जायगी क्योंकि उसमें
३ बक्तत समाता है। तू मतवालपन से और शोक से और आश्चर्य्य
और उजाड़ के कटोरे से अपनी बहिन सामरः के कटोरे से
४ भर जायगी। तू उसे पीयेगी और चूस लेगी और उसका
टुकड़ा टुकड़ा करेगी और अपनेही स्तन उखाड़ डालेगी क्योंकि
५ प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैंही ने कहा है। इस लिये प्रभु
परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू मुझे भूल गई है
और अपने पीछे डाल दिया है इस लिये तू भी अपनी लंपटता
६ और व्यभिचारों को भोग। परमेश्वर ने मुझे
यह भी कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू आहोलाह और
आहोलिबाह के लिये बिवाद करेगा? हां उनके घिनित
७ कर्म उन पर प्रगट कर। उन्हों ने परगमन किया है और
लोह्र उनके हाथों में है और उन्होंने अपनी मूर्त्तिन से
परगमन किया है और जो बेटे वे मेरे लिये जनीं उन्हों ने
८ नाश के लिये उन्हें आग में से चलाया है। और उन्हों ने
मुझे यह भी किया है उन्हों ने उसी दिन मेरे पवित्र
स्थान को अशुद्ध किया है और मेरे बिश्रामों को सामान्य किया
९ है। क्योंकि जब उन्हों ने अपने बालकों को अपने मूर्त्तिन के
लिये घात किया तब वे उसी दिन मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध
करने को आईं और देख उन्हों ने मेरे घर के मध्य में ऐसा
१० किया है। और उसे अधिक तुमने मनुष्यों को बुलाभेजा है
जिन पास दूत भेजे गये और देखो वे आये जिनके लिये
तू ने नहाया है और अपनी आंखों को रंगाया है और
११ आभूषण से आप को संवारा है। और प्रतिष्ठित पलंग पर बैठी
और उसके आगे एक मंच सिद्ध था जिसपर तूने मेरा
१२ धूप और मेरा तेल धरा था। और चैन से होते ऊए एक
मंडली का शब्द उसके संग था और मनुष्यों के संग लोगों की
मंडली और बनमें की साबियानी पऊंचाये गये जिन्हों के हाथों

४३ पर खड़वे और सिरों पर सुन्दर सुन्दर मुकुट थे। तब मैं
व्यभिचार कर्म की पुरनिया से कहा कि वे अब उसे और वुह उनसे
४४ व्यभिचार करेंगे?। तथापि वे उस पास ऐसे गये जैसा वेश्या
पास जाते हैं सो वे लंपट स्त्री आहोलाह और आहोलिबाह
४५ के पास गये। धर्मी लोग व्यभिचारियों
की रीति के समान और उन स्त्रियों की नाईं जो लोहू
बहाती हैं उनका बिचार करेंगे क्योंकि वे व्यभिचारणी और
४६ लोहू उनके हाथ में है। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि मैं उन पर एक जथा लाओंगा और निकालेजाने
४७ और लूट के लिये मैं उन्हें देउंगा। और जथा उन्हें पत्थर से
पथरावेगी और अपनी तलवार से उन्हें बीन लेगी वे उनके
बेटे बेटियों को घात करेंगे और उनके घर आग से भस्म
४८ करेंगे। इसरीति से मैं लंपटता को देश में से मिटवाडाओंगा
जिसतें सारी स्त्रियां चेताई जावें तुम्हारी लंपटता के समान न
४९ करें। और वे तुम्हारी लंपटता का पलटा तुम्हें देंगे और
तुम अपनी मूर्त्तिन के पाप भोगोगे और जानोगे कि मैं प्रभु
परमेश्वर हों।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

कड़ाहा के दृष्टान्त से यिरोशलीम का नाश बताना
१—१४ उनका कष्ट बर्णन से परे होना १५—२४
उसके समाचार से उसका मुंह खुलना २५—२७।

१ फिर नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में यह कहते
२ हुए परमेश्वर का बचन मुझ पर पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र
दिन का नाम लिख अर्थात् इसी दिन का, बाबुल का राजा
इसी दिन यिरोशलीम के बिरुद्ध आप को लैस कर रक्खा है।
३ और दंगइत घराने के लिये एक दृष्टान्त उचार और उन्हें कह
कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि एक हंडा चढ़ा और उसमें

जल भी डाल। उसके टुकड़े उसमें बटोर हां जांघ और कंधेका हर एक अच्छा टुकड़ा और चुनी हुई हड्डियों से भर। और झुंड का चुना हुआ ले और उसके तले हड्डियां जला और उसे अच्छी रीति से उबाल और उनमें की हड्डियां उसिन।

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि लोहू बहाऊ नगर पर संताप उस हंडे को जिसका फेन उसमें है और जिसका फेन उसमें से नहीं गया टुकड़ा टुकड़ा करके उसे निकाल और उस पर चिट्ठी पड़ने न पावे। क्योंकि उसका लोहू उसके मध्य में उसने उसे एक पहाड़ की चोटी पर रक्खा उसने उसे धूल से ढांपने को भूमि पर न उंडेला। जिसतें पलटा लेने को कोप पहुंचावे मैं ने उसके लोहूको पर्बत की चोटी पर रक्खा है जिसतें ढांपा न जाय। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बधिक नगर पर संताप मैं आग के लिये ढेर बड़ा बनाओंगा। १० ईंधन धर आग बार मांस को गला अच्छी रीति से सुगंध द्रव्य दे ११ और हड्डियों को जलने देउ। तब छूछे उसे कोइलों पर धरो जिसतें उसका पीतल गरमावे और जले और उसको मैल १२ उसी में गल जाय और उसका फेन भस्म होवे। उसने झूठ स मुझे थकाया है और उसका बड़ा फेन उसमें से निकल नहीं १३ गया उसका फेन आग में पड़ेगा। तेरी अशुद्धता में लंपटता ह इस कारण कि मैं ने तुझे पवित्र किया है और तू पवित्र न हुआ तू फेर अपनी अशुद्धता से पवित्र न किया जायगा जब १४ लों मैं अपना कोप तुझ पर न उतरवाओं। मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और वही होगा मैं वही करोंगा और मैं न हटोंगा न छोड़ोंगा न पछताओंगा प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरी चाल और तेरी करणी के समान वे तेरा बिचार १५ करेंगे। यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मुझ पास १६ पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र देख मैं एक चोट से तेरी आंखों की बांछा को ले लेता हों तथापि तू शोक और बिलाप न करेगा

१७ और तेरे आंसू न बहेंगे। मत रो और मृतक के लिये विला मत कर सिर पर अपनी पगड़ी बांध और पांव में जूता पहि और ऊपर के होंठ मत ढांप और मनुष्यों की रोटी मत खा
१८ सो बिहान को मैं लोगों से बोला और सांझ को मेरी पत्नी मर गई और जैसी मैं ने आज्ञा पाई थी तैसा मैं ने बिहा
१९ को किया। तब लोगों ने मुझे कहा कि त
२० हमें न बतावेगा जो तू करता है सो हमारे लिये क्या?। तब मैं ने उन्हें उत्तर दिया कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए
२१ मुझ पर पहुंचा। इसराईल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं अपने पवित्र स्थान को और तुम्हारे बल की उत्तमता को तुम्हारी आंखों की बांछा को और तुम्हारे प्राण की मया को अशुद्ध करोंगा और तुम्हारे बेटे बेटी, जो
२२ बचे हैं सो तलवार से मारे पड़ेंगे। मेरे किये हुए के समान तुम लोग करोगे तुम होंठ न ढांपोगे न मनुष्य की रोटी खाओगे।
२३ और तुम्हारी पगड़ियां तुम्हारे सिरों पर और तुम्हारी जूतियां तुम्हारे पांव में होंगी और तुम शोक विलाप न करोगे परन्तु अपनी बुराई के लिये गले जाओगे और एक दूसरे की ओर
२४ बिलाप करोगे। इसी रीति से इज़कियल तुम्हारे लिये एक चिह्न है और उसके सारे किये हुए के समान तुम लोग करोगे और जब यह आवे तब जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हों।
२५ और भी हे मनुष्य के पुत्र जब मैं उनके बल उनके बिभव की आनन्दता और उनकी आंखों की बांछा और उनके मन के
२६ उभाड़ अर्थात् उनके बेटे बेटियों को उनसे लेलेउंगा। उसी
२७ दिन जो बच निकलेगा सो तुझे सुनाने को आवेगा। उस दिन तेरा मुंह उसके लिये जो बच निकला है खुलजायगा और तू बोलेगा और फिर गूंगा न रहेगा और तू उनके लिये एक चिह्न होगा और वे मुझ परमेश्वर को जानेंगे।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

अमून के बिरुद्ध भविष्य वाणी १—७ मवाब और अदूम का ८—१४ फलस्तिया का १५—१७ ।

१ यह कहते ऊए फेर परमेश्वर का वचन मुझ पर पऊंचा । २ हे मनुष्य के पुत्र अमूनियों के बिरुद्ध अपना रुख कर और ३ उनके बिरुद्ध भविष्य कह । और अमूनियों से कह कि प्रभु परमेश्वर का वचन सुनो प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने मेरे पवित्र स्थान के बिरुद्ध जब वुह अशुद्ध ऊआ और इसराईल के देश के बिरुद्ध जब वुह उजाड़ ऊआ और यहूदा के घराने के बिरुद्ध जब वे बंधुआई में पऊंचाये ४ गये अहा कहा । इस लिये देखो मैं तुझे पूर्वी पुत्रों के अधिकार के लिये सौंपोंगा और वे तुझ में अपने भवन बनावेंगे और अपना निवास तेरे मध्य में करेंगे और तेरा फल खायेंगे ५ और तेरे दूध पीयेंगे । और मैं रब्बाह को एक ऊंटशाला और अमूनियों को भेड़शाला बनाओंगा और तुम लोग ६ जानोगे कि मैं परमेश्वर हों । क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू ने थपोड़ी पीटी है और पांव पीटा है और इसराईल के देश के बिरुद्ध अपने सारे मन के साथ आनन्द किया है । ७ इस लिये देख मैं तेरे बिरुद्ध अपना हाथ बढ़ाओंगा और लूट के लिये तुझे अन्यदेशियों के हाथ सौंपोंगा और लोगों में से तुझे काटडालोंगा और देशों में से तुझे नाश करोंगा और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हों ।

८ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि मुआब और सईर कहते हैं कि देख ९ यहूदा का घराना सारे अन्यदेशियों की नाईं है । इस लिये देख मैं नगरों से देश के बिभव के आगे आगे के नगरों से अर्थात् बैतजशीमूस और बआल मऊन और करियासाईम से १० मुआब की ओर को अमूनियों के साथ पूर्वी लोगों के लिये खोलोंगा । और उन्हें अधिकार में देउंगा जिसतें जातिगणों

११ में अमूनियों का स्मरण न किया जाय। और मैं मुआब को दं
१२ देओंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों। प्र
परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि अदूम ने यहूदा वे
घराने से बैर लेने के लिये बैर से व्यवहार किया और बड़
१३ अपराध किया है और अपना बैर उनसे लिया। इस लिये
प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं अपना हाथ अदूम पर
बढ़ाओंगा और उसमें से मनुष्य को और पशु को नष्ट करोंगा
और तीमान से उसे शून्य करोंगा और दीदानी तलवार से
१४ मारे पड़ेंगे। और अपने इसराईल लोगों के द्वारा मैं अपना
बैर अदूम से लेउंगा और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे
मेरे कोप और मेरी रिस के समान अदूम से करेंगे और वे
१५ मेरा बैर जानेंगे। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
फलस्तानियों ने बैर से व्यवहार किया है और पुराने बैर के लिये
१६ नाश करने को घातक मन से बैर लिया है। इस लिये प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं फलस्तानियों पर अपना
हाथ बढ़ाओंगा और करीसीमियों को काट डालोंगा और
१७ समुद्र के घाट के रहेकओं को नाश करोंगा। और मैं अपने
कोप के दपट से उनसे बड़ा पलटा लेउंगा और जब मैं उनसे
पलटा लेउंगा तो वे जानेंगे कि परमेश्वर मैं हों।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

सूर के नाश की भविष्य बाणी १—६ उसका घेरा
जाना ७—१४ घबराहट का कारण १५—२१।

१ ग्यारहवें बरस के मास के पहिले दिन परमेश्वर का बचन
यह कहते ऊए मुझ पर पऊंचा कि हे मनुष्य के पुत्र इस कारण
कि सूर ने यिरोशलीम के बिरुद्ध कहा है कि अहा
२ लोगों के फाटक वुह टूट गई सो मेरी ओर फिरी है। अब
३ उसके उजाड़े जाने से मैं भर जाउंगा। इस लिये प्रभु

परमेश्वर यों कहता है कि देख हे सूर मैं तेरे बिरुद्ध हों और जैसा समुद्र अपने लहरों को उठाता है तैसा मैं तेरे बिरुद्ध बक्कतसे जाति गणों को उठवाऊंगा। और वे सूर की भीत को नाश करेंगे और उसके गुम्मटों को ढादेंगे और मैं उस पर की धूल भी खुरच डालोंगा और उसे चटान की चोटी की नाईं करोंगा। वुह समुद्र के मध्य जाल बिछाने के लिये होगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने कहा है वुह जातिगणों में एक लूट होगा। और उसकी बेटियां जो खेत में हैं तलवार से मारा जायेंगी और वे जानेंगे कि परमेश्वर मैं हों।

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं सूर पर उत्तर से राजाओं के राजा अर्थात बाबुल के राजा नबूक़दनज़ार को घोड़ों और रथों और घोड़चढ़ों और जथा बक्कत से लोगों के साथ लाओंगा। वुह खेत में तेरी लड़कियों को तलवार से घात करेगा और तेरे बिरुद्ध गढ़ बनावेगा और टीला उठावेगा और तेरे बिरुद्ध फरी उठावेगा। और संग्राम की सामग्री तेरी भीतों के बिरुद्ध लगावेगा और वुह अपनी कुदारियों से तेरे गुम्मटों को ढादेगा। उसके घोड़ों की बक्कताई के मारे उनकी धूल तुझे ढांपेगी जब वुह टूटे नगरों के प्रवेशों के समान तेरे फाटकों में पैठेगा तब घोड़चढ़ों के और पहियों के और रथों के शब्द के मारे तेरी भीतें हिल जायेंगी। वुह अपने घोड़ों के टापों से तेरे सारे सड़कों को लताड़ेगा और वुह तलवार से तेरे लोगों को घात करेगा और तेरे दृढ़ सैन्य स्थान, भूमि पर गिर जायेंगे। और वे तेरा धन लूटेंगे और तेरे ब्यापार को अहेर करेंगे और वे तेरी भीतें तोड़ डालेंगे और तेरे बांछित घरों को नष्ट करेंगे और तेरे पत्थर और लट्ठे और धूल जल के मध्य में डाल देंगे। और मैं तेरे गान का शब्द बन्द करोंगा और तेरी बीणा का शब्द फेर सुना न जयगा। और मैं तुझे एक पहाड़ की चोटी की नाईं करोंगा तू जाल

फैलाने के लिये होगा और तू फेर उठाया न जायगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मुझ परमेश्वर ने कहा है।

१५ प्रभु परमेश्वर सूर से यों कहता है कि जब घायल लोग रोवेंगे और तेरे मध्य में जूझ होगी तब क्या टापू तेरे गिरने १६ के शब्द से न थर्थरावेंगे?। तब समुद्र के अध्यक्ष अपने अपने सिंहासन से उतरेंगे और अपने अपने बागा को त्यागेंगे और अपने बूटेकाढे ऊए वस्त्र को उतारेंगे वे थर्थराहट को पहिनेंगे भूमि पर बैठ बैठ पल पल थर्थरावेंगे और तुझसे विस्मत होंगे। १७ और वे तेरे लिये एक विलाप करेंगे और तुझे कहेंगे कि हे समुद्रों के निवासी तू क्योंकर नष्ट ऊआ वुह बिदित नगर जो समुद्र में दृढ़ था वुह और उसके निवासी अपना भय अपने १८ सारे व्यवहारियों पर दिखाता है। तेरे गिरने के दिन टापू थर्थरावेंगे और समुद्र में के टापू तेरे जाने से व्याकुल होंगे। १९ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं तुझे अबसाव नगरों की नाईं एक उजाड़ नगर बनाओंगा और जब मैं गहिराव को २० तुझ पर लाओंगा और बड़े बड़े पानी तुझे ढांपेंगे। जब मैं तुझे पुरातन समय के लोगों की नाईं गड़हे का उतरवैयों के समान उतारोंगा और तुझे पृथिवी के नीच स्थानों में बैठाओंगा प्राचीन उजाड़ स्थानों में उनके संग जो गड़हे में उतरते हैं जिसतें तू बसाया न जाय और मैं जीवतों के देश में विभव २१ रक्खोंगा। तब मैं तुझे भय बनाओंगा और तू न होगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि यद्यपि तू ढूंढ़ा जाय तथापि तू कधी पाया न जायगा।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

सूर का धन और व्यापार १—२५ उनके नाश की भविष्य बाणी २६—३६ ।

१ फिर यह कहते ऊए परमेश्वर का वचन मुझ पर पऊंचा।

२ हे मनुष्य के पुत्र अब सूर के लिये बिलाप कर। और सूर से कह कि अरे तू जिसका ठिकाना समुद्र की पैठमें है और बहुत से टापुओं के लोगों के लिये ब्यापारी है प्रभु परमेश्वर कहता है कि अरे सूर तू ने कहा है कि मैं सुन्दरता में सिद्ध हों। तेरे सिवाने समुद्रों के मध्य में हैं और तेरे बनवैये ने तेरी सुन्दरता को पूरा किया है। उन्हों ने तेरी सारी पटियों को सीनर के देवदारु पेड़ से बनाईं हैं तेरे गुनरखे बनाने को उन्हों ने लबनान से आरज पेड़ लिया है। उन्हों ने तेरे डांड़ों को बाशान के आलोन पेड़ों से बनाया है और कितम के टापुओं से असूर की जथाओं ने हाथीदांत लाके तेरे बैठकों को बनाया है। तू ने अपने पाप के लिये मिसर से बूटा काढ़ा हुआ झीना बस्त्र फैलाया है और इलीशा के टापुओं से बैजनी और लाल बस्त्र में तुझे ढांपा है। सीदोन और अर्बद के निवासी तेरे डांड़ी थे और हे सूर तेरे बुद्धिमान जो तुझ में थे तेरे मांझी थे। गाबाल के प्राचीन और वहां के बुद्धिमान तेरे गहनकार थे तेरे ब्यापार के लिये समुद्र की सारी जहाजें डांड़ी सहित थीं। फारसी और लूदी और फूटी तेरी सेना में तेरे योद्धा थे उन्हों ने ढाल और टोप तुझ में लटकाया उन्हों ने तेरी सुन्दरता प्रगट किई। अर्बदी के लोग तेरी भीतों पर तेरी सेना के संग चारो ओर थे और गमादमी तेरे गुम्मटों पर थे वे चारो ओर तेरी भीतों पर अपनी ढाल लटकाते थे और उन्हों ने तेरी सुन्दरता को पूरा किया। समस्त रीति के धन की बहुताई के कारण तरशीश चांदी और लोहे और जस्ते से और शीशे से तेरे ब्यापारी थे और वे तेरी हाटों में ब्यापार करते थे। यवन और तूबल और मिशेक तेरे ब्यापारी थे वे मनुष्यों का और पीतल के पात्र का तेरी हाट में ब्यापार करते थे। तोगरमा के घराने तेरी हाटों में घोड़ों का और घोड़चढ़ों का और खच्चरों का ब्यापार करते थे। दीदान

के लोग तेरे व्यापारी थे बहुतसे टापू तेरे हाथ के व्यापार थे उन्हों ने तेरी भेंट के लिये हाथीदांत के सींग और आबनूस
१६ लाते थे। तेरे बनाये हुए कार्य्य के अधिकाई के मारे सुरिया तेरा व्यापारी था वुह तेरी हाट में पन्ना और बैंजनी और बूटा काढ़ा हुआ झीना वस्त्र और मूंगा और नीलम बेंचते लीनते
१७ थे। यहूदा और इसराईल के देश तेरे व्यापारी थे वे मिनीत का और पनग का गोहूं और मधु और तेल और धूना का
१८ तेरी हाट में व्यापार करते थे। सारे धन की बहुताई के लिये तेरी बनाई हुई सामग्री की अधिकाई में हलबून के दाख रस
१९ और श्वेत ऊन में दमिश्की तेरे बैपारी थे। आते जाते दान भी और यवन तेरी हाटों में व्यापार करते थे और तेरी हाटों में उजला लोहा और दारचीनी और बच थे।
२० रथों के लिये बहुमूल्य वस्त्र से दिदान तेरा व्यापारी था।
२१ अरब और किदार के सारे अध्यक्ष मेम्ने से और मेढ़े और बकरी से तेरे हाथों के व्यापार थे इन वस्तुन के वे तेरे लिये व्यापारी थे।
२२ शीबा और रामाह के व्यापारी तेरे व्यापारी थे वे सारे श्रेष्ठ द्रव्य और बहुमूल्य मणि और सोने से तेरी हाट में व्यापार
२३ करते थे। हारान और कनेह और यदेन और शीबा और
२४ असूर और किलमद के व्यापारी तेरे व्यापारी थे। ये लोग नील नीले परत में और बूटा काढ़े हुए में और आरज काष्ठ की मंजूषा में बहुमूल्य वस्त्र में डोरों से बंधी हुई तेरे
२५ व्यापार में वे व्यापारी थे। तेरी हाटों में तरसीश की जहाजें तेरा गान करती थीं तू भरा गया था और समुद्र के मध्य में बड़ा तेजवान हुआ है।

२६ तेरे डांड़ी तुझे गंभीर जलों में लाये हैं समुद्रों के मध्य में
२७ पूर्बी पवन ने तुझे तोड़ा है। तेरे धन और तेरी हाट और तेरे व्यापार और तेरे नाविक और तेरे मांझी और तेरे मरम्मतकार और तेरे व्यापारों के अधिकारी और तेरे योद्धा

जो तुझ में हैं और तेरी सारी जथावें जो तेरे मध्य में हैं तेरे
८ नाश्र के दिन में समुद्रों के बीच तुझ में गिरेंगे। तेरे मांझियों
९ के चिल्लाने के शब्द से लहरें हलरा मारेंगी। और सारे
डांड़ी और नाविक और समुद्र के सारे मांझी अपनी अपनी
१० जहाज़ों से उतर के भूमि पर खड़े होंगे। और तेरे बिरुद्ध
अपना शब्द सुनावेंगे और बिलख बिलख रोवेंगे और अपने
११ सिरों पर धूल उड़ावेंगे और आप राख पर लोटेंगे। और
वे तेरे लिये आप को सर्वथा मुंडा करेंगे और आप टाट बस्त्र
कसेंगे और वे तेरे लिये मन की कड़वाहट से बिलख बिलख रोवेंगे।
१२ और वे अपने बिलाप में तेरे लिये एक बिलाप उठा उठा
तुझ पर बिलाप करेंगे कि सूर के समान कौन समुद्र के मध्य में
१३ नष्ट ऊआ है। जब तेरी सामग्री समुद्र में से निकली तब तूने
बऊत लोगों को भर दिया तूने अपने धन की और ब्यापार की
१४ बऊताई से पृथिवी के राजाओं को धनी किया है। तू जिस
समय में समुद्र से जलों की गंभीरता में तोड़ीजायगी उस
समय तेरा ब्यापार और तेरी मध्य में की सारी जथा तुझ में
१५ गिरेंगी। टापूओं के सारे निवासी तुझसे आश्चर्य्यित होंगे और
उनके राजा बऊत डर जावेंगे और उनका रूप ब्याकुल
१६ होगा। लोगों में के ब्यापारी तुझ पर फुफकारेंगे और तू
भयानक होगा और फिर कधी न होगा।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

सूर के राजा पर ईश्वर का कोप १—१० उसके
लिये बिलाप होना ११—१९ सैदून के बिरुद्ध
भविष्य बाणी २०—२६।

फिर यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पास पऊंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र सूर के राजा से यों कह कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि अपने मन के उभाड़े जाने से तूने कहा है कि मैं

देव हों मैं हीं समुद्रों के मध्य में देव के आसन पर बैठा हों यद्यपि तू अपने मन को ईश्वर के मन के समान करे तथापि तू मनुष्य
२ है और ईश्वर नहीं। देख तू दानियाल से अधिक बुद्धिमान
४ और वे तुझसे कोई भेद छिपा नहीं सक्ते। तूने अपनी बुद्धि और समझ से धन प्राप्त किया है और सोना चांदी अपने
५ भंडार में प्राप्त किया है। तूने अपनी बड़ी बुद्धि से और अपने व्यापार से अपना धन बढ़ाया है और तेरे धन के कारण तेरा
६ मन उभाड़ा गया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है
७ कि तूने अपने मन को ईश्वर के मन के समान किया है। इस लिये देख मैं उपरियों को अर्थात् जातिगणों के भयंकरों को तुझ पर लाओंगा और वे तेरी बुद्धि की सुन्दरता के विरुद्ध
८ अपनी तलवार खींचेंगे और तेरी चमक अशुद्ध करेंगे। वे तुझे गड़हे में उतारेंगे और तू उनकी मृत्यु से मरेगा जो समुद्र
९ के मध्य में जूझे जाते हैं। क्या तू अपने घातक के आगे कहेगा कि मैं परमेश्वर हों? परन्तु तू अपने घातक के हाथ में मनुष्य
१० होगा और देव नहीं। तू उपरियों के हाथ से अख़तनों की मृत्यु मरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने कहा है।
११ फेर यह कहते ज़ए परमेश्वर का वचन मुझ पर
१२ पज़ंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र तू सूर के राजा के विषय में एक विलाप उठाके उसे कह कि प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू सब वस्तु की सिद्धता है बुद्धि की भरपूरी और सुन्दरता का अंत।
१३ ईश्वर के अदन की बारी में तू गया है हर एक मणि अर्थात् पद्मराग और पीरोज और हीरा और वैदूर्य और चंद्रकांत और नीलमणि और मरकत और पन्ना और गोमेद और सोना तेरा ओढ़ना था और तू जिस दिन सिरजा गया था उसी दिन तेरे तबले और बांसुरी के कार्य्यकारी तुझ में बनाये
१४ गये। तू अभिषिक्त ढंपवैया किरूब है और मैं ने तुझे यों किया है तू ईश्वर के पवित्र पर्वत के ऊपर था तू आग के पत्थरों के

१५ मध्य भ्रमता फिरता था। अपनी उत्पत्ति के दिन से अब लों
१६ तुझ में बुराई न पाई गई तू अपनी चालों में सिद्ध था। तेरे
व्यापार की बहुताई से उन्हों ने तेरे मध्य को अंधेर से भरा है
और तू ने पाप किया है इस लिये मैं तुझे ईश्वर के पर्वत में से
अशुद्ध की नाईं त्यागोंगा और अरे ढंपवैये किरूब मैं तुझे आग के
१७ पत्थर पर के मध्य में से नष्ट करोंगा। तेरी सुन्दरता के कारण
तेरा मन उभाड़ा गया है तू ने अपने तेज के लिये अपनी बुद्धि
को बिगाड़ा है मैं तुझे भूमि पर फेकोंगा मैं राजाओं के आगे
१८ तुझे धरोंगा जिसतें वे तुझे देखें। तू ने अपनी बुराई की
अधिकाई से और अपने व्यापार की बुराई से अपने पवित्र स्थानों
को अशुद्ध किया है इस लिये मैं तेरे मध्य में से एक आग
निकालोंगा जो तुझे भस्म करेगी और तेरे सारे देखवैये की
१९ दृष्टि में मैं तुझे भूमि पर राख करोंगा। लोगों में तेरे सारे
जानकार तुझ से आश्चर्यित होंगे तू भय होगा और फिर कधी
२० न होगा। यह कहते ऊए फिर परमेश्वर का बचन
२१ मुझ पास पऊंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र अपना रुख सीदून के
२२ बिरुद्ध कर और उसके बिरुद्ध भविष्य कह। और बोल कि प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि अरे सीदून देख मैं तेरे बिरुद्ध हों
और मैं तेरे मध्य में महिमा पाओंगा और जब मैं उस पर
दंड देके उसमें पवित्र माना जाओंगा तब वे जानेंगे कि मैं
२३ परमेश्वर हों। क्योंकि मैं उसमें मरी और उसके सड़कों में
लोहू भेजोंगा और उसके मध्य में घायल लोग चारो ओर
तलवार से बिचारे जायेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।
२४ और इसराईल के घराने के लिये चुभवैया कांटा न
रहेगा और उसके निन्दकों में उसकी चारो ओर उनके मध्य
में कोई दुःखदाई कांटा न रहेगा और वे जानेंगे कि मैं प्रभु
२५ परमेश्वर हों। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं इसराईल
के घराने को लोगों में से, जहां वे बिथरे हैं बटोरोंगा और

अन्यदेशियों की दृष्टि में पवित्र जाना जाओंगा तब वे अपने
२६ देश में रहेंगे जो मैं ने अपने दास याक़ूब को दिया है। और
वे उसमें चैन से रहेंगे और घर उठावेंगे और दाख की बारी
लगावेंगे जब मैं उनकी चारों ओर के निन्दकों पर न्याय दंड
देउंगा तब वे भरोसे से रहेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर
उनका ईश्वर हों।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब ।

फरऊन के और मिसर के नाश की भविष्य बाणी
१—७ चालीस बरस लों मिसर का उजाड़ रहना
८—१२ उसका स्थिर और तुच्छ राज्य होना
१३—१६ मिसर से नबूक़दनज़ार का प्रतिफल
पाना और इसराईल का लहलहाना १७—२१।

१ दसवें बरस के दसवें मास की बारहवीं तिथि में यह कहते हुए
२ परमेश्वर का बचन मुझ पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र मिसर के
राजा फरऊन के बिरुद्ध रुख कर और उसके बिरुद्ध और
३ सारे मिसर के बिरुद्ध भविष्य कह। और बोल कि प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि देख मिसर के राजा फरऊन मैं तेरे बिरुद्ध
हों तू महा अजगर जो अपनी नदियों के मध्य में रहता है जिसने
कहा है कि मेरी नदी मेरीही और मैं ने उसे अपनेही लिये
४ बनाया है। परन्तु मैं तेरे गलफर में कंटिया लगाओंगा
और तेरी नदियों की मछलियों को तेरी चोइयों में चिपकाओंगा
और तेरी नदी के मध्य में से तुझे निकालोंगा और तेरी
५ नदी की सारी मछलियां तेरी चोइयों में चिपकेंगी। और
अरण्य में मैं तुझे और तेरी नदी की सारी मछलियों को छोड़ोंगा
और तू खेतों पर गिरेगा और एकट्ठा न किया जायगा न
बटोरा जायगा मैं ने तुझे बन पशु को और आकाश के पंछियों
६ के अहार के लिये दिया है। और मिसर के सारे निवासी

जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों इस कारण कि वे इसराईल के घराने के लिये नरकट के एक दंड ऊए हैं। जब उन्हों ने तुझे हाथ से पकड़ा तब तू ने तोड़के उनके कांधों को फाड़ा और जब वे तुझ पर ओठंगे तब भी तू ने तोड़के सारी कटि को रोका।

८ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझ पर तलवार लाओंगा और तुझ में से मनुष्यों को और पशुन ९ को नष्ट करोंगा। मिसर देश उजाड़ और शून्य होजायगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों इस कारण कि उसने १० कहा कि नदी मेरी और मैं ने उसे बनाया है। देख इस लिये मैं तेरे विरुद्ध और तेरी नदियों के विरुद्ध और मैं मिसर देश को सियेनी के गुम्मट से कोश के सिवाने लों उजाड़ों का ११ उजाड़ करोंगा। किसी मनुष्य और किसी पशु का पांव उसमें से न जायगा और चालीस बरस लों उसमें कोई न बसेगा। १२ और मैं मिसर देश को उजाड़ देशों के मध्य में उजाड़ करोंगा और उसके नगर उजाड़ नगरों में और चालीस बरस लों उजाड़ रहेंगे और मैं मिसरियों को जातिगणों में बिथराओंगा १३ और उन्हें सारे देशों में छिन्न भिन्न करोंगा। तथापि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि चालीस बरस के अन्त में मैं मिसरियों को लोगों में से, जहां जहां वे छिन्न भिन्न ऊए एकट्ठे १४ करोंगा। और मैं मिसर की बंधुआई को फेर लाओंगा और उन्हें पतरोस देश में उनकी जन्म भूमि में फेर लाओंगा और वे १५ वहां एक तुच्छ राज्य होंगे। वुह राज्यों में सब से तुच्छ होगा और वुह आप को फेर देश गणों पर न उभाड़ेगा क्योंकि मैं उन्हें घटाओंगा और वे फेर जातिगणों पर प्रभुता न करेंगे। १६ जब वे उनके पीछे ताकेंगे तब वुह फेर इसराईल के घराने का भरोसा न होगा जो उनकी बुराइयों को चेत दिलाता है परन्तु वे जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हों।

१७ सत्ताईसवें बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में ऐसा

हुआ कि यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मुझ पर पहुंचा
१८ हे मनुष्य के पुत्र बाबुल के राजा नबूक़दनज़ार ने सूर के विरु
अपनी बड़ी सेना से बड़ी सेवा कराई और हरएक सि
मुंड़ा हुआ और हरएक कंधा छिल गया तथापि उसने और
उसकी सेना ने सूर के लिये अपने विरुद्ध की सेवा के लिये
१९ कुछ प्रतिफल न पाया। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि देख मैं बाबुल के राजा नबूक़दनज़ार को मिसर देश
देउंगा और वुह उसकी सारी मंडली को लेगा और उसकी
लूट को लूटेगा और उसके अहेर को अहेरेगा और वहीं
२० उसकी सेना का प्रतिफल होगा। प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि मैं उसके विरुद्ध उसकी सेना के लिये उसके प्रतिफल में
उसे मिसर देश देउंगा क्योंकि उसने मेरे लिये कार्य्य किया
२१ है। उस दिन मैं इसराईल के घराने के सींग को
उभाड़ेंगा और उनके मध्य में तेरा मुंह खोल देउंगा और
वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।

३० तीसवां पर्ब्ब।

मिसर का और उसके संगियों का उजाड़ होना
१—१९ रूम की भुजा का टूटना और नबूक़दनज़ार
का पोढ़ होना २०—२६।

१ यह कहते हुए फिर परमेश्वर का वचन मुझ पास पहुंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कहिके प्रचार कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि तुम चिल्ला चिल्ला कहो कि उस दिन पर संताप।
३ क्योंकि वुह दिन अर्थात परमेश्वर का दिन एक घटा का दिन
४ पास है वुह अन्यदेशियों का समय होगा। और तलवार
मिसर पर आवेगी और जब मिसर में ज़ूझे हुए गिरेंगे और वे
उसकी मंडली को ले जायेंगे और उसकी नेवें तोड़ी जायेंगी तब
५ कोश पर बड़ी पीड़ा होगी। और कोश और फूट और लिदिया

और सारे मिले जुले लोग और कूब और मिले ऊए देश के सन्तान उसके साथ तलवार से गिरेंगे। परमेश्वर यों कहता है कि जो मिसर को संभालते हैं सो भी गिरेंगे और उसके पराक्रम का अहंकार उतर आवेगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि वे मिगदूल से सयेनी लों तलवार से गिरेंगे। और वे उजाड़ देशों के मध्य में उजाड़ होंगे और उसके नगर उजाड़ नगरों के मध्य में होंगे। और जब मैं मिसर में आग लगाओंगा और उसके सारे उपकारी चूर होंगे तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों। उस दिन दूत मुझ में से जहाज़ों में निश्चिन्त कोशियों के डराने को निकलेंगे और उन पर मिसर के दिन के समान बड़ी पीड़ा पड़ेगी क्योंकि देख वुह आता है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं बाबुल के राजा नबूखदनज़ार के हाथ से मिसर की सारी मंडली को भी मिटा डालोंगा। वुह और जातिगणों के भयानक लोग उसके साथ देश नष्ट करने को पऊंचाये जायेंगे और वे मिसर के बिरुद्ध अपनी तलवार खींचेंगे और देश को जूझे ऊओं से भरदेंगे। और मैं नदियों को सुखाओंगा और दुष्टों के हाथ में देश बेचोंगा और मैं परदेशियों के हाथ से देश को और उसकी भरपूरी को उजाड़ोंगा मैंही परमेश्वर ने कहा है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं मूर्त्तिन को भी नष्ट करोंगा और नोफ में से मूर्त्तिन को मिटा डालोंगा और फेर मिसर देश का अध्यक्ष न होगा और मैं मिसर देश को डराओंगा। और मैं पथरूस को उजाड़ोंगा और सोआन में आग लगाओंगा और नो को दंड देउंगा। और मिसर के पराक्रम सीन पर अपना कोप उंडेलोंगा और नो की मंडली को काट डालोंगा। और मैं मिसर में आग लगाओंगा और सीन को बड़ी पीड़ा होगी और नो टुकड़ा टुकड़ा किया जायगा और नोफ को प्रतिदिन दुःख होगा। आवन के और पिबिसेथ के तरुण तलवार से गिरेंगे और ये बंधुआई में जायेंगे। जब मैं वहां

मिसर के जूओं को तोड़ोंगा और उसमें उसके बल का अन्त करोंगा तब तहफनहीज़ में भी दिन अंधियारा होगा और वुह जोहै एक मेघ उस पर छा जायगा और उसकी बेटियां बंधुआई
१९ में जायेंगी। इस रीति से मैं मिसर को दंड देउंगा और वे
२० जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों। और ग्यारहवें बरस के पहिले मास की सातवीं तिथि में ऐसा ऊआ कि
२१ परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए मुझ पर पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र मैं ने मिसर के राजा फरऊन की भुजा तोड़ी है और देख तलवार धरने के लिये उसे चंगी करके दृढ़ करने को
२२ उस पर पट्टी लपेट के बांधी न जायेगी। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं मिसर के राजा फरऊन के बिरुद्ध हों और उसकी बलवती और टूटी ऊई भुजा को तोड़ोंगा और
२३ उसके हाथ से तलवार गिरादेउंगा। और देशगणों में मैं मिसरियों को बिथराओंगा और देशों में छिन्न भिन्न करोंगा।
२४ और मैं बाबुल के राजा की भुजा को बलवती करोंगा और अपनी तलवार उसके हाथ में देउंगा परन्तु फरऊन की भुजा तोड़ोंगा और वुह उसके आगे माऱू घाव के कहरने से
२५ कहरेगा। परन्तु मैं बाबुल के राजा की भुजा को बलवती करोंगा और फरऊन की भुजा गिरपड़ेगी और जब मैं अपनी तलवार बाबुल के राजा के हाथ में देउंगा और वुह मिसर
२६ देश पर उसे बढ़ावेगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों। और मैं जातिगणों में मिसरियों को बिथराओंगा और उन्हें देशों में छिन्न भिन्न करोंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब ।

असूर के राजा का अहंकार और पतित होना १—१८।

१ और ग्यारहवें बरस के तीसरे मास की पहिली तिथि में ऐसा

हुआ कि परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मुझ पर पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र मिसर के राजा फरऊन को और उसकी मंडली को यह कह कि तू अपने महत्व में किसके समान है?। देख असूरी सुंदर डालें रखते हुए छायावान और लबनान का एक बड़ा आरज पेड़ था और उसकी फुनगी घनी डालों पर थी। पानियों ने उसे प्रतिपाला और गहिराव ने अपनी नदियों से उसके झाड़ों की चारो ओर फिरते हुए उसे पोसा और उसकी नालियां खेत के सारे पेड़ लों पहुंच गईं। इस लिये उसकी ऊंचाई खेत के सारे पेड़ों से बढ़ गई और उसकी डालियां फूट फूट के पानियों की बहुताई से लंबी लंबी हुईं। उसकी डालों पर आकाश के सारे पंछियों ने बसेरा किया और उसकी डालियों के तले चौगान के सारे बन पशु बच्चे जने और उसकी छाया तले बड़े बड़े जातिगण बसे। यहां लों कि उसकी डालियों की लंबाई में उसका महत्व सुन्दर था क्योंकि उसकी जड़ बड़े बड़े पानियों के लग थी। ईश्वर की बारी के आरज पेड़ उसे ढांप न सक्ते थे और देवदारु उसकी डालों की नाईं न थे और अरमून का पेड़ उसकी डालियों की नाईं न था उसकी सुन्दरता में ईश्वर की बारी का कोई पेड़ उसके तुल्य न था। मैं ने उसकी डाली की बहुताई से उसे सुन्दर किया यहां लों कि ईश्वर की बारी अदन के सारे पेड़ों ने उस्से डाह किया।

इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू ने ऊंचाई में आप को उभाड़ा है और उसने अपनी फुनगी घनी डालों में ऊपर किया और उसकी ऊंचाई में उसका मन उभड़ा है। इस लिये मैं ने उसे अन्यदेशी के एक पराक्रमी के हाथ में सौंपा है वुह निश्चय उस्से व्यवहार करेगा मैं ने उसको दुष्टता के लिये उसे दूर किया है। जातिगणों के भयंकर परदेशियों ने उसे काट के छोड़ दिया है पर्ब्बतों पर और सारी तराई में उसकी डालियां गिरी हैं और उसकी डालें देश की सारी नदियों के

लग टूटी हैं और पृथिवी के सारे लोग उसकी छाया तले से
१३ निकल गये और उसे छोड़ दिया। उसके उजाड़ पर आकाश
के सारे पंछी बसेंगे और सारे बनपशु उसकी डालियों पर रहेंगे।
१४ जिसतें जल के लग के सारे पेड़ों में कोई अपनी ऊंचाई के लिये
अहंकार न करे और अपनी फुनगी मोटी डालों में न उगावे
और उनके सारे पेड़ अपनी ऊंचाई पर न ठहरें जो पानी
सोखते हैं क्योंकि सब के सब पृथिवी के नीचे के स्थानों के लिये
उनके संग जो गड़हे में उतरते हैं मनुष्यों के संतान के मध्य में
१५ मृत्यु के लिये सौंपे गये। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस
दिन वुह समाधि में उतरा मैं ने विलाप करवाया मैं ने उसके
लिये गहिराव को ढांपा और उसके बाढ़ों को रोका और
बड़े बड़े पानी थम गये और मैं ने उसके लिये लबनान को
अंधियारा करवाया और उसके लिये चौगान के सारे पेड़
१६ मूर्छित हुए। जब मैं ने उसे उनके संग जो गड़हे में उतर
पड़ते हैं नरक में उतार दिया तब उसके गिरने के शब्द से मैं ने
जातिगणों को कंपवाया और अदन के सारे पेड़ लबनान के
अच्छे और चुने हुए सब जो पानी सोखते हैं पृथिवी के नीचे
१७ स्थानों में शान्ति पावेंगे। और वे भी उसके संग तलवार से
जूझे हुए कने नरक में उतर गये और उसकी बांह अन्यदेशियों
१८ के मध्य में उसकी छाया तले रहती थी। महात्म में और
प्रतिष्ठा में अदन के पेड़ों में से तू किस के तुल्य? तथापि अदन
के पेड़ों के संग तू पृथिवी के नीचे स्थानों में उतारा जायगा
और तू अख़तनों के मध्य में तलवार से जूझे हुओं के संग पड़ा
रहेगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि फरऊन और उसकी सारी
मंडली यह है।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

फरऊन और मिसर के पतित होने का बिलाप करना १—१० बाबुल के खड्ग से नाश होना ११—१६ अधम जातिगणों का नरक में पड़ना १७—३२।

बारहवें बरस के बारहवें मास की पहिली तिथि में परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मुझ पर पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र मिसर के राजा फरऊन के लिये एक बिलाप निकाल और उसे कह कि तू जातिगणों के एक तरुण सिंह की नाईं और समुद्र में के एक कुंभीर की नाईं तू अपनी नदियों से निकला है और अपने पांव से पानी हंडोला है और उनकी नदियों को गदला किया है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इसी लिये मैं बहुत से लोगों की जथा के संग अपना जाल तुझ पर फैलाओंगा और वे मेरे जाल में तुझे उठालेंगे। तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ेंगा मैं तुझे चौगान में फेंक देउंगा और तुझ पर सारे आकाश के पंछियों को रहने कराओंगा और मैं पृथिवी के सारे पशुन को तुझसे तृप्त करोंगा। और मैं तेरे मांस को पर्ब्बतों पर डालोंगा और तेरी ऊंचाई से तराई को भरदेउंगा। और जिस देश में तू पौंरता है उसे पहाड़ लों तेरे लोहू से सींचोंगा और नदियां तुझसे भर जायेंगी। और जब मैं तुझे बुझाऊंगा तब मैं स्वर्ग को ढांपोंगा और उसके तारों को अंधियारा करोंगा मैं मेघ से सूर्य्य को ढांपोंगा और चंद्रमा अपनी ज्योति न देगा। ईश्वर परमेश्वर कहता है कि मैं स्वर्ग की ज्योतिन की ज्योति को तुझ पर अंधियारी करोंगा और तेरे देश को अंधियारा करोंगा। और जब मैं तेरे बिनाश को जातिगणों में उन देशों में लाऊंगा जिन्हें तू ने नहीं जाना है तब मैं बहुत से लोगों को खिजाओंगा। हां मैं तुझसे बहुत से लोगों को अचंभित करोंगा और जब मैं अपनी तलवार उनके

आगे भांजोंगा तब उनके राजा तेरे लिये बज्जत डर जायें और वे तेरे गिरने के दिन हर एक जन अपने अपने प्राण
११ लिये पल पल थर्थरायेगा। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता
१२ कि बाबुल के राजा की तलवार तुझ पर आवेगी। वीरों व तलवारों से मैं तेरी मंडली अर्थात् देशगणों के सारे भयंक को गिरवाओंगा और वे मिसर का ऐश्वर्य्य लूटेंगे और उसव
१३ सारी मंडली नाश किई जायगी। मैं बड़े बड़े पानियों के त से उनके सारे पशुन को नष्ट करोंगा और मनुष्य का पांव औ
१४ पशुन का खुर उन्हें फेर न सतावेगा। प्रभु परमेश्वर यों कहत है कि तब मैं उनके पानियों को गहिरा करोंगा और उनव
१५ नदियों को तेल की नाई बहाओंगा। जब मैं मिसर देश के उजाड़ोंगा और देश अपनी भरपूरी से उजड़ जायगा औ जब मैं उसके सारे निवासियों को मारोंगा तब वे जानेंगे ि
१६ मैं परमेश्वर हों। इस बिलाप से वे उस पर बिलाप करें अन्यदेशियों की लड़कियां उसके विषय में विलाप करेंगी प्र परमेश्वर कहता है कि वे उसके लिये बिलाप करेंगी अर्था
१७ मिसर और उसकी मंडली के लिये। बारहे बरस के मास की पंदरहवीं तिथि में भी यों ज्ञआ कि परमेश्व
१८ का बचन यह कहते ज्ञए मुझ पर पज्ञंचा। हे मनुष्य के पु मिसर की मंडली के लिये बिलाप कर और उन्हें अर्थात् उ और विदित जातिगणों की लड़कियों को पृथिवी के नीचे
१९ स्थानों में जो गड़हे में उतरते हैं उतारोंगा। तू किस्से अधिव
२० सुंदर है? उतर जा और अखतनों के साथ पड़ा रह। तलवार से जूझे ज्ञओं के मध्य गिरेंगे वुह तलवार को सौंपा
२१ गया है उसे और उसकी सारी मंडलियों को खींचले। उसव सहायकों के साथ वीरों में का बलवंत नरक के मध्य में से उसे कहेगा वे उतर गये वे तलवार से जूझे ज्ञए अखतने पड़े हैं
२२ असूर और उसकी सारी जथा वहां है उसकी समाधि उसके

२३ आस पास सब के सब तलवार से जूझे पड़े हैं। जिनकी समाधियां गड़हे के अलंगों में हैं और उसकी जथा उसकी समाधि के चारो ओर है सब के सब तलवार से मारे हुए जूझे हैं
२४ जिन्हों ने जीवतों के देश को डराया। वहां ईलाम और उसकी सारी मंडली उसकी समाधिन की चारों ओर सब के सब तलवार से मारे हुए जूझगये जो पृथिवी के नीचे के स्थानों में अखतने उतर गये हैं जिन्हों ने जीवतों के देश को डराया तदभी उन्हों ने गड़हे में के उतरवैयों के संग अपनी लाज
२५ भोगी है। उन्हों ने जूझे हुओं के मध्य में उसकी सारी मंडली के साथ उसके लिये एक बिछौना धरा है उसकी समाधियां उसकी चारो ओर हैं वे सब अख़तनः तलवार से जूझे हुए हैं यद्यपि उनका भय जीवतों के देश में पड़ा तथापि उन्हों ने उनके साथ जो गड़हे में पड़ते हैं अपनी लाज भोगी वुह
२६ जूझे हुए के मध्य में रक्खा गया है। वहां मिशक और तूबल और उसकी सारी मंडली उसकी समाधियां उसकी चारो ओर सब के सब अख़तनः तलवार से जूझे हुए यद्यपि उन्हों ने
२७ जीवतों के देश को डराया है। और वे मारे हुए अख़तनः बीरों के साथ जो अपने संग्राम के हथियारों से जो नरक में उतर पड़े हैं पड़े न रहेंगे और उन्हों ने अपनी अपनी तलवार अपने अपने सिर तले रखी है परन्तु उनकी बुराई उनकी हड्डियों पर होगी यद्यपि वे जीवतों के देश में बीरों के भय थे।
२८ निश्चय तू अख़तनों के मध्य में तोड़ा जायगा और तलवार से
२९ जूझे हुओं के साथ पड़ा रहेगा। वहां अदूम और उसके राजा और उसके सारे अध्यक्ष जो अपने पराक्रम समेत तलवार से जूझे हुओं के लग रक्खे गये हैं वे अख़तनों के और गड़हों
३० के उतरवैयों के साथ पड़े रहेंगे। तहां उत्तर के सारे अध्यक्ष और सारे सीदूनी हैं जो जूझे हुओं के साथ उतर गये हैं अपने भय के साथ वे अपने पराक्रम से लज्जित हैं वे तलवार

से जूझे हुए अख़तनों के साथ पड़े हैं और वे गड़हे में के
३१ उतरवैयों के साथ लाज सहते हैं। प्रभु परमेश्वर कहता है कि
फरऊन उन्हें देखेगा और अपनी सारी मंडली पर शान्ति
पावेगा अर्थात् फरऊन और तलवार से जूझी हुई उसकी
३२ सारी सेना। क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि जीवतों के देश
को मैं ने डराया है और वुह अर्थात् फरऊन और उसकी
सारी मंडली तलवार से जूझे हुओं के साथ अख़तनों के मध्य
में डाले जायेंगे।

३३ तेंतीसवां पर्व्व ।

भविष्यद्वक्ता का उपदेश पाना १—९ लोगों से
ईश्वर का व्यवहार बताना १०—२० यिरोशलम
के नाश का समाचार पाना २१—२९ बचन के
सुनवैयों का कपट और लालच बतानी ३०—३३।

१।२ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मुझ पर पहुंचा। हे
मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के संतानों से कह और उनसे बोल
कि जब मैं किसी देश पर तलवार लाऊं तो यदि उस देश के
लोग अपने सिवानों के किसी मनुष्य को लेके अपना रखवाल
३ ठहरावें। तलवार को देश पर आते देख के यदि वुह तुरही
४ फूंक के लोगों को चितावे। तब जो सुनते हुए तुरही का शब्द सुने
और न चेते जो तलवार आवे और उसे ले जाय उसका लोहू
५ उसी के सिर पर होगा। उसने तुरही का शब्द सुन के न चेता
उसी का लोहू उसी पर होगा परन्तु जो चेतेगा सो अपना
६ प्राण बचावेगा। परन्तु यदि रखवाल उस तलवार को आते
देखे और तुरही न फूंके और लोग चिताये न जायें तब यदि
तलवार आवे और उनमें से किसी को लेजाय तो वुह अपनी
बुराई में उठाया गया परन्तु उसके लोहू का लेखा मैं
७ रखवाल के हाथ से लेउंगा। हे मनुष्य के पुत्र मैं ने तुझी को

इसराईल के घराने के कारण रखवाल ठहराया है इस लिये बचन मेरे मुंह से सुन और मेरी ओर से उन्हें चिता। जब मैं दुष्ट से कहों कि अरे दुष्ट तू अवश्य मरेगा यदि तू दुष्ट को उसकी दुष्ट चाल से उसे न चितावे तो वुह अपने अधर्म में मरेगा परन्तु मैं तेरे हाथ से उसके लोहू का लेखा लेउंगा। तिसपरभी यदि तू दुष्ट को उसकी चाल से फिरने को चितावे जो वुह अपनी चाल से न फिरे तो वुह अपने अधर्म में मरेगा परन्तु तूने अपने प्राण को बचाया है। इस लिये हे मनुष्य के पुत्र इसराईल के घराने से कह कि तुम लोग यह कहिके बोलते हो कि यदि हमारे अपराध और हमारे पाप हम पर होवें और हम उनमें गले जायें फेर हम क्योंकर जीयें?। उन्हें कह कि परमेश्वर ईश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सों दुष्टों की मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं परन्तु जिसतें दुष्ट अपनी चाल से फिरे और जीये हे इसराईल के घराने फिरो अपने कुमार्गों से फिरो तुम लोग किस लिये मरोगे?। इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के सन्तान से कह कि धर्मी का धर्म उसके अपराध के दिन में उसे न बचावेगा और दुष्ट की दुष्टता जो है जब वुह अपनी दुष्टता से फिरे वुह उसे न गिरेगा और पाप करने के दिन में धर्मी अपने धर्म से न जीयेगा। जब मैं धर्मी से कहों कि तू निश्चय जीयेगा यदि वुह अपनेही धर्म्म पर भरोसा रखके अधर्म करे तब उसका सारा धर्म स्मरण न किया जायगा परन्तु वुह अपने किये हुए अधर्म के लिये मरेगा। फेर जब मैं दुष्ट से कहों कि तू निश्चय मरेगा यदि वुह अपने पाप से फिरे और न्याय और धर्म्म करे। यदि दुष्ट बंधक फेर देवे और बटमारी की वस्तु फेर देवे और अधर्म न करके जीवन की विधिन को पालन करे तब वुह निश्चय जीयेगा और न मरेगा। उसके किये हुए पाप उसके आगे दुहराये न जायेंगे उसने धर्म्म और ठीक किया है वुह निश्चय जीयेगा। तथापि तेरे लोगों के सन्तान

कहते हैं कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं परन्तु वे जो हैं उनकी
१८ चाल सम नहीं। जब धर्म्मी अपने धर्म से फिर के अधर्म करे
१९ वुह उसीसे मरेगा। परन्तु यदि दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे
२० और धर्म्म और ठीक करे ते। वुह उसे जीयेगा। तथापि
तुम लोग कहतेहो कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं है
इसराईल के घराने मैं तुम्में से हरएक का उसकी चालों के
२१ समान विचार करेंगा। हमारी बंधुआई के
बारहवें बरस के दसवें मास की पांचवीं तिथि में यों ऊआ कि
यिरोश्लीम से बच के एक जन ने मुझ पास आके कहा कि
२२ नगर मारा गया है। जो बच निकला था उसके आने से
पहिले सांझ को परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और
जबतांईं वुह बिहान को मुझ पास आया मेरे मुंह को खोला
२३ और मेरा मुंह खोला गया और मैं आगे गूंगा न रहा। तब
२४ परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए मुझ पर पऊंचा। हे
मनुष्य के पुत्र इसराईल देश के उजाड़ों के निवासी कहते हैं
कि इबराहीम एकही था और उसने देश का अधिकार पाया
परन्तु हम बऊत हैं और अधिकार के लिये देश हमें दिया
२५ गया है। इसलिये उन्हें कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि तुम लोग लोहू समेत खाते हो और अपनी मूर्त्तिन की
ओर आंखें उठा के लोहू बहाते हो और क्या तुम लोग
२६ देश के अधिकारी होओगे। तुम अपनी अपनी तलवार पर
खड़े होके घिनित कार्य्य करते हो और तुम्में से हरएक जन
अपने अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध करता है और क्या
२७ तुम लोग देश के अधिकारी होओगे। तू उन्हें यों कह कि
प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सों जो उजाड़ों में हैं
सो तलवार से मारे पड़ेंगे और जो चैागान में हैं उन्हें भक्षने
के लिये पशुन को देउंगा और जो लोग गढ़ और खोह में
२८ होवें सो मरी से मरेंगे। क्योंकि मैं देश को उजाड़ों वा

उजाड़ करोंगा और उसके बल का बिभव मिटाया जायगा और इसराईल के पहाड़ उजाड़ होंगे कि कोई उसमें से न जायगा। जब मैं उनके किये हुए सारे घिनितों के कारण उनके देश को अति उजाड़ करोंगा तब वे मुझ परमेश्वर को जानेंगे। हे मनुष्य के पुत्र तेरे लोगों के सन्तान भीतों के लग और घरों के द्वारों पर अब भी तेरे बिरुद्ध कहि रहे हैं और हरएक आपुस में अपने अपने भाई को कहता है कि मैं बिनती करता हों कि चलो परमेश्वर से निकले हुए बचन को सुनें। और लोगों के आने के समान वे तुझ पास आते हैं और मेरे लोगों की नाईं तुम्हारे आगे बैठते हैं और तेरी बातें सुनते हैं परन्तु वे न मानेंगे क्योंकि वे अपने मुंह से प्रेम दिखाते हैं परन्तु उनके मन उनके लोभ के पीछे चलते हैं। और देख तू उनके लिये अति प्रियगान के समान है जिसका प्रेमों का गान है और अच्छी रीति से बजा सक्ता है क्योंकि वे तेरे बचन सुनते हैं परन्तु उन्हें नहीं मानते। और जब यह आवेगा (देखो आवेगा) तब वे जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता उनमें हुआ है।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

इसराईल के गड़रियों का दपटा जाना १—१० परमेश्वर का गड़रिया होने की बाचा ११—१६ जिसतें अंधेरकों को दंड देवे और दुःखियों को छुड़ावे १७—२२ मसीह के राज्य की भविष्य बाणी २३—३१।

तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मुझ पर पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र तू इसराईल के गड़रियों के बिरुद्ध भविष्य कह और उनके आगे भविष्य प्रचार परमेश्वर ईश्वर गड़रियों को यों कहता है कि इसराईल के गड़रियों पर सन्ताप जो आप

३ खाते हैं क्या गड़रियों को झुंड चराना न चाहिये?। तुम लोग चिकनाई खाते हो और रोम ओढ़ते हो और पले
४ ऊए को घात करते हो परन्तु झुंड को नहीं चराते। तुम लोगों ने दुर्बल को बल नहीं दिया है और न रोगियों को चंगा किया न टूटों पर पट्टी बांधी न खेदे ऊए को फेर लाये न खोये ऊओं को ढूंढा परन्तु बरबस्ती से और क्रूरता से उनपर
५ प्रभुता किई। और बिन गड़रिये वे छिन्न भिन्न ऊए और
६ छिन्न भिन्न होके वे सारे बन पशुन के आहार ऊए। मेरी भेड़ें सारे पर्वतों पर और हरएक ऊंची पहाड़ी पर भटक गईं हां मेरी झुंड सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न ऊई और
७ किसी ने उन्हें न खोजा न ढूंढा। इस लिये हे
८ गड़रियो परमेश्वर का बचन सुनो। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सों गड़रिया न होने के कारण मेरी झुंड अहेर ऊई और झुंड हरएक बन पशु के लिये आहार ऊआ और मेरे गड़रियों ने मेरी झुंड की खोज न किई परन्तु गड़रियों ने
९ आप आप खाया परन्तु झुंड को न चराया। इस लिये हे
१० गड़रियो परमेश्वर का बचन सुनो। प्रभु परमेश्वर यों कहता है देख मैं गड़रियों के बिरुद्ध हों और उनके हाथों से अपनी झुंड का लेखा लेउंगा और अपनी झुंड उनसे न चरवाओंगा और फेर गड़रिये आप न खायेंगे क्योंकि मैं अपनी झुंड को उनके मुंह से छुड़ाऊंगा जिसतें उनका भोजन न होवें।
११ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं हीं अपनी भेड़ों
१२ को ढूंढ़के उन्हें खोज लेऊंगा। छिन्न भिन्न भेड़ों में होने के दिन झुंड के गड़रिये के खोजने के समान मैं अपनी भेड़ों को खोजोंगा और उन्हें सारे स्थानों से जहां जहां अंधियारे और मेघ के दिन में छिन्न भिन्न ऊई हैं तैसा मैं खोज खोज के छुड़ा
१३ ओंगा। और मैं लोगों में से उन्हें निकाल लाऊंगा और देशों में से उन्हें बटोरोंगा और उन्हें उन्होंके देश में लाओंगा

और उन्हें नदी के तीर इसराईल के पर्वतों पर और देश के
१४ सारे निवास स्थानों में चराओंगा। मैं उन्हें अच्छी चराई में
चराओंगा और इसराईल के ऊंचे पर्व्वतों पर उनका बाड़ा
होगा वे वहां अच्छे बाड़े में लेटेंगे और इसराईल के पहाड़ों
१५ पर पुष्ट चराई में चरेंगे। प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं
१६ अपनी झुंड को चराओंगा और उन्हें चैन दिलाओंगा। मैं
खोये हुओं को ढूढ़ोंगा और खदेड़े हुओं को फेर लाओंगा टूटे
हुए पर पट्टी बांधोंगा और रोगियों को बलवान करोंगा
परन्तु दुष्टों और बलवानों को नाश करोंगा मैं उन्हें न्याय से
१७ चराओंगा। और तू हे मेरी झुंड प्रभु परमेश्वर यों कहता है
देख मैं पशु पशु में और मेढ़ों और बकरों में न्याय करता हों।
१८ अच्छी चराई को चरलेना और अपनी रही हुई चराई को
पांव से रौंदडालना और गहिरे पानियों को पीना और रहे
हुए को गदला करना क्या तुम्हारे लिये सहज है?। परन्तु
१९ जो तुमने अपने पाओं से रौंदा है सो मेरी झुंड खाती हैं और
जो तुमने अपने पाओं से गदला किया है सो पीती हैं।

२० इस लिये प्रभु परमेश्वर उन्हें यों कहता है कि देख मैंहीं मोटे
२१ और डांगर पशुन म न्याय करोंगा। क्योंकि तुमने कटि से और
कांधे से ठेला है और अपने सींगों से सारे रोगियों को मार
२२ मार उन्हें छिन्न भिन्न किया है। इस कारण मैं अपनी झुंड को
बचाओंगा और वे फेर अहेर न होंगे मैं पशु और पशु के मध्यमें
२३ न्याय करोंगा। और मैं उन पर एक गड़रिया ठहराओंगा
और वुह उन्हें चरावेगा अर्थात मेरा सेवक दाऊद वही उन्हें
२४ चरावेगा और वुह उनका गड़रिया होगा। और मैं परमेश्वर
उनका ईश्वर होऊंगा और मेरा दास दाऊद उनमें अध्यक्ष
२५ होगा मुझ परमेश्वर ने कहा है। और मैं उनसे एक कुशल का
नियम बांधोंगा और क्रूर पशुन को देश से दूर कराओंगा और
२६ वे बन में चैन से रहेंगे और जंगल में सोयेंगे। और मैं उन्हें

अपने पहाड़ की चारों ओर के स्थानों को आशीष करोंगा और रितु में मैं बरसाओंगा वहां आशीषों की दृष्टि होगी।
२७ खेतों के पेड़ अपने फल फलेंगे और पृथिवी अपनी बढ़ती देगी और वे अपने देश में चैन से बसेंगे और जब मैं उनके जूए के बंधनों को तोड़ोंगा और उनके हाथ से, जिन्हों ने अपनी सेवा उनसे करवाई है उन्हें छुड़ाओंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर
२८ हों। और वे फेर अन्यदेशियों के अहेर न होंगे और बन पशु भी उन्हें फेर न भखेंगे परन्तु वे चैन से रहेंगे और कोई उन्हें
२९ न डरावेगा। और मैं उनके लिये एक कीर्तिमान पेड़ उगाओंगा और वे देश में भूख से फेर छीण न होंगे और फेर अन्यदेशियों
३० से लाज न उठावेंगे। प्रभु परमेश्वर यों कहता है यों वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उनका ईश्वर उनके संग हूं और वे अर्थात
३१ इसराईल के घराने मेरे लोग हैं। और प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम मेरी झुंड मेरी चराई की झुंड मनुष्य हो और मैं तुम्हारा ईश्वर।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब

अदूमियों का विरुद्ध वचन १—१५।

१।२ यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मुझ पर पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र सईर पहाड़ के विरुद्ध अपना रुख कर और उसके
३ विरुद्ध भविष्य कह। और उसे बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख हे सईर पहाड़ मैं तेरे विरुद्ध हों और मैं अपना हाथ तेरे विरोध में बढ़ाओंगा और तुझे उजाड़ का
४ उजाड़ करोंगा। और मैं तेरे नगरों को उजाड़ोंगा और तू खंडहर हो जायगा और तू जानेगा कि मैंहीं परमेश्वर हों।
५ इस कारण कि तू ने नित बैर रक्खा है और इसराईल को विपत्ति के समय में जब कि उनकी बुराई हो चुकी तू ने उनके
६ बालकों के लोहू को तलवार की धार से बहाया है। इस लिये

प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों मैं तुझे लोहू के लिये सिद्ध करोंगा और लोहू तेरे पीछे पड़ेगा तू लोहू बहाने से नहीं घिनाया है इसी कारण लोहू तेरे पीछे पड़ेगा। इस रीति से मैं सईर पर्ब्बत को उजाड़ों का उजाड़ करोंगा और उसमें से जो बाहर भीतर आता जाता है उसे मिटा डालोंगा। और उसके पर्ब्बतों को मैं उसके जूझे हुओं से भर देउंगा तलवार से जूझे हुए तेरे सारे पहाड़ों में और तेरी तराइयों में और तेरी सारी नदियों में पड़ेंगे। मैं तुझे नित का उजाड़ करोंगा और तेरे नगर न फिरेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हों। यद्यपि परमेश्वर वहां था और तू ने कहा है कि ये दोनों जातिगण और यह दोनों देश मेरे होंगे और हम उसे बश में करेंगे। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सों तेरी रिस के समान और तेरे डाह के समान जो तू ने उनके विरुद्ध किया है मैं करोंगा और तेरा विचार करने के पीछे मैं उनमें आप को जनाऊंगा। और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हों मैं ने तेरी सारी अपनिन्दा जो तू ने इसराईल के पर्ब्बतों के विरुद्ध यह कहिके कही है कि वे उजाड़ पड़े हैं वे हमारे भक्षण के लिये हमें दिये गये हैं। इस रीति से तुमने अपने मुंह से मेरे विरुद्ध आप को बढ़ाया है और मेरे बिपरीत अपनी बात बढ़ाई है मैं ने सुना है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है जब सारी पृथिवी आनन्द करेगी मैं तुझे उजाड़ करोंगा। जैसा तू ने इसराईल के घराने के अधिकार के उजाड़ होने के कारण आनन्द किया है तैसा मैं तुझे करोंगा हे सईर पर्ब्बत तू और सारा अदूम उजाड़ होगा अर्थात उसका सब कुछ और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब।

अन्यदेशियों का दपटा जाना १—७ इसराईल के पर्ब्बतों पर आशीष होना ८—१५ इसराईल के बचाने की बाचा १६—२४ बहुत से आशीषों की भविष्य बाणी २५—३८।

१ हे मनुष्य के पुत्र तू इसराईल के पर्ब्बतों को भी भविष्य कहि बोल और कह कि हे इसराईल के पर्ब्बतो परमेश्वर का बच
२ सुनो। प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि बैरियों तुम्हारे बिरुद्ध कहा है अहा अर्थात पुराने ऊंचे स्थान हमा
३ बश में हुए हैं। इस लिये भविष्य कहिके बोल कि प्र परमेश्वर यों कहता है कि जिसतें तुम लोग बचे हुए अन्यदेशिय के अधिकार हो जाओ और बड़ बड़ियों की कथनी हो औ लोगों के अपयश और इस कारण कि उन्हों ने तुझे उजाड़ा है औ
४ तुम्हें चारो ओर निंगलगये हैं। इस कारण हे इसराईल के पर्ब्बत प्रभु परमेश्वर का बचन सुनो प्रभु परमेश्वर पहाड़ों को और टीलों को और नदियों को और तराइयों को और उजड़ खंड़हरों को और त्यक्त नगरों को जो चारो ओर के बचे हुए अन्यदेशियों के लिये एक अहेर और ठट्ठा हुए हैं यों कहता है।
५ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि निश्चय मैं ने अपनी झल की आग से बचे हुए अन्यदेशियों के बिरुद्ध और सारे अदूमियों के बिरुद्ध जिन्हों ने अपने सारे अन्तःकरण के आनन्द से अहेर के लिये मन के बैर से मेरे देश को अपने बश के लिये
६ ठहराया है। इस लिये इसराईल के देश के विषय में भविष्य कह और पर्ब्बतों को और टीलों को और नदियों को और तराइयों को कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम ने अन्यदेशियों की लाज सही है देख मैं ने अपनी
७ झल में और अपने कोप में कहा है। इस लिये प्रभु परमेश्वर

यों कहता है कि मैं ने अपना हाथ उठाया है निश्चय चारो ओर के अन्यदेशी अपनी लाज सहेंगे। परन्तु हे इसराईल के पर्ब्बतो तुम अपनी डालियां निकालोगे और मेरे इसराईल लोगों के निमित्त अपना फल फलोगे क्योंकि आने में वे पास हैं। इस लिये देखो मैं तुम्हारे लिये हों और तुम्हारी ओर फिरोंगा और तुम लोग जोते बोये जाओगे। और मैं तुम पर मनुष्यों को अर्थात् इसराईल के सारे घराने को बढ़ाओंगा अर्थात् सभों को और नगर बसाये जायेंगे और खंडहर बनाये जायेंगे। और मैं तुम्में मनुष्य को और पशुन को बढ़ाओंगा वे बढ़ के फल लावेंगे और मैं तुम्हें अगिले समय की नाईं स्थिर करोंगा और आरंभ से अधिक तुम्हारी भलाई करोंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हों। निश्चय मैं तुम पर मनुष्यों को अर्थात् अपने इसराईल लोगों को चलाओंगा और वे तुझे अपना अधिकार करेंगे और तू उनका अधिकार होगा और फेर उन्हें मनुष्य रहित न करेगा। प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि वे तुम्हें कहते हैं कि तू ने मनुष्यों को भक्षा है और अपने जातिगण रहित किया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू मनुष्यों को फेर न भक्षेगा और अपने जातिगणों को फेर क्षीण न करेगा। प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुझ में अन्यदेशियों की लाज को फेर न सुनाओंगा और तू फेर लोगों की निन्दा न सहेगा और फिर अपने जातिगणों को पतित न करावेगा। फेर परमेश्वर का वचन यह कहते ऊए मुझ पास पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र जब इसराईल के घराने अपनेही देश में रहते थे तब उन्हों ने अपनीही चाल से और अपनी क्रिया से उसे अशुद्ध किया उनकी चाल मेरे आगे अलग किई गई स्त्री की अशुद्धता की नाईं थी। देश में उनके लोहू बहाने और अपनी मूर्त्तिन से उसे अशुद्ध करने के लिये मैं ने अपना कोप उनपर उंडेला। और मैं नें उन्हें

अन्यदेशियों में छिन्न भिन्न किया और वे देशों में सर्वत्र बिथराये गये मैं ने उनकी चाल के समान और उनकी क्रिया के तुल्य
२० उनका बिचार किया। और जब उन्हों ने अन्यदेशियों में प्रवेश किया जहां जहां वे गये, उन्हों ने मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध किया जब उन्हों ने उन्हें कहा कि ये परमेश्वर के लोग और
२१ उसके देश से निकल गये। परन्तु मैं ने अपने पवित्र नाम के लिये उन पर मया किई जिसे इसराईल के घराने ने
२२ अन्यदेशियों में जा जा अशुद्ध किया था। इस लिये इसराईल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराईल के घराने मैं तुम्हारे कारण यह नहीं करता परन्तु अपने पवित्र नाम के लिये जो तुम ने अन्यदेशियों में जा जा
२३ अशुद्ध किया। और मैं अपने महत नाम को पवित्र करोंगा जो अन्यदेशियों में अशुद्ध किया गया जो तुम्हों ने उनके मध्य में अशुद्ध किया प्रभु परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुम्में उनकी आंखों के आगे पवित्र किया जाओंगा अन्यदेशी जानेंगे कि
२४ मैं ही परमेश्वर हों। क्योंकि मैं तुम्हें अन्यदेशियों के मध्य में से लाओंगा और सारे देशों में से तुम्हें एकट्ठा करोंगा और
२५ तुम्हें तुम्हारे ही देश में लाओंगा। तब मैं निर्मल जल तुम पर छिड़कोंगा और तुम लोग पवित्र हो जाओगे और मैं तुम्हारी सारी मलीनता से और तुम्हारी सारी मूर्त्तिन
२६ से तुम्हें पवित्र करोंगा। और मैं तुम्हें एक नया मन भी देउंगा और एक नया आत्मा तुम्हों में रक्खोंगा और तुम्हारे मांस में से मैं पत्थरैला मन निकाल लेउंगा और तुम्हें मांस
२७ का मन देउंगा। और मैं अपना आत्मा तुम्में देउंगा और तुम्हें अपनी बिधिन पर चलाओंगा और तुम मेरे न्याये
२८ को पालन करोगे और उन्हें मानोगे। और जो देश मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया तुम उस में रहोगे और मेरे लोग
२९ होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर होंगा। मैं तुम्हें अशुद्धता से

बचाओंगा और अन्न को बुलाओंगा और उसे बढ़ाओंगा और
३० तुम पर अकाल न धरोंगा। और पेड़ का फल और खेत की बढ़ती
को बढ़ाओंगा जिसतें तुम लोग अन्यदेशियों में फिर अकाल की
३१ निन्दा न पाओगे। तब तुम लोग अपनी अपनी बुरी चालों को
और अपनी कुक्रिया को स्मरण करोगे और अपनीही दृष्टि में
अपनी बुराई और अपनी घिनितों के लिये आप को घिनाओगे।
३२ प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम्हें जान पड़े कि मैं तुम्हारे कारण यह
नहीं करता हों हे इसराईल के घराने तुम अपनी अपनी चाल के
३३ लिये लज्जित होके घबरा जाओ। प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि जिस दिन मैं तुम्हारी सारी बुराइयों से तुम्हें पवित्र किये
होंगा मैं तुम्हें नगरों में भी बसाओंगा और खंडहर बनाय
३४ जायेंगे। और उजाड़ देश जोते जायेंगे यद्यपि सारे जवैयों
३५ की दृष्टि में उजाड़ पड़ा था। और वे कहेंगे, कि यह देश जो
उजाड़ था अदन की बारी की नाईं ऊआ है और खंडहर और
३६ उजाड़ और नष्ट नगर घेरे ऊए और बसे ऊए हैं। तब
अन्यदेशी, जो तुम्हारी चारों ओर छोड़े गये हैं जानेंगे कि मैं
परमेश्वर खंडहरों को बनाता हों और उजाड़ों को बोता हों
३७ मुझ परमेश्वर ने कहा है और करोंगा। प्रभु परमेश्वर यों
कहता है तथापि उनके लिये यह करने को मैं इसराईल के घराने
से खोजा जाऊंगा झुंड की नाईं मैं उन्हें मनुष्यों से बढ़ाओंगा।
३८ जैसा पवित्र बस्तु की झुंड अर्थात् उसके बड़े पर्व्वों में यिरोशलीम
की झुंड की नाईं तैसा उजाड़ नगर मनुष्यों की झुंड से भर
जायेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।

३७ सैंतीसवां पर्व्व।

हड्डियों के जी उठने की दर्शन १—१४ यहूदा और
इसराईल के मिल जाने की भविष्यवाणी १५—२२
मसीह के राज्य की भविष्यवाणी २३—२८।

१ परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे परमेश्वर के आत्म
में बाहर ले गया और मुझे एक तराई के मध्य में उतार दिय
२ जो हड्डियों से भरी थी। और मुझे उनके पास पास चारो
ओर फिराया और क्या देखता हों कि खुले चैागान में
३ अति बहुत हैं और लो वे बहुत सूखी थीं। और उसने मुझे
कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या ये हड्डियां जी सक्ती हैं? तब मैंने
४ उत्तर दिया कि हे प्रभु परमेश्वर तू जानता है। फिर उसने
मुझे कहा कि इन हड्डियों से भविष्य कह और उन्हें बोल कि
५ हे सूखी हड्डियो परमेश्वर का वचन सुनो। प्रभु परमेश्वर इन
हड्डियों से कहता है कि देखो मैं तुम्हों में खास प्रवेश कराओंगा
६ और तुम जीओगी। और मैं तुम पर नस लाओंगा और
तुम पर मांस उभाड़ोंगा और तुम्हें चाम से ढांपोंगा और तुम्में
खास डालोंगा और तुम जीओगी और तुम जानोगी कि मैं
७ परमेश्वर हों। सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और
मेरे भविष्य कहतेही शब्द हुआ और क्या देखता हों कि
हड़हड़ाहट और हड्डियां एकट्ठी आईं हड्डी अपनी ह[illegible]ी के पास।
८ और देखतेही क्या देखता हों नस और मांस उन पर आये
और चाम ने उन्हें ऊपर से ढांपा परन्तु उनमें खास न था।
९ तब उसने मुझे कहा कि पवन से भविष्य कह हे मनुष्य के पुत्र
भविष्य प्रचार और पवन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि हे खास चारो पवनों से आ और इन जूझे हुओं पर बह
१० जिसतें वे जीयें। सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और
खास उनमें आया और वे जीये और एक अति बड़ी सेना
११ अपने पांव पर उठ खड़ी हुई। तब उसने मुझे कहा कि
हे मनुष्य के पुत्र ये हड्डियां इसराईल के सारे घराने हैं देखो वे
कहते हैं कि हमारी हड्डियां झुरा गईं और आशा जाती
१२ रही हम अपने अपने ठिकाने से कट गये। इस लिये भविष्य
प्रचार और उन्हें कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे

मेरे लोगो देखो मैं तुम्हारी समाधिन को खोलोंगा और तुम्हारी समाधि से तुम्हें बाहर निकलवाओंगा और तुम्हें इसराईल के देश
३ में लाओंगा। और हे मेरे लोगो जब मैं ने तुम्हारी समाधि खोली है और तुम्हें तुम्हारी सामधिन से निकाल लाया हों
४ तब तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हों। और मैं अपना आत्मा तुझें डालोंगा और तुम जीओगे और मैं तुम्हें तुम्हारेही देश में बसाओंगा परमेश्वर कहता है कि तब तुम जानोगे कि
५ मुझ परमेश्वर ने कहा और पूरा किया है। फिर यह
६ कहते हुए परमेश्वर का वचन मुझ पर पहुंचा,। हे मनुष्य के पुत्र एक लकड़ी ले और यहूदा के लिये और उसके संगी इसराईल के सन्तानों के लिये उस पर लिख तब दूसरी लकड़ी ले और यूसफ के निमित्त इफराईम की लकड़ी और उसके
७ संगी सारे इसराईल के घराने के लिये लिख। और आपुस में उन्हें जोड़ के एक लकड़ी कर और वे तेरे हाथ में एक हो
८ जायेंगी। जब तेरे लोगों के सन्तान तुझे यह कहिके
९ बोलें कि तू इसका अर्थ हमें न बतावेगा?। तब उन्हें कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं यूसफ की लकड़ी को, जो इफराईम के हाथ में है लेउंगा और उसके संगी इसराईल की गोष्ठियों को भी लेउंगा और उन्हें उसके साथ अर्थात् यहूदा की लकड़ी के साथ रक्खोंगा और उन्हें एक लकड़ी बनाओंगा
१० और वे मेरे हाथ में एक होंगी। और तू जिन लकड़ियों पर लिखेगा सो उनकी आंखों के आगे तेरे हाथ में होंगी।
११ उन्हें कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इसराईल के सन्तानों को अन्यदेशियों में से, जिधर वे गये हैं लेउंगा और उन्हें हरएक ओर से बटोरोंगा और उन्हें उन्हीं के देश में लाओंगा।
१२ और मैं उन्हें इसराईल के देश के पर्ब्बतों पर एक जाति बनाओंगा और एक राजा उन सभों पर राजा होगा और वे फेर दो जातिगण न होंगे और वे फेर कभी दो राज्य में

२३ होके विभाग न होंगे। फेर वे अपनी मूर्त्तिन से और अपनी घिनित वस्तुन से, और अपने अपराधों से आप को अशुद्ध न करेंगे परन्तु मैं उन्हें उनके सारे निवासों में से, जिन उन्हों ने पाप किया है उन्हें छुड़ाओंगा और उन्हें पवित्र करोंगा
२४ सो वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका ईश्वर होंगा। और मेरा दास दाऊद उन पर राजा होगा और उनसभों का एक गड़रिया होगा और वे मेरे न्यायों पर चलेंगे और मेरे
२५ विधिन को मानेंगे और पालेंगे। और वे उस देश में बसेंगे जो मैं ने अपने दास याकूब को दिया है जिसमें तुम्हारे पितरों ने बास किया और वे और उनके सन्तान और सन्तानों के सन्तान सर्वदा उसमें बास करेंगे और मेरा दास
२६ दाऊद सदा के लिये उनका राजा होगा। उसे अधिक मैं उनसे एक कुशल का नियम बांधोंगा और वुह उनसे एक सनातन का नियम होगा और मैं उन्हें बसाओंगा और बढ़ाओंगा और सर्वदा अपना पवित्र स्थान उनके मध्य में
२७ रक्खोंगा। मेरा तंबू भी उनके मध्य में होगा हां मैं उनका
२८ ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे। और जब मेरा पवित्र स्थान सर्वदा उनके मध्य में होगा तब अन्यदेशी जानेंगे कि मैंहीं परमेश्वर इसराईल को पवित्र करता हों।

३८ अठतीसवां पर्व्व।

जूज माजूज का समाचार १—१७ ईश्वर के महा पराक्रम से उनका नाश होना १८—२३।

१।२ यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा। हे मनुष्य के पुत्र मिशेक और तूबाल के प्रधान अध्यक्ष माजूज के देश के
३ जूज के विरुद्ध रुख कर और उसके विरुद्ध भविष्य कह। और बोल कि प्रभु परमेश्वर कहता है कि हे मिशेक और तूबाल के
४ प्रधान अध्यक्ष जूज देख मैं तेरे विरुद्ध हों। और मैं तुझे हटाओंगा

और तेरी डाढ़ोंमें कंटिया लगाओंगा और मैं तुझे और तेरी सारी सेना को घोड़ों और घोड़चढ़ों को सब के सब सारे प्रकार से बिभूषित अर्थात् एकबड़ी जथा ढाल और फरी के साथ सब के सब खड़्गधारी निकाल लाओंगा। फारस और कोश और लिबिया उनके साथ सब के सब ढाल और टोप लिये ऊए। गोमर और उसकी सारी जथाओं को और उत्तर दिशा से तजरमा के घराने और उसकी सारी जथा और तेरे साथ बऊत से लोग तू लैस रह और अपने लिये और अपनी सारी जथा, जो तेरे पास बटुरी हैं लैस हो और तू उनके लिये पहरा हो। बऊत दिन के पीछे तू दंड पाचुकेगा और तलवार से फेर लिये गये और बऊत से लोगों में से बटोरेगये देश में इसराईल के पर्ब्बतों के बिरुद्ध जो सदा उजड़ ऊए हैं तू पिछले बरसों में आवेगा परन्तु वुह जातिगणों से निकाला ऊआ है और वे सब के सब चैन से रहेंगे। तू उर्द्धगमन कर के आंधी की नाईं आवेगा देश को छा लेने के लिये तू और तेरी सारी जथा और तेरे संग बऊत से लोग मेघ की नाईं होंगे। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि ऐसा भी होगा कि उसी समय में बऊतसी चिन्ता तेरे मन में आवेंगी और तू कुचिंता करेगा। और तू कहेगा कि मैं भीत रहित देश के गांओं में चढ़ जाओंगा मैं उन पास जाओंगा जो चैन से हैं और भरोसे से रहते हैं सब के सबभीत रहित बसते हैं और न अड़ंगे न फाटक रखते हैं। लूट लूटने को और अहेर अहेरने को उजाड़ स्थानों पर और जाति गणों में से बटुरे ऊए लोगों पर, जिन्हों ने ढोर और संपत्ति प्राप्त किया है, जो देश के मध्य में रहते हैं अपना हाथ फेरो। शीबा और दिदान और तर्शीश के बैपारी उसके सारे तरुण सिंह सहित तुझे कहेंगे कि क्या तू लूट लेने आया है? क्या तू ने अहेर लेने को सोना चांदी लेने को और ढोर और संपत्ति और बड़ी लूट लेने को क्या तू ने अपनी जथा बटोरी है?।

१४ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र जूज से भविष्य कह कि प्र
परमेश्वर यों कहता है जब कि मेरे इसराईल लोग चैन से रहें
१५ क्या तू न जानेगा?। और तू उत्तर दिशा में से अपने स्थान
और तेरे संग बज्जतसे लोग सब के सब घोड़ों पर चढ़े
१६ एक बड़ी जथा और एक सामर्थी सेना आवेगी। और देश के
छालेने को तू मेघ की नाईं मेरे इसराईल लोगों के विरु
उठ आवेगा यह पिछले दिनों में होगा और मैं तुझे अपने
देश के विरुद्ध लाओंगा जिसतें हे जूज जब मैं तेरी आंखों के
आगे तुझ में पवित्र होंगा तो अन्यदेशी मुझे पहिचानें।
१७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू वही है जिसके विषय में मैं
ने पुरातन समय से अपने सेवक इसराईल के भविष्यद्वक्तों के
द्वारा से कहा है जिन्हों ने उन दिनों बरसों में भविष्य कहा
१८ कि मैं तुझे उनके विरुद्ध लाओंगा। प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि जब जूज इसराईल के देश के विरुद्ध आवेगा
१९ उसी समय यों होगा कि मेरा मुंह कोपित होगा। क्योंकि
अपनी झल में और अपने कोप की आग में मैं ने कहा है
निश्चय उस दिन इसराईल देश में एक बड़ी थर्थराहट होगी।
२० यहां लों कि समुद्र की मछलियां और आकाश के पंछीयां और
बनपशु और पृथिवी पर के सारे रेंगवैये और पृथिवी
के सारे मनुष्य मेरे आगे से थर्थरायेंगे और पर्ब्बत गिराये
जायेंगे और ऊंचे स्थान गिर पड़ेंगे और हरएक भीत भूमि
२१ पर गिरेगी। प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उसके विरुद्ध
अपने सारे पर्ब्बतों में एक तलवार मंगवाओंगा और हरएक
२२ जन की तलवार उसके भाई के विरुद्ध होगी। और मैं
उसके विरुद्ध मरी और लोह से विवाद करोंगा और मैं
उस पर और उसकी जथाओं पर और उसके संग के बज्जत से
लोगों पर उमड़ी ऊई दृष्टि और बड़े बड़े ओले और आग
२३ और गंधक बरसाओंगा। इसी रीति से मैं अपनी महिमा

करोंगा और अपने को पवित्र करोंगा और मैं बहुत से जातिगणों की दृष्टि में पहिचाना जाओंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों।

३९ उंतालीसवां पर्ब्ब।

जूज माजूज के नष्ट होने का समाचार १—७ हथियारों की बहुताई ८—१० जूजका और उसकी मंडली का गाड़ा जाना ११—१६ जूभोऊओं पर पशु पंक्षी का नेउंता १७—२० अन्यदेशियों का ईश्वर का न्याय देखना २१—२४ लोगों पर ईश्वर का अनुग्रह २५—२९।

इस लिये हे मनुष्य के पुत्र जूज के विरुद्ध भविष्य प्रचार के कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मिशेक और तूबाल के प्रधानाध्यक्ष हे जूज देख मैं तेरे विरुद्ध हों। और मैं तुझे हटादेओंगा और केवल तेरा छठवां भाग छोड़ोंगा और तुझे उत्तर के अलंगों से आने कराओंगा और तुझे इसराईल के पर्ब्बतों पर लाओंगा। और तेरे धनुष को तेरे बायें हाथ से मार निकालोंगा और तेरे बाण को तेरे दहिने हाथ से गिराओंगा। तू और तेरी सारी जथा और तेरे संग के लोग इसराईल के पर्ब्बतों पर गिरेंगे मैं भक्ष के लिये हर प्रकार के फड़वैये पंछियों को और बनैले पशुन को देओंगा। तू खुले चौगान पर गिरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने कहा है। और मैं माजूज पर और उन्हों पर जो टापुओं में निश्चिन्त रहते हैं एक आग भेजोंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों। यों मैं अपने पवित्र नाम को अपने इसराईल लोगों के मध्य में जनाओंगा और फेर अपना नाम अशुद्ध करने न देउंगा और अन्यदेशी जानेंगे कि मैंही परमेश्वर इसराईल में धर्ममय हों। प्रभु परमेश्वर कहता

है कि देख वुह आया है और ऊआ है इसी दिन के विषय
९ मैं ने कहा है। और जो इसराईल के नगरों में रहते हैं
निकल जायेंगे और क्या ढाल क्या फरी क्या हथियार क्या धन
क्या वाण क्या बरछी क्या भाले वे उन्हें सात बरस लों जलावेंगे
१० यहां लों कि वे खेत में से ईंधन न लावेंगे और बन में से काठ
खावेंगे क्योंकि वे हथियारों को आग से जलावेंगे प्रभु परमेश्व
कहता है कि वे अपने लुटवैयों को लूटेंगे और अपने चोरवैयों
११ को चुरावेंगे। उस दिन ऐसा होगा कि मैं इसराईल
समुद्र की पूर्ब और पथिकों की तराई में जूज को समाधि
स्थान देउंगा वुह पथिकों की नाक बंद करेगा और वहां
जूज को और उसकी सारी मंडली को गाड़ेंगे और वे उसक
१२ नाम जूज की मंडली की तराई रक्खेंगे। और देश पवित्र करने
के लिये इसराईल के घराने सात मास लों उन्हें गाड़ा करेंगे।
१३ हां देश के सारे लोग उन्हें गाड़ेंगे और प्रभु परमेश्वर कहता है
कि जिस दिन मैं महिमा पाओंगा सो उनके लिये कीर्त्तिमान
१४ होगा। और वे निरंतर कार्य्यकारी मनुष्यों को चुनलेंगे जो
भूमि पर के बचे ऊए पथिकों के संग युद्ध करने को गाड़ने के
लिये आरंपार जायेंगे और सात मास के पीछे वे ढूंढेंगे।
१५ और जब देश में के जवैये पथिक किसी मनुष्य के हाड़ देखेंगे
तब वुह उसके लग एक चिन्ह खड़ा करेगा जबलों गड़वैये
१६ उसे जूज की मंडलीकी तराई में न गाड़ें। उस नगर का नाम
मंडली होगा और इस रीति से वे देश को पवित्र करेंगे।
१७ हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू सारे
पंछियों से और बन के हरएक पशुन से कह कि एकट्ठे हो
आओ और चारो ओर से, जो बलि मैं तुम्हारे लिये करता हों
उस बलि के लिये एकट्ठे होओ अर्थात् इसराईल के पर्व्वतों
पर एक बड़ा बलि जिसतें तुम लोग मांस खाओ और लोहू
१८ पीओ। तुम लोग बीरों का और एथिवी के अध्यक्षों का, और

बाशान के पले हुए मेढ़ों का और मेम्नों का और बड़ी बकरियों
का और बैलों का मांस खाओ और लोहू पीओ। तुम लोग
चिकनाई से तृप्त होने लों खाओगे और मेरे बलि का लोहू,
जो मैं ने तुम्हारे लिये बलि किया है मतवाले होने लों पीयोगे।
प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इस रीति से तुम मेरे मंच
पर घोड़ों से और रथों से और बलवंत मनुष्यों से और
सारे लड़ाकों से तृप्त होओगे। और मैं अपना
बिभव अन्यदेशियों में स्थापन करोंगा और मेरे न्याय दंड को
और मेरा हाथ जो मैं ने उन पर धरा है सारे अन्यदेशी
देखेंगे। सो इसराईल के घराने जानेंगे कि मैं परमेश्वर उस
दिन से आगे उन्हों का ईश्वर परमेश्वर हों। और अन्यदेशी
जानेंगे कि इसराईल के घराने अपने अधर्म के लिये बंधुआई
में चले गये क्योंकि उन्हों ने मेरे बिरुद्ध अपराध किया है इस
लिये मैं ने अपना मुंह उनसे छिपा लिया और उन्हें उनके
बैरियों के हाथ सौंप दिया सो वे सब तलवार से मारे गये।
उनकी अपवित्रता के और उनके अपराधों के समान मैं ने उनसे
।२६ किया है और अपना मुंह उनकी दृष्टि से छिपाया है। इस
लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब वे अपने देश में
चैन से रहते थे और कोई उन्हें न डराता था उनकी लाज
और उनके सारे अपराध सहने के पीछे जिनसे उन्हों ने मेरा
अपराध किया है मैं याक़ूब की बंधुआई को फेर लाओंगा
और इसराईल के सारे घराने पर दया करोंगा और अपने
पवित्र नाम के लिये झल खाऊंगा। जब मैं उन्हें लोगों में से
फेर लाया हों और उनके बैरियों के देशों में से उन्हें बटोरा हों
और बहुत देशगणों की दृष्टि में मैं उनमें पवित्र किया गया
हों। तब वे जानेंगे कि मैं ही उनका ईश्वर परमेश्वर हों जिसने
उन्हें अन्यदेशियों में बंधुआई में पहुंचाया परन्तु मैं ने उन्हें
उन्हीं के देश में एकट्ठा किया और वहां फेर उनमें से किसी को

२९ न छोड़ा। मैं अपने मुंह को उनसे फेर न छिपाओंगा क्योंकि प्रभु ईश्वर कहता है कि मैं ने इसराईल के घराने पर अपना आत्मा उंडेला है।

४० चालीसवां पर्ब्ब।

नगर के विषय में इज़किएल का दर्शन पाना १—५। मन्दिर का और उसके फाटकों का वर्णन करना ६—४९।

१ हमारे बंधुआई के पचीसवें बरस में बरस के आरंभ के मास की दसवीं तिथि में नगर के लिये जाने के चौदहवें बरस के उसी दिन परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे वहां २ पहुंचाया। ईश्वरीय दर्शन में उसने मुझे इसराईल के देश में पहुंचाया और मुझे एक अति ऊंचे पर्ब्बत पर बैठाया जिसकी ३ दक्खिन ओर एक नगर का ढांचा था। और उसने मुझे वहां पहुंचाया और क्या देखता हूं कि सन की डोरी और नापने का नल हाथ में लिये हुए एक पुरुष फाटक पर खड़ा है। ४ जो पीतल की नाईं दिखाई देता था और उस मनुष्य ने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अपनी आंखों से देख और कानों से सुन और सब जो मैं तुझे देखाओं उन पर मन लगा क्योंकि तुझे दिखाने को मैं तुझे यहां लाया हों सब जो तू देखता ५ है इसराईल के घराने को बता। और क्या देखता हों कि घर के बाहर बाहर चारो ओर एक भीत, एक हाथ चार अंगुल के हाथ से छः हाथ का नापने का एक नल वुह मनुष्य लिये हुए था सो उसने उस बनावट की चौड़ाई को नापा एक नल ६ और ऊंचाई एक नल। तब वुह पूर्ब्ब के रुख के फाटक पर आया और उसकी सीढ़ी पर चढ़ा और उस फाटक की देहली को एक नल चौड़ी नापी और दूसरी देहली एक नल ७ चौड़ी। हरएक छोटी कोठरी एक एक नल लम्बी और एक एक

नल चौड़ी और छोटी कोठरियों के मध्य पांच पांच हाथ और
८ उसारे के फाटक की देहली भीतर भीतर एक नल। उसने
उसारे का फाटक भी एक नल नापा। तब उसने फाटक के
उसारे को आठ हाथ नापा और उसके खंभे दो हाथ
१० और फाटक का उसारा भीतर था। और पूर्ब्ब ओर के फाटक
की छोटी कोठरियां तीन इधर तीन उधर थीं उन तीनों का
११ एकही नाप था और इधर उधर खंभों का एकही नाप था। और
उसने फाटक के प्रवेश स्थान की चौड़ाई दस हाथ और लंबाई
१२ तेरह हाथ नापी। छोटी कोठरी के आगे का अन्त हाथ भर
इधर हाथ भर उधर और छोटी छोटी कोठरियां छः हाथ इधर
१३ और छः हाथ उधर थीं। तब उसने फाटक की छोटी कोठरी
की छत से दूसरी कोठरी लों नापा उसकी चौड़ाई पचीस हाथ
१४ थी द्वार के साम्ने द्वार। उसने फाटक की चारो ओर आंगन के
१५ खंभे लों साठ हाथ खंभे भी बनाये। और प्रवेश के फाटक के
१६ आगे से भीतर के फाटक के आंगन लों पचास हाथ। और
छोटी छोटी कोठरियों की और फाटक के भीतर के खंभों की चारो
ओर खिड़कियां थीं और उसारे की भी और भीतर भीतर
चारो ओर खिड़कियां थीं और हरएक खंभे पर ताल पेड़ थे।

१७ फिर उसने मुझे बाहर के आंगन में पहुंचाया और क्या
देखता हों कि कोठरियां और चारो ओर आंगन के लिये गच
१८ थी और उस गच पर तीस कोठरियां। और फाटकों की लंबाई
१९ के साम्ने फाटकों के लग की गच नीचे की गच थी। तब उसने
नीचे के फाटक के साम्ने से भीतर के आंगन के साम्ने लों पूर्ब्ब
ओर और उत्तर ओर बाहर बाहर चौड़ाई सौ हाथ नापी।

२० फिर उसने उत्तर के बाहिरी आंगन के फाटक की लंबाई
२१ और चौड़ाई नापी। और उसकी छोटी कोठरियां तीन
इस अलंग तीन उस अलंग थीं और उसके खंभे और उसके
उसारे पहिले फाटक के नाप के समान थे उसकी लंबाई

२२ पचास हाथ और चौड़ाई पचीस हाथ। और उनकी खिड़कियां और उनके खिलान और उनके तालपेड़ पूर्ब ओर के फाटक के नाप के समान थे और सात सीढ़ी पर से उस पर चढ़ते थे
२३ उसके खिलान उनके आगे थे। और भीतर के आंगन का फाटक पूर्ब ओर के और उत्तर ओर के फाटक के साम्ने था और
२४ फाटक से फाटक सौ हाथ के नाप का। उसके पीछे उसने मुझे दक्खिन की ओर पहुंचाया और क्या देखता हों कि दक्खिन की ओर एक फाटक और उसने उसके खंभे और उसके खिलान
२५ इन नापों के समान नापे। और उसमें और उसके खिलान में चारो ओर उन खिड़कियों की नाईं खिड़कियां थीं लंबाई
२६ पचास हाथ और चौड़ाई पचीस हाथ। और उस पर चढ़ने को सात सीढ़ियां थीं और उसके खिलान उनके आगे थे और उसके खंभों पर तालपेड़ थे एक इस अलंग एक उस
२७ अलंग। और भीतर के आंगन की दक्खिन ओर एक फाटक था और उसने फाटक से फाटक लों दक्खिन ओर सौ हाथ नापा।
२८ और वुह दक्खिन फाटक से मुझे भीतर के आंगन में लाया और इनके नाप के समान उसने दक्खिन फाटक को नापा।
२९ और उसकी छोटी कोठरियां और उसके खंभे और उसके खिलान इन नापों के समान थे और उसमें और उसके खिलानों में चारो ओर खिड़कियां थीं वुह पचास हाथ लंबा पचीस
३० हाथ चौड़ा। और खिलान चारो ओर पचीस हाथ लंबा
३१ और पांच हाथ चौड़ा। उसके खिलान बाहर के आंगन की ओर थे और उसके खंभों पर तालपेड़ और उसकी चढ़ाई
३२ की आठ सीढ़ियां थीं। और वुह मुझे पूर्ब ओर भीतर के आंगन में लाया और इन नापों के समान फाटक नापा।
३३ और उसकी छोटी कोठरियां और खंभे और खिलान इन नापों के समान थे और उसमें और उसके खिलानों में चारो ओर खिड़कियां थीं वुह पचास हाथ लंबा और पचीस हाथ

४ घोड़ा। और उसके खिलान बाहर के आंगन की ओर थे और उसके खंभे के ऊपर इधर उधर तालपेड़ और उसकी चढ़ाई
५ आठ सीढ़ी की थी। और उसने मुझे उत्तर के फाटक की ओर पहुंचाया और इन नापों के समान उसे नापा।
६ और उसकी छोटी छोटी कोठरियां और उसके खंभे और उसके खिलान और उसकी चारों ओर की खिड़कियां
७ लंबाई पचास हाथ और चौड़ाई पचीस हाथ। और उसके खंभे बाहर के आंगन की ओर थे और इधर उधर उसके खंभों
८ पर तालपेड़ थे और उसकी चढ़ाई आठ सीढ़ी की थी। और कोठरियां और उनकी पैठ उनके फाटकों के खंभे के लग थीं
९ जहां वे होम की भेंट जलाते थे। और फाटक के उसारे में होम की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट बलि
० करने को दो मंच इस अलंग दो मंच उस अलंग थे। और बाहर के अलंग उत्तर फाटक की पैठ को जाते जाते दो मंच थे
१ और फाटक के उसारे के दूसरे अलंग दो मंच थे। फाटक के लग इस अलंग चार मंच और उस अलंग चार मंच थे
२ आठ मंच जिन पर वे बलि करते थे। होम की भेंट के लिये खोदे हुए पत्थल के डेढ़ हाथ लंबे और डेढ़ हाथ चौड़े और हाथ भर ऊंचे चार मंच थे जिन पर वे होम की भेंट और
३ बलि के हथियार धरते थे। और उनके भीतर भीतर चार अंगुल चौड़ी अंकरियां चारों ओर लगीं थीं और
४ मंचों पर भेंट का मांस था। और भीतर के फाटक के बाहर भीतर के आंगन में जो उत्तर फाटक के अलंग में थी गायकों की कोठरियां थीं और उनका रुख दक्खिन की ओर और पूर्ब फाटक के अलंग एक जिसका रुख उत्तर की ओर।
५ तब उसने मुझे कहा कि यही दक्खिन ओर के रुख की कोठरी
६ घर के रखवाल याजकों के लिये है। और उत्तर ओर के रुख की कोठरी यज्ञबेदी के रखवाल याजकों के लिये है ये

सादूक़ के बेटे लावियों के बेटों में हैं जो सेवा के लिये परमेश्वर
४७ के पास आते हैं। सो उसने आंगन को सौ हाथ लंबा नाप
४८ और सौ हाथ चौड़ा चौकोर और घर के आगे की बेदी। फेर
वुह मुझे घर के उसारे में लाया और उसारे के खंभे को
नापा पांच हाथ इधर और पांच हाथ उधर और फाटक की
४९ चौड़ाई इधर उधर तीन तीन हाथ। और उसारे की लंबाई
बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ और उसकी चढ़ाई की
सीढ़ी पर से मुझे लाया और खंभों के इधर उधर खंभे थे।

४१ एकतालीसवां पर्ब्ब।

मन्दिर के विषय का दर्शन १—२६।

१ उसके पीछे वुह मुझे मन्दिर में लाया और खंभों को नापा
तंबू की चौड़ाई एक ओर छः हाथ और दूसरी ओर छः हाथ।
२ और पैठ की चौड़ाई दस हाथ और द्वार के अलंग एक
ओर पांच हाथ और दूसरी ओर पांच हाथ और उसने
उसकी लंबाई को चालीस हाथ नापा और उसकी चौड़ाई
३ बीस हाथ। तब उसने भीतर जाके द्वार के खंभे को दो हाथ
नापा और द्वार छः हाथ और द्वार की चौड़ाई सात हाथ।
४ वैसा उसने उसकी लंबाई को बीस हाथ और मन्दिर के साम्ने
चौड़ाई को बीस हाथ नापा तब उसने मुझे कहा कि यही
५ अति पवित्र स्थान है। तब उसने घर की भीत छः हाथ नापी
और अलंग की कोठरी की चौड़ाई घर की चारों ओर हरएक
६ अलंग चार हाथ। और अलंग की कोठरियां तीन थीं कोठरी
पर कोठरी पांती में तीस और वे भीत के भीतर भीतर थीं
जो घर की आस पास के अलंग की कोठरियों के लिये थी
जिसतें वे दृढ़ होवें परन्तु घर की भीत से वे मिली हुईं न थीं।
७ और वुह अधिक चौड़ा किया गया था और घूम ऊपर के आस
पास की कोठरी लों था क्योंकि घर का घूम ऊपर ऊपर घर की

चारों ओर इस लिये घर की चौड़ाई ऊपर अधिक थी और नीचे स लेके मध्य से ऊपर लों बढ़गई। मैं ने घर की चारों ओर की उंचाई भी देखी अलंगों की कोठरियों की नेव छः बड़े बड़े ८ हाथ के पूरे नल की थी। बाहर की कोठरी के अलंग के निमित्त भीत की चौड़ाई पांच हाथ और छूटा हुआ स्थान भीतर के अलंग १० की कोठरियों के लिये था। और कोठरियों के बीच में घर के ११ हर एक अलंग चारों ओर बीस हाथ की चौड़ाई। और अलंग की कोठरियों के द्वार छूटे हुए स्थान की ओर थे एक द्वार उत्तर ओर एक द्वार दक्खिन ओर और छूटे हुए स्थान की १२ चौड़ाई चारों ओर पांच हाथ की थी। अब पच्छिम ओर अंत में अलग स्थान के आगे की जोड़ाई सत्तर हाथ चौड़ी थी और जोड़ाई की भीत चारों ओर पांच हाथ मोटी और उसकी १३ लम्बाई नव्वे हाथ थी। सो उसने घर को सौ हाथ लम्बा नापा और अलग स्थान और जोड़ाई उसकी भीतें सहित सौ हाथ १४ लम्बी। और घर के रुख की भी चौड़ाई पूर्व्व ओर के अलग १५ स्थान की सौ हाथ। और पीछे के अलग स्थान के साम्ने जोड़ाई की लम्बाई को और ऊपर के इस अलंग और उस अलंग के ओसारों को भीतर के मंदिर और आंगन के ओसारे समेत १६ उसने सौ हाथ नापे। द्वार के उतरंगे और सकेत खिड़कियां और द्वार के साम्ने की तीनों अटारियों पर चारों ओर के ओसारे लकड़ी से चारों ओर मढ़े हुए थे और भूमि से खिड़कियों लों १७ और खिड़कियां ढांपी हुई थीं। द्वार के ऊपर लों अर्थात् घर के भीतर और बाहर लों चारों ओर की सारी भीतों के लग बाहर १८ भीतर नाप नाप के ढंपी हुईं थीं। और करोबियों से और ताल पेड़ों से बना था ऐसा कि एक ताल पेड़ एक एक करूब १९ के बीच में था और हर एक करूब के दो दो मुंह थे। ऐसा कि एक अलंग तालपेड़ की ओर मनुष्य का मुंह था और दूसरे अलंग तालपेड़ की ओर युवा सिंह का मुंह घर की चारों ओर

२० ऐसा बना था। भूमि से द्वार के ऊपर लों और मन्दिर की भीत
२१ पर करोबीम और ताल पेड़ बने थे। मन्दिर का खंभा और पवित्र
स्थान के रुख चौरस किये गये थे एक दूसरे के समान दिखाई
२२ देता था। काठ की बेदी तीन हाथ ऊंची और उसकी लम्बाई
दो हाथ और उसके कोने और उसकी लम्बाई और उसकी
भीतें काठकी थीं और उसने मुझे कहा कि यह परमेश्वर के आगे
२३ का मंच है। और मन्दिर और पवित्र स्थान के दो द्वार थे।
२४ एक एक द्वार के दो दो घूमने के पाट थे एक द्वार के लिये
२५ दो पाट और दूसरे के लिये दो। और जैसा भीतों पर
बने थे तैसा मन्दिर के द्वारों पर करोबीम और तालपेड़ बने थे
और बाहर के ओसारे के रुख पर मोटी मोटी सिल्लियां थीं।
२६ और ओसारे के अलंगों पर और घर के अलंगों की कोठरियों
पर और मोटी मोटी सिल्लियों पर इस अलंग और उस अलंग
सकेत सकेत खिड़कियां और ताल पेड़ थे।

४२ बयालीसवां पर्ब्ब

आंगन के भीतर की कोठरियां १—१४ भूमि की
लम्बाई चौड़ाई १५—२०।

१ फेर उसने मुझे बाहरी आंगन में उत्तर के मार्ग पर लाया और
वुह मुझे अलग स्थान के सन्मुख की कोठरी में जो उत्तर ओर की
२ जोड़ाई के आगे थी पऊंचाया। सौ हाथ लम्बाई के आगे
३ उत्तर का द्वार था और उसकी चौड़ाई पचास हाथ। भीतर
के आंगन के लिये बीस हाथ और बाहर के आंगन के लिये
४ गच के आगे तेहरे उपरी ओसारे थे। और कोठरियों के साम्ने
भीतर भीतर दस हाथ का चौड़ा एक मार्ग एक हाथ का एक
५ पथ और उनके द्वार उत्तर ओर। ऊपरी कोठरियां उनसे छोटी
छोटी थीं क्योंकि ऊपरी ओसारे इन्हों से और नीचे से और
६ जोड़ाई के बीच में से ऊंचे थे। क्योंकि वे तेहरे थे परन्तु आंगनों

के खंभों की नाईं उनके खंभे न थे इस लिये जोड़ाई नीचे भूमि से और मध्य से सकेत थी। और कोठरियों के आगे के बाहरी आंगन की ओर ऊपर की कोठरी के आगे बाहर की भीत पचास हाथ लम्बी थी। क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ थी और देखो कि मन्दिर के साम्ने सौ हाथ। और बाहरी आंगन से जाने में उन कोठरियों में प्रवेश
१० करने को पूर्ब ओर उनके नीचे पैठ थी। अलग स्थान के साम्ने और जोड़ाई के साम्ने कोठरियां पूर्ब ओर के आंगन की भीत की मोटाई
११ थीं। और उनके आगे का मार्ग उत्तर ओर की कोठरियों का सा दिखाई देता था जो उनके समान लम्बा चौड़ा और उनके
१२ सारे निकास उनके डौल और उनके द्वारों के समान थे। और दक्खिन की कोठरी के द्वारों के समान मार्ग के सिरे पर एक द्वार अर्थात् पूर्ब की ओर की भीत के साम्ने उनमें जाने के मार्गों
१३ में एक द्वार था। तब उसने मुझे कहा कि उत्तर की कोठरियां और दक्खिन की कोठरियां, जो अलग स्थान के आगे हैं पवित्र कोठरियां हैं जहां याजक, जो परमेश्वर के पास जाते हैं अति पवित्र बस्तु खायेंगे वे वहां अति पवित्र बस्तु और भोजन की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट धरेंगे क्योंकि
१४ स्थान पवित्र है। जब याजक उसमें प्रवेश करें तब वे बाहरी आंगन में पवित्र स्थान से न जायें परन्तु वे अपने सेवा के बस्त्र वहीं रक्खें इस लिये कि वे पवित्र हैं और वे दूसरा बस्त्र
१५ पहिनें और लोगों के लिये पास जावें। सो जब वुह भीतर के घर को नाप चुका तो मुझे उस फाटक की ओर लाया जिसका रुख पूर्ब ओर है और उसे चारों ओर
१६ नापा। उसने नापने के नल से पूर्ब अलंग पांच सौ नल
१७ चारों ओर नापे। उसने नापने के नल से उत्तर अलंग
१८ चारों ओर पांच सौ नल नापे। उसने नापने के नल से
१९ दक्खिन अलंग पांच सौ नल नापे। उसने पच्छिम ओर लौट

२० के नापने के नल से पांच सौ नल नापे। उसने उसके चारो अलंग नापे उसकी चारो ओर एक भीत पांच सौ नल लंबी और पांच सौ चौड़ी थी जिसतें पवित्र स्थान को सामन्य स्थान से अलग करें।

४३ तेंतालीसवां पर्ब्ब।

ईश्वर के विभव का मन्दिर में फिर आना १—५ लोगों को पाप से बचाने की बाचा ६—९ मन्दिर के विषय की बाणी १०—२७।

१ उसके पीछे उसने मुझे फाटक पर पहुंचाया अर्थात् पूर्व रुख के
२ फाटक पर। और क्या देखता हों कि इसराईल के ईश्वर का तेज पूर्व ओर से आया और उसका शब्द बहुत पानियों के
३ शब्द की नाईं और उसके तेज से पृथिवी चमक उठी। और वुह मेरे देखे हुए दर्शन की नाईं था अर्थात् मेरे देखे हुए उस दर्शन की नाईं जब मैं नगर को नाश करने को आया और दर्शन उन दर्शनों की नाईं थे, जो मैंने किबार नदी के लग
४ देखे थे और मैं औंधे मुंह गिरा। और पूर्व रुख के फाटक
५ की ओर से परमेश्वर का तेज घर में आया। और आत्मा ने मुझे उठाके भीतरी आंगन में पहुंचाया और क्या देखता हों
६ कि परमेश्वर के तेज से घर भर गया। और घर के भीतर से मैं ने उसको अपने से कहते सुना और वुह मनुष्य मेरे पास
७ खड़ा था। और उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र इसराईल का घराना उनके राजा अपने छिनालपन से अपने ऊंचे स्थानों में, अपने राजा की लोथों में, मेरे सिंहासन के स्थान और पांव के तलवे के स्थान को, जहां मैं इसराईल के संतानों के मध्य में सदा बास करोंगा और मेरे पवित्र नाम को फेर अशुद्ध
८ न करेंगे। उन्हों ने अपनी डेहरी को मेरी डेहरियों के लग और अपने खंभे को मेरे खंभों के लग खड़ा करने से और

मेरे और उनके बीच में भीत खड़ी करने से अपनी घिनित क्रिया से मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध किया है इस लिये मैं ने अपनी रिस में उन्हें नष्ट किया। अब वे अपने छिनालपने को और अपने राजाओं की लोथों को मुझे दूर करें और मैं सर्वदा उनके १० मध्यमें बास करोंगा। हे मनुष्य के पुत्र इसराईल के घराने को वुह घर दिखा जिसतें वे अपनी बुराई से लजायें और उसके ११ अंत को नापें। और यदि वे अपने सारे किये हुए कार्य्य से लजायें तो उन्हें घर का डौल और उसका रूप और उसके बाहर भीतर आना जाना और उसकी सारी बिधि और उसका सारा डौल और उसकी सारी व्यवस्था दिखा और उसे उनकी दृष्टि में लिख जिसतें वे उसके सारे डौल को और १२ उसकी सारी बिधिन को पालन करें और मानें। घर की व्यवस्था यही है पर्ब्बत की चोटी पर उसके चारो ओर सारे सिवाने अति पवित्र होंगे देख घर की व्यवस्था यही है।

१३ और बेदी का नाप हाथ के समान यह है हाथ, एक हाथ चार अंगुल का अर्थात् उसके बीचों बीच एक हाथ और उसकी चौड़ाई एक हाथ और उसके कोर चारो ओर बित्ता १४ भर का और बेदी का उपरी स्थान यह होगा। और भूमि पर से नीचे के ठहर लों दो हाथ और उसकी चौड़ाई हाथ भर और छोटी ठहर से बड़ी ठहर लों चार हाथ और चौड़ाई १५ हाथ भर। इसी रीति से बेदी चारहाथ होगी और बेदी के १६ ऊपर चार सींग होंगे। और बेदी बारह हाथ लंबी और बारह १७ चौड़ी चौकोर होगी। और ठहर चौदह लंबा और चौदह चौड़ा चौकोर और उसका कोर आधा हाथ और उसकी पेंदी हाथ १८ भर और उसकी सीढ़ी पूर्ब ओर होगी। और उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब कि उस पर होम चढ़ाने को और लोहू छिड़काने को उसे बनावेंगे १९ तो बेदी की यह विधि होगी। प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू याजक

लावियों को जो सादूक के बंश के हों, जो मेरी सेवा के लिः
२० पास आते हैं पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा देना। और
उसमें का लोहू लेना और बेदी के चारो सींगों पर और
ठहर के चारो कोनों पर और चारो ओर के कोर पर लगाना
२१ इस रीति से उसे पावन और शुद्ध करना। तू पाप की भेंट
के बैल को भी लेना और वुह उसे पवित्र स्थान के बाहर घर के
२२ ठहराये हुए स्थान में जलावे। और दूसरे दिन पाप की भेंट
के लिये निष्पय बकरियों का एक मेम्ना चढ़ाना और जैसा उन्हों
२३ ने बेदी को बैल से शुद्ध किया तैसा उसे शुद्ध करें। जब तू उसे
पवित्र कर चुके तब निष्पय बछड़ा और निष्पय झुंड में का एक
२४ मेढ़ा चढ़ाना। और तू उन्हें परमेश्वर के आगे चढ़ा और याजक
उन पर लोन छिड़कावें और वे उन्हें होम की भेंट के लिये
२५ परमेश्वर के निमित्त चढ़ावें। तू सात दिन लों प्रति दिन
पाप की भेंट के लिये एक एक बकरा सिद्ध करना और वे एक
निर्दोष बछड़ा और झुंड में से एक निष्पय मेढ़ा भी सिद्ध
२६ करें। वे सात दिन लों बेदी को पावन और शुद्ध करें और
२७ आप को पवित्र करें। और जब ये दिन बीतें ऐसा होगा
कि आठवें दिन और आगे याजक तुम्हारे होम की भेंटें और
कुशल की भेंटें बेदी पर चढ़ावें और प्रभु परमेश्वर कहता है
कि मैं तुम्हें ग्रहण करोंगा।

४४ चवालीसवां पर्ब्ब ।

पूर्ब फाटक अध्यक्ष के लिये १—३ परदेशियों का
मन्दिर के अशुद्ध करने के लिये लोगों का दपटा
जाना ४—८ मूरत पूजक याजकों का निकाला
जाना १०—१४ याजकों की विधि बतानी
१५—३१ ।

१ तब वुह मुझे पूर्ब ओर के बाहर के पवित्र स्थान के फाटक पर

लाया और वुह बंद था। तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि यह फाटक बंद रहे यह न खोला जाय और न कोई इसमें से प्रवेश करे क्योंकि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर इसमें से भीतर गया है इस लिये यह बंद रहेगा। यह राजा के लिये परमेश्वर के आगे भोजन करने के निमित्त राजा उसमें बैठेगा और वुह उस फाटक के ओसारे के ओर से भीतर जायगा और उसमें से बाहर जायगा। तब वुह घर के आगे के उत्तर फाटक की ओर से मुझे लाया और मैं ने देखा तो क्या देखता हों कि परमेश्वर के तेज से परमेश्वर का मन्दिर भर गया और मैं औंधे मुंह गिरा। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो कुछ मैं तुझे परमेश्वर के मंदिर की सारी विधिन के और सारी व्यवस्था के विषय में कहों तू उन पर अपना मन लगा और अपनी आंखों से देख और अपने कानों से सुन रख और मंदिर की पैठ को और पवित्र स्थान के हरएक निकास को चीन्ह रख। और इसराईल के इसदंगइत घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराईल के घराने तुम्हारी सारी घिनित क्रिया तुम्हारे लिये बस हों। इस बात में कि तुम मेरे पवित्र स्थान में मेरे घर को अशुद्ध करने को मन के अख़तनः और मांस के अख़तनः उपरियों को लाये हो जब कि तुम लोग मेरी रोटी और चिकनाई और लोहू चढ़ाते हो और उन्हों ने मेरे नियम अपने सारे घिनित कार्य्यों से भंग किया है। और तुमने मेरी पवित्र वस्तुन की रक्षा न किई परन्तु अपने लिये मेरे पवित्र स्थान में रखवालों को ठहराया है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि कोई परदेशी मन का अख़तनः और मांस का अख़तनः कोई किसी परदेशी में से, जो इसराईल के सन्तानों में का है मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश न करेंगे। और जब कि इसराईल भटक गये जो मुझसे अपनी मूर्त्तिन के पीछे

भटक गये जो लावी मुझ से दूर गये हैं वे अपने अधर्म को
११ भोगेंगे। तथापि वे घर के फाटक पर रखवाली और घर
की सेवा करने में मेरे पवित्र स्थान के सेवक होंगे वे लोगों के
लिये होम की भेंट और बलि को बधन करेंगे और उनकी
१२ सेवा करने के लिये उनके आगे खड़े होंगे। प्रभु परमेश्वर
कहता है इस कारण कि उन्हों ने उनकी मूर्त्तिन के आगे
उनकी सेवा किई और इसराईल के घराने की अधर्म के लिये
एक ठोकर थे इस लिये मैं ने अपना हाथ उनके विरुद्ध उठाया
१३ है और वे अपनी अधर्म भोगेंगे। और मेरे लिये याजक के
पद की सेवा करने को वे पास न आवें और अति पवित्र
स्थान में मेरी किसी पवित्र वस्तु के पास न आवें परन्तु वे अपना
१४ लाज और अपनी घिनित क्रिया भोगेंगे। परन्तु घर की
सारी सेवा के लिये और उसमें के सारे कार्य के लिये मैं उन्हें
१५ उसका रखवाल बनाओंगा। परन्तु जब कि इसराईल के सन्तान
मुझ से भटक गये सादूक के बेटे याजक लावी जो पवित्र स्थान
की रक्षा करते थे वे सेवा के लिये मेरे पास आवेंगे प्रभु
परमेश्वर कहता है कि चिकनाई और लोहू चढ़ाने को वे मेरे
१६ आगे खड़े होंगे। वे मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश करेंगे और
मेरी सेवा करने को मेरे मंच पर आवेंगे और मेरी आज्ञा
१७ की रक्षा करेंगे। और जब वे भीतर के आंगन के
फाटकों से प्रवेश करें तब ऐसा होगा कि वे सूती वस्त्र से वस्त्रित
होंगे और जबलों भीतर के आंगन के फाटकों में वे भीतर
१८ में सेवा करें तब उनपर कुछ ऊन न होवे। वे सिर पर
सूती वस्त्र की टोपी देवें और कटि पर सूती जांघियां पहिनें
१९ और जो वस्तु पसीना निकलवावे सो न पहिनें। और जब
वे बाहर आंगन में जायें अर्थात् लोगों के पास बाहरी आंगन
के भीतर जायें तो जिस वस्त्र में उन्हों ने सेवा किई उन्हें
उतार के पवित्र कोठरियों में रक्खें और और वस्त्र पहिनें

० परन्तु अपने बस्त्रों को पहिन के लोगों को पवित्र न करें। वे अपने सिर न मुडावें और चोटी बढ़ने न देवें पर वे अपने
१ सिर के बाल कतरावें। जब वे भीतरी आंगन में जायें तो
२ कोई याजक दाखरस न पीये। वे बिधवा को अथवा त्यक्त को अपनी पत्नी न करें परन्तु इसराईल के घराने के संतान की कन्या को अथवा उस बिधवा को जो आगे याजक से बियाही
३ गई थी लेवें। और वे पवित्र और अपवित्र बस्तु का भेद मेरे लोगों को सिखावें और अशुद्ध और शुद्ध का बेवरा उन्हें
४ बतावें। बिवाद में वे न्यायी होवें और वे मेरे बिचार की नाईं बिचारें और मेरी सारी सभाओं में वे मेरी व्यवस्था और बिधिन को पालन करें और मेरे बिश्रामों को पवित्र मानें।
५ और वे अपने को अपवित्र करने को मृतक पास न जायें परन्तु पिता अथवा माता अथवा पुत्र अथवा पुत्री अथवा भाई अथवा अबिवाहिता बहिन के लिये वे अपने को अशुद्ध करें।
६ उसके पवित्र होने के पीछे वे उसके लिये सात दिन गिनें।
७ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि जिस दिन वुह पवित्र स्थान में सेवा करने के लिये पवित्र स्थान के भीतरी आंगन में जाय
८ तो वुह अपने पाप की भेंट चढ़ावे। और वुह उनके लिये अधिकार के लिये होगा मैं हीं उनका अधिकार हों और इसराईल के मध्य तुम लोग उन्हें अधिकार न देना क्योंकि मैं
९ उनका अधिकार हों। वे मांस की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट खायें और इसराईल में हर एक समर्पण
० किई हुई बस्तु उनकी होगी। और सब बस्तु के पहिले फल का श्रेष्ठ और तुम्हारे सारे रीति के अर्पण और सभों का हर एक अर्पण याजकों का होगा और तुम गूंधा हुआ पिसान का पहिला याजक को देओ जिसतें वुह तुम्हारे घरों पर आशीष पहुंचावे जो कुछ आप से आप मरजाय अथवा फाड़ा जाय चाहे पंछी होय चाहे पशु याजक उसे न खाय।

४५ पैंतालीसवां पर्ब्ब।

देश का पवित्र नैवेद्य १—६ लोगों का भाग और न्याय की विधि ७—१२ बरस बरस का नैवेद्य १३—२५।

१ और जब तुम लोग अधिकार के लिये चिट्ठी डाल के देश को बा तब परमेश्वर के लिये एक नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात् देश का पवि भाग उसकी लंबाई पचीस सहस्र नल की लंबाई और चौड़ दस सहस्र यही उसके सारे सिवानें की चारों ओर पवि

२ होगा। इसमें से पविम स्थान के लिये लंबाई में पांच सौ नल औ पांच सौ चौड़ाई में चारों ओर चौकोर और उसके आसपा

३ के लिये चारों ओर पचास हाथ होवे। इस नाप से तू पची सहस्र लंबाई और दस सहस्र चौड़ाई माप और वुह पवित्र स्था

४ अति पवित्र होगा। देश का पवित्र भाग पवित्र स्थान के सेव याजकों के लिये जो परमेश्वर की सेवा के लिये आवें वुह उनके घरों के लिये एक स्थान और पवित्र स्थान के लिये पवित्र स्थान होगा

५ घर के सेवक लावी भी अपने लिये पचीस सहस्र लंबाई औ दस सहस्र चौड़ाई बीस कोठरियों के अधिकार के लिये पावें

६ और तुम लोग पांच सहस्र चौड़ा और पचीस सहस्र लंबा पवि नैवेद्य के साम्ने नगर का अधिकार ठहराओ वुह इसराईल के

७ सारे घराने के लिये होगा। और पवित्र नैवेद्य के इधर उधर पूर्व ओर से पूर्व और पच्छिम ओर से पच्छिम और नगर के अधिकार के आगे और उसके आगे कि पवित्र नैवेद्य के इस अलंग और उस अलंग अध्यक्ष के लिये भाग होगा उसकी लंबाई पच्छिम सिवाने से पूर्व सिवाने लों उसके भागों में से एक भाग के

८ साम्ने होगा। इसराईल के मध्य उसका अधिकार देश में होगा और मेरे अध्यक्ष मेरे लोगों को फेर न सतावेंगे और वे देश को इसराईल की गोष्ठियों के समान उन्हें देंगे।

९ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराईल के अध्यक्षो

तुम्हारे लिये बस होवे प्रभु परमेश्वर कहता है कि अंधेर और लूट दूर करो और न्याय और धर्म्म करो मेरे लोगों में से अपना अपना दूर करना त्यागो। तुम खरी तौल और खरा इफाह और खरा बास रक्खो। इफाह और बास एकही नाप का होवे जिसतें एक बास में होमर का दसवां भाग समावे और इफाह होमर का दसवां भाग उसको तौल होमर के समान होवे। शेकल बीस गिरह का होगा और बीस शेकल और पचीस शेकल और पंदरह शेकल तुम्हारा मानेः होवे। और यह नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात् एक होमर का इफाह का छठवां भाग गेहूं और एक होमर जव के इफाह का छठवां भाग देना। और तेल की बिधि का बिषय एक बास तेल एक कोर के बास का दसवां भाग जो दस बास का होमर है क्योंकि दस बास का एक होमर होता है। और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि उनके लिये मिलाप करने को इसराईल के मोटे चराई के झुंड के दो सौ मेम्ने मांस की भेंट के लिये और होम की भेंट के लिये और कुशल की भेंट के लिये एक मेम्ना देओगे। देश के सारे लोग इसराईल में अध्यक्ष के लिये यही नैवेद्य देवें। और पर्ब्बों में अमावस्या और बिश्राम और इसराईल के घराने के सारे पर्ब्बों में होम की भेंट और मांस की भेंट और पीने की भेंट अध्यक्ष के देने का काम होगा और इसराईल के घराने के लिये मेल करने को वुह पाप की भेंट और मांस की भेंट और होम की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि पहिले मास की पहिली तिथि में तू निश्चय एक बछड़ा लेना और पवित्र स्थान को शुद्ध करना। और याजक पाप की भेंट के लोहू में से कुछ लेवे और घर के खंभों पर और बेदी के ठहर के चारों कोनों पर और भीतरी आंगन के फाटक के खंभों पर लगावे। और वैसाही तू मास की सातवीं तिथि में

हर एक चूक करवैये और भोलों के लिये करना और इ
२१ रीति से घर से मिलाप कराओ। पहिले मास की चौदहवीं ति
में सात दिन पार जाना पर्व्व रखना और अख़मीरी रो
२२ खाई जाय। उस दिन अध्यक्ष अपने लिये और देश के सा
२३ लोगों के लिये पाप की भेंट के लिये एक बैल सिद्ध करे। औ
पर्व्व के सात दिन वुह परमेश्वर के लिये एक होम की
निश्चय सात बैल और सात मेढ़े सात दिन भर प्रति दि
२४ और पाप की भेंट के लिये बकरी का मेम्ना सिद्ध करे। औ
एक एक बैल के लिये भोजन की भेंट के लिये एक इफ़ाह औ
एक मेढ़े के लिये एक इफ़ाह और एक इफ़ाह के लिये ए
२५ हिन्न तेल सिद्ध करे। सातवें मास की पंदरहवीं तिथि में सा
दिन के पर्व्व में पाप की भेंट के समान और होम की भेंट
समान और मांस की भेंट के समान और तेल के समान वु
ऐसाही करे।

४६ छयालीसवां पर्व्व ।

पूजा में अध्यक्ष की विधि १—८ और लोगों की
९—१५ अध्यक्ष के अधिकार बेचने की रीति
१६—१८ नैवेद्य उसिन्ने का स्थान १९—२४।

१ प्रभु ईश्वर यों कहता है कि भीतरी आंगन का पूर्व्व का फाटक
काम काज के छः दिन बंद रहे परन्तु विश्राम में खोला जाय
२ और अमावास्या को खोला जाय। और उसी फाटक के
बाहर के ओसारे में मार्ग में से अध्यक्ष प्रवेश करेगा और
फाटक के खंभे के पास खड़ा होगा और याजक उसके होम
की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करें और वुह उस फाटक
की डेहरी के पास सेवा करे उसके पीछे वुह बाहर जाय परन्
३ जबलों सांझ न होवे फाटक बंद न होवे। वैसाही विश्रामों
में और अमावास्यों में देश के लोग फाटक के केवाड़े के पास

परमेश्वर के आगे सेवा करें। और जो होम की भेंट अध्यक्ष बिश्रामों में परमेश्वर के निमित्त चढ़ावे सो निश्चय छः मेम्ने और निश्चय एक मेढ़ा होवें। और मांस की भेंट एक मेढ़े के लिये एक इफ़ाह और उसके हाथ लगने के समान मेम्नों के लिये मांस की भेंट और एक एक इफ़ाह के लिये एक हिन्न तेल। और अमावास्या के दिन निश्चय एक बछवा और छः मेम्ने और एक मेढ़ा सब निश्चय चढ़ाये जायें। और वुह मांस की एक भेंट सिद्ध करे एक बैल के लिये एक इफ़ाह और मेढ़ा के लिये एक इफ़ाह और मेम्नों के लिये जैसा उसके हाथ लगे और एक एक इफ़ाह के लिये एक हिन्न तेल। और जब अध्यक्ष प्रवेश करे तब वुह फाटक के ओसारे में होके प्रवेश करे और उसी मार्ग से बाहर जाय। परन्तु जब देश के लोग बड़े पर्ब्बों में परमेश्वर के आगे आवें तब जो जन सेवा करने के लिये उत्तर फाटक से प्रवेश करे सो दक्खिन फाटक से बाहर जाय और जो दक्खिन फाटक से प्रवेश करे सो उत्तर फाटक से बाहर जाय जो जिस फाटक से भीतर आवे सो उसमें से बाहर न जाय परन्तु उसके साम्ने से बाहर जाय। और अध्यक्ष उनके मध्य में जब वे भीतर जायें तो वुह भीतर जाये और जब वे बाहर आवें तब बाहर आवे। और पर्ब्बों में और उत्सवों में भोजन की भेंट बैल पीछे एक इफ़ाह और मेढ़ा पीछे एक इफ़ाह और मेम्नों के लिये जैसा उसके हाथ लगे और एक एक इफ़ाह के साथ एक हिन्न तेल। सो जब अध्यक्ष परमेश्वर के निमित्त मन मंता होम की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे तब पूर्ब्ब ओर का फाटक उसके लिये खोला जाय और उसने जैसा बिश्राम में किया था तैसा अपने होम की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे तब वुह बाहर जाय और उसके जाने के पीछे एक जन कोई फाटक बंद करे। तू परमेश्वर के निमित्त प्रति दिन पहिले बरस का निश्चय एक

मेम्ना होम की भेंट के लिये सिद्ध करना हर बिहान को वैसा
१४ करना। और हर बिहान को उसके निमित्त मांस की भेंट
उसके लिये सिद्ध करना इफ़ाह का छठवां भाग और चोखे
पिसान में मिलाने को एक हिन्न तेल का तीसरा भाग यह
सब परमेश्वर की नित्य की बिधि के लिये सदा के लिये मांस
१५ की भेंट। यों वे मेम्ना को और मांस की भेंट को और तेल को
१६ हर बिहान नित्य की भेंट के लिये सिद्ध करें। प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि यदि अध्यक्ष अपने किसी बेटे को कुछ देय तो
उसी का अधिकार उसके बेटों का होगा उस अधिकार के वे
१७ अधिकारी होंगे। परन्तु यदि वुह अपने दासों में से एक को
अपने अधिकार में से कुछ दे डाले तो छुटकारे के बरस लों वुह
उसका होगा और उसके पीछे वुह अध्यक्ष कने फिर जायगा
१८ परन्तु उसका अधिकार उसके बेटों के लिये होगा। इसे अधिक
अध्यक्ष उन्हें उनके अधिकार से बाहर करने को अंधेर करके
लोगों का अधिकार न लेवे परन्तु वुह अपने बेटों को अपनेही
अधिकार में से देवे जिसतें मेरे लोगों में से हर एक जन अपने
१९ अपने अधिकार से छिन्न भिन्न न होवे। उसके पीछे वुह मुझे
फाटक के अलंग की पैठ में से याजकों की पवित्र कोठरियों में
से लाया जो उत्तर की ओर थी और क्या देखता हों कि पश्चिम
२० के दोनों अलंग स्थान हैं। तब उसने मुझे कहा कि यही स्थान
है जहां याजक चूक की भेंट और पाप की भेंट उसिनें जहां वे
मांस की भेंट को भूनें जिसतें वे लोगों को पवित्र करने को
२१ बाहर के आंगन में न ले जायें। फिर वुह मुझे बाहर के
आंगन में लाया और आंगन के चारो कोनों के लग मुझे
चलाया और क्या देखता हों कि एक एक आंगन के कोनों में
२२ एक एक आंगन। आंगन के चारो कोनों में चालीस हाथ लंबा
और तीस हाथ चौड़ा आंगन से आंगन मिला हुआ उनके
२३ चारो कोनें एकही नाप के। और उनमें चारो ओर एक

पांती स्थान उनको चारो ओर चार और पांतियों के नीचे चारो ओर उसिन्ने के स्थान थे। तब उसने मुझे कहा कि यह उसिनवैयों के स्थान हैं जहां मन्दिर के सेवक लोगों के बलि को उसिनावेंगे।

४७ सैंतालीसवां पर्ब्ब।

मन्दिर की देहली से जल का निकलना १—१२
देश का निवास १३—२३।

उसके पीछे वुह मुझे फेर घर के द्वार पर लाया और क्या देखताहों कि पूर्ब्ब ओर से घर की डेहरी के नीचे से पानी बहते हैं क्योंकि घर का साम्ना पूर्ब्ब ओर था और पानी घर की दहिनी ओर के नीचे से बेदी के दक्खिन ओर से उतरे। फिर वुह मुझे उत्तर के फाटक की ओर से बाहर लाया और मुझे बाहर के फाटक लों जो पूर्ब्ब की ओर है ले गया और क्या देखताहों कि दहिनी ओर से जल बहते हैं। और जब वुह जन जिसके हाथ में डोरी थी पूर्ब्ब ओर बाहर गया तो सहस्र हाथ नापा और मुझे पानी में से लाया और पानी घुट्टी भर थे। फिर उसने एक सहस्र नापा और मुझे पानी में से लाया और पानी घुठने भर थे फिर उसने एक सहस्र नापा और मुझे उसमें से लाया और पानी कटिलों थे। फिर उसने एक सहस्र नापा और नदी थी जिसे मैं पार न होसका क्योंकि पानी उभड़े और पैरने के जल ऊए और एक नदी जिसे पार न हो सक्ता था। और उसने मुझे कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू ने देखा है तब वुह मुझे नदी के तीर फिरवा लाया। सो जब मैं फिरा तो क्या देखताहों कि नदी के तीर इधर उधर बज्जत से पेड़ थे। तब उसने मुझे कहा कि ये जल पूर्ब्ब देश की ओर बहते हैं और बन में उतर के समुद्र में जाते हैं और जल को अच्छा करेंगे। फिर ऐसा

होगा की जहां कहीं ये दो नदियां बहेंगी हर एक जीवध
जो उधर से चलते हैं जीयेगा और इन पानियों के उ
आने से बहुतहीं मछलियां होंगी क्योंकि वे अच्छे होंगे
जहां कहीं नदी पहुंचती है तहां की हर एक वस्तु जीयेग
१० और ऐसा होगा कि मछुये उस पर एनगदी से एनअगल
लों खड़े होंगे जाल फैलाने के लिये स्थान होंगे उनकी मछलि
उनकी रीति के समान महासागर की मछलियों की
११ अति बहुत होंगी। परन्तु उसके चहले के स्थान और उ
१२ दल दल चंगे न होंगे वे खारी के लिये होंगे। और नदी
दोनों पार तीर पर भोजन के सारे पेड़ उगेंगे उनके
न मुरझांगे और उनके फल न मिटेंगे अपने अपने मास
समान नया फल लावेगा क्योंकि उनके जल पवित्र स्थान में
निकले हैं और उसके फल भोजन के लिये और उसके
१३ औषध के लिये होंगे। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि य
सिवाना होगा जिस्से तुम लोग इसराईल की बारह गोष्ठी
समान देश के अधिकारी होगे यूसफ़ के दो भाग हों
१४ तुम लोग क्या एक क्या दूसरा उसके अधिकारी हे
जिसके बिषय में मैं ने हाथ उठाके तुम्हारे पितरों को दि
१५ है और यह देश अधिकार के लिये तुम्हारा होगा। औ
उत्तर ओर के देश का सिवाना यही होगा हेसलून के म
१६ महा समुद्र से जिस्से मनुष्य जिदाद को जाते हैं। हमास औ
बिरोसाह और सिबरईम जो दमिश्क के और हमास
सिवानों के मध्य में है और हसार हत्तिकून जो हारान के सिव
१७ के लग है। और समुद्र से सिवाने हसारईनान दमिश्क
सिवाने और उत्तर की ओर उत्तर को और हमास
१८ सिवाना यही उत्तर अलंग है। और पूर्ब ओर तुम हारान
और दमिश्क से और गिलियाद से और इसराईल के
अर्दन के लग से सिवाने से पूर्ब समुद्र लों यही पूर्ब अलंग

और दक्खिन अलंग दक्खिन की ओर से तामार से विवाद के पानी कादेश में और नदी से महा सागर लों यही उत्तर के अलंग उत्तर की ओर । और पच्छिम अलंग भी सिवाने से महा सागर मनुष्य के हमास के सन्मुख आने लों यही पच्छिम अलंग होगा। इसी रीति से इसराईल की गोष्ठियों के समान तुम अपने लिये देश बांटना। और ऐसा होगा कि तुम लोग अपने लिये और परदेशियों के लिये, जो तुम्हों में निवास करते हैं, जिनके बालक तुम्हों में उत्पन्न होंगे उस पर चिट्ठी डाल के अधिकार के लिये बांट लेओ और वे इसराईल के संतानों में देश में उत्पन्न हुओं की नाईं होंगे वे इसराईल की गोष्ठियों में तुम्हारे साथ अधिकार पावेंगे। और प्रभु परमेश्वर कहता है कि ऐसा होगा कि जिस गोष्ठी में परदेशी रहते हैं उसमें तुम उनका अधिकार उन्हें देना।

४८ अठतालीसवां पर्ब्ब ।

कई गोष्ठियों का भाग १—७ मंदिर और याजक और लावी और नगर और अध्यक्ष का ठिकाना ८—२२ कई गोष्ठियों का भाग २३—२९ नगर का डौल और नाप और नाम ३०—३५

अब गोष्ठियों के नाम ये हैं उत्तर के अंत से हेसलून के मार्ग के सिवाने लों जैसा की कोई हमास हसारईनान को जाता है उस सिवाने लों और उत्तर की ओर दमिश्क का सिवाना हमास के सिवाने लों दान का भाग क्योंकि यही उसके पूर्ब्ब और पच्छिम अलंग हैं। और दान के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग अशर का भाग होगा। और अशर के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग लों नफ़ताली का। और नफ़ताली के सिवाने के लग पूर्ब्ब ओर से पच्छिम अलंग लों मनस्सा का। और मनस्सा के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से

६ पच्छिम अलंग लों इफ़राईम का। और इफ़राईम के सिवाने
७ के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग लों राऊबीन का। और
राऊबीन के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग लों
८ यहूदा का। और यहूदा के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से
पच्छिम अलंग लों उनको भेंट होगी जो वे पचीस सहस्र नल
चौड़ाई में और लम्बाई में अङ और भाग के समान पूर्ब्ब अलंग से
पच्छिम अलंग लों चढ़ावेंगे और पवित्र स्थान उसके मध्य में
९ होगा। परमेश्वर के लिये जो नैवेद्य तुम लोग चढ़ाओगे सो
पचीस सहस्र नल लंबाई में और दस सहस्र चौड़ाई में होगा।
१० और उनके लिये अर्थात् याजकों के लिये यही पवित्र नैवेद्य
होगा उत्तर ओर पचीस सहस्र लम्बाई और पच्छिम ओर
दस सहस्र चौड़ाई और पूर्ब्ब ओर दस सहस्र चौड़ाई और
दक्खिन ओर पचीस सहस्र लंबाई और उसके मध्य में परमेश्वर
११ के लिये पवित्र स्थान होगा। पवित्र किये गये सादूक के
बेटे याजक के लिये होगा जिन्हों ने मेरी विधिन को पाला
है और लावियों के समान भटक न गये जब कि इसराईल के
१२ संतान भटक गये थे। और देश का नैवेद्य जो चढ़ाया जायगा
सो लावियों के सिवाने के लग उनके लिये एक अति बड़ी पवित्र
१३ वस्तु होगी। और याजकों के सिवाने के साम्ने लावियों का पचीस
सहस्र लंबाई में और दस सहस्र चौड़ाई में और सारी लंबाई
१४ पचीस सहस्र और चौड़ाई दस सहस्र होगी। वे उसमें से
कुछ न बेंचें और न पलटें और देश का पहिला फल अलग न करें
१५ क्योंकि परमेश्वर के लिये पवित्र है। और जो पांच सहस्र पचीस
सहस्र के आगे चौड़ाई में बचा है सो नगर के रहने के और
आस पास के गाओं के स्थानों के लिये आस पास का सामान्य
१६ स्थान होगा और नगर उसी के मध्य में होगा। यही उसके
नाप होंगे उत्तर अलंग साढे चार सहस्र और दक्खिन अलंग
साढे चार सहस्र और पूर्ब्ब अलंग साढ़े चार सहस्र और पच्छिम

अलंग साढ़े चार सहस्र। और नगर के आस पास उत्तर की ओर अढ़ाई सौ और दक्खिन ओर अढ़ाई सौ और पच्छिम ओर अढ़ाई सौ होगा। और पवित्र भाग के सन्मुख उबरे हुए की लम्बाई में पूर्ब्ब ओर दस सहस्र और पच्छिम ओर दस सहस्र होगी और वुह पवित्र नैवेद्य के सन्मुख होगा और उसकी बढ़ती नगर के सेवकों के भोजन के लिये होगी। और जो नगर की सेवा करते हैं सो इसराईल की सारी गोष्ठियों में से उसकी सेवा करेंगे। वुह सारा नैवेद्य पचीस सहस्र इधर और पचीस सहस्र उधर होगा और तुम उस पवित्र नैवेद्य को चौकोर नगर के अधिकार के साथ चढ़ाना। और पवित्र नैवेद्य की इस अलंग और उस अलंग और पूर्ब्ब सिवाने की ओर नैवेद्य का पचीस सहस्र के सन्मुख नगर के अधिकार और पच्छिम ओर पचीस सहस्र के सन्मुख पच्छिम सिवाने की ओर अध्यक्ष के भागों के सन्मुख बचे हुए अध्यक्ष का होगा और घर का पवित्र स्थान उसके मध्य में होगा। और लावियों के अधिकार से और नगर के अधिकार से और जो अध्यक्ष का है उसके मध्य में से यहूदा के सिवाने के मध्य और बनियामीन के सिवाने के मध्य अध्यक्ष के लिये होगा। उबरी हुई गोष्ठियां पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग बनियामीन का भाग होगा। और बनियामीन के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग लों शमऊन का होगा। और शमऊन के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग लों इसाखार का। और इसाखार के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग लों ज़बलून का। और ज़बलून के सिवाने के लग पूर्ब्ब अलंग से पच्छिम अलंग लों जाद का। और जाद के सिवाने के लग दक्खिन अलंग के दक्खिन ओर और सिवाने तामार से झगड़े के जल कादश में और नदी के महा सागर लों होगा। तुम इसी देश को इसराईल की गोष्ठियों के अधिकार के लिये चिट्ठी डाल के बांटना प्रभु परमेश्वर कहता

३० है कि यही उनके भाग हैं। और उत्तर अलंग नगर के यें निव
३१ साढ़े चार सहस्र नाप। और नगर के फाटक इसराईल
गोष्ठियों के नाम के समान होंगे उत्तर अलंग तीन फा
राऊबीन का एक फाटक और यहूदा का एक फाटक औ
३२ लावी का एक फाटक। और पूर्व्व अलंग साढे चार सह
और तीन फाटक यूसफ़ का एक फाटक बनियामीन का
३३ फाटक दान का एक फाटक। दक्खिन अलंग साढ़े चार सह
नाप और तीन फाटक अर्थात् शमऊन का एक फाट
३४ इसाखार का एक फाटक ज़बलून का एक फाटक। पच्छि
अलंग साढ़े चार सहस्र और उनके तीन फाटक जाद
एक फाटक अशर का एक फाटक नफताली का एक फाटक
३५ चारो ओर अठारह सहस्र नाप था और उस दिन से उ
नगर का नाम होगा कि परमेश्वर वहां है।

दानियाल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

युहायाक़ीम का बंधुआई में पक्कंचाया जाना १—२ कई यहूदियों को अशुद्ध भोजन से पवित्र रखना ३—१६ परमेश्वर का उन्हें ज्ञान और श्रेष्ठ बुद्धि देना १७—२१।

यहूदा के राजा युहायाक़ीम के राज्य के तीसरे बरस बाबुल के राजा नबूख़दनज़ार ने यिरोशलीम पर आके उसे घेर लिया। और ईश्वर ने यहूदा के राजा युहायाक़ीम को अपने मन्दिर के कितने पात्र समेत उसके हाथ में करदिया जो वुह शीनार देश में अपने देव के मन्दिर में लेगया और उसने उन पात्रों को अपने देव के मन्दिर के भंडार में पक्कंचाया। और राजा ने अपने नपुंसकों के प्रधान असीनाज़ को कहा कि इसराईल के संतानों में से और राजा के बंशों में से और राज पुत्रों में से ला। वे निष्खोट और सुन्दर बालक हों और सारी बुद्धि में चतुर और ज्ञान में निपुण और बिद्या में प्रबीण जो राज भवन में खड़े होने के योग्य जिन्हें वे कलदानियों की बिद्या और भाषा सिखलावें। और राजा ने अपने भोजन पान में से उनके लिये प्रति दिन का भोजन और दाख रस ठहराया यों तीन बरस लों उनका प्रतिपाल करे जिसतें उसके पीछे वे राजा के आगे खड़े होवें। सो इन्हों में यहूदा के संतान में से दानियाल और हनानियाः और मशाईल और अज़ारियाः थे। नपुंसकों के प्रधान ने, जिनके

नाम रक्खे उसने दानियाल का बलतशाज़ार और हनानिय का शदराख और मशाईल का मशाख और अज़ारिया क
८ अबिदनिगो नाम रक्खा। परन्तु दानियाल ने अपने मन में ठाना कि मैं अपने को राजा की रसोंई के भाग से और उसके पान के दाख रस से अशुद्ध न करोंगा इस लिये उसने नपुंसके
९ के प्रधान से चाहा कि मैं अपने को अशुद्ध न करों। अब ईश्वर दानियाल को नपुंसकों के प्रधान की दृष्टि में अनुग्रह और
१० कोमल प्रेम दिया। तब नपुंसकों के प्रधान ने दानियाल से कहा कि मैं अपने प्रभ राजा से डरता हों जिसने तुम्हारे लिये खान पान ठहराया है वुह किस लिये तुम्हारे मुंह को तुम्हारे संगी बालकों के से मलीन देखे तब तुम राजा के आगे मेरे सिर को
११ जोखिम में लाओगे। तब दानियाल ने मलज़ार को कहा, जिसे नपुंसकों के प्रधान ने दानियाल और हनानियाः और
१२ मशाईल और अज़ारिया का करोड़ा किया था। कि मैं आप की बिनती करता हों कि हमें खाने को कलाई और पीने को
१३ जल दिला दस दिन लों अपने दासों को परखिये। तब हमारे रूप और उन बालकों के रूप, जो राजा की रसोंई से भाग खाते हैं आप के आगे देखेजायें और जैसा देखिये तैसा
१४ अपने सेवकों से कीजिये। सो इस बात में उसने उनका मान
१५ लिया और दस दिन लों उन्हें परखा। और दस दिन पीछे उनके रूप उन सब बालकों के से, जो राजा की रसोंई से भाग
१६ खाते थे सुन्दर और पुष्ट देखपड़े। योंहीं मलज़ार ने उनके भोजन के भाग को और उनके पीने के दाख रस को लेलिया
१७ और उन्हें कलाई दिई। सो ईश्वर ने इन चार लड़कों को ज्ञान और सारी बिद्या और बुद्धि में पऊंच दिई और दानियाल
१८ को दर्शनों और स्वप्नों में समझ दिई। जब कि वे दिन बीत गये जिनके विषय में राजा ने कहा था कि उन्हें भीतर लावें तब
१९ नपुंसकों का प्रधान उन्हें नबूक़दनज़ार के आगे लेगया। और

राजा ने उनसे बात चीत किई और उन सभों में से कोई दानियाल और हनानियाः और मशाईल और अज़ारियाः के समान न पाया गया सो ये लोग राजा के आगे खड़े रहने लगे। और समझ की और बुद्धि की सारी बातों में जो राजा ने उनसे पूछा तो उसने उन्हें सारे टोनहा और गणितकारियों से जो उसके समस्त राज्य में थे दस गुण भला पाया। और दानियाल कोरस राजा के पहिले बरस लों बना रहा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

राजा का स्वप्न देखना और उसके बुद्धिमानों का अर्थ बता न सकना १—१३ दानियाल और उसके मित्र का प्रार्थना करनी और भेद पाना १४—२३ दानियाल का राजा को उसका स्वप्न और अर्थ कहना २४—४५ दानियाल का प्रतिष्ठा पाना और बढ़ाया जाना ४६—४९।

नबूकदनज़ार ने अपने राज्य के दूसरे बरस में ऐसे ऐसे स्वप्न देखे जिनसे उसका चित्त व्याकुल हुआ और उसकी नींद उससे जाती रही। तब राजा ने सारे टोनहों और गणितकारियों और गुणियों और कलदानियों को बुलाने की आज्ञा किई जिसतें वे राजा के स्वप्नों को बतावें सो वे आये और राजा के आगे खड़े हुए। राजा ने उन्हें कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा और उस स्वप्न के जान्ने को मेरा चित्त व्याकुल हुआ। तब कलदानियों ने सुरियानी बोली में राजा से कहा कि महाराज सदा जीवें अपने दासों से स्वप्न कहिये और हम उसका अर्थ बतावेंगे। राजा ने उत्तर में कलदानियों से कहा कि बस्तु मुझसे जाती रही सो यदि तुम लोग वुह स्वप्न अर्थ सहित मुझे न जानाओगे तो टुकड़े टुकड़े किये जाओगे और तुम्हारे घर घूर किये जायेंगे। परन्तु यदि तुम लोग स्वप्न और उसका अर्थ

बताओगे तो मुझे दान और प्रतिफल और बड़ी प्रति
७ पाओगे इस लिये स्वप्न और उसका अर्थ मुझे बताओ। उ
ने फेर उत्तर देके कहा कि राजा अपने दासों को अपना स
८ कहें और हम उसका अर्थ बतावगे। राजा ने उत्तर देके क
कि मैं निश्चय जानताहों कि तुम लोग समय काटा चाहते
९ क्योंकि तुम देखते हो कि वुह बस्तु मुझ से जाती रही। पर
जो मेरे स्वप्न को मुझे न बताओगे तो तुम्हारे लिये एकही आ
है क्योंकि तुम ने झूठी और सड़ी हुई बातें बना रक्खी हैं
मेरे आगे कहो जबताईं समय टलजाय सो मुझे स्वप्न बता
और मैं जानोंगा कि तुम लोग उसका अर्थ बतासक्तेहो
१० कलदानियों ने राजा के आगे उत्तर देके कहा कि पृथिवी
ऐसा तो एक मनुष्य भी नहीं जो राजा की बात बता सके इ
लिये न कोई राजा न प्रभु न आज्ञाकारी हुआ जिसने ऐस
बातें किसी टोनहे अथवा गणितकारी अथवा किसी कलदा
११ से पूछाहो। राजा अनोखी बात पूछते हैं ईश्वरों को छो
जिनका बास शरीरों में नहीं ऐसा तो कोई नहीं जो उसे राज
१२ के आगे बता सके। इस कारण राजा रिसिया के अत्यन
कोपित हुआ और बाबुल के सारे बुद्धिमानों को नाश करने क
१३ आज्ञा किई। सो बुद्धिमानों को घात करने की आज्ञ
निकली तब उन्हों ने दानियाल को और उसके संगियों के
१४ घात करने को ढूंढ़ा। तब दानियाल मंत्र और
बुद्धि से राजा की सेना के प्रधान आर्यूक की ओर फिरा जो
१५ बाबुल के बुद्धिमानों को घात करने के लिये निकला था। और
उसने राजा की सेना के प्रधान आर्यूक को उत्तर देके कहा कि
राजा की ओर से आज्ञा बेग क्यों है तब आर्यूक ने वुह बात
१६ दानियाल को बताई। तब दानियाल ने भीतर जाके राजा
से बिनती किई कि मुझे अवकाश मिले और मैं राजा को
१७ उसका अर्थ बताऊंगा। उसके पीछे दानियाल ने अपने घर

जाके अपने संगी हनानियाः और मशाईल और अज़ारियाः
१८ के कहा। जिसतें वे इस भेद के विषय में स्वर्ग के ईश्वर के आगे
दया मांगें कि बाबुल के बुद्धिमानों के साथ दानियाल और
१९ उसके संगी नाश न होवें। तब वुह भेद रात के
दर्शन में दानियाल पर खुला तब दानियाल ने स्वर्ग के ईश्वर का
२० धन्य माना। और दानियाल ने उत्तर देके यों कहा कि ईश्वर
का नाम सर्वदा धन्य रहे क्योंकि बुद्धि और सामर्थ्य उसकी है।
२१ और वुह समयों और रितुन को पलटता है वुह राजाओं को
उठादेता है और राजाओं को बैठाता है वुह बुद्धिमानों को
२२ बुद्धि और समझवैयों को समझ देता है। वुह गहिरी
और गुप्त बस्तुन को प्रगट करता है और जानता है कि
अंधियारे में क्या है और उंजियाला उसके पास रहता है।
२३ मैं तेरा धन्य मानता हों और तेरी स्तुति करता हों हे मेरे
पितरों के ईश्वर तू ने मुझे बुद्धि और पराक्रम दिया है और
जो बस्तु हम ने तुझ्से चाही तू ने मुझे जनाई क्योंकि तू ने राजा
२४ की बात हम पर प्रगट किई। इसलिये दानियाल आर्यूक के
पास गया जिसे राजा ने बाबुल के बुद्धिमानों को नाश करने
को ठहराया था और उसे यों कहा कि बाबुल के बुद्धिमानों को मत
मारिये मुझे राजा के आगे लेचलिये और मैं राजा को उसका
२५ अर्थ बताऊंगा। तब आर्यूक ने दानियाल को राजा के आगे
शीघ्र लाके यों बिनती किई कि मैं ने यहूदा के बंधुओं के लड़कों
२६ में से एक को पाया जो राजा को उसका अर्थ बतावेगा। राजा
ने दानियाल से, जिसका नाम बलतशाज़ार था उत्तर देके कहा
क्या तू मुझे उस स्वप्न को, जो मैं ने देखा है और उसके अर्थ
२७ को बता सक्ता है?। दानियाल ने राजा के सन्मुख उत्तर दिया
और कहा वुह भेद जो राजा ने पूछा बुद्धिमान और
गणितकारी और टोनहें और भविष्यकथक राजा को बता
२८ नहीं सक्ते। परन्तु स्वर्ग में एक ईश्वर है जो भेद प्रगट करता है

और उसने नबूक़दनज़ार राजा को वुह बात जनाई है जो पिछ
दिनों में होगी आप का स्वप्न और आप के बिछौने पर के सिर
२९ दर्शन ये हैं। हे राजा आप जो हैं आप की चिंता आप क
शय्या पर आगई कि आगे को क्या होगा सो वह जो भेद प्रग
३० करता है आप को जनावता है कि क्या कुछ होगा। परन्तु
जो हों यह भेद मुझ पर इस लिये नहीं प्रगट ज़ुआ कि औ
जीवधारियों से अधिक बुद्धि रखताहूं पर यह इस लिये है वि
उसका अर्थ राजा को जनायाजाय और जिसतें आप अपने म
३१ की चिंतों को जानें। हे राजा आप देखते थे और ए
बड़ी मूर्त्ति देखी यही उत्तम चमक की महा मूर्त्ति आप के आगे
३२ खड़ी ज़ुई और उसकी सूरत भयावनी थी। इस मूर्त्ति का सिर
चोखे सोने का उसकी छाती और भुजा चान्दी की उसका पेट
३३ और उसकी जांघें पीतल की। उसकी टांगें लोहे की उसके
३४ पांव कुछ तो लोहे के और कुछ माटी के। आप देखतेही थे
कि एक पत्थर बिना हाथ से खोदा ज़ुआ जो उस मूर्त्ति के लोहे
और माटी के पाओं पर लगा और उन्हें टुकड़ा टुकड़ा
३५ किया। तब लोहा और माटी और पीतल और रूपा और सोना
सब टुकड़े टुकड़े होगये और खलिहान के चैती भूसे के समान
ज़ुए और पवन उन्हें यहां लों उड़ालेगया कि उनके लिये
स्थान न रहा और वुह पत्थर जिसने उस मूर्त्ति को मारा था
एक महा पर्ब्बत बनगया और सारी पृथिवी में पूर्ण ज़ुआ।
३६ स्वप्न तो यह और हम राजा के आगे उसका अर्थ
३७ बतावेंगे। हे राजा आप राजाओं के राजा हैं क्योंकि स्वर्ग के
ईश्वर ने आप को एक राज्य और पराक्रम और बल और
३८ ऐश्वर्य दिया है। और जहां जहां मनुष्य के बंश बसते हैं
जंगली पशुन को और आकाश के पक्षियों को उसने आप के
हाथ में किया है और आप को उन सभों पर आज्ञाकारी
३९ करदिया है यह सोने का सिर आप हैं। आप के पीछे एक

और राज्य आप से घाट प्रगट होगा और एक तीसरा राज्य पीतल का जो सारी पृथिवी पर प्रभुता करेगा। और चौथा राज्य लोहे के समान दृढ़ होगा और जिस रीति से कि लोहा तोड़डालता है और सब को बश में करता है और जैसा कि लोहा सब वस्तुन को टुकड़े टुकड़े करता है वुह टुकड़े टुकड़े करेगा और चूर करेगा। और जैसा कि आप ने देखा है कि पांव और अंगूठे कुछ तो कुम्हार की माटी के और कुछ लोहे के सो राज्य बिभाग किया जायगा परन्तु उसमें लोहे का बल होगा और जैसा कि आप ने देखा कि लोहा चहले से मिला हुआ था। और पांव के अंगूठे कुछ लोहे के और कुछ माटी के वुह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ आरर होगा। और जैसा कि आप ने देखा कि लोहा चहले से मिला हुआ था वे अपने को मनुष्य के बंश से मिलावेंगे परन्तु वे आपुस में मिले न रहेंगे जिस रीति से लोहा माटी से नहीं मिलता। और इन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का ईश्वर एक राज्य स्थापित करेगा जो कभी नष्ट न होगा और उसका राज्य और लोगों पर न छोड़ाजायगा परन्तु वुह टुकड़ा टुकड़ा करेगा और इन राज्यों को भस्म करेगा और आप सर्बदा रहेगा। जैसा कि आप ने देखा कि पत्थर पहाड़ से बिना हाथ से खोदा हुआ और कि उसने उस लोहे और पीतल और माटी और रूपे और सोने को टुकड़े टुकड़े किया सो महान ईश्वर ने राजा को वुह बात जनाई जो इसके पीछे होगा स्वप्न निश्चय है और उसका अर्थ सत्य। तब राजा नबूक़दनज़ार औंधे गिरा और दानियाल को दंडवत किया और आज्ञा किई कि उसको भेंट और सुगंध चढ़ावें। राजा ने दानियाल को उत्तर देके कहा इसमें कुछ संदेह नहीं कि तुम्हारा ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर और राजाओं का प्रभु है और भेदों को प्रगट करनिहार है कि तू इस भेद को प्रगट कर सका। तब राजा ने

दानियाल को महान पुरुष किया और उसे बड़े बड़े दान दि
और उसे बाबुल के सारे प्रदेशों का आज्ञाकारी किया औ
बाबुल के समस्त बुद्धिमानों पर और अध्यक्षों पर प्रधा
४९ किया। तब दानियाल के कहने से उसने शदराख और मशा
और अबिदनिगो को बाबुल के प्रदेश के कार्यों पर करोड़
किया परन्तु दानियाल राजा की डेवढ़ी पर रहने लगा।

३ तीसरा पर्ब्ब।

राजा का मूर्त्ति बनानी और आज्ञा बिरुद्ध कई यहूदियों का उसको न पूजना १—१२ राजा का कोपित होना और उन्हें आग की भट्ठी में डालना १३—२३ चार जन का आग में फिरना सुखी होना और राजा के ईश्वर का धन्य मानना २४—३०।

१ नबूकदनज़ार राजा ने एक सोने की मूर्त्ति बनाई जिसकी ऊंचा
साठ हाथ थी और उसकी चौड़ाई छः हाथ उसने उसे बाबु
२ के प्रदेश में दूरा के चौगान में स्थापित किया। त
नबूक़दनज़ार राजा ने कुंअरों और अध्यक्षों और सेनापति
और न्यायियों और भंडारियों और मंत्रियों और चकलेदारे
और प्रदेशों के सारे आज्ञाकारियों को एकट्ठा करने को भेज
कि उस मूर्त्ति की प्रतिष्ठा के लिये, जिसे राजा नबूक़दनज़ार
३ स्थापित किया था आवें। तब कुंअर और अध्यक्ष औ
सेनापति और न्यायी और भंडारी और मंत्री और चकलेदा
और प्रदेशों के सारे आज्ञाकारी उस मूर्त्ति की प्रतिष्ठा के लि
जिसे नबूक़दनज़ार राजा ने स्थापित किया था एकट्ठे हुए औ
उस मूर्त्ति के आगे जिसे नबूक़दनज़ार ने स्थापित किया थ
४ खड़े हुए। तब एक ढिंढोरिये ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे लोगे
५ और जातियो और भाषाओ तुम्हें आज्ञा होती है। कि जि

समय तुम लोग सींगा और बासुरी और बीणा और भेरी और ढोल और सितार और हरएक प्रकार के बाजों का शब्द सुनो तुम औंधे गिरो और उस सोने की मूर्त्ति की जिसे नबूक़दनज़ार राजा ने स्थापित किया है पूजा करो। और जो कोई औंधागिर के पूजा न करेगा उसी घड़ी वुह आग के जलते भट्ठे में डाला जायगा। सो उसी घड़ी जब सब लोगों ने सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल और हरएक प्रकार के बाजों का शब्द सुना सारे लोग और जाति और भाषा औंधे गिरे और उस सोने की मूर्त्ति को, जिसे नबूक़दनज़ार राजा ने स्थापित किया था पूजा किई।

सो उस समय में कितने कलदानी पास आये और यहूदियों पर दोष लगाया। और नबूक़दनज़ार राजा के आगे बिनती किई कि हे राजा सदाजीव। हे राजा आप ने आज्ञा किई कि हरएक मनुष्य जो सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल और सितार और हरएक प्रकार के बाजों का शब्द सुने सो औंधे गिर के उस सोने की मूर्त्ति की पूजा करे। और जो कोई औंधे गिर के पूजा न करेगा सो आग के जलते भट्ठे में डाला जायगा। कितने यहूदी हैं जिन्हें आप ने बाबुल के प्रदेश के कार्यों पर करोड़ा किया है उनमें शदराख़ और मशाख़ और अबदनिगो हैं हे राजा इन मनुष्यों ने आप का आदर न किया वे आप के देव की सेवा नहीं करते न आप की स्थापित सोने की मूर्त्ति की पूजा करते हैं। तब नबूक़दनज़ार ने कोप और क्रोध से आज्ञा किई कि शदराख़ और मशाख़ और अबदनिगो को लावें तब वे इन मनुष्यों को राजा के आगे लाये। नबूक़दनज़ार यह कहिके उन्हें बोला कि अरे शदराख़ और मशाख़ और अबदनिगो क्या सच है कि तुम मेरे देवों की सेवा नहीं करते और उस सोने की मूर्त्ति को, जिसे मैं ने स्थापित किया पूजा

१५ नहीं करते? । सो यदि तुम सिद्ध रहो कि जिस घड़ी सं
और बांसुरी और वीणा और भेरी और ढोल और चि
और हरएक प्रकार के बाजों का शब्द सुन के औंधे गिरो
उस मूर्त्ति की, जो मैं ने बनाई है पूजा करो तो भला प
यदि तुम पूजा न करोगे तो तुम उसी घड़ी आगके
जलते भट्ठे में डाले जाओगे और वुह कैानसा ईश्वर है
१६ तुम्हें मेरे हाथों से बचावेगा? । शदराख़ और मश
और अबदनिगो ने उत्तर देके राजा से कहा कि
नबूक़दनज़ार हम इस विषय में आप को उत्तर देने में चिं
१७ नहीं करते । यदि हो तो हमारा ईश्वर, जिसकी हम से
करते हैं हमें उस आग के जलते भट्ठे स बचा सक्ता है औ
१८ हे राजा वही हमें आप के हाथ से छुड़ावेगा । परन्तु य
नहीं तो हे राजा आप को जानपड़े कि हम आप के देवों
सेवा न करेंगे और न उस सोने की मूर्त्ति की जिसे आप
१९ स्थापित किया है पूजा करेंगे । तब नबूक़दनज़ार कोपम
हुआ और उसका रुप शदराख़ और मशाख़ औ
अबदनिगो पर फिरगया और उसने कहा और आज्ञा कि
कि वे भट्ठे को उस परिमाण से, जो उसका था सात गुण अधि
२० धधका देवें । फिर उसने अपनी सेना के शक्तिमान बलवान
को आज्ञा किई कि शदराख़ और मशाख़ और अबदनिगे
२१ को बांध के जलते भट्ठे में डालदेवें । तब ये मनुष्य अपनी चद्दरे
और मोजों और पगड़ियों और दोहरों में बांधे गये औ
२२ जलते भट्ठे के मध्य में डालेगये । इस कारण कि राजा की आज्ञ
आवश्यक थी और भट्ठा अत्यंत तप्त था उस आग की लवर
उन मनुष्यों को जिन्हों ने शदराख़ और मशाख़ और अबदनिगे
२३ को बांधा था नाश किया । और ये तीन मनुष्य शदराख़ और
मशाख़ और अबदनिगो बंधेहुए उस आग के जलते भट्ठे
२४ मध्य में गिर पड़े । तब नबूक़दनज़ार राजा आश्चर्यित हुआ

और शीघ्रता से उठके बोला और अपने मंचियों से कहा क्या हमने तीन जन को बांध के जलती आग के मध्य में नहीं डाला? उन्हों ने राजा को उत्तर देके कहा कि सत्य है हे राजा। उसने उत्तर देके कहा कि देखो मैं चार जन को छूटा हुआ आग के मध्य में फिरते देखता हों और वे क्लिष्ट नहीं हैं और चौथे का डौल ईश्वर के पुत्र के ऐसा है। तब नबूक़द्नज़ार जलते भट्ठे के द्वार पर आया और यों बोला और पुकारा कि हे शद्राख़ और मशाख़ और अबद्निगो अत्यंत महान ईश्वर के सेवको बाहर निकलो और निकल आओ तब शद्राख़ मशाख़ और अबद्निगो आग के मध्य से निकल आये। और कुंअरों और अध्यक्षों और सेनापतिन और राजा के मंत्रियों ने एकट्ठे होते इन मनुष्यों को देखा जिनके शरीरों पर आग का कुछ पराक्रम न था और उनके सिर का एक बाल भी न झौंसा था और उनके वस्त्र न बदले थे और उन पर आग का बास न लगा था। तब नबूक़द्नज़ार बोला और कहा कि शद्राख़ और मशाख़ और अबद्निगो का ईश्वर धन्य है जिसने अपने दूत को भेजा और अपने सेवकों को, जो उस पर भरोसा रखते थे बचाया और राजा की बात को पलट दिया और उनके शरीरों को जतन से रक्खा कि वे अपनेही ईश्वर को छोड़ किसी देव की सेवा और पूजा न करें। सो मेरी आज्ञा यह है कि हर एक लोग और जाति और भाषा जो शद्राख़ और मशाख़ और अबद्निगो के ईश्वर के विषय में कोई अनुचित बात कहेंगे उनके टुकड़े टुकड़े किये जायेंगे और उनके घर घूर किये जायंगे क्योंकि ऐसा कोई ईश्वर नहीं जो इस रीति से बचासके। तब राजा ने शद्राख़ और मशाख़ और अबद्निगो को बाबुल के प्रदेश में भाग्यमान किया।

४ चौथा पर्ब्ब ।

राजा का ईश्वर का धन्य मानना और अपने स्वप्न का बिषय कहना १—७ दानियाल का उसका अर्थ बताना ८—२७ स्वप्न का पूरा होना और राजा का पशुन में रहना २८—३३ फेर सज्ञान होके राज्य पाना और ईश्वर की स्तुति करनी ३४—३७।

१ नबूकदनज़ार राजा की ओर से सारे लोगों और जातों औ भाषों के लिये जो सारी पृथिवी में बसते हैं कुशल बढ़ताजा
२ मुझे अच्छा लगा कि उन चिह्नों और आश्चर्यों को, जो मह
३ ईश्वर ने मुझसे किया तुम्हें देखाऊं। उसके लक्षण क्याही
और उसके आश्चर्य कैसे शक्तिमान उसका राज्य सनातन
४ राज्य और उसकी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लों।
नबूकदनज़ार अपने घर में चैन करता था और अपने राजभ
५ में लहलहाता था। मैं ने एक स्वप्न देखा जिसने मुझे डरा
और शय्या पर के सोच और सिर के दर्शनों से व्याकुल हुआ
६ तब मैं ने आज्ञा किई कि बाबुल के सारे बुद्धिमानों को मे
७ आगे लावें कि वे स्वप्न का अर्थ मुझे बतावें। सो टोनहे औ
गणितकारी और कसदानी और भविष्यकथक आये औ
मैं ने उनके आगे स्वप्न कहा परन्तु उन्हों ने मुझे उसका अर्थ
८ बताया। परन्तु अन्त में दानियाल मेरे आगे आया जिस
नाम मेरे देव के नाम के समान बलतशाज़ार था उसमें पवि
९ ईश्वरों का आत्मा है उसके आगे मैं ने अपना स्वप्न कहा।
बलतशाज़ार टोनहे के गुरु मैं जानता हों कि पवित्र ईश्वरों
आत्मा तुझ में है और कोई भेद तुझे व्याकुल नहीं करता उ
स्वप्न का दर्शन जो मैं ने देखा है और उसका अर्थ मुझे बता
१० मेरी शय्या पर के सिर का दर्शन यह था मैं देखता था औ
क्या देखता हों कि जगत के मध्य में एक पेड़ है जिसकी ऊंचा
११ बड़ी थी। और वुह पेड़ बढ़ के मोढ़ हुआ और उसकी ऊंचा

स्वर्ग लों पहुंची और उसकी दृष्टि सारी पृथिवी के अंत्य लों। उसके पत्ते सुन्दर थे और उसका फल बहुत और उसमें सब के लिये भोजन था जंगली पशु उसके नीचे छाया पावते थे और आकाश के पंछी उसकी डालों पर बसते थे और सारे जीवधारी उसी भोजन पाते थे। मैं ने अपने शैय्या के सिर के दर्शन में क्या देखता हों कि एक पहरू और एक धर्मी जन स्वर्ग से उतरा। वुह पराक्रम से पुकार के यों बोला कि उस पेड़ को काटडालो और उसकी डालियां छांटो उसके पत्ते झाड़ो और उसका फल बिथरा देउ और पशु उसके तले से जाते रहें और पंछी उसकी डालों पर से। तथापि उसकी जड़ के ठूंथ को पृथिवी में हां लोहे और पीतल के बंधन से खेत की कोमल घास में रहने दे और आकाश की ओस से भींगे और उसका भाग पशुन के संग पृथिवी की घास होवे। उसका मन मनुष्य के से पलटजाय और पशु का मन उसे दियाजाय और उस पर सात समय बीतजाय। सो पहरूओं की आज्ञा से यह बात है और पवित्र जनों की बात से है जिसतें जीवत जानें कि अत्यंत महान मनुष्यन के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे वुह चाहता है उसे देता है और उसपर अत्यंत निन्दित मनुष्यों को बैठाता है। मैं नबूख़दनज़ार राजा ने यह स्वप्न देखा है सो हे बलतशाज़ार तू उसका अर्थ वर्णन कर क्योंकि मेरे राज्य के सारे बुद्धिमानों में सामर्थ्य नहीं कि मेरे आगे उसका अर्थ करें परन्तु तू सक्ता है क्योंकि पवित्र ईश्वरों का आत्मा तुझ में है।　　तब दानियाल जिसका नाम बलतशाज़ार था एक घड़ी भर आश्चर्यित हुआ और उसकी चिंतों ने उसे व्याकुल किया तब राजा बलतशाज़ार से यह कहके बोला कि स्वप्न अथवा उसका अर्थ तुझे व्याकुल न करे बलतशाज़ार ने उत्तर देके कहा, मेरे प्रभु यह स्वप्न उनके लिये होवे जो आप से बैर रखते हैं और उसका अर्थ आप के शत्रुन

२० पर। जो पेड़ आप ने देखा कि उगा और पोढ़ हुआ जिसव
ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची और उसकी दृष्टि सारी पृथिवी लों
२१ जिसके पत्ते सुन्दर थे और जिसका फल बहुत जिस
सब के लिये भोजन था जिसके तले बनैले पशु रहते थे औ
२२ जिसकी डालों पर आकाश के पक्षी बसेरा रखते थे। सो
राजा आप हैं जो बढ़के पोढ़ हुए हैं क्योंकि आप क
महिमा बढ़गई और आकाश लों पहुंची और आप का राज
२३ पृथिवी के अन्त लों है। और जैसा कि राजा ने एक पहर
और एक धर्मी को स्वर्ग से यह कहते हुए उतरते देखा कि उ
पेड़ को काटडालो और उसे नाश करो तथापि जड़ों के खू
को पृथिवी में हां लोहे और पीतल के बंधन से खेत के कोमल
घास में पड़ी रहने देउ और आकाश की ओस से भींगे और
उसका भाग बनैले पशुन के संग होवे यहां लों कि सात समय
२४ उस पर बीतजाय। सो हे राजा उसका अर्थ यह है और
अत्यंत महान की आज्ञा यह है जो मेरे प्रभु राजा पर आ
२५ है। सो वे आप को मनुष्यों में से हांक देंगे और आप का
बसाव बनैले पशुन के संग होगा और वे आप को बैलों की नाईं
घास खिलावेंगे और आकाश की ओस से भींगावेंगे और सात
समय आप पर बीतेंगे जब लों आप जानें कि अत्यंत महान
मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और उसे जिसे चाहता
२६ है देता है। और जैसा कि उन्हों ने उस पेड़ के जड़ों की खूंट
छोड़ने की आज्ञा किई जब आप जानजायेंगे कि स्वर्गों का
राज्य है आप का राज्य आप के लिये निश्चय बना रहेगा।
२७ सो हे राजा मेरा मंत्र मान लीजिये और अपने पापों को धर्म
से और अपने कुकर्मों को कंगालों पर दया करने से दूर
कीजिये क्या जाने आप की कुशलता की बढ़ती होय।
२८।२९ सब कुछ नबूकदनज़ार राजा पर पड़ीं। बारह मास के
३० अंत्य में वुह बाबुल के राज्य के भवन पर फिरता था। राजा

बोला और कहा क्या यह वुह महा बाबुल नहीं है जिसे मैं ने अपने पराक्रम के बल से और अपनी महिमा की प्रतिष्ठा के लिये राज्य के घर के लिये बनाया। राजा के मुंहीं में यह बात होतेही आकाश बाणी ऊई कि हे राजा नबूक़दनज़ार तुझे कहा जाता है कि राज्य तुझसे जाता रहा। और वे तुझे मनुष्यों में से हांक देंगे और तेरा बसाव बनैले पशुन में होगा वे तुझे बैलों की नाईं घास खिलावेंगे और तुझ पर सात समय बीत जायेंगे यहां लों कि तू जाने कि अत्यंत महान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता है वुह उसे देता है। उसी घड़ी नबूक़दनज़ार पर यह बात संपूर्ण ऊई और वुह मनुष्यों में से निकालागया और बैलों की नाईं घास खाने लगा और उसका देह आकाश की ओस से भीगने लगा यहां लों कि उसके बाल गिद्ध की नाईं बढ़े और उसके नह पंछियों के समान। और उन दिनों के पीछे मुझ नबूक़दनज़ार ने स्वर्ग की ओर आंख उठाई और मेरी बुद्धि फेर मुझे मिली मैं ने अत्यंत महान का धन्य माना और स्तुति और उसकी प्रतिष्ठा किई जो सर्बदा लों जीता है जिसकी प्रभुता सनातन की प्रभुता है और जिसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी लों। और पृथिवी के सारे बासी तुच्छ की नाईं गिनेजाते और वुह अपनी इच्छा के समान स्वर्ग की सेना में और पृथिवी के बासियों में करता है और कोई उसका हाथ रोक नहीं सक्ता अथवा उसे कहे कि तू क्या करता है। उसी समय मेरा बिचार मुझ में फिर आया और मेरे राज्य के बिभव के लिये मेरी प्रतिष्ठा और बिभव मुझ में फिर आया और मेरे मंत्री और मेरे प्रधानों ने मुझे ढूंढ़ा और मैं अपने राज्य पर स्थिर ऊआ और अत्युत्तम महिमा मेरे लिये अधिक ऊई। अब मैं नबूक़दनज़ार धन्यमानता और स्तुति करता हों और स्वर्ग के राजा की प्रतिष्ठा करता हों उसके सारे कार्य सत्य

और उसकी चाल न्याय सहित हैं और जो अभिमान चलते हैं उन्हें निन्दित करसक्ता है।

५ पांचवां पर्व्व ।

बलतश्राज़ार राजा का मन्दिर के पात्रों को अशुद्ध करना और मूर्त्तिन की स्तुति करनी १—४ एक हाथ का भीत पर लिखना और दानियाल को छोड़ किसी का अर्थ बता न सकना ५—२८ राजा का मारा जाना और फारसियों का राज्य होना २९—३१ ।

१ बलतश्राज़ार राजा ने अपने सहस्र प्रधानों के लिये एक ब जेवनार किया और उन सहस्र के आगे दाख रस पीया
२ बलतश्राज़ार ने जब दाख रस चीखा तो सोने चांदी के पात्रों लाने की आज्ञा किई जिन्हें उसका पितामह नबूक़दनज़ यिरोशलीम के मन्दिर में से ले आया था जिसतें राजा औ उसके कुंअर उसकी स्त्रियां और उसकी सुरैतिन उन
३ पीवें। तब वे सोने के पात्रों को लाये जो ईश्वर के घर के मन्दि से जो यिरोशलीम में है पहुंचाये गये थे राजा ने और उस कुंअरों ने और उसकी स्त्रियों और सुरैतिनों ने उनमें पीय
४ उन्हों ने दाख रस पीया और सोने चांदी और पीतल औ लोहे और काठ और पत्थर के देवों की स्तुति किई।
५ उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की अंगुलियों ने निकल के र भवन की भीत के गच पर, जो दीपक के सन्मुख थी लिखा औ
६ राजा ने उस हाथ के टुकड़ों को लिखते देखा। तब राजा झलक बदलगई और उसकी चिंतों ने उसे व्याकुल किया य क्योंकि उसकी कटि की गांठ गांठ ढीली होगई और उस
७ घुठने एक दूसरे से टक्कर खाने लगे। राजा ने पराक्रम पुकारा कि गणितकारी और कलदानी और भविष्यक

पऊंचाये जायें और राजा बाबुल के बुद्धिमानें का बोला और कहा कि जो कोई इस लिखे को पढ़ेगा और उसके अर्थ को मुझे बतावेगा सो बैंजनी वस्त्र से पहिनायाजायगा और उसके गले में सोने का हार डालाजायगा और राज्य में तीसरा आज्ञाकारी होगा। तब राजा के सारे बुद्धिमान आये परन्तु वे उस लिखे को न पढ़सके न उसके अर्थ राजा को बता सके। तब बलतशाज़ार अत्यंत व्याकुल ऊआ और उसकी झलक बदल गई और उसके प्रधान घबराये। परन्तु राजा की बातों और प्रधानों की बातों के कारण से रानी भोजनभवन में आई और यह कहके बोली कि हे राजा सर्बदा जीव आप की चिन्ता आप को व्याकुल न करें और आप का स्वरूप न बदले। आप के राज्य में एक मनुष्य है जिसमें पवित्र देवें का आत्मा है और आप के पितामह के दिनों में ईश्वरीय बुद्धि के समान प्रकाश और बुद्धि और ज्ञान उसमें पाये जाते थे जिसे नबूखदनज़ार आप के पितामह राजा ने अर्थात् आप के पिता राजा ने टोनहों और गणितकारियों और कलदानियों और भविष्यकथकों का गुरु किया था। जैसा कि एक अत्युत्तम आत्मा और ज्ञान और बुद्धि और स्वप्नों के अर्थ कहने और कठिन बातों को बताने की और संदेहों के मिटाने की सामर्थ्य उसी दानियाल में पाई गई जिसका नाम राजा ने बलतशाज़ार रक्खा अब दानियाल बुलाया जाय और वुह अर्थ बतावेगा। तब दानियाल राजा के आगे पऊंचाया गया और राजा दानियाल से यह कहि के बोला क्या तू वही दानियाल है जो यहूदा के बंधुओं के सन्तानों में से है जिसे मेरा पितामह राजा यहूदिया से ले आया?। मैंने तेरा समाचार सुना है कि देवें का आत्मा तुझ में है और प्रकाश और बुद्धि और अत्युत्तम ज्ञान तुझ में पाया जाता है। सो बुद्धिमान और गणक मेरे आगे पऊंचाये गये कि उस लिखेऊए को पढें और उसके

१६ अर्थ मुझे बतावें परन्तु उसके अर्थ न बता सके। और मैं
तेरा समाचार सुना है कि तू अर्थों को कहिसक्ता है और संदे
मिटा सक्ता है अब यदि तू उस लिखे को पढ़ सके और उस
अर्थ मुझे बतासके तो तू लाल वस्त्र से पहिनाया जायगा औ
तेरे गले में सोने का हार डाला जायगा और राज्य में तीसर
१७ आज्ञाकारी होगा। तब दानियाल ने उत्तर देके राजा
आगे कहा कि आप के दान आप के पास रहें और अपन
प्रतिफल दूसरे को दीजिये तथापि राजा के आगे इस लिखे
१८ को पढ़ोंगा और उसके अर्थ उसे बताओंगा। हे राज
अत्यंत महान ईश्वर ने आप के पिता नबकदनज़ार को राज
१९ और महिमा और विभव और प्रतिष्ठा दिई थी। और उ
महिमा के कारण से जो उसने उसे दिई थी सारे लोग औ
जाति और भाषा उसके आगे डरते और थर्थराते थे जि
वुह चाहता था उसे बधन करता था और जिसे चाहता था उ
जीता छोड़ता था और जिसे चाहता था उसे बैठाता था औ
२० जिसे चाहता था उसे उतार देता था। परन्तु जब अहंकार
कार्य करने को उसके मन में घमंड समाया और उस
अन्तःकरण कठोर ऊआ तब वुह अपने राज्य के सिंहासन
२१ उतारा गया और उसका विभव ले लिया गया। और वुह मनु
के पुत्रों में से निकाला गया और उसका मन पशु के मन की ना
होगया और उसका बसाव बनैले गदहों में ऊआ और
उसे बैलों की नाईं घास खिलानेलगे और उसका देह आका
की ओस से भींग गया जबलों उसने जाना कि अत्यंत महा
ईश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहत
२२ है उसे उसपर ठहराता है। और हे बलतशाज़
यद्यपि आप यह सब जानते थे उसका पुत्र होके आप
२३ अपने मन को नम्र न किया। परन्तु आप ने स्वर्ग के प्रभु के सन्मु
अपने को उभाड़ा और वे उसके मन्दिर के पात्रों को आप

आगे लाये और आपने और आप के प्रधानों ने आप की पत्नियों और आप की सुरैतिनों ने उनमें दाख रस पीया है और आप ने चांदी और सोने और पीतल और लोहे और काठ और पत्थर के देवों की स्तुति किई जो न देखते हैं न सुनते हैं और न जानते हैं और आप ने उस ईश्वर की महिमा न किई जिसके हाथ में आप का खास है और आप की सारी चाल जिसकी हैं । तब उसकी ओर से हाथ का भाग भेजागया और यह लिखा हुआ लिखा गया । और यह वुह लिखाहुआ है जो लिखागया, मीनी मीनी टीक़ल यूफारसिन । मीनी का यह अर्थ है कि ईश्वर ने तेरे राज्य की गिनती किई और उसे समाप्त किया । टीक़ल, कि तू तुला में तोला गया और घाट ठहरा । पीरिस, कि तेरा राज्य बांटा गया और माज़ी और फारसी को दिया गया । तब बलतशाज़ार ने आज्ञा किई और उन्हों ने दानियाल को लाल बस्त्र पहिनाया और सोने का हार उसके गले में डाला और उसके विषय में प्रचार करवाया कि वुह राज्य का तीसरा आज्ञाकारी होगा । उसी रात को कलदानियों का राजा बलतशाज़ार मारा गया । अब बासठ बरस की बय में दारा ने, जो मदयानी था, इस राज्य को लेलिया ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

दानियाल का बढ़ाया जाना और डाह में पड़ना १—५ और राजा की आज्ञा निकलनी दानियाल का उसे न मानना और सिंहों में डाला जाना ६—१७ दानियाल का सिंहों के मुंह से बचना और उसके बैरियों का भक्षण होना १८—२८ ।

दारा की इच्छा हुई कि राज्य पर सारे राज्यों की प्रभुता के लिये एक सौ बीस अध्यक्षों को ठहरावे । और उन पर

तीन प्रधान जिनमें दानियाल श्रेष्ठ था कि अध्यक्ष उ
३ लखा देवें जिसतें राजा घटी न उठावे। तब यह दानिया
सारे प्रधानों और अध्यक्षों पर बढ़ाया गया इस कारण
एक अत्युत्तम आत्मा उसमें था और राजा ने चाहा कि उ
४ सारे राज्य पर ठहरावे। तब प्रधान और अध्य
दानियाल के विरुद्ध राज्य के विषय में कोई कारण ढूंढ़ते थे पर
वे कोई दोष और कोई कारण न पासके क्योंकि वुह बिश्वस्त
५ और उसमें कुछ चूक और दोष न पायागया। तब इन मनुष्
ने कहा कि हम दानियाल पर उसके ईश्वर की व्यवस
६ के विषय को छोड़ कुछ दोष का कारण न पावेंगे। त
ये प्रधान और अध्यक्ष राजा के आगे ऊल्लर के संग आ
और यों उसकी बिनती किई कि दारा राजा सदा लों जीवे
७ राज्य के सारे प्रधान और अध्यक्ष और कुंअर और मंत्र
और सेनापतिन ने एकट्ठे होके एक मता किई है कि राजा
विधि ठहरावें और एक दृढ़ आज्ञा करें कि आप से छो
जो कोई किसी ईश्वर से अथवा मनुष्य से तीस दिन लों कु
८ मागे हे राजा वुह सिंह की मांद में डाला जाय। अब हे राज
इस आज्ञा को दृढ़ कीजिये और लिखित पर नाम लिखि
जिसतें माज़ी और फारसियों के शास्त्र के समान जो फिरत
९ नहीं न पलटे। सो दारा राजा ने उस लिखित और आज्ञ
१० पर नाम लिखा। और जब दानियाल ने जान
कि उस लिखित पर चिक्ल होगये वुह अपने घर गया और
उसके शयनस्थान के झरोखे यिरोशलीम की ओर खुलेऊए
वुह आगे की नाईं दिन भर में तीन वार घुठनों पर झुकत
और प्रार्थना करता था और ईश्वर के आगे धन्य मानत
११ था। तब ये लोग एकट्ठे ऊए और उन्हों ने दानियाल के
प्रार्थना करते और अपने ईश्वर के आगे बिनती करते पाया
१२ तब वे पास आये और राजा के आगे राजा की आज्ञा

विषय में कहा कि आपने उस आज्ञा पर नहीं लिखा कि हर एक मनुष्य आप से छोड़ जो किसी ईश्वर से अथवा मनुष्य से तीस दिन के भीतर हे राजा कुछ मांगे सो सिंहों की मांद में डाला जाय राजा ने उत्तर दिया और कहा कि यह बात सत्य है और माज़ी और फारसियों के शास्त्र के समान नहीं पलटती । तब उन्हों ने उत्तर दिया और राजा के आगे बिनती किई कि दानियाल, जो यहूदा के संतान के बंधुओं में से है हे राजा आप को नहीं मानता और न आप की आज्ञा को, जिस पर आप ने लिखा परन्तु प्रति दिन तीन बार प्रार्थना करता है । तब राजा ये बातें सुन के अपने से अत्यंत उदास हुआ और दानियाल को छुड़ाने का मन किया और सूर्य के अस्त लों उसे छुड़ाने का यत्न करता रहा । फेर वे मनुष्य राजा के पास एकट्ठे हुए और राजा से कहा कि जान ले हे राजा कि माज़ी और फारसियों का शास्त्र यह है कि जो आज्ञा और रीति राजा ठहरावे पलटी न जाय । तब वे राजा की आज्ञा से दानियाल को लाये और उसे सिंहों की मांद में डाल दिया और राजा दानियाल को यह कह के बोला कि तेरा ईश्वर जिसकी तू सदा सेवा करता है वही तुझे बचावेगा । और एक पत्थल पहुंचाया जाके मांद के मुंह पर धरा गया और राजा ने अपने छाप से और अपने प्रधानों के छाप से छाप किया जिसतें ठहराई हुई दानियाल के विषय में पलटी न जाय । तब राजा अपने भवन में गया और रात उपवास में काटी और बाजे के मंच को कोई उसके आगे न लाया और उसकी नींद उससे जाती रही । तब बिहान को बड़े तड़के राजा उठा और शीघ्रता से सिंहों की मांद पर गया । और जब वुह मांद पर पहुंचा उसने बिलाप के शब्द से दानियाल को पुकारा और राजा यह कहि के दानियाल को बोला कि हे दानियाल जीवते ईश्वर के सेवक क्या तेरा ईश्वर

जिसकी तू सदा सेवा करता है सिंहों से तुझे बचा सक्ता है।
२१ तब दानियाल ने राजा को उत्तर दिया कि हे राजा सदाजी
२२ मेरे ईश्वर ने अपना दूत भेजा और सिंहों के मुंह को ब
किया यहांलों कि उन्हों ने मुझे दुःख न दिया क्योंकि उसके आ
निर्दोषता मुझ में पाई गई और हे राजा मैं ने आप का
२३ कुछ अपराध न किया। तब राजा उसके लिये अत्यन्त आनन्दि
ऊआ और दानियाल को मांद में से निकालने की आ
किई सो दानियाल मांद से निकालागया और उस पर कु
२४ दुःख न पायागया क्योंकि उसका विश्वास ईश्वर पर था। त
राजा ने आज्ञा किई और वे दानियाल के दोष दायकों के
लाये और उन्हें उनके बालकों और उनकी स्त्रियों समें
सिंहों की मांद में डाला और सिंह उन पर प्रबल ऊए यहांले
कि मांद के तले न पऊंचतेही सिंहों ने उनकी हड्डियों के
२५ चकनाचूर किया। तब दारा राजा ने सारे लोगे
और जातों और भाषाओं को, जो सारी पृथिवी पर बसते
२६ यों लिखा कि तुम्हों पर कुशल बढ़ता जाय। मैं यह ठहरात
हों कि मेरे राज्य की हर एक प्रभुता में दानियाल के ईश्वर के
आगे मनुष्य डरें और थर्थरावें क्योंकि वुह जीवत ईश्वर है
और सर्वदा स्थिर है और उसके राज्य का नाश न होगा और
२७ उसकी प्रभुता अंत लों होगी। वुह बचाता है और छुड़ाता है
वुह स्वर्ग और पृथिवी पर आश्चर्य और लक्षण दिखाता है
२८ उसने दानियाल को सिंहों के बश से बचाया है। सो यह
दानियाल दारा और फारसी कोरस के राज्य में भाग्यमान रहा।

७ सातवां पर्ब्ब ।

दानियाल का चार पशुन का स्वप्न देखना १—८ मसीह का राज्य बताना ९—१४ एक दूत का चार राज्यों का समाचार जनाना १५—२८।

बाबुल के राजा बलतशाज़ार के पहिले बरस दानियाल ने अपने बिछौने पर के सिर के दर्शनों में एक स्वप्न देखा और उसने उस स्वप्न को लिखा और उन बातों के मूल को बताया। दानियाल बोला और कहा कि मैं ने रात को अपने दर्शन में देखा और क्या देखता हों कि स्वर्ग के चार पवन चारो ओर से महा समुद्र पर छेड़ने लगे। और समुद्र से चार महा पशु उठे जो एक दूसरे से भिन्न था। पहिला सिंह की नाईं और गिद्ध के से डयने रखता था मैं देखताही था और उसके डयने उखड़ गये और वुह पृथिवी से उठाया गया और मनुष्य के समान पाओं पर खड़ा किया गया और मनुष्य का मन उसे दियागया। और क्या देखता हों कि एक दूसरा पशु भालू की नाईं, और उसने एक प्रभुता उठाई और उसके मुंह में उसके दांतों के बीच तीन पसुली थीं और उन्हों ने उसे कहा कि उठ बहुतसा मांस भक्षण कर। उसके पीछे मैं ने देखा कि एक और चीते के समान उठा जिसकी पीठ पर पक्षी के चार डयने थे इस पशु के भी चार सिर थे और उसे प्रभुता दिई गई। इसके पीछे मैं ने राति के दर्शन में देखा और क्या देखता हों कि चौथा पशु भयानक और भयंकर और अत्यन्त बलवान और उसके दांत लोहे के बड़े बड़े थे उसने भक्षण किया और टुकड़े टुकड़े किये और रहेऊए को अपने पांव तले लताड़ा और यह उन सब पशुन से, जो उसके आगे थे भिन्न था और उसके दस सींग थे। मैं ने उन सींगों को सोचा और क्या देखता हों कि उनके मध्य में और एक छोटासा सींग निकला जिसके आगे अगिले तीन सींग जड़ से उखड़ गये और क्या देखता हों कि उस सींग में मनुष्य कीसी आंखें थीं और एक मुंह, जो बड़ी बड़ी बातें बोलरहा है। मैं यहां लों देखता रहा कि सिंहासन उलटगये और दिनों का प्राचीन बैठा उसका पहिरावा पालासा श्वेत था और उसके सिर का बाल चोखे ऊनकी नाईं

था और उसका सिंहासन आग की लवर और उसके
१० जलती आग की नाईं थे। एक अग्नीय धारा निकली और उस
आगे से निकल आई सहस्र सहस्रों ने उसकी सेवा किई द
सहस्र गुणे दस सहस्र उसके आगे खड़े थे न्याय हो रहा
११ और पुस्तकें खुली थीं। तब मैं ने देखा कि बड़ी बातों के श
के कारण जिन्हें उस सींग ने कहीं मैं ने यहां लों देखा कि ब
पशु मारागया और उसका देह नाश ज्ञआ और जल
१२ लवर को दिया गया। रहेज्ञए पशुन का विषय यह है कि उन
प्रभुता लिई गई परन्तु कुछ काललों उन्हें जीवन दिया गया
१३ और मैं ने रात्रि के दर्शन में देखा और क्या देखता हों कि मनु
के पुत्र के समान आकाश के मेघों पर आया और प्राचीन
१४ दिनों के पास पज्जंचा वे उसे उसके आगे लेआये। औ
उसे प्रभुता और बिभव और राज्य दिये गये कि सारे लो
और जाति और भाषा उसकी सेवा करें उसकी प्रभुता सर्वद
की प्रभुता है जो जाती न रहेगी और उसका राज्य नाश न
१५ होगा। मैं दानियाल देह के मध्य में अपने मन मे
उदास ज्ञआ और मेरे सिर के दर्शन ने मुझे व्याकुल किया।
१६ मैं ने उनमें से, जो निकट खड़े थे एक के पास जाके सारा
समाचार पूछा उसने मुझे कहा और बातों का अर्थ
१७ जनाया। ये चार बड़े पशु चार राजा हैं जो पृथिवी से उठेंगे।
१८ परन्तु अत्यन्त महान के सिद्ध लोग राज्य लेलेंगे और राज्य
को सर्वदा वश में रखेंगे अर्थात् सर्वदा और सर्वदा के लिये।
१९ तब मैं ने चाहा कि चौथे पशु का समाचार जानों जो औरों
से भिन्न था और अत्यन्त भयानक था जिसके दांत लोहे के
और नह पीतल के जिसने रहेज्ञए को भक्षण किया और
२० टुकड़े टुकड़े किये और पाओं तले लताड़ा। और उन दस
सींगों का जो उसके सिर पर थे और उस एक का जो निकला
और जिसके आगे तीन गिरगये हां उस सींग का जिसकी

आंखें थीं और एक मुंह था जो बड़ी बातें बोलता था और
१ देखने में अपने संगियों से अधिक बली था। मैं ने देखा और
उसी सींग ने सिद्धों के संग युद्ध किया और उन पर प्रबल हुआ।
२ यहां लों कि दिनों के प्राचीन को और अत्यन्त महान के सिद्धों
को न्याय दियागया और सिद्धों के राज्य प्राप्त करने का समय
३ आया। वुह यों बोला कि चौथा पशु पृथिवी पर चौथा राज्य
होगा जो सारे राज्यों से भिन्न होगा और सारी पृथिवी को
भक्षण करेगा और उसे लताड़ेगा और उसे टुकड़ा टुकड़ा
४ करेगा। और इस राज्य के दस सींग दस राजा हैं जो
निकलेंगे और उनके पीछे एक और निकलेगा वुह पहिले से
५ भिन्न होगा और वुह तीन राजाओं को वश में करेगा। और
अत्यन्त महान के विरोध में बातें करेगा और अत्यन्त महान
के सिद्धों को थकावेगा और समयों और व्यवस्थों को बदलने
चाहेगा और वे उसके हाथ में एक समय और समयों और
६ समय के बिभाग लों दियेजायेंगे। परन्तु न्याय की बैठक होगी
और वे भस्म करने और अंत्य लों नाश करने को उसकी प्रभुता
७ को लेलेंगे। और राज्य और प्रभुता और राज्य का महत्व
सारे स्वर्ग के नीचे अत्यन्त महान के सिद्धों को दियाजायगा जिनका
राज्य सर्वदा का राज्य है और सारी प्रभुता उनकी सेवा करेंगी
८ और आज्ञा मानेंगी। यहां लों बात का अंत्य है परन्तु मैं
दानियाल जो हों मेरे ध्यानों ने मुझे बहुत व्याकुल किया और
मेरा स्वरूप फिरगया पर मैं ने बात को मन में रखछोड़ा।

८ आठवां पर्ब्ब।

दानियाल का एक मेढ़े और बकरे का स्वप्न देखना
१—८ एक सींग का निकलना और बुराई करनी
और उनका समय ९—१४ जबरईल का
दानियाल को उस स्वप्न का अर्थ बताना १५—२५

उस बात का निश्चय और दानिआल का रोगी होना २६—२७ ।

१ बलतशाज़ार राजा के तीसरे बरस में मुझ दानियाल के
२ पहिले दर्शन के पीछे एक दर्शन दिखाई दिया। मैं ने दर्श
में देखा और ऐसा हुआ कि मैं ने देखा कि मैं शूशा
भवन में था जो ईलाम के प्रदेश में है और मैं ने दर्शन में देख
३ कि मैं यूलाई को नदी के तीर था। तब मैं ने आंखें उठा
देखा और क्या देखता हों कि नदी के आगे एक मेंढ़ा खड़ा
जिसके दो सींग थे और दोनों सींग बड़े थे परन्तु एक उन
४ से दूसरे से बड़ा था और बड़ा पीछे निकला। मैं ने मेंढ़े के
पश्चिम और उत्तर और दक्षिण दिशा को ठेलते देखा ऐसा कि
कोई पशु उसके आगे खड़ा न हो सका और कोई उसके हाथ
से छुड़ा न सक्ता था परन्तु वुह अपनी इच्छा के समान करता
५ था और महान हुआ। और सोचते सोचते क्या देखता हों कि
एक बकरा पश्चिम से सारी पृथिवी पर आया और पृथिवी पर
किसी ने उसे न छूआ और उस बकरे की दोनों आंखों के बीचों
६ बीच एक दृष्टिमान सींग था। और वुह उस दोसींगे मेंढ़े
पास आया जिसे मैं ने नदी के आगे खड़ा देखा था और
७ अपने पराक्रम के कोप से उस पर लपका। और मैं ने उसे
मेंढ़ा पास आते देखा और वुह उसके विरुद्ध क्रुद्ध हुआ और
उसने उस मेंढ़े को मारा और उसके दोनों सींग तोड़े
और उस मेंढ़े में उसके आगे खड़ा रहने की कुछ सामर्थ्य न
थी परन्तु उसने उसे भूमि पर गिरादिया और लताड़ा और
कोई ऐसा न था कि उस मेंढ़े को उसके हाथ से छुड़ा सके।
८ सो वुह बकरा बहुत बढ़गया और जब वुह बलवान हुआ
तो उसका बड़ा सींग तोड़ागया और उसकी संती स्वर्ग के पवन
९ की चारों ओर से चार प्रसिद्ध सींग निकले। उनमें से एक
छोटा सींग निकला जो दक्षिण और पूर्व और सुन्दर भूमि की

और बज्जतही बढ़गया। और वुह स्वर्ग की सेना के बिरुद्ध में बढ़ गया और उसने सेना में से कितनें को और तारों को भूमि पर गिरादिया और उन्हें लताड़ा। हां उसने सेना के अध्यक्ष के विरुद्ध में अपने को बढ़ाया और उस्से प्रतिदिन का बलिदान छुड़ाया गया और उसका पवित्र स्थान गिराया गया। और प्रतिदिन के बलिदान के विरुद्ध में उनके पाप के कारण सेना सौंपीगई उसने सचाई को भूमि पर डालदिया और यही किया और भाग्यमान ज्ञआ।   तब मैं ने एक साधु को कहते सुना और दूसरे साधु ने भेदों के गिनवैयों से कहा कि पवित्र स्थान और सेना लताड़ेजाने के लिये देने को प्रतिदिन के बलिदान और उजाड़ करने के आज्ञा भंग के विषय का दर्शन कबलों दियाजायगा? । फेर उसने मुझे कहा कि दो सहस्र तीन सौ सांझ विहान लों तब पवित्र स्थान निर्दोष ठहरेगा।   और ऐसा ज्ञआ कि मुझ दानियाल ने यह दर्शन देखा और उसका अर्थ ढूंढ़ा तब देखो मेरे साम्ने एक मनुष्य की नाईं दिखाई दिया। और मैं ने यूलाई के मध्य में से एक मनुष्य का शब्द सुना जिसने पुकार के कहा कि हे जबरईल दर्शन का अर्थ उसे समझा। सो जहां मैं खड़ा था वुह पास आया जब वुह आया मैं डरा और मुंह के बल गिरा परन्तु उसने मुझे कहा हे मनुष्य के पुत्र समझ क्योंकि अंत्य के समय में यह दर्शन होगा। सो जब वुह मुझसे यह कहिरहा था मैं औंधे मुंह भारी नींद में भूमि पर पड़ा था तब उसने मुझे छूआ और सीधा खड़ा किया। और मुझे कहा कि देख जो कुछ जलजलाहट के अंत्य में होगा मैं तुझे जनावता हों क्योंकि ठहराये ज्ञए समय में अंत्य होगा। यह दो सींगा मेढ़ा जो तू ने देखा माज़ी और फारस के राजा हैं। और वुह झबुआ बकरा यूनान का राजा है और वुह बड़ा सींग जो उसकी आंखों के बीच में है सो पहिला राजा है।

२२ अब वुह टूटाहुआ होके जैसा कि उसकी संती चार निक
चार राज्य उस जाति से खड़े होंगे परन्तु उसके पराक्रम
२३ नहीं। और उनके राज्य के अंत्य समय में जब अपराधी सम
होंगे एक राजा भयानक स्वरूपमान गुप्त बातों का समभवैः
२४ खड़ा होगा। और उसका बड़ा पराक्रम होगा परन्तु अपने
बल से नहीं और वुह आश्चर्य से नाश करेगा और भाग्यमा
होगा और कार्य करेगा और बलवानों को और पवित्र ज
२५ के लोगों को नष्ट करेगा। और अपनी चतुराई से भी वु
छल को अपने हाथ में बढ़ावेगा और वुह अपने मन में अप
को बढ़ावेगा और भाग्य से बहुतों को नाश करेगा यह राजा
के राजा के बिरोध में खड़ा होगा परन्तु वुह बिन हाथ
२६ तोड़ाजायगा। और बिहान और सांझ का दर्शन जो कहागय
सत्य है सो तू उस दर्शन को बन्द कर क्योंकि बहुत दिन के लि
२७ होगा। और मैं दानियाल मूर्छित हुआ और कितने दिन लो
रोगी रहा उसके पीछे उठा और राजा का कार्य किया औ
मैं उस दर्शन से अचंभित हुआ परन्तु किसी ने उसे न समझा

९ नवां पर्ब्ब।

दानियाल का ब्रत और प्रार्थना १—१९ अर्थ बताने को जबरईल का उस पास भेजा जाना २०—२७।

१ अहासूरस के बेटे दारा के पहिले बरस जो माज़ी के बंश से
२ था जिसमें वुह कलदानियों के राज्य का राजा हुआ। उसके
राज्य के पहिले बरस में मुझ दानियाल ने पुस्तकों से उन
बरसों की गिनती को समझा जिनके बिषय में परमेश्वर का
बचन इरमियाः भविष्यद्वक्ता पास पहुंचा था कि मैं यिरोशलीम
३ की बिनाशों में सत्तर बरस पूरा करोंगा। और मैं
ब्रत करके और टाट और राख में प्रार्थना और बिनती से

प्रभु ईश्वर को ढूंढ़ने में अपना रुख किया। और मैं ने अपने ईश्वर परमेश्वर की प्रार्थना किई और पाप को मान लिया और कहा कि हे प्रभु महान और भयंकर ईश्वर जो अपने प्रेमियों और आज्ञा पालकों के लिये बाचा और दया को रखता है। हमने पाप किया है हमने अपराध किया है हमने दुष्टता किई है और हम तेरी आज्ञा और तेरे न्याय से अलग होके फिरगये हैं। हमने तेरे भविष्यद्वक्ता सेवकों की बात, जिन्हों ने तेरा नाम लेके हमारे राजाओं और हमारे अध्यक्ष और हमारे पितर और देश के सारे लोगों को संदेश दिया न मानी। हे प्रभु धर्म्म तेरा है परन्तु हमारे लिये और यहूदा के मनुष्यों के और यिरोशलीम के बासियों और सारे इसराईल के लिये, जो पास और दूर हैं समस्त देश में जहां जहां तू ने उन्हें अपने बिरुद्ध पाप करने के कारण से खदेड़ा है मुंह की घबराहट है। हे प्रभु तेरे बिरुद्ध हमारे पाप के कारण हमारे लिये और हमारे राजाओं और अध्यक्षों और हमारे पितरों के लिये मुंह की घबराहट है। हमारे प्रभु ईश्वर की दया और क्षमा हैं यद्यपि हम उससे फिरगये हैं। हमने परमेश्वर अपने ईश्वर की व्यवस्था पर चलने को, जो उसने अपने दास भविष्यद्वक्तों के द्वारा हमारे आगे रक्खी उसका शब्द न माना। हां तेरा शब्द न मान्ने को सारे इसराईल ने फिर जाने से तेरी व्यवस्था को उलंघन किया है इस कारण यह स्राप हम पर और वुह किरिया जो ईश्वर के दास मूसा की व्यवस्था में लिखी है बहाया गया है क्योंकि हमने तेरे बिरुद्ध पाप किया है। और उसने अपनी बातों को, जो उसने हमारे और हमारे न्यायकर्वैये न्यायियों के बिरुद्ध कही थीं हम पर, यह बड़ी बुराई लाके दृढ़ किया क्योंकि सारे स्वर्ग के तले ऐसा नहीं हुआ है जैसा कि यिरोशलीम पर बीता है। जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है यह सब बुराई हम पर

आपड़ी है तिसपर भी अपने कुकर्म्मों से फिरने को और ते
सच्चाई को समझने को हमने परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे प्रार्थ
१४ न किई। इस लिये परमेश्वर ने हमारी बुराई पर चौक
किई और उसे हम पर लाया क्योंकि हमारा ईश्वर परमेश्
अपने सारे कार्यों में, जो वुह करता है धर्मी है क्योंकि हम
१५ उसका शब्द न माना। और अब हे हमारे प्रभु ईश्वर
अपने लोगों को अपने हाथ के पराक्रम से मिसर देश
बाहर निकाल लाया और अपना नाम किया जैसा कि आज
१६ दिन है हमने पाप किया है हमने दुष्टता किई है। हे प्र
मैं तेरी विनती करता हों तेरे सारे धर्म के समान तेरा क्रो
और तेरा कोप तेरे नगर यिरोशलीम से, जो तेरा पवि
पर्व्वत है फिर जाय क्योंकि हमारे पापों के कारण और हमा
पितरों के कुकर्म्मों के कारण से यिरोशलीम और तेरे लो
१७ आसपास के सभों के लिये निन्दा हैं। सो अब हे हमा
ईश्वर अपने दास की प्रार्थना और उसकी बिनतियां सुन और
अपने रूप को अपने उजाड़ पवित्र स्थान पर प्रभु के लिये प्रका
१८ कर। हे मेरे ईश्वर अपना कान झुका और सुन अपनी आंखे
खोल और हमारे उजाड़ों को और उस नगर को देख जिस
पर तेरा नाम पुकारा जाता है क्योंकि हम अपने धर्म्म के
लिये नहीं परन्तु तेरी बड़ी दया के लिये अपनी विनती तेरे
१९ आगे करते हैं। हे प्रभु सुन हे प्रभु क्षमा कर हे प्रभु कानधर
और मानले हे मेरे ईश्वर अपनेही कारण टाल मत दे क्योंकि
तेरे नगर और तेरे लोग तेरे नाम से पुकारे जाते हैं।
२० मैं कहता और प्रार्थना करता और अपने पापों और अपने
लोग इसराईल के पापों को मानलेताही था और परमेश्वर
अपने ईश्वर के आगे अपने ईश्वर के पवित्र पहाड़ के लिये चित्त
२१ लगा के अपनी बिनती पहुंचाता था। हां मैं प्रार्थना में बोल
रहा था इतने में वही जन अर्थात् जबरईल जिसे मैं ने आरंभ

के दर्शन में देखा था शीघ्रता से उड़ते ऊए आया और उसने सांझ की भेंट के समय में मुझे छूआ। और उसने संदेश दिया और मुझ से बातें किईं और कहा कि हे दानियाल अब मैं तुझे ज्ञान में निपुण करने को निकल आया हों। तेरी बिनती करने के आरंभ में बचन निकला और मैं आया कि तुझे दिखाओं क्योंकि तू बांछित है सो तू इस बात को समझले और दर्शन को सोच। पवित्र नगर के लिये अपराध रोकने को और पाप पर छाप करने को और कुकर्म्म के लिये मिलाप करने को और सर्ब्बदा का धर्म्म लाने को और दर्शन और भविष्यद्वक्ता पर छाप करने को और अत्यन्त धर्म्ममय को अभिषेक करने को तेरे लोगों पर और तेरे पवित्र नगर पर सत्तर सप्ताह ठहराये गये हैं। इस लिये जानले और समझ कि आज्ञा के निकलने के आरंभ से यिरोशलीम के फेर बनाने को मसीह राजा लों सात सप्ताह और सड़क और दरार सकेती के दिनों में फिर के बनाने को बासठ सप्ताह हैं। और बासठ सप्ताह के पीछे मसीह मारा जायगा परन्तु अपने लिये नहीं और उस राजा के लोग जो आवेंगे उस नगर को और पवित्र स्थान को नाश करेंगे और उसका अन्त बाढ़ से होगा और संग्राम के पीछे उजाड़ ठहराया गया है। और वुह नियम को बऊतों के संग एक सप्ताह में स्थिर करेगा और सप्ताह के मध्य में वुह बलिदान और भेंट को उठा डालेगा और घिनित सेनाओं से समाप्त लों वुह उसे उजाड़ेगा और ठहराया ऊआ उजाड़ों पर बहाया जायगा।

१० दसवां पर्ब्ब ।

दानियाल का बिलाप और ब्रत और स्वप्न १—९
दूत का उसे शांति देनी और समाचार बताना १०—२१।

१ फारस के राजा कोरस के तीसरे बरस दानियाल पर, जिस
नाम बलतशाज़ार था एक बात प्रगट ऊई वुह बात सत्य पर
ठहराया ऊआ समय बड़ा था और उसने उस बात को समभ
२ और उस दर्शन का ज्ञान रखता था। मैं दानियाल उ
दिनों में पूरे तीन सप्ताह के दिन लों विलाप करता रहा
३ मैं ने तीन सप्ताह बीतने लों वांछा की रोटी न खाई न मे
मुंह में बोटी और मदिरा पड़ी और मैं ने अपने पर तेल
४ मला। और पहिले मास की चौबीसवीं तिथि में जिस सम
५ में मैं महा नदी हिड्किल के तीर पर फिरता था। तब मैं
आंख उठाके दृष्टि किई और क्या देखता हों कि एक मनु
सूती वस्त्र पहिने ऊए जिसकी कटि पर यूफाज़ के चो
६ सोने का पटुका बंधा था। उसका देह भी लशुनीय के समा
और उसका मुंह बिजुली कासा और उसकी आंखें आ
के दीपक की नाईं उसकी भुजा और उसके पांव चमकी
पीतल के से थे और उसकी बातों का शब्द एक मंडली के शब्द
७ की नाईं। मुझ दानियाल ने अकेला यह दर्शन देखा क्योंकि
जो मनुष्य मेरे संग थे उन्हों ने दर्शन न देखा परन्तु उन पर
ऐसी कपकपी पड़ी कि वे आप आप को छिपाने को भागे
८ सो मैं अकेला रहिगया और यह बड़ा दर्शन देखा और मुझ
में शक्ति न रही क्योंकि मेरा बल जो मुझ में था सब जाता रह
९ और मुझ में बल न रहा। तथापि मैं ने उसकी बातों का शब्द
सुना और जब मैं ने उसकी बातों का शब्द सुना तब मैं मुं
के बल भारी नींद में था और मेरा मुंह भूमि की ओर।
१० और देखो एक हाथ ने मुझे छूआ जिसने मुझे मेरे
११ घुठनों और हथेलियों पर उठाया। और उसने मुझे कहा हे
दानियाल वांछित जन उन बातों को जो मैं तुझे कहता हे
समझले और सीधा खड़ा होजा क्योंकि मैं तेरे पास भेजा
गया हों और ज्यों उसने मुझे यह बात कही मैं कांपता ऊआ

२ खड़ा होगया। तब उसने मुझे कहा कि हे दानियाल डर मत क्योंकि पहिलेही दिन से, जब तू ने अपना मन समझने पर और अपने ईश्वर के आगे अपने को ताड़ना करने पर लगाया तेरी बातें सुनीगईं और तेरी बातों के लिये मैं आया हों।
३ परन्तु फारस के राज्य के राजा ने एक्कीस दिन लों मेरा साम्ना किया परन्तु देख मीकाईल, जो श्रेष्ठ राजपुत्रों में से श्रेष्ठ है मेरे सहाय के लिये पऊंचा और वहां मैं फारस के राजाओं के संग
४ रहगया। अब जो कुछ तेरे लोगों पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुझे समझाने को आया हों क्योंकि यह दर्शन दिनों के लिये
५ है। जब उसने ऐसी बातें मुझे कहीं तब मैं ने अपना मुंह
६ भूमि की ओर किया और गूंगा होगया। और क्या देखता हों कि मनुष्यों के पुत्रों की नाईं किसीने मेरे होठों को छूआ तब मैं ने अपना मुंह खोला और बोला और जो मेरे आगे खड़ा था उसे कहा कि हे मेरे प्रभु इस दर्शन के कारण से मेरे शोक
७ मुझ पर लौटे और मुझ में कुछ बल न रहा है। क्योंकि यह क्योंकर होसक्ता है कि मेरे प्रभु का यह सेवक मेरे इस प्रभु से बार्त्ता करे? क्योंकि मैं जो हों मुझ में कुछ बल न रहा और
८ न मुझ में सास रहा। तब मनुष्य के स्वरूप की नाईं एकने फेर
९ आके मुझे छू के बल दिया। और कहा कि हे अतिप्रिय मनुष्य डर मत तुझ पर कुशल होय बलवान हो हां बलवान हो जब उसने मुझे यह कहा मैं ने बल पाया और कहा कि
० अब मेरा प्रभु कहे क्योंकि तूही ने मुझे बल दिया है। तब वुह बोला तू जानता है कि मैं तुझ पास किस लिये आया हों? और अब मैं फारस के राजा से लड़ने को फिर जाऊंगा और जब मैं चलाजाऊंगा देख यूनान का राजा आवेगा।
१ परन्तु मैं तुझे बतादेता हों कि सत्य लिखित में क्या लिखा है और ऐसा कोई नहीं कि इन बातों में अपने को मेरे संग बलवंत करे परन्तु केवल तेरा राजा मीकाईल।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

फ़ारस के राज्य के नष्ट होने का और यूनान के राज्य का समाचार १—४ उत्तर और दक्खिन के राजाओं के विषय की भविष्य बाणी ५—३० और ईश्वरीय जन के बैरियों के नाश की भविष्य बाणी ३१—४५।

१ दारा माज़ी के पहिले बरस में भी मैं उसे दृढ़ करने को
२ बल देने को खड़ा हुआ। और अब मैं तुझे सत्य बतात हों देख फ़ारस में तीन राजा और भी उठेंगे और चौथ सभों से अधिक धनी होगा और वुह अपने बल से और अप
३ धन से सब को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभाड़ेगा। फेर ए बलवान राजा खड़ा होगा और बड़ी प्रभुता से राज्य करेग
४ और अपनी इच्छा के समान करेगा। और जब वुह खड़ होगा उसका राज्य तोड़ाजायगा और स्वर्ग के चारो पवन क ओर बिभाग कियाजायगा और उसके बंश को न पहुंचेगा और न उस राज्य की नाईं, जिसका वुह प्रभु था क्योंकि उसक
५ राज्य औरों के लिये उखाड़ा जायगा। और उत्तर का राजा बलवान होगा और उसके राजपुत्रों में से बल मे उसे अधिक होगा और राज्य पावेगा और उसका राज्य बड़ा
६ राज्य होगा। और बरसों के अन्त में वे आपुस में मिलेंगे क्योंकि दक्षिण के राजा की पुत्री उत्तर के राजा के पास कुछ ठहराने को आवेगी परन्तु वुह भुजा का पराक्रम न रखसकेगी और न वुह न उसकी भुजा ठहरेगी परन्तु वुह और वे जो उसे लाये थे और जिसे वुह जनी और वुह जिसने उसे
७ समय में बल दिया था सौंपी जायगी। परन्तु उसके जड़ की एक डालों में से उसके स्थान में खड़ा होगा जो सेना लेके आवेगा और उत्तर के राजा की कोट में प्रवेश करेगा और उनसे
८ बिरोध करेगा और जीतेगा। और उनके देवों और उनके राजपुत्रों को भी और उनकी बांछा के सोने चांदी के पात्र

सहित बंधुआई में मिसर में लेजायगा और वुह उत्तर के राजा
८ से बरसोंतक बना रहेगा। सो दक्खिन का राजा उसके राज्य में
९ आवेगा और अपनेही देश में लौटेगा। परन्तु उसके बेटे
उभाड़े जायंगे और बड़ीबड़ी सेना बटोरेंगे और निश्चय एक
आवेगा और उमड़ेगा और भीतर से जायगा तब वुह फिर
११ जायगा और अपने गढ़ लों उस्काया जायगा। और दक्खिन
का राजा क्रोध से उठेगा और निकल के उस्से लड़ेगा अर्थात्
उत्तर के राजा से और वुह एक बड़ी मंडली सिद्ध करेगा परन्तु
१२ मंडली उसके हाथ में दिईजायगी। और जब वुह उस मंडली
को दूर करेगा उसके मन में घमंड समावेगा और वुह दस
सहस्रों को गिरावेगा परन्तु उसका बल अधिक न होगा।
१३ क्योंकि उत्तर का राजा फिर जायगा और एक मंडली, जो
पहिले से अधिक होगी लावेगा और समयों अर्थात् बरसों के
१४ पीछे एक बड़ी सेना और बहुत धन ले आवेगा। और उन
दिनों में बहुतेरे दक्खिन के राजा पर चढ़ाई करेंगे और
बटमारों के बालक दर्शन को स्थिर करने के लिये आप को बढ़ावेंगे
१५ पर वे गिर जायेंगे। सो उत्तर का राजा आवेगा और मुरचा
बांधेगा और गढ़ के नगरों को लेलेगा और दक्खिन की भुजा
और चुनेहुए लोग उसके आगे न ठहरेंगे और न साम्ना
१६ करने का बल रहेगा। परन्तु जो उसका साम्ना करेगा सो
अपनी इच्छा के समान करेगा और कोई उसके आगे ठहर
न सकेगा और वुह शुभ देश में खड़ा होगा जो उसके हाथ से
१७ भस्म होगा। वुह अपने सारे राज्य के बल से और अपनी
खराई से प्रवेश करने के लिये रुख भी करेगा वुह यों करेगा
और वुह स्त्रियों की पुत्री को अशुद्ध करने के लिये उसे देगा
१८ परन्तु वुह न ठहरेगी न उसके लिये होगा। उसके पीछे वुह
टापुओं की ओर मुंह फेरेगा और बहुतों को लेलेगा परन्तु राज
पुत्र अपने लिये उसके निन्दित कार्य्य को उठा डालेगा अपनीही

१९ निन्दा को छोड़ वुह उसी पर फिरेगा। उसके पीछे ह
अपनेही देश के गढ़ को अपना मुंह फेरेगा परन्तु वुह ठो
२० खायगा और गिर पड़ेगा और पाया न जायगा। उसके ठ
उसके स्थान पर एक और उठेगा जो राज्य के विभव में वर
कर लेगा परन्तु थोड़े दिनों में वुह न तो क्रोधों से न संग्राम में
२१ होगा। फेर उसके स्थान में एक तुच्छ जन खड़ा होगा जिसे
राज्य की प्रतिष्ठा न देंगे परन्तु वुह मिलाप से आवेगा औ
२२ लल्लोपत्तो कहिके राज्य को लेगा। और वे उसके आगे बाढ़
२३ भुजा से उमड़ जायेंगे हां नियम के राजपुत्र भी टूट जायेंगे। औ
उस बाचा के पीछे, जो उस्से किई जायगी वुह छल से कार्य करे
क्योंकि वुह थोड़े से लोगों के संग बल प्राप्त करेगा और च
२४ आवेगा। वुह कुशल से प्रदेश के अच्छे से अच्छे स्थानों में प्रवे
करेगा और वुह ऐसा कुछ करेगा जो न उसके पितरों ने
उसके पितामहों ने किया वुह उनके मध्य में अहेर और ल
और धन बिथरावेगा हां वुह एक समय के लिये दृढ़ गढ़ों के
२५ लेने पर अपनी चिन्ता को दौड़ावेगा। और वुह अपने पराक्र
और हियाव को दक्षिण के राजा पर बड़ी सेना के संग बढ़ावेग
और दक्खिन का राजा एक अत्यन्त और पराक्रमी बड़ी सेन
लेके संग्राम करने को निकलेगा परन्तु वुह न ठहरेगा क्योंकि
२६ उसके बिरुद्ध चिन्ता दौड़ावेंगे। हां वे जो उसके भोजन में से भाग
खाते हैं उसे मार लेंगे और उसकी सेना उमड़ जायगी और
२७ बहुतेरे जूझ जायेंगे। और इन दोनों राजाओं के मन नटखट
करने में होंगे और एक मंच में झूठ बोलेंगे परन्तु कार्य सिद्ध
२८ न होगा तथापि ठहराये हुए समय पर अन्त होगा। तब वुह
बड़े धन से अपने देश को फिरेगा और उसका चित्त पवित्र
नियम से बिरुद्ध होगा और वुह कार्य करेगा और अपनेही
२९ देश को फिर जायगा। ठहराये हुए समय में वुह लौटेगा
और दक्षिण के रुख आवेगा परन्तु अगले अथवा पिछले की

नाईं न होगा। क्योंकि कित्तिम की जहाज़ उसका साम्ना करेंगी सो वुह उदास होगा और फिरेगा और पवित्र नियम से क्रुध होगा सो ऐसाही करेगा हां वुह फिर आवेगा और उनके संग, जो पवित्र नियम को त्याग करते हैं संदेश पावेगा।

और भुजा उसकी ओर खड़ी होगी और वे पवित्र स्थान की दृढ़ता को अशुद्ध करेंगे और प्रतिदिन के बलिदान को उठादेंगे और उस उजाड़क घिन को खड़ी करेंगे। और वुह उनसे, जो नियम से दुष्टता करते हैं लल्लोपत्तो करके उन्हें भरमावेगा परन्तु वे लोग जो अपने ईश्वर को पहिचानते हैं दृढ़ होंगे और कार्य करेंगे। और जो लोगों में बुद्धिमान हैं सो बहुतों को उपदेश करेंगे तथापि वे बहुत दिनलों खड़्ग से और लवर से और बंधुआई से और लूट से गिरजायंगे। और जब वे गिरजायंगे वे थोड़ोसी सहाय से सहाय पावेंगे परन्तु बहुतेरे लल्लोपत्तो से उनसे पची होंगे। और बुद्धिमानों को परखने को और शुद्ध करने को और अंतलों श्वेत करने को भ्रष्ट होंगे क्योंकि अब भी ठहराये हुए समय के लिये है। और राजा अपनी इच्छा के समान करेगा और अपने को बढ़ावेगा और हरएक देव से आप को महिमा देगा और ईश्वरों के ईश्वर का साम्ना करके आश्चर्यित बातें कहेगा और जलजलाहट के पूरे होनेलों वुह भाग्यमान होगा क्योंकि जो ठहराया गया है सो किया जायगा। वुह अपने पितरों के ईश्वर को और स्त्रियों की वांछा को और किसी ईश्वर को न समझेगा क्योंकि वुह आप को सभों पर बढ़ावेगा। परन्तु शक्तिमान ईश्वर जो है सो उसी के आसन पर प्रतिष्ठा देगा हां वुह एक देव को, जिसे उसके पितरो ने न जाना सोना चांदी और बहुमूल्य मणि और सुंदर वस्तुन से प्रतिष्ठा देगा। वुह गढ़ों के गढ़ों में उपरी देव के संग ऐसा कुछ करेगा जिसे वुह मानलगा और महिमा से बढ़ावेगा और वुह उनसे बहुतों पर प्रभुता करावेगा

४० और मोल के लिये देश को बांटेगा। अंत के स
में दक्षिण का राजा उसे ठेलेगा और उत्तर का राजा बौं
की नाईं रथों और घोड़चढ़ों और बज़तसी जहाज़ों को ले
उसके बिरुद्ध आवेगा और वुह देशों में प्रवेश करेगा औ
४१ उमड़ेगा और पार जायगा। और वुह शुभ भूमि में प्रवे
करेगा और बज़त गिराये जायेंगे परन्तु ये अर्थात अदूम औ
मुआब और अमून के वंश के प्रधान उसके हाथ से बच जायें
४२ वुह अपने हाथ को देशों पर भी बढ़ावेगा और मिसर
४३ भूमि न बचेगी। परन्तु सोना चांदी और मिसर की बज़मू
वस्तु के भंडार पर वुह पराक्रम पावेगा और लबीयून औ
४४ हबशी उसके डगों पर होंगे। परन्तु पूरब और उत्तर से सं
उसे व्याकुल करेंगे इस लिये वुह बड़े कोप से नाश करने को औ
४५ बज़तों को सर्वथा उठा देने को निकलेगा। और वुह अप
भवनों के तंबू को समुद्रों के बीच आनन्द के पहाड़ को पवित्र
में गाड़ेगा तथापि वुह अपने अन्त को पज़ंचेगा और उस
सहाय कोई न करेगा।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

ईश्वरीय जन का छोड़ाया जाना मृतकों का जी
उठना और धर्मियों का आनन्द १—३ समय वों
बचन का बन्द होना ४—१२ भविष्यद्वक्ता का
कुशल पाने की आशा १३— ।

१ और उसी समय मीकाईल खड़ा होगा वुह महा राजपुत्र
तेरे लोग के वंश के लिये खड़ा होता है और ऐसा व्याकुल
समय होगा जैसा कधी न ज़आ जब से लोग ज़ए उसी सम
लों और उसी समय में तेरे लोग हर एक जन जो पुस्तक
२ लिखा ज़आ पायाजायगा छोड़ाया जायगा। और उनमें
बज़त जो पृथिवी की धूल में शयन करते हैं जागउठेंगे कित

तो अनन्त जीवन के लिये और कितने लज्जा और अनन्त निंदा के लिये। और वे जो उपदेशक होंगे आकाश के ज्योतिमान की नाईं और वे जो बहुतों को धर्म की ओर फेरते हैं तारों की नाईं सनातन के लिये चमकेंगे। परन्तु तू हे दानियाल बातों को बन्द कर और पुस्तक पर अन्त के समय लों छाप कर बहुतसे लोग इधर उधर दौड़िंगे और ज्ञान बढ़ जायगा।

तब मुझ दानियाल ने देखा और क्या देखता हों कि दो और खड़े थे एक नदी के इस तीर और दूसरा नदी के उस तीर पर। और सूती बस्त्र पहिनेहुए पुरुष से जो नदी के पानियों पर था कहा कि इन आश्चर्यों का अन्त कब लों। तब सूती बस्त्र पहिनेहुए पुरुष को, जो नदी के पानियों पर था जब उसने अपना दहिना हाथ और अपना बायां हाथ स्वर्ग की ओर उठाये मैं ने सुना कि जिसने उसकी जो नित्य जीवता है किरिया खाई कि समय और समयां और आधे समय के लिये होगा और जब वुह पवित्र लोगों के पराक्रम को बिथराने से संपूर्ण कर चुकेगा ये बातें समाप्त होंगी। और मैं ने सुना परन्तु न समझा तब मैं ने कहा कि हे मेरे प्रभु उन बातों का अन्त क्या?। और उसने कहा कि दानियाल तू चलाजा क्योंकि बातें बन्द हुईं और अन्त के समय लों छाप किई गईं। बहुतसे लोग पवित्र और श्वेत किये जायंगे और परखेजायेंगे परन्तु दुष्ट दुष्टता करेगा और कोई दुष्ट न समझेगा परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। और जिस समय से प्रतिदिन का बलिदान उठादिया जायगा और वुह घिन को जो आश्चर्य करती है स्थापित करे एक सहस्र दो सौ और नब्वे दिन होंगे। धन्य वुह जो बाट जोहता है और एक सहस्र तीन सौ पैंतीस दिन लों आता है। परन्तु अन्त लों तू चलाजा क्योंकि तू विश्राम करेगा और अपने भाग में अन्त के दिनों में खड़ा होगा ॥

होशिया की पुस्तक।

---
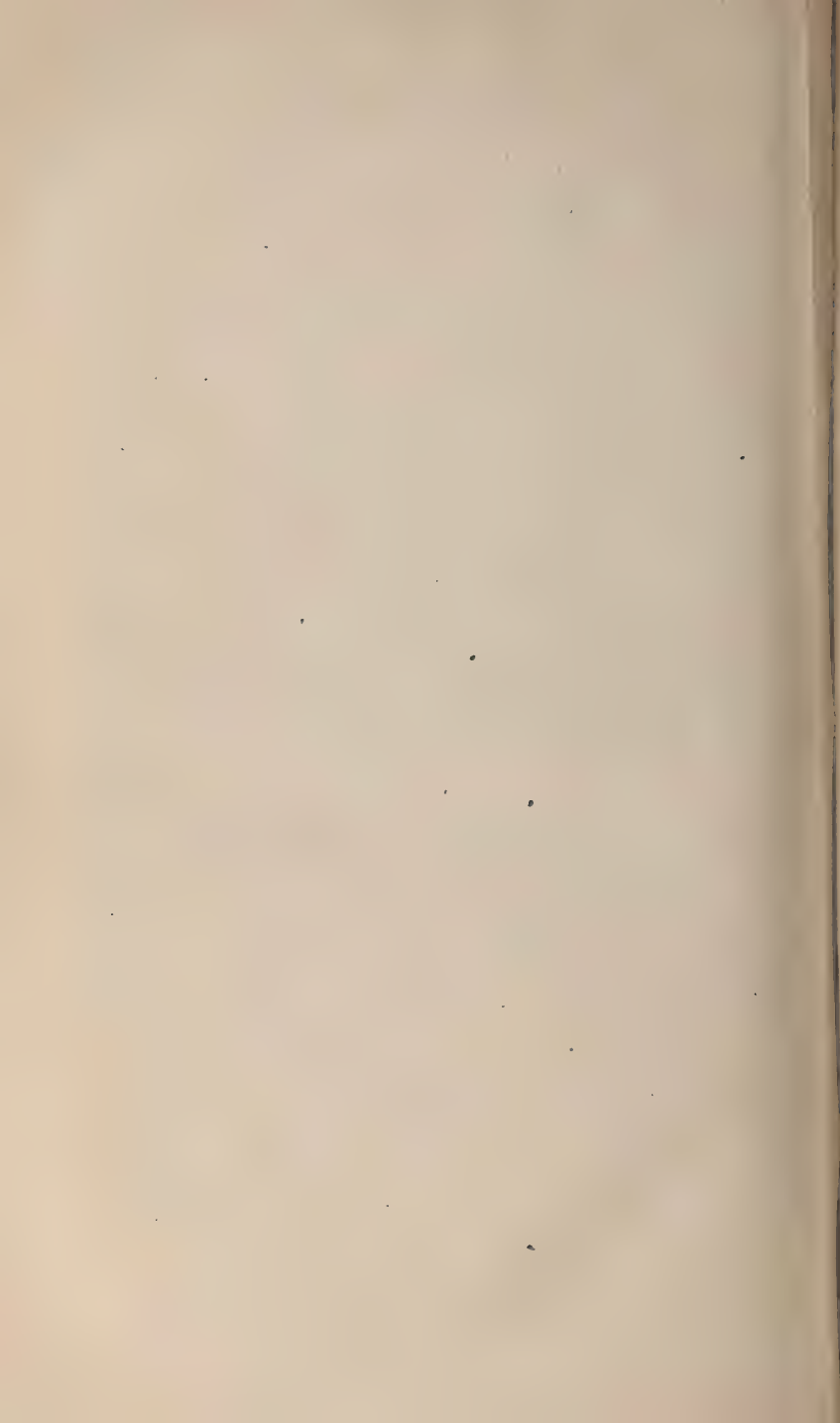
१ पहिला पर्ब्ब।

होशिया का समाचार बताना परमेश्वर की आज्ञा से पत्नी करके इसराईल का पाप प्रगट करना १—९ यहूदा और इसराईल की बढ़ती और भाग्यमान होना १०—११।

यहूदा के राजा ऊज़िया और यूताम और अहाज़ और हिज़किया: के दिनों में और इसराईल के राजा यूआश के बेटे युर्बआम के दिनों में परमेश्वर का वचन बीरी के बेटे होशिया पास पहुंचा। होशिया के द्वारा से परमेश्वर के वचन का आरंभ परमेश्वर ने कहा कि हे होशिया जा और एक छिनाल को पत्नी में और छिनाल बालकों को ले क्योंकि देश ने परमेश्वर को त्याग के बड़ा बड़ा छिनाला किया है। सो उसने जा के दिबलाईम की बेटी गोमर को लिया जो गर्भिणी होके उसके लिये एक बेटा जनी। और परमेश्वर ने उसे कहा कि उसका नाम यज़रईल रख क्योंकि तनिक और तब मैं यज़रईल के लोहू का पलटा याहू के घराने से लेउंगा और इसराईल के घराने के राज्य को मिटवाओंगा। और उस दिन ऐसा होगा कि मैं यज़रईल की तराई में इसराईल के धनुष को तोड़ोंगा।

उसके पीछे वुह फिर गर्भिणी हुई और कन्या जनी और उसने उसे कहा कि उसका नाम लोरुहामः रख क्योंकि मैं इसराईल के घराने पर अब दया न करोंगा परन्तु निश्चय उन्हें

७ दूर करोंगा। तथापि मैं यहूदा के घराने पर दया करोंग और परमेश्वर उनके ईश्वर के द्वारा से उन्हें बचाओंगा और धनुष अथवा तलवार अथवा संग्राम अथवा घोड़ों अथव
८ घोड़ चढ़ों के द्वारा से उन्हें न बचाओंगा। सो जब उस लोरुहामः का दूध छुड़ाया तब वुह गर्भिणी ऊई और बेटा जनी
९ तब ईश्वर ने कहा कि उसका नाम लोअम्मी रख क्योंकि तु
१० मेरे लोग नहीं हो और मैं तुम्हारा ईश्वर न होंगा। तथापि इसराईल के संतानों की गिनती समुद्र की बालू की नाईं होग जो नापी नहीं जा सक्ती और न गिनी जा सक्ती और ऐस होगा कि जहां उन्हें कहा गया कि तुम मेरे लोग नहीं हो
११ उन्हें कहा जायगा कि तुम जीवते ईश्वर के पुत्र हो। तब इसराईल के पुत्र और यहूदा के पुत्र एकट्ठे किये जायेंगे और अपने लिये एक मुखिया ठहरावेंगे और वे देश में से बाहर आवेंगे क्योंकि यज़रईल का बड़ा दिन होगा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

इसराईल का मूर्त्ति पूजा और उनका दंड बताना १—१३ मिलाप की बाचा से परमेश्वर का उन्हें खींचना १४—२३।

१ सो अपने भाई अम्मी से और अपनी बहिन रुहामः से कह।
२ कि बिवाद कर अपनी माता से बिवाद कर क्योंकि वुह मेरी पत्नी नहीं और न मैं उसका पति इस लिये वुह अपनी छिनालपन अपनी दृष्टि से और अपनी बेश्याई अपने स्तनों के मध्य से त्यागे।
३ नहो कि मैं उसे नग्न करों और उसे उसके जन्म दिन की नाईं धरों और उसे अरण्य की नाईं और सूखी भूमि की नाईं
४ बनाओं और उसे प्यास से मारों। और मैं उनके पुत्रों पर
५ दया न करोंगा क्योंकि वे छिनाल कर्म्म के पुत्र हैं। इस लिये कि उनकी माता ने बेश्याई किई और उनकी गर्भवती ने लाज

कर्म किया क्योंकि उसने कहा कि मैं अपने जारों के पीछे पीछे जाउंगी जिन्हों ने मुझे अन्न जल और ऊन और सन और तेल और पान दिये हैं। इस लिये देख मैं तेरे मार्ग को कांटों से रूंधोंगा और भीत उठाओंगा जिसतें वुह अपने पथ न पावे। और वुह अपने जारों के पीछे पीछे पड़ेगी परन्तु उन्हें जाही न लेगी वुह उन्हें ढूंढ़ेगी पर न पावेगी तब वुह कहेगी कि मैं अपने पहिले पति पास फिर जाओंगी क्योंकि अब से तब मेरी भली थी। और उसने न जाना कि मैं ने उसे अन्न और नया दाख रस और तेल दिया और उसका सोना चांदी बढ़ाया जिन से उन्हों ने बआल बनाया। इस लिये मैं लवटोंगा और समय में अपने अन्न को और रितु में दाख रस को ले लेउंगा और मैं अपने ऊन और सन ले लेउंगा जिसतें उसकी नग्नता ढांपी न जाय। और अब मैं उसके जारों की दृष्टि में उसकी तुच्छता को प्रगट करोंगा और कोई उसे मेरे हाथ से न छुड़ा सकेगा। मैं उसका सारा हर्ष अर्थात् उसका पर्व्व और उसकी अमावास्या और उसके विश्राम और उसके सारे उत्सव मिटवा डालोंगा। और मैं उसके दाख को और उसके गूलर पेड़ों को उजाड़ोंगा जिनके विषय में उसने कहा कि मेरे जारों ने प्रतिफल दिया है और मैं उन्हें जंगल बनाओंगा और बन पशु उन्हें खायेंगे। और परमेश्वर कहता है कि मैं बआलिम के दिनों को उस पर लाओंगा जिन में उसने उनके लिये सुगंध जलाया है और आप को अपने कान की बालियों से और अपने आभूषण से संवारा और अपने जारों के पीछे पीछे गई और मुझे भूल गई। तिसपरभी देख मैं उसे फुसलाओंगा और उसे अरण्य में लाओंगा और उसे शांति वचन कहोंगा। और मैं वहां से उसकी दाख की बारी और आशा के द्वार के लिये अकूर की तराई उसे देउंगा तब वुह अपनी युवावस्था के दिनों के समान और मिसर

१६ देश से निकलने के समान गायेगी। और परमेश्वर कहता कि
उस दिन ऐसा होगा कि तू मुझे ईश्री करके कहेगी परन्तु मे
१७ बआली न कहेगी। क्योंकि मैं उसके मुंह से बआलिम के न
को दूर करोंगा और उसके नाम से वे फिर कहाये न जा
१८ उस दिन मैं उनके लिये चैगान के पशुन के साथ और आ
के पक्षियों के साथ और भूमि के रेंगवैयों के साथ एक बा
बांधोंगा और मैं पृथिवी में से धनुष और तलवार
१९ संग्राम को तोड़ोंगा और उन्हें कुशल से चैन कराओंगा।
मैं तुझे सदा के लिये मंगनी करोंगा हां मैं धर्म्म से और न
से और कोमल प्रेम से और दया से तुझे मंगनी करोंग
२० हां मैं विश्वस्तता से तेरे साथ मंगनी करोंगा और तू परमे
२१ को जानेगी। परमेश्वर कहता है कि उस दिन ऐसा हो
कि मैं सुनोंगा मैं स्वर्गों की सुनोंगा और वे पृथिवी की सुनें
२२ और पृथिवी अन्न की और दाखरस की और तेल की सुने
२३ और वे यज़रईल की सुनेंगे। और मैं पृथिवी में उसे अप
नाम के लिये बोऊंगा और जिसने दया न पाई थी उस प
मैं दया करोंगा और जो मेरे लोग न थे उन्हें मैं अपना लो
कहोंगा और वे मुझे अपना ईश्वर कहेंगे।

३ तीसरा पर्व्व ।

इसराईल पर परमेश्वर की दया बतानी १—५।

१ तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि, यद्यपि इसराईल के पुत्र उपरी
देवों की ओर फिरते हैं और कटोरा भर भर दाखरस
चाहते हैं तू उन पर परमेश्वर के प्रेम के समान फिर जा के
एक स्त्री से प्रीति कर जो दूसरे की प्रिय और व्यभिचारिणी
२ है। और मैं ने उसे पंदरह टुकड़े चांदी से और डेढ़ होमर
३ जव से मोल लिया। और मैं ने उसे कहा कि बहुत दिन
मेरे साथ रहना और छिनाला न करना और दूसरे पुरुष

की न होगी तैसा मैं भी तेरे लिये होंगा। क्योंकि इसराईल के पुत्र बिना राजा और बिना अध्यक्ष और बिना बलि और बिना मूर्त्ति और बिना अफूद और तराफ़ीन बहुत दिन लों रहेंगे। उसके पीछे इसराईल के पुत्र फिर आवेंगे और अपने ईश्वर परमेश्वर को और अपने राजा दाऊद को खोजेंगे और पिछले दिनों में परमेश्वर को और उसकी भलाइयों को प्रतिष्ठा देंगे।

४ चौथा पर्ब्ब ।

इसराईल के अधर्म्म और बुराई के लिये ईश्वर का कोप १—५ याजकों की मूर्खता और दुष्टता और त्याग होना ६—११ लोगों की मूर्त्ति पूजा और कुमार्ग का दंड १२—१४ यहूदा को चिताना १५—१९ ।

हे इसराईल के पुत्रो परमेश्वर का वचन सुनो क्योंकि देश के बासियों से परमेश्वर का बिवाद है इस लिये कि देश में न सत्य है न दया न ईश्वर का पहिचान है। वे किरिया खा खा और झूठ बोल बोल और घात और चोरी और व्यभिचार कर कर फूट निकले हैं और लोहू लोहू से पहुंच गया। इस लिये देश बिलाप करेगा और उस में के हर एक निवासी चौगान के पशु और आकाश के पंछी सहित मुरझायेंगे और समुद्र की मछलियां भी लिई जायेंगी। तथापि कोई नहीं झगड़ता और न कोई दपटता और जैसा याजक का खिजाव तैसा लोगों का है। परन्तु तू दिन को और भविष्यद्वक्ता भी तेरे साथ रात को गिरेंगे और मैं तेरी माता को नष्ट करोंगा। मेरे लोग ज्ञान बिना नष्ट हुए हैं इस कारण कि तू ने ज्ञान को त्यागा है मैं भी तुझे अपना याजक होने से त्यागोंगा और इस कारण कि तू ने अपने ईश्वर की व्यवस्था को बिसराया है मैं भी तेरे पुत्रों को बिसराओंगा। अपनी मंडली के

समान उन्हों ने मेरे विरुद्ध पाप किया है इस लिये मैं उन
८ ऐश्वर्य्य को लाज से पलटोंगा। वे मेरे लोगों के पाप की भे
९ को खाते हैं और अपने पापों पर अपना मन लगाते हैं। औ
जैसा लोगों पर तैसा याजक पर होगा और मैं उनकी चा
का पलटा उन्हें देउंगा और उनकी क्रिया का फल उन्हें देउंग
१० और वे खायेंगे परन्तु तृप्त न होंगे वे छिनाला करेंगे पर
११ बढ़ेंगे क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की सुरत छोड़ दिई। छिनालप
१२ और मद्य और चोखा मद्य मन को हर लेता है। मेरे लो
अपने खूंटों से मंत्र लेते हैं और उनका दंड उन्हें बताता
क्योंकि छिनालपन के मन ने उन्हें बगदाया है और उन्हों
१३ छिनाल कर्म्म से अपने ईश्वर को बिसराया है। वे पर्ब्बतों क
चोटियों पर बलि चढ़ाते हैं और पहाड़ियों पर आलोन पे
तले और लिबनेह के पेड़ तले और हरे आलोन तले धू
जलाते हैं क्योंकि उसकी छाया अच्छी है इस लिये तुम्हारं
लड़कियां छिनाला करती हैं और तुम्हारी पत्नियां व्यभिचार
१४ करती हैं। क्या तुम्हारी बेटियों के छिनाल कर्म्म के लिये और
तुम्हारी पत्नियों के व्यभिचार के लिये मैं दंड न देउंगा क्योंकि
वे वेश्या के संग आप को अलग करती हैं और गणिकों के साथ
१५ बलि करती हैं इसी लिये असमझ लोग भ्रष्ट होंगे। हे
इसराईल यदि तू छिनाला करे तो यहूदा अपराध न करे और
तुम गिलगाल में न आना और न बैतिअवन में जाना और
१६ किरिया न खाना कि जीवत परमेश्वर सों। क्योंकि हटती हुई
कलोर की नाईं इसराईल हटता है परमेश्वर उन्हें मेम्ने की नाईं
१७ फैलाव स्थान में चरावेगा। इफराईम मूर्त्तिन से मिल गया है
१८ उसे रहने दे। वुह उनके दाख रस के पीछे गया उसके आज्ञा
कारियों ने नित्य छिनाल कर्म्म किया है उन्हों ने लाज से प्रीति
१९ रक्खी है। उनके सिवानों में पवन उन्हें सतावेगा और वे
अपनी बेदियों के लिये ले जायेंगे।

महा पापों के कारण इसराईल और यहूदा पर दंड प्रगट करना १—१४ उनके पश्चात्ताप से उन पर दया होनी १५— ।

हे याजको यह सुनो और हे इसराईल के घरानो सोचो और हे राजा के घराने कान धरो क्योंकि तुम्हारे विरुद्ध दंड की आज्ञा ऊई है इस लिये कि तुम मिस्फह में फंदा बने ऊए हो और ताबूर पर फैलाये ऊए जाल । फिरेऊओं ने जूझ को गहिरा किया है इस लिये मैं उन सभों पर ताड़ना करोंगा । मैं इफ़राईम को जानताहों और इसराईल मुझ से छिपा नहीं है क्योंकि इफराईम ने छिनाला किया है और इसराईल अशुद्ध ऊआ है । वे अपने ईश्वर की ओर फिरने को अपनी चालें न सुधारेंगे क्योंकि उनके मध्य में छिनालपन का आत्मा है और उन्हों ने परमेश्वर को नहीं जाना है । इस लिये इसराईल का अहंकार उसके मुंह के आगे घटाया जायगा और इसराईल और इफराईम अपनी अपनी बुराई में भ्रष्ट होंगे और यहूदा भी उनके साथ भ्रष्ट होगा । वे अपनी अपनी झुंड और अपने अपने ढोरों के लिये परमेश्वर को ढूंढ़ने जायेंगे परन्तु वे उसे न पावेंगे उसने आप को उनसे अलग किया है । उन्हों ने परमेश्वर से विश्वास घात किया है क्योंकि उन्हों ने उपरी बालकों को जन्माया है अब टिड्डी उनके भागों को चाट जायगी । गबिया में तुरही बजाओ और रामा में नरसिंगा फूंको और बैत अवन में शंका का शब्द हे बनियामीन पीछे देख । दपट के दिन में इफराईम उजाड़ होगा मैं ने इसराईल की गोष्ठियों में एक निश्चय बात जनाई है । सिवाने के लवैयों की नाईं यहूदा के अध्यक्ष ऊए हैं मैं पानी के समान अपना कोप उन पर उंडेलोंगा । इफ़राईम सताया ऊआ है वुह न्याय में टुट गया है क्योंकि उसने जान बूझ के व्यर्थ का पीछा किया । इस लिये मैं इफ़राईम के लिये कीट की नाईं होंगा और यहूदा के

१३ घराने के लिये घुन की नाईं। और इफ़राईम ने अपना रो
और यहूदा ने अपना घाव देखा तब इफ़राईम असूरी प
गया और यारब राजा कने भेजा परन्तु वुह तुम्हें चंगा
१४ करसका और न तुम्हारा घाव तुम से अलग हुआ। निश्चय
इफ़राईम के लिये सिंह की नाईं और यहूदा के घराने के लि
युवा सिंह की नाईं होंगा मैं हां मैं हीं फाड़ के जाता रहों
१५ मैं ले जाऊंगा और कोई न छुड़ावेगा। जबलों वे दोषी
नाईं दंड न पावें और मेरा मुंह न ढूंढ़ें तबलों मैं जा
रहोंगा और अपने स्थान को फिरोंगा वे अपने दुःख में तड़
मुझे ढूंढ़ेंगे।

६ छठवां पर्ब्ब।

पश्चात्ताप करने का और ईश्वर पर आशा रखने का
उपदेश १—३ पापियों पर बिलाप करना और
दुष्टों को दपटना ४—११।

१ आओ हम परमेश्वर कने लौट चलें क्योंकि उसने फाड़ा है
और वही हमें चंगा करेगा उसी ने मारा है और वही हम
२ पर पट्टी बांधेगा। वुह दो दिन में हमें जिलावेगा और तीसरे
३ दिन हमें उठावेगा और हम उसकी दृष्टि में जीयेंगे। और
हम जानेंगे और परमेश्वर को जान्ने के पीछे उसका पीछा
करेंगे उसका निकलना बिहान की नाईं सिद्ध है वुह बरखा
की नाईं पिछले बरखा की नाईं जो पृथिवी को सींचती है
४ हमारे पास आवेगा। हे इफ़राईम मैं तुझे क्या करों? हे
यहूदा मैं तुझे क्या करों? क्योंकि तुम्हारी भलाई बिहान के मेघ
५ की नाईं और तड़के की ओस की नाईं जाती रहती है। इस
लिये मैं ने भविष्यद्वक्तों के द्वारा से उन्हें ढाया है मैं ने अपने
मुंह के बचन से उन्हें घात किया है और मेरे विचार निकलती
६ ज्योति की नाईं। क्योंकि मैं ने दया चाही और बलिदान नहीं

और होम की भेटों से ईश्वर के ज्ञान को अधिक। परन्तु उन्हां ने आदम की नाईं नियम को तोड़ा हु उन्हों ने वहां मेरे साथ विश्वास घात व्यवहार किया है। गिलियाद कुकर्मियों का नगर उसके डगों में लोहू का चिह्न है। और जैसा जथा मनुष्यों के घात में लगती हैं तैसा याजकों की जथा शिकिम के मार्ग में घात करती है क्योंकि उन्हों ने ढीठ दुष्टता किई हु। इसराईल के घर में मैं ने एक भयंकर बस्तु देखी है वहां इफ़राईम में छिनाला है और इसराईल अशुद्ध है। हे यहूदा जो मेरे लोगों को बंधुआई में लेगये उनमें तेरे विरुद्ध कटनी ठहरी है।

७ सातवां पर्ब्ब ।

राजा और प्रजा का बड़ा बड़ा पाप प्रगट करना १—१० परमेश्वर का महाकोप जनाना ११—१६ ।

जब मैं ने इसराईल को चंगा किया तब इफ़राईम की बुराई और सामरः की दुष्टता देखी गई क्योंकि उन्हों ने छल किया है और चोर पैठता है और बाहर चोरों की जथा लूटती है। और वे अपने मन में नहीं कहते कि मैं उनकी सारी दुष्टता स्मरण करताहों उनकी करनी ने उन्हें घेर रक्खा है वे मेरे आगे हैं। वे अपनी दुष्टता से राजा को और अपने मिथ्या वचन से अध्यक्ष को आनंदित करते हैं। वे सब के सब व्यभिचार करते हैं वे एक तप्त भट्ठे की नाईं जबलों ख़मीरी न हो तबलों पिसान का गूंधवैया थम जाता है। हमारे राजा के दिन में जब अध्यक्ष मद्य से तप्त होने लगे उसने निन्दकों के साथ अपना हाथ बढ़ाया। क्योंकि जब वे घात में लगते हैं तब वे अपने मन को भट्ठे की नाईं सिद्ध करते हैं इफ़राईम रात भर सोता है और बिहान को आग की लवर की नाईं बरता है। सभों ने भट्ठे की नाईं आप आप को तप्त किया हु और अपने

न्यायियों को भस्म किया है और उनमें के सारे राजा गिरे
८ हैं और उन में किसी ने मेरी बिनती न किई। इफ़राईम
आप को जातिगणों में मिलाया है इफ़राईम बिन उलटी ह
९ रोटी है। परदेशियों ने उसका बल भक्षण किया है और व
नहीं जानता और जहां तहां उस पर पक्के बाल हैं और उ
१० चेत नहीं। और इसराईल का अहंकार उसके मुंह प
उतारा जायगा यद्यपि इन सारी बातों के तथापि वे अपने ईश्व
११ परमेश्वर की ओर नहीं फिरते न उसे ढूंढ़ते हैं। इफ़राई
एक भोले पंडुक की नाईं है वे मिसर को पुकारते हैं औ
१२ असूर को जाता है। जब वे जायेंगे तब मैं अपना जाल उ
पर फैलाउंगा और आकाश के पंछी की नाईं उन्हें उतारोंग
जब वे उनकी सभा को सुनेंगे तब मैं उनकी ताड़ना करोंगा
१३ हाय उन पर क्योंकि वे मुझ से भाग गये हैं उन पर विना
क्योंकि उन्हों ने मेरा अपराध किया है मैं ने उन्हें छुड़ाया है
१४ तथापि वे मेरे बिरुद्ध झूठ बोले हैं। उन्हों ने अपने मन
मेरी बिनती न किई यद्यपि वे अपने अपने बिछौने पर अ
के और चोखे दाखरस के लिये चिल्लाये हैं हां वे बटुर गरे
१५ और मेरे बिरुद्ध फिर गये। मैं ने उन्हें ताड़ना किई और
उनकी भुजा को बल दिया और उन्हों ने मेरे बिरुद्ध बुरी चिंता
१६ किई है। वे निर्लाभ की ओर फिर गये हैं वे छली धनुष की नाईं
हुए हैं उनके अध्यक्ष अपनी जीभ के कोप के मारे तलवार से
गिरेंगे और मिसर देश में यही उनका अपमान।

८ आठवां पर्ब्ब ।

इसराईल का मूर्त्ति पूजा और कपट और मूर्खता
के लिये दपटा जाना १—१४।

१ तू अपने तालू पर तुरही लगा कि असूरी गिद्ध की नाईं परमेश्वर
के मंदिर के बिरुद्ध आता है क्योंकि उन्हों ने मेरा नियम भंग किया

है और मेरी व्यवस्था को उलंघन किया है। वे मुझे यों पुकारेंगे कि हे इसराईल के ईश्वर हम तुझे जानते हैं। इसराईल ने अपने पास से भलाई दूर किई है बैरी उसे खेदेगा। उन्हों ने अपनी ओर से राजाओं को ठहराया है परन्तु मेरी ओर से नहीं उन्हों ने अध्यक्षों को ठहराया है और मैं ने नहीं जाना अपनी नष्टता के लिये उन्हों ने अपने सोने चांदी से मूर्त्ति बनाई है। हे सामरः अपनी बछिया को अपने पास से दूर कर मेरी रिस उनके विरुद्ध बरी है वे इसराईल में कबलों निर्दोषता को न सहेंगे। क्योंकि वुह कार्य्य कारियों का बनाया ज़ुआ है वुह देव नहीं है परन्तु सामरः का बछड़ा टुकड़ा टुकड़ा किया जायगा। क्योंकि उन्हों ने पवन बोया है और बौंडर लवेंगे उनकी टहनियों में कली नहीं उसमें पिसान उत्पन्न न होगा यदि उसमें कुछ उत्पन्न होवे तो परदेशी उसे नील जायेंगे। इसराईल निगला गया है और अब वे जातिगणों में अप्रसन्न पात्र के समान ज़ुए हैं। क्योंकि वे असूर को चढ़ गये हैं और इफ़राईम अकेले गदहे की नाईं है उन्होंने जारों को भाड़ा किया है। परन्तु अन्यदेशियों में से उनके भाड़ा करने के कारण मैं उन्हें बटोरोंगा और वे राजा के और अध्यक्ष के बोझ के मारे शीघ्र दुःखी होंगे। इस कारण कि इफ़राईम ने पाप करने को बेदियां बढ़ाई हैं पाप करने को उसके लिये बेदी हैं। मैं ने अपनी व्यवस्था की बज़ुतसी बातें उस पास लिखीं परन्तु वे उपरी वस्तु की नाईं गिनीगईं हैं। वे मेरे लिये ठहराई ज़ुई भेंट चढ़ाते हैं और मांस खाते हैं इस लिये परमेश्वर उन्हें ग्रहण नहीं करता अब वुह उनकी बुराई को स्मरण करेगा और उनके पापों का पलटा देगा वे मिसर को फिर जायेंगे। क्योंकि इसराईल ने अपने कर्त्ता को बिसराया है और मन्दिरों को बनाया है और यहूदा ने बाड़ित नगरों को बनाया है परन्तु मैं उसके नगरों पर आग भेजोंगा और वुह उसके भवनों को भक्षेगी।

९ नवां पर्ब्ब।

इसराईल की मूर्त्ति पूजा और अनेक पापों के कारण विपत्ति प्रगट करनी १—१७।

१ हे इसराईल आनंदित मत हो लोगों की नाईं मगन मत ह क्योंकि तू ने अपने ईश्वर को छोड़ के छिनाल कर्म किया है तू
२ हर एक खलियान पर खरची से प्रीति रक्खी है। खलिया और कुंड से उन्हें भोजन न मिलेगा और चोखा दाख र
३ उन्हें छल देगा। वे परमेश्वर के देश में न बसेंगे परन्तु इफ़राई मिसर को फिर जायेंगे और वे असूर में अशुद्ध बस्तु खायेंगे
४ वे परमेश्वर के लिये दाखरस तर्प्पण न करेंगे न उसे प्रस करेंगे उनके बलि उनके लिये विलापियों के भोजन की ना होंगे सब जो उसे खाते हैं अशुद्ध हो जायेंगे निश्चय उनक
५ बांछित भोजन परमेश्वर के मन्दिर में न आवेगा। उत्सव दिन और परमेश्वर के पर्ब्ब के दिन में तुम लोग क्या करोगे?
६ क्योंकि वे नाशक के आगे से चले जाते हैं मिसर उन्हें बटोरेग और मिमफिस उन्हें गाड़ेगा और उनके चांदी से लिये ङर
७ बांछित बस्तु में ऊंटकटारे होंगे और उनके तंबूओं में कांटा। दंड के दिन आये हैं प्रति फल के दिन पहुंचे तेरी बड़ी बुराई के लिये और बड़े बैर के लिये इसराईल जानेगा कि भविष्यद्वक्ता
८ मर्ख और आत्मिक जन बौड़हा। इफ़राईम का पहरू मेरे ईश्वर का साथी था उसके सारे मार्गों में भविष्यद्वक्ता ब्याधा के जाल की नाईं उन्हों ने मेरे ईश्वर के मंदिर के विरुद्ध बड़ा
९ बैर किया है। उन्हों ने गबिया के दिनों की नाईं आप को अशुद्ध किया है वुह उनकी बुराई स्मरण करेगा वुह उनके पाप
१० का दंड देगा। मैं ने इसराईल को बन में अंगूर की नाईं पाया है और तुम्हारे पितरों को पहिले आरंभ के गूलर पेड़ क फल की नाईं परन्तु उन्हों ने बअ़ाल पऊर का पीछा किया और

लाज के लिये आप को अलग किया और अपने प्रेम के समान
१ घिनित ऊए। इफ़राईम का ऐश्वर्य चिड़िया की नाईं उड़
जायगा यहां लों कि जन्म और गर्भ धारण और गर्भ न
२ होगा। हां यदि वे अपने बालकों को पालें मैं मनुष्यों में
उन्हें नाश करोंगा क्योंकि जब मैं उनसे जाता रहों निश्चय उन
३ पर संताप। जैसा मैं ने इफ़राईम को बांछित स्थान में चटान
पर लगाया ऊआ देखा तैसा इफ़राईम अपने पुत्रों को बधिकों
४ के पास लावेगा। हे परमेश्वर उन्हें तू क्या देगा? उन्हें गर्भ
५ पात और सूखा स्तन दे। गिलगाल में उनकी सारी दुष्टता
मेरे आगे है क्योंकि वहां मैं उनसे घिनाया उनकी करनी की
बुराई के लिये मैं उन्हें अपने घर से खेदोंगा और फिर उन पर
६ प्रेम न करोंगा उनके सारे अध्यक्ष धर्म त्यागी हैं। इफ़राईम
मारा ऊआ है उसकी जड़ सूख गई है वे फल न लावेंगे यदि
७ वे जनें तो मैं उनके गर्भ की बांछों को घात करोंगा। मेरा
ईश्वर उन्हें त्यागेगा क्योंकि उन्हों ने उसका बचन नहीं सुना
और वे जातिगणों में भ्रमक होंगे।

१० दसवां पर्ब्ब।

पापों के कारण इसराईल का दपटा जाना पश्चात्ताप
का उपदेश करना १—१५।

इसराईल दाख झड़वैया लता की नाईं है उसने अपने लिये
फल धर रक्खा है उसने अपने फल की बऊताई के समान
बेदियों को बढ़ाया है अपने देश की भरपूरी के समान उसने
सुन्दर सुन्दर मूर्त्ति बनाई है। उनका मन बट गया है अब
वे दोषी ठहराये जायेंगे वुह उनकी बेदियां तोड़ेगा वुह उनकी
मूर्त्तिन को नष्ट करेगा। क्योंकि अब वे कहते हैं कि हमारा
राजा नहीं क्योंकि हम परमेश्वर से नहीं डरते तो राजा हमारे
लिये क्या करेगा?। किरिया खाने में उन्हों ने बात कही और

नियम करने में भूठ, और अब खेत की हराई में विष पेड़
५ नाईं विचार उगता है। बैत अवन की बछिया के कार
सामरः के निवासी डरेंगे क्योंकि उसके लोग उस पर शो
करेंगे और उसके विभव के जाने के कारण से उसके बलि
६ चढ़वैये उसके लिये पीड़ित होंगे। और वुह असूर में याr
राजा की भेंट के लिये पहुंचाये जायेंगे इफ़राईम लज्जि
७ होगा और इसराईल उसके मंत्र से लज्जित होगा। जल
८ ऊपर के फेन की नाईं सामरः का राजा कट गया है। इसराई
का पाप अर्थात् अवन के ऊंचे स्थान नष्ट हो जायेंगे और क
और ऊंटकटारे उनकी बेदियों पर उगेंगे और वे पर्वतों
९ कहेंगे कि हमें ढांपो और टीलों को कि हम पर गिरो।
इसराईल तू ने गबिया के दिनों से भी अधिक पाप किया
१० क्या गबिया में उन्हें संग्राम ने जा ही नहीं लिया?। मैं बुरा
के पुत्रों के विरुद्ध आया और उन्हें ताड़ना किई और जब
अपनी दो बुराइयों के लिये ताड़ना पावेंगे तब लोग उन
११ विरुद्ध एकट्ठे होंगे। और इफ़राईम पली हुई कलोर की ना
अन्न की दौरी करने को प्रीति रखती है और मैं उसके गले के
जूये तले डालोंगा और इफ़राईम अन्न की दौरी करेगा औ
१२ यहूदा जोतेगा और याक़ूब उसके ढेले फोड़ेगा। अपने लि
धर्म्म में बोओ और कोमल प्रेम के फल में लवो और ज्ञान व
ऊसर भूमि अपने लिये जोतो जिसतें परमेश्वर को ढूंढ़ो जबले
१३ वुह आके तुम पर धर्म बरसावे। परन्तु तुम ने दुष्टता को जोत
है तुम ने बुराई को लवा है और तुम ने भूठ का फल खाया
इस कारण कि तू ने अपनी चाल पर और अपनी मंडली
१४ बलवंत जनों पर भरोसा किया है। तेरे लोगों में हुल्ल
मचेगा और तेरे सारे गढ़ इरब्बआल के हाथ से ज़लमना
नाश की नाईं नष्ट होजायेंगे संग्राम के दिन में माता बाल
१५ सहित पटकी जायेंगी। हे इसराईल के घराने तुम्हारी दुष्ट

के कारण तुम पर यों होगा बिहान को इसराईल का राजा निश्चय मारा जायगा ।

११ ग्यारहवां पर्व्व।

परमेश्वर का गुण इसराईल का न मान्ना १—४ उन पर ईश्वर का कोप ५—७ दया का समाचार ८—११ यहूदा का विश्वास १२ ।

जब इसराईल बालक था तब मैं ने उसे प्यार किया और अपने पुत्र को मिसर से बुलाया। जैसा मैं ने उन्हें बुलाया तैसा वे मुझ से चले गये उन्हों ने बआलिम के लिये बलि चढ़ाया और ढाली ऊई मूर्त्तिन के आगे धूप जलाया। मैं ने इफ़राईम के हाथ पकड़ के उन्हें चलने सिखाया परन्तु उन्हों ने नहीं जाना कि मैं ने उन्हें चंगा किया। मैं ने मनुष्य की डोरी से अर्थात् प्रेम के बंधनों से उन्हें खींचा और मैं उनके लिये ऐसा था जैसा कोई जूआ उनके गाल पर उभाड़े और मैं ने उन पर सुरत लगाई और उन्हें लिये फिरा। वुह मिसर देश को फिर जायगा और असूरी उसका राजा होगा क्योंकि उन्हों ने मेरे पास फिर आने को नाह किया। और तलवार उसके नगरों में अत्यंत पड़ेगी और उसके कारण नष्ट करेगी और उनके मंत्र के लिये भक्षेगी। और मेरे लोग मुझ से फिरने के कारण दोपधा में रहेंगे और यद्यपि वे जूआ के कारण उसे पुकारते हैं वुह उसे न उभाड़ेगा। हे इफ़राईम मैं तुझे क्योंकर त्यागों? हे इसराईल मैं तुझे किस भांति से सौंप देउं? मैं तुझे अदमः की नाईं कैसा बनाऊं? मैं तुझे सिबोईम की नाईं क्योंकर करों? मेरा मन मुझ में पलट गया है मेरा पश्चात्ताप उसी समय बरा है। मैं अपनी रिस के तपन को न उंडेलोंगा और इफ़राईम को सर्वथा नाश करने को मैं न फिरोंगा क्योंकि मैं ईश्वर हों और मनुष्य नहीं मैं तेरे मध्य में धर्म्ममय हों और

१० नगर का बारंबार जवैया नहीं। वे परमेश्वर के पीछे पी
चलेंगे वुह सिंह की नाईं गर्जेगा जब वुह गर्जेगा तब उनके ले
११ पश्चिम से फुरती करेंगे। वे मिसर से पक्षी की नाईं बेग करें
और असूर देश से पंडुक की नाईं, परमेश्वर कहता है कि
१२ उन्हें उनके घरों में रक्खोंगा। इफ़राईम ने झूठ से औ
इसराईल और यहूदा के घराने ने छल से मुझे घेरा है पर
इसके पीछे वे ईश्वर के लोग हो जावेंगे अर्थात् एक विश्वा
सिद्ध लोग।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

इफ़राईम का और यहूदा का दपटा जाना १—२
इफ़राईम का पाप और पश्चात्ताप का उपदेश
३—६ इफ़राईम के पाप और ईश्वर का धन्य न
मान्ने का दंड़ पाना ७—१४।

१ इफ़राईम पवन खाता है और पुरूआ पवन के पीछे जाता
है वुह प्रति दिन झूठ और बटमारी बढ़ाता है और उन्हों
ने असूरियों के साथ मेल किया है और मिसर में तेल
२ पहुंचाया जाता है। यहूदा से भी परमेश्वर का झगड़ा है
और वुह याक़ूब को उसकी चाल के समान दंड देगा और
३ उसकी क्रिया का प्रतिफल उसे देगा। उसने कोख में अपने
भाई की येड़ी धरा और अपने बल से ईश्वर से राजपुत्रों का
४ पराक्रम रखता था। हां वुह उस दूत पर राजपुत्र का
पराक्रम रखता था और वुह बल से प्रबल हुआ और उस
पास बिनती किई उसने उसे बैतईल में पाया और वहां उसने
५ उस्से वार्त्ता किई। सेनाओं का ईश्वर परमेश्वर उसके नाम का
६ स्मरण परमेश्वर है। इस लिये अपने ईश्वर की ओर फिरो
कोमल प्रेम और न्याय पालन करो और नित्य अपने ईश्वर की
७ आशा रक्खो। वुह बणिक है उसके हाथ में छल की तुला है

वुह सताने को चाहता है। और इफ़राईम ने कहा है कि निश्चय मैं धनमान ऊआ हों मैं ने अपने लिये संपत्ति प्राप्त किई है अपनी बुराई के निमित्त जिसे उसने पाप किया है उसके सारे परिश्रम उसके लिये पाये न जायेंगे। और तेरा ईश्वर परमेश्वर जो तुझे मिसर देश से निकाल लाया अगिले दिनों को नाईं फेर तुझे तंबूओं में बसाओंगा। तथापि मैं ने भविष्यदक्तों से कहा है और मैं ने दर्शन बढ़ाया है और भविष्यदक्तों के द्वारा से दृष्टांतों में कहा है। निश्चय गलियाद में बुराई है निश्चय वे व्यर्थ ऊए हैं जलजाल में वे बैलों का बलि करते हैं उनके खेतों की हराई में उनकी बेदियां ढेर ढेर की नाईं हैं। और याक़ूब सुरिया के देश में भागा और इसराईल ने पत्नी के लिये सेवा किई और पत्नी के लिये भेड़ की रखवाली किई। और भविष्यदक्ता के द्वारा से परमेश्वर इसराईल को मिसर से निकाल लाया और भविष्यदक्तों से उसकी रक्षा किई गई। इफ़राईम ने उसे अत्यंत रिसवाया इस लिये उसका प्रभु उसका लोह्न उसी पर धरेगा और उसकी अपनिंदा को उसी पर पलटेगा।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

इफ़राईम के मूर्त्ति पूजने का और ईश्वर के अन्य न मानने का महा दंड १—८ दया की और बचाव की बाचा ९—१४ सामरः के नाश होने की भविष्य बाणी १५—१६ ।

जब इफ़राईम कंपित हो हो बोला तब वुह इसराईल में बढ़ाया गया परन्तु जब उसने बअ़ाल के विषय में अपराध किया तब वुह मरा। और अब वे पाप पर पाप करते हैं और उन्हों ने अपने गुण से और अपनी चांदी से ढाली ऊई मूर्त्ति और प्रतिमा बनाई है सब के सब कार्य्यकारियों के कार्य

वे उनके विषय में कहते हैं कि जो बलि चढ़ाते हैं सो बछिय
२ को चूमें। इसी लिये वे बिहान के मेघ की नाईं और तड़के व
ओस की नाईं जो जाती रहती है और बौंडर से उड़ाये ज
खलिहान के भूसे की नाईं और चूल्हे के धूयें की नाईं होंगे
४ तथापि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे मिसर देश से निका
लाया मुझे छोड़ तू दूसरे को ईश्वर मत जानियो क्यों
मुझे छोड़ तू ने किसी ईश्वर को नहीं जाना और मुझे छो
५ कोई मुक्तिदायक नहीं। मैं ने तुझे अरण्य में बड़ी झुराहट
६ देश में जाना। वे अपनी चराई में तृप्त ऊए हैं और उन
७ मन फूल गये इसी लिये वे मुझे भूल गये। और मैं उन
लिये सिंह की नाईं होंगा, मार्ग में के चीते की नाईं मैं उ
८ देख रहोंगा। बच्चा हेराये ऊए भालू की नाईं मैं उनसे भें
करोंगा मैं उनके हृदय का पिंड फाड़ोंगा मैं वहां उन्हें सिंहिन
९ की नाईं भखोंगा और बन पशु उन्हें फाड़ेगा। हे इसराईल
१० मैं ने तुझे नाश किया है अब कौन तेरी सहाय करेगा?। तेरा
राजा कहां? किस स्थान में है? जिसतें वुह तुझे तेरे सारे नगरों
में बचावे और तेरे न्यायी कहां जिन्हें तू ने कहा कि मुझे राजा
११ और अध्यक्ष दीजिये। मैं ने अपनी रिस में एक राजा तुझे
१२ दिया और अपने कोप में उसे ले लूंगा। इफ़राईम की
१३ बुराई ढेर किईगई है उसका पाप धरा ऊआ है। पीड़ित
स्त्री की पीड़ा उस पर आवेगी वुह निर्बुद्धि पुत्र है नहीं तो वुह
१४ बालकों के फूट निकलने के स्थान में अब लों न ठहरता। मैं
उन्हें समाधि से छुड़ाओंगा मैं मृत्यु से उन्हें उद्धार करोंगा हे
मृत्यु तेरा जय कहां? हे समाधि तेरा नाश कहां? मेरी आंखे
से पछताना छिपा है यद्यपि वुह अपने भाईबन्दों में फलवंत
१५ था। तथापि पुरुआ अर्थात् परमेश्वर का पवन बन से निकल
आवेगा और उसका सोता सूख जायगा और उसके सोते का
अंत हो जायगा और उसके बांछित पात्रों के सारे भंडार लू

आयेंगे। सामरः उजाड़ी जायगी क्योंकि वुह अपने ईश्वर से फिर गई है वे तलवार से गिरेंगे और उनके बालक चूर चूर पटके जायेंगे और उनकी गर्भिणी चीरी जायेंगी।

१४ चैादहवां पर्ब्ब।

पश्चात्ताप का उपदेश और उसके विषय का मंत्र १—३ इसराईल पर विशेष आशीष की बाचा ४—९।

हे इसराईल अपने ईश्वर परमेश्वर की ओर फिर आ क्योंकि तू अपने अधर्म्म से भ्रष्ट ऊआ है। अपने साथ बचन लेओ और परमेश्वर की ओर फिरो और उसे यों कहो कि पापों को क्षमा कर और हम पर भलाई कर जिसतें हम अपने होठों का फल भेंट देवें। असूरी हमें न बचावेगा हम घोड़ों पर न चढ़ेंगे और अपने हाथों की क्रिया को फेर न कहेंगे कि तुम हमारे देव हो क्योंकि अनाथ तुझी से दया पाते हैं। मैं उनके फिर जाने को चंगा करोंगा मैं सेंत से उन्हें प्यार करोंगा क्योंकि मेरी रिस उससे फिर गई। मैं इसराईल के लिये ओस की नाईं होंगा और वुह सोसन की नाईं कलियावेगा और वुह लबनान की नाईं अपनी जड़ गाड़ेगा। उसकी सोरें फैलेंगी और उसका बिभव जलपाई पेड़ की नाईं और उसका गंध लबनान की नाईं होगा। उसकी छाया तले के बैठवैये फिरेंगे और अन्न की नाईं जीयेंगे और दाख की नाईं फूट निकलेंगे और लबनान के दाख रस की नाईं उसका स्मरण होगा। इफ़राईम को मूर्त्ति से क्या काम? मैं ने उसे सुना मैं ने उसे देवदारु पेड़ की नाईं लहलहाते देखा मुझसे तेरा फल पाया जाता है। बुद्धिमान कौन हैं जिसतें वुह ये बातें समझे? चतुर कौन जिसतें वुह उन्हें जाने? क्योंकि परमेश्वर के मार्ग ठीक, और सज्जन उनमें चलेंगे परन्तु अपराधी उनमें गिरेंगे।

यूईल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।
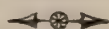
१ पहिला पर्ब्ब।

कालपडने का समाचार १—७ लोगों को व्रत के साथ प्रार्थना का उपदेश करना ८—१७ भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना करनी १८—२०।

१।२ परमेश्वर का वचन जो पस्तोल के बेटे यूईल पास पहुंचा। हे पुरनियो यह सुनो और देश के सारे निवासियो कान धरो ये बातें तुम्हारे दिनों में अथवा तुम्हारे पितरों के दिनों में ३ बीतीं?। उसे अपने बालकों से कहो और तुम्हारे बालक अपने ४ बालकों से और उनके बालक अगली पीढ़ी से। जो फनगों ने छोड़ा सो टिड्डियों ने खाया और जो टिड्डियों ने छोड़ा सो भक्षक टिड्डियों ने खाया और जो भक्षक टिड्डियों ने छोड़ा सो ५ नाशक टिड्डियों ने खाया। अरे मतवालो उठो और विलाप करो अरे मद्यपो नये दाख रस के लिये चिल्लाओ इस कारण ६ कि वुह तुम्हारे मुंह से नष्ट हुआ। क्योंकि एक बलवंत और अगिनित जाति मेरे देश पर चढ़ गई उनके दांत भक्षक सिंह के दांत की नाईं और उनकी दाढ़ के दांत सिंहिनी के ७ हैं। उन्हों ने मेरी लता को उजाड़ के लिये रक्खा है और टूटी डाली के लिये मेरा गूलर पेड़ उजाड़ते उन्हों ने उसे उजाड़ही डाला और फेंक दिया उनकी डालियां उजाड़ हो ८ गईं। अपने युवा पति के लिये टाट कसके दूल्ह की नाईं विलाप ९ करो। परमेश्वर के मन्दिर से पिसान की भेंट और पीने की

१० भेंट मिट गई परमेश्वर के सेवक याजको बिलाप करो। खेत उजाड़ी गई भूमि बिलाप करती है क्योंकि अन्न उजाड़ा गया
११ चोखा दाखरस उधेरा गया तेल मुरझा गया। हे किसाने लज्जित होजाओ हे दाख के माखियो जव और गोहूं के लिये
१२ चिल्लाओ क्योंकि खेत की लवनी नष्ट ऊई। लता झुरा गई गूलर पेड़ मुरझाजाता है अनार और खजूर भी और जंबीर खेत के सारे पेड़ झुरा गये निश्चय मनुष्य के पुत्रों से आनन्द
१३ जाता रहा। हे याजको उदासी बस्त्र से बिलाप करो हे बेदी के सेवको चिल्लाओ मेरे ईश्वर के सेवको चलो रात भर टाट ओढ़ ओढ़ पड़ रहो क्योंकि पिसान की भेंट और पीने की भेंट
१४ तुम्हारे ईश्वर के मन्दिर से रुक गई। ब्रत ठहराओ रोक के दिन प्रचारो प्राचीनों को और देश के सारे निवासियों को अपने ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर में बटोरो और परमेश्वर के आगे
१५ रोओ। उस दिन के लिये हाय क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है और वुह सर्वशक्तिमान की ओर से नाश की नाईं
१६ आवेगा। क्या तुम्हारी आंखों के आगे भोजन कट नहीं गया और आनन्द और मगनता हमारे परमेश्वर के मन्दिर से?।
१७ ढेलों के नीचे अन्न सड़गये गोले उजाड़ पड़े हैं खत्ते टूटे ऊए हैं
१८ क्योंकि अन्न झुरा गया। पशु कैसे कहरते हैं ढोर के लेंहड़े घबरा गये क्योंकि उनके लिये चराई नहीं हां झुंड की भेड़ें नष्ट ऊई
१९ हैं। हे परमेश्वर मैं तेरी प्रार्थना करताहूं क्योंकि बन के निवासों को आग ने भस्म किया और लवर ने चौगानों के सारे पेड़ों को
२० जला दिया। चौगान के पशु भी तेरी ओर चिल्लाते हैं क्योंकि नदियों के जल झुरा गये और आग ने बन की चराई को भस्म किया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

सेना की नाईं टिड्डियों का समाचार देना १—११
ब्रत और प्रार्थना का उपदेश करना १२—१७

आशीष पाने की बाचा १८—२७ धर्मात्मा देने की
बाचा २८—३२ ।

सैहून में तुरही बजाओ और मेरे पवित्र पहाड़ पर फूंका का
शब्द कर देश के सारे निवासी थर्थरावें क्योंकि परमेश्वर का
दिन आता है और समीप है। अंधियारा और उदासी का
दिन मेघ और गाढ़े अंधकार का दिन पर्ब्बतों पर गोधूली फैलने
की नाईं एक बड़े और बलवंत लोग ऐसा कभी न ऊआ और
पीछे बऊतसी पीढ़ीयों से पीढ़ी लों फेर न होगा। उनके आगे
आगे आग भस्म करती है और उनके पीछे पीछे लवर बरती
है उनके आगे आगे देश अदन की बारी की नाईं और उनके
पीछे पीछे उजाड़ अरण्य हां उनसे कुछ न बचेगा। वे घोड़े
की नाईं दिखाई देते हैं और घोड़चढ़ों की नाईं दौड़ेंगे।
पर्ब्बतों की चोटियों पर रथ के हड़हड़ाने की नाईं वे फांदेंगे
आग की लवर के शब्द की नाईं जो खूंथी को भस्म करती है
संग्राम की पांती के बीरों की नाईं। उनके मुंह के आगे लोग
अति पीड़ित होंगे सब के मुंह काले हो जायेंगे। वे बीरों की
नाईं दौड़ेंगे योद्धाओं की नाईं वे भीत पर चढ़ जायेंगे हर एक
अपने अपने मार्ग चलेगा और वे अपने पथों से न फिरेंगे एक
दूसरे को न ठेलेगा हर एक अपने अपने पथ पर चलेगा।
९ खड्ग पर गिरने में वे घाव न खायेंगे। वे नगर में इधर उधर
दौड़ेंगे वे भीत पर दौड़ेंगे वे घरों पर चढ़जायेंगे और चोर की
० नाईं खिड़कियों में पैठेंगे। उनके आगे पृथिवी थर्थराती है
और स्वर्ग कांपते हैं सूरज और चंद्रमा अंधियारे होगये और
१ तारों ने अपनी चमक खींच लिई। परमेश्वर अपनी सेना के
आगे अपना शब्द उचारेगा क्योंकि उसकी छावनी बड़ी है
और जो अपने बचन को पूरा करता है सो बलवंत है क्योंकि
परमेश्वर का दिन महान और बड़ा भयंकर है और उसे कौन
२ सहि सकेगा। तथापि अब भी परमेश्वर कहता है कि ब्रत

करते और विलाप और शोक करते अपने सारे मन से मेरी
१३ ओर फिरो। और अपने अपने मन को फाड़ो परन्तु बस्त्रों को
नहीं और अपने ईश्वर परमेश्वर की ओर फिरो क्योंकि वुह
क्रिपाल और दयाल है, रिसियाने में धीमा और बड़ा दयाल
१४ और बुराई पऊंचाने से पछताता है। क्या जानें वुह फिरे
और पछतावे और आशीष दे जाय पिसान की भेंट और पीने
१५ की भेंट अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये। सैहून में तुरही बजाओ
१६ ब्रत ठहराओ रोकने का दिन प्रचारो। लोग को बटोरो
मंडली को पवित्र करो प्राचीनों को एकट्ठे करो बालकों और
दूध पीवकों को बटोरो दूल्हा अपनी कोठरी से और दूल्हिन
१७ अपने शयन स्थान से निकल जाय। परमेश्वर के सेवक याजक
गण ओसारे के और बेदी के मध्य में विलाप करें और बोलें
कि हे परमेश्वर अपने लोगों को छोड़ दे और अपने अधिकार
की निन्दा होने मत दे जिसतें जातिगण उन पर प्रभुता न
करें वे किस लिये अन्यदेशियों में कहा करें कि उनका ईश्वर
१८ कहां। तब परमेश्वर अपने देश के लिये झाल खायगा और
१९ अपने लोगों पर मया करेगा। हां परमेश्वर उत्तर देके अपने
लोगों से कहेगा कि देखो मैं अन्न और चोखा दाखरस और
तेल तुम्हारे पास भेजोंगा और तुम उनसे तृप्त होओगे और
२० जातिगणों में आगे निन्दित न बनाओंगा। परन्तु मैं उत्तरही
सेना को तुम से दूर हटाओंगा और सूखे और उजाड़ देश
में खेदोंगा और उसके हरोल को पूर्वी समुद्र की ओर और
उसके पीछे पछिवां समुद्र की ओर और उसकी बास उठेगी
और उसका दुर्गंध निकलेगा यद्यपि उसने बड़े बड़े कार्य करने
२१ को आप को बढ़ाया है। हे देश डर मत आनन्द और मगन
२२ हो क्योंकि परमेश्वर बड़े बड़े कार्य करने को उभड़ा है। चौगान
के ढोरो मत डरो क्योंकि अरण्य की चराई ऊगती है और पेड़
२३ फलता है गूलर पेड़ और दाख उभड़ते हैं। और हे सैहून

के बेटो मगन होओ और अपने ईश्वर परमेश्वर से आनन्द करो क्योंकि वुह तुम्हें अगिला मेंह परिमाण से देता है और झड़ी तुम्हों पर उतारता है अर्थात आगे की नाईं अगिला
२४ पिछला मेंह। और खलिहान में अन्न भर पूर होगा और कुंड
२५ चोखे दाख रस और तेल से उबल जायेंगे। और जिन बरसों को मेरी भेजी हुई बड़ी सेनाओं ने अर्थात टिड्डियों ने भक्षक टिड्डी और नाशक टिड्डी और फनगे ने खाया है तुम्हें फेर
२६ देऊंगा। और तुम खाते खाते तृप्त होओगे और अपने ईश्वर परमेश्वर के नाम की स्तुति करोगे जिसने तुम्हों से आश्चर्य्यित
२७ व्यवहार किया है और मेरे लोग कभी लज्जित न होंगे। और तुम लोग जानोगे कि मैं इसराईल के मध्य में हों और तुम्हारा ईश्वर परमेश्वर मैं हों और कोई नहीं और मेरे लोग कधी
२८ लज्जित न होंगे। और पीछे ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सारे शरीरों पर डालोंगा और तुम्हारे बेटे बेटी भविष्य कहेंगी तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे और तुम्हारे युवा दर्शन पावेंगे।
२९ और उन दिनों में मैं दास दासियों पर भी अपना आत्मा
३० ढालोंगा। और मैं स्वर्ग और पृथिवी पर आश्चर्य दिखाओंगा
३१ अर्थात् लोहू और आग और धुंए के खंभे। परमेश्वर के महा और भयंकर दिन के आने से आगे सूरज अंधियारा और चंद्रमा
३२ लोहू हो जायगा। परन्तु ऐसा होगा कि जो कोई परमेश्वर का नाम लेगा सो बच जायगा क्योंकि सैहून पर्ब्बत पर और यिरोशलीम में परमेश्वर के कहने के समान बचाव होगा अर्थात् बचे हुए में जिन्हें परमेश्वर बुलावेगा।

३ तीसरा पर्ब्ब।

ईश्वरीय जन के बैरी के दंड पाने की भविष्य बाणी
१—१५ और इसराईल का कुशल १६—२१।

निश्चय देखो उन दिनों में और उस समय में जब मैं यहूदा

२ और यिरोशलीम की बंधुआई को फेर लाओंगा । तो मैं सारे जातिगणों को एकट्ठा करोंगा और उन्हें यहूशाफात की तराई में उतार लाओंगा और वहां मैं अपने लोगों के निमित्त और मेरे अधिकार इसराईल के निमित्त जिन्हें उन्हों ने जातिगणों में छिन्न भिन्न किया और मेरे देश को बांट लिया उन पर न्याय
३ करोंगा । हां उन्हों ने मेरे लोगों के लिये चिट्ठी डाली और बेश्या के लिये छोकरा पलटे में दिया और पीने को मद्य के लिये
४ कन्या बेची । और हे सूर और सैदा और पलस्ती के सारे सिवाने तुम्हों से मुझे क्या काम क्या बैर से मुझे पलटा देते हो और जो मुझे बैर लेउगे शीघ्र और झट पट तुम्हारा बैर
५ लेना तुम्हारे सिर पर लाओंगा । क्योंकि तुम लोगों ने मेरा सोना चांदी लिया है और मेरी अच्छी अच्छी और मनोरथ
६ वस्तु अपने भवनों में लाये हो । और यहूदा के और यिरोशलीम के पुत्रों को भी यूनानियों के पुत्रों के हाथ बेचा है
७ जिसतें उन्हें उनके सिवानों से दूर लेजाओ । देखो जहां तुम्हों ने उन्हें बेचा है मैं वहां से उन्हें उठालेउंगा और तुम्हारा बैर
८ लेना तुम्हारे सिर पर लाओंगा । और मैं तुम्हारे बेटे बेटियों को यहूदा के पुत्रों के हाथ बेचोंगा और वे उन्हें दूर देशी अर्थात् साबियों के हाथ बेचेंगे क्योंकि परमेश्वर ने कहा है ।
९ कि इसे जातिगणों में प्रचारो संग्राम सिद्ध करो बलवंतों
१० को उभाड़ो सारे योद्धा पास चले आवें । अपने फारों को तलवार के लिये और अपने हसुओं को भाला के लिये
११ तोड़ो दुर्बल कहे कि मैं बलवान हों । हे सारी ओर के जातिगणो बटुर के चले आओ आप आप को एकट्ठे करो तथापि
१२ परमेश्वर तुम्हारे बलवानों को वहां नीचा करेगा । जातिगण उठें और यहूशाफात की तराई में आवें क्योंकि वहां बैठके मैं
१३ चारो ओर के सारे जातिगणों का न्याय करोंगा । दरांती लगाओ क्योंकि लवनी पहुंची है उतर जाओ क्योंकि दाख का

कोल्हू भरा है और कुंड पर से बहा जाता है क्योंकि उनकी
४ दुष्टता बड़ी है। मंडली पर मंडली जूझ की तराई में क्योंकि
५ परमेश्वर का दिन जूझ की तराई पर समीप है। सूर्य और
चंद्रमा अंधियारे ऊए हैं और तारे चमकने से हरिगये।
६ परमेश्वर सैहून से भी गर्जेगा और यिरोश्लीम से अपना शब्द
उचारेगा और स्वर्ग और पृथिवी हिल जयेंगी परन्तु परमेश्वर
अपने लोगों के लिये शरण होगा और इसराईल के पुत्रों के
७ लिये एक दृढ़ गढ़। और तुम लोग जानोगे कि मैं तुम्हारा
ईश्वर परमेश्वर हों जो अपने धर्ममय पर्ब्बत सैहून में वास
करता हों और यिरोश्लीम पवित्र मय होगा और परदेशी
८ उसमें से फेर न जायेंगे। और उस दिन ऐसा होगा कि पर्ब्बत
नये दाख रस टपकावेंगे और पहाड़ियों से दूध बहेगा और
यहूदा के सारे रेल जल से बहेंगे और परमेश्वर के मंदिर से
९ एक सोता बहिके शिटिम की तराई को सींचेगा। यहूदा के
पुत्रों पर उनकी बरबस्ती के मारे और उनके देश में निर्दोष
लोह्न बहाने के कारण मिसर उजाड़ और अदूम उजाड़ का
१० बन हो जायगा। परन्तु यहूदा सनातन लों और यिरोश्लीम
११ पीढ़ी से पीढ़ी लों बना रहेगा। और मैं उनके लोह्न का
जिसका पलटा न लिया पलटा लेउंगा और परमेश्वर सैहून
में वास करेगा।

अमूस की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

अमूस का समाचार १—२ सुरिया पर ईश्वर का दंड ३—५ फलस्तिया पर ६—८ सूर पर ९—१० अदूम पर ११—१२ अमून पर १३—१५।

तिकुआ के गड़रियों में के अमूस के वचन जो उसने यहूदा के राजा ऊज़िया के दिनों में और इसराइल के राजा यूआश के बेटे यूर्ब्आम के दिनों में इसराईल के विषय में भुंइडोल के दो बरस आगे दर्शन में देखा था। और उसने कहा कि परमेश्वर सैहून में से गर्जेगा और यिरोशलीम में से वुह अपना शब्द उचारेगा और गड़रियों के निवास विलाप करेंगे और करमिल की चोटी झुरा जायेगी। परमेश्वर यों कहता है कि दमिश्क के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उसका दंड टाल न देउंगा क्योंकि उन्हों ने लोहे के पिटने से जलियाद को पीटा है। परन्तु मैं हज़ाईल के घराने पर एक आग भेजोंगा और वुह बिनहदाद के भवनों को भस्म करेगी। मैं दमिश्क का अड़ंगा भी तोड़ोंगा और ऊनकी तराई के वासियों को और अदन के घराने में राजदंडधारी को नष्ट करोंगा और परमेश्वर कहता है कि अरामी, कीर लों बंधुआई में जायेंगे। परमेश्वर कहता है कि गज़ा के तीन हां चार अपराध के लिये

मैं उसके दंड को टाल न देउंगा इस कारण कि अदूमियों के
७ सौंपने को वे भरपूर बंधुआई को बंधुआई में ले गये। परन्
मैं एक आग गज़ा की भीत पर भेजोंगा और वुह उस
८ भवनों को भस्म करेगी। प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं अश्दूद
में से निवासी को और अश्कलून में से दंडधारी को बिना
करोंगा और मैं अपना हाथ अकरून के विरुद्ध फेरोंगा और
९ फलस्तियों के बचेहुए नष्ट होंगे। परमेश्वर कहता है कि सूर
के तीन अपराध हां चार के लिये मैं उसका दंड न फेरोंग
क्योंकि उन्हों ने भरपूर बंधुआई के बंधुओं को अदूम को सौंप
१० है और भयवाद के नियम को स्मरण न किया। परन्तु
सूर की भीत पर एक आग भेजोंगा और वुह वहां के भवनों के
११ भस्म करेगी। परमेश्वर यों कहता है कि अदूम के तीन अपराध
हां चार के लिये मैं उसका दंड न फेरोंगा क्योंकि उस
तलवार से अपने भाई को खेदा और अपनी मया नष्ट कि
और उसका क्रोध सदा फाड़ा और उसने अपने कोप के
१२ नित पाला। परन्तु मैं एक आग तीमान पर भेजोंगा और
१३ वुह बासराह के भवनों को भस्म करेगी। परमेश्वर यों कहत
है कि अमून के पुत्रों के तीन अपराध हां चार के लिये मैं
उसका दंड न फेरोंगा क्योंकि उन्हों ने अपना सिवाना बढ़ाने
१४ को जलियाद की गर्भिणी को चीरा। परन्तु मैं संग्राम के दिन
ललकारते ललकारते और आंधी के दिन बौंडर के साथ रब्बा
की भीतों पर एक आग बारोंगा और वुह उसके भवनों के
१५ भस्म करेगी। परमेश्वर कहता है कि उनका राजा अर्थात्
वुह और उसके अध्यक्ष एकट्ठे बंधुआई में जायेंगे।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

ईश्वर का कोप मुआब पर १—३ व्यवस्था की निन्दा
के लिये यहूदा पर ४—५ मूर्त्तिपूजा के और बुराई

और धन्य न मान्ने के लिये इसराईल पर ६—१६ ।
परमेश्वर यों कहता है कि मुआब के तीन अपराध हां चार के लिये मैं उसका दंड न फेरोंगा क्योंकि उसने अदूम के राजा की हड्डियों को जलाके चूना बनाया। परन्तु मैं मुआब पर एक आग भेजोंगा और वुह करियूस के भवनों को भस्म करेगी और मुआब ऊधम से और ललकारने से और तुरही के शब्द से मरेगा। और परमेश्वर कहता है कि मैं उसके मध्य में से न्यायी को नष्ट करोंगा और उसके साथ उसके सारे अध्यक्षों को मारोंगा। परमेश्वर यों कहता है कि यहूदा के तीन अपराध हां चार के लिये मैं उसका दंड न फेरोंगा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्था को त्यागा है और उसकी बिधिन को नहीं पाला और उनके झूठे देवों ने उनसे चूक करवाई जिनके पीछे उनके पितर गये थे। परन्तु मैं यहूदा पर एक आग भेजोंगा और वुह यिरोशलीम के भवनों को भस्म करेगी। परमेश्वर यों कहता है कि इसराईल के तीन अपराध हां चार के लिये मैं उसका दंड न फेरोंगा क्योंकि वे चांदी के लिये धर्मी को और खरपों के लिये दरिद्र को बेंचते हैं। वे कंगाल के सिर को पृथिवी की धूल पर रगरते हैं और दीनों को मार्ग से भटकाते हैं और मेरे नाम की पवित्रता को अशुद्ध करने के लिये एक मनुष्य और उसका पिता एकही कन्या को ग्रहण करते हैं। और हर एक बेदी के पास बंधक के बस्त्रों पर फैलाते हैं और अपने देवों के मन्दिर में अनीति डांड़ का दाख रस पीते हैं। यद्यपि अमूरियों की ऊंचाई आरज पेड़ की नाईं थी और वुह आलोन पेड़ की नाईं पोढ़ था तथापि मैं ने अमूरियों को उनके आगे से नष्ट किया हां मैं ने ऊपर से उसका फल और नीचे से उसकी जड़ नष्ट किया। मैं तुम्हें मिसर देश से उठा लाया और चालीस बरस लों बन में तुम्हें लिये फिरा जिसतें अमूरियों के देश को बश में करो। और भविष्यद्वक्तों

के लिये मैं ने तुम्हारे पुत्रों को और नसरानी के लिये तुम्ह
तरुणों में से उभाड़ा परमेश्वर कहता है कि हे इसराईल
१२ पुत्रो क्या यों नहीं है?। परन्तु तुम्हों ने नसरानियों को द
रस पीने को दिया और भविष्यद्वक्तों को आज्ञा करके कहा
१३ भविष्य मत कहो। देख जैसे अन्न की आंटी से भरी हुई गा
१४ दबी है तैसे मैं तुम्हारे स्थान को दबाओंगा। और चालाक
से भागना जातारहेगा और बलवान अपने बल को स्थिर
१५ करेगा और न सामर्थी अपने को छुड़ावेगा। और न धनुषधा
ठहर सकेगा और फुरती का पांव उसे न बचावेगा और
१६ घोड़चढ़ा आप को छुड़ावेगा। और परमेश्वर कहता है कि
जो बलवानों में अपने मन को स्थिर करता है सो उसी दि
नंगा भागेगा।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

इसराईल और यहूदा के साथ ईश्वर का संवाद
१—८ सामरः का और दस गोष्ठी का दंड
९—१५ ।

१ हे इसराईल के पुत्रो परमेश्वर का यह बचन जो उसने तुम्हारे
बिरुद्ध में सारे घराने के बिषय में जिन्हें मैं मिसर देश से
२ निकाल लाया कहा है। पृथिवी के सारे घरानों में से केवल
तुम्हीं को मैं ने जाना है इस लिये तुम्हारे सारे अधर्मों के
३ लिये मैं तुम्हें दंड देउंगा। क्या बिना मेल से दो जन एकट्ठे
४ किसी रीति से चल सकें?। बिना अहेर सिंह क्या बन में
गर्जेगा? और बिना पकड़े हुए क्या तरुण सिंह अपनी मांद में
५ से शब्द करेगा?। बिना उसके लिये जाल बिछाये हुए क्या पंछी
भूमि पर बझेगा? जब बझाते हुए न बझे तो क्या कोई भूमि
६ पर से जाल को उठावेगा। क्या नगर में तुरही फूंकी जाय
और लोग न डरें? क्या बिना परमेश्वर के किये हुए नगर में

बिपत्ति पड़गी?। निश्चय प्रभु परमेश्वर कुछ नहीं करता जो वुह अपने भविष्यद्वक्ता सेवकों पर प्रगट नहीं करता है। सिंह गर्ज्जा है कौन न डरेगा? प्रभु परमेश्वर ने कहा है कौन भविष्य न कहेगा?। अश्दूद के भवनों में और मिसर देश के भवनों में प्रचार करके कहो कि अपने तईं सामरः के पर्वतों पर एकट्ठा करो और उसके मध्य में बड़े बड़े अंधेर और सताये हुओं को देखो। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि वे अंधेर और चोरी अपने भवनों में एकट्ठी करते हैं और ठीक करने नहीं जानते। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि एक बैरी देश को घेरेगा और वुह तुझ में से तेरे बल को उतारेगा और तेरे भवन नष्ट होंगे। परमेश्वर यों कहता है कि जैसे गड़रिया सिंह के मुंह से दो टांग अथवा कान का एक टुकड़ा छुड़ा लेता है तैसा इसराईल के पुत्र जो बिछौने के लग सामरः में और दमिश्क में पलंग के लग बैठता है छुड़ाया जायगा। प्रभु परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहता है कि सुनो और याकूब के घराने के आगे साक्षी देउ। निश्चय मैं जिस दिन में इसराईल के अपराध का दंड उसे देउंगा उसी दिन मैं बैतईल की बेदी को भी दंड देउंगा और बेदी के सींग काटे जायेंगे और भूमि पर गिरेंगे। और परमेश्वर कहता है कि मैं ग्रीष्मगृह सहित शीतगृह को मारोंगा और हाथीदांत के घर बिनाश होंगे और बड़े बड़े घरों का अंत होगा।

४ चौथा पर्ब्ब।

अंधेर और मूर्त्तिपूजा के लिये इसराईल का दपटा जाना १—५ उनके मन की कठोरता ६—११ परमेश्वर से भेंट करने के लिये चिताया जाना १२—१३।

हे बाशान के ढोर जो सामरः के पर्ब्बत पर हैं जो कंगालों

को सताते हैं और दरिद्रों को चूर करते हैं और अपने अ
स्वामियों से कहते हैं कि लाओ हम पीयें यह वचन सुने।
२ प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्रता की किरिया खाई है कि दे
तुम पर वे दिन आवेंगे जब कि तुम लोग अंकुरों से औ
३ तुम्हारे संतान मकुए के जाल से खींचे जायेंगे। और तुम्
हर एक अपने अपने आगे के दरारों में से बाहर जाय
और परमेश्वर कहता है कि मैं उसे निकाल फेंकोंगा औ
४ उसे सर्वथा नष्ट करोंगा। बैतईल में जाके अपराध करो औ
जलजाल में अपराध को बढ़ाओ और हर बिहान को अप
अपना बलि और तीसरे बरस अपना दसवां अंश चढ़ाओ
५ और ख़मीर के धन्यवाद की भेंट होम करो और मनमंता भें
को प्रचारो और बिदित करो क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहत
६ है कि हे इसराईल के पुत्रो तुम यही चाहते हो। परमेश्
कहता है कि मैं तुम्हारे सारे नगरों में तुम्हारे दांतों व
फरछाई और तुम्हारे सारे स्थानों में रोटी रहित तुम्हें दिय
७ है तथापि तुम लोग मेरी ओर नहीं फिरे। लवनी के तीन
मास पीछे मैं ने तुम से वृष्टि रोक रक्खी है और मैं ने ए
नगर पर बरसवाया और दूसरे नगर पर नहीं बरसवाय
है एक भाग पर वृष्टि ऊई और जिस भाग पर मैं ने न
८ बरसवाया सो झुरा गया। इस लिये दो तीन नगर जल
पान के लिये एक नगर में गये और तृप्त न ऊए परमेश्वर
९ कहता है कि तथापि तुम लोग मेरी ओर न लौटे। मैं ने
तुम्हें बऊत से झौंस और लेंढ़ा से मारा है तुम्हारी बारियां और
दाख की बारी और गूलर पेड़ और जलपाई पेड़ों को टिड्डियों
ने खाया है तथापि परमेश्वर कहता है कि तुम मेरी ओर न
१० लौटे। मैं ने मिसर की मरी की नाईं तुम्में मरी भेजी है तुम्हारे
तरुणों को मैं ने तलवार से घात किया है और घोड़ों की
बंधुआई के साथ तुम्हारी छावनी का दुर्गंध तुम्हारे नथुनों में

पहुंचाया है परमेश्वर कहता है कि तथापि तुम लोग मेरी ओर न लौटे। जैसा ईश्वर ने सदूम और अमूरा को उलट दिया तैसा मैं ने तुम्हें से उलट दिया और तुम लोग जलन में की निकाली हुई लुकठी की नाईं हुए परमेश्वर कहता है कि तथापि तुम लोग मेरी ओर न लौटे। इस लिये हे इसराईल मैं तुम से यों करोंगा और जैसा कि मैं तुम से यों करोंगा हे इसराईल अपने ईश्वर से भेंट करने को सिद्ध हो। क्योंकि देखो वुह पर्बतों का डौल करता है और पवन को सिरजता है और मनुष्यों को उसकी चिंता बताता है जो बिहान को अंधियारा करता है और पृथिवी के ऊंचे स्थानों को लताड़ता है उसका नाम सेनाओं का ईश्वर है।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

इसराईल पर बिलाप १—३ ईश्वर के खोजने का उपदेश ४—१५ निंदितों और ढीठों पर ईश्वर का दंड १६—२० ईश्वर का इसराईल की कपट सेवा का त्याग करना २१—२७।

हे इसराईल के घराने यह बचन सुनो अर्थात् एक बिलाप जो मैं तेरे बिरुद्ध उच्चारता हों। इसराईल की कुंआरी गिरी है वुह फेर न उठेगी वुह अपने देश पर फैली है कोई उसे न उठावेगा। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस नगर से सहस्र बाहर निकल गये सो सौ को छोड़ेगा और जिस्से सौ निकल गये सो इसराईल के घराने के लिये दस छोड़ेगा। क्योंकि परमेश्वर इसराईल के घराने से यों कहता है कि मुझे ढूंढ़ो और तुम लोग जीओगे। परन्तु बैतईल को मत ढूंढ़ो और जलजाल में मत जाओ और बीरशबा को पार मत उतरो क्योंकि जलजाल अवश्य बंधुआई में जायगा और बैतईल बृथा के लिये होगा। परमेश्वर को ढूंढ़ो और तुम लोग जीओगे

नहो कि वुह यूसफ़ के घराने पर आग की नाईं झपटे और इसराईल के घराने को भस्म करे और कोई बुझवैया न हो।
७ हे लोगो जो बिचार को नागदौना और धर्म को बिष
८ बनाते हो। जिसने सात तारे और जाड़े को बनाया है और जो मृत्यु की छाया को बिहान कर्त्ता है और दिन अंधियारी रात बनाता है जो समुद्र के जलों को बुलाता है और उन्हें पृथिवी पर उंडेलता है परमेश्वर उसका नाम
९ है। जो बलवंतों पर उजाड़ बिथराता है और गढ़ों
१० उजाड़ लाता है। तुम लोग जो उसे बैर करते हो जो फाटक पर दपटता है और जो खराई से बोलता है उसे घिन क
११ हो। सो जैसा कि तुम्हारा लताड़ना कंगालों पर है और उ गोहूं दान लेते हो और यद्यपि तुम लोगों ने ढोकों से घ बनाया है तथापि तुम लोग उनमें न बसोगे यद्यपि त ने वांछित बारी लगाई है तथापि उसका दाख रस पीने
१२ पाओगे। क्योंकि मैं तुम्हारे अपराधों को और तुम्हारे महापा को जानता हों तुम लोग जो धर्मियों को सताते हो और घू
१३ लेते हो और फाटक पर कंगालों को फेर देते हो। इस लि उस समय में बुद्धिमान चुप रहेगा क्योंकि बुरा समय होगा
१४ तुम लोग अपने जीने के लिये बुराई नहीं परन्तु भलाई ढूं और तुम्हारे कहने के समान परमेश्वर सेनाओं का ईश्व
१५ तुम्हारे साथ होगा। बुराई से घिन और भलाई से प्रेम करो और फाटक पर न्याय स्थिर करो। क्या जानें परमेश्वर सेनाओं
१६ का ईश्वर यूसफ़ के बचे हुओं पर कृपाल होवे। इस लिये परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यों कहता है कि सारे चौड़े स्थानों में बिलाप होगा और सारे सड़कों में वे हाय हाय करेंगे और वे किसानों को शोक करने को और निपुण बिलापियों
१७ को बिलाप के लिये बुलावेंगे। और सारी दाख की बारियों में बिलाप होंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे

मध्य में से जाऊंगा। संताप उन पर जो परमेश्वर के दिन को चाहते हैं परमेश्वर के इस दिन से तुमसे क्या? वुह अंधियारा है उंजियाला नहीं। जैसा कि कोई जन सिंह से भागे और भालू उसे मिले अथवा घर में जाके अपने हाथ को भीत पर ओठंगावे और उसे सांप डंसे। क्या परमेश्वर का दिन अंधियारा न होगा और उंजियाला नहीं? अर्थात् बड़ा अंधियारा और उसमें कुछ चमक नहीं?। मैं तुम्हारे पर्वों को घिना के त्यागता हों और मैं तुम्हारे उत्सवों को न सूंघोंगा। यद्यपि तुम लोग होम की भेंट मेरे लिये चढ़ाओ मैं उन्हें और तुम्हारी पिसान की भेंटों को ग्रहण न करोंगा और मैं तुम्हारे पशुओं की कुशल की भेंटों पर सुरत न करोंगा। तुम अपने गान का शब्द मेरे आगे से दूर करो और तुम्हारी बीणा का शब्द मैं न सुनोंगा। परन्तु न्याय को पानियों की नाईं और धर्म को तरखा की नाईं गिरने देउ। हे इसराईल के घराने तुमने क्या चालीस बरस लों अरण्य में मेरे लिये बलि और पिसान की भेंट चढ़ाई है?। नहीं परन्तु तुम लोगों ने अपने मुलख के तंबू को और अपने देव किऊन के तारे को अर्थात् अपनी मूर्त्तिन को जिन्हें तुमने अपने लिये बनाया है उठाया है। इस लिये परमेश्वर जिसका नाम सेनाओं का ईश्वर है यों कहता है कि मैं दमिश्क से परे तुम्हें बंधुआई में निकलवाओंगा।

६ छठवां पर्व्व।

अपनी इच्छा पर चलने से इसराईल पर संताप
१—६ विपत्ति की भविष्य बाणी ७—१४।

हाय उन पर जो सीऊन में चैन से हैं और सामरः के पर्वत पर विश्वास करते हैं और देश गणों के श्रेष्ठों में गिने जाते हैं और जिन के पास इसराईल के घराने जाते हैं। कलनिह को पार जाके देखो और वहां से बड़े हमास को जाओ तब

फलस्तियों के गात में जाओ वे क्या इन राज्यों से अच्छे हैं ? अथ
३ उनका सिवाना तुम्हारे सिवानों से बड़ा है? । जो अपने
से विपत्ति का दिन दूर करते हैं और अंधेर के बैठक को
४ करते हैं जो हाथीदांत के पलंगों पर लेटते हैं। और अप
खाट पर फैलते हैं और झुंड में से मेम्नों को और थान में
५ बछरुओं को भक्षण करते हैं। और वीणा के शब्द से गाते
६ और वे दाऊद की नाईं अपने लिये बाजे बनाते हैं।
कटोरों में दाख रस पीते हैं और वांछित सुगंध लगाते
७ परन्तु यूसफ़ के दरार के लिये पीड़ित नहीं हैं। इस कारण
अगिले लोगों के साथ बंधुआई में जायेंगे और जो आप को फैल
८ हैं उनका जेउनार दूर किया जायगा। प्रभु परमेश्वर
अपनोंही किरिया खाई है और सेनाओं का ईश्वर कहता
कि मैं याक़ूब की उत्तमता से घिनाता हों और उसके भव
से बैर करता हों इस लिये मैं नगर को उसकी भरपूरी सं
९ सौंपोंगा। और ऐसा होगा कि यदि एक घर में दस
१० बचगे तो वे मरेंगे। और मनुष्य का कुनबा और जो
जलाता है उसके घर के भीतर से हाड़ निकालने के लिये
उठावेगा और घर के आस पास के जन से कहेगा कि
साथ और भी कोई है? तब वुह कहेगा कि नहीं उसके
वुह कहेगा कि चुप रह क्योंकि वे परमेश्वर का नाम नहीं लेते
११ इस लिये देख परमेश्वर आज्ञा करेगा और बड़े घर को दरा
१२ से और छोटे घर को टीलों से मारेगा। क्या चटान पर घो
दौड़ते हैं? क्या कोई बैल से उसे जोत्ता है? क्योंकि तुम ने न्य
को विषवृक्ष से और धर्म्म फल को नागदौना से पलट दिया है
१३ तुम लोग जो वृथा से आनंदित हो और कहते हो कि हम
१४ अपने लिये राज्य को अपनी सामर्थ्य से नहीं लिया? देख
इसराईल के घराने परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यों कहता
कि मैं तुम्हारे विरुद्ध एक देशी लोग को उठाओंगा और हामा
की पैठ से नदी के बन लों वे तुम्हें सतावेंगे।

अमूस की प्रार्थना पर मरी का टाला जाना १—६ ईश्वर का खरे न्याय का प्रगट करना ७—९ अमासिया याजक का भविष्य कहने से अमूस को बरजना १०—१३ अमूस का अपना पद बताना १४—१७।

प्रभु परमेश्वर ने मुझे यह दिखाया है और क्या देखता हों कि उसने पिछले ऊगने में टिड्डियों को सिरजा और क्या देखता हों कि वुह राजा के लवने के पिछले ऊगनें के समय में था। और ऐसा ऊआ कि जब वे देश के साग पात खा चुके तब मैं ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं बिनती करता हों क्षमा कीजिये याकूब को कौन उभाड़ेगा? क्योंकि वुह छोटा है। परमेश्वर इस विषय में पछताया और परमेश्वर ने कहा कि यह न होगा। प्रभु परमेश्वर ने यह मुझे दिखाया और क्या देखता हों कि प्रभु परमेश्वर ने आग के दारा से बिचार करने को बुलाया और बड़े गहिराव को सोख लिया और उसने उस में से कुछ भस्म किया। तब मैं ने कहा, हे प्रभु परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हों कि थम जा याकूब को कौन उभाड़ेगा? क्योंकि वुह छोटा है परमेश्वर इसे पछताया। और प्रभु परमेश्वर ने कहा कि यह भी न होगा। यों उसने मुझे दिखाया तो क्या देखता हों कि प्रभु साऊल से बनाई ऊई एक भीत पर खड़ा है और उसके हाथ में एक साऊल। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि अमूस तू क्या देखता है? मैं ने उत्तर दिया कि एक साऊल तब प्रभु ने कहा कि देखो मैं एक साऊल इसराईल लोगों के मध्य में लगाता हों मैं फिर उन में से होके न जाओंगा। और इसहाक़ के ऊंचे स्थान उजाड़े जायेंगे और इसराईल के पवित्र स्थान खंडहर किये जायेंगे और खड्ग लेके मैं यूर्बआम के घराने के बिरुद्ध उठोंगा। तब यह कहते ऊए बैतील के याजक अमासियाः ने इसराईल के राजा यूर्बआम को कहला भेजा कि इसराईल के

घराने के मध्य में अमूस ने तेरे विरुद्ध युक्ति बांधी है और दे
११ उसके सारे बचन का भार सहि नहीं सक्ता। क्योंकि अम
यों कहता है कि यूर्बआम खड्ग से मारा जायगा और इसराई
१२ अपनेही देश में से निश्चय बंधुआई को जायगा। तब अमासिय
ने अमूस से कहा कि हे दर्शी यहूदा के देश को भाग जा औ
वहीं रोटी खा और भविष्य कह पर बैतील के विरुद्ध फे
१३ भविष्य मत कह। क्योंकि वुह राजा का पवित्र स्थान औ
१४ राज्य का मन्दिर है। तब अमूस ने उत्तर देके अमासियाः
कहा कि मैं तो न भविष्यदक्ता और न भविष्यदक्ता का पुत्र पर
१५ मैं एक अहीर था और गूलर फल का बटोरवैया। औ
परमेश्वर ने मुझे झुंड के पीछे पीछे से लिया और परमेश्वर
१६ मुझे कहा कि जा मेरे इसराईल लोगों से भविष्य कह। से
इस लिये परमेश्वर का बचन सुन तू कहता है कि इसराई
के विरुद्ध भविष्य मत कह और इसहाक़ के घराने के विरु
१७ बचन मत डाल। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तेरं
पत्नी नगर में वेश्या होगी और तेरे बेटे बेटियां तलवार
गिरेंगी और तेरा देश रस्सियों से बांटा जायगा और
अशुद्ध देश में मरेगा और निश्चय इसराईल अपनेही देश
से बंधुआई को जावेंगे।

८ आठवां पर्ब्ब।

इसराईल के नष्ट होने का दृष्टांत १—३ बड़े बड़े
कोप की भविष्य बाणी ४—१० ईश्वर के बचन का
अकाल ११—१४।

१ प्रभु परमेश्वर ने यों मुझे दिखाया और क्या देखता हों कि एक
२ टोकरा ग्रीष्म के पिछले फल। और उसने मुझे कहा कि अमूस
तू क्या देखता है? मैं ने उत्तर दिया कि एक टोकरा ग्रीष्म के
पिछले फल तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि मेरे इसराईल

लोगों पर अंत आया है मैं उनमें से होके फेर न जाओंगा। ३ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि उस दिन भवन की गायिका चिल्लावेंगी हर एक स्थान में बहुतसी लोथें दूर करो चुपके ४ हो रहो। अरे जो दरिद्र को कूचते हो और कंगालों को देश ५ में से घटाते हो। यह सुनो तुम जो कहते हो कि अमावास्या कब जायगी जिसतें हम अन्न बेचें? और बिश्राम, जिसतें हम गोहूं खोलें ईफ़ा को छोटा करने को और शेकल को भारी करने ६ को जिसतें छल के तुलों को बिगाड़ो कि घटाये ऊओं को चांदी से और खरपों की संती दरिद्रों को मोल लेओ, जिसतें बिगड़ा ७ ऊआ गोहूं बेचें। परमेश्वर ने याक़ूब की उत्तमता की किरिया खाई है कि निश्चय मैं उनके सारे कार्य्य को कधी न भूलोंगा। ८ क्या देश इस बात से झकोरा न जायगा, और उसमें के सारे बासी बिलाप न करेंगे, और सब के सब नदी की नाईं न उमड़ेंगे और बाहर खेदा न जायगा, और मिसर की नदी ९ की नाईं न बूड़ेगा?। और परमेश्वर कहता है कि उस दिन यों होगा कि मैं मध्यान्ह में सूर्य्य को अस्त कराओंगा और १० उंजियाले दिन में देश को अंधियारा करोंगा। और मैं तुम्हारे जेउनारों को बिलाप से और तुम्हारे सारे गान को हाहाकार से पलट डालोंगा और टाट वस्त्र सब की कटि पर लाओंगा और सभों के सिर पर मुंड़ायन और मैं उसे एकलौते के बिलाप के समान बनाओंगा और उसका अंत ११ कड़वाहट के दिन की नाईं। प्रभु परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि देश में मैं अकाल भेजोंगा कुछ अन्न जल १२ का नहीं परन्तु परमेश्वर के बचन सुन्ने का अकाल। और मनुष्य समुद्र से समुद्र लों भरमेंगे और उत्तर से दक्खिन लों परमेश्वर का बचन सुन्ने को इधर उधर दौड़ेंगे और उसे न पावेंगे। १३ तब रूपवती कुमारियां और युवा पुरुष प्यास के मारे मूर्छित १४ होंगे। जो सामरः के पाप की किरिया खा खा कहते हैं कि हे

दान तेरा देव जीता है और बीरशबा का मार्ग जीता और वे गिरेंगे और फेर न उठेंगे।

९ नवां पर्ब्ब ।

ईश्वर का दंड अवश्य इसराईल पर पड़ना १—७ थोड़े बचाये जायेंगे ८—१० मसीह के राज्य की भविष्यवाणी ११—१५ ।

१ मैं ने परमेश्वर को बेदी पर खड़ा होते देखा और उसने कह कि उतरंग को मार जिसतें चौकठ हिल जायें क्योंकि मैं उ सभों को उनके सिर पर घाव करोंगा और उनके वंश को तलवा से घात करोंगा भगवैये उनमें से न भागेंगे और बचवैः २ निकलनेवाले उनमें से न बच निकलेंगे। जो वे समाधि के नीचे खोदें वहां से मेरा हाथ उन्हें पकड़ेगा और यदि वे स्व ३ लों चढ़ जायें वहां से मैं उन्हें उतारोंगा। और यदि वे करमिल की चोटी पर आप को छिपावें मैं खोज के उन्हें वहां से निकालोंगा और यदि वे समुद्र की थाह में मेरे आगे से छिपें वहां मैं सर्प्प को आज्ञा करोंगा और वुह उन्हें डंसेगा। ४ और यदि वे अपने बैरियों के आगे बंधुआई में जायें वहां मैं तलवार को आज्ञा करोंगा और वुह उन्हें नाश करेगी और मैं अपनी आंखें उन पर बुराई के लिये रक्खोंगा और भलाई ५ के लिये नहीं। क्योंकि प्रभु परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर वुह है जो धरती को कूता है और वुह पिघलती है और उस पर के सारे निवासी बिलाप करेंगे और सब के सब नदी की नाईं उभडेंगे और मिसर की नदी की नाईं डूब जायेंगे। ६ वुह अपने ऊपरी अंतःपुर स्वर्गों में और अपने भंडार की नेउं पृथिवी पर बनाता है, वुह समुद्र के जलों को बुलाता है और उन्हें पृथिवी पर उंडेलता है परमेश्वर उसका नाम ७ है। परमेश्वर कहता है कि हे इसराईल के पुत्रो क्या तुम

लोग मेरे लिये कोशी के पुत्रों के समान नहीं? क्या मैं इसराईल को मिसर देश से और फलस्तियों को कफ़तूर से और अरम को कीर से नहीं लाया? । देखो प्रभु परमेश्वर की आंखें इस पाप राज्य पर हैं और पृथिवी पर से मैं उसे नाश कर डालोंगा तथापि परमेश्वर कहता है कि मैं याक़ूब के घराने को सर्वथा नाश न करोंगा। क्योंकि देखो मैं आज्ञा करोंगा और मैं इसराईल के घराने को सारे जातिगणों में ऐसा चालोंगा जैसा कोई चलनी से चालता है और भूमि पर
• एक अन्न न गिरेगा। परन्तु मेरे लोगों के सारे पापी तलवार से मारे जायेंगे जो कहते हैं कि बुराई पास न आवेगी और
१ हम पर आ नपहुंचेगी। उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए तंबू को उठाओंगा और उसके दरारों को सुधारोंगा और उसके उजाड़ों को उठाओंगा और पुराने दिनों की नाईं बनाओंगा।
२ जिसतें रहे हुए मनुष्य और सारे अन्यदेशी जिन पर मेरा नाम लिया जाता है परमेश्वर को खोजें इसका कर्त्ता परमेश्वर
३ कहता है। परमेश्वर कहता है कि देख व दिन आते हैं कि जोतवैया लवैया के पास बढ़ेगा और दाख का लताड़ू बीहन के बोवैये के पास बढ़ जायगा और पर्वत से मीठा दाख रस टपकेगा
४ और सारी पहाड़ियां पिघलेंगी। और मैं अपने इसराईल लोगों की बंधुआई को फेर लाओंगा और वे उजाड़ नगरों को बनावेंगे और बसेंगे और वे दाख की बारी लगावेंगे और उसका दाख रस पीयेंगे और वे बारियां लगावेंगे और उनके
५ फल खायेंगे। परमेश्वर तेरा ईश्वर कहता है कि उनके देश में मैं उन्हें लगाओंगा और जो देश मैं ने उन्हें दिया है वे उसमें से फेर उखाड़े न जायेंगे।

उबदिया की पुस्तक।

---
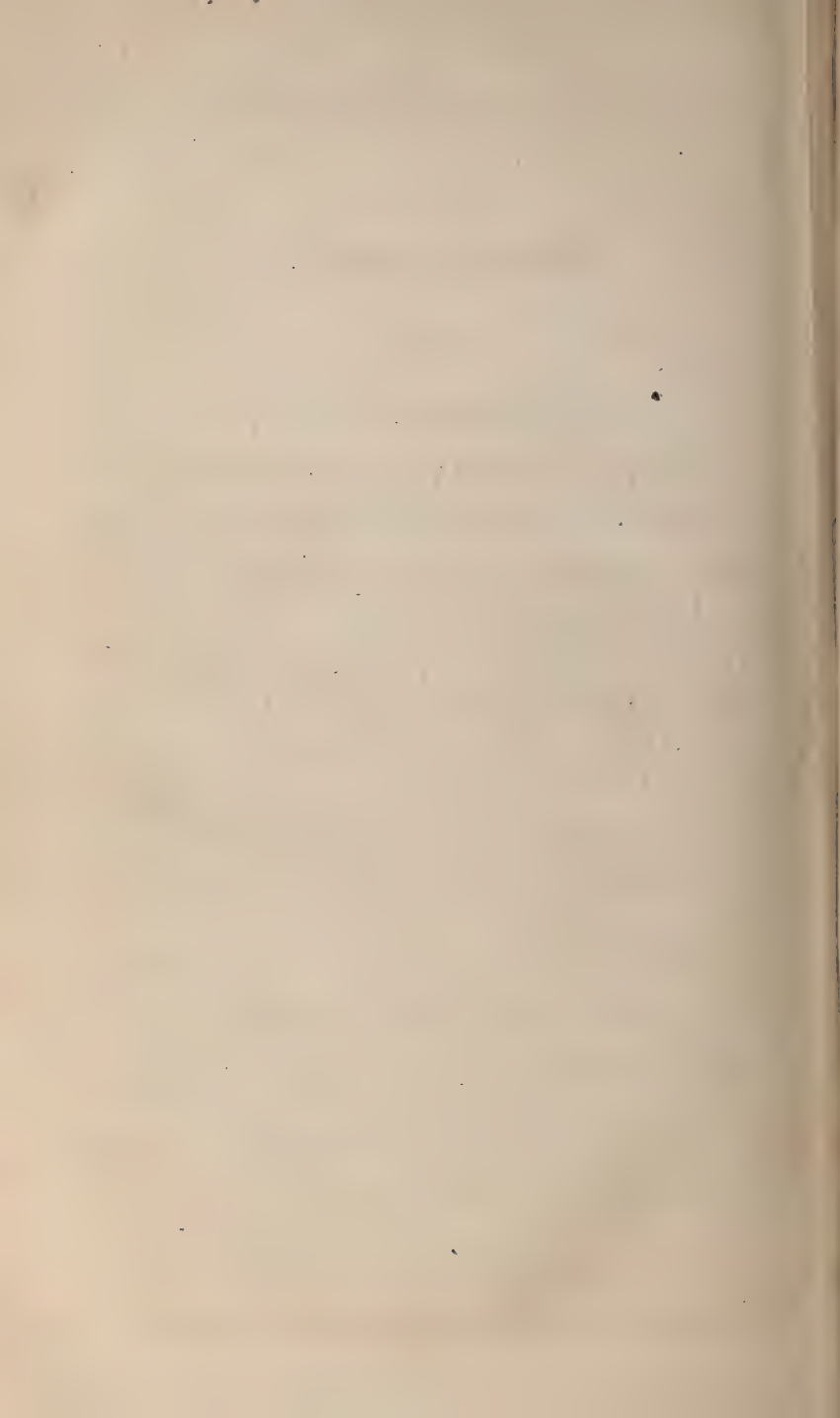
१ पहिला पर्ब्ब।

अहंकार के लिये अदूम के नष्ट होने की भविष्य
बाणी १—१६ पिछले दिनों का आशीष १७—२१।

उबदिया का दर्शन प्रभु परमेश्वर अदूम के विषय में यों कहता है, हमने परमेश्वर से एक चर्चा सुनी है और अन्यदेशियों में एक दूत भेजा गया है कि उठो उसके विरुद्ध संग्राम को चढ़ें। देख मैं ने तुझे अन्यदेशियों में छोटा किया है और तू अति निन्दित है। वुह जो पर्ब्बत की गुहों में अपने निवास की ऊंचाई में रहता है तेरे मन के अहंकार ने तुझे छला है जिसने अपने मन में कहा है कि कौन मुझे भूमि पर उतारेगा?। परमेश्वर कहता है कि यद्यपि तू आप को गिद्ध की नाईं उभाड़े और अपना बसेरा तारों में बनावे तथापि मैं तुझे वहां से उतारोंगा। यदि चोर तुझ पास आता अथवा बटमार रात को तो क्या वे अघाये लों चोरी न करते? और यदि दाख के बटुरवैये तुझ पास आते तो क्या वे बिनिया दाख न छोड़जाते। तू क्योंकर काटा गया ऐस क्योंकर खोजा गया उनकी छिपी ऊई वस्तें क्योंकर ढूंढ़ी गईं। तेरे सारे साथी लोग तुझे सिवाने लों लाये हैं और तेरे कुशल के और तेरी रोटी के मनुष्यों ने तुझे छला है और तुझ पर प्रबल ऊए हैं उन्हों ने तेरे नीचे जाल बिछाया है तुझ में कुछ समझ नहीं। परमेश्वर कहता है कि क्या मैं उस दिन अदूम में से बुद्धिमानों को और ज्ञानियों को ऐस

९ के पर्ब्बत में से नष्ट न करोंगा ?। हे तीमान तेरे बल
घबरा न जायेंगे ? जिसतें ऐस के पर्ब्बत का हर एक जन
१० जाय । तेरे भाई याक़ूब के विरुद्ध तेरे घात और अंधेर के लि
११ लाज तुझे ढांपेगी और तू सदा के लिये नष्ट होगा । जि
दिन तू दूसरे अलंग खड़ा ऊआ और जिस दिन में विदे
उनकी सेनाओं को बंधुआई में ले गये और उपरी उस
फाटकों में पैठ गये और यिरोशलीम पर चिट्ठी डाली तू
१२ उनमें से एक की नाई था । परन्तु जिस दिन में तेरा भा
परदेशी ऊआ तुझे उस दिन देखना उचित न था उनके नाश
दिन में तुझे यहूदा के सन्तानों पर आनन्द करना न था औ
१३ विपत्ति के दिन में तुझे अहंकार से बोलना न था । मेरे लो
की विपत्ति के दिन में तुझे उनके फाटक में पैठना उचित न थ
हां उनकी विपत्ति के दिन में उसका कष्ट तुझे देखना न था औ
उनकी विपत्ति के दिन में उनकी संपत्ति पर हाथ डालना
१४ था । और चौमार्ग में खड़ा होके उसके बचेऊओं को का
डालना न था उसकी विपत्ति के दिन उसके रहेऊए को सौंपदेन
१५ न था । क्योंकि सारे जातिगणों पर परमेश्वर का दिन पास है
जैसा तू ने किया है तैसा तुझ पर किया जायगा तेरा व्यवहा
१६ तेरेही सिर पर पलटेगा । क्योंकि तुम ने जैसा मेरे पवि
पर्ब्बत पर पीया है तैसा चौदिशा के सारे जातिगण पीयेंगे
पीयेंगे और घोंटलेंगे और वे ऐसे होंगे जैसा कि नथे ।

१७ परन्तु सैहून पर्ब्बत पर निस्तार होगा और पवित्रता होगी
और याक़ूब का घराना अपने अधिकारों को प्राप्त करेगा
१८ और याक़ूब का घराना आग होगा और यूसफ का घराना ल
लवर और ऐस का घराना खूंटे के लिये और वे उन्हें बारेंगे
और भखेंगे और ऐस के घराने में से कोई न बचेगा क्योंकि
१९ परमेश्वर ने कहा है । दक्खिनी लोग ऐस के पर्ब्बत को वश में
करेंगे और चौगान के फलस्तानियों को और वे इफराईमियों के

खेतों को और सामरी के खेतों को वश में करेंगे और बनियामीन गिलियाद को। और इसराईल के संतान की बंधुआई की यह सेना जो किनानियों में सरीफ़ात लों है और यिरोशलीम की बंधुआई जो सिफ़ाराद में है दक्खिन के नगरों को वश में करेंगी। और सैहून पहाड़ पर ऐस पहाड़ के न्याय के लिये तारक आवेंगे और राज्य परमेश्वर का होगा।
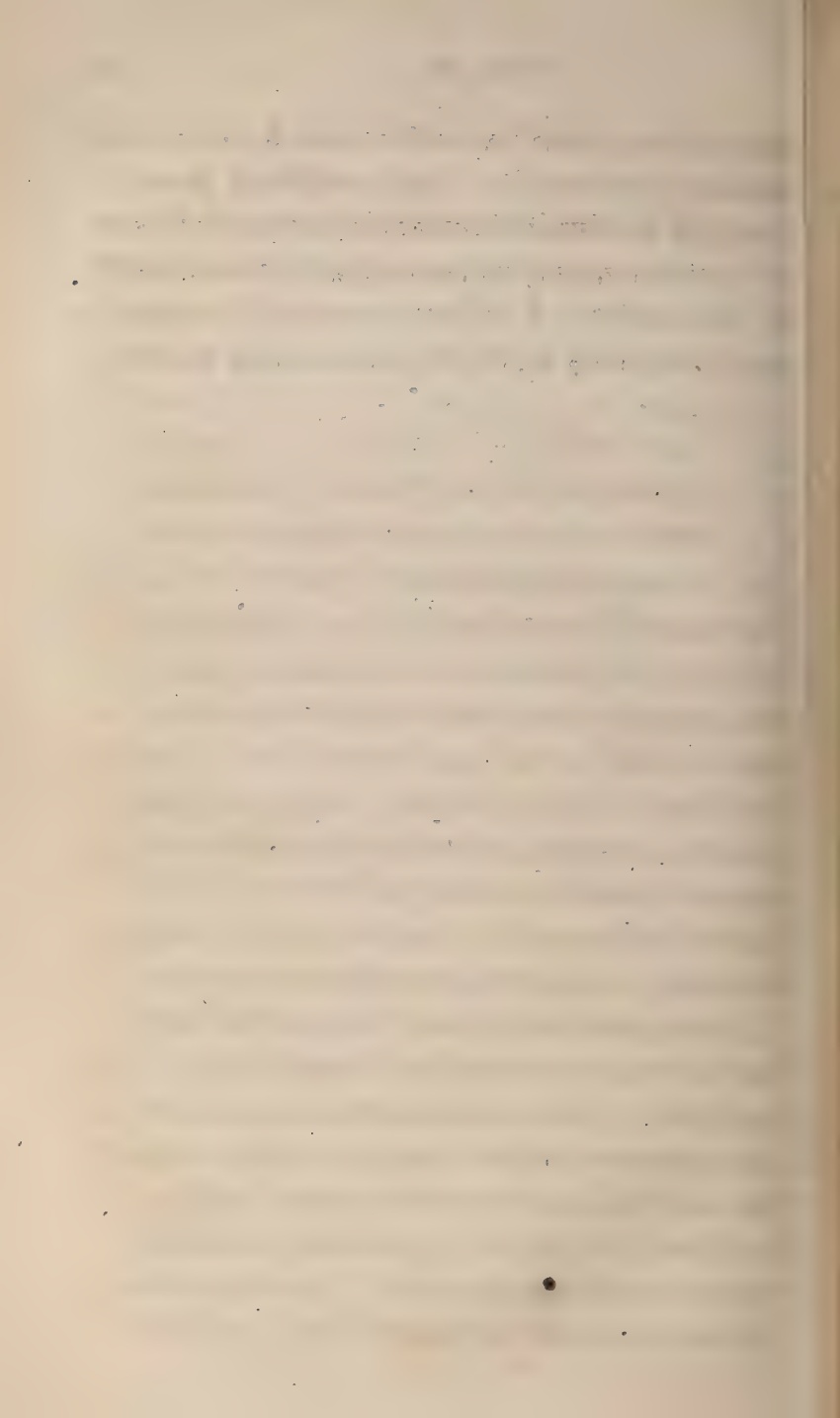
यूनस भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

ईश्वर का यूनस को नैनवी में भेजना १—२ यूनस का भागना और समुद्र में पकड़ा जाना ३—१० उसका समुद्र में डाला जाना और आंधी का थमना ११—१६ मच्छ का उसे लीलना १७।

अब परमेश्वर का बचन अमितई के बेटे यूनस पास यह कहते ऊए पऊंचा। उठ उस महा नगर नैनवो को जा और उसके बिरुद्ध पुकार क्योंकि उनकी दुष्टता मेरे आगे पऊंची है। परन्तु तर्शीश को भागने के लिये यूनस परमेश्वर के आगे से उठा और याफ़ा में उतर गया और तर्शीश को जाते ऊए एक जहाज़ पाया और उसका भाड़ा देके उस पर चढ़ बैठा जिसतें परमेश्वर के आगे से उनके साथ तर्शीश को जाय। परन्तु परमेश्वर ने समुद्र पर एक बड़ी बयार बहाई और समुद्र पर बड़ी आंधी चली और समझा गया कि जहाज़ टूटने पर है तब डांड़ी डर गये और हर एक जन ने अपने अपने देव की प्रार्थना किई और हलुक करने को उन्हों ने जहाज़ की सामग्री को समुद्र में डाल दिया। परन्तु यूनस जहाज़ के अलंगों में उतर गया और लेट के भारी नींद में था। तब जहाज़ के मांझी ने पास आके उसे कहा कि हे सोवैये तू क्या करता है? उठ अपने ईश्वर की प्रार्थना कर क्या जाने ईश्वर अब भी हमारी सुधि लेवे जिसतें हम नाश न होवें। तब हर एक जन ने

अपने अपने परोसी से कहा कि किसके कारण से यह बुर
हम पर पड़ी उसे जान्ने को आओ चिट्ठी डालें तब उन्हें
८ चिट्ठी डाली और चिट्ठी यूनस के नाम पड़ी। तब उन्हों
उसे कहा कि किस कारण से यह बुराई हम पर पड़ी है
हम से कह तेरा उद्यम क्या और तू कहां से आता है तेरा दे
९ कौनसा और तू किस लोग का है?। उसने उन्हें कहा कि
इबरी हों और जल थल के सृष्टि कर्त्ता आकाश के ई
१० परमेश्वर से डरता हों। तब मनुष्य अति डर से डर गये अ
उसे कहा कि यह तू ने क्या किया है? क्योंकि उन्हों ने जाना
वुह परमेश्वर के आगे से भागता है क्योंकि उसने उन्हें क
११ था। तब उन्हों ने उसे कहा कि हम तुझे क्या करें जिस
समुद्र हमारे लिये स्थिर हो जाये? क्योंकि समुद्र डोलायमा
१२ होके अंधिआहा ऊआ। तब उसने उन्हें कहा कि मुझे उठा
समुद्र में डाल देओ और समुद्र तुम्हारे लिये स्थिर हो जायग
क्योंकि मैं जानता हों कि मेरे कारण से यह बड़ी आंधी तु
१३ पर पड़ी है। तथापि तीर पर लाने को लोग परिश्रम से खेव
गये परन्तु न सके क्योंकि समुद्र उन पर डोलायमान औ
१४ आंधिआहा था। और उन्हों ने परमेश्वर की प्रार्थना कर
कहा कि, "हे परमेश्वर हम बिनती करते हैं कि इस मनु
के प्राण के लिये हम नाश न होवें और निर्दोष रुधिर हम प
मत धर क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपनी इच्छा के समान किय
१५ है"। तब उन्हों ने यूनस को उठा के समुद्र में डाल दि
१६ और समुद्र अपने हलरे से थम गया। तब वे अति डर
परमेश्वर को डरे और परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाया औ
१७ मनौतियां मानीं। और परमेश्वर ने यूनस के लीलने को एक
महा मच्छ को सहेज रक्खा और यूनस तीन रात दिन मच्छ
के ओदर में रहा।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

मच्छ के ओझ में यूनस की प्रार्थना और धन्यवाद
और वचना १—१० ।

तब मच्छ के ओझ में से यूनस ने अपने ईश्वर परमेश्वर की प्रार्थना करके कहा। कि मैं ने अपनी विपत्ति के मारे परमेश्वर को पुकारा और उसने मेरी सुनी, मैं समाधि की कोख में से चिल्लाया और तू ने मेरा शब्द सुना है। तू ने मुझे गहिरापे में समुद्रों के मध्य डाला है और बाढ़ ने मुझे घेरा है और तेरी लहरें और ढेउ मेरे ऊपर से गये। तब मैं ने कहा कि मैं तेरी दृष्टि में से खेदा गया हों तथापि मैं तेरी पवित्रता का मंदिर देखोंगा। जीजोखिम लों जल ने मुझे घेरा और गहिरापे न मुझे गरेरा और समुद्र के सेवार मेरे सिर पर लिपटे हैं। मैं पर्ब्बत के दरार लों उतर गया हों पृथिवी के अडंगे मेरी चारों ओर हैं तथापि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू मेरे प्राण को नाश से उठावेगा। जब मेरा प्राण मुझ में मूर्छित ऊआ मैं ने परमेश्वर को स्मरण किया और मेरी प्रार्थना तेरे पवित्र मन्दिर में तुझ पास पऊंची। जो झूठ की वृथा को पूजते हैं सो अपनी दया त्यागते हैं। परन्तु मैं धन्यबाद करते तेरे लिये बलि चढ़ाओंगा और अपने बचाव के लिये जो मनौती मैं ने मानी है सो परमेश्वर के लिये पूरी करोंगा। और परमेश्वर ने मच्छ को आज्ञा किई और उसने यूनस को सूखी पर उगल दिया।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

परमेश्वर की आज्ञा से यूनस का नैनवी में जाके नाश का संदेश देना १—४ राजा से प्रजा लों ब्रत और प्रार्थना करनी और ईश्वर की दया को आशा रखनी ५—१० ।

१ और परमेश्वर का वचन दूसरे बार यूनस पास यह कहते ऊ
२ पऊंचा। उठ उस महा नगर नैनवी को जा और जो वच
३ मैं तुझे कहों वही प्रचार। तब यूनस परमेश्वर के बचन के
समान उठा और नैनवी को गया अब नैनवी तीन दिन के
४ मार्ग का एक महा नगर था। और यूनस एक दिन के मार्ग
नगर में पैठ ने लगा और उसने पुकार के कहा कि और चालीस
५ दिन में नैनवी उलटाया जायगा। तब नैनवी के लोगों ने
ईश्वर की प्रतीति किई और व्रत प्रचारा और उनमें बड़े से
६ छोटे लों टाट पहिना। क्योंकि यह समाचार नैनवी के राजा
पास पऊंचा और वुह अपने सिंहासन से उठा और अपना
७ राज वस्त्र उतार के टाट ओढ़ा और राख पर बैठ गया। और
राजा की और उसके महत जनों की आज्ञा से नैनवी में यह
कहिके प्रचारा गया कि मनुष्य और ढोर और गाय बैल और भुंड
८ न कुछ चीखें न खायें न जल पीवें। परन्तु मनुष्य और ढोर टाट
से ओढ़ाये जायें और परमेश्वर के आगे अत्यंत चिल्लावें और
हर एक अपने अपने कुमार्ग से और अपने अपने हाथों के
९ अंधेर से फिरे। क्या जाने ईश्वर फिर के पछतावे और अपनी
१० रिस के ताप से फिर जाय जिसतें हम नाश न होवें। और
ईश्वर ने उनके कार्य्य को देखा जो अपनी अपनी कुचाल से
फिरे और ईश्वर उस बुराई से पछताया जो उन पर लाने को
उसने कहा था।

४ चौथा पर्ब्ब।

ईश्वर की दया से उदास होके यूनस का मृत्यु चाहनी
परमेश्वर का उसे दपटना और यूनस की अनुचित
चाल और नैनवी के बचने का कारण १—११।

१ परन्तु यूनस बड़ी उदासी स उदास ऊआ और बरउठा।
२ और उसने परमेश्वर की प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर

मैं बिनती करता हों क्या जब मैं अपनेही देश में था यह मेरी कहावत नथी? इसी लिये मैं आगे से तर्शीश को भाग गया क्योंकि मैं जानता था कि तू कृपालु और दयालु ईश्वर क्रोध में धीर और दया में बड़त और बुराई से पछताता है। और अब हे परमेश्वर मैं बिनती करता हों कि मेरे प्राण को उठाले क्योंकि मेरा मरना मेरे जीने से भला है। तब परमेश्वर ने कहा कि क्या तू बरने में भला करता है। तब यूनस नगर से बाहर गया और नगर के पूर्ब और बैठ गया और वहां अपने लिये आड़ बनाया और छाया तले बैठ गया जब लों देखे कि नगर पर क्या होता है। और ईश्वर परमेश्वर ने एक लता सिद्ध किई और यूनस को दुःख से छुड़ाने को और छाया करने को उसके सिर पर उगाया जिसतें उसके सिर पर छाया होवे। और यूनस उस लता के लिये बड़ा आनन्दित ऊआ परन्तु जब बिहान ऊआ तब परमेश्वर ने एक कीड़ा सिद्ध किया और उसने उस लता को नाश किया और वुह झुरा गई। और जब सूर्य्य उदय ऊआ तब ऐसा ऊआ कि ईश्वर ने एक पुरुआ पवन सिद्ध किया और सूर्य्य का घाम यूनस के सिर पर पड़ा और वुह मूर्छित ऊआ और उसने अपने प्राणही में मृत्यु चाही और बोला कि मेरे जीने से मेरा मरना भला है। फिर परमेश्वर ने यूनस से कहा कि लता के लिये क्या तुझे बर उठने में भला है? तब उसने उसे कहा कि मृत्यु लों बरने में मैं भला करता हों। फिर परमेश्वर ने कहा कि तू उस लता को बचाता जिसके लिये तू ने परिश्रम न किया और न उगाया जो रातही में ऊगा और रातही भर में नष्ट ऊई। और क्या मैं नैनवी महा नगर को न बचाऊं जिसमें एक लाख बीस सहस्र प्राणी से ऊपर हैं जो अपने दहिने बायें हाथ का बेवरा नहीं जानते और बड़त ढोर मैं दया न करोंगा?।
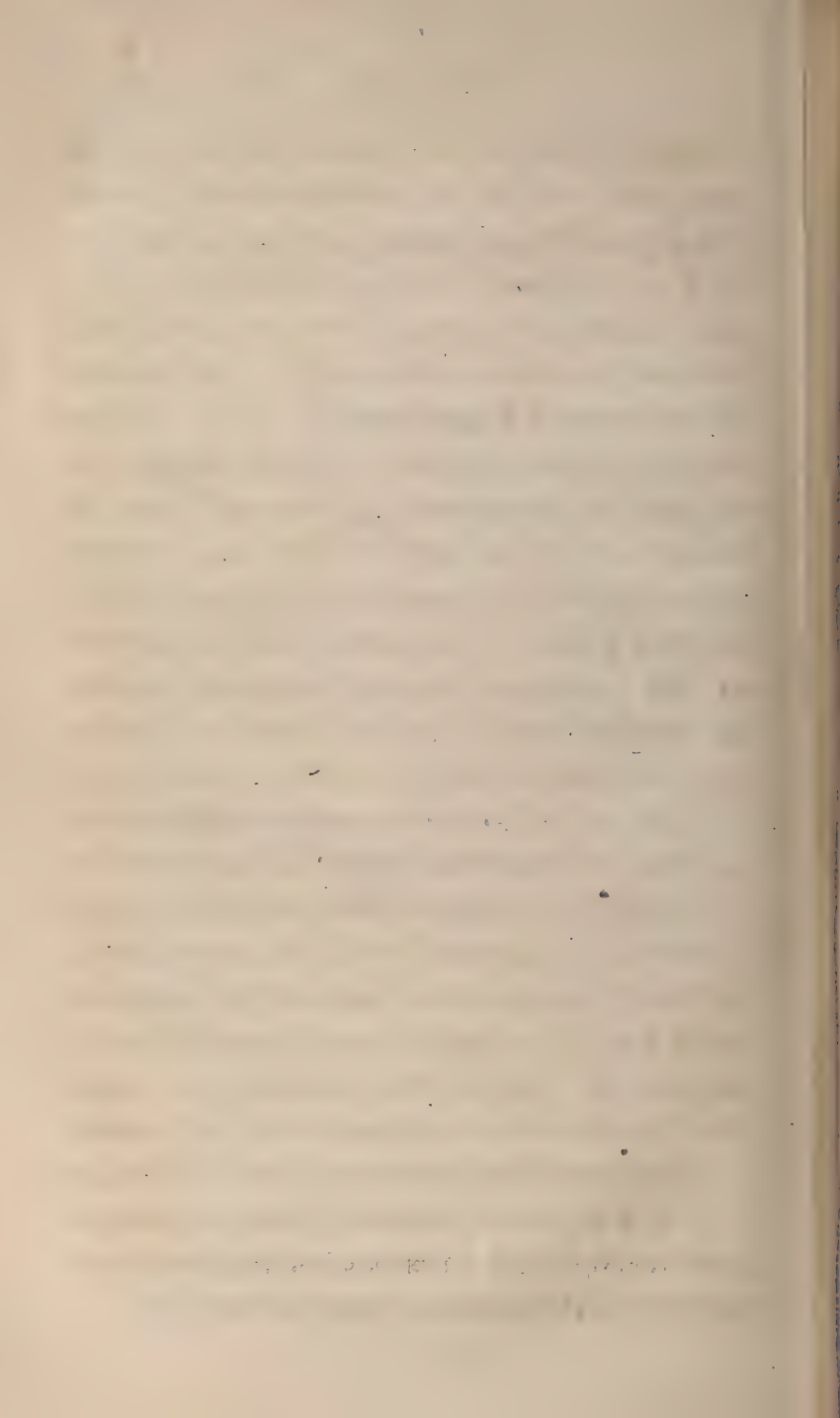
मीकाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

सामरा और यिरोशलीम के न्याय का दंड बताना १—७ भय और बिपत्ति के लिये बिलाप करना ८—१६ ।

परमेश्वर का बचन, जो यहूदा के राजा यूताम और आहाज़ और हिज़किया राजाओं के दिनों में मुरासीती मीकाह पास पहुंचा, जो उसने सामरा और यिरोशलीम के बिषय में देखा । हे सारे लोगो सुनो हे देश और उसकी सारी भरपूरी सुनो प्रभु परमेश्वर हां प्रभु अपने पवित्र मन्दिर से तुम्हारे बिरुद्ध साक्षी होवे । क्योंकि देख परमेश्वर अपने स्थान से निकलेगा और उतरेगा और पृथिवी के ऊंचे स्थानों को लताड़ेगा । और जैसा आग के आगे मोम और जैसे ऊपर से जल का उंडेला जाना तैसा पर्ब्बत उसके नीचे पिघल जायेंगे और तराई फट जायेंगी । यह सब याक़ूब के अपराध के लिये और इसराईल के घराने के पाप के लिये होगा याक़ूब का अपराध क्या सामरा नहीं? यहूदा का ऊंचा स्थान क्या यिरोशलीम नहीं? । इस लिये मैं सामरा को खेत के एक ढेर की नाईं और बोई हुई दाख बारी की नाईं बनाओंगा और मैं उसके पत्थरों को तराई में गिरा देउंगा और उसकी नेउं को उघारोंगा । और उसकी सारी खोदी हुई मूर्त्तें टुकड़े टुकड़े किई जायंगी और उसकी सारी बनी आग में जलाई

जायंगी और उनकी सारी मूर्त्तिन को मैं एक उजाड़ करों
क्योंकि उसने वेश्या की खरची से बटोरा है और वे वेश्या
८ खरची के लिये फिर जायेंगे। इस बात के लिये मैं बिलाप करों
और रोओंगा और मैं उघारा ऊआ और नग्न जाओंगा औ
मैं गीदड़ों की नाईं बिलाप करोंगा और उल्लू की चिगनियों
९ नाईं हा हा करोंगा। इस लिये कि उसका घाव असाध्य
क्योंकि वुह यहूदा लों आया है और वुह मेरे लोगों के फाट
१० यिरोशलीम लों पऊंचा है। गास में न कहो रो रो बिलाप
११ करो बैतअफरा में धूल में लोटो। हे साफिर की निवासि
नग्न और घबराती ऊई चली जा सानान के निवासी बिलाप
लिये निकल नहीं गये हे बैतअजल वुह अपना ठिकाना तु
१२ से पावेगा। निश्चय मारूस की निवासिनी मृत्यु के रोग
रोगिनी है निश्चय परमेश्वर की ओर से बुराई यिरोशलीम
१३ फाटक लों पऊंची। हे लाकीश की निवासिनी चालाक पशु
को रथ में जोतो वही सैहून की कन्या के लिये पाप का आरं
१४ थी क्योंकि इसराईल के अपराध तुझी में पाये गये। इ
लिये तू मोरेशीशगास को भेंट देगा अकज़िब के निवास
१५ इसराईल के राजाओं के लिये हथा होंगे। तथापि हे मारेश
की निवासिनी मैं तुझ पर एक अधिकारी लाओंगा और वु
१६ इसराईल के सिवाने अदुल्लम लों पऊंचेगा। तू अपने कोमल
बालकों के लिये अपने बाल काट और मुंड़ा कर और गिद्ध की
नाईं अपना मुंड़ापन बढ़ा क्योंकि वे तुझसे बंधुआई में गये हैं।

२ दूसरा पर्ब्ब।

लोगों के नाना पाप के लिये दपटनां १—११
इसराईल के मसीह को और बटुरने की भविष्य
बाणी १२—१३।

१ उन पर संताप जो बुराई की जुगत बांधते हैं और अपने बिछौ

पर बुराई करते हैं और विहान होतेही उसका व्यवहार करते हैं क्योंकि उनके हाथ में शक्ति है। और वे खेतों का और घरों का लोभ करते हैं और अंधेर से उन्हें वश में करते हैं और उन्हें ले लेते हैं और वे मनुष्य को और उसके घराने को हां एक महाजन को और उसके अधिकार को सताते हैं। इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो मैं इस घराने पर बुराई की जुगत बांधता हों जिसे तुम अपने गलों को न छुड़ाओगे न अकड़ के चलोगे क्योंकि वुह बुरा समय होगा। उस समय में तुम्हारे विरुद्ध एक कहावत उठेगा और यह कहते हुए बड़ा विलाप होगा कि हम सर्वथा नष्ट हुए हैं उसने मेरे लोगों के भाग को पलट डाला है वुह मुझसे कैसा चला गया है जिसतें उसे लावे जिसने हमारे खेतों का बिभाग किया। निश्चय तेरे लिये कोई न होवेगा जो चिट्ठी के साथ रस्सी डालता है। हे भविष्य कथको परमेश्वर की मंडली में भविष्य मत कहो वे इनके लिये भविष्य न कहेंगे वुह अपने से निन्दा न टालेगा। क्या इसराईल का घराना कहता है कि परमेश्वर का आत्मा सकेत हुआ है? क्या यह उसके कार्य हैं क्या उसके लिये जो खराई से चलाता है मेरे बचन भले नहीं?। परन्तु पुरातन से मेरा लोग बैरी की नाईं उठा है जो संग्राम की बंधुआईयों से जो बचके निकल जाते हैं उसके वस्त्र पर से चादर उतार लेते हो?। मेरे लोगों की स्त्रियों को तुम उनके निवास के आनन्दों से दूर करते हो उसके बालकों से मेरे बिभव को सदा लेलेते हो। उठ के सिधारो क्योंकि यही चैन स्थान नहीं क्योंकि अशुद्ध है और नष्ट किया जायगा और बड़ा नाश होगा। यदि कोई झूठे और मिथ्या आत्मा से चलते हुए तेरे आगे दाख रस और तीक्ष्ण पान के लिये भविष्य कहे वही इस लोग का भविष्यद्वक्ता होगा। हे याकूब मैं तुम सभों को निश्चय एकट्ठा करोंगा इसराईल के उबरे हुए को मैं निश्चय एकट्ठा करोंगा मैं उसे बासरा की भेड़ की नाईं एकट्ठा करोंगा अर्थात् शाला के

१३ मध्य के झुंड की नाईं वे मनुष्यों से हौरा करेंगे। जो तो
निकलता है सो उनके आगे चढ़ आया है वे तोड़ निकले
और फाटक से भीतर होके निकल गये हैं और उनका रा
उनके आगे आगे जाता है अर्थात परमेश्वर उनका अगुआ है

३ तीसरा पर्ब्ब ।

मीकाह का राजपुत्रों और भविष्यद्वक्तों को दपटना
१—७ ईश्वरीय आत्मा से प्रेरा जाना बताना
८—१२ ।

१ मैं ने भी कहा कि हे याक़ूब के श्रेष्ठो और इसराईल के घरा
२ के अगुओ। तुम लोग जो भलाई से बैर रखते हो औ
बुराई से प्रीति, जो उन पर की खाल उखाड़ते हो और उन
३ हाड़ों पर के मांस। जिन्हों ने मेरे लोगों का मांस भी खाया है
और उनकी खाल उन पर से खींच लिई है और उनके हाड़ों
को तोड़ा है और उन्हें हांड़ी के मांस की नाईं और हंडे में के
मांस की नाईं अलग अलग किया है मेरी बिनती सुनो बिचार
४ जान्ने को तुम्हारा काम नहीं। तब वे परमेश्वर की प्रार्थना
करेंगे परन्तु वुह उनकी न सुनेगा उनके कार्यों के समान वुह उस
५ समय उनसे अपना मुंह छिपावेगा। जो भविष्यद्वक्ता मेरे लोगों
से चूक करवाता है जो दांतों से काट काट कुशल पुकारता है
परन्तु जो उनके मुंह में न डालेगा वे उसके बिरुद्ध संग्राम
६ करने को लैस होवेंगे परमेश्वर उनसे यूं कहता है। क्योंकि
तुम पर रात होगी जिसतें दर्शन न पाओगे और अंधियारा
जिसतें गणना न होगी भविष्यद्वक्तों पर सूर्य अस्त होजायगा
७ और उनके लिये दिन अंधियारा होजायगा। तब दर्शक
लज्जित और गणक गड़बड़ा जायेंगे हां वे सब के सब अपना
८ अपना मुंह ढांपेंगे क्योंकि ईश्वर उत्तर न देगा। परन्तु याक़ूब
पर उसका अपराध और इसराईल पर उसका पाप प्रगट

करने को निश्चय मैं पराक्रम से परमेश्वर के आत्मा और न्याय और सामर्थ्य से परिपूर्ण हों। हे याक़ूब के घराने के श्रेष्ठो और इसराईल के घराने के अगुओ जो न्याय से घिनाते हो १० और सारी ठीक को बिगारते हो। और सैहून को लोहू से और यिरोशलीम को अधर्म से बनाते हो मेरी बिनती ११ सुनो। उनके श्रेष्ठ घूस के लिये बिचारते हैं और उनके याजक बनी के लिये सिखाते हैं और उनके भविष्यद्वक्ता चांदी के लिये गणना करते हैं तथापि परमेश्वर पर भरोसा रखके कहते हैं क्या परमेश्वर हमारे मध्य में नहीं है? बुराई हम पर न १२ आयेगी। तुम्हारे लिये सैहून में खेत की नाईं हल फेराजायगा और यिरोशलीम ढेर ढेर और मन्दिर का पहाड़ बन के ऊंचे स्थानों की नाईं हो जायगा।

४ चौथा पर्ब्ब ।

पिछले दिनों में मंडली का स्थिर होना उसका कुशल और भाग्यमान होना १—८ सैहून का सुखी और उसके बैरियों का नाश होना ९—१३।

परन्तु अंत के दिनों में ऐसा होगा कि परमेश्वर के घर का पर्ब्बत पर्ब्बतों की चोटी पर स्थिर होगा और सब पहाड़ियों से ऊंचा किया जायगा और लोग उसकी ओर रेलेजायेंगे। और बहुत से जातिगण जा जा कहेंगे कि चलो हम परमेश्वर के पहाड़ पर और याक़ूब के ईश्वर के मन्दिर को चढ़ जायें जिसतें वुह हमें अपने मार्ग सिखावे और हम उसके पथों में चलें क्योंकि सैहून में से व्यवस्था और यिरोशलीम से परमेश्वर का बचन निकलेगा। और वुह बहुत से लोगों के मध्य में बिचार करेगा और दूर के प्रबल जातिगणों को दोषी ठहरावेगा और वे अपनी तलवारों को तोड़ तोड़ फार बनावेंगे और अपने भालों को हंसुए, लोग लोगों के बिरुद्ध तलवार न उठावेंगे

४ और वे फेर संग्राम न सीखेंगे। परन्तु हर एक अपने अपने दाख की लता और अपने अपने गूलर पेड़ तले बैठेगा और उन्हें कोई न डरावेगा क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर का मुख बचन
५ है। यद्यपि सारे लोग हर एक जन अपने अपने देव के नाम से चलें तथापि आओ हम अपने ईश्वर परमेश्वर के नाम से
६ सर्वदा चलें। परमेश्वर कहता है कि उस दिन मैं लंगड़ी को एकट्ठा करोंगा और निकाली ऊई को और जिसे मैं ने दुःख
७ दिया है उसे बटोरोंगा। और लंगड़ी को उबरी ऊई करोंगा और दूर निकाली ऊई को बलवंत जाति बनाओंगा और आगे से सर्वदा लों परमेश्वर सैहून पहाड़ में उनपर राज्य
८ करेगा। हे अदर की गुम्मट हे सैहून की कन्या के गढ़ तेरा समय आवेगा और अगिली प्रभुता फिरेगी अर्थात् यिरोशलीम
९ की कन्या कने राज्य। अब तू क्यों चिल्लाते ऊए चिल्लाती है क्या तुझ में राजा नहीं? क्या तेरा मंत्री नष्ट ऊआ? क्योंकि पीड़
१० ने स्त्री की पीड़ की नाईं तुझे ग्रसा है। हे सैहून की पुत्री पीड़ित स्त्री की नाईं पीड़ों में होके जनडाल क्योंकि अब तू नगर से बाहर जायगी और चौगान में रहेगी तू बाबुल लों जायगी और वहां छुड़ाई जायगी वहां परमेश्वर तुझे बैरियों के
११ हाथ से छुड़ावेगा। और अब बऊतसे जातिगण तेरे बिरुद्ध एकट्ठे हैं जो कहते हैं कि वुह अशुद्ध होवे और हमारी
१२ आंखें सैहून को देखें। परन्तु ये परमेश्वर की चिंतों को नहीं जानते और न उसका मंत्र समझते क्योंकि उसने खलिहान के
१३ लिये उन्हें आंटी की नाईं बटोरा है। हे सैहून की पुत्री उठ के अन्न को दांव क्योंकि तेरे सींग को मैं लोहा और तेरे खुरों को पीतल बनाओंगा और तू बत्ती लोगों को टुकड़ा टुकड़ा करेगी और उनमें का लाभ परमेश्वर को और उनकी संपत्ति समस्त पृथिवी के प्रभु को समर्पण करेगी।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

मसीह के जन्म की और राज्य की भविष्य बाणी १—६ उसकी मंडली का बढ़ना, पवित्र होना और कुशल पाना और बैरियों का नाश होना ७—१५ ।

हे कन्या जथा जथा आप को एकट्ठी कर उन्हों ने हमें घेर रक्खा है उन्हों ने इसराईल के न्यायी के गाल पर छड़ी मारी है । और तू हे बैतुलहम अफराता क्या तू यहूदा के अगुओं में छोटा है? तुझ में से मेरे लिये वुह निकलेगा जो इसराईल में प्रभुता करेगा जिसका निकलना पुरातन से सनातन दिनों से हुआ है । इस लिये वुह उन्हें उस समय लों सौंप देगा जब कि जो जनती है जन डालेगी जब लों उसके भाईबन्दों के उबरे हुए इसराईल के बेटों के साथ फिराये जायें । और अपने ईश्वर परमेश्वर के नाम की महिमा से वुह खड़ा होके परमेश्वर के बल से चरावेगा और वे फिराये जायेंगे क्योंकि अब वुह पृथिवी के अंतों के लिये महान होगा । और जब असूरी हमारे देश में आवेगा तब वुह कुशल होगा और जब वुह हमारे भवनों को लताड़ेगा तब उसके विरुद्ध सात गड़रिये और मनुष्यों के आठ अध्यक्ष उभाड़े जायेंगे । और वे तलवार से असूर का देश अर्थात नमरूद के देश की पैठ लों नाश करेंगे और असूरी जब हमारे देश में आवेंगे और जब हमारे सिवाने को लताड़ेंगे तब वे हमें बचावेंगे । याक़ूब के उबरे हुए भी जातिगणों में बहुत से लोगों के मध्य में परमेश्वर से कुहासे की नाईं और घास पर की झड़ी की नाईं होगा जो मनुष्य के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों के संतानों के लिये नहीं रहती । और याक़ूब के उबरे हुए जातिगणों में बहुतसे लोगों के मध्य में बन के ढोरों में सिंह की नाईं और भेड़ की झुंडों में युवा सिंह की नाईं होगा जो जब उनमें से जाता है तो लताड़ डालता

९ है और फाड़ता है और कोई नहीं छुड़ाता। तेरा हाथ अप
१० बैरियों पर उठेगा और तेरे सारे शत्रु नाश होंगे। औ
परमेश्वर कहता है कि उस दिन ऐसा होगा कि मैं तेरे मध्य
से तेरे घोड़ों को काट डालोंगा और तेरे रथों को बिना
११ करोंगा। और मैं तेरे देश के नगरों को भी काट डालोंग
१२ और तेरे सारे दृढ़ गढ़ों को ढा डालोंगा। और तेरे सिवाने
ओझाओं को काट डालोंगा और तुम्हों में आगे को टोनहे
१३ होंगे। और मैं तुम्हारे मध्य में से खोदी ऊई मूरतों को औ
प्रतिमा को भी काट डालोंगा और तू अपने हाथ के कार्यों
१४ आगे दंडवत न करेगा। और तुम्हारे मध्य से मैं कुंजों के
१५ उखाड़ डालूंगा और तेरे शत्रुन को भी नाश करोंगा। और
जिन जातिगणों ने नहीं माना उन्हें कोप और जलजलाह
में दंड देउंगा।

६ छठवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर का लोगों से विवाद करना १—५ उनके भय का वृथा होना ६—८ परमेश्वर का शब्द नगर पर और लोगों का पाप ९—१६ ।

१ परमेश्वर जो कहता है सो अब सुनो उठ पर्ब्बतों के आगे झगड़
२ और टीले तेरा शब्द सुनें। हे पर्ब्बतो और पृथिवी की दृढ़
नेवें परमेश्वर का विवाद सुनो क्योंकि परमेश्वर का विवाद
३ अपने लोगों से है और उसको इसराईल से बादानुवाद है। हे
मेरे लोग मैं ने तुझे क्या किया है? और किस बात में मैं ने
४ तुझे थकाया है? मुझ पर साक्षी देउ। क्योंकि मैं तुझे मिसर
देश से और बंधुआई के घर में से छुड़ा लाया हों और तेरे
आगे आगे मैं ने मूसा और हारून और मरियम को भेजा।
५ हे मेरे लोग जिसतें परमेश्वर के धर्म्म को जानो शिटिम से
गिलगाल लों जो मुआब के राजा बलक ने परामर्ष किया और

जो उत्तर बऊर के बेटे बलआम ने उसे दिया अब स्मरण करो।
६ मैं किस वस्तु से परमेश्वर के आगे आओं और महेश्वर के आगे दंडवत करों क्या मैं होम की भेंट अथवा बरस भर के
७ बछड़े लेके आओं? । क्या परमेश्वर सहस्र मेढ़ों से अथवा दस सहस्र नदी तेल से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने पहिलौंठे को अपने अपराध की संती देओं अथवा अपने कोख के बालक
८ अपने प्राण के पाप के लिये। हे मनुष्य जो भला है सो उसने तुझे बताया है और परमेश्वर तुझसे न्याय और दया और अपने ईश्वर के साथ दीनताई से चलने को छोड़ क्या चाहता
९ है। परमेश्वर का शब्द नगर को पुकारता है और जो उस्से डरते हैं उनके पास ठीक बुद्धि है हे गोष्ठियो साक्षी दायक की
१० सुनो। क्या अब भी दुष्ट के घर में दुष्टता के धन और घिन का
११ हलुक बटखरा है। क्या दुष्टता की तुला और छल के बटखरे
१२ रखते ऊए मैं उसे पवित्र गिनों? । क्योंकि उसके धनवान लोग लूट पाट से भरे हैं और उसके निवासियों ने झूठ कहा है और
१३ उसके मुंह में छल की जीभ है। इस लिये मैं तेरे पाप के लिये
१४ तुझे उजाड़ना और मारना आरंभ करोंगा। तू खायगा परन्तु तृप्त न होगा और तेरे मध्य में अंधियारा होगा तू पकड़ेगा परन्तु ले न जायगा और जो तू लेजायगा सो मैं तलवार को
१५ सौंपोंगा। तू बोयेगा पर न लवेगा तू जलपाई रौंदेगा परन्तु तेल से आप को न मलेगा और चुना ऊआ दाख परन्तु न
१६ पीयेगा। क्योंकि तू ने उमरी की विधि और आहाब के घराने की सारी क्रिया को पालन किया है उनके परामर्षों में चला है जिसतें मैं उसे उजाड़ करों और उसके निवासियों को एक सीटी के लिये, और जिसतें तुम लोग मेरे लोग की निन्दा उठाओ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

भविष्यद्वक्ता का लोगों के पाप के लिये उदास होना और ईश्वर पर आशा रखनी १—७ मंडली की आशा रखनी ८—१३ प्रार्थना और भविष्य वाणी १४—१७ अपने लोगों पर ईश्वर की बड़ी दया और सत्यता ।

१ हाय मुझ पर क्योंकि मैं पिछले गूलर के बटोरवैये की नाईं और दाख के बिनवैये की नाईं हुआ हों खाने को गुच्छा नहीं मेरा प्राण २ पहिला पक्का गूलर चाहता है। भला जन देश में से नष्ट हुआ है और मनुष्यों में कोई खरा जन नहीं सब के सब लोहू के लिये घात में रहते हैं हर एक जन जाल से अपने अपने भाई को ३ अहेर करता है। उनके हाथ यत्न से बुराई करने को सिद्ध हैं राजपुत्र अकोर चाहता है और न्यायी प्रतिफल के लिये बिचारता है महत जन अपनी इच्छा की दुष्टता को उचारता ४ है और वे घिनित करते हैं। उनका भला जन झड़बेर की नाईं और खरा कंटीले बाड़े की नाईं और तेरे रखवाल का दिन ५ है तेरा समय आता है अब उनको व्याकुलता होगी। मित्र पर भरोसा मत रक्खो और अगुओं पर बिश्वास मत करो ६ और अपनी पत्नी से अपना मुंह बन्द रख। क्योंकि पुत्र पिता को निन्दा करेगा और पुत्री अपनी माता के बिरुद्ध उठेगी और पतोह अपने सास के बिरुद्ध मनुष्य के शत्रु उसके घराने के ७ लोग। परन्तु मैं परमेश्वर की ओर ताकोंगा मैं अपने मोक्ष के ८ ईश्वर की आशा करोंगा मेरा ईश्वर मेरी सुनेगा। हे मेरे बैरी मुझ पर आनन्द मत कर यद्यपि गिरा हों मैं उठोंगा यद्यपि मैं अंधियारे में बैठा हों तथापि परमेश्वर मेरे लिये ज्योति होगा। ९ जबलों वुह मेरे पद के लिये बिवाद न करे और मेरे लिये न्याय न करे जबलों वुह मुझे उंजियाले में न लावे और मैं उसका धर्म न देखों मैं परमेश्वर का जलजलाहट सहोंगा क्योंकि

१० मैं ने उसके बिरुद्ध पाप किया है। तब मेरा शत्रु, जिसने मुझे कहा कि कहां परमेश्वर तेरा ईश्वर, देखेगा और लज्जित होजायगा मेरी आंखें उसे देखेंगी अब वुह सड़क की कीच की
११ नाईं खताड़ने के लिये होगी। जिस दिन तेरी भीतें बनाई
१२ जायेंगी उस दिन तेरे बिरुद्ध आज्ञा दूर किई जायगी। और उसी दिन वे असूर और बाड़ित नगरों से और मिसर से नदी लों और समुद्र से समुद्र लों और पहाड़ से पहाड़ लों
१३ आवेंगे। क्योंकि देश अपने निवासियों की करनी के फल के
१४ कारण उजाड़ के लिये होगा। अपनी गोजी से अपने लोग अपने अधिकार की झुंड को जो बन में एकांत रहता है चराओ करमिल के मध्य में बासान और गिलियाद में पुरातन दिनों
१५ की नाईं उन्हें चराई करने देउ। मिसर देश से बाहर आनेके
१६ दिनों के समान मैं उसे आश्चर्यित बस्तें दिखाओंगा। जातिगण देखेंगे और अपने सारे बल के लिये घबरा जायेंगे वे मुंह पर
१७ हाथ रक्खेंगे और उनके कान बहिरे होंगे। वे सर्प की नाईं धूल चाटेंगे वे पृथिवी के रेंगवैये जंतु की नाईं अपने छिपे स्थानों से थर्थरायेंगे हमारे ईश्वर परमेश्वर के कारण भय खायेंगे
१८ और वे तेरे लिये डरेंगे। पाप क्षमा करने को और अपने उबरे हुए अधिकार में अपराधों से बीतजाने में तेरे समान कौन ईश्वर है जो सदा नहीं रिसियाता इस कारण कि वुह
१९ दया से आनन्दित है। वुह लौटेगा वुह हम पर दया करेगा वुह हमारी बुराइयों को ढांपेगा हां तू हमारे सारे पापों को
२० समुद्र के गहिराव में फेंकेगा। तू याक़ूब पर सच्चाई और इबराहीम पर दया दिखावेगा जो तू ने पुरातन दिनों में हमारे पितरों से किरिया खाई थी।

नहूम की पुस्तक।

—ooooo—

१ पहिला पर्ब्ब।

परमेश्वर के जलजलाहट की महिमा और भय १—६
अपने जन पर प्रेम और बैरियों पर कठोरता ७—८
असूर के राज्य के नष्ट होने की भविष्य बाणी ९—१५।

१ नैनवी के विषय में भविष्य बाणी अलकूशी नहूम के दर्शन की
२ पुस्तक। परमेश्वर ज्वलित और प्रतिफलदाता ईश्वर परमेश्वर
पलटा लेता है और कोप मय है परमेश्वर अपने बैरियों से
पलटा लेता है और अपने बैरियों के लिये धर रखता है।
३ परमेश्वर रिस में धीमा तथापि पराक्रम में महान परंतु
परमेश्वर पापियों को छोड़ते न छोड़ेगा उसका मार्ग बवंडर
४ और आंधी में है और मेघ उसके चरण की धूल। वही
समुद्र को दपटता है और सुखाता है और सारी नदियों
को सोखता है बाशान और करमिल घटे जाते हैं और लब
५ नान का फूल कुम्हलाता है। उस्से पर्ब्बत थर्थराते हैं और
पहाड़ियां पिघलतियां हैं और देश और जगत और उसके
६ सारे निवासी उसके आगे उजाड़े गये हैं। उसकी जलजला
हट के आगे कौन ठहरेगा? उसकी रिस की तपन में कौन
उठेगा उसका कोप आग की नाईं उंडेला जायगा और उस्से
७ चटान तोड़ी गई हैं। परमेश्वर भला, और बिपत्ति के समय
दृढ़ गढ़ के लिये है और वुह अपने आश्रित को जानता है।
८ परन्तु जो उसके बिरुद्ध में उठते हैं वुह बाढ़ के रेले से उन्हें
सर्बथा मिटा डालेगा और अंधियारा उसके बैरियों को
९ खेदेगा। परमेश्वर के बिरुद्ध तुम लोग क्या सोचते हो

वह सर्बथा मिटा डालेगा और विपत्ति दूसरे बार न उठेगी।
१० क्योंकि मद्य से मतवाले की नाईं अध्यक्ष जब लों घबराये ऊए
११ हैं वे अति सूखे खूंथे की नाईं भच्चे गये। एक कुमंत्री तुझ में
१२ से परमेश्वर के बिरुद्ध एक कुबिचारी निकल गया। यद्यपि
बऊत से पानियों के आज्ञाकारी ने यों उजाड़ा और भीतर
से निकल गया है और मैं ने तुझे दुःख दिया है परमेश्वर
१३ कहता है कि फेर तुझे दुःख न देउंगा। क्योंकि अब मैं
तुझ पर उसका जूआ तोड़ोंगा और तेरे बंधन झटक डालों
१४ गा। और परमेश्वर तेरे बिषय में आज्ञा करेगा और
तेरा नाम फेर छितराया न जायगा तेरे देव के मन्दिर से मैं
खोदी ऊई मूर्त्ति को और डाली ऊई मूर्त्ति को काट डालेंगा
१५ मैं तेरी समाधि ठहराओंगा क्योंकि तू नीच ऊआ है। उसके
पांव पर्व्वतों पर देख जो मंगल समाचार लाता है और कुशल
प्रचारता है हे यहूदा अपने पर्ब्ब रख और अपनी मनौतियां
पूरी कर क्योंकि वुह तुझे फिर बीत न जायगा, दुष्ट सर्बथा
नाश ऊआ है वुह कट गया है।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

नैनवी के नष्ट होने की भविष्य बाणी १—१३।

१ जो टुकड़ा टुकड़ा करता है सो तुझ पर चढ़ आया है बाड़ित
स्थान की रखवाली कर मार्ग अगोर, कटि दृढ़ कर पराक्रम
२ को अति स्थिर कर। इस लिये कि परमेश्वर ने इसराईल
की उत्तमता की नाईं याकूब की उत्तमता को फेर दिया है
क्योंकि उजाड़ियो ने उन्हें उजाड़ा है और उनकी डालियों
३ को नष्ट किया है। उसके बलवंत की ढाल लाल ऊई है
और बीर जन लाल से बिभूषित हैं उसके लैस होने के दिन
में रथ दीये की आग की नाईं है और घोड़ चढ़ों से डर फैलती
४ है। सड़कों में रथ दौड़ाते हैं चौड़े स्थानों में दौड़ा दौड़ी

करते हैं वे दीये की नाईं दिखाते हैं वे बिजली की नाईं
५ दौड़ते हैं। वुह अपने बलवंतों को गिनता है वे अपने कूच
में गिराते हैं भीत की ओर फुरती करते हैं और आड़ सिद्ध
६ किया गया है। नदियों के फाटक खुले हैं और भवन और
७ गढ़ गले जाते हैं। वुह बंधुआई में पहुंचाई गई वुह ऊपर
उठाई गई और कपोत के शब्द की नाईं अपनी छाती पीटते
८ पीटते उसकी दासियां लेवाई गईं। नैनवी के जल कुंड की
नाईं है और वे भागते हैं ठहरो ठहरो पर कोई पीछे नहीं
९ देखता। वे सोने चांदी को बिगाड़ते हैं सारे बांछित पात्रों
१० के कारण बिभव की बनावटी का अंत नहीं। वुह शून्य और
छूछा और उजाड़ है और मन पिघलता है और घूठने लगते
हैं और सारी कटि में पीड़ा और सभों के मुंह काले होते
११ हैं। भक्षक सिंहों के निवास कहां? और जो युवा सिंहों
का अहेर स्थान था जहां भक्षक सिंह और सिंहनी और
१२ भक्षक सिंह के बच्चे जाते थे और कोई उन्हें न डराता था।
भक्षक सिंह अपने बच्चों के लिये फाड़ता है और अपनी
सिंहनी के लिये गला घोंटा है और अपनी मांदों को अहेर
१३ से और अपने निवास को उपद्रव से भरा है। सेनाओं
का परमेश्वर कहता है देख मैं तेरे बिरुद्ध हों और तेरे
रथों को आग से जलाओंगा और तलवार तेरे गाओं को
भक्षेगी और मैं पृथिवी से तेरा अहेर काट डालोंगा और
तेरे कार्य्य की कीर्त्ति फेर न सुनी जायगी।

३ तीसरा पर्व्व।

नैनवी पर महा कोप १—७ मिसर के नो का नष्ट और
नैनवी को चिताना ८—१० उसके नष्ट होने की
भविष्य बाणी ११—१९।

१ बधिक नगर पर संताप वुह झूठ और अंधेर से पूर्ण है और

२ अहेर नहीं जाता रहता। कोड़े का और पहियों के हड़हड़ाने का शब्द और घोड़ों के पोइयों का और रथों के उक्सने
३ का और घोड़ चढ़ों के चढ़ने का शब्द। तलवार के चमक भी और भाले की झलक और जूझे ऊए की मंडली और लोथों की ढेर और लोथों का अंत नहीं वे लोथों पर ठोकर खाते
४ हैं। छिनाल के छिनाले की बऊताई के मारे जो सुरूप और मोहने में निपुण जो अपने छिलानपनों से देश गणों को और गोष्ठियों से अपने मोहने से व्यापार करती है।
५ सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि देख मैं तेरे विरुद्ध हों और तेरा अंचल तेरे मुंह के आगे उघारोंगा और जाति गणों को तेरी नंगापन और राज्यों को तेरी लाज दिखाओं
६ गा। और मैं तुझ पर बिष्ठा डालोंगा और तेरा अनादर
७ करोंगा और तुझे घूर की नाईं बनाओंगा। और ऐसा होगा कि हर एक जो तुझे देखेगा तुझ से परायेगा और कहेगा कि नैनवी उजाड़ ऊआ है तेरे लिये कौन बिलाप करेगा तेरे
८ लिये मैं कहां से शांतिदायक ढूंढ़ों?। क्या तू नो अमून से भला है जो नदियों में है? जल उसकी चारो ओर जिसका
९ आड़ समुद्र और जल उसकी भीत। कोश और मिसर उसका बल और उसका अंत नहीं पूत और लिबिया उसके
१० सहायक। तथापि वुह पऊंचाये जाने के लिये होगा वुह बंधुआई को जाती है तथापि उसके गदेले सारे सड़कों के सिरे पर पटके जाके चकनाचूर होंगे और उसके प्रतिष्ठित जनों के लिये वे चिट्ठियां डालती हैं और उसके सारे बलवंत
११ जन सीकरों से जकड़े हैं। तू भी भड़इत होगा और आप को
१२ छिपावेगा तू बैरियों से शरण ढूंढ़ेगा। तेरे सारे दृढ़ गढ़ पहिले पक्के गूलर पेड़ की नाईं यदि हिलाये जायें तो खवैया
१३ के मुंह में गिरता है। देख तेरे लोग तेरे मध्य में स्त्रियों की नाईं तेरे देश के फाटक तेरे बैरियों के लिये खुले ऊए हैं

१४ और आग तेरे अडंगों को भस्म करती है। घेरे जाने के लिये जल भरो अपना दृढ़ गढ़ पोढ़ करो मिट्टी में पैठो और गारे
१५ को लताड़ो, पैजावे को सुधारो। वहां आग तुझे भस्म करेगी और तलवार तुझे काट डालेगी वुह टिड्डी की नाईं तुझे खालेगी तू अपने को टिड्डी की नाईं बढ़ा और घनी टिड्डी की
१६ नाईं अपने तईं बढ़ा। आकाश के तारों से अधिक अपने
१७ ब्योपारियों को बढ़ा टिड्डी ने नष्ट किया है और उड़ गई है। तेरे मुकुट धारी घनी टिड्डियों की नाईं और तेरे सेना पति फनिगों की नाईं जो ठंडे दिन में बाड़े में रहते हैं परन्तु सूर्य्य उदय होते वे उड़जाते हैं और उनका ठिकाना नहीं जाना जाता।
१८ हे असूर के राजा तेरे गड़रिये ऊंघते हैं तेरे कुलीन चैन से रहते हैं तेरे लोग पर्ब्बतों पर बिथरे हैं और उन्हें कोई नहीं
१९ बटोरता। तेरे घाव का चंगा होना नहीं तेरा घाव अति है सब जो तेरा संदेश सुनते हैं तुझ पर थपेड़ी मारते हैं क्योंकि किस पर तेरी दुष्टता नित नहीं पहुंची है?।

हबक्कूक की पुस्तक।
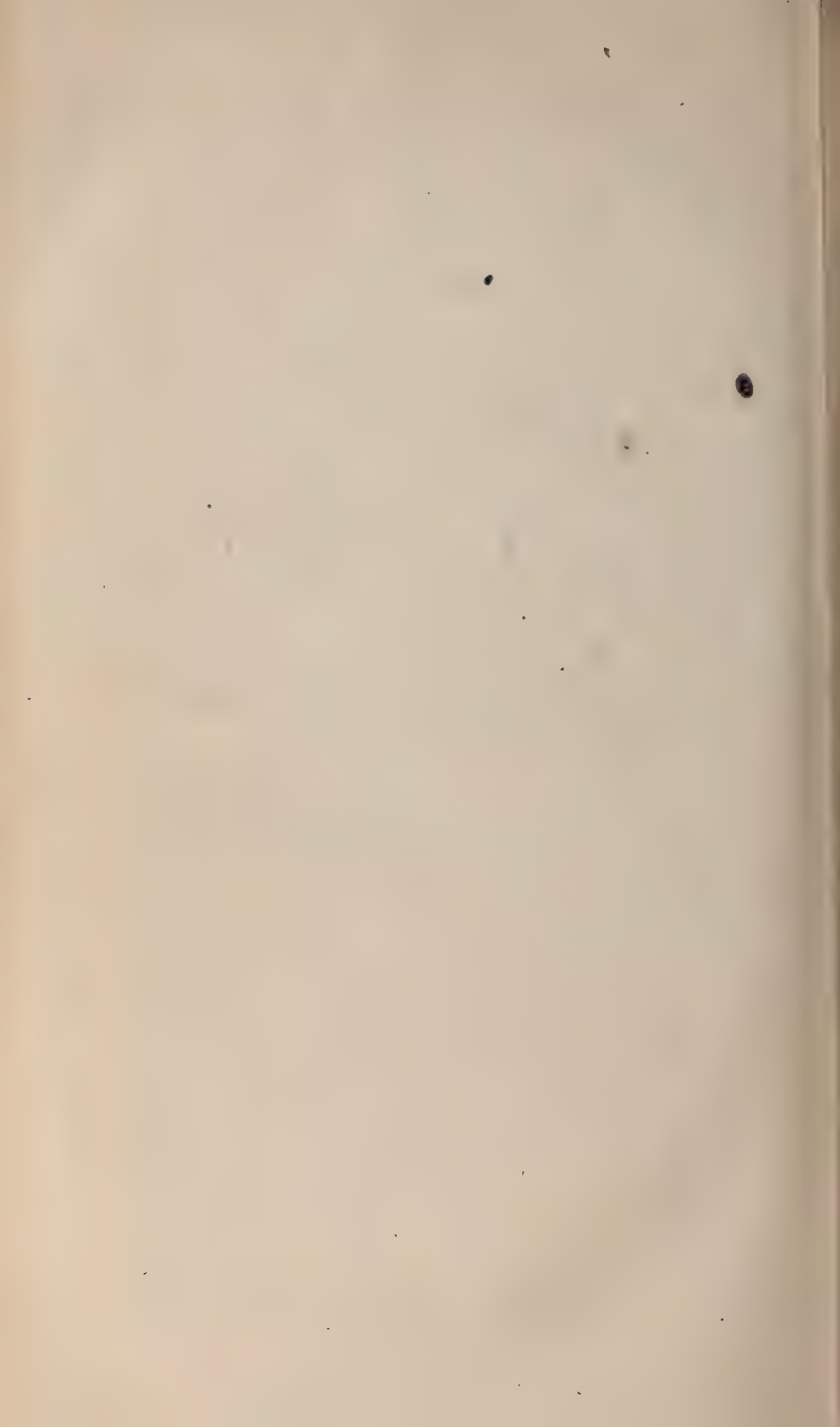
१ पहिला पर्ब्ब।

लोगों में अंधेर और झगड़े का अपवाद करना १—४ कलदानियों के द्वारा से उन पर दंड होना ५—११ ईश्वर का धन्यबाद और भाग्यमान पापियों का फल बताना १२—१७।

१।२ भविष्यद्वाणी जो हबक्कूक भविष्यद्वक्ता ने देखी। हे परमेश्वर कबलों मैं ने पुकारा है और तू ने नहीं सुना है कबलों मैं तुझे ३ पुकारता हों अंधेर है और तू ने नहीं बचाया है। तू मुझे क्यों बुराई दिखाता है और दुष्टता दृष्टि कराता है और लूट और अंधेर मेरे आगे किस लिये है और बिवाद क्यों है और मनुष्य ४ क्यों झगड़ा उभाड़ते हैं?। इस लिये व्यवस्था घटी जाती है और न्याय कधी नहीं निकलता क्योंकि धर्मी को दुष्ट घेरता है इस ५ लिये अनीति निकलती है। अरे अपराधियो दृष्टि करो और देखो और आश्चर्य माने और नष्ट होजाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक ऐसा कार्य करता हों कि यद्यपि तुम्हें कहा ६ जाय तुम प्रतीति न करोगे। क्योंकि देखो मैं कलदानियों को उभाड़ोंगा वुह कड़ुवा और चालाक जातिगण जो औरों के निवास स्थान को अधिकार करने के लिये पृथिवी की चौड़ाई ७ पर से जाता है। वे भयंकर और भयानक हैं उनका बिचार ८ और उनकी उत्तमता उन्हीं से निकलती है। उनके घोड़े चीतों से भी चालाक हैं और वे सांझ के ऊंडारों से अधिक क्रूर हैं

और उनके घोड़चढ़े दूर से आवेंगे और फैल जायेंगे वे उन
९ गिद्धों की नाईं उड़ेंगे जो भक्षने के लिये बेग करते हैं। सब
के सब अंधेर के लिये आवेंगे उनके मुंह का सुरकना पुरवा
पवन की नाईं होगा और वे बंधुआई को बालू की नाईं बटोरेंगे।
१० वे राजाओं को चिढ़ावेंगे और अध्यक्ष उनके लिये सवांग
होंगे वे हर एक दृढ़ स्थान से हंसेंगे और वे धूल ढेर कर कर
११ उसे ले लेंगे। उसके पीछे उनका मन फिर जायगा और वे
जाते रहेंगे और वे दोषी की नाईं दंड पावेंगे उनके देव के
१२ संग यही उनका बलि। हे मेरे ईश्वर मेरे धर्म्ममय परमेश्वर
क्या तू सनातन से नहीं है? हम न मरेंगे हे परमेश्वर तू ने उन्हें
न्याय के लिये ठहराया है ताड़ना करने को तू ने उन्हें चटान
१३ की नाईं दृढ़ किया है। अपनी आंखों की पवित्रता के कारण तू
बुराई नहीं देख सक्ता और दुष्टता को नहीं देख सक्ता सो
अपराधियों को तू क्यों देखता है और जब दुष्ट अपने से धर्म्मी
१४ को निंगलता है तू चुपका है। तू मनुष्यों को समुद्रों की मछलियों
की नाईं और रेंगवैयों की नाईं जिनका अगुआ नहीं क्यों
१५ बनाता है। वे सब के सब कंटिया से उठाते हैं वे उन्हें अपने
जाल में बटोरते हैं और अपने महा जाल में एकट्ठे करते हैं
१६ इस लिये वे आल्हादित हो हो आनंद करते हैं। क्योंकि वे
अपने जाल के लिये बलि चढ़ाते हैं और अपने महाजाल के
लिये सुगंध जलाते हैं क्योंकि उनके कारण उनका भाग मोटा
१७ है और उनका भोजन बहुत। इस लिये क्या वे अपने जाल
को खाली करेंगे? और नित जातिगणों को नाश करने में अलग
न रहेंगे।

२ दूसरा पर्व्व।

भविष्यद्वक्ता का उत्तर पाने की बाट जोहनी १—३
अहंकारी लोग खरे नहीं पर सज्जन विश्वास से

जीयेगा ४—मूर्त्ति पूजा और अनेक पाप के लिये कलदानियों का दंड ५—१९ सारी पृथिवी का ईश्वर के आगे चुपका होना २०।

मैं अपनी चौकी के गुम्मट पर खड़ा था और गढ़ पर हो रहा और देख रहा कि वुह मेरे द्वारा से क्या कहेगा और अपने विवाद में मैं उसे क्या उत्तर देउं। तब परमेश्वर ने उत्तर देके मुझे कहा कि दर्शन को लिख और उसे पटरियों पर फरछा कर कि दौड़वैया उसे पढ़े। क्योंकि ठहराये हुए समय के लिये दर्शन है परन्तु अन्त में खोल के कहेगा और न छलेगा यदि वुह विलम्ब करे तो उसके लिये ठहर क्योंकि वुह आते आते आवेगा और विलम्ब न करेगा। देखो वुह उभाड़ा हुआ है उसका प्राण खरा नहीं है परन्तु सज्जन अपने विश्वास से जीयेगा। फेर जैसा बलवंत जन मद्य से अपराध करता है वुह अभिमानी है और घर में नहीं रहता वुह समाधि की नाईं अपनी बांछा को बढ़ाता है और मृत्यु की नाईं वुह संतुष्ट नहीं होसक्ता और सारे जातिगणों को अपनी ओर बटोरता है और सारे लोगों को अपनी ओर एकट्ठा करता है। क्या ये सब के सब उसके विरुद्ध एक दृष्टांत और उसके विषय में एक ठट्ठा और कहावत न उठावेंगे? और वे कहेंगे कि उस पर संताप जो औरों को अपनी ओर बटोरता है बहुत से बंधकों से वुह कबलों आप पर भार करेगा। क्या तेरे डंसवैये आकस्मात् न उठेंगे और तेरे सताऊ न जागेंगे? और क्या तू उनके लिये लूट न होगा?। मनुष्यों के लोहू के और देश पर और नगर पर और उनके सारे निवासियों पर अंधेर करने के लिये और इस कारण कि तू ने बहुतसे जातिगणों को लूटा है सारे बचे हुए लोग तुझे लूटेंगे। उसपर संताप जो अपने घराने के लिये बुरी लालच करता है जिसतें अपने खोंते को ऊंचा बनावे जिसतें वुह बुराई के हाथ से बच जाय। बहुतसे

लोगें को बंधन करके तू ने अपने घराने के लिये लाज की
११ जुगत किई है और तू ने पाप किया है। निश्चय भीत में से
पत्थर पुकारता है और लट्ठे में की जोड़ाई उसे उत्तर देती है।
१२ कि संताप उसपर जो लोहू से नगर बनाता है और बुराई से
१३ नगर स्थिर करता है। क्या ये बातें सेनाओं के परमेश्वर
की ओर से नहीं कि लोग आग के लिये परिश्रम करें और
१४ जातिगण व्यर्थ के लिये आप को थकावें। निश्चय जैसा जल
समुद्र को ढांपते हैं तैसा पृथिवी परमेश्वर के विभव के ज्ञान से
१५ भर जायगी। उसपर संताप जो अपने परोसी की नग्नता
देखने के लिये उसे पिलाता है जो अपना कटोरा उसे देता है
१६ और उसे मतवाला भी करता है। तू विभव की संती लाज से
भरा है तू भी पी और अपनी खलड़ी उघार परमेश्वर के
दहिने हाथ से तेरी ओर कटोरा फिरेगा और तेरे विभव
१७ पर अशुद्ध लाज होगी। मनुष्यों के लोहू के और देश पर
और नगर और उसके सारे निवासियों पर अंधेर करने के
लिये निश्चय लबनान का अंधेर तुझे ढांपेगा और ढोरों का
१८ नाश तुझे डरावेगा। खोदी हुई मूरत से क्या लाभ जो उसके
बनवैयों ने उसे खोदा और ढाई हुई मूरत और झूठ का
उपदेशक जिसतें उसके डौल का करवैया उसपर भरोसा
१९ रखता है कि अपने लिये गूंगी मूरत बनावे?। उसपर संताप
जो काठ को कहता है कि जाग और मौन पत्थर को कि उठ
क्या वुह सिखावेगा? देखो वुह सोने चांदी से मढ़ा है और
२० उसके मध्य में स्वास नहीं है। परन्तु परमेश्वर अपने मंदिर
की पवित्रता में है सारी पृथिवी उसके आगे चुपकी हो रहे।

३ तीसरा पर्ब्ब।

भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना ईश्वर का विभव और उस्से
आनंदित होना १—१९।

१२ हबक्कुक भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना शिगियूनूस पर । हे परमेश्वर तेरी सुनाई ऊई मैं ने सुनी हे परमेश्वर तेरे कार्य से मैं डरा ज्यों ज्यों बरस आता है तू ने दिखाया है ज्यों ज्यों बरस आता है तू जनाता है कोप में तू दया स्मरण करता है । तीमान से ईश्वर आया और धर्म्ममय पाराम पर्ब्बत से, सीलाह, उसके विभव से स्वर्ग ढंप गया और पृथिवी उसकी स्तुति से परिपूर्ण ऊई । उसकी चमक ज्योति की नाईं थी किरण उसके लिये उसके हाथ से निकला और उसकी सामर्थ्य के छिपने का स्थान वहां था । मरी उसके आगे आगे गई और आग का धधकना उसके पीछे पीछे । उसने खड़ा होके भूमि को नापा उसने देखा और जातिगणों को बिथराया और सनातन के पहाड़ दो भाग ऊए और सदा की पहाड़ियां झुकीं सनातन के पथ उसे रौंदे गये । तू ने कोशान के तंबूओं का दुःख देखा मदियान के देश के ओझल थर्थरा गये । जब तू अपने घोड़ों पर और बचाव के रथों पर चढ़ा क्या परमेश्वर की रिस बाड़ों के विरुद्ध न भड़की? क्या तेरा कोप बाड़ों के विरुद्ध था? क्या तेरी जलजलाहट समुद्र के विरुद्ध थी? । तेरे धनुष गोष्ठियों की किरिया के अर्थात् बाचा के समान उघारे गये सीलाह । तू ने देश के धारों को चीरा पहाड़ तुझे देखके पीड़ित ऊए उमड़े ऊए जल जाते रहे गहिराव ने अपने शब्द उचारा उसने अपने हाथ ऊपर
११ उठाये । सूर्ज और चंद्रमा अपने निवास में ठहर गये उनकी
१२ ज्योति से हां चमक से तेरे भाले की चमक से तेरे बाण चल निकले। अपनी जलजलाहट से तू ने देश में से यात्रा किई अपने कोप से
१३ तू ने जातिगणों को झाड़ा । तू अपने लोगों को बचाने के लिये निकला अर्थात् अपने अभिषिक्त के लिये दुष्टों के घर में से तू ने सिर को घायल किया चटान की नेउं को तू ने उघारा सीलाह ।
१४ अपनी छड़ी से तू ने उसके गाओं के श्रेष्ठों को बेधा बवंडर की नाईं हमें बिथराने को वे हम पर झपटे उनका आनंद करना ऐसा

१५ था जैसा कि वे कंगालों को चुपके से भक्षने चाहते हैं। अपने
घोड़ों से तू ने समुद्र में से हां महाजल की ढेर में से यात्रा
१६ किई। सुनतही मेरी अंतड़ियां तड़फड़ाने लगीं शब्द के मारे
मेरे होंठ कांपने लगे सड़ाहट मेरी हड्डियों में पैठ गई और मैं
अपने ठिकाने में थर्थराने लगा उन लोगों के पास बंधूआई
में जाने को जो अपनी जथाओं से हमें घेरेंगे इस कारण मैं
१७ दुःख के दिन को पहुंचाया जाऊंगा। यद्यपि गूलर पेड़ न
लहलहावे और दाखों में कुछ न लगे और जलपाई का फल
घटजाय और खेतों में भोजन उत्पन्न न होवे और गोंड़ा में से
१८ झुंड कट जायें और थान में ढोर न होवें। तथापि मैं परमेश्वर
से आनंदित होऊंगा मैं अपने मुक्तिदायक ईश्वर से आल्हादित
१९ होऊंगा। प्रभु परमेश्वर मेरा बल और वुह मेरे पग को
हरिणियों का सा बनावेगा और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर
चलावेगा मेरे तार के बाजे पर प्रधान बजनियों के पास।

सिफ़नियाः की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

यहूदा और यिरोशलीम की मूर्त्ति पूजा और
ईश्वर से फिरजाने का दंड प्रगट करना १—६.
ईश्वर के महा कोप की भविष्यवाणी ७—१८।

यहूदा के राजा अमून के बेटे जुसैयाः के दिनों में परमेश्वर का
वचन हिज़कियाः के बेटे अमरियाः के बेटे गिदलियाः के बेटे
कोशी के बेटे सिफ़नियाः पर पहुंचा। परमेश्वर कहता है
कि देश में से दूर करते हुए मैं सारी बस्तुन को दूर करोंगा।
मैं मनुष्यों को और ढोरों को दूर करोंगा मैं आकाश के पंछियों
को और समुद्र की मछलियों को और दुष्टों की ठोकरों को दूर
करोंगा परमेश्वर कहता है कि देश पर से मैं मनुष्यों को नष्ट
करोंगा। और जो छतों पर स्वर्ग की सेना के आगे दंडवत
करते हैं और जो परमेश्वर की और मलकूम की किरिया
खाते हैं और दंडवत करते हैं और जो परमेश्वर के मार्ग पर
चलने से फिर गये हैं और जिन्हों ने परमेश्वर को नहीं खोजा
न उसे बूझा है मैं अपने हाथ को यहूदा पर और यिरोशलीम
के सारे बासियों पर बढ़ाओंगा और मैं इस स्थान से बअ़ाल
के बचे हुए को याजकों के साथ बलिकारकों को नष्ट करोंगा।
प्रभु परमेश्वर के आगे चुपके रह क्योंकि परमेश्वर का दिन
आही पहुंचा इस लिये परमेश्वर ने बलि सिद्ध किया है
उसने अपने पाहुनों को सिद्ध किया है। और परमेश्वर के

बलि के दिन में ऐसा होगा कि मैं अध्यक्षों को और राजपुत्रे
को और सभों को जो उपरी बस्त्र पहिने हैं पलटा देउंगा
९ और मैं उस दिन में सभों को, जो देहली पर कूदते हैं और
जो अपने स्वामियों के घरों को अंधेर और छल से भरते
१० दंड देउंगा। परमेश्वर कहता है कि उस दिन यों होग
कि मच्छफाटक से चिल्लाने का शब्द और दूसरे नगर
चिचियाने का शब्द और पहाड़ियों से बड़े दरार का शब्
११ होगा। नीचे के नगर के बासियो चिल्लाओ क्योंकि सारे बैपार
१२ कट गये चांदी के बोझिये नष्ट ऊए। और उस समय ऐस
होगा कि मैं यिरोशलीम को दीपकों से खोजोंगा और जे
लोग निश्चिंत पड़े हैं जो अपने मन में कहते हैं कि परमेश्वर
१३ भला न बुरा करता है मैं उन्हें दंड देउंगा। और उनक
संपत्ति लूट हो जायगी और उनके घर उजाड़ के लिये, वे घ
बनावेंगे परन्तु उनमें न बसेंगे दाख की बारी लगावेंगे पर उसक
१४ रस न पीयेंगे। परमेश्वर का बड़ा दिन पऊंचा है पऊंचा है
और शीघ्र आता है परमेश्वर के दिन का समाचार कड़वा है
१५ तब बलवन्त जन चिल्लावेगा। वुह दिन कोप का दिन है वुह
बिपत्ति और पीड़ा का दिन है उजाड़ और नाश का दिन है
वुह अंधियारे और शोक का दिन है वुह मेघ और गा
१६ अंधियारे का दिन है। बाड़ित नगरों के बिरुद्ध और ऊंच
१७ गुम्मटों के बिरुद्ध तुरही का और ललकारने का दिन है। मै
मनुष्यों को दुःख में डालोंगा और वे अंधे की नाईं चलेंगे इस
कारण कि उन्हों ने परमेश्वर के बिरुद्ध पाप किया है और
उनका लोहू धूल की नाईं उंडेला जायगा और उनका मांस
१८ मल की नाईं। और उनके सोना चांदी परमेश्वर के कोप के
दिन में उन्हें बचा न सकेंगे परन्तु उसके झल की आग से
सारे देश भस्म होंगे क्योंकि वुह देश के सारे बासियों का
सर्वथा शीघ्र अंत करेगा।

ईश्वर के खोजने का उपदेश १—३ फलस्ती और मवाबी और अमूनी और कोश्री और असूरी के विरुद्ध भविष्यवाणी ४—१५ ।

१२ हे अवांछित जाति बटुर जाओ और एकट्ठे होओ। ठहराये ऊए के सिद्ध होने से आगे और तुम्हारा दिन भसे की नाईं जाता रहे परमेश्वर की रिस का तपन तुम पर आने से आगे परमेश्वर की रिस का दिन तुम पर आने से आगे। देश के सारे नम्र लोग जिन्हों ने उसकी विधिन को पाला है और धर्म्म को और नम्रता को खोजा है परमेश्वर को खोजो क्या जानें कि परमेश्वर की रिस के दिन में तुम लोग छिपाये जाओ। निश्चय ग़ज़ा त्यागा जायगा और अश्कलून उजाड़ के लिये होगा और अशदूद मध्याह्न को हांका जायगा और अकरून उखाड़ा जायगा। समुद्र के तीर के वासी करीती के जाति पर संताप परमेश्वर का बचन तुम्हारे विरुद्ध है फलस्तानियों के देश हे किनान मैं तुझे यहां लों नष्ट करोंगा कि कोई निवासी न होगा। और समुद्र तीर का करीत गड़रियों का निवास और झुंड के गोंडे होंगे। और समुद्र तीर भी यहूदा के घराने के बचे ऊए के लिये होगा वहां वे चढ़ावेंगे और सांझ को अश्कलन के घरों में पड़े रहेंगे क्योंकि उनका ईश्वर परमेश्वर उनसे भेंट करेगा और उनकी बंधुआई को पलट डालेगा। मैं ने मवाब की निंदा को और अमून के पुत्रों के दुर्बचनों को सुना है जिस्से उन्हों ने मेरे लोगों की निंदा किई है और उनके सिवाने के विरुद्ध आप को फुलाया है। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर कहता है कि अपने जीवन सों निश्चय मवाब सदूम की नाईं और अमून के पुत्र अमूरा की नाईं होंगे कांटों के लिये एक शून्य स्थान और लोन के खोदने के लिये स्थान और सदा के उजाड़ के लिये मेरे लोग के बचे ऊए उन्हें नष्ट करेंगे और मेरे उबरे ऊए लोग उनके अधिकार

१० होंगा। यही उनके अहंकार के लिये होगा क्योंकि उन्हों
निंदा किई और सेनाओं के ईश्वर परमेश्वर के लोगों के विरु
११ आप को फुलाया है। परमेश्वर उनके विरुद्ध भयानक होग
क्योंकि वुह पृथिवी के सारे देवों को दुर्बल करेगा और देशगरा
के सारे टापू हर एक अपने अपने स्थान से उसके आगे दंडव
१२ करेगा। तुम भी हे कोशियो आप तलवार से मारे जाओगे
१३ और वुह उत्तर के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ावेगा और असू
को नष्ट करेगा और नैनवी को अरण्य के सूखे स्थान की नाः
१४ उजाड़ के लिये बनावेगा। और उसके मध्य में झुंड औ
भूमि के सारे पशु लेटेंगे और क्या हाड़गिल क्या साही उसं
खोदे ऊए उतरंगों पर बसेंगे खिड़की में से शब्द निकलेगा औ
बनकौव्वे ओसारे में क्योंकि उसने उसके आरज पेड़ को उघार
१५ है। यही आनंदित नगरी है जो निश्चंत बैठी थी और जे
अपने मन में कहती थी कि मैं हों और कोई नहीं वुह कैसे
उजाड़ के लिये हो गई पशु के झुकने के स्थान हर एक जो उस
पास से जाता है फुफ़कारेगा और हाथ हिलावेगा।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

नाना पाप के लिये यिरोशलीम का दपटा जाना
१—७ ईश्वरीय जन के लिये आशीष की वाचा
८—२० ।

१।२ सताऊ नगरी पर संताप जो दंगइत और अशुद्ध है। उसने
शब्द न माना उसने उपदेश ग्रहण न किया उसने परमेश्वर
३ पर भरोसा न रक्खा वुह अपने ईश्वर के पास न बढ़ी। उसके
मध्य में के अध्यक्ष गर्जवैये सिंह हैं उसके न्यायी सांझ के ऊंडार
४ हैं वे बिहान लों नहीं ठहरते। उसके भविष्यद्वक्ता तुच्छ विश्वास
घात जन हैं उसके याजकों ने पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है
५ उन्हों ने व्यवस्था को उलंघन किया है। परन्तु परमेश्वर उसके

मध्य में धर्म्मी है वुह बुराई नहीं करता वुह बिहान को अपना
६ धर्म्म प्रकाश करने को नहीं चूकता तथापि अधर्म्मी निर्लज्ज है।
मैं ने जातिगणों को नाश किया है और उनके गुम्मट नष्ट ऊए मैं
ने उनकी सड़कों को उजाड़ा है यहां लों कि कोई उसमें से नहीं
जाता उनके नगर अहेर ऊए हैं यहां लों कि कोई जन कोई
७ निवासी नहीं। मैं ने कहा कि निश्चय तू मुझे डरेगी तू उपदेश
ग्रहण करेगा जिसतें उसके निवास नष्ट न होवें मेरे सारे दंड
के पीछे वे तड़के उठे और अपनी सारी चालों को अशुद्ध किया।
८ तथापि परमेश्वर कहता है कि जबलों मैं अहेर के लिये न
उठों मेरी बाट जोहो क्योंकि जातिगणों के बटोरने के और
राज्यों को एकट्ठा करने के लिये मेरी आज्ञा है जिसतें मेरा
जलजलाहट उन पर उंडेला जाये अर्थात् मेरी रिस की सारी
तपन क्योंकि मेरे झल की आग से सारी पृथिवी भस्म हो
९ जायगी। निश्चय मैं लोगों को पवित्र होंठ देउंगा तब सब के
सब परमेश्वर का नाम लेंगे और एक साथ उसकी सेवा
१० करेंगे। कोश की नदी के पार से मेरे बिथरे ऊओं में के
११ बिनती करवैये पिसान की भेंट लावेंगे। उस दिन में अपने
सारे कार्य्यों के लिये जो तू ने मेरे बिरुद्ध अपराध किया है तू
लज्जित न होगा क्योंकि मैं तेरे मध्य में से तेरे अहंकार के
आनंदितों को दूर करोंगा और तू फिर मेरे पवित्र पर्व्वत पर
१२ आप को न फुलावेगा। और मैं तेरे मध्य में दीन और नम्र
लोग छोड़ोंगा और वे परमेश्वर के नाम पर भरोसा करेंगे।
१३ इसराईल के बचे ऊए दुष्टता न करेंगे न झूठ बोलेंगे और न
उनके मुंह में छल की जीभ पाई जायगी और वे चराई करेंगे
१४ और लेटेंगे और कोई उन्हें न डरावेगा। हे सैहून की पुत्री
गाओ हे इसराईल ललकारो हे यिरोशलीम की पुत्री मगन
१५ हो और अपने सारे मन से आनंदित हो। परमेश्वर ने तेरे
बिचारों को ले लिया है उसने तेरे बैरियों को फेर दिया है

इसराईल का राजा परमेश्वर तेरे मध्य में है तू फेर बुराई न
१६ देखेगी। उस दिन यिरोशलीम से कहा जायगा कि मत
१७ डर और सैहून को कि तेरे हाथ ढीले होने न पावें। तेरा
ईश्वर परमेश्वर तेरे मध्य में सर्वशक्तिमान तुझे बचावेगा वुह
आनंदता से तुझ पर आनंद करेगा वुह अपना प्रेम तुझ पर
नया करेगा वुह गाते गाते तुझ पर आल्हादित होगा।
१८ मैं ने तुझ में के दुखियों को उत्सव से अलग किया है वे तेरी
१९ निंदा होने के कारण से तुझसे अलग हैं। देख मैं उस समय में
तेरे साथ तेरे कारण कार्य करोंगा और मैं दुर्बल को बचाओंगा
और खेदे हुए को बटोरोंगा और मैं उन्हें हर एक देश में
जहां जहां वे लज्जित हुए हैं स्तुति के लिये और नाम के लिये
२० बनाओंगा। परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुम्हारी आंखों के
आगे तुम्हारी बंधुआई को फेर देउंगा उस समय मैं तुम्हें
लाओंगा और उस समय जब मैं तुम्हें बटोरोंगा निश्चय मैं
तुम्हें एक नाम के लिये और स्तुति के लिये सारे पृथिवी के
लोगों में ठहराओंगा।

हग्गई की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

मन्दिर बनाने में बिलम्ब करने के लिये यहूदियों का दपटा जाना १—११ उन लोगों का मान लेना और ईश्वर से हियाव पाना १२—१५।

दारा राजा के दूसरे बरस के छठवें मास की पहिली तिथि में परमेश्वर का बचन हग्गई भविष्यद्वक्ता के द्वारा से यहूदा के अध्यक्ष सलातिएल के बेटे ज़ोरबाबुल के पास और प्रधान याजक युसीदक के बेटे यहू पास यह कहते हुए पहुंचा। कि-सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि ये लोग कहते हैं कि समय नहीं पहुंचा अर्थात् परमेश्वर का मन्दिर बनाने का समय। तब परमेश्वर का बचन हग्गई भविष्यद्वक्ता के द्वारा से यह कहते हुए पहुंचा। कि हे लोगो क्या तुम्हें छत के घरों में बास करने का समय है और यह मन्दिर उजाड़ पड़ा रहे?। अब सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मन लगाओ। तुम ने बहुत बोया है परन्तु बढ़ती थोड़ी तुम खाते हो परन्तु तृप्त नहीं होते तुम पीते हो परन्तु जी भर के नहीं तुम वस्त्र पहिनते हो परन्तु उस्से गरमाते नहीं और जो महिनवारी कमाता है सो फटी थैली के लिये कमाता है। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मन लगाओ। परमेश्वर कहता है कि पहाड़ पर जाके लकड़ी लाओ और मन्दिर बनाओ जिसतें मैं उस्से प्रसन्न होओं और महिमा पाओं। तुम लोग बहुत ढूंढ़ते हो और थोड़ा देखते हो और जब उसे घर लाते

हो तो मैं ने उन्हें फूंक दिया सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि किस कारण? मेरे मन्दिर के कारण जो उजाड़ पड़ा है और
१० तुम्में से हर एक अपने अपने घर की ओर दौड़ता है। इस लिये तुम्हारे ऊपर के आकाश ओस से रहि गये और पृथिवी
११ अपनी बढ़ती से रहि गई। मैं देश पर और पर्ब्बतों पर और अन्न पर और चुने ऊए दाख रस पर और तेल पर और जो कुछ भूमि से उत्पन्न होता है और मनुष्य पर और ढोर पर और हाथों के सारे परिश्रम पर झुराहट लाया हों।
१२ तब सलासाईल के बेटे ज़ोरबाबुल ने और प्रधान याजक युसोदक के बेटे यशू ने और सारे बचे ऊए लोगों ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को और हग्गई भविष्यद्वक्ता के बचन को जैसा कि उनके ईश्वर परमेश्वर ने उसे भेजा था माना और लोग परमेश्वर से
१३ डरे। तब परमेश्वर का दूत हग्गई परमेश्वर के सन्देश से लोगों को यह कहिके बोला कि परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे साथ
१४।१५ हों। तब परमेश्वर ने यहूदा के अध्यक्ष सलासाईल के बेटे ज़ोरबाबुल के मन को और प्रधान याजक युसोदक के बेटे यशू के मन को और सारे उबरे ऊए लोगों के मन को उभाड़ा और उन्हों ने आके दारा राजा के दूसरे बरस के छठवें मास की चौबीसवीं तिथि में अपने ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर के मन्दिर का कार्य किया।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

उस मन्दिर में मसीह के आने की भविष्य बाणी १—९ उन के पाप के लिये आशीष का रोका जाना १०—१९ मसीह के राज्य के भाग की भविष्य बाणी २०—२३।

१।२ सातवें मास की एक्कीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए हग्गई भविष्यद्वक्ता के द्वारा से पऊंचा कि यहूदा के

अध्यक्ष सलासाईल के बेटे ज़ोरबाबुल से और प्रधान याजक
२ युसीदक के बेटे यशू से और उबरे हुए लोगों से कह । कि तुम्में
कौन छूटा है जिसने इस मन्दिर को अपने अगिले बिभव में
देखा था? और अब उसे क्या देखते हो? क्या तुम्हारी दृष्टि में
४।५ तुच्छ के समान नहीं? । तथापि परमेश्वर कहता है कि हे
ज़ोरबाबुल बलवंत हो और प्रधान याजक युसीदक के बेटे
यशू बलवंत हो परमेश्वर कहता है हे देश के सारे लोगो
बलवंत होओ और कार्य्य करो क्योंकि अपने वचन के समान
जो मैं ने तुम्हारे साथ बाचा बांधी थी जब तुम लोग मिसर
के देश से निकल आये सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि
मैं तुम्हारे साथ हों और मेरा आत्मा तुम्हों में रहता है सो
६ मत डरो । क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तनिक
एक बार और मैं स्वर्ग और पृथिवी को और समुद्र और
७ सूखी भूमि को हिलाओंगा । और मैं सारे जातिगणों को
हिलाओंगा और सारे जातिगण की बांछा आवेगी सेनाओं
का परमेश्वर कहता है कि मैं इस मन्दिर को बिभव से भर
८ देउंगा । सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि सोना चांदी
९ मेरा है । सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि इस पिछले
मन्दिर का बिभव अगिले से अधिक होगा और सेनाओं का
१० परमेश्वर कहता है कि मैं इस स्थान में कुशल देउंगा । दारा
के दूसरे बरस के नवें मास की चौबीसवीं तिथि में परमेश्वर
का बचन यह कहते हुए हग्गई भविष्यद्वक्ता के द्वारा से पहुंचा ।
११ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यह कहिके याजकों से
१२ व्यवस्था पूछो । यदि मनुष्य अपने अंचल में पवित्र मांस ले जाय
और अपने अंचल से रोटी को अथवा लपसी को अथवा दाख
रस को अथवा तेल को अथवा कोई भोजन को छूवे तो क्या
वह पवित्र हो जायगा? और याजक ने उत्तर देके कहा कि
१३ नहीं । तब हग्गई ने कहा कि यदि लोथ के मारे कोई जन

अशुद्ध होवे और इन में से किसी वस्तु को छूवे क्या वुह अशुद्ध हो जायगा? याजक ने उत्तर देके कहा कि वुह अशुद्ध हो

१४ जायगा। तब हग्गई ने उत्तर देके कहा कि परमेश्वर कहता है कि ऐसा ही ये लोग और ऐसे ये जातिगण मेरी दृष्टि में हैं और वैसे उनके हाथ के कार्य्य और जो उन्हों ने चढ़ाया

१५ अशुद्ध हैं। और अब मेरी बिनती सुन के मन लगाओ परमेश्वर के मन्दिर में पत्थर पर पत्थर धराजाने से आगे तुम लोग

१६ क्या थे। जब कोई बीस की ढेर पर आया तो दस पाया और जब दाख के कोल्हू से पचास निकालने को आया तो बीस थे।

१७ मैं ने तुम्हें झुलस से और लेंठ से और ओले से अर्थात् तुम्हारे हाथ के सारे कार्य्यों से मारा तथापि परमेश्वर कहता है कि

१८ तुम्में से कोई मेरी ओर न फिरा। सो मेरी बिनती पर मन लगाओ आज से आगे अर्थात् नवें मास की चौबीसवीं तिथि से जिस दिन से परमेश्वर के मन्दिर की नेउं डाली गई अपना

१९ मन लगाओ। क्या खत्ते में अबभी बीज हैं हां क्या अब जो दाख और गूलर पेड़ और अनार और जलपाई पेड़ न फला

२० परन्तु आज से मैं तुम्हें आशीष देउंगा। फेर दूसरी बार परमेश्वर का वचन हग्गई पास मास की चौबीसवीं तिथि में

२१ यह कहते ऊए पऊंचा। कि यहूदा के अध्यक्ष ज़ोरबाबुल से बोल कि मैं स्वर्गों को और पृथिवी को हिलाओंगा।

२२ और मैं राज्यों का सिंहासन उलट डालोंगा और जातिगणों के राज्यों के बल को नाश करोंगा और रथों को और रथिन को उलट डालोंगा और घोड़े और उनके चढ़वैये हर एक

२३ अपने संगी की तलवार से गिरपड़ेंगे। सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि उस दिन परमेश्वर कहता है कि मैं अपने सेवक सलतिएल के बेटे ज़ोरबाबुल को लेउंगा और तुझे छाप की नाईं बनाओंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुझी को मैं ने चुना है।

———

ज़करिया की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

पश्चात्ताप करने का उपदेश करना १—६ ज़करिया का दर्शन पाना ७—११ यिरोशलीम के लिये शांति पाने की बाचा १२—१७ चार सींग और चार बढ़ई का दर्शन १८—२१।

दारा के दूसरे बरस के आठवें मास में परमेश्वर का बचन इद्दू के बेटे बराकिया के बेटे ज़करिया भविष्यद्वक्ता के पास यह कहते हुए पहुंचा। परमेश्वर तुम्हारे पितरों पर रिस से रिसिआया। इस लिये उन्हें कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरी ओर फिरो सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं तुम्हारी ओर फिरोंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। अपने पितरों के समान मत होओ जिन्हें यह कहिके अगिले भविष्यद्वक्तों ने पुकारा था सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अब अपने अपने बुरे मार्गों से और अपनी अपनी बुरी चालों से फिरो परन्तु परमेश्वर कहता है कि उन्हों ने मेरी न सुनी और न मानी। तुम्हारे पितर कहां हैं? और क्या भविष्यद्वक्ता सदा जीते हैं?। परन्तु जो बचन और जो विधि मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों को आज्ञा किई क्या वे तुम्हारे पितरों पर न पड़ीं वे लौटके बोले कि जैसा सेनाओं के परमेश्वर ने हमारे व्यवहारों के और हमारी चालों के समान करने को चाहा था तैसा उसने हम से किया है। ग्यारहवें

मास को चैाबीसवीं तिथि में जो सिबात मास है दारा
दूसरे बरस में परमेश्वर का वचन इडू के बेटे बराकियाः के बे
८ ज़करिया भविष्यद्वक्ता के पास यह कहते ऊए पऊंचा। रात के
मैं ने देखा और क्या देखता हूं कि एक जन लाल घोड़े प
चढ़ा है और वुह परदेशी मिहंदी के मध्य में जो गहिरा
में थी खड़ा है और उसके पीछे पीछे लाल और धूम्र औ
९ श्वेत घोड़े हैं। तब मैं ने कहा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं? फिर मे
संबादी दूत ने मुझे कहा कि मैं तुझे दिखाओंगा कि ये क
१० हैं। और जो जन बिदेशी मिहंदियों में खड़ा था उसने उत्तर दे
कहा कि परमेश्वर ने इन्हें पृथिवी के सर्वत्र इधर उधर जाने के
११ भेजा है। और उन्हों ने परमेश्वर के दूत को जो बिदेश
मिहंदियों में खड़ा था उत्तर देके कहा कि हम पृथिवी के सर्व
इधर उधर गये हैं और क्या देखते हैं कि सारी पृथिवी स्थि
१२ और चैन से है। तब परमेश्वर के दूत ने उत्तर दे
कहा कि हे सेनाओं के परमेश्वर तू यिरोशलीम पर और
यहूदा के नगरों पर, जिनके बिरोध में तू इन सत्तर बरसों से
१३ जलजलाहट में है कबलों दया न करेगा?। और परमेश्वर
ने मेरे संबादी दूत को अच्छी अच्छी और शांति की बातों से उत्तर
१४ दिया। और मेरे संबादी दूत ने मुझे कहा कि यह कहिके
प्रचार कि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं ने यिरोशलीम
१५ के लिये और सैहून के लिये बड़े भल से झलित हों। अब जो
अन्यदेशी चैन से हैं मैं उनसे अति उदास हों क्योंकि मैं तनिक
१६ उदास ऊआ था और उन्हों ने बिपत्ति को उभाड़ा। इस लिये
परमेश्वर यों कहता है कि मैं दया से यिरोशलीम की ओर
लैाटा हों सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मेरा मन्दिर
उसमें बनाया जायगा और एक रस्सी यिरोशलीम पर फैलाई
१७ जायगी। फेर प्रचार के कह कि सेनाओं का परमेश्वर कहता
है कि मेरे नगर बढ़ती के मारे अब भी फैल जायेंगे और

परमेश्वर सैहून को अब भी शांति देगा और अब भी यिरोशलीम
८ को चुनेगा । तब मैं ने अपनी आंखें उठाईं और क्या
९ देखताहूं कि चार सींग । और मैं ने अपने संवादी दूत से
कहा कि ये क्या हैं? और उसने मुझे उत्तर दिया कि इन सींगों ने
यहूदा को और इसराईल को और यिरोशलीम को छिन्न भिन्न
१० किया है । तब परमेश्वर ने मुझे चार कार्य्यकारियों को
११ दिखाया । तब मैं ने कहा कि ये क्या करने को आते हैं?
और वुह यह कहिके बोला इन सींगों ने यहूदा को ऐसा
छिन्न भिन्न किया है कि किसी ने अपना सिर न उठाया और
ये उन्हें डराने को और अन्य देशियों के सींगों को, जिन्हों ने
अपने सींग को यहूदा के देश के बिरुद्ध उठाया है दूर करने
को और छिन्न भिन्न करने को आये हैं ।

२ दूसरा पर्व्व ।

यिरोशलीम के नापने का दर्शन १—५ बाबुल के
छोड़ने का उपदेश ६—९ ईश्वरीय जन के आनंद
करने का उपदेश १०—१३ ।

फिर मैं ने आंखें उठा के देखा और क्या देखता हों कि एक जन
नापने की रस्सी हाथ में लिये ऊए । तब मैं ने कहा कि तू
कहां जाता है? उसने मुझे कहा कि उसकी चौड़ाई और
लम्बाई देखने के लिये मैं यिरोशलीम को नापने जाता हों ।
और क्या देखता हों कि मेरा संवादी दूत निकल चला और
दूसरा दूत उस्से भेंट करने को गया । और उसे कहा कि
दौड़ के उस तरुण मनुष्य से यह कहिके बोल कि मनुष्यों की
मंडली के और उसमें के ढोर के लिये यिरोशलीम गांव गांव
बसाया जायगा । परमेश्वर कहता है कि मैं उसके लिये चारो
ओर आग की भीत और उसके मध्य में बिभव होंगा । अहो
अहो परमेश्वर कहता है उत्तर देश से भागो क्योंकि परमेश्वर

कहता है कि मैं ने तुम्हें स्वर्गों के चारो पवन की ओर बिथराय
७ है। हे सैहून तू जो बाबुल की बेटियों के संग रहती है ब
८ निकल। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि विभ
के पीछे उसने मुझे उन जातिगणों के पास भेजा है जिन्हों
तुम्हें लूटा है क्योंकि जो तुम्हें कूता है सो उसकी आंख की पुतल
९ को कूता है। क्योंकि देखो मैं अपना हाथ उन पर हिलाओंग
और वे अपने दासों के लिये लूट होंगे और तुम लोग जानो
१० कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे भेजा है। हे सैहून
की पुत्री गा और आनंद कर क्योंकि देख मैं आता हों और
११ परमेश्वर कहता है कि मैं तेरे मध्य में रहोंगा। और बहुत
जातिगण उस दिन में परमेश्वर से मिल जायेंगे और मेरे
लिये लोग होंगे और मैं तेरे मध्य में रहोंगा और तू जानेग
१२ कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तुझ पास भेजा है। और
परमेश्वर देश की पवित्रता में यहूदा का अधिकारी होगा और
१३ यिरोशलीम को फेर चुनेगा। हे सारे शरीर परमेश्वर के
आगे चुपके रहो क्योंकि वुह अपनी पवित्रता के निवास से
उठाया गया है।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

मलीन वस्त्र से यशू के खड़ा होने का और शैतान
का उसे रोकने का दर्शन १—७ डाली और
पत्थर का दर्शन ८—१०।

१ और उसने मुझे प्रधान याजक यशू को परमेश्वर के दूत के आगे
खड़ा हुआ और शैतान को उसका बैरी होने के लिये उसकी
२ दहिनी ओर खड़ा दिखाया। और परमेश्वर ने शैतान से कहा
कि अरे शैतान परमेश्वर तुझे दपटे अर्थात् परमेश्वर जिसने
यिरोशलीम को चुना है तुझे दपटे क्या यह आग से निकाली
३ हुई लुकठी नहीं है?। अब यशू अशुद्ध वस्त्र पहिने हुए दूत

के आगे खड़ा था। और उसने यह कहिके अपने आगे के खड़े हुए लोगों से उत्तर देके कहा कि उस पर से अशुद्ध वस्त्र उतार तब उसने उसे कहा कि देख मैं तेरे पाप को तुझ से बीतवाया और तुझे सुंदर वस्त्र से पहिनाओंगा। और उसने कहा कि वे उसके सिर पर सुंदर मुकुट धरें और उन्हों ने उसके सिर पर एक सुंदर मुकुट रक्खा और उसे वस्त्र पहिनाये और परमेश्वर का दूत उसके पास खड़ा रहा। और परमेश्वर के दूत ने यह कहिके यशू के आगे साक्षी दिई। कि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि यदि तू मेरे मार्गों में चलेगा और मेरी विधि को पालन करेगा तब तू भी मेरे घर का न्याय करेगा और मेरे आंगनों की भी रक्षा करेगा और मैं तुझे उनमें जो पास खड़े हैं चलने का स्थान देउंगा। और हे प्रधान याजक यशू तू और तेरे संगी जो तेरे आगे रहते हैं सुनो क्योंकि वे आश्चर्यित मनुष्य हैं इस लिये देखो मैं अपने सेवक डाली को लाता हों। क्योंकि देखो जो पत्थर मैं ने यशू के आगे रक्खा है, एक पत्थर पर सात आंखें होंगी सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि देख मैं उसके खोदाव को खोदोंगा और मैं इस देश की बुराई को दिन भर में दूर करोंगा। सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि हर एक अपने अपने परोसी को दाख तले और गुलर पेड़ तले नेउता करेगा।

४ चौथा पर्ब्ब ।

सोने का दीआ और सात दीपक और तेल का दर्शन १—३ और उसका अर्थ ४—१० दो जलपाई का पेड़ दो अभिषिक्त हैं ११—१४ ।

और मेरा संवादी दूत लौट आया और जैसा मनुष्य नींद से जगाया जाता है तैसा उसने मुझे जगाया। और मुझे कहा कि तू क्या देखता है? मैं ने उत्तर दिया कि मैं ने दृष्टि

किई और क्या देखता हों कि एक सुनहली दीअट और उसके ऊपर एक कटोरा और उस पर उसके सात दीपक और सातो
३ दीपकों में जो उसके ऊपर थे सात टोंटियां । और कटोरे की
४ दहिनी और बाईं और दो जलपाई पेड़ । और मैं ने अपने
५ संवादी दूत को उत्तर देके कहा । कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं? तब मेरे संवादी दूत ने उत्तर देके मुझे कहा क्या तू इन्हें नहीं
६ जानता? मैं ने कहा कि नहीं हे प्रभु । तब उसने मुझे उत्तर देके कहा कि ज़ोरबाबुल से परमेश्वर का यह वचन है कि सेना से और पराक्रम से नहीं परन्तु सेनाओं का परमेश्वर कहता
७ है कि मेरे आत्मा से । हे महा पर्ब्बत तू ज़ोरबाबुल के आगे क्या है? एक चौगान, और वही मथाल के पत्थर को कृपा
८ कृपा पुकारते उस के लिये लावेगा । फेर परमेश्वर का वचन
९ यह कहते हुए मुझ पर पहुंचा । कि ज़ोरबाबुल के हाथ ने इस मंदिर की नेउं डाली है और उसी के हाथ उसे पूरा करेंगे और तुम लोग जानोगे कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास
१० भेजा है । छोटे कार्य के दिन की किसने निंदा किई है? वे आनंद करेंगे और उन सातों के साथ ज़ोरबाबुल के हाथ में साहुल देखेंगे वे परमेश्वर की आंखें हैं और सारी पृथिवी
११ में इधर उधर दौड़ती हैं । तब मैं ने उसे उत्तर देके कहा कि दीअट की दहिनी बाईं और ये दोनों जलपाई
१२ पेड़ क्या हैं? । और मैं ने दूसरी बार उत्तर देके उसे कहा कि जलपाई पेड़ की दोनों डालियां जो उस सोनहली टोंटी
१३ के लग हैं जो आप में से तेल को उंडेलती हैं क्या हैं । यह कहि के वुह मुझे बोला कि तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? ।
१४ मैं ने कहा कि नहीं हे मेरे प्रभु तब उसने कहा कि ये दो अभिषिक्त जन हैं जो सारी पृथिवी के प्रभु के आगे खड़े हैं ।

उड़ती पिलुंडी का दर्शन १—४ यहूदियों की
बिपत्ति का दृष्टांत ५—११ ।

फेर मैं ने अपनी आंखें उठाईं और देखा तो क्या देखता हों
कि उड़ती ऊई एक पिलुंडी । और उसने मुझे कहा कि तू क्या
देखता है? मैं ने कहा कि मैं उड़ती ऊई एक पिलुंडी देखता हों
जिसकी लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ । और
उसने मुझे कहा कि यही स्राप है जो सारी पृथिवी में निकलता
है क्योंकि हर एक जो चोरी करता है उसके समान यहां से
कट जायगा और हर एक जो किरिया खाता है इसके समान
यहां से कट जायगा । सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं
उसे निकालोंगा और वुह चोर के घर में प्रवेश करेगा और
उसके घर में जो मेरे नाम से झूठी किरिया खाता है और
उसके घर में रहेगा और उसे उसके लट्ठे और पत्थर समेत
भस्म करेगा । तब मेरा संबादी दूत निकला और मुझे कहा
कि अपनी आंखें उठा के देख यह क्या जाता है । तब मैं ने
कहा कि यह क्या है? उसने कहा कि यह एक ईफ़ा है जो
निकलता है फेर उसने कहा कि सारे देश में यही उनका
पाप है, । और क्या देखता हों कि एक भारी सीसा उठाया
ऊआ और यही एक स्त्री है जो ईफ़ा के मध्य में बैठी है ।
और उसने कहा कि यही दुष्टता है और उसने उसे ईफ़ा के
मध्य में डाल दिया और उसने सीसे के भार को उसी के
मुंह पर धरा । तब मैं ने आंखें उठाके देखा और क्या देखता
हों कि दो स्त्रियां निकल आईं और उनके डयने तले पवन
था क्योंकि हाड़गिल के डयने की नाईं उनके डयने थे और उन्हों
ने ईफ़ा को अधर में उठाया । तब मैं ने अपने संबादी दूत
से कहा कि ईफ़ा को ये किधर ले जाते हैं? । उसने मुझे कहा
कि उसके लिये शीनार देश में घर बनाने को, और वुह स्थिर
होके अपने नेउं पर धरा जायगा ।

६ छठवां पर्ब्ब।

चार रथ और घोड़ों का दर्शन मसीह के समाचार की भविष्य बाणी १—१५।

१ और फेर मैं ने अपनी आंखें उठाईं और देखा तो क्या देखता हों कि दो पर्ब्बतों के मध्य से चार रथ निकलते हैं और पर्ब्बत
२ पीतल के पर्ब्बत हैं। पहिले रथ में लाल घोड़े हैं और दूसरे
३ रथ में काले घोड़े। और तीसरे रथ में श्वेत घोड़े और चौथे
४ रथ में फुटफुटिये घोड़े हैं। तब मैं ने अपने संबादी दूत को
५ उत्तर देके कहा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं?। दूत ने उत्तर देके मुझे कहा कि ये स्वर्ग के चार आत्मा हैं जो सारी पृथिवी
६ के प्रभु के आगे खड़े होने से निकलते हैं। उसमें के काले घोड़े उत्तर देश को निकलते हैं और श्वेत उनके पीछे पीछे
७ जाते हैं और फुटफुटिये दक्खिन देश को जाते हैं। और लाल निकले और जाने चाहा अर्थात् पृथिवी में आरंपार इधर उधर, और उसने कहा कि जाओ और पृथिवी के आरंपार
८ इधर उधर फिरो। और वे पृथिवी में आरंपार इधर उधर जाने को निकले तब उसने मुझे बुलाया और यह कहिके बोला कि देख जो उत्तर देश को जाते हैं उन्हों ने मेरे आत्मा को
९ उत्तर देश में धीरज दिया है। फेर यह कहते ऊए
१० परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा। हलदाई के और जिदायाः के और तोबैयाः के बंधुओं में से ले जो बाबुल से आये हैं और उसी दिन जा और सफनिया के बेटे युसैया के घर
११ प्रवेश कर। तब सोने चांदी के मुकुट बना और प्रधान याजक
१२ युसीदक के बेटे यशू के सिर पर धर। और यह कहिके उसे बोल कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि उस जन को देख जिसका नाम डाली है और वुह अपने स्थान से पनपेगा
१३ और वही परमेश्वर का मंदिर बनावेगा। हां वही परमेश्वर का मंदिर बनावेगा और वही महिमा पावेगा और अपने

सिंहासन पर बैठ के राज्य करेगा और वही अपने सिंहासन पर याजक होगा और कुशल का मंत्र इन दोनों के मध्य में
१४ होगा। और हलदाई के और तुबैयाः के लिये और जिदायाः के लिये और सिफनियाः के बेटे युसैया के लिये परमेश्वर के
१५ मंदिर में स्मरण के लिये एक मुकुट होगा। और लोग दूर से आवेंगे और परमेश्वर का मंदिर बनाने में साथी होंगे तब तुम लोग जानोगे कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तुम पास भेजा है और यदि तुम लोग अपने ईश्वर परमेश्वर का शब्द ध्यान से सुनोगे तो यों होगा।

७ सातवां पर्ब्ब ।

यहूदियों का प्रश्न १—३ भविष्यद्वक्ता का उन्हें दपटना ४—७ उन्हें चिताना और उपदेश करना ८—१४।

१ और दारा राजा के चौथे बरस में यों ऊआ कि परमेश्वर का बचन नवें मास अर्थात् किसलू की चौथी तिथि में ज़करिया
२ पास पऊंचा। जब शीरज़र और रीगम्मलक और उसके जन परमेश्वर से बिनती करने के लिये ईश्वर के मंदिर को
३ भेजे गये। कि सेनाओं के परमेश्वर के मंदिर में के याजकों और भविष्यद्वक्तों से यह कहिके बोलें क्या मैं आप को इन बऊत बरसों के समान अलग करके पांचवें मास में बिलाप
४ करों?। तब सेनाओं के परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए मुझ
५ पर पऊंचा। कि देश के सारे लोगों से और याजकों से कह कि जब तुम लोगों ने उन सत्तर बरस लों पांचवें और सातवें मास में ब्रत और बिलाप किया था क्या तुम लोगों ने निश्चय
६ मेरेही लिये ब्रत रक्खा?। और जब तुम ने खाया पीया तब
७ क्या तुम लोगों ने अपनेही लिये नहीं खाया पीया?। क्या वे ये बचन नहीं हैं जो परमेश्वर ने यिरोशलीम की बढ़ती के और

उसके आस पास के नगरों के और दक्खिन के और चौगा के बसे हुए के समय में अगिले भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा से प्रचार
८ था? । तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए ज़करिया प
९ पहुंचा । कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि स विचार करो और हर एक जन अपने अपने भाई पर दय
१० और मया दिखावे । और विधवा और अनाथ और परदेश और कंगाल को न सतावे और कोई जन अपने मन
११ अपने भाई के विरुद्ध बुरा न समझे । परन्तु उन्हों ने मान्ने को नाह किया और अपना कंधा खींच लिया और अपने कानों
१२ को भारी किया जिसतें वे न सुनें । हां उन्हों ने अपने मन को हीरे की नाईं कठोर कर रक्खा जिसतें व्यवस्था और बचन को जिन्हें सेनाओं के परमेश्वर ने अपने आत्मा की ओर अगिले भविष्यद्वक्ता के द्वारा से भेजा था न सुनें इस लिये सेनाओं का
१३ परमेश्वर कोपित हुआ । और ऐसा हुआ कि जैसा मैं ने पुकारा और उन्हों ने न माना सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तैसा
१४ उन्हों ने पुकारा और मैं ने न सुना । परन्तु मैं ने बवंडर से उन्हें सारे जातिगणों में जिन्हें वे न जानते थे छिन्न भिन्न किया और उनके पीछे देश यहां लों उजाड़ हुआ कि कोई उस में से न जाता था न लौटता था और उन्हों ने वांछित देश को एक उजाड़ बना रक्खा ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

यिरोशलीम के बसाये जाने की भविष्य वाणी १—८ मन्दिर बनाने को लोगों का उभाड़ा जाना और आशीष की बाचा ९—१५ नाना उपदेश १६—१९ बहुत से जातिगणों के मन फेरने की भविष्य वाणी २०—२३ ।

१।२ फेर परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मुझ पर पहुंचा कि

सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैहून के लिये बड़े झल से झलित हुआ हों और बड़े कोप से मैं उसके लिये झलित हुआ हों। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैहून पास लौटा हों और मैं यिरोशलीम के मध्य में बास करोंगा और यिरोशलीम सच्चाई का नगर और सेनाओं के परमेश्वर का पर्बत एक पवित्र पर्बत कहावेगा। सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि वृद्ध स्त्री पुरुष अब भी यिरोशलीम के सड़कों में बसेंगे अर्थात् जो मनुष्य बहुत से बरसों के होने के कारण हाथ में लाठी धरता है। और नगर के सड़क छोकरे छोकरियों से भर जायेंगे जो उसके सड़कों में खेलेंगे। सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि यद्यपि इन बचे हुए लोगों की आंखों में उन दिनों में कठिन होवे सेनाओं का परमेश्वर कहता है क्या मेरी आंखों में भी कठिन होगा?। सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि देखो मैं पूर्ब देश से और अस्त देश से अपने लोगों को बचाओंगा। और मैं उन्हें लाओंगा और वे यिरोशलीम के मध्य में बसेंगे और वे मेरे लोग होंगे और सच्चाई में और धर्म्म में मैं उनका ईश्वर होंगा। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग जो इन दिनों में भविष्यद्वक्ता के मुंह से ये बातें सुनते हो जो इस समय में हो जब कि सेनाओं के परमेश्वर के मंदिर की नेउं डाली गई है अर्थात् मंदिर की जिसतें वुह बनाया जाय अपने हाथों को दृढ़ करो। क्योंकि उन दिनों से आगे मनुष्यों को प्रतिफल न था और न पशु को प्रतिफल था और जो बाहर भीतर आता जाता था बिपत्ति के मारे उन्हें कुशल न था क्योंकि मैं ने हर एक जन को अपने अपने परोसी के बिरुद्ध किया था। परन्तु अब सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं इन बचे हुए लोगों के लिये अगिले दिनों के समान न होंगा। क्योंकि बीहन और दाख फलेगा और भूमि अपनी बढ़ती देगी और आकाश से ओस

पड़ेगी और इन लोगों के बचे ऊओं को इन बातों का अधिकारी
१३ करोंगा। और यों होगा कि जैसा तुम लोग जातिगणों में
एक स्राप ऊए हो हे यहूदा के घराने और हे इसराईल के
घराने मैं तुम्हें ऐसा बचाओंगा कि तुम एक आशीष होओगे
१४ सो मत डरो अपने हाथों को दृढ़ करो। क्योंकि सेनाओं का
परमेश्वर कहता है कि जब तुम्हारे पितरों ने मुझे रिस
दिलाया मैं ने तुम पर बुराई करने का मन किया सेनाओं
१५ का परमेश्वर कहता है और मैं न पछताया। सो मैं ने
इन दिनों में फेर मन किया कि यिरोशलीम पर और यहूदा
१६ के घराने पर भलाई करों सो मत डरो। सो ये ये बातें करो
कि हर एक जन अपने अपने परोसी से सच कहे सत्य बिचार
१७ करे और तुम्हारे फाटकों में कुशल का बिचार होवे। और
हर एक जन अपने अपने परोसी के बिरुद्ध अपने अपने मन
में बुराई न समझे और झूठी किरिया से प्रीति न रक्खे क्योंकि
परमेश्वर कहता है कि मैं इन बातों से घिन करता हों।
१८ फेर यह कहते ऊए परमेश्वर का बचन मुझ पर पऊंचा।
१९ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि चौथे और पांचवें
और दसवें मास के ब्रत यहूदा के घराने के लिये आनंद और
मगन और आह्लाद की रितुन के लिये होगा परन्तु सत्य और
२० कुशल से प्रीति रक्खो। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है
कि बऊत से लोग और बऊत से नगरों के निवासी आवेंगे।
२१ और एक नगर के निवासी दूसरे कने यह कहिके जायेंगे कि
चलो निश्चय ईश्वर के रूप की बिनती करें और सेनाओं के
२२ परमेश्वर को खोजें और मैं भी जाओंगा। और परमेश्वर के
रूप की बिनती करने को बऊत से और बलवंत जातिगण
यिरोशलीम में सेनाओं के परमेश्वर की खोज को आवेंगे।
२३ सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि जातिगणों की सारी भाषाओं
में से उन दिनों में दस जन पकड़ेंगे वे यह कहिके एक यहूदी के

अंचल को पकड़ेंगे कि हम तुम्हारे साथ जावेंगे क्योंकि हमने सुना है कि ईश्वर तुम्हारे साथ।

९ नवां पर्ब्ब ।

अनेक जातिगणों के दंड पाने की भविष्यबाणी १—८ मसीह के यिरोशलीम में आने की और उसके राज्य की भविष्यबाणी ९—१२ धर्म्म मंडली का जय पाना १३—१७।

१ परमेश्वर के बचन की भविष्यबाणी हदराक के देश और दमिश्क में उसका बिश्राम होगा क्योंकि परमेश्वर की आंख मनुष्य पर और इसराईल की सारी गोष्ठियों पर है। २ और हमास का सिवाना उसके पास सूर और सैदून पर यद्यपि ३ वुह बड़ा बुद्धिमान होवे। यद्यपि सूर ने अपने लिये गढ़ बनाया और चांदी को धूल की नाईं बटोरा है और चोखे ४ सोने को सड़कों की कीच की नाईं। देखो परमेश्वर उसे दूर करेगा और समुद्र में उसके बल को मारेगा और वुह आग ५ से जलाई जायगी। अश्कलून देख के डरेगा और गज़ा और अकरून भी अति पीड़ित होगा इस कारण कि उसकी आशा लज्जित ऊई और गज़ा से राजा नष्ट होगा और ६ अश्कजून बसाया न जायगा। और उपरी लोग अश्दूद में रहेंगे और मैं फलस्तियों के अहंकार को काट डालोंगा। ७ और मैं उसके लोहू को उसके मुंह से और उसके घिनितों को उसके दांतों के मध्य में से, दूर करोंगा और वुह भी हमारे ईश्वर के लिये छोड़ा जायगा और यहूदा के आज्ञा कारी के ८ समान होगा और अकरून यबूसी के समान। और मैं अपने मंदिर के आस पास सेना से छावनी करोंगा यहां लों कि कोई उसमें से न जायगा और न लौटेगा और सताऊ फेर उनमें से न जायगा क्योंकि अब मैं ने अपनी आंखों से देखा है।

९ हे सैहून की पुत्री अति मगन हो हे यिरोशलीम की पुत्री ललकार देख तेरा राजा तुझ पास आता है वुह धर्म्मी और मुक्तिदायक है दीन और गदहे पर चढ़ा है अर्थात् गदहे के
१० बच्चे पर। और मैं इफ़राईम से रथ को काट डालोंगा और यिरोशलीम से घोड़े को, और संग्राम का धनुष काट डाला जायगा और वुह जातिगणों से कुशल की बात करेगा और उसका राज्य समुद्र से समुद्र लों और नदी से देश के अत्यंत भाग
११ लों होगा। और तू जो है तेरे लोहू की बाचा से मैं ने तेरे बंधुओं
१२ को गड़हे से जहां पानी न था बाहर भेजा। हे आशा के बंधुओ गढ़ को लौटो आजही के दिन मैं कहता हों कि मैं दूना
१३ आशीष तुझे देउंगा। क्योंकि मैं ने यहूदा को अपने लिये झुकाया है और मैं ने धनुष को इफ़राईम से भर दिया है और हे सैहून मैं तेरे बेटों को हे यवन मैं तेरे बेटों के विरुद्ध उभाड़ोंगा और मैं तुझे एक महावीर की तलवार की नाईं बनाओंगा।
१४ और परमेश्वर उन पर दिखाई देगा और उसका बाण बिजुली के समान निकल चलेगा और प्रभु परमेश्वर तुरही
१५ फूंकेगा और दक्खिन के बवंडरों के साथ निकलेगा। और सेनाओं का परमेश्वर उन्हें बचावेगा और वे भच्छेंगे और ढेलवांस के पत्थरों से वश में करेंगे और वे पीयेंगे और मद्यप के समान ललकारेंगे और वे कटोरे की नाईं भर जायेंगे और
१६ बेदी के कोनों की नाईं। और उस दिन उनका ईश्वर परमेश्वर उनको और अपने लोगों को भेड़ की नाईं बचावेगा क्योंकि
१७ मुकुट के पत्थर उनके देश पर होंगे। क्योंकि उनका भाग्य कितनाही बड़ा और उनकी सुंदरता कितनीही बड़ी अन्न युवा पुरुषों को और चुना दाख रस कुआंरियों को मगन करता है।

मेंह के और आशीष के लिये प्रार्थना करने का उपदेश करना १—३ मंडली के लिये अनेक आशीष पाने की भविष्य बाणी ४—१२।

पिछले मेंह के समय में परमेश्वर से मेंह मांगो परमेश्वर बिजुलियों को बनावेगा और तुन्हें मेंह की झड़ियां और हर एक जन को खेत में साग पात देगा। क्योंकि मूर्त्तिन ने मिथ्या कहा है और दैवज्ञों ने झूठ देखा है और झूठा स्वप्न कहा है उन्हों ने वृथा शांति दिई है इस लिये वे झुंड की नाईं चले गये वे दुःखी हुए क्योंकि गड़रिये न थे। गड़रियों पर मेरी रिस बर उठी है और मैं बकरों को दंड देउंगा परन्तु सेनाओं का परमेश्वर अपनी झुंड यहूदा के घराने को प्रतिफल देगा और उन्हें संग्राम में अपने बिभव के घोड़े की नाईं करेगा। कोने का पत्थर उसी से और कील उसी से संग्राम का धनुष उसी से हर एक आज्ञाकारी एकट्ठा उसी से निकल जायगा। और वे उन मनुष्यों की नाईं होंगे जो सड़कों की कीच को संग्राम में लताड़ते हैं और वे लड़ेंगे क्योंकि परमेश्वर उनके साथ होगा और घोड़चढ़े घबरा जायेंगे। और मैं यहूदा के घराने को बलवंत करोंगा और यूसफ़ के घराने को बचाओंगा और मैं उन्हें फेर लाओंगा क्योंकि मैं ने उन्हें प्यार किया है और वे ऐसे होंगे जैसा कि मैं ने उन्हें दूर किया था क्योंकि मैं उनका ईश्वर परमेश्वर हों और मैं उनकी सुनोंगा। और अफ़राईम एक महावीर की नाईं होगा और उनका मन जैसा मद्य से मगन होगा और उनके पुत्र देख के मगन होंगे और उनके मन परमेश्वर में आह्लादित होंगे। मैं उनके लिये फुफकारोंगा और उन्हें बटोरोंगा क्योंकि मैं ने उन्हें छुड़ाया है और वे बढ़ जायेंगे जैसा वे बढ़ गये हैं। क्योंकि मैं उन्हें लोगों में बोओंगा और वे दूर देश में मुझे स्मरण करेंगे और वे अपने बालकों को बचा रक्खेंगे और लौटेंगे। और मैं मिसर देश से उन्हें

फेर लाओंगा और असूर से उन्हें बटोरेंगा और मैं उ
गिलियाद देश में और लबनान में फेर लाओंगा और उन
११ लिये स्थान न रहेगा। और वुह दुःख के साथ समुद्र में
जायगा और समुद्र की लहरों को मारेगा और नदी के स
गहिराव सूख जायेंगे और असूर का अहंकार उतारा जाय
१२ और मिसर का राजदंड जाता रहेगा। और मैं उनके ईश्व
परमेश्वर के द्वारा से उन्हें बल देउंगा परमेश्वर कहता है औ
उसी के नाम पर वे चलेंगे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

यिरोशलीम के और मंदिर के और प्रधानों के नाश की भविष्य बाणी १—३ मसीह की दया बतानी ४—७ मसीह के त्यागने से यहूदियों का त्यागा जाना ८—१४ आलसी गड़रिये का दृष्टांत १५—१७ ।

१ हे लबनान अपने द्वारों को खोल जिसतें आग तेरे आर
२ पेड़ों को भस्म करे। हे देबदारु आरज पेड़ के गिरने
कारण से चीखें मार क्योंकि सुंदर सुंदर नष्ट हुए हे बाश
के अलोन पेड़ चीखें मार क्योंकि बाड़ित बन गिराया गया
३ गड़रियों के चिल्लाने का शब्द क्योंकि उनकी भलाई नष्ट हु
युवा सिंहों के गर्ज्जने का शब्द है क्योंकि अर्दन का अहंका
४ नष्ट हुआ। मेरा ईश्वर परमेश्वर कहता है कि जूझ की भें
५ को चराओ। जिन के स्वामी उन्हें नष्ट करते हैं और आप
दोषी नहीं जानते और जो उन्हें बेंचते हैं कहते हैं कि ध
परमेश्वर को क्योंकि मैं धनी हों और उनके गड़रिये उन प
६ मया नहीं करते। परमेश्वर कहता है कि आगे को मैं देश
बासियों पर मया न करोंगा परन्तु देखो मैं हर एक जन
उसके संगी के और उसके राजा के हाथ में सौंपोंगा और

देश को कुचल डालेंगे और मैं उनके हाथ से न छुड़ाओंगा।
७ सो झुंड के कष्ट के मारे मैं ने जूझ की झुंड को चराया और मैं ने दो छड़ियां लिईं एक को मैं ने सुंदर कहा और दूसरी
८ को बंधन और मैं ने झुंड को चराया। और मास भर में मैं ने तीन गड़रियों को नष्ट किया और मेरा प्राण उनसे
९ उदास हुआ और उनका भी प्राण मुझसे घिनाया। तब मैं ने कहा कि मैं तुम्हें न चराओंगा जो मरता है सो मरे और जो नष्ट होता है सो नष्ट होवे और जो बचा हो सो हर एक
१० अपने अपने संगी का मांस खाय। अपनी बाचा जो मैं ने लोगों से बांधी थी उसे तोड़ने को मैं ने अपनी छड़ी सुंदर को लिया
११ और उसे दो भाग किया। और वुह उसी दिन टूटगई और यों झुंड के कंगाल ने जो मुझे देख रहा था जाना कि
१२ यह परमेश्वर का बचन है। तब मैं ने उन्हें कहा कि जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे तो मेरा मोल देउ नहीं तो मत देउ सो
१३ उन्हों ने तीस टुकड़ा चांदी मेरा मोल तोल दिया। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि कुम्हार कने डाल देउ उनसे मेरा भला मोल ठहरा है तब मैं ने तीस टुकड़ा चांदी लिईं और
१४ उन्हें परमेश्वर के मंदिर में कुम्हार कने डाल दिया। और मैं ने दूसरी छड़ी अर्थात् बंधन को लिया जिसमें यहूदा के मध्य
१५ में और इसराईल के मध्य में भयवारी को तोड़ देउं। फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि निर्बुद्धि गड़रिये के हथियारों को
१६ अपने लिये ले। क्योंकि देखो मैं देश में एक गड़रिया को खड़ा करता हों जो नष्ट किये गये का लेखा न लेगा और तरुणों को न खोजेगा और घायलों को चंगा न करेगा और खड़े हुओं को न सँभालेगा परन्तु वह पुष्टों का मांस खायगा
१७ और उनके खुरों को तोड़ेगा। व्यर्थ गड़रिये पर संताप जो झुंड को त्यागता है उसकी भुजा पर और उसकी दहिनी आंख पर नष्टता होगी और उसकी भुजा झुराते झुरा जायगी

और उसकी दहिनी आंख अंधियारी होते अंधियारी हो जायगी ।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

अपने सारे बैरियों के लिये यिरोशलीम की थर्थराहट होनी १—५ यहूदियों का भाग्यमान होना ६—८ मंडली पर अनुग्रह के आत्मा का बहाया जाना ९—१४ ।

१ परमेश्वर के बचन की भविष्यवाणी परमेश्वर जो आकाश को फैलाता है और पृथिवी की नेवें डालता है और मनुष्य के आत्मा को उसमें बनाता है इसराईल के विषय में कहता है
२ कि देखो मैं चारों ओर के सारे लोगों के लिये और यहूदा के लिये भी यिरोशलीम को उसके घेरे जाने में एक थर्थराहट
३ का कटोरा बनाओंगा। और उस दिन यों होगा कि मैं यिरोशलीम को सारे लोगों के लिये एक भारी पत्थर बनाओंगा सब जो उसका बोझ उठावेंगे कटते कट जायेंगे और पृथिवी
४ के सारे जातिगण उसके विरुद्ध एकट्ठे होंगे। परमेश्वर कहता है कि उस दिन मैं हर एक घोड़े को घबराहट से और उसके चढ़वैये को बौड़ाहपन से मारोंगा और मैं यहूदा के घराने पर अपनी आंखें खोलोंगा और लोगों के हर एक घोड़े को
५ अंधापन से मारोंगा। और यहूदा के अगुये अपने अपने मन में कहेंगे कि यिरोशलीम के निवासियों के लिये उनके ईश्वर
६ सेनाओं के परमेश्वर के कारण बल है। उस दिन मैं यहूदा के अगुओं को लकड़ी में अंगेठी की आग की नाईं बनाओंगा और आंटी में आग के दीपक की नाईं और वे दहिने बायें चारों ओर के सारे लोगों को भस्म करेंगे और यिरोशलीम कुशल
७ से अपनेही स्थान में फेर बसाया जायगा। और परमेश्वर यहूदा के तम्बूओं को पुरातन समय के समान फेर बचावेगा

जिसतें दाऊद के घराने का बिभव आप को न उभाड़े और न
८ यिरोशलीम के निवासियों का बिभव यहूदा के बिरुद्ध । उस
दिन परमेश्वर यिरोशलीम के निवासियों को बचावेगा और
उस दिन जो उनमें दुर्बल होगा दाऊद के समान और दाऊद
का घराना ईश्वर की नाईं उनके आगे परमेश्वर के दूत के
समान होगा । और उस दिन यों होगा कि मैं सारे जातिगणों
को जो यिरोशलीम के बिरुद्ध आते हैं नाश करने को ढूंढ़ोंगा ।
० और मैं दाऊद के घराने पर और यिरोशलीम के निवासियों
पर कृपा का और बिनती का आत्मा उंडेलेंगा और जिसे
उन्हों ने बेधा उसे देखेंगे और उसके लिये ऐसा बिलाप करेंगे
जैसा कोई एकलौते बेटे के लिये बिलाप करता है और उसके
कारण ऐसी कड़ुआहट होगी जैसा पहिलौंठे के लिये कड़ुआहट
१ होती है । उस दिन यिरोशलीम में मगिद्दू की तराई में
२ हदादरिम्मुन के बिलाप के समान बड़ा बिलाप होगा । और
घराना घराना देश में बिलाप करेगा दाऊद के घर का
परिवार अलग और उनकी पत्नियां अलग नासान के घर का
३ परिवार अलग और उनकी पत्नियां अलग । लावी के घर के
परिवार अलग और उनकी पत्नियां अलग और शमऊन के
४ परिवार अलग और उनकी पत्नियां अलग । सारे बचे हुए
परिवार हर एक परिवार अलग और उनकी पत्नियां अलग ।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

शुद्ध करने के सोते का खोला जाना १— मूर्त्ति
पूजा का नष्ट होना २—६ मसीह का कष्ट पाना
और उसके शिष्यों का छिन्न भिन्न होना ७—९ ।

१ उस दिन दाऊद के घराने के लिये और यिरोशलीम के
निवासियों के लिये पाप के लिये और अशुद्धता के लिये एक
सोता खोला जायगा । सेनाओं का परमेश्वर कहता है

कि उस दिन ऐसा होगा कि मैं देश में से मूर्त्तिन का नाम मिटा डालोंगा और वे फेर स्मरण न किई जायेंगी और भविष्यद्वक्ता भी, और अशुद्ध आत्मा को देश में से दूर कराओंगा।
३ और उसके भविष्य कहतेही यों होगा कि उसके माता पिता अर्थात् जिन्हों ने उसे उत्पन्न किया उन्हें कहेंगे कि तू जीने न पावेगा क्योंकि तू ने परमेश्वर के नाम से झूठ कहा है और उसके
४ जनक और जननी उसके भविष्य कहतेही उसे बेध डालेंगे। और उस दिन ऐसा होगा कि भविष्यद्वक्ता के भविष्य कहतेही हर एक जन अपने अपने दर्शन से लज्जित होजायगा फेर वे रोम के वस्त्र
५ पहिन के छल न देंगे। परन्तु हर एक कहेगा कि मैं भविष्यद्वक्ता नहीं मैं किसान हों क्योंकि तरुणाई से मैं दूसरे का अधिकारी
६ हों। और कोई उसे कहेगा कि तेरे हाथों में यह क्या क्या चिन्ह हैं? तब वुह कहेगा कि वेही जो मैं अपने मित्रों के घर
७ में मारा गया। सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि हे खड्ग मेरे गड़रिये के विरुद्ध और मेरे तुल्य के जन के विरुद्ध उठ मैं गड़रिये को मारोंगा और भेड़ें छिन्न भिन्न होंगी और मैं
८ मेम्नों के विरुद्ध हाथ फेरोंगा। और परमेश्वर कहता है कि सारे देश में यों होगा कि उसमें से दो भाग काटे जाके मर
९ जावेंगे और तीसरा भाग उसमें छोड़ा जायगा। और मैं तीसरे भाग को आग में से निकाल लाओंगा और उन्हें चांदी की नाईं निर्मल करोंगा और उन्हें सोने की नाईं परखोंगा वे मेरा नाम लेंगे और मैं उत्तर देउंगा और कहोंगा कि वे मेरे लोग और वे कहेंगे कि परमेश्वर मेरा ईश्वर।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

यिरोशलीम के नष्ट होने की भविष्यवाणी १—३ पापियों का मन फिरना आत्मिक ज्योति का बढ़ना और सारी पृथिवी का ईश्वर के शरण आना

४—९ यिरोशलीम का बनाया और बसाया जाना १०—११ उसके बैरियों पर मरी और बचे ऊए का फिराया जाना १२—१९ पिछले दिनों में मंडली की पवित्रता २०—२१ ।

१ देखो परमेश्वर का दिन आता है कि तेरी लूट तेरे मध्य में
२ बांटी जायगी । क्योंकि संग्राम के लिये मैं यिरोशलीम के बिरुद्ध सारे जातिगणों को एकट्ठा करोंगा और नगर लिया जायगा और घर लूटे जायेंगे और स्त्री अपत होंगी और नगर का एक भाग बंधुआई को जायगा और रहे ऊए लोग नगर से
३ काट डाले न जायेंगे । परमेश्वर निकल के उन जातिगणों के बिरुद्ध लड़ेगा जैसा वुह संग्राम के दिन में लड़ता है ।
४ और उस दिन उसके पांव जलपाई पहाड़ पर खड़े होंगे जो यिरोशलीम की पूर्ब्ब ओर है और जलपाई पहाड़ आधे आध पूर्ब्ब पश्चिम फट जायगा और एक बड़ी तराई होगी और आधा पहाड़ उत्तर ओर और आधा दक्खिन ओर जाता
५ रहेगा । और पहाड़ों की तराई में से तुम लोग भागोगे क्योंकि पहाड़ों की तराई अज़ल लों पऊंचेगी और तुम लोग ऐसा भागोगे जैसा भुंइडोल के आगे यहूदा के राजा ऊज़ियाह के दिनों में भागे थे और मेरा ईश्वर परमेश्वर अपने सारे
६ सिद्धों के साथ आवेगा । उस दिन ऐसा होगा कि फेर
७ ज्योति और अंधियारा न होगा । परन्तु एक दिन होगा जो परमेश्वर का जाना ऊआ है न दिन न रात होगा परन्तु ऐसा
८ होगा कि सांझ को उंजियाला होगा । और उस दिन ऐसा होगा कि यिरोशलीम में से अमृत जल निकलेंगे आधा अगिले समुद्र की ओर और आधा पिछले समुद्र की ओर ग्रीष्म और
९ शीत काल में होगा । और परमेश्वर सारी पृथिवी का राजा होगा और उस दिन एक परमेश्वर और उसका नाम एक
१० होगा । और वुह सारे देश को यिरोशलीम के दक्खिन

गबा से रमून लों चैागान की नाईं घेरेगा और वुह बढ़ाई जायगी और वुह अपने ठिकाने में बसाई जायगी बनियामीन के फाटक से अगिले फाटक के स्थान लों और कोने के फाटक
११ लों और हननोल के गुम्मट से राजा के कुंड लों। और मनुष्य उस में बसेंगे और फेर सर्वथा नाश न होगा और यिरोशलीम
१२ निर्भय से बस जायगा। और इसी विपत्ति से परमेश्वर सारे लोगों को मारेगा जो यिरोशलीम के विरुद्ध लड़े हैं खड़े खड़े उनका मांस गल जायगा और उनकी आंखें उनके ठिकाने में घट जायेंगी और उनकी जीभ उनके मुंह में सट जायगी।
१३ और उस दिन यों होगा कि परमेश्वर की ओर से उन पर बड़ा नाश होगा और उन में हर एक जन अपने अपने परोसी का हाथ धरेगा परन्तु उसका हाथ अपने परोसी
१४ के विरुद्ध उठेगा। और यहूदा भी यिरोशलीम में लड़ेगा और सोना चांदी और बहुतसा वस्त्र और चारों ओर के सारे
१५ देशगणों का धन एकट्ठे होगा। और इसी रीति से घोड़ों पर और खचरों पर और ऊंटों पर और गदहों पर और सारे ढोरों पर उनकी छावनियों में इस विपत्ति के समान विपत्ति होगी।
१६ और ऐसा होगा कि सारे जातिगणों में जो यिरोशलीम के विरुद्ध आये थे हर एक जो बचा है सेनाओं के परमेश्वर राजा को पूजने को और तम्बुओं का पर्ब्ब रखने को बरस बरस
१७ चढ़ जायगा। और पृथिवी के घराने में से जो यिरोशलीम को सेनाओं का परमेश्वर राजा की सेवा करने को चढ़ न जायेंगे
१८ ऐसा होगा कि उन पर बरषा न होगी। परन्तु यदि मिसर का घराना चढ़ न जाय और न आवे उन पर विपत्ति पड़ेगी जिस्से परमेश्वर जातिगणों को जो तम्बुओं का पर्ब्ब रखने को
१९ चढ़ न जायेंगे मारेगा। यही मिसर का दंड होगा और सारे जातिगणों का दंड जो तम्बुओं का पर्ब्ब रखने को चढ़ न
२० जायेंगे। उस दिन घोड़ों की घंटियों पर परमेश्वर के लिये

पवित्रता होगी और यों होगा कि परमेश्वर के मंदिर के पात्र
२१ वेदियों के आगे के कटोरों की नाईं होंगे। और यों होगा कि यिरोशलीम और यहूदा में हर एक पात्र सेनाओं के परमेश्वर के लिये पवित्र होगा और सारे बलिदायक आवेंगे और उनमें से ले ले उनमें भोजन पकावेंगे और उस दिन सेनाओं के परमेश्वर के मंदिर में कोई ब्यापारी न होगा।

मलाख़ी की पुस्तक ॥

—•••—
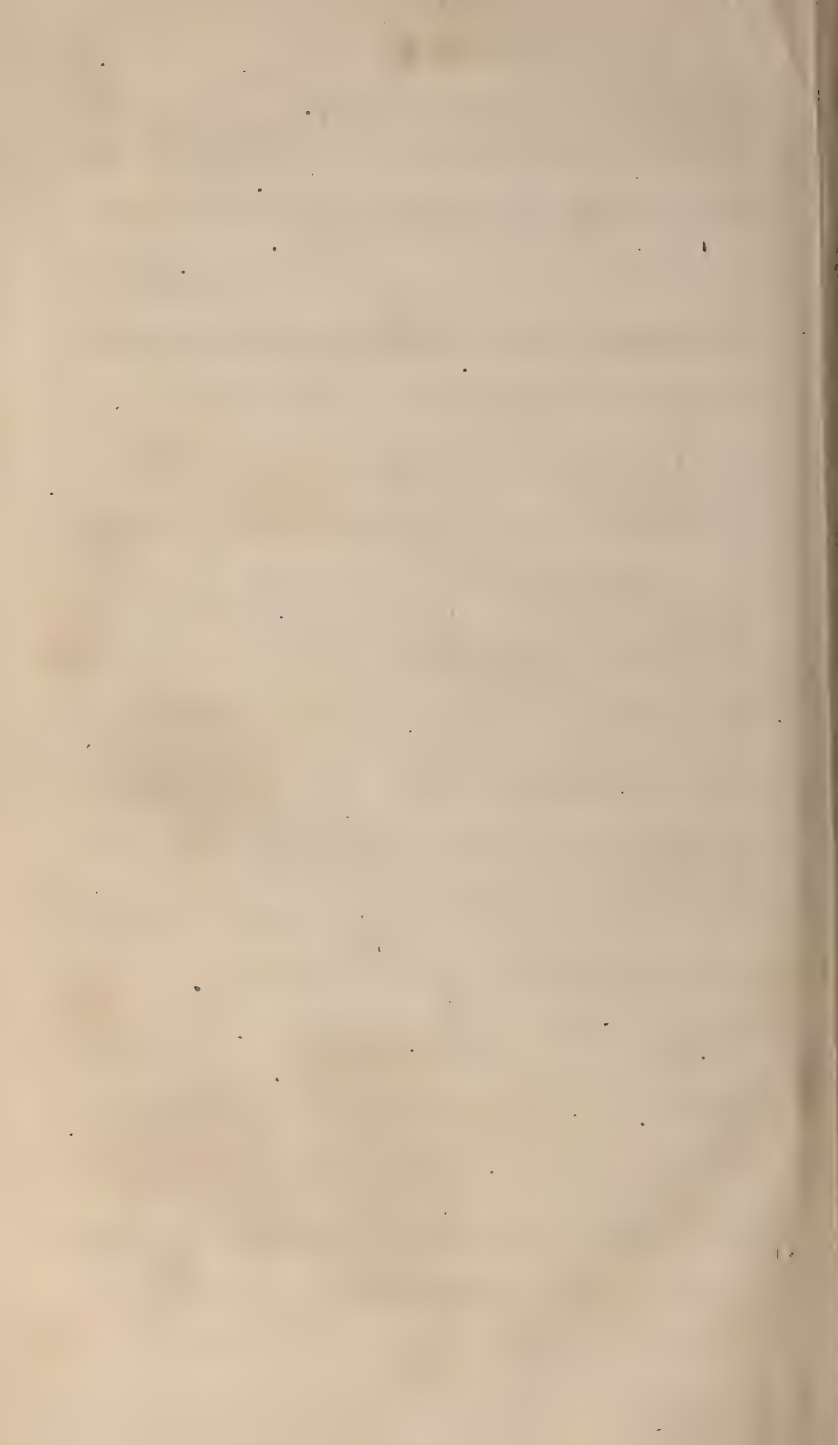
१ पहिला पर्ब्ब ।

इसराईल पर ईश्वर का प्रेम और अदूम से उसका बैर १—५ यहूदियों को दपटना और अन्यदेशियों का मत में आना ६—१४ ।

१ मलाख़ी के द्वारा से इसराईल के लिये परमेश्वर के वचन की २ भविष्य वाणी । परमेश्वर कहता है कि मैं ने तुम्हें प्यार किया है तथापि तुम कहते हो कि किस बात में तू ने हमें प्यार किया है? परमेश्वर कहता है कि क्या यशू याक़ूब का भाई न ३ था? तथापि मैं ने याक़ूब को प्यार किया। और यशू से बैर रक्खा और उसके पर्ब्बतों को और उसके अधिकार को बन ४ सर्पों के रहने के लिये उजाड़ किया है। यद्यपि अदूम कहते हैं कि हम उजाड़े गये परन्तु हम फिर के उजाड़ स्थानों को बनावेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि वे बनावेंगे परन्तु मैं ढाओंगा और वे दुष्टता के सिवाने और जिन लोगों से ५ परमेश्वर सदा ज्वलित है कहावेंगे। और तुम्हारी आंखें देखेंगी और तुम लोग कहोगे कि परमेश्वर इसराईल के सिवाने ६ पर से महिमा पावेगा। पुत्र पिता की और सेवक स्वामी की प्रतिष्ठा करता है सो जो मैं पिता हों तो मेरी प्रतिष्ठा कहां? और जो मैं स्वामी हों तो मेरी डर कहां? सेनाओं का परमेश्वर तुम्हें कहता है कि हे याजको जो मेरे नाम की निन्दा करते हो और कहते हो कि किस बात में हम ने तेरे नाम की निन्दा किई

७ हो?। अशुद्ध भोजन मेरी बेदी पर चढ़ाते हो और कहते हो कि किस बात में हम ने तुझे अशुद्ध किया है? तुम लोग इस में
८ जो तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मंच तुच्छ है। सो जो तुम लोग बलि के लिये अंधा चढ़ाओ क्या बुराई नहीं! और जो तुम लोग लंगड़ा और रोगी चढ़ाओ तो बुराई नहीं? सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि उसे अपने अध्यक्ष को भेंट देओ क्या वुह
९ तुझ से प्रसन्न होगा? अथवा वुह तेरे रूप को ग्राह्लेगा?। अब मैं तुम्हारी बिनती करता हों कि परमेश्वर की ओर प्रार्थना करो जिसतें वुह हम पर कृपाल होवे सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम्हारे हाथ से यह ऊआ है क्या मैं कृपा कर के
१० तुम्हें ग्रहण करों?। तुम्हीं में वुह कौन है जो द्वारों को वृथा बंद करता और तुम लोग मेरी बेदी पर आग वृथा नहीं बारते हो सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं तुम से प्रसन्न नहीं और न
११ तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण करोंगा। क्योंकि सूर्य के उदय से उसके अस्तलों मेरा नाम अन्यदेशियों में महान होगा और हर एक स्थान में सुगंध और पवित्र भेंट मेरे नाम के लिये चढ़ाई जायेंगी क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि जातिगणों में मेरा नाम
१२ महान होगा। परन्तु तुम लोगों ने यह कहि के परमेश्वर के मंच को अशुद्ध किया है कि वुह अशुद्ध है और जो उस पर चढ़ाया
१३ जाता है उसका भोजन तुच्छ है। सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम ने यह भी कहा है कि देखो यह थकाव है और उस पर खास लिया है और फाड़ा ऊआ और लंगड़ा और रोगी लाये हो यों तुम भेंट लाय हो सेनाओं का परमेश्वर कहता
१४ है कि क्या मैं तुम्हारे हाथ से यह ग्रहण करों?। परन्तु उस छली पर स्राप जो अपनी झुंड में नर रखते ऊए परमेश्वर के लिये पयक मनौती मानता है और बलि चढ़ाता है सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं महाराज हों और मेरा नाम जातिगणों में भयानक होगा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

याजकों का दपटा जाना १—९ याजकों और लोगों का पाप बताना १०—१७।

२ हे याजको अब आज्ञा तुम्हारे लिये है। यदि तुम लोग मेरे नाम की महिमा करने को न सुनोगे और मन न लगाओगे तो सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं तुम पर स्राप भेजोंगा मैं तुम्हारे आशीष को स्रापोंगा हां मैं उसे स्राप चुकाहों इस कारण कि तुम लोग मन नहीं लगाते हो। देख मैं तुम्में से बंदे को ले लेउंगा और तुम्हारे मुंह पर मल अर्थात् तुम्हारे उत्सव का मल बिथराओंगा और तुम लोग उस्से पऊंचाये जाओगे। सेनाओं का परमेश्वर कहता है और तुम लोग जानोगे कि मैं ने इस आज्ञा को तुम्हारे पास भेजा है जिसतें मेरी बाचा लावी के पास बनी रहे। मेरी बाचा अर्थात् जीवन और कुशल की उस पास थी और मैं ने उसे डर के लिये जिस्से वुह मुझे डरता था और मेरे मुंह के आगे बिस्मित था उन्हें दिया। सत्य व्यवस्था उसके मुंह में थी और उसके होठों में अधर्म न पाया गया कुशल और खराई से वुह मेरे साथ साथ चलता था और बहुतों को बुराई से फिराता था। क्योंकि उचित है कि याजक के होंठ में ज्ञान धरा रहे और उसके मुंह से व्यवस्था ढूंढ़ा करें क्योंकि वुह सेनाओं के परमेश्वर का दूत है। परन्तु तुम लोग मार्ग से फिर गये हो और बहुतों को व्यवस्था से ठोकर खिलवाये हो सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम ने लावी की बाचा को बिगाड़ा है। जैसा कि तुम लोग मेरे मार्गों पर नहीं चले हो परन्तु व्यवस्था में लोगों का पक्ष किया है इस लिये मैं ने भी तुम्हें सारे लोगों के आगे तुच्छ और निंदित किया है।   क्या हम सभों का एकही पिता नहीं? एकही ईश्वर ने हम सभों को उत्पन्न नहीं किया? जो बाचा हमारे पितरों

से किई गई उसे तोड़ तोड़ हर एक अपने अपने भाई के विरुद्ध
११ क्यों छल से व्यवहार करता है। यहूदा ने छल से व्यवहार
किया है और इसराईल और यिरोशलीम में घिनित कार्य
होता है क्योंकि यहूदा ने परमेश्वर की पवित्रता को जिसे वुह
प्यार करता है अशुद्ध किया है और उपरी देव की लड़की को
१२ ब्याहा है। जो जन यह करता है अर्थात् जो उपदेश करता
है और जो उत्तर देता है और जो सेनाओं के परमेश्वर के
लिये भेंट चढ़ाता है परमेश्वर उसे याक़ूब के तंबुओं में से काट
१३ डालेगा। और यह भी तुम लोगों ने फेर किया है विलाप करते
और रोते रोते तुम लोग परमेश्वर की बेदी को आंसुओं से
ढांपते हो यहां लों कि अब वुह कोई भेंट पर सुरत नहीं लगाता
१४ और सुइच्छा से तुम्हारे हाथों से ग्रहण नहीं करता। तद भी
तुम लोग क़हते हो कि किस लिये? इस कारण कि परमेश्वर
तुम्हारे और तुम्हारी तरुणाई की पत्नियों के मध्य में साक्षी
था जिसके विरुद्ध तुम लोगों ने छल से व्यवहार किया है
१५ तथापि वुह तेरी संगी और तेरी बाचा की पत्नी थी। और
क्या उसने एक मांस नहीं बनाया? और उसका एकही आत्मा
नहीं? अब वुह क्या चाहता है? एक ईश्वरीय बंश, इस लिये
अपने आत्मा से चौकस रह और अपनी तरुणाई की पत्नी से
१६ विश्वास घात मत कर। क्योंकि इसराईल का ईश्वर सेनाओं का
परमेश्वर कहता है कि जो त्यागता है और जो अंधेर को अपने
वस्त्र से ढांपता है सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं उस्से
बैर रखता हों इस लिये अपने आत्मा से चौकस रह और छल से
१७ व्यवहार मत कर। तुम लोगों ने अपने वचन से परमेश्वर
को थकाया है तथापि कहते हो कि किस बात में हम ने उसे
थकाया है? इस में जो तुम लोग कहते हो कि हर एक जो
बुराई करता है परमेश्वर की दृष्टि में ग्राह्य है और वुह उनसे
प्रसन्न है अथवा यह कि न्याय का ईश्वर कहां है?।

३ तीसरा पर्ब्ब।

यहिया के और मसीह के विषय की भविष्य बाणी १—६ पश्चात्ताप का उपदेश ७—१५ परमेश्वर के भक्तों के आशीष की बाचा १६—१८।

१ देख मैं अपने दूत को भेजता हों और वुह मेरे आगे मार्ग को सिद्ध करेगा और प्रभु जिसे तुम लोग खोजते हो अचानक अपने मन्दिर में आवेगा अर्थात् बाचा का दूत जिनसे तुम प्रसन्न हो सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि देखो वुह आवेगा।
२ परन्तु उसके आने के दिन में कौन ठहर सकेगा? और जब वुह दिखाई देगा तो कौन खड़ा हो सकेगा? क्योंकि वुह निर्मल करवैये की आग की नाईं और धोबी के साबुन की नाईं है।
३ और वुह चांदी के निर्मल और चोखा करवैये की नाईं बैठेगा और वुह लावी के बेटों को पवित्र करेगा और वुह उन्हें सोने चांदी की नाईं निर्मल करेगा और वे परमेश्वर के लिये
४ धर्म्म से भेंट पहुंचवैये के लिये होंगे। तब यहूदा और यिरोशलीम की भेंट पुराने दिनों की नाईं और पिछले
५ बरसों की नाईं परमेश्वर के लिये प्रसन्न होगी। और मैं न्याय के लिये तुम्हारे पास आओंगा और मैं टोनहों के बिरुद्ध और व्यभिचारियों के बिरुद्ध और झूठी किरियक के बिरुद्ध और उनके बिरुद्ध जो बनिहार को उसकी बनी में और बिधवा को और अनाथ को सताते हैं और जो कंगालों को अलग करते हैं और मुझे नहीं डरते हैं सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि
६ मैं उनके बिरुद्ध चटक साक्षी होंगा। क्योंकि मैं परमेश्वर हों मैं नहीं पलटता इस लिये हे याकूब के पुत्रो तुम लोग भस्म
७ नहीं हो। अपने पितरों के दिनों से तुम लोग मेरी बिधिन से फिर गये हो और उन्हें पालन नहीं किया है सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मेरी ओर फिरो और

मैं तुम्हारी ओर फिरोंगा परंतु तुम लोग कहते हो कि कस
८ बात में हम फिरें? । क्या कोई ईश्वर से चुरावेगा तथापि
तुम ने मुझे चुराया है परन्तु तुम कहते हो कि किस बात में
९ हम ने तुम से चुराया है? दसवां अंश और भेंटों में। तुम
लोग स्राप से स्रापित हो क्योंकि तुम लोगों ने मुझे चुराया है
१० अर्थात ये सारे देशी । सो सब के सब दसवें अंश को भंडार
में लावें और मेरे मन्दिर में भोजन होवे और अब इस्से मुझे
परखो सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे लिये स्वर्ग
की खिड़कियां को न खोलों और तुम पर यहां लों आशीष बहाओं
११ कि रखने के लिये स्थान न रहे । और मैं तुम्हारे लिये भक्षक को
डाटोंगा और वुह तुम्हारी भूमि के फलों को नष्ट न करेगा और
न खेत में तुम्हारा दाख बांझ होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता
१२ है । कि सारे जातिगण तुम्हें धन्य कहेंगे क्योंकि सेनाओं का
१३ परमेश्वर कहता है कि तुम बांछित देश होओगे। परमेश्वर
कहता है कि तुम्हारे बचन मेरे बिरुद्ध ढिठाई के थे तथापि
१४ तुम लोग कहते हो कि हम ने तेरे बिरुद्ध क्या कहा है? । तुम
ने कहा है कि परमेश्वर की सेवा करनी व्यर्था है और उसकी
विधिन को पालन करने में क्या लाभ? और सेनाओं के
१५ परमेश्वर के आगे उदासी से चलने में क्या? । और अब हम
अहंकारी को धन्य कहते हैं हां दुष्कारी बन गये हां उन्हों ने
१६ ईश्वर को परखा और बच निकले । तब वे जो परमेश्वर को
डरते थे हर एक अपने अपने परोसी से बात चीत करता था
और परमेश्वर ने कान लगा के सुना और उनके लिये, जो
परमेश्वर से डरते थे और उनके लिये जो उसके नाम का
ध्यान करते थे स्मरण के लिये उसके आगे एक पुस्तक लिखी गई।
१७ सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि उस दिन जो मैं ठहराओंगा
वे मेरे लिये एक बिशेष भंडार होंगे और मैं उन्हें ऐसा
१८ बचाओंगा जैसा मनुष्य अपने सेवक पुत्र को बचाता है । और

तुम लोग लौट के धर्म्मी और दुष्ट के मध्य और उसके मध्य जो ईश्वर की सेवा करता है और उसके जो उसकी सेवा नहीं करता बेवरा जानोगे।

४ चौथा पर्ब्ब ।

अधर्मियों और अविश्वासियों का दंड बताना १—३ यहिया के आने की भविष्य वाणी ४—६।

देखो वुह दिन आता है, जो भट्ठे की नाईं जलेगा और सारे अहंकारी और सारे दुष्टकारी खूंटी होंगे और जो दिन आता है सो उन्हें जला देगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि उनके लिये न जड़ न डाली छोड़ेगी। परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम को डरते हो धर्म का सूर्य अपने डैने में चंगाई लिये हुए उदय होगा और तुम लोग निकलोगे और थान की बछियों की नाईं बढ़ोगे। और सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि उस दिन में जो मैं ठहराऊंगा तुम लोग दुष्टों को अपने पांव के तलवों के नीचे लताड़ोगे क्योंकि वे धूल की नाईं होंगे। मेरे सेवक मूसा की व्यवस्था को, जो मैं ने सारे इसराईल के विषय में अर्थात् विधिन और न्यायों को, जो मैं ने होरेब में आज्ञा किई थी, स्मरण करो। देखो परमेश्वर के बड़े और भयंकर दिन के आने से आगे मैं इलियास भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे पास भेजोंगा। जिसतें वुह बालकों सहित पितरों के मन को और पितर सहित बालकों के मन को फेरे न हो कि मैं आके देश को सर्वथा नाश करों।

———